NDRA PRASAD

भारत के राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद

के

भाषण

---:o:---

जनवरी १९५०--मई १९५२

---o:---

मुद्रक—मैनेजर, गवर्नमेण्ट ऑफ़ इण्डिया प्रेस, नई दिल्ली

राष्ट्रपति जी के ता० २६ जनवरी १९५० से २१ अप्रेल १९५२ तक के दिये गये भाषणों की विषय सूची

क्रम संख्या	दिये गये भाषणों के शीर्षक	पृष्ठ संख्या
३१.	इण्डियन रैडक्रास और सेंट जान एम्बुलेन्स एसोसियेशन	७०
३२.	इण्डियन स्कूल आफ माइन्स	७२
३३.	धनबाद में अभिनन्दन	७५
३४.	ईंधन गवेषणा प्रतिष्ठान	७६
३५.	हजारी बाग में जनता को उद्बोधन	८१
३६.	झूमरी तैलिया में सार्वजनिक सभा	८१
३७	शिमला यंग टीमों के बीच गेंद का फाइनल मैच	८२
३८.	आगरे में नागरिक अभिनन्दन	८३
३९.	वन महोत्सव	८९
४०.	ट्री-प्लान्टिंग	९०
४१.	शान्ति सेना	९१
४२.	स्वतन्त्रता दिवस पर राष्ट्रपति जी का ब्राडकास्ट भाषण	९४
४३.	बौद्ध स्मारक चिह्न	९६
४४	भारतीय कृषि गवेषणा प्रतिष्ठान	९७
४५.	दिल्ली नाट्य संघ	१००
४६.	यूनाइटेड चेम्बर आफ ट्रेडर्स एसोसियेशन	१००
४७.	दरगाह निजामुद्दीन	१०४
४८.	शिमले में नागरिक अभिनन्दन	१०६
४९	गर्ल्स गाइड को उपदेश	१०९
५०.	गान्धी जी के चित्र का अनावरण	११०
५१.	आनन्दपुर गुरुद्वारे में अभिनन्दन	११३
५२.	भारतीय प्रशासन सेवा के भावी सदस्यों से बातचीत	११३
५३.	श्री विट्ठल भाई पटेल की प्रतिमा का अनावरण	११७
५४.	सत्याग्रह आश्रम	११९
५५.	अहमदाबाद में नागरिक अभिनन्दन	१२१
५६.	सेवादल को उद्बोधन	१२५
५७.	नडियाड स्टेशन पर अभिनन्दन	१२६
५८.	भीमसेवा मंडल की रजत जयन्ती	१२७
५९.	कोआपरेटिव मिल्क यूनियन	१२९
६०.	ऐग्रीकलचरल इन्स्टीट्यूट	१३१
६१.	कामर्स कालेज, आनन्द	१३५
६२.	बारडोली आश्रम	१३७
६३.	सरदार वल्लभ भाई की प्रतिमा का अनावरण	१३९
६४.	सूरत में नागरिक अभिनन्दन	१४२

क्रम संख्या	दिये गये भाषणों के शीर्षक	पृष्ठ संख्या
६५.	गुजरात विद्यापीठ में उद्बोधन	१४६
६६.	अखिल भारतीय नैतिक और सामाजिक स्वास्थ्य सम्मेलन	१४९
६७.	विजयादशमी	१५२
६८.	विजयादशमी का उत्सव	१५३
६९.	देहरादून में नागरिक अभिनन्दन	१५५
७०.	दून स्कूल का संस्थापक दिवस	१५८
७१.	सयुक्तराष्ट्र दिवस	१६२
७२.	शिलाग मे नागरिक अभिनन्दन	१६३
७३.	आसाम प्रान्तीय काग्रेस द्वारा अभिनन्दन	१६६
७४.	कलकत्ता बार एसोसियेशन मे अभिनन्दन	१७०
७५.	कलकत्ता मैदान मे सार्वजनिक सभा	१७२
७६.	चित्तरंजन लोकोमोटिव वर्क्स	१७७
७७.	वैद्यो द्वारा अभिनन्दन	१८०
७८.	काश्मीर विश्वविद्यालय का समावर्तन	१८२
७९.	श्रीनगर में नागरिक अभिनन्दन	१८६
८०.	कृषिक साख्यकीय भारतीय संस्था	१९०
८१.	प्रेसिडेण्ट स्टेट रिक्रेयशन क्लब	१९४
८२.	गुरु नानक जन्म दिवस	१९५
८३.	आल इण्डिया फूड कौन्सिल की प्रदर्शनी	१९६
८४.	अखिल भारतीय समाचार पत्र सम्पादक सम्मेलन	१९८
८५	राष्ट्रपति जन्म दिवस	२०२
८६.	उर्दू मुशायरा	२०२
८७	दिल्ली विश्वविद्यालय का समावर्तन समारोह	२०३
८८.	सोनपुर श्मशान घाट बम्बई मे सरदार वल्लभभाई पटेल का दाहकर्म	२१२
८९	नागपुर विश्वविद्यालय मे दीक्षान्त भाषण	२१२
९०.	अनुसूचित जातियो द्वारा अभिनन्दन	२२१
९१.	नागपुर मे नागरिक अभिनन्दन	२२३
९२.	अखिल भारतीय इतिहास महासभा	२२९
९३.	खापरखेडा विद्युत केन्द्र का उद्घाटन	२३५
९४.	काग्रेस द्वारा अभिनन्दन	२३७
९५.	गोला बारूद कारखाना, जबलपुर	२४४
९६.	कला निकेतन, जबलपुर	२४४
९७.	महाकौशल महाविद्यालय का शिलान्यास	२४७
९८.	जबलपुर में नागरिक अभिनन्दन	२४८

क्रम संख्या	दिये गये भाषणों के शीर्षक	पृष्ठ संख्या
९९.	मोजरी आश्रम	२५३
१००.	शिवाजी लोक विद्यापीठ	२५४
१०१.	अमरावती में अभिनन्दन	२५७
१०२.	बाखी में अभिनन्दन	२६१
१०३.	ज्ञान मन्दिर वर्धा का शिलान्यास	२६३
१०४.	सेवाग्राम	२६५
१०५.	वर्धा में नागरिक अभिनन्दन	२६९
१०६.	विट्ठल भाई पटेल की मूर्ति का अनावरण	२७८
१०७.	पंजाब विश्वविद्यालय का समावर्तन समारोह	२८२
१०८.	अम्बाले में नागरिक अभिनन्दन	२८८
१०९.	रामजस कालेज का शिलान्यास	२९०
११०.	राष्ट्र को सन्देश	२९२
१११.	महाराजा छत्रसाल की मूर्ति का अनावरण	२९५
११२.	खजूराहो में अभिनन्दन	२९९
११३.	आगरा कालेज मे शत्तोतरी जयन्ती	३००
११४.	बलिदान दिवस	३०४
११५.	राजघाट पर बलिदान दिवस	३०५
११६.	उदयपुर मे नागरिक अभिनन्दन	३०७
११७.	अखिल भारतीय कृषि गवेषणा परिषद्	३१२
११८.	हिन्दू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को उपदेश	३१६
११९.	विद्या विहार, पिलानी	३१७
१२०.	बिरला इन्जीनियरिंग कालेज ब्लाक का उद्घाटन	३२२
१२१.	जयपुर मे नागरिक अभिनन्दन	३२३
१२२.	गाधी मेला, गलता	३२८
१२३.	मेयो कालेज मे पारितोषिक वितरण	३२९
१२४.	दरगाह शरीफ़, अजमेर	३३३
१२५.	अजमेर में नागरिक अभिनन्दन	३३३
१२६.	पुष्प प्रदर्शनी	३३६
१२७.	अखिल भारतीय कला तथा शिल्प प्रदर्शनी	३३७
१२८.	लखनऊ में नागरिक अभिनन्दन	३३८
१२९.	लखनऊ विश्वविद्यालय मे फिजिक्स ब्लौक का उद्घाटन	३४२
१३०.	सरोजनी नगर का शिलान्यास	३४६
१३१	प्रयाग में अभिनन्दन	३४८
१३२.	सरस्वती मन्दिर का शिलान्यास	३५०

क्रम संख्या	दिये गये भाषणों के शीर्षक	पृष्ठ संख्या
१३३.	प्रयाग महिला विद्यापीठ	३५३
१३४.	राष्ट्रीय वैमानिक दौड़	३५६
१३५.	कानपुर में नागरिक अभिनन्दन	३५७
१३६.	प्रेसिडेण्ट्स स्टेट्स स्पोर्ट्स क्लब	३६२
१३७.	मसनजोर बांध	३६२
१३८.	बालिका विद्यालय लक्खीसराय	३६७
१३९.	हिन्दी विद्यापीठ, देवघर	३७५
१४०	देवघर में नागरिक अभिनन्दन	३८२
१४१.	लेडी अरविन कालेज नई दिल्ली का समावर्तन	३८४
१४२.	हिसार में नागरिक अभिनन्दन	३८५
१४३.	आल इण्डिया कैटल शो	३८८
१४४.	अखिल भारतीय सांस्कृतिक सम्मेलन	३९४
१४५.	दस्तकारी प्रदर्शनी	४००
१४६.	त्रिवेन्द्रम में नागरिक अभिनन्दन	४०२
१४७.	यूनीवर्सिटी स्टेडियम त्रिवेन्द्रम में सार्वजनिक सभा	४०३
१४८.	इरनाकुलम में सार्वजनिक सभा	४१०
१४९.	इरनाकुलम में नागरिक अभिनन्दन	४१७
१५०.	फेडरेशन आफ इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स के भवन का शिलान्यास	४२१
१५१.	मद्रास का बाल मन्दिर	४२२
१५२.	मद्रास मे नागरिक अभिनन्दन	४२२
१५३.	मद्रास मे व्यापार मडल द्वारा अभिनन्दन	४२६
१५४.	मद्रास मे श्री जवाहरलाल नेहरू के चित्र का अनावरण	४३१
१५५.	तिरुकुरल गवेषणा का उद्घाटन	४३३
१५६.	सेवासदन अडयार	४३५
१५७.	श्री वी० एस० श्रीनिवास शास्त्री के चित्र का अनावरण	४३७
१५८.	अंजुमने मुफीदे अहले इस्लाम द्वारा स्वागत	४३९
१५९.	अखिल विश्व केन्सर दिवस	४४२
१६०.	मैसूर नगर समिति द्वारा अभिनन्दन	४४३
१६१.	मैसूर विश्वविद्यालय का विशेष समावर्तन	४४८
१६२.	अखिल भारतीय विज्ञान प्रतिष्ठान, बंगलौर	४५१
१६३.	बंगलौर में नागरिक अभिनन्दन,	४५५
१६४.	बंगलौर औद्योगिक प्रदर्शनी का उदघाटन	४५९
१६५.	बनारसी दास चांदीवाला नेत्र चिकित्सालय	४६१
१६६.	हिन्द कुष्ठ निवारण संघ का वार्षिक अधिवेशन	४६२

क्रम संख्या	दिये गये भाषणों के शीर्षक	पृष्ठ संख्या
१६७.	इण्डियन रैडक्रास सोसायटी और सेन्ट जान एम्बुलैन्स एसोसियेशन का वार्षिक अधिवेशन	४६३
१६८.	बिहार अकाल पीड़ितों के लिये अन्न दान	४६५
१६९.	विक्रम कीर्ति मन्दिर	४६६
१७०.	महाराजा माधवराव की मूर्ति का अनावरण	४७१
१७१.	उज्जैन में नागरिक अभिनन्दन	४७५
१७२.	कस्तूरबा सेवा सदन	४७६
१७३.	इन्दौर में नागरिक अभिनन्दन	४७७
१७४.	कस्तूरबा ग्राम	४८२
१७५.	बाल निकेतन	४८४
१७६.	सोमनाथ मन्दिर	४८५
१७७.	संस्कृत परिषद्	४८७
१७८.	श्री कृष्णस्मारक	४८९
१७९.	वैरावल में नागरिक अभिनन्दन	४८९
१८०.	जूनागढ में नागरिक अभिनन्दन	४९१
१८१.	कीर्ति मन्दिर, पोरबन्दर	४९४
१८२.	राजकोट में सार्वजनिक सभा	४९६
१८३.	राष्ट्रीयशाला, राजकोट	५०१
१८४.	जामनगर मे नागरिक अभिनन्दन	५०३
१८५.	एकलव्य आश्रम	५०८
१८६.	भारतीय नौसेना को झंडा दान	५११
१८७.	तारापूरवाला मत्स्यालय का उद्घाटन	५१३
१८८.	भूमि सेना	५१६
१८९.	वन महोत्सव	५१९
१९०.	राष्ट्रपति भवन में वन महोत्सव	५२०
१९१.	राष्ट्रपति भवन में ईद	५२१
१९२.	ईद	५२२
१९३.	प्रेसिडेन्टस स्टेट टूर्नामेंट	५२३
१९४.	उस्मानिया विश्वविद्यालय का समावर्तन	५२४
१९५.	हैदराबाद में राजभोज	५२७
१९६.	विद्यार्थियों को उद्बोध	५२८
१९७.	हैदराबाद में नागरिक अभिनन्दन	५२९
१९८.	औरंगाबाद में विद्यालय का शिलान्यास	५३२
१९९.	औरंगाबाद में सार्वजनिक सभा	५३४

क्रम संख्या	दिये गये भाषणों के शीर्षक	पृष्ठ संख्या

क्रम संख्या	दिये गये भाषणों के शीर्षक	पृष्ठ संख्या

क्रम संख्या	दिये गये भाषणों के शीर्षक	पृष्ठ संख्या
२६८.	मिसेज इलीनर रूज़वैल्ट को डिग्री प्रदान	६८४
२६९.	दिल्ली राज्य के बाय स्काउट्स और गाइड्स	६८५
२७०.	राजाजी फ़ुटबाल टूर्नामेंट	६८६
२७१.	राष्ट्रपति भवन में संगीतोत्सव	६८७
२७२.	भारतीय विद्याभवन की शाखा का शिलान्यास	६८८
२७३.	गन्धर्व महाविद्यालय की स्वर्ण जयन्ती	६८९
२७४.	ब्रजसाहित्य मण्डल के कार्यकर्ताओं को उद्‌बोधन	६९३
२७५.	हाथरस नगरपालिका द्वारा अभिनन्दन	६९६
२७६.	हरि आई अस्पताल	६९७
२७७.	ब्रजसाहित्य मण्डल	६९९
२७८.	हैदराबाद कला प्रदर्शनी	७०६
२७९.	सिख शिक्षा सम्मेलन	७०७
२८०.	इण्डियन रैडक्रास सोसायटी का वार्षिक अधिवेशन	७०९
२८१.	हिन्द कुष्ठ निवारण संघ	७११

पद शपथ

२६ जनवरी १९५० को पद शपथ लेने के पश्चात् राष्ट्रपति जी ने कहा—

हमारे इतिहास में यह स्मरणीय दिवस है। सवशक्तिमान् परमात्मा को मै धन्यवाद देता हूं कि उसने हमें यह आज का शुभ दिन दिखलाया और राष्ट्रपिता को भी मै धन्यवाद देता हूं जिन्होंने हमें और संसार को अपना सत्याग्रह जैसा अमोघ अस्त्र प्रदान किया और हमें स्वतत्रता पथ पर आगे बढाया तथा मै उन अनेकानेक नर नारियो को भी धन्यवाद देता हू जिन्होने अपने त्याग और तपस्या से स्वतन्त्रता प्राप्ति तथा भारत मे सर्वप्रभुतासम्पन्न प्रजातन्त्रात्मक गणराज्य की स्थापना सम्भव की। हमारे लम्बे और घटनापूर्ण इतिहास मे यह प्रथम अवसर है जब उत्तर में काश्मीर से लेकर दक्षिण मे कन्याकुमारी तक और पश्चिम मे काठियावाड से और कच्छ से लेकर पूर्व में कोकनाडा और कामरूप तक यह विशाल देश सब का सब एक सविधान और एक संघ राज्य के छत्राधीन हुआ है जिस ने कि इस के ३२ करोड नर नारियों के कल्याण का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया है। अब इसका प्रशासन इसकी जनता द्वारा और इसकी जनता के ही हितों में चलेगा। इस देश के पास अनन्त प्राकृतिक सम्पत्ति साधन है और अब इस को वह महान अवसर मिला है जब यह अपनी विशाल जन सख्या को सुखी और सम्पन्न बनाये तथा ससार मे शान्ति स्थापना के लिए अपना अशदान करे।

हमारे गणतन्त्र का यह उद्देश्य है कि अपने नागरिको को न्याय, स्वतन्त्रता और समता प्राप्त कराये तथा इसके विशाल प्रदेशों मे बसने वाले तथा भिन्न भिन्न धर्मो के मानने वाले, भिन्न भिन्न भाषाओं के बोलने वाले और भिन्न भिन्न आचार विचार वाले लोगों मे भाईचारे की अभिवृद्धि करे। हम सब देशो के साथ मैत्री भाव से रहना चाहते है। हमारा उद्देश्य है कि हम अपने देश मे सर्वतोन्मुखी प्रगति करे। रोग, दारिद्रय और अज्ञान के उन्मूलन का हमारा प्रोग्राम है। हम इस बात के लिए उत्सुक और चिन्तित है कि हम उन उद-वासित भाइयो को, जिन्हे अनेक यातनाये और कठिनाइया सहनी पडी है और पड रही है, फिर से बसाये और काम मे लगाये। जो जीवन की दौड में पीछे रह गये है उन को दूसरो के स्तर पर लाने के लिए विशेष कदम उठाना आवश्यक और उचित है। इन सब को पूरा करने के लिए हमे अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करना परमावश्यक है। किन्तु वर्तमान युग मे राजनैतिक स्वतन्त्रता के समान ही आर्थिक और सामाजिक स्वतन्त्रता की भी आवश्यकता है। मेरी आशा और प्रार्थना है कि हम इस अवसर का सदुपयोग करें और अपने देश और अपनी जनता की सेवा में अपने सम्पत्ति-साधन और शक्ति लगा दे। भूतकाल से भी अधिक वर्तमान मे लगन और सेवा की आवश्यकता है। मै यह भी आशा और प्रार्थना करता हू कि आज के शुभ और सुखमय दिन के लिए उल्लास के साथ साथ ही हमारे लोग अपने गुरु उत्तरदायित्व को और भी अधिक समझेगे और उस महान् उद्देश्य को पूरा करने मे अपने को पूर्ण समर्पित कर देगे जिस के लिए राष्ट्रपिता जिये, कार्य करते रहे और जिस के लिए मरे।

राष्ट्रपति भवन में राजभोज

*नई दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में राजभोज में राजदूत वर्ग के प्रमुख के भाषण के उत्तर में राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने कहा—

हमारे देश के लिए आज यह गौरवपूर्ण दिवस है। भारत का लम्बा और घटनापूर्ण इतिहास रहा है। यदि इस का कुछ अंश तमसावृत्त रहा है तो अन्य ज्योतिर्मय और गौरवपूर्ण। किन्तु इसके अधिकांश गरिमामय युगों मे भी, जिनका इतिहास हमे प्राप्य है, ऐसा कभी नहीं हुआ कि यह समस्त देश एक संविधान और एक शासन के छत्राधीन रहा हो। हमारी पुस्तको मे अनेक गणतन्त्रों का वर्णन मिलता है और हमारे अभिलेखो मे जिन घटनाओ और स्थानो का वर्णन है उन का न्यूनाधिक क्रमबद्ध वर्णन करने में हमारे इतिहासज्ञ सफल हुए है। किन्तु ये गणतन्त्र बहुत ही छोटे थे और उन का रूप और क्षेत्र लगभग वैसा ही था जैसा कि उसी युग के यूनानी गणतन्त्रों का था। हमारे यहां राजाओं और महाराजाओं में से कुछ चक्रवर्ती भी थे अर्थात् जिन की प्रभुता अन्य राजा मानते थे जो स्वय अपने प्रदेशो मे उसी प्रकार राज्य करते थे जिस प्रकार कि अंग्रेजी राज्य काल मे देशी राजागण ब्रिटेन की प्रभुता स्वीकार करने के पश्चात् अपने ही प्रदेशों मे अपनी रीति से राज्य चलाते थे। आज यह पहला ही अवसर है जब हम ने ऐसे संविधान का प्रवर्तन किया है जिसका विस्तार सारे देश तक है। आज ऐसे संघीय गणतन्त्र का जन्म हो रहा है जिस के अन्तर्गत राज्य है किन्तु उन की अपनी कोई प्रभुता नही है और वे एक ही संघ और एक ही प्रशासन के सदस्य और अंगमात्र है। नैदरलैंड के महामहिम राजदूत ने अभी अभी उन सम्बन्धों की ओर संकेत किया है जो हमारे देश के अन्य पूर्वी और पश्चिमी देशों से थे। जहा तक इस देश का प्रश्न है ये सम्बन्ध सर्वदा ही मैत्री के रहे है। हमारे पूर्वज हमारे ऋषियो की वाणी और संदेश को दूर दूर तक ले गये थे और उन्होने ऐसे सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित कर दिये थे जिनको काल मिटा नहो सका और जो आज भी मौजूद है जब कि अनेक साम्राज्य धूलधूसरित अथवा छिन्न भिन्न हो गये है। हमारे ये सम्बन्ध आज भी है। क्योंकि वे न तो लोहे और इस्पात और न ही सोने के थे वरन् वे मानव आत्मा के रेशमी धागों के सम्बन्ध थे। भारत को अनेक बार विदेशियो के आक्रमण और आघात सहने पड़े है और कई बार उनके सामने इसकी हार हो गयी है किन्तु ऐसा एक भी उदाहरण नही है जब हमारे देश ने किसी अन्य देश पर सैनिक आक्रमण किया हो अथवा सैनिक युद्ध की घोषणा की हो। अतः यह उचित ही हुआ है तथा हमारी ऐतिहासिक सांस्कृतिक परम्पराओ के फलस्वरूप है कि हम अपनी स्वतन्त्रता बडे शांतिपूर्ण और अदृश्य ढंग से और बिना रक्तपात किये प्राप्त कर सके है। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी प्रकृति की कोई अनहोनी बात नही थे वरन् वे अहिंसा के उस आदर्श की मूर्तिमान् प्रतिमा और उसी के विकास के फल थे जो हमारी महान् विरासत है। उन के अपूर्व नेतृत्व के अधीन हम केवल अपनी खोयी हुई स्वतन्त्रता ही नही प्राप्त कर पाये है वरन् उन लोगों के साथ भी जिनके विरुद्ध हम लड़े और जीते हमारी मैत्री के सम्बन्ध और भी सुदृढ और स्थिर हो गये है और इस बात मे उन लोगों का भी श्रेय है।

हमारा संविधान प्रजातन्त्रात्मक संविधान है और वह प्रत्येक नागरिक को अमूल्य स्वतन्त्रता का आश्वासन देता है। भारत ने न तो किसी प्रकार के विचार और विश्वास पर प्रति-

---

* अंग्रजी से हिन्दी में अनुवाद

बन्ध लगाया और न उन को दण्डनीय किया तथा हमारे दर्शन में भक्तिमान् भगवान् तथा नास्तिक और अनास्था वाले सब लोगों के लिए ही पूरा स्थान है। अतः अपने संविधान के अधीन हम व्यावहारिक दृष्टि से वही बात पूरी करेंगे जो कि हमें अपनी परम्परा से विरासत में मिली है अर्थात् विचार और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता सब को प्राप्त करायेंगे। जिस नये संविधान का प्रारम्भ हम कर रहे हैं उसके अधीन रह कर हमे यह आशा है कि हम अपने नेता की शिक्षाओं के अनुकूल आचरण कर सकते है तथा जगत भर मे अपनी विनम्र रीति से शान्ति स्थापना में सहायता कर सकते है। सब देशों के प्रति हमारा पूर्ण मैत्री भाव है। किसी के विरुद्ध हमारे मन मे कोई चाल नही है। और न हमारे मन मे दूसरों पर आधिपत्य जमाने की महत्वाकांक्षा ही है। हमारी यह भी आशा है कि दूसरे भी हमारे विरुद्ध अपने मन में कोई बात नही रखेगे। भूतकाल मे अन्य देशों के आक्रामक व्यवहार का हमे कड़वा अनुभव है और इसलिये हम यही आशा प्रकट करते है कि ऐसा अवसर न आये कि जब हमे अपनी आत्म-रक्षा के हेतु कोई कदम उठाना आवश्यक हो जाय ।

जैसा कि आप जानते है आज संसार बहुत ही अनिश्चित और चिंताकुल अवस्था मे होकर गुज़र रहा है। एक पीढ़ी के जीवन काल में ही दो संसार व्यापी युद्ध हुए। उन मे जो विनाश हुआ और उन के बाद लोगों को जो यातनायें और दुख सहने पडे वे भी लोगों को इस बात का विश्वास नही दिला पाये है कि युद्ध द्वारा युद्ध का अन्त नही किया जा सकता। अतः युद्धों का अन्त करने के लिए यह आवश्यक है कि लोग सर्वभूत हिताय कार्य करे और विनाशात्मक प्रयोजनों के स्थान मे उत्पादन और कल्याणकारी प्रयोजनों के लिए अपने साधनों का प्रयोग करना ससार सीख ले। इस सद्भावना और विश्वास तथा सहयोग के वातावरण के स्थापित करने में भारत को भी अपना विशेष भाग अदा करना है ऐसा मुझे विश्वास है। अतः गर्व और द्वेष से मुक्त हमारा गणतन्त्र आज संसार क्षेत्र में प्रवेश करता है और उसका यह विनम्र विश्वास और प्रयास है कि अन्तर्राष्ट्रीय और आन्तरिक मामलों मे हमारे राजनायक हमारे राष्ट्रपिता की शिक्षाओं से अर्थात् सहिष्णुता, पारस्परिक मेल, अहिसा तथा आक्रामक-युद्ध विरोधी भावना से प्रेरित रहेंगे ।

ऐसे देश में और ऐसे समय में हमारी जनता के प्रतिनिधियों ने मुझे इस उच्च आसन पर आसीन किया है। सहज में ही आप मेरी घबराहट को समझ सकते है जो हमारी नवार्जित स्वतन्त्रता के सामने वर्तमान महान् कार्य के कारण ही नही वरन् इस जानकारी से पैदा हुई है कि चाहे पद में न सही किन्तु कार्य क्षेत्र में तो अवश्य ही मै ऐसे व्यक्ति का स्थान ले रहा हूं जिन्होंने संघर्ष और आन्दोलन के युग में ही नही वरन् रचनात्मक कार्यक्रम और व्यावहारिक प्रशासन में भी बड़ा प्रमुख कार्य किया है। आप श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य को जानते है और आपको उनकी तीक्ष्ण वुद्धि, प्रकाण्ड पाण्डित्य, व्यवहार कुशलता तथा मधुर स्वभाव का अनुभव है। २० वर्ष से भी अधिक उन के साथ काम करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है और यद्यपि समय समय पर हम में आपस में कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर मतभेद क्यों न रहे हों तथापि हमारे वैयक्तिक सम्बन्धों में किसी प्रकार की कटुता नहीं आयी और मुझे पूर्ण विश्वास है कि हर प्रकार के विपत्ति काल में, जिस का सामना मुझे करना पड़े, उन की सम्मति मुझे प्राप्त रहेगी। मेरी घबराहट और चिन्ता बहुत कुछ इस विचार से कम हो जाती है कि मझे अपने प्रधान मंत्री,

उपप्रधान मंत्री और मन्त्रिपरिषद् और संसद् के सदस्यों तथा सारी जनता का पूर्ण विश्वास प्राप्त है। मैं उस विश्वास का पात्र बनने के लिए पूरा प्रयत्न करूंगा। मैं यह भी आशा करता हूं कि यह देश दूसरे देशों का विश्वास प्राप्त करने में तथा ऐसी सहायता प्राप्त करने में, जो कि इसे किसी समय आवश्यक हो, सफल होगा।

स्वास्थ्य पान का आमन्त्रण देकर जो शुभकामना आपने प्रकट की है वही मैं भी सहर्ष प्रकट करता हूं।

दिल्ली में नागरिक अभिनन्दन

ता. ५-२-५० को दिल्ली नगर पालिका के मानपत्र का उत्तर देते हुये राष्ट्रपति ने कहा--

दिल्ली म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष, सदस्यगण और दिल्ली शहर के रहने वाले भाइयो, और बहिनो,

दिल्ली शहर की ओर से आप ने जिस समारोह और प्रेम के साथ मेरा स्वागत किया वह आप के योग्य है और मैं आप को हृदय से धन्यवाद देता हूं। दिल्ली बहुत पुराना और ऐतिहासिक शहर है। इस ने अपनी हज़ारों वर्षों की ज़िन्दगी मे, बहुत कुछ देखा है। भारत के इतिहास की बहुत घटनायें इस शहर के इर्द-गिर्द मे, इस की सड़कों, गलियो और कूचों में हुई है, उन की शहादत यहां मीलो तक फैले हुए खण्डहर और खड़ी इमारते दे रही है। इस ने हिन्दू राजाओं के काल से ले कर मुसलमानी जमाने और अंग्रेज़ी राज्य तक मे राजधानी होने का गौरव पाया। इस के इतिहास में चढ़ाव उतार भी बराबर होते रहे है। अगर समय समय पर इस की सड़कों और चौराहों ने बड़े बड़े शानदार जशन और जलूस देखे है तो उन्ही सड़कों, चौराहों और गलियों ने कत्लेआम भी देखे है। यद्यपि बहुधा यह राजधानी रही तो भी समय समय पर यहां से हट कर वह दूसरी जगहों में भी चली गयी। ठीक है, यह सब होता रहा पर, चाहे जिस नाम से हो दिल्ली जैसी की तैसी बनी रही है और बनी रहेगी। अगर इस ने समय समय पर बड़े बड़े राजा महाराजाओं और नवाबों का, जो बहुत तैयारियों के साथ यहां आया करते थे, स्वागत किया है, तो इसने ज़माने के मारे हुए लाखों निर्वासित लोगों को भी अपनाने का सौभाग्य पाया है। इस ने यदि अधिकार युक्त गवर्नर जनरल और वायसराय का स्वागत किया है तो इस ने ब्रिटिश सरकार से लड़ती हुई कांग्रेस के अध्यक्ष का भी उसी उदारता और उत्साह के साथ स्वागत किया है। यदि इसने स्वराज्य की स्थापना का दृश्य देखा है तो वह दृश्य भी देखा है जब पाबन्दी लगाई हुई कांग्रेस का वह अधिवेशन किया गया जब पुलिस चारों तरफ दौड़ भाग कर रही थी और इसी घंटाघर के नीचे देश के कोने कोने से छुप कर आये हुए प्रतिनिधि खुल कर अधिवेशन कर रहे थे। इस ने १९३२ की २६वीं जनवरी को उस अधिवेशन का दृश्य देखा और १९५० की जनवरी को देखा गणराज्य की घोषणा के समारोह का दृश्य। इस ने १९२० के उन दिनों के आपस के भ्रातृभाव और मेल को

देखा जब स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने मुसलमानों के निमंत्रण पर जामा मस्जिद में जा कर भाषण दिया और उन्हीं स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या भी देखी और देखे १९४७ के भयानक और दर्दनाक नजारे । इस तरह इस ने बहुत कुछ देखा है। पर जो दृश्य यह आज देख रही है वैसा आज तक इस ने कभी नही देखा। आज एक सूत्र में बंधे एक संविधान के नीचे एक गवर्नमेन्ट के शासन में के सारे भारत के प्रतिनिधियों द्वारा चुने गए राष्ट्रपति को उस शासन के एकमात्र प्रतीकरूप में इस ने आज तक कभी नही देखा और न कभी उस का स्वागत किया। यह दृश्य दिल्ली और भारत के लिये नया गौरव है। खादी के इस सेवक के लिये जिसे ऐसा प्रतीक बनाया गया है उस से बढ कर और दूसरा गौरव और सम्मान हो ही क्या सकता है ।

इस सम्मान की रक्षा देश की जनता के हाथों में है। स्वतन्त्र देश को सुरक्षित रखना हरेक भारतवासी का सब से बड़ा और पहला फर्ज़ है। हम ने राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है और देश को बनाने और बिगाडने का पूरा हक हासिल कर लिया है। अगर हम अपने कर्तव्य ठीक समझें और उन्हें पूरा करते रहें तो देश उन्नति करेगा और इस की गणना संसार के बड़े से बड़े और अच्छे से अच्छे राष्ट्रों में हो जायेगी। ईश्वर ने इसे धन धान्य से भरपूर बनाया है। इस मे बसने वाले आदमी प्रकृति प्रदत्त गुणों में किसी देश की जनता से कम नही है। अब हमारा काम है कि इन गुणों को विकसित करे और इस देश के हरेक नर नारी को इस का मौका दे कि वह अधिक से अधिक तरक्की कर सके। ठीक है, हमारे सामने कठिनाइयों का पहाड़ खड़ा है पर उस पर विजय पाना भी तो हमारा ही काम है।

हम ने लोकतंत्रात्मक गणराज्य कायम किया है। इस का यह अर्थ है कि जनता के चुने हुए ऐसे प्रतिनिधि देश का शासन करेंगे जो जनता का विश्वास पा सकेंगे और जब तक पाते रहेंगे वे ही और उसी समय तक ही वे शासन के अधिकारी होंगे। दूसरे शब्दों में जनता के मत और हुक्म के मुताबिक देश का कारबार चलेगा। इसलिये अगर जनता ऐसे लोगों को, जो योग्य हों, सच्चे और ईमानदार हों, जो सेवाभाव से भार उठाना चाहते हों, चुन कर शासन का भार सौंपेगी और ऐसे चुने हुए लोग अपना फर्ज़ अदा करेंगे तो देश का कल्याण होगा और देश तरक्की करेगा। हमारे नवसंविधान द्वारा इस चुनाव में भाग लेने का प्रत्येक बालिग को हक मिल गया है और इस तरह वह शासन के लिये ज़िम्मेदार हो गया है। थोड़े ही दिनों के बाद चुनाव होने वाला है। वह इतने बड़े पैमाने पर होगा कि इस के जोड़ का चुनाव आज तक दुनिया में कभी भी नहीं हुआ। इस में १६-१७ करोड़ मत देने वाले होंगे और सब मिला कर चार हज़ार से अधिक प्रतिनिधि चुने जायेंगे। इस चुनाव का प्रबन्ध करना भी इतना बड़ा काम है कि इस में हमारी सगठन शक्ति का पहिला इम्तिहान हो जायेगा। चुनाव के नतीजे से हमें यह भी मालूम हो जायेगा कि जनता ने कितनी समझदारी और ज़िम्मेदारी से मत देने के अधिकार को काम में लाया। जो चुने जायेंगे उन का पहला इम्तिहान चुनाव के दिनों में ही होगा जब हम देख सकेंगे कि वे कितनी समझदारी और संयम के साथ चुनाव लड़ सकते है और दूसरा इम्तिहान चुनाव के बाद होगा जब यह देखा जायेगा कि उन्होंने किस तरह से सारे देश के हित को सामने रख कर अपना फर्ज़ अदा किया है।

जनता के प्रतिनिधि वही हो सकते है जो जनता की राय को, उस के विचारों को, उस की अभिलाषाओं और उम्मीदों को उस की योग्यता और कर्मण्यता को ठीक ठीक प्रतिबिम्बित कर दें। इस लिये मेरा विश्वास है कि यद्यपि प्रौढ़ मताधिकार नई चीज़ होगी तथापि हमारी जनता उस का ठीक उपयोग करेगी और जो प्रतिनिधि चुने जायेंगे वे देश का भला कर सकेंगे।

इस समय बहुत कुछ करने को है। सब से पहली चीज़ तो हमें यह करनी है कि जनता को स्वराज्य का अनुभव दिन प्रतिदिन के जीवन में होने लगे। स्वतंत्रता बड़ी और कीमती चीज़ है। पर यदि वह केवल भावना मात्र ही रह जायें और उस का सदेह नतीजा देखने को न मिले तो वह भावना के रूप में भी नही रह सकेगी, और स्पष्ट है कि अगर भावना दृढ न रही तो आज़ादी भी ढीली और कमज़ोर हो जा सकती है। इसलिये इस आजादी को मूर्तिरूप देना है, इसे अमली जामा पहनाना है। गरीबी, बीमारी, अज्ञानता, को देश से निकालना है और उन की जगह पर लोगों के जीवन-स्तर को इस तरह ऊचा करना है कि जो भूखा है उसे पेट भर अन्न मिलने लगे और सभी लोग आराम के साथ ज़िन्दगी बसर कर सके। सब लोग स्वस्थ रहें, बीमारों के लिये दवा और इलाज का प्रबन्ध हो और सब को शिक्षा पाने की सुविधा हासिल हो। इस के लिये समाज का गठन ही ऐसा बनाना होगा जिस में सब सुविधायें सब के लिये सुलभ हो जायें और जो बड़ी खाई आज धनी और ग़रीबों के बीच में बहुत गहरी और चौड़ी पड़ी हुई है वह समानता और सद्भावना से पट जाये और देश की प्राकृतिक सम्पत्ति का हम इस तरह इस्तेमाल कर सकें जिस मे सभी उस से लाभ उठा सके और वह किसी व्यक्ति या वर्ग को एक तरफ धनी बनाने और दूसरे वर्ग को अधिक गरीब बनाने का कारण न हो। देश में सभी लोगों को चाहे वह किसी भी धर्म के मानने वाले हों धार्मिक स्वतन्त्रता हो और सभी विचार और प्रचार की आज़ादी भोग सके। हमारे सविधान ने इस तरह की सभी बातों की बहुत विस्तार पूर्वक व्यवस्था की है और उन को पूरा करने के लिये लोकतन्त्रात्मक साधनों की भी व्यवस्था बताई है। पर यह सब कुछ तभी हो सकेगा जब हम अपने कर्तव्य को समझेंगे और उन्हें पूरा करने के लिये हमेशा तैयार रहेंगे। सविधान चाहे कितना ही सुन्दर और सुव्यवस्थित क्यों न हो यदि उस के चलाने वाले चरित्रवान और चतुर कर्तव्यपरायण और निःस्वार्थी न हों तो वह काग़ज़ों तक ही सीमित रह जाता है और व्यावहारिक जगत में उस की कोई अच्छाई देखने में नहीं आती। इस लिये इस राजधानी में बसने वाले आप लोगों से मेरा अनुरोध है कि आप सारे देश के लिये एक ऐसा नमूना बनें कि वह आप का अनुसरण करते हुए उन्नति कर सके।

इस शहर मे निर्वासित लोग बहुत बड़ी सख्या में आ बसे हे। उन्हो ने बहुत मुसीवतें उठाई हैं। अब भी यहां और दूसरी जगहों में फैले निर्वासित भाई बहिनें बहुत कठिनाइया झेल रहे है। जहा तक हो सकता है गवर्नमेन्ट उन को बसाने का प्रयत्न कर रही है और करती रहेगी। इस के लिये आप सब की मदद और सहयोग अपेक्षित है। पर इस से भी अगर कोई दूसरी चीज़ बढ़ कर है तो यह है कि हम अपने वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के उन कारणों को दूर कर दें जो इन कष्टों के लिये जिम्मेदार है। अगर हम अब भी न संभले तो हम और अनेकों को उन्हीं

मुसीबतों में मुब्तिला कर देंगे । आपस का वैमनस्य और झगड़ा हमारी सभी मुसीबतों का मूलभूत कारण है । अगर उस से हम देश को सुरक्षित रख सकें तो उसे हम और सब मुसीबतों से बचा सकेंगे ।

नई दिल्ली नगरपालिका का मान पत्र

*नई दिल्ली नगरपालिका के मानपत्र का उत्तर देते हुए राष्ट्रपति ने कहा—

कुछ वर्षो से मै दिल्ली का नागरिक हू । इसलिये मै समझता हू कि मै उन विशेषाधिकारों का दावा कर सकता हूं जिन का दावा दिल्ली का कोई अन्य नागरिक कर सकता है । इस दृष्टि से देखा जाये तो अपने नागरिको मे से ही एक को मानपत्र भेंट किया जाना कुछ अजीब सा लग सकता है किन्तु मै जानता हू कि आप ने जो स्वागत और सम्मान मुझे प्रदान किया है वह मेरे लिये उतना नही है जितना कि उस पद के लिये है जिस पर देश ने मुझे बिठाया है । मै गणतन्त्र का राष्ट्रपति होने के नाते आप से कोई बात आज नही कहूगा, किन्तु यदि आप की अनुमति हो तो मै गणतन्त्र भारत की राजधानी के नागरिक की हैसियत से इस के अन्य नागरिकों से कुछ शब्द कहूगा ।

जैसा कि आप ने अपने मानपत्र मे कहा है, आप के सामने बडी बड़ी समस्यायें हैं । सभी नगरपालिकाओं और नगरप्रशासनों को बहुत कुछ इसी प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, अर्थात् शिक्षा की समस्या, सचार की समस्या, सफाई की समस्या, और नगर मे शुद्ध और आवश्यक खाने पीने की चीजो के मुहय्या करने की और खास तौर से दिल्ली जैसी जगह मे शुद्ध दूध की समस्या का सामना करना पड रहा है । जब कि चावल और गेहू के आटे मे भी मिलावट की जाती है तो यह सदेह स्वाभाविक ही है कि जो दूध हमे मिलता है उस मे भी मिलावट होगी ही । मै नही जानता हू कि आप लोग नागरिकों के लिये शुद्ध दूध मुहय्या करने के सवाल पर विचार कर रहे है या नही और न मै यह जानता हू कि आप जनता के जिस गरीब भाग पर सारे शहर की सफाई निर्भर करती है उस की कोई विशेष देख भाल करते है या नही । आप ने कहा है कि महात्मा गांधी जी ने अपने जीवन के अन्तिम दिन भगी बस्ती में बिताये । हम सब जानते हैं कि जीवन के अन्तिम भाग मे वे जहां भी जाते थे वही गरीब लोगों के अर्थात् भगियों और उसी वर्ग के लोगों के साथ साधारणतः रहते थे । वह ऐसा इसलिये करते थे ताकि दूसरे लोगों को भी यह मौका मिले कि वह यह जान सके कि ये लोग कैसे रहते है और इसलिये भी कि इस प्रकार संभवतः इन लोगों की दशा में कुछ सुधार हो जाये । अपने बारे मे मै यह बात स्वीकार कर सकता हूं कि मुझे यहां के भंगियों के जीवन के बारे में सिवा उतने थोड़े मे ज्ञान के अतिरिक्त और कुछ ज्ञात नही है जो मुझे उस समय हो गया था जब कि महात्मा गांधी जी के पास में भंगी बस्ती में जाता था । किन्तु मेरा आप लोगों से सुझाव है कि जिन विभिन्न आर्थिक कठिनाइयों का जिक्र आप ने किया है उन सब के बावजूद और इस बात के बावजूद भी कि जहां आप का

---

*अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

जन संख्या बहुत बढी है वहां आप की आमदनी में तदनरूप कोई वृद्धि नही हुई है, गरीब लोगों की आवश्यकताओं को अपने ध्यान में रखना आप के लिये उचित होगा। जब कोई भी बाहर से यहा आयेगा और जहा वे लोग रहते है उस जगह से हो कर निकलेगा तो वहा वह जो कुछ देखेगा उसी के आधार पर वह आप के नगर के प्रशासन के बारे में अपनी सम्मत्ति बनायेगा।

यह नगर भारत की राजधानी है। यहां न केवल इस देश के विभिन्न भागों के प्रतिनिधि ही उपस्थित है अपितु ससार के विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधि भी यहां है और इसलिये ही आप लोगों को अपने प्रशासन के विभिन्न विभागों मे कार्य कुशलता के स्तर को बहुत ऊंचा रखना है। मै कभी कभी सोचा करता हू कि इस नगर के जो लोग संध्याकाल मे सिंहद्वार पर घूमने जाते है क्या उन के लिये मजबूरी है कि वह खोमचे वालो के गाने से ही सन्तुष्ट हो जाये? क्या यह उचित नही है कि उन के लिये इस से बेहतर किसी चीज़ का प्रबन्ध किया जाये। हमारे देश का सगीत बहुत ऊंचे दर्जे का है। यह तो मै नही कह सकता कि किस सीमा तक उस को बडे बड़े समूहों की आवश्यकताओ के लिये प्रयोग किया जा सकता है पर मै यह सुझाव रखूगा कि न केवल सिहद्वार पर ही वरन् लोक-समागम के अन्य स्थानो पर भी जहा नागरिक और विशेषतः छोटे बच्चे जाते है यहा की जनता के लाभ के लिये कुछ सुविधाओं का आप प्रबन्ध करे। यह तालकटोरा बाग, बहुत ही सुन्दर स्थान है, किन्तु देहली जैसे दूरी प्रधान नगर मे केवल एक बाग पर्याप्त नही है। दिल्ली भारत की राजधानी है और अन्य जगहो मे चाहे बहुत सी कमिया न भी अखरे किन्तु यहा पर तो इस प्रकार की आवश्यकताओ पर आप को ध्यान देना चाहिये।

अन्तर्विश्व विद्यालय मंडल की रजत जयन्ती

*२८ फरवरी, १९५० मगलवार को बनारस में अन्तर्विश्व विद्यालय मंडल की रजत जयन्ती सम्मेलन का उद्घाटन करते समय राष्ट्रपति ने कहा—

मेरे लिये यह बहुत संतोष की बात है तथा इस बात के लिये मै कृतज्ञ हूं कि केवल भारत के हीन हीवरन् पडौसी दो देशों के भी अर्थात् लंका और बर्मा के भी विश्वविद्यालयों के उप-कुलपतियो और प्रतिनिधियों के सम्मेलन का उद्घाटन करने का मुझे यह अवसर दिया गया है। मई सन् २४ मे इस सम्मेलन की प्रथम बैठक हुई थी और तब से उस के फलस्वरूप स्थापित अन्तर्विश्व विद्यालय मंडल प्रति वर्ष अपनी बैठक विश्वविद्यालयों के सामान्य हितो मे सम्बद्ध प्रश्नो पर विचार करने के लिये तथा विश्वविद्यालयों की शिक्षा के हितों के साधन के लिये आवश्यक और वाछनीय समझे गये कार्य को हाथ मे लेने के लिये करता रहा है। अभी हाल में भारत सरकार ने एक आयोग विश्वविद्यालयों की शिक्षा के सम्पूर्ण प्रश्नों पर विचार करने के लिये नियुक्त किया था। इस के सदस्यों मे भारत के ही नही वरन् इंगलैड और अमेरीका के ख्यातिनामा शिक्षा शास्त्री थे। इस का अध्यक्ष पद डाक्टर राधाकृष्णन् ने संभाला था। आयोग ने बहुत ही मूल्यवान

---

* अंग्रेजी से हिन्दी मे अनुवाद

रिपोर्ट पेश की है जिस में हमारे विश्वविद्यालयों के शिक्षा क्षेत्र में सफलताओं का ही विवरण नहीं है वरन् उन के सम्बन्ध में बहुत ही सार गर्भित सिफारिशें और सुझाव भी हैं। हम अब एक स्वतन्त्र देश हैं। हमारा संविधान गणतान्त्रिक है। उसके अनुसार इस देश में प्रजातन्त्र को सफल बनाने के लिये आवश्यक योग्यताओं वाले अनेक नर नारियों की जरूरत है। इस का यह अर्थ नहीं कि यहां के लोग प्रजातन्त्र से सर्वथा अपरिचित थे। हमारे देश में अनेक गणतन्त्र रहे हैं, किन्तु जो गणतन्त्र हम ने हाल में ही स्थापित किया है उस की तुलना में वे बहुत ही सूक्ष्म थे। जनता का उत्तरदायित्व नये गणतन्त्र के क्षेत्र के अनुपात में ही बढ़ गया है तथा हमारी शैक्षिक संस्थाओं का अब यह कर्तव्य है कि वे उन को उन कार्यों के योग्य बनायें जो उन के सामने आने वाले हैं। संविधान स्वयं ही कुछ खास बात तब तक नहीं कर सकता जब तक कि इस के पीछे विशिष्ट स्तर की बुद्धि, सार्वजनिक भावना, और देश के हित के प्रति लगन साधारण नागरिकों में न हों तथा शैक्षिक संस्थाओं का यह काम है कि वे ऐसा वातावरण पैदा करे जिस में गुण विकसित हों और उन का यह काम भी है कि उन के प्रभाव में पलने वाले व्यक्तियों को वे आवश्यक योग्यतायें प्रदान करें। विश्वविद्यालय आयोग के प्रतिवेदन का महत्व इस बात में है कि वह इस देश की वर्तमान व्यवस्था में मूलभूत परिवर्तन की आवश्यकता को स्वीकार करता है तथा इस आधार पर शिक्षा समस्याओं पर विचार करता है। अतः इस को बहुत से क्रान्तिकारी परिवर्तनों का सुझाव देना पडा है। साथ ही इस की रिपोर्ट की यह भी खूबी है कि वह पुरानी परम्परा से पूर्णतया विच्छेद का सुझाव नहीं रखतीवरन् जो कुछ उस में प्राप्य है उस में से सब से अच्छे को बनाये रखना चाहती है और जो सर्वोत्तम बात प्राप्त करना वांछनीय है उस के लिये प्रयास करने का सुझाव रखती है। मुझे इस में शंका नहीं है कि हमारी आधुनिक शिक्षा परम्पराओं और आकांक्षाओं के संरक्षक की हैसियत से और हमारे विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि होने की हैसियत से आप उन सिफारिशों और सुझावों पर पूरा विचार करेंगे।

आप की अनुमति से मै इस रिपोर्ट से पैदा होने वाली बहुत सी बातों में से कुछ की ओर आप के विशेष विचार करने के लिये संकेत करता हूं। यद्यपि हमारे विश्वविद्यालय लगभग एक शताब्दि मे अस्तित्व में है तो भी पिछले ४० वर्षों में उनकी संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है और पिछले कुछ वर्षों में तो उन की अभिवृद्धि उल्लेखनीय और चमत्कारिक है। यह भी विशेष प्रवृति पायी जाती है कि एक के बाद दूसरा विश्विद्यालय स्थापित किया जाये। इस से प्रकट है कि उच्च शिक्षा के विकास के लिये लोगों के मन में कितनी रुचि है। पिछली अर्द्धशताब्दि में हाई स्कूलों की संख्या में बहुत ज्यादा वृद्धि हुई है और इस लिये यह स्वाभाविक ही था कि हाई स्कूलों में से शिक्षा समाप्त कर के निकलने वाले विद्यार्थियों की आगे की शिक्षा के लिये नये विद्यालयों की मांग बढ़ जाये। स्कूलों और विद्यालयों की संख्या के बढ़ने के फलस्वरूप विश्वविद्यालयों की संख्या बढ़ना भी अनिवार्य थी। मुझे इस बात की प्रसन्नता है। किन्तु साथ ही मुझे ऐसा लगता है कि ऐसे क्षेत्र में केवल संख्या के बढ़ने का यह आवश्यकीय अर्थ नहीं है कि मानसिक और बौद्धिक साधनों में भी अनुपातेन वृद्धि हुई है। तथा यदि मै इन संस्थाओं के विद्यार्थियों की मानसिक शक्ति के स्तर में किसी सीमा तक गिरावट से हुई—और मेरा सीमित अनुभव मुझे इस गिरावट

की ओर सकेत करता है—अपनी निराशा की बात आप से कहूं तो मै नही चाहता कि उस से आप कुछ और धारणा मन में बैठा लें। किन्तु इस भावना के अतिरिक्त, जो इन संस्थाओं से मेरे से अधिक निकटतम सम्बद्ध लोगों के मन में चाहे हो और चाहे न भी हो, मुझे यह भी लगता है कि अब समय आ गया है जब कि हमें अपनी सारी शिक्षा व्यवस्था के पुनर्निमाण पर विचार करना है और इस के लिये प्रयास करना है। चूंकि विश्वविद्यालय आयोग की रिपोर्ट हमें इस दिशा में आगे बढ़ाती है इस लिये मै इस को पर्याप्त महत्व देता हूं।

कुछ मूलभूत प्रश्न है जिन का उत्तर देना हमारे लिये आवश्यक है। उदाहरणार्थ शिक्षा माध्यम के प्रश्न को ही ले लीजिये। कुछ भी कारण क्यों न हो काफी लम्बे समय से हमारा शिक्षा माध्यम विदेशी भाषा रही है। मैं ने अपनी पढ़ाई अंग्रेजी अक्षरों के सीखने से आरम्भ की थी। तथा तब से इस दिशा में कुछ परिवर्तन हो गया है पर मैं नही जानता कि क्या यह कहा जा सकता है कि बालक की शिक्षा का माध्यम सर्वथा उस की मातृभाषा कर दी गई है। अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि अभी इस परिवर्तन की आरम्भिक अवस्था ही पूरी होने वाली है। जब हम माध्यमिक शिक्षा की बात सोचते है तो हमें पता चलता है कि बहुत से स्थानों में शिक्षा और परीक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी के स्थान पर भारतीय भाषायें हो रही है। किन्तु मै यह नही कह सकता कि यह परिवर्तन पूरी तरह किया जा चुका है। विश्वविद्यालयों में तो यह परिवर्तन मुश्किल से ही कही शुरू हुआ है। मेरा विश्वास है कि इस विषय के सब प्राधिकारी और जानकारी रखने वाले लोग यह मानते है कि यदि शिक्षा प्रभावी, पूर्ण, और धन तथा समय की दृष्टि से मितव्ययी होनी है तो वह जनता की भाषा में दी जानी चाहिये। हमारे देश की उपस्थित परिस्थितियों मे इस सर्वमान्य सिद्धान्त पर किस प्रकार से व्यवहार किया जाये केवल यही प्रश्न विचारणीय है। आयोग ने इस का एक हल सुझाया है जिसे मै एक प्रकार से समझौते वाला हल मानता हूं। सब बातों पर विचार कर के व्यक्तिगत दृष्टि से उसे एक शर्त पर पूर्णतया स्वीकार करने में मुझे कोई हिचकिचाहट नही है और वह शर्त यह है कि इस पर अविलम्ब और मन में निहित विपरीत भावना के बिना कार्य आरम्भ कर दिया जाये।

हमारे सामने परीक्षाओं की भी समस्या है जो अब तक हमारी शिक्षा व्यवस्था का प्रधान अंग रही है। जब हम उन परिस्थितियों पर विचार करते है जिन में हमारी शिक्षा संस्थाओं का विकास हुआ और उस कार्य पर विचार करते है जो हमारे विश्वविद्यालयों के आरम्भिक पचास वर्षो में उन को सौपा गया था तो हमे पता चलता है कि बात कुछ और हो भी न सकती थी। उस समय हमारे विश्वविद्यालय केवल ऐसी ही संस्थायें थीं जो स्वयं पढ़ाने के लिये ज़िम्मेदार न थी वरन् केवल इस बात से सन्तुष्ट थीं कि विद्यार्थी को यह प्रमाणपत्र दे दिया जाये कि उस ने विशिष्ट दर्जे की योग्यता हासिल कर ली है। जिन संस्थाओं का यह काम था कि वे विश्वविद्यालय द्वारा दी जाने वाली इन परीक्षाओं में बैठने वाले विद्यार्थियों को तैयार करें उन का स्वभावतः यह प्रयास रहता था कि इस प्रयोजन को अर्थात् परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कराने के प्रयोजन को वे पूरा करें क्योंकि इसी प्रयोजन से तो

विद्यार्थी उन में प्रविष्ट होते थ। विद्यार्थियों के लिये भी इस बात के अलावा और कुछ चारा न था कि वे और सब बातों से ज्यादा इन प्रमाण पत्रों को महत्व दें। क्यों कि इन्ही प्रमाणपत्रों पर तो उन का भविष्य और भावी जीवन लगभग सर्वथा निर्भर करता था। स्वभावत: शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों ही के लिये एक तरफ और दूसरी तरफ विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के लिये परीक्षायें सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात हो गयीं। इस व्यवस्था की सब से द्योतक आलोचना यही है कि आज भी ऐसे विश्वविद्यालयों की, जो अभि-ज्ञान प्रदान करने वाले हैं, आमदनी का मुख्य भाग उन शुल्कों से आता है जो उन की परीक्षाओं में बैठने का अधिकार प्राप्त करने के लिये विद्यार्थी देते हैं। एक शताब्दि के अन्तिम चतुर्थांश में या उस से कुछ अधिक समय में यद्यपि शिक्षा प्रदान करने वाली सस्थाओं के रूप में कुछ विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई हैं तथापि वे भी परीक्षाओं की जकड़ से अपने को मुक्त नही कर पाये हैं। यह भी उसी व्यवस्था का स्वाभाविक परिणाम है जो हमारे देश में थी और जिस के अन्तर्गत हमारे शिक्षक भाई अपनी जीविका के लिये केवल कुछ सीमित प्रकार की नौकरियों और धन्धों की बात ही सोच सकते हैं और इन धन्धों में सफलता प्राप्त करना भी इन परीक्षाओं के फलों पर बहुत कुछ निर्भर करता है। अत: यह प्रश्न विचार करने योग्य है कि इस भार से किस प्रकार और किस सीमा तक नव युवकों को मुक्त किया जाये जिस से कि वे अपना ध्यान और समय सत्य-ज्ञान और सत्य-शिक्षा के उपार्जन में लगा सके जो कि परीक्षा मे सफलता प्रदान करने वाली और अधिक नम्बर दिलाने वाली जानकारी से बिल्कुल विभिन्न होगी। जब तक कि इस दृष्टिकोण में परिवर्तन नही होता है मुझे भय है कि तब तक हमारे विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिये मौलिक ज्ञान के क्षेत्र में विशेष कामयाबी हासिल करना सम्भव न होगा। यह सत्य है कि हमारे यहां बहुत से मेधावी व्यक्ति हुए हैं जिन्हों ने अच्छी ख्याति पाई है। उन की जितनी प्रशसा की जाय-थोड़ी होगी। किन्तु वे तो मरुभूमि में इक्की दुक्की हरियाली के समान हैं, जो अपने कामों के कारण प्रख्यात हो जाते हैं किन्तु जो अपनी योग्यता के बावजूद देश की रूपरेखा को बदलने में सर्वथा असमर्थ रहते हैं।

हमारे देश में किसी समय गुरुकुलों की व्यवस्था थी। उस प्राचीन परम्परागत गुरुकुल व्यवस्था में शिक्षक और शिक्षार्थी में पारस्परिक बड़े घनिष्ट और निकटतम सम्बन्ध होते थे। अंग्रेज़ी शिक्षा व्यवस्था के प्रारम्भ होने तक व्यावहारिक दृष्टि से पाठशालाओं और मकतबों में भी यह घनिष्टता बहुत कुछ मौजूद थी। यद्यपि यह बात नही कही जा सकती कि इस में उस समय भी इस की आरम्भिक शुद्धता या प्रभुता थी किन्तु उस आदर्श से आधुनिक व्यवस्था शनैः शनैः दूर ही चली जाती रही है और आज हमारे विद्यालयों और पाठशालाओं में शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच मालिक और नौकर के सम्बन्ध के अतिरिक्त और कोई सम्बन्ध सम्भवत: नहीं है। विद्यार्थी शिक्षक की सेवाओं के लिये शुल्क देता है और शिक्षक दिन में कुछ घंटे पढ़ाने का काम कर देता है इस के अतिरिक्त दोनों में और कोई सम्पर्क नही होता। इस बारे में अपवाद हो सकते हैं। किन्तु मुझे भरोसा है कि स्थिति का ऐसा दिग्दर्शन कर के मै उस के रूप का भौडा चित्र नही दे रहा हूं। मुझे ऐसा लगता है कि विद्यार्थियों में जिस अनुशासन हीनता की बात आज कल

आ। लोग सुनते हैं वह इन्ही वर्तमान परिस्थितियों का स्वाभाविक परिणाम है। अनुशासन सर्वदा बलपूर्वक नही मनवाया जाता है वरन् उस की भावना तो हृदय के अन्दर से ही पैदा होती है। और इस प्रयोजन के लिये यह आवश्यक है कि कुछ स्वाभाविक परिस्थितियां मौजूद हों। आज ये परिस्थितियां मौजूद नही है और इसलिये हम कुछ अधिक अच्छे परिणामों की भी अपेक्षा नही कर सकते।

इसी समस्या के साथ विद्यार्थी के इस गुण के विकास की समस्या भी बंधी हुई है जिसे हम एक शब्द में चरित्र कह सकते हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था ने इस बात पर ध्यान देना छोड़ दिया है। किन्तु मेरा विचार है कि अन्ततोगत्वा विद्यार्थी के मानसिक, चारित्रिक और आध्यात्मिक गठन का महत्व और मूल्य केवल उस के लिये ही नहीं वरन् सारे देश के लिये उस के कोरे बौद्धिक विकास से कही अधिक है। यह ऐसी समस्या है जिसे हल करना है और मुझे इस बात का हर्ष है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था के इस पहलू पर विश्वविद्यालय आयोग ने विचार किया है।

एक बात और है जो मेरी दृष्टि मे अत्यन्त महत्वपूर्ण है और जिस के सम्बन्ध मे आयोग ने अपनी रिपोर्ट मे पर्याप्त विचार किया है और उसे पर्याप्त स्थान दिया है, वह एक नये प्रकार के विश्वविद्यालयों की जिन्हे हम ग्राम्य विश्वविद्यालय का नाम दे सकते है स्थापना का प्रश्न है। जब महात्मा गांधी ने बुनियादी तालीम की स्कीम देश के सामने रखी थी तो कुछ लोगों ने इसे क्रान्तिकारी स्कीम समझा था गो कि देश के ख्यातिनामा शिक्षा शास्त्रियो में से पर्याप्त अधिक ने इस का अनुमोदन किया था। और कामों की तरह जिन्हे उन्हों ने अपने हाथ में लिया था वे इस बारे मे भी बहुत ही स्थिरमत थे और उन की प्रेरणा से बहुत सी प्रान्तीय सरकारों ने इस प्रयोग को आरम्भ किया। पडौसी बिहार प्रान्त में किये जाने वाले इस प्रयोग से साधारणतया सम्बद्ध होने का मुझे भी सौभाग्य मिला था। यह प्रयोग एक छोटे पैमाने पर किया जा रहा था किन्तु सौभाग्यवश इसे पूरा किये जाने का अवसर मिला। ऐसी बात दूसरे प्रान्तों मे नही हुई। बहुत सी बाधाओं के बावजूद, जिन का सामना इसे करना पडा, यह अधिकृत व्यक्तियों की दृष्टि मे पूर्णतया सफल हुआ और इस ने प्रान्त के शिक्षा शास्त्रियों के सामने कार्य का नया क्षेत्र खोल दिया। मुझे ज्ञात हुआ है कि कार्यदक्षता का ध्यान रख कर इस व्यवस्था को अब विस्तृत क्षेत्र मे फैलाया जा रहा है। कार्यदक्षता तो योग्य और अच्छे शिक्षको की सख्या पर निर्भर करती है इसलिये मेरा विचार है कि इस व्यवस्था का विस्तार बहा इसी बात पर निर्भर करता है कि इस प्रयोजन के लिये विभिन्न प्रकार के शिक्षको की प्रशिक्षा में और उन्हे तैयार करने मे कितना समय लगता है। ग्राम्य विश्व विद्यालयो की योजना जैसा कि रिपोर्ट के लेखक स्वयं कहते है इसी योजना का ऐसे परिवर्तनों सहित विस्तार है जो उन्हें उचित जचे है। मुझे ऐसा लगता है कि उसी दशा मे शिक्षा के विस्तार की सिफारिश कर के आयोग ने देश की वर्तमान परिस्थितियों में सबसे बड़ी सेवा की है। अब यह विशेषज्ञों का और राज्य सरकारों और केन्द्रीय सरकार का काम है कि वे इन सिफारिशों को अमल में लाने के लिये व्यवहारिक बातो का निर्णय करें। मुझे इस में शंका नही है कि यह योजना देशवासियों के दृष्टिकोण में क्रान्तिकारी

परिवर्तन कर सकती है और ग्रामों की रूपरेखा को बेहतर बना सकती है। आज कल गांव से आनेवाला नौजवान मैट्रीकुलेशन परीक्षा पास कर लेने के पश्चात् ऐसे शहर में जहां उसे हर हालत में आज कल की मंहगी के कारण अपने खर्चे को अपनी आमदनी के अन्दर रखना और खास तौर से उस हालत में जब कि दफ्तर मे जाने के लिये उस की हैसियत वाले व्यक्ति को जो खर्च करना पड़ता है उस को भी इस मे शामिल कर लिया जाये तो उसे अपनी आमदनी के अन्दर ही रखना बहुत मुश्किल होगा वहां के किसी दफ़्तर में कुछ रुपये तनख्वाह वाली नौकरी पाने की कोशिश करता है। इस से तो कही बेहतर यही होगा कि वह अपने परिवार के पुराने धन्धे में ही लगा रहे और गांव के वातावरण में खेती को सुधारे और स्वास्थ्यजनक जीवन व्यतीत करे। किन्तु आज कल का तथाकथित शिक्षित नौजवान यह बात नही कर सकता। चूंकि वह पढ़ लिख गया है इसलिये अपने बाप या चाचा के खेत में उस के लिये काम करना सम्भव नही है। मेरे सामने एक प्रश्न सदा बना रहता है कि क्या सत्य ही हमारी शिक्षा का प्रयोजन हमारे लोगों को अयोग्य और परावलम्बी बनाता है ? क्या उसे उन को अधिक आत्मविश्वासी, जीवन संघर्ष का मुकाबला करने के लिये सुसज्जित और अपने परिवारों की और साथ ही साथ सारे देश की सेवा के लिये विशिष्टतया सुसज्जित करना नहीं है ? जो व्यवस्था अब तक कायम रही है उस ने गाव से उन लोगों को अलग कर दिया है जिन्हें शिक्षा पाने का अवसर मिला है और इस प्रकार गांवों को वही का वही रहने दिया है जहा वह पहले थे। इस शिक्षा के परिणाम स्वरूप गांव से उन के सर्वोत्तम व्यक्तियो के अलग हो जाने के प्रश्न पर आयोग ने वडी गहराई और चिन्ता से विचार किया है और वह इस निष्कर्ष पर पहुचा है कि इस दलदल से बचने का रास्ता सम्भवतः इन ग्राम्य विश्वविद्यालयों की स्थापना द्वारा निकल सकता है। ऐसा ही स्केन्डिनेविया के देशो में भी हुआ था। मै आप सबसे इस प्रश्न पर विचार करने का आग्रह करता हूं। और भी बाते हैं जिन पर आप को विचार करना है। किन्तु मै आप का और समय नही लेना चाहता। मुझे आशा है कि आप का ध्यान उन बातों की ओर आकृष्ट करने के लिये जो मुझे ठीक जची आप मुझे धृष्ट न समझेंगे। मुझे ऐसा लगा कि आप का जैसा मण्डल ऐसे प्रश्नों पर सब बातो को ध्यान मे रख कर विचार कर सकता है और इसी लिये मै ने उन की ओर आप का ध्यान आकृष्ट करने की स्वतन्त्रता वरती। इस आयोग में भाग लेने के लिये मुझे आप ने यह मौका दिया उस के लिये मै आप को धन्यवाद देता हू और चाहे मेरा इस मे कितना ही कम भाग क्यों न हो इस का उद्घाटन करने में मुझे बड़ी प्रसन्नता है।

काशी विश्व विद्यालय का विशेष समावर्त्तन

काशी विश्वविद्यालय के विशेष समावर्तन के अवसर पर भाषण देते हुए राष्ट्रपति ने कहा—

आपका विश्वविद्यालय भारत के विश्वविद्यालयों में एक प्रमुख स्थान रखता है। इसे यह रखना भी चाहिये क्योंकि यह एक ऐसी नगरी में है जो हमारी भारतीय संस्कृति और विद्या का

केन्द्र स्थान मानी जाती रही है। काशी नगरी का अपना एक विलक्षण इतिहास रहा है और वह इतिहास बड़ा ही समुन्नत, पवित्र और गौरवपूर्ण रहा है। जैसा कि आप जानते हैं यह बहुत पुरानी नगरी है। इस पुरानेपन के साथ साथ इसकी अपनी पवित्रता भी जुटी हुई है। गंगा गंगोत्तरी से निकल कर कई स्थानों से भ्रमण करती हुई यहां पहुंची है और काशी में आकर अपना विशेष स्थान प्राप्त करती है और काशी नगरी पवित्र मानी जाती है। यों तो गंगा कई नगरों, उपनगरों से गुजरी है पर ऐसे बहुत कम स्थान हैं जिनको काशी की गंगा की शोभा और आदर मिला है। यहां की गंगा का वर्णन आपके सामने क्या किया जाये जब आप उसके किनारे ही बसते हैं और दिन प्रतिदिन लाभ उठाते हैं। यहां वह घाट भी है जहां हमारे सन्त तुलसीदास जी ने उस उच्च और महान साहित्य काव्य का निर्माण किया जो आज घर घर पूज्यनीय है। ऐसे कई सन्त और महापुरुष तथा दानी इस नगर में रहे जो अपना उदाहरण हमारे लिये छोड़ गये हैं। यह बड़े सौभाग्य की बात है कि काशी आज भी अपने प्राचीन पुराने गौरव को शिक्षा केन्द्र बन कर कायम रख रही है।

यह भारतीय संस्कृति का केन्द्र स्थान रहा है और आज भी दूर दूर के देशवाले तथा भारत के कोने कोने से लोग इस नगरी के दर्शनार्थ तथा यहां की ऐतिहासिक कृतियों और संस्कृति से लाभ उठाने आते हैं। कुछ तो तीर्थस्थान समझकर आते हैं और पवित्र गंगा में ग़ोता लगा कर विश्वनाथ जी के मन्दिर की परिक्रमा कर अपने को धन्य मानते हैं और श्री अन्नपूर्णा जी के मन्दिर में मौन साधना करते हुए अन्न से परिपूर्ण करने का वरदान मांगते हैं। इस पवित्र नगरी से बहुतेरे अपने अपने स्थानो के लिये कुछ न कुछ अभ्यास कर, सीख कर ले जाते हैं और भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रतिरूप काशी में सहवास के लिये अपने को धन्य मानते है। यह सब आप के लिये सहज सुलभ है।

आपका यह विश्वविद्यालय भी बड़ा विख्यात हो गया है, इसलिये नही कि यहां बड़े बड़े आलीशान कालेज और होस्टेल के मकान बनाये गये हैं बल्कि इसलिये कि पूज्य मालवीय जी के पवित्र उद्देश्य का यह कीर्तिस्तम्भ माना जाता है। पूज्य मालवीय जी हमारे और हमारी भावी संतान के लिये अपनी कार्यकुशलता, रहन सहन, आचार विचार, तथा अपनी कीर्ति का यह नमूना छोड़ गये है। विश्वविद्यालय के खोलने में उन का उद्देश्य रहा कि यह वह विश्वविद्यालय हो जहा से सुसंस्कृत, योग्य और भारतीयता के मान और मर्यादा को बढाने वाले युवक निकले जो फिर से भारत का वह स्थान लौटा दें जो हम इसके प्राचीनतम इतिहास में पढते हैं। इस देश मे सैकड़ौ वर्षो से ब्रिटिश राज्य का प्रभुत्व रहा और उस ने कुछ विश्वविद्यालयो को खोला। उसके चलाने का उद्देश्य तथा भावना यह रही कि वह ऐसे विश्वविद्यालयों से ऐसे युवक तैयार करे जो शकल सूरत में भारतीय होते हुए भी उनकी विचार शैली, रहन सहन, तौर तरीक़ा पश्चिमी ढंग के हों और अंग्रेज़ीयत का जामा पहना कर उनके द्वारा ही यहां का राज्य चलावे। इसके विपरीत ही पूज्य मालवीय जी का इस विश्वविद्यालय के खोलने का उद्देश्य और भावना थी यद्यपि अब तक यह अपने उद्देश्य को उतना पूरा नहीं कर सका है जितना चाहिये पर आज भारत पूर्ण स्वतंत्र हो गया है, इसने अपने लिये एक संविधान बनाया है। इस के बनाने में यहा की सभी उलझी हुई समस्याओं को सुलझाने

और सरल बनाने को ध्यान में रखकर काफी उदारता से काम लिया गया है। यहां पहले पहल बालिग मताधिकार को माना गया है। जो इक्कीस वर्ष से ऊपर के हैं उनको यह अधिकार दिया गया है कि अपना सच्चा प्रतिनिधि चुनें और उनकी मदद करें, उनको सहयोग दें ताकि उनके लिये वह बढ़िया से बढ़िया व्यवस्था कर सकें। हमने सब जाति और धर्म की समानता मानी है। हमारे यहां अब से कोई ऊंच नीच, गरीब अमीर, जाति धर्म, पुरुष नारी का विभेद इसलिये नहीं किया जायेगा कि एक छोटा है और दूसरा बड़ा है, एक पिछड़ा हुआ है तो दूसरा उठा हुआ है। सबको एक सतह पर लाना ही इस सविधान के इस हिस्से का उद्देश्य है। यह विभेद इतना बढ़ गया था कि अबभी हम इतना बड़ा कदम उठाने में हिचकते थे और हमारी धारणा ऐसी बन गई है कि हमने उसे धर्म और कर्म का रूप दे रखा है और अपने किये पर भगवान के बनाने का रूप दे रखने का बहाना कर उन पर आप पार उतरना चाहते हैं। इस अन्ध विश्वास को अब मिटाना चाहिये और इसके मिटाने में तेजी से क़दम बढ़ाना चाहिये ताकि हम और दूसरे दूसरे सत्कर्मों की ओर बढ़े और उस से निकले सुफल का उपभोग कर सकें।

हमने उस में शिक्षा को बड़ा स्थान दिया है। जहां हमारे यहां शिक्षा का कितना बड़ा अभाव रहा है और यहां अशिक्षा का साम्राज्य ही फैल गया था। इस तरह हम करोड़ों करोड अशिक्षा रूपी अंधकार के गर्त मे भटक रहे थे। अब समय आया है कि उन सब के अन्धकार को हम दूर करें। ऐसी हालत में आप का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है चूकि यह आप का ही काम है कि आप बाकी लोगो को शिक्षित करे, उन्हे उठावें और स्वराज्य का मतलब समझावें। साथ ही ग्रामों की उन्नति तथा उनको साफ सुथरा रखने का क्या तरीक़ा हो सकता है जिस से लोगो का रहन सहन और उन का जीवन स्तर ऊंचा उठे ऐसा पाठ उन को पढ़ायें। इसमें विश्वविद्यालय जैसी संस्था को तुरन्त लग जाना है। वह जनता की सेवा करे और अपनी सेवा से उन के गिरे हुए स्तर को उठावे। हम शहर के चकाचौध में गांव को भूलते जा रहे हैं। उस ग्रामीण जनता के पास ही हमारे इस चकाचौध के कुल साधन हैं जिसका हम उपभोग करते है और उलटे उस को भूलते जाते हैं। मैं कहता हूं कि हमारे पास जो-उनके अन्धकार दूर करने के साधन और बुद्धि है उनके अन्धकार को दूर करने में हम लगायें और इसका फल उनको चखने दें और उनसे हमको जो जरूरत है लें और उन की जरूरत को पूरा करें।

हमने अपने संविधान मे हिन्दी को राजकीय भाषा माना है। अब तक हमारा सारा कारोबार दूसरी भाषा मे होता रहा है और हिन्दी को गौण स्थान में रखा गया था। हिन्दी भाषी प्रान्तों में भी हिन्दी एक प्रकार से तिरस्कृत भाषा रही है। पर अब जब कि देश आज़ाद हो गया और अपना काम अपने हाथ में आया तो यह लाज़मी था कि हम अपनी ही किसी भाषा को राजकीय भाषा मानें। हमें यह भी ध्यान रखना है कि वह राजकीय भाषा वैसी होनी चाहिये जिसके द्वारा हमारा सम्पर्क जनता जनार्दन के साथ अधिक से अधिक बढ़े और हम अपने किये काम को उन तक पहुंचायें और वह हमारे किये काम को अच्छी तरह समझे। भाव और व्यवहार को एक दूसरे पर व्यक्त करने के लिये भाषा का

बहुत बड़ा सहारा रहता है, और वह ऐसी ही भाषा होनी चाहिये जिस को आम लोग बोल और काम में ला सकते हों। भारत की अधिक जन संख्या के बीच यही भाषा बोली, पढ़ी और समझी जाती है। इसलिये इसे ही वह स्थान दिया गया है।

ज़माना बदल गया है। हमारे सामने बड़े बड़े काम आगये है। इन सब कामों को करने के लिये समृद्ध भाषा, साहित्य और शब्द चाहियें। हर क्षेत्र में हर तरह का साहित्य अपने स्थान में भरपूर होना चाहिये। हमारा देश गुलामी के गर्त में फंसा हुआ था और इसलिये हम सब दिशाओं में न खुद आगे बढ़ सके और न हमारा साहित्य ही। इसके मुकाबिले में दूसरे दूसरे देश जो स्वतंत्र रहे है वह क्रमशः आगे बढे हैं चाहे वह साहित्य में हों, कला में हों, भौतिक शास्त्र मे हो, खगोल, भूगोल, गणित या विज्ञान मे। इन सबों के लिये उनके साहित्य में अपने अपने शब्द बन गये है। इस तरह दूसरी भाषाओं के शब्दभंडार भरपूर है। अबतक हम अंग्रेजी के शब्द, केवल शब्द ही नहीं, साहित्य से भी काम चलाते रहे है। पर हमें इन सभी दिशाओं में बढने का कदम उठाना है और अपनी भाषा मे इन सब चीजों को लाने के प्रयत्न में लगना है। हमें अपना शब्द और साहित्य भंडार बढाना है। इस में अगर हम संकोच और सकीर्णता से काम लेंगे तो हम कंगाल के कंगाल ही रह जायेंगे और हम अपने को औरो की होड़ में नही ला जुटायेंगे और हम जल्दी सब की समता में नही आ सकेंगे। इसलिये अभी हमें शब्द और साहित्य को बढ़ाने में उदारता से काम लेना होगा। शक्तिशाली भाषा का माप भी यही हो सकता है कि वह जितने दूसरे शब्दं को लेकर अपने भाव और व्याकरण का लिवास पहनाकर पचा सके वह उतनी ही विकसित होकर दूसरे को भी उस से लाभ पहुचा सकती है। मेरा मतलब यह नही कि हम इन दूसरे दूसरे शब्दो को इतने अश मे ले ले कि हमारी भाषा का अस्तित्व ही मिट जाये।

आप का उत्तरदायित्व बहुत बढ गया है। इस तरह आप को नव-भारत के निर्माण में हाथ बटाना है। आप आज से यह विचार करें और सोचें कि आप की उपयोगिता किधर और किस दिशा मे है। कालेज तथा विश्वविद्यालय से निकले युवक का झुकाव नौकरी की ओर ज्यादा रहा है। वह वृत्ति अब छोड़नी चाहिये।

आखिर नौकरी भी सब को कहां तक मिल सकती है। इस प्रवृति के तो दो ही रास्ते निकल सकते है। या तो हर साल जितने युवक कालेज और विश्वविद्यालय से डिग्री लेकर निकलें सब के लिये जगह रखी जाये और बनायी जाये और यदि उन के लिये नौकरी की जगह नही हो तो कालेज और विश्वविद्यालय को बन्द कर दिया जाये। नहीं, विश्वविद्यालय का उद्देश्य लड़के और लड़कियों को सिर्फ नौकरी के लिये तैयार करना नहीं है बल्कि ज्ञान को विकसित करने के लिये, राष्ट्र निर्माण में हिस्सा बटाने के लिये और यहां की गरीबी, अविद्या, अशिक्षा आदि को दूर करने के लिये है। साथ ही प्रकृति ने इस देश को जो सम्पत्ति दी है उस की खोज निकाल कर उस को उपयोगी बनाना है। यह देश धनधान्य से परिपूर्ण है। हमारी अज्ञानता इसे खोज निकाल नहीं सकती। अब इसे आप को खोजना है और देश को सुखी बनाना है। यह काम एक आदमी या एक संस्था का नही है। इसे हम सब को मिल कर करना है। अब किसी खास आदमी की जवाबदारी है ऐसी बात

नहीं होनी चाहिये। आप का अपना राज्य है और आप अपने लिये राज्य प्रबन्धक चुनते हैं और यह अधिकार आप को मिला है। इसलिये आप यह नहीं कह सकते कि सरकार ऐसी है वैसी है। आप को अब से मानना होगा कि सरकार के साथ साथ आपकी भी अपनी जवाबदेही और अपना कर्त्तव्य है जिसे आप को करना है।

लोकशक्ति द्वारा अर्जित स्वाधीनता हमारे युग की सैन्य स्वाधीनता से भिन्न है। एक में नवनिर्माण का उत्तरदायित्व, भावी रक्षण का कार्य, राजा या सेनापति पर होता है। दूसरे में यही उत्तरदायित्व सामूहिक रूप से प्रत्येक नागरिक के ऊपर बंट जाता है क्योंकि लोकशक्ति द्वारा प्राप्त स्वाधीनता का विकास और ठहराव लोकतंत्र के आधार पर होता है। लोकतंत्र की सफलता व्यक्ति विशेष के गुण और कार्य पर अवलम्बित नहीं। सम्पूर्ण राष्ट्र जब तक सक्रिय रूप से शासन विधान और निर्माण के विषय में नहीं सोचता तब तक के लिये लोकतंत्र चंद व्यक्तियों की कार्यसीमा में बंध जाता है। ऐसा लोकशासन न तो लोकभावना का प्रतिनिधित्व करता है और न उस पर जनमत का अंकुश ही रहता है। "कोउ नृप होइ हमें का होनी," वाली भावना लोकतंत्र की सब से भयंकर शत्रु है।

सच्चे स्वराज्य के फैलाने, बढ़ाने और जनता तक पहुंचाने में आप का हाथ होना चाहिये। आप इस की उपयोगिता सिद्धकर करा सकते हैं। अगर आप का सहयोग इस में नहीं मिलेगा तो यह अधिक दिनों तक कागज़ी चीज़ ही रहेगी और बेचारी निरीह जनता इस के फल से लाभान्वित नहीं हो सकेगी और निराश हो जायेगी।

मैं चाहता हूं कि यह विश्वविद्यालय इस के पूज्य चिरस्मरणीय संस्थापक के सदुद्देश्य को पूरा करे और जिनको इसकी सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है वह अपने कर्तव्य को पूरी तरह समझ लें और उन का पालन करें।

काशी में सार्वजनिक सभा

ता० २८ फ़रवरी १९५० की संध्या को काशी की सार्वजनिक सभा में राष्ट्रपति ने कहा—

बहिनो और भाइयो,

अभी आठ दस घंटे ही हुए हे जब कि हम इस काशी नगरी में पहुचे है। इस समय से लगातार अब तक कितने ही भाई और बहनों ने जो प्रेम दिखलाया है, जो मेरा स्वागत किया है उसके लिये मैं किस तरह आप सब का धन्यवाद करूं यह मैं नहीं जानता। मुझको जो सन्मान और प्रेम आप से मिला है और आप ने जो यह आदर दिखलाया है वह मेरा नहीं बल्कि उस पद का है जिस पर राष्ट्र ने मुझे बैठा दिया है। मै तो वहां आप सबों की शोभा बढ़ाने के ख़्याल से ही नियुक्त किया गया हूं। इसलिये मैं यह मानता हूं कि यह सब सम्मान उस पद के लिये है मेरे लिये नहीं।

थोड़े ही दिनों में इस देश के अन्दर एक ऐसी घटना घटी है जिस का अर्थ हम अभी पूरी तरह से नहीं समझ सके हैं। कन्याकुमारी से हिमालय तक और बंगाल की खाड़ी से अरब सागर तक फैले हुए इस देश के अन्दर इन थोड़े दिनों के अन्दर ऐसी ऐसी घटनाएं घटी हैं जिन की मिसाल अब तक के इतिहास में देखने को नहीं मिलती। वह इतिहास भी तो पर्याप्त पुराना और अनेक उतार चढ़ाव वाला है। किन्तु इतिहास के इस पन्ने को अभी हमने उलटा ही है, हम उसको पढ़ नहीं पाये हैं। इसलिये इस घटना का सही महत्व हमारी समझ में अभी नहीं आ पाया है। हमने प्राचीन इतिहास में गणराज्य के सम्बन्ध में बहुत कुछ पढ़ा और देखा है। उस युग में बहुत जगह गणराज्य वर्तमान थे। पर आज जो गणराज्य स्थापित हुआ है वैसा अब तक संसार में कभी न था। मैं यह बात इसलिये कहता हूं क्योंकि हमारा वर्तमान गणराज्य सारे भारत को एक सूत्र में बांधे हुए है। भारत का कुछ हिस्सा बंटवारे के कारण हमारे हाथ से निकल गया है किन्तु जो बचा है वह भी रूस को निकाल देने के बाद बचे हुए यूरूप के बराबर है। भारत के ३२,३३ करोड़ वासियों को एक छत्र राज्य में कर के यह गणराज्य बना है। ऐसे गणतंत्र की मिसाल इतिहास में नहीं मिलती। यह कैसे बना आप सब जानते हैं। जब हम इस बात का स्मरण करते हैं कि गांधी जी की राह पर चलकर हमने यह गणराज्य बना पाया है तो हमें और भी खुशी होती है। इस खुशी की मात्रा तब और बढ़ जाती है जब हमारे ध्यान में यह बात आती है कि हमने हथियारों का प्रयोग किये बिना ही इतने विशाल और शक्तिशाली साम्राज्य से राजसत्ता अपने हाथ में कर ली और इतने बड़े गणराज्य की स्थापना कर ली। इस अभूतपूर्व सफलता के आधार पर हम कह सकते हैं कि महात्माजी का बताया रास्ता ईश्वरीय चमत्कार ही है।

जब १९४७ ई० में इस देश को छोड़ कर अंग्रेज गये तो उस समय देश के सामने कई समस्यायें थीं। कुछ तो हल हुई हैं और कुछ बाक़ी भी हैं। इस देश के जितने रजवाड़े थे और उन की संख्या करीब करीब ५६४ के लगभग थी, उन सब के साथ अंग्रेजों के अपने सुलहनामे थे जिन से कि ये राज्य अंग्रेजों से बंधे हुए थे। जब अंग्रेज यहां से जाने लगे तो उन्होंने इन सुलहनामों को समाप्त कर दिया और इन रजवाड़ों को भी भारत के अन्य हिस्सों की तरह आज़ाद कर दिया। इस तरह इन रजवाड़ों का बाक़ी भारत के साथ कोई बन्धन नहीं रहा। स्मरण रहे, उस समय ५६४ रजवाड़े थे। अगर वे चाहते तो उन में से हर एक अपने को स्वतन्त्र कर सकता था। इस काम में वे कहां तक सफल होते यह दूसरी बात है। पर उनकी उच्च अभिलाषा, देश के प्रति प्रेम और उन के प्रति हमारे भी प्रेम के फलस्वरूप उन्होंने अवशिष्ट भारत से एक हो जाना ही उचित समझा। इसलिये आज हम देखते हैं कि सारा भारत और उस के सारे वासी एक हैं और हम सब मिलकर एक राष्ट्र की सेवा करने में लगे हुए हैं और समझने लगे हैं कि उस की सेवा में ही हमारा कल्याण है और उस की भलाई में ही हमारी भलाई है।

हमने स्वराज्य प्राप्त किया पर क्या हमने इसको पूरी तरह समझा है? इसको पूरी तरह सुरक्षित रखने के लिये हमने क्या कुछ किया है? अगर हम अपने अपने फ़र्ज को अदा नहीं करेंगे तो उस का क्या नतीजा होगा क्या इस को हमने समझ लिया है? मैं हमेशा कहता

हूं कि किसी देश के लिये कितना ही बढ़िया संविधान क्यों न बनाया जाये पर यदि उस को ठीक से काम में लाने वाले न हों तो वह संविधान किस काम का सिद्ध हो सकता है ? हमारे सामने ऐसे हजारों प्रश्न हैं जिन को हमें हल करना है । हर एक को हल करने के लिये हमें अच्छे से अच्छे काम करने वालों और सेवकों की जरूरत है । अगर हम सब ने अपना अपना कर्त्तव्य समझ लिया और ठीक समझ कर अपना अपना काम किया तो देश का भला होगा और हम सबकी उन्नति होगी । अगर ऐसा नहीं हुआ तो सच्ची स्वतंत्रता नहीं रहेगी और गणतंत्र भी नहीं रहेगा । प्रजातंत्र का सच्चा अर्थ यही है कि प्रजा राज्य को अपना समझे । इसलिये हम ने बालिग मताधिकार का विधान किया है । अब २१ वर्ष और उस से अधिक आयु वाले नागरिकों को यह अधिकार है कि वे अपने लिये प्रतिनिधि चुनें । अच्छी अवस्था बनाने का काम इन निर्वाचित प्रतिनिधियों का होगा । जनता को इस बात के समझाने का काम आप लोगों का है । आज विश्व विद्यालय में भी मैं ने यही कहा था कि इस दिशा में शिक्षा संस्थाएं नुमायां कार्य कर सकती हैं और जनता को बता सकती है कि इस अधिकार का वह कैसे प्रयोग करे ।

शहरों के लोगों को अधिक लोगों से मिलने का मौक़ा मिलता है । इसलिये आप का भी यह काम है कि जब भी आप से कभी गांव के लोग मिलें तो आप उन को इस अधिकार की बात और उस के उचित प्रयोग की रीति बतावें । यह बालिग मताधिकार का उचित प्रयोग सरल बात नहीं हैं । यह तो दुधारी तलवार के समान है । इस का हितकर प्रयोग भी हो सकता है और हानिकर भी । यदि जनता को ठीक न समझाकर उस से इस का ग़लत प्रयोग करा लिया गया तो बुरा नतीजा निकलेगा । अब थोड़े-ही दिनों में आम चुनाव होने वाला है । उस में अपने लिये प्रतिनिधि चुनने में आप को बड़ी सावधानी से काम लेना है । यह बात में किसी विशेष वर्ग को संकेत करके नहीं कह रहा हूं बल्कि मेरे इस कथन का सम्बन्ध तो देश के सब नागरिकों से है जिन्हें अपने लिये प्रतिनिधियों को चुनना है । जैसा मैं ने अभी अभी कहा हमें अच्छे और सच्चे ईमानदार लोगों की जरूरत हैं । चुनाव में सब को यह ध्यान रखना है कि इस प्रकार के प्रतिनिधि ही चुने जायें ।

आप कहते हैं कि आज कल लोगों में बेईमानी और रिश्वतखोरी का बोलबाला है । किन्तु जब काफ़ी लोग इस बात की शिकायत करते हैं तो इस में कुछ सत्य हो सकता है । जहां धुंआ उठता है वहां आग होगी ही । इसी तरह इस में भी कुछ न कुछ सत्य हो सकता है । यदि इस में कोई सच्चाई न हो तो मुझे सब से बड़ी खुशी होगी । किन्तु फिर भी मैं समझता हूं कि इस संभाव्य दोष को दूर करने के लिये यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने कार्यक्षेत्र में हर प्रकार की खराबी को दूर करने में लग जाये । खराबी को दूर करने के लिये यह चीज़ ज़रूरी नहीं है कि सब के सब सही रास्ते पर हों । जैसा कि गांधीजी कहते थे कि एक पुरुष यदि सच्चा सत्याग्रही हो जाये तो उस का भी बड़ा प्रभाव होता है । एक का भी पूरा सत्याग्रही बनना आसान बात नहीं । गांधीजी खुद अपने लिये कहा करते थे कि मैं भी पूरा सत्याग्रही नहीं हूं पर जो कुछ उन्होंने किया वह भी हमारे लिये उदाहरणीय है । हम लोगों का यह सौभाग्य था कि ऐसे महात्मा के साथ हमारा सम्पर्क रहा और उन के

के भी विद्वान सदस्य थे । उन्होंने बहुत परिश्रम कर के सभी विश्वविद्यालयों की अध्यापन पद्धति और दूसरी बातों की जांच की और एक बड़ी व्यापक रिपोर्ट दी है जिस में शिक्षा के सभी पहलुओं पर बहुत गहराई से विचार किया गया है और बहुत ही मार्के का सुझाव दिया गया है । मैं समझता हूं कि भारतवर्ष की सभी यूनीवर्सिटियां उस रिपोर्ट पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगी और आप भी उस में से जो कुछ आप के योग्य बताया गया हो मन्जूर करेंगे । मैं केवल एक विषय की ओर आपका विशेष ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं क्योंकि दो कारणों से इस सूबे का उस विषय से विशेष सम्बन्ध है। एक तो यह है कि इस सूबे में पिछले ३०-३५ वर्षों के अन्दर शिक्षा का प्रचार बहुत बढ़ गया है । स्कूलों की संख्या तो बहुत बढ़ ही गई है कालेजों की संख्या भी बहुत बढ़ी है और बढ़ती ही जा रही है । पर शिक्षा पद्धति में और कार्यक्रम में कोई परिवर्तन नही हुआ है। जो कुछ पटना यूनीवर्सिटी के नियमों के अनुसार चल रहा था उसी को घटा बढ़ा कर इन नये खोले गये स्कूलों तथा कालिजों में भी जारी रखा गया है और इस बात की भी कोशिश हो रही है कि नई यूनीवर्सिटियां भी कायम की जायें। यह सतोष का विषय है कि लोगों में शिक्षा सम्बन्धी उत्साह और दिलचस्पी देखने में आ रही है पर इतना ही काफी नही है । उस उत्साह का अच्छा से अच्छा उपयोग किया जाय तभी उस से अपेक्षित अच्छा फल निकल सकता है ।

हमारी शिक्षा पद्धति की बड़ी त्रुटि यह रही है कि जो लोग यूनीवर्सिटी से पढ़ कर निकलते हैं उन को न तो किसी विशेष धन्धे के लिये ही योग्य हमारी शिक्षा पद्धति बनाती है और न उन में ऐसी व्यापक विद्या ही वह दे सकती है कि आधुनिक दुनियां के शिक्षित समाज में उन को कोई अच्छा स्थान मिल सके। इस तरह वह विद्या न तो अर्थकारी होती है और न ज्ञानदायिनी एक बुरा नतीजा यह भी होता है कि जो शिक्षा पा लेते है वह हाथ से काम करना और शरीर-श्रम को हेच निगाह से देखने लगते है। बहुत वर्षों की बात है कि मेरे गांव के नजदीक के एक लड़के ने जिस के घर के लोगों से मेरा परिचय था मेरे पास पत्र लिखा कि मैं मैट्रीकुलेशन पास कर चुका, मुझे कोई नौकरी दिलवा दीजिये और मैं अब घर का काम नही कर सकता जो और लोग करते है। वह अच्छे किसान घर का लड़का था और घर के लोग खेती कर के सुख से रहा करते थे। उस काम को करने में वह अपने को असमर्थ पाता था और नौकरी की फिक्र में जिस में, न तो कोई विशेष प्रतिष्ठा मिलती और न बहुत पैसे, तलाश में था। मैं ने इस में उस का कोई दोष नहीं देखा। यह तो दोष शिक्षापद्धति का था कि अपने खानदानी काम को वह तुच्छ समझने लगा और किसी नये अच्छे काम के योग्य भी नहीं हुआ। यही सिलसिला अब बहुत जोरों से और बहुत बड़े पैमाने पर इस प्रान्त में बढ़ गया है और बढ़ता ही जा रहा है। जिसका नतीजा दो प्रकार से देश के लिये बहुत ही हानिकर हो रहा है। यों तो अक्षर ज्ञान से थोड़ा बहुत जो कुछ स्कूलों में और कालिजों में लोग सीख लेते हैं उस से उन को कुछ न कुछ लाभ पहुंचता ही है पर समाज को दो विशेष नुकसान पहुंचते हैं। पहली बात तो यह होती है कि जो इस प्रकार से शिक्षित हो जाते है और वह अपनी जैसी योग्यता समझते हैं उसकी दूसरे न तो उतनी क़दर करते है और न जितनी आशा ले कर वह शिक्षा समाप्त करते हैं वह समाज पूरी करता है। इस का नतीजा यह होता है कि उन के दिलों में समाज के प्रति और अपनी सारी जिन्दगी से एक प्रकार का द्वेष और संघर्ष पैदा हो जाता है और उन की सारी जिन्दगी निराशा-

पूर्ण हो जाती है । वह एक हतोत्साह थके हुए मनुष्य की तरह नवजवानी से ही दिन गिनने लगते हैं और किसी चीज में न तो उन की दिलचस्पी रह जाती है और न कोई जीवन में उच्चाभिलाषा । दूसरे वह जो कुछ सीखते हैं और जानते हैं उस का लाभ गांवों को नहीं मिलता क्योंकि इस प्रकार के शिक्षित लोग गांव में रहना पसन्द नहीं करते । उन की जिन्दगी ही ऐसी बन जाती है कि वह शहर के चहल पहल को अधिक पसन्द करने लगते है और इतने अधिक शिक्षित लोगों के शिक्षित होने के बावजूद हमारे गांव जैसे के तैसे रह जाते हैं। शहरों की आबादी बहुत बढ़ती जा रही है । शिक्षित उत्साही उच्चाभिलाषी सभी लोग गांव को छोड़ कर शहरों में आ जाते है चाहे वहां आने पर उन की जो भी दुर्गति हो । गांव की स्वस्थकर जिन्दगी उन से छूट जाती है और शहरों का सुख बहुत थोड़े ही लोगों को नसीब होता है । इस तरह एक ओर समाज के प्रति असन्तोष और द्वेष की भावना बढती है और दूसरी ओर जो गांव को उन्नत बना सकते थे वह असफल मनोरथ शहरवासी बन जाते हैं। इस से देश का कितना बड़ा नुकसान होता है इस का अनुमान लगना कठिन है। जिन लोगों ने इस विषय का अनुसंधान किया है उन का कहना है कि जो लोग गांव से आकर शहरों में बसते हैं उन की तीन चार पीढ़ी से अधिक नही चलती और इस तरह अच्छे से अच्छे लोग गांवों से शहरों में आकर अपनी समाप्ति कर देते हे। इस लिये इन स्कूलों, कालेजों तथा यूनीवर्सिटियों को बढ़ाते चले जाने के पहले इस विषय पर हम को सोचना चाहिये कि क्या इस पद्धति को जारी रखना जरूरी है, और इस से क्या सचमुच हम लाभ उठा रहे हे या केवल भेड़ीधसान कर रहे हैं।

इस के अलावा इस प्रान्त में एक बड़े मार्के का काम हुआ है। जब सन् १९३८ में महात्मा गांधी जी ने नई तालीम की योजना देश के सामने रखी तो सभी प्रान्तों में कुछ न कुछ काम शुरू किया गया। इस प्रान्त का यह सौभाग्य रहा कि यद्यपि वह प्रयोग छोटे पैमाने पर शुरू किया गया वह किसी न किसी तरह एक प्रकार से पूरा हो सका और देखा गया कि यद्यपि वातावरण और परिस्थिति पूरी तरह अनुकूल नहीं थी तो भी जो सुविधा मिली उस से ही वह प्रयोग सफल साबित हुआ और में ने सुना और मुझे यह जान कर बड़ा सन्तोष हुआ कि अब उस को और भी बढ़ाने का प्रयत्न किया जा रहा है। इस से भी बढ़ कर संतोष का विषय यह है कि जनता इस विषय में बहुत दिलचस्पी ले रही है और अपनी दिलचस्पी और उत्साह को क्रियात्मक रूप में जमीन का दान दे कर और दूसरे प्रकार से पूरा कर रही है। इस का अधिक प्रसार और प्रचार हुआ और इस में मैं बहुत आशा के चिन्ह देख रहा हूं।

यूनीवर्सिटी कमीशन की रिपोर्ट में एक बड़ा अध्याय ग्रामीण यूनीवर्सिटी के नाम से दिया गया है जिस में यह दिखलाया गया है कि जो नई तालीम या बुनियादी तालीम गांधी जी ने आरम्भ की थी उस को और भी किस तरह बढ़ाया जा सकता है और उच्चशिक्षा किस तरह गांवों में रहते हुए लोगों को दी जा सकती है और किस तरह उच्चशिक्षा को पा कर भी लोग गांवों में रहते हुए स्वयं अधिक सुखी रह सकते हैं और साथ ही गांवों की भी उन्नति कर सकते हैं। इस लिये मैं ने कहा कि उस रिपोर्ट के इस अध्याय का इस प्रान्त के लिये विशेष महत्व है क्योंकि वह प्रचलित प्रथा के अनुसार विद्यालय बढ़ते जा रहे हैं और उन के द्वारा गांवों

के हित के बदले अहित होना सम्भावी है। यदि इस पद्धति का रुख बदल दिया जाये जिस के लिये बुनियादी तालीम ने बुनियाद डाल दी है और ज़मीन तैयार करदी है तो सारे प्रान्त का सुधार हो जाये और उस की हालत ही बहुत कुछ बदल जाये। मैं चाहता हूं कि यूनीवर्सिटी के लोग और दूसरे लोग जो शिक्षा में दिलचस्पी रखते हैं इस विषय का अध्ययन करें और शिक्षालयों का रुख, कार्यक्रम, शिक्षा पद्धति बदल दें जिस में जो लाभ रिपोर्ट में नई पद्धति में दिखलाया गया है वह हम उठा सकें, जो उत्साह आज जनता में देखने में आ रहा है उस का सदुपयोग हो जाये और जिस तरह हम बुनियादी तालीम के प्रयोग में आगे रहे हैं उसी तरह उस प्रयोग के नतीजे से पूरा पूरा लाभ उठा कर जो नई दिशा ग्रामीण यूनीवर्सिटी कायम करने की रिपोर्ट में दिखलाई गई है उस ओर हम आगे बढ़ें। जो लोग नये कालेज और नयी यूनीवर्सिटी खोलने के फ़िक्र में हैं उन से मेरा अनुरोध है कि विशेष कर इस विषय पर विचार करें और लकीर के फकीर न बन कर नये रास्ते पर चल कर देश का लाभ करें।

रिपोर्ट में कहा गया है कि बहुत कर के जो कुछ डेनमार्क के गांवों के लिये वहां की ग्रामीण शिक्षापद्धति द्वारा किया गया है उसी से प्रभावित होकर और जो बुनियादी तालीम की नीव गांधी जी ने डाली उस पर यह बड़ी इमारत खड़ी करने का मन्सूबा यूनीवर्सिटी कमीशन ने किया। डेनमार्क यद्यपि एक छोटा देश है जिस की सारी आबादी ४० लाख के लगभग है, सुखी लोगों का देश है जिस में सभी लोग शिक्षित भी हैं और जिस में धनी के धन और गरीब की गरीबी में इतना बड़ा अन्तर नही है जितना और देशों के धनी और गरीबों में पाया जाता है। सभी लोग प्रायः मध्यम वृत्ति के हैं और बिना किसी दूसरे देश और दूसरे लोगों के साथ कोई इस प्रकार का विशेष प्रबन्ध रखे हुए जो योरप के अनेक देश एशिया और अफ्रीका के देशों के साथ रखते हैं, वे सुखी हैं! और सब बातों में भी वह योरप के दूसरे देशों के मुकाबले में कम उन्नत नहीं हैं बल्कि कई बातों में योरप के लोग ही उन्हें अधिक उन्नत मानते हैं। इस का एक विशेष कारण उन की शिक्षा पद्धति है जिस का आरम्भिक भाग बुनियादी शिक्षा और अन्तिम श्रेणी ग्रामीण यूनीवर्सिटी में देखा जा सकता है। यह नई पद्धति केवल हमारी शिक्षा में ही क्रान्ति नहीं लायेगी, हमारे जीवन में भी क्रान्ति लायेगी जिस से लाभ तो होगा ही, हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का भी आधुनिक विज्ञान के साथ एक ऐसा सुन्दर समन्वय हो जायेगा जो सब के जीवन के लिये एक आदर्शरूप होगा। इस लिये मैं चाहता हूं कि जो लोग बिहार में नई यूनीवर्सिटी स्थापित करने को सोच रहे है वह केवल पुरानी यूनीवर्सिटियों की नकल कर के ही संतुष्ट न हों, इस ग्रामीण यूनीवर्सिटी की योजना को ही मान कर अपना काम पूरा करें। जब से मेरा सम्पर्क पूज्य महात्मा गांधी जी के साथ हुआ तब से ही मेरा आदर मौजूदा पद्धति और शिक्षा संस्थाओं के प्रति कम हो गया और यद्यपि कई मित्रों ने पुराने ढर्रे की संस्थाओं की स्थापना के लिये बहुत परिश्रम किया, मेरी कोई विशेष दिलचस्पी उस में नही रही पर मै राष्ट्रीय विद्यालयों और नई तालीम के साथ काफ़ी दिलचस्पी रखता रहा हूं। और आज जब प्रजातन्त्रात्मक गणराज्य की स्थापना हो गई है और यूनीवर्सिटी कमीशन की सिफ़ारिशें सामने आ गई हैं तो मेरी दिलचस्पी इस नई तालीम में और ग्रामीण यूनीवर्सिटी में और भी बढ़ गई है और मैं चाहता हूं कि इस प्रयोग को जो इस सूबे ने सफलता पूर्वक चलाया है उस के आगे की

सीढ़ियों पर यह प्रदेश बढ़े और ग्रामीण यूनीवर्सिटी की स्थापना सब से पहले कर के नया आदर्श देश के सामने रखे ।

ग्रामीण यूनीवर्सिटी के अलावा मौजूदा यूनीवर्सिटियों के सुधार के लिए और उन की प्रगति के लिए नई दिशा का निर्देश भी बहुत ही सुन्दरता और गम्भीरता के साथ यूनीवर्सिटी कमीशन ने किया है । मै उसकी चन्द सिफ़ारिशों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं जिसमें इस यूनीवर्सिटी को और इससे सम्बद्ध स्कूल और कालेजों को आप सुधार सकें । मैं यहां केवल इशारा मात्र कर सकता हूं । पूरी सिफ़ारिश और उसके महत्व को समझने के लिए तो रिपोर्ट को ही पढ़ना चाहिये । गणराज्य की सफलता के लिए उन लोगों में जिनके हाथों में अधिकार दिया गया है कुछ गुण होने चाहियें । लोग बहुधा कह दिया करते है कि इस देश के लोग बहुत करके निरक्षर है इसलिए वह बालिग मताधिकार का ठीक उपयोग नहीं करेंगे । मैं यह नही मानता हूं । मेरा विचार है कि अक्षर ज्ञान के बिना भी हमारे सारे देश के लोगों में संस्कृति की ऐसी पुट है और साधारणतया उनमें इतनी बुद्धि और विवेक है कि यदि उन को अपने स्वत्वों और दायित्वों को ठीक समझा दिया जाये तो वह इस अधिकार का सदुपयोग करेंगे । इसका अर्थ यह नहीं है कि मै अक्षर ज्ञान और पुस्तकी ज्ञान को महत्व नहीं देता हू । उनका महत्व है पर यह नही मानना चाहिये कि जब तक वह ज्ञान जनता को प्राप्त न हो जाये तब तक वह निकम्मी बनी रहेगी । बात यह है कि जिस प्रकार का पुस्तकी ज्ञान आज हमको मिलता है वह कुछ बहुत काम का नही है । विशेषकर के नई परिस्थिति में उससे उतना काम नहीं निकलेगा जितने की हम अपेक्षा करते है । यूनीवर्सिटी कमीशन ने इस बात को समझ कर के प्रचलित पद्धति में हेरफेर की सिफ़ारिश की है । एक मार्के की सिफ़ारिश यह है कि किसी विशेष विषय के ज्ञान से ही हमको संतुष्ट नहीं होना चाहिये । विशेष ज्ञान के पहले साधारण ज्ञान ऐसा होना चाहिये जो मनुष्य को जीवन संग्राम में सफल बना सके, जो उस के विवेक बुद्धि को इस तरह जागृत कर सके कि जो प्रश्न उसके सामने आवे उसको वह समझ सके और आवश्यकतानुसार निर्णय कर सके जो अधिक ज्ञान प्राप्त करने की अभिलाषा को हमेशा जागृत रखे और जो प्रत्येक मनुष्य को उसको अपना स्थान समाज और देश में ठीक बता दे और जो उसमें अपने कर्तव्यों के प्रति निष्टा जागृत कर दे । इस प्रकार की शिक्षा को उन्होंने जनरल एजुकेशन का नाम दिया है । मैं इसे एक बड़े महत्व की सिफ़ारिश मानता हूं कि इस पर उन्होंने इतना ज़ोर दिया है ।

शिक्षा के माध्यम के सम्बन्ध में उन्होंने बहुत गवेषणा की है और बतलाया है कि मातृ-भाषा का और राजकीय भाषा का शिक्षाक्रम में क्या स्थान होना चाहिये और उनके अभ्यास के लिए कितना समय और श्रम लगाना चाहिये । जहां की राजकीय भाषा और मातृभाषा एक ही है वहां के लोगों के लिए संस्कृत अथवा दूसरी प्राचीन भाषा का और भारतीय दूसरी प्रान्तीय भाषाओं में से कम से कम एक का ज्ञान उन के लिए किस तरह और क्यों आवश्यक समझना चाहिये । हिन्दी प्रदेश होने के नाते इस सम्बन्ध में बिहार का विशेष दायित्व है और बिहार की यूनीवर्सिटी को अपना कर्तव्य समझ कर इसे पूरा करने में अग्रसर होना चाहिये । मै मानता हूं कि जो पन्द्रह वर्ष की अवधि हमारे संविधान में अंग्रेजी को राजकीय भाषा रहने देने के लिए दीं गयीं है वह इस लिए दी गयी है कि एक तरफ़ तो हिन्दी इतनी समद्ध और सुगम हो

जाये कि उसमें सब काम आसानी से चलाया जा सके और दूसरी ओर अहिन्दी भाषी प्रदेशों के लोग हिन्दी का इतना ज्ञान प्राप्त कर लें कि वह हिन्दीभाषियों के मुकाबिले में पीछे न रह जायें। इन दोनों उद्देश्यों को पूरा करने में हिन्दी भाषी प्रान्तों की यूनीवर्सिटियां बहुत काम कर सकती हैं। हिन्दी की शब्दावलि को बढ़ाना, हिन्दी रचना की और व्याकरण की और लेखनशैली की उन्नति करना और हिन्दी साहित्य में सभी विषयों के उच्च कोटि के ग्रन्थों का निर्माण करना, हिन्दी को सार्वदेशिक भाषा बनाने के लिए आवश्यक हैं। दूसरी ओर अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी के सम्यक् और शीघ्रप्रचार के लिए हिन्दी भाषी लोगों की सहायता और सेवा आवश्यक और अपेक्षित है। इस लिये पटना यूनीवर्सिटी का यह धर्म है कि वह इन दोनों प्रकार के कामों को हाथ में ले और तेज़ी से आगे बढ़े। इसे एक अच्छा सुअवसर भी मिला है। आपके वायस चान्सलर इस काम को अच्छी तरह कर सकते है। उनमें योग्यता है और उनके सामने अपने पूज्य पिता बाबू राम-दीनसिंह और अग्रज बाबू रामरणविजय सिंह का हिन्दी के प्रति प्रेम और सेवा का उदाहरण है जिसके अनुसार चलना एक प्रकार से पैतक ऋण चुकाने के समान उनका कर्तव्य है।

यूनीवर्सिटी कमीशन ने विद्यार्थियों के चरित्रगठन के सम्बन्ध में भी जो सिफ़ारिश की है वह विचारने योग्य है। साधारण लोगों के सामने सुचरित्रता का नमूना पेश करना शिक्षित लोगों का धर्म है। वह मौखिक व्याख्यानों द्वारा नही पूरा किया जा सकता है। उसके लिए उनको स्वयं सुचरित्र होना होगा और अपने जीवन द्वारा दूसरों को शिक्षा देनी होगी। हमारी आधु-निक शिक्षा पद्धति मे यह एक बड़ा दोष रहा है कि चरित्रगठन की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता रहा है। शायद ऐसा मान लिया गया है कि इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है पर मै इसे भारी भूल समझता हूं। यदि एक छोटी पुस्तक में लिखी बातों में परीक्षा देने के लिए लम्बी तैयारी करनी पड़ती है तो यह सोचना कि चरित्र जो मनुष्य के रहन सहन, रंग ढंग सब को प्रभावित करता रहता है वह अनायास ही बिना श्रम के ही ठीक ढल जायेगा एक दुराशामात्र है। इसलिए हमारे सारे कार्यक्रम में कुछ ऐसे क्रियात्मक प्रयोग अथवा उद्योग होने चाहियें जो चरित्र को ठीक ढांचे पर ढालें और सत्य के प्रति श्रद्धा, सेवा के प्रति प्रेम और निःस्वार्थ में सच्ची स्वार्थपरता देखने की शक्ति देवे।

हमारी शिक्षा पद्धति में आजकल परीक्षाओं का बड़ा ऊंचा स्थान और महत्व है। इस सम्बन्ध में भी कमीशन ने अपनी सिफ़ारिशें की है। मै इन चन्द बातों की ओर आपका ध्यान इस लिए आकर्षित कर रहा हूं कि आप इन पर विशेष करके तथा दूसरी सिफारिशों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करें और अपनी पद्धति में आवश्यक सुधार लावें जिसमें आज की नई परिस्थिति में यह सूबा शिक्षा संस्थाओं से पूरा लाभ उठा सके।

सदाकत आश्रम

सदाकत आश्रम में ४ मार्च १९५० को बोलते हुए राष्ट्रपति ने कहा—

मैं झण्डा अभिवादन के समय ही बोलना चाहता था परन्तु उद्गार व्यक्त करने के लिये मुझे कोई उपयुक्त शब्द ही नही मिल रहे थे। यहां मेरी जिन्दगी के २५, ३० वर्ष बीते है। इसके लिये मै और क्या कहूं। यह तो मेरा घर है। यहां मेरे स्वागत की कोई आवश्यकता न थी। स्वा-

गत करके तो आपने कुछ ऐसा कर दिया है कि मैं यहां का हूं ही नहीं। पर मैं इस अधिकार को छोड़ नहीं सकता। मैं यहां अपने घर को देखने आया हूं, गायों को देखने आया हूं और खेतों को देखने आया हूं, यहां के वासियों को देखने आया हूं जिन्हें मैं अपना ही समझता हूं।

मैं ने बापू से कुछ सीखा है। मैं आपसे भी कहूंगा कि आप उन की शिक्षा पर चलें। बापू हिन्दू मुस्लिम एकता को सबसे बड़ा काम समझते थे। वे मानते थे कि उसी पर देश की सुख समृद्धि निर्भर करती है। यह आश्रम है, इसलिये हम इससे इसकी विशेष अपेक्षा करेंगे।

इसकी एक अपनी परम्परा रही है। मौक़ा आने पर यहां के वासी देश के कठिन समय में काम आये है और उन्होंने परिस्थितियों को संभाला है। आप यह न समझें कि स्वतन्त्र होने के बाद आपका काम समाप्त हो गया। मैंने अभी कल काशी विद्यापीठ के विद्यार्थियों और अध्यापकों के बीच कहा कि आज भी ग़ैर सरकारी संस्थाओं की आवश्यकता है। उनका काम है कि वे सरकार का पथ प्रदर्शन करें। वे देश के रचनात्मक कामों में सर्वप्रथम क़दम उठा सकती हैं और यही मेरी अपेक्षा आपसे भी है। सरकार तो देश की समस्याओं को हल करने का प्रयत्न कर रही है और करती रहेगी किन्तु इनका हल करने में जनता की सहायता की पूरी पूरी आवश्यकता है और आप इस बारे में यशस्वी कार्य कर सकते है।

अभिनन्दन ग्रन्थ की भेंट

आरा नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा अभिनन्दन ग्रन्थ दिये जाने के अवसर पर मि० फालगुण शु० १४ सं० २००६ को राष्ट्रपति ने कहा—

हिन्दी संसार के साहित्यिकों की कृपा मेरे ऊपर बराबर रही है। उन में भी इस प्रांत के लोगों का प्रेम और भी अधिक रहना स्वाभाविक है। इसलिये जब मुझ से यह कहा गया कि आप लोग एक अभिनन्दन ग्रन्थ का आयोजन कर रहे हैं तो मुझे इस में कोई आश्चर्य नही हुआ, यद्यपि मैं ने इसे अनावश्यक जरूर समझा। उसी प्रेम और कृपा के कारण मुझे प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन और अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन का सभापतित्व भी दिया गया, यद्यपि में अपने को इन पदों के अयोग्य कभी नहीं समझता था। साहित्य की मैं ने कोई खास सेवा नहीं की है और न साहित्य का अध्ययन ही किया है। मैं किसी तरह इस का दावा नहीं कर सकता कि साहित्यकारों में मेरी गिनती की जाये। तो भी मैं इतना जरूर कह सकता हूं कि मेरी दिलचस्पी हिन्दी साहित्य की उन्नति और प्रचार में हमेशा रही है और आज भी है। पिछले ४०-५० वर्षों में जो हिन्दी साहित्य की उन्नति हुई है उस का यदि दिग्दर्शन किया जाये तो उसी से पता चलेगा कि हिन्दी साहित्य कितना और कितनी तेजी के साथ इस अर्ध शताब्दी में आगे बढ़ा है। आज केवल गद्य और पद्य की रचना ही ऊंचे दर्जे की नहीं बन रही है बल्कि अन्य विषयों में जिनका सम्बन्ध दर्शन, विज्ञान इत्यादि के साथ है बहुत ग्रन्थ लिखे गये हैं और दिन प्रति दिन उन की संख्या बढ़ती जा रही है। पत्र पत्रिकाओं की संख्या बहुल हो गयी है और उन में बहुतेरी उच्चकोटि की भी हुआ करती हैं। मैं इसकी योग्यता नहीं रखता और न इस बढ़ते हुए साहित्य के साथ इतना परिचय ही रखता हूं कि उस की समीचीन आलोचना करके आप के सामने रखूं। मैं इतने से ही संतोष

मानता हूं कि हिन्दी साहित्य की सर्वतोमुखी उन्नति हो रही है। यहां मैं प्रस्तुत साहित्य की समालोचना न करके आप का ध्यान उन ख़तरों की तरफ़ दिलाना चाहता हूं जो इसे नकसान पहुंचा सकते है और उन दिशाओं को दिखलाना चाहता हूं जिन की ओर हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य को अग्रसर होना चाहिये।

हिन्दी पुस्तकों और पत्रों के पढ़ने वालों की संख्या बहुत बढ़ती जा रही है। उन की छपाई इत्यादि भी बहुत उन्नति कर गयी है और बहुत सज धज के साथ पुस्तकें और पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। इस तरह बाहरी सजावट, ऊपरी सज धज से पाठक मोहित और आर्कषित होते हैं। इन कारणों से पुस्तकों और पत्रिकाओं की अच्छी क़ीमत भी देते है और उनको खुशी से खरीद करके बहुतेरे लोग पढ़ते हैं। मेरा अनुमान ह कि जिस प्रकार हिन्दी बोलने वालों और समझने वालों की संख्या देश भर में अन्य सभी भाषाओं के बोलने और समझने वालो से अधिक है इसी तरह यदि सब पत्र पत्रिकाओं और प्रकाशित पुस्तकों के पढ़ने वालों की संख्या भी इकट्ठी की जाये तो और किसी भारतीय भाषा में प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं और पुस्तकों के पाठकों की संख्या से वह अधिक ज़रूर निकलेगी। पर आज जैसी स्थिति में और जब हिन्दी अखिल भारतीय काम के लिये संविधान में राजकीय भाषा मान ली गयी है तो वह दिन दूर नही है जब हिन्दी पाठको की संख्या और भी अधिक बढ जायेगी और हिन्दी के अच्छे ग्रन्थों और पत्र पत्रिकाओं की मांग कही अधिक हो जायेगी। यह एक शुभ लक्षण है। साथ ही हिन्दी साहित्यिकों, पत्रकारों और लेखकों की जिम्मेदारी भी बहुत बढ़ जाती है।

जैसे जैसे अहिन्दी प्रान्तों और प्रदेशों में हिन्दी का प्रचार बढ़ेगा वहां के लोग हिन्दी के प्रकाशनों की तुलना अपने प्रादेशिक प्रकाशनों से करने लगेंगे। चाहे दैनिक पत्र हों जिन में लेख तेजी से लिखे जाते है और जिन में समाचारों कास म्पादन और चयन घड़ी के कांटे की चाल के अनुसार ही करना पड़ता है, चाहे किसी गम्भीर विषय पर बहुत समय लगा कर बहुत परिश्रम के बाद कोई ग्रन्थ क्यों न लिखा गया हो उसी प्रकार के पत्र और ग्रन्थ के साथ, जो भारत के किसी भी प्रादेशिक भाषा में प्रकाशित हो, मुक़ाबला किया जाने लगेगा। इस तरह उत्तम से उत्तम पत्र और ग्रन्थों का मुक़ाबला हिन्दी के किसी भी पत्र और ग्रन्थ के साथ किया जायेगा। क्या हम आज यह दावा कर सकते हैं कि इस होड़ में हम सफल हो सकेंगे? प्रतिभाशाली गद्य पद्य के रचियता सभी भाषाओं में समय समय पर ही हुआ करते हैं। वह प्रतिभा प्रकृति की एक देन हुआ करती है जो किसी दूसरे प्रकार से हासिल नहीं की जा सकती, पर प्रतिभा के अलावे और जितने गुण होने चाहियें वह इसी जन्म में हासिल किये जा सकते हैं। वह सब परिश्रम साध्य है। इसलिये कि किसी को यह सोच कर कि उस में प्राकृतिक प्रतिभा नहीं है, निराश हो कर बैठे रहना उचित नहीं। परिश्रम द्वारा यह कमी बहुत हद तक दूर की जा सकती है और में चाहता हूं हिन्दी के प्रेमी अपने इस दायित्व को पूरी तरह समझें। जब संविधान परिषद् में हिन्दी को राजकीय भाषा बनाने के सम्बन्ध में वादविवाद हो रहा था तब कई अहिन्दी भाषिओं ने यह खुल कर कहा था कि वे हिन्दी को इस लिये अखिल भारतीय राजकीय भाषा नहीं मान रहे हैं कि, वह भारतीय सभी भाषाओं में सब से अधिक उन्नत ह अथवा उस का साहित्य अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य से अधिक

बढ़ा चढ़ा है, बल्कि वे हिन्दी को इसलिये स्वीकार कर रहे हैं कि वह दूसरी भाषाओं की तुलना में देश के बहुत बड़े भाग में समझी और बोली जाती है और उस के समझने और बोलने वाले और किसी भाषा के बोलने और समझने वालों की संख्या से बहुत अधिक है। इस कथन में तथ्य है और हिन्दी वालों के लिये एक प्रकार की चुनौती भी है। कुछ भाई तो हिन्दी को केवल राजकीय भाषा मानने के लिये तैयार थे पर उसे राष्ट्रीय पद देना नहीं चाहते थे। उन का कहना था कि उन के लिये उनकी प्रादेशिक भाषा ही, जो उन की मातृ-भाषा है, उन्नत है; उस का साहित्य भंडार हिन्दी से कम भर-पूर नही है और इस लिये वह उसे ही राष्ट्रभाषा मानते हैं और मानेंगे। हां, राजकीय कारबार के लिये एक भाषा ऐसी होनी चाहिये जो सार्वदेशिक काम के लिये उपयोग में लायी जा सके और वह अपना अधिक प्रचार के कारण हिन्दी ही हो सकती है और उसे ही हम मान लेते है।

मै ने ऊपर कहा है कि इन वाक्यों में तथ्य है और एक प्रकार की चुनौती भी है। हिन्दी भाषियों को अपना दायित्व और कर्तव्य समझना चाहिये। जो गौरव हिन्दी को सार्वदेशिक राजकीय भाषा होने का मिला है उसके योग्य उन्हे हिन्दी को साबित करना है। इस कर्तव्य का पालन करना हिन्दी के प्रत्येक लेखक, पत्रकार, साहित्यिक और प्रकाशक को पूरी तरह समझ लेना चाहिये। सब से पहली चीज यह है कि हिन्दी का शब्द भंडार जितना बढ़ सके बढ़ाना चाहिये। शब्दों के लेने में हमें न तो संकोच होना चाहिये और न हम को किसी प्रकार का ओछापन आने देना चाहिये। आज की हिन्दी की शब्दावलि में केवल संस्कृत के ही तत्सम या तद्भव शब्द नहीं हैं। देश की दूसरी भाषाओं के अतिरिक्त उस में बहुतेरे विदेशी शब्द भी आ गये हैं जिन का मूल अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेजी, लेटिन, फ्रांसीसी, स्पैनिश, पोर्त्तगीज़, डच, इत्यादि भाषाओं में मिलता है। जिन जिन भाषाओं के बोलने वालों के साथ हिन्दी का सम्पर्क हुआ उन के कुछ न कुछ शब्द हिन्दी ने ग्रहण कर लिए। यह सभी जीती जागती भाषाओं का एक लक्षण है और ऐसा करने से हिन्दी को कोई नुकसान नही हुआ है बल्कि लाभ ही हुआ है। इसलिए इस नीति को छोड़ना नहीं चाहिये और अन्य भाषाओं के शब्दों को लेकर उन्हें हिन्दी का जामा पहना कर ऐसा बना देना चाहिये कि वे हिन्दी में घुलमिल जायें। जो शब्द इस तरह से हिन्दी में घुलमिल गये है या इस तरह मिलाये जा सकते है, उन को निकालने में कोई बुद्धिमानी मै नही मानता हूं और न यह मानता हूं कि इस से हिन्दी का कोई हित होगा। मेरा विश्वास है कि जब एक ही अर्थ के कई शब्द हिन्दी में हो जायेंगे तो आहिस्ते आहिस्ते उनके अर्थ में बारीक़ फ़र्क़ पड़ने लग जायेगा और कुछ दिनों में विचार की बारीकी व्यक्त करने के लिए इन शब्दों का अलग अलग प्रयोग होने लग जायेगा और यह बारीकी जितनी आती जायेगी भाषा समुन्नत होती जायेगी। इस लिए मैं किसी प्रकार के शब्दों के बहिष्कार के पक्ष में नही हूं और चाहता हूं कि हिन्दी का दरवाज़ा खुला रहे और दूसरी भाषाओं के शब्द भी विशेष करके भारत की प्रादेशिक भाषाओं के शब्द जिनके लिए ठीक पर्याय-वाची हिन्दी में नही मिलते, लाये जाये। हिन्दी भाषी प्रदेशों के गांवों में भी बहुतेरे ऐसे शब्द ग्रामीण भाषा में मिलते है जो बहुत ही सुन्दर, मधुर और अर्थभरे होते है। उनको भी यह कह कर कि वह ग्रामीण और गंवारों की बोलचाल के शब्द है नही छोड़ना चाहिये। जो पहले से ही प्रचलित हो गये हैं उनको निकाल देने का तो कोई प्रश्न ही नहीं हो सकता।

शब्दों के अतिरिक्त बहुत मुहावरे ऐसे हुआ करते हैं जो बहुत रोचक और सुगम तथा अर्थ-भरे होते हैं। इनमें बहुतेरे तो ऐसे होते हैं जो एक भाषा से दूसरी भाषा में नहीं लिए जा सकते और कुछ ऐसे भी होते हैं जो आसानी से एक भाषा से दूसरी भाषा में अपनाये जा सकते हैं। विशेषकर के जब ऐसी भाषाओं का उद्‌गम एक हो अथवा उनका एक दूसरे के साथ सम्पर्क रहा हो और एक दूसरे को वह प्रभावित कर सकती हों। मेरा विश्वास है कि भारतीय भाषाओं में इस प्रकार के अनेकों मुहावरे या प्रयोग होंगे जो हिन्दी में आ गये हैं या आ रहे हैं या लाये जा सकते हैं। हिन्दी का सम्पर्क दूसरी भाषाओं से जितना बढ़ेगा उतना ही ऐसे प्रयोगों का अधिक उपयोग मालूम होने लगेगा।

प्रत्येक भाषा की अपनी शैली और अपना व्याकरण हुआ करते हैं, पर यह भी मानना ही पड़ेगा कि जब दूसरी भाषाओं के साथ उसका सम्पर्क बढ़ता है तब उस शैली और व्याकरण में भी कुछ न कुछ परिवर्तन हुये बिना नहीं रह सकता। कुछ तो परिवर्तन जानबूझ कर किये जाते हैं और कुछ स्वयं हो जाते हैं जिनके सम्बन्ध में यह कहना सम्भव नहीं होता कि वह परि-वर्तन क्यों, कब और किस तरह लाये गये। हिन्दी भाषा का सम्पर्क ज्यों ज्यों दूसरी भाषाओं के साथ बढ़ेगा, यह परिवर्तन भी अनिवार्य हो जायेगा।

शब्दावलि, मुहावरे, शैली और व्याकरण सम्बन्धी परिवर्तन या परिवर्धन जो हिन्दी में होना चाहिये या होगा वह किसी विशेष विद्वान मंडली अथवा संस्था के करने से नहीं होगा। जीती जागती भाषा इस प्रकार की संस्थाओं के प्रस्तावों और निश्चयों से न बढ़ाई जा सकती है और न घटाई, और न उसकी चाल निर्धारित की जा सकती है। सम्पर्क का स्वाभाविक फल होता है कि इस प्रकार के परिवर्तन और परिवर्धन हो जाते हैं। बुद्धिमानी और समय का तक़ाजा है कि इनके रास्ते में रोड़े न अटकाये जायें और भाषाविकास के प्राकृतिक नियमों को अबाध रूप से काम करने का मौक़ा दिया जाय। यह आज हिन्दी के सार्वदेशिक राजकीय भाषा बन जाने के कारण आवश्यकीय तथा अनिवार्य हो गया है। हम हिन्दी भाषी यदि इसमें अनुदार हुए और हमने किसी प्रकार की इस विचार से कि हिन्दी भाषा हमारी है और इसकी शुद्धता और पवित्रता इस प्रकार के परिवर्तन और परिवर्धन से नष्ट हो जायेगी कोई बाधा डालने का प्रयत्न किया तो हमारा प्रयत्न या तो असफल होकर रहेगा या सफल हुआ तो हिन्दी को सार्व-देशिक भाषा बनने से वंचित होकर रहना पड़ेगा। वह एक प्रादेशिक भाषा होकर ही रह जायेगी। आज हिन्दी की होड़ भारत की सभी प्रादेशिक भाषाओं के साथ है और वह सार्वदेशिक स्थान तभी सुरक्षित रख सकती है जब वह अपने में इतनी उदारता और लचक ला सकेगी कि वह सब दूसरी भाषाओं को अपना सके और सभी दूसरी भाषाएं उसको अपना सकें। अपनाने का अर्थ यह नहीं है कि, हिन्दी हिन्दी न रह जाये बल्कि उसका अर्थ इतना ही मात्र है कि वह हिन्दी रहते हुये भी सार्वदेशिक हो जाये।

हिन्दीभाषी को चाहिये कि भारतीय अन्य भाषाओं का वह ज्ञान प्राप्त करे। कम से कम किसी एक दूसरी भाषा को तो प्रत्येक हिन्दी भाषी को ज़रूर सीखनी ही चाहिये। इससे यह लाभ होगा कि हिन्दी भाषी दूसरे प्रदेशों के साथ सम्पर्क और अपनैती बढ़ा सकेंगे और इसके अलावा उनको इसका भी मौक़ा मिलेगा कि वह हिन्दी के नवप्रकाशित ग्रन्थों और पत्रों का उस दूसरी

भाषा के ग्रन्थों और पत्रों से मुक़ाबला करके खुद देखें सकेंगे कि हिन्दी कहां तक उनके मुक़ाबले में पहुंचती है, इसमें क्या त्रुटियां रह जाती हैं और किस दिशा में उसे कौनसी कमी पूरी करनी है। ऐसे लोगों के लिए तो जो कुछ लिखना चाहते हैं या कोई अपनी विशेष रचना करनी चाहते हैं दूसरी भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य मानना चाहिये। इसके बिना उनकी रचनाओं में न तो वह व्यापकता आ सकेगी और न वह ओज जो अच्छे साहित्य के लिए आवश्यक है। अहिन्दी प्रदेशों के लोगों ने तो जान बूझ कर राष्ट्रीय और देश हित के विचार से हिन्दी सीखने का बोझ अपने सिर पर उठाया है। तो क्या हम हिन्दी भाषी इतना भी नहीं करेंगे कि उन दूसरी भाषाओं के बोलने वालों और लिखने वालों के विचारों और उद्गारों से अपने को परिचित बनावें ? और इस परिचय से हम उन पर कोई मेहरबानी या ऐहसान नहीं करेंगे। यह परिचय तो हिन्दी को उन्नत और समृद्धशाली बनाने में काम आयेगा जिसके बिना हिन्दी का जो स्थान मिला है क़ायम रखना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य हो जायेगा। इसलिये हिन्दी भाषियों को देशहित और हिन्दी हित के विचार से भारतीय दूसरी भाषाओं के साथ परिचय करना, उनके साहित्य का अध्ययन करना एक अनिवार्य कर्तव्य मानना चाहिये। उचित तो यह होगा कि जिस तरह हम अहिन्दी भाषाभाषियों से यह आशा रखते हैं कि वह हिन्दी का इतना ज्ञान प्राप्त कर लें कि उस भाषा में वह सब राजकीय काम लिख पढ़ और बोलचाल कर सकें, तो हमको भी किसी दूसरी भाषा का इतना ज्ञान अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिये कि हम भी उसी तरह उस भाषा में लिख पढ कर और बोलचाल कर सभी आवश्यक काम चला सकें।

एक दूसरी दृष्टि से भी दूसरी भाषाओं का ज्ञान हिन्दी भाषियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। हिन्दी का प्रचार अहिन्दी प्रान्तों में करना है। इसमें हिन्दी भाषियों को बहुत कुछ आरम्भ में करना होगा। वे जब तक कि दूसरे प्रान्तों की भाषाओं का कम से कम कामचलाऊ ज्ञान नहीं प्राप्त कर लेते तब तक इस काम को नही कर सकेंगे। इसलिये भी दूसरी भाषाओं का ज्ञान हिन्दी भाषियों के लिए आवश्यक है। दक्षिण भारत में जब हिन्दी का प्रचार आज से ३०–३२ वर्ष पहिले आरम्भ किया गया था तो पहले हिन्दी भाषियों को ही जाकर यह काम आरम्भ करना पड़ा था। अब तो वहां के निवासियों में ही बहुतेरे ऐसे तैयार हो गये हैं जो इस काम को बहुत ही सफलतापूर्वक कर सकते हैं और कर रहे है। तो भी अगर जो १५ वर्ष की अवधि हमारे संविधान ने दी है इसके भीतर सभी प्रान्तों में हिन्दी का काफ़ी प्रचार और प्रसार होना है, तो हिन्दी भाषियों का यह बहुत बड़ा कर्तव्य हो जाता है कि वे दूसरी भाषाओं को सीख कर इस काम म जितनी सहायता दे सकते हैं दें। दूसरी भाषाओं के ज्ञान से हिन्दी की शब्दावलि शैली और व्याकरण और मुहावरों पर भी एक अपरोक्ष रीति से हम प्रभाव डालेंगे जो केवल दूसरे प्रदेशों के लोग हिन्दी सीख कर उतने, अच्छे ढंग से और हिन्दी की अपनी मर्यादा को क़ायम रखते हुए शायद न डाल सकेंगे। प्रभाव पड़ना तो अनिवार्य है पर हिन्दी की अपनी मर्यादा जिस हद तक हिन्दी भाषी समझेंगे और सुरक्षित रख सकेंगे, उस हद तक शायद दूसरे नहीं और इसलिये भी हिन्दी भाषियों को दूसरी भाषाओं का ज्ञान आवश्यक तथा अनिवार्य हो गया है।

हिन्दी साहित्य के भण्डार को भरपूर और राष्ट्रभाषा के योग्य बनाने के लिए कुछ बातें आवश्यक हैं। पहली चीज़ तो यह है कि हिन्दी में उच्च कोटि के मौलिक साहित्य का निर्माण किया जाये। साहित्य से मेरा अर्थ केवल गद्य और पद्य की उन कृतियों से ही नहीं है जो साधारण-

तया हम समझते हैं। साहित्य शब्द का व्यवहार हम ने एक विस्तृत और व्यापक अर्थ में किया है और इसमें मैं सभी विषयों से सम्बन्ध रखने वाले ग्रंथों और कृतियों को समाविष्ट करता हूं। मेरा अर्थ यह है कि मौलिक खोज और अनुसंधान के फल, चाहे वह खोज और अनुसंधान किसी वैज्ञानिक विषय के साथ सम्बन्ध रखती हो, चाहे प्राचीन इतिहास और पुरातत्वों के साथ, चाहे वह भूगोल और खगोल के साथ सम्बन्ध रखती हो, अथवा रेखा गणित, बीज गणित या अन्य प्रकार के गणित के साथ सम्बन्ध रखता हो चाहे वह दर्शन के साथ सम्बन्ध रखता हो अथवा इस प्रकार की गद्य-पद्य रचना के साथ ही जिसे हम साधारणतः साहित्य का नाम देते हैं, सम्बन्ध रखता हो, हम इन सभी और सभी अन्य प्रकार की कृतियों को साहित्य का नाम देते हैं। और जब उसके भण्डार को भरपूर करने की बात करते है तो इन सब की पूर्ति हम चाहते है। इसलिए यह आवश्यक है कि हिन्दी भाषी इन सभी विषयों के स्वतन्त्र और मौलिक ग्रंथों के लिखने की योग्यता प्राप्त करे और ऐसे मौलिक ग्रंथ लिखें। इस में एक दो नही हजार हज़ार विद्वानों और अनुसधानकों को लगना होगा जो सभी बातों को भूल कर एकचित्त सच्चे योगी बन कर जिस विषय को वे लेवें उस में मौलिक कृति देश को और संसार को देवें। जैसा कि मैं ने ऊपर कहा है यह महान् कार्य बहुत करके श्रम साध्य है और यदि हमारे विद्वानों ने विशेष करके युवकों ने इस ओर ध्यान दिया और उसमे लग गये तो पन्द्रह वर्ष के भीतर ही इस का फल कुछ न कुछ देखने को मिल सकेगा।

मौलिक कृतियों के अतिरिक्त अनुवाद के लिए बहुत बड़ा क्षेत्र है। भारत की सभी प्रादेशिक भाषाओं में साहित्य का सृजन और प्रकाशन होता ही रहता है। उन में जितने अच्छे ग्रन्थ चाहे वे प्राचीन हों अथवा नये और चाहे जिस विषय के हों यदि उन में कुछ ऐसा विषय अथवा तथ्य हो जो हिन्दी भाषियों के लिए आवश्यक अथवा हित कर समझा जाये तो उनका अनुवाद हिन्दी में अवश्य होना चाहिये। आज अनुवाद विशेष करके हिन्दी भाषियों को ही करना होगा और वह केवल भारतीय भाषाओं से ही नहीं, संसार की दूसरी भाषाओं से भी ग्रंथों को लेकर करना आवश्यक होगा। यह तभी हो सकता है जब कुछ हिन्दी के विद्वान दूसरी भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान और उनके साहित्य से इतना परिचय प्राप्त कर लें कि वे उनमें से अच्छे और उच्च कोटि के ग्रंथों को चुन कर निकाल सकें और उनको पढ़ कर रसा-स्वादन केवल स्वयं न कर सकें, बल्कि इतनी योग्यता रखें कि मौलिक ग्रन्थ की रचना और ओज को अपने अनुवाद में भी कुछ हद तक ला सकें। एक प्रकार से मौलिक लेख लिखना आसान है, पर किसी दूसरी भाषा से अनुवाद करना बहुत कठिन होता है। मेरा निजी अनुभव है कि मैं अंग्रेज़ी से हिन्दी में अथवा हिन्दी से अंग्रेज़ी में उतनी आसानी से अनुवाद नही कर सकता जितनी आसानी के साथ इन दोनों भाषाओं में लिख या बोल सकता हूं। गहन विषयों का तो अनुवाद और भी कठिन होता है। अनुवादक को केवल उन दोनों भाषाओं का जिन में कि एक से दूसरी में अनुवाद करना है अच्छा ज्ञान होना अनिवार्य ही नहीं है, बल्कि उस विषय पर भी उसका अधिकार होना चाहिये जिस विषय से वह अनुवाद किया जाने वाला ग्रन्थ सम्बन्ध रखता है। इसलिए किसी को यह नहीं समझना चाहिये कि अगर वह दो भाषाओं को मामूली तौर से जानता है तो वह एक से दूसरी में अनुवाद कर सकता है। अनुवाद के लिए ग्रंथ चुनने में भी विषय का ज्ञान आवश्यक है और हिन्दी में उस विषय पर क्या मौजूद है वह तो जानना ज़रूरी है ही।

सब से बड़ा डर मुझे इस बात का है कि हिन्दी पाठकों की संख्या बढ़ जाने से हर प्रकार की पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओं का प्रचार अधिक हो रहा है और आगे और भी अधिक होने वाला है। कुछ दिन पहले इस विषय पर श्री बनारसीदास चतुर्वेदी जी ने कुछ चर्चा छेड़ी थी और उन्होंने तुच्छ और हानिकारक साहित्य को घासलेटी साहित्य का नाम दिया था। मुझे डर है कि घासलेटी साहित्य की अब जब हिन्दी पाठकों की संख्या बढेगी तब वृद्धि भी होगी। हिन्दी साहित्य-कारों और प्रकाशकों का यह कर्तव्य होना चाहिये कि इस प्रकार के साहित्य के प्रचार को रोके––कम से कम उस मे सहायक न हो। यह काम आसान नही है क्यों कि इसका सम्बन्ध पैसों से जुटा हुआ है। और पैसों का लोभ संवरण करना आसान नही होता है। पर मै मानता हूं कि यदि उच्चकोटि के साहित्यकारों ने और आलोचको ने इस पर ध्यान दिया तो इस प्रचार के रोकने में वह सफल हो सकते है। हमको यह समझना चाहिये कि हिन्दी का घासलेटी साहित्य केवल हिन्दी भाषियों के ही हाथों में नही जायेगा। अब वह अन्य भाषाभाषियों के हाथों मे भी पहुंचेगा और इस से सारे हिन्दी साहित्य की बदनामी होगी। इसलिए हिन्दी की प्रतिष्ठा की यह अपेक्षा है कि इस प्रकार का अस्वस्थकर साहित्य हिन्दी मे स्थान न पावे। और जिस तरह से कोई चोर या व्यभिचारी किसी अच्छे समाज में स्थान नही पाता उसी तरह से हमारा साहित्यिक समाज ऐसा बन जाये कि उस में इस प्रकार के व्यभिचारी साहित्य को स्थान न मिल सके।

बिहार के रहनेवालों का एक और विशेष कर्तव्य है। इस प्रान्त में प्राय: ५० लाख आदिम-जाति के लोग बसते है जिन की अनेक बोलिया यथा सथाली, मुण्डारी, पहाड़ी, खड़िया, उड़ाव और हो इत्यादि है। इनका रहन सहन और इनकी बोलियां को भी जानना आवश्यक है। विशेष करके उन लोगों के लिए जो कि उन अंचलों में बसते है जहा ये बोलियां बोली जाती हैं उनके साथ हमारा सम्पर्क बढ़ना चाहिये। वह सम्पर्क शोषण के लिए नही उनकी सेवा के लिए आवश्यक है। वे बहुत बातों मे पिछड़े हुए है पर उन में बहुतेरे गुण भी है जिन को हमें उन से सीखना है। आधुनिक रीति से वे अशिक्षित जरूर है और उनका रहन सहन भी आधुनिक लोगों को ठीक नही जचता, पर हम यह नही भूल सकते कि आज के आधुनिक लोगों के मुकाबले उन मे झूठ फरेब बहुत कम है और सचाई तथा सीधापन बहुत अधिक है जिस से हम में से बहुतेरे अनुचित लाभ उठाने से बाज़ नही आते। बहुत अशों मे उनका समाज गठन भी ऐसा है जो हमारे आज के विशृंखल समाज के लिए नमूना पेश कर सकता है। इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम उनकी सेवा के लिए और उन से जो कुछ सीख सकते है सीखने के लिए उन के साथ सम्पर्क बढ़ावें, उनकी बोली का ज्ञान प्राप्त करे और उनके बीच में हिन्दी का प्रचार करें जिस से वे भी और लोगों के मुकाबले में बराबरी का भाग सार्वदेशिक कामों मे ले सके।

आरा नागरी प्रचारिणी सभा बहुत दिनों से हिन्दी की सेवा करती आ रही है। इसने यह अभिनन्दन ग्रथ तैयार करा कर और मुझे भेंट करके मेरा आदर बढाया है। मै इसके लिए बहुत कृतज्ञ हूं। मैं समझता हूं कि अपनी कृतज्ञता मै इसी तरह प्रकट कर सकता हू कि आज जो हिन्दी भाषियों पर और हिन्दी के सेवकों पर दायित्व आ गया है उसको उनके सामने रख दू और उन से यह आशा करूं कि वे इस महान् कार्य को पूरा करने में अपनी शक्ति लगायेगे और उत्साह दिखलायेंगे। इसी भावना से मैं ने जो कुछ उचित समझा कहा और मै आशा करता हूं कि आप मेरे निवेदन को स्वीकार करेंगे।

गुरुकुल कांगड़ी में दीक्षान्त भाषण

गुरुकुल कांगड़ी में ५ मार्च १९५० को दीक्षान्त भाषण देते हुए राष्ट्रपति ने कहा—

प्रायः २५ वर्ष हुए होंगे जब मै पू० महात्मा गांधी जी के साथ गुरुकुल के समावर्तन के अवसर पर एक बार पहले आया था। तब से देश में कितना बड़ा अन्तर हो गया है यह आप भलीभांति जानते है। उस समय हम स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रयत्न में लगे हुए थे और ब्रिटिश गवर्नमेंट के साथ हमारा अहिंसात्मक संग्राम चल रहा था। आज हम स्वतन्त्र है। अंग्रेज इस देश से चले गये और अपने भाग्य को बनाने और बिगाड़ने का पूरा अधिकार हम अपने हाथों मे ले चुके है। इसलिए आज हमारे सामने जितने प्रश्न आते है, उनका हमें स्वयं ही हल खोज निकालना है। और जिस हद तक हम सफलतापूर्वक प्रश्नों का निपटारा कर सकेंगे, देश उन्नत होगा।

देश की सेवा के लिए अच्छे सुचरित्र, बुद्धिशाली, कर्मठ और त्यागी काम करने वालों की ज़रूरत है। जो नया संविधान देश के लिये बनाया गया है उस में सभी २१ वर्ष के लोगों को मत देकर प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दिया गया है। जो प्रतिनिधि चुने जायेंगे उनके हाथो में प्रान्त अथवा सारे देश के शासन की बागडोर रहेगी और उनके ही निश्चयो के अनुसार देश का सारा काम चलाया जायेगा। उनके अतिरिक्त बहुत बड़ी संख्या में राजकीय कर्मचारी होंगे जिनको प्रतिनिधियो द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार देश के शासन का काम चलाना होगा। इन सभी स्थानों के लिए, चाहे वे प्रतिनिधियों के हों अथवा कर्मचारियों के, योग्य ईमानदार सेवकों की आवश्यकता होगी। काम भी कितने प्रकार के होंगे। विद्या प्रचार के लिए ग्रामीण पाठशालाओं से लेकर उच्च से उच्च कोटि की संस्थाओं के लिए शिक्षक और ऐसे विद्वान् जो हर प्रकार की विद्या-ज्ञान सम्बन्धी खोज और अनुसंधान करके नित्य नये विचारों का प्रचार कर सकें, बीमारी और अस्वस्थता दूर करने के लिए ऐसे लोगो की जो केवल इन विषयों में निष्णात ही न हों पर सच्ची भावना से काम करने वाले हों, जरूरत पड़ेगी। गरीबी दूर करने के लिए सम्पत्ति बढाने के उपायों के रास्ते ढूढ निकालने वाले और जो सम्पत्ति प्रकृति ने देश को दी है, उस को देश और जनता की सेवा मे लगा देने की शक्ति रखने वाले लोगों की भी आवश्यकता होगी जो देश में दरिद्रता के स्थान पर सम्पन्नता ला सकें। अर्थात् सभी प्रकार के काम करने वालो की आवश्यकता देश को है। ऐसे लोगों को तैयार करने का काम हमारे विद्यालयों और दूसरी शिक्षा सम्बन्धी संस्थाओ का है।

आपका गुरुकुल एक प्राचीन ढंग पर चलने वाला नये प्रकार का विद्यालय रहा है। सारे देश में अंग्रेजी का बोलबाला था और सभी विद्यालयों में अंग्रेजी के माध्यम द्वारा ही शिक्षा दी जा रही थी। आपके दूरदर्शी संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दी के माध्यम द्वारा उच्चकोटि की शिक्षा देने का निश्चय किया और इस संस्था को आज से ५० वर्ष पूर्व स्थापित किया। इन ५० वर्षों के प्रयोगों से यह प्रमाणित हो गया कि उच्चकोटि की शिक्षा भी हिन्दी द्वारा दी जा सकती है और जो विद्यार्थी शिक्षा पाते है, वे दूसरे विद्यालयों में जहां अंग्रेजी माध्यम है, शिक्षा पाये हुए विद्यार्थियों से किसी बात मे कम नहीं होते। बात तो यह है कि विदेशी भाषा सीखने

का भार––विशेष करके जब दूसरे विषयों के जानने और सीखने का विदेशी भाषा ही माध्यम हो––वह भार बड़ा होता है और वह मनुष्य के मस्तिष्क के विकास को अवरोधित कर देता है। आपने यही समझ कर यह नया काम ऐसे दिनों मे शुरू किया था जब इस मे किसी प्रकार की सहायता या प्रोत्साहन गवर्नमेंट से मिलने की आशा नही थी। जो विद्यार्थी यहा से शिक्षा पाकर निकलते, उनको किसी सरकारी सस्था में योग्यता रहते हुए भी कोई स्थान नही मिलता और अन्य प्रकार की अनेक बाधायें जो किसी भी कमज़ोर आदमी को हतोत्साह कर सकती थी, आये दिन सामने आती रही। पर किसी की परवा न कर आप के सचालक गुरुकुल को चलाते रहे और जनता ने सहायता की। आज अब यह मान लिया गया है कि हिन्दी देश की राजकीय भाषा होगी और यह भी शिक्षा शास्त्रों मानने लग गये है कि शिक्षा का माध्यम हमारी अपनी भाषा होनी चाहिये न कि विदेशी भाषा। इस दिशा मे शिक्षा पद्धति मे परिवर्तन भी आरम्भ हो गया है और आशा की जाती है कि थोडे ही दिनो में हमारे सभी शिक्षालयो मे अपनी भाषा द्वारा ही शिक्षा दी जाने लगेगी और देश का सारा कारबार अपनी भाषा मे ही होने लगेगा। यह देख कर आपके संचालको को सतोष होना चाहिये ही और मै उनको बधाई देना चाहता हूं कि जो गुरुकुल के संस्थापक ने इतने दिन पहले सोचा था और जिस काम का नन्हा सा पौदा लगाया था, वह आज एक वृक्ष हो गया है और अब उस मे फूल और फल शीघ्र ही देखने में आजायेगे।

आपकी दूसरी विशेषता यह रही है कि आपने गुरुकुल की प्राचीन प्रथा को पुनर्जीवित किया। उस प्रथा का महत्व और विशेषता इस मे है कि गुरू और शिष्य का सम्बन्ध एक परिवार के लोगो जैसा हो जाता है। शिष्य गुरू को पिता तुल्य और गुरू शिष्य को पुत्रवत् मानने लगता है और इस तरह गुरू वात्सल्य प्रेम और शिष्य भक्ति और श्रद्धा करता है। इसका प्रभाव अध्ययन के अलावा चरित्र पर बहुत गहरा पड़ता है। आधुनिक प्रथा मे यह भावना बिल्कुल नही होती है और इसका नतीजा यह हुआ कि आज हमारे विद्यालयो और शिक्षालयो में जो अध्यापक और आचार्य होते है उनका विद्यार्थियों के साथ किसी प्रकार का सम्पर्क होने ही नही पाता है। कालेजो मे तो मै कह सकता हू कि इतना ही सम्पर्क होता है जितना किसी आदमी का एक सार्वजनिक सभा मे भाषणकर्ता से होता है। शायद यही कारण है कि अध्यापकों मे एक श्रेणी लैक्चरर्स की होती है, अर्थात् जो केवल लैक्चर या भाषण दिया करते है। बहुतेरे ऐसे विद्यार्थी बडे बड़े कालेजो मे मिलेगे जिनके नाम तक भी अध्यापक नही जानते और जिनके साथ उनकी एक बार भी सारी अवधि में जो विद्यार्थी कालेज मे बिताता है, अध्यापक से बातें नही हो पाती है। स्पष्ट है कि ऐसी अवस्था में अध्यापक के चरित्र का कोई विशेष प्रभाव विद्यार्थी पर नही पड़ सकता और दोनो के बीच गुरू शिष्य का सम्बन्ध तो हो ही नहीं सकता। इसलिये यदि विद्यार्थियों को अध्यापक सम्भाल में नही रख सकते और दोनों के बीच कई बातो मे दो विरोधियों जैसा सम्बन्ध पैदा हो जाता है तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नही है। हमारी पुरानी पद्धति में जब विद्यार्थी गुरू से भी अधिक विद्वान् और योग्य हो जाता था तो भी गुरू के प्रति आदर और श्रद्धा का भाव बना रहता था और विद्यार्थी मानता था कि यद्यपि वह विद्या प्राप्त करने मे गुरू से बढ़ गया है तो भी आरम्भ मे विद्या तो गुरू ने ही दी है और वह उस एहसान को कभी भूल नही सकता। आज एक कारखाने में मज़दूर काम करता है और समझता है कि

उसका सम्बन्ध कारखाने के मालिक से इतना ही है कि वह काम कर दिया करे और मज़दूरी ले लिया करे अथवा जैसे मालिक समझता है कि वह मज़दूरी देता है तो मज़दूर से काम करा लेने तक का हक़ है, उसी तरह विद्यार्थी और गुरू समझते हैं कि विद्यार्थी का हक है कि जब वह अपने स्कूल या कालेज में फीस दे देता है तो अध्यापक जो कुछ पढ़ा सकता है वह उस को पढ़ा देना चाहिये और अध्यापक समझता है कि जब विद्यार्थी फीस देता है तो उसका काम है कि समय पर जितने घण्टे या मिनट उसको पढ़ा देना लाजिमी है उतना उसे क्लास में लैक्चर या भाषण दे देना चाहिये और उसके कर्तव्य की इतिश्री वहां ही हो जाती है। ऐसी अवस्था में विशृंखलता मनमानापन और उद्दण्डता अगर देखने में आवे तो उसमें आश्चर्य की बात ही क्या है। मनुष्य का स्वभाव कुछ तो जन्म से ही बनता है पर बहुत करके जैसे वातावरण मे वह पलता है और जैसे लोगों के सम्पर्क मे आता है और वह सम्पर्क जितना घनिष्ट होता है उस पर भी बहुत कुछ निर्भर करता है। यदि यह कहा जाये कि इम वातावरण और सम्पर्क का प्रभाव मनुष्य के चरित्र पर अधिक पड़ता है तो यह अतिशयोक्ति नही होगी। इसलिए हमारी शिक्षा पद्धति की यह एक बड़ी भारी त्रुटि थी जिसको दूर करने का प्रयत्न पुरानी पद्धति को पुनर्जीवित करके किया गया।

चरित्र गठन में धार्मिक भावना और श्रद्धा बहुत असर डालती है। धार्मिक भावना से अर्थ कट्टरपना नही है और श्रद्धा अध भक्ति नही है, पर यह ऐसी चीज है जो परोक्ष रीति से मनुष्य के जीवन पर प्रत्येक क्षण बहुत असर डालती रहती है और चाहे मनुष्य माने या न माने उसका नैतिक चरित्र उनसे प्रभावित हुए बिना रह नही सकता। इस लिये यहां आप ने उस धार्मिक भावना का भी काफ़ी प्रभाव रखा है। मै मानता हू कि हमारे सभी शिक्षालयों का उद्देश्य होना चाहिये कि स्वस्थ विद्याभ्यासी और सुचरित्र सेवक देश को दे जो सब प्रकार के काम के लिए अपने को योग्य साबित कर सकें।

स्वास्थ्य के लिए अच्छा स्वस्थकर भोजन, शुद्ध जल वायु, आवश्यक शरीरश्रम और शुद्ध आचरण आवश्यक है। गुरुकुल जैसी सस्था मे यह सब उपलब्ध हो सकता है। पर ऐसे स्थान में और ऐसे शिक्षालय में इन मे से एक का भी मिलना दुर्लभ है, जहां विद्यार्थी किसी न किसी तरह जहा कही उसे रहने को जगह मिल जाये और जो कुछ खाने पीने को मिल जाये, वह खा पी लिया करे और उसका अपने विद्यालय से और शिक्षकों के साथ केवल उतने ही समय तक सम्पर्क रहे जितने समय मे उसे अपने वर्ग में बैठना अनिवार्य हो। विद्याभ्यास से अर्थ केवल रटन्त विद्या नही है और न वह विद्या जो केवल परीक्षा के समय प्रश्नो के उत्तर देने ही के लिए प्राप्त की जाती है। सच्चा विद्याभ्यास तो वही कहा जा सकता है जिस में जो कुछ सीखा गया है उसके अतिरिक्त अधिक सीखने की और अधिक जानने की एक ऐसी चाह उत्पन्न हो जाये कि मनुष्य सारे जीवन भर अभ्यासक्रम को जारी रखे और अपने ज्ञान को अन्त तक बढ़ाता ही रहे। इस प्रकार का विद्याभ्यास ऐसे विद्यालयों में कहां हो सकता है, जहां परीक्षा पास करना ही मुख्य उद्देश्य हो और जहां न विद्यार्थी के सामने और न शिक्षक के सामने कोई भी दूसरा आदर्श रहता हो।

चरित्र के सम्बन्ध मे एक ऐसी धारणा हो गई है कि इस के लिये हमें कुछ करना नही पड़ता है। यह स्वतः बन जाता है। बात यह है कि जो कुछ स्वतः बन सकता है वह स्वतः बिगड़

भी सकता है और यही होता है । इस की ओर ध्यान नही देने का एक प्रत्यक्ष फल यह होता है कि कुछ लोग तो अच्छे वातावरण और सच्चे सम्पर्क से जो उनको अनायास मिल जाता है बहुत अच्छे हो जाते हैं और कुछ लोग इनके विपरीत होने से बिगड भी जाते हैं । इसलिये यदि प्रयत्नपूर्वक चरित्र सुधारने के लिए हमारे शिक्षालयो में कोई प्रबन्ध किया जाये तो इसमे कोई सन्देह नहीं कि इसका परिणाम बहुत अच्छा होगा । मेरा उद्देश्य यह नही है कि विद्यार्थियों को सच्चरित्रता के सम्बन्ध में दिन प्रतिदिन मौखिक पाठ पढाया जाये । मै मानता हू कि इसका भी कुछ असर अवश्य ही पड़ता है । पर मै चाहता हूं कि केवल मौखिक शिक्षा न दे कर कुछ ऐसे काम दिये जायें और किये जायें जिनके द्वारा विद्यार्थियों को कुछ न कुछ इस सम्बन्ध में वस्तु-पाठ मिला करे । इसके लिए सामूहिक व्यायाम और खेलकूद का भी अच्छा उपयोग हो सकता है । मनोरंजन के साधन भी ऐसे प्रस्तुत किये जा सकते है कि जिनका असर चरित्र पर अच्छा पड़ सकता है । पर यही साधन बुरे हों तो उनका बुरा असर भी पड़ सकता है । आजकल मै देखता हूं कि जितने ऐसे स्थान है जहा विद्यार्थियों का जमघट है, वहां सिनेमा के ग्राहको की बहुत बड़ी तादाद विद्यार्थियो की ही हुआ करती है । सिनेमा मे यदि अच्छे खेल दिखलाये गये तो उनका अच्छा असर पड़ सकता है । पर बुरे खेल का बुरा असर पडे बिना रह नही सकता । मैं नही जानता कि जो खेल शहरो और बाजारों में दिखलाये जाते है और जिनको ही अधिक करके विद्यार्थी लोग देखा करते है, उनका कोई अच्छा असर पड़ता है। इसलिये यदि इस प्रकार के मनोरंजन आवश्यक समझे जायें तो उनका प्रबन्ध विद्यालय को स्वयं करना चाहिये जिस मे जांचे हुए खेल ही दिखलाये जाये और विद्यार्थियों को खुले आम टकाही सिनेमा मे जाने की इजाज़त न दी जाये, जिन में, या तो आधुनिक यन्त्रो द्वारा किस तरह से चोरी डकैती की जाती है अथवा युवा अवस्था की प्रेम कहानी के ही खेल, जिनका कोई उच्च आदर्श नही, दिखलाये जाते है । इस पर भरोसा करना कि केवल अच्छी कहानिया ही दिखलायी जायेगी, ठीक नहीं है । क्योकि जब तक ग्राहक उस प्रकार के अवांछनीय खेलों को ही पसन्द करते रहेगे तब तक वह सामने आते ही रहेंगे और उन का रोकना कठिन ही रहेगा ।

मैं ने कुछ विषयान्तर कर दिया पर शायद यह एक प्रकार से आवश्यक है । सेवा की भावना सेवा करके ही पैदा की जा सकती है और इसलिए यदि देश और समाज के अच्छे सेवक तैयार करने है तो उनके सामने क्रियात्मक रूप से सच्ची सेवा का उदाहरण रखना चाहिये और विद्यार्थियों को इसका मौक़ा देना चाहिये कि वे किसी न किसी सेवा कार्य मे कुछ भाग ले सकें । केवल मौक़ा ही नही, जहां तक हो सके प्रोत्साहन भी देना चाहिये । इसलिए कोई भी शिक्षालय तब तक पूर्ण नही कहा जा सकता जब तक उसमें यह सभी सामान जो स्वास्थ्य, विद्याभ्यास, चरित्रगठन और सेवा के लिए आवश्यक है, प्रस्तुत न हों । मैं गुरुकुल जैसी संस्थाओं का इस लिये आदर करता हूं कि इनमें यह आदर्श रख कर काम किया जाता है और जहां अच्छे अध्यापक और आचार्य मिल जायेंगे और यह आदर्श सामने रखे जायेंगे वहां सच्ची और उपयोगी शिक्षा जो देश के लिये हितकर होगी मिलेगी ।

जिस समय इस गुरुकुल की स्थापना हुई थी, विदेशी हुकूमत चल रही थी । बहुत बातों मे उस हुकूमत का इन आदर्शों के साथ मेल नही खाता था और इसलिये उस हुकूमत की मातहती क़बूल करना ऐसी संस्थाओं के लिए न हितकर था और न सम्भव । पर आज वह स्थिति

नहीं रही और कोई कारण अब नही रह गया कि इन आदर्शो का राष्ट्रीय विधान और नियंत्रण तथा शासन के साथ पूरा सामंजस्य न हो जाये। मेरी इच्छा और प्रार्थना है कि यह सामंजस्य शीघ्र से शीघ्र स्थापित हो जाये और वे शिक्षण संस्थाएं जो आज तक राष्ट्रीय शिक्षण देने का विशेष प्रयत्न किया करती थी वे भी सरकारी शिक्षालयों के साथ घुलमिल जायें और जो सरकारी शिक्षा सम्बन्धी संस्थाए है वे भी अपने कार्यक्रम को ऐसा बना लें कि वे भी उन्ही आदर्शो की पूर्ति कर सके जिनका मै ने ऊपर ज़िक्र किया है। मै आशा करता हूं कि इस प्रकार के एकीकरण मे सभी संस्थाए दत्तचित्त होगी और जो एक बडी खायी देशी और विदेशी भाषा के शिक्षामाध्यम होने के कारण पड़ गई थी वह शीघ्र ही पट जायेगी और सब संस्थाएं एक उद्देश्य और एक लक्ष्य से अनुप्राणित होकर ऐसे जनसेवक तैयार करने में लग जायेंगी जो हमारी कठिन से कठिन समस्याओ को हल करने मे समर्थ होगे और जो उन्नति का रास्ता हमारे लिये स्वराज्य प्राप्ति से खुल गया है उस पर देश आगे बढेगा।

आकाश वाणी द्वारा संदेश

अखिल भारतीय आकाशवाणी द्वारा राष्ट्र को सदेश देते हुए राष्ट्रपति ने २९ मार्च १९५० को कहा—

जबसे मै ने पद ग्रहण किया उसके बाद यह पहला ही अवसर है कि मै आपसे रेडिओ पर कुछ कह रहा हू। मेरा दिल भरा हुआ है। मेरे पास शब्द नही है जिनसे मै उस दुःख को व्यक्त कर सकू जो हाल की घटनाओ ने मेरे दिल को पहुंचाया है। मै जानता हूं कि उन सब लोगों को जिनको मजबूर हो कर अपना घरबार सब कुछ छोड़ कर भागना पड़ा है किन मुसीबतो का सामना करना पड़ रहा है। हमारी गवर्नमेंट से जो कुछ हो सकता है उन की सहायता सेवा के लिये कर रही है। पर यह प्रश्न केवल सेवा सहायता का नही है। इसकी जड़ बहुत गहरी पहुंच गयी है और इस को इस तरह हल करना है जिस में सेवा सहायता की ज़रूरत ही न रह जाये। भारत और पाकिस्तान पड़ौसी है। दोनों का हित इसी मे है कि उनका आपस का बर्ताव मित्रता का रहे और दोनो मे किसी भी तरह से कोई ऐसी कार्रवाई न हो जिससे लोगों के दिलो में गुस्सा आवे और हलचल पैदा हो। इसलिए मुझे कम तकलीफ़ उन कामों से नही पहुंची है कि हमारे कुछ लोग पागलपन के शिकार बन गये है जिसके कारण बर्बरतापूर्ण और अक्षम्य काम हुए है। मै ने कल ही भारत के नागरिकों के नाम एक अपील पत्रों मे निकाली है जिस में मै ने कहा है कि लोग गवर्नमेंट की सहायता लोगो की जान माल की रक्षा करने में करें। कोई भी सभ्य गवर्नमेंट किसी भी व्यक्ति को अपने हाथों मे क़ानून ले लेने का अधिकार नही दे सकती। प्रत्येक सभ्य गवर्नमेंट का यह कर्तव्य होता है कि उसके राज्य में जितने लोग बसते है सब की जानमाल की हिफ़ाज़त करे चाहे उनकी जाति और धर्म कुछ भी हो। इसलिये आज जो हमारे प्रधान मन्त्री ने संसद् में बयान दिया है और जो दुःख और लज्जा प्रकट की है उसमें मै उनके साथ बिल्कुल सहमत हू। आपने सुना है कि पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री ने हमारे प्रधानमन्त्री का निमन्त्रण स्वीकार किया है और अपने कुछ साथियों के साथ आपस में बातचीत करने के लिए दिल्ली आ रहे है। मेरी आशा है कि यह बातचीत जो २ अप्रैल से शुरू होगी सफल होगी। मै एक शब्द भी

ऐसा नही कहना चाहता हूं जो दिक्क़तें पेश है उन को बढ़ावे और मै जितना ज़ोर देकर कह सकता हूं उसके साथ आप सबसे कहना चाहता हूं कि आप भी कोई ऐसी बात न कहें और करे जो वातावरण को विषाक्त बनावे। ज़प्त और सहिष्णुता से हर हालत में सामाजिक सुव्यवस्था आती है। पर आज की नाज़ुक परिस्थिति में उसकी और भी ज़रूरत है। कोई ऐसा न समझे कि हमारे प्रधान मन्त्री उसकी परिस्थिति से पूरी जानकारी नही रखते। जो प्रश्न हमारे सामने है उन को वह पूरी तरह जानते और समझते है और वह इस बात पर दृढ़ है कि साधारण स्थिति फिर भी कायम हो जाये। जो लोग गवर्नमेंट की सहायता करने की इच्छा रखते है वे इसे इस तरह कर सकते है कि उनकी स्थिति संभालने मे वह जो मुनासिब समझे वैसा करने का पूरा मौक़ा दें और अपने किसी ग़ैरकानूनी काम से उसके रास्ते में कठिनाई न लावे। हम दूसरों को ठीक रास्ते पर चलने के लिए तभी मजबूर कर सकते है जब स्वयं ठीक रास्ते पर रहें। एक सफ़ेद चादर पर छोटा सा भी दाग उसे दूषित कर देता है। आप सब से मेरा साग्रह अनुरोध है कि आप गवर्नमेंट पर भरोसा रक्खें और उसे परिस्थिति को अपने तरीके से सभालने दे। और मै आपको विश्वास दिलाना चाहता हू कि सरकार इस नाजुक स्थिति मे अपने कर्तव्य से नही चूकेगी।

यही छोटा सा बयान देने के लिए और निवेदन करने के लिए मै ने आप को तकलीफ़ दी।

जय हिन्द।

अखिल भारतीय सहकारी प्रदर्शनी

ता० २ अप्रैल १९५० को आल इण्डिया कोआपरेटिव प्रदर्शनी के अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा—

कमला देवी, बहनो, तथा भाइयो,

मुझे इस बात से बड़ी खुशी हुई कि आप ने मुझे यह मौका दिया कि सारे हिन्दुस्तान में जो कोआपरेटिव के जरिये से काम हो रहा है उसका कुछ नमूना मै यहां आकर देख सकू। हिन्दुस्तान में कोआपरेटिव सोसायटी के काम को शुरू हुए बहुत साल हो चुके, शायद ५० वर्ष या इससे भी ज़्यादा। उस वक्त से यहा कुछ न कुछ कोआपरेटिव का काम हुआ है। मगर बहुत दिनो तक यह काम इस तरह से होता रहा कि इसका ज़्यादातर सम्बन्ध कुछ कर्ज़, लेनदेन से ही रहा। इसका एक फल यह हुआ कि बहुत सी जगहो मे कोआपरेटिव से किसी हद तक लोग अलग हो गये। जहा नुकसान हुआ वहां लोगो ने देखा कि थोडे आदमियो की ग़लती से उन लोगों को भी, जो ईमानदार और सच्चे है, नुकसान उठाना पड़ता है। इस वजह से कई जगहों पर मेरे सूबे मे भी लोग, कुछ कोआपरेटिव से नाराज़ हो गये। मगर यह ऐसा काम है जिसे सिर्फ़ एक ही चीज़ में महदूद रखना सरासर ग़लती है। क़र्ज़, लेनदेन का काम भी ज़रूरी है, मगर उससे भी ज़्यादा ज़रूरी यह है कि इसके ज़रिये लोगों की सारी ज़िन्दगी के ढांचे को बदला जाये। वह तभी हो सकता है जब कि इसके हाथ में बहुत तरह के काम आ जायें। इसी वजह से यहां पर आप जो नुमाइश कर रहे है उसकी बड़ी क़ीमत है। क्योंकि यहां पर क़र्ज़ की बात तो कही देखने में

नहीं आती । यहां तो यह बात देखने में आ रही है कि लोगों ने कोआपरेटिव के ज़रिये कितना काम किया है, और अब भी कितना काम कर रहे हैं ।

अभी अभी रिपोर्ट पढ़ने के वक्त मंत्रीजी ने कहा कि अब तक जितना कपड़ा हिन्दुस्तान में तैयार होता रहा उसका क़रीब क़रीब एक चौथाई हिस्सा हैंडलूम द्वारा गांवों मे तैयार होता है । मुझे ख्याल है कि आज से कुछ साल पहले बिहार मे गवर्नमेंट ने एक मर्तबा हैंडलूम का सेन्सस लिया था और वहा उससे यह पता लगा कि बिहार मे बुने जाने वाले कुल कपड़े और वहां खपत होने वाले कुल सूत का एक तिहाई कपडा हैंडलूम पर बुना जाता है । अब भी इस तरह के कारीगर बहुतेरे मौजूद है जिनको अगर किसी भी क़िस्म का खूबसूरत और मुश्किल से मुश्किल नमूना हाथ से बुनने के लिए दिया जाये तो नमूने को देखकर ही वे अपने हैंडलूम पर उस चीज़ को तैयार कर सकते हैं । चूकि मेरा अपना ताल्लुक़ ज़्यादातर सूत कताई और कपड़े के बुनने से रहा है इस लिए मै इस को जानता हूं कि इसमें तरक्क़ी की कितनी गुंजाइश है, और इसके ज़रिये कितना काम हो सकता है । यह भी बात ग़ौर करने की है कि जो कुछ भी हमारे यहां के कारीगर जानते है और कर सकते है वह उन लोगों ने कही किसी टेक्निकल स्कूल में नही सीखा है और न उनको शिक्षण देने के लिए गवर्नमेंट की तरफ़ से या किसी सोसायटी की तरफ से इन्तज़ाम किया गया है । बाप दादाओं के वक्त से चले आने वाले पेशे के ज़रिये ही वे सब कुछ सीखे है । आप यहा पर जो बहुत कुछ देख रहे है चाहे वे काश्मीरी शाल के नमूने हों, वे चाहे बनारस के अच्छे से अच्छे कमखाब के नमूने हों, चाहे सूरत के अच्छे अच्छे नमूने हो या पजाब के या राजपूताना के हों, ये सब उन्ही लोगों की मेहनत और कारीगरी का नतीजा है । इन चीजों को किसी स्कूल में ट्रेनिंग लेकर नही बनाया गया है । यह तो परम्परागत कारीगरी के आधार पर बनाई गयी है और उसे वे लोग सहज में ही सीख लेते है । आज ये चीज़ें कोआपरेटिव के ज़रिये बनाई जा रही है । मुझे उम्मीद है कि यह व्यवसाय काफी तरक्क़ी करेगा ।

जितना कोआपरेटिव के जरिये काम हो सकता है और किसी जरिये से नही हो सकता । टीक है कि हर काम में कुछ ऐसे लोग आ जाते है जिनसे उसको नुक़सान पहुचता है । जो केवल पैसा कमाने का उद्देश्य ही सामने रखते है वे लोग तो इसके ज़रिये ग़रीब कारीगरो को अपने नफे के लिए कम दाम देकर खुद नफ़ा उठाते है और उन बेचारों को जितना मिलना चाहिये नही मिल पाता है । प्रोत्साहन का तो प्रश्न ही क्या उन्हें अपनी मेहनत का मावज़ा भी नही मिलता है । इसलिये वह इस काम को आहिस्ता आहिस्ता छोड़ना शुरू कर देते है और यह कला कुछ दिनों बाद मर जाती है । पर मुझे आशा है कि कोआपरेटिव के ज़रिये वे इन कलाओं को ज़िन्दा रख सकेंगे ।

अभी श्रीमती कमला देवी जी ने फरीदाबाद का ज़िक्र किया । फरीदाबाद में एक नया तरीका काम मे लाया जा रहा है, बडे पैमाने पर एक नया एक्सपेरिमेन्ट किया जा रहा है । वहां सब चीज़े बनाने की हम कोशिश कर रहे है । मसलन वहां मकान बनेगे । मकानों के लिए जो कुछ सामान चाहिये उस सब को कोआपरेटिव तरीके से बनाया जायेगा । जो वहा शरणार्थी लोग है उन लोगों के हाथो से सब चीजें बनायी जायेंगी । इस नुमाइश में आपके सामने कुछ ईंटे रक्खी गयी है जो मकान बनाने के काम में आती है । इसके अलावा और चीज़े है जिनके

कारण लोगों का रोज़गार मिल जायेगा। यह सब चीज़ें कोआपरेटिव तरीक़े पर बनाने का विचार है। इसमें कोई शक नहीं कि इससे देश को बड़ा भारी लाभ होगा। जिन चीज़ों के निस्बत मै ने अभी कहा ये सब दस्तकारी की चीज़ें है। ये सब चीज़ें ऐसी है जिन को फिर मे जिलाना है। देश में और बाहर भी इनका प्रचार करना है। यह सब कोआपरेटिव के ज़रिये ही हम कर सकते है। मगर सिर्फ़ दस्तकारी या हाथ से बनी चीज़ों के साथ ही कोआपरेटिव का ताल्लुक रखना ठीक न होगा। उसको तो खेती के काम के लिए भी प्रयोग करना होगा। मेरे विचार में खेती का काम कोआपरेटिव की सहायता के बिना तरक्की न कर सकेगा। अगर कोआपरेटिव के ज़रिये से इस काम को किया जाये तो मै समझता हू कि काश्तकारों की बहुत बड़ी तरक्क़ी होगी। हमारे यहां काश्तकारो के खेत बहुत छोटे छोटे होते है। उन के पास न तो इतना पैसा होता है और न इतना वक्त कि वे अच्छे बीज ख़रीद करके उनका इस्तेमाल कर सके और अपने काम को बढ़ा सकें। इसलिये नतीजा यह होता है कि वे पुराने हल और पुराने तरीके से सब काम करते है जिस से पैदावार कम होती है। वे जानते और समझते है कि किस तरीके से काम करने पर आमदनी ज़्यादा हो सकेगी और पैदावार भी ज़्यादा होगी, मुनाफ़ा भी काफ़ी होगा। मगर उनके पास साधन नहीं होते। अगर यह साधन कोआपरेटिव के ज़रिये दिये जायें तो वे नये तरीकों को बरत सकेगे। गांव के सब काश्तकार एक साथ मिल कर के अपने खेत बोयेंगे और जोतेगे। इससे एक ओर तो खर्च कम होगा और दूसरी ओर आमदनी काफी बढ़ेगी। पैदावार भी बढ़ेगी। यहां इस तरह का कोई गाव देखने का मौका तो मुझे नही मिला है जहां सब एक साथ मिल कर के खेत बोते और जोतते है। पर बिहार के एक गांव में इसी तरीक़े पर खेती की जाती है। वह गांव सारन जिले में है। वहां उन्होने कोई चीज बाहर से नही मगाई है। गाव की खेती की जरूरत की जितनी भी चीजे है उनको गांव मे ही मुहैया कर लेते है और १०-२० आदमी एक साथ खेती करते है। इससे पैदावार भी बढ जाती है। ख़र्चा भी कम होता है और हर एक आदमी को पहले जो मिला करता था उससे कुछ ज्यादा ही बच जाता है। क़रीब करीब डेढ़ गुना फायदा होता है। इस बात को उन्होंनें महसूस किया है। अगर गांव के लोगों को बीज, खाद, लोहा और इसी तरह की दूसरी चीजें जिनकी उन्हें जरूरत पड़ती है कोआपरेटिव के ज़रिये से मुहय्या की जाये तो मेरी समझ मे कोई वजह नही है कि वे लोग तरक्की न कर सके।

साथ ही जो कुछ वह पैदा करते है उसको कोआपरेटिव के ज़रिये से बेचने का भी इंतज़ाम किया जाये तो और भी अच्छा होगा। जो कुछ पैदा होता है उसको उस वक्त तक रक्खा जाये जब तक कि उसकी क़ीमत अच्छी न आये। मै समझता हू कि किसानों को जो कुछ भी आज मिलता है, उससे उनको ज्यादा मिलने लगेगा। इस तरह से काम करने से उन को बहुत नफ़ा होगा। मै समझता हू कि अगर फ़ार्मो की कोआपरेटिव तरीके से इस प्रकार आर्थिक सहायता की जाये तो इसमे भी बहुत मुनाफ़ा हो सकता है। इसके बाद लोग भी खुदबखुद दिलचस्पी लेने लगेंगे, काम करेगे। इसलिये मेरा अपना ख्याल है कि इसके ज़रिये से देश की भलाई हो सकती है।

इसी लिए इस तरह की एक नुमाइश की गयी। गवर्नमेंट का काम है कि इस में मदद करे। इसमें उसे मदद देनी ही चाहिये। गवर्नमेंट ने आज तक कोआपरेटिव पर काम चलाने में ज्यादा

से ज़्यादा मदद दी है। वह अपने हाथ में सब रख कर काम करती थी। बेहतर यह है कि इस रीति के अपनाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जाये। लोग काम करने लगे और अगर मदद की जरूरत हो तो मदद दी जाये। पहले लोगों को इसमें पडना चाहिये। इसके लिए बहुत काम करने वालो की जरूरत है। यह काम जो इतना कामयाब हुआ है उसकी वजह कमला देवी जी और दूसरे भाई वहन है जिनकी मेहनत का यह फल है। थोडे दिन मे ही इसका नतीजा आप देख सकेंगे। दूसरी जगह भी अच्छी है। अगर अच्छे काम करने वाले इस काम मे अपना समय लगायेंगे तो मुझे पूरा भरोसा है कि वे कामयाब होंगे और देश तरक्क़ी करेगा। इसी में हमारी भलाई है। आयन्दा के लिए यह एक ऐसी चीज है जिसमें तरक्की करने की काफी गुजाइश है।

मै आप सब भाई वहनों को मुबारकबाद देता हू कि आपने इस काम को खूबी के साथ अंजाम दिया है और मै उम्मीद करता हू कि दूसरे लोग भी इस काम मे आपकी मदद करेगे, आपका उत्साह बढायेगे और आप सब लोग मिल कर काम को आगे बढायेगे। जय हिन्द।

'देहली' जहाज़ पर

५ अप्रैल १९५० को बुधवार को भारतीय नौसैना के 'देहली' जहाज़ के पदाधिकारियों और नाविकों तथा भारतीय नौसैनिक बेड़े के अन्य जहाज़ों के प्रतिनिधि वर्ग के समक्ष जहाज (बम्बई) पर राष्ट्रपति जी ने कहा—

आज संध्या काल मे आप से मिलने का यह मौका पाकर मुझे वडी खुशी हुई है। यद्यपि हमारी नौसेना अभी कम दिनो की है किन्तु अतीत काल मे समुद्रों मे नौवहन की हमारी कीर्ति बहुत पुरानी है। हमारी नौ सेना चाहे वह सशस्त्र हो अथवा व्यापारिक, हमारे नाविकों और नौवहन करने वालों पर पूर्णतया निर्भर करती है। हम अब नौ सैना का निर्माण कर रहे हैं और मुझे आशा है कि वह हमारे देश के गौरव और विशालता के अनुरूप ही बडी और शक्तिशाली होगी। इसे महान् और शक्तिशाली बनाने का भार आप ही लोगो पर है जो हाल ही मे नौसेना मे भरती हुए है। ज़्यादा दिन नही बीते जब हम हिन्दुस्तानी जहाजी कारखानों मे समुद्र में जाने वाले जहाज बनाया करते थे और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के दिनो तक बड़े बड़े जहाज़ यहां बनाये जाते थे तथा उन्नीसवी शताब्दी के आरम्भ तक हम अग्रेजी नौसेना को जहाज दिया करते थे। मेरा विश्वास है कि अब जबकि हम अपने जहाजी कारखानों को फिर बना रहे हैं, हमारे आधुनिक जहाजी कारखानों के साथ साथ ही हमारी वाणिज्यिक नौ सेना भी हमारे व्यापार के बढ़ाने मे बहुत महत्वपूर्ण भाग लेने में समर्थ होगी। पुरानी परम्परा को कायम रखने की हमे आप से अपेक्षा है। तथा इस बात की अपेक्षा है कि आप कार्यदक्षता के ऐसे स्तर तक पहुंचेगे और उस पर कायम रहेगे जो आप के लिये और आप के देश के लिये यशदायी होगा। मै चाहता हू कि आप भाग्यवान हों और मेरी शुभ कामनाए आप के साथ है।

---

* अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

शराबबन्दी प्रदर्शनी

ता० ५ अप्रैल १९५० को शराबबन्दी प्रदर्शनी के अवसर पर भाषण देते हुए राष्ट्रपति ने कहा—

बहनो और भाइयो,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इस सूबे में आप ने गांधीजी के कार्यक्रम के एक अंग को पूरा किया है। यह है शराबबन्दी। सारे सूबे मे अब शराबबन्दी कर दी जायेगी। कई वर्षों मे सारे देश मे इस बात का प्रयत्न होता रहा है पर आप को यह श्रेय है कि आज आप इसे पूरा कर रहे हैं। अभी यहाँ पर जो चार्ट्स और नक्शे आप ने दिखलाये है, वे दिल पर बहुत ही असर डालने वाले हैं। मैं उम्मीद रखता हूं कि इस प्रदर्शनी से लोग बहुत कुछ सीख सकेंगे और शराब के कारण जो नुकसान लोगों को पहुंचा है, उस को अच्छी तरह समझ लेंगे और शराब छोड देंगे।

मुझे इस विषय मे कल कुछ और अधिक कहना होगा, इस लिये आज आप लोगो से इतना ही कह कर आप को मुबारकबाद देता हूं। मुझे आशा है कि इस सूबे के लोग इस काम को सफल करेंगे। इस से न केवल भारत मे बल्कि सारे संसार के सामने हम यह कह सकेंगे कि शराबबन्दी से लोगों को कितना फायदा हुआ और शराब छोड कर कितने लोग सुखी हुए और कितने गरीब लोगों को भरपेट भोजन मिला। इस के लिये मैं फिर आप लोगों को मुबारकबाद देता हूं।

बम्बई मे अभिनन्दन

ता० ५ अप्रैल १९५० को फीरोजशाह मेहता गार्डन मे बम्बई की नगरपालिका और बम्बई के नागरिकों की ओर से दिये गये मानपत्र के उत्तर में राष्ट्रपति जी ने कहा—

मेअर साहब, बहनो और भाइयो,

मैं आप की इजाजत चाहता हूं कि पहले अपने चन्द लफ्ज़ अपनी भाषा में अर्ज़ करूं और चूंकि बहुत ऐसे भाई हैं जो सिर्फ अंग्रेजी ही जानते हैं और समझ सकते हैं, उनके लिये पीछे कुछ अंग्रेज़ी मे भी कहने की इजाज़त आप से मांगूंगा।

मेरा यह सौभाग्य है कि बहुत दिनों से बम्बई शहर ने मुझे एक तरह से अपना लिया है। आपने जो मानपत्र दिया है, उस मे आप ने उस कांग्रेस का ज़िक्र किया है जिस के लिये आज से १६ साल पहले मैं बम्बई आया था और आप ने अपना प्रेम और उत्साह इतने जोरों से दिखलाया था कि उस को मैं तो कभी भूल ही नही सकता, आप लोग भी जिन्होंने उसे देखा था कदाचित् ही भूल सकेंगे। उस वक्त के और आज के हिन्दुस्तान की हालत में बहुत फर्क पड़ गया है। उस वक्त मैं एक बाग़ी जमात के सरदार की हैसियत से यहां आया था

और आज मैं आया हूं सारे भारतवर्ष की जनता की ओर से उस का सरदार चुने जाने के बाद। उस समय से आज तक जितना फर्क हो गया है इस का अदाजा आप लोग इसी बात से लगा सकते हैं।

महात्मा गांधीजी की तपस्या का यह फल है कि इन चन्द वर्षो के अन्दर ही सारे ससार में देश ने यह स्थान हासिल कर लिया है और यह फल है हमारे देश के हज़ारों लाखो भाई बहनों के त्याग और तपस्या का कि आज मेरे जैसे व्यक्ति को आप इतने ऊचे स्थान पर पा रहे हैं। कोई भी इस स्थान पर होता ही, मैं या दूसरा और कोई होता। किन्तु व्यक्ति के भेद मे कोई विशेषता न होती। मैं जिस विशेषता की ओर सकेत कर रहा हू वह यह है कि इस वक़्त हमे यह अधिकार है कि जिस को चाहें इस स्थान पर बैठाये और जैसी हमारी मर्ज़ी हो, जैसी हमारी ख्वाइश हो, जैसी हमारी इच्छा हो, उस के मुताबिक उस से वह काम करायें जिस मे हमारी भलाई हो। आज हिन्दुस्तान के पास यह अख्तियार है। भारत अपने भाग्य का निर्णय आज खुद कर सकता है। उसे बनाना चाहे बना सकता है, बिगाड़ना चाहे बिगाड सकता है। यह है वह विशेषता जिस की ओर मैं आप का ध्यान खीचना चाहता हूं। आज कोई दूसरी ताकत, दूसरी शक्ति नही है जिस पर आप बिगाडने का इल्ज़ाम लगा सकें और जिस को अच्छी बात करने के लिये हम मुबारकबाद दे सकें। भले और बुरे का जो श्रेय है या जो शिकायत है, वह सब हमारे अपने सरो पर ही है। इसलिये जब आज की स्थिति पर ध्यान जाता है और पिछले ढ़ाई वर्षो में देश में जो कुछ हुआ है उस की ओर ध्यान जाता है तो कुछ थोड़ी चिन्ता भी होती है, दुःख भी होता है और कुछ ऐसा भी मालूम होता है कि क्या सचमुच हम हिन्दुस्तान को इसलिये आज़ाद करने मे सफल हुए कि हम आपस में लडकर ही, एक दूसरे से झगड़ा करके ही जो कुछ हमको मिला है उस को एक बार फिर खो दें। सच ही क्या हम और आप ऐसी जिन्दगी बिताना चाहते है जिस में कोई भी चैन से, सुख और शान्ति के साथ रात की नीद न ले सके।

हमारे लिये यह दुःख की बात है कि मुल्क का बंटवारा हुआ। हम ने बटवारे को पसन्द तो नही किया था। मगर यह समझकर हमने उस को मजबूरन कबूल कर लिया था कि ऐसा हो जाने के बाद हम सुख और शान्ति के साथ दिन बिता सकेंगे और हम जैसा चाहेंगे वैसा अपने देश का इतज़ाम और प्रबन्ध कर सकेंगे। मगर बटवारे के साथ साथ ऐसी विपत्तिया हमारे सर पर आयी, ऐसी मुसीबतों का हमको मुकाबिला करना पड़ा कि जिन के दायरे से अभी तक हम अपने को निकाल नही सके हैं और आज भी इस तरह के वाकयात, दर्दनाक वाकयात, भयानक घटनाए हो रही हैं और कभी कभी हुआ करती है जिन से हमको शर्म महसूस होती है और दर्द भी मालूम होता है। इसलिये हम को यह सोचना है कि चाहे और जगहो मे जो कुछ हो, वहा के लोगों के साथ हम कैसा व्यवहार करेंगे और हम को कैसा व्यवहार करना चाहिये। इस मे शक नहीं कि कोई समझदार आदमी यह नही कह सकता कि अगर बम्बई से १५०० मील की दूरी पर कही कुछ लोग पागल होकर कुछ हिन्दुओ के साथ ज्यादती या उन पर जुल्म करते हैं तो उस का बदला बम्बई के लोग यहा के लोगों से ले। इसमें न तो कोई बुद्धिमानी है और न अक्लमंदी है न सचाई है, और न कोई धर्म।

जो जुर्म करता है उस को तो वहां पर ही सज़ा मिलनी चाहिये। कम से कम उस का बदला दूसरी जगह पर दूसरे लोगों से नहीं लिया जा सकता। खासकर कोई भी गवर्नमेंट अपने शहरियों को इस बात की इजाज़त नहीं दे सकती कि वे अपने हाथों में क़ानून लेकर अपनी मनमानी अर्थात् जैसी चाहें लोगों को सज़ा दें। गवर्नमेंट का यह काम है, यह फर्ज़ है कि उस के मातहत जितने लोग बसते हैं, चाहे उन का कोई भी धर्म हो, चाहे उन की कोई भी जाति हो, कोई भी पेशा हो, सबकी हिफ़ाज़त करे, सब को इसका मौक़ा दे कि वे अपनी तरक़्क़ी करें अपने धर्म के अनुसार अपना आचरण करें और देश में जो कुछ हक एक तबके को दिया है वैसा ही दूसरे तबके को भी दे। यह तरीक़ा है जो सभ्य जातियों के लिये ठीक समझा जा सकता है और जो संविधान हमने बनाया है और जिस का ज़िक्र अभी अभी मेअर साहब के भाषण और एड्रेस में किया गया है, उस संविधान में इस बात को हमने साफ़ साफ़ कह दिया है। इसलिये अब यह बात केवल समझदारी की बात ही न रहकर संविधान का आदेश भी हो गयी है कि हमारे देश के अन्दर जितने लोग बसते हैं उन सब की हिफ़ाज़त की जाये और उन सब को बराबर मौके दिये जाये।

यह ठीक है कि जब ऐसे लोगों के साथ, जिन के साथ हमारा घनिष्ट सम्वन्ध है, ज्यादती होती है और उन पर जुल्म किया जाता है तो हमारे दिलों में बवाल पैदा होता है, रज पैदा होता है, गुस्सा आता है। मगर हमारे लिये यह मुनासिब है कि हम यह सोचें कि उस रंज को हम किस तरह से काम मे लाकर इन दुःखी लोगों को मदद पहुंचा सकते है। यह समझदारी की बात नही कि इस गुस्से में पडकर हम जल्दबाज़ी में कुछ इस तरह की गलतिया कर बैठे जिन से इन दुःखी भाइयो को मदद मिलने के बजाये और भी नुकसान हो। आप सब भाई बहनों से और सारे मुल्क के लोगों से मेरी यह दरख्वास्त है कि वे इस बात को न भूलें कि वक्त बड़ा नाज़ुक है। ऐसे वक़्त में आप सब से यही उम्मीद रक्खी जाती है कि आप अपने इर्द गिर्द के लोगों को और अपने को संभाल कर के रक्खें, अपने को और सब लोगों को सभाल करके ठीक रास्ते पर चलायें और उस बात को जिस बात से आप को रंज पहुच रहा है गवर्नमेंट के हाथ मे छोड़ दें। इस चीज़ का वह क्या इतज़ाम करेगी और किस तरह उस को दूर करेगी, यह बात उस के लिये ही छोड़ दीजिये। मेरा विश्वास है और मै आप से कहना चाहता हूं कि हमारी गवर्नमेंट न तो गाफिल है और न सुस्त। वह सब चीज़ों को जानती है। सब चीज़ों को देख रही है और ठीक तरीक़े से उस को हल कर सकती है। इस के हल करने में चाहे जो भी तरीक़ा उस को अख्तियार करना पड़े उस को अख्तियार करने में वह नही हिचकिचाएगी। आप को यह विश्वास रखना चाहिये कि उसी समस्या को हल करने का यह पहला कदम है कि आज आपस में बातचीत चल रही है। अगर इस बातचीत में हमारी कामयाबी हो गयी और मै जानता हूं कि आप सब लोग मुझ से सहमत हैं कि इस में किसी तरह कामयाबी होनी ही चाहिये तो यह हमारे लिये, पाकिस्तान के लिये और दूसरे मुल्कों के लिये भी एक बहुत बड़ा काम होगा।

पिछले ढाई वर्षो में हम आपस के झगड़ों में ही ऐसे फंसे रहे है कि हमारे जो बहुत से मनसूबे थे, उन को हम पूरा नहीं कर सके हे, वहुत कार्यक्रम जो हमने सोचे थे उन को हाथ

में नहीं ले सके हैं। अगर शान्ति हो जाये अगर उस चिन्ता से हम मुक्त हो जायें जिस की वजह से न केवल हमारा वक्त ही बर्बाद हो रहा है बल्कि जिस की वजह से गवर्नमेंट की आमदनी का बहुत बड़ा हिस्सा ऐसे कामों में लगाया जा रहा है जिन में उस का लगाया जाना शायद जरूरी नही है तो हमारा समय और पैसा भी ऐसे कामों में लगाया जा सकेगा जिस से जनता की और सारे देश की भलाई हो। मैं उम्मीद रखता हू कि आप को यह जानकर खुशी होगी कि जो बातचीत इस वक्त दिल्ली मे चल रही है, वह बहुत उम्मीद के साथ दिल खोलकर आपस मे हो रही है। हम सब इस बात की दुआ करें जिस में आइन्दा के लिये हमारा रास्ता साफ हो जाये और ईश्वर से प्रार्थना करें कि इस में हम सब कामयाब हों, और हम सुख और शान्ति के साथ अपने दिन बिता सके और जो उम्मीदे हम अपने दिलों में किये हुए हैं और जो जो मनसूबे हम बनाए हुए हैं, जो जो कार्यक्रम हम ने निश्चित किये हुए है उन सब को पूरा कर सकें।

ग्रामोद्योग मन्दिर, बम्बई

ता० ६ अप्रैल १९५० को बोरिवली, बम्बई, के कोरा ग्रामोद्योग मन्दिर मे राष्ट्रपतिजी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

यहा पर आप ने ग्रामसंगठन का जो काम आरम्भ किया है उस को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। महात्मा गांधीजी का यह विचार था कि हमारे गांवो को भी ऐसा ही बनाया जाये कि जहा तक सभव हो वहां के लोग अपनी सब जरूरत की चीजो को अपने गांव मे ही पैदा कर लें। इस काम को वह विशेष महत्व इस लिये देते थे कि हमारे गांवों के लोगों के पास बहुत समय रहता है और उस का बड़ा भाग बर्बाद जाता है। इसलिये उन का वह समय ऐसे काम मे लगा दिया जाये जो वे अपने गांव में कर सकते हो। इस से उन का बहुत पैसा बच जायेगा और वे वहा आराम से अपने दिन बिता सकेंगे। हम यह देखते है कि जो लोग बडे बड़े शहरो मे जाते है उन के लिये वहां के रहन सहन, तौर तरीके, वहां के खर्चे और वहां सामने आनेवाले तरह तरह के प्रलोभन और तरह तरह के टेम्पटेशन्स से बचना बड़ा मुश्किल हो जाता है। इसलिये अगर जहा तक हो सके लोग अपनी अपनी जगह पर रहकर ही अपनी सब ज़रूरतो को पूरा कर सकें तो वह सब से अच्छी बात होगी। यह ठीक है कि आजकल की दुनियां में कल कारखाने इतने बढ़ गये है और बराबर बढ़ रहे हैं कि अगर आदमी अपने को उन से बिल्कुल अलग रखना चाहे भी तो ऐसा करना शायद उस के लिये संभव न होगा। पर फिर भी मेरी समझ में ज़रूरत की बहुत सी चीजें ऐसी हैं जिन के लिये हम को किसी दूसरे पर भरोसा करना जरूरी नहीं है।

आदमी की ज़िन्दगी के लिये तीन चीजें ज़रूरी है। १. खाना २. कपड़ा और ३. रहने के लिये घर। ये तीनों चीज़े हम अपने गांवो में जितनी चाहें पैदा कर सकते हैं। जो लोग

बड़े बडे शहरो में रहते है वे आजकल भी खाने के बारे में गांव वालों के ही मोहताज होते हैं। गांव वाले अगर भोजन न दें तो शहर वाले भूखे ही मर जायेंगे। कपड़े की हालत भी यही थी। मगर अब कल कारखाने की वजह से स्थिति बदल गई है। फिर भी अगर गांववाले चाहें तो कम से कम अपने लिये वे जितना चाहे कपडा तैयार कर सकते है। यहां के काम करने वालों ने और दूसरे भाइयों ने जिन्होंनें खादी के काम मे अपना समय लगाया है यह दिखला दिया है कि अपने लिये जरूरी कपड़ा हम आसानी से बना सकते है। इस मे कोई आश्चर्य की बात नहीं है। अगर हम चाहे तो अपने लिये आसानी से काफी कपड़ा पैदा कर सकते है। जो लोग चर्खा चलाते हैं, उन को यह बात मालूम होगी कि अगर आधे घन्टे तक रोज़ नियमपूर्वक चर्खा चलाया जाये तो एक आदमी अपने लिये जरूरी कपड़ा तैयार कर सकता है। हम मे से बहुत कम लोग होगे जिन का आधे घन्टे का समय रोज़ बर्बाद न जाता हो। महात्माजी जब तक रहे बराबर आधे घन्टे तक प्रतिदिन सूत कातते रहे। उन्होने देश के लिये जो भी किया वह सबको मालूम ही है। फिर भी वह किसी न किसी तरह समय निकाल कर चर्खा कात लिया ही करते थे। हमारा जो वक्त बर्बाद हो जाता है अगर उतने मे ही हम अपने अपने हाथ मे चर्खा ले ले तो मुझे विश्वास है कि और यह हज़ारों का तजुर्बा भी है कि आधे घन्टे मे हम इतना काफी सूत पैदा कर लेंगे जो हमारी अपनी अकेली आवश्यक्ता की पूर्ति के लिये पर्याप्त होगा।

मकान के सम्बन्ध मे भी स्थिति कुछ अधिक भिन्न नही है। जो मकान यहां बना हुआ है उस को तो आपने देखा ही ह। जो शरणार्थी यहा आये है और जिन्हें यहा आये दो ढाई वर्ष हो चुके है उन के लिये मकान बनवाने की हम बराबर कोशिश मे है। बहुत सी जगहो में बहुत से मकान बनवाये भी गये है मगर अभी बहुत से लोग ऐसे है जिन के लिये मकान बन नही पाये है। मुझे बताया गया है कि यह मकान जो यहां पर है, सिर्फ ९ दिन मे बनकर तैयार हुआ है और इस मे खर्चा भी ज्यादा नही लगा है। इस तरह की बहुत सी चीजे हम कम खर्चे में बना सकते है। बडे बड़े इंजिनियर, शहरो मे रहनेवाले इन्जिनियर, शहरों के बडे बडे मकान देखकर ही खर्चा आकने है। उन गांवों के मकान के बारे मे उन्हें कुछ विशेष जानकारी नही होती। वे तो बडी बडी बाते बोलते है। वे कहते है कि कच्चा मकान तैयार कैसे होगा। अगर वे लोग भी गावों में जाकर देखते तो पाते कि १०० मे ९० मकानो में मिट्टी की दीवारें बनायी गयी है। गांव में जो सामान मिलता है उसी से वे मकान बने है। तो हम इस बात पर ध्यान न देकर बडे बड़े शहरों की तरफ दौड़ जाते है। यह ठीक है कि गांवों में भी सब लोगो के लिये अच्छे मकान बनाये जायें। लेकिन सबके लिये उस तरह के मकान बनवाना हमारी शक्ति मे बाहर की बात है। जो मकान हम बना सकते है वे छोटे होने चाहिये और साथ ही सुन्दर और आरामदेह भी।

खाने की चीज़ों के बारे मे भी गांववालों के लिये मुझे कुछ कहना है। गांव वाले भी कुछ बाहर की चीज़ें खरीदकर खाने के आदी हो गये है। मै ने यहां तेल निकालते हुए देखा। आज शहरों में शुद्ध तेल मिलना मुश्किल हो गया है। हमारे सूबे में और उत्तर प्रदेश में इस वक्त लोगों में एक प्रकार की बीमारी फैली हुई है। लोगों के हाथ पैर फूल जाते है

लोग इस का कारण ढूंढ़ रहे है और डाक्टरों का कहना है कि तेल में कोई चीज़ें फेंट दी जाती है जिस से यह बीमारी फैल जाती है। यह सब इस वजह से है कि गांववालों को भी तेल और दूसरी चीज़े दूर से मंगाकर खानी पड़ती है। अगर गाववाले चाहें तो खाने की सब चीज़े अपने यहां पर ही तैयार कर सकते है। उस स्थिति में किसी चीज़ में किसी चीज़ के मिलाये जाने की गुजाइश नहीं रहती। घी का मिलना भी आज कठिन है। मगर आजकल चावल मे भी दूसरा कुछ फेंटा जाता है। आटे में भी न मालूम क्या क्या चीज़ें फेंट दी जाती है। गेहूं का भी यही हाल है। चावल में पत्थर के छोटे छोटे कंकर फेंट दिये जाते है। तो इस तरह से खाने की चीज़ों में हानिकर चीज़ें फेंटी जाने लगी हें। इस से देश के लोगो का स्वास्थ्य कैसे कायम रहेगा ? उस का उपाय यही है कि गांव में रहनेवाले लोग अपनी ज़रूरत की चीज़े वहां पर ही बना लें। कम से कम जो लोग गांव में रहते है वे तो इस तरह की हानिकर वस्तु के फेंटे जाने से अपने को बचा लें। अगर गांव के लोग भी सबकुछ खरीद कर खाने लगे और खरीद कर पहनने लगे तब तो देश के लिये बड़ा ही कठिन काम हो जायेगा। इसलिये जिस तरह की जो भी चीज़ गांव में बनती है उसे प्रोत्साहन मिलना चाहिये। लोग इस बात को समझ लें कि महात्मा गांधी हमारा जीवन कितना सादा और सुखी बनाना चाहते थे। इसलिये मुझे यहां आकर बड़ी प्रसन्नता हुई। यहां पर ऐसे लोग कार्य कर रहे है जो कई वर्षो से गांधीजी के साथ रह कर काम करते रहे हैं। ये लोग उन से बहुत कुछ सीख सके है और उन की यही इच्छा भी है कि अपना जीवन सुखी बनाने के लिये ये लोग अपनी ज़रूरत की चीज़ें यहां पर ही तैयार कर लें और इसी प्रयत्न में आप लोग है भी।

मैं आप सब भाई बहनों को धन्यवाद देता हूं।

बालकन जी बारी

ता० ६ अप्रेल १९५० को बम्बई में बालकन जी बारी में राष्ट्रपति जी ने कहा—

बालकन जी बारी के सदस्यगण तथा बालको व बालिकाओ,

मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि बालकन जी बारी इतनी तेजी से प्रगति कर रही है। कुछ दिन पहले मुझे दिल्ली में बालकन जी बारी के कुछ बच्चे और बच्चियों से मिलने का मौका मिला था और मै ने उन के खेल तमाशे देखकर बहुत आनन्द प्राप्त किया था। इसलिये जब मुझ से यह कहा गया कि मै संरक्षक का पद मंजूर कर लू तो मै ने खुशी से उसे मंजूर कर लिया। इस का जन्म या उद्गम यहां बम्बई में हुआ है। इसलिये मेरे यहां आने पर आप लोगों ने यह आयोजन किया, इतने सब बालकों से मेरी मुलाक़ात हुई यह भी बहुत अच्छा हुआ।

मै आप बड़ों से और क्या कहूं, आप से यही कहना है कि कल के भारत के नेता होने वाले आज के बालक है। जिस समय हम लोग बच्चे थे उस समय बच्चों के लिये ऐसी सुविधाएं

नही थी जो आजकल के बालकों को प्राप्त है। उस समय के लोग इन सब बातों को इतना जानते भी नहीं थे। और आज जब हम को बालकन जी बारी के लाभ मालूम हो गये है और इस से हम बच्चों का कितना भला कर सकते है यह हम जान चुके है तो सब लोगों का यह धर्म है कि इन चीज़ों को प्रोत्साहन दिया जाये। मै ने इसीलिये संरक्षक होना मंज़ूर कर लिया है कि मुझ से जो कुछ हो सके इसकी मदद करूं।

बच्चों से मै सिर्फ़ इतना ही कहना चाहता हूं कि तुम्हें जो अच्छी बातें सिखाई जाती है उन को सीखो और सीखकर जो अच्छी बातें है उन को केवल मन ही में न रक्खो बल्कि उन के अनुसार काम भी करो। अगर तुम को यह सिखाया जाता है कि तुम को एक दूसरे की मुसीबतों में मदद और सहायता करनी चाहिये तो तुम को चाहिये कि तुम उस के मुताबिक अमल करो; केवल यही नही कि सीख लिया और उस को वहा पर ही छोड़ दिया, बल्कि जब किसी दूसरे पर कोई विपत्ति या मुसीबत आये तो उस की अमली मदद भी करो, केवल मन मे ही सोचकर संतुष्ट न हो जाओ। इसी तरह अगर तुमको सिखाया जाता है कि "सच बोला करो" कभी कोई बात झूठ न बोलो तो इसे केवल दिल मे ही न रक्खा करो बल्कि झूठ न बोला करो। मै तो मानता हूं कि जो बात तुम को यहां पर सिखाई जाती है उस में कोई भी बात खराब न होगी। सब बाते ऐसी ही होती होंगी, जिन में तुम्हारी भलाई है। इस के अनुसार काम करने प आगे चलकर तुम्हारी ही भलाई है। मै ने महात्मा गांधीजी को अक्सर यह कहते सुना है कि किसी को भी कोई गलत बात न कहनी चाहिये। झूठ न बोलना चाहिये। उन्होंने अपनी माता से वायदा किया था कि वह कभी भी झूठ नही बोलेंगे। उन के जीवन में बड़े बड़े मौके आये। उन के सामने बड़ी बड़ी कठिनाइयां आयी। परन्तु वह कभी झूठ नहीं बोले। वह हमेशा सोचा करते थे कि अगर मै खराब काम करूं और अगर किसी ने कुछ पूछा तो मै क्या जवाब दूंगा। इसलिये कोई ऐसा काम ही न करना चाहिये जिस मे झूठ बोलने की बारी आये। इस तरह उन्होने सब मुसीबतो से अपने को बचाया। कल संध्या को बम्बई में एक छोटा सा नाटक दिखलाया गया। एक राजा था जिस ने सोचा कि राज्य मे क्या ऐसा काम किया जाये जिस से सब लोग सुखी रहे और कौन ऐसा सब से बड़ा पाप है जिस को देश से निकालने से मेरी इच्छा पूरी हो सकती है। राजा ने अपने मंत्री को बुलाकर उस से पूछा कि तुम ऐसा सब से बड़ा और बुरा पाप बताओ जिस के बन्द करने से हमारी प्रजा सुखी हो जाये। मंत्री ने कहा कि एक प्रदर्शनी की जाये जहा सब पापो का सामान रख दिया जाये और लोगों से कहा जाये कि वह उन में से किसी न किसी पाप को ज़रूर करें और जो न करे उस को सज़ा दी जाये। वहां पर शराब, धन, नाचरंग का सामान इत्यादि रख दिया गया जिन के कारण लोग पाप करते है। लोग वहां पर गये। उन में दो पंडित भी थे। पहले पंडितों ने मांस आदि अखाद्य वस्तुओं को देखा। उस को उन्होंने शास्त्र के विरुद्ध समझकर छुआ तक नही। धन की चोरी भी नही की। नाचरंग भी नहीं देखा। जब वह लोग शराब के पास आये तो उन में से एक ने कहा कि यह ऐसी छोटी बात है जिस का अनुभव हम करें तो हमें कुछ विशेष नुक़सान नहीं होगा। राजाज्ञा के दंड से भी हम अब बच सकते हैं। केवल दो घूट ही लेने चाहिये। दोनों ने उस को पी लिया। चूंकि उन को उस की आदत नहीं थी, थोड़ा सा पीने से भी नशा हो गया और उन्हें कुछ

खाने की इच्छा हो गयी। उन्होंने अखाद्य वस्तुएं खा ली। नाचरंग देखने की इच्छा अब जाग्रत हुई। इस के लिये पैसा चाहिये। वहां पर पैसा भी रखा हुआ था। उन्होंने चोरी की। इस तरह मांस का भक्षण किया नाचरंग का आनन्द लिया, और नाच का रस लेते लेते आपस में लड़ पड़े। एक ने दूसरे को मार डाला। पुलिस आयी और उसे पकड़ ले गयी। राजा ने पूछा कि तुम ने मित्रवध का पाप क्यों किया तो उस ने उत्तर दिया कि इस मे मेरा दोष नही है। राजा ने ऐसी चीज़ों को रक्खा ही क्यों और पाप करने की आज्ञा ही क्यो दी ? हमने शराब पी। हमने तो इसको सबसे छोटा पाप समझ कर किया मगर साबित हुआ कि शराब का पीना सब से बड़ा पाप है। कहने का मतलब यह है कि छोटा भी पाप हो, उस को नही करना चाहिये। क्योंकि इस के करने से मनुष्य पूरा पापी बन जाता है। इसलिये मै आप को इतना ही कहना चाहूंगा कि चाहे कितना भी छोटा बुरा काम हो तो उसे नही करना चाहिये। इस का अभ्यास बचपन से करना चाहिये।

महात्मा गाधी स्मृति मन्दिर

ता० ६ अप्रैल १९५० को बम्बई के कृष्णागिरी उपवन के महात्मा गांधीस्मृति मन्दिर म राष्ट्रपतिजी ने कहा—

श्री मुरारजी भाई देसाई, बहनो तथा भाइयो,

आप का यह विचार कि यहां एक उपवन बनाया जाये जहां दूर दूर से लोग आ कर कुछ देर तक शान्ति से विचार कर सके, कुछ देर के लिये शान्ति प्राप्त कर सकें, बहुत ही सुन्दर विचार है। अभी आप के श्री बाला साहब खेर का तैयार किया हुआ भाषण हम को सुनाया गया। उस से मालूम हुआ कि इस तरह के उपवन हमारे देश मे बहुत दिनो से और प्रायः इस के सभी हिस्सो मे बनाये जाते रहे है और उन से लोग हमेशा लाभ उठाते रहे है। आप ने कई उपवनों का नाम भी दिया है। वृन्दाबन के पास ही एक और उपवन है जिस का नाम है कामबन। इस जगह भी दूर दूर के यात्री आते है और वहां भ्रमण करते रहते है और शान्ति का अनुभव करते है। इसलिये मै इस प्रकार के उपवन की उपयोगिता और आवश्यकता को मानता हूं और मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आप ने एक ऐसे स्थान को इस काम के लिये चुना है जिस का ऐतिहासिक महत्व है और जिस की बुद्धदेव के नाम के साथ कुछ न कुछ कहानी जुटी है।

इस वक्त तक भारतवर्ष की चारो दिशाओ में बुद्धदेव के या उन के धर्म के अनुयायी अशोक के चिह्नस्तम्भ खड़े पाये जाते है। या जहां खड़े नही है वहां टूटे फूटे टुकड़े ही मिलते है। जो कुछ उस समय के उनके नियम थे वे सब इन्ही स्तम्भों पर लिखे मिलते है। यह

बातें कागज पर छपा कर उन दिनो आसानी से सारे देश में नहीं भेजी जा सकती थी और न उन का प्रचार किया जा सकता था। इस लिये उस समय के अनुसार अशोक ने यही निश्चय किया कि स्थान स्थान पर इस तरह के स्तम्भ खड़े किये जायें और जहां जहा मौका मिला उन नियमों को पत्थर पर खुदवा कर उन का प्रचार किया गया। इस तरह इन का प्रचार उत्तर से लेकर दक्षिण तक के प्रदेशों में और पश्चिम से ले कर पूर्व के प्रदेशों तक हुआ। आज भारत के प्रत्येक भाग मे इस तरह के खोदे हुये लेख और स्तम्भ मिलते है। यह बात उस समय के अनुरूप ही है।

आप ने ठीक ही कहा है कि बुद्ध देव के बाद पिछले २५००, २६०० वर्ष मे भारतवर्ष में दूसरा कोई ऐसा व्यक्ति नही हुआ जिस ने लोगो के जीवन पर इतनी गहरी छाप डाली हो जैसी कि गाधी जी ने डाली है। मेरा यह सौभाग्य रहा है कि तीस, इकतीस वर्ष तक गांधी जी के चरणों में रह कर मै बहुत निकट से कुछ न कुछ करता रहा। मैंने एक जगह लिखा है कि गांधी जी बहुत बड़े महापुरुष थे और उन के नजदीक रह कर भी मै उतना लाभ न उठा सका जितना उन के निकट रहने वालों को उठाना चाहिये। यह बात सर्वथा ठीक है। मुझ मे जितनी शक्ति थी उतना ही लाभ मै उठा सका। मनुष्य में जितनी शक्ति और प्रतिभा होती है उस के अनुसार ही वह काम करता है। किसी बीमार से डाक्टर लोग यह कहे कि फला औषधि बड़ी पौष्टिक है और अगर वे उसे उस औषधि को देवें भी पर अगर उस बीमार मे उस को पचाने की शक्ति ही न हो तो उस के लिये यह औषधि किस काम की? वह उस बीमार को लाभ नही पहुचा सकती। वही बात बड़े लोगों के समागम से भी होती है। जिस तरह गगा नदी हिमालय से ले कर समुद्र तक १५००, १६०० मील तक बराबर बहती है उसी तरह महात्मा गांधी अपनी ८० वर्ष की अवस्था तक लोगो को सिखाते गये और हमारे ऐहिक और पारलौकिक जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बातें बताते गये। गगा तो सब जगह मे हो कर बहती है मगर उस से किसी को ज़्यादा लाभ मिलता है और किसी को कम। उस से सब को बराबर लाभ नही मिल पाता है। जिस मे जितनी शक्ति होती है वह उतना ही उस से लाभ उठाता है। कोई कोई तो एक छोटे से लोटे मे उस का जल निकाल कर पी सकता है और किसी के लिये वह भी संभव नही होता। गाधी जी का जीवन भी ऐसा ही था। जिस की जितनी शक्ति थी वह उतना ही लाभ गांधी जी की जीवन गगा से हासिल कर सकता था। जिस की शक्ति कम रही वह बहुत ही कम ले सका। मै उन के नजदीक रह कर भी उन की जीवन गगा से एक लोटे भर ही अमृत ले सका।

गांधी जी का जीवन आदर्श जीवन था। वह अपने जीवन से लोगो को यह दिखा गये कि किस तरह मनुष्य को अपना जीवन बनाना चाहिये। हमे यह समझ लेना चाहिये कि उन्ही के बताये हुए आदर्श पर चल कर ही हम अपना और देश का भला कर सकते है। हमें चाहिये कि हमेशा उन के आदर्श को सामने रख कर ही हम आगे बढें। गाधी जी को यहां से गये अभी बहुत दिन नही हुए है। शायद हम ने उन से बहुत कुछ सीखा नही और ऐसा मालूम होता है कि बहुत कुछ सुना नहीं; उन के साथ रह कर भी हम उन से बहुत दूर बने रहे। हम ने उन से वहां

सीखा जो सीख सकते थे । एक कहावत है कि चिराग के नीचे अंधेरा । वही कहावत यहा भी लागू होती है । गो हम चिराग के नीचे रहते थे पर फिर भी हमारा व्यक्तित्व उन के प्रकाश से ज्योतिमय न हुआ ।

भारतवर्ष के सामने आज यही सब से बड़ी समस्या है कि वह गांधी जी के बताए हुए रास्ने पर कहां तक और कब तक चल सकता है और कहां तक उस के बदले में दूसरे रास्ते पर चलने मे इस की भलाई है । मेरा अपना तो विश्वास यह है कि सिर्फ भारतवर्ष के लिये ही नही बल्कि सारे संसार के लिये गाधी जी के बताये रास्ते के सिवाय कोई दूसरा रास्ता नही है । अगर हम शान्ति चाहते है, सुख चाहते है, सचमुच मनुष्य बन कर रहना चाहते है तो हमें चाहिये कि हम गाधी जी के बताये हुए मार्ग पर चल कर अपनी और साथ साथ सारे ससार की भलाई करे । आज दुनिया मे नये नये आविष्कार हो रहे है । वज्ञानिक आविष्कारो के फल आज हम को मिल रहे है । उन को देख कर हम लुभा जाते है । पर इस लोभ को देख कर अक्सर मुझे डर लगता है कि कही हम गलत रास्ते पर न चले जाये । पहले भी ऐसा हुआ है । दूसरे देश के लोगो ने यहा की शिक्षा से फायदा उठाया है और इस देश मे रहते हुए भी हम उस से वचित रहे । गाधी जी के जीवन से तो हम ने लगभग कुछ नही सीखा । हो सकता है कि उन्हो ने जो कुछ बताया उस को हम भूल जाये और दूसरे देश के लोग जिन्हों ने उन की शिक्षा को अपनाया हो हमारे यहा आ कर हम को उन की शिक्षा का पाठ नये सिरे से पढाये । भगवान बुद्धदेव भारत मे पैदा हुए । हम ने उन से जो कुछ सीखा था हम उस को भूल गये । देश के बाहर के लोगो ने उन के सिखाये हुए मार्ग पर चल कर बहुत कुछ लाभ उठाया । और वही लोग आज हम को उन का सदेश सुना रहे है । ८० वर्ष की अवस्था तक भगवान बुद्ध इस देश मे प्रचार करते रहे । गाधी जी भी ८० वर्ष तक प्रचार करते रहे । सारे देश मे भ्रमण करके उन्हो ने लोगो को शिक्षा दी । उन के जीवन मे और जीवन के बाद भी करोडो लोगो ने उन की शिक्षा को ग्रहण किया था । मगर सारे देश मे देखा जाये तो आज इने गिने बुद्धमत वाले मिलते है ; जब कि दूसरे देशो म आज भी करोडो की सख्या मे बुद्धमत वाले लोग मिलते है । हा यह ठीक है कि उन का बहिष्कार नही किया गया । मेरा विचार ह कि बुद्धदेव की शिक्षा हमारे देशवासियो ने बहुत हद तक अपने जीवन मे अपना ली । मै चाहता हू कि इसी तरह हम गाधी जी के आदर्शो के अनुकूल आचरण करे । जो जो मुसीबते हमारे सर पर आये उन से हम बचे । गांधी जी चाहते थे कि एक दूसरे के साथ प्रेम का व्यवहार किया जाये । हम आपस मे मिल जुल कर रहे । सिर्फ अपने हो लोगो से नही बल्कि सारे मनुष्यमात्र से प्रेम का बर्ताव करे । इस शिक्षा को हम ध्यान मे रख कर अपने जीवन को उसी तरह बनाने का प्रयत्न करना चाहिये । इस से सारे देश का उद्धार होगा ।

आप ने मुझे यहा बुला कर जो मेरा मान बढाया है और इस स्मारक का उद्-घाटन करने का काम मेरे ज़िम्मे सुपुर्द किया है उस के लिये मै आप को धन्यवाद देता हूं और इस आशा के साथ उद्घाटन करता हूं कि शायद इस मे से कुछ लोग ऐसे निकल आये जो महात्मा गांधी जी की शिक्षा को समझ कर उस के अनुसार काम कर सके ।

चिल्ड्रन्स होम

ता० ६ अप्रैल १९५० को बम्बई, चिल्ड्रन्स होम में राष्ट्रपति जी ने कहा—

संस्था के संचालकजी, भाइयो तथा बहिनो,

इस संस्था को देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। इस तरह की संस्था मै ने कहीं और दूसरी जगह नही देखी। हो सकता है कि ऐसी संस्था अन्यत्र हो पर मेरे देखने में न आई हो। यहां मैं ने बच्चों को देखा, उन सब से मिला, उन के कार्य को देखा और यह सब देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। मैं ने यह भी देखा कि इन बच्चों को यहां पर किस तरह से रखा जाता है। इस को तो आप भली भांति जानते ही है कि इस प्रकार की संस्था से देश को कितना बड़ा लाभ है। जो बच्चे किसी कारणवश किसी बुरी आदत में फंस जाते है, उन का सुधार अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। किसी कारण से बुरी आदत में फंसे बच्चों को सुधारना और उन्हें अच्छे और सीधे मार्ग पर चलाना आसान काम नही है। उन को इस योग्य बनाना कि वे भी अपने जीवन को ठीक प्रकार से निभा सकें और अपना जीवन उसी तरह चला सकें जिस तरह दूसरे अच्छे लोग समाज में रहते है, यह काम अत्यन्त प्रशंसनीय है। इस के लिये मैं आप को तथा संस्था में काम करने वाले सब लोगों को मुबारकबाद देता हूं। मुझे यह देख कर भी बड़ी खुशी हुई कि बच्चों ने यहां पर बहुत सी चीजें बनाई हैं। वे बहुत ही सुन्दर और काम की चीजें हैं। मैं ने यह भी देखा कि यहां पर खेल कूद और कसरत द्वारा वे किस प्रकार अपनी शारीरिक शक्ति भी बढ़ा सकते हैं और बढ़ाते हैं और किस तरह सब मिल कर कवायद करते हैं। मुझे आशा है कि बाद में इस आदत के कारण उन में एक साथ मिल कर काम करने की आदत पड़ जायेगी। मैं ने अच्छी तरह देखा कि बच्चों को यहां किस तरह रक्खा जाता है और अपने नाम के अनुरूप ही यह सच्चा कैदखाना न हो कर उन के अपने घर के ही समान है। यहां उन को शिक्षा भी दी जाती है। नतीजा यह है कि सब का रहन सहन वैसा ही अनुशासनशील हो गया है जैसा कि किसी अच्छे बच्चे का होना चाहिये। बुरी संगत की वजह से जो बुरी आदत इन में पड़ गई होती है उन को यहां आहिस्ता-आहिस्ता निकाल दिया जाता है। जनता को भी चाहिये कि वह इस काम में हर प्रकार की सहायता दे।

यह सवाल बड़ा है कि आदमी गुनाह क्यों करता है? विभिन्न विचार वालों ने इस के विभिन्न कारण बताये है उन में से कुछ का कहना है कि मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा है कि वह उस को गुनाह करने के लिये प्रवृत्त करता है। अपने प्राकृतिक स्वभाव के कारण ही चोर चोरी करता है। पर दूसरों का विचार है कि परिस्थिति के कारण ही मानव गुनाह करता है। वे मानते है कि अगर उन परिस्थितियों को दूर कर दिया जाये तो सहसा लोगों का मन गुनाह करने की तरफ न जाये। इस मत में काफ़ी तथ्य नज़र आता है। इसलिये मैं समझता हूं कि हम को पहले परिस्थिति को सुधारना चाहिये। ऐसा कर के हम मनुष्य का चरित्र बहुत कुछ सुधार सकते हैं। अच्छे बच्चे भी कभी कभी परिस्थिति का शिकार हो कर गुनाह कर बैठते हैं। यदि ऐसा प्रबन्ध हो जाये कि बुरी परिस्थिति को हटा कर अच्छी परिस्थिति लाई जाये तो संभवतः कोई भी बच्चा

गुनाह न करे। मेरा विचार है कि अगर किसी को अच्छी आदत के लिये प्रोत्साहन मिलेगा तो वह अच्छे काम करेगा। यदि कोई खराब होता है तो यह परिस्थिति का दोष है न कि उस बच्चे का। अगर हम अच्छी परिस्थिति पैदा करे तो बुरी आदतें खुद बखुद नष्ट हो जाती है और अच्छी आदतें बन जाती है और लोग अच्छे मनुष्य बन जाते है। मै आशा करता हू कि जो काम आप ने यहां शुरू किया है और जिस को यहा कई वर्षो से चलाया जा रहा है उस मे और भी प्रगति होगी। आप के सूबे में और भारतवर्ष के अन्य सूबो मे भी ऐसा काम शुरू होना चाहिये। यदि बच्चे अच्छे हो जाये तो गांधी जी का राम राज्य स्थापित होने मे देरी नही लगेगी। आइंदा भारत का सब कुछ इन बच्चो पर ही तो निर्भर करता है। अगर बच्चे बर्बाद हो गये तो सब कुछ बर्बाद हो जायेगा। इस लिये यह बडा महत्व का काम है। इस मे जो भी खर्चा हो उस की हमे परवाह नही करनी चाहिये। वह खर्चा बर्बाद नही समझना चाहिये। मुझे बताया गया है कि सस्था का खर्च ७,३५,००० सालाना है। मै ने यह भी पूछा कि एक आदमी पर सालाना कितना खर्च आता है। मुझे बताया गया कि ४५० या ५०० के लगभग खर्च आता है, यानी प्रतिमास ४० रुपये। खर्च तो काफी है। पर इस खर्चे को इस ख्याल से नही देखना चाहिये कि इस की मात्रा कितनी है। यह खर्चा गवर्नमेन्ट की तरफ से किया जा रहा है। अगर यही बच्चे बुरे हो जायेगे तो गवर्नमेन्ट को और अधिक खर्चा करना पडेगा। अगर गवर्नमेन्ट इन बच्चो का सुधार कर देती है तो समाज को बड़ा लाभ होगा। हमे इस खर्चे को इस दृष्टि से देखना चाहिये। बम्बई के व्यापारियों की दृष्टि मे भी यह कोई बुरा इन्वेस्टमेन्ट नही है, अच्छा ही इन्वेस्टमेट है। हर दृष्टि से इस तरह के काम होने की आवश्यकता है।

बच्चो से मेरा यह कहना है कि उन को अपना सौभाग्य समझना चाहिये कि वह ऐसी संस्था मे पहुच गये है। उन्हे संस्था को पूरा सहयोग देना चाहिये। और यह प्रयत्न करना चाहिये कि उन मे जो बुराई आ गई है उस को निकाल कर अच्छे बने। जो बाहर की मदद हो सकती है वह तो मिलती ही रहेगी। सस्था के काम करने वाले लोग और बच्चे दोनों मिलकर एक दूसरे के साथ सहयोग करे तो और भी उन्नति हो सकती है। इस दृढ विश्वास के साथ आगे बढ जाइये कि जो आज बिगडा हुआ भी हो वह आगे चल कर अच्छा बन सकता है। और देश के लिये अच्छे काम कर सकता है।

मै आप सब लोगों को फिर एक बार बधाई देता हूं।

आयुर्वेदिक चिकित्सालय बम्बई

ता० ९ अप्रैल १९५० को बम्बई, सिवान मे आयुर्वेद प्रकाश मंडल के नये आयुर्वेदिक अस्पताल में राष्ट्रपति जी ने कहा---

बहनों और भाइयो

यह संस्था एेसे काम में लगी है जिस में मेरी अपनी दिलचस्पी काफ़ी रही है। आज कल भी आयुर्वेद से भारत मे अनक लोगों को फायदा होता है। जब आप को दानी लोगों ने इस तरह से दल खोल कर संस्था चलाने के साधन दिये है तो मै चाहता हूं कि अब आप इस को इस खूबी से चलायें कि जिस से आयुर्वेद की उन्नति हो। आयुर्वेद के मार्ग में जो रोड़ा है उसे दूर

कर के इसे आगे बढाइये ताकि यह संसार में अपना उचित स्थान पा सके। हृदय से मेरी यही कामना है और मुझे आशा है कि आप भी इसी नीति पर अमल करेंगे जिस से आयुर्वेद पुनः गौरवान्वित हो जाये--

---

मद्य निषेध सप्ताह

बृहस्पतिवार ६ अप्रैल १९५० के सायंकाल ६ बजे चौपाटी बम्बई में मद्यनिषेध सप्ताह को शुरू करने के समय राष्ट्रपति जी ने कहा--

बहनो तथा भाइयो,

जब मेरे पास बम्बई के गवर्नर महोदय का और प्रधान मन्त्री का निमन्त्रण आया कि मैं आज के समारोह मे आ कर शरीक होऊं तो मै ने उसे मंजूर कर लिया। मेरे मंजूर कर लेने के बाद मेरे पास कई मित्रो के तार पहुंचे जिन मे उन्हों ने लिखा कि मुझे यह निमंत्रण मंजूर नहीं करना चाहिये था क्योकि मै इस वक्त राष्ट्रपति की हैसियत के कारण किसी विशेष दल का नुमाइन्दा न हो कर सभी दलों का नुमाइन्दा हूं। बात ठीक है। चाहे इस के पहले मेरी जो भी हैसियत रही हो अब मेरी केवल एक ही हैसियत है और वह यह है कि मैं सारे राष्ट्र का नुमाइन्दा समझा जा सकता हूं। पर मै यह नही मानता हू कि इस काम को करने में मै कोई ऐसा काम कर रहा हूं जो राष्ट्र का काम नही है, किसी एक दल विशेष का काम है।

कुछ दिन पहले जब मै कांग्रेस का अध्यक्ष था, मैं ने सारे देश का दौरा किया था। उस वक्त कही कही कुछ सभाओ मे कुछ थोड़े भाई काले झडे ले कर आते थे और कहते थे "गो बैक"। जो लोग सभा मे होते उन मे से कुछ प्रदर्शनकारियों पर गुस्से होते। मैं ने कहा कि इस सभा मे हजारो लोग है उन मे से जो इस "गो बैक" के नारे से सहानुभूति रखते हों, मेहरबानी कर के अपना हाथ उठा दें। दस पांच इने गिने लोगों ने हाथ उठाये। इस के बाद मैं ने कहा कि जो लोग इस "गो बैक" के नारे से सहमत नहीं है वह भी अपना हाथ उठा दें। सारी सभा ने हाथ उठा दिये। जब मेरे पास इस तरह के पत्र आये तो मुझे यह पुरानी बात याद आई कि कुछ भाई तो चाहते है कि शराब बन्दी न हो, मगर यदि सारे देश की जनता की राय ली जाये, तो इस मे कोई शक नही है कि उस का बहुत बड़ा बहुमत शराब बन्दी के पक्ष में होगा। इस लिये जिस तरह की उस सभा में मै ने उन "गो बैक" कहने वाले भाइयों से कहा था कि सभा की राय है कि मै नहीं आप "गो बैक" उसी तरह मै उन भाइयों को भी जिन्हों ने मुझे यहां न आने की राय दी थी यही जवाब देता हूं कि जनमत उन के खिलाफ है। मैं इस बारे मे दृढता से यह बात इस लिये कह सकता हूं क्योंकि मुझे मालूम है कि यह विषय आप की धारा सभा में आया था और वहां सब लोगों ने मिल कर इसे स्वीकार किया था।

उन दिनों भी जब कांग्रेस के हाथ में सत्ता न आई थी, हमारे हजारों भाई बहिनों ने नशाबन्दी के लिय जेल खाने के कष्ट भोगे थे। उस वक्त हम सब लोगों से कहा करते थे कि नशाबन्दी होनी चाहिये। जब पिछला चुनाव हुआ तो चुनाव के लिये हम ने जो घोषणा

पत्र निकाला था उस में भी हम ने नशाबन्दी का खास तौर पर ज़िक्र किया था। घोषणापत्र के अनुसार जनता ने आज की धारा सभा के सदस्यों को चुना और तदनुसार ही उन लोगों ने यहां आकर यह निश्चय किया। इस लिये यह अब ऐसी बात नहीं है जिस के सम्बन्ध में किसी तरह के मतभेद की गुंजाइश हो। हर हालत में प्रजातन्त्र में निश्चय करने का यही तरीका हो सकता है कि पहले जनमत जान लिया जाये और फिर जनमत के अनुसार प्रजातन्त्र अपना राजकाज चलाये। नशाबन्दी के सम्बन्ध में जनमत ने अच्छी तरह से अपनी राय ज़ाहिर कर दी है। किसी भी प्रजातन्त्र के अन्दर जनमत जान लेने के जो भी तरीके हो सकते हैं वे सब तरीके बरत कर के हम ने जनमत को जान लिया है और मान लिया है। यों तो शायद ही कोई ऐसी बात होती है जिस के सम्बन्ध में सब के सब एकमत हों। कुछ लोग हमेशा ऐसे रहेंगे जिन का दूसरों से किसी न किसी चीज में मतभेद रहेगा। मगर प्रजातन्त्र की कोई खास बात है तो वह यही है कि जब तक राय पक्की तरह से जान न ली जाये तब तक तो प्रत्येक आदमी को अधिकार हो कि वह अपनी राय सब को बतावे और समझाये। मगर जब एक बार यह मालूम हो जाये कि बहुमत किसी एक बात के पक्ष में है और वह बात ऐसी नहीं है कि जिसे हमारी आत्मा कबूल नहीं कर सकती तो हम को उसे मान लेना चाहिये और चाहे उस से हमारी राय न भी मिलती हो तो भी हम को उसके मुताबिक चलना चाहिये। मैं इस लिये कहता हूं कि बम्बई सरकार ने जो यह निश्चय किया है कि सारे सूबे में, इस राज्य भर में, एक बारगी नशाबन्दी कर दी जाये, वह उस ने जनमत की आज्ञा का पालन करने के लिये ही किया है। इतना ही नहीं उस ने देश का बहुत बड़ा उपकार भी किया है।

इधर जब १९४६ ई० से कांग्रेस के लोग मन्त्रिपद पर आये हैं, मुझे यह देखने का मौका तो नहीं मिला है कि नशाबन्दी के सम्बन्ध में लोग क्या कर रहे हैं। मगर मुझे सन् १९३७ ई० का कुछ अपना व्यक्तिगत अनुभव याद है जिस का मैं ज़िक्र यहां कर देना चाहता हूं। हमारे सूबे में, बिहार में, यह प्रस्ताव किया गया कि वहां के जिस इलाके में शराब बहुत चलती है वहां शराब बन्दी की जाये। वह इलाका था कोयले की खानों वाला इलाका जहां खानों में काम करने वाले मजदूर शराब बहुत पिया करते हैं। मैं वहां गया सारे इलाके में फिरा। जहां जहां दारू की दुकानें थी उन दुकानों में गया और वहां पर हज़ारों आदमियों से मिला। मैं ने उन से पूछा कि तुम क्यों शराब पीते हो? कोई साफ़ जवाब नहीं मिला। मैंने उन से पूछा कि क्या तुम्हारे बाल बच्चे इस को पसन्द करते हैं, तुम्हारी स्त्रियां इस को पसन्द करती हैं? बहुतेरों ने कहा कि नहीं। मैं ने यह भी कहा कि अगर इस के छोड़ देने से तुम्हारे बाल बच्चे अच्छा कपड़ा पहिन सकें, और अच्छा खाना खा सकें तो तुम इस को छोड़ देने के लिये तैयार हो जाओगे? उन्हों ने कहा हां। यह चीज़ मिलती है इस लिये पीते हैं। मैं ने कहा, अगर ये दुकानें बन्द हो जायें, और यह चीज न मिले तो नहीं पीओगे? उन्हों ने जवाब दिया, हां। यह मैं मानता हूं कि जो लोग पीते हैं कम से कम उन में से बहुतेरे इसी कारण पीते हैं। हां पीछे चल कर वे पक्के हो जाते हैं। मगर मेरा खयाल है कि आरम्भ में अधिकतर ऐसे ही लोग होते हैं। जब उस इलाके में शराब-बन्दी की गई तो वहां की स्त्रियों ने हम सब को पहले आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा कि अब हम घर में सुख से रह सकती हैं। अच्छा खाने को मिलता है। थोड़े ही दिनों के बाद हम ने यह भी

देखा कि उन के हाथ में चांदी के कड़े दिखाई देने लगे। मज़दूरो को काम देने वाले उनकी खानों के जो मालिक थे उन्हों ने भी हम से कहा कि अब उन को अच्छा वेतन मिलता है क्यों कि अब वे कम गैर हाज़िर रहते हैं और समय पर आ कर काम करते हैं। कोयला भी ज्यादा निकालते हैं। इन सब चीजों को देख कर मेरे दिल में यह विश्वास हो गया है कि हज़ार रुकावटें भी हों तो भी हम को इसे जारी रखना चाहिये। हमारे सूबे में जो काम हुआ था वह सन् १९४० में फिर बन्द हो गया। इस लिये मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आप बम्बई में इस काम को दूसरे तरीके से शुरू कर रहे हैं या यों कहिये कि पूरा कर रहे हैं। उन दिनों यह तरीका था, बम्बई मे भी यही तरीका था और मद्रास में भी यही तरीका था कि कुछ ज़िलो को चुन लिया जाता था और उन ज़िलो में शराब बन्दी की जाती थी और आहिस्ता आहिस्ता नये ज़िलो में भी शराब बन्दी लागू की जाती थी और यह उम्मीद की जाती थी कि इस तरह कुछ दिनों के बाद सभी जगहो में शराब बन्दी हो जायेगी। पर इस मे यह दिक्कत होती थी कि आस पास के इलाके से कुछ लोग शराब बन्दी वाले इलाके में चोरी से शराब ला कर के बेचते थे और इस तरह उस इलाके मे भी लोगों को शराब मिल जाती थी। इस लिये पूरी तरह शराब बन्दी करने में कठिनाई पड़ती थी। आप ने यह होशियारी की बात को कि सारे सूबे मे एक साथ शराबबन्दी कर दी। पहले आप ने शराब बन्दी हफ्ते में दो दिन के लिये की, फिर पाच दिन के लिये और अब तो आप ने हफ्ते के सब दिनो के लिये लागू कर दिया है। जब शराबबन्दी हफ्ते मे दो या पांच दिन के लिये ही थी तब भी आप ने यह नियम बना रखा था कि अन्य राशन की हुई चीज़ों की तरह शराब भी निश्चित राशन ही मे मिले। कोई दो दिन के अन्दर ही सात दिन के लिये शराब खरीद कर रख नही सकता था। उस का नतीजा यह हुआ कि आहिस्ता आहिस्ता शराब की खपत खत्म हो गई। जो लोग पहले आस पास से शराब लाया करते थे अब उन को ऐसा मौका नही मिलता। इस प्रकार आप सचमुच ही शराबबन्दी करने मे कामयाब हुए है। आज से आप ने सारे सूबे मे शराबबन्दी कर दी है, मुझे आशा है कि उस में आप को सफलता मिलेगी।

मुझे यह देख कर भी खुशी होती है कि गवर्नमेन्ट की तरफ से इस का प्रबन्ध किया जा रहा है कि लोगों को मन बहलाव के लिये दूसरे सामान दिये जायें। मै चाहता हूं कि कानून पर ही भरोसा न कर के लोग अपनी समझ पर ही भरोसा करना सीखें। जो लोग इस रोजगार में लगे हुए थे यानी शराब या शराब जैसी नशे की और चीजो के बेचने, बनाने में या और ऐसे कामों मे लगे हुए थे उन के लिये दूसरे धन्धे जुटाने का प्रयत्न हमे करना चाहिये और हमारी कोशिश होनी चाहिये कि उस जमात मे कोई ऐसा न रह जाये जिस को बेकारी की मुसीबत का सामना करना पड़े। मै आप को बधाई देता हूं कि आप सोच समझ कर इस काम को कर रहे हैं और चला रहे है।

गवर्नमेन्ट को जो कुछ करना है वह तो वह कर ही रही है। मगर यह काम ऐसा है कि जो गवर्नमेन्ट का ही काम नही है। अगर सच पूछा जाये तो असल में यह काम जनता का है। अगर कोई शराब पीना न चाहे तो गवर्नमेन्ट के बेचने पर भी उसे खरीदेगा कौन? गवर्नमेन्ट को तो इस मामले में पड़ने की ज़रूरत तभी पड़ती है जब लोग नशा खाते पीते हैं। आप जो जनसाधारण यहां इकट्ठे हुए हैं, ऐसा न समझें कि आप का काम समाप्त हो गया है क्यों कि गवर्नमेन्ट ने शराब

बन्द कर दी है। यह तो आप का काम है कि आप सारी जनता में ऐसी भावना पैदा कर दें कि इस की ज़रूरत ही न रह जाये कि गवर्नमेन्ट को कानून के ज़रिये इसको रोकना पड़े बल्कि हालत यह हो जाये कि अपनी ही मर्ज़ी से लोग अपनी ही ख्वाहिश से लोग इस का तिरस्कार करने लगे और इसे हमेशा के लिये छोड़ दें। अगर आप चाहें तो इस चीज़ को आप कर सकते है।

हमारे देश मे इस के लिये काफ़ी सुविधाये भी है पश्चिमी देशों मे और हमारे देश में बहुत अन्तर है। आज तक हमारे देश मे इस चीज़ को समाज ने उस तरह ग्रहण नही किया जिस तरह पश्चिम के बहुतेरे देशो ने शराब को ग्रहण कर लिया है। अर्थात् वहां शराब को पीना समाज में बुरा नही समझा जाता। यानी मामूली तौर से शराब पीने को खराब नही समझा जाता। हमारे यहा ऐसी बात नही ह। हमारे समाज ने तो इस चीज़ को बुरा माना है और अगर कोई पीता है तो ऐसा करने मे वह ज़रा शर्माता है। थोडे ही ऐसे लोग है जो इस बात से नही शर्माते। जो पीते हैं वे भी समझते है कि हम ऐसा काम कर रहे है जिस को समाज पसन्द नही करता। हमारी धार्मिक सस्कृति और समाज ने इस को मना किया है। जब ऐसी बात है तो हमारा काम और भी सीधा हो जाता है और वह सीधा होना भी चाहिये। इस लिये मै आशा करता हूं कि जिस तरह से गवर्नमेन्ट अपना काम कर रही है उसी तरह जनता भी अपना काम करेगी तो यह पाप हमारे यहां से हमेशा के लिये दूर हो जायेगा। महात्मा गांधी जी की प्रबल इच्छा थी कि यह चीज, यह बुराई हमारे देश से दूर हो जाये। उन्हो ने देखा और समझा था कि इस के कारण न केवल पैसे की ही बल्कि चरित्र की भी हानि होती है। मनुष्य मनुष्य नही रह जाता है, जानवर बन जाता है। इस लिये कोशिश इस बात की की जानी चाहिये कि इस को लोगों की ओर से बन्द कर दिया जाये ताकि मनुष्य मनुष्य बना रहे। इस का लोगों में प्रचार किया जाना चाहिये कि मनुष्य जान बूझ कर पशु न बने। आज गांधी जी की इच्छा पूर्ण हो रही है यह देख कर उन की आत्मा को ज़रूर प्रसन्नता होगी। गांधी जी ने देश के लिये बड़े बड़े महत्व के काम किये। आखिर उन की इच्छा के अनुसार इस बम्बई शहर के अन्दर ही आप ने शराब बन्दी करने का व्रत लिया है। यहां जो इतने भाई बहिन इकट्ठे हुए हैं उन्हें देख कर मुझे ऐसा मालूम होता है कि आप लोगों की इच्छा ज़रूर पूरी होगी। ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वह आपको शक्ति दे कि आप इस में कामयाब हों।

वैमानिकों को उपदेश

बृहस्पतिवार, ता० ७ अप्रैल को जुहू, बम्बई के हवाई अड्डे पर सांयकाल साढ आठ बजे राष्ट्रपति जी ने कहा—

आरमी मैन, केडिट मैन, और भाइयो,

आप लोग यहां जो काम सीख रहे है उस की देश को बहुत ज़रूरत है। सारे संसार में आज कल दिन ब दिन हवाई जहाजों का महत्व बढ़ता जा रहा है और इन के ज़रिये न सिर्फ एक जगह से

दूसरी जगह यात्री ले जाये जाते हैं और न केवल उन से लड़ाई में ही काम लिया जा रहा है बल्कि आज कल उन के द्वारा माल भी ऐसी ऐसी जगहों में पहुंचाया जा रहा है जहां उस का पहले पहुंचाया जाना मुश्किल था। हाल ही मे भारत मे भी ऐसे मौके आये थे। हमारे देश के पूर्व के कोने मे आसाम है। पर उस के और बाकी भारत के बीच पूर्वी पाकिस्तान का बहुत बड़ा भाग है। इस लिये रेल से वहां जाने के लिये पूर्वी पाकिस्तान में हो कर आज कल भी जाना पड़ता है और ऐसा किये बिना भारत से वहा रेल के जरिये आज कल नही पहुचा जा सकता। इस वजह से वहां से भारत माल आने मे बडी दिक्कत होती रही है और फलस्वरूप वहा का कारोबार बन्द सा हो गया है। वहां नारगी नीबू बहुत होते है। इन चीज़ों की पूरी खपत वहा नही है। पहले ये चीज़ भारत के अन्य भागों को निर्यात होती थी पर अब यह काम उस हद तक नही हो पाता है। वहा के लोगों को इस वजह से बहुत कष्ट होता था। इसे दूर करने के लिये हमने हवाई जहाज से माल ले जाने का प्रबन्ध कर दिया है। आवश्यक चीज़ों को हवाई जहाज द्वारा वहा पहुचा देते है और हवाई जहाज द्वारा वहा की पैदावार को कलकत्ता ले आते है। इस प्रकार हवाई जहाजों की सहायता से हम यह मुश्किल दूर कर सके है। इस से स्पष्ट है कि हवाई जहाज़ मे किस तरह यातायात की और अन्य तरह की समस्यायें हल की जा सकती हैं और की जा रही हैं। इस लिये हवाई जहाज का काम सीखना आज कल बडा ही आवश्यक है। मुझे भरोसा है कि इस महत्वपूर्ण काम को सीखने मे आप को पूरी सफलता मिलेगी और इस के बाद इस से आप को जीवन मे भी सफलता मिलेगी।

यह देख कर तो मै बहुत ही खुश हुआ कि यहां पर सिर्फ़ नौ जवान ही नही बल्कि युवतिया भी काम सीख रही है। मुझे आशा है कि यहां से आप अपना यह काम अच्छी तरह सीख कर निकलेंगे और अपनी योग्यता से सब लोगों की ऐसी सफल सेवा करेंगे कि वे आप के कार्य से पूर्ण सन्तुष्ट हों और आप की प्रशंसा करें।

मित्रों द्वारा अभिनन्दन

ता० १३ अप्रैल १९५० को बैसाखी दिवस के अवसर पर सिक्खों द्वारा दिये गये मानपत्र के उत्तर में राष्ट्रपति जी ने कहा—

श्रीमान् महाराजा साहब, सिख भाइयो तथा बहिनो,

आप ने जो मेरा मान किया उस के लिये मैं आप को दिल से धन्यवाद देता हूं। आज से नहीं जब से सिख धर्म का प्रचार हुआ हिन्दुस्तान के सिख बहुत बड़े बड़ काम करते रहते। हिन्दुस्तान के इतिहास में ही नहीं बल्कि सारे संसार के इतिहास में उन की एक खास जगह है। उन का इतिहास ऐसा है कि उसे पढ़ कर सभी लोग बहुत कुछ सीख और जान सकते हैं।

अपने मानपत्र म आप ने ठीक ही कहा है कि इस शहर के अन्दर भी और मै समझता हूं कि पंजाब के बड़े बड़े शहरों में और बहुत सी जगहों में आज भी ऐसे अनेक मुकामात मिलते हैं जहा पर आप लोगों ने बड़ी बड़ी कुर्बानिया दी है और आप के बुजुर्गों ने बड़े बड़े त्याग किये थे। शहादत के ये निशानात, जो कोई देखना चाहे, देख सकता है। सारी दुनियां के लोग देख सकते हैं। उन्हे आम लोग देख सकते है। जब हम इस देश की आज़ादी के काम मे लगे हुए थे, उस वक़्त भी जो कुछ आप ने किया वह हम लोगों के दिल पर, जो उस काम में लगे हुए थे, हमेशा के लिये नक्श रहेगा ।

अभी हाल मे मुल्क के बटवारे के बाद जो मुसीबते आप पर आई और जिस तरह से और जिस बहादुरी के साथ आप ने उन का मुकाबिला किया वह भी इतिहास के लिये बहुत बडी चीज़ है। मै इतना ही कहता हू कि जो इस मुल्क के रहने वाले है, आप पर हमेशा भरोसा रखते है, और चाहते है कि आप भी एक दूसरे पर वैसा ही भरोसा और प्रेम रक्खे। इसी मे इस देश की भलाई है। आज का दिन भी हमारे नये युग के इतिहास का एक बहुत बड़ा दिन है क्योंकि आज ही के दिन जलियावाले बाग मे, उस शहर मे जो सिखो का सब से पवित्र मन्दिर स्थान समझा जाता है और उस मन्दिर के नजदीक मे ही कुछ वाकयात हुए और उन के कारण हिन्दू, मुसलमान और सिख सब ही का खून एक साथ बहा। उसी खून से मुल्क के अन्दर आज़ादी की धारा निकली और उसी के फलस्वरूप हम सब ने अब आजादी हासिल कर ली है। इसी खून बहाने का यह नतीजा था कि हम इस मुकाम तक पहुच पाये और दुनिया के स्वतन्त्र देशों मे हमारा दर्जा ऊंचा हो गया। आज ही आप के पंच प्यारे पैदा हुए। आज के ही दिन हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई मे नया शोला पैदा हुआ जिस ने हमारी सब मुसीबतों को जला दिया और हमें आज आजाद बना दिया। इस शोले ने आप लोगो को भी नये जोश से भर दिया। इस तरह आज का दिन आप के पुराने इतिहास और भारत के नये इतिहास को जोड़ने वाली कड़ी है। मेरे दिल मे जरा भी शक नहीं है कि जो मुसीबते आप के सामने है वे सब मुसीबते दूर हो जायेंगी और फिर आप उसी तरीके से रहेगे जिस तरह कि आप पहले रहा करते थे। मै जानता हू कि आप लोगो मे शक्ति है और आप मे हिम्मत है। अपनी मेहनत से आप ने पश्चिमी पंजाब के उजड़े हुए हिस्सों को बिल्कुल ताज़ा बना दिया है। आज आप उन को छोड कर निकल आये है। पर मुझे यकीन है कि आप जहा पर भी रहेगे, उस हिस्से को उसी तरह सुन्दर और शादाब बना कर ही आप चैन लेगे जिस तरह कि आप ने उन उजड़े हुए हिस्सो को शादाब बना कर चैन लिया था। इस लिये आप के मुस्तकबिल के सम्बन्ध में मेरे दिल मे ज़रा भी शक नहीं है। मुझे पूरा यकीन है कि आप का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है। इसमे सारा देश भी आपके साथ है आपका भविष्य सारे भारतवर्ष के भविष्य के साथ इसी तरह जुटा हुआ है, मिला हुआ है जिस तरह हम एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। इस लिये हम सब का फर्ज़ है कि हम आपस मे मिल कर के अपने भविष्य को सुन्दर बनायें।

हाल ही में, जैसा कि आप को मालूम है, पाकिस्तान के साथ हमारा समझौता हुआ है। इस समझौते ने नया रास्ता दिखाया है। मगर इस में कामयाबी तभी हो सकती है जब कि हम

उस के मुताबिक चलने की दिल से कोशिश करे और दूसरी तरफ़ क्या हो रहा है इस की तरफ़ न देखें। हमें अपनी तरफ से इसे कामयाब बनाने के लिये सब कुछ करना चाहिये। इस में सब के सहयोग की जरूरत है। कहने की बात नहीं कि हम सब को दूसरे के साथ मिल कर काम करना चाहिये और आगे बढ़ना चाहिये। मुझे पूरी उम्मीद है और पूरा विश्वास है कि आप लोग ज़रूर इस मे देश का साथ देंगे और आप लोगों का जो फर्ज है उसे आप पूरा करेंगे। मुझे यह भी उम्मीद है कि दूसरी तरफ़ के लोग भी अपने फर्ज को महसूस करेंगे और इस समझौते को कामयाब बनाने मे अपनी हुकूमत का हाथ बटायेंगे। जो कुछ अपनी तरफ से गवर्नमेन्ट कर सकती है वह करती ही रहेगी।

गवर्नमेन्ट आप की दिक्कतों को खूब महसूस करती है। हौसले से आप ने इन तमाम मुसीबतों को बर्दाश्त किया है उस को भी वह महसूस करती है। गवर्नमेन्ट यह भी जानती है कि आप उस की कितनी मदद कर सकते है और कितना काम कर सकते है। इस लिये आप इस बात से निश्चिन्त रहें कि गवर्नमेन्ट की तरफ से आप के लिये कोई गफ़लत नही होगी। यह हो सकता है कि ऐसे भी मौके आये जिस मे गवर्नमेन्ट चाहने पर भी बहुत कुछ न कर सके। इतने बड़े मुल्क मे इस तरह की बाते होना मुमकिन है पर हर हालत मे आप लोगों को गवर्नमेन्ट पर पूरा भरोसा रखना चाहिये। अगर हम एक दूसरे के साथ विश्वास के साथ काम करते रहेगे और एक साथ मिल कर चलेंगे तो हम सब की जितनी भी मुसीबते है, जितनी भी दिक्कते है वे सब हमेशा के लिये दूर हो ही जायेंगी। हमे ईश्वर का नाम ले कर आगे बढना चाहिये।

आप ने मुझे यहा बुला कर जो मेरा मान बढाया है इस के लिये मै आप को धन्यवाद देता हू।

रोशनारा क्लब में अभिनन्दन

१५ अप्रैल १९५० के शाम को सवा छः बजे रोशनआरा क्लब के सदस्यों द्वारा दी गई दावत मे राष्ट्रपति ने कहा—

श्री शंकर प्रसाद, श्रीमन्त, क्लब के सदस्यो, बहनो और भाइयो,

मुझे यकीन है कि इस क्लब का पैट्रन बनने का जो न्यौता मुझे दिया गया था उस को स्वीकार कर के मैं ने कोई गलती नही की है। जिन परिस्थितियों मे इस क्लब का जन्म हुआ था उन में, और अपने जन्म दिन से, यह बिना किसी भेद भाव के सब समुदायों के सद्भावना रखने वाले व्यक्तियों को एकत्रित करने के जिस काम मे लगा हुआ है वह वास्तव मे ऐसा काम है जिस की सबसे अधिक आवश्यकता हमे इस देश मे है जिस मे अनेक प्रकार की जातिया, अनेक प्रकार की भाषाओं के बोलने वाले और अनेक प्रकार के धर्मो को मानने वाले नर नारी बसते हैं और आज कल जिस में हमारे देश के ही लोग नही वरन् अनेक विदेशों से आये हुए नर नारियों की भी बड़ी

* अंग्रेज़ी से हिन्दी मे अनुवाद

काफी संख्या है। देहली भारत की राजधानी है, स्वभावतः अनेक देशों के लोगों को यह आकृष्ट करती है। ऐसे स्थान में इस प्रकार के क्लब का अपना विशिष्ट महत्व है। इस लिये ऐसे क्लब की स्थापना और कायम रखने का मैं स्वागत करता हू जो शताब्दि के चतुर्थांश से बहुत ही प्रशंसनीय कार्य करता रहा है ।

नई दिल्ली मे राजधानी स्थापित हो जाने के पश्चात् यह स्थान कुछ अगम्य सा हो गया है या कम से कम वे लोग जो नगर के उस पार रहते है उन मे से बहुत से यहां आसानी से नही आ सकते। मुझे यकीन है कि अगर नई दिल्ली में राजधानी के पश्चात् इस की स्थापना होती तो सम्भवतः यह भी वही होता; यद्यपि उस हालत में इस के पास इतने विस्तृत और सुन्दर मैदान और बाग़ीचे न होते जैसे कि नगर के इस ओर इस के पास है। फिर भी इस क्लब की लोकप्रियता का यह अच्छा सबूत है कि इस बडे नगर में रहने वाले सब वर्गों के लोगों में से इस के बहुत काफी सदस्य हैं। मेरा यह विचार सर्वदा रहा है कि सामाजिक स्तर पर भेंट करना मिलने का सब से अच्छा ऐसा तरीका है जिसे हम अपना सकते हैं। वहा हम दफ्तर की बात भूल जाते है; दिन भर जिस काम में हम परेशान रहते है उस काम की बात भूल जाते हैं और सरकार में या व्यापार में या जीवन के किसी और अन्य क्षेत्र मे उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर आसीन सब व्यक्तियों की जो स्वाभाविक बहुत सी चिन्ताये होती हैं उन सब को वे भूल जाते है। इस प्रकार की सस्था के महत्व को बढा चढा कर तो हम कुछ कह ही नही सकते। क्योकि हम यह जानते है कि आधुनिक काल में मनुष्य का जीवन एक सतत दौड का जीवन है; आजकल हम एक न एक काम मे लगे ही रहते है; किसी न किसी संकट काल मे सर्वदा ग्रस्त रहते हैं। ऐसे युग में ऐसे स्थान का जहां हम चिन्ताओ से मुक्त हों, ज़रा आराम की सांस ले सके और जहां दूसरों से समता मैत्री, और भ्रातृता के नाते मिल सकें बहुत ही मूल्यवान है। इस का महत्व तब और भी बढ़ जाता है जब आप यहा खेल कूद का और ऐसी अन्य बातों का भी प्रबन्ध कर लेते है जिन के कारण विभिन्न समूहो और विभिन्न वर्गो के लोगों को यहा आने का विशिष्ट आकर्षण हो जाता है। ऐसी बातों से सस्था का उपयोग बहुत बढ जाता है। मुझे प्रसन्नता है कि यहा खेलों और अन्य सामाजिक कार्यों का ही प्रबन्ध नही है वरन् आप के यहां ये प्रशस्त मैदान भी है जो स्वयं भी उन लोगों के लिये काफी आकर्षक होते होंगे जो आप की सस्था के सदस्य बनना चाहते हैं।

मुझे हर्ष है कि आप ने यहा इतने मित्रों से मिलने का मुझे अवसर दिया और मुझे आशा है कि अपने अन्य कार्यो और चिन्ताओं में व्यस्त रहने के बावजूद यदा कदा मेरे लिये यह सम्भव होगा कि मै जब चाहूं आप के यहां आ सकू जिस से कि हम लोग मिल सकें और एक दूसरे को अच्छी तरह से जान सकें जैसा कि हम तभी कर सकते है जब कि हम अन्य रीति से मिलने के बजाय सामाजिक क्षेत्र में आपस में मिलते है ।

आप ने मेरा जो स्वागत किया और इस क्लब का पैट्रन बनने की दावत देकर आप ने जो मेरा आदर किया है उस के लिये मै आप को धन्यवाद देता हूं ।

दिल्ली विश्वविद्यालय का विशेष समावर्तन

*१६ अप्रैल सन ५० को प्रातः दस बजे दिल्ली विश्वविद्यालय के विशेष समावर्तन समारोह में कुलपति ने कहा—

सर मौरिसगौयर, बहनो और भाइयो,

मैं इसे अपना बड़ा सौभाग्य समझता हूं कि आज प्रातःकाल के सुखद समारोह में मैं भाग ले सका। सर मौरिसगौयर इस देश में अब काफी दिनों से हैं और विश्वविद्यालय से उन का सम्बन्ध लगभग १२ वर्ष से है। विधिविज्ञ के नाते उनकी बड़ी ख्याति है और उसी रूप मे वे यहां आये थे तथा हम सब यह जानते हैं कि सन् ३५ का जो भारत सरकार अधिनियम हमारे संविधान का, जिसे हमने अभी हाल में स्वीकार किया है, बहुत अंश में और बहुत बातों में मूलस्वरूप के समान रहा है उसके मसविदा बनाने में उन्होंने कितना महत्वपूर्ण भाग लिया था।

इस विश्वविद्यालय में उनका कार्य अभूतपूर्व रहा है। अपने काम मे उन्होंने अपने प्रकाण्ड पाण्डित्य और अपनी तीक्ष्ण न्याय बुद्धि का ही प्रयोग नही किया है वरन् उसमें एक नवयुवक का उत्साह भी लगाया है। इस विश्वविद्यालय में जो १२ वर्ष उन्होंने व्यतीत किये है उनमें वह जैसा कि आपने उल्लेख मे ठीक ही कहा है इस विश्वविद्यालय के निर्माता सिद्ध हुए है। यह विश्वविद्यालय इस काल मे बराबर तरक्की करता गया है और जैसा कि आपने कहा है इसमें नये नये विभाग नयी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये खोले गये हैं और दिन व दिन नयी इमारतें बनी हैं या बन रही है।

कितना अच्छा होता यदि हमारे अन्य अवकाश प्राप्त लोग अपने पद भार को छोड़ने के पश्चात् इसी उत्साह और इसी लगन से शिक्षा कार्य मे लग जाते जिस से कि सर मौरिसगौयर ने इस विश्वविद्यालय की सेवा की है। यदि वे ऐसा करें तो हमारे विश्वविद्यालय उनकी सेवा से समुन्नत हो जायेंगे। और हमारे नौजवानों के सामने यह महान् उदाहरण होगा कि हमारे देश की महान् विभूतियों में से कुछ ने विश्वविद्यालय में शिक्षक के रूप में अपने जीवन कार्य को समाप्त किया है।

सर मौरिसगौयर, मै यह चाहता हूं कि आपका अवशिष्ट जीवन, जो आप अपने प्रिय देश में व्यतीत करेंगे, सुखमय हो और आपको यह आश्वासन दिलाता हूं कि आप अपने पीछे बड़ा सुन्दर उदाहरण हम लोगो के अपनाने के लिये छोड़े जा रहे हैं और भारत में आपने जो सेवायें की है उनको न केवल यह विश्वविद्यालय ही वरन् वे लोग भी जो आप के इस कार्य की जानकारी हासिल करेंगे सर्वदा स्मरण रखेंगे। एक बात और है जिसकी घोषणा मै अभी कर देता हूं और वह यह है कि दिल्ली के विश्वविद्यालय से सर मौरिसगौयर का जो लम्बा सम्बन्ध रहा है उस की यादगार में यूनीवर्सिटी हाल को गायर हाल और राजपुर कालोनी को मौरिस नगर नाम देने का फ़ैसला विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी परिषद् ने किया है। जो आप का यहा आदर है और यश है उस का

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

तो यह एक छोटा ही प्रतिमान है और मै यह जानता हूं आपका नाम इन संस्थाओं से जुड़े होने के कारण नहीं बल्कि आपने जो महान् सेवायें की हैं उन के कारण यहां स्मरणीय रहेगा।

जैनों द्वारा अभिनन्दन

ता० १६ अप्रैल १९५० को सायंकाल ६ बजे, लेडी हार्डिंग कोलेज के मैदान में अखिल भारतीय जैन महासभा के सदस्यों द्वारा किये गये स्वागत के उत्तर में राष्ट्रपतिजी ने कहा—

सज्जनो और देवियो,

मुझे आदर देने के लिये आपने जो यह समारोह किया है और आपने जिस उत्साह और प्रेम के साथ, मेरा स्वागत किया है, इसके लिये मैं आपको किन शब्दों में धन्यवाद दूं ?

जो मानपत्र पढ़ कर आपने सुनाया और उसके पहले जो स्वागत भाषण आपकी तरफ से किया गया, इन दोनों में आपने पूज्य महात्मा गांधी जी के उन विचारों और शिक्षाओ की ओर हम सब का ध्यान आकर्षित किया है जिन पर कुछ हद तक चलकर इस देश ने स्वतंत्रता प्राप्त की है। ये हमारे देश के लिये कोई नयी चीज़ या नये सिद्धान्त नही है। अत्यन्त प्राचीन काल से हमारे देश मे जितने धर्मग्रन्थ बने है और जितने धर्मगुरु हुए है, सभी ने उन्ही सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है और प्रचार किया है। मेरा यह सौभाग्य है कि मै उस प्रान्त मे जन्मा जो इन सिद्धान्तों की जन्मभूमि है। आपने ठीक ही कहा है कि इस प्रान्त की भूमि का कण कण इन सिद्धान्तों के प्रवर्तन करने वाले उन महात्माओ के पदरज से इस तरह पावन और पवित्र हुआ है कि जिसका उदाहरण संसार के किसी भी भाग मे नहीं मिलता। इतिहास की यह बात मुझे सर्वदा स्मरण रहती है। लगभग एक ही युग में बुद्धदेव और महावीर स्वामी गंगा के उत्तर से गंगा के दक्षिण तक और दक्षिण से उत्तर तक विहार के गांव गांव मे फिरे और उन्होंने स्थान स्थान पर धर्म का प्रचार किया। उस समय के भाग्यशाली लोगो ने उनके न केवल दर्शनों का ही लाभ उठाया बल्कि उनके वचनामृत से अपने को पावन भी किया। प्रायः २५०० वर्षो के बाद उसी प्रकार का एक महात्मा इस देश में पैदा हुआ। उसने वैसे ही सिद्धान्तो द्वारा हमारी मरी हुई हड्डिओं मे जान फूकी और हमें इस योग्य बनाया कि हम अपना सिर उठाकर आज संसार के दूसरे देशो से आँखे मिला सकते है।

हम लोगो पर जो आज इस वक्त इस देश के, इस स्वतंत्र देश के, राजकाज के कामों में लगे हुए हैं, एक बहुत बड़ी भारी जवाबदेही और जिम्मेदारी आयी है। वह यह है कि हम इस देश के कारबार को इस तरह से चलायें कि जिसमें उन सिद्धान्तों की रक्षा हो और उनकी रक्षा करते हुए हम उनका प्रचार भी कर सके। किन्तु दुःख की बात है कि हमारे स्वतंत्र होने के पश्चात् इस देश के कुछ हिस्सों मे कुछ इस तरह की घटनाएं घटी है और कुछ इस तरह

की बाते हुई है जो इन सिद्धान्तों के सिर्फ विपरीत ही नहीं है बल्कि जो एक प्रकार से उनके अस्तित्व को ही नष्ट कर सकती है। इसलिये आज हम सब पर और विशेष करके उन समाजों पर, उन धर्मों के अनुयायियों पर, जो इन सिद्धान्तों को हमेशा से मानते चले आये है, एक और भी अधिक ज़िम्मेदारी आगयी है। वह यह है कि जिन सिद्धान्तों को आज तक वे बराबर से सीखते आये हैं और जिनका एक प्रकार से पुनरुत्थान महात्मा गांधीजी ने किया हैं, उनको वे फिर ताज़ा करें और जहां तक उनसे हो सके अपने जीवन से, अपने कर्म से, और अपने कार्यों से उन सिद्धान्तों की रक्षा करें।

आपने सच ही कहा है कि अभी हाल ही में इसी शहर के अन्दर जो समझौता हमारे प्रधानमंत्री ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के साथ किया है, उससे आशा की किरण नज़र आ रही है। मुझे आशा है कि यह किरण दोपहर के सूरज की किरण की तरह तेजमयी होगी और आज इस वक्त तक जिस अंधेरे में हम रहे हैं उस अंधेरे से हमको वह किरण त्राण देगी और हमारे जीवन मे और दूसरों के जीवन में सुख शान्ति का प्रकाश फैलाएगी।

जब से मै इस पद पर आया हूं, तब से मुझे कई प्रकार के लोगों ने बुला बुला करके मेरा सम्मान किया है और आदर दिखलाया है। जब जब लोगों की ओर से इस प्रकार मेरा आदर सत्कार हुआ है मैने उस आदर और प्रेम को नम्रता के साथ स्वीकार किया है। पर मेरे मन मे यह प्रश्न पैदा हुआ है कि क्या सचमुच यह ज़रूरी है कि यह स्वागत सत्कार देश के लोग अलग अलग बंटी टुकड़ियों में करे ? क्या यह संभव नही कि देश के हर विभाग के लोग उसी प्रकार एक साथ मिलकर ऐसे समारोह का आयोजन करें जिस प्रकार कि संविधान द्वारा हमने सबको एक ही राष्ट्र माना है ? जब आपने मुझे यहां आने के लिये निमंत्रण दिया तो मेरे मन मे यह प्रश्न प्रतिध्वनित हो गया। मैने आपका आग्रह माना किन्तु मेरे मन मे अब भी यह प्रश्न बार बार उठता है। मेरा विचार है कि इस तरह अलग अलग कभी सिखों की तरफ से, कभी जैनियों की तरफ़ से और शायद किसी और जाति या संप्रदाय की तरफ़ से इस प्रकार का समारोह किया जाना ठीक नहीं। मै यह पसन्द करूंगा कि आगे इस प्रकार का समारोह किसी एक विशिष्ट संप्रदाय या जाति की ओर से आयोजित न किया जाये और यदि कोई भाई इस प्रकार के आयोजन का विचार कर रहे हों तो वे उस विचार को छोड़ दे। मै जानता हूं कि यह स्वागत आपके प्रेम का द्योतक है। मै यह भी जानता हूं कि जो प्रेम और आदर आप दिखलाना चाहते है वह पूर्णतया हार्दिक है, ऊपरी नही। उसके लिये मुझे कृतज्ञ होना चाहिये और सचमुच मै कृतज्ञ हूं। किन्तु साथ ही मै यह भी कह देना उचित समझता हूं कि जैसे हमने अपने नये संविधान मे इस समूचे देश के सब वासियों को अलग अलग न मानकर एक राष्ट्र माना है उसी तरह हम यह चाहते है कि सब लोग एक राष्ट्र होकर, एक जाति होकर रहें। हम केवल धर्म के आधार पर अपने नागरिको मे कोई विभेद नही करना चाहते। राजकीय क्षेत्र में हम उन सब को एक समान ही मानते है। हां. अपने

व्यक्तिगत मामलों में जो जिस धर्म को मानना चाहे माने और उसके अनुसार चले। वैयक्तिक क्षेत्र में उसको वैसा करना ही चाहिये। उसी मे उसकी उन्नति होगी। सरकार की तरफ से उसमे कोई बाधा उपस्थित नहीं की जायेगी। हमारे संविधान ने इस बात का आश्वासन ही नहीं दिया है वरन् आज देश के जितने सेवक है और जिन लोगों के हाथों में इस वक्त देश के शासन की बागडोर है उनका यही दृढ मत है और उनका आचरण भी इसी के अनुकूल है। सब धर्म और मतों के माननेवाले उनके लिये बराबर का दर्जा रखते हैं। उनकी ओर से किसी के धर्म मे कोई बाधा पड़ने का डर ही नही है। अपने व्यक्तिगत कामों मे और अपने धार्मिक स्थानों में जहा भी आप मिले अपनी अपनी धार्मिक भावनाओं को अपने लिये रखकर उन पर अमल कर सकते है। किन्तु जहां आप सार्वजनिक काम के लिये इकट्ठे हुए हों वहा आपको केवल अपनी धार्मिक भावनाओं से ही प्रेरित न होकर एक राष्ट्र के नागरिकों की हैसियत मे ही और राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर ही मिलना अच्छा होगा।

हमारे देश की हमेशा में यह बदकिस्मती रही है कि हम बहुत दिनों मे अलग अलग टुकड़ों में बंट गये है। हमारे धर्म अलग अलग है, हमारी भाषा अलग अलग है, हमारे अन्दर प्रान्तीय भावना बहुत भरी हुई है। किन्तु अब पारस्परिक द्वेष और संकुचित दृष्टिकोण दूर करना है। आप जैनों मे दिगम्बर, श्वेताम्बर, न मालूम और कितने प्रकार के पंथ है। इसी तरह से हमारे मुसलमान भाइयों मे भी शिया और सुन्नी का झगड़ा है। सिखों के अन्दर भी नामधारी अकाली इत्यादि है। इसी तरह कोई ऐसा सम्प्रदाय नही है और न कोई जाति है जिसमे प्रकार प्रकार के विभेद पैदा नहीं हो गये हों। इन सब विभेदों के आधार पर यदि जातीय द्वेष पैदा हो तो उससे देश को खतरा है। देश की भलाई के लिये यह आवश्यक है कि हम तद् जन्य किसी जातीय द्वेष को न रहने दें।

आपने जो इतने प्रेम से मुझे बुलाया और अपनी तरफ से सेवा करने का आपने मुझे यह मौका दिया उसके लिये मै आपको धन्यवाद देता हू। इस समय मै यह फिर दुहरा देना चाहता हूं कि अगर कोई अन्य भाई मेरा इस तरह से अलग रीति से स्वागत करना चाहते हों तो मैने जो बात अभी कुछ देर पहले कही है उसको ध्यान मे रखकर ऐसे आयोजन की बात सोचें।

मै आशा करता हूं कि महात्माओं और स्वामियों ने हमें जो सिखाया है, उन सिद्धान्तों पर हम चलेगे। उन सिद्धान्तों की आज हमारे ही देश को नहीं सारे संसार को बड़ी जरूरत है। मुझे यह भी आशा है कि आप अपने धर्म पर चलकर उन सिद्धान्तों को पुनर्जीवित करेंगे। जैसा कि आपने कहा कि आपके धर्म में प्राणिमात्र के साथ प्रेम करना सिखाया गया है। अगर हम मनुष्य मात्र के साथ ही प्रेम करना सीख लें और अमल करे तो भी यह हमारे लिये एक बहुत बड़ी बात होगी और इससे हम सबका कल्याण होगा। हमें ईश्वर से यही प्रार्थना करनी है कि वह सिद्धान्तों पर अमल करने में हमारी सहायता करे।

कान्स्टीट्यूशन क्लब में अभिनन्दन

*१७ अप्रैल सन् १९५० को कान्सटीट्यशन क्लब की गवर्निंग बौडी द्वारा किये गये स्वागत समारोह के अवसर पर संसद् के सदस्यों के सामने राष्ट्रपति ने कहा—

श्री मावलंकर जी, बहनों और भाइयो,

संसद् के इतने सदस्यों और दिल्ली के इतने नागरिकों से भी मिलने का जो यह अवसर आपने मुझे दिया है उसके लिये मैं आपका आभारी हू। इस प्रकार की संस्था का महत्व सर्वदा इसी बात में होता है कि यह विभिन्न धन्धों के विभिन्न प्रकार के व्यवसायो के लोगों को कुछ मनोविनोद का अवसर प्रदान करती है और साथ ही उन को एक दूसरे से सम्पर्क मे आने और एक दूसरे के विचारों को जानने और समझने का भी मौका देती है। इस प्रकार की सस्था का यहीं सब से बडा महत्व है। मुझे वैयक्तिक रूप से इस बात का हर्ष है कि जब यह क्लब सन् ४७ के वर्ष मे शुरू किया गया था तब मै सविधान सभा का अध्यक्ष था। और तब से यह और भी अधिक फूला फला है और लोकप्रिय हुआ है। मुझे यह आशा है कि आप के सदस्यों की संख्या बढ़ेगी और कुछ समय पर्यन्त आप को यह आवश्यकता न रहेगी कि आप सदस्यो के दो प्रकार रखें। क्योंकि मेरा यह मत है कि भविष्य में संसद् का कार्य बहुत कुछ निरन्तर चलता रहेगा। तथा संसद् के सदस्य यहां से अपनी अनुपस्थिति के कारण अन्य सदस्यों की अपेक्षा किसी प्रकार की रियायत न तो मांगेंगे और न मांगने के हक्दार ही होंगे। मुझे यह भी आशा है कि विभिन्न प्रकार के लोगों को आपस मे मिलाने के लिये यह क्लब अधिकाधिक और उत्तमोत्तम कार्य करेगा और उन्हें आपस मे विचार विनिमय करने की सुविधा देगा जिस में कि वे जीवन के जिस क्षेत्र मे भी हो अधिक उपयोगी और सहायक सिद्ध हो सकें।

मुझे इस बात से हर्ष है कि आप लोग यहां खेलों का इन्तजाम करने की बात भी सोच रहे हैं। मै नहीं समझता कि संसद् के सदस्यों को जिन का सारा समय संसद् में ही व्यतीत होता है इस बात का भी अवसर मिलता है कि वे संसद् भवन में कहीं किसी प्रकार के घरेलू खेल भी खेल लें। मुझे मालूम है कि बार लाइब्रेरी मे कुछ इस प्रकार के खेलों का प्रबन्ध होता है और वहां लोग मनोविनोद मे कुछ समय व्यतीत करने का मौका पाते है। यद्यपि चाहे यह सर्वदा वांछनीय और लाभदायक न भी हो किन्तु मेरा विचार है कि अभी हमारे विधि-निर्माता इस मंजिल तक नहीं पहुच पाये है। अत: यह आवश्यक है कि संसद् सदस्यों के लिए ऐसा क्लब हो जहा कि उनको ऐसी सुविधायें प्राप्त हों। चूंकि यह क्लब उस जगह से थोड़ी दूर पर ही है जहां कि अर्थात् कान्सटीट्यूशन हाउस में उनमें से वहुतों का निवासस्थान है इसलिये इस क्लब की उपयोगिता बढ़ गयी है। इस क्लब की उपयोगिता को समझ कर सरकार इसको मदद देती रही है। पर ऐसा करके उन्होंने गैर मामूली बात भी नहीं की है। मेरी कामना है कि आप के क्लब को हर प्रकार की सफलता मिले। मुझे यह भी आशा है कि आप

---

* अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

अपने सदस्यों से मिलने का मुझे यदा कदा अवसर देंगे। मुझे इस बात का यकीन है कि संसद् के सदस्यों से मिलने के लिये यह क्लब मुझे मौके अवश्य प्रदान करेगा और इस प्रकार मुझे उन नियन्त्रणों से जो मेरे वर्तमान पद के कारण मेरे आने जाने की स्वतन्त्रता पर लगे हुए हैं बचायेगा। मुझे यकीन है कि मेरी इस कठिनाई को आपका क्लब मुझे कभी कभी यहां बुलाकर दूर कर सकता है और मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि आपके निमन्त्रण से मुझे सदा हर्ष होगा और कभी कभी तो मैं यहां आने के लिये अपने को स्वयं ही न्योता दे लूंगा। इस स्वागत के लिये मैं आपको पुनः धन्यवाद देता हूं।

हरिजन कार्यकर्त्ताओं को उद्बोधन

सोमवार, ता० १७ अप्रैल १९५० को सायंकाल साढ़े सात बजे भंगी कोलोनी, नई दिल्ली में अखिल भारतीय हरिजन कार्यकर्ताओं की सभा में राष्ट्रपति जी ने कहा—

डाक्टर साहब, बहनो तथा भाइयो,

मुझे बड़ी खुशी हुई कि आज इतने भाइयों से एक साथ मिलने का मुझे अवसर मिला है। मैंने सुना कि सम्मेलन मे करीब ४०० आदमी है जो हिन्दुस्तान के हर कोने से आये हुये है और आप लोगों ने मिलकर इन प्रश्नों और समस्याओं पर विचार किया है जिनसे आप समझते है कि देश की तथा आपकी भलाई होगी।

महात्मा गांधी जी के साथ जब से रहने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ तब से उनकी आज्ञा के मुताबिक उनके बताये हुये रास्ते पर चल कर आप लोगों की जो थोड़ी बहुत सेवा करने का मौका मिला उसे मैंने किया। उसके लिये न तो कोई धन्यवाद की आवश्यकता है और न किसी प्रकार से आपको मुझे लज्जित करना चाहिये कि मैंने इतना काम आपके लिये किया और कर सका। मैं यह जानता हू कि यह जो अछूतपन का भार बोझ, हमारे समाज मे इतने दिनों से चला आता है उसे दूर करना और जो लोग दलित समझे जाते है उनको ऊपर उठाने मे सहायता करना यह कोई मेहरबानी या एहसान की बात नही थी बल्कि यह हम सब के लिये एक प्रकार का प्रायश्चित था और अपने भूले हुये कर्त्तव्य का फिर से पालन करना था। महात्मा गाधी जी ने हमे यह सिखाया था कि यह काम सबसे महत्व का है। इसलिये मुझे जो कुछ थोड़ी बहुत सेवा करने का भी अवसर मिलता गया, मैंने उसे किया। जब कभी मै आप लोगों से मिलता हूं मुझे इस तरह की बातें कही जाती है तो मै लज्जित होता हू। मै यह नहीं समझता हू कि मैंने कोई बड़ा एहसान किया है। आइन्दा भी चाहे जिस जगह पर मैं रहू मै इसको अपना बड़ा सौभाग्य मानूंगा कि जो भी सुअवसर मेरे सामने आये मैं आप की कुछ सेवा कर सकूं और वह भी इसी दृष्टि से, कुछ एहसान की दृष्टि से नहीं, कि यह मेरा कर्तव्य है जिसे मुझे पूरा करना है।

अभी डाक्टर साहब ने कहा कि जगजीवन बाबू से मेरा घनिष्ठ संबन्ध रहा है। मेरा उन से भाई भाई का सम्बन्ध रहा है और आज भी है। पर मैं यह नहीं मानता कि मैंने उनके लिये कुछ किया है। जिस स्थान पर वह पहुंचे है वह अपनी योग्यता से पहुंचे है और जिस योग्यता के साथ उन्होंने काम किया है, उससे सारा देश वाकिफ है। मैं तो यह कहूंगा कि आप में और बहुतेरे ऐसे भाई होंगे जो बाहर आकर बहुत कुछ कर सकते हैं। उनको बाहर आना चाहिये और निकलना चाहिये जिससे सब लोगों को इस बात का पता लगे कि आज भी आप मे ऐसे लोग है जिन्हें अगर मौका दिया जाये तो वे अच्छे अच्छे बड़े बड़े काम कर सकते है और करने की योग्यता रखते है।

मै यह जानता हूं कि आप मे अभी शिक्षा का बहुत कुछ अभाव है। आप में गरीबी बहुत है। यह भी जानता हूं कि आप में अभी तक बहुत सी रूढ़िया है जिन को अभी दूर करना बाकी है। शिक्षा के अभाव को दूर करना है। आर्थिक स्थिति सुधारनी है। अगर आप और लोगों के मुकाबले में पीछे रहे, जो आगे समझे जाते है, उनके साथ आप शाना ब शाना काम न कर सके तो उन लोगों की भी उन्नति नहीं हो सकेगी। इस से न केवल हमारा ही भला होगा बल्कि आपका और देश का भी भला होगा। आपकी संख्या बहुत बड़ी है। इतनी बड़ी संख्या अगर पिछडी रहे तो देश कैसे आगे बढ सकेगा। आगे बढने के लिये कोई कितना भी ताकतवर क्यों न हो, अगर उसे पीछे से कोई खीचता हो तो वह कमज़ोर हो जाता है। आप को सारे देश के साथ आगे बढना है। जब तक आप लोग भी और लोगों के मुकाबले मे न आओगे देश आगे नही बढ सकता। महात्मा जी ने इस बात को समझा था कि जब तक आप को साथ न लिया जायेगा देश आगे नहीं बढ़ सकेगा। इसलिये उन्होंने इस बात पर ज़्यादा ज़ोर दिया था। ईश्वर की कृपा से जो कुछ गांधी जी चाहते थे उस में से बहुत कुछ हो चुका है। मगर मै यह समझता हूं कि अभी बहुत कुछ बाकी है। जितना बाकी है, अगर हम उस को भी पूरा कर सकें और अगर आप सब को इस स्थान तक पहुँचा सकें जो आप के लिये उचित है और आप जिस का हक रखते है तो मैं समझूंगा कि ऐसा करके देश ने अपने साथ उपकार किया और तभी देश उन्नत हो सकेगा।

मैं आपसे यही निवेदन करना चाहता हूं कि आप इस काम में देश की मदद करें। इसके साथ ही आप को अपनी अवस्था सुधारने के लिये स्वयं सक्रिय होना चाहिये। जो कुछ सुधार और उन्नति चाहिये वह अपने अन्दर से ही निकलनी चाहिये। बाहर के लोग इतना ही कर सकते है कि जो बाधायें और दिक्कतें रास्ते मे है, उन बाधाओं और दिक्कतों को हटा दें और अगर हो सके तो किसी तरह कुछ सहारा पहुंचा दें। इस बारे में सर्वप्रथम कदम अपने में विद्या प्रचार करने का है। ऐसी संस्थायें जो इस तरह की सेवा करने को तैयार हों आप में पैदा होनी चाहिये। यह सब जहां तक हो सके आप में से ही निकलना चाहिये। मेरा यह विश्वास है कि अगर आप इस काम को आगे बढ़ायेंगे तो दूसरे लोग भी जो सेवा करना चाहते है, वे आगे आयेंगे। गांधी जी ने हम में नई जाग्रति पैदा करदी है, तड़प पैदा कर दी है हम उस को अभी तक भूले नहीं हैं और

आशा करते हैं कि कभी भी नहीं भूलेंगे। मैं उम्मीद करता हूं कि आपके इस सम्मेलन से और इसी प्रकार की अन्य सस्थाओं से आप को सहायता मिलेगी और मौका मिलेगा जिस में आप आगे बढ़ सकेंगे।

यह स्थान भी जो आप के सम्मेलन के लिये चुना गया है वह भी एक महत्व का स्थान है। महात्मा गाधी जी ने यहा बहुत दिन बिताये थे और वे भी ऐसे समय मे बिताये थे जब कि देश के भाग्य का फैसला होने वाला था। यहा बहुत से ऐसे फैसले किये गये जिन से देश के भाग्य का निर्णय हुआ।

गुरु जी ने मुझे एक पत्र लिख कर दिया है जिस में उन्हों ने लिखा है कि गांधी जी के स्मारक के रूप मे एक शिक्षा संस्था कायम होनी चाहिये। मैं यह आप से कह देना चाहता हूं कि इस चीज़ को मै गांधी स्मारक निधि के सामने पेश करूंगा और मैं कोशिश करूंगा कि यहां एक ऐसा स्मारक बने जो केवल ईट पत्थर का स्मारक न रहे वल्कि ऐसा स्मारक हो जो यहां के लोगों के दिलों में वह चीज पैदा करे जिस से आप की सच्ची सेवा हो। मैं यह आशा रखता हूं कि इस काम में आप सब की मदद मिलेगी और यह कार्य सफल होकर रहेगा।

———

इण्डियन रैडक्रास और सेंट जान एम्बुलेन्स एसोसियेशन

*इण्डियन रेडक्रास सोसाइटी और सेंट जान एम्बुलैन्स एसोसियेशन के वार्षिक साधारण अधिवेशन मे राष्ट्रपति जी ने कहा –

श्रीमन्तजी, बहनो और भाइयो,

आप सब का और विशेषतया राज्यों के प्रतिनिधियों का, जो रेडक्रास और सेंट जार्ज के काम में दिलचस्पी लेने के कारण इतनी लम्बी यात्रा करने के पश्चात् इस बैठक में सम्मिलित होने को आये हैं, मै हार्दिक स्वागत करता हूं।

राजकुमारी जी ने मेरे लिये जो प्रशंसात्मक शब्द कहे है उन के लिये मैं उनका आभारी हूं और मै आप को आश्वासन दिलाता हूं कि आप के दोनो महान् और मानव-सेवा करने वाली संस्थाओं से सम्बद्ध होने में मुझे बड़ी खुशी है और मै बड़ा प्रसन्न होऊंगा यदि मै आप के इस अच्छे काम में जितनी सहायता कर सकता हूं उतनी सहायता कर सकूं।

मुझे इस बात को सुन कर बड़ा हर्ष हुआ कि सैंट जान एम्बुलैंस असोसियेशन के शिक्षा कार्य में १९४९ के वर्ष मे बड़ी तरक्की हुई है और अपने केडेट विभागों में खास तौर से ब्रिगेड ने अपनी तरक्की की है। मुझे आशा है कि आपकी तरक्की बराबर होती रहेगी और हमारे युवक और युवती आप की आरम्भिक उपचर्या तथा होम नर्सिंग कोर्स में बराबर दिलचस्पी लेंगे जिस से कि वे कष्टनिवारण में उपयोगी कार्य कर सकें।

---

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

यह बात वड़ी सन्तोषप्रद है कि सेंट जान अम्बुलेंस के सदस्यों ने सहस्त्रों घायलों की प्राथमिक उपचर्या की है और इस उपचर्या के कोमल कार्य के लिये उन्हें गर्व करने का पूरा हक है।

जम्मू और काश्मीर राज्य में इण्डियन रेडक्रास सोसाइटी ने जो सुश्रुषा कार्य किया है वह विशेष उल्लेखनीय है तथा वह कार्य भी जो उन्होंने ऐसे विस्थापित लोगों की सहायता करके, जो इस देश में अपना जीवन नये सिरे से आरम्भ कर रहे है, किया है उल्लेखनीय है। यह सुन कर मुझे संतोष हुआ कि आप की दोनों संस्थाएं पूर्वी बंगाल के शरणार्थियों की मदद कर रही है और मैं आप के साथ यह आशा करता हूं कि वहां निकट भविष्य में बेहतर वातावरण कायम हो जायेगा।

दस करोड़ सदस्यों की रेडक्रास की सस्था का यह परिवार, जो अडसठ राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा सारे संसार में इस महान कार्य से सम्बद्ध है शान्ति बनाये रखने के लिये बड़ी भारी शक्ति है। यह सन्तोष की बात है कि कई संस्थाओं ने हमारे सहायता के भार को हलका किया है और हमारी अपने देश की भारी जरूरतों के बावजूद हमारी सोसायटी समुद्र पार अपनी अन्य भगिनीसम सोसायटीयों को उनकी आवश्यकताओं में मदद दे सकी।

मुझे हर्ष है कि पाकिस्तान सोसायटी के मैत्रीपूर्ण सहयोग से रेडक्रास द्वारा दी जाने वाली सब सुविधायें अटक किले मे बन्दी भारतीयों को हमारी सोसायटी और योल में पाकिस्तान बन्दियों को पाकिस्तान सोसायटी बराबर पहुंचाती रही है। बन्दियों के लिये विभिन्न प्रकार की सुविधाओं को, जिन में अपने सम्बन्धियों से बराबर खतोकिताबत भी सम्मिलित है और जो उन को वड़ी सान्तवना देने वाली है, प्राप्त कराने में पिछले साल जो महत्वपूर्ण कार्य किया गया है उसके लिये मैं अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास प्रतिनिधियों अर्थात् डाक्टर मार्टी और मिस्टर बर्कहार्ट की विशेष प्रशंसा करता हूं। डाक्टर मार्टी आजकल बंगाली उद्वासितो की सहायता के लिये आवश्यक बातों का अन्दाजा लगाने के लिये यहां फिर आये हुए है और मुझे भरोसा है कि उन के प्रयत्नो के फलस्वरूप उन लोगों को आवश्यक सुविधायें मिल जायेंगी। स्थायी रूप से शारीरिक दृष्टि से अयोग्य हुए फौजियों की रेडक्रास होम्स में सुश्रुषा करके तथा फौजी हस्पतालों में और रणभूमि में के चिकित्सा केन्द्रों में सेवा कार्य करने वाले लोगों के द्वारा आवश्यक वस्तुएं पहुंचा कर और उनका इलाज करा के जो काम हास्पिटल सर्विस ने किया है वह वास्तव मे प्रशंसनीय है। अपने मैडिकल-आफटर-केयर फण्ड द्वारा अवकाश प्राप्त बीमार फौजियों की सोसायटी ने जो सहायता की है वह भी प्रशंसनीय है। क्योंकि जिन लोगों ने उन की सेवा की है जो प्रतिरक्षा दलों में सेवा कर चुके हैं उन का देश अत्यंत आभारी है।

जूनियर रेडक्रास मूवमेंट की निरन्तर प्रगति भी सन्तोष का कारण है क्योंकि नयी पीढी के मन पर रेडक्रास के उसूलों की छाप डालने की इस से हमें अपेक्षा है।

मुझे इस बात का संतोष है कि प्रसूति और शिशु-कल्याण संस्था ने भी सन्तोष-जनक प्रगति की है। माताओं और शिशुओं के स्वास्थ्य की देखभाल करने के लिये

कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण में इस संस्था की सहायक कार्यवाहियों के महत्व की प्रशंसा जितनी की जाये थोड़ी ही होगी। और खास तौर से ऐसे ग्रामों के देश में जहां इस प्रकार की चिकित्सक सहायता की सुविधायें बिल्कुल अपर्याप्त हैं इस बात की बडी आवश्यकता है कि नर्सों के सहायक कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ाई जाये जिस से कि वे देश में नर्सों के कार्य में सक्रिय सहायता कर सकें। मैं राजकुमारी जी की इस अपील का ज़ोरदार शब्दों से समर्थन करता हूं कि हमारी नारियों को होमनर्सिंग की प्रशिक्षा के लिये अधिक से अधिक संख्या में आगे बढ़ना चाहिये क्योंकि उन के अपने घरों में ही वे उन के लिये उपयोगी न होंगी वरन् उन्हें दूसरों की सेवा करने का भी अवसर प्रदान करेगी।

अन्त में जो अच्छा कार्य आपने पिछले साल में किया है उसके लिये मैं आप सब को बधाई देता हूं और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के सामने जो कठिन काम सर्वदा ही पड़ा रहता है उस में आपकी सफलता के लिये मैं कामना करता हूं। संसार के भविष्य के लिये आपका कार्य महत्वपूर्ण है और आप को अपने इस प्रयास में सर्वदा रेडक्रास के उद्देश्यों में श्रद्धा से तथा इस जानकारी से कि आप ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के अंग है, जो जाति, धर्म अथवा वर्ण के विचार के बिना मानव कष्ट को दूर करने में लगी हुई है, बल मिलता रहेगा।

हमें श्री उषानाथ सेन की बीमारी का दुख है जिस के कारण रेडक्रास के अध्यक्ष के कष्ट साध्य कर्तव्य पूरा करने में वह असमर्थ रहे। हमारी सब की यह इच्छा है कि वह शीघ्र स्वस्थ हो जायें और मुझे आशा है कि व्यवस्थापक समिति की बैठकों में उपस्थित होने के योग्य वे जल्द ही हो जायेंगे। उस में मैंने उन को नामजद किया है जिस से कि सोसायटी को उनके महत्वपूर्ण अनुभव से वंचित न होना पड़े। राजकुमारी जी की यह बड़ी उदारता है कि उन्होंने रेडक्रास की अध्यक्षा होना स्वीकार कर लिया। इस से उनके कष्टसाध्य कर्तव्यों की संख्या और बढ़ जायेगी। मुझे भरोसा है कि उनकी निःस्वार्थ सामाजिक सेवा के लम्बे अनुभव से इन मानव सेवी संस्थाओं को लाभ पहुंचेगा। मुख्य मंत्री सरदार बलवन्तसिंह पुरी की मूल्यवान सेवाओं का विशेष उल्लेख भी मैं अपने वक्तव्य के समाप्त करने से पूर्व आवश्यक समझता हूं। यदि रेडक्रास का कार्य आज भी भारत में इस उन्नत शिखर पर है तो उसका बहुत कुछ श्रेय हमारे अनथक प्रयास करने वाले मुख्य मंत्री को है जिन्हों ने इस संस्था के नींव पड़ने के दिन से ही इसके निर्माण में अत्यन्त लगन से कार्य किया है।

इण्डियन स्कूल आफ़ माइन्स

*२१ अप्रैल सन् १९५० को इण्डियन स्कूल आफ माइन्स और अप्लाइड ज्योलोजी के प्रिन्सिपल डाक्टर आर० पी० सिन्हा द्वारा भेंट किये गये अभिनन्दन पत्र के उत्तर में राष्ट्रपति ने कहा—

महामहिम राज्यपाल, डाक्टर सिन्हा और मित्रो,

इस माइन्स और अप्लाइड ज्योलोजी के स्कूल में आने का मुझे यह मौका मिला इससे मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। अपने राजकीय जीवन के शुरू की

* अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

मंजिल में ही मुझे यह मौका मिला है इससे मुझे और भी खुशी है। पिछले तीस वर्षों में मैं इस प्रदेश में अनेक बार आया हूं। किन्तु इस संस्था के अन्दर पदार्पण करने का मेरा दुर्भाग्यवश यह पहला ही अवसर है। इसका यह अर्थ नहीं है कि इस कारण इस संस्था या इस स्कूल में मेरी दिलचस्पी किसी कदर कम रही है।

कुछ वर्ष पूर्व खानों के सम्बन्ध में आयने के अपने दौरे के सिलसिले में --मिस्टर बैरावलफ को यह बहुत अच्छी तरह से स्मरण होगा कि—मैं बहुत सी खानों में गया था और खानों में काम करने वालों को तथा खानों के प्रबन्ध करने वालों को जितने प्रकार का भी काम करना होता है वह मैंने देखा था। अतः यह आवश्यक है कि ऐसी संस्था हो जो कार्यकर्त्ताओं को इन खानों के दक्षतापूर्वक और सफलता पूर्वक प्रबन्ध करने के हेतु योग्य बनाने के लिये आवश्यक सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि तथा व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करे। यह संस्था इस उद्देश्य को दृष्टि में रख कर लगभग ३५ वर्ष पहले आरम्भ की गयी थी और तब से जैसा कि आपने कहा है अपने महत्व और अपने क्षेत्र में बढ़ती गयी है। गवर्नमेंन्ट ने इस बात को समझ लिया है कि इस सस्था के सम्बन्ध में बहुत सी बातें करनी हैं और उसने इसलिये एक समिति नियुक्त की थी जिसने कुछ सिफ़ारिशे की है। मुझे इस बात की खुशी है कि इनमें से अधिक सिफारिशो पर पहले ही अमल हो गया है और जिन पर अभी काम होना बाकी है और जिनका ज़िक्र आपने किया है वे विचाराधीन हैं और मुझे शंका नही है कि सरकार द्वारा उनको उचित मान्यता प्रदान की जायेगी।

इस संस्था के विद्यार्थियों और शिक्षकों की यह इच्छा और महत्वाकांक्षा स्वाभाविक है कि उनके डिप्लोमाओं को उचित मान्यता मिले। वैसी मान्यता विद्यार्थियो के लिये इस लिये आवश्यक है कि वे उच्चतर शिक्षा पा सके और नौकरी पा सके। जहां तक पहली बात का सवाल है वह अन्तर्विश्वविद्यालय मण्डल के विचाराधीन है और हमे आशा करनी चाहिये कि उनकी सिफ़ारिश बिल्कुल माफिक होगी और विश्वविद्यालय उचित मान्यता दे देंगे,

आपने यह भी कहा है कि विदेशी विश्वविद्यालयों से मान्यता प्राप्त करने के लिये भी प्रयास किये गये है किन्तु वे प्रयास अब तक सफल नहीं हुए है। मेरा विचार है कि जब आप हमारे यहां के विश्वविद्यालयों की मान्यता प्राप्त करने में सफल हो जायेंगे तो बाहरी देश भी इस स्थिति में होंगे कि आपको यह मान्यता प्रदान कर दें। मैं आप लोगों के मन में यह बात बैठाना चाहता हूं कि केवल मान्यता से उतना फल न होगा जितना कि उस वास्तविक काम और कार्यकुशलता से होगा जो आप यहां कर के दिखायेंगे तथा किसी भी आदमी की वास्तविक कार्यदक्षता इस कार्य में प्रकट होती है जो वह करता है और यदि उसका कार्य सन्तोषप्रद होता है तो उसको यह अधिकार प्राप्त हो जाता है कि वह सब से मान्यता पाये।

मेरा आप से यह कहना है कि विदेशी विश्वविद्यालयों की मान्यता प्राप्त करने के लिये आप मन न भटकायें वरन् अपनी इस संस्था को अपना पूरा दिल लगा कर सारे संसार की दृष्टि में कार्यकुशल और योग्य सिद्ध कर दें और जब आप इस मंज़िल पर पहुंच जायेंगे तब आप का यह काम न होगा कि आप मान्यता की तलाश करे वरन् यह और लोगों का काम होगा कि वे आप से मान्यता प्राप्त करें । हमें आशा करनी चाहिये कि वह दिन दूर नही है जब आप उस मंज़िल तक पहुंच जायेंगे ।

•

नौकरियों के लिये मान्यता के सम्बन्ध में मैं यह कहूंगा कि यह ऐसा मामला है जिससे मुख्यतया सरकार का सम्बन्ध है । मुझे शंका नहीं है कि इंजीनियरों की संस्था से मान्यता प्राप्त कराने के लिये जो कार्यवाही पहले ही की जा चुकी है वह कार्यवाही ठीक दिशा मे की गयी है और जो कुछ भी आगे कदम उठाना है वह उचित समय पर सरकार उठायेगी तथा आप के डिप्लोमा की देश के लोक-सेवा-आयोग की दृष्टि में वही कीमत होगी जो विश्वविद्यालयों की डिग्री की। इससे विद्यार्थियों के लिये यह भी संभव होगा कि वे इस विषय की उच्चतर शिक्षा और अध्ययन कर सकें । इस बात के लिये आवश्यक है कि विदेशी विश्व-विद्यालय आप के डिप्लोमा को मान्यता दें किन्तु मुझे आशा है कि जहां एक दफे भारतीय विश्वविद्यालयों ने इसे अपनी मान्यता प्रदान की वहीं फिर इस बारे में और कोई कठिनाई नहीं रहेगी । यह सवाल कि खानों के मनेजरों की नियुक्ति के लिये आप की संस्था को मान्यता प्रदान कर दी जाये या आप को उसके लिये और कोई इम्तहान देने से बरी कर दिया जाये न्यूनाधिक ऐसा सवाल है जिस के सम्बन्ध मे मैं कुछ अधिक नही कह सकता। किन्तु मेरा विश्वास है कि इस संस्था में आप को जो सैद्धान्तिक शिक्षा मिलती है और जैसा आपने कहा है कि खानों में जो २ वर्ष की शिक्षा मिलती है वह इस बात के लिये पर्याप्त समझी जानी चाहिये कि वे उस कोर्स में दाखिल हो जाये । यह ऐसा सवाल है जो एक विशेष समिति के जैसा कि अभी आपने कहा है, विचाराधीन है और इससे पूर्व कि यह मान्यता आप को दी जाये कुछ प्रतिबन्धों को हटाना आवश्यक है । मुझे आशा है कि ऐसा शीघ्र ही कर दिया जायेगा ।

मुझे इस बात की खुशी है कि समिति की और सिफारिशों को सरकार ने पहले ही स्वीकार कर लिया है । इस स्कूल का पहले ही विस्तार हो चुका है। आपने इससे पहले ही अपनी प्रवेश संख्या २५ प्रति वर्ष के स्थान में ४८ प्रति वर्ष कर ली है और वह और भी बढ़ायी जाने वाली है जिससे कि १९५२ के साल में आप साठ विद्यार्थी प्रति वर्ष दाखिल करने के लिये समर्थ हो जायेंगे । यह तो अच्छी बढ़ोत्तरी है । यह भी ध्यान रखने योग्य बात है कि अध्यापकों की संख्या में भी और उनके वेतनों और भावी लाभों में भी इसी अनुपात से वृद्धि हुई है । मुझे आशा है कि इस संस्था की स्थिति में सर्वतोन्मुखी उन्नति होगी और मुझे यकीन है कि इस जैसी संस्था को हर प्रकार के प्रोत्साहन देने की आवश्यकता को सरकार

महसूस करती है जिस संस्था से कि यह आशा की जाती है कि वह ऐसे लोगों को पैदा करेगी जो खानों का अच्छी तरह और योग्यता से प्रबन्ध कर सकें।

आप ने जो कुछ सफलता हासिल कर ली है उसके लिये मैं आपको बधाई देता हूं और अपेक्षा करता हूं कि आप और भी सफलताएं हासिल करेंगे। मेरा जो आपने स्वागत किया है उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

—— ——

धनबाद में अभिनन्दन

ता० २१ अप्रैल १९५० को धनबाद नगरपालिका के अध्यक्ष और सदस्यों की ओर से दिये गये मानपत्र के उत्तर मे राष्ट्रपति जी ने कहा—

धनबाद म्युनिसिपेलिटी के चेयरमैन, दूसरे सदस्यगण, भाइयो तथा बहनो,

यह मेरे लिये पहला मौका नही है जब मै धनबाद में आया हूं। इसके पहले भी मै कई बार यहा आ चुका हूं और आपने कई बार मेरा स्वागत भी किया है। मगर यह भी सच है कि इस बार मै जिस हैसियत से आया हूं वह हैसियत कुछ और ही है। पर मैं वैसा ही हू जैसा पहले था। आपने जो आदर और सम्मान किया है उसके लिये मैं आपको धन्यवाद अवश्य देता हू और आशा करता हू कि इस तरह से आप का प्रेम मेरे प्रति बना रहेगा और दिन प्रतिदिन बढ़ता रहेगा।

आपने जिन जरूरतों का जिक्र इस मानपत्र में किया है, वे तो सब ऐसी चीजे है जिनका जवाब आपके प्रान्त के गवर्नर साहब, जो यहां मौजूद है, और मिनिस्टर लोग जो यहा मौजूद हैं, दे सकते है। मै तो केवल इतना ही कह सकता हू और मुझे पूरा विश्वास है कि आपकी जो जरूरतें होंगी उन पर पूरा ध्यान दिया जायेगा। गवर्नमेन्ट जहां तक कर सकती है वह तो करेगी ही लेकिन आपको भी अपनी ओर से पूरी कोशिश करनी चाहिये। आपने इस मानपत्र में इसका भी जिक्र किया है कि यहा आपके पास अभी पानी का इंतजाम ठीक नही है। मै समझता हूं कि यह शिकायत सिर्फ धनबाद के लोगों की ही नहीं है मगर बहुत हद तक यह शिकायत तमाम कोयले की खानों के अन्दर काम करने वाले लोगों की अब तक भी मौजूद है। इस शिकायत को दूर करने के लिये कई वर्षों से कई तरह की कोशिश की जा रही है और किसी हद तक पानी पहुंचाने का इन्तजाम भी किया गया है मगर तो भी जहां तक मै समझता हूं, काफी पानी नही पहुंच पाया है। खास करके गर्मी के दिनों में लोगों को पानी का कष्ट हुआ ही करता है। मुझे आशा है कि बहुत जल्द ही लोगों के कष्ट दूर होंगे और आपके शहर में रहने वालों के लिये जो पानी की तकलीफ है वह तकलीफ भी दूर हो सकेगी।

आपने अपने मानपत्र में जिस दूसरी बात का ज़िक्र किया है वह एक कालेज बनाने के सम्बन्ध में है । अभी हम लोग स्कूल आफ माइन्स देखने के लिये गये थे । प्रधान मंत्री ने वहाँ यह कहा था कि कालेज में पढ़ कर क्या होगा ? कालेज खुलते जा रहे हैं । सिर्फ कालेज ही नहीं बल्कि यूनीवर्सिटियां खोलने की भी एक होड़ सी मच गई है । कालेज मे सन्तोष न हो कर यूनीवर्सिटी भी खोलने के प्रयत्न हो रहे हैं । ये सब चीजे अपने तरीके पर अच्छी हैं । सिर्फ उनका रुख बदलना चाहिये । किसकी ज़रूरत कहां तक और क्या है इसको समझ कर ऐसी संस्था को जारी करना चाहिये । अगर उसी तरीके पर काम चलता रहा और कालेज और यूनीवर्सिटियो से निकल कर ऐसे लोगों की तादाद बढ़ती रही जिनको कोई उद्योग धंधा नहीं मिलता तो इससे कोई खास लाभ नहीं होगा । इसलिये मैं यह कहूंगा कि आप, जहां पर दूसरे तरीकों पर काम हो रहा है वहां जायें और देखें कि कुछ नया हो रहा है या नहीं और यदि कुछ नया हो रहा है तो उन कामों को बढ़ाने का प्रयत्न करें । जहां पर कोयले का काम हो रहा है वहाँ पर कोयले के काम के साथ साथ और तरह के बहुत से कारबार खुलने चाहिये । आपको इस ओर ध्यान देना चाहिये । हमारे नौजवानों को चाहिये कि वे उन उद्योगधंधों में, कारबार में लग जायें जिनसे देश की उन्नति हो सकती है । केवल कालेज और यूनीवर्सिटी की पढ़ाई से कुछ लाभ नहीं होता । हम केवल पुराने तरीके से ही काम कर के तरक्की नहीं कर सकेंगे । इस के लिये आधुनिक तरीकों पर काम करना ज़रूरी है । मेरा यह विश्वास है कि अगर हमारे नौजवान कालेज से निकल कर नौकरी आदि ढूढने के बजाय इन उद्योगधंधों के बढ़ाने की ओर ध्यान दें तो मैं समझता हूं कि इससे हमारे देश को अवश्य लाभ पहुंचेगा ।

मैं आप सब भाई बहनों को जिन्हों ने प्रेम दिखाया है और मेरा आदर किया है, उस के लिये धन्यवाद देता हूं । यहा पर मेरे बहुत पुराने मित्र हैं जिनको मैं जानता हूं और जिनके चेहरे मैं यहां देखता हूं, उनसे मिल कर मुझे बहुत खुशी हुई । मैं सबको धन्यवाद देता हूं ।

ईंधन गवेषणा प्रतिष्ठान

*२२ अप्रैल १९५० को झरिया कोयला खानों में के दिगवाडीह मे स्थित ईंधन गवेषणा प्रतिष्ठान के उद्घाटन के अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा--

९ जुलाई १९४० की पुरानी बात है जब वैज्ञानिक और औद्योगिक गवेषणा के निर्देशक की सिफारिश पर भारत सरकार ने स्वर्गीय डा० एच० के० सेन की अध्यक्षता में ईंधन-गवेषणा-समिति नियुक्त की थी । अपनी पहली ही बैठक में उसने यह प्रस्ताव स्वीकार किया कि हमारा यह उद्देश्य होना चाहिये कि अन्त मे हम भारत भर के लिये केन्द्रीय-ईन्धन-गवेषणा स्टेशन की स्थापना करें और बाद में उसने इस निश्चय

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

को दुहराया कि केन्द्रीय-ईन्धन-गवेषणा-स्टेशन की शीघ्र स्थापना की जाये । सन् १९४१ की जनवरी के शुरू में वैज्ञानिक और औद्योगिक गवेषणा मण्डल की एक उपसमिति ने यह सिफारिश की कि केन्द्रीय-ईन्धन-गवेषणा-प्रतिष्ठान की स्थापना की जाये और उसके निम्न कृत्य हों अर्थात् (क) भारतीय कोयले की रासायनिक और भौतिकीय नाप जोंख (ख) कोयला और खास तौर से धातुकार्मिक कोक निकालना (विधायन) और तैयार करना । तथा (ग) मन्दतापप्रांगारण ।

यद्यपि समय पर विभिन्न योजनाओं पर विचार किया गया किन्तु इस बारे में कोई आगे का कदम १९४३ के दिसम्वर के पहले न उठाया जा सका । उस मास में वैज्ञानिक और औद्योगिक गवेषणा परिषद् ने ईन्धन-गवेषणा-स्टेशन की स्थापना के लिए प्राक्कलना मंजूर की और १९४४-४५ में भारत सरकार ने इस प्रयोजन के लिये परिषद् को ३ लाख रुपये का अनुदान दिया । ईन्धन-गवेषणा समिति की सिफारिश पर परिषद् ने १९४४ में स्थानीय योजना-समिति इस प्रयोजन से नियुक्त की कि वह प्रतिष्ठान की स्थापना सम्बन्धी दिन प्रतिदिन का कार्य चलाये तथा डा० जे० डवल्यू व्हिटटेकर को प्रतिष्ठान के निर्देशक के पद पर और डा० ए० लाहिड़ी को उपनिर्देशक के पद पर नियुक्त किया गया । अनुमानतः १४ लाख के खर्चे से इस प्रयोगालय को बनाने और सज्जित करने की योजना तैयार की गयी और उसे वैज्ञानिक और औद्योगिक गवेषणा परिषद् ने मन्जूर कर लिया । तत्पश्चात् इमारत और सामान, जिसका अधिकांश विदेशों से मंगाया जाता था, इन दोनों के मूल्य की दर बढ़ जाने की बात ध्यान में रख कर वैज्ञानिक और औद्योगिक गवेषणा परिषद् की सिफारिश को मान कर भारत सरकार ने प्रतिष्ठान की स्थापना के लिये पूंजी-अनुदान को बढ़ा कर २९·२५ लाख रुपये देना स्वीकार कर लिया गया । पांच कोयला-नापजोंख-स्टेशनों को सज्जित करने के लिये ९ लाख का अतिरिक्त अनुदान भी मंजूर किया गया है ।

कार्यो, खानो और शक्ति के तत्कालीन मन्त्री माननीय श्री सी० एच० भाबा ने १९४६ के १७ नवम्बर को इस प्रतिष्ठान का शिलान्यास किया । उस समय यह निश्चय हुआ था कि आधार शिला रखने का आदर मुझे प्रदान किया जाये । किन्तु अपनी अस्वस्थता के कारण मै दुर्भाग्यवश यात्रा न कर सका और मेरे मित्र श्री भाबा को इस कार्य के लिये यहां आने का कष्ट उठाना पड़ा । अतः मुझे इस बात का हर्ष है कि जो कार्य मै तव न कर सका था उसको आज पूरा करने का भार मुझ पर आया है और इसलिये मै आपका आभारी हूं कि आपने मुझे यह अवसर दिया कि ईन्धन-गवेषणा-प्रतिष्ठान के इस उद्घाटन समारोह मे॰ मे भाग ले सकू ।

इस प्रकार के प्रतिष्ठान की तथा अपने देश मे ईन्धन सम्बन्धी गवेषणा की आवश्यकता और उपयोगिता के सम्बन्ध में कुछ अधिक कहना मै आवश्यक नहीं समझता । यह तो भली प्रकार विदित है कि आधुनिक औद्योगिक युग में सब कुछ शक्ति पर ही निर्भर करता है और ईन्धन को ताप मे परिवर्तन करने से ही शक्ति पैदा होती है । भारत अपनी खनिज सम्पत्ति में काफी धनी है । अनुमान लगाने पर पता चला है कि हमारा समस्त कोयला-भण्डार लगभग ६५ अरव टन हैं जिसमें से आजकल

२२ अरब टन ऐसा है जिनके निकालने का आजकल प्रबन्ध किया जा सकता है। किन्तु अच्छी किस्म का कोयला ५ अरब टन से अधिक नहीं है पर यह सब भी धातुकार्मिक प्रयोजनों के काम का नहीं है। हर प्रकार के कोयले का हमारी सालाना निकासी ३ करोड़ टन के लगभग है। जिसमें से एक तिहाई तो रेलों के खर्च में आ जाता है चतुर्थांश धातुकर्म तथा और उद्योगों में तथा दशांश घरेलू कामों मे खर्च होता है। खानों में से निकाले गये ३ करोड़ कुल कोयले मे से लगभग १ करोड़ ३० लाख टन धातुकर्म के लिये काम में लाया जा रहा है। बाकी ऐसे प्रयोजनों के लिये उपयोग किया जा रहा है जिन के लिये कोक किस्म से अतिरिक्त दूसरे प्रकार का कोयला काम मे लाया जा सकता है।

सन् १९३७ की कोयला-खनन-समिति ने यह तखमीना लगाया था कि सब अच्छे किस्म के भारतीय कोयलों का भण्डार एकसौ बीस वर्ष के लिये, अच्छी किस्म के पत्थर के कोयले का भण्डार ६२ वर्ष के लिये तथा पत्थर के कोयले के अलावा अच्छे किस्म के कोयलों का भण्डार १०० वर्ष के लिये पर्याप्त है। इस से प्रकट है कि पत्थर के कोयले का भण्डार भारत मे बहुत कम है और यह बात इस लिये और भी खटकती है क्यो कि भारत मे अच्छे किस्म के लोहे का बहुत बडा भण्डार है। कोयले की खानो से लगभग १५० मील की दूरी पर ही लोहे का ३ अरब टन से भी अधिक भण्डार है। आजकल की निकासी, उपभोग, और खानो मे खराब हो जाने की जो रफ्तार है उनके हिसाब से अच्छे किस्म के पत्थर के कोयले का भारत मे भण्डार तो मुश्किल से ही ५० वर्ष से अधिक चलेगा। ठीक है इस बारे मे हमे उस समिति की रिपोर्ट से अधिक जानकारी मिल जायेगी जो आजकल पत्थर के कोयले के भण्डारों की संरक्षा के प्रश्न पर विचार कर रही है। धातुकार्मिक किस्म के कोयले के अलावा काफी उत्पत वाला कोयला कुछ विशिष्ट कामों के लिये अर्थात् प्रांगारग, उपोत्पात प्रत्यादाय, तेलों का सश्लिष्ट उत्पादन, वाति उत्पादन, रसायनिक उद्योग और इसी प्रकार के अन्य कामों के लिये प्रयोग होना है। कोलतार उद्योग का भविष्य महान् है। साथ ही सड़कों को बढ़ाने के कार्यक्रम की दृष्टि से यह उद्योग आवश्यक भी है। कई प्रकार के तेलों, तीव्र विस्फोट को, रंगों, दवाइयों, प्लास्टिक की चीजों, प्रतिश्यों, कीटघ्नों जीवाणुनाशी, इत्यादि इत्यादि भी कोलतार से निकाले जा सकते हैं। सच तो यह है कि देश के औद्योगिक विकास के लिये हमारे कोयले के भण्डारों का उपयोग और संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है और यह बात निचली किस्म के कोयले को अच्छा बनाने और उपयोग में लाने और विभिन्न उद्योगों के लिये अलग अलग किस्म के कोयले के विभिन्न संभारों के प्रबन्ध करने की हमारी सामर्थ्य पर निर्भर करेगी। ईन्धन उद्योग और देश भर के लाभ के लिये यह आवश्यक है कि कोयले का उपोत्पादन व्यवसाय भी आरम्भ किया जाये। अतः यह आश्चर्य की बात नहीं है कि कोयला-आयोग और कोयला खनन समिति से लगाकर लगभग प्रत्येक समिति ने जिसे कोयले की समस्या पर विचार करना पड़ा है उसने केन्द्रीय-ईन्धन-गवेषणा-प्रतिष्ठान की स्थापना के लिये सिफारिश की है। मुझे स्मरण है कि १९३८-३९ में जब मैं बिहार सरकार द्वारा नियुक्त बिहार श्रमिक-जाँच-समिति के काम से, जिसका मै अध्यक्ष था,

कोयले की खानों को देखने गया था तो डाक्टर फर्कुंहार ने, जो पहले ईन्धन-गवेषणा-समिति के अध्यक्ष थे मुझे इस बात की अत्यन्त आवश्यकता समझाई थी कि अच्छे किस्म के कोयले को धातुकार्मिक प्रयोजनों के लिये संरक्षित रखा जाये और इसका जो बेमतलब खर्च हो रहा है उनकी बड़ी शिकायत की थी।

भारतीय भूगर्भ माप से हमें इस बात का कुछ अन्दाजा लगा है कि हमारे यहां कोयले का कितना भण्डार है। किन्तु अभी इसके बारे में रसायनिक और भौतिकी बातों की बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। इस दिशा में कुछ काम औद्योगिक फर्मों ने किया है। किन्तु कुल मिलाकर अब तक जो कुछ हुआ है वह उस काम की तुलना मे, जो अभी हमें करना बाकी है, बहुत कम है। इस प्रकार ईन्धन गवेषणा प्रतिष्ठान का उद्देश्य यह है कि ठोस, तरल और वाप्तिक ईन्धन के सम्बन्ध मे सैद्धान्तिक और व्यवहारिक दोनों प्रकार की सारी गवेषणा को हाथ मे ले, यद्यपि फिलहाल मजबूरी के कारण ठोस ईन्धन और खास तौर से कोयले और उससे निकाले जाने वाले तरल और वाप्तिक ईन्धन के सम्बन्ध मे ही काफी हद तक इसकी कारवाई सीमित रहेगी। विषय विज्ञान सम्बन्धी है और इस की व्याख्या ऐसे विद्वान के लिये ही छोड़ना ठीक है जैसे डाक्टर शान्ति स्वरूप भटनागर हैं। दिल्ली में भौतिकी प्रयोगालय खोलते समय श्री राजगोपालाचारी ने उन्हें मूर्तिमान विद्युत बताया था। केवल इसी प्रतिष्ठान की स्थापना के लिये ही नहीं वरन् और दो प्रतिष्ठानों की अर्थात देहली मे राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगालय और पूना में राष्ट्रीय रसायनिक प्रयोगालय की स्थापना के लिये भी जिनमे पिछले कुछ ही महीनों में कार्यारम्भ हो गया है तथा इस वर्ष मे चार और प्रतिष्ठानों के अर्थात् कलकत्ते में केन्द्रीय कांच और मृत्तिका शिल्प-गवेषणा-प्रतिष्ठान, मैसूर में केन्द्रीय-खाद्य-प्रौद्योगिक-गवेषणा-प्रतिष्ठान, लखनऊ में केन्द्रीय-भेषज-गवेषणा-प्रतिष्ठान और जमशेदपुर में राष्ट्रीय-धातुकार्मिक-गवेषणा-प्रतिष्ठान के प्रारम्भ करने के लिये उन्होंने अथक परिश्रम किया है। इस ईन्धन गवेषणा प्रतिष्ठान को अपने काम में बंगाल, बिहार, विन्ध्यप्रदेश, मध्यप्रदेश और आसाम में के पांच वाह्य स्थित-क्षेत्रीय प्रयोगालयों से सहायता और सहारा मिलेगा।

कोयले से निकलने वाली बहुत सी चीजों को हम विदेशों से मंगाते हैं। यदि हमारे इस प्रतिष्ठान ने इस बारे में कार्य किया कि हमारे कोयले के भण्डार के उपयोग करने की सर्वोत्तम रीति क्या है तो हम केवल कोयले और लोहे के उत्पादन में, जिसके लिये कच्चा माल यहा अपरिमित तादाद में उपलब्ध है, काफी वृद्धि की ही नहीं वरन् उपर्युक्त उपोत्पादों में से अनेकों की, जिनमे से लगभग सभी को हमें आवश्यक मात्रा में विदेशों से मंगाना पड़ता है, पैदावार की आशा कर सकेंगे। जो उद्योग कोयले और उसके उपोत्पादों का उपयोग करें और जो वे चीजें जिन्हें हमें आज कल बाहर से मंगाना पड़ता है हमें दे सके उनको यहाँ शुरू करने और उन्नत करने का काम हमारी शक्ति से परे न होना चाहिये। जिन देशों के पास खनिज तैल नहीं है वे अपने कोयले के भण्डार को तरल ईन्धन में परिवर्तित करने का प्रयास कर रहे हैं। अपने देश में हम भी अभी तक गण्यमात्रा में खनिज तैल का पता नहीं चला पाये हैं। यह

वैज्ञानिकों का काम है कि वे हमें बतायें कि अपने प्राकृतिक सम्पत्ति-साधनों की इस कमी को उस वस्तु का, जो हमारे यहां पर्याप्त बड़ी मात्रा में उपलब्ध है अर्थात कोयले का उपयोग करके हम किस तरह पूरी करें। उस समय भी जब हम ने अपनी जलशक्ति का आज की तुलना में कहीं अधिक विकास कर लिया होगा हमें धातुकार्मिक प्रयोजनों के लिये तथा उसके उपोत्पादो में से अनेकों के लिये कोयले की आवश्यकता बनी ही रहेगी। जल-सम्पत्ति-साधनों के उपयोग द्वारा अधिक शक्ति के उत्पादन की योजना को कोयले के भण्डार की उपयोग की योजना से मिला लेना चाहिये। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं उस कोयले का, जो निकाला जाता है, लगभग एक तृतीयांश हमारी रेलों के काम आ जाता है तथा उस का काफी अंश धातुकार्मिक उद्योगों से अन्य उद्योगों के काम में आता है। यदि इन सब प्रयोजनों के लिये आवश्यक सब शक्ति हमारे जलविद्युत कारखानों का विकास करने से उचित समय के अन्दर मिल भी सके तो भी हमें अपने कोयले के वैज्ञानिक उपयोग की आवश्यकता उन विभिन्न प्रकार के उत्पादनों के लिये बनी रहेगी जिनका ज़िक्र मैं ने पहले किया है और इस लिये योजना तैयार करने का एक अंग यह होगा कि इन दोनों प्रकार के विकासों में किस प्रकार मेल बैठाया जाये जिससे किसी प्रकार की गड़बड़ न हो और जिस किसी चीज़ को हम स्थापित करें वह बर्बाद न जाये।

पिछले तीस वर्षों से मै कोयले की खानों मे जब तब आता रहा हूं और हर बार जब मुझे इस प्रदेश में एक या दो रातें बितानी पड़ी है मैं ने सड़क के किनारे, घरों के अहातों में और लगभग सभी जगह बड़ी मात्रा में कोयला जलाया जाता देखा है जिससे कि बड़ी तादाद मे धुआं निकलता है और जीना हराम कर देता है। कोयले को कोक में परिवर्तित करने के लिये यह किया जाता है। किन्तु इस रीति से काम करने में वे सब उपोत्पाद हाथ से निकल जाते हैं जो यदि वैज्ञानिक रीति से काम किया जाये तो उपलब्ध हों। मुझे आशा है कि ऐसी योजना की जा सकेगी कि जिससे छोटी कोयले की खानें भी अपने उस कोयले को, जिसे वे कोक में परिवर्तित करना चाहें, ऐसी रीति से परिवर्तित करने मे समर्थ हो जिससे वे उपोत्पाद जो आजकल बर्बाद हो जाते है उपलब्ध ही न होंगे वरन् उस तकलीफ और कष्ट से भी कोयले की खानों का जीवन मुक्त हो जायेगा जो कोयले को यहा वहां और सब जगह जलाने से पैदा होता है।

यह बहुत विशद कार्यक्षेत्र है और मुझे पूरा यकीन है कि यह प्रतिष्ठान अपने एतत्स्थानीय तथा मान्हत प्रयोगालयों द्वारा उस समय जब कि इन में पूरी तरह काम होने लगा होगा हमारे ईन्धन के भण्डार और विशेषतया कोयले के सर्वोत्तम उपयोग कराने में सहायक सिद्ध होगा। मै इस बात का विस्मरण नहीं कर सकता कि यह प्रतिष्ठान ऐसे राज्य में स्थित है जहां का मै स्वयं हूं और इसलिये मेरी इस में और भी दिलचस्पी है। मै मनुष्य के दर्जे से कुछ गिरा होऊंगा यदि मै इस बात को स्वीकार न करूं कि इस कारण भी इस की उन्नति और सफलता में मेरी खास दिलचस्पी है। किन्तु मैं यह भी जानता हूं कि इस की सफलता से बिहार और बंगाल को ही नहीं वरन् सारे देश को भी लाभ होगा। मुझे आशा है कि रुपये की कमी से इस के काम में बाधा न पड़ेगी और राज्यों और संघ की सरकारों से

ही नहीं वरन् बृहद् और प्रभावशील औद्योगिक वर्ग से भी, जिन का इसके विकास में उतना ही हित है जितना कि सरकार का, सहायता मिलने का इसे भरोसा होगा। मुझे यह भी आशा है कि हमारे विश्वविद्यालय भी इसे ऐसे गवेषणा करने वाले कार्यकर्त्ता देकर इसकी सहायता करेंगे जैसे कि इस प्रतिष्ठान की सफलता के लिये आवश्यक है। इस के प्रयोगालय आधुनिकतम रीति से बनाये गये हैं और नवीनतम औजारों से सुसज्जित किये गये हैं किन्तु कोई प्रयोगालय स्वयमेव ही कुछ नहीं कर सकता जब तक कि इस से लाभ उठाने के लिये ऐसे नर नारी न हों जो पर्याप्त ज्ञान से सज्जित, गवेषणा के लिये उत्साह पूर्ण और देश के कल्याण से प्रेरित हैं। आपके इस प्रतिष्ठान का संचालनभार डाक्टर व्हिटटेकर और डाक्टर लाहिड़ी पर है जिन्हों ने अपने किये गये काम द्वारा अपनी योग्यता व्यक्त कर दी है और मुझे इस में कोई शंका नहीं है कि भविष्य में भी भूतकाल के समान ही उनकी सेवायें देश के लिये बहुमूल्य सिद्ध होंगी। इस प्रतिष्ठान से और इस से अपेक्षित परिणामों से हमारे नवयुवकों और नवयुवतियों के सामने सेवा और ज्ञान का प्रशस्त नया मैदान बन गया है और मैं तो आशा करता हूं कि अपने सामने पड़े कार्य के लिये वे अपने को भली प्रकार से सज्जित करेंगे।

इन शब्दों से मैं इस राष्ट्रीय ईन्धन गवेषणा प्रतिष्ठान को खुला घोषित करता हूं।

हज़ारी बाग़ में जनता को उद्बोधन

हज़ारी बाग़ में ता० २३ अप्रैल १९५० को दिन में १ बजे राष्ट्रपति जी ने एकत्रित जनसमूह से कहा—

भाइयो तथा बहनो,

मैं तो आपके यहां बराबर आया जाया करता हूं। कुछ नया तो हूं नहीं। दो ढाई साल से हम आज़ाद हुए हैं। मुझे तो आप से इतना ही कहना है कि मुझे जो कुछ कहना था पंडित जी ने कह दिया है। उसके मुताबिक काम किया जाये। आप से इतना ही मैं कहना चाहता हूं।

आप लोगों के दर्शन हुए इसके लिये धन्यवाद।

झुमरी तैलिया में सार्वजनिक सभा

झुमरी तैलिया में ता० २३ अप्रैल १९५० में शाम के ६-३० बजे सार्वजनिक सभा में राष्ट्रपति जी ने कहा—

भाइयो और बहनो,

आपको यह मालूम ही है कि मैं और हमारे प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल जी दो तीन दिनों से आपके इस इलाक़े का दौरा कर रहे हैं और जो इस इलाक़े में काम हो रहे हैं उनको हम देख रहे हैं। मैं आपको यह बता देना चाहता हूं कि इन कामों से आप लोगों का क्या सम्बन्ध है और आप लोगों को इन से क्या लाभ पहुंच सकता है। कहां

तक इन कामों के बनने में तरक्की हुई है और कितना काम अभी बाकी है, यह सब देखते सुनते आज सवेरे से आप के ज़िले में हम लोग फिर रहे है। जहां जहां दामोदर नदी के सिलसिले में जो जो बांध बनने जा रहे हैं, जहां जहां ज़मीन की सफाई होने जा रही है, उन सब को हमने देखा। जिन्हें अपनी अपनी जगहों से हटना पड़ा है उनको नये सिरे से बसाने का किस तरह इन्तज़ाम हो रहा है उन सब चीज़ों को देखते देखते अभी अभी हम यहां पहुंचे हैं।

जब से हमारे हाथों मे अधिकार आया है, बहुत तरह की मुसीबतें हमारे सामने रही हैं और सब से बड़ी मुसीबत यह रही है कि हमारे आपसी झगड़ों की वजह से हम उन चीज़ों की तरफ इतना ध्यान नहीं दे सके हैं जितना कि हम को देना चाहिये था। मगर बावजूद इन सब रुकावटों के अब तक जो कुछ काम हुआ है और होने जा रहा है उसका कुछ नमूना यहां पर देखने को मिलता है। इसका भी आप खयाल रखे कि यहां पर जो बड़ा काम हो रहा है वह गवर्नमेन्ट आफ इंडिया की तरफ से हो रहा है। इसके अलावा जो सूबे की गवर्नमेन्ट हैं वे भी अपने अपने दायरे में सभी जगहों पर इस तरह के काम कर रही है और सभी जगहों पर ऐसे बड़े बड़े काम हो रहे हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर देश के लोग आपसी झगड़ों से बचें और शान्ति रखें और अगर गवर्नमेन्ट को इन रचनात्मक कामों की तरफ अपना ध्यान देने का मौका दें तो बहुत कुछ हो सकता है और बहुत कुछ होगा।

मैं ज्यादा आपका वक्त लेना नहीं चाहता क्योंकि मै जानता हूं कि इसके बाद अभी प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल जी बहुत कुछ आपसे कहने वाले हैं। इसलिये मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि अभी हमारे प्रधान मन्त्री जी की पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री जी के साथ नई दिल्ली में जो बातचीत हुई है और उसमें जो तय हुआ है उसके अनुसार हमारे देश के हर एक आदमी को चलना चाहिये। उसका यह फर्ज़ है कि वह उसके मुताबिक चले और उसको पूरा करे। उसके पूरा करने का अर्थ यह होगा कि आपस के झगड़े कम होंगे ; और हम रचनात्मक काम की ओर अधिक ध्यान दे सकेंगे; हमारी जो आशायें हैं और जो हौसले हैं उनको हम पूरा कर सकेंगे। उन आशाओं को पूरा करने के लिये शान्ति का कायम रखना ज़रूरी है। इसलिये आप से यह आशा की जाती है और देश के लोगों से उम्मीद रखी जाती है कि वे गवर्नमेन्ट का पूरा हाथ बंटाकर हर तरह से उस फ़ैसले को पूरा करने में गवर्नमेन्ट को मदद देंगे।

आप सब भाई बहनों को कष्ट लेकर यहां आने के लिये धन्यवाद देता हूं।

शिमला यंग टीमों के बीच गेंद का फाइन्ल मैच

शिमला यंग और दिल्ली यंग टीमों के बीच गेंद के फाइनल में ता० २६ अप्रैल १९५० को शाम के ६-३० बजे राष्ट्रपति जी ने कहा—

दोस्तो,

मुझे इस बात की बड़ी खुशी हुई कि मैं इस मौके पर आप लोगों का खेल देख सका। यों तो अपने बचपन में मैं भी कुछ थोड़ी बहुत दौड़ धूप किया करता था। पर करीब

३०, ३५ वर्ष से मुझे मैच देखने का कोई मौका नहीं मिला। आज यहां मुझे अच्छा खेल देखने का मौका मिला। इससे मुझे बड़ी खुशी हुई। दोनों तरफ के लोगों ने बड़े मज़े के साथ, खुशी के साथ खेल खेला। सब से बड़ी बात यह हुई कि आप सब लोग अच्छी तरह से खेले। किसी ने किसी के साथ ज़्यादती नहीं की। सब लोगों ने मिलकर बड़े आनंद के साथ खेला। मैं इसके लिये आप सब दोनों तरफ के खिलाड़ियों को मुबारकबाद देता हूं। जब कोई खेल खेला जाता है तो उसमें जीतना और हारना हुआ ही करता है। एक पार्टी जीतती है तो दूसरी का हारना ज़रूरी है। हो सकता है कि इस बार जीतने की आपकी बारी हुई तो दूसरी बार उनकी हो। जो पार्टी जीतती है वह तो खुश होगी ही, पर जो हारी है उसे भी अफसोस करने की ज़रूरत नहीं। उनको भी खुश होना चाहिये।

आप लोगों को चाहिये कि जिस खेल को आप खेलते है उसको हमेशा जारी रखें। इससे आपकी तन्दुरुस्ती बढ़ती है। तन्दुरुस्ती बढ़ने से आप अपने हर काम को अच्छे तरीके से कर सकते हैं।

ऐसे मिल जुलकर खेल खेलने से यह आदत पड़ जाती है कि कोई भी काम हो आप उसको मिल जुलकर कर सकेंगे। इसमें आपस में किसी तरह का मुकाबला होने पर भी एक दूसरे के साथ मुहब्बत और प्रेम का भाव बना रहेगा। इस चीज़ को हमें आज सीखना है। आज के इस खेल से हमें यह चीज़ देखने को और सीखने को मिली।

मैं आप सब लोगों को मुबारकबाद देता हूं।

आगरे में नागरिक अभिनन्द

ह्यूवट पार्क, अगरा में. सार्वजनिक स्वागत सभा में ता० ३० जून १९५० को शाम के ७ बजे राष्ट्रपतिजी ने कहा—

आगरा नगर पालिका के अध्यक्ष महोदय, ज़िला पालिका के अध्यक्ष महोदय, आगरा शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष महोदय और आगरा ज़िला कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षा महोदया, भाइयो तथा बहनो,

जब से मैं आया हूं, तब से बराबर जो आदर और सत्कार आपने मेरे प्रति दिखाया है उसके लिये मैं आपका धन्यवाद करता हूं। एक प्रकार से यह आदर और सत्कार स्वाभाविक था क्योंकि यह पहला ही अवसर है जब देश का राष्ट्रपति चाहे वह कोई भी हो आपके नगर में उस हैसियत से आया है।

हम लोग अभी तीन वर्ष भी पूरे नहीं हुए कि स्वतंत्र हुए हैं। अभी पांच ही महीने बीते हैं जब हमने अपने देश को स्वतंत्र गणतन्त्र घोषित करके अपने लिये एक स्वतंत्र राष्ट्रपति चुना था। यह इतना अद्भुत और महत्व का काम हुआ है जिसकी मिसाल हमारे इतिहास में शायद ही मिले। आज तक का जो इतिहास हम को मिलता है उस में गणतंत्र की कथा तो मिलती है। एक नहीं कई

रिपब्लिकें हिन्दुस्तान के अन्दर कायम हुई और उन रिपब्लिकों ने अपने अपने समय में बहुत काम भी किया। मगर वे सब छोटी छोटी रिपब्लिकें थीं; आज के शायद एक जिले के बराबर दो जिले के बराबर या इससे भी कम। हमारे यहां ऐसे ऐसे चक्रवर्ती राजा भी हुए हैं जिन्होंने हिन्दुस्तान के बहुत बड़े हिस्से पर शासन किया; ऐसे ऐसे बादशाह भी हुए हैं जिन्होंने हिन्दुस्तान के बहुत बड़े हिस्से को विजय करके अपने कब्जे में रखकर उस पर हुकूमत की। मगर यह ही पहला अवसर है जब सारे हिन्दुस्तान की जनता ने स्वतंत्रता प्राप्त करके अपने देश के अपने एक सेवक को चुन कर उसको यह पद प्रदान किया है। इसलिए जब मैं कहीं जाता हूं और लोग मेरा आदर और स्वागत करते हैं तो मैं समझता हूं कि वे इस महान् कार्य की महत्ता को समझ कर जो आदर देते हैं वह तो चुने हुए पद के लिये देते हैं, न कि किसी व्यक्ति विशेष के लिये। मैं यह मानता हूं कि जो कोई भी इस पद पर आ जाये उसका भी वही आदर और सम्मान हमेशा होना चाहिये क्योंकि यह तो देश का काम है और इसलिये देश के चुने हुए मुख्य लोगों का काम है कि वे तय करें कि किस के जिम्मे कौन सा काम वे सुपुर्द करें।

जब सन् १९३७ में बिहार में और देश के दूसरे सूबों में पहले पहल कांग्रेस की मिनिस्ट्रीं बनी और वहां के मिनिस्टर नियुक्त हुए तो मैं ने उस समय यह कहा था कि आज हम जिन भाइयों को अपने प्रान्त का प्राइममिनिस्टर या दूसरा मिनिस्टर बना रहे हैं, हो सकता है कि मौका आने पर देश उन्हें हुक्म दे कि तुम गांव गांव में जाकर झाड़ू दो। यह सेवा भी उतने ही आदर की होगी जितने की उनके वर्तमान मन्त्रिपद है। उन को उस समय भी चाहिये कि देश के हुक्म देने पर उतने उत्साह के साथ उस काम को भी करें जिस उत्साह के साथ वे प्रधान मंत्री का पद स्वीकार कर रहे हैं। मैं आज भी मानता हूं कि यद्यपि आज देश ने मुझे इस ऊंचे पद पर बिठाया है फिर भी मैं इस बात के लिये तैयार हूं कि अगर कल देश जरूरी समझे और ऐसा खयाल करे कि मेरे झाड़ू लगाने से देश की बेहतर सेवा हो सकती है तो वह भी मैं करने के लिये तैयार हूं।

हमने स्वतंत्रता प्राप्त की है। अब देश का भाग्य हमारे हाथों में है। उसको हम बनाना चाहें तो बना सकते हैं, बिगाड़ना चाहें तो बिगाड़ सकते है। अब यह मौका नहीं रहा कि अगर कोई बात बिगड़े तो उस की शिकायत हम दूसरे से करें और उसका इल्जाम दूसरे के सिर पर डालें। अब तो जो भी बात बनेगी उसके लिये सब श्रेय हम ही को है। जो बात बिगड़ेगी उसका जो इल्जाम होगा और शिकायत होगी वह भी हमारी ही होनी चाहिये। हम अब किसी पर दोष नहीं लगा सकते न हम को ऐसा करने का हक है। हमें यह सब समझ कर आज देश की सेवा में लग जाना चाहिये। महात्मा गांधी जी ने जब अपना काम शुरु किया था और देश के सामने स्वतंत्रता हासिल करने के मसले को रखा था और साथ ही एक नया रास्ता बतलाया था जिस पर चल कर हम

जल्दी से जल्दी स्वतंत्रता हासिल कर सकते हैं तो उस वक्त हम में से बहुतेरों ने सोचा था कि इसमें बहुत समय लगेगा। बहुत से लोगों ने यह भी सोचा था कि शायद इस रास्ते पर चल कर हम स्वतंत्रता कभी प्राप्त कर नहीं सकेंगे क्योंकि इस तरह के उदाहरण इतिहास में कहीं दूसरी जगह नहीं देखने में आये। किसी भी देश के निहत्थे लोग बिना किसी हथियार के बहुत बड़ी सल्तनत के खिलाफ उठ कर और लड़ कर और उस को मजबूर करके किस तरह स्वतंत्रता प्राप्त कर सकेंगे यह बात समझ में नहीं आती थी। मगर हमने देखा कि गांधी जी ने जो रास्ता बतलाया था वह हमारे लिये कितना अच्छा और कितना कारगर रास्ता निकला। मैं उस वक्त इस बात को सोचता था और आज भी मैं मानता हूं कि हमारे देश के लिये ही नहीं किन्तु सारे संसार के लिये जो रास्ता गांधी जी ने बतलाया था वही सब से अच्छा और सुन्दर और लाभप्रद रास्ता है। मगर अफ़सोस है कि आज हम दूसरों को क्या कहें, खुद उस चीज को बहुत हद तक भूल गये हैं और भूलते जा रहे हैं और अभी थोड़े ही दिन पहले हमने जो कामयाबी हासिल की थी, उस कामयाबी को भूल कर अब हम अगर मगर के फेर में पड़ रहे हैं। हमारे दिल में तरह तरह के शकोशुबा हैं और तरह तरह के संदेह पैदा हो रहे हैं। मैं जानता हूं कि देश का कल्याण इसी में है और संसार का कल्याण भी इसी में है कि वह गांधी जी के बताये हुए रास्ते पर ही चलता रहे और उस को ही अपना अटल रास्ता मान कर बराबर उस पर अडिग रहे। चाहे उस में देखने के लिये इस वक्त हम को कुछ कठिनाई और दिक्कत भी मालूम हो तो भी हमें चाहिये कि उसको न छोड़ कर बराबर उस पर हम अमल करते रहें। सन् १९२० में गांधी जी ने हमें जो रास्ता दिखलाया था उस के पहले हमें हर तरफ अंधकार ही अंधकार नज़र आता था। दूसरा कुछ भी नज़र नहीं आता था तो भी आशा करके, विश्वास करके और श्रद्धा करके हम निश्चित मत से उस रास्ते पर जो कुछ थोड़ा बहुत चल सके उसका नतीजा यह हुआ कि ३० वर्ष के अन्दर ही हम अपने देश को गणतंत्र राज्य घोषित कर सके और उसके लिये एक राष्ट्रपति भी चुन सके। इस तरह से जो कुछ दिक्कतें आज हमारे सामने नज़र आती हैं और जो कुछ अंधकार हमें मालूम होता है अगर हम दृढ़तापूर्वक उस रास्ते से विचलित न होकर उसी पर डटे रहें तो जिस तरह सुबह के सूरज को निकलता देखकर कोहरा गायब हो जाता है उसकी ही तरह गांधी जी के रास्ते पर चलने से तमाम अंधकार फट जायेगा और हमारा रास्ता प्रशस्त और साफ हो जायेगा और हम अपनी स्वतंत्रता को कायम रख सकेंगे।

गांधी जी ने हम को बतलाया था कि सब से अच्छी और सबसे बड़ी चीज आपस में मिल कर रहने की है और झगड़ा न करने की है। हम इस वक्त उस बात को भूल से गये हैं और उसका नतीजा यह हुआ है कि जिस दिन से हम स्वतन्त्र हुए हैं उसी दिन से हमारे सामने ऐसे एसे बड़े बड़े प्रश्न आकर खड़े हो गये जिन को आज तक हम सुलझा नहीं सके हैं। आप जानते ही हैं कि आज कितने ही

लाख आदमी एक जगह से उजड़ कर बेघरबार होकर दूसरी जगह बस रहे हैं। उनको बसाने का काम बहुत ही कठिन काम साबित हो रहा है और यह सिलसिला अभी तक खत्म नहीं हुआ है। यह सब किस कारण हुआ? सिर्फ गांधी जी की बतायी हुई एक चीज़ को छोड़ने का नतीजा इतना भयंकर हुआ है जिसको हमें आज भुगतना पड़ रहा है; न मालूम और कितना हमको भुगतना पड़े। इसलिये मैं चाहता हूं कि गांधी जी की हर बात को हम ध्यान में रखें। उन्होने एक एक चीज़ जो हमें बतलाई थी वह सब दूरदर्शिता के साथ बहुत विचार करके बतलाई थी। हमारे पास कोई दिव्यदृष्टि ऐसी नहीं है जिनसे हम भविष्य की बातों को जान सकें। अगर हम चाहें तो हम अपने हृदय में श्रद्धा और विश्वास पैदा कर सकते है और उसके अनुसार अगर हम चलें तो कुछ कामयाबी भी हासिल हो सकती है।

इस वक्त आप देखते है कि सारा संसार बहुत बड़ी मुश्किल मे फंसा हुआ है। अभी दो चार ही दिन के अन्दर ही आपने अखबार में देखा होगा कि कुछ इस तरह की घटनाऐं हो रहीं हैं कि जिनका नतीजा आज कोई कह नही सकता कि क्या होने वाला है। पिछले ४० वर्षों के अन्दर दो महायुद्ध हो चुके हैं और उन दोनों महायुद्धों में कितनी खूनखराबी हुई है इसका अन्दाजा भी लगाने से सिर चकरा जाता है। लेकिन फिर भी कोई कह नहीं सकता कि जिस तरह आज घटनाचक्र चल रहा है उस से कोई तीसरी लड़ाई न शुरू हो जायेगी। इसलिये जब सारी दुनिया की ऐसी स्थिति है और इस प्रकार वह बहुत ही कठिन और मुश्किल रास्ते पर चल रही है तो आसानी से यह नहीं कहा जा सकता कि कौन सा रास्ता सरल और प्रशस्त है। मेरे विचार में तो गांधी जी का बताया हुआ रास्ता एक ऐसा रास्ता है जिस पर चल कर हम अपने को तमाम दिक्कतों से दूर रख सकते हैं। उन्होंने एक दीपक की तरह हम को सब कुछ दिखला दिया है और हमारे लिये यह ज़रूरी है कि उस पर विश्वास रख कर उस पर चलें। अगर ऐसे समय में जबकि सारा संसार परेशान है गांधी जी के बताये हुए रास्ते पर हम चलें तो न केवल अपना ही बल्कि सारे संसार का हम भला कर सकेंगे। इसलिये मै कहता हूं कि ऐसा करने में ही सब का कल्याण है।

आप लोग एक ऐसे शहर और ज़िले के रहने वाले है जिसका महत्वपूर्ण इतिहास रहा है। मै आज सवेरे से फतहपुरसीकरी और आगरा में जहां जहां पुरानी इमारतें हैं उन को देखता रहा हूं। आगरे में तो मैं पहले भी आया हूं। इन इमारतों को थोड़ा बहुत देखा भी है लेकिन इस मर्तबा कुछ अधिक देख सका हूं। जब मैं देखता हूं कि किस तरह से अकबर ने हमारे देश में भिन्न भिन्न धर्मवालों को मिलाने का प्रयत्न किया था और उनका प्रयत्न उनके ज़माने में और उनके बाद भी कहां तक सफल हुआ और जब मैं यह भी याद करता हूं कि उनकी उस नीति को छोड़ने का नतीजा सब के लिये

कितना भयंकर हुआ, तब मुझे यही ज्ञात होता है कि गांधी जी ने जो नीति हम को बतलाई थी केवल वही नीति हमारे लिये श्रेयस्कर है और हो सकती है।

आपके शहर में बड़ी बड़ी इमारतें हैं। वे सब सुन्दर हैं और इनमें कला का तो एक प्रकार से चरम विकास हुआ है। इसलिये आपको इस बात का गर्व होना जायज़ है कि आप ऐसे शहर और ज़िले के रहने वाले हैं जहां इस तरह की ऐतिहासिक घटनाऐं हुई हैं और जहाँ के लोग आज तक भी कुछ न कुछ उन पुरानी चीज़ों को याद रखे हुए हैं। यहां पर कुछ ऐसे कारीगर भी हैं जो इस तरह का काम अभी तक भी कर सकते हैं। मैं ने सुना है कि इन इमारतों की मरम्मत में जो लोग लगे हुए हैं वे सब यहां के रहने वाले हैं और उन लोगों में कला का कुछ अंश अभी तक बाकी रह गया है। हमारे देश का यह काम है कि देश की इस पुरानी कला को जीवित रखे और अगर हो सके तो उन्नत बनाये। इसलिये यह आवश्यक है कि नगरपालिकाऐं, ज़िला पालिकाऐं या ग्राम-पालिकाऐं, सुबे की गवर्नमेन्ट और सारे देश की सरकार इन कलाकारों को सहायता दें। यदि कला के पुनरुद्धार में हम जिस हद तक मदद दे सकते हैं उस हद तक मदद दें और मिल जुल कर मदद दें तो इस दिशा मे पर्याप्त कामयाबी मिल सकती है।

आज देश की जैसी स्थिति है उस को देखते हुए आप यह समझ सकते हैं कि हम अभी तक कुछ ज्यादा ठोस काम नहीं कर सके हैं और शायद आगे भी कुछ समय तक इस तरफ जितना हमारा ध्यान जाना चाहिये उतना नहीं जा सकेगा। अगर ध्यान गया भी तो भी हमारे पास इतने अच्छे साधन नहीं है जिनके ज़रिये से हम यह काम आसानी से कर सकें। किन्तु फिर भी इनका ध्यान तो रखना ही चाहिये। मेरा ऐसा विचार है कि हम सब मिल कर इन पुरानी इमारतों को जो हमारी पुरानी सभ्यता के मूर्तिमान चिन्ह हैं कायम रख सकें तो यह न केवल अपने लिये ही बल्कि सारे संसार के लिये भी अच्छा होगा। यह चीज़ हमारे पास धरोहर के रूप में रखी हुई है। इस पर सारे संसार के लोगों का उतना ही हक है जितना कि हमारा। इनको सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है। मुझे इस बात की खुशी है कि आप सब को इसका ध्यान है। इसलिये मैं केवल एक बात कह करके आप को बधाई देता हुआ अपना भाषण खतम करना चाहता हूं। गांधी जी ने हम को आज तक जितनी भी बातें बताई थीं उन में सब से बड़ी और सब से अच्छी सीख उन्होंने हम को जो दी है वह यह है कि मनुष्यों का चरित्र ठीक होना चाहिये। हम अभी अभी स्वतन्त्रता प्राप्त कर चुके हैं। अभी थोड़े ही दिनों में चुनाव होगा। देश के सब बालिग लोगों को, २१ वर्ष की अवस्था के सब नर नारियों को यह हक होगा कि मत देकर अपना पंच चुनें और उन पंच लोगों का काम होगा कि सारे देश का शासन करें। मैं

यह कहना चाहता हूं कि जब तक हर एक मतदाता अपने कर्तव्य को न समझे और जो उम्मीदवार होगा वह भी जब तक यह न समझे कि जनता द्वारा चुने जाने के पश्चात् उसका क्या कर्तव्य होगा तब तक हम सफलता नहीं पा सकते; अगर सब लोग अपनी अपनी जगह अपने कर्तव्य को न समझें तो इस चुनाव का कोई फायदा नही। संविधान कैसा भी सुन्दर, कैसा भी अच्छा क्यों न हो देश की भलाई नही कर सकता। देश की भलाई केवल संविधान के अच्छे होने पर निर्भर नहीं है बल्कि संविधान पर चलने वालों की सचाई पर भी निर्भर करती है। संविधान अगर अच्छे लोगों के हाथ में पड़े तो इससे देश का और सब का कल्याण है और अगर बुरे लोगों के हाथ मे पड़े तो देश के साथ साथ सब का ही नुकसान है। इसमें संविधान का कोई दोष नहीं होता। बुरे लोग अच्छे संविधान की अच्छाई को छोड़कर बुराई कर सकते है ; या कम से कम अच्छी बातों को हटाकर उनकी जगह पर बुरी बातें डाल सकते हैं। अगर हम देश की भलाई चाहते हैं तो हम को व्यक्तियों को सुधारना है; हर एक आदमी को सुधारना है। हम आज देश मे तरह तरह की शिकायतें सुनते है। कोई कंट्रोल की शिकायत करता है तो कोई चोरबाज़ारी और रिश्वत की शिकायत करता है। सब एक दूसरे से झगड़ते है। कांग्रेस के अन्दर हो या बाहर आपस में ऐसी दलबन्दी कायम हो गई है जिस का नतीजा आगे चलकर देश के लिये अच्छा नहीं होगा। म जब सोचता हूं तो सब की जड़ में यही कारण मालूम पड़ता है कि हमारे दिल कुछ कमज़ोर पड़ गये हैं। गांधी जी ने जो त्याग का रास्ता हम को सिखाया था उस रास्ते पर अगर हम चलेंगे और जो दूसरी बाते हमारे दिलों के अन्दर हैं उनको दूर करके और जो दूसरे प्रकार के खयाल हमारे हृदयों में आन्दोलन पैदा कर रहे है उन सब को दूर रख कर अगर हम सीधे रास्ते पर चले तो हम इन सारी मुसीबतों से बच सकते हैं ; और इनका बड़ी हिम्मत के साथ मुकाबला कर सकते है।

इसलिये मै तो यही चाहूंगा कि देश का प्रत्येक व्यक्ति यह समझे कि मेरा इस वक्त क्या कर्तव्य है। यह सोचना बिल्कुल ग़लत है कि अब सेवा का समय बीत गया है और अब भोग का समय आ गया है। मैं यह मानता हूं कि भोग का समय अच्छे लोगों के लिये कभी आता ही नहीं। जो लोग भोग चाहते है उनके लिये भोग का समय आता है। जो सच्चे भक्त होते हैं उनके लिये ऐसा समय कभी आता ही नहीं। हम को यह मानना पड़ेगा कि इस समय देश की जैसी स्थिति है उसको देखते हुए हम में से किसी को भोग की इच्छा कभी नहीं करनी चाहिये। प्रत्येक को दिलोजान से और उत्साह के साथ काम करना चाहिये। आज तक जिस देश प्रेम के साथ हम काम करते आये हैं उससे भी अधिक अब काम करने की जरूरत है। हमें चाहिये कि हम अपने में त्याग की भावना को पैदा करें और समय आने पर हर प्रकार के त्याग के लिये तैयार रहें।

अन्त में मैं आप सब भाई बहनों को हृदय से धन्यवाद देता हूं।

वन महोत्सव

वन महोत्सव सप्ताह के उद्घाटन के अवसर पर राजघाट में ता० १ जुलाई १९५० के सबेरे ७-५० पर राष्ट्रपतिजी ने कहा—

भाइयो व बहनो,

आज का यह महोत्सव बहुत महत्व रखता है। हमारे देश में आज से नहीं बहुत दिनों से एक प्रथा चली आ रही है कि हम वृक्षों को लगाना अपना धार्मिक कर्तव्य समझते हैं। इसी वजह से जब कभी देश में किसी उत्सव का समय आता है तो हम लोग हर बार वृक्ष लगाया करते हैं। इन वृक्षों से हमें इतने तरह की सहायता मिलती है जितनी कि किसी और चीज़ से नहीं मिलती। पर दुर्भाग्यवश इधर कुछ दिनों से हमने उसके महत्व को भुला दिया है। गत कई वर्षों में तो इतने वृक्ष कट गये हैं और उन्हें इतनी बेरहमी के साथ काट डाला गया है कि इनके न रहने की वजह से मुल्क को बहुत तरह का नुकसान पहुंच रहा है। एक एक चीज़ को अगर देखें तो मालूम होगा कि वृक्षों से कितना फ़ायदा होता है। देश की भलाई के लिये हमको यह जानना ज़रूरी है कि वृक्षों से हमें क्या क्या फ़ायदा मिलता है। इसका पहला लाभ तो यह है कि ज़मीन को इन वृक्षों की ही वजह से पानी मिलता है। अगर वृक्ष न हों तो जो पानी ज़मीन पर गिरता है वह व्यर्थ चला जाता है। उससे कोई फ़ायदा नहीं होता। अगर वृक्ष काफी संख्या में हों तो वे पहाड़ से बहते हुए आने वाले पानी को रोकने में मदद करते हैं। अगर पानी के रोकने का कोई साधन न हो तो पानी बाढ़ की शक्ल मे बर्बादी फैलाते हुए समुद्र की ओर बहता चला जाता है। पर अगर वृक्ष हों तो यह पानी रुक जाता है। इसका फायदा यह होता है कि वहाँ की जमीन को पानी के साथ साथ वृक्षों के कारण खाद भी मिलता है। आज हम यह भी देख रहे हैं कि हमारे देश के बहुत से हिस्सों में वर्षा बहुत कम हो रही है। कहा जाता है कि वृक्षों के काटे जाने का ही यह परिणाम है कि बहुत जगहों में जितना पानी पहले बरसता था उतना अब नहीं बरस रहा है। हमे चाहिये कि हम जंगलों को फिर से आबाद कर दें। अगर हमने ऐसा किया तो पानी की जो कमी महसूस हो रही है वह दूर हो जायेगी। खाद की भी जो कमी है वह भी जाती रहेगी। बड़ी खुशी की बात है कि थोड़े दिनों से लोगों ने इस तरफ ध्यान देना शुरू किया है। यह भी कहा जाता है कि राजपूताने में जो मरुभूमि है वह हर साल कुछ न कुछ फैलती जा रही है। अगर यह सिल-सिला जारी रहा तो इसका यह नतीजा हो सकता है कि १००, २०० वर्षों के बाद हिन्दुस्तान का बहुत बड़ा हिस्सा बालू का समुद्र हो जायेगा। इस भयानक घटना से बचने के लिए और जिस से देश को खाद, पानी मिले समय पर वर्षा हुआ करे यह आवश्यक है कि हम वृक्षों को लगायें। इस लिये यह काम जो शुरु किया है बड़े महत्व का है। हमें यह भी सोचना चाहिये कि हम कितने प्रकार के वृक्ष लगा सकते हैं। कुछ वृक्ष हमको ऐसे भी लगाने चाहिये जो केवल जलाने के काम के ही हों। हमारे देश को जलाने की लकड़ी की बहुत ज़रूरत है। मवेशी का जो गोबर होता है वह खाद का काम दे सकता है। लेकिन दुर्भाग्य से इससे जलावन का काम लिया जा रहा है। जो कुछ गोबर हमें मिलता है अगर हम उसे

खाद बना कर प्रयोग कर सकें तो ज़मीन की पैदावार बहुत बढ़ सकती है। इस लिये गोबर से जलावन का काम न लेने के लिए हमें जलावन की लकड़ी की बड़ी आवश्यकता है। खाद्यान्न की कमी का जो प्रश्न हमारे सामने है वह भी बहुत हद तक वृक्ष लगाने से हल हो सकता है।

मुझ से कहा गया है कि प्रायः २ करोड़ वृक्ष लगाये जाने वाले हैं। वृक्ष तो लगाना ठीक है परन्तु वृक्ष जो लगाये जाते हैं उनके ज़िन्दा रखने का भी इन्तज़ाम होना चाहिये नहीं तो जिस तरह से बच्चे को पैदा करके बचपन में ही मर जाने देना महान् पाप का काम होता है उसी तरह वृक्ष को लगा करके ज़िन्दा रखने का प्रयत्न न करना उनको मार डालने के बराबर होगा और यह महान् पाप भी होगा। हर एक पौदे को तैयार करने में खर्चा लगता है। अगर सब लोग वृक्ष लगायें और उनके ज़िन्दा रखने की तरफ कोई ध्यान न दे तो इससे बड़ा भारी नुकसान होगा। वृक्ष लगाना तो आसान है लेकिन उसकी देखभाल करना मुश्किल है। वृक्ष लगाने के बाद उसको ज़िन्दा रखना बहुत ज़रूरी है।

एक चीज़ और कह देना चाहता हूं। वह यह है कि हमारा उत्सव हर साल मनाया जायेगा। पर हमको यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि हर उत्सव के समय हम कुछ न कुछ पुण्य का काम करते रहें। शादी के समय, मुण्डन के समय, यज्ञोपवीत के समय हम उत्सव मनाते हैं। ऐसे उत्सव के समय यदि वृक्ष लगाया करें तो मैं समझता हूं कि उस काम के लिये हमको एक खास हफ्ता अलग न रखना पड़ेगा। खुद ब खुद साल भर यह काम चलता ही रहेगा। यह काम हमने आरम्भ किया है, इसको जारी रखना बहुत ज़रूरी है।

ट्री-प्लान्टिंग

ता० १ जुलाई १९५० को सवेरे ९ बजे राष्ट्रपति एस्टेट के बग़ीचे में ट्री-प्लान्टिंग समारोह में राष्ट्रपति जी ने कहा—

भाइयो और बहनो,

अभी आप लोगों ने देखा कि यहां पूजा की गयी और इसके बाद वृक्ष आरोपित किये गये। हमारे खाद्य तथा कृषि विभाग के मंत्री श्रीयुत मुन्शी जी ने भी यहां पर वृक्ष लगाया। वृक्ष लगाने का बहुत बड़ा महत्व और पुण्य हमारे शास्त्रों में लिखा है। इसी वजह से पहले लोग वृक्ष लगाने को एक अच्छा काम समझते आये हैं। इधर ज़मीन पर लोगों का बहुत दबाव पड़ा। ज़मीन बहुत कम होने की वजह से जहां जहां जंगल बढ़ गये थे उनको काट काट कर लोगों ने ज़मीन को आबाद करना आरम्भ कर दिया। इसी वजह से वृक्ष बहुत कम हो गये हैं। जहां जहां जंगल अब भी मौजूद है वहां भी वह कम होता जा रहा है। मगर वृक्ष और जंगल के बिना खेती का काम ठीक नहीं चल सकता। इसका कारण यह है कि आसमान में जो बादल आते हैं वे उन वृक्षों से टकराते हैं और वर्षा होती है। अगर

वर्षा न होवे तो किसी को जल नहीं मिलेगा। जल के बिना कैसे काम चल सकता है। इसलिये जंगलों का और बड़े बड़े वृक्षों का होना बहुत आवश्यक है। हिन्दुस्तान एक ऐसा देश है जहां खेती का काम अधिक होता है। अधिक लोग खेती करने वाले हैं। यह सच है कि बहुत दिनों से वृक्षों को काटा जा रहा है और उनकी जगह नये वृक्ष नहीं लगाये गये हैं। इसका कारण यह हुआ कि हमारे देश में पहले जितनी वर्षा होती थी वह अब नहीं हो रही है। इसका मूल कारण वृक्षों की कमी ही है। इसीलिये हमारी गवर्नमेन्ट की तरफ से श्री मुन्शी साहब ने यह काम आरम्भ कर दिया है। आज तो सारे देश में इस तरह का काम आरम्भ हो गया है। सभी जगहों पर लोग वृक्ष लगायेंगे और इसके लिये एक सप्ताह तक समय भी दिया गया है। एक सप्ताह के अन्दर जिससे जितना बन पड़े वृक्ष लगाये। जो सब से अधिक वृक्ष और सब से अच्छे वृक्ष लगायेगा उसको गवर्नमेन्ट की तरफ से इनाम देने की बात रखी गयी है। वृक्ष भी ऐसे होने चाहिये जिससे हमको फायदा हो। मैंने यहां पर बहुत से ऐसे वृक्ष देखे हैं जिनसे किसी को कोई फायदा नही पहुंच सकता। यहां मैंने फल के दरख्त बहुत कम देखे। कुछ नीबू के दरख्त देखे। बहुत से छोटे छोटे फलों के वृक्ष हैं जो केवल देखने के लिये ही शोभा देते हैं दूसरे काम में नहीं लाये जाते हैं। नीबू के सिवाय कोई दूसरे पेड़ मेरे देखने में नहीं आये। बहुत से दरख्त ऐसे हैं जिन के फल कौए तक नहीं खाते। ऐसे भी फल किस काम के जो किसी के भी काम न आये। इनके बजाय अच्छे फलों के वृक्ष लगाये जायें। मेरा सुझाव यह है कि इस महीने में जब बरसात शुरु होगी १००-५० आम के और दूसरे प्रकार के वृक्ष लग जाने चाहियें। केवल वृक्ष लगाने से ही काम नहीं चलेगा। उनकी देख भाल भी करनी जरूरी है। जब ये वृक्ष बच्चे रहते हैं तब आदमी के बच्चे की तरह उनको भी सम्भालना जरूरी होता है। अगर नहीं सम्भाला जाता है तो बर्बाद हो जाते हैं। इसलिये जरूरी है कि इन्हें ज्यादा धूप, ज्यादा वर्षा, ज्यादा हवा से बचाना चाहिये। ज्यादा हवा से वृक्ष सूख जाने का अधिक डर रहता है। ज्यादा ठंड लगने से भी वृक्ष मर जाते हैं उन्हें उससे भी बचाना चाहिये। अगर आदमी भी जरूरत से ज्यादा खा ले तो अपच हो जाता है। अगर वृक्षों को भी ज्यादा पानी और खाद दिया जाये तो उससे भी उन्हें नुकसान होता है। यह काम हम सब लोगों का है। सब लोग मिल कर इसको सफल बनाने का प्रयत्न करेंगे ऐसी मुझे उम्मीद है। आप के काम मे ईश्वर आपकी मदद करे।

शान्तिसंस्था

*शांतिसंस्था के पहले अधिवेशन के अवसर पर ता० १४ अगस्त १९५० को शाम के ६-१५ बजे, इम्पीरियल होटल, नई दिल्ली में राष्ट्रपतिजी ने कहा—

डाक्टर किचलू, बाबा खड़गसिंह, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात का हर्ष है कि इतने मित्रों से मिलने का मुझे यहां अवसर मिला। आप ने कृपा करके जो मानपत्र मुझे दिया है उस में मुझे आन्दोलन के उन गौरवपूर्ण दिनों की

---

* अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

याद दिलाई है जब हमारे अनेक देशवासियों ने अपने जीवन की इति दी थी और इन से भी अधिक लोगों ने हर प्रकार की यातनाओं को सहा था और हर प्रकार के त्याग किये थे। यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि आज उस आन्दोलन की समाप्ति पर इस बड़े सम्मेलन में आप लोगों में से मैं इतनों को देख रहा हूं। साथ ही अशोक स्तम्भ को देकर मुझे आपने उस महान् सम्राट की याद दिलाई है जिसने आज से दो सहस्त्र वर्ष पूर्व अपने युग में उन सिद्धान्तों को बताया और प्रचार किया जिन्हें हम ने अपनी स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये अपने तरीके से प्रयुक्त किया था। हमारा आन्दोलन बहुत प्रकार से अपूर्व था। इसमें बरती गई कार्य रीति के लिये तथा इस के द्वारा प्राप्त हुई विजयों के लिये हमारा आन्दोलन अपूर्व था। दया की भांति इस ने उन लोगों का कल्याण किया जिन्हों ने हमें हमारी स्वतन्त्रता दी और उन लोगों का भी कल्याण किया जिन को कि उन लोगों से स्वतन्त्रता मिली। मुझे अब आशा है कि देश उन सुविधाओं से हर तरह का लाभ उठायेगा जो उस को प्राप्त हुई हैं और समय बीतने पर हम अपने को न केवल अपनी सेवा के लिये ही किन्तु सारे विश्व की सेवा के योग्य बनाने में समर्थ हो जायेंगे। जो अशोक स्तम्भ हमारे राष्ट्रीय चिन्ह और राष्ट्रीय झन्डे का भाग है उस का भी यही महत्व है। अशोक ने अपने जीवन के पूर्व भाग में तलवार द्वारा संसार को जीतने का प्रयास किया था और वह अपने प्रयास में सफल भी हुआ था किन्तु कलिंग विजय के पश्चात् उस ने अपनी तलवार को अलग रख दिया और अपने जीवन को शान्ति के लिये उत्सर्ग कर दिया; ऐसी शान्ति के लिये जिस की याद संसार में हमेशा बनी रही है। उस ने अपने महान् संदेशों को प्रस्तर स्तम्भों पर लिखवा दिया जिन्हें कि हम देश के विभिन्न भागों में अभी भी देख सकते हैं और वह संदेश आज की दुनिया में भी उतने ही सत्य और महत्वपूर्ण है जितने कि उस समय थे। संसार में आज भयानक ज्वाला के चिन्ह क्षितिज पर दीख रहे हैं, हमारी सब की मनोकामना है और प्रार्थना है कि यह भयानक संकट संसार पर न आवे। हमें यह भी प्रार्थना करनी चाहिये कि महान् अशोक के जीवन को जिस श्रद्धा ने अनुप्राणित किया था और मैं विनम्रता से यह भी कह सकता हूं कि जिस ने हमें अपनी स्वतन्त्रता आन्दोलन में अनुप्राणित किया था वह अहिंसा का सन्देश उन लोगों के हृदयों में भी बैठ जाये और उन लोगों की रक्षा करे जिन के हाथ में आज संसार की बागडोर है। मैं यह भी आशा करता हूं कि वह समय भी आयेगा जब कि हम दृढ़ता से और ओज भरे शब्दों में यह घोषणा कर देंगे कि हम न केवल अपने निजी विभेदों को अपितु अन्तर्राष्ट्रीय संघर्षों को भी जिस के कारण आज युद्ध होता है समझोतों के द्वारा, विचार विनिमय के द्वारा और बातचीत के द्वारा निपटायेंगे। जब तक दुनियां इस सिद्धांत पर आस्था नहीं लाती और जब तक इस को अपने कार्यक्रम की बुनियाद नहीं बनाती तब तक संसार ने अब तक जो प्रगति की है और उन्नतिशील देशों ने विनाश के हथियारों के बनाने में जो

कामयाबी हासिल की है उस के कारण यह भय बराबर बना रहेगा कि न मालूम दुनियां की क्या हालत हो और उस का भविष्य क्या हो। अतः इस भयानक दुर्घटना से हमारे बचने की केवल एक ही आशा है। मैं उन लोगों में से हूं जिन का विश्वास है कि गान्धीजी ने अपने जीवन में जो मार्ग दिखाया, जो शिक्षा दी उसी के द्वारा संसार उस भयानक दुर्घटना से बच सकता है जो आज उस के सिर पर मंडरा रही है। आप ने अपने मानपत्र में उन कठिनाइयों का भी ज़िक्र किया है जिनका मुकाबला हमारी सरकार को करना पड़ा है। स्वतन्त्रता अमूल्य वस्तु है। हम इस का मान करते हैं और यह भी जानते है कि स्वतन्त्रता अपने साथ अपनी विशेष समस्याएं भी लायी है जिनका हल हमें करना है। उन में से एक वह है जिसकी ओर आपने विशेष रूप से संकेत किया है, अर्थात् उन असंख्य लोगों के पुनर्वास की समस्या जिन्हें परिस्थिति के कारण अपने घरबारों को छोड़ना पड़ा और ऐसे सुदूर स्थानों को जाना पड़ा जिन के बारे में उन्हें भरोसा था कि वहां उन की रक्षा हो सकेगी। लाखों ही नर नारी भारत में आ गये है और हमारी सरकार इस बात का प्रयास करती रही है कि उन को फिर से बसा दिया जाये और उन की सहायता की जाये। किन्तु समस्या इतनी महान् और इतनी टेढ़ी है कि यह आश्चर्य की बात नहीं कि सरकार उन लोगों की अभ्याशित आकाक्षांओं को पूरा नहीं कर सकी है और न ही अपने इरादों को पूरी तरह अमल में ला सकी है। यह समस्या और भी उलझ गयी है; इस का हल और भी मुश्किल हो गया है क्योंकि इस का विस्तार ऐसे कारण से और भी बढ़ गया है जिसे कि हम सब लोग ज़ानते हैं। पिछले कुछ महीनों से अत्यधिक संख्या में लोग अपने घरबार छोड़ कर भागे चले आ रहे हैं और यह बाढ़ अभी तक रुकी नहीं है। हमें केवल पश्चिम में ही यह समस्या हल नहीं करनी है इसे पूर्व में भी हल करना है और इस मे कोई शंका नहीं कि समस्या अत्यन्त ही कठिन है। अतः हम सब का यह धर्म हैं कि हम अपनी सारी शक्ति और साधन इसके हल करने में लगा दें। इस बात का मुझे विश्वास और संतोष है कि सरकार शरणार्थियों को फिर से बसाने में अपनी सारी शक्ति लगाने में जरा भी नहीं हिचकिचायेगी किन्तु साथ ही यह समस्या ऐसी भी है कि जिस को जनता को सुलझाना है और उन लोगों को भी इस के सुलझाने में सरकार की पूरी सहायता और उस को पूरा सहयोग देना है जो स्वयं शरणार्थी हैं। हम यह आशा कर सकते हैं कि सब लोगों के सहयोग से वह समय आयेगा जब हम इस समस्या के सुलझाने में ऐसा काम कर चुकेंगे जिसके लिये हम अभिमान कर सकें। मैं यह खूब जानता हूं कि शरणार्थी इस देश के लिये एक निधि हैं और सब लोग समझते हैं कि हम को उन्हें निधि की तरह से ही मानना है नकि एक भार के समान। चाहे यह ठीक है कि हम उनके लिये वह सब कुछ नहीं कर सके जो हम को करना था किन्तु मैं आप लोगों को यह आश्वासन दिलाता हूं कि सरकार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो यह सोचता न हो कि

इस समस्या को शीघ्र हल करना है और उसे अपने सब साधनों को इसे सुलझाने और हल करने में लगाना है। मैं आप लोगों से एक बार फिर अपने उस स्वागत के लिये धन्यवाद देता हूं जो आप ने मुझे यह मानपत्र देकर और यह अत्यन्त सुन्दर अशोक स्तम्भ देकर किया है।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि आपकी संस्था को अपने ध्येय प्राप्ति में पूरी पूरी सफलता प्राप्त हो।

स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रपतिजी का ब्राडकास्ट भाषण

१५ अगस्त को राष्ट्रपति ने अ. भा. रेडियो के दिल्ली केन्द्र से निम्न भाषण ब्राडकास्ट किया—

हमारी स्वतंत्रता का यह तीसरा वार्षिकोत्सव हमारे लिये केवल खुशी का ही दिन नहीं बरन् एक चुनौती भी है। हम आज उस प्रगति के लिये खुशी मना सकते हैं जो पहले तीन वर्षों में हम ने राजनैतिक और प्रशासनीय दृष्टि से देश के एकीकरण में, उस की सेना के राष्ट्रीयकरण में, उसके प्रशासन के पुनर्संगठन में और योजना बनाने वाली संस्था के कायम करने में की है। किन्तु जहां हम उस शक्तिशाली यंत्र अथवा राजनैतिक शक्तिपुंज के बनाने में सफल हुए हैं, जिसके द्वारा हम अपनी अर्थव्यवस्था और संस्कृति के कायाकल्प करने की आशा करते हैं, वहाँ हम यह नहीं कह सकते कि जो आर्थिक कमियां और कठिनाइयां पिछले तीन वर्षों में हमें सताती रही हैं, उन सब पर विजय पाने में हमने संतोषप्रद प्रगति की है। इस दिशा मे हमारी प्रगति बहुत कम और धीमी रही है। यह ठीक है कि यातायात सम्बन्धी कठिनाइयों को हम दूर कर चुके हैं और सामान अब खासी आसानी से एक जगह से दूसरी जगह भेजे जा सकते हैं। शरणार्थियों के बसाने के सम्बन्ध में भी हमने कुछ कामयाबी हासिल की है किन्तु अब भी बहुत कुछ करना बाकी है और बंगाल की हाल की घटनाओं ने तो इस समस्या के विस्तार को और भी बढ़ा दिया है और उसे और भी विषम बना दिया है। शायद हम अधिक जमीन को खेती में लगा पाये हैं किन्तु इस दिशा में भी हमारी प्रगति ऐसी नहीं हुई है कि हम चिन्ता से मुक्त हो जायें। खाद्यसमस्या अभी भी खासा सिरदर्द बनी हुई है। पिछले हफ्तों में तो देश के कुछ भागों में इसने भयंकर रूप धारण कर लिया परन्तु तुरन्त सहायता पहुंचाने के लिये कार्रवाई कर दी गई है। हमने ऐसी बहुमुखी बड़ी बड़ी योजनाओं को हाथ में लिया है जिनके पूरा होने पर हमें न केवल पर्याप्त मात्रा में विद्युत शक्ति ही प्राप्त होगी बरन् हम बाढ़ों के अभिशाप से भी मुक्त हो जायेंगे। परन्तु इस क्षेत्र में भी हमारी गति काफ़ी धीमी और कम है। पर इस बारे में हमें ध्यान रखना चाहिये कि इस क्षेत्र में प्रगति धीमी तो होगी ही क्यों कि हमारे सामने जो परिस्थिति है उस के विकास में महज हमारा ही नहीं बल्कि ऐसी प्राकृतिक और अन्तर्राष्ट्रीय बातों और शक्तियों का भी पर्याप्त भाग रहा है जिन पर हमारा न कोई नियंत्रण है और न हो सकता है। हमारी वर्तमान कठिनाइयां महान् और भारी हैं किन्तु उन का यह अर्थ नहीं कि हम निराश और खिन्न हो जायें। इसके विपरीत

हमें तो यह जान लेना चाहिये कि सचमुच में वे हमारे नैतिक, मानसिक, शारीरिक बल के लिये एक चुनौती है। हमें सदा के लिये यही समझ लेना चाहिये कि हम इस चुनौती का ठीक जवाब तभी दे सकेंगे जब हम दृढ़ता से सचाई के रास्ते पर ही डटे रहेंगे। बात यह है कि मनुष्य अपनी मुसीबत से तभी छुटकारा पा सकता है जब कि वह अपनी कठोर परीक्षा और महान् संकट के समय भी नैतिक धर्म पर दृढ़ बना रहे और यह एक ऐसी सचाई है जिसकी पुष्टि धार्मिक ग्रन्थों और लौकिक इतिहास की सहस्रों गाथाओं से होती है। राष्ट्रपिता ने हमें जो शिक्षा दी थी उसका भी निचोड़ यही सचाई है। सब युगों से आज यह कहीं अधिक आवश्यक हो गया है कि हम उस नैतिक धर्म को दृढ़तापूर्वक अपना लें जो उन्होंने हमारे सामने रक्खा था अर्थात् हम अहं से जगत को, भोग से सेवा को, हिंसा से प्रेम को, विनाश से निर्माण को कहीं अधिक श्रेयस्कर मानें। आज के ऐतिहासिक युग में इस नैतिक धर्म में श्रद्धा रखने का यही अर्थ है कि हम में से प्रत्येक अधिकारों की आहुति दे कर भी अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिये तत्पर और प्रस्तुत रहे। जब तक हमारे सामने महज़ अंग्रेजों से शक्ति छीनने का ही सवाल था तब तक हमें अपने आन्दोलन और प्रोग्राम को अपने राष्ट्रीय और जातीय हकूक के नाम से चलाने के अलावा और कोई रास्ता न था। किन्तु अब सवाल अधिकार प्राप्त करने का नहीं है। अब तो सवाल यह है कि जो शक्ति हमारे पास मौजूद है उसे हम कैसे प्रयोग करें कि वह सारे देश के हितों का सर्वोत्तम साधन होवे। स्वाभाविक रुप से पाने की अपेक्षा देना और वैयक्तिक स्वत्वों की अपेक्षा समाज के प्रति कर्त्तव्यों का महत्व अधिक हो गया है। शताब्दियों से इकट्ठी होने वाली विषम समस्याओं के कारण तो इस प्रकार का परिवर्तन और भी आवश्यक हो गया है। आज हमारे पास इतिहास जनित भार के सिवा और कुछ भी आपस में बाँटने के लिये नहीं है। हम सब इस भार को तभी सफलता से उठा सकेंगे जब हम में से प्रत्येक चाहे फिर वह धनवान हो या निर्धन, शिक्षित हो या अशिक्षित, नगरवासी हो या ग्रामीण, बूढ़ा हो या जवान, पुरुष हो या स्त्री, इसमें हिस्सा बंटाने के लिये तैयार और राज़ी हो। इसका यह अर्थ है कि केवल निजी विशेषाधिकार और लाभ, सुविधा और सुख, दावे और स्वत्व पर डटे रहना किसी भी व्यक्ति के लिये आज उचित नहीं है। इसके विपरीत, प्रत्येक नागरिक को चाहिये कि वह भूतकाल की चुनौती से मुकाबला करने में और भविष्य के चित्र को पूरा करने में अपनी सारी शक्ति और साधन लगा दे तथा अपनी इस जन्मभूमि के असंख्य ग्रामों और नगरों की प्रत्येक कुटिया में जीवन और ज्योति भर देने में रातदिन लगा रहे। चारों ओर से घिरी रहने वाली कठिनाइयों पर हम तभी विजय पा सकेंगे और तभी अपनी स्वतंत्रता को सार्थक और सारवान बना सकेंगे जब हमारा वैयक्तिक और सार्वजनिक जीवन कर्तव्य लगन से ओतप्रोत हो गया होगा। ज्यों ही हम इस सर्वोपम सचाई को कि भोग से पहले सेवा, और अहं से पहले जगत का स्थान है, ग्रहण करलेंगे वैसे ही वे समस्यायें जो वातावरण को विषाक्त कर रहीं हैं और हमें पंगु बना रही हैं दूर होने लगेंगी। साम्प्रदायिकता, प्रादेशिकता, आपसी संघर्ष, स्वार्थ के लिये दलबन्दी, रिश्वतखोरी और चोरबाज़ारी, सब ही सामूहिक कार्यशीलता के बुनियादी और महत्वपूर्ण सिद्धान्त में अविश्वास के ही साफ दिखने वाले बुरे लक्षण हैं। हमें इस बात की सबसे ज्यादा

जरूरत है कि हम समस्या को ठीक ठीक समझें, उसकी बारीकी से परीक्षा करें और अर्न्तमुखी दृष्टि से अपनी अपनी कमजोरियों को देखें और सुधारें। हमें व्यक्ति और राष्ट्र दोनों ही हैसियत से महान् आदर्शों का केवल पुनर्स्थापन और पुनर्ग्रहण ही नहीं करना है वरन् जीवन में नीति और धर्म पर अवलम्बित रहन सहन और चालचलन का नियम भी बना लेना है, जिस के अनुसार हम दिन प्रति दिन चलें। हमारे लिये अपने को बचाने का केवल एक ही रास्ता है—वह यह है कि हम सब और हम में से प्रत्येक इस नैतिक धर्म के लिये अपना जीवन उत्सर्ग कर दे। शक्ति लाभ ने जिन लालसाओं को हम में जगा दिया है उन का दमन करना आवश्यक है। दूसरों को हानि पहुंचा कर और स्वयं पतित हो कर धनवान बनने के लोभ को छोड़ देना परमावश्यक है। परिश्रम और त्याग के युग का अन्त हो गया है और फल के स्वाद लेने का युग आ गया है इस मिथ्या और मोहक विचार को भी हमें मिटा देना चाहिये।

भयावह अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति की दृष्टि से तो इस जीवनोत्सर्ग का महत्त्व और भी अधिक है। दुनिया आज गहरी खाई के किनारे पर खड़ी है और यदि वह लेशमात्र भी लड़खड़ाई तो विनाश और क्रूर युद्ध की कराल खाई में एक ब एक समा जायेगी। अतः मुझे आशा है कि हमारी साधारण जनता, हमारे किसान और मज़दूर, हमारे क्लर्क और प्रशासक, हमारे दार्शनिक और लेखक, सब समय की पुकार को सुनेंगे और स्वार्थ भावना का परित्याग कर नये और बेहतर भारत के निर्माण के महान् कार्य में जुट जायेंगे। धनिक, व्यापारी, मजदूर, सरकारी नौकर और पेशेवर, सब ही को इस महान् यज्ञ में आहुति डालनी है और इसका भार संभालना है। मुझे यह आशा है कि वे अपने कर्तव्य भार को पूरी तरह से उठायेंगे। हम महान् भूतकाल के वारिस हैं और उस से कहीं बेहतर और सुन्दर भावी के निर्माता हैं। हमें अपने भाग्य की इस चुनौती को स्वीकार करना है और इस पर विजय पाना है। परमात्मा की कृपा से और देश भाइयों के प्रत्येक वर्ग के सहयोग से अपने पथ में बिखरी हुई कठिनाइयों पर हम विजय पायेंगे और उस पथ पर बढ़े चलेंगे जो शान्ति, सम्पन्नता और समुन्नति के मन्दिर की ओर जाता है। जय भारत !

बौद्ध स्मारक-चिह्न

महाबोधिहाल, रीडिंग रोड, नई दिल्ली में बौद्ध स्मारक-चिन्हों के दर्शन के अवसर पर राष्ट्रपतिजी ने कहा—

यह बड़े सौभाग्य की बात है कि बुद्धदेव ने इस देश में जन्म लेकर न केवल इस देश का बल्कि सारे संसार का उद्धार किया। उन्होंने अवतार ले कर न केवल इस देश के लोगों में बल्कि संसार के एक बहुत बड़े हिस्से में इस धर्म का प्रचार किया। उन्होंने जो धर्मचक्र चलाया उसका प्रभाव आज तक संसार में कायम है। संसार में अब तक बहुत से साम्राज्य हुए; बड़े बड़े बादशाह और राजा हुए जिन्होंने अपने अपने समय में बड़े बड़े साम्राज्य

क़ायम किये, लेकिन वे सब साम्राज्य स्थायी नहीं रहे, बहुत दिनों तक नहीं चले, क्यों कि उन साम्राज्यों का आधार धर्म नहीं था। वे हिंसा पर क़ायम हुए थे। मगर बुद्धदेव का जो साम्राज्य संसार में स्थापित हुआ वह तो हमेशा क़ायम रहेगा। उसका प्रभाव कभी भी नहीं जायेगा। चूंकि बुद्धदेव का जन्म इस देश में हुआ इसलिये आज तक भी, २५०० वर्ष के बाद भी, इनका प्रभाव इस देश के रहने वालों पर ज्यों का त्यों क़ायम है। और जब तक संसार के लोग धर्म के उसूल समझते रहेंगे उस समय तक इनका साम्राज्य दुनिया पर क़ायम रहेगा। इस समय देश की जो सरकार बनी है वह बुद्धदेव के बताये हुए मार्ग पर चलने वाली है।

यह सौभाग्य की बात है कि हमारी जो निधि यहां से विदेश चली गयी थी वह आज फिर वापिस आ गयी है और फिर उन लोगों को पूजा करने का और श्रद्धा दिखाने का मौक़ा मिला है जो लोग विश्वास रखते हैं और जो लोग इस धर्म के अनुयायी हैं। इसलिये जिन महानुभावों ने मुझे यह अवसर दिया है वे सब मेरे धन्यवाद के पात्र हैं और उन सब को मैं धन्यवाद देता हूं। इस देश में बुद्धदेव का जन्म होने के बावजूद इस देश में उनके धर्म का ज्यादा प्रचार नहीं हुआ। विशेष करके जहां इनका जन्म हुआ था वहां आज इनके अनुयायी ज़्यादा देखने को नहीं मिलते। मगर इस में कोई संदेह नहीं कि जो शिक्षा उन्होंने हमें दी है और जो बातें उन्होंने हमें बतलायी थीं उनको बहुत हद तक हमारे देश के लोगों ने ग्रहण कर लिया था। इस देश में आहिस्ता आहिस्ता करके उनको इस तरह ग्रहण कर लिया गया कि हम लोग जो आज यहां एकत्रित हैं वे सब ही उनकी शिक्षा से अनजाने ही प्रभावित हैं। मैं यह चाहता हूं कि जहां जहां भी इस धर्म के लोग हों वहां वहां उनके साथ हमारा घनिष्ठ सम्बन्ध बना रहे। उनके साथ मिलजुल कर हम मानव की सेवा करें।

भारतीय कृषि गवेषणा प्रतिष्ठान

*भारतीय कृषि गवेषणा प्रतिष्ठान के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों से तारीख ३०-८-५० को राष्ट्रपति जी ने कहा—

डाक्टर मुखर्जी, श्री पंजाबी और मित्रो,

यहां फिर एक बार आने से और इस प्रतिष्ठान में किये जाने वाले कार्य को देख कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई है। जब मेरा कृषि मन्त्रालय से सम्बन्ध था तब मैं कई बार इस प्रतिष्ठान में आया था। लेकिन जब से मैं विशाल भवन में गया हूं तब से यहां आने का यह मेरा पहला अवसर है। आप के कार्य में मुझे सच्ची दिलचस्पी है। उसका कारण यह है कि मैं यह समझता हूं और आपको इस बात को समझना चाहिये कि भारत का मुख्य उद्योग कृषि है। भारत में ८० प्रतिशत से भी अधिक लोग इस पर निर्भर करते हैं। और उद्योग भी अपने कच्चे माल के लिये कृषि पर ही निर्भर करते हैं। अतः मेरा विचार है कि जो काम आप यहां कर रहे है वह देश की सब से अच्छी सेवा है। आजकल हमें इस बात का प्रयास करना है कि हमारे कृषकों की ऐसी सहायता की जाये कि वे हमारी सारी जन संख्या के लिये अन्न उपजाने के लिये समर्थ हो जायें। वास्तव में यह अत्यन्त खेद और लज्जा

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद।

की बात है कि जो भारत अब तक कृषि-प्रधान देश रहा है वह अपने लिये पर्याप्त अन्न नहीं पैदा करता। इस कारण आपके कार्य का महत्व पैदा होता है। अब यह आप का काम है कि हमारी आवश्यकतानुसार अन्न पैदा करने में आप देश की सहायता करें। हमारी जनसंख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। हम भूमि का क्षेत्र नहीं बढ़ा सकते। ठीक है कि अभी तक कुछ ऐसी भूमि है जिसे खेती में नहीं लगाया गया है और जिसे खेती में लगाया जा सकता है। किन्तु वह इतनी नहीं है कि हमारी बढ़ने वाली जन संख्या के लिये पर्याप्त हो। अतः यह प्रश्न है कि आवश्यक अन्न को कैसे पैदा किया जाये। इस बारे में कुछ तो करना ही है।

हमारे सामने यह काम है कि हम भूमि की पैदावार की मात्रा बढ़ाने की रीति का पता चलायें। विज्ञान ने जीवन के अनेकों क्षेत्रों में चमत्कारिक काम किये है। मेरा विश्वास है कि भारत में भी यह चमत्कार दिखा सकता है। हमारे कृषक भी खाद देकर या दूसरे तरीक़ों से पैदावार बढ़ाने की कला जानते हैं। किन्तु उनके तरीक़े बहुत ही दकियानुसी हैं। मुझे आशा है कि वैज्ञानिक और शिल्पिक संस्थाओं की सहायता से और विशेषतया आप की संस्था, जो कृषि में सुधार के आधारभूत प्रश्न पर ही अपना सारा प्रयास केन्द्रित किये हुए है, उसके प्रयास से हम भविष्य में अधिक पैदावार करने में सफल हो जायेंगे। मुझे विश्वास है कि आवश्यक अन्न किस प्रकार पैदा किया जा सकता है यह तरीक़ा सुझाने के लिये आप समर्थ सिद्ध होंगे। ऐसी कोई बात नही है कि भूमि के उतने ही क्षेत्र में अधिक अन्न क्यों न पैदा किया जा सके। अन्य देशों की तुलना में हमारे यहां फी एकड़ भूमि की पैदावार लगभग एक तिहाई या एक चौथाई है। किन्तु साथ ही आप को यह भी पता चलाना है कि इस बात के बावजूद कि हमारे देश में शताब्दियों तक खेती होती रही है हमारी भूमि का उर्वरापन अभी बहुत कुछ बना हुआ है जब कि अमेरिका और आस्ट्रेलिया जहां खेती वैज्ञानिक ढंग से की जाती है और जहां पिछले सौ डेढ सौ वर्षों पहले ही भूमि को खेती में लगाया गया था वहां भूमि के उर्वरापन में कमी आ े के चिन्ह दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आपको यह पता चलाना है कि क्या कारण है कि अपने वैज्ञानिकों के बावजूद ये देश अपनी भूमि के उर्वरापन को बनाये रखने में क्यों असफल हो रहे हैं जब कि हमारे लोग जिन की खेती का तरीक़ा अवैज्ञानिक है पिछली शताब्दियों में अपनी भूमि के उर्वरापन को बनाये रखने में समर्थ सिद्ध हुए हैं। मेरा अपना विचार तो यह है कि साधारण कृषि में खाद के ज़रिये या फसल के हेर फेर से हम भूमि को वे चीज़ें लौटा भी देते हैं जो हम उस में से निकालते हैं।

आधुनिक सभ्यता के युग में हम आमतौर से एक क्षण म इतनी चीज़ें प्रयोग कर डालते हैं जितनी कि करोड़ों वर्षों में बन पायी हैं। उदाहरणार्थ कोयले या पैट्रोल को लीजिये। हम उन्हें करोड़ों टन की मात्रा में काम में ला रहे हैं। इस को हम पुनः प्रकृति को वापस नहीं लौटा रहे है। बहुत काफी छोटे पैमाने पर कुछ ऐसी ही बात खेती के लिये भी ठीक है। गहरी जुताई, रसायनों और उर्वरकों के प्रयोग से वे लोग पैदावार की मात्रा बढ़ाने में समर्थ हो गये हैं किन्तु वे भूमि के उर्वरापन को

बनाये रखने में समर्थ नहीं हुए हैं जब कि शताब्दियों तक खेती करने के बाद भी हम अपने उर्वरापन को बनाये रख सके हैं। यह ऐसी समस्या है जिसे हल करना आवश्यक है। मैं आप से कहूंगा कि आप इसे परम्परागत दृष्टिकोण से हल करें अर्थात् आप इस बात का पता चलायें कि प्राचीन कृषि प्रणाली में कौन सी ऐसी बात है जो इतनी हद तक उर्वरता को बनाये रखने में सफल हुई है।

अभी अभी मैं आप के योगालयों को देख रहा था। वहां मुझे बताया गया कि फ़सल में हेर फेर और विभिन्न प्रकारों की फ़सलों के अभिमिश्रण से किस प्रकार उर्वरता को बनाये रखा जाता है। किन्तु गांवों की कृषिप्रणाली की भी साधारण सी बात है कि फ़सले हेर फेर करके बोई जाती है। साथ ही वे एक समय में एक ही फसल नहीं बोते। वे एक से अधिक फ़सल एक साथ बोते हैं। यदि कहीं मकई बोई जाती है तो अरहर, तिल, उड़द और कही कहीं तो पटसन भी एक साथ बोये जाते है। पहले मकई की फसल होती है उस के बाद उड़द और तिल, फिर अरहर और उस के बाद रुई की फसल होती है। मैं रुई की फसल की बात तो भूल ही गया था। जून के दूसरे पखवाड़े में और जुलाई के पहले हफ्ते में रुई बोई जाती है। उड़द सितम्बर में बोई जाती है अरहर मार्च में और रुई फिर आगामी जून मास में। किन्तु ये एक ही जगह में बोई जाती है और इस से यह फल होता है कि भूमि में वह द्रव्य लौट आता है जो कोई एक फ़सल उस से निकालती है। गेहूं अक्तूबर में बोया जाता है। गेहूं और जौ एक ही भूमि में बोये जा सकते हैं। वे एक साथ ही बोये जा सकते है। इसी प्रकार गेहूं के साथ चना बोया जा सकता है क्योंकि दोनों की फ़सल एक समय ही होती है। इस बात का पता चलाना ज़रूरी है कि फ़सलों के अभिमिश्रण और हेर फेर से भूमि और पैदावार पर क्या असर पड़ता है। यदि विभिन्न प्रकार की फ़सलों को मिला कर बोया जाता है और एक की पैदावार ५ मन होती है तो उसे कम नहीं समझना चाहिये। यदि मकई ५ मन, उड़द ३ मन, तिल २ मन और अरहर ५ मन फी एकड़ हो तो सब को जोड़ कर गिनना चाहिये। इस प्रकार प्रकट होगा कि फ़सल अच्छी हुई। किन्तु मैं यह चाहता हूं कि आप इस बात पर अपना ध्यान केन्द्रित करें और यह गांव वालों से पता चलायें और हर छोटी बात का हिसाब लगा कर उसकी अपनी वैज्ञानिक जानकारी और अनुभव से परीक्षा करें और पैदावार बढ़ाने में सहायक हों। मुझे आशा है कि आप काम का वह ढ़ंग अपनायेंगे जिसे गांव का आदमी भी मंज़ूर करेगा। यदि आप सर्वथा नये ढंग को अपनायेंगे तो गांव वालों को उसको अपनाने में पर्याप्त समय लगेगा। इस लिये यह आवश्यक है कि आप इस समस्या पर खेती के वर्तमान ढंग को ध्यान में रख कर विचार करें। इस का यह अर्थ नहीं है कि आप को नये ढंगों का बहिष्कार कर देना है। इस के विपरीत मैं तो यह समझता हूं कि जब अन्न की कमी हो तो अन्न की पैदावार बढ़ाने के किसी भी तरीक़े को अपनाया जा सकता है। यह आप का, जो वैज्ञानिक हैं, काम है कि ये बतायें कि यह बात कैसे की जा सकती है। मैंने आप के सामने यह सुझाव तो केवल एक ऐसे व्यक्ति

की हसियत से रखे हैं जो यद्यपि विशेषज्ञ तो नहीं हैं किन्तु जिसे खेती का थोड़ा बहुत तजुर्बा है; किन्तु ऐसे व्यक्ति की तरह नहीं रखा है जो वैज्ञानिक जानकारी के आधार पर इस बारे में कोई निर्णय दे सकता है। अन्न के लिये हम दूसरे देशों पर निर्भर नहीं कर सकते। आप लोगों का यह काम है कि आप अपने ज्ञान ो ऐसी शक्ति बनादे जो साधारण जनों द्वारा आसानी से समझी जा सकती है और जिसे वे केवल समझते ही नही हैं वरन् काम में भी लाते है।

यहा आकर मैंने जो सुखद समय बिताया है उस के लिये मै आप सब को धन्यवाद देता हूं। मुझे आशा है कि आप तेज़ी से तरक्की करेंगे और संसार को दिखा सकेंगे कि आप भी बड़े काम कर सकते हैं।

दिल्ली नाट्य संघ

*१-९-५० को दिल्ली नाट्य संघ का उद्घाटन करते समय इरविन स्टेडियम मे राष्ट्रपति जी ने कहा—

कमलादेवी जी, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की खुशी है कि आज आपने मुझे यह मौका दिया है कि मैं आप की इस संस्था का उद्घाटन करूं। हमारे देश मे यह कला बहुत पुरानी है और हमारा साहित्य उस ज़माने की कृतियों से परिपूर्ण है जो हमारे देश के पुराने साहित्यकों ने की है और आज भी संसार के लोग उनको पढ़कर खुश होते हैं और आश्चर्यान्वित होते है। ऐसी हालत में अगर हम फिर से इस कला को पुनर्जीवित करने का प्रयत्न करें और उसको प्रोत्साहन देना चाहें तो यह हमारे लिये बड़ी खुशी की बात होगी। इसलिये जब इस अवसर पर मुझ से यहां आकर इस का उद्घाटन करने को कहा गया तो मैंने बड़ी खुशी से इस बात को मंजूर कर लिया। मै चाहता हूं कि आप का जो प्रयत्न आज यहाँ शुरू हो रहा है वह पूरी तरह से सफल होवे, सिर्फ दिल्ली में ही नही बल्कि सारे देश में इसका पूरी तरह से प्रचार हो और आप के द्वारा हमारी यह कला नवजीवन प्राप्त करे।

यूनाइटेड चेम्बर आफ ट्रेडर्स असोसियेशन

यूनाइटेड चेम्बर आफ ट्रेडर्स ऐसोसियेशन के मानपत्र के जवाब में राष्ट्रपति जी ने तारीख ९-९-५० को कहा—

बाबा बचित्तर सिंह, यूनाइटेड चेम्बर के सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

आपने जो मानपत्र दिया और मेरा मान बढ़ाया उसके लिये मै आपको धन्यवाद देना चाहता हूं। मगर उससे भी ज्यादा आप को धन्यवाद मै इसलिये देना चाहता हूं कि आपने मुझे यह मौका दिया है कि ऐसे कुछ सवालों पर जो आज हिन्दुस्तान के हर एक आदमी के दिल पर कुछ न कुछ असर पैदा कर रहे हैं मैं आपसे कुछ कहूं और मैं उम्मीद करता हूं कि आप मेहरबानी करके जो कुछ मैं अर्ज करू उस पर ध्यान देंगे।

* अंग्रेजी से हिन्दी मे अनुवाद

इसमें शक नहीं कि आज तीन वर्ष से ज्यादा हुए जब हमारे हाथों में अपने मुल्क के कारबार चलाने के अख्तियार आये थे। उस वक्त से आज तक हमारे सामने कई क़िस्म के सवाल, बड़े बड़े मसले और बहुत तरह की कठिनाइयां आई और जहां तक हो सका उनका मुक़ाबला किया गया। मगर आज भी हमारे सामने बड़ी बड़ी कठिनाइयां मौजूद हैं और इस तरह की चीज़ें आज भी हमारे सामने हैं जिनकी वजह से हिन्दुस्तान का हर बाशिन्दा किसी न किसी तरह की तकलीफ़ महसूस कर रहा है और किसी न किसी तरह का दुःख उसे हो रहा है। अपने लिये अपने बाल बच्चों के लिये और अपने इर्द-गिर्द रहने वालो के लिये उसे किसी न किसी चीज़ की ज़रूरत रहती है जो पूरी नही हो पाती है। इस तरह के हज़ारों सवाल हमारे सामने आये दिन आते रहते हैं जिनसे आगे के लिये भी अन्देशा रहता है कि न मालूम क्या से क्या हो जाये। हमारी आज़ादी भी इतने कम दिनों की है कि लोगों के दिलों में यह दहशत रहती है कि कहीं कोई उन पर हमला न कर दे और अगर हमला हुआ और उसका मुक़ाबला करना पड़ा तो वह किस तरह से किया जायेगा? इधर कुछ दिनों से देखा गया है कि देश मे कही वर्षा अधिक है, कही बाढ़ है तो कहीं सूखा है जिसका असर सारे देश पर पड़ा है और अभी आसाम में बडा भूकम्प हुआ है जिससे बडा नुकसान हुआ। इस तरह से तरह तरह की कठिनाइयां खड़ी होते देख लोग घबड़ाते हैं। चीजों की कीमत बढती जा रही है। गवर्नमेंट अपनी तरफ से उस पर कंट्रोल करने की हज़ार कोशिश कर रही है, नये कानून बना रही है, और अपने अफसरों को हिदायत दे रही है कि उस पर काबू हासिल करे। पर अगर कोई भी गवर्नमेंट ऐसे मुश्किल वक्त में चाहे कि खुद अपने अफसरों और अपने मुलाजिमों के ज़रिये इन मसलों को हल कर ले तो यह उसके लिये मुमकिन नही होगा। जब तक सारे मुल्क की तरफ़ से उसकी मदद न हो, सहानुभूति और सहयोग न मिले तब तक उस के लिये कामयाबी हासिल करना मुश्किल होता है। वही चीज़ इस मुल्क के लिये भी लागू है। जब तक उसको लोगों की मदद नही मिलेगी तब तक गवर्नमेंट यहां भी कामयाबी हासिल नही कर सकेगी। इसलिये अगर आप सब जो व्यापार में लगे हुए हैं और जैसा आपने कहा है कि हर तरह के व्यापार मे लगे हुए हैं छोटे बड़े सभी आपके चेम्बर के सदस्य हैं इस बात पर ध्यान दें तो मुझे उम्मीद है कि इन मसलों के हल में काफी मदद पहुंच सकती है। मुझे वे दिन याद आते हैं जब हम लोग स्वतन्त्रता की लड़ाई मे मशगूल थे, उसमें लगे हुए थे। उस समय अगर कोई परचा निकल जाता, अगर एक बयान निकल जाता तो, उस परचे पर, उस बयान पर हमारे मुल्क के हज़ारों आदमी जान कुर्बान करने के लिये तैयार हो जाते थे; लाखों आदमी लाठियों का मुकाबला करने को, गोलियों का सामना करने को तैयार हो जाते थे। मुझे याद है वह १९३० का ज़माना जब हमारे देश की स्वतन्त्रता का आन्दोलन खूब ज़ोरों से चल रहा था। हमारे बहुत से नेता जेल में चले गये थे, मगर स्वर्गीय पंडित मोतीलाल नेहरू बाहर ही थे। मैं उनके साथ मुलाकात करने के लिये इलाहाबाद पहुंचा। उस समय का कार्यक्रम था कि मुल्क में विदेशी कपड़े का पूरा बहिष्कार किया जाये और यह कोशिश थी कि जितना विदेशी कपड़ा यहां के व्यापारियों के हाथ में था उस सब को गांठ में बांध

कर मुहर लगा कर रख दिया जाये और कोई भी व्यापारी उस कपड़े को बेचने के लिये गांठ तब तक न खोले जब तक उसे कांग्रेस का हुक्म न मिले। यही उस समय का कार्यक्रम था और एक जगह में नहीं तमाम मुल्क में व्यापारियों ने इस बात को कबूल किया था और केवल कबूल ही नहीं किया था उसके मुताबिक काम भी किया था। मुझे याद है कि इलाहाबाद में पंडित मोतीलाल नेहरू के पास वहां के कुछ व्यापारी इस बात का मशविरा करने के लिये गये थे कि किस तरह तमाम विदेशी कपड़े को गांठ में बांध कर रखवाएं। मुझे याद है कि पंडित जी के कहने पर उन्हों ने वादा किया था और यहां दिल्ली में आकर उसे पूरा किया था। उस ज़माने में दिल्ली कपड़े की तिजारत का इतना बड़ा केन्द्र था कि यहां ही से पश्चिमी पंजाब, राजपूताना तथा आसपास की दूसरी जगहों को कपड़ा भेजा जाता था। खासकर के विदेशी कपड़ों की दिल्ली बड़ी मंडी थी। उस समय दिल्ली के व्यापारियों ने इस बात को मान कर तमाम कपड़े को बांध कर रख दिया। इस तरह कांग्रेस के उस कार्यक्रम को दिल्ली के व्यापारियों ने अपने ऊपर बहुत मुसीबत उठा कर अपनी खुशी से पूरा किया था। क्या बात है, क्या वजह है कि वही पंडित जवाहरलाल नेहरू हैं वही सरदार वल्लभभाई पटेल हैं पर आज अगर वह किसी बात को कहते हैं तो उसका वही असर आप के और हमारे दिल के ऊपर नहीं पड़ता है जैसा उन दिनों में पड़ा करता था? क्या वजह है कि उन दिनों में केवल कहने से ही अपने ऊपर हज़ार मुसीबत लेने के लिये लोग तैयार रहा करते थे और अपना माली नुकसान उठा कर भी उनकी बातों पर चलने के लिये तैयार रहते थे? क्या वजह है कि आज व्यापारियों से कहा जाता है कि वह जिस कीमत पर माल खरीदते हैं उस पर मुनासिब मुनाफ़ा रखकर बहुत ज्यादा मुनाफा न लेकर माल बेचें तो उसका कोई असर उन पर नहीं होता? क्या वजह है कि थोड़े मुनाफ़े पर राजी न हो कर वे जल्द से जल्द ज्यादा से ज्यादा मुनाफ़ा कमाने की फिक्र में रहते हैं और उसकी वजह से मुल्क की कितनी बर्बादी होती है उसका कितना नुकसान होता है इस बात पर उनका ध्यान नहीं जाता? यह ग़ौर करने की चीज है यह आप के लिये ग़ौर करने की चीज़ है, गवर्नमेन्ट के लिए ग़ौर करने की चीज है और सारी जनता के लिये ग़ौर करने की चीज है।

मैं चाहता हूं कि आप इस पर ध्यान दें। मेरे पास तरह तरह के लोग आते रहते हैं और मुझे कहते हैं कि यद्यपि दिल्ली शहर के अन्दर खाने की चीज़ों के लिये राशनिंग है और राशन के मुताबिक ही आज लोगों को खाने की चीजें मिलती हैं लेकिन अगर कोई चाहे कि राशन के मुताबिक जितना उनको मिलना चाहिये उससे अधिक मिले तो जितना वह चाहे वह उतनी ही चीजें ले सकता है; हां उसे कीमत ज्यादा देनी पड़ेगी। मैंने सूना है कि चीनी की जिस समय दिक्कत थी और मामूली तरह से लोगों को चीनी नहीं मिलती थी अधिक दाम दे कर लोग जितनी चीनी चाहते थे खरीद लेते थे। गेहूं से चावल मामूली तौर से कम मिलता है। वह भी ऐसे लोगों को जो ज्यादा चावल चाहते हैं दाम अधिक देने पर काफ़ी मिल जाता है। मैं नहीं

जानता कि यह खबर जो मुझे मिली है कहां तक सच है क्योंकि मैंने खुद इसको जांचा नहीं है। पर मैं समझता हूं कि जो लोग ऐसी खबर मेरे पास पहुंचाते हैं या तो उन्होंने खुद किया होगा या दूसरे को वैसा करते देखा होगा तभी वे ऐसा कहते हैं। इसलिये उसे सही भी कैसे न माना जाये? तो मैं आप से कहना चाहता हूं कि आप सब व्यापारी लोग हैं आप देखें कि ऐसी बातें क्योंकर होती हैं। यह ठीक है कि अगर किसी भी वर्ग में थोड़े से लोग बुरे हों तो सारे वर्ग को खराब नहीं समझना चाहिये और यह भी ठीक है कि हर जमात में अच्छे और बुरे लोग होते हैं। कोई भी ऐसी जमात नहीं जिस में सब के सब लोग अच्छे हों या सब के सब बुरे हों। मगर किसी जमात में थोड़े से लोग भी बुरे होते हैं तो उनकी वजह से सारी जमात की बदनामी होती है। अगर पानी के एक घड़े में एक बूंद भी पेशाब पड़ जाये तो सारे घड़े का पानी खराब हो जाता है और लोग उस पानी को अपने हाथ से छूना भी पसन्द नहीं करते। उसी तरह चाहे किसी बड़ी जमात में अधिक लोग अच्छे क्यों न हों पर थोड़े लोग भी ऐसे निकल आयें जो हर तरह से अपने मुनाफ़े के लिये दूसरों पर मुसीबत ढाने में कोई गुनाह नहीं समझते तो उस से सारी जमात की बदनामी होती है। गवर्नमेन्ट आज हजार कानून बनावे, सख्त से सख्त सजा दे पर वह चोरबाज़ारी को रोकने में सफल नहीं हो सकती। क्या आप समझते हैं कि पीनल कोड की वजह से लोग चोरी करने से डरते हैं? नहीं, चोरी एक गुनाह है और इसलिये हम लोग चोरी नहीं करते। पीनल कोड की वजह से लोग चोरी नहीं करते ऐसी बात नहीं। हम लोग चोरी को बुरा समझते हैं हम समझते हैं कि चोरी करना पाप है इसलिये चोरी नहीं करते। तो यह समाज का काम है कि इस तरह का वातावरण पैदा करे और चोरबाज़ारी को इतना बुरा बनावे कि किसी की हिम्मत न हो कि चोरबाज़ारी करे, उसके करने में उसे शर्म हो। लोग समझें कि मर जाना बेहतर है और इस काम को करना बेहतर नहीं है तभी चोरबाज़ारी रुक सकती है। इसलिये मैं चाहता हूं कि आप आपस में मशविरा करें और सारे देश में ऐसी फिज़ा पैदा करें कि कोई चोरबाज़ारी का नाम न ले और चोरबाज़ारी करने वाले को शर्म हो और उसको यह बात मालूम हो जाये कि अगर वह अकेला चोरबाज़ारी करने वाला है तो सौ उस पर नज़र रखने वाले हैं और उसको पकड़वा कर सज़ा दिलवायेंगे। अगर ऐसा वातावरण पैदा हो जाये तो फिर किसी की हिम्मत नहीं कि वह चोरबाज़ारी करे। मैं मानता हूं कि इस समय जो चीज़ों की कीमत बढ़ी हुई है उसका एक कारण नहीं उसके अनेक कारण हैं। मगर मैं इस चीज़ को नज़र अन्दाज़ नहीं कर सकता कि कुछ लोगों के लालच की वजह से चीज़ों की कीमत बढ़े और चोरबाज़ार गर्म हो। मैं चाहता हूं कि आप मुल्क के अन्दर ऐसी फिज़ा पैदा करें—और आप व्यापारी इसे कर सकते हैं—कि गवर्नमेंट को ज़रूरत ही न पड़े कि वह कानून बनावे और पुलिस रख कर लोगों को पकड़वावे। यह तो समाज का काम होना चाहिये।

हर चीज़ के लिये गवर्नमेंट की शिकायत नहीं होनी चाहिये। गवर्नमेन्ट का जो काम होता है वह गवर्नमेन्ट कर रही है। आखिर यह गवर्नमेन्ट भी तो आप की

ही गवर्नमेन्ट है । आज की जो हमारी गवर्नमेन्ट है वह पहले की गवर्नमेन्ट जैसी नहीं है । पहले हम लोगों ने गवर्नमेन्ट की शिकायत की । उस समय की शिकायत ठीक शिकायत थी । पर अब जब कि आपकी ही गवर्नमेन्ट है आप के ही नुमाइन्दा लोग इसे चला रहे हैं तो गवर्नमेन्ट की शिकायत करने की हम लोगों में जो आदत पड़ गई है उसे छोड़ना चाहिये । इस मौलिक बात को महसूस करना चाहिये कि गवर्नमेन्ट अपनी गवर्नमेन्ट है जिस से जैसा आप चाहे करा सकते हैं उसे दुरुस्त कर सकते है अगर आप चाहें तो उसे हटा भी सकते है । तो उस चीज़ को छोड़ कर जो पहले हमारी आदत थी उसको अपनी चीज़ समझ कर उस की मदद करे जिसमें गवर्नमेन्ट आप की जो शिकायतें हैं उन को दूर कर सके । अगर गवर्नमेन्ट की कोई शिकायत है तो वह शिकायत हमारी ही है । कोई भी मुल्क हो वहां की गवर्नमेन्ट वैसी ही होती है जैसे वहां के लोग होते हैं । अगर वहा सच्ची नुमाइन्दा गवर्नमेन्ट हो तो अगर किसी देश के लोग अच्छे हैं तो वहां की गवर्नमेन्ट अच्छी होगी अगर वहा के लोग बुरे हैं तो वहां के नुमाइन्दे भी बुरे होंगे और गवर्नमेन्ट भी बुरी होगी। अगर आप बुरे हैं तो गवर्नमेन्ट अच्छी कैसे होगी ?

अब हमारा नया संविधान बन गया है और नया चुनाव होने वाला है । आप सबों को अपनी जवाबदेही महसूस करनी चाहिये । आप नही कह सकते कि किसी का इलाज किसी दूसरे के सर पर हो । हम में जो रोग होगा जो बुराइयां होंगी उनका नतीजा हम को ही बर्दाश्त करना होगा। इसे समझ कर मैं चाहता हूं कि आप दिल्ली के लोगों को क्योंकि दिल्ली समूचे देश की राजधानी हो गई है ऐसा नमूना पेश करना चाहिये कि जिससे जो मुसीबतें हमारे सामने हैं जो मुश्किलात हमारे सामने हैं उन को हल करने में मदद हो और सब मिल जुल कर उनका हल निकाल सकें।

आपको मैं फिर एक बार धन्यवाद देता हूं।

दरगाह निज़ामुद्दीन

हजरत निज़ामुद्दीन औलिया के दरगाह पर तारीख १९-९-५० को ६-३० बजे शाम को राष्ट्रपति जी ने भाषण देते हुए कहा—

मै आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूं कि आप ने मुझे यह मौक़ा दिया है कि यहां हाज़िर होकर हजरत निज़ामुद्दीन औलिया को अपना खिराजे अदब पेश करूं । मैं उन लोगों में से हूं जो इस चीज़ को मानते हैं कि हिन्दुस्तान के अन्दर इतने दिनो से जो ग़ैर ग़ैर मजहबों के मानने वाले, ग़ैर ग़ैर ज़बानों के बोलने वाले बसते आये है उन सब को इस मुल्क में रहना है; सब को एक साथ रहना है और सब को एक साथ मरना है और जीना है । जैसा आप ने बयान किया उन्हों ने इस दरगाह की नींव ६५० साल पहले डाली थी और यह एक करिश्मा है कि इतना ज़माना बीतने पर भी आज सारे मुसलमान, बहुतेरे हिन्दू और दूसरे मजहब के लोग इस जगह पर पहुंचना अपनी बड़ी खुशकिस्मती समझते हैं । आपने फरमाया है कि हजरत निज़ामुद्दीन औलिया के ज़माने में

छः बादशाह गुज़रे। उनके बाद बहुतेरे बादशाह इस मुल्क मे और दूसरे मुल्कों में गुज़रे। उसके पहले भी इस मुल्क में और दूसरे मुल्कों में कितने बादशाह गुज़रे थे। सब की बादशाहत खत्म हो गयी। एक की भी बादशाहत क़ायम नहीं, जितनी बादशाहतें क़ायम हुई सब की सब खत्म हो गई। पर जिस तरह की बादशाहत इन बुज़ुर्ग ने क़ायम की उस की हस्ती अभी तक क़ायम है और हमेशा के लिये क़ायम रहेगी। उसका सबब यह है कि ऐसी जगह में हाज़िर होकर लोग और बातों को भूल जाते हैं और हर एक आदमी एक दूसरे के साथ मोहब्बत करने लगता है और आपस के फ़र्क को, आपस के झगडे को भूल जाता है। जब इस तरह के तराने उठते है जिस तरह के तराने सुनने का आज आप ने मुझे मौक़ा दिया तो आदमी सब बातों को भूलकर, जैसा आपने कहा, एक हो जाते हैं। इस तरह की बादशाहत यहा कायम हुई और इस तरह के बुजुर्ग हिन्दुस्तान में हुए और उनका यह फज़ल है कि आज भी हम एक दूसरे के साथ मिलकर रह सकते है; आज भी आपस के झगड़े को हम भूल सकते है और एक दूसरे के साथ मोहब्बत का बर्ताव कर सकते है। मै तो चाहता हूं कि इस तरह का मौका हम लोगों को बराबर मिला करे, ताकि हर मज़हब के लोग एक दूसरे के साथ मिलें और एक दूसरे के दिल की बात सुनें। हिन्दुस्तान में इस चीज़ की खासकर ज़रूरत है क्योंकि जैसा मैं ने शुरू मे अर्ज़ किया यहां कई मज़हब के मानने वाले लोग बसते हैं और हर तरह के आदमी बसते हैं। आप को इस का पूरा इतमीनान रहना चाहिये कि हिन्दुस्तान की जो हुकूमत न दिनों मे है वह चाहती है कि सभी मजहब के लोग जो इस मुल्क में बसते है सब को बराबर के हक़ हों और सब को यह हक़ हो कि वे आज़ादी से रहें। इस मुल्क मे ऐसी कोई जगह नहीं है जहां तक जो चाहे, चाहे फिर वह ग़रीब से ग़रीब क्यों न हो, वहां तक वह न पहुंच सके। एक मेरे जैसा नाचीज़ आदमी भी आज उस जगह पर है जो बड़े बड़े बादशाहों को मिला करती थी। यह इस बात का सबूत है कि इस देश के अन्दर अगर कोई भी शख्स चाहे वह किसी भी मजहब का क्यों न हो, ठीक समझ कर काम करे तो उसके लिये यह ग़ैरमुमकिन न होगा कि वह ऊंची से ऊंची जगह तक पहुच जाय। आदमी का दर्जा किसी के देने से नहीं होता है और न किसी को कोई दर्जा दे सकता है और अगर कोई दे और अगर कोई ले भी ले तो लेनेवाला उसे रख नहीं सकता। ऊंचा दर्जा सिर्फ खिदमत से मिलता है और जो खिदमत करेगा—किसी एक आदमी की नहीं, किसी एक फ़िरके की नहीं—जो सारे इन्सानों की खिदमत करेगा वही ऊंचा दर्जा पायेगा।

आपने मुझे मौक़ा दिया है कि मैं हज़रत अमीर खुसरो के लिये अपने अदब का इज़हार करूं और उस बात को भी याद करूं जिसे मैं ने बचपन में पढ़ा था—खालिक बारी सिरजन हार, वाहिद एक बड़ा करतार। मैं जानता नहीं था कि अमीर खुसरो साहब कौन थे पर एक ज़माना था कि हमारे जैसे नादान और छोटे छोटे बच्चे भी इस तरह की चीज पढ़ा करते थे। ज़माना बदला करता है। आज बहुत सी बातें मैं भूल गया और बहुतेरे नयी रोशनी वालों ने ऐसी चीजें शायद न पढ़ी होंगी और न वे इस की अहमियत को समझते होंगे। पर तो भी मैं इस बात को मानता हूं कि जो

बुनियाद हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया और हज़रत अमीर खुसरो ने डाली थी वह पक्की बुनियाद थी और उसी बुनियाद पर हिन्दुस्तान का आज का सारा तमद्दुन जिस पर हमारी जिन्दगी बनी है, खड़ा है, और इसलिये उस बुनियाद को क़ायम रखना है, वह बुनियाद है प्रेम और मुहब्बत की, एक दूसरे के साथ हमदर्दी और रवादारी की। जिस दिन वह बुनियाद नहीं रहेगी उसी दिन सारी इमारत ढह जायेगी और फिर वह इमारत खड़ी न की जा सकेगी। इसलिये जो इमारत मौजूद है उसको हमेशा के लिये रखना है, अपने लिये, इस मुल्क के लिये और अपनी औलाद के लिये उसे रखना है।

अन्त में मैं एक दफ़े और आपका शुक्रिया अदा करता हूं।

शिमले में नागरिक अभिनन्दन

तारीख २७-९-५० को ४-३० बजे शिमला म्युनिसिपैलिटी द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब में राष्ट्रपति जी ने कहा—

गवर्नर साहब, म्युनिसिपैलिटी के मेम्बरान, बहनो और भाइयो,

मुझे आज पहले पहल आप के शहर में प्रेसीडेंट की हैसियत से आकर बड़ी खुशी हुई। मैं पहले एक बार और शिमला आया था और वह मौका था जब लार्ड वावेल ने एक कान्फ्रेंस इस लिये की थी कि हिन्दुस्तान के राजनैतिक सुधार के सम्बन्ध में यहां के नेताओं से बातचीत करके कुछ तय किया जाये। उस वक्त मैं यहां आया था और चन्द दिनों तक ठहरा था मगर न उस वक्त और न अभी उन चंद घंटों में जब से मैं यहां पर हूं मुझे ऐसा मौक़ा मिला कि आप के शहर को कुछ देख सकूं। जैसा आपने कहा है, आपका शहर सैकड़ों वर्षों से यहां के लोगों की खिदमत करता रहा है और दिनों दिन उस की तरक्क़ी होती गयी है। आपने पानी, बिजली, अस्पताल, कालेज और खास करके ग़रीब भंगियों के लिये जो प्रबन्ध किया है और जिनका ज़िक्र आपने अभिनन्दन पत्र में किया है उसके लिये मैं आपको बधाई देता हूं और मेरी उम्मीद है कि आप इसी तरह से जनता की सेवा हमेशा करेंगे और आप अपने शहर का दर्जा उसी तरह क़ायम रखेंगे जिस तरह से आपने उसे अभी तक क़ायम रखा है।

हिन्दुस्तान में चन्द वर्षों के अन्दर इतनी उथल पुथल हो गई है कि यहां की सारी की सारी शक्ल बदल गई है। जो पहले हिन्दुस्तान था वह एक बारगी बहुत बातों में अब नहीं रहा है। जिस तरीक़े से हम ने स्वराज्य हासिल किया है उसी की बदौलत हमारे यहां उस तरह की उथल पुथल तो नहीं हुई जिस तरह की ऐसे मुल्कों में हुई जहां के लोगों ने हथियार के बल से अपनी आज़ादी हासिल की थी। यहां एक चलती चलाती गवर्नमेंट हमारे हाथ में आयी और उस को हम ने सम्भाला। यह सच है कि उस के साथ साथ बड़ी मुसीबतें भी आयीं, दिक्कतें भी आयीं। हम ने अब तक उनका मुकाबला किया है और आगे भी जो मुसीबतें हमारे सामन आयेंगी उन का भी, अगर ईश्वर चाहेगा, तो हम अच्छी तरह से मुकाबला कर लेंगे।

पर मैं चाहता हूं कि हिन्दुस्तान के लोग इस बात को समझ लें कि आज़ादी के बाद उनकी जवाबदेही कितनी बढ़ गयी है। चन्द वर्ष पहले जब किसी बात

की शिकायत होती थी या कोई मुसीबत आती थी और या कोई बात बिगड़ती थी तो सब की जवाबदेही हम दूसरों के सिर डाल सकते थे डालते भी थे और ठीक डालते थे। पर अब वह बात नहीं रही है। अब तो सब बिगाड़ने और बनाने का सारा अख्तियार, अगर उसे आप अख्तियार कहें तो, आपके अपने हाथों में है। अगर अब आप कुछ बनाते हैं तो उसका श्रेय आप को मिलता है, अगर आप कुछ बिगाड़ते हैं तो उसकी शिकायत भी आपको ही लेनी पड़ेगी। इसलिये मुल्क के लोगों को चाहिये कि अपनी जवाबदेही को समझें। संविधान को अगर हम ठीक तरह से चला सकेंगे, जो उसकी मंशा है उसको समझ कर ठीक काम कर सकेंगे, जो उसके पीछे उसूल पड़े हैं उन पर हमेशा ध्यान रखेंगे और उस के मुताबिक काम करेंगे तो हम जल्द ही हिन्दुस्तान को एक ऐसा मुल्क बना सकेंगे जिस पर सिर्फ हम ही फख्र नहीं करेंगे बल्कि दुनिया के लोगों को भी हमारी तारीफ़ करनी पड़ेगी। यह करना हमारे हाथ की बात है। इसमें शक नहीं कि हमें अपने शरीर से मेहनत करनी है, अपने दिमाग़ से मेहनत करनी है। पर सब से ज्यादा ज़रूरत इस चीज़ की है कि हम अपने चरित्र को सुधारें। यह मामूली सी बात है बहुत ज़माने तक दूसरों की मातहती करने से आदमी का चरित्र गिर जाता है। इसमें शक नहीं है कि हमारी बहुत सी कमज़ोरियां जो पहले ज़ाहिर नहीं थी अब ज़ाहिर होने लगी हैं चाहे आप उन कमज़ोरियों को सयासी मामले में देखें, गवर्नमेंट के काम में देखें, चाहे ऐसी ऐसी बातों में जिसका हर आदमी की रोज़ाना ज़िन्दगी से ताल्लुक है। हमारा काम है कि हम ऐसा प्रयत्न करें, ऐसी कोशिश करें कि इन कमज़ोरियों के ऊपर उठ सकें और उन सभी लोगों की जो इस मुल्क में रहते हैं चाहे वे किसी जाति या फ़िरके के हों खिदमत करें। ऐसा करने पर ही हम तरक्क़ी कर सकेंगे।

आपने शिमले का ज़िक्र करते हुए उस ज़माने का भी ज़िक्र किया जब कोई हिन्दुस्तानी बिना विदेशी पोशाक पहने यहां निकल नही सकता था। शिमले की ही यह बात नहीं थी। बहुत सी ऐसी जगहें थीं जहां ऐसी बातें थीं। जहां ऐसी बात नहीं भी थी वहां भी जिस बात से शिमले के लोग विदेशी कपड़ा पहनने के लिये मजबूर किये जाते थे, वही बात थी। विदेशी कपड़ा पहनना बुरी बात नहीं है। लेकिन हमारी जो संस्कृति है, तमद्दुन और तहज़ीब है उसको भूल जाना और दूसरे की नकल करना यही बात उस वक्त थी। आज हमें उसको बदलना है; सब चीज़ों पर नये सिरे से विचार करना और ग़ौर करना है। इस का मतलब यह नहीं है कि विदेशी चीज़ों को हम नहीं सीखेंगे, विदेशी चीज़ों को हम नहीं रखेंगे। इसका मतलब यह है कि उस को अपनी चीज़ बनाकर, उसका गुलाम होकर नहीं उनका मालिक बनकर हमें उन चीज़ों को रखना है। अगर इस तरीके से हम काम करेंगे तो हमें पूरी उम्मीद है कि इस देश में हम इस तरह की एक सभ्यता क़ायम कर लेंगे जो हमारी पुरानी सभ्यता से अगर बढ़कर नहीं तो उससे किसी तरह कम भी नहीं रहेगी। हम साधारणतः पुरानी चीज़ों को उत्तम मान कर उन पर फ़ख्र करते हैं वह ठीक है। लेकिन आज हमें आगे बढ़ना है। पुरानी चीज़ हम लोग अपना सकते हैं। पर नयी चीज़ों को भी हमें भूलना नहीं है और न उन को छोड़ना है।

मुल्क के अन्दर बंटवारे के बाद उसका बुरा असर लाखों आदमियों पर पड़ा है। वह मुसीबत खत्म नहीं हुई है क्योंकि उन की मुसीबत खत्म नहीं हुई है। वे अभी भी तकलीफ़ से जिन्दगी गुजारते हैं। न मालूम अभी भी और कितने आदमियों पर मुसीबत आया करती है। मुसीबतो के दिनों मे ही आदमी का इम्तिहान हुआ करता है। जिस बहादुरी और जवांमर्दी से आपने उन मुसीबतो का मुकाबला किया है चाहे आज हम उसे न समझे पर आगे आने वाली पीढ़ी उसकी कद्र करेगी और याद रखेगी कि जवांमर्दी से आपने इन मुसीबतों का सामना किया अपने को सम्भाला और बचाया। इसका मतलब यह नहीं है कि आपको अब कोई शिकायत नहीं है। हजार शिकायतें हैं और रहेंगी। पर तमाम शिकायतो के रहते हुए भी अगर सब चीज़ों पर विचार कर देखा जाये तो यह कहा जा सकता है कि एक एक करके लुढ़कते पुढ़कते, गिरते पड़ते हम अपनी मुसीबतो पर काबू पाते जा रहे हैं और जो अभी बाकी हैं उन पर काबू पा जायेंगे। इसके लिये हमे अपने पैर को मजबूत रखना है और अपने पैरों पर खड़ा होना है। अगर लोग गान्धी जी के बताये रास्ते पर चलें, उन्हे भूले नही तो हम देश की तरक्की करके उसे ऐसा बनाकर रख सकते हैं कि चाहे बाहर से जो भी मुसीबत आवे हम एक होकर उसका मुकाबला कर सकेंगे हर एक मज़हब के लोग, हर एक तबके के लोग सब मिलकर उन मुसीबतों का मुकाबला कर सकेंगे। हमे इस समय मुल्क मे ऐसी फ़िज़ा पैदा करने की ज़रूरत है।

आपने एक दिलचस्प बात का ज़िक्र किया। आप का कहना है कि शिमले में गवर्नमेंट आफ़ इंडिया का दफ़्तर रहा करता था और आज पंजाब गवर्नमेंट यहां बैठी हुई है और हिमाचल प्रदेश की गवर्नमेंट भी बैठी हुई है पर आप को डर है कि पंजाब गवर्नमेंट चली जायेगी और गवर्नमेंट आफ़ इंडिया का दफ़्तर उस तरह से नही रहेगा जिस तरह से पहले रहा करता था और इसलिये शिमले की रौनक मे फ़र्क पड़ेगा। यह तो आप को मालूम है कि हम सब एक आवाज से यह शिकायत किया करते थे कि बृटिश गवर्नमेंट क्यो इतना खर्च करने शिमला जाती है और ६ महीने तक यहां रहती है। आज जब हम अपने मालिक आप है तो उन सारी शिकायतों को भूलकर अगर हम खुद आकर यहाँ बैठें तो यह बात हरगिज़ ठीक न होगी। इसलिये आप को पूरी गवर्नमेंट के यहा आने की बात नहीं सोचनी चाहिये। ऐसा होने की कोई संभावना भी नही है। पर गवर्नमेंट के बहुत से दफ़्तर हैं जिनके लिये जगह की कमी हो रही है। अभी आजकल भी गवर्नमेंट के कितने ही दफ़्तर यहां हैं। औडिटर जेनरल साहब जो यहां बैठे है उनका दफ़्तर और ऐसे कई और दफ़्तर यहां ही है। वे सब रहेंगे और मुमकिन है कि और दफ़्तर भी आ जायें। साथ ही मैं यह भी नहीं चाहता कि जो यहां से जाना चाहे उन को यहां जबर्दस्ती रखा जाये। मेरा कहना तो यही है कि आप के यहां लोगों की कमी नहीं रहेगी। लोग आते रहेंगे और जाते रहेंगे। एक तरह से सच पूछिये तो जो दूसरी पहाड़ी और इसी प्रकार की दूसरी जगहें हैं उनके सामने भी यही एक सवाल आज किसी न किसी शक्ल में मौजूद है। वहां भी प्रान्तीय गवर्नमेंट जाया

करती थीं। उनका भी आना जाना अब कम हो रहा है। इसके अलावा उनके सिलसिले में और लोग भी वहां जाया करते थे। उन का भी आना जाना कम हो रहा है। पर जब इस जगह की ऐसी आबहवा है जहां लोगों को लाभ पहुंचता है, उनकी सेहत की तरक्क़ी होती है तो लोग यहां आयेंगे ही। इसलिये आप को इस जगह को ऐसा बना देना चाहिये कि इस की सुन्दरता को लोग चाहें और लोग आयें और यहां के लोग भी ज़्यादा लाभ उठाये। मैं उम्मीद करता हूं कि आप ऐसा अवश्य करेंगे।

आपने बड़ी मेहरवानी और बड़े प्रेम के साथ मेरा स्वागत किया इसके लिये मैं आप सभी भाई बहनों को दिल से धन्यवाद देता हूं।

गर्ल्स गाइड को उपदेश

गर्ल्स गाइड की लड़कियों को सम्बोधित करते हुए प्रेसिडेन्ट्स लौज शिमला में तारीख २९-९-५० को राष्ट्रपति जी ने कहा—

बच्चियो,

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि मैं आज तुम सब को एक जगह इकट्ठी देख सका। मैंने अभी सुना गर्ल्स गाइड का काम थोड़े ही दिनों मे पंजाब के अन्दर शुरू हुआ है और इस बीच इस में इसकी इतनी तरक्की हुई है यह देख कर मुझे बड़ी खुशी है। मैं उम्मीद करता हूं कि यह काम और भी आगे बढेगा क्योंकि इस से छोटी छोटी बच्चियों को कुछ सीखने का मौका मिलता है। आज जो हमारी शिक्षा पद्धति है उस में सब से बड़ी कमज़ोरी यही है कि उसमें बच्चों को कुछ काम करना नहीं सिखाया जाता, सिर्फ किताब ही पढ़ाई जाती है। इस कारण दूसरे कामों के सम्बन्ध में उनकी कोई जानकारी नहीं होती। गर्ल्स गाइड, बॉय स्काउट आदि संस्थाएं जा आन्दोलन चला रहीं हैं उससे उन को कुछ काम करने को मिलता है। अभी जसा मैंने देखा कुछ काम तुम लोगों ने सीखा भी है। लेकिन यह बात तुम लोग याद रखो कि सिर्फ सीख लेने से ही काम नही होता है, उसमें जो सेवा की भावना है उस भावना को काम में लाना चाहिये और दूसरों की खिदमत करना, दूसरों की सेवा करना, दूसरों की मदद करना इन सब बातों की आदत डालनी चाहिये यह तुम्हारे लिये भी अच्छा होगा और मुल्क के लिये भी।

यह आन्दोलन तुम लोग चला रही हो इससे मुझे बड़ी खुशी है। सिर्फ़ एक बात मुझे खटकी है। तुम सब लोग यहां हिन्दुस्तान में रहती हो, हिन्दी पढी हो और हिन्दी समझती हो। फिर यहां अंग्रेज़ी क्यों? अगर कोई ऐसी जगह होती जहां अंग्रेज़ी के बग़ैर काम नहीं चल सकता तो अंग्रेज़ी की ज़रूरत समझी जा सकती थी। यहां जो छोटी छोटी बच्चियां है शायद उन में से अधिकांश अंग्रेज़ी नहीं समझतीं। फिर उनके लिये अंग्रेज़ी में क्यों कुछ कहा जाये जिसे वे समझें नहीं। मैं उम्मीद करता हूं कि यह सारा आन्दोलन जो गर्ल्स गाइड की तरफ से तुम लोग चला रही हो उस में देशी भावना लाने की कोशिश करोगी। ऐसा करने पर ही उससे ज़्यादा लाभ होगा। बहुत बहुत धन्यवाद।

गांधी जी के चित्र का अनावरण

तारीख २ अक्तूबर को पंजाब विधान-सभा, शिमला में गान्धी जी के चित्र का अनावरण करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा—

गवर्नर साहब, स्पीकर साहब, एसेम्बली के मेम्बरान, भाइयो और बहनो,

आपने मुझे यह खिदमत सुपुर्द करके मेरी इज्जत बढ़ा दी है। मैं समझता हू कि महात्मा जी की ज़िन्दगी का ताल्लुक हमारे देश के सभी लोगों की ज़िन्दगी के साथ इतना गहरा और घनिष्ट हो गया था कि आज हम इस चीज़ को सच्चाई के साथ कह सकते है कि हम में से ऐसा कोई नहीं जिस पर कुछ न कुछ उनका असर न हुआ हो। इस मुल्क में या दूसरे मुल्कों में बड़े बड़े नेता हुए है जिन्होंने अपने अपने वक़्त में बड़ी बड़ी ख़िदमतें की है और जिनकी ख़िदमतों को लोगों ने उनके गुज़र जाने के बाद बहुत दिनों तक याद रखा है। मगर इस तरह की मिसाल हिन्दुस्तान में ही नहीं संसार की तारीख में शायद कम मिलेगी जैसी कि महात्माजी की ज़िन्दगी की है। हमने केवल यही न देखा कि इतने बड़े मुल्क के करोड़ों पस्त हिम्मत मुर्दा लोगों के दिल में उन्होंने अपनी ज़िन्दगी मे ही अपने कामों और निश्चयों से नयी जान डाल दी बल्कि इस देश के लोगों को ऐसी दासता की हालत से बचा कर, स्वतन्त्रता तक, आज़ादी तक पहुंचाया। इतना ही नहीं उन्होने जो काम किये वे केवल सयासी काम ही नहीं थे और न वे महज़ ऐसे ही थे जिनका ताल्लुक हमारी आज़ादी के साथ ही हो बल्कि वे ऐसे थे कि इन्सान की ज़िन्दगी के हर पहलू पर उनका काफ़ी असर पड़ा और हमेशा पड़ता रहेगा। ऐसी हालत में आज उनकी ज़िन्दगी के बारे में मेरे लिये आप से कुछ कहना फिज़ूल है क्योंकि आप में से अक्सर ऐसे लोग होंगे जिनको उनके कदमों में बैठने का मौक़ा मिला होगा और जिनको वह सौभाग्य नही भी मिला उनको कम से कम उनके कामों को, उनकी कार्यवाहियों को देखने का मौक़ा ज़रूर मिला होगा उनकी लिखी हुई चीज़ों को पढ़ने का मौका तो मिला ही होगा। इसलिये उनकी ज़िन्दगी के बारे में यहाँ कुछ और कहना एक तरह से फिज़ूल सा है। आज के दिन उनका जन्म हुआ था। इतिहास में यह हमेशा स्मरणीय दिन माना जायेगा। ऐसे दिन पर अगर हम बैठ कर कुछ सोचें, ध्यान करें और उनकी ज़िन्दगी से कुछ सबक लें तो यह हमारे लिये हर तरह से तरक्क़ी का बायस होगा। आप यहां एसेम्बली के मेम्बरान बैठे हैं। एसेम्बली के इस हाल में इस तस्वीर को आपके सामने खोलने का-आपने मुझे मौक़ा दिया है। आपकी अपनी ज़िम्मेदारी इस वक़्त क्या है, कितनी बढ़ गई है और आपसे क्या उम्मीदें रखी जा सकती है और उन उम्मीदों को आप किस तरह पूरा कर सकते हैं इन सब चीज़ों को ध्यान में रखते हुए अगर गान्धीजी ने जो हमें सिखाया है, जो हमें बताया उस पर हमें ग़ौर करें तो उससे हमें बहुत कुछ मदद मिल सकती है।

पंजाब एक ऐसा सूबा है जिसको बड़ी मुसीबतों से अभी हाल में गुज़रना पड़ा है और उन मुसीबतों का अभी तक अन्त नहीं हुआ है। जो बंटवारे के बाद मुसीबतें आयीं

उनका इस सूबे के लोगों ने बड़ी बहादुरी के साथ मुक़ाबला किया और मैं जहां तक जानता हूं जहां तक मुझे ख़बर मिली है जो लोग मुसीबत में थे उन्होंने उनका मुक़ाबला करने में बड़ी हिम्मत दिखलाई और यहां की जनता ने भी सहानुभूति दिखलाई और आपकी गवर्नमेन्ट ने जहां तक हो सका लोगों को सहायता दी। आपके यहां तो चारों तरफ़ सब चीज़ें बिखरी हुई मालूम पड़ती थीं पर आपने अध्यवसाय और दूरंदेशी से इस दिशा में कुछ तरीक़ा कुछ सिलसिला पैदा किया। और आज यह कहा जा सकता है कि बहुत हद तक आपका इन्तज़ाम वैसा हो गया है जैसा मामूली तौर पर सूबों का हुआ करता है। जो नुकसानात हुए उनको पूरा करना कोई आसान काम नहीं है, उन्हें पूरा करना शायद मुमकिन भी नहीं होगा। पर जहां तक हो सका है इस बात की कोशिश तो हो ही रही है। इस सम्बन्ध में मैं आपको गान्धीजी की सीख की याद दिलाता हूं। उन्होंने हमेशा हमें यही सीख दी कि अगर सचमुच हम मुल्क की खिदमत करना चाहते हैं, जनता की सेवा करना चाहते हैं तो हमारे सामने सिर्फ सेवा या खिदमत की ही तस्वीर रहनी चाहिये और हमें उसकी एवज़ में किसी और बात की तमन्ना न करनी चाहिये या दूसरे शब्दों में यदि हम सेवा करना चाहते है तो सच्ची भावना के साथ सच्चे दिल से उस सेवा में लगें। इसके अलावा जिन देशों में प्रजातन्त्रात्मक राजव्यवस्था है वहां जो एसेम्बली में चुनकर जाते हैं उनसे जनता के सच्चे सेवक होने की तवक्को की जाती है और लोग उनसे यह उम्मीद रखते हैं कि जनता की खिदमत के सिवाय उनके मन में और कोई ख्वाहिश न होगी। इस लिये मेरा यह ख्याल है कि हमारे ऊपर इस वक्त जितनी मुसीबतें हैं और आगे भी आ सकती हैं उन सब से बचने और निकलने का अगर कोई रास्ता है तो वह यही है कि आप में से हर एक अपने सामने उसी सेवा भाव को रखे और उसी भावना से काम करे। हमने जो संविधान इस मुल्क के लोगों के लिए बनाया है उसमें हर एक बालिग़ को यह मौका दिया गया है कि वह अपना प्रतिनिधि चुनकर भेजे और हम उम्मीद रखते हैं कि विधान सभा में देश के सच्चे नुमाइन्दे चुनकर आयेंगे। अगर हमारे नुमाइन्दे अपना काम सच्चाई से करेंगे तो यह कहने की ज़रूरत नहीं कि उनसे जनता की भलाई होगी।

हमने अपने लिए जो संविधान बनाया है उसकी एक बात को सब लोगों को ठीक तरह से समझ लेना चाहिये। हमारे संविधान के अनुसार यहां भी पार्टी सिस्टम के ज़रिये उसी तरह गवर्नमेन्ट चलेगी जैसी कि इंगलैण्ड में चलती है। पर हमे यह बात न भूलनी चाहिये, जिसे हम अक्सर भूल जाते हैं, कि हमारे यहां के दलों में जो दलबन्दियां हैं वे इंगलैंड की पार्टियों से बिल्कुल भिन्न हैं। सही अर्थों में पार्टी वह है जिसका जनसाधारण की खिदमत करने का अपना निजी प्रोग्राम है। इसलिये इस मकसद को सामने रख कर कोई पार्टी बने तो कोई बुराई की बात न होगी। पर आज कल हमारे यहां जिस तरह की पार्टियां बनती हैं, व्यक्तिगत स्वार्थ या निजी हितों के साधन के लिए जो दलबन्दियां क़ायम होती हैं उनसे देश को नुकसान होता है। अगर देश की सेवा की भावना से मुल्क की खिदमत और देश की भलाई के मकसद को ठीक सामने रख कर कोई दल बने तो उससे

किसी को नुकसान नहीं होगा और कम से कम उस से उस तरह का नुकसान नहीं होगा जिस तरह का आज कल की दलबन्दियों से हो रहा है।

मै यह चाहता हूं कि आप जब इस कमरे के अन्दर बैठ कर इस सूबे के जो सवाल हैं उन पर विचार करें तब आपकी आखों के सामने और दिल में यह चित्र रहे। गान्धीजी चाहते थे कि देश में ऐसे सच्चे सेवक, जो केवल सेवा भावना से प्रेरित होकर देश के काम में जुटना चाहते हों, पैदा हों। मै इस पद पर आने के पहले कहा करता था—आज शायद मेरा वैसा कहना अच्छा मालूम न हो—कि जब गान्धी जी का हुक्म होता है तो मैं गांव में काम करता हूं; जब उनका हुक्म होता है तो जेलखाने में चला जाता हूं; जब हुक्म होता है तो मन्त्री भी बन जाता हूं; जब हुक्म होता है हरिजन भी बनने को प्रस्तुत रहता हूं। ज़रा सोचिये तो सही यह सब काम एक दूसरे से बिल्कुल विभिन्न हैं या एक ही काम के विभिन्न रूप है। मै तो यह जानता हूं कि वे एक ही काम के, जनता की सेवा के ही विभिन्न स्वरूप हैं। कम से कम मेरी दृष्टि में ये सभी काम अपने अपने क्षेत्र में समान महत्व के है क्योंकि जनता के सुख के लिए वे सभी ज़रूरी है। इस लिये मै तो यह मानता हूं कि जो वालन्टियर देश की खिदमत करता है और गांव में झाड़ू लगाता है उसका काम उतना ही गौरवपूर्ण है उतने ही महत्व का है जितना कि मेरा जो आपके बनाने से प्रेसीडेन्ट बन कर यहाँ व्याख्यान दे रहा हूं। अगर जनता की मर्ज़ी हो तो कल वह उसे लाकर मेरे स्थान पर बैठा सकती है और मुझे भंगी का वह काम करने को भेज सकती है। यदि ऐसा हो तो मैं वह काम करूंगा। मेरा विचार है कि अगर इस भावना से लोग काम करेंगे और छोटे वड़े का भेदभाव नहीं रखेगे तो वे देश की सच्ची खिदमत कर सकेंगे।

गान्धीजी सत्य और अहिंसा के उसूल के क़ायल थे। ठीक है कि सत्य और अहिंसा की ओट में हमारी बहुत सी कमज़ोरियां भी छिप जाया करती है। अगर हम में आज कमज़ोरियां है तो यह कहा जा सकता है कि इनमें से बहुत सी कमज़ोरियां हम में पहले छिपी हुई थीं और अब ये ज़ाहिर हो रही है। पहले शायद इस वजह से ये कमज़ोरियां देखने में नहीं आयीं कि हम दूसरे काम में बझे थे। जब वह काम खत्म हुआ तो हमारी कमज़ोरियां बाहर आने लगीं। अगर इन कमज़ोरियों को दूर करने का कोई रास्ता है तो वह गांधी जी का ही रास्ता है, उसके अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं। आज के दिन हम अपने कामों पर, अपनी कार्यवाहियों पर, अपनी खामियों और कमज़ोरियों पर विचार करें; सोचें कि कहां हमारी कमज़ोरियाँ है, कहां हमारी खामियां है। साथ ही गान्धीजी ने जो कुछ बताया है उस पर हम अच्छी तरह से गौर करें, उसे अच्छी तरह से पढ़ें। मै आप सब से यही निवेदन करना चाहता हूं कि जब गान्धी जी का चित्र आपने अपने सामने रखा है तो उनके बतलाये रास्ते पर चलने के लिये कटिबद्ध हों और उन्होंने जो सिखाया, उन्होंने जो पढ़ाया, उनका जो आदर्श था उसे अपनाकर, अपने सब काम करें। जब आप ऐसा करेंगे तभी इस देश की भलाई और सब का कल्याण होगा।

आपने मेरी इज्जत बढ़ाई उसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद।

आनन्दपुर गुरुद्वारे में अभिनन्दन

तारीख ६-१०-५० को आनन्दपुर गुरद्वारा में राष्ट्रपति जी ने भाषण देते हुए कहा—

आनन्दपुर साहब के सेवक सज्जन, बहनो और भाइयो,

मेरे लिये यह बड़े सौभाग्य की बात है कि मैं इस स्थान तक पहुंच सका। पहले यहां आने का प्रोग्राम नहीं था। पर जब इतना नज़दीक आ गया तो भाइयों की सलाह हुई कि यहां आ कर गुरु साहब का भी दर्शन किया जाये और मुझे यह पसन्द आया। मेरा प्रान्त वही है जहां गुरु साहब का जन्म हुआ था और जो स्थान पटना शहर में अभी तक मौजूद है। यद्यपि उन का जन्म वहां हुआ था तथापि वे देश के लिये बहुत बड़े काम के आरम्भ करने के लिये यहां इतनी दूर आये और उन्होंने उसे यहां आरम्भ किया। यहां का और पटने का इस प्रकार ऐतिहासिक सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध की स्मृति भी मेरे मन को उल्लासप्रद है। और यहां आने से तो मुझे खूब खुशी हुई है क्योंकि यहीं से तो गुरु साहब ने आज़ादी की लड़ाई शुरू की थी और लोगों की हिम्मत और हौसलें बढ़ाये थे। आप ने मेरा स्वागत किया, मेरे प्रति आदर दिखलाया इस के लिये मैं आप सब भाई बहनों को धन्यवाद देता हूं।

आज़ादी के बाद देश के सामने बहुत कठिन समय रहा है और अब भी हमें बहुत कुछ करना बाकी है। इसलिये अभी हमें बहुत सी कुरबानियां करनी पड़ेंगी अभी हमें बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। ऐसा करके ही अपने देश को हम सुखी बना सकेंगे। इसलिये यह नहीं समझना चाहिये कि आज़ादी मिल गयी तो सब काम खत्म हो गया। इस के अतिरिक्त मैं तो यह मानता हूं कि आज़ादी मिलने के बाद और अधिक काम करने की ज़रूरत है क्योंकि आज़ादी मिलने के पहले देश की कोई जवाबदेही हमारे ऊपर नहीं थी मगर आज़ादी मिलने के बाद देश की सब जवाबदेही हमारे ऊपर है उस की जिम्मेदारी हमारे सिर पर है। इसलिये हम में से हर एक को, चाहे वह किसी भी स्थान का क्यों न हो, वह हिन्दुस्तान के किसी भी हिस्से का रहने वाला क्यों न हो, इस बात को महसूस करना चाहिये और इस के लिये तैयार रहना चाहिये कि अभी जो काम बाकी है उस के पूरा करने के लिये जितनी कुर्बानियों की भी ज़रूरत पड़ेगी वह खुशी से देगा। बस मैं आप से इतनी ही बात कह कर समाप्त करता हूं। आपने मेरा जो स्वागत किया मेरा जो आदर किया उस के लिये आप लोगों को मैं धन्यवाद देता हूं।

भारतीय प्रशासन सेवा के भावी सदस्यों से बातचीत

*भारतीय प्रशासन सेवा के सदस्यों से मैटकाफ हाउस में १० अक्तूबर १९५० को बातचीत के सिलसिले में राष्ट्रपति ने कहा—

अपने अपने स्थान में आप लोग भारी जिम्मेदारियां सम्भालने जा रहे हैं। मुझे आशा है कि आप प्रशासनिक जिम्मेदारियां ही नहीं वरन् अन्य प्रकार की

* अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद

जिम्मेदारियां भी संभालेंगे। आखिरकार केवल प्रशासन से ही तो सब कुछ नहीं किया जा सकता। आप से तो सच्ची राष्ट्र सेवा की अपेक्षा की जाती है। आप को हर प्रकार का कार्य करना पड़ेगा। अपने प्रशासनिक कर्त्तव्यों के अन्तर्गत आप को सेवा-समिति के कार्य कर्त्ताओं के समान उन लोगों के पुनर्वास के कार्य में लगाया जा सकता है जो अपने घरों से निकाल बाहर किये गये हैं। कभी आप को बुरी तरह बरबाद हुए ऐसे क्षेत्र का प्रभार लेना पड़ेगा जिस पर कोई दैवी विपत्ति पड़ी हो। आप को और अन्य प्रकार के काम भी करने पड़ेंगे। आई० सी० एस० के पुराने लोगों को मैं जानता हूं। उन से हर प्रकार के काम की अपेक्षा की जाती थी। ऐसा कोई काम न था जो उन को न सौंपा जाता था। उन में एक रमेशचन्द्रदत्त नामी सज्जन थे। उन्होंने मजिस्ट्रेट के पद पर नौकरी शुरू की थी और मुख्य आयुक्त की हैसियत से उन्होंने नौकरी से निवृत्ति ली। मेरा विचार है कि उन्हें बहुत सहूलियतें भी नहीं मिली थीं। सरकारी नौकर रहते हुए भी उन्होंने बहुत सी किताबें और ऐतिहासिक महत्व रखने वाले कई उपन्यास लिखे तथा रामायण और महाभारत के कुछ अंशों का अनुवाद भी किया। ये सब उन्होंने उस थोड़े अवकाश में किया जो उन्हें अपने मजिस्ट्रेटी कर्तव्यों के करने के बाद मिला करता था। आई० सी० एस० के एक अन्य सदस्य श्री विन्सेन्ट स्मिथ भारतीय इतिहास के विशेषज्ञ थे। उन की पुस्तकें सब विश्व विद्यालयों कालेजों और स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं। मुझे विश्वास है कि आप ने विलसन का नाम सुना होगा। उन्होंने २० वर्ष नौकरी की। नौकरी से निवृत्ति लेकर भी वह भारतीय भाषाओं में और भारतीय भाषाओं में ही नहीं वरन् ग्रामीण बोलियों में भी दिलचस्पी लेते रहे, गांवों में प्रति दिन काम में आने वाले शब्दों का वह एक अंग्रेज़ी संचय छोड़ गये। उदाहरणार्थ हल शब्द को लीजिये। हल के कई हिस्से होते हैं। उन सब के भारतीय नाम तो मैं नही जानता किन्तु उस संचय में उन्हों ने उन के अंग्रेज़ी नाम ही नहीं दिये हैं वरन् उन भागों के हिन्दी नाम भी दिये हैं। इसी प्रकार चर्खे को उन्होंने लिया है और उस के सब हिस्सों के नाम दिये हैं। उन्हों ने ग्रामीणों में प्रचलित अनेक शब्दों का संग्रह किया है। उन्होंने यह सब काम उस प्रशासनिक काम के अलावा किया जिस के लिये वे सरकार के प्रति उत्तरदायी थे। आप भी ऐसा काम करने के लिये समय निकालें। आप को जनता से परिचित होना चाहिये, उन की दिल की बात समझनी चाहिये, और उन से मिल जुल कर उन की मुश्किलें समझनी चाहिये। आप के लिये यह तभी संभव होगा जब कि आप उन लोगों की सेवा कर सकें जिन की सेवा करने की आप से अपेक्षा की जाती है।

अब तो जैसा मैंने कहा है आप से हर प्रकार के काम की अपेक्षा की जाती है। जब हम लोग जेल में थे तो हमारा एक मित्र भी वहां था। जेल में हमें एक तसला दिया जाता था। जो पीने का पानी और स्नान के लिये शुद्ध पानी रखने इन दोनों के लिये काम में आता था। उस मित्र ने इसे सिवीलियन नाम दे रखा था। जब उन्हें इसकी ज़रूरत पड़ती तो वे कहते कि मेरा सिवीलियन कहां है। मैं

समझता हूं कि उन का यह नामकरण पर्याप्त सत्य के आधार पर था। मैं चाहता हूं कि आप वैसे सिवीलियन बनें। अर्थात् सादे किन्तु कुशलता से यथासंभव अनेक काम करने वाले। यह आदर्श है जिसे आप अपने साथ लेकर जायें। ठीक है पहले दिनों में ओर भी कृत्य हुआ करते थे। अब शासन करने का काम शनैः शनैः तो कम महत्व का होता जायेगा क्योंकि अन्ततोगत्वा अब हमें शासन की तो उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी कि सेवा की आवश्यकता है। और खास तौर से भारत जैसे देश में जहां कि करोड़ों की संख्या में लोग रहते हैं वहां तो सेवा की आवश्यकता और भी ज्यादा है। आप लोगों के मन में जनता के प्रति सहानुभूति और दिलचस्पी होनी चाहिये तभी आप उस की सच्चे अर्थों में सेवा कर सकेंगे। सेवा का सही अर्थ यही है कि जनता की सहायता करना और आजकल तो इस का अत्यन्त महत्व है। हां शासन क्षमता भी चाहिये। किन्तु जब आप स्वयं अनुशासन शील होंगे तभी आप इसे दूसरों से मनवा सकेंगे। इसलिये दूसरों से अनुशासन की अपेक्षा करते समय आप स्वयं अनुशासन हीन नहीं रह सकते। मजिस्ट्रेट को नियम मानने वाला होना चाहिये। तब उस को दूसरों से बल प्रयोग से नियम न मनवाने पड़ेंगे क्योंकि तब वे बिना प्रयास ही माने जाते रहेंगे। इसलिये मैं आप को सलाह दूगा कि आप अपना ज्ञान बढ़ायें। आप लोगों से बड़ी अपेक्षायें हैं। सिवीलियन लोग ही इस देश को महान् बना सकते है। कोई भी सरकार तब तक कुछ नहीं कर सकती जब तक कि इस के हाथ पांव सब सिवीलियन अपना काम ईमानदारी और कार्यदक्षता से नहीं करते। अतः यह आवश्यक है और जिस की अपेक्षा करना स्वाभाविक है कि आप में समझ बूझ हो। ज़रा आप सोचे कि भारत की क्या शक्ल होनी है और क्या आप उस को बनाना चाहते हैं। उस भारत की तस्वीर आप अपने मन में रखें। आप का यह काम है कि आप वैसा भारत बनायें और यदि आप में समझ बूझ हुई और कार्यदक्षता हुई तो आप सचमुच ही भारत को महान् बना देंगे। आप तो स्वभावतः एक प्रतीक के समान हैं। आप लोग जनता के प्रतिनिधि हैं। आप को जनता को महान् बनाना पड़ेगा और तभी देश महान् हो सकेगा। अतः आप अपने केवल नौकरी के भविष्य और तरक्क़ी ही की बात न सोचें। नौकरी का भविष्य तो स्वयं ठीक होगा। अपने कामों के फल को आप परमात्मा के हाथ में छोड़ दें।

जब हम लोग विदेशी सत्ता से संघर्ष कर रहे थे तो हम अपने अधिकारों पर अधिक ज़ोर दिया करते थे। हमें ऐसा करना आवश्यक भी था क्योंकि हमें अधिकार प्राप्त करने थे। किन्तु हमारे अधिकार अब हमें प्राप्त हैं और इसलिये हमें कर्त्तव्यों की बात अब ज्यादा सोचनी चाहिये। अधिकार तो कर्त्तव्यों से ही पैदा होते हैं। अच्छी तरह पूरे किये गये कर्त्तव्य अधिकारों को स्वयमेव ही दिला देंगे। अतः यदि आप इस भावना से कार्य करेंगे तो आप अच्छा नाम पायेंगे। मैं समझता हूं कि इस बारे में मैं आप से इस से अधिक कुछ कह भी नहीं सकता। मैं समझता हूं कि यदि आप इस बात को सही तरह समझ लें तो आप ऐसा करने के लिए समर्थ भी हो जायेंगे।

आजकल हर तरह के दोष और शिकायतें यहां हैं। हम एक परिवर्तन काल में हो कर गुज़र रहे हैं। अतः न तो हम बहुत सी चीजें अर्जित ही कर पाये हैं और न हमारा मानसिक गठन ही अभी पूरा है। अतः यह शिकायतें न तो अनपेक्षित हैं और न अस्वाभाविक, किन्तु इन सब को दूर तो करना ही है। उन्हें हम हमेशा के लिये बने नहीं रहना देना चाहते। हमें उन को दूर करने का प्रयास करना चाहिये। आजकल इन शिकायतों, भ्रष्टाचार और चोरबाज़ारी की काफी चर्चा सुनी जाती है। किन्तु ये भी तो दोनों तरफ़ के लोगों के दोषसे ही पैदा हुए हैं। कोई भी काम एक तरफ़ के लोग नहीं कर सकते। चोरबाज़ारियों को ग्राहक मिलने चाहियें। यदि ग्राहक न मिलें तो वे चोरबाज़ारी नहीं कर सकते। इसी प्रकार रिश्वत कोई तभी ले सकता है जब कोई रिश्वत देने वाला हो। इसी प्रकार ही अन्य खराबियों के लिये भी दोनों तरफ़ के लोग होने चाहियें। अतः एक ही तरफ़ के लोगों को दोष देना और दूसरों को दूध का धुला मान लेना ठीक नहीं है। अतः यही बात सही है कि सब लोग अपने दिल को टटोलें और पता चलायें कि दोष उन का है या दूसरे का। लोग अक्सर यह सोचते हैं कि मैं तो ठीक रास्ते पर हूं और दूसरे ही ग़लती कर रहे हैं। यह विचार शैली स्वयं दोष पूर्ण है।

यदि आप स्वयं सचाई पर भी हों तब भी आप को सारा दोष अपने सर पर ले लेना चाहिये और समझ लेना चाहिये कि आप स्वयं ग़लती कर रहे हैं। इस से आप को सहायता मिलेगी। किन्तु दुर्भाग्यवश हमें यही अधिक दिखाई देता है कि लोग गलती तो स्वयं करते हैं और दोष दूसरो पर यह कह कर डाल देते है कि जहां तक उन का सवाल है वे स्वयं बिल्कुल निर्दोष है। किन्तु यह तरीका ठीक नहीं है। मेरा यह आशय नहीं है कि आप अपने दोषों को सब के सामने घोषित करे किन्तु आप को अपने दोष समझ लेने चाहियें और उन को दूर करना चाहिये। घोषणा आवश्यक नहीं है, हां उन्हें दूर करना आवश्यक है।

आप लोगों को प्रशासनिक प्रयोजनों के अतिरिक्त और किसी प्रयोजन से प्रभावित नहीं होना है। आप को इस में किसी का हस्तक्षेप भी स्वीकार नहीं करना है। आप के उच्चतर अधिकारियों के अतिरिक्त आप के काम में और किसी को हस्तक्षेप करने का हक़ नहीं है। यदि कोई हस्तक्षेप करे तो आप उस का विरोध करें। यदि आप ने विरोध किया तो औरों को भी ऐसा करने का प्रोत्साहन मिलेगा और हस्तक्षेप की घटनाये कम हो जायेंगी। हो सकता है कि फिर भी यहां वहां कुछ ऐसी बातें हों। किन्तु यदि इस कारण आप को कुछ कठिनाई सहनी भी पड़े तो भी सैंकड़ों दूसरे. कर्मचारियों को दूसरे स्थान में इस नीति से लाभ भी होगा। जिस प्रकार की धमकी दी जाती है उस की आप को परवाह न करनी चाहिये। आपको उस की परवाह न कर निर्भय होकर सरकार के हुक्मों का अमल करना चाहिये। हां अगर सरकार ग़लती करे तो वह दूसरी बात होगी। उससे आप का कोई सरोकार नहीं। और लोग हैं जो इस बारे में सरकार के पास जायेंगे। किन्तु आप को तो हर हालत में कर्त्तव्य पालन में रक्षा मिलने का पूरा अधिकार है ही।

मुझे यहां आकर और आप लोगों से मिल कर बहुत प्रसन्नता हुई।

श्री विठ्ठल भाई पटेल की प्रतिमा का अनावरण

तारीख १४-१०-५० को श्री विट्ठलभाई पटेल की प्रतिमा का अनावरण करते समय अहमदाबाद में राष्ट्रपति ने कहा--

मेयर साहब, बम्बई प्रान्त के प्रधान मन्त्री, बहनो और भाइयो,

मेरे लिये यह बड़े सम्मान और गौरव की बात है कि आपने मुझे आज श्री विट्ठलभाई पटेल की मूर्ति का अनावरण करने का मौका दिया। मैं श्री विट्ठल भाई का एक प्रकार से भक्त रहा हूं और आपने अभी आरम्भिक भाषण में उनकी जीवनी की जितनी बाते कही हैं उनसे मेरी स्मृति उन बातों में और भी साफ़ हो गयी है। श्री विट्ठल भाई भारतवर्ष के उन लोगों में थे जिन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया, अपनी जान तक दे दी और इस काम को सफल बनाया। जो लोग बच गये हैं उनको इस बात का दुख अवश्य है कि वह उस दिन तक जीवित न रह सके जिस दिन उनके प्रयत्नों का, उनके त्यागों का फल भारत को देखने को मिला और संसार को देखने को मिला। पर इसमें जरा भी संदेह नहीं है कि उनकी आत्मा आज भारत को स्वतन्त्र देख कर खुश होती होगी और जिस आज़ादी के लिये जिस स्वतन्त्रता के लिये उन्होंने अपना जीवन दान दे दिया, जिस स्वतन्त्रता को प्राप्त करने में हमारे देश के अनगिनत भाई और बहनों ने हर प्रकार का त्याग किया, उस स्वतन्त्रता की रक्षा में, उस स्वतन्त्रता की मर्यादा बढ़ाने में देश के लोग कोई भी कसर नहीं रखेंगे और उसे हमेशा के लिये सुरक्षित रखेंगे।

श्री विट्ठलभाई की जीवनी हम सब के लिये एक ऐसी जीवनी है कि जिससे हम लोग बहुत कुछ सीख सकते हैं। उनकी बुद्धिमत्ता उनकी प्रतिभा और उनकी दूरदर्शिता सभी लोग मानते है। यह भी सब मानते है कि वह अपने विश्वास में कितने अचल और अपने काम में कितने निर्भय रहा करते थे। और जहां जहां और जिस जिस समय देश ने उनसे कुछ कराना चाहा वहां वहां और तब तब उन्होंने खुशी खुशी वह किया। आपने अभी कहा कि जब १९१८ में बम्बई में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ था तो श्री विट्ठलभाई पटेल उसकी स्वागतकारिणी समिति के अध्यक्ष थे। मेरा उनका परिचय पहले घनिष्ट तो नहीं था पर जो देखा देखी क़ायम हुई वह उसी समय क़ायम हुई और वह दिन प्रतिदिन गाढ़ी होती गयी और उस दिन तक क़ायम रही जिस दिन वह सब को छोड़ कर इस संसार से चले गये। इस बीच में ऐसा समय आया जब उनके और कांग्रेस के बीच मतभेद हुआ और गहरा मतभेद हुआ। मगर मतभेद के कारण उनके प्रेम में, उनके साथ जो हमारा घनिष्ट सम्बन्ध था उसमें, किसी प्रकार का अन्तर नहीं आया। जिस समय १९२३ में नागपुर

का झंडा सत्याग्रह चल रहा था, जिसका भी ज़िक्र आपने किया है, उस समय कांग्रेस में काउंसिल में जाने के प्रश्न पर बहुत घोर मतभेद चल रहा था और आपस में इस तरह का बहसमुबाहिसा चल रहा था जिससे मालूम होता था कि दोनों दलों के लोगों का आपस का सम्पर्क छूट जायेगा। यद्यपि श्री विट्ठलभाई काउंसिल जाने वालों में थे और उस पक्ष का ज़ोरों से समर्थन कर रहे थे तथापि उस वक्त वे नागपुर गये और वहां सरदार वल्लभभाई पटेल के साथ ठहरे और सत्याग्रह को सफल बना कर ही लौटे। उनके देश प्रेम का एक और उदाहरण मुझे मिला था। वे उस सिविलडिसओबीडियन्स कमेटी के अध्यक्ष थे जो सारे देश में घूम घूम कर लोगों की राय ले रही थी कि लोग सत्याग्रह के लिये तैयार हैं या नहीं। दूसरे सदस्यों के साथ मेरे सूबे मे पटने में भी वे गये पर वहां पर कुछ ऐसे लोग थे जिनकी संख्या तो बहुत थोड़ी थी पर जो काउन्सिल के पक्ष में थे। जो काउन्सिल के पक्ष में थे और जो लोग उसके विरोधी थे उन्होंने श्री विट्टलभाई के सामने अपना अपना बयान दिया। उसके बाद एक सज्जन जो दूसरे पक्ष वाले थे आये और विपक्षियों की उन्होंने शिकायत करनी शुरु की। श्री विट्ठलभाई इस शिकायत को बर्दाश्त नहीं कर सके। वह अपने वक्त के एक बड़े वकील भी थे और जिरह करने मे पक्के थे। उस सज्जन से इस तरह उन्होने जिरह की कि वह शरमिन्दा होकर चले गये। मैंने देखा कि यद्यपि वह हम लोगों से असहमत थे और जो शिकायत करने वाले थे उन्ही के पक्ष में थे पर जब उन्होंने देखा कि वे सज्जन ऐसी बात कर रहे हैं जिससे देश का नुकसान होगा, जिससे देश का भला नहीं हो सकता है, तो वह उस बात को बर्दाश्त नहीं कर सके।

मुझे एक दूसरी बात भी याद है। १९३० का सत्याग्रह चल रहा था। महात्मा जी गिरफ्तार हो गये थे। उस वक्त वह एसेम्बली के स्पीकर थे। उन्होंने स्पीकरी से इस्तीफा देकर आन्दोलन में शरीक होने का निश्चय किया। उस समय वह पटने में थे। उन्होंने एक बड़ी सार्वजनिक सभा में लोगों को बहुत ही प्रोत्साहन दिया। मुझे इस बात का दुःख है कि उसके बाद श्री विट्टल भाई से मेरा संपर्क नहीं हुआ। बीच में कोई ऐसा अवसर मुझे नही मिल सका। पटने में उन्होंने बहुत ही ज़ोरदार भाषण दिया और इस तरह से लोगों को प्रोत्साहन दिया कि सूबे में जो काम तेज़ी से चल रहा था उसमे और भी तेज़ी आ गयी। उन्होने कहा था कि मैं हिन्दुस्तान की एसेम्बली का पहला स्पीकर हुआ हूं। इंगलैंड में जब कोई स्पीकर अपना समय पूरा करके आराम करने जाता है तो उसको पीयरेज मिलती है और पेन्शन मिलती है। मुझे इस काम को छोड़ने पर जेल मिलेगी। मेरी पीयरेज जेल में ही है और मैं वहां ही आराम करूंगा। उसके थोड़े ही दिनों के अन्दर वह जेल गये जहां जैसा आपने कहा है उनका स्वास्थ्य ऐसा बिगड़ा कि वह फिर सम्भाला नही जा सका। जो काम उन्होंने स्पीकर होकर किया उसके सम्बन्ध में बहुत और लोग बहुत कुछ कह सकते हैं। जो उस समय एसेम्बली के मेम्बर थे वे जानते हैं कि जिस बुद्धिमत्ता का परिचय उन्होंने उस समय

दिया शायद ही कोई दूसरा स्पीकर अब तक उसका मुकाबला कर सका हो। उस समय हमारे सभी विरोधी थे; गवर्नमेन्ट विरोधी थी, वायसराय जिसके हाथों में सारी शक्ति थी वह विरोधी थे और एसेम्बली के अन्दर एक बड़ा दल हमारे विरोध में था। स्वराज पार्टी के लोगों की संख्या इतनी नहीं थी कि वे कोई खास काम कर सकते। ऐसी हालत में और इस बात का ध्यान रख कर कि उनको कोई पक्षपाती न कहे और किसी एक पक्ष के साथ पक्षपात न हो उन्होंने जो काम किया और गाढ़े वक्त में हमें इस खूबी से बचाया कि उसे देख कर विरोधी भी उनकी चतुरता, उनकी बुद्धिमत्ता का लोहा मानने लगे। आजकल हमारा नया संविधान बना है। उसमें हमने इस बात को साफ करके रख दिया है कि हमारे जो लेजिस्लेचर होंगे, चाहे वह पार्लियामेन्ट हो या प्रान्तीय एसेम्बली हो, उनका दफ्तर उनका सेक्रेटेरियट पार्लियामेन्ट के अधीन होगा न कि गवर्नमेन्ट के। आज यह साधारण बात मालूम होती है। पर इस बात को कायम किया विट्ठल भाई ने। इसके लिये उनको उस समय के अधिकारियों से झगड़ना पड़ा और आहिस्ता आहिस्ता अलग सेक्रेटेरियट कायम करवाया जिस पर उनका अधिकार था। पर जो काउन्सिल आफ स्टेट उस ज़माने में थी उसका सेक्रेटेरियट गवर्नमेन्ट के मातहत रहा और १९४७ मे जिस समय काउन्सिल आफ स्टेट खत्म हुआ उस समय तक उसका अपना स्वतन्त्र सेक्रेटेरियट नहीं था। दो चार बातें उनकी स्वतन्त्रता त्याग और देश प्रेम की परिचायक हैं। इनसे आप समझ सकते हैं कि उन्होंने देश के लिये कितना काम किया। आज इस बात की ज़रूरत है कि ऐसे महान् पुरुष ने जो हमको विरासत दी है उसे हम कायम रखे। मैं मानता हूं कि उस समय जितने त्याग और परिश्रम की आवश्यकता थी उससे कम त्याग और परिश्रम की आवश्यकता आज नही है। मैं आशा करता हूं कि देश के लोग इस परिस्थिति मे उसी तरह से उत्तीर्ण होंगे जिस तरह से वह हुए थे।

मैं कारपोरेशन का और आप सब भाई और बहनों का आभारी हूं कि आपने मुझ यह आदर दिया।

———

सत्याग्रह आश्रम

तारीख १४-१०-५० को साबरमती आश्रम में आश्रमवासियो के बीच राष्ट्रपति जी ने भाषण देते हुए कहा—

बहनो और भाइयो,

मैं बहुत दिनों के बाद इस स्थान पर आया हूं और यहां आने पर बहुत सी पुरानी स्मृतियां याद आ रही है जिनकी वजह से अपने को सम्भालने मे असमर्थ हूं। जिस स्थान पर मै बैठा हुआ हूं न मालूम कितने दिन यहां पर पूज्य बापू बैठे होंगे। वह दरवाजा जो खुला दीख रहा है और उस के अन्दर जो मूर्ति नज़र आती है वह

पर उस जमाने में नहीं था। इस वजह से यहां की शक्ल कुछ बदल गयी है। पूज्य बापू यहां से चले गये थे किन्तु उनका प्राण इस आश्रम में था क्योंकि यह उनका पहला काम है जो भारत में उन्होंने शुरू किया। यहां पर वह आ गये थे और इसे अपने पुत्रवत् पाला था, बनाया था और चलाया था। मुझे याद है कि आज से ३२ वर्ष पहले १९१८ में मैं पहले पहल यहां आया था। उस वक़्त यहाँ इतनी इमारतें नहीं थीं। कई वर्ष तक पूज्य बापू यहां थे, एक वर्ष तो जेल में थे उन दिनों जब बापू यहाँ रहा करते थे मैं आया करता था। उस वक़्त में और आज में यहां बहुत अन्तर पड़ गया है। इसे सभी लोग देख सकते हैं। उस वक़्त जो लोग यहां थे उन में से बहुत ही कम लोग रह गये हैं। बहुतेरे तो इस संसार से चले गये और जो बचे भी हैं वे दूसरी जगहों में इस काम को लेकर चले गये और उस काम को चला रहे हैं। बापू का विचार भी ऐसा ही था और उसी उद्देश्य से यह आश्रम क़ायम किया गया था कि यहां से लोग तैयार होकर सारे देश में फैलेंगे और सभी जगहों में जो बापू की शिक्षा है लोगों तक पहुचायेंगे। काफ़ी उम्मीद लेकर उन्होंने इस आश्रम को बनाया था। कोई काम जो वह दूसरों से करवाना चाहते थे अपने जीवन से ही शुरू करते थे। आज भी कुछ भाई उस काम को कर रहे हैं जो उन्होंने अपने सामने रखा था और मैं आशा करता हूं कि वह काम आगे बढ़ेगा।

हम आज देश में स्वतंत्रता प्राप्त कर चुके हैं। जो व्रत पूज्य बापू ने लिया था उसे उन्होंने अपने रहते रहते पूरा किया। १९३० के साल में जब बापू यहां से निकले थे और डांडी के लिये कुछ भाई बहनों के साथ रवाना हुए थे उस वक़्त उन्होंने कहा था कि स्वराज ले कर ही इस आश्रम में आऊंगा नहीं तो नहीं आऊंगा। यही कारण था कि जब १९३० में सत्याग्रह का काम समाप्त हुआ और स्वराज नहीं मिला तो वह यहाँ नहीं आये दूसरी जगह चले गये और जब स्वराज मिल गया और यहां आकर उन के काम सम्भालने का मौक़ा आया तो उस वक़्त हम में पागलपन आ गया और हमने उन को खो दिया। ये सब स्मृतियां याद आती हैं।

मैं आप भाई बहनों से क्या कहूं। आपने जो सेवा का काम उठाया है वह बहुत महान् काम है। आज यद्यपि तरह तरह की हवाएं उठ रही हैं तथापि मैं मानता हूं कि बापू ने जो शिक्षा हमें दी है और संसार को दी है यानी सत्य और अहिंसा की शिक्षा उस पर कितना भी तूफान क्यों न आये वह कुछ न कुछ तो बनी रहेगी ही। उसी में इस देश का कल्याण है और संसार का भी कल्याण है।

जब बापू चले गये तो आपने इस आश्रम को हरिजन आश्रम बनाया। वह काम आज भी हो रहा है। मैं आशा करता हूं कि जिस उद्देश्य से आपने यह हरिजन आश्रम बनाया उसे आप पूरा करेंगे। बापू चाहते थे कि हरिजन शब्द भी यहां से उठ जाये और जब वैसा होगा तभी वह समझेंगे कि देश की सेवा उन्होंने की। जब तक हरिजन आश्रम की जरूरत रहती है, जब तक इस काम को करने की

ज़रूरत रहती है उस समय तक इसे समाप्त नहीं समझना है। इसे अभी आप सब के परिश्रम और तपस्या की ज़रूरत है। आप को बापू का आशीर्वाद प्राप्त है। आप ऐसे स्थान पर बैठे हैं जिसका कण कण बापू के त्याग और तपस्या से भरा है। मुझे आशा है कि आप उससे लाभ उठायेंगे और इस काम को जारी रखेंगे।

अहमदाबाद में नागरिक अभिनन्दन

तारीख १४-१०-५० को अहमदाबाद कारपोरेशन तथा अहमदाबाद ज़िला लोकल बोर्ड द्वारा दिये गये अभिनन्दन के जवाब में राष्ट्रपति जी ने कहा—

अहमदाबाद नगरपालिका के प्रमुख, अहमदाबाद जिला लोकल बोर्ड के अध्यक्ष, बहनो और भाइयो,

जैसा आपने कहा है मै अहमदाबाद के लिये कोई नया आदमी नहीं हूं। मैं इस शहर में आज से बहुत वर्ष पहले भी आया था और जब तक गांधी जी साबरमती आश्रम मे रहते थे तो कई बार आया जाया करता था। उनके यहां से चले जाने के बाद मेरा आना जाना कम हो गया पर तो भी मै यहां आया हूं। मुझे इस बात से आज आश्चर्य और खुशी है कि उस समय जो बहुत सी चीज़ें मै ने नहीं देखी थी आज देख रहा हूं और उस से भी संतोष है कि यहां की शक्ल बहुत बदल गई है। अभी थोड़ी देर पहले जब साबरमती आश्रम में मै गया था वहाँ मैंने कहा था कि वहाँ की शक्ल बहुत कुछ बदल गई है। उस समय आश्रम के आस पास कोई मकान नहीं थे। ब्रिज के नज़दीक दो-चार मकान थे। पर आज तो बहुत सी इमारतें बंन गई हैं और यूनीवर्सिटी भी बन गई है जिसे अभी मै देखकर आया हूं। इस तरह एक नया शहर वहां बस गया है। मुझे वह समय याद आता है जब सरदार वल्लभभाई इस शहर की नगरपालिका के अध्यक्ष थे। उस वक़्त की और आज की यहाँ की म्युनिसिपैलिटी में बहुत अन्तर पड़ गया है। मै समझता हूं कि यहाँ के गांवों की भी वह हालत न होगी, वहाँ भी अन्तर पड़ गया होगा। मुझे देखने का तो मौक़ा नहीं मिला है मगर यह बात अहमदाबाद शहर और अहमदाबाद ज़िले की ही नहीं है। अगर आप विचार करें कि आज से तीन चार वर्ष पहले सारा देश क्या था और आज क्या हो गया है तो मालूम होगा कि कितना बड़ा अन्तर हो गया है। और जिसका अन्दाज़ शायद हम पूरी तरह से नहीं लगा सकते हैं। लोग कभी कभी यह भूल भी जाते हैं कि हमारे यहां कितना बड़ा अन्तर हो गया है। उस वक़्त महात्मा जी थोड़े ही दिन पहले दक्षिण अफ्रीका से आए थे और थोड़ा बहुत काम उन्होंने शुरू किया था। उसके दो तीन वर्ष बाद असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ जो हमारे लिये स्वराज्य का कारण बना। लेकिन उसकी शुरुआत उसी वक़्त हुई।

महात्मा जी ने भारत को ही नहीं, सारे संसार को एक ऐसा आदर्श, एक ऐसा हथियार दिया जिसको, अगर संसार कल्याण चाहता है तो, उसे आज भी मानना पड़ेगा, स्वीकार करना पड़ेगा, उसे अपने हाथों में लेना पड़ेगा। मेरा तो अपना विचार यह है कि अगर मानव इस हथियार को छोड़कर उन दूसरे प्रकार के हथियारों पर भरोसा करेगा, जो आज तक इस्तेमाल होते आये हैं, तो उसका भविष्य केवल बर्बादी से भरा होगा, केवल विनाशमय होगा। इसलिये जब मैं यह देखता हूं कि उस समय से आज तक भारत की स्थिति में इतना बड़ा अन्तर पड़ गया है तो अहमदाबाद ने जो तरक्की की है वह कोई आश्चर्य की बात नहीं रह जाती। आज से तीन साल पहले हम ने एक प्रकार से बेज़ाब्ता स्वराज्य पाया और ८, ९ महीने पहले बाज़ाब्ता स्वराज्य हासिल किया है। १९४६ के दिसम्बर के महीने में हमने पहले पहल अपने हाथ में शासन सूत्र लेने का मनसूबा किया। किसी भी देश की तरक्की के लिये तीन चार साल का समय बहुत बड़ा समय नहीं होता। और खासकर जब हम इस बात को ध्यान मे रखते हैं कि ऐसे समय जब देश पर तरह तरह की मुसीबतें, तरह तरह की कठिनाइयां आ रही थीं। उनका मुकाबला करना, उन पर विजय प्राप्त करना आसान बात नहीं थी। यदि आप इन बातों को ध्यान में रख कर सोचेंगे और उस प्रकार सोचना ज़रूरी है तो आप को मालूम होगा कि तीन चार वर्ष मे देश ने कुछ कम काम नहीं किया है। आजकल हम जहां कहीं जाते हैं और जिस से कहीं मुलाकात होती है तो बहुत करके शिकायत ही सुनने में आती है। लोग कहते हैं कि देश मे अभी तक महंगी है, चीज़ों के दाम अभी तक बढ़े हुए हैं, कण्ट्रोल अभी तक जारी है, लोगों को खाने का कष्ट है और तरह तरह के कष्ट हैं; साथ ही लोग यह भी कहते हैं चोरबाज़ारी भी चल रही है, रिश्वत भी चल रही है और इस तरह की और और बातें भी कही जाती हैं। ठीक है हमें इन पर ध्यान देना है। अभी बहुत सी शिकायतें मौजूद हैं और इन शिकायतों को दूर करना गवर्नमेंट का काम है; और आप विश्वास रखें कि उनको दूर करने का प्रयत्न सरकार कर रही है। इसमें कहां तक उनको सफलता मिलती है, या नहीं मिलती है, यह तो जनता के सहयोग पर निर्भर करेगा। किसी भी देश की गवर्नमेंट वहां के लोगों से अलग नहीं हो सकती है, विशेष करके अगर वह ऐसी गवर्नमेंट है जो प्रजा के प्रतिनिधि के रूप में काम करती है। प्रजा के प्रतिनिधि के रूप में काम करने का अर्थ है कि जैसी प्रजा होगी वैसी ही गवर्नमेंट भी होगी। अगर प्रजा सच्ची है, अगर प्रजा में ईमानदारी है, प्रजा में कौशल है, अध्यवसाय है तो वहां के प्रतिनिधि भी वैसे ही होंगे। अगर प्रजा में उन चीज़ों की कमी है तो उसके प्रतिनिधि भी उन दोषों से युक्त होंगे जो प्रजा मे हैं। इसलिये आज जो सारी कठिनाइयां हैं, दिक्क़तें हैं, और जिनका दोष गवर्नमेंट के सर पर मढ़ा जाता है उनके लिये सभी दोषी हैं; और उनके लिये जो लोग केवल गवर्नमेंट को दोष देते हैं वे यह भूल जाते हैं कि आखिर गवर्नमेंट भी उन्हीं की गवर्नमेंट है। आज भी देश के लोग गवर्नमेंट को वैसा ही समझते हैं जिस तरह से ब्रिटिश गवर्नमेंट को समझते थे। लोग आज भी समझते हैं कि गवर्नमेंट पर एक चोट लगा देना ही उनका कर्तव्य है; पर

लोगों को यह समझना चाहिये कि गवर्नमेंट के जो जिम्मेदार लोग हैं वे तो जनता के ही लोग हैं। गांधी जी ने हमको यही सिखाया है कि दूसरों की तरफ ज्यादा बुरी निगाह से देखना, दूसरों की ग़लती निकालना अच्छी बात नहीं होती है। मनुष्य को अपनी कमज़ोरी पर अधिक ध्यान देना चाहिये तभी वह अपने को तथा दूसरों को भी सुधार सकता है। यद्यपि आज मैं एक ऐसे स्थान पर हूं कि आप कह सकते हैं कि गवर्नमेंट के सब कामों की एक प्रकार से जिम्मेदारी मेरी है। तो भी मैं आप से यह कहना चाहता हूं कि लोगों में कमज़ोरी है और वह बड़े पैमाने पर है और उस कमज़ोरी को बिना दूर किये देश का काम न चलेगा। जब वे कमज़ोरियां दूर हो जायेंगी तब हम भी दुरुस्त हो जायेंगे। लोग आज चोरबाज़ारी की शिकायत करते हैं। आखिर चोरबाज़ारी में एक आदमी का हाथ नहीं होता। उस में कई प्रकार के लोग होते हैं और उन सब का हिस्सा उसमें होता है। जो लोग चोरबाज़ारी में माल बेचते हैं, पैसे कमाते हैं, क्या उसमें उन्हीं का हाथ है और जो खरीदते हैं उनका हाथ नहीं है? अगर हमको राशन में केवल ६ छटांक मिलने वाला है और १० छटांक से कम में हमारा काम नहीं चलता है तो ६ छटांक हम राशन में लेते हैं और बाकी हम चोरबाज़ारी में खरीदते हैं। क्या जो इस तरह से खरीदते हैं वे दोषी नहीं हैं? इन सब प्रश्नों को हम इस निगाह से देखें कि इनमें हमारा क्या हिस्सा है और दूसरे का क्या हिस्सा है तो हम भी कुछ सुधर सकते हैं। मैं यह नहीं कहता कि गवर्नमेंट को इस ओर ध्यान नहीं देना चाहिये। गवर्नमेंट को ज़रूर इस पर विचार करना चाहिये। जो गवर्नमेंट इन चीज़ों को नहीं देखती वह निकम्मी है। मगर आपको गवर्नमेंट की मदद करनी चाहिये और गवर्नमेंट की मदद आप सब से अच्छी तरह से तभी कर सकते हैं जब आप अपने कर्तव्य को पूरा करें।

ये तो ऐसी चीज़ें हैं जिनके सम्बन्ध में लोग बहुत कुछ अक्सर कहा करते हैं। वे उन दिक्कतों को नहीं देखते हैं जिनका हम को मुकाबला करना पड़ा है। और अब मालूम पड़ा है कि ईश्वर की दया से उन मुसीबतों से हम किसी तरह बचकर निकले हैं। संसार के इतिहास में कोई दूसरा ऐसा उदाहरण नहीं मिलेगा जब एक नयी पैदा हुई गवर्नमेन्ट के सर पर ८० लाख आदमियों का बोझ इस तरह से पड़ा हो। हमारी गवर्नमेन्ट के सर पर यह बोझ उसी दिन पड़ा जिस दिन उसका जन्म हुआ था। यद्यपि यह नहीं कहा जा सकता है कि गवर्नमेन्ट ने इन्तज़ाम पूरा कर लिया है, जितने उजड़े लोग थे उनके रोज़गार का प्रबन्ध हो चुका है, पर तो भी इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि जो कुछ गवर्नमेन्ट में शक्ति थी, जो कुछ उसके पास धन जन था उससे जो कुछ हो सकता था वह सब लगाकर उन लोगों की उसने सेवा करने का प्रयत्न किया है। यदि देश की दूसरी बातों पर आप ध्यान दें तो आपको मालूम होगा कि देश में और विदेश में इन तीन वर्षों में हम ने क्या क्या सफलता प्राप्त की है। आपको मालूम है कि अभी हम तीन वर्ष के बच्चे हैं मगर इतना छोटा बच्चा

होते हुए भी आज संसार के देशों में हमारी गिनती हो रही है। यद्यपि हमारे पास इतनी शक्ति नहीं तो भी हमारी प्रतिष्ठा सभी देशों में हो रही है। हम ने गान्धी जी के रास्ते पर चलकर स्वराज्य प्राप्त किया है और संसार के लोग भी देखना चाहते हैं, जानना चाहते हैं कि हम लोग कितने और किस तरह के गान्धी जी के भक्त हैं और उनके बताये रास्ते पर कहाँ तक चलते हैं। हमारे देश में और देशों के प्रतिनिधि है। आप किसी की ज़मीन को, किसी की सम्पत्ति को न हड़पें, किसी के साथ जुर्म न करें जिसमें शान्ति कायम रहे और दूसरे देशों में जो हमारी इज्जत है वह कायम रहे। यद्यपि हमारे पास अधिक धन, फौज, लश्कर मौजूद नहीं है तो भी सारे संसार मे आज हमारी बड़ी इज्जत हो रही है।

देश मे इन तीन वर्षों के अन्दर क्या हुआ इसी एक बात से आप समझ सकते है कि कितना बड़ा काम हुआ है। जिस समय ब्रिटिश गवर्नमेन्ट यहाँ से गयी उस समय देश के अन्दर चन्द सूबे ऐसे थे जिन पर अपने प्रतिनिधियों द्वारा ब्रिटिश गवर्नमेन्ट शासन कर रही थी। उनके अलावा ६०० रियासतें ब्रिटिश गवर्नमेंट छोड़ गई थी जिनमें छोटी छोटी रियासतो से लेकर बड़ी बड़ी रियासतें थी। उनमें उनके राजा लोग अपने तौर से काम कर रहे थे। जाने के वक्त ब्रिटिश गवर्नमेंट ने उनको कह दिया कि अब वे स्वतन्त्र हैं। ब्रिटिश गवर्नमेंट के साथ जो उनका सम्बन्ध था वह खत्म हुआ और वे जैसा चाहें करें अगर वे चाहते तो अलग अलग रियासतें हो सकती थीं; उनमें से कुछ मिलकर अपना अलग राष्ट्र कायम कर सकते थे और भारत से अलग रहने का प्रयत्न कर सकते थे। शायद कुछ लोगों को ऐसी आशा रही होगी कि वे ऐसा करेंगे। मगर ईश्वर की दया से वहां के राजाओं ने निश्चय कर लिया कि भारत को एक कर लेना चाहिये और आज यूनियन में सब के सब शामिल हो गये हैं। आज यद्यपि भारत का एक टुकड़ा एक हिस्से में और दूसरा टुकड़ा दूसरे हिस्से में भारत से अलग हो गया है पर तो भी, आज भारत इतना बड़ा है जितना कि ऐतिहासिक काल में एक छत्र के नीचे कभी नहीं हुआ। आज भारत एक छत्र राज के अन्दर दक्षिण में कन्याकुमारी से उत्तर हिमालय तक और पूर्व में कामरूप से लेकर पश्चिम में द्वारिका तक एक है। यहां बड़े बड़े बादशाह हुए, बड़े बड़े चक्रवर्ती राजा हुए, मगर ऐतिहासिक काल में एक छत्र के नीचे इतना बड़ा भारत कभी नहीं था। यह चीज कोई छोटी चीज़ नहीं है। जब कोई हिसाब लगाता है तो उसको जमा और नफ़ी दोनों तरफ़ जो कुछ हो लिखना चाहिये, केवल नफ़ी ही नफ़ी लिखकर बैलेन्स नहीं निकालना चाहिये। भारतवर्ष को अभी बहुत कुछ करना है। अभी बहुत मसले उसके सामने हैं। ग़रीबी का मसला अभी हमने हल नहीं किया। अभी जैसा मैं ने शुरु में कहा चीज़ों का दाम बहुत ही ऊंचा है। अभी बहुत तरह की शिकायतें हैं। अभी न मालूम सरहद पर क्या हो जाये। अभी पड़ोस देश से हज़ार कोशिश करने पर भी अच्छा सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सका है। ऐसी दशा में यह ज़रूरी है कि प्रत्येक भारतवासी अपनी सारी शक्ति उस स्वतन्त्रता को क़ायम रखने में

लगावे जिसे हमने हाल में प्राप्त किया है। जो इस काम में सहयोग देना चाहें उनको अपने अपने कर्तव्य को समझ लेना चाहिये। यदि वे अपने कर्तव्यों को पूरा करेंगे तो देश के सारे काम बन जायेंगे। मैं आशा करता हूं कि यहां के लोग उसी तरह जिस तरह वे महात्माजी के रचनात्मक काम में लग रहे हैं आगे बढ़ेंगे और देश के अन्य भागों को प्रेरणा देंगे।

मैं आप सब भाई और बहनों को और विशेषकर नगरपालिका के सदस्यों को उस सम्मान और आदर के लिये जो उन्होंने आज मेरा किया है किन शब्दों में धन्यवाद दूं। मैं समझता हूं कि वह स्वागत किसी एक व्यक्ति के लिये नहीं है बल्कि उस स्वराज्य के लिये है उस स्वतन्त्रता के लिये है जिसका प्रतीक मैं हूं और आपने ही तो मुझे वह प्रतीक भी बनाया है। मैं आशा करता हूं कि आप का यह प्रेम भाव मुझ पर सदा बना रहेगा।

सेवादल को उद्बोधन

तारीख १५-१०-५० को अहमदाबाद में सेवादल के स्वयंसेवकों से राष्ट्रपति जी ने कहा--

श्री कानूजी भाई, सेवादल के संचालक, बच्चो और बच्चियो,

मुझे आज यह दृश्य देख कर बड़ा हर्ष हुआ। अभी कानूजी भाई ने जो सेवादल के संगठन का हाल पढ़ा उसे सुन कर मेरी प्रसन्नता और बढ गयी है। यहां आज ५००० स्वयंसेवक आकर इकट्ठे हुए और गुजरात के सभी जिलों से पहुंचे यह छोटी बात नहीं है। मुझे यह सुनकर कि इस प्रकार की रैली आप हमेशा किया करते हैं और यह देखकर कि सेवा दल का संगठन सेवा के लिए हो रहा है मेरी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। मुझे इसका प्रमाण कि सेवादल की बच्ची और बच्चे सेवा के ध्येय को लेकर आगे बढ़ेंगे पूरा पूरा मिल गया है। मैंने देखा कि एक टोली हाथ में झाड़ लेकर निकली दूसरी टोली कुदाल लेकर तीसरी टोली हंसुआ लेकर। इस तरह गाँव के लोगों के काम में जिन जिन हथियारों की, जिन जिन चीजों की जरूरत पड़ती है उन सब चीजों को लेकर स्वयंसेवक आगे बढ़े हैं। मैं समझता हूं कि उनको जो शिक्षा मिल रही है वह शिक्षा अच्छी है क्योंकि इन सब चीजों के इस्तेमाल के लिये और लोगों में किस तरह से उनके द्वारा शिक्षा दी जा सकती है इस बात की भी उन को शिक्षा दी जा रही है। मैंने स्वयं सेवक दल और जगहों में भी देखे हैं मगर वहां मैंने खेल तमाशे ही अधिकतर देखे। यहां खेल तमाशा भी अच्छी तरह सिखलाया जाता है कसरत भी सिखलायी जाती है, जिससे स्वयंसेवकों का शरीर अच्छा रहे, और उसके साथ साथ उनको काम भी सिखलाया जा रहा है जिसमें यहां से निकलने पर वे देश की अच्छी सेवा कर सकें।

स्वराज हमें मिल गया है मगर देश के बड़े बड़े प्रश्न अभी पड़े हैं जिन को हमें हल करना हैं। जब तक उन प्रश्नों का हल नहीं निकलता तब तक स्वराज

से हमें पूरा लाभ नहीं मिलेगा। सारा देश गरीबी में है। सारे देश के सामने बहुत तरह के प्रश्न उपस्थित है। अभी हमने शासन सूत्र हाथ में लिया है। और उस सूत्र को देश की सेवा में किस तरह लगायें और कहां तक लगायें यह अभी हमें तय करना है। इसलिये आज जरूरत है ऐसे स्वयंसेवकों की जो देश की सेवा को अपना ध्येय बनाकर काम करें। मुझे यह देखकर और भी प्रसन्नता है कि आपने इस स्थान का नाम उन दो भाइयों के नाम पर रखा है जिन्हों ने अहमदाबाद के हिन्दू मुस्लिम दंगों में अपनी जान दे दी थी। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है और मैं आशा करता हूं कि जिस ध्येय की प्राप्ति के लिये उन दोनों भाइयों ने प्राण दिये उस ध्येय को आप हमेशा अपने सामने रखेंगे। इस सेवा दल की प्रत्येक बच्ची और बच्चे इस बात को याद रखें कि इस देश में जितने लोग बसते हैं सभी भाई भाई हैं और सब को एक दूसरे के साथ प्रेम करना चाहिये और अगर कोई मतभेद का मौक़ा कभी आ भी जाये तो आपस में मिलकर तय करना चाहिये। यह हम में से प्रत्येक के लिये परम जरूरी है कि इन बातों को हम सामने रखें। मुझे आशा है कि आपका यह प्रयत्न सफल होगा और जो भाई मेरे बाद आयेंगे उनको आपकी और भी अधिक सफलता देखने को मिलेगी।

मुझे यह जान कर दुख है कि यहां इस नदी में चार भाई डूब कर मर गये। यह संसार है। इस में ये सब बातें होती ही रहती हैं। मुझे खुशी है कि इससे आप के काम में कोई बाधा नहीं आयी। अभी हाल में यहां इतनी बारिश हुई जिससे काफी नुकसान हुआ। देश के दूसरे दूसरे हिस्सों में भी कुछ न कुछ आपत्ति हमेशा आती रहती है, कभी भूकम्प तो कभी बाढ़, कभी अनावृष्टि तो कभी अतिवृष्टि और कभी बीमारी। ऐसी जगहों में आपकी सेवा की ज़रूरत होगी और लोग आपकी सेवा से लाभ उठायेंगे।

ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वह आप सभी भाई बहनों को शक्ति दे कि जो आदर्श आपके सामने आज रखा जा रहा है उसका आप पालन कर सकें।

नडियाड स्टेशन पर अभिनन्दन

तारीख १५-१०-५० को नडियाद स्टेशन पर नडियाद म्युनिसिपैलिटीं, कांग्रेस कमेटी आदि संस्थाओं द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब में राष्ट्रपतिजी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

मैं थोड़ी ही देर के लिये आप से यहां मिलने के लिये आया हूं। आप इतना कष्ट करके यहां आये हैं। मुझे खुशी है कि आप सब का मुझे एक साथ दर्शन मिल सका। आज से करीब ३२ वर्ष हुए जब पहले पहल में गुजरात में आया

था तो पहला शहर जो मैंने देखा था वह नडियाद ही था। जिस वक्त बापू खेडा सत्याग्रह में काम कर रहे थे, यहां के आश्रम में रहते थे और सरदार भी यहां ही थे। उस वक़्त आप के शहर में मैं कई दिन तक ठहरा था। उस वक्त से आज देश मे बहुत अन्तर पड़ गया है। स्वराज मिल गया है। अब आप का धर्म है कि स्वराज को चलायें और इस तरह से चलावें जिसमें सारे देश का कल्याण हो। मैं यहीं आपसे कहना चाहता हूं और आशा रखता हूं कि जो कुछ बापू सिखला गये हैं उसे आप हमेशा याद रखेंगे और उनकी सीख के अनुसार काम करते रहेंगे।

भीमसेवा मण्डल की रजत जयन्ती

दोहद में के भीमसेवा मंडल की रजत जयन्ती के अवसर पर ता० १६-१०-५० को राष्ट्रपति जी ने कहा—

श्री कानजीभाई, बाला साहब खेर, भीमसेवा मंडल के कार्यकर्तागण, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि आज भीम सेवा मंडल की रजत जयन्ती के अवसर पर मैं यहां हाज़िर हो सका। जब मुझ से यहां आने की बात कही गयी तो मैं ने उसे बड़ी खुशी के साथ इसलिये मजूर कर लिया कि मै जानता हू कि इस वक्त सारे देश के अन्दर आदिम जाति के लोग, जो एक बड़ी जाति है, जिस की सख्या दो ढाई करोड़ के आसपास में है, बसते है और उनकी सेवा करना हम भारतवासियों में से प्रत्येक का परम कर्त्तव्य होना चाहिये। अभी आप ने सुना कि किस तरह से इस सेवा मंडल का जन्म आज से २७-२८ वर्ष पहले श्री ठक्कर बापा की प्रेरणा से हुआ। उनकी प्रेरणा ने जो काम उस समय आरम्भ किया वह आज फूलता फलता दीख रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि जो काम उन्होंने दोहद के इलाक़े में शुरू किया वह यहां ही तक सीमित न रह कर आज भारतवर्ष के और और सूबों में उनकी प्रेरणा से जारी हो रहा है और चल रहा है। जहां तक मै जानता हूं शायद ही कोई ऐसा सूबा होगा जहां आदिवासियों की संख्या न हो और वहां उनकी सेवा का कुछ न कुछ काम लोगों ने अपने हाथों में न लिया हो। जहां जहा इस काम को आरम्भ किया गया है वहां के लोगों ने इस बात को समझ कर आरम्भ किया है कि इस कार्य को करना उनका धर्म है। मै एक ऐसे सूबे में रहता हूं जहां आदिवासियों की संख्या जहाँ तक मै जानता हूं हिन्दुस्तान के और सूबों के मुक़ाबले में सब से अधिक है। वहां पर आपके सूबे के मुक़ाबले में काम बहुत कम हुआ है। मगर वहां भी काम ठक्कर बापा की प्रेरणा से, उनकी देखरेख में चल रहा है और मै आशा करता हूं कि वह दिन ब दिन तरक्की करेगा और आगे बढ़ेगा। अब जब कि गवर्नमेंट अपने देश के लोगों के हाथ में आ गयी है और जब हमारे संविधान में भी इसके लिये बहुत कुछ विधान है और एक प्रकार से गवर्नमेंट के लिए लाजमी है कि वह उनकी सेवा का प्रबन्ध करे यह आवश्यक है कि यह काम और भी जोरों से बढ़े और दूसरे सूबों में भी फैले। अभी खेर साहब ने कहा कि संघ और राज्यों की सब विधान सभाओं में आगे दस वर्ष तक आदिमवासियों को अपनी जन

संख्या के अनुपात में प्रतिनिधि भेजने का हक़ होगा । उनके ये प्रतिनिधि उनके दुख सुख की बात इन विधान सभाओं में रख सकेंगे और इस बात का प्रयास कर सकेंगे कि उन्हें जितनी मदद चाहिये उतनी मदद गवर्नमेंट से उन को मिले । उनके लिये गवर्नमेंट की नौकरी में भी स्थान सुरक्षित रक्खे जायेंगे । उनमें से जो योग्य साबित होंगे उनको क़रीब क़रीब उनकी संख्या के अनुपात से स्थान मिलेंगे । उनमें शिक्षा प्रचार करने का प्रयत्न इस प्रकार से किया जायेगा कि उनके ऐसे बच्चे जो ग़रीबी के कारण शिक्षा से वंचित रहते है, शिक्षा से वंचित न रहें । उनको छात्रवृत्ति देकर, पुस्तकों की सहायता देकर, उनको स्कूल फ़ीस से माफ़ी देकर तथा और जितने प्रकार से उन की सहायता की जा सकती है, सहायता की जायेगी जिसमें उनके बच्चे शिक्षा पाकर दूसरों के मुक़ाबले में आ जायें । आपको यह सुन कर प्रसन्नता होगी कि प्रायः सभी जगहों में आज ऐसे कामों में गवर्नमेंट की तरफ़ से काफ़ी पैसे ख़र्च किये जा रहे है । जैसे जैसे काम बढ़ेगा और भी ख़र्च किया जायेगा । जो कुछ सुरक्षित अधिकार उनको संविधान के ज़रिये मिले है वे १० वर्ष के लिये ही है । इसका अर्थ यही है कि १० वर्ष के अन्दर ऐसा प्रयत्न, ऐसी कोशिश होनी चाहिये कि जिसमें वे लोग भी और लोगों के मुकाबले में शिक्षा पा लें और सब लोगों के मुकाबले में और बातें भी सीख लें और उनकी आर्थिक स्थिति भी सुधारी जाये जिसमें सबकी बराबरी में आकर सबका मुक़ाबला कर सकें । यह दस वर्ष की अवधि उनके लिए बड़ी महत्वपूर्ण है जो उनकी सेवा के काम में लगे हुए हैं क्यों कि उनको इन दस वर्षों के अन्दर ही इतना काम करना है, इतनी तेज़ी, इतने उत्साह और अध्यवसाय के साथ काम करना है कि जिसमें इन दस वर्षों के बाद पिछड़ी हुई जाति को किसी की विशिष्ट सेवा की ज़रूरत न रह जाये । इसलिये जो आदिम जाति के लोग भील, कोल, मुण्डा, उराव, सथाल, गौर और अन्यान्य बहुतेरे नाम से भिन्न भिन्न प्रदेशों में मशहूर है उन सभी भाई और बहनो से मेरा निवेदन है कि उनकी जो सेवा की जाये उसे वे स्वीकार करें । जो मदद वे कर सकें वह भी मदद इस सेवा को सफल बनाने के लिए करें । जो दूसरी जाति के लोग हैं वे भी इस सेवा में मदद करे जिसमें उनके, गवर्नमेंट के और आदिम जाति के लोगों के तीनों के प्रयत्न एक साथ त्रिवेणी की धारा बन जायें, ऐसी त्रिवेणी जिसमें स्नान करके सब आदमी एक हो जायें । यह काम महत्व का है और पुण्य का है । सच पूछिये तो यह कार्य दूसरे भारतवासियों के प्रायश्चित का भी है । आज तक आदिम जातियों को पिछड़ा रखने का भारी दोष या पाप, जो आप समझें, बहुत करके भारत-वर्ष के दूसरे भाइयों का ही है । इसलिए इसको प्रायश्चित समझ कर, इसको पुण्य का काम समझ कर उन सब को इसमें पड़ना चाहिये और मदद देनी चाहिये । काम बहुत बड़ा है । हर बड़े काम में, हर महत्ववाले काम में, काम करने वालों की कमी रहती है । इसलिये मैं चाहता हूं कि जिस तरह भीमसेवा मंडल के बहुतेरे भाइयों ने अपना जीवन समर्पण करके यह काम शुरू किया है उसी तरह से इस काम में हमारे देश के नवयुवक केवल एक जगह नहीं, सारे देश में लग जायें और इसे आगे बढ़ा कर १० वर्ष के अन्दर पूरा करें ।

इस रजत जयन्ती का बड़ा महत्व है क्यों कि केवल इस जगह के ही नहीं सारे देश के सेवकों को यहां से प्रेरणा मिली है । मैं ने यहां आना ख़ास तौर से इसलिये स्वीकार किया कि यहां से कुछ प्रेरणा लूंगा और फिर देश के दूसरे भागों के लोगों को कुछ प्रेरणा दे सकूंगा । मैं आशा करता हूं कि आप लोग इस सेवा के काम को सच्ची सेवा का काम समझ कर और पीछे की बातों

को भूल कर सद्भावना के साथ इसमें जुट जायेंगे और जिनसे जो कुछ सहायता हो सकती है वे उतनी सहायता करेंगे जिसमें यह काम पूरा हो सके। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि यहां जितने काम करने वाले हैं और जितने भविष्य में इसमें शामिल होने वाले हैं वह उन सब को सद्बुद्धि और शक्ति दे कि वे उस काम को पूरा कर सकें।

कोआपरेटिव मिल्क यूनियन

ता० १६-१०-५० को खेड़ा डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव मिल्क यूनियन, आनन्द, में राष्ट्रपति जी ने भाषण देते हुए कहा—

बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि मैं आज यहां आ सका और कोआपरेटिव सोसायटी की तरफ़ से दूध के लिए जो कुछ यहां किया जा रहा है उसे देख सका। जब मैं खाद्य मंत्री था उसी समय से इस काम के बारे में बातचीत चल रही थी। मुझे यह जानकर भी बडी प्रसन्नता है कि यह सस्था अब आपके हाथों में आ गयी है और इसके आप के हाथ में आने के बाद आपने इतना काम बढ़ाया है। जो छोटी सी रिपोर्ट पढ़ कर सुनायी गयी है उससे मालूम होता है कि इन तीन वर्षों में इसने कितनी प्रगति की है। पहले जहां पांच सात सौ पौंड रोज़ाना दूध की प्राप्ति थी आज २५००० पौंड की रोज़ाना प्राप्ति हो रही है और आपकी योजना है कि इसको एक लाख पौंड तक पहुंचा दें। अनेकों गांवों के घर घर से दूध इकट्ठा करना, उसे ऐसी स्थिति में रखना जिसमें वह बिगड़े नहीं और दो दिनों के बाद भी उसे उसी स्थिति में लोगों तक पहुंचा कर लोगों की सेवा करना यह काफ़ी मुश्किल काम है। यह बड़े मार्के की बात होगी यदि बम्बई जैसे शहर को, जहां गाय और भैंस नही पाली जाती और जहां बाहर से ही दूध लाना पड़ता है; आप दूध दे सकें। पर इसके साथ ही आप इस बात का भी ध्यान रक्खें कि सारे का सारा दूध बम्बई ही न चला जाये बल्कि खेड़ा के लोगों के बच्चों को भी उसका कुछ हिस्सा मिले और आप लोगों के अपने बच्चों की भी ज़रूरत पूरी हो। इस तरह का निश्चय कर लेना चाहिये कि अगर किसी घर में चार सेर दूध होता है तो कम से कम एक दो सेर उस घर के लोगों को भी मिले और बाक़ी बम्बई शहर को भेजा जाये जिससे यहां के लोगों का भी स्वास्थ्य सुधरे और बम्बई के लोगों की दूध की ज़रूरत भी पूरी हो।

दूसरी चीज़ जिसे मैं बराबर कहा करता हूं और जहां जहां मुझे मौक़ा मिलता है वहां कहता हूं वह यह है कि भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश है और यहां की कृषि बैलों पर निर्भर करती है। इसलिए जहां जहां संभव हो पशुपालन का काम किया जाना चाहिये जिसमें हमारी गायों और बैलों की नस्ल सुधरे और अच्छे से अच्छे बैल और अधिक से अधिक दूध भी मिले। मैंने यहां पर दरियाफ्त किया कि भैंसों के पाड़ों का क्या किया जाता है? हमारी तरफ़ भैंस के बच्चे को पाड़ा कहते हैं, मालूम नहीं यहां क्या कहा जाता है। गायों के बछड़ों को तैयार होने

इर हम हल में जोतते हैं, गाड़ी में जोतते हैं, लोग उनसे हर प्रकार का काम लेते हैं। भैंस के पाड़ों से कहीं कहीं काम लिया जाता है और कहीं कही नही लिया जाता है। भारत के एक भाग में पाड़े जोते जाते हैं तो दूसरे भाग मे भी जोतकर देखना चाहिये कि वे कैसा काम करते है और जहा उनको हल में जोता जाता है वहा उन्हे गाड़ी मे भी जोतकर देखना चाहिये। लेकिन सबसे अच्छा काम तो यह है कि हम गायो की नस्ल इस प्रकार से सुधारें कि हम को अधिक से अधिक दूध भी मिले और अच्छे से अच्छे बैल भी मिलें। अन्न के साथ साथ दूध की भी आवश्यकता है। अभी देश मे दूध की कमी है। यहा जितनी भैसे है उनके अनुपात मे दूध बहुत कम होता है। इस देश मे जितने पशु हैं और देश मे नही है लेकिन उन देशो के मुक़ाबले में यहा बहुत कम दूध होता है और इसलिए यहा दूध की कमी रहती है। इसलिए यह ज़रूरी है कि पशुओ की नस्ल सुधारी जाये। जब तक नस्ल नही सुधरेगी, दूध की कमी दूर नही होगी। पशु को चारा दाना देने से भी दूध बढ जाता है लेकिन यहा तो अन्न की भी कमी है। इसलिये जब तक यहां पशुओं की नस्ल नहीं सुधारी जायेगी तब तक यहा दूध की कमी बनी रहेगी और यह प्रश्न हल नही हो सकेगा। इसलिये मै तो यह चाहता हू कि जहां तक हो सके गोशालाये बने और गो सेवा का काम जोरों से चले जिसमे दूध भी मिले और बैल भी मिले।

केवल गुजरात मे ही गाय के बजाय भैंस नहीं पाली जाती। मै ने देखा है कि नागपुर में भी अधिकतर भैंस से ही काम चलता है और वहा के लोग भी भैस का ही दूध पसन्द करने लगे है क्योंकि भैंस का दूध अधिक मीठा होता है। वहां के लोग तो गाय का दूध पीना पसन्द भी नही करते। पर हमारी तरफ लोग भैंस का दूध पसन्द नहीं करते हैं। हो सकता है कि वहा के लोगों की पाचन शक्ति कमजोर हो और वे भैंस का दूध न पचा सकते हो। इसलिये उधर पीने के लिए गाय का दूध इस्तेमाल होता है और दही और घी के लिए भैस का। इसलिये हमारे प्रान्त में गाय और भैंस दोनों को ही लोग पालते हैं। वहा दोनो से दो काम लिये जाते है। भैस के दूध से दही बना कर खाते है, घी निकालते है और गाय का दूध दूध के रूप मे ही अधिक खर्च हो जाता है। मै समझता हू कि यह भी उतना अच्छा नहीं है जितना यह अच्छा है कि केवल गाय से ही काम चल जाये। आपसे मेरा निवेदन है कि आप कोआपरेटिव खोलकर जब गांवों में काम चलायें तो इस ओर भी ध्यान दे कि क्या करने से हमारा ज्यादा लाभ और नफ़ा है।

मुझे यह देख कर बड़ी प्रसन्नता है कि गांवों के लोगो के घर तक पहुचकर उनको पशु-पालन मे सहायता करने का आप प्रयत्न करते हैं। आपने उनके लिये अच्छे मकान बनवा दिये है तथा उनके लिये अन्य प्रबन्ध किया है अगर उनके बच्चे बीमार पडेंगे तो आप डाक्टर को ले जाकर बच्चे को दिखलायेंगे और अगर उनके पशु बीमार होंगे तो आप उनकी चिकित्सा करा देंगे। मै समझता हू कि जो मेम्बर है उन्ही के लिए यह किया गया है। लेकिन यह काम ऐसा है कि इसे बढ़ाना चाहिये। जितने देश में आदमी है उन सब के लिये आज भी डाक्टरी इन्तज़ाम नही है। आपने पशुओ के लिये भी यह इन्तजाम किया है यह आश्चर्य की बात है। मैं आशा करता हूं कि आपका यह काम आगे बढ़ेगा।

चारे का प्रश्न बहुत कठिन प्रश्न है। भैस अधिक चारा खाती है। एक गाय जितना खाती है उससे डेढ़ा, दुगुना एक भैस खा जाती है। भारत में अन्न की कमी है और विदेशों से करोड़ों

मन अन्न मंगाना पड़ता है और सौ सवा सौ करोड़ तक रुपये बाहर भेजने पड़ते हैं। अगर हमें अपने यहां अन्न पैदा करना हो और जितना यहां अन्न पैदा होता है उससे अधिक पैदा करना हो तो जितनी जमीन खेती में अभी है उसके अलावा और अधिक जमीन में खेती करनी होगी। अगर हम पशुओं के लिए चारा भी पैदा करें तो दोनों में झगड़ा पैदा होने का डर बना रहेगा। आज इस चीज की जरूरत है कि हमारे यहां जो चारा पैदा होता है उसको हम ऐसे रूप में रखें कि उसके सूख जाने के बाद भी पशु उसको खा सकें और उससे अधिक लाभ उठा सकें। यह सलाज के जरिये से हो सकता है। मैं ने सुना है कि इसे पशु अधिक पसन्दगी से खाते हैं और उससे शायद दूध में भी बढ़ती होती है। यह इन्तजाम बहुत सुन्दर है। मैं चाहता हूं कि जहां जहां यह हो सके इसे हर मुमकिन तरीके से तैयार करना चाहिये जिसमें पशु आराम से रह सकें।

दो तीन वर्ष के अन्दर आपने जितना काम किया है उसके लिये मैं आपको बधाई देता हूं। मैं आशा करता हूं कि गाय के सम्बन्ध में मैं ने जो कहा है उस पर आप ध्यान देंगे। बहुत बहुत धन्यवाद।

ऐग्रीकल्चरल इन्स्टीट्यूट

ऐग्रीकल्चरल इन्स्टीट्यूट, आनन्द का शिलान्यास करते समय ता० १६-१०-५० को ११-३० बजे दिन में राष्ट्रपतिजी ने कहा--

माननीय श्री मुन्शी साहब, माननीय श्री बाला साहब, बहनो और भाइयो,

आपने यह ठीक समझा है कि मेरी विशेष दिलचस्पी कृषि के काम में और गोपालन में है। मैं एक गांव का रहने वाला हूं। यद्यपि कार्यवश अपने जीवन का अधिकांश भाग मुझे शहर में ही बिताना पड़ा है और अभी भी बिताना पड़ रहा है पर तो भी मेरा सम्पर्क गांव से कभी नहीं टूटा है। जब कभी दो चार दिनों की छुट्टी मिलती है तभी मैं गांव चला जाता हूं और वहां से कुछ जीवन ले कर फिर शहर में आता हूं। इस लिये जो गांव की चीजें हैं उन के साथ मेरा प्रेम है, रस है, दिलचस्पी है और गांव की चीजों को मैं सब से बढ़ कर चाहता हूं।

खेती और पशु इन दोनों का एक दूसरे के साथ इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि एक के बिना दूसरा चल ही नहीं सकता है। इस लिये आप ने एग्रीकल्चरल कालेज और उस के साथ-साथ गोसेवा का जो एक संघ दोनों कामों के साधने के लिये बनाया है वह बहुत ही अच्छा किया है। मैं आशा करता हूं कि इस से दोनों की भलाई होगी, दोनों का कल्याण होगा, और दोनों ही उन्नति कर सकेंगे। जैसा मैं ने पहले कहा है, हमारे देश को कृषि प्रधान देश कहा जाता है। मगर आज दुःख के साथ हमें इस बात को मानना पड़ता है कि हमारे अधिकांश सूबों में अन्न की कमी के कारण लोगों को बहुत कष्ट उठाना पड़ता है और इस के लिये इन्हें दूसरे देशों का मुंह ताकना पड़ता है, साथ ही विदेशों को इतना धन भेजना

पड़ता है जितना धन आज तक हम ने किसी चीज के लिये विदेश नहीं भेजा । जिस समय महात्मा जी ने स्वराज्य का आन्दोलन आरम्भ किया था उस वक्त विदेशों से सब से अधिक कपड़े का आयात होता था । हमें तब ६०–७० करोड़ सालाना का कपड़ा मंगाना पड़ता था । तब हम सारे देश में आन्दोलन करते थे कि इतने रुपये विदेशों में कपड़े के लिये व्यर्थ भेजे जाते है, इस लिये यहां चर्खे चलाओ और जिस तरह से हो इस धन के बहाव को रोको जिस में लोग सुखी हों । मगर पिछले चार पांच वर्षों से अन्न के लिये हर साल ६०–७० करोड़ नही बल्कि सौ सवा सौ करोड़ रुपये विदेश भेजने पड़ते है। आप समझ सकते है कि इस से देश को कितनी हानि हो रही है, कितना ह्रास हो रहा है। हमारे सामने सब से बड़ा प्रश्न आज यही है कि किस तरह से देश को अन्न से परिपूर्ण कर दें, जिस में हम लोगों को दूसरों का मुह न देखना पड़े और देश में ही खाने के लिये अन्न मिले । आज जहां जहां राशन है वहा किसी जगह पर १२ औंस, और कहीं कहीं ८ औंस प्रति आदमी को प्रति दिन अनाज मिलता है । इतनी कम खुराक खा कर आदमी स्वस्थ नहीं रह सकता है । मगर देश की जैसी हालत है उस में इस के अलावा और कुछ किया ही नही जा सकता है । क्यों आज देश में अन्न की कमी होती है ? क्यों यहां पर्याप्त अन्न नही होता ? क्यों विदेशों से इतना अन्न मंगाना पड़ता है ? इस प्रकार की सारी संस्थाओं का काम है कि वे देश में अन्न की वृद्धि के लिये प्रयास करें। मेरा अपना विश्वास है कि इस देश में अन्न की वृद्धि आसानी से हो सकती है। पर शर्त यह है कि देश के लोग उद्देश्य के पूरा करने मे जुट जायें । लोग यह निश्चय कर लें कि यहां ही पर्याप्त अन्न पैदा करना है । इस मे कोई शक नही कि अगर हम चाहें तो आसानी से पैदावार बढ़ा सकते है । यह कहा जाता है कि इस देश में अन्न की १० फी सदी कमी है और १० फी सदी अन्न की पैदावार बढ़ने से विदेशो से अन्न मंगाने की हमें जरूरत नही रहेगी। इस का अर्थ यह है कि अगर दस मन के बजाय हम ११ मन पैदा कर ले तो बाहर से अन्न मगाने की ज़रूरत नही रह जायेंगी। यह बड़ी चीज़ नही है । तो भी हम लोगों में अकर्मण्यता आ गई है, हम अदूरदर्शी हो गये है, अपनी प्रतिभा को भूल गये है, कि इस बारे मे कुछ नही कर पाते है और हमें इतना अन्न बाहर से मंगाना पड़ता है । इतना मंगाने पर भी मुन्शी साहब परेशान रहते है कि आज यहा घाटा तो कल वहां घाटा। यह इतना बड़ा देश है कि कही अनावृष्टि और कही अतिवृष्टि से तथा प्रकृति के और और प्रकोप से नुकसान होता ही रहता है। फ़सल में गेरुआ रोग लग जाता है और कई प्रकार की दूसरी बीमारी फसल मे लग जाती है जिस की वजह से वह खराब हो जाती है । पर इस बार एक स्थान में नही, देश के बहुत बड़े हिस्से में तरह तरह की विपत्ति आई है । आसाम में भूकम्प से और बाढ़ से फसल को बहुत ही नुकसान हुआ और अभी भी हो रहा है। हमारे सूबे में जहां की ज़मीन बहुत अच्छी है, शुरू में वर्षा की कमी मे और फिर अधिक बाढ़ आने से फसल को बहुत नुकसान हुआ। वहां हस्तनक्षत्र में जब पानी बरसता है तो धान की फ़सल अच्छी होती है। अगर हस्तनक्षत्र में वहां पानी नही होता तो बची खुची फसल भी नष्ट हो जाती है। उस से आगे उत्तर प्रदेश में बाढ़ का प्रकोप रहा, पंजाब में बाढ़ का प्रकोप रहा । यहां अहमदाबाद में सुना है कि एक दिन २६ इंच पानी बरसा और उस के कारण बाढ़ आई, सौराष्ट्र में बाढ़ का प्रकोप आया। इस प्रकार सारे देश में एक साथ ही विपत्ति आई और कुछ जगहों में तो अन्न भी बाढ़ में बह

गया। तो यह इतना बड़ा देश है कि कहीं न कहीं कुछ न कुछ होता ही रहता है। लेकन इस के बावजूद हम को यह देखना है कि यहां का काम न बिगड़ने पावे । मैं समझता हूं कि विज्ञान ने इतनी उन्नति की है और इतना आगे बढ़ गया है कि आज यह संभव है कि इस के ज़रिये देश के किसी भी हिस्से की हालत बिगड़ने न दी जाये और उस की सहायता से अच्छी से अच्छी फ़सल पैदा की जा सकती है। तो आज हमारे देश में इसी चीज़ की कमी है । अभी हम इस चीज़ का अभ्यास नही कर सके है कि उस से लाभ उठा कर अधिक पैदा कर सकें । इस के लिये जो इस प्रकार की सस्थायें होती है उन से आशा रक्खी जाती है कि यहां की स्थिति देख कर, यहां की जैसी आबहवा हो, यहां जैसी फ़सल होती हो, या हो सकती हो इन सब चीजो का ध्यान रख कर प्रयोग द्वारा अनुसधान करें, कि फ़सल कहां तक बढ़ाई जा सकती है । जब ये प्रयोग सफल हो तो उन के फल को लोगों को दिखलाया जाये । लोगों को जब विश्वास हो जाये तो उन को यह भी समझाया जाये कि ऐसा वे अपने खेतों में भी कर सकते है ।

यह धारणा कि हमारे देश के किसान अनपढ़ है और नई चीज़ों को वह सीखना नहीं चाहते हैं और पुरानी रीति से ही चलना पसन्द करते है, मेरी समझ में ठीक नही है । इसके विपरीत जब उन को मालूम हो जाता है कि किसी विशेष चीज़ से लाभ है तो उस चीज़ को वे अपना लेते है । साथ ही यह भी ठीक है कि उन में इतनी चतुरता है कि जो चीज़ केवल अनु-संधान रूप में हो, या जिस चीज़ से लाभ नही हो, उसे वे स्वीकार नही करते । इसे मैं एक मिसाल दे कर बतलाना चाहता हूं। हमारे सूबे मे गन्ने की खेती होती है । गन्ने की खेती यहां बहुत ज़माने से होती आ रही है । कोई भी किसान हो, अगर उस के पास दस एकड़ ज़मीन है तो उस में से कुछ मे वह गन्ना लगायेगा, कुछ मे धान रोपेगा, कुछ मे मकई बोऐगा, जिस में उस का सारा काम चलता रहे। ऊख की खेती वहा पुराने ज़माने से चल रही है। पहले मिलें नही थी तो लोग गुड़ बनाते थे और फिर गुड़ से चीनी बन जाती थी। यह करना कोई नई बात नही है। वह ऊख भी ऐसी थी कि बैलों से कोल्हू मे पेड़ी जाती तो उस से रस निकलता था। जब यह पता चला कि पुरानी ऊख से रस उतना नही मिलता जितना निकलने से उस की चीनी बनाने मे मुनाफा हो । तब गवर्नमेन्ट की तरफ़ से इस बात की कोशिश होने लगी कि नये नये किस्म की ऊख खोज की जाये जो ऐसी हो कि उस से अधिक से अधिक चीनी की पैदावार हो और वह वज़न में भी ज़्यादा पैदा की जा सके और इस प्रकार लोगों को पैसे भी अधिक मिलें। दस वर्षो के अन्दर ही इस दिशा में इतना परिवर्तन हो गया कि अब पुराने किस्म का एक गन्ना भी नही मिलता । उन्होंने नये किस्म के गन्ने को क़बूल कर लिया क्यों कि उस से उन को लाभ हुआ । वे यह भी जान गये कि बैलों के ज़रिये जो रस निकालने की रीति है वह नये किस्म की ऊख के लिये कारगर नहीं है क्यों-कि उस का सूता बहुत मोटा होता है और बैलों को काफ़ी परिश्रम पड़ता है । इस लिये बैलों से पेड़ने के लिये पुरानी ऊख उपजायेंगे। मान लीजिये कि कोई किसान ५ एकड़ ज़मीन में ऊख लगाता है तो घर के इस्तेमाल के लिये १० कट्ठे में वह पुरानी ऊख बोयेगा और साढ़े चार एकड़ में मिल के लिये नये किस्म की ऊख बोयेगा जिसे वह बेचेगा। वहां नये किस्म की ऊख हर साल निकाली जाती है। जैसे कि

इस साल २१३ नम्बर की ऊख निकली तो दूसरे साल ३१३ नम्बर की, तो तीसरे साल ९३ नम्बर की, इसी तरह से हर साल नये किस्म की ऊख निकलती जाती है । इस तरह अब पुराने किस्म की एक भी ऊख सारे सूबे मे नही मिलेगी। लोग घर के इस्तेमाल के लिये थोड़ा बहुत लगाते है पर मिल के लिये नही । इस तरह नये नये किस्म की ऊख लोग आहिस्ता आहिस्ता लेते जाते है। अगर वे देखेगे कि एक किस्म की ऊख मे उन को कट्ठे मे १० रुपये मिलते हैं और दूसरे किस्म की ऊख से १५ रुपये तो दूसरे किस्म की ऊख को वे कबूल कर लेगे। आहिस्ता आहिस्ता वे नये किस्म के गेहूं को लेते जाते है। इसलिये यह विचार ठीक नही है कि जो जो नई चीजें देश मे आती है उन्हे वे अपनाने को तैयार नही है। वे अपने तरीके से बहुत चतुर हैं। जिस में उन को लाभ दीखता है उसे वे कबूल कर लेते हैं। मै चाहता हू कि ऐसी सस्थाये उन को यह दिखलावे कि किस में अधिक लाभ है। वे अगर समझ जायेंगे तो बिना किसी प्रोपेगन्डा के ही और बिना परिश्रम के आप के पास जायेंगे और आप की बात को अपना लेगे।

इस सम्बन्ध में और गाय के सम्बन्ध मे भी आपने देश मे बहुत कुछ करना है। यदि दूध न मिले तो भोजन पर्याप्त पुष्टिकारक नही माना जाता। इस लिये दूध और बैल दोनो के लिये ही गाय की आवश्यकता है। बैलों की आवश्यता तो खास तौर से इस लिये है कि खेतो का काम बदस्तूर चलता रहे। जो नये तरीके से खेती होती है उस का क्या फल होगा अभी मालूम नही ; अभी तो वह आरम्भिक प्रयोग की अवस्था मे है। पुराने ढग की खेती ५०—१०० साल का तो सवाल क्या, ज़माने से होती रही है और खास कर के इस देश मे तो होती ही रही है। दूसरे देशो की बात मै नही जानता। लेकिन हमारे यहा जो पुराना हल है न मालूम कितने जमाने से लोग उसे काम मे ला रहे हैं। हमारी खेती की ज़मीन मे हजारो हज़ार वर्षो से खेती का काम होता आ रहा है। मगर आस्ट्रेलिया, अमेरीका आदि नये देशो मे जहा ऐसे नये तरीके से खेती का काम किया जाता है, जो हमारे मुकाबले मे एक नयी चीज़ है और जहा करीब १०० वर्षो से ही खेती हो रही है यह देखा गया है कि पैदावार बहुत कम हो गई है और जमीन की उर्वरा शक्ति कम होती जा रही है। वैज्ञानिक लोगो को इस का कारण ढूढना चाहिये। उन को यह बात समझ लेनी है कि हमारी पुरानी चीज़ बिल्कुल ऐसी खराब नही है कि हम उसे यूही छोड़ दे। इसे सोच विचार कर ही लोगो ने अपनाया होगा। आज कल जो नयी चीज़े निकली है उन में दो तरीक़े निकले है। एक है मिक्स्ड क्रौप का और दूसरा रोटेशन क्रौप का। यह दोनों भी कोई ऐसी नई बात नही जिन्हे हमारे यहा के लोग न जानते हों। यहां तो इसे सब लोग जानते है। अब यह वैज्ञानिकों को देखना है कि इन से कितना लाभ निकाला जा सकता है और उन की कितनी तरक्की की जा सकती है। हा, यदि नई चीज़ो के रखने से कामयाबी हो सके तो नयी चीज़े भी रखनी चाहिये। पुरानी चीज़ों मे भी तरक़्क़ी की जा सकती है। मसलन हमारे पुराने तरीक़े के हल मे एक फाड़ लगा होता था और वह एक जोड़े बैल से खींचा जाता था। एग्रीकल्चरल इन्स्टीट्यूट, दिल्ली मे मै ने देखा कि उस मे उन्हों ने दो फाड़ लगा दिये है। जहां उस हल से पहले एक जोड़े बैल एक एकड़ ज़मीन जोतते थे

वहीं अब उस से वे दो एकड़ ज़मीन जोतते है । अगर इस तरह की तरक्की की जाये तो हमारा काम हो जायेगा। इसी तरह के छोटे मोटे सुधारों से हमे ज़्यादा लाभ होने वाला है ।

गाय के सम्बन्ध में हमारे लोग जानते है । यह बात नही है कि यह कोई नयी चीज़ है। एक प्रकार से बैल और गाय हमारे देश के लोगों के जीवन में बहुत ऊंचा स्थान रखती है। सच पूछिये तो हमारे लिये उन की ज़रूरत आज और भी बढ गई है । इन चीजों को ध्यान में रख कर नये और पुराने के सम्मिश्रण से जनता अधिक लाभ उठा सकेगी और तरक्की कर सकेगी और देश उन्नति कर सकेगा । इस प्रकार के विकास को संभव बनाना इन संस्थाओं का काम है । आप के इस गोवर्धन के काम में गवर्नमेन्ट से आप को पूरी सहायता मिलती रही है और मिलती रहेगी । दानी लोग भी आप को मदद दे रहे हैं और वैज्ञानिक लोग भी आप की मदद कर रहे है। इसलिये मुझे आशा है कि आप आगे भी तरक्की करते रहेंगे ।

सरदार वल्लभभाई, मुन्शी साहब जैसे और दूसरे लोग भी आप के यहां इस काम में लगे हुए है वे सब इस काम को खूब समझते है। यहा आप सब किसान ही किसान हैं । अगर आप सब मिल जुल कर काम करें तो इस काम को बहुत आगे बढा सकेंगे । मुझे पूरी आशा है कि इस संस्था को सब को पूरी सहायता मिलेगी ।

कामर्स कालेज, आनन्द

वल्लभ विद्यानगर आनन्द में कामर्स कालेज का शिलान्यास करते समय ता० १६-१०-५० को ६-३० बजे शाम को राष्ट्रपति जी ने कहा--

श्री लाल भाई, बहनो और भाइयो,

आज मुझे इस समारोह में शरीक होने का सुअवसर आपने दिया इस के लिये मै आपका आभारी हूं । मेरी इच्छा बहुत दिनों से थी कि यहा जो संस्थायें चल रही है उन को एक बार आकर देखू । साल डेढ़ साल के प्रयत्न के बाद आज यह सुअवसर मिला और आज यहां हाज़िर हो कर इस के शिलान्यास के काम मे थोडा भाग भी ले सका ।

यह एक ऐसा स्थान बनता जा रहा है जिस की तरफ सारे देश के लोगों की आंख रहेगी और लोग यहा से बहुत कुछ प्रेरणा पायेगे । भारतवर्ष गांवों में बसता है। आज तक हमारी शिक्षा जो कालेजो और यूनीवर्सिटियो में होती रही है वह इस प्रकार की रही है कि जो लोग वह शिक्षा पाते है वह एक प्रकार से गांवो से अलग से हो जाते है । इस लिये इस शिक्षा का फल यह हुआ है कि इस ने अपने देश मे ही एक नई जाति पैदा कर दी है और उस जाति के लोग देशी होते हुए भी बहुत बातो मे विदेशी है। आज इस बात की जरूरत है कि हमारी शिक्षापद्धति इस ढंग की बने कि जो अन्तर आज गाव और शहर मे, यूनीवर्सिटी और पाठशाला में है वह अन्तर दूर हो जाये और चाहे वे गांव के हो, चाहे शहर के, यूनीवर्सिटी में पढ़ते हों, या गांव की

छोटी शाला में पढ़ते हों, सब को ऐसी शिक्षा मिले कि सब इस देश के बनें और अपने अपने काम में पटु हों, और साथ ही साथ अपने लिये, अपने घर के लिये तथा दूसरों के लिये उपार्जन करने की उनमें योग्यता भी हो । हमारी शिक्षा बहुत कर के ऐसी होती है कि, जैसे कि मैं अपनी ही बात कहूं, किसी भी काम के लिये हम में से बहुत अकसर निकम्मे होते हैं । मैं एक ऐसे पेशे में था जिस पेशे में बहुत बड़े बड़े दिमाग़ी लोग हुए हैं। मैं . उन की शिकायत नहीं करना चाहता । उस पेशे में बात बनाने के सिवाय और कुछ सिखाया नहीं जाता और बात बनाने का काम अगर न रहे तो और कोई काम उन के लिये रह नहीं जाता। इस चीज़ का अनुभव हम को असहयोग आन्दोलन के दिनों में हुआ। महात्माजी ने जब हम को यह आदेश दिया कि अपने कालेजों को छोड़ दो, स्कूल छोड़ दो, कचहरी जाना छोड़ दो और देश के काम में लग जाओ, तो मैं ने देखा कि ऐसे लड़के जिन के घर के लोग गांव में खेती करते थे काश्तकारी के ज़रिये अपना गुज़ारा करते थे वैसे लड़कों के सामने कालेज को छोड़ कर आने में कोई कठिनाई नही आई । मगर ऐसे लड़के जिन के घर के लोग नौकरी करते थे, वकालत करते थे, या इसी तरह का और काम करते थे उन्हें कालेज छोड़ देने मे बड़ी कठिनाई हुई। जो पहले वर्ग के लड़के थे उन के सामने सारी दुनिया पड़ी हुई थी । वे समझते थे कि वे खाने के बगैर नहीं मरेंगे, वे मज़दूरी करके भी खाने के लायक पैदा कर लेंगे। मगर जो सफेदपोश वर्ग के लोग कहे जाते है, वे समझते थे कि काम छोड़ देंगे तो क्या खायेंगे, उन के बच्चे क्या खायेंगे। क्योंकि उस को छोड कर उन के सामने दूसरा कोई रास्ता नहीं था इसलिये वे घबड़ाते थे । महात्मा जी ने इस पद्धति को इसीलिये खास कर के जारी किया कि हमारा तौर तरीक़ा बदले और यह ध्येय, यह आदर्श हमारे सामने रक्खा जिस में स्कूलों और कालिजों में जो तौर तरीक़ा है वह बदले और हम अपने को ऐसा योग्य बनावें कि हम अपना रास्ता आप ढूढ निकालें । यहां आज जो संस्थायें बन रही है, जो विद्यालय यहां पर क़ायम हो रहे हैं मैं आशाकरता हूं कि उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये बन रहे है। बात तो यह है कि यह स्थान एक प्रकार से गांव है और जैसा मैं ने सुना है गांव के लोगों की इन संस्थाओं में काफ़ी दिलचस्पी है, वे इन मे खूब रस लेते हैं ।

ऐसा दीखता है कि आप यहां काम भी वैसा ही करना चाहते हैं जिस से गांव के लोगों की ज़रूरत पूरी हो। गांव के लोगों को ज़रूरत है आज मकान की, उन को ज़रूरत है ऐसी चीजों की जिन से उन के खेती के काम में सहूलियत हो, खेती का काम आगे बढ़ सके उन को ज़रूरत है दूध फल की, उन को ज़रूरत है कपड़े की और इन चीज़ों को पैदा करने के लिय जो चीज़े चाहिये उन की ज़रूरत है । मैं ने सुना, भाई लाल जी ने अभी फ़रमाया, कि इस तरह की चीज़ों को यहां बनाने का प्रबन्ध हो रहा है । अगर ऐसा हुआ तो मैं समझता हूं कि यह एक आदर्श विद्यालय हो जायेगा जिस में सिर्फ़ इस स्थान के लोगों को ही नहीं दूसरे स्थानों के लोगों को भी प्रेरणा मिलेगी और इस प्रकार के और भी विद्यालय अन्य अन्य स्थानों में कायम हो जायेंगे और देश का कल्याण करेंगे। मैं चाहता हूं कि देश में आप इस तरह की विद्या का प्रचार करें जिस में हमारे देश के लोग जहां हों, जिस स्थिति में हों, उन्नति कर सकें । उन की उन्नति के लिये यह ज़रूरी है कि गांव की उन्नति हो। इस देश

की ३५ करोड़ आबादी है। अगर हम उन को इस तरह की संस्थाओं में इकट्ठा कर के शिक्षा देना चाहेंगे तो एक जगह नहीं, १०—२० जगह भी नहीं, हज़ारों जगह ऐसी संस्थायें खोलनी होंगी। यह हो नहीं सकता। संस्था इतनी बड़ी है और देश इतना बड़ा है कि आप जो चीज़ उन को देना चाहते हैं जहां वे रहते हैं वहां ही दे सकेंगे तभी वे पायेंगे। अगर आप उन को उन की जगह पर शिक्षा नहीं दे सकेंगे तो बहुत थोड़े ही लोग इस से लाभ उठा सकेंगे और जब तक सभी लोग इस से लाभ न उठायें तब तक हम नहीं कह सकते कि देश उन्नत है। वैसे तो छोटा मोटा वर्ग ऐसा रहेगा जो सभी चीज़ों से सम्पन्न होगा लेकिन हमारा उद्देश्य सफ़ल तभी होगा जब बड़ी संख्या में सब को ज्ञान हो और सभी उन्नत हों। अतः ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता है। हमें इन में खास दिलचस्पी होनी चाहिये।

मुझे यह सुन कर बड़ी प्रसन्नता है कि इस विद्यापीठ को क़ायम करने में गांव के लोगों से बड़ी सहायता मिली है। धनी लोगों ने भी साहयता दी है। जैसा कि अभी एक धनी ने पैसे दे कर आप के कामर्स कालेज की कमी पूरी की है और जैसे सेठ बिरला ने आप के इन्जीनियरिंग कालेज के लिये पैसे दे कर इस की इमारत बनवा दी है। मैं ने सुना है कि गांव के ग़रीब लोगों से भी आप को काफ़ी पसे मिले हैं। इस में जो इतनी ज़मीन आयी वह सब गांव के लोगों की दी हुई है। यहां जो शिक्षक लोग आये हैं वे सेवक लोग हैं। वे लोग पैसे के ख्याल से नहीं बल्कि इसे अच्छा काम समझ कर के इस में अपना समय दे रहे हैं। ऐसा ही होना चाहिये। जिस स्थान पर जिस जगह पर विट्ठल भाई पटेल, वल्लभ भाई पटेल जन्मे वहां पर इस तरह के लोग पैदा हों जो इस तरह से समय देने को तैयार हों तो इस में आश्चर्य की बात नहीं है। यह तो स्वाभाविक चीज़ है।

मैं आशा रखता हूं कि जिन के नाम पर विद्यालय क़ायम किया गया है और जिन के नाम पर इस सारे स्थान का नामकरण किया गया है उन के नाम के गौरव को ध्यान में रख कर आप काम करते जायेंगे और इस सारे इलाक़े को और गुजरात को उन्नत बना सकेंगे। मुझे आशा है कि जिस तरीक़े से आप ने काम शुरू किया है उसी तरह काम आगे बढ़ायेंगे और दिन ब दिन इन संस्थाओं की उन्नति होगी और देश का कल्याण होता रहेगा।

बारडोली आश्रम

ता० १७-१०-५० को ९ बजे सुबह बारडोली आश्रम के कार्यकर्त्ताओं के बीच राष्ट्रपति जी ने अपने भाषण में कहा—

बहनो और भाइयो,

आज बारडोली आश्रम में ८ वर्षों के बाद आया तो अतीत के इतिहास की अनेक घटनाये स्मरण आ गईं। मुझे वह दिन याद है जब पू० बापू ने १९२२ में यहां से ही स्वराज्य प्राप्ति के लिये अहिंसात्मक लड़ाई करने का निश्चय किया और यह व्यक्त किया कि स्वराज्य प्राप्ति

के लिये वह सचमुच अहिंसक रीति से लड़ेंगे और जो कुछ विपत्ति आयेगी उसे सहेंगे, उसे बर्दाश्त करेंगे और स्वराज्य प्राप्त कर के ही दम लेंगे । मुझे वह दिन भी याद है जब थोड़े ही दिनों बाद चौरीचौरा का दुःखद वाकया हो गया और पूज्य बापू ने यहां बारडोली मे ही बैठ कर सत्याग्रह स्थगित करने का निश्चय किया जिस के कारण सारे देश में सत्याग्रह बन्द हो गया । लोगों ने बारडोली में १९२२ में जो व्रत लिया था उन्हों ने १९२८ में उसे पूरा किया और सारे देश को कुर्बानी करने का तरीका दिखलाया । जब यहां स्वराज्य की लड़ाई में कांग्रेस की पहली फ़तह हुई वह दिन भी मुझे याद है । बारडोली ने उस समय देश के सामने ऐसा उदाहरण पेश किया कि सभी जगहों में लोग बारडोली बनाने की तैयारी में लग गये । इस का नतीजा यह हुआ कि जब १९३० में सत्याग्रह का काम सारे देश में पूज्य बापू ने शुरू किया तो इतने ज़ोर से वह काम चला जितने ज़ोर से पहले कभी नहीं चला था । उस का अन्त १९४७ में हुआ जब हमारे हाथों में स्वराज्य आया । स्वतन्त्रता संग्राम का जब और जहां भी ज़िक्र आता है तब तब और वहां वहां बारडोली आश्रम का भी ज़िक्र आता है । बारडोली आश्रम का नाम लेने से सारे देश का इतिहास लोगों की आंखों के सामने आ जाता है । जब मै अन्तिम बार १९४२ में यहां आया था तो इस बगल के कमरे में मैं ठहरा था और जहां पर आप लोग बैठे हैं वहां सरदार वल्लभ भाई और बापू बैठते और देश की समस्याओं पर विचार करते थे । उस वक़्त मे यहां एक महीने तक ठहरा था और आप भाई बहनों के साहचर्य से और बापू के साथ रह कर कुछ सीखने का, कुछ जानने का मौक़ा भी मुझे मिला था । यह सभी बातें याद आती हैं । यहां इस आश्रम मे जो काम चल रहा है उस के बारे में मैं लोगों से पूछता था कि यहां कैसा काम चलता है । आज वह काम सब देखने को मिला ।

मेरे लिये यह बड़े सौभाग्य की बात है कि जिस खादी विद्यालय को पूज्य बापू ने यहां चलाया था और जो १९४२ की लड़ाई के बाद एक प्रकार से बन्द सा हो गया था उस का पुनरारम्भ आप ने मेरे हाथों दीप जलवा कर किया । बुनियादी तालीम का जो काम आप इस आश्रम में चला रहे हैं वह बापू का आखिरी काम था और पूज्य बापू इस का प्रचार सारे देश में करना चाहते थे । आप ने दो चीज़ों का अभी ज़िक्र किया, चर्खा और बुनियादी तालीम का । चर्खा तो उन की पुरानी चीज़ है और बुनियादी तालीम उनकी आखिरी चीज़ है । इन्हीं दोनों के बीच में पूज्य बापू की सारी प्रवृत्तियां हैं जिन के द्वारा वह सारे देश को एक नया रूप देना चाहते थे । मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आप लोग इतने उत्साह से रचनात्मक काम चला रहे है । आप को इस काम में दूसरे लोगों से भी प्रोत्साहन मिल रहा है । मुझे खुशी है कि यहां जो सरकारी स्कूल और बोर्ड का स्कूल चल रहा है उस में १३९ लड़के बुनियादी शिक्षा पा रहे हैं । यह उम्मीद रखनी चाहिये कि जब उन का अभ्यास हो जायेगा तब वह इस चीज़ को और फैलायेंगे । और कुछ नहीं तो कम से कम वे अपने लिये तो इस बात को अपना सकेंगे ।

यद्यपि आज रचनात्मक काम पर लोगों का उतना ध्यान नहीं जाता है तथापि मुझे विश्वास है कि अन्त में देश का कल्याण इसी से होगा । छोटी छोटी चीज़ों को ले कर बापू बड़ा बड़ा

काम करना चाहते थ। चर्खे के ज़रिये उन्हों ने स्वराज्य प्राप्त किया। चख के ज़रिय ही बह सब का कल्याण और अपने देश की ही नहीं सारे संसार की सेवा करना चाहते थे। आज कल लोगों का विचार दूसरे ढंग का हो रहा है। बहुत लोगों को तो रचनात्मक काम में विश्वास हो नहीं है। जिन को विश्वास है भी उन को भी कभी कभी शक होता है कि न जाने किस हद तक इस से देश का फ़ायदा हो सकेगा। पर मेरा अपना विश्वास है कि अगर संसार को जीवित रहना है तो वह चर्खे से ही जीवित रह सकता है। आज संसार में एक तरफ़ चरखा है और दूसरी तरफ़ एटम बम है। आज संसार को इन दोनों में से एक को चुन लेना है। अगर वह चरखे को चुनेगा तो जीवित रह सकेगा, अगर एटम बम को चुनेगा तो उस का विनाश होगा। मुझे दुःख है कि जितना लाभ हमें रचनात्मक काम से उठाना चाहिये उतना लाभ हम नहीं उठा रहे हैं। यह हमारी कमज़ोरी है। अगर आज हम रचनात्मक काम को पूरे ज़ोर से चलाते तो मेरा विश्वास है कि इस देश को बहुत आगे ले जाते। मेरा आप सभी भाई बहनों से यही कहना है कि जिस तरह राजनैतिक स्वराज्य की प्राप्ति में बारडोली ने बहुत बड़ा हिस्सा लिया और उस काम में सफ़लता प्राप्त की, उसी तरह से आप रचनात्मक काम को भी, जो एक बहुत बड़ा काम है और सच्चे स्वराज्य का काम है, आगे बढ़ायें। आज बापू नहीं हैं पर सरदार वल्लभाई हैं। आप इस काम को चलायें और चला कर देश के काम में १९२८ का बारडोली नहीं १९५० का बारडोली पेश करें जिस को देख कर देश जाग्रत हो और रचनात्मक काम में देश की एक तरफ से दूसरी तरफ तक के लोगों का ध्यान लग जाये और देश इस में आग बढ़। मैं तो यही मानता हूं। मुझे विश्वास है कि आप जो कार्यक्रम चला रहे हैं उस में आप को सफ़लता मिलेगी।

आप ने मेरा इस प्रेम से स्वागत किया है कि यहां आ कर मुझे एक क्षण के लिये भी यह नहीं लगा कि मैं कहीं घर से बाहर हूं। इस प्रेम के लिये मैं आप सब भाई बहनों को धन्यवाद देता हूं।

अपनी शक्ति के अनुसार मैं आप की वह सेवा करने को प्रस्तुत हूं जो सेवा कि आप मुझसे कराने की इच्छा रखते हों।

सरदार वल्लभ भाई की प्रतिमा का अनावरण

ता० १७-१०-५० को बौबिन और जिनिंग कोआपरेटिव सोसायटी बारडोली में माननीय सरदार वल्लभभाई की प्रतिमा का अनावरण करते समय राष्ट्रपतिजी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

यहां आप ने मुझे इस प्रतिमा का अनावरण करने का काम दिया उस के लिये मैं आप का धन्यवाद करता हूं। सरदार वल्लभभाई के सम्बन्ध में कहीं भी कुछ कहना अनावश्यक है और खास कर के बारडोली में उन के सम्बन्ध में कुछ भी कहना तो बिल्कुल ग़ैर ज़रूरी है।

उन्होंने अपने जीवन में जो बड़े बड़े काम किये है उन में बारडोली का सब से ऊंचा स्थान तो है ही पर सारे देश की स्वतंत्रता संग्राम में जो कुछ यहां पर और दूसरे स्थानों में उन्होंने किया है वह किसी से छिपा नहीं है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वह देश के शासन का जो काम कर रहे हैं और उस समय से आज तक जो कुछ उन्होंने किया है वह भी किसी से छिपा नहीं है। अतः ऐसे एक व्यक्ति के सम्बन्ध में जिन्होंने अपने पुरुषार्थ से देश का इतना बड़ा काम साधा है, जिन्होंने देश की आज़ादी हासिल करने मे इतनी बड़ी तपस्या और इतना बड़ा त्याग किया है और उस की प्राप्ति के बाद जिन्होंने अपनी कार्यशैली, अपनी कार्यपटुता, अपनी अध्यवसाय शक्ति, कार्य लगन का परिचय गवर्नमेंन्ट में भी उसी खूबी के साथ दिया है जैसा पहले उस के विरोध में उन्होंने किया था उन के सम्बन्ध में कुछ कहना ग़ैर ज़रूरी ह। हम जो लोग स्वराज्य के काम में बहुत दिनों से लगे थे, एक प्रकार का ही काम करते थे। लोग अक्सर यह कहते हैं और समझते हैं और मैं समझता हूं कि कुछ हद तक ठीक भी समझते है कि हम लोगों का काम तो ब्रिटिश गवर्नमेन्ट से लड़ने का था, हमारा काम तो आन्दोलन करने का था और हमने शासन का काम, दफ्तर में बैठ कर गवर्नमेन्ट चलाने का काम न तो कभी किया और न कभी सीखा और न उस का कोई तजुर्बा हम ने हासिल किया; और इसलिये जो लोग इस काम में पटु है उन को ही इसे करने देना चाहिये या उन के हाथों से ही यह काम कराना चाहिये। सरदार वल्लभभाई ने काम करके दिखला दिया है कि जितने वह आन्दोलन और सत्याग्रह चलाने में, लोगों को संगठित करने मे और रचनात्मक काम को सब जगह संगठित करके चलाने मे शक्तिशाली और अनुभवी साबित हुए थे उतने ही वह शासन के काम को चलाने में अनुभवी और शक्तिशाली सिद्ध हुए। आज से तीन साल पहले भारत को स्वराज मिला। पर भारतवर्ष की जो सूरत पहले थी उससे आज वह बिल्कुल भिन्न हो गयी है। आज तक भारत के इतिहास में कोई ऐसा समय नहीं आया जब दक्षिण मे कन्याकुमारी से लेकर हिमालय के पर्वत तक और पूर्व में कामरूप से लेकर पश्चिम में समुद्र तक सारे का सारा भारत एक शासन के अधीन हो गया हो। पहले चक्रवर्ती राजा होते थे, मुग़ल बादशाह भी हुए और अंग्रेज़ों का राज्य भी रहा लेकिन कोई राज्य सारे भारत में इस प्रकार से नहीं फैला हुआ था जिस तरह से हमारे भारतवर्ष की सरकार का शासन है। कारण यह था कि जो चक्रवर्ती राजा होते थे, जो मुग़ल बादशाह होते थे, बहुत भाग में उन का निजी शासन था और बहुत भाग में अन्य राजा स्वतंत्र रूप से अपना राज करते थे। बादशाह या चक्रवर्ती राजा की ये राजा इज्ज़त करते थे, उन का मान करते थे पर अपने राज के शासन में वे लगभग स्वतंत्र होते थे। ब्रिटिश गवर्नमेन्ट के समय में भी एक दो नही पांच सौ से अधिक रियासतें थीं जो अपना शासन आप चलाती थी। इन रियासतों में ऐसी छोटी छोटी रियासतों से लेकर, जो चन्द एकड़ों की ही थीं, हैदराबाद जैसी बड़ी बड़ी रियासतें शरीक थीं। इन छोटी-छोटी रियासतों के जो राजा और नवाब थे उनका अपना शासन चलता था, यद्यपि वे ब्रिटिश गवर्नमेन्ट की बातों को मानते थे और उसको अपना सर्वोपरि प्रभु समझते थे। पर ब्रिटिश गवर्नमेन्ट के हिस्से वाले भारत के अफ़सर वहां काम नही करते थे और न उनके अफ़सर आकर ब्रिटिश गवर्नमेन्ट में काम करते थे। किन्तु अब ये सारे के सारे राज्य भारत में शामिल हो गये हैं और सारे भारत में एक प्रकार का शासन हो गया है। यद्यपि हिन्दुस्तान का एक हिस्सा पूर्व में और एक हिस्सा पश्चिम में बंटवारे के बाद अलग हो गया है पर तो भी जितना भारत बचा है वह

इतना बड़ा है जितना कि पहले एक शासन के अधीन न था। कौन हैं वे जिन के हाथों यह महान् परिवर्तन पिछले एक दो साल के अन्दर पूरा हो गया और वह भी इस तरह पूरा हो गया कि कहीं खून नहीं बहा, कहीं किसी ने बुरा भी नहीं माना और इसमें तो प्रजा सुखी हुई ही पर मैं समझता हूं कि वहां के राजा लोग भी एक प्रकार से सुखी हुए दुखी नहीं। वे हैं सरदार वल्लभभाई पटेल। महात्माजी के काम करने के तरीके और कार्यशैली का यह ऐसा उदाहरण है जिस से स्पष्ट है कि अगर उस शैली पर हम बराबर चलते रहें तो जो भी हमारे सामने कठिनाइयां हैं वे सब उसी तरह से हल हो जायेंगी जिस तरह से यह एक बड़ी कठिनाई हल हो गयी। जब ब्रिटिश गवर्नमेन्ट हिन्दुस्तान छोड़कर जाने लगी तो उन्होंने भारत की सभी रियासतों को इस बात की छूट दे दी कि वे चाहें तो भारत में शामिल हों अथवा स्वतंत्र रहें और यह भी कह दिया कि ब्रिटिश गवर्नमेन्ट के साथ उनका जो पुराना सम्बन्ध था वह खत्म हो गया और भविष्य में उन को अधिकार होगा कि वे चाहे जिस देश से अपने स्वतंत्र सम्बन्ध स्थापित कर लें। इस तरह हमारे सामने एक नई समस्या पैदा हो गयी। इसे विचार में रखकर सरदार ने एक अलग मिनिस्ट्री क़ायम की। उन्होंने उसी समय से आहिस्ता आहिस्ता एक एक करके सभी रियासतों को भारत के साथ जोड़ा। बाद में एक दूसरे के साथ मिलकर सब राज्य भारत में मिल गये और अलग नहीं रहे। आज न कही दूसरे प्रकार का शासन है और न दूसरे प्रकार से वहां राज-काज चलता है। जब भारत का इतिहास लिखा जायेगा और कुछ दिनों के बाद यहां के बच्चे उसे पढ़ेंगे और विदेश के लोग पढ़ेंगे तो उन को आश्चर्य होगा कि दो साल के अन्दर यह कैसे संभव हुआ कि सारा भारत उस समय एक शासन सूत्र में बंध गया जब इस तरह की संभावना थी कि उस के अन्दर न मालूम कितनी और रियासतें कायम हो जायें; और वंह सब हो गया बिना खून बहाये, बिना लड़ाई के और सब को खुश कर के।

यह अकेला ही ऐसा काम है कि अगर उन्होंने और कोई काम न भी किये होते तो भी भारत के इतिहास में सरदार अमर बन गये होते। लेकिन उन्होंने इतना ही काम नही किया। सारे भारत को स्वतंत्र बनाने में उन्होंने जो काम किया वह किसी से कम नही किया। मै तो यह कह सकता हूं कि और लोगों से अधिक ही किया। १९२७ में यहां सत्याग्रह चलाकर उन्होंने उस रीति का ज्वलंत उदाहरण पेश किया जिस का अनुसरण करने से बाद मे भारत आगे बढ़ा और स्वतंत्रता प्राप्त कर सका। स्वतंत्रता संग्राम में बापू के चलाये रचनात्मक काम के संगठन करने मे और स्वराज्य पाने के बाद उन्होंने जो कुछ किया है वह भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जायेगा और जब तक हमारी स्वतंत्रता रहेगी और जब तक हमारे देश के बच्चे इस समय के इतिहास को पढ़ते रहेंगे ये चीज़ें कायम रहेंगी। ऐसे व्यक्ति की प्रतिमा का अनावरण करना मेरे लिये सौभाग्य की बात है। मेरा और सरदार का आपस का सम्बन्ध इतना घनिष्ट रहा है कि सदा वह मुझे छोटे भाई की तरह मानते रहे और जहां तक मुझ से हो सका मैंने उन्हें बड़े भाई का आदर दिया। इस सम्बन्ध के बारे में कुछ ज्यादा कहना आवश्यक नहीं। यह तो हृदय की बात होती है। इसलिये इस सम्बन्ध में और कुछ न कह कर मैं इतना ही कहूंगा कि आप ने मुझे यह काम सौंप कर जो मेरा आदर बढ़ाया और मुझे यह मौक़ा दिया कि यहां मैं उन की स्तुति कर सकूं इस के लिये मैं आप सब को धन्यवाद देता हूं।

सूरत में नागरिक अभिनन्दन

ता० १७ अक्टूबर को सूरत नगरपालिका तथा सूरत ज़िला लोकल बोर्ड द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब में राष्ट्रपतिजी ने कहा —

सूरत नगरपालिका के अध्यक्ष महोदय, सूरत ज़िला बोर्ड के अध्यक्ष महोदय, बहनो और भाइयो,

आप ने जिस उत्साह और प्रेम के साथ मेरा स्वागत किया है उस के लिये मैं आप को धन्यवाद देता हूं। जैसा आप ने कहा है, सूरत एक प्राचीन नगर है। जिस तरह भारत ने इतिहास में समय समय पर अनेक चढ़ाव उतार देखे हैं उसी तरह इस ने भी उन्नति और ह्रास देखे हैं। भारत अब स्वतंत्र है और अपनी उन्नति करने का सुअवसर उसे फिर प्राप्त हुआ है। इस के साथ साथ भारत के सभी नगरों और गांवों को भी आज उन्नति करने का सुअवसर मिला है। मै आशा रखता हूं कि जिस उत्साह, प्रेम और त्याग भावना के साथ देश के लोगों ने स्वराज्य प्राप्ति के लिये काम किया उसी उत्साह, प्रेम और त्याग भावना के साथ अब जब हमें राजनीतिक स्वतंत्रता मिल गयी है इस देश के लोग उस सच्चे स्वराज्य की स्थापना के लिये भी कार्य करेंगे जिस का स्वप्न पूज्य बापू देखा करते थे और जिस के सम्बन्ध में उन्होंने अपने जीवन भर शिक्षा दी।

आप जानते है कि महात्मा गांधी किस प्रकार का स्वराज चाहते थे। उन के मन चाहे स्वराज में जाति जाति में, मनुष्य मनुष्य में विभेद नही होता। उन के स्वराज में कोई शासन नहीं करता। उन के स्वराज में अन्न के बिना कोई भूखा मरता नहीं और कपड़े के बिना कोई नंगा रहता नहीं। किन्तु अभी हमारे देश में अन्न की कमी है, कपड़े की कमी है, गरीबों की ग़रीबी दूर नहीं हुई है अभी सभी बीमारों के लिये उपचार और औषधि का प्रबन्ध पूरा नहीं हुआ है। देश के सभी बच्चों के लिये शिक्षा का प्रबन्ध अभी हम नही कर सके है। इस के अलावा और जितने काम महात्माजी ने अपने सामने रक्खे थे और हम सब को बताये थे उन सब को हम पूरा नहीं कर सके हैं। जिस स्वराज का वह स्वप्न देखते थे उसे स्थापित करने के लिये हमें अनथक परिश्रम करना है। हम को स्वराज मिले कुछ ज्यादा दिन नहीं हुए हैं। यह भी आप सब जानते है कि इतने थोड़े समय में इस देश को कितनी भारी विपत्तियों का सामना करना पड़ा है।

देश का बंटवारा हमने इस आशा से किया था कि बंटवारे के बाद हम सुख और शान्ति के साथ रह सकेंगे और जिस तरह हम अपने देश को बनाना चाहेंगे वैसा बना सकेंगे। दुःख और शर्म की बात है कि वह हमारी आशा पूरी नही हुई। बंटवारे के साथ साथ हमारे लाखों लाख भाई बहन इधर से उधर हो गये और उधर से इधर आये जिस का फल यह हुआ कि आज ७०-८० लाख ऐसे लोग है जिन को हमें फिर से बसाना है, जिन के लिये कोई धंधा, कोई रोज़गार जुटाना है। इन में कितने ऐसे हैं जिन के घर के कमाने वाले लोग मर गये या मारे गये। उनकी विधवा स्त्रियों का, उन के बच्चों का प्रबन्ध भी हमें करना है। इस के अलावा अभी हाल में एक के बाद दूसरी विपत्ति आयी। यदि हमारे देश में अतिवृष्टि ने बर्बादी की तो किसी

दूसरे हिस्से में भूकम्प या अनावृष्टि ने हमें चौपट किया। जो अनेक लोग पाकिस्तान से हिन्दुस्तान आये हैं उन को फिर से बसाने में गवर्नमेन्ट ने काफ़ी परिश्रम किया है। साथ ही इन आनेवाले भाइयों ने भी बहुत ही हिम्मत और उत्साह दिखा करके अपने को फिर से बसाने में सहायता पहुंचाई है। मगर तो भी यह तो मानना ही होगा कि अभी यह काम पूरा नहीं हुआ है। पर यह प्रश्न भी तो बहुत बड़ा है। ७० ८० लाख आदमियों को बसाने की बात है। किसी भी देश की किसी भी गवर्नमेन्ट को किसी समय इतिहास में इतने बड़े प्रश्न का मुकाबला नही करना पड़ा है। हमारी नवजात गवर्नमेन्ट पर, तुरन्त पैदा हुई गवर्नमेन्ट के सिर पर इतनी बड़ी विपत्ति आयी। पर उस को भी उस ने किसी न किसी तरह संभाला है। ठीक है अभी वह इस समस्या को पूरी तरह से नहीं सुलझा सकी है। पर इसे वह सुलझाएगी अवश्य। अन्न का कष्ट हम दूर नहीं कर पाये हैं पर उस ओर भी हमारा प्रयास बराबर जारी है और हमें आशा है कि साल दो साल के अन्दर इस देश के अन्दर हम इतना अन्न पैदा कर सकेंगे कि हम को विदेशों का मुह नहीं ताकना पड़ेगा। इस के लिये जो कुछ भी प्रयत्न हो सकता है वह हो रहा है।

मगर याद रखिये अन्य और सभी कामों में केवल गवर्नमेन्ट ही सब कुछ नहीं कर सकती है। गवर्नमेन्ट को जनता की सहायता चाहिये, जनता का सहयोग चाहिये; जनता के सहयोग और सहायता से ही हम इस काम में और सभी कामों में सफ़ल हो सकते है उस के विना नहीं। इसलिये मै तो आप से यह कहता हू कि हमारी दिक्कतों को देखते हुए जो कठिनाइयां हमारे सामने है उन को ध्यान में रखते हुए आप सभी भाई अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान दें और इस तरह से आप उन कठिनाइयों को दूर करने में सहायक बनें। अब ब्रिटिश गवर्नमेन्ट यहां नहीं रह गयी तब अगर कोई बात बिगड़ती है तो उस की शिकायत हम ब्रिटिश गवर्नमेन्ट पर नहीं डाल सकते है। जो कुछ शिकायत होगी वह हमारी होगी। इस का यह अर्थ है कि आप सब की होगी। इसलिये अब जब हमारे हाथों में सब अधिकार आ गये हैं, हम अपने अधिकारो को और अपने कर्त्तव्यों को समझ कर जो कुछ हम से हो सके उसे करने के लिये तैयार हों। पहली बात तो यह है कि देश के लोग यह समझें कि अब जब देश स्वतंत्र हो गया है तब स्वतंत्र देश की रक्षा करना, स्वतंत्र देश को सुखी और समृद्ध बनाना हम सब का काम है। अक्सर जब हम बातें करते है तो इस चीज़ को भूल जाते है और गवर्नमेन्ट की शिकायत करने की हमारी जो पुरानी आदत पड़ी हुई है उस आदत के अनुसार हम गवर्नमेन्ट की शिकायत कर के ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। किन्तु यह बात उचित नहीं है।

अब तो पहली सूरत बदल गयी है। अब गवर्नमेन्ट आप की ही है। जो लोग इस वक़्त गवर्नमेन्ट के पद पर बैठे हुए हैं वे आप के आदमी हैं, आप के सेवक हैं। उन को वहां बिठाया है आपने, और अगर वे ग़लती करते हैं, उन से काम ठीक नहीं चलता है तो आप का अधिकार है कि उन को हटाकर उन की जगहों पर दूसरों को बैठायें। हमारा जो संविधान बना है उस संविधान में हम ने किसी एक छोटे दल के हाथ में अधिकार नहीं रक्खा है और न हमने किसी एक वर्ग या क्लास के हाथ में ही अधिकार रक्खा है। अब तो सारा अधिकार सारे देश की जनता के हाथ में है, चाहे फिर कोई गृहस्थ हो, व्यापारी हो, ज़मींदार हो, ग़रीब

हो, धनी हो, मज़दूर हो, मिल मालिक हो। हर एक आदमी को जिस की अवस्था २१ साल की हो गयी है एक एक वोट है, एक से ज्यादा किसी को नही और एक से कम भी किसी को नहीं। अब सब मिलकर जिस को मुनासिब समझेंगे चुनेंगे और जो चुनकर आयेंगे वे आप के कहने के मुताबिक़ काम करेंगे। इतना बड़ा अधिकार आप के हाथों में आया है। मगर यह अधिकार ही नहीं है, कर्त्तव्य भी है। आप को यह सोचना चाहिये कि आप किस आदमी को चुनें। आप को ऐसे आदमी को चुनना चाहिये जो सारे देश की सेवा ठीक से कर सकता हो, जिस में योग्यता हो, चरित्र हो और जिस में इच्छा हो सेवा करने की। ऐसे लोगों को आप चुनें और उन से काम लें। अभी जो लोग काम कर रहे हैं वे भी आप के ही चुने हुए हैं। कोई दूसरे नहीं हैं। मुझे जो पद मिला है वह किसी दूसरे ने नहीं दिया है। वह पद इस देश की जनता की ओर से ही जनता के प्रतिनिधियों ने ही मुझे दिया है।

चाहे कोई इस पद पर रहे चाहे किसी भी अन्य पद पर, उस का काम है कि सच्चाई के साथ, ईमानदारी के साथ और दूसरे किसी स्वार्थ के बिना जनता की सेवा करे। मैं चाहता हूं कि आप अपने इस अधिकार को, इस कर्त्तव्य को पहचानें। हमारे देश में यह कोई नयी चीज़ या बात नहीं है। हमारा सारा इतिहास हमारी एक कमज़ोरी बताता है। वह कमज़ोरी यह रही है कि आज से नही हज़ारों वर्षों से हम छोटे दायरे में एक छोटे से दल, किस छोटी सी जाति, छोटे से गांव, छोटे छोटे मज़हब के लोगों में, धर्मवालों में ही अपना सारा प्रेम सीमित रखते हैं और उन्ही की स्वार्थ साधना में अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं। दूर तक आंखें फैला कर देखना सारे देश को अपने सामने रखकर काम करना हम नहीं जानते। महात्मा गांधी जी के प्रताप ने हमारी आंखें खोलीं, सारे देश को जगाया और सारे देश के हृदय में यह प्रेरणा पैदा की कि हम अपने को स्वतंत्र बनायें। इस चीज़ को हमें क़ायम रखना है। संकुचित विचारों को अपने हृदय से निकाल देना है। हमें देखना है कि सारे भारत का किस में भला है, सारे भारत का किस में लाभ है और किस में नुकसान है। जिस से नुकसान है उसे छोड़ देना है और जिस से लाभ है उसे स्वीकार करना है, उसे प्रोत्साहन देना है। संकुचित भावना की यह कमज़ोरी, जो हम में है, उसे हम, यदि दूर कर देंगे तो संसार में कोई शक्ति ऐसी नहीं जो हमको दबा कर रख सके।

हम किसी को दबाना नहीं चाहते। किसी के साथ हमारा बैर नहीं है और न हमारा किसी से विरोध है। हम सब के साथ प्रेम और सद्भावना रखना चाहते हैं। साथ ही हम किसी से दबना नहीं चाहते। इसलिये अगर हम अपनी शक्ति और अपने कर्त्तव्य को समझ कर देश का काम करें तो इस का फल यह होगा कि इस देश का भला होगा और संसार का भी भला होगा। महात्मा गांधी तो देश देश का भी फ़र्क़ नहीं मानते थे। वह तो समस्त मानव जाति को एक मानते थे, सब की भलाई में ही हर एक की भलाई मानते थे। अगर उन्होंने स्वराज के लिये प्रयत्न किया तो इसलिये नहीं कि अंग्रेज़ों को हटाकर उन जगहों पर हिन्दुस्तानियों को रख दें जो उसी तरह से काम करें जिस तरह से अंग्रेज़ किया करते थे। उन्होंने स्वराज के लिये इसलिये प्रयत्न किया कि जब तक भारत स्वतंत्र नही होगा तब तक भारत इस योग्य न होगा कि संसार के मानव की सेवा कर सके किन्तु आज हमें यह सुअवसर मिल गया है।

यह प्रतिमा जिस का अनावरण करने का सुअवसर आपने मुझे दिया है, आप को महात्मा गांधीजी ने जो कुछ सिखाया, पढ़ाया उस की याद दिलाती रहेगी। आप तो गुजरात के रहने वाले हैं। आपने गांधीजी के गुजराती वचनों को अपने कानों से सुना है, उन के लेखों को गुजराती में पढ़ा है। खास कर के इस ज़िले को तो यह सौभाग्य प्राप्त रहा है कि यहां गांधीजी ने अपने बड़े कामों का नमूना सरदार के द्वारा पेश किया है। इसलिये आप से उन के सम्बन्ध में और कुछ नहीं कहना चाहता। मैं ने तो सिर्फ़ याद दिलाने के लिये ही थोड़ी सी बात कही।

मैं तीन दिनों से गुजरात का भ्रमण कर रहा हूं। और जहां भी गया हूं लोगों ने बड़ा प्रेम और उत्साह दिखाया है। मैं आज कल आप के दिये हुए एक ऊंचे पद पर हूं। मैं कह नहीं सकता कि पहले जो वायसराय हुआ करते थे या बादशाह हुआ करते थे उन के पद से मेरे इस पद की तुलना हो सकती है या नहीं। मैं तो यह मानता हूं कि इस पद की तुलना उन से नही हो सकती है क्योंकि जनता का मत ले कर न तो कोई वायसराय यहां आते थे और न कोई बादशाह हुआ करते थे और जनता चाहे पसन्द करे या न करे वे अपना काम इस बात की पर्वाह किये बिना करते थे। आपने जिस पद पर मुझे बिठाया है वह पद वैसा नहीं है। मेरे साथ जनता का सम्बन्ध दूसरा ही है। मै तो आप के कहने पर बैठा हूं और जब तक आप कहेंगे बैठा रहूंगा। जिस वक़्त समय पूरा हो जायेगा अथवा किसी दूसरे को आप इस पद पर बैठाना चाहेंगे उसी वक़्त मै यहां से हट जाऊंगा। पर साथ ही मैं यह भी मानता हूं कि यह पद पहले के वायसराय या बादशाह के पद से कही ऊंचा है क्योंकि इस के पीछे अनगिनत स्त्री और पुरुषों की सद्भावना, प्रेम और विश्वास है। मै गुजरात में तीन दिनों से सफ़र कर रहा हूं और मुझे इस सद्भावना का प्रमाण कई जगहों में मिला है। लोग समझने लग गये हैं कि आज कल के राष्ट्रपति सच्चे राष्ट्रपति है क्योंकि वह जनता के चुने राष्ट्रपति है और संविधान के अनुसार जो भी अधिकार मुझे मिला है वह जनता का दिया हुआ अधिकार है। मैं चाहता हूं कि आप इस बात की इज्ज़त की, मर्यादा की और गौरव की रक्षा करें। इस का अर्थ मेरा गौरव या मेरी इज्ज़त नही है। आप को जो स्वतंत्रता मिली है उस का यह पद प्रतीक है। उस प्रतीक के गौरव को क़ायम रखना स्वतंत्रता के गौरव को कायम रखना है। इसलिये मुझे प्रसन्नता है कि आपने इतना आदर, इतना सम्मान, इतना उत्साह दिखाया है और मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करूंगा कि वह आप को बल दे कि आप जिस को योग्य समझें उसे उस जगह पर रक्खें और जिस को अयोग्य समझें उस को हटाने में भी न हिचकें। इसलिये मैं आप से एक निवेदन करके समाप्त करना चाहता हूं।

जैसा कि मै ने शुरू में ही कहा कि गांधीजी बहुत आशा रखते थे और बहुत कुछ करना चाहते थे। हमारे दुर्भाग्यवश जब य सब करने कराने का समय आया उसी वक्त वह हमसे छीन लिये गये। संसार में ऐसा होता ही है, संसार में कोई मनुष्य हमेशा के लिये शरीर धारण कर नहीं रह सकता; महात्माजी भी नहीं रह सके। मगर जो काम उन्होंने किया, जो रास्ता उन्होंने बतलाया, जो शिक्षा उन्होंने हम को और संसार को दी वह हमेशा के लिये कायम रहेगी। हमारे ऊपर यह जवाबदेही आ गयी है कि जो काम अधूरा रह गया है उस को हम पूरा करें और इस प्रकार का समाज भारत में स्थापित करें जिस तरह का समाज महात्माजी यहां स्थापित करना

चाहते थे। जब हम वह कर लेंगे तो फिर वह हमारे लिये ही नहीं बल्कि सारे संसार के लिये एक आदर्श होगा। आप लोगों में से जो लोग समाचार पत्र पढ़ते हैं वे जानते है कि संसार के देशों के सामने आज कैसी जटिल समस्या है। सब देश अपनी सारी शक्ति और धन केवल इस काम में खर्च कर रहे हैं कि ऐसे हथियार तैयार किये जायें कि जिस से अधिक से अधिक मनुष्यों का नाश किया जा सके। दुःख की बात है कि यद्यपि हम और देशों का मुकाबिला नहीं कर सकते तो भी हम भी इस काम में और देशों से पीछे नहीं रहना चाहते। इसलिये हम में अभी वह शक्ति नहीं आयी है जो शक्ति गांधीजी अहिंसा के द्वारा पैदा करना चाहते थे। जिस अहिंसा की शक्ति से उन्होंने इतनी शक्तिशाली ब्रिटिश गवर्नमन्ट का मुक़ाबला किया और बिना हथियार के उस के सारे हथियारों को निकम्मा बना दिया, उस अहिंसा को अब न केवल अपने देश के लिये बल्कि सारे संसार के लिये इस तरह से अपनाना है कि जिस में हम सब के लिये एक नमूना पेश कर सकें और मै आशा रखता हूं कि इस काम को भी हम पूरा करेंगे। आप सब का सहयोग होना चाहिये। गांधीजी के सत्य और अहिंसा की ही वजह से आज संसार हमारी इज्ज़त करता है। थोड़े ही दिनों में संसार के सभी देशों ने भारत का सम्मान करना सीख लिया है और सम्मान करना आरम्भ कर दिया है। हमें गांधीजी की जो शिक्षा मिली है उस शिक्षा को जब तक हम बनाये रक्खेंगे तब तक यह सम्मान हमें मिलता रहेगा। आज संसार दुखित है, चिन्तित है। सब देशों के लोग इस भौचक्कर से निकलना चाहते हैं क्यों कि वे देखते है कि लड़ाई के कारण अनन्त धन का ही नाश नही होता बल्कि उन के बच्चे भी लड़ाई के लिये आहुति बन जाते है। वे चाहते है कि इस से वे किसी तरह बचें। मगर उन को अभी कोई रास्ता साफ़ नहीं दीखता। वह रास्ता गांधीजी का रास्ता है और गांधीजी के रास्ते को जब संसार मानेगा, उस पर चलने लगेगा तभी वह इस विपत्ति में से निकल सकता है। भारत को इस प्रकार का रास्ता प्रशस्त करना चाहिये और उसे इस प्रकार स्पष्टतया दिखलाना चाहिये जिस में संसार के लोगों को उस पर चलने में आस्था हो। मैं आशा करता हूं कि गुजरात के ाई और बहन जिन का गांधीजी पर स्वभावतः अधिक दावा था और जिन पर गांधीजी का भी स्वभावतः अधिक दावा था, इस काम में इस तरह आगे बढ़ेंगे।

आप सभी भाई और बहनों को मै धन्यवाद देता हूं कि आप ने मेरा इतना सम्मान किया और मुझे यह सुअवसर दिया कि मै इस प्रतिमा का अनावरण कर सकू।

गुजरात विद्यापीठ में उदबोधन

ता० १८-१०-५० को गुजरात विद्यापीठ के कार्यकर्त्ताओं के बीच राष्ट्रपतिजी ने कहा—

श्री बाला साहब, कानजी भाई, मगनभाई, भाइयो और बहिनो,

बहुत दिनों के बाद आज विद्यापीठ में मैं आ सका इस की मुझे बड़ी खुशी है। अहमदाबाद आ कर विद्यापीठ में बिना आये और बिना आप लोगों से भेंट किये चला जाना भी एक ऐसा काम होता जिस को सहन करना आसान नहीं होता। इस लिये यह तो एक प्रकार से निश्चित ही था कि किसी न किसी समय यहां आऊंगा जिस में आप सभी बहनों और

भाइयों से भेंट हो सके। आप ने यह सच कहा है कि विद्यापीठ के साथ और राष्ट्रीय शिक्षा के साथ मेरा सम्बन्ध तभी से है जब से यह काम पूज्य बापू ने शुरू किया था। जो कुछ मुझ से थोड़ा बहुत अपने प्रान्त के अन्दर हो सका मैं ने करने की कोशिश की लेकिन वातावरण अनुकूल नहीं रहा। आहिस्ता आहिस्ता काम ढीला पड़ गया। और उसका जो रूप पहले था वह बदल गया। मगर आप ने इसे अभी तक क़ायम रक्खा और उत्साह के साथ चलाते रहे इस के लिये मैं आप सब को बधाई देता हूं।

जैसा आप ने कहा और मेरा भी विश्वास है कि अब शिक्षा व्यवस्था में सुधार होना चाहिये। लेकिन कोई भी गवर्नमेन्ट हो वह कोई नया क़दम नहीं उठाती है क्यों कि बहुत सी बातों पर विचार करना पड़ता है। केवल प्रयोग करने के लिये वह किसी काम पर न तो पैसा खर्च करना चाहती है और न उस में अपने आदमियों को लगाना चाहती है। प्रयोग का काम तो इस प्रकार की ग़ैर सरकारी संस्थायें ही कर सकती हैं। यदि राष्ट्रीय विद्यापीठ ऐसे प्रयोग करती रहे और यदि उन में उस को कुछ सफलता मिले, और किसी न किसी समय वह मिलेगी ही, और वह ऐसी सफलता हो जिस से कि स्पष्ट हो कि उस प्रयोग को राष्ट्रीय पैमाने पर करने से देश का हित होगा तो सरकार उसे स्वीकार करेगी, क्योंकि आज कल तो सरकार अपनी है और जनता की इच्छा के अनुकूल चलती है। जिस समय असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ था उसी समय महात्मा जी ने राष्ट्रीय शिक्षा की बात उठाई थी। उन का विचार था कि सब से पहले बुनियादी तालीम का प्रचार होना चाहिये। उनको जब समय मिला तो उसे कार्यरूप दे कर उन्होने उसे चलाना भी आरम्भ कर दिया और कुछ दिनों के बाद जब १९३७-३८ में कांग्रेस के लोग मन्त्री बने तो उन्हों ने नई तालीम की योजना देश के सामने रक्खी और नई तालीम की योजना पर बहुत ज़ोर दिया। उन्होने यहां तक कहा कि इसी के द्वारा सारे देश की शक्ल बदली जाये। यह आपने अच्छा किया है कि इस विद्यापीठ मे नई तालीम की व्यवस्था के अनुकूल आप काम चला रहे हैं।

मेरा विश्वास है कि बुनियादी तालीम एक ऐसी चीज़ है कि इस के ज़रिये देश तरक्की करेगा और शिक्षा का प्रचार होगा। इस में सदेह नही कि बुनियादी तालीम के ज़रिये शिक्षा का प्रचार बहुत बढ़ जायेगा। इस के साथ ही इस के द्वारा एक ऐसा वर्ग तैयार होगा और ऐसे नागरिक तैयार होंगे जो आज कल के नागरिकों से बहुत बातो में अच्छे निकलेंगे। यहां बौद्धिक शिक्षा ही नही मिलती है पर उस के साथ साथ विद्यार्थियों को जो पुस्तकीय ज्ञान मिलता है वह किसी काम के ज़रिये से मिलता है, उसे वे कुछ कर के सीखते है, केवल पढ़ कर और स्मरण शक्ति के द्वारा नही सीखते है। जो चीज़ अनुभव से सीखी जाती है उस का असर मनुष्य के हृदय पर बराबर बना रहता है। यही इस शिक्षा का महत्व है और इसी वजह से ऐसा कहा जाता है कि इस के प्रचार से देंश की हालत बदल जायेगी। आप सब जानते है कि राजनीतिक स्वराज्य से महात्मा जी को संतोष न होता था। वह अंग्रेज़ों को यहां से इस लिये नहीं हटाना चाहते थे कि अंग्रेजों की जगह पर देश के भाइयों को बिठायें और फिर यह लोग अंग्रेज़ों की तरह ही काम करें और उन्हीं का सिलसिला जारी रखें। वह तो सारे समाज की रचना बदलना चाहते थे और इस प्रकार की शिक्षा से ही, बच्चों को तैयार कर के ही, समाज की रचना बदली जा सकती है।

जैसा परिवर्तन गांधी जी करना चाहते थे वैसा परिवर्तन आप नई पद्धति से ही शिक्षा दे कर कर सकेंगे। वह केवल इस देश में ही नहीं वरन् ऐसे सभी देशों में जहां यह संभव हो सके, नई रचना करना चाहते थे ; समाज के रूप को बदलना चाहते थे। समाज बच्चों से ही बदलता है क्योंकि बच्चों को बचपन से जो कुछ सिखाया जाता है उस का स्मरण उन को सारे जीवन बना रहता है । आज देश का जैसा जीवन है, समाज की जो शक्ल बन गई है, वह उसी शिक्षा के कारण है जो हमें अब तक दी गई है। चाहे अपनी पुस्तकी शिक्षा का प्रयोग लोग न भी करें पर घर में मिली शिक्षा से लोग वे बातें सीख लेते हैं जिन के सहारे समाज का काम चलता है । इस लिये समाज के गठन को बदलने का यह सर्वाधिक प्रभावी तरीक़ा है कि बच्चों को उस विचार धारा से प्लावित करें जिस की प्रधानता हम चाहते हैं, जिस से कि उन के बड़े होने पर समाज का गठन खुद ब खुद बदल जाये। इस लिये बुनियादी तालीम पर बापू इतना ज़ोर देते थे । हमारे सामने काम का यह बड़ा मैदान है ।

आप यह न समझे कि बुनियादी तालीम का जितना विकास हो सकता है और उस का जो सुदृढ़ रूप हो सकता है, वह पूर्णतया बन चुका है । नही, अभी हमें इस दिशा में काफ़ी काम करना है । काम करते करते नई रोशनी मिलेगी, नई बातें आयेंगी। जिस तरह बापू की सारी ज़िन्दगी एक प्रकार प्रयोग की जिन्दगी थी उसी तरह से बुनियादी तालीम की व्यवस्था मे भी आप प्रयोग करते जायें । उस में जो नई बाते ज्ञात होंगी उन को देश क़बूल करेगा । ऐसे प्रयोगों के लिये इस प्रकार के शिक्षालयो की पहले से और ज़्यादा आवश्यकता है। मै चाहता हू कि आप जो प्रयोग करें और उस में जो फल निकले उसे आप गवर्नमेन्ट से मंज़ूर करवावें । अगर गवर्नमेन्ट को यह लगेगा कि उस से जनता का फायदा होने वाला है तो वह उसे मंज़ूर करेगी। स्पष्ट है कि इस दिशा में पहला कदम आप की जैसी संस्था ही उठा सकती है। इस लिये मै यह नही मानता हूं कि विद्यापीठों की ज़रूरत नही रही।

गुरुकुलो के सम्बन्ध मे मै ने कहा था कि गवर्नमेन्ट के साथ उन का अब तक जो सम्बन्ध था वह आज की बदली हुई परिस्थितियों में बदल जाना चाहिये । गवर्नमेन्ट के साथ उस समय वे अपना सम्बन्ध रखना ही न चाहते थे । अगर वे गवर्नमेन्ट से अपना सम्बन्ध स्थापित करना भी चाहते तो संभवतः वह उसे मंज़ूर नहीं करती। पर अब स्थिति दूसरी है। अब तो गवर्नमेन्ट से उन का सीधा सम्बन्ध भी हो सकता है और उन्हें अपने काम में गवर्नमेन्ट से प्रोत्साहन भी मिल सकता है। गुरुकुल के सम्बन्ध में मैंने सुना था कि आज तक उन्होने गवर्नमेन्ट से न कभी कुछ मांगा और न गवर्नमेन्ट ने कभी कुछ दिया। उत्तर प्रदेश के गवर्नर मिस्टर हैलेट ने एक बार गुरुकुल को देखा था और कुछ देना भी चाहा था मगर गुरुकुल ने उसे स्वीकार नहीं किया था। मगर जब मै गया और उन की तरफ़ से पूछ कर में ने गवर्नमेन्ट से सहायता दिलवाई तो उन्हों ने उसे स्वीकार कर लिया; क्योंकि हमारी गवर्नमेन्ट पहले की सी गवर्नमेन्ट नहीं है। इस लिये मैं समझता हूं कि इसी तरह गवर्नमेन्ट से विद्यापीठ का सम्बन्ध भी अब दूसरे ढंग का हो जाना चाहिये। पर साथ ही मै यह भी मानता हूं कि आज भी विद्यापीठ को सर्वथा गवर्नमेन्ट पर निर्भर नहीं करना चाहिये। हमारी प्रवृत्ति ऐसी हो गई है कि हम सब चीज़ों के लिये गवर्नमेन्ट की तरफ देखते हैं। संभवतः लोग सोचते हैं कि चूंकि अब स्वराज्य हो गया है इस लिये अब तो

यह सरकार का काम है कि सब के लिये सब कुछ करे और लोगों के खुद कुछ करने की ज़रूरत अब नहीं रह गई है। पर यह बात ठीक नहीं है। अब भी इस बात की ज़रूरत है कि हम अपने बल पर और गवर्नमेन्ट से अलग रह कर काम करें। अगर गवर्नमेन्ट पर ही हम सब चीज़ों के लिये भरोसा करते रहेंगे तो हम गवर्नमेन्ट के क्रीत दास हो जायेंगे। गवर्नमेन्ट को हम अपने मातहत नही रख सकेंगे। लेकिन अगर हम स्वतन्त्र रहेंगे तो गवर्नमेन्ट पर अपना काबू रख सकेंगे और गवर्नमेन्ट से अपने मन के मुआफ़िक काम करा सकेंगे। हां, अगर गवर्नमेन्ट से सहायता मिले और गवर्नमेन्ट सहायता देना चाहे तो उसे लेने में उज्र नहीं होना चाहिये। पर साथ साथ अपने पैरों पर हमेशा खड़ा रहना चाहिये जिस में आप की स्वतन्त्रता बनी रहे और जैसा आप चाहे काम करें और अपने बल से गवर्नमेन्ट से काम करा सकें। मै आशा करता हूं कि यह संस्था जो ऐसे शुद्ध और पवित्र हाथों से स्थापित की गई थी और जिस ने इतने दिनो तक देश की सेवा की है, बनी रहेगी, आप इसे चलाते रहेंगे और यह दिन-दिन उन्नति और देश का कल्याण करती रहेगी।

आप का यह सुन्दर विचार है कि आप विद्यापीठ का इतिहास लिख कर प्रकाशित करना चाहते हैं। विद्यापीठ के तीस वर्ष बीत चुके। अब तो यहा नये नये लोग आ गये है। यहां जितने लोग बैठे है उन में से अधिकाश ३० वर्ष से कम के ही होंगे जिन्हों ने इस की प्रारम्भिक अवस्था को देखा नही, जाना नही और इस की पहली कथा सुनी नही। इस लिये इन लोगों को तथा आने वाली पीढ़ी को इस इतिहास से पता चलेगा कि विद्यापीठ ने क्या क्या किया। आप ने कहा है कि इस के प्रकाशन का प्रबन्ध मै करा दू। मैं सहर्ष आप की इच्छा को पूरी करने का प्रयास करूंगा और इस के प्रकाशित कराने में मैं जो कुछ कर सकता हूं वह अवश्य करूंगा।

मुझे बहुत खुशी है कि आप सब भाई और बहनों से आज सवेरे-सवेरे मुलाकात हो गई और मैं यहा से आप लोगों की नयी स्मृति लेकर जाता हूं।

अखिल भारतीय नैतिक और सामाजिक स्वास्थ्य सम्मेलन

*अखिल भारतीय नैतिक और सामाजिक स्वास्थ्य सम्मेलन में ता०, १९-१०-५० को राष्ट्रपति जी ने कहा--

श्री रामेश्वरी नेहरू जी, राजकुमारी जी, बहनो और भाइयो,

इस सम्मेलन के आयोजकों को मै धन्यवाद देता हू कि उन्होंने मुझे यह अवसर दिया कि चाहे कितने ही कम समय के लिए क्यों न हो मै इस समाज के काम में—जिसके काम से मेरी पूरी सहानुभूति और जिसमें मेरी गहरी दिलचस्पी है—हाथ बटाऊं। हमारे देश में बहुत पुरानी परम्परा है जिसके अनुसार ब्रह्मचर्य—अखण्ड ब्रह्मचर्य—स्त्री और पुरुषों के लिये विहित

*अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद।

है और हिन्दुओं का यह एक सिद्धान्त है कि ब्रह्मचर्य आदमी को कोरे मानव की स्थिति से उठाकर देवताओं के दर्जे में रख सकता है। इस सम्बन्ध में मुझे उस वार्तालाप की याद आती है जो महात्माजी का एक मित्र से इस प्रश्न पर हुआ था। उन दिनों वे एक लेखमाला लिख रहे थे जो बाद में "ब्रह्मचर्य और आत्मसंयम" के नाम से पुस्तिका के रूप में छपी। लोगों के मन में उस समय इस प्रश्न पर काफ़ी उथल-पुथल थी। महात्मा जी से उस मित्र ने पूछा : विवाहित दम्पति के लिये आप ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक मानते है। किन्तु यदि विवाहित दम्पति भी ब्रह्मचर्य का पालन करने लगे तो जाति कैसे क़ायम रहेगी ? गांधीजी ने उत्तर दिया कि जाति के बने रहने की चिन्ता तुम मत करो। उस सीमा तक तो ब्रह्मचर्य का पालन होगा नही। यदि उस हद तक लोग ब्रह्मचर्य का पालन करने लगे तो वे आदमी न रहकर परमात्मा हो जायेंगे। यह तो हमारा आदर्श होना चाहिये और यदि उस आदर्श पर लोग चलें तो जिस सीमा तक वे उसे व्यवहार में लायेंगे उस हद तक उनको लाभ होगा। किन्तु इस बात के बावजूद कि अधिक लोग इस पर आचरण करना चाहते हैं और उसके अनुसार जीवन को व्यतीत करना चाहते हैं। हम देखते है कि जिस पाप की ओर आपने संकेत किया है वह देश में काफ़ी फैल गया है। हम इस चीज़ से आख नहीं मोड़ सकते है न हम असलियत से इन्कार कर सकते है। यह दोष देश में काफी मात्रा में फैला हुआ है और वह भी बहुत दूर तक हालांकि हम महान् सिद्धान्तों का प्रचार करते रहे है। इसलिये इस प्रश्न पर व्यावहारिक दृष्टि से अब विचार करना चाहिये अन्तर्राष्ट्रीय सस्था की हैसियत में आप लोगों को इस प्रश्न पर अधिक वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करना चाहिये। उसके लिये आंकड़े इकट्ठा कर लेना है, और इस पाप के फैलने के कारण को पहचान लेना है। और आप लोगों को यह भी पहचानने का प्रयास करना है जिससे उन कारणों के हटाने से यह रोग भी दूर हो जाये। मै मानता हू कि वही सही रास्ता है। और यद्यपि आज कल हमारे सामने बहुत सी समस्यायें है तो भी हमें इस समस्या के प्रति न तो उदासीन होना चाहिये और न वास्तव में हम ऐसा कर ही सकते है।

आपने यह ठीक ही कहा है कि विभाजन के बाद समस्या और भी बिगड़ गयी है क्योंकि हमारे सामाजिक जीवन मे इस विशेष दुर्घटना का बहुत अहितकर परिणाम हुआ। इसके अतिरिक्त हमारे सामाजिक विचारों में भी, हमारे आदर्श और चारित्रिक दृष्टिकोण में भी, काफ़ी उलट पलट हो रही है। हमारे देश में ऐसे आधारभूत आध्यात्मिक सिद्धान्त थे जो देखने में स्वयं विदित प्रतीत होते थे। किन्तु आजकल लोग उनके बारे में सन्देह कर रहे है। ऐसे भी लोग है जो उन पर आपत्ति ही नहीं करते है वरन् उनको प्रतिक्रियावादी मानते है और कभी कभी उनका तिरस्कार भी करते है। मेरा आपसे केवल यही निवेदन है कि इन पुरानी बातों में और प्रथा में जो अच्छाई है उसको आप पहचानें और इस बात का प्रयास करे कि उनमें जो खराबियाँ आ गयी है वे दूर हों। ऐसा करना इस बात से कही अच्छा होगा कि हम ऐसा प्रयास करें कि समाज का नये आधार पर निर्माण हो और वह भी ऐसे आधार पर जिसकी दृढ़ता और जिसकी अच्छाई के बारे में हम को पूरा यक़ीन केवल इसलिये नही हो सकता क्योंकि यह एक ऐसा प्रयोग है जिसका फल हमें केवल भविष्य में ही पता चलेगा। मै आपकी अनुमति से यह कहना चाहता हूं कि मै तो इस पुराने विचार का आदमी हूं कि इस बात के बजाय कि हम सर्वथा नये रास्ते पर चलें जो चाहे अन्य देशों के लिए—जो उस पर चलते हैं—अच्छा सिद्ध हुआ हो किन्तु

हमारे लिये सर्वथा एक नया और अनजान रास्ता है अपने समाज का निर्माण हमें पुरानी बुनियाद पर ही करना चाहिये ।

हमें इस समस्या पर एक सामाजिक दोष के रूप में विचार करना चाहिये । इस सामाजिक दोष के लिए बहुत से कारण हैं । मेरे विचार में सब से स्पष्ट कारण तो यह है कि ब्रह्मचर्य के आदर्श से जिस पर कम से कम अपने देश के लोग आचरण किया करते थे हम अब हट रहे हैं। आध्यात्मिक संयम के उच्च स्तर के बावजूद आज हमारे यहां यह दोष मौजूद है । यदि हम प्रतिबन्धों को हटा दें तो हमारी क्या गति होगी और हम कितने और कहां तक गिर जायेंगे यह में नही कह सकता । इसलिये मै इस बात के लिए चिन्तित हूं कि इस सम्बन्ध में कुछ किया जाये । मुझे अत्यधिक आधुनिकता के सम्बन्ध में कुछ शंका और सन्देह बना रहता है । यह तो मै आपसे कहूंगा कि आप आधुनिक विचार के भले ही हों, किन्तु आपकी आधुनिकता उन बातों के आधार पर हो जिनकी जांच की जा चुकी हो और जो भूतकाल में उपयोगी पायी गयी हों। इस सम्बन्ध में मैं आपके सामने आधुनिक सिनेमाओं के असर की बात रखना चाहता हू । उन्होंने हमारे समाज के ऊपर और हमारे अनेक युवक और युवतियों के मन पर बडा ही दुष्प्रभाव डाला है । और यदि मेरे हाथ में यह बात होती तो इन सब चित्रों का दिखाया जाना मना कर देता जो किसी भी प्रकार की लैंगिक उत्तेजना पैदा करते हों। मै यह भी चाहता हू कि स्वतन्त्र रूप से स्त्री-पुरुषों का ऐसा मेल-मिलाप बन्द हो जो परम्परागत नियमों के विरूद्ध है और जो चाहे विदेशों मे शताब्दियों से प्रचलित रहा है और आज भी प्रचलित है किन्तु जिसने हमारे समाज पर बड़ा बुरा असर डाला है । इस प्रकार हमें इस समस्या को जड़ से उखाड़ने मे सफलता हो सकती है । यह काम क़ानून बना कर नही किया जा सकता है क्योंकि क़ानून के अपने गुण होते हैं; और वह किसी हद तक अच्छा भी होता है किन्तु उससे इस पाप का उन्मूलन नही हो सकता । व्यक्ति का अपना आध्यात्मिक स्तर, स्थिति की उसकी अपनी ठीक पहचान, जगत् के प्रति उसका अपना दृष्टिकोण यही बाते है जो वास्तव में महत्व रखती है । और मुझे आशा है कि आप ब्रह्मचर्य का ऐसा आदर्श उपस्थित करेगे और समाज में ऐसा वातावरण पैदा कर देंगे जिसमें भोगविलास के पीछे लोग न दौड़ें और जिसमें उन्हें ऐसा आत्मिक बल प्राप्त हो जो उन यमनियमों से प्राप्त होता है जो हमारे लिये विहित हैं । कभी कभी मुझे संदेह होता है कि काफी लोगों का ध्यान इस हद तक उस पाप की ओर खींचा नहीं गया है जिस हद तक खींचा जाना चाहिये । बहुत वर्ष व्यतीत हुए जब में ने यह सोचा था कि मैं ऐसी १२ स्त्रियों के जीवन के सम्बन्ध में एक पुस्तक लिखूं जिनको फुसलाकर पतित जीवन में डाल दिया गया है । किन्तु मै ऐसा नहीं कर सका क्योंकि मुझे ऐसे लोगों के सम्पर्क में आने की हिम्मत नहीं थी जो मुझे इस बारे में सही जानकारी दे सकते हैं । किन्तु मेरा विचार है कि उस प्रकार की पुस्तक की आज आवश्यकता है । और लेखक को इस बात को दिखाने का प्रयास करना चाहिये कि पतित जीवन का उन व्यक्तियों पर, जिन्हें वैसा जीवन व्यतीत करना पड़ता है और समाज पर क्या प्रभाव होता है । मेरा विचार है कि ऐसी पुस्तक लोगों के दृष्टिकोण में क्रांतिकारी परिवर्तन कर देगी । हमारे समाज के लिए ऐसी पुस्तक की आवश्यकता है जो इस पाप को, जिसे हम मिटाना चाहते हैं, ठीक तरीके लोगों के सामने रखें । मेरा विश्वास है कि इस प्रकार की पुस्तक लोगों की अन्तरात्मा को जगायेगी और अच्छा वातावरण पैदा करेगी ।

इसलिये मैं आपसे कहूंगा कि यदि आप इस प्रकार का कोई काम करें तो आप समाज के भला करने में बहुत कुछ सहायक सिद्ध होंगे। मै यह भी सुझाव रखता हूं कि इस प्रकार की पुस्तक के लेखक को चाहिये कि वह इस पाप के उन कारणों पर प्रकाश डाले जो इस देश में इस प्रकार की खराबी को पैदा करते है। जैसा कि मैंने कहा है इसका मुख्य कारण यह है कि हमारे आचार-विचार खराब हो गये हैं। इस प्रकार की सामाजिक स्वच्छता केवल इसी बात के लिये नहीं वरन् अन्य बातों के लिये भी आवश्यक है। हमें दिखाई पड़ रहा है कि हमारे आचार-विचारों को बड़ा धक्का लगा है और हमें उनको अपनी पुरानी स्थिति में लाना है। अब हम उस स्थिति में हैं कि हम अपनी चिन्ता स्वयं कर सकें और इस बात का पूरा प्रयास करें कि हमारे आचार-विचार ऊंचे हों और हमारे समाज में ऐसी स्थिति पैदा हो जाये जिसमें इस प्रकार की खराबी असम्भव हो जाये। ठीक है स्थानीय स्थिति, आर्थिक परिस्थिति, आमोद-प्रमोद के उचित साधन तथा अन्य प्रकार की सुविधाओं के अभाव भी इस बुराई के फैलने के कारण है। किन्तु मेरे विचार में ये सब मुख्य कारण नही है। मुख्य कारण तो आध्यात्मिक है और केवल क़ानून बनाने से इस बुराई को नही रोका जा सकता। हम क़ानून से ऐसी घटनाओं को होने से कुछ सीमा तक रोक सकते है। जिनकी सूचनाये यदाकदा प्रकाशित होती रहती हैं। मै क़ानून बनाने का विरोधी नही हूं। मै चाहता हू कि क़ानून बने। किन्तु मेरी इस समाज के सदस्यों से अपील है कि वे इस देश की विशेष परिस्थितियों का अध्ययन करें और अपने कार्यक्रम को हमारे देश की ऐतिहासिक परम्परा के अनुकूल बनावें और इसी प्रकार इस समस्या का प्रभावपूर्ण हल हो सकता है।

इन शब्दों के साथ मैं आप सब को इस बात के लिये फिर धन्यवाद देता हू कि आपने मुझे यह सुअसवर दिया कि मै इस अत्यन्त महत्वपूर्ण समाज में भाग ले सकू।

विजयादशमी

विजयादशमी के अवसर पर क्वीन्स गार्डन में धार्मिक रामलीला समिति द्वारा दिये गये अभिनंदन पत्र के जवाब में राष्ट्रपतिजी ने कहा---

धार्मिक रामलीला के अध्यक्षजी, बहनो और भाइयो,

मुझे आपके इस समारोह में शरीक़ होकर बहुत प्रसन्नता हो रही है। यह दशहरे का दिन हमारे लिये एक बहुत ही महत्वपूर्ण और शुभ दिन है। आज सारे हिन्दुस्तान में सभी लोग इस महत्व का अनुभव करते है और किसी न किसी रूप में इस दिन को मनाते है। हमारा सारा जीवन रामायण और महाभारत की शिक्षा पर ही निर्भर करता है। श्री रामचन्द्र को तो हम पुरुषोत्तम के नाम से भी स्मरण करते हैं। इसका अर्थ यही है कि यद्यपि हम उनको ईश्वर का अवतार मानते हैं मगर तो भी उनके गुण ऐसे हैं जो अगर कोई उनकी सी तपस्या और साधना करे तो उसे भी प्राप्त हो सकते हैं। भगवान् रामचन्द्र का जीवन प्रत्येक मनुष्य के लिये एक आदर्श जीवन है। अपने शिक्षाकाल से ही उन्होंने जिस तरह से सब गुणों को प्राप्त किया और जिस तरह से अपनी सारी जिन्दगी बितायी वह हरेक आदमी के लिये अनुकरणीय

है। रामचन्द्रजी वैसे ही बली और धैर्यवान् पुरुष थे जैसे वह तपस्वी थे। बचपन में शिक्षा पाकर पिता की आज्ञा लेकर वह विश्वामित्र मुनि के साथ गये और छोटी अवस्था में ही अपनी बहादुरी और शक्ति का परिचय दिया। उसके बाद श्री जानकीजी के साथ उनका विवाह हुआ। उसी समय से उनका जीवन पूर्णतया पवित्र और सुन्दर रहा। पिता की आज्ञा से गद्दी छोड़कर जंगल में गये और १४ वर्ष बनवास करके, असुरों का नाश करके फिर गद्दी पर बैठे। जिसे हम आज रामराज्य कहते हैं उस रामराज्य को उन्होंने चलाया।

उस रामराज्य का जैसा सुन्दर वर्णन हमारे पूर्वजों ने किया हैं वह किसी भी राज्य के लिये शोभनीय है। आज के दिन को अगर हम मनाते है तो इसीलिये मनाते है कि जैसे सुखमय दिन और धार्मिक दिन उन्होंने बिताये थे और अपने राजकाज को जिस रीति से चलाया था वैसा ही जीवन हमारे देश के लोग बितायें। न मालूम कितने दिन हो चुके जब रामचन्द्र हुये थे मगर आज भी उनकी जीवनी से हमारे देश का बच्चा बच्चा केवल परिचित ही नही है बल्कि अपने जीवन के लिये सबक सीखता है। और जहां तक उससे हो सकता है अपना जीवन भगवान् रामचन्द्र के चरणचिन्हों पर चल कर बिताने का प्रयत्न करता है। केवल राम ही नही रामायण के और जो चरित्रनायक थे वे भी ऐसे सद्गुणी थे कि वैसे आदर्श चरित्रनायक संसार के किसी भी साहित्य में मिलने मुश्किल है। भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न जैसे भाइयों, दशरथ जैसे पिता, कौशल्या जैसी माता, महारानी जानकी, भक्त हनुमान और अन्य दूसरे बानर लोगों का जीवन भी हमारे लिये, हर एक के लिये, एक आदर्श जीवन है। इसीलिये रामलीला करके हम एक दूसरे को इन चीज़ों की याद दिलाते है, उनकी स्मृति जाग्रत करते है और आगे के लिये अपने लिये संबल इकट्ठा करके दिन बिताने का प्रयत्न करते है। बड़ी खुशी है कि आपने मुझे यह सुवअसर दिया कि यहां दर्शन कर सकू और आप भाइयों और बहनों से मिल सकू। मै आशा करता हूं कि आपका यह प्रयत्न बराबर जारी रहेगा और हम लोग इसके महत्व को समझ लेगें और उसे बढ़ाते जायेंगे। आप सब को धन्यवाद देता हूं।

विजयादशमी का उत्सव

विजयादशमी के अवसर पर गवर्नमेंट हाउस के कर्मचारियों की सद्भावना और सदिच्छाओं का जवाब देते हुये राष्ट्रपतिजी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि इस शुभ दिन पर आप सब इकट्ठे हो कर मुझ से मिले और आपने मुझे यह मौका दिया कि मैं आप सब से मिलू। यह एक अच्छा दिन है जिसको आज सारे हिन्दुस्तान भर में लोग मनाते है, पूजा करते हैं, उत्सव मनाते हैं और हर तरह से लाभ उठाते हैं। मेरी अपनी भी इच्छा होती है लेकिन अफ़सोस है कि ऐसा पहले विचार नहीं हुआ कि इस दिन पर ऐसा प्रबन्ध किया जाये जिससे कम से कम जो लोग यहां पर काम करते है उन सबको इस प्रकार के भाईचारे का मौका मिले जैसा आदमियों के बीच में होना चाहिये। खास तौर से छोटे बड़े की भावना छोड़ कर सब मिल कर हर्ष मना सकें। हमारे जितने

त्यौहार है सब में इस बात का ध्यान रक्खा गया है कि उस दिन छोटे बड़े की बात नहीं होती और सब मिलजुल कर एक साथ बैठते हैं, खेलते हैं, खाते है और खुशी मनाते हैं। ऐसे पर्व के दिन न कोई बड़ा होता है और न कोई छोटा होता है; सबका बराबरी का दर्जा होता है। ऐसे अवसर पर लोग कोई दूसरा सम्बन्ध नहीं रखते, केवल मनुष्य का सम्बन्ध रखते है और एक दूसरे से मिलते है और खुशी मनाते हैं। तो इस तरह त्यौहार के दिन पर हम ऐसा प्रबन्ध करें कि अगर हमें शहर के लोगों से, बाहर के आदमियों से, देश के लोगों से मिलने का मौक़ा न भी मिले तो कम से कम जो लोग यहा काम करते है उनसे हम मिल सकें जिसमें लोग समझें कि ये चीज़ें अपनी है।

दशहरे के महत्व के सम्बन्ध में कुछ कहना शायद जरूरी नही है। यह दिन सारे देश में मनाया जाता है और ज़ोरों से मनाया जाता है। यह वह दिन है जिस दिन रामचन्द्रजी ने रावण को मारा था और इसके पहले के जो ९ दिन है वे ऐसे दिन है जब रामचन्द्र जी ने विशेष तपस्या कर के शक्ति हासिल की थी और दसवें दिन रावण को मारा था। इसलिये ९ दिनों तक सारे हिन्दुस्तान में लोग पूजा करते है और दसवें दिन विजयादशमी मनाते हैं। रामायण में इस लड़ाई का ज़िक्र है। यह लडाई हुई। मगर इस तरह की लडाई तो हमेशा चलती रही है। बुराई और भलाई का, नेकी और बदी का, सुर और असुर का यह झगड़ा आज का नही है, यह हमेशा रहा है और हमेशा रहेगा। और हम इन त्यौहारों से बहुत कुछ सीख मकते है। इससे हम सीख सकते हैं कि किस तरह से बुराई पर फ़तह पावें, सच्चाई पर चलें। दशहरे का महत्व यही है। आज का यह दिन बहुत अच्छा दिन था और मै आप सबको अपनी ओर से विजयादशमी की सदिच्छा देता हूं जिस तरह से आप सबने मुझे दी है। में आप सब को धन्यवाद देता हू कि आपने मुझे यह मौक़ा दिया।

अब हमें यह पहले से ही तय कर लेना चाहिये कि अब जो त्यौहार आवें उन्हें हम लोग किस तरह से मनावें जिसमें दूसरे लोगों से नहीं तो कम से कम यहां के सभी लोगों से मिल सकें हमारे जितने त्यौहारों के दिन है वे बहुत अच्छे दिन है चाहे हिन्दुओं के हों, मुसलमानों के हों या ईसाइयों के हों। मैं समझता हूं कि देश के सभी मज़हब के लोग, सभी धर्म के लोग यहां हैं। कुछ विदेश के लोग भी है। हमें तो सब से प्रेमभाव रखना हैं; सबसे मुहब्बत करनी है; किसी से हमारा द्वेष नहीं है। इसलिये हम लोग जो यहां काम करते हैं एक दूसरे के दुःख में, एक दूसरे की खुशी मे शरीक हों और हम एक नमूना पेश करें तो मुमकिन है कि देश के और हिस्सों में भी उसका असर पड़े। मै आपकी सद्भावना, सदिच्छा के लिये आप सब को धन्यवाद देता हूं। मुझे खुशी है कि आप सब से मैं इस शुभ दिन पर मिल सका और आप सब मुझ से मिल सके।

एक बात में और कहना चाहता हूं। यहां और बहुत से भाई काम करते हैं जो यहां पहुंच नहीं सके हैं और जिनसे हम लोग मिल नहीं सके। मेरा इशारा उन लोगों से है जो लोग बाग़ में काम करते हैं या दूसरी जगह पर काम करते हैं। उन लोगों से भी मिलना अच्छा होगा। अब तो समय नहीं है। मगर जब मैं उधर से लौटकर आता हूं तो इसका इन्तज़ार किया जाये कि उन सब से मैं मिल सकूं और दूसरे पर्व में ऐसा सोचा जाये कि वे सब के सब उसमें शामिल हो सके।

१५५

देहरादून में नागरिक अभिनन्दन

देहरादून म्युनिसिपैलिटी और उसके कर्मचारी संघ द्वारा दिये अभिनन्दनपत्र के जवाब में राष्ट्रपति जी ने कहा--

देहरादून नगरपालिका के अध्यक्षजी, सदस्यगण तथा कर्मचारी लोग,

मैं आप सब को हृदय से धन्यवाद देता हूं कि आपने मेरा इस शहर में बड़े प्रेम से स्वागत किया। मैं देहरादून आज पहले पहल नहीं आया हू। एक प्रकार से यहां कई बार आते जाते यहां से कुछ परिचित हो चुका हूं और जैसा आपने कहा एक बार पहले भी बड़ी कृपा करके आपने मेरा स्वागत किया था। उस दिन से और आज में बड़ा अन्तर पड़ गया है। जब मैं पहले पहल सन् १९२३ मे देहरादून आया था उस दिन में, आज में, इस शहर में और सारे देश में इतना फ़र्क़ है कि उस समय जिन्होंने भारत को देखा होगा और आज के भारत को भी देखते होंगे वे कह सकते हैं कि यह कितना बड़ा अन्तर है। हो सकता है कि जिन्होंने उस समय भारत को नही देखा होगा और वे केवल आज भारत को देखते है वे शायद इसको न समझें। मैं मानता हूं कि जहा जहां इस देश के अन्दर नगरपालिका बन गयी हैं और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बन गये है या आगे बनेंगे उनका पहला काम तो यह है कि जिस शहर की नगरपालिका हो जिस ज़िले का ज़िलाबोर्ड हो उस शहर और ज़िले की जहां तक सेवा हो सके, जो जो काम उनके सामने रक्खा गया हो उसे अच्छी तरह से पूरा करके दिखलावे। उनकी सफलता इस बात से मानी जाती है कि उन्होने कहां तक अपना काम पूरा किया। शहर के अन्दर सडकों की सफ़ाई, दवाख़ाने, शिक्षा का इन्तज़ाम, अच्छी और सुन्दर और स्वादिष्ट और साथ साथ शुद्ध खाने की चीज़ों को व दूध को पहुंचाना यह सब उनका काम है। नगरपालिका के अन्दर जो लोग रहते हैं और जो गरीब लोगों की बस्तियां है उनको सुधारना, उन पर विशेष ध्यान देना, नगरपालिका का विशेष काम है। इसी तरह सड़कों की मरम्मत करना, ठीक से रखना और जहां तक हो सके दवाख़ाने का प्रबन्ध करना और सब जगहों पर शिक्षा का इन्तज़ाम करना और जहां बीमारी हो उसमें लोगों की सहायता करना और खेती की उन्नति और दूसरे प्रकार से ज़िले की जो उन्नति हो सके ऐसे काम करना ज़िलाबोर्डों का काम होता है। इसलिये यदि प्रान्तीय गवर्नमेंट और केन्द्रीय गवर्नमेंट को छोड़ दें तो भी आज इन सस्थाओं के हाथ में इतना काम और इतना अधिकार है कि ये वहां के लोगों को सुखी और सम्पन्न बनाने में बहुत कुछ कर सकती हैं। इसके अलावे इन संस्थाओं के ज़रिये लोगों को एक मौक़ा मिलता है कि किस तरह से काम किया जाये किस तरह से शहर और ज़िले का प्रबन्ध किया जाये, किस तरह से ऐसे काम जो केवल एक आदमी के काम नहीं बल्कि सारे शहर या ज़िले के काम हैं ठीक तरह से अंजाम दिये जायें।

इस तरह से तजुरबा हासिल करने का मौक़ा मिलता है। अन्य देशों में और ख़ासकर इंगलैंड में तो ऐसा इतिहास रहा है कि जो लोग अपने शहर में और इलाक़े में कामयाब हुये है वे ही पीछे जाकर मंत्री पद पर भी कामयाब हुए हैं। मगर इस देश में आज तक तो दूसरी प्रकार की व्यवस्था थी। जो लोग इन संस्थाओं को चलाते थे उनको ऐसा मौक़ा नहीं मिलता था कि वे

अपनी योग्यता और तजुरबे को शासन में और कही दिखला सकें । मगर अब ये चीजें बदलनी चाहियें और मै आशा करता हू कि बदलेंगी । इसलिये शहर के लोगों की सेवा करने वाले, अच्छा काम करने वाले ऐसे लोग जिनमें योग्यता हो, जिनमें सच्चाई हो, जिनमें ईमानदारी हो, जिनमें सेवा की भावना हो, ऐसे सेवक तैयार करना भी आपका काम है । मै आशा करता हूं कि ऐसे कामों से आप जो अनुभव प्राप्त करेगे उससे सारे देश को लाभ उठाने का मौक़ा मिलेगा । इसलिये मै जब कही जाता हूं और नगरपालिका की ओर से मेरा स्वागत किया जाता है तो मै समझता हूं कि ऐसे लोगों से मिलने का यह अच्छा मौक़ा है जो ऐसे कामों में लगे है जिनके तजुरबे से पीछे देश को लाभ पहुंचने वाला है ।

अभी देश की जो अवस्था है उस पर अगर सोच कर देखें और दूसरे प्रकार से देखें तो मालूम होगा कि वह बहुत बदली है और बदल रही है। आज हमारे अपने देश के लोगों के हाथों मे देश का सारा इन्तजाम आ गया है; देश के प्रतिनिधियो के हाथों में सारा अधिकार आ गया है । वे देश को बनाना और बिगाड़ना चाहें तो बना और बिगाड़ सकते है । अगर कोई बात बिगड़ी तो उसका इलज़ाम हम किसी पर नही डाल सकते और अगर कोई बात बनी तो देशभाइयों से अतिरिक्त कोई और उसके श्रेय के लिये दावा नही कर सकेगा । अब तो बनाने और बिगाड़ने के लिये जो शिकायत और श्रेय होगा अपने ही लोगों के सर पर होगा । जब हम इस बात पर विचार करते है कि स्वतन्त्रता मिलने के बाद हमने कुछ काम भी किया है या नही किया तो हमें इस बात को बराबर ध्यान में रखना चाहिये ।

लोग कहते है और किसी हद तक यह बात सच भी है कि अभी भी देश में ग़रीबी है, आज भी देश में कई तरह की शिक़ायतें है और आज भी बहुत सी बातें वैसे ही चल रही है जिस तरह अंग्रेज़ों के ज़माने में चलती थी । अगर आप महज़ इन सब चीज़ों पर ही ध्यान देंगे तो ज़रूर मालूम पड़ेगा कि अभी कोई फ़र्क़ नही पड़ा है । पर इन सब बातों पर विचार करते समय यह भी देखना चाहिये कि स्वतन्त्रता मिले अभी तक तीन वर्ष बीते हैं और प्रजातन्त्रात्मक राज्य की स्थापना के बाद ८–९ महीने बीते हैं । इन तीन वर्षों के अन्दर हमारे सामने कितनी मुसीबतें आयी, कितनी दिक्क़तें आयीं जिनका हमको मुक़ाबला करना पड़ा । अगर हम ऐसा करेगे तो हमें मालूम होगा कि इन दिक्क़तों पर क़ाबू पाना कोई छोटी बात नही थी ।

जिस दिन हमको स्वतन्त्रता मिली उसी दिन देश का बंटवारा भी हुआ । अगर केवल बंटवारा हुआ होता तो भी देश की स्थिति को सभालना कोई आसान काम नहीं होता । मगर बंटवारे के साथ साथ हम पर विपत्ति भी आयी । उसका नतीजा यह हुआ कि लाखों लाख आदमियों को बेघरबार होकर अपना सब कुछ छोड़ छाड़ कर यहां आना पड़ा । यद्यपि आज तक बराबर इस बात की कोशिश की जाती रही है और गवर्नमेंट से जहां तक हो सका है वह कोशिश करती रही है कि उन भाई बहनों की सहायता में लगे पर तो भी आज यह नहीं कहा जा सकता है कि हम उनको पूरी तरह से बसा सके हैं । हमारे सामने यह इतना बड़ा सवाल आया कि इतने बड़े सवाल का किसी भी देश या किसी भी गवर्नमेंट को मुकाबिला नहीं करना पड़ा था । कोई ७०-८० लाख आदमियों को बसाना, उनको संभालना कोई छोटी बात नहीं है । हमारे सामने इन ७०–८० लाख लोगों

को बसाने का जो काम आया उसको हम पूरा नहीं कर सके हैं। हमें इसके लिये अफ़सोस ज़रूर है पर इसको पूरा करने की हमने कोशिश की है और आज भी हम कोशिश कर रहे हैं। इसमें मतभेद की गुंजाइश हो सकती है कि इस तरह से काम न होकर इस तरह से होना चाहिये। मगर देखना यह है कि हमने दिल व जान से कोशिश की है या नहीं। मैं कह सकता हूं कि कोशिश हुई है। मैं इन मुसीबतज़दा भाई बहनों से यह ज़रूर कहूंगा कि उन्होंने बड़ी हिम्मत दिखलायी है और उन्होंने धीरज और दृढ़ता के साथ अपनी तकलीफ़ों को बर्दाश्त किया है। इस बात को तो कहने की ज़रूरत ही नही है कि सब लोगों को इन भाई बहनों से सहानुभूति है। सब लोग उनके दुख में दुखी है और यह तो स्वाभाविक ही है कि हम सबको उनके दुख में दुख हो। दूसरी बात जिसे आपको ध्यान में रखना ज़रूरी है वह यह है कि पिछली लड़ाई के असर से हमारा देश भी मुक्त नही है। इतनी बड़ी लड़ाई के बाद यह होता ही है कि दुनिया के हर देश में बहुत तरह की शिकायतें पैदा हों, बहुत तरह की गड़बड़ी मचे। हमारा देश भी इन नतायज से बरी नही रह सकता था। इससे सबसे बुरी बात तो यह हुई है कि हम लोग यह भूल गये है कि हमारा आपसी बर्ताव कैसा होना चाहिये। यह इसी देश में नही सभी देशों में हुआ है। लेकिन जब हम अपने देश की बात सोचते हैं तो खास दुख होता है। हमारे देश के लोगों को हमेशा से सिखाया गया है कि सब एकसाथ मिलकर रहें, सबके साथ अच्छा बर्ताव करे और एक दूसरे के साथ सहानुभूति करे। यह हर आदमी का फ़र्ज़ है। लेकिन आज हम इस आदर्श से गिर गये है। इसके अलावा हमारा नैतिक स्तर भी गिर गया है। यह बात मै छोटे दल या जमात के लोगों की तरफ़ इशारा करके नही कह रहा हू। ऐसा सभी लोगों मे हुआ है। आज इस तरह की चोरबाज़ारी क्यों होती है, रिश्वत की शिकायत क्यों होती है ? आज कोई काम ठीक से क्यों नही चल रहा है ? जो लोग इस तरह के काम मे या दूसरी तरह के काम में लगे हुए है वे अपना काम ठीक से क्यों नही करते ? यह हमारे देश के लिये अच्छी बात नही है। क्यो कि जो स्वतन्त्रता हमारे हाथों में आ गयी है उसकी रक्षा करना हमारा काम है। उस स्वतन्त्रता को अपने लिये और संसार के लिये इस तरह से कायम रखना है कि हम एक नया आदर्श दुनिया के सामने रख सके और उसके अनुसार चलकर लोगों को सुखी रख सके।

संसार में तरह तरह की चीज़ें होती है। हम अक्सर मानते हैं कि अगर हमारे पास बहुत धन हो, बहुत सामान हो तो हम सुखी हो जायेंगे। बात ऐसी नही है। बहुत सामान या धन होने से आदमी सुखी नही होता बहुत धन होते हुये भी आदमी सुखी नहीं हो सकता। सच्चा सुख तो इसमें है कि लोगों को संतोष हो, लोगों में सचाई और ईमानदारी हो। एक दूसरे के साथ लोगों का जो बर्ताव हो उसमें भी सचाई होनी चाहिये। कुछ लोग कह सकते है कि ये चीज़ें तो पुस्तकों में, धार्मिक ग्रन्थों में लिखी हुई है ही उनको दुहराने से क्या लाभ ? मगर ऐसा वक्त आता है जब इन बातों का दुहराना ज़रूरी हो जाता है। यदि याद दिलाने से इस काम में लाभ होता है तो यह ज़रूरी हो जाता है कि इसे दोहराया जाये। इसलिये मै जहां भी जाता हूं और इस तरह की शिकायत सुनता हूं तो मैं उन लोगों से जो इस तरह की शिकायत करते हैं कहता हूं कि वे भी सोचें कि उनका इसमें कितना भाग है, उसमें उनकी कितनी ज़िम्मेदारी है और यह कहता हूं कि अगर वे ऐसा करेंगे तो बहुत कुछ काम ठीक हो जा सकता है। मगर दुर्भाग्यवश जब लोग शिकायत करते हैं तो वे अपनी तरफ़ ध्यान न देकर दूसरों की कही बुरी बातों पर ध्यान देते हैं। इसका फल यह

होता है कि जो लोग अपने को सुधार सकते हैं सुधारते नहीं और दूसरों को सुधारने में लग जाते हैं जिनको वे सुधार नहीं सकते क्यों कि उन पर उनका अधिकार नहीं होता। इसलिये अगर दूसरों को सुधारने की कोशिश में वे लोग नाकामयाब होते है तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसलिये मैं तो आपसे यह कहना चाहता हूं कि अगर कोई बात बिगड़ती है तो यह देखने के बजाय कि किसने इसे बिगाड़ा अगर आप यह देखें कि इस बात के बिगड़ने में आपका क्या हिस्सा है और आपका जो हिस्सा हो उसे अगर आप दुरुस्त करें तो उम्मीद है कि दूसरे भी अपने हिस्से को दुरुस्त करेंगे। इसलिये मैं चाहता हूं कि जितने देश के सेवक हैं, जितने गवर्नमेंट के नौकर है, गवर्नमेंट के मंत्री से लेकर छोटे छोटे कर्मचारी तक सब को यह सोचना है कि इनकी अपनी अपनी ज़िम्मेवारी क्या है ? इनका अपना कर्तव्य क्या है और किस तरह से वे अपना कर्तव्य अदा कर सकते है। उन्हें चाहिये कि दूसरों को सुधारने की कोशिश करने के बजाय अपने को सुधारने की कोशिश करें। मै समझता हूं कि इस नीति पर चलने से ज़्यादा सुधार होगा।

मैं आप सब भाइयों को धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे अपने दिल की ये बातें कहने का मौक़ा दिया। मै चाहता हूं कि आप इस तरह की बातों पर सोचें और आज जो बड़ी ज़िम्मेदारी देश के सभी भागों पर आ गयी है उसे निभाने के लिये अपने को तैयार करें। स्वराज्य मिल गया है और उसे संभालने का कठिन सवाल सामने आ गया है। मेरा विश्वास है कि स्वराज्य लेना जितना कठिन नहीं था उतना उसे संभालना कठिन है। मै यह भी मानता हूं कि आज जितने त्याग की ज़रूरत है, जितनी सेवा की ज़रूरत है, जितनी लगन से काम करने की ज़रूरत है, उतने त्याग, सेवा तथा लगन की आज से पहले ज़रूरत नहीं थी। इसलिये मै चाहता हूं कि आप नगर-पालिका के ज़रिये यह सब काम करें और अपना कर्तव्य पूरा करे।

दून स्कूल का संस्थापक दिवस

*दून स्कूल के संस्थापक दिवस के वार्षिकोत्सव के अवसर पर देहरादून में २२ अक्तूबर १९५० को राष्ट्रपति ने कहा—

श्री मार्टिन, बहनो और भाइयो,

इतने सजग नवयुवको में आज अपने को पाकर मै अत्यन्त प्रसन्न हूं। यह स्फूर्तिदायक अवसर मुझे बहुधा प्राप्त नहीं होता जब मैं उन लोगों के सम्पर्क में आ सकूं जिन पर भविष्य में हमारे देश को ज्योतिर्मय करने का भार होगा। स्वभावतः भविष्य के इन महावीरों से ऐसी कोई भेंट मुझे ऐसी लगती है मानो राजमन्दिर के राजकाज प्रकोष्टों में बाहर से स्वच्छ निर्मल वायु का झोंका आगया हो। ये मुझे मूर्तिमान पुनर्जीवन के समान लगते हैं—उस अतीत का पुनर्जीवन जब मेरे लिये यह जगत इतना नया, इतना ताजा और इतना आश्चर्यमय था—किन्तु इससे भी कहीं अधिक मेरे लिये वे भवितव्यता के अवतार हैं। उनके देदीप्यमान् मुखों में मुझे अपने देश और संसार का भावी स्वरूप प्रतिबिम्बित दिखाई पड़ता है। उनका यौवन मेरे लिये अमर आश्वासन है कि उस समय भी जब हम, जिनका शास्त्रोक्त आयुकाल अब समाप्त हो रहा है, अपने

*अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

विधाता के समक्ष अपने जीवन का हिसाब देने के लिये चले गये होंग वह आदर्श जिससे हमारा जीवन सार्थक और सफल बना था, सब काल के लिये सुरक्षित रहेगा।

चूंकि मेरी ऐसी भावना है इसलिये मेरी यह आकांक्षा है कि उन लोगों को अपने महान् और गरिमामय काम के लियें ऐसी संस्थाओं में शिक्षा मिलनी चाहिये जिन्हें कि मानव समाज में युवकों के स्थान का सही सही ज्ञान हो। इस संस्था के संस्थापक स्व० श्री एस० आर० दास ने अपने समय की परिस्थितियों में यह महसूस किया था कि भारत को अपने नवयुवकों की समुचित शिक्षा के लिये लोकविद्यालयों की आवश्यकता है और इसी विश्वास के आधार पर उन्होंने इस संस्था की योजना तैयार की थी। उस दिन से संसार में और हमारे देश में ज्ञान और संस्थाओं के क्षेत्र में अनेक् महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। अतः यह स्वाभाविक ही है कि परिवर्तित सामाजिक परिस्थितियों के दबाव से इस बात की बड़ी ज़ोर की मांग हो कि हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था और पद्धतियों में परिवर्तन किया जाये। आपने इस बात का निर्देश किया है कि आजकल लोक विद्यालयों की संस्था के विरुद्ध इंगलैण्ड में पर्याप्त आलोचना हो रही है। मेरा विचार है कि यदि समाज में लोकविद्यालय को प्रभावी और कल्याणप्रद काम करना है तो उसके लियें यह आवश्यक है कि वह आलोचकों के दृष्टिकोण को यथावत् समझे और अपने संगठन में जो दोष मिलें उन्हें दूर करे। लोक विद्यालयों के विरुद्ध दूसरे देशों में किसी प्रकार की भी आलोचना क्यों न हो, हमारे देश में तो एक स्वयंविदित आलोचना यह है कि यह पृथकत्व की भावना को जन्म देता है अर्थात् अपने विद्यार्थियों में यह बड़प्पन की वृत्ति पैदा करता है। हमारे देश के साधारण जन जिस प्रकार का जीवन व्यतीत करते हैं उसके अनुकूल इस को बना कर यह दोष दूर किया जा सकता है। यह केवल सम्भव ही नहीं है वरन् लोकविद्यालयों का प्रकारआधारभूत तत्व भी है जिस पर वे ठहरे हुए हैं। यदि मै ने इसके स्वरूप को ठीक ठीक समझा है तो मै कह सकता हूं कि लोकविद्यालय का एक प्रमुख तत्व—वह तत्व जो इसे अन्य सब की शिक्षण संस्थाओं से पृथक् कर देता है—इसका सामूहिक जीवन है। साधारणतया शिक्षा संस्थाओं को ऐसी पठन-पाठन की संस्था के अतिरिक्त कुछ नहीं समझा जाता जिनमें बालकों को लिखने पढ़ने और हिसाब की शिक्षा दी जाती है किन्तु जिनका उनके पूर्ण व्यक्तित्व से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं होता। इसके विपरीत लोक विद्यालय के आधार में यह विचार है कि जीवन के कुछ विशिष्ट पहलुओं के सम्बन्ध में जानकारी के कुछ टुकड़ों को एकत्रित कर लेना ही शिक्षा नही है वरन् उसका अर्थ तो यही है कि बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को ऐसा ढाला जाये कि उसे कुछ प्रकार से आचरण करने की सहज आदत पड़ जाये, कला और विज्ञान की महान् विभूतियों से परिचित होने के कारण उसकी बुद्धि समृद्ध हो जाये, प्रकोष्ट-व्याख्यान, गृह तथा क्रीड़ा-क्षेत्र में मन और स्नायु के संघर्ष से उसकी प्रज्ञा प्रखर हो जाये और कठोर व्यायाम द्वारा वह बलवान् शरीर बना सके तथा अपने जैसे ही मानवों के साथ रह कर कार्य करके और खेल कर आपस में एकता की भावना पैदा कर सके। दूसरे शब्दों में लोकविद्यालय इस विचार पर खड़ा हुआ है कि संस्कृति का सब से प्रबल साधन और स्रोत इतनी मात्रा में पुस्तकें नहीं है जितनी में कि समुचित रूप से संगठित जीवन होता है। मेरा विचार है कि इसकी यह प्रतिज्ञा कि सामूहिक जीवन ही सर्वोत्तम शिक्षक है अत्यन्त मूल्यवान् विचार है। यह ऐसा विचार है, जो मानव जाति की भावी संस्कृति के क्षेत्र में अधिकाधिक महत्वपूर्ण काम करने वाला है। अतः मैं यह जानकर प्रसन्न हूं कि

आपकी संस्था के सदस्यगण ने साक्षरता, ग्रामसेवा और स्वयंसेवक भावना के प्रसार के लिये कई संस्थाओं की स्थापना की है। किन्तु जहां ये सब क़दम ठीक दिशा में उठाये गये हैं, वहां मैं यह भी समझता हूं कि देश में एक आदर्श लोकविद्यालय बनने के लिये इस संस्था को कुछ और बातें करने की आवश्यकता है। मेरा विचार है कि यह परिवर्तन इस बात में है कि यह संस्था देश के लोक जीवन से पूरी तरह एकीकृत हो जाये। इस एकीकरण का यह अर्थ है कि यहां शिक्षा का माध्यम इस देश की जनता की भाषा—अर्थात् हिन्दी ही हो। मै मानता हूं कि आज कल ऐसा करने में कुछ महत्वपूर्ण कठिनाइयां है। पर जहां मैं इन कठिनाइयों को स्वीकार करता हूं वहीं मै इस बात पर पूरा बल देना चाहता हूं कि इन कठिनाइयों पर शीघ्रातिशीघ्र विजय पाने के लिये इस संस्था को हर सभव प्रयास करना चाहिये। कम से कम यहां के शिक्षकों और विद्यार्थियों को इस बात का प्रयास तो करना ही चाहिये कि जीवन के जितने क्षेत्रों में संभवतया वे हिन्दी का प्रयोग कर सकते है उस का प्रयोग करे। मेरे इस कथन का यह आशय आप न लें कि मै चाहता हू कि अंग्रेज़ी को पूर्णतया हटा दिया जाये। अग्रेज़ी के विरुद्ध मेरा लेषमात्र विद्वेष नही है। मै तो यह समझता हू कि इस के ज्ञान से हमें अनेक देशों और जातियों के विचारों से अपने को परिचित करने में सहायता मिलती है। और यह कोई छोटी बात नही है। इस के अतिरिक्त अग्रेज़ी तो हमारे लिये और अनेक अन्य देशो के लिय अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य और आदान प्रदान की भाषा बनी रहेगी। अतः यह स्पष्ट है कि अग्रेज़ी का ज्ञान पूर्णतया आवश्यक है और हमारे बालक उस को सीखते रहेगे। किन्तु मेरा यह आशय अवश्य है कि यह विचार कि अग्रेजी सत्ता और पद प्राप्त करने का विशिष्ट साधन है अब हट जाना चाहिये। इसे सम्मान और सस्कृति का केवल एकमात्र प्रतीक न मानना चाहिये। इस के विपरीत इस सस्था के विद्यार्थियों को इस विश्वास के साथ बढना चाहिये कि वे अपने जीवन के कार्य को पूरा करने मे तभी समर्थ होंगे जब वे उस भाषा में पारंगत हों जिसे इस देश के साधारण लोगों की विशाल जन संख्या बोलती और समझती है। उन्हें अपने देश भाइयो की वाणी से प्रेम और इस के प्रति आदर और गौरव की भावना होनी चाहिये। मै इस बात पर बल इस लिये देता हू क्योंकि मेरी यह भावना है कि जिस लोकतन्त्रात्मक समाज के निर्माण का हम इस देश में प्रयास कर रहे हैं उस को विचार में रख कर यह आवश्यक है कि अंग्रेज़ी शिक्षित और देश के अन्य लोगों के बीच जो मानसिक खाई पैदा हो गई है वह पूरी तरह दूर हो जाय।

अभी हाल तक उन लोगों के मन में जो अंग्रेज़ी के माध्यम द्वारा शिक्षा प्राप्त करते रहे है अनजाने ही यह मान्यता रही है कि उन का शिक्षा प्राप्त करने का मुख्य ध्येय यह है कि अंग्रेज़ी रहन सहन से वे अपने को यथासंभव एकीकृत कर लें। इस भावना के कारण वे भारतीय जनता से पृथक हो गये हैं। उन का भेष, उन की भाषा, उन का आचार, उन के सामाजिक आदर्श, उन की रुचि और हौबी और उन के आमोद प्रमोद की रीति सभी तो जनता की इन सब बातों से सर्वथा भिन्न और विदेशीय हैं। वे अपनी जन्म भूमि में ही एक नया वर्ग या जाति बन गये हैं। मेरा विचार है कि यह

बहुत ही हानिकारक बात हुई है और अब समय आ गया है कि इस को खत्म किया जाये। हमारे देश में हमारे सामने अनेक समस्यायें सुलझाने के लिये है। हम उन्हें तभी सफलता से सुलझा सकते है जब शिक्षित और अशिक्षित दोनो के हृदय में एक सी ही धड़कन होती हो। यदि हमारा राष्ट्रीय व्यक्तित्व इस प्रकार निश्चल बना रहा तो हमारा बचना संभव नही है। यही कारण है कि मै यह महसूस करता हूं कि इस संस्था में और देश मे इसी प्रकार की अन्य संस्थाओं मे शिक्षा माध्यम के सम्बन्ध मे जो दृष्टिकोण है उस मे क्रान्तिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है।

जनता की भाषा पर मेरा इतना आग्रह केवल उस के अपने हेतु ही नही है अर्थात् वह इस लिये नही है कि मै भाषा की दृष्टि से उसे अंग्रेज़ी या किसी अन्य भाषा से उत्तम समझता हूं। मेरा आग्रह तो इस विश्वास से पैदा हुआ है कि अपने देश मे लोकतंत्रात्मक समाज तथा सपन्न कृषि और उद्योग के निर्माण मे जनता की शक्ति को लगाने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि बुद्धिजीवियों और साधारण जनों के आदर्शो और विचारो मे कोई गहरी खाई न हो। इस कारण मुझे ऐसा लगता है कि लोकविद्यालय को हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेशों मे हिन्दी को तथा अहिन्दी भाषा भाषी प्रदेशों मे वहा की जनता की भाषा को शिक्षा माध्यम के रूप मे केवल अपनाना ही नही चाहिये वरन् उन्हें भारत के इतिहास साहित्य और सामाजिक ढाचे को भी उस से कही अधिक महत्व देना चाहिये जितना कि वे आज कल उन्हे देते है। कम से कम पाठशालाओं के बालको के लिये तो इस नीति को अपनाना नितान्त आवश्यक है क्योंकि ऐसा करने पर ही वे भारतीय जनता के अखण्ड अंग बन पायेगे। मै आप लोगों से बडे आग्रह के साथ कहता हू कि आप इस बात का प्रयास करे कि आप के बालक वाल्मीकि और व्यास, कालीदास और भवभूति, टैगोर और गांधी की रचनाओं के अमृत का पान करें। मै यह बात फिर दुहरा देना चाहता हू कि किसी संकीर्ण राष्ट्रीय भावना से प्रेरित हो कर मै इस परिवर्तन का पक्ष नही कर रहा हू। मै तो ऐसा इस लिये कर रहा हू क्यो कि मुझे विश्वास है कि इन विभूतियो मे से, जिनका अभी अभी मै ने नाम लिया है, प्रत्येक ने निस्पृह किन्तु सृजनात्मक सेवा के उस महान् आदर्श का गान गाया है जिस की आज मनुष्य जाति को सब से अधिक आवश्यकता है। मेरा विश्वास है कि ज्ञान की जिज्ञासा के पीछे चलते चलते मनुष्य आज ऐसी मंज़िल पर पहुच गया है जहां उस के बचने के लिये यह नितान्त आवश्यक है कि उस के सारे कार्य चाहे वैयक्तिक और चाहे सामाजिक इस सेवा के आदर्श से प्रेरित हों। यदि वह अपने ही स्वार्थ और अपने ही सत्ता-साधन की भावना से अपने कार्यो मे प्रेरित रहा तो उस के हाथों मे जो शक्ति है उस शक्ति की बाहुल्यता ही आज उस के लिये भारी सकट बन जायेगी। उन युगों मे जब उस की शक्ति सीमित थी इस प्रकार की स्वार्थ साधना से समस्त मानव जाति के विनाश का खतरा नही था। किन्तु आज यह संकट सर पर मंडरा रहा है और अत्यन्त निकट है। कोई भी व्यक्ति कोई भी समूह, कोई भी राष्ट्र इस शक्ति का अपने स्वार्थ साधन के लिये इस संकट को बुलाये बिना प्रयोग करने की आशा नही कर सकता कि उस का अपना और अन्य लोगों का उस प्रयोग के कारण सर्वनाश हो जाये। अतः अब समय आ गया है कि हम आत्म दम्भ और आत्म स्वार्थ के स्थान

में अन्य आदर्शों को अधिक महत्त्व देना आरम्भ कर दें। आज हमें सब लोगों में विनम्रता और त्याग, सेवा और सहानुभूति की भावना की आवश्यकता है। अब समय है कि ये आदर्श हमारे जीवन के स्रोत बन जायें; और यह तभी होगा जब हमारे बालक आप की जैसी संस्थाओं में हमारे देश के साहित्य से आध्यात्मिक चेतना प्राप्त करेंगे। मै यह और कह देना चाहता हूं कि जनता की भाषा को शिक्षा माध्यम के रूप में अपनाने में चाहे कितनी ही कठिनाइयां क्यों न हों, साहित्यक अध्ययन के पाठ्य क्रम में भारतीय साहित्य को सम्मिलित करने मे तो अविलम्ब कोई कठिनाई है ही नही अतः मै समझता हूं कि यह परिवर्तन तो करना ही है और तुरन्त करना है।

मै यह जानता हूं कि साहित्य के थोड़े अध्ययन से ही बालकों में इन आदर्शो के अनुकूल जीवन व्यतीत करने की आदत नही पड जायेगी। वे साहित्य के सौदर्य को देखेंगे किन्तु केवल उस से ही उन के मन में यह विश्वास पैदा नही हो जायेगा कि वह सौन्दर्य उन के अपने जीवन का सौदर्य हो सकता है। यह विश्वास तो उन में तभी पैदा होगा जब वे पाठशाला के, छात्रावास के, क्रीड़ा क्षेत्र के और अन्य क्षेत्र के जीवन में इस विश्वास के अनुकूल आचरण करने लगें। अतः मेरी यह भावना है कि इस संस्था के विद्यार्थियों की जीवनचर्या और कार्यरीति में भी तदनुकूल परिवर्तन करने की आवश्यकता है। उन सब को पाठशाला में और अड़ौस पडोस में किसी न किसी प्रकार के सृजनात्मक कार्य को अपने हाथ में लेना चाहिये। अतः मुझे इस बात से हार्दिक प्रसन्नता है कि इस सस्था के विद्यार्थियों ने ग्राम सेवा और साक्षरता प्रसार का कार्य हाथ में लिया है। मेरा विचार है कि यह कार्य इस संस्था का अविच्छिन्न अंग होना चाहिये। तभी यह संस्था ऐसी मानव धारा का स्रोत बन जायेगी जो भविष्य में सर्वदा बहती रहे। अपना वक्तव्य समाप्त करने से पहले मै आप को आश्वासन दिलाना चाहता हूं कि इस महान् और गरिमामय कार्य के पूरा करने में आप की पूर्ण सफलता के लिये मेरी पूरी शुभकामनायें और प्रार्थना है। मै आप सब लोगों के साथ इस संस्था के संस्थापक श्री एस० आर० दास को भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। आज वह हमारे मध्य में नही है किन्तु मुझे विश्वास है कि जो अपेक्षा वे आप से करते थे वह बालकों की अनेकानेक पीढ़ियों की सेवा करने के लिये आप को प्ररित करती रहेगी।

संयुक्त राष्ट्र दिवस

संयुक्त राष्ट्र दिवस के उपलक्ष में राष्ट्र के नाम अपना संदेश प्रसारित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा—

मानव का यह बड़ा पुराना सपना है कि अन्तर्राष्ट्रीय संगठन द्वारा राष्ट्रों में आपसी शान्ति और दोस्ती कायम हो जाये। भूत काल में यह कोरे सपने के अलावा और कुछ न था और न हो सकता था क्योंकि उस समय इस बात की सुविधा न थी कि उन मानसिक और भौतिक दीवारों को हटाया जा सके जो आदमी को आदमी से, कबीले को कबीले से, राष्ट्र

को राष्ट्र से जुदा रक्खे हुए थी और जिन की वजह से दुनिया के लोग शंकाकुल और वैमनस्य-पूर्ण टुकड़ियों में बंटे हुए थे। किन्तु वर्तमान सभ्यता ने हमें वे साधन दे दिये हे जिन के ज़रिये उन दीवारों को तोड़ा जा सकता है और जो इस बात की सुविधा प्रदान करते हे कि हर एक आदमी चाहे वह किसी वर्ग या देश का क्यों न हो शान्ति और स्मृद्धि की बुनियाद पर ठहरी हुई सर्वभौम संस्कृति का भागीदार बन जाये। मेरा विचार है कि संयुक्त राष्ट्र का मूल्यांकन इसी दृष्टिकोण से किया जाना चाहिये।

यह ठीक है कि अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति बनाये रखने के लिये यह कायम किया गया और यह तो सब जानते हे कि आज कल की दुनिया में अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति से ज्यादा बढ़ कर और कोई ध्येय नहीं हो सकता क्यों कि इस एटम बम के युग में इस बात का पूरा खतरा है कि अगर लड़ाई हुई तो सभ्यता का ही खात्मा हो जायेगा। किन्तु इस का सब से ज्यादा महत्त्व इस बात में है कि यह सार्वभौमिक समाज के विकास का केन्द्र हो सकता है और उस की बुनियाद पर सारी दुनिया के लिये सरकार बन सकती है। किन्तु यह तभी होगा जब कि सयुक्त राष्ट्र न्याय के रास्ते में जरा भी न हटे।

संयुक्त राष्ट्र का समर्थन भारत हमेशा ही करता रहा है और करता रहेगा। अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े युद्ध के ज़रिये तय किये जा सकते हैं इस बात में हमारे देश का ज़रा भी विश्वास नहीं है। हमे तो शान्तिपथ ही प्यारा है। हमारा विश्वास है कि यदि सब राष्ट्र आम सभा में साथ बैठें और आपसी समझौते के लिये कोशिश करें तो लड़ाई के विनाशकारी फ़ैसलों से दुनिया बच सकेगी।

संसार के सभी न्याय प्रिय और शान्ति प्रिय लोगो से मेरी यह अपील है कि वे इस का साथ दें और इस बात के लिये कोशिश करें कि सचमुच ही यह राष्ट्रों मे न्याय और जगत में शान्ति का एकमात्र साधन बन जाये।

शिलांग में नागरिक अभिनन्दन

शिलोंग म्युनिसिपैलिटी के अभिनन्दन पत्र के जवाब में राष्ट्रपति जी ने ता० २७-१०-५० को कहा—

शिलोंग म्युनिसिपलिटी के अध्यक्ष तथा दूसरे सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

आप ने मेरा जिस प्रेम और उत्साह के साथ स्वागत किया है उस के लिये मैं आप सब को हृदय से धन्यवाद देना चाहता हूं। मै आसाम कई बार पहले आ चुका हूं पर शिलोंग आने का यह पहला अवसर है। मुझे अफसोस है कि इस मौके पर पानी की वजह से आप सब भाई और बहनों को इतना कष्ट उठाना पड़ रहा है।

आसाम में पहुंच कर मुझे सब से पहले एक बात याद आती है और उस से हृदय को चोट पहुंचती है। वह है इस सभा से और सभी जगहों से हमारे भाई श्री गोपीनाथ बारदोलाई

की गैर हाज़िरी पर मैं यह सोचता हूं कि अन्त में हम सब को जाना ही है। यह भी मै मानता हूं कि उन्हों ने अपने जीवन का अच्छे से अच्छा उपयोग किया। आप की और देश की सेवा में अपना जीवन लगाया और अन्त तक देश सेवा का काम करते हुए परमधाम सिधारे। इस लिये उन के लिये शोक करने का कारण नही। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह उन की आत्मा को सद्‌गति दे और उन के परिवार के लोगों को बल दे कि वे इस वियोग को सहन कर सकें।

आप के सूबे को ईश्वर ने बहुत ही सुन्दर बनाया है। यद्यपि यहां पर रहने वाले कई कबीलों, किस्मों के लोग हैं,--कुछ पहाड़ी हैं, कुछ दूसरे हैं–पर वे सभी एक से एक सुन्दर हैं। परन्तु प्रकृति का कोप भी आप के सूबे पर विशेष कर के इस वक्त बहुत बुरा पड़ा है और उस की वजह से आप के सुन्दर प्रदेश का बहुत बड़ा भाग विपत्ति की लपेट में आ गया है और अभी उस विपत्ति का अन्त नहीं हुआ है। आये दिन नदियों में बाढ आती है, और अभी अभी आ रही है। यहा की स्थिति ऐसी बदल गई है कि यह भय है कि आगे भी नदियों का ज़ोर और बढ़े और सभव है उस से आप की खेती को विशेषतया और अन्य क्षेत्रों मे भी नुकसान पहुचे। ये सब परेशान करने वाली बातें हैं। किन्तु साथ ही मुझे यह जान कर संतोष भी हुआ कि इस विपत्तिकाल में यहां के सभी लोगों ने बहुत ही हिम्मत से और पारस्परिक सहानुभूति से काम किया। सरकारी कर्मचारी, फौज के लोग, आरम्ड कान्स्टेबलरी के लोग, आसाम राइफल्स के लोग, कांग्रेस के काम करने वाले, और जो जो अन्य संस्थायें यहां सेवा करती है उन सब ने मिल कर सब की सेवा की है। इस से यह तो स्पष्ट ही है कि विपत्तिकाल में सब इकट्ठे हो कर किस तरह से काम कर सकते है और एक दूसरे की भी मदद कर सकते हैं। इस पारस्परिक सहयोग के लिये मै अपनी ओर से और भारत सरकार की ओर से और पीडित भाई और बहनों की ओर से जो कुछ आप ने, किया उस सब के लिये धन्यवाद और बधाई देता हूं। मै आशा करता हूं कि जब तक इस काम की ज़रूरत रहे लोग इसे उसी तरह से जारी रखेंगे। मुझे बतलाया गया है कि आप की मुसीबतें भूकम्प की वजह से बहुत बढ गई हैं। गवर्नमेन्ट जहा तक उस के लिये सभव है जनता की सेवा कर रही है। मुझे इस का भी विश्वास है कि आप की तरफ से जो कुछ मांग भारत सरकार से की जायेगी उस पर वह भी पूरा विचार करेगी और अपनी तरफ से इस सूबे की मदद करने मे कोई बात उठा नही रखेगी। इस प्रकार की सहायता पाना आप का हक है और मुझे इस का पूरा विश्वास है कि सारे देश के लोग आप की मदद करेंगे। यह भी खुशी की बात है कि इस विपत्ति की खबर पा कर सभी सूबों के लोगों मे सहानुभूति की लहर दौड़ गई है। जहां तक सब जगहों के लोगों से बन सकता है, सभी प्रकार की चीज़ें यहां के लोगों के लिये भेंट कर रहे है। इस में कोई शक नही कि इन दुखजनक घटनाओं से पैदा हुई तकलीफ इस प्रकार की जातीय सहानुभूति प्राप्त होने से बहुत कम हो जाती है। मै चाहता हूं कि इसी तरह से सहानुभूति और एकता और एक दूसरे के साथ मिल कर काम करने का तरीका जारी रहे। तब आप आगे बढ़ जायेंगे और जो मुश्किलें आप के सामने हैं उन को हल कर सकेंगे।

अभी हाल ही में हम ने स्वराज्य हासिल किया है । जब से हम को स्वराज मिला है हमारे सामने एक न एक कठिनाई और मुसीबतें आती रही हैं । उन का मुकाबला करते करते ही हमारे पिछले तीन साल बीते हैं । यह संतोष की बात है कि उन का मुकाबला इस देश के लोगों ने खास कर के उन भाई और बहनों ने जिन पर ये मुसीबतें आई बड़ी हिम्मत के साथ किया है । इस से हमें यह आशा बंधती है कि आगे के काम मे भी इसी तरह से सब लोग हिम्मत दिखलायेंगे । अभी हम ने स्वराज्य पाया ही है, हमारे हाथ में अधिकार आया ही है । स्वराज द्वारा हम जनता की जितनी और जहां तक सेवा कर सकते हैं उसे करने का अभी हम को सुअवसर नहीं मिला है । देश के सभी लोगों का यह धर्म है कि जो स्वतन्त्रता हम ने हासिल की है उस की रक्षा मिल जुल कर करें और साथ साथ जहां तक उस से हम लाभ उठा सकते हैं उठायें ।

हम ने जो संविधान बनाया है उस में इस देश में जितने लोग बसते हैं चाहे उन का कोई भी धर्म हो हिन्दू हों, मुसलमान हों, क्रिस्तान हों, पारसी हों, सिख हों या अन्य धर्म के मानने वाले या पालने वाले हों, सब को पूरा और बराबर का अधिकार दिया गया है । अब कुछ महीने के बाद ही नया चुनाव आयेगा । देश के हरेक २१ वर्ष आयु वाले व्यक्ति को वोट दे कर अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होगा । मैं चाहता हूं कि अधिक से अधिक लोग अपने इस अधिकार को काम में लावें और समझ बूझ कर काम मे लावें और अच्छे से अच्छे आदमी को जिस पर उन का भरोसा हो, जिस मे योग्यता हो, त्याग भावना हो और जिस से आशा रखते हों कि वह देश की भलाई कर सकता है उसे चुन कर भेजें । जो लोग चुने जायेंगे वे ही देश का कारबार चलायेंगे । जब अच्छे लोग चुने जायेंगे तो वे अच्छा काम करेंगे और देश का शासन ठीक तरह से चला सकेंगे । मुझे इस बात की उम्मीद है कि सब मिल कर इस देश की उन्नति करेंगे और जो हमारी कमज़ोरी है, जो ग़रीबी है और दूसरी प्रकार की जो तकलीफ है उसे दूर कर सकेंगे और यहां सच्चे अर्थ में स्वराज कायम कर के सब को सुखी बना सकेंगे ।

आप की म्युनिसिपैलिटी का भी इस में काम है । एक जगह मैं ने कहा था कि म्युनिसि-पैलिटियों को अच्छे काम करने वालों को तैयार करने का मौका मिलता है । मैं आशा करता हूं कि आप का सूबा भी किसी सूबे से किसी बात में पीछे नहीं रहेगा । मैं उम्मीद करता हूं कि जो अधिकार हमारे हाथ में आया है उस का हमारे लोग अच्छे से अच्छा उपयोग करेंगे और देश को और अपने को सब मिलजुल कर सुखी बनायेंगे । मैं आशा करता हूं कि सब मिल जुल कर इस तरह से रहेंगे जिस में किसी भी हमारे देश के दुश्मन को हमारी तरफ आंख उठाने की या हाथ उठाने की हिम्मत न पड़े । जब हम में कमज़ोरी आती है, आपस में फूट होती है, तभी बाहर के लोग हमारी तरफ बुरी निगाह डालते हैं । अगर आप सभी देश की स्वतन्त्रता के लिये मरने के लिये तैयार रहें तो फिर किसी की हिम्मत न पड़ेगी कि हमारी तरफ बुरी निगाह डाले । आप का सरहद का सूबा है, इस के तीन तरफ तीन मुल्क हैं, एक तरफ तिब्बत है एक तरफ बर्मा है और एक तरफ पाकिस्तान है । सरहद होने

की वजह से इस सूबे की बड़ी जवाबदेही है। मुझे आशा है कि इस जवाबदेही को आप सभी समझेंगे और अपने को इस योग्य बनायेंगे कि भारत का जो दरवाज़ा आप के हाथ मे है, उस की आप रक्षा कर सकें और उसे हमेशा के लिये सुरक्षित रख सकें।

आप सब भाई बहनों को आप के प्रेम के लिये फिर एक बार धन्यवाद देता हूं।

आसाम प्रान्तीय कांग्रेस द्वारा अभिनन्दन

ता० २८-१०-५० को आसाम प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी द्वारा दिये गये अभिनन्दनपत्र के जवाब मे राष्ट्रपति जी ने कहा:—

आसाम कांग्रेस के सभापति जी, बहनो और भाइयो,

मै इधर कई महीनों से सोच रहा था कि आसाम आऊं और आप के इस सुन्दर प्रदेश को जिस को आज से पहले भी दो तीन बार देख चुका हू एक बार फिर आ कर देखूं और आप सब भाइयों और बहनों से मिलूं। इसी बीच मे इस भूकम्प से बडी विपत्ति आगयी और उस की वजह से बडी मुसीबत और तकलीफ यहा के भाइयों और बहनों को बर्दाश्त करनी पड़ी और पड रही है। यहा का हाल सुन कर मेरी इच्छा और भी प्रबल हो गई कि यहां जल्द आऊं। मगर बरसात में आने में भी दिक्कत थी और दूसरे अगर आता भी तो जितना मै देखना चाहता था उतना देख भी नही सकता था। इस लिये जान कर नही आया। अब यहां मै आ गया हू और दो दिनों से आप के इस सुन्दर प्रदेश में घूम रहा हूं। अभी तो मै यहां से उन ज़िलों में जाऊंगा जहां पर भूकम्प का प्रकोप रहा और वहां की स्थिति, जो इस थोड़े समय के अन्दर अपनी आंखों से देख सकता हूं, देखूंगा। मुझे भूकम्प का पूरा अनुभव है और इस लिये मै जानता हूं कि भूकम्प से कितनी क्षति होती है और लोगों को कितना कष्ट उठाना पड़ता है। जब हमारे प्रान्त में भूकम्प हुआ था तो न मालूम कितने प्रकार के प्रश्न हमारे सामने आये थे और कितने प्रकार से हमें लोगों की सहायता के लिये तैयारी करनी पड़ी थी। यहां की स्थिति वहां की स्थिति से कुछ भिन्न है क्यों कि यहां भूकम्प के साथ साथ नदियों के प्रकोप से बाढ़ भी बहुत आयी है। मैं सुनता हूं कि नदियों की सतह में इतना अन्तर पड़ गया है कि अब पानी बहुत दूर तक फैलता है और जहां जहां पानी भूकम्प की वजह से रुक गया था वहां और भी तेज़ी से पानी निकलता है और बहुत बर्बादी करते हुए आगे जाता है। इस तरह से आप के सामने जो प्रश्न हैं वे और जगहों के मुकाबले से कुछ भिन्न प्रकार के प्रश्न हैं और यहां भिन्न प्रकार की सहायता की आवश्यकता है। आप की मुसीबत तो यह है कि न मालूम कितने भाई और बहनों के घर गिर गये, बह गये।

खेत और खेत में लगी हुई फसलों की कितनी बर्बादी हुई है इस का भी कुछ पता नहीं। इस के अलावा अभी भी जो खबरें मिलती है उन से भी ऐसा मालूम होता है कि बर्बादी अभी समाप्त नहीं हुई है ; अभी जारी है। गवर्नमेन्ट के पास जो रिपोर्ट आती है उस से यह भय मालूम होता है कि गवर्नमेन्ट का भी बहुत नुकसान हुआ है ; तमाम सड़के बिगड़ गई है, पुल टूट गये है और गवर्नमेन्ट की बहुत सी इमारतें बह गई है, गिर गई है जिन को फिर से गवर्नमेन्ट को बनाना है। क्यों कि जब तक सड़के ठीक नही हो जाती है, पुल ठीक नहीं हो जाते है, लोगों के लिये कही भी आना जाना और सामान भी ले जाना कठिन हो जाता है। इसलिये यहां तो पहली मुसीबत यह हुई है कि जो जगहें दूसरी जगहों से अलग हो गई है वहां के लोगों को किस तरह से भोजन पहुंचाया जाये। मुझे यह सुन कर खुशी हुई कि जो हमारी फौज के लोग यहा है, आसाम राइफल्स के लोग, कांग्रेस के लोग और दूसरे लोग तथा यहां जितनी अलग अलग सस्थाये है उन सस्थाओं के लोगों ने मिल कर पीड़ित लोगों को थोड़ी बहुत सहायता की जिस से लोगों को कुछ राहत मिली है। मगर अभी भी हवाई जहाज से खाना पहुंचाया जाता है और जहां तक मै ने सुना है ऐसी जगह भी कई है जिन के बारे मे कोई खबर अभी तक नही पहुच पाई है। ऐसी भयंकर स्थिति है तो आप इस से समझ सकते है कि इस मे कितने काम की आवश्यकता है और इस मे कितने लोगों को लगना है। यहां जिस तरह सभी लोग सेवा का प्रयत्न कर रहे है उस से भरोसा होता है कि पीड़ित लोगों को मदद पहुंच सकेगी। यहा की गवर्नमेन्ट से जो कुछ हो सकता है वह कर रही है और उसे करना भी चाहिये। क्यों कि अब गवर्नमेन्ट मे और जनता मे कोई अन्तर नही है। गवर्नमेन्ट अब जनता की गवर्नमेन्ट हो गई है और अब अगर जनता पर कोई मुसीबत आती है तो सरकार का यह पहला काम है कि जनता को उस मुसीबत से छुटकारा दिलाने की पूरी कोशिश करे। इसी भावना को ले कर यहां की गवर्नमेन्ट काम कर ही है। भारत सरकार की ओर से भी मैं आप को इतना विश्वास दिलाना चाहता हूं कि उस से जहां तक हो सकेगा आप की सेवा करने से वह बाज़ नहीं आयेगी और आप जो कुछ भी मांग पेश करेंगे वह उस को पूरा करने का प्रयास करेगी और जहां तक उस की शक्ति के अन्दर है वह आप की अच्छी तरह से मदद कर के इस तरह से बिगड़ी हुई इमारत को फिर से खड़ी करने की कोशिश करेगी।

भारत सरकार आप के सूबे को एक प्रकार से बहुत महत्व देती है। उस का कारण यह है कि यह सूबा ऐसी जगह में है जहा तीन मुल्कों की सरहदें मिलती है। तिब्बत की सरहद उत्तर मे है, पूर्व में बर्मा की सरहद है और दक्षिण पश्चिम में पाकिस्तान की सरहद है। इस तरह से इस सूबे के तीन तरफ गैर मुल्कों की सरहद है। खास कर के ऐसे सूबों का बड़ा महत्व होता है। इसी वजह से इसे सभी लोग पूरा महत्व देते है। इस के अलावा यहां स्थिति ऐसी है कि यहां राज का काम आसान नही है, ज़रा मुश्किल है। यह पहाड़ी इलाका है, बड़ी बड़ी नदियां हैं और एक जगह मे दूसरी जगह जाना आसान नहीं है, पहाड़ पर जो आदिमजाति भाई बसते हैं और जो लोग पहाड़ के नीचे बसते हैं दोनों इस सूबे के रहने वाले है और दोनों का यहां हक है। सब लोगों की

सेवा करना यहां की गर्वनमेन्ट का काम है, लोगों की मदद करना गवर्नमेन्ट का कर्त्तव्य है। इस प्रकार से अलग अलग बस्तियां होने की वजह से यहां बहुत तरह के प्रश्न उपस्थित होते है जिन को संभालना कोई आसान बात नही है।

मुझे इस बात का संतोष है कि स्वराज पान के बाद हिन्दुस्तान की संविधान सभा ने एक सुन्दर संविधान बनाया है। उन में सभी लोगों के लिये चाहे उन का कोई भी धर्म हो, वे हिन्दू हों, मुसलमान हों, पारसी हों, ईसाई हों, सिख हों या कोई भी धर्म मानते हों, पहाड़ के रहने वाले हों या समतल के रहने वाले हों, आदिम जाति के लोग हों, चाहे कोई दूसरे हों, पूरा पूरा हक दिया गया है। अव चन्द महीनों के बाद ही इस इतने बड़े देश में उस संविधान के अनुसार नया चुनाव होने वाला है और इस देश की प्रत्येक स्त्री और पुरुष को जिसकी अवस्था २१ वर्ष की हो चुकी है, यह हक हे कि अपना वोट देकर जिसको मुनासिव समझे चुने। यह चुनाव का काम इतना बडा होगा कि चुनावसम्बन्धी इतना बडा काम आज तक संसार के इतिहास में नही हुआ। अभी जो मतदाताओं की फिहरिस्त तैयार की जा रही है उस में मै समझता हूं कि करीब करीव १८ करोड आदमियों के नाम होंगे। चीन को छोड़कर शायद ही कोई दूसरा देश इस वक्त संसार में हो जिसकी कुल आबादी भी १८ करोड़ हो। लेकिन चीन में इस तरह का चुनाव अभी तक नहीं हुआ है। इस लिये हमारे देश में जो चुनाव होगा वह इतना बड़ा होगा, फला हुआ होगा और विस्तृत होगा जितना बड़ा चुनाव आज तक संसार में कहीं नहीं हुआ है। इस चुनाव में सब वालिगों को मत देने का अधिकार है। लेकिन जहां यह वोट देने का अधिकार है वहीं लोगों की जिम्मेदारी भी वहुत बढ़ गयी है। अब अपने हाथों में अधिकार आ गया है। अव कोई वात विगड़ती है तो हम उस के लिये किसी दूसरे की शिकायत नही कर सकते। अब अंग्रेजी राज नही है कि अगर कोई बात बिगडेगी तो उसके लिये हम उनकी शिकायत करेंगे। अब तो अपने ही लोगों का राज है अर्थात् आप सब का ही राज है। आपके ही चुने लोग इस राज को चलाते है। यदि आप उनको बदलना चाहें तो बदल सकते हैं। संविधान में आपको ईसका अधिकार मिला है। अब कोई बात बिगड़ेगी तो उसका दोष आप किसी दूसरे पर नहीं डाल सकते। अव तो आपको सोचना होगा कि अगर कोई गलती होती है तो उसमे आपका कितना हिस्सा है और यह पता चलाना होगा कि कहीं आपके प्रतिनिधि की नीयत तो नहीं बदल गयी। यह सब आपको सोचना होगा। आपको ऐसे ही लोगों को अपना प्रतिनिधि चुनना चाहिये जो देश की सेवा करते हों, जिनका अपना स्वार्थ नहीं हो और जो इस विचार से खड़े नहीं हुये हों कि उन को पद मिलेगा और उससे अपने लिये वे लाभ उठायेंगे। आपको ऐसे ही लोगों को चुनना चाहिये जिनमें योग्यता हो और जिनकी ईमानदारी में आपको पूरा विश्वास हो और जिनसे आप आशा रखते हों कि वे देश की सेवा करेंग, जो देश की भलाई के लिये अपनी पूरी शक्ति से काम करेंग। इन सब बातों पर विचार करके ही आपको वोट देना होगा। जो अच्छे अच्छे लोग चुने जायेंगे वे आपकी इच्छा के अनुसार ही काम करेंगे और वे जो काम

करेंगे उससे आपको लाभ होगा। इसलिय मैं कहता हूं कि आपको तो अधिकार मिला है लेकिन साथ साथ आपकी जिम्मेदारी भी बढ़ गयी है। मैं आप से इतना ही कहना चाहता हूं कि भारत के लोगों ने बहुत ही त्याग करके स्वराज की लड़ाई को चलाया और अन्त में स्वराज हासिल किया। पर कहीं कहीं अब लोगों के दिलों में ऐसा विचार उठने लगा है कि अब तो स्वराज मिल गया, अब हमारा क्या काम रहा, अब तो सब कुछ गवर्नमेन्ट को करना है, हमारे लिये सब सुख सुविधा गवर्नमेन्ट को पहुंचानी है। मगर आप को यह सोचना है कि स्वराज में जो अधिकार मिलना चाहिये वह तो मिल गया है पर स्वराज से जितना लाभ पहुंचना चाहिये वह नहीं पहुंचा है और स्वराज से जितनी आशा लोग रखते थे वह आशा हमारी पूरी नहीं हुई है। उन आशाओं को पूरा करना हमारा काम है। उसके लिये हमको तैयार रहना चाहिये। मै मानता हूं ब्रिटिश गवर्नमेन्ट के साथ लड़ने में लोगों ने जितना परिश्रम और त्याग दिखलाया उससे आजकल अधिक परिश्रम और त्याग की आवश्यकता है और आवश्यकता है आजकल दिल लगाकर परिश्रम करके देश की सेवा करने की। उस समय तो सिर्फ एक चीज को अपने सामने रखकर हम काम करते थे कि किस तरह से ब्रिटिश गवर्नमेन्ट से अधिकार छीन ले। लेकिन आज तो चारों तरफ हमको देखना है और सोच कर कदम उठाना पड़ता है और सोचना पड़ता है कि वह काम हम करेंगे तो उसका फल हमारे लिये क्या होगा। आसाम में बैठकर अब आपको सिर्फ़ आसाम के बारे में ही नहीं सोचना है बल्कि सारे भारतवर्ष के बारे में उसके हर हिस्से के बारे में सोचना है कि देश की क्या आवश्यकता है, देश की किस चीज़ मे भलाई है। हो सकता है कि किसी एक सूबे की भलाई एक चीज़ में हो और उससे सारे देश को नुक़सान होता हो तो उस चीज़ को छोड़ने के लिये लोगों को तैयार रहना चाहिये। हो सकता है कि किसी चीज से थोड़े लोगों को नुकसान पहुंचता हो पर बहुत अधिक लोगों को उस से लाभ पहुंचता हो उसे देश अपनावे और ऐसे ही काम जिन से अधिक लोगों को लाभ पहुंचता हो देश के लिये किये जायें और अगर ऐसे कामों से थोड़े लोगों को या किसी खास सूबे को नुकसान भी होता हो तो भी देश के नाम पर उन चीजों को बर्दाश्त करने के लिये लोगों को तैयार रहना चाहिये। आपको इन सब चीज़ों को सोचना है, समझना है। बहुत दिनों तक विदेशी शासन के अन्दर रहने की वजह से हमारे देश के बहुतेरे लोग अभी भी नहीं समझ पाते कि पहले और आज में कितना बड़ा अन्तर पड़ गया है। वह अब भी पुरानी ही रीति से चलते हैं; उसी तरह से काम करते हैं। अब तो सब को सोचना चाहिये कि भारतवर्ष एक स्वतंत्र देश है और भारत का प्रत्येक बच्चा, स्त्री और पुरुष स्वतंत्र है। प्रत्येक स्त्री और पुरुष को अपनी स्वतंत्रता की मर्यादा को मानना चाहिये और देश के लिये त्याग करने के लिये तैयार रहना चाहिये। हर एक स्त्री पुरुष से यह आशा की जाती है कि वह उसके लिये तैयार रहेगा। में आया तो हूं भकम्प की स्थिति देखने के लिये साथ ही साथ मैं आपको यह भी

कहना चाहता हूं कि आपको जो अधिकार मिला है उसे आप समझें और साथ ही मैं यह भी कहूंगा कि अधिकार से अधिक अपने कर्तव्य को समझना ज़रूरी है। आपका क्या कर्त्तव्य है उस पर ध्यान देकर जितनी कठिनाइयां सामने आती हैं उन सब पर, सारे देश पर दृष्टि रखकर किसी एक सूबे, जाति या फिर्के पर दृष्टि रखकर नहीं, विचार करना चाहिये और काम करना चाहिये। मैं आशा करता हूं कि आसाम के सभी भाई और बहन अपना कर्तव्य अच्छी तरह से अदा करेंगे और सारे देश को लाभ पहुंचायेंगे।

जबसे मै आया आपने बहुत ही प्रेम दिखलाया, आदर किया और मुझे बहुत ही सम्मान दिया उस सबके लिये मै आपको हृदय से धन्यवाद देता हू।

कलकत्ता बार एसोसियेशन में अभिनन्दन

*कलकत्ता बार एसोशियेशन तथा कलकत्ता हाईकोर्ट के न्यायाधीशों द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के उत्तर में ३१ अक्तूबर १९५० को राष्ट्रपतिजी ने कहा—

महामहिम राज्यपाल साहब, भवान न्यायाधीश, कलकत्ता बार एसोशियेशन के अध्यक्ष और सदस्य,

जब महामहिम श्री काटजू ने इस एसोशियेशन के सदस्यों की ओर से यह इच्छा मुझे व्यक्त की कि मै यहा आऊं और इस दौरे में उन सदस्यों से मिलू तो मुझे निश्चय करने में पांच मिनट भी न लगे। मैने यह समझा कि बार एसोशियेशन मे एक बार फिर जाकर मैं केवल अपना ही कर्तव्य पूरा न करूंगा वरन् पुराने मित्रो मुख्य न्यायाधिपति तथा अन्य न्यायाधीशों से, जिन मे से एक मेरे पुराने मित्र है, भी मिल लूगा और ऐसे अनेक मित्रों से परिचित हो जाऊंगा जो उस समय यहा नही थे, जब मैने यह बार छोड़ा था। इस हाल में घुसने के तुरन्त बाद से ही मै आखे चौड़ाकर चारो ओर चेहरों को देख रहा हूं जिससे कि पुराने दोस्तों को देख पाऊं। मै कुछ चेहरों को तो पहचान सका किन्तु उन दिनों से अब चेहरे बदल गये है। मै अपना चेहरा तो देख पाता नही इसलिये मुझे यह पता नही कि मेरा चेहरा भी बदल गया है या नही। अगर मै काफी चेहरों को नही पहचान पाया हूं तो इसमें मेरा दोष नही है। यह दोष उन चेहरों का है।

आपने कृपा करके मुझे उन पुराने सुःखद दिनों की स्मृति करायी जो पेशे के छोटे वकील के नाते इस अदालत में वकालत करते हुए मै ने यहां बिताये थे। और इसी हाल में जहां बड़े बड़े महारथी बैठते थे मैं भी बैठा करता था। और एक कोने मे कनिष्ठ वकील के नाते बैठा करता था। आपने मुझे उन्हीं दिनों की ही याद नहीं दिलायी जो इस अदालत मे वकालत करतें हुए मै ने यहां बिताये थे बल्कि उनसे पहले उन दिनों की याद भी दिलायी है जो मै ने इस शहर मे बिताये थे, जो मैंने एडेन हिन्दू होस्टेल मे बिताये थे, जो मै ने कलकत्ता प्रेसीडेन्सी कालेज में बिताये थे और जो मैंने उन अनेक दोस्तों के साथ बिताये थे जिनकी याद मुझे आज आती है किन्तु जो आज संसार में नहीं हैं और

---

* अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

जिन में मे अनेकों का हाल के दिनों मे अवर्णनीय यातनाऐं सहनी पड़ी हैं और हो सकता है कि जिन मे से यहां भी कुछ हों जिन्हें मैं इस समय पहचान नही पा रहा हूं। मै केवल यही कह सकता हूं कि कलकत्ते की प्रेसीडेन्सी कालेज की हिन्दू होस्टेल की, कलकत्ता हाई कोर्ट की, अनेक मित्रों की और विशेषतया बंगाली भाषा भाषियों की मेरे जीवन में भारी देन है; मै उस ऋण को कभी नही चुका सकता जो उनका मेरे सर पर है। यदि मेरा यह सौभाग्य रहा है कि मै देश की थोड़ी सेवा कर सका तो मै आपसे यह कह सकता हूं और जो लोग मुझे उन दिनों से जानते है उनसे यह बात छिपी भी नही है और जिनमें से मै कुछ को यहां देख भी रहा हूं कि उस सब की प्रेरणा मुझे यहीं से मिली थी। उन दिनों के नेताओं ने ही मुझे वह सारी प्रेरणा दी थी और यदि मै इस हाईकोर्ट में पांच वर्ष और पटना हाईकोर्ट में चार पांच वर्ष काम करता रहा तो मै समझता हूं कि अपनी ही चालों से और अपनी ही मानसिक दुर्बलता से मै देश सेवा के उस दिन को दूर करता रहा। उस प्रेरणा से तो मुझे उस क्षेत्र मे पहले ही चला जाना चाहिये था जिसमे कि मै बाद को गया। यदि परमात्मा ने अपनी प्रसन्नता से हमारे देश को स्वतन्त्रता प्रदान की है और यदि परमात्मा के अनुग्रह से मै इस उच्च आसन पर आसीन हू जो वास्तव मे ही अत्यन्त उच्चासन है तो मै उन्ही पुराने दिनों की याद करके परमात्मा का और उन मित्रों का धन्यवाद करता हूं जिनसे मै ने सब कुछ पाया है।

आपने वकीलों, कानून और न्यायाधीशों के सम्बन्ध मे बहुत सी बाते कही है। मैं यह आवश्यक नही समझता कि उस प्रश्न के बारे में कुछ कहूं जिस पर वह समिति विचार कर रही है जिसके मुख्यन्यायाधिपति अध्यक्ष है। जो कुछ मै कह सकता हूं वह केवल इतना ही है कि संविधान के बनाने मे उन लोगों का, जो इस काम में लगे हुए थे, अपने सामने केवल एक ही उद्देश्य था और वह यह था कि किस प्रकार इस देश को ऐसा महान् प्रजातन्त्रात्मक देश बनाया जाये जहां हर एक व्यक्ति को अपने धर्म को मानने और आचरण करने का, हरेक को अपने धन्धा करने का, हरेक को अपने अपने जीवन की रुचि के पालन करने का तथा अपने विचारों के अनुसार तथा अपनी योग्यता के अनुकूल अपने विकास करने का मौका हो। और इस संविधान के बनाने मे हमने वे मौलिक अधिकार बना दिये हैं जिनके संबन्ध में प्रश्न यदाकदा न्यायालयों के सामने आते रहते हैं और जिनसे माननीय न्यायाधीशों को ऐसे मौके मिलते है कि वे उस सरकार के काम को, जिसका मै अधिपति माना जाता हूं, रद्द कर दे। मै आपको आश्वासन दिलाता हूं कि आपका यह काम बुरा नहीं लगता। हमारा यह उद्देश्य था और इस बात को बता कर मै कोई भेद नहीं खोल रहा हूं कि संविधानसभा के सदस्य उन दो तीन वर्षों में जिनमें कि संविधान बनाने में वे लगे हुए थे, इसी भावना से प्रेरित थे कि हमें न्यायलयों को यथा संभव स्वतन्त्र बनाना चाहिये और हमें न्यायपालिका को व्यक्ति और व्यक्ति के बीच में ही नहीं वरन् राज्य और व्यक्ति के बीच में और इससे भी अधिक कार्यपालिका और विधानसभा के बीच में अन्तिम निर्णय देने वाला पंच बनाना चाहिये।

मुझ आशा है कि आरम्भ में चाहे कितनी ही असुविधा का हमें सामना क्यों न करना पड़े और वह इस लिये क्योंकि यह सब संविधान हमारी परिस्थितियों के लिये सर्वथा नवीन है हम कालक्रम में ऐसे सविधान का विकास करने मे सफल हो गये होंगे जो है तो लिखित संविधान पर आद्धृत किन्तु जो युग की परीक्षा मे भी पूर्णतया सफल है और आगामी पीढ़ियों के लोग जिसके प्रति गर्व का अनुभव कर सकते हों। हमारे देश के सांविधानिक इतिहास के विकास मे आप बार के मेम्बरों का भी अपना भाग है। ठीक है कि बहुत सी बातों मे माननीय न्यायाधीशों का निर्णायक मत होता है। मुझे इसमें कोई शंका नहीं है कि न्यायाधीश और वकील उस गरिमापूर्ण परम्परा को बनाये रखेगे जो सैकड़ों वर्षों मे बन पायी है और इस न्यायालय की तो विशेषतया अपनी ऐसी परम्परा है जिस पर हम सब गर्व कर सकते हैं। मुझे यकीन है कि भविष्य मे भी यह न्यायालय वैसा ही महत्वपूर्ण भाग अदा करता रहेगा जैसा कि भूतकाल में न्यायपालिका की उच्चतम परम्परा और मधुरतम सम्बन्धों को बनाये रख कर—ऐसी परम्परा और संबन्धों को जिनकी बात हम सोच सकते हैं और जो संसार में कहीं भी अन्यत्र पायी जा सकती है—इसने भूतकाल में अदा किया था।

मै इसे बहुत पसन्द करता यदि वैयक्तिक रूप से मित्रों से मिलने का मेरे पास और अधिक समय होता किन्तु दुर्भाग्यवश मेरे पास समय नहीं है। कार्यक्रम इतना भरा हुआ बनाया गया है कि किसी मित्र से मिलन के लिये उसमें से मुश्किल से एक मिनिट भी नही मिल सकती है। अतः इस प्रकार सामूहिक मिलन से ही मुझे संतुष्ट हो जाना पड़ता है और वैयक्तिक मिलन की बात तो मन से निकाल देनी पड़ती है। और इन दिनों में जब हम अनेक सामूहिक चीजों की बात सुनते है जैसा कि सामूहिक पैदावार, सामूहिक धर्मपरिवर्तन, सामूहिक प्रवर्जन तो मुझे भी इस प्रकार के सामूहिक मिलने से ही संतोष कर लेना चाहिये। मैं आप लोगों को उस प्रेम के लिये धन्यवाद देता हूं जो आपने मेरे प्रति प्रकट किया है और मै यह प्रार्थना करूंगा कि मैं आपके प्रेम का उचित पात्र उसी तरह बना रहूं जिस तरह कि मैं भूतकाल में था।

कलकत्ता मैदान में सार्वजनिक सभा

कलकत्ता मैदान में तारीख ३१-१०-५० को आम सभा में राष्ट्रपति ने अपने भाषण में कहा—

महामहिम गवर्नर साहब, प्रधान मन्त्री जी, बहनो और भाइयो,

मै जब से कलकत्ता पहुंचा उस समय से इस वक्त तक जितना प्रेम और आदर आप सब भाई बहनों ने दिखलाया उसे देख कर और सुनकर मेरा हृदय बहुत ही घबड़ा सा जाता है। घबड़ाता है इसलिये कि इस आदर के साथ साथ आपके दिल में एक प्रकार की आशा भी होगी और आप सोचते होंगे कि मै कोई ऐसा

आदमी हूं कि जो आज सारे देश की स्थिति है उसे अगर में चाहूं तो एक दिन में ठीक कर दू। मै जब से इधर आया हूं मुझे उन दिनों की याद आती है जो मैंने अपने बचपन में आप के इस नगर में यहाँ आप भाई और बहनों के बीच में विताये थे। कोई दो दिन चार दिन नहीं, कोई दो महीने चार महीने नहीं, अपने जीवन के १८ वर्ष से अधिक इसी शहर मे और भाई और बहनों के बीच मैंने विताये थे और वे वर्ष ऐसे थे जिस समय यहां कुछ न कुछ होता ही रहता था। अगर कोई सीखना चाहता तो बहुत कुछ सीख सकता था। मैंने बहुत थोड़ा ही सीखा मगर जहां तक मै जानता हूं अपनी ओर से कलकत्ते के लोगों ने और बंगाल के लोगों ने उन चीजों को मुझे देने मे कोई बात उठा नही रखी। अगर मैंने ग्रहण नही किया तो वह उनका दोष नहीं, बल्कि मेरी अपनी कमजोरी और दुर्बलता ही उसका कारण है। जो कुछ मैंने यहां से जाकर किया, जिस काम में लगा उसकी प्रेरणा पहले पहल आपके ही इस शहर में मुझे मिली और वह ऐसे समय में जो भारत के इतिहास में बड़ा महत्व रखता है। यहाँ जिस समय बंग विच्छेद के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ हुआ और स्वदेशी का काम जारी हुआ उस समय मै विद्यार्थी अवस्था में आपके इस शहर मे था। उस समय बहुत थोड़े ही लोग ऐसे होंगे जो उस समय की लहर मे वह नही गये हों जो उस उमंग मे अपने को खो नही गये हों। मै इतना मानता हूं कि मैंने अपने को खो नही दिया। मुझ मे इतनी ताकत उस वक्त नही थी कि मै अपने को खो देता। मगर जो वीज उस समय वोया गया वही पीछे जाकर अंकुरित हुआ और फैला और जब महात्मा जी ने अपना काम आरम्भ किया तो मैंने उनके पद चिन्हों पर चलने का प्रयत्न किया।

मुझे कलकत्ता छोडे ३४ वर्ष हो गये। इन ३४ वर्षो मे भारत का इतिहास कितना बदल गया है यह आप सब को विदित है। आप जानते है कि देश मे कितनी भयंकर स्थिति पैदा हो गयी है। एक तरफ तो देश ने स्वतन्त्रता पायी है और हमारे अपने हाथों में अधिकार आ गये है, और दूसरी तरफ हमारे सर पर मानो विपत्ति का पहाड ही टूट पड़ा है। हम ने स्वतन्त्रता पायी मगर उसके साथ साथ हमारे लाखो लाख भाई और वहनों को अपना सब कुछ छोड़कर, अपना धन सम्पत्ति छोड़कर, मजबूर होकर एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ा। उनको फिर से वसाने का इतना बड़ा प्रश्न हमारे सामने आ गया है कि हम इसको आज तक हल नहीं कर पाये है। इन भाइयों ने बहुत विपत्ति सहकर बडे धीरज के साथ इतने दिन विताये है। हमारी प्रांतीय और केन्द्रीय दोनों गवर्नमेन्टों ने अपनी शक्ति भर प्रयत्न किया और कर रही है और उन्होंने बहुत कुछ किया है। पर तो भी जितना इन्तजाम होना चाहिये उतना नहीं हुआ है। पर मैं इतना तो जरूर कह सकता हूं कि गवर्नमेन्ट ने और दूसरे भाइयों और बहनों ने और दूसरी सेवा करनेवाली संस्थाओं ने उन लोगों के लिए किसी बात की कमी नहीं की है। उनसे जितना हो सकता है, जितनी शक्ति उनमें है सारी ताकत

लगाकर वे इन पीड़ितों की मदद कर रहे हैं। लेकिन प्रश्न इतना बड़ा है कि इसको तुरंत तय नहीं किया जा सकता है और इसलिये इसमें समय लग रहा है। इस प्रश्न को हम अभी हल नहीं कर पाये थे कि दूसरी तरफ से और लोग भी आने लगे और यह प्रश्न और भी टेढ़ा होगया और उसका विस्तार और भी बढ गया। यह संतोष की बात है कि जब से हमारा समझौता पाकिस्तान के साथ हुआ तब से स्थिति कुछ बदली है, कुछ सुधरी है और जहां हजारों हजार की तायदाद में लोग आ रहे थे वहां उनकी तायदाद में कमी हुई है। यह संतोष की बात है और आशा की जाती है कि जनता का सहयोग मिलता जायेगा तो स्थिति और अधिक सुधरेगी और यदि हमारे वे भाई बहन, जो यहां आ गये हैं, वापस जाना चाहे तो उन के लिये वापस जाना आसान हो जायेगा और जो रह गये हैं उनको फिर मजबूर होकर यहां आने की ज़रूरत न पड़ेगी। जो आ गये है वह हमारे सिर पर है। उनको किसी न किसी तरह से बसाना हमारा कर्त्तव्य है। मैं जानता हूं कि इस कर्त्तव्य को पालन करने में प्रांतीय और केन्द्रीय दोनों हमारी गवर्नमेन्ट किसी बात की कसर नही कर रही है। इसलिए मैं उन भाइयों और बहनों से निवेदन करना चाहता हूं कि जिस धीरज के साथ आज तक उन्होंने इस विपत्ति का मुकाबला किया है उस धीरज को वे कायम रखे और इस बात का ध्यान रखे कि सारे देश के लोग उनको अपना समझते हैं, उनको अपना मानते हैं, अपने में और उनमे कोई फ़र्क नहीं मानते हैं और देश के लोगो की सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। हमारा यह काम है कि उनके लिये जो कुछ हम कर सके जल्द करे। पर आदमी को यह विचार करना पड़ता है कि दूसरे की सहायता से उसकी कहां तक सहायता हो सकती है और मनुष्य को अन्त मे अपने लिये अपने ऊपर ही भरोसा करना पड़ता है। आज जो लाखों लाख आदमी आ गये है उनकी गवर्नमेन्ट भी कहा तक सहायता कर सकती है जब तक जिन पर विपत्ति आगयी है वे अपनी ओर से धीरज और हिम्मत के साथ इस काम में पूरी तरह से न लग जाये। मैं जानता हूं कि बंगाल के लोगों में शक्ति है और बंगाल के लोगों पर इस वक्त जो विपत्ति है और उनकी जो अग्नि परीक्षा हो रही है उससे वे अच्छी तरह से निकलेगे और फिर भी देश उन पर भरोसा कर सकेगा। आप जानते है कि इस समय देश पर केवल एक विपत्ति ही नही है। न मालूम क्यों प्रकृति का प्रकोप आज हमारे ऊपर काफी आ गया है। इस वर्ष में जब वर्षा काल आरम्भ हुआ तो शुरु मे कही कहीं इतनी वर्षा हुई जिसके फलस्वरूप बाढ आयी और फसल बर्बाद हो गयी। बीच बीच मे भी जहा तहा बाढ आती रही और बर्बादी होती रही। फिर आसाम में इतना बड़ा भयंकर भूकम्प आया कि उससे बहुत ही नुकसान हुआ और वह अभी मुझे जब मैं आसाम गया था तो देखने को मिला। वहां जो भूकम्प हुआ उसकी वजह से पहाड़ों ने टूट टूट कर नदियों का बहाव रोक दिया और इस वजह से बाढ़ का बहुत ही प्रकोप हुआ और अभी भी हो रहा है। इस विपत्ति का मुकाबला करने को हम तैयार

हो ही रहे थे कि फिर बहुत जगहों में सूखा पड़ गया। सूखा इतना पड़ा कि बिहार प्रान्त और उत्तर प्रदेश के पूर्वी हिस्से की जिनकी जानकारी मुझे है सभी जगहों में धान की फसल जो वहां की प्रधान फसल है बिल्कुल बर्बाद हो गयीं। इस तरह से विपत्ति पर विपत्ति आ रही है और उस का फल यह हो रहा है कि देश आगे की ओर नहीं बढ़ रहा है। कहां तो हमारी गवर्नमेंट यह चाहती थी कि विदेशों से जो हमें करोड़ों रुपये का अन्न मंगाना पड़ता है और उससे जो हमारा नुकसान हो रहा है उस को रोकना चाहिये और इसमें गवर्नमेन्ट को कुछ सफलता भी मिल रही थी और कहां प्रकृति का प्रकोप इधर ऐसा हुआ कि हमारी सारी कोशिश विफल हुई और अब विदेशों से जितना अन्न हम मंगाना चाहते थे उससे कहीं अधिक मंगाना पड़ेगा। सिर्फ विदेशों से अन्न मंगाने की बात रहती तो वह कोई मुश्किल काम नही था। अगर सिर्फ दाम देने से सामान मिल जाता और यहां जल्द से जल्द पहुंच जाता तो यह कोई बड़ी बात नहीं थी। मगर अगर हम को अन्न बाहर से मंगाना पड़ा तो इस मे बहुत समय लगेगा और इस वक्त बहुत जगहों मे जिन में बंगाल भी शरीक है अन्न की इतनी कमी हो गई है कि वहां जल्द से जल्द अन्न पहुंचाना बहुत जरूरी हो गया है। जो कुछ गवर्नमेन्ट मे शक्ति है वह कर रही है और जहां जहां कमी है अन्न पहुंचाने का प्रयत्न किया जा रहा है। मै आप से यह कहना चाहता हूं कि आप इस बात का विश्वास रखे कि यहां अगर अन्न का कष्ट आयेगा तो भारत सरकार से जो कुछ बन सकता है उसे करने मे वह कसर नही करेगी। जहां जहां अन्न की जरूरत है सभी जगहों में भेजने का प्रयत्न किया जा रहा है और होता रहेगा। मगर हमारे सामने अन्न जो कष्ट है उससे घवड़ाने की बात नही है। बात यह है कि इस देश के अन्दर अब भी कुछ अनाज है और जरूरत के अनुसार उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का प्रयत्न हो रहा है। इस लिये घबड़ाने की बात नहीं है। इस वक्त जरूरत है सभी के साथ काम करने की और अगर गवर्नमेन्ट और जनता दोनों ने मिल कर इस का मुकाबला किया तो इसमें कोई शक नहीं कि इसमें भी हम सफल होंगे।

हम स्वराज मिले तीन वर्ष हो गये। ये तीन वर्ष कितने कठिन गुज़रे हैं। इसे शायद बहुत लोग नही समझते है। जब किसी स्त्री को प्रसव होता है तो प्रसव के समय तो पीड़ा होती ही है उस के बाद भी कुछ दिनों तक होती रहती है। जब देश मे स्वराज पैदा हुआ तो प्रसव की पीड़ा होना स्वाभाविक था। वह पीड़ा खतम नहीं हुई वल्कि और अधिक हो रही है और उसके साथ साथ कितने ही प्रश्न हमारे सामने आये है। फिर भी हम ने किसी न किसी तरह उन को हल करने का प्रयत्न किया। जो लोग इस चीज़ को जानते हैं जो इस की खबर रखते हैं वे तो इससे समझते हैं कि हमने कितना काम किया है। देश ने जिस तरह इन आपत्तियों का मुकाबला किया है वह हमारे

लिये एक बड़ी चीज़ है। इस से यह ज़ाहिर होता है कि हमारे लोगों में उत्साह और बल है। मैं आशा करता हूं कि आप इस चीज़ को आगे भी कायम रखेंगे।

अभी हम को बहुत कुछ करना है। जो स्वराज का स्वप्न हम देखा करते थे वह स्वप्न अभी पूरा नहीं हुआ है। देश के अन्दर गरीबी है, देश के अन्दर बीमारी है, देश मे अशिक्षा है। बहुत सी चीजें अभी चल रही हैं जिन को हमें दूर करना है। ऐसे काम एक दिन में नही हो सकते, एक हफ्ते में नही हो सकते। ७ वर्ष भी ऐसे कामों के लिये बहुत कम है। फिर काम करने का तरीका भी हमारा कुछ दूसरा है। हम लोग काम करना चाहते हैं आहिस्ता आहिस्ता। आहिस्ता का मतलब यह नही कि हम देर लगाना चाहते हैं। आहिस्ता के माने यही है कि जो हमारा कदम उठे वह ठीक जगह पर पड़े। हम कोई ऐसा काम न करें कि फिर हम को उसे बदलना पडे। काम को इस तरह से चलाना चाहिये जिस में हम बढ़ते ही जायें। आज केवल हमारे ही सामने नही बल्कि सारे संसार के सामने हजारों तरह की कठिनाइया है। महात्माजी ने जो हमको रास्ता बतलाया है हम को उसे चरम अवस्था तक पहुंचाना है और तभी हम देश को आगे बढ़ा सकते हैं। आप जिन को चाहे मन्त्री मुकरर कर सकते हैं। मगर आप को देखना है कि क्या वे आपके काम को पूरा कर सकेंगे; आपके स्वप्न को पूरा कर सकेंगे। ऐसे लोगों मे त्याग की ज़रूरत है और सच पूछिये तो इस वक्त त्याग से अधिक परिश्रम की जरूरत है और ज़रूरत है इस चीज की कि हमारे सब भाई इस देश को, सारे देश को अपना समझें और जहा जहां छोटी छोटी बातो को लेकर लड़ाई चलती हो उन सब को भूल कर सारे देश की सेवा, सारे देश की भलाई को सामने रखकर काम करे।

हमारा नया संविधान बन गया है और चन्द महीनो के बाद चुनाव होगा। उस चुनाव मे देश के सभी स्त्री और पुरुषों को जिन की अवस्था २१ साल की है वोट देकर अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होगा। यह एक इतना बड़ा काम है इतना बड़ा चुनाव है कि आज तक संसार के इतिहास में कहीं नहीं हुआ। वह चुनाव अब से चन्द महीनो के बाद होगा। इस चुनाव मे जनता की परीक्षा है और सब लोग देखेंगे कि जनता किस तरह के लोगों को चुन कर भेजती है। अगर आप ऐसे लोगों को चुनेंगे जिन पर आप का भरोसा है, जिन मे त्याग हो, शक्ति हो, जिनमें अधिक ईमानदारी ही सच्चाई हो और चरित्र हो तो ऐसे लोग आप की सेवा करेंगे देश की भलाई की बात सोचेंगे। इसलिये मै चाहता हूं कि आप में से हर एक इस बात का ख्याल रखे कि वह जो प्रतिनिधि चुनकर भेजे उन में ये बातें हों और वे सोचें कि देश की और संसार की किस चीज मे भलाई है किस तरीके से वे आप की सेवा कर सकते हैं। अगर ऐसा सोच कर वे काम करेंगे तो हमारे लोगों की भलाई होगी और संसार की भी भलाई होगी।

आज संसार में लड़ाई की धूम मच रही है। अभी अभी तिब्बत में लड़ाई जारी हो गयी है। और कहीं कहीं लड़ाई हो भी रही है। इन चीजों से हम बचना चाहते हैं, अपने को अलग रखना चाहते हैं। महात्माजी ने शिक्षा दी और कार्य रूप में करके दिखलाई कि लड़ाई के बिना ही हम सब कुछ कर सकते हैं। भारत सरकार वही करना चाहती है। इसमें आप भारत सरकार की मदद कर सकते हैं और यदि आप महात्माजी के रास्ते पर चलकर अपना काम करें तो संसार में हमारी बात चल सकती है। मेरा आप से यही निवेदन है कि आप धीरज के साथ हिम्मत के साथ, सच्चाई के साथ देश के सामने जो प्रश्न हैं उन पर विचार करे और सारे देश को अपने सामने रखकर जो कुछ निश्चय करना हो आप करें। इस में ही देश का भला होगा।

आपने जिस आदर और प्रेम के साथ मेरा स्वागत किया उस के लिये मैं आप सब को किन शब्दों में धन्यवाद दूं। धन्यवाद नहीं दे सकता। अगर मुझे आप को धन्यवाद देना है तो अपनी सारी ज़िन्दगी के लिये धन्यवाद देना है। अगर मैंने देश की कुछ सेवा की है और अगर आगे करने की मुझ मे कुछ शक्ति है तो उसे बनाने का श्रेय आपको ही है। इतना ही कहकर मैं समाप्त करता हूं।

चित्तरजन लोकोमोटिव वर्क्स

चित्तरंजन लोकोमोटिव वर्क्स के नामकरण महोत्सव के अवसर पर राष्ट्रपति जी ने ता० १-११-१९५० को अपने भाषण मे कहा—

बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि आप ने मुझे यह मौका दिया कि मैं इस नये कारखाने में आऊं और यहां जो कुछ हो रहा है उसे अपनी आंखों से देखूं। अभी जैसा मेरे भाई श्री संथानम ने बतलाया इन्जिन बनाने का काम इस मुल्क मे बहुत दिनों से जारी नहीं था। बहुत दिनों तक इस पर विचार होता रहा और यद्यपि जब तब काफी तादाद में इन्जिन तैयार किये गये पर तो भी सिलसिलेवार काम आज अब पूरा होने वाला है और कई वर्ष के परिश्रम के बाद अब यह तय पाया है कि इस देश में अपनी ज़रूरत के इन्जन अब बनने लग जायेंगे। जिस मुल्क में करीब करीब ४० हज़ार मील रेलवे हो और जहां इतनी गाड़ियां चलती हों यदि उन को दूसरे देशों पर इन्जन के लिये भरोसा करना पड़े तो इससे बढ़कर उसके लिये और कोई दुख का विषय नहीं हो सकता है। बहुत कम समय में यहां इन्जिन तैयार करने का प्रबन्ध करने का यह फैसला हमारी गवर्नमेन्ट ने किया। एक दो वर्ष के अन्दर जिन भाई बहनों ने मिल कर यहां काम किया है जितने इन्जीनियर्स और कन्ट्रेक्टर्स लोगों ने काम किया और खास करके जिन विदेशी लोगों ने काम

किया है और वहां ी कम्पनी की तरफ से आकर हमारी मदद की है उन सब को मैं धन्यवाद देता हूं ।

मैं जब से यहां आया हूं गाड़ी पर चढ़कर यह देखा है कि किस तरह से शहर को बसाया जा रहा है । मैं मानता हूं कि यहां सिर्फ़ एक कारखाना ही नहीं बन रहा है बल्कि उसके साथ साथ यहां एक सुन्दर और अच्छा शहर भी बन जायेगा और हमारी और जगहों के लिये जहां जहां बड़े कारखाने बनने वाले हैं एक नमूना पेश करेगा। मैं ने देखा है कि यहां से थोड़ी ही दूर पर सिन्दरी का बड़ा कारखाना बना है। वहां भी इसी तरीके से शहर बसाने का प्रबन्ध किया गया है। जब गवर्नमेन्ट अपने हाथ में कोई बड़ा कारखाना लेती है तो वह दोनों चीज़ों पर खास करके ध्यान देती है। मैं यही चाहता हूं कि गवर्नमेन्ट के अलावा दूसरे लोग भी जब बड़े बड़े कारखाने बनावे कारखाने के अलावा जो लोग वहां काम करने वाले हैं उनके रहन-सहन के लिये वैसा ही शहर बसाने का प्रयत्न करे जैसा गवर्नमेन्ट की ओर से बड़े कारखाने में काम करने वालों के लिये किया जा रहा है। अभी भाई संथानम ने बताया है कि करीब आधा खर्च कारखाने पर पड़ा है और आधा खर्च इस शहर बसाने में पड़ा है। मेरी समझ में इस खर्च को अलग खर्च नहीं मानना चाहिये और इस खर्च को भी कारखाने के खर्च का हिस्सा ही मानना चाहिये क्योंकि अगर गवर्नमेंट सिर्फ़ कल पुर्ज़ा रख दे तो उस से कारखाना चलता नहीं और उन कल पुर्ज़ों को चलाने के लिये काम करने वाले आदमियों की आवश्यकता होती है और जब तक काम करने वाले आदमी की ज़रूरत पूरी न हो और वह अच्छी तरह से रहकर दिल लगा कर काम न करें तब तक केवल कल पुर्ज़े से काम नहीं चलता। इसलिये काम करने वालों के सुख सुविधा पर ध्यान देना उतना ही ज़रूरी है जितना कारखाना बनाना ज़रूरी है। इसलिये मैं समझता हूं कि यद्यपि गवर्नमेन्ट को काफ़ी खर्च करना पड़ा है पर वह खर्च ज़रूरी था । क्योंकि दोनों चीज़ों पर ध्यान देना ज़रूरी है अर्थात् कल पुर्ज़े को ठीक से रखना और कल पुर्ज़े के चलाने वाले आदमियों को ठीक से रखना और आराम से रखना। मैं ने कुछ मकानों के अन्दर जा कर देखा है और उस से मालूम हुआ कि उस में आराम से लोग रह सकेंगे। यह जगह आप को बहुत अच्छी मिल रही है जहां न तो अधिक सर्दी पड़ती है और न अधिक गर्मी और जहां की हवा अच्छी है और जल भी अच्छा है। मुझे इस इलाके का पहले का भी अनुभव है । यहां खाना पचता है और यहां की जलवायु अच्छी है। इस स्थान को चुन कर आप ने अच्छा ही किया । लेकिन कारखाने के चालू होने से आप पर बड़ी जवाबदेही भी आ जायेगी क्योंकि यह कारखाना बड़े महत्व का होगा। अभी बताया गया कि इस कारखाने को पूरी तरह से काम करने में अभी तीन चार वर्ष लग जायेंगे । इस बीच में इसका काम आहिस्ता आहिस्ता बढ़ता जायेगा और जो चीज़ें अभी बाहर से मंगाई जाती हैं उन का बाहर से आना आहिस्ता आहिस्ता कम होता जायेगा और चार वर्ष के बाद मैं समझता हूं कि इसे किसी चीज़ को बाहर से मंगाने की ज़रूरत नहीं होगी और जो चीज़ें यहां बनेंगी उन्हीं से इस का काम चल जायेगा। चार वर्ष के बाद जब

वह कारखाना पूरी तरह से काम करने लगेगा तो १२० बड़े इन्जिन और उसके साथ साथ ६० बायलर भी यहां तैयार हो सकेंगे। मुझे मालूम नहीं है कि हमारे देश में कितने नये इन्जिनों की हर साल जरूरत पड़ती है। पर मैं आशा करता हूं कि जब यह कारखाना काम करना शुरू कर देगा तब एक भी इन्जिन बाहर से लाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मुझे बताया गया है कि यह कारखाना बड़े इन्जिन तैयार करेगा। और एक दूसरा कारखाना छोटी लाइनों के लिये इन्जिन तैयार करेगा। जब दोनों कारखाने काम करना शुरु कर देंगे तो हमारे यहां बड़ी और छोटी दोनों लाइनों के लिए इन्जिन तैयार होने लगेंगे और हमें दूसरे देशों का मुंह नहीं ताकना पड़ेगा। मैं भरोसा करता हू कि अभी जो बाहर से इन्जिन मंगाये गये हैं उन्हें आप उस वक्त तक चलाते जायेंगे जब तक यहां के कारखाने काम करना शुरू न कर दे और नये इन्जिन तैयार न होने लग जायें। इसमें सिर्फ पैसे की बात नहीं है लड़ाई के ज़माने में हमने अनुभव किया और लड़ाई के समय से ज्यादा लड़ाई जीत जाने के बाद अनुभव किया कि हमारी रेलों की हालत कैसी खराब हो गई। यद्यपि आज लड़ाई को खत्म हुए पांच वर्ष हो गये तो भी लड़ाई खत्म होने के बाद तीन वर्ष तक हालत इतनी बुरी रही कि रेल से चलना एक तरह से जोखिम का काम था और जो लोग रेल पर चढ़ते भी थे तो उनको यह शक बना रहता था कि जहां वे जाना चाहते थे वहां वे पहुंच सकेंगे या नही और पहुंचेंगे तो कितनी देर के बाद। यह हालत जैसे जैसे बाहर से इन्जिन आये बदली है और दूसरी तरह से भी हालत सुधरी है। मुझे इस बात की खुशी है और मै इसके लिये श्री गोपालस्वामी आयंगर और श्री संथानम को बधाई देता हूं कि उन्होंने रेलवे का इन्तजाम ऐसा कर लिया है कि अब लोग गाड़ी पर चढ़ते है तो लोगों को भरोसा होता है कि ठीक समय पर जहां उनको जाना है वहां पहुंच जायेंगे। लेकिन यह कैसे हुआ ? बाहर से जब यह इन्जिन लाये गये तब यह हुआ। फिर अगर बाहर से इन्जिन मंगाना बन्द होगा तो वही हालत होगी। इसलिये यह कारखाना देश के लिए एक ऐसी चीज तैयार करेगा जो हमारे लिये काफ़ी काम की होगी और उस के लिये हम को विदेशों का मुंह नहीं ताकना पड़ेगा। इसलिये इस कारखाने का बहुत ही महत्व है। यहां तैयार किये हुए पहले इन्जिन को चलाने का काम, जैसे कि मैनेजर ने बतलाया, मेरे जिम्मे देना चाहते है। इन्जिन चलाना तो मैं जानता नहीं। मुझे किसी कल पुर्जे से कभी ताल्लुक रहा नहीं। इसलिये मैं ने उन से कहा कि क्या मेरे जैसे आदमी से जिसने कभी किसी कल पुर्जे के सम्बन्ध में कुछ जाना नही इन्जिन चलेगा ? उन्होने कहा कि चाहे मै कुछ भी होऊं पर इन्जिन ठीक से मेरे चलाने से चलेगा। मैं आशा करता हूं कि यह काम जो आप आज शुरू कर रहे हैं दिन प्रति दिन बढ़ेगा और देश की उन्नति में सहायक होगा और आप इन्जिन तथा दूसरी चीज़ों को जिनकी हमें अभी जरूरत है और जिनकी जरूरत और भी बढ़ेगी यहां तैयार कर सकेंगे। आप यह न समझें कि ४० हजार मील रेल की लाइन काफी है। जैसे जैसे देश उन्नति करेगा इस देश के अन्दर और भी लाइनें बढ़ेंगी तो हमारे सामने यह बहुत बड़ा काम पड़ा हुआ है जो देश की उन्नति में मदद करनेवाला

है और उस काम के लिये जो पहला कारखाना शुरु हुआ है उसके लिये मैं रेलवे मिनिस्ट्री को और आप सब को धन्यवाद देता हूं और खासकर उन सब भाइयों को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने इतनी मेहनत की है और इस काम को इतनी खूबी के साथ जल्द पूरा किया है। मैं आप सब भाई और बहनों को धन्यवाद देता हूं।

मेरे लिये यह सौभाग्य और गौरव की बात है कि मैं इस कारखाने का नाम देशबन्धु चित्तरंजन दास के साथ जोड़ता हूं। आप सब जानते हैं कि देशबन्धु दास ने देश के लिये क्या किया। जो कुछ भी उन्होंने देश के लिये किया वह सिर्फ आज ही नहीं हमेशा इस देश के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। इस कारखाने का नाम उनके नाम पर रखकर हमने देशबन्धु के प्रति केवल अपना आदर प्रकट किया है। उन्होंने जो काम किये वे उनकी स्मृतियों को कायम रखेंगे और उनकी स्मृतियां भारत के इतिहास में कायम रहेंगी। मैं अपना सौभाग्य और गौरव मानता हूं कि आप ने मुझे यह सुअवसर दिया और मैं इसका नाम चित्तरंजन लोकोमोटिव वर्क्स रखता हूं। बहुत बहुत धन्यवाद।

वैद्यों द्वारा अभिनन्दन

आयुर्वेदीय वैद्यों द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब में ता० ७ अक्तूबर को राष्ट्रपति जी ने कहा—

आयुर्वेद के आचार्य महाशय,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि आप सब से मिलने का मुझे यह मौका मिला। आयुर्वेद के साथ मेरी दिलचस्पी रही है यह आप जानते हैं और इसलिये मैं समझता हूं कि यह कृपा आपने मेरे ऊपर दिखलायी है और मानपत्र भी आपने दिया है और एक कलश भी आपने दिया जो सद्भावना का चिह्न है। आयुर्वेद आज भी भारतवर्ष में बहुत लोगों की सेवा कर रहा है। चाहे दूसरी पद्धति को कितना भी प्रोत्साहित किया जाये अभी वे इतने लोगों तक नही पहुंच पायी हैं जितने लोगों तक आयुर्वेद पहुंच पाया है। यह स्वाभाविक है। हमारे देश मे बहुत काल से आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली चली आ रही है। इसकी वृद्धि आज से नही अनन्त काल से होती रही है और इस से लोगों को लाभ मिला है। अभी भी आप के पास बहुत सी तैयार की हुई ऐसी औषधियां हैं जो किसी भी देश की तैयार की हुई औषधियों से मुकाबला कर सकती हैं।

मगर कई सौ वर्षों से आयुर्वेद एक प्रकार से एक स्थान में पहुंचकर वहां ही बैठ सा गया है, थकसा गया है और उससे आगे नहीं बढ़ पाया है। जब मैं इस बात पर विचार करता हूं कि उन ऋषियों ने जिन्होंने आयुर्वेद को जन्म दिया कितना परिश्रम किया होगा, कितनी कोशिश की होगी कितना अनुभव प्राप्त करने के बाद उस को लिखा होगा तो मुझे यह और खटकता है कि इधर कई सौ वर्षों से

उसमें कोई तरक्की नहीं हुई है । इसका यही कारण है कि जो आयुर्वेद के हामी हैं और जिन लोगों ने आयुर्वेद को अपनाया है उन्होंने इसके प्रति न तो उतना परिश्रम दिखलाया है और न कोई खोज की है बलिक वे एक प्रकार से रूढ़ि में बंध गये और रूढ़ि में बंध जाने के कारण जो ज्ञान पहले से चला आता है उतने ही ज्ञान से संतुष्ट हैं, उसे आगे बढ़ाने का प्रयत्न उन्होंने नहीं किया है । यह एक ऐसी बात है जिसके सम्बन्ध में कोई मतभेद नहीं हो सकता है कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं । किसी चीज को लेकर अगर देखा जाये तो कोई नहीं कह सकता है कि उस चीज के सम्बन्ध में सब कुछ जान लिया गया और कुछ जानना बाकी नहीं रहा । खास तौर से आयुर्वेद का विषय ऐसा है कि इसके ज्ञान की सीमा नहीं हो सकती हैं । अगर आज कोई नयी पद्धति आगे बढ़ जाती है तो इसका विशेष कारण यही है, कि वह अपने ज्ञान की सीमा नहीं मानती और नयी खोजों के द्वारा बढ़ती है । ठीक है आयुर्वेद आज तक जीवित रहा है । यह कहना भी आपका ठीक है कि इस को हर तरह से धक्का ही धक्का मिला है कोई प्रोत्साहन नहीं मिला और तो भी यह जीवित रहा । क्योंकि इस में कोई ऐसा तत्व है जिसकी वजह से यह जीवित रह सका है । मगर केवल जीवित रहना काफी नहीं है, उस में वृद्धि होनी चाहिये । उसके लिये आप सब को आंख खोल कर दुनिया में क्या हो रहा है उसे देखना चाहिये । जो नये विचार, नये आविष्कार सारे संसार को चकित कर रहे हैं उनसे भी परिचित होना जरूरी है और उन्हे आप आयुर्वेद में कितनी हद तक अपना सकते हैं और उन से कितना लाभ उठा सकते हैं यह भी आपको देखना चाहिये । हमारे देश में केवल नाड़ी देख कर, केवल चेहरा देखकर याने जहां तक अपनी इन्द्रियों से देख सकते हैं समझ सकते हैं वैद्य लोग काम लिया करते हैं । अब बहुतेरे ऐसे यन्त्र बन गये हैं जिन यन्त्रों से आप सूक्ष्म से सूक्ष्म चीज को देख सकते हैं । बहुत सी चीजें ऐसी हैं जो आंखों से नहीं पहचानी जा सकती हैं वे इन यन्त्रों से पहचानी जा सकती हैं इन यन्त्रों का आप क्या प्रयोग कर सकते हैं । किस तरह से आप उन से काम ले सकते हैं इसे भी सोचना चाहिये । केवल रोग निदान के लिये ही यन्त्र का काम नहीं है । पहले की चिकित्सा में भी हम ने देखा है कि बारीक से बारीक यन्त्र होते थे जो बाल को भी चीर सकते थे, एक बार नहीं कई बार चीर सकते थे । प्रत्यक्ष है कि वह बहुत सूक्ष्म रहे होंगे । हमारे देश में भी आयुर्वेद के लोग यन्त्रों से अनभिज्ञ नही थे । इधर लोग यन्त्रों से अनभिज्ञ हो गये हैं । इन यन्त्रों का उपयोग आयुर्वेद में भी होना चाहिये । इधर माइक्रासकीप नामक चीज देखने में आयी है । पहले इसकी जरूरत नहीं थी । अब जरूरत हो रही है । तो मेरे कहने का अर्थ यह है कि जो नयी पद्धति है, जो नया विज्ञान है उस विज्ञान को अपने में मिलाना चाहिये और अपनी चीज की माप में उसे तोलना चाहिये । आजकल लोग कहा करते हैं कि आयुर्वेद वैज्ञानिक नहीं है, वह विज्ञान के तराजू पर तोला नहीं जा सकता । वह तो रूढि पर चलता है । आजकल लोग सिर्फ पुस्तक का प्रमाण नहीं चाहते उसको लोग रूदह देखना चाहते हैं इन यन्त्रों के द्वारा अपनी आंखों से देखना चाहते हैं । यदि आप उन्नति करना चाहते हैं तो इस युग में इन चीजों को भी आपको याद रखना है । ऐसा करने पर ही

आयुर्वेद को वह सम्मान मिल सकेगा जो पहले था। अगर इस तरफ़ आपका ध्यान नहीं गया, रूढ़ि पर ही रह गया तो यद्यपि अभी तक उसके अन्दर जीवन है और वह कुछ दिनों तक कायम रह सकता है मगर इस तरह से वर्षों कायम न रह सकेगा। दूरदर्शिता इसी में है कि आप अपनी विद्या की खूबी को देखें, अभ्यास करें, और जो नयी चीज़ है उसको भी समझने की कोशिश करें। और दोनों को मिला कर देखें कि कहां किस में त्रुटि है और उस त्रुटि को पूरा करने की कोशिश करें। मेरा विश्वास है कि दोनों को मिलाकर देखा जाये तो आप को बहुत लाभ होगा। और अगर दूसरों में दूरदर्शिता होगी तो वे भी आपकी चीज़ों को समझेंगे और लाभ उठायेंगे।

आपने बड़ी कृपा कर के इस तरह मेरा स्वागत किया, मान बढ़ाया, आशीर्वाद दिया, इसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद।

काश्मीर विश्वविद्यालय का समावर्तन

तारीख १०-११-५० को काश्मीर विश्वविद्यालय में राष्ट्रपति जी ने अपने भाषण में कहा—

जनाब चान्सलर साहब, प्रोचान्सलर साहब, वाइस चान्सलर साहब, सीनेट के मेम्बरान, यूनीवर्सिटी के तालिबइल्म, अभी जो डिग्री पाये हैं वे भाई और बहन तथा दूसरे भाइयो और बहनो,

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि मैं इस मौके पर यहां हाज़िर हो सका। आपकी यूनीवर्सिटी एक नयी यूनीवर्सिटी है। इसने अभी दो ही साल बिताये हैं और इन दो वर्षों में जितनी तरक्क़ी इसने की है उसका थोड़ा सा बयान अभी आपके सामने रखा गया है। आपकी यूनीवर्सिटी को यह फख्र है कि यह आज़ाद हिन्दुस्तान में पैदा हुई है और मैं यह भी मानता हूं कि नयी यूनीवर्सिटी होने की वजह से इस को जितनी बातों की सहूलियत है उतनी जो पुरानी यूनीवर्सिटियां हैं उनको नहीं है। नयी यूनीवर्सिटी होने की वजह से पुरानी यूनीवर्सिटियों के जो पुराने ट्रेडिशन कायम हो गये हैं उन से यह महफ़ूज़ है। इसको पूरा मौका मिल गया है कि आज़ाद हिन्दुस्तान के, नये आज़ाद काश्मीर के नक्शे को अपने सामने रखकर यह अपना कोर्स इस तरह से बनाये कि जो यहां से तालीम पाकर निकले वह मुल्क की खिदमत की और तमाम इन्सानों की खिदमत को अपने सामने रखे और अपने को उसके लिये तैयार करे। इसलिये मैं यह भी समझता हूं कि आपका जो कोर्स आफ़ स्टडी बनेगा और जो आहिस्ता आहिस्ता बनता जा रहा है वह और जगहों से मुख्तलिफ़ होगा क्योंकि आप पुरानी लकीर पर नहीं चलने वाले हैं और आपको यह मौका है कि आप अपने लिये और हिन्दुस्तान के दूसरे हिस्सों के लिये भी नया रास्ता दिखला सकें और आपको दिखलाना चाहिये।

अभी जिन लोगों को डिग्रियां मिली हैं उनमें से एक को मैं ने देखा और जो आगे यूनीवर्सिटी का क्रेस्ट है उसको भी मैं ने देखा। मुझे यह देख कर बड़ी खुशी हुई है। मालूम होता है कि उसमें आपने दो चीजें साथ साथ रखी हैं। एक तो वेदमन्त्र है– तमसो मा ज्योतिर्गमय–हम को अन्धकार से रोशनी में ले चलो और ठीक इसी अर्थ की कुरान शरीफ़ की एक आयत रखी है। यह एक नयी चीज इस माने में है कि हमारी यूनीवर्सिटियों में इस तरह की चीजें कम देखने में आती हैं और जहां तक मैंने देखा है हमारी यूनीवर्सिटियों में लैटिन या और किसी विदेशी भाषा से लेकर कुछ मोटो रख देते हैं पर यहां पर शुरु में ही आपने एक नया रास्ता दिखलाया है इस के लिये मैं आपको मुबारकबाद देना चाहता हूं। वह सिर्फ इसलिये नहीं कि आप ने ऐसा मोटो रखा है। मैं तो चाहता हूं कि इस मोटो के मुताबिक आपके इस खूबसूरत इलाके के हरएक रहने वाले का जीवन उसी ढर्रे पर, उसी ढांचे में ढले जिसमें जो आपस के मजहबी तफ़रकात इधर उधर सुनने में आते हैं वे एक बार भी न देखने में आयें। मेरी उम्मीद है कि जो यहां से पढ़कर निकलेंगे वे अपने इस मोटो को सिर्फ अपने सामने ही नहीं रखेंगे बल्कि उसके मुताबिक हमेशा काम करते रहेंगे और उनके उदाहरण से प्रभावित होकर दूसरे वे लोग भी जो यूनीवर्सिटी में नहीं पहुंच सकते हैं उसके मुताबिक काम करेंगे। मैं ने जो अर्ज किया उसका यही मतलब है कि आप बहुत बातों में पुरानी यूनीवर्सिटियों से आगे बढ़े हैं क्योंकि आप आजाद हिन्दुस्तान में पैदा हुए और आपको आज़ादी का एहसास करके अपना मकसद बनाना चाहिये। कोई भी मुल्क हो उसका दारमदार उसके बच्चे ही हुआ करते हैं। जो बड़े होते हैं वे तो अपना वक्त बहुत कुछ बिता चुके होते हैं और जो कुछ बाकी रहता है वह आहिस्ता आहिस्ता निकलता जाता है। लेकिन बच्चों के सामने सारी दुनिया सारा जमाना रहता है और अगर ठीक तरह से तैयार होकर निकलें तो उनसे बहुत उम्मीदें रखी जा सकती हैं। मुझे आप सब भाई और बहनों से मिलकर बड़ी खुशी हुई इसलिये कि यहां जो भाई अभी डिग्री दर्जे तक नहीं पहुंच पाये हैं और जो दूसरे लोग स्कूलों में हैं वे भी अच्छी तादाद में यहां हाजिर हैं। उनके सामने भी वही एक मकसद हमको रखना है जो उन लोगों के सामने रखना है जो यूनीवर्सिटी डिग्री पाकर निकले हैं।

उनके सामने सारा मैदान खिदमत का पड़ा हुआ है। जिस को जिस चीज़ में दिलचस्पी हो उसे वह कर सकता है। इस बड़े मुल्क के अन्दर काम की कमी नहीं है काम करने वालों की कमी है। अगर कोई ऐसा है जिसको अदब से ज़्यादा लगाव है या कला में दिलचस्पी है उसके लिये मैदान खुला है। वह अच्छी से अच्छी चीज़ लिख सकता है और दूसरों के तजर्बे से या अपनी तरफ से नयी चीज़ बना सकता है सत्य का निर्माण कर सकता है। उसके लिये यह सुनहरी मौक़ा है। जिनका मिजाज़ विज्ञान की तरफ झुकता है उनके लिये भी काफी मैदान इस मुल्क में खाली पड़ा है। एक एक चीज़ को लेकर आगे बढ़ने का उनको मौक़ा है। यह इलाक़ा निहायत खूबसूरत इलाक़ा है यह तो आप अच्छी

तरह से जानते ही हैं। मैं तो नहीं जानता हूं। थोड़ा मैं ने जो देखा है उससे मैंने कहा है जैसे पहले जो कोई आ गये हैं वे कह गये हैं। यहां की एक एक चीज को विज्ञान के सायन्स के नुक्ते नजर से आप को देखने का मौक़ा है। आपको देखना है कि किस तरह से किस चीज की आप तरक्की कर सकते हैं और दूसरे को बता सकते हैं। जो काश्तकारी का काम यहां होता है उस काश्तकारी को बढ़ाने की बहुत गुंजाइश है। यूनीवर्सिटी के तालिबइल्मों से इस बात की उम्मीद रखी जा सकती है कि जहां आज एक मन पैदा होता है वहां दो मन पैदा करने के मनसूबे के साथ वे निकलें। अगर वे लोग ऐसा करेंगे तो आज मुल्क के अन्दर जो अन्न की कमी है वह कमी आसानी से दूर हो सकती है। उसी तरह से यहां की ज़मीन में अनेक चीजें पड़ी हैं, अनेक खनिज पदार्थ पृथ्वी के गर्भ में यहां पड़े हैं। उनको निकालना वैज्ञानिक लोगों का काम है और इस के लिये अब काफ़ी मौक़ा है। अब वे इस काम को कर सकते हैं। सब से बड़ी ज़रूरत तो इस चीज की है कि देश की खिदमत हर आदमी करे और हर आदमी को इसकी तरफ़ ध्यान देना चाहिये।

मैं समझता हूं कि जो लोग अब तैयार हो रहे हैं उनको यह ध्यान में रखना है कि देश के आज़ाद होने के बाद उन पर एक जवाबदेही आगयी है। जवाबदेही तो है लेकिन मुल्क की तरक्क़ी के लिये हमें कोई मौका नहीं यह हम आज नहीं कह सकते। अब तरक्क़ी करने की या नीचे गिरने की जवाबदेही हम पर ही है। अगर हमारा मुल्क बढ़ता है, किसी तरह से तरक्की करता है तो उसका श्रेय हम को ही मिलेगा और मिलना चाहिये। उसी तरह से अगर मुल्क गिरता है, पीछे जाता है, बिगड़ता है तो उसकी शिकायत उसका इल्ज़ाम हमारे ही सर पर आयेगा; किसी दूसरे के सर पर नहीं जायेगा। इसलिये हम में से हरएक का और खास कर ऐसे नौजवानों का जो तालीम पा रहे हैं यह फ़र्ज़ है कि इस बात को समझें, इसकी अहमियत को महसूस करें और अपने को उस जवाबदेही को पुरा करने के लिये तैयार करें ताकि जब उनका वक्त आये तो वे अपने कामों से अपनी जिन्दगी से लोगों की खिदमत कर सकें और दिखा सकें कि उन्होंने जो तालीम पायी वह अच्छी तालीम है और उसकी वजह से वे देश की इतनी खिदमत कर सके।

आज कल काश्मीर का मसला हम लोगों के सामने है। इस सिलसिले में मैं यहां कुछ पिछली बात कह देना ठीक समझता हूं। हम को आज़ादी तो मिली मगर उसके साथ साथ हमारे सर बहुत सी मुसीबतें भी आ पड़ीं। हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ लेकिन हिन्दुस्तान के दो टुकड़े हुए। मुल्क तो बंटा पर उसके बंटने के साथ जो और अफसोसदेह बातें हुई वे भी हुईं पर जब मैं यह सोचता हूं कि यह सब क्यों हुआ, कैसे हुआ तो खानदान मुश्तर्का के बंटवारे की बात याद आती है। इस बात को ठीक तरह से आपके सामने रखने के लिये मैं एक मिसाल आपके

सामने रखता हूं। मान लीजिये कि एक खानदान मुश्तर्का में ७ भाई हैं। सातों भाई कुछ दिनों तक मजे में एक साथ रहते हैं। उन में से दो भाई समझते हैं कि अलहदा हो जाने से वे आराम से रहेंगे, सुख से रहेंगे। उनमें से चार भाई समझते हैं कि उनका खयाल गलत है और मना करते हैं, समझाते हैं कि अलहदा होने से हम भी कमजोर हो जायेंगे और तुम भी कमजोर हो जाओगे और इसका नतीजा यह होगा कि हम दोनों कमजोर हो जायेंगे। लेकिन वे दो भाई इस बात को नामंजूर करते हैं। चार भाइयों ने कहा कि तुम अलहदा होना ही चाहते हो तो तुम्हारी खुशी हैं, अलहदा हो जाओ। दोनों अलहदा हो जाते हैं। अब जो एक भाई बच जाता है वह सोचता है कि मुझे किधर जाना चाहिये और किसके साथ रहने में मेरी भलाई है, दो भाइयों के साथ रहने मे या चार भाइयों के साथ रहने में। वह सोच रहे थे कि इतने मे दो भाई आये और उनके कमरे में जहां वह रहते थे घुसकर जो कुछ फरनीचर उन एक भाई का वहां था उस सब को उन्होंने तोड़ना फोड़ना शुरु कर दिया और उस भाई का हाथ पकड़ लिया और कहा कि हम चार भाइयों के साथ तुम को नहीं जाने देंगे, अपने ही साथ ले जायेंगे। उन्होंने कहा कि हमें मौका दो कि हम सोचें कि तुम्हारे साथ रहें या चार भाई के साथ रहें। मगर उन दो भाइयों ने मौका नहीं दिया। तब उस एक भाई ने अपने चार भाइयों से कहा कि हमारे साथ में दो भाई ज़बर्दस्ती करना चाहते हैं, हमारी मदद करो। उन्होंने कहा ठीक हैं ज़बर्दस्ती नहीं होनी चाहिये तुम्हारी खुशी है कि तुम हम चार भाईयों के साथ रहो या दो भाईयों के साथ। और हमारे साथ रहना चाहते हो तो हम तुमको अपने साथ लेने के लिये तैयार हैं; अगर तुम्हारी ख्वाहिश उन दो भाइयों के साथ जाने की हो तो तुम्हारी खुशी तुम जा सकते हो। मगर इसका फ़ैसला तुम खुद करो, दूसरे न करें। पर उन दो भाइयों ने हाथ छोड़ा नहीं और अपनी तरफ़ खीचने की कोशिश में रहे। इधर चार भाइयों ने उन दो भाइयों से कहा कि वे उस एक भाई का हाथ छोड़ दें और आज़ादी से उसे सोचने दें कि वह उन के साथ जायेगा या हमारे साथ आयेगा और आगे कहा कि इन्साफ़ यही है उसका हाथ छोड़ दो और फ़ैसला करने दो। लेकिन दो भाई राज़ी नहीं हुए। मेरी समझ में काश्मीर का झगड़ा इतना ही है। हम कहते हैं कि हाथ छोड़ दो। वे कहते हैं कि हाथ पकड़े रहेंगे और अपनी तरफ खीचते हे और कहते हैं कि फ़ैसला करो। बस काश्मीर का यही झगड़ा चल रहा है। तालिबेइल्मों के अपने फ़र्ज हैं लेकिन यह काम तो बड़े लोगों का काम है। जो बड़े चार भाई है वे ज़बर्दस्ती आपके साथ नहीं होने देंगे। मगर यह काम आप बड़ों पर छोड़ दें। फ़ैसला करने का वक्त आयेगा तो शायद आपको हिस्सा लेना पड़े और उस समय यह सोचकर कि किस में मुल्क की भलाई है आप फ़ैसला करें। इस समय तो आप का काम अपने को तैयार करना है। इस तरह से तैयार करने का जिसमें आप काश्मीर की खिदमत कर सकें भारत की खिदमत कर सकें और सारे इन्सानों की खिदमत अपने ऊपर ले सकें। मैं तो यही चाहता हूं कि आप तालिबेइल्म इस

जवाबदेही को समझें और उसके लिये अपने को तैयार कर। एक हो कर मुल्क की हिफ़ाज़त, मुल्क की खिदमत के लिये तत्पर रहें। किसी भी मुल्क को अपने लिये सब से बड़ी ज़रूरत यही होती है कि वह अपनी आज़ादी को बचाये रखे महफूज रखे।

इसके अलावा एक और सवाल है। वह यह है कि आज़ादी के ज़माने में मकान की, कपड़े की, बीमारी की सब से बड़ी मुसीबत तालीम न पाने की या और तरह की जो मुसीबतें हैं उनको दूर करने की हमें कोशिश करनी है। मुल्क की हिफ़ाजत तो आप को करनी ही है पर इस के साथ साथ इस आज़ादी से जितना लाभ आप उठा सकते हे वह भी आपको उठाना चाहिये। आपके भाइयों पर मुसीबतों का आतंक छाया हुआ ह। उनकी तकलीफो को दूर करने के लिये अपने को लगा देना चाहिये। ऐसा किये बिना हमको आज़ादी का पूरा लाभ नहीं मिलेगा। इसलिये मै चाहता हूं कि आप इसे महसूस करें और अपने फ़र्ज को समझें और साथ साथ इस सारे मुल्क की खिदमत आप कैसे कर सकते है, लोगों की गरीबी कैसे दूर कर सकते है, उनकी मुसीबत को दूर कैसे कर सकते है, इन सब बातों के लिये अपने को तैयार करे। यह बहुत बड़ा काम आप के सामने है।

मै और ज्यादा कुछ नही कहना चाहता हूं क्योंकि मैं समझता हूं कि जितना मैं ने कहा है उसी पर आप ध्यान देंगे तो वह काफ़ी होगा। हम चाहते हैं कि हम लोग सब के साथ मिलकर रहें। हम किसी से झगड़ना नहीं चाहते और हमारी जो मौजूदा मुसीबतें हैं उनके हल में लगे रहना चाहते है। लेकिन बावजूद इसके अगर कोई हम पर मुसीबत ढाना चाहेगा तो हम उसका मुकाबला करेगे और हम को उसके लिये तैयार रहना चाहिये।

मै उन भाइयों और बहनों को जिन्होंने डिग्रियां पायी है मुबारकबाद देता हूं और जो डिग्री दर्जे तक नही पहुंचे है उन से मै कहता हूं कि वे इन भाइयों को देखकर अपने को डिग्री हासिल करने के लिये तैयार करें।

अगर युनीवर्सिटी के अफ़सरान मंजूर करें तो मै अपनी तरफ़ से सोने का तमगा पेश करता हूं जो हर साल इस यूनीवर्सिटी के सब से अच्छे तालिबइल्म को दिया जाये।

श्रीनगर में नागरिक अभिनन्दन

श्रीनगर म्युनिसिपैल बोर्ड द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब में ता० १०-११-५० को राष्ट्रपति ने कहा—

श्रीनगर म्युनिसिपैल बोर्ड के चेयरमेन साहब, दूसरे मेम्बरान, भाइयो और बहनो,

जब से मैं इस खूबसूरत मुल्क में पहुंचा हूं उस वक्त से आज तक जिस आदर और मुहब्बत के साथ आप लोगों ने मेरा मिलजुलकर स्वागत किया है उसके

लिये मैं किन लफ़्ज़ों में शुक्रिया अदा करूं । मेरा दिल जानता है कि कितनी मुहब्बत, कितना आदर आप सब ने मुझे दिखलाया है। एड्रेस तो आज आपने दिया मगर कल जब मैं इस शहर से गुज़र रहा था और जब किश्ती पर दरिया से गुज़र रहा था तो उस वक्त जितने चेहरे देखने में आये हर एक चेहरे से वही मुहब्बत नज़र आती थी जिस को आपने अपने खूबसूरत लफ़्ज़ों में अभी अदा किया है।

हिन्दुस्तान का ताल्लुक काश्मीर के साथ और खासकर श्रीनगर के साथ आज का नहीं है। यह ताल्लुक काश्मीर के साथ जब से हिन्दुस्तान और काश्मीर बना तभी से है। मुझे इस बात का फ़ख्र है कि आप का मेरे साथ एक और खास ताल्लुक है। सम्राट अशोक ने श्रीनगर शहर को पहले पहल बसाया था और अशोक उसी जगह से आये थे जिस जगह से मैं आया हूं। यह एक रिश्ता है जिस को मैं और भी कीमती समझता हूं और इसलिये आज बहुत दिनों के अरमान को पूरा होते देखकर मेरा दिल खुशी में समाता नहीं है। आपने ठीक फ़रमाया है कि आपका हिन्दुस्तान के साथ ताल्लुक बहुत गहरा है और इस गहरे ताल्लुक की वजह से आपने फ़ैसला किया है कि आप और हिन्दुस्तान अलग नहीं हो सकते। हम भी इस ताल्लुक को जानते हैं और उसकी गहराई को पहचानते हैं और इसलिये हमारा भी यही इरादा है कि हम और आप अलग न होवें और इसके लिये जो कुछ हम से हो सकेगा हम करते रहेंगे। यद्यपि ग़ैर हमारी और आपकी हजारों तरह की शिकायतें करते हैं और हमारे बीच में हज़ारों तरह से फूट डालने की कोशिश करते रहे हैं और करते रहेंगे तथापि उन्हें कामयाबी नहीं हो सकती क्योंकि आखिर हमारा और आपका मिलना तो दिल का मिलना है और अगर हम और आप अलग नहीं होना चाहेंगे तो कोई हमको अलग नहीं कर सकता है। और किसी बात के मुक़ाबले में इस दिल के मिलान को मैं अधिक कीमती समझता हूं।

आपने हमारे मुल्क की कान्स्टीटुएन्ट एसेम्बली ने जो कान्स्टीट्यूशन बनाया है उसका भी ज़िक्र किया है। यह बात सही है कि हिन्दुस्तान ने जो कान्स्टीट्यूशन अपने लिये तैयार किया है उसमें उसने किसी एक तबके या किसी एक और दूसरे इन्सान के बीच कोई फ़र्क नहीं रखा है। सब के साथ बराबरी के व्यवहार और बराबरी का प्रबन्ध किया है। यह कोई ऐसी बात नहीं है कि जिसको अपनाकर हम ने किसी के साथ एहसान किया है। यह तो इन्सानियत का तकाज़ा है और अपनी खुदगर्ज़ी का भी तकाज़ा है और ज्यादा अपनी खुदगर्ज़ी का तकाज़ा है। हिन्दुस्तान इतना बड़ा मुल्क है और इसमें इतने मज़हब के लोग हैं, इतने प्रकार के धर्म पर चलने वाले लोग बसते हैं कि अगर हर तरीके के लोग आपस में मिल जुल कर नहीं रहेंगे तो हिन्दुस्तान की ज़िन्दगी का बना रहना नामुमकिन हो जायेगा। कोई भी गवर्नमेन्ट हो उसको हमेशा यह मानना होगा कि किसी मज़हब के साथ, किसी एक तबके के साथ वह बेजा दस्तन्दाज़ी नहीं कर सकती है। हम ने फ़ैसला किया है कि हमारा मुल्क ग़ैर

मजहबी स्टेट है। लोग कभी कभी इसके गलत माने लगा लेते हैं। गैर मजहबी स्टेट के माने यह नहीं कि यहां किसी का कोई मजहब नहीं होगा, किसी का कोई धर्म नहीं रहेगा; इसका मतलब तो सिर्फ यह है कि इस मुल्क में जितने धर्म है उनमें किसी धर्म के साथ कोई दस्तन्दाजी नहीं होगी। मैं मानता हूं कि जो लोग एक धर्म के माननेवाले हैं वे अगर अपने धर्म की कीमत करते है तो उनको यह भी मानना चाहिये कि दूसरे भी अपने धर्म की कीमत रखते हैं अपने धर्म की कद्र करते हैं और इसलिये उनको यह भी मानना चाहिये कि ग़ैर मज़हब वालों के साथ दस्तन्दाज़ी सिर्फ ग़ैरवाजिब ही नहीं है बल्कि एक तरह से अपने धर्म के साथ भी ज्यादती है। इस चीज को हम ने माना है और हम ने जो नया संविधान बनाया है उसमें साफ साफ कह दिया है कि हिन्दुस्तान मे जितने लोग बसते हैं सब एक तरह से अपना तौर तरीका बरतते जायेंगे और किसी को किसी खास मज़हब की वजह से न बड़ा समझा जायेगा और न किसी को छोटा और किसी भी बात में ऐसा तरीका अख्तियार नहीं किया जायेगा जिससे एक धर्म को दूसरे के मुकाबले में भला या बुरा समझा जा सके। इसको हमने अपने कायदे में मान लिया है और हम ऐसा करते भी रहेंगे और ईश्वर चाहेगा तो जैसे जैसे दिन बीतेंगे हम इसको और ज़्यादा बरतते जायेंगे और कभी किसी को इस बात का मौका नहीं देंगे कि अंगुली उठाकर दिखलाये और कहे कि हिन्दुस्तान ने किसी खास मज़हब के साथ ज़्यादती की है। यही हमारा इरादा है जिसको अपने दस्तूर में, कान्स्टीट्यूशन में हमने साफ तौर से रखा है।

इसके अतिरिक्त उसमें एक और चीज़ भी हमने रखी है। उसमें हमने साफ ज़ाहिर किया है कि हिन्दुस्तान के अन्दर जम्हूरी सल्तनत होगी और सभी धर्म के लोगों को उस सल्तनत को चलाने में हिस्सा लेने का पूरा अख्तियार और मौका होगा। इस चीज को इस तरीके से हम ने रखा है कि जितने बालिग़ हैं यानी जिनकी उम्र २१ साल से ज़्यादा है उनको हक होगा कि अपने वे नुमाइन्दे चुनें जिनके ज़रिये से वे अपना निज़ाम चलाना चाहते हैं। इसके लिये सारे मुल्क में जमातें होंगी। अलग अलग सूबों में जमात होगी। सब के लिये अलग २ कायदा बना है। मुझे यह सुनकर बड़ी खुशी हुई है कि आप लोग भी कान्स्टीटूएन्ट एसेम्बली बुलाकर कान्स्टीट्यूशन बनाना चाहते हैं। जब यह काम पूरा हो जायेगा तो आपके साथ हमारा सम्बन्ध और भी ज्यादा गहरा बन जायेगा। हमने अपना कान्स्टी-ट्यूशन और तरीका अख्तियार करके सारी दुनियां के सामने रख दिया है कि हम अपने यहां किसी एक फ़िरके, किसी एक आदमी की सल्तनत नहीं रखेंगे और हमारी सल्तनत सारी प्रजा सारी अवाम की सल्तनत होगी और उसमें सब का हिस्सा होगा। उससे जो फायदा मिलनेवाला है उसके हकदार सभी होंगे।

इस सिलसिले में मैं आप से यह भी कहूंगा कि चन्द महीनों के बाद हिन्दुस्तान में पहला चुनाव होगा। यह चुनाव इतना बड़ा होगा कि आज तक दुनियां की तवारीख में कहीं भी इतना

बड़ा चुनाव नहीं हुआ। चुनाव की तैयारी हो रही है। १८ करोड़ वोट देने वाले होंगे। १८ करोड़ वोट देना और सब को इकट्ठा करना और क़रीब क़रीब ४००० नुमाइन्दों को चुनवाना और उस मुतल्लिक सब काम करवाना कोई छोटा काम नहीं है। चीन के सिवाय किसी मुल्क की आबादी १८ करोड़ भी नहीं है। इतने वोटर तो और कही हो ही कहां सकते हैं। हमारा मुल्क बहुत बड़ा है। उसी का यह नतीजा है कि यहां इतने वोट देने वाले हैं। हमने जो दस्तूर अख़्तियार किया है उस में यह तरीक़ा रखा है कि सब को हम मौक़ा दें कि सब मिल जुल कर ही किसी सवाल को तय करें। मैं आप से यही कहना चाहता हूं कि आप का यह ख़याल कि हिन्दुस्तान आप की बात को ठीक समझता है और आप हिन्दुस्तान को समझ सकते हैं अपनी जगह पर बिल्कुल सही है और आप को मै यह ऐतबार दिलाना चाहता हूं और आप भरोसा रखें कि जिस चीज़ की आप को ज़रूरत होगी उस को पूरा करने के लिये हिन्दुस्तान आप की मदद के लिये तैयार रहेगा।

म्युनिसिपैलिटी का काम तो लोगों की खिदमत का काम है। बहुत सी मुश्किले आप के सामने ह और मुश्किलें आती ही रहती है लेकिन उन के बावजूद भी आप जो कुछ कर रहे है वह बड़ा काम है। आप ऐसी जगह पर है जहां सारी दुनियां के लोग इस ग़रज़ से आते है कि यहां की ख़ूबसूरती देखें और यहां की कारीगरी को देखें। ऐसी जगह की म्युनिसिपैलिटी की जवाब-देही और भी अधिक होती है। मुझे इस बात की बड़ी ख़ुशी है कि आप इस जवाबदेही को समझ रहे हैं और गवर्नमेन्ट भी इस काम में आप की मदद कर रही है। मुझे पूरा भरोसा है कि वह हमेशा मदद देती रहेगी। यह मुल्क ऐसा सुन्दर है कि इस का मुक़ाबला करनेवाली हिन्दुस्तान मे तो कोई और जगह नही है, दूसरी जगहों की बात मै नही जानता क्यों कि मै बाहर ज़्यादा नही गया हूं। मगर यहां एक चीज़ और है। सुन्दरता के साथ साथ जो यहां हुनर है, जो कारीगरी मौजूद है वह भी एक ऐसी चीज़ है जिस के मुकाबले का हुनर दूसरी जगहों में कम देखने में आता है। मै चाहता हूं कि आप अपनी पुरानी कारीगरी को सिर्फ़ जिन्दा ही न रखे, उसे और भी तरक्क़ी दें। आजकल बडे बडे कारख़ाने खुलते है, उन में बहुत सी चीज़ें तैयार होती है। अक्सर लोग बडी बड़ी चीज़ों को देखकर मोहित हो जाते है। इन सुन्दर चीजों को वे भूलते जाते है। दस्तकारी का ऐसा काम है जिस की क़ीमत आज कल हम लोग कम लगाने लगे हैं। ये चीज़ें कम तादाद मे तैयार होती है। मगर मै यह चाहता हू कि आप इस दस्तकारी को इस मुल्क में इस तरह जारी रखें कि यह दुनिया के सामने कायम रह जाये। एक दिन आयेगा जब लोग इस की और भी ज़्यादा क़दर करेंगे और यह चीज़ सिर्फ़ हिन्दुस्तान तक ही नही और और मुल्कों में जैसे पहुंचती रही है वैसे ही पहुचती रहेगी और लोग इस की ख़ूबसूरती से फ़ायदा उठाते रहेंगे और आप को भी फ़ायदा होता रहेगा।

मै आप सब भाई और बहनों का तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूं कि आप ने मेरा स्वागत किया। आप की मुहब्बत तो आप की आंखों और चेहरे से टपक रही है। उस के लिये बहुत बहुत शुक्रिया।

कृषिक सांख्यकीय भारतीय संस्था

*कृषिक सांख्यकीय भारतीय संस्था के चौथे वार्षिक अधिवेशन का उद्घाटन करते समय राष्ट्रपतिजी ने ता० १४ नवम्बर को नई दिल्ली में कहा—

सरदार करतार सिंह, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात का संतोष है कि मैं इस सम्मेलन में भाग ले सका। इस संस्था के आरम्भ से ही इस के कार्य में मैं दिलचस्पी लेता रहा हूं और उस से भलीभांति परिचित हूं और संस्था के विकास के साथ साथ मेरी दिलचस्पी भी इस में बढ़ती गई है। मुझे इस बात का हर्ष है कि अपन अस्तित्व के पिछले चार सालों में इस ने काफी प्रगति की है और साधारणतया इस की उपयोगिता और सेवाओं को लोगों ने माना है। मुझे यह जान कर भी हर्ष है कि आप की पत्रिका में आप लोगों की जो कृतियां छपी हे उन का केवल इसी देश में आदर नहीं हुआ है बरन् विदेशों मे भी आदर हुआ है। यह वास्तव मे बडे संतोष की बात है कि जिन लोगों को कृषि में दिलचस्पी है वे लोग इस संस्था के कार्य में गहरी दिलचस्पी लेते है।

हम लोग सब जानते हे कि योजना बनाना सही आंकड़ों पर न्यूनाधिक निर्भर करता है और जब हमें भारत जैसे देश, जिस में अनेक प्रकार की भूमि है और अनेक प्रकार के लोग रहते है, उस देश पर विचार करना पड़ता है तो हमें ऐसे सांख्यकीय आंकड़ों को जो हमें भविष्य के लिये योजना बनाने के हेतु सही आंकड़ों का काम देंगे एकत्रित करने में बहुत ही होशियारी से काम लेना होता है। पिछले वर्ष कृषिक आंकड़ों के कुछ पहलुओं की ओर मैं ने आप का ध्यान दिलाया था। मै ने कहा था कि कृषिक पैदावार और विशेषतया गन्ने की फ़सल की जिस पर कि गन्ने की कीमत मुकर्रर करना निर्भर करता है, कीमत संबन्धी आंकड़ों का मै स्वागत करूंगा। और सरकार को कीमतें तो तब तक मुकर्रर करनी होंगी जब तक कि नियन्त्रण लागू रहता है। इसी प्रकार अन्य फ़सलों के लिये भी कृषिक आंकड़ों की ज़रूरत है।

नमूने के तौर पर जगह जगह सर्वे करने के तरीके का आप विकास कर रहे है और मालूम हुआ है कि आप ऐसी योजना बना सकने में समर्थ हो गये हैं जिससे आप को सही स्थिति का कुछ ज्ञान हो जाता है और जिस की बुनियाद पर आप सही निष्कर्ष निकाल सकते हे। आप इस तरीके से दो जिन्सों की फसल का ही अर्थात् चावल और गेहूं का ही अन्दाज़ा लगाते हे। मगर मेरी ऐसी भावना है कि तब तक कृषिक पैदावार सम्बंधी हमारी जानकारी पूरी नही होगी जब तक कि हम इस तरीके से सब जिन्सों की फ़सल का अन्दाज़ा नहीं लगाते। आप लोगों ने अपने काम को पैदावारसंबन्धी आंकड़ों के इकट्ठा करने तक ही बहुत कुछ सीमित रखा है। और आपने खेती में लगे हुए क्षेत्र के बारे में ऐसा काम नहीं किया है। अन्न की हमारी आवश्यकताओं और प्राप्य अन्न की मात्रा का सही अनुमान लगाने के लिये इस जानकारी की भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि पैदावार सम्बन्धी जानकारी की। क्योंकि जब तक भिन्न प्रकार के फ़सलों में लगे हुए क्षेत्र का हम को ठीक ज्ञान नहीं होता है तब तक इन सब क्षेत्रों में होने वाली पैदावार के सही आंकड़े भी हम पता नहीं चला सकते। अतः यह संतोष की बात है कि

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

सरकार ने ऐसी योजना बना ली है जिस के अनुसार आप इस प्रकार के आंकड़े इकट्ठा करने में समर्थ होंगे ।

खेती में लगे हुए क्षेत्र के सम्बन्ध में जानकारी एकत्रित करने में पर्याप्त कठिनाई है । देश में ऐसे अनेक प्रदेश हैं जहां न्यूनाधिक भूमापन नहीं हुआ है । हमारे यहां भमि-कर प्रशासन की ऐसी भी व्यवस्था है जिस में गांव का पटवारी ऐसी जानकारी इकट्ठा करता है । उस के बारे में साधरणतया यह अपेक्षा होती है कि वह ठीक होगी, यदि वह अपना काम ईमानदारी और कार्यदक्षता से करे । किन्तु उस की देखभाल ज़रूरी है और मै समझता हूं कि चाहे यह देखभाल उतनी अच्छी न हो जितनी कि हमें चाहिये तो भी कुछ न कुछ देखभाल करनी ज़रूर है । जो आंकड़े गांव के पटवारी द्वारा एकत्रित किये गये है उन की सत्यता की जांच के लिये जहां तहां नमूने के तौर पर परीक्षा का तरीक़ा काम में लाने से काफी सहायता मिल सकती है और मै चाहता हूं कि यह रीति उस जानकारी को अधिक से अधिक, जितनी कि वह होनी चाहिये, सही बनाने के लिये काम में लायी जाये ।

दूसरे प्रकार के भी प्रदेश है जहां यह काम अधिक कठिन है । ये वे क्षेत्र हैं जिन का ब्यौरेवार भूमापन हो चुका है किन्तु कोई ऐसा इन्तज़ाम नहीं है कि बाकी जानकारी इकट्ठी की जा सके यानी वहां इस काम को करने के लिये गांव के पटवारी नहीं है । स्वभावतः यह काम अधिक कठिन है और मुझे यह मालूम नहीं है कि यह जानकारी इकट्ठी करने के लिये इस प्रकार का ग्राम संगठन जैसा कि अन्य प्रदेशों में है वहां कब हो सकेगा ।

किन्तु सब से अधिक कठिनाई उन प्रदेशों में है जहां न भूमापन हुआ है और न जहां इस किस्म का कोई इन्तज़ाम है । इन प्रदेशों का क्षेत्र कुछ कम नही है । क्योंकि मेरा विचार है कि उन राज्यों मे से जो विलीन हो गये है बहुत सों में न तो इस प्रकार का इन्तज़ाम है और न इस प्रकार का भूमापन हुआ है । खाद्य सम्बन्धी हमारी सांख्यकीय जानकारी तब तक पूरी नहीं होगी जब तक कि हम क्षेत्र और पैदावार दोनों के ही सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त नही करते और वह भी सारे देश भर के लिये प्राप्त नही करते ।

समस्या का एक दूसरा पहलू भी है जिस की जांच करना ज़रूरी है । कुछ वर्षों से हम इस बात पर ज़ोर देते आ रहे है कि अन्न की उपज बढ़ाई जाये और इस आन्दोलन के चलाने मे हम काफ़ी रुपये भी खर्च करते रहे है । इस आन्दोलन के कुछ फल भी हुए है किन्तु हम यह नहीं कह सकते कि वे फल ठीक ठीक क्या हैं । इन फ़लों का निश्चय यह अन्दाज़ा लगा कर किया जाता है कि किसी खास तरीके के प्रयोग से पैदावार में कितनी वृद्धि होने की संभावना है । उदाहरणार्थ अच्छे बीजों या अच्छे खाद या अधिक सिंचाई या खेती के बेहतर तरीकों के अपनाने से कितनी पैदावार बढ़ने की संभावना है । मै समझता हूं कि आज कल इस बात का पता चलाने के लिये कि पैदा-वार कितनी बढ़ी है खेत की संख्या को उतने मनों की संख्या से गुणा कर दिया जाता है जितनों की वहां पैदा होने की उम्मीद है । मैं नहीं कह सकता कि यह

तरीका कहां तक ठीक है। क्योंकि अच्छे तरीकों के प्रयोग का फल कई बातों पर निर्भर करता है जिस में काम करने वालों की योग्यता या अयोग्यता भी बहुत महत्वपूर्ण बात है। हम नहीं जानते कि कोई किसान उसे दिये गये अच्छे बीज का कहां तक सही सही इस्तेमाल करता है या कहां तक उस का ठीक मात्रा में प्रयोग करता है या कहां तक उस को वैसी भूमि में प्रयोग करता है जो उस के लिये सब से अच्छी है अथवा कहां तक अच्छे खाद को वह सारे खेत में फैलाता है और उस का ठीक ठीक प्रयोग करता है। इस बात के लिये कि सरकार बढ़ी हुई पैदावार का ठीक ठीक अनुमान लगा सके यह ज़रूरी है कि जो वास्तविक पैदावार हुई है उस का ठीक पता चलाया जाये। मै यह नहीं समझता कि यह संभव है कि हर किसान से, पूछा जाये कि वह पहले क्या पैदा करता था और अब क्या पैदा करता है और इन दोनों में जो फर्क हो उस को अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन का फल मान लिया जाये। मै नही समझता कि सरकार के लिये ऐसा करना संभव होगा। किन्तु मुझे विश्वास है कि अपने सांख्यकी तरीकों से आप इस आन्दोलन के परिणामों का उस से अच्छा अनुमान लगाने में सरकार की सहायता कर सकेंगे जितना कि वह अपने आप लगा सकती है। मै जानता हूं कि कुछ मामलों में इस साधारण गुणा की रीति से हम को बहुत बुरी तरह से ग़लतफहमी हुई है। इस साधारण तरीके पर चल कर हमने देश के कुछ हिस्सों के बारे में यह नतीजा निकाल लिया कि वहां जो अन्न की कमी थी उस को पूरा करने के लिये हम ने पर्याप्त अन्न पैदा कर लिया और जब यह निष्कर्ष ग़लत साबित हुआ तो मुझे कोई आश्चर्य नही हुआ क्योंकि वहा यह साधारण गुणा का तरीका काम में लाया गया था और यह तो हमेशा ठीक नही हो सकता। अब आप का यह काम है कि आप सही नतीजों पर पहुंचने के लिये सरकार को आप आवश्यक आंकड़े दें।

एक और बात है जिस की ओर मै आप का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं और वह है भूमि का एक फसल मे लगाने के बजाय दूसरी क़िस्म की फसल में लगाया जाना। हमारे देश में अन्न की समस्या तो है ही उस के साथ ही कुछ खास आवश्यकताओं को पूरा करने की समस्या अर्थात् रूई और जूट की आवश्यकता को पूरा करने की समस्या भी हमारे सामने है। जिन जिन प्रदेशो मे मै हाल मे गया हू मैने यह सुना है कि अन्न की अधिक कमी का कारण भूमि को धान की फसल मे न लगा कर पटसन की फसल में लगाया गया है। मै यह नही कह सकता कि बात कहां तक ठीक है। मैं यह भी नहीं जानता कि उस भूमि के संबंध में जिस में धान की खेती के बजाय पटसन की खेती की जाने लगी है अथवा जिस में रूई के बजाय खाद्य वस्तुएं उपजायी जाने लगी है सही आंकड़े ज्ञात है अथवा नहीं। किन्तु यदि ठीक आंकड़े मालूम भी नही हों तो भी यह बात ज़रूरी नही है कि जो कमी आज कल अन्न में हुई है वह अवश्यमेव भूमि के इसी तरीके से दूसरी किस्म की फसलों में लगाये जाने के कारण हुई है। लड़ाई के दिनों में भूमि के काफी भाग में रूई की खेती बन्द कर दी गई यह बात खास तौर से बम्बई और मध्य प्रदेश में हुई थी पर मै यह नहीं जानता कि ऐसा करने से अन्न की पैदावार में उतनी वृद्धि

हुई थी या नहीं जितनी कि अपेक्षा की जा सकती थी। इसी प्रकार आज कल जब कि अधिक रूई की अधिक पटसन की खेती की जाने के लिये बहुत कोशिश की जा रही है हमें यह देखना है कि इस बात से हमारे अन्न की पैदावार पर वस्तुतः क्या असर पड़ता है। यह दूसरा सवाल है कि चावल के बजाय पटसन पैदा करना क्या अधिक लाभदायक नहीं है ? हमारा सवाल तो इतना ही है कि उस प्रकार भूमि को नई किस्म की फ़सल में लगाने से हमारे अन्न की पैदावार पर क्या असर पड़ता है । इस लिये सांख्यकीय तरीकों को काम में लाकर हमें निष्कर्ष निकालने में होशियारी बरतनी है। क्योंकि उन्हीं से सरकार यह अनुमान लगा सकेगी कि विभिन्न प्रकार से भूमि को एक फ़सल से दूसरी किस्म की फ़सल में लगाने का क्या फल होता है।

दूसरा प्रश्न जिस पर आप के विचार की ज़रूरत है यह है कि जोत के एकत्रीकरण के द्वारा खेती में कितना सुधार किया जा सकता है। उदाहरणार्थ इस बात की साधारणतया अपेक्षा की जा सकती है कि जिस की खेती का क्षेत्र ज़्यादा होगा उस के यहां फ़ी एकड़ ज़्यादा पैदावार होगी। मै इस बारे में यह नहीं जानता कि सच्चाई क्या है किन्तु मुझे बताया गया है कि इस सम्बन्ध में जो भी आंकड़े प्राप्त है उन से यह नतीजा नहीं निकलता अर्थात् यह बात आवश्यक नही कि खेत के क्षेत्र को बढ़ाने से ज़रूरी तौर से उस की पैदावार भी बढ़ जाये। बड़े पैमाने पर खेती करने का क्या फल होगा इस बात को आप को सांख्यकीय तरीके से निर्णीत करना होगा और इसी तरीके से यह भी निर्णय करना होगा कि जोत के क्षेत्र को बढ़ाने से फ़ी एकड़ पदावार बढ़ती है या नहीं। मै समझता हूं कि इसी प्रकार वैज्ञानिकों में इस बात पर भी मतभेद है कि ट्रेक्टरों या ऐसे अन्य यन्त्रों द्वारा गहरी जुताई करने की रीति का क्या फल होता है । कुछ का विचार तो यह है कि इस प्रकार की गहरी जुताई और सुधारी हुई खेती से पैदावार ज़्यादा होती है। और कुछ अन्य का विचार है कि इस तरीके से चाहे आरम्भ में पैदावार कुछ दिनों तक ज़्यादा रहे किन्तु अन्ततोगत्वा इससे पृथ्वी का कस निकल जायेगा और पहली मंज़िल ही आखिरी मंज़िल साबित होगी। हमें इस सवाल के इस पहलू पर भी विचार करना है और यह हो सकता है कि हमारा कृषि विभाग सांख्य-कों की सहायता से इस प्रकार की खेती के नवीन तरीकों के देरपा नतीजों के बारे में कुछ फ़ैसला कर सके और यह पता चला सके कि क्या पैदावार सचमुच बढ़ती है या अन्त में जा कर घट जाती है।

कृषि के ये विभिन्न पहलू ऐसे प्रश्न है जिन के बारे में सांख्यक अच्छा खासा काम कर सकते है । अतः जो काम आप की संस्था करती रही है उस का मैं स्वागत करता हूं और मुझे ऐसी आशा है कि सरकार और अन्य संबन्धित लोगों से इसे अधिकाधिक प्रोत्साहन मिलेगा और जैसे जैसे समय व्यतीत होगा यह अधिका-धिक अच्छी सेवा कर सकेगी। आप के लिये जो महान् काम पड़ा हुआ है उस के करने में आप सफल हों ऐसी मेरी शुभकामना है।

प्रेसिडेण्ट स्टेट रिक्रियेशन क्लब

प्रेसिडेण्ट स्टेट रिक्रियेशन क्लब के वार्षिक समारोह के अवसर पर राष्ट्रपति ने अपने भाषण में कहा —

कर्नल चटर्जी साहब, बहनो, भाइयो और बच्चो,

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आज मैं यहां आ सका और थोड़ा खेल भी देख सका। इस तरह के क्लब की जरुरत बहुत करके ऐसे लोगों के लिये हुआ करती है जिनको दिन रात काम करना पड़ता है। जैसा आपने कहा कि यहां बहुत लोगों को सुबह, शाम और रात में काम करना पड़ता है। ऐसे लोगों को ख़ास करके कोई न कोई मौक़ा मिलना चाहिये जिससे थोड़ी देर के लिये भी वे अपने को काम से अलग रख कर अपना दिल बहला सकें। जब तक ऐसा कोई मौक़ा नही मिलता तब तक कोई भी अपने को हमेशा स्वस्थ नही रख सकता। सेहत के लिये यह ज़रूरी है कि कुछ न कुछ दिल बहलाव का मौक़ा हर आदमी को मिला करे। मुझे यह जान कर खुशी हुई कि यहां सिर्फ दिल बहलाव ही नही होता बल्कि साथ साथ कुछ खेल भी ऐसा होता है जिससे काफी मेहनत हो जाती है। आदमी के लिये मेहनत करना ज़रूरी है और ख़ास करके ऐसे लोगों के लिये जिन्हें दफ्तर में काम करना पड़ता है खेल ऐसा होना चाहिये कि जिससे उनकी थोड़ी वर्जिश भी हो जाया करे। मैं ने यहां लोगों को फुटबाल के मैच में शरीक़ होते देखा। हो सकता है कि वे लोग यही के रहे हों। अब यह जान कर कि हाकी का खेल भी यहां शुरू हुआ है मुझे बड़ी खुशी हुई है। मैं तो यह उम्मीद रखता हूं कि आप खेल में आगे बढ़ेंगे और दूसरी दूसरी टीमों से मुक़ाबला करने पर जो कप मिलता है या दूसरी चीजें मिलती हैं उनको आप हासिल कर सकेंगे और उससे आपका दिल और भी बढ़ेगा।

अभी एक भाई ने कुछ तमाशे दिखलाये और बच्चों ने देखे और वे बहुत खुश हुए, उनके साथ साथ मैं भी देख रहा था और खुश हो रहा था। मेरा विचार है कि बच्चों के लिये भी कुछ ऐसा खेल रहे जिसमें उनका दिल लगे और खेल ऐसा हो जिसमें उसके साथ साथ वे कुछ सीख भी सके। यह ऐसी बात है कि जिसमें सब को भाग लेना चाहिये और फायदा उठाना चाहिये। जिस तरह आपने आहिस्ता आहिस्ता काम बढ़ाया है उसी तरह से आप लोग मिल जुल कर इसे और आगे बढ़ायें और मुझ से जो कुछ आपकी मदद हो सकेगी वह मैं हमेशा करने के लिये तैयार रहूंगा।

मैं चाहता हूं कि सिर्फ़ ऊपर के दर्जे के लोगों के लिये ही नहीं बल्कि छोटे से छोटे काम में लगे हुए लोगों के लिये भी यह इन्तज़ाम होना चाहिये। काम बड़ा हो या छोटा पर आदमी तो आदमी ही रहता है। इस लिये इस बात की कोई वजह नहीं कि काम के छोटे बड़े होने के आधार पर लोग एक दूसरे से अलग रहें। चाहे किसी का काम बड़ा हो या छोटा उसे अपना काम तो करना ही है क्योकि ऐसा करना उसका फ़र्ज है। इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि हर एक आदमी को अपना फ़र्ज तो पूरा करना ही चाहिये। पर जब काम खतम हो जाये तो सब भाई एक साथ मिलें जुलें, खेलें, कूदें, आपस में मन बहलाव करें और जो खेल-तमाशा हो उनमें शरीक़ हों तो अच्छा है। मैं चाहता हूं कि आपका यह काम आगे बढ़े। जो लोग अभी तक

किसी वजह से, चाहे पैसे की कमी से, या वक्त की कमी से या उनका इसमें दिल नहीं लगता हो इस वजह से इसमें शरीक़ नहीं हो सके हैं मै उम्मीद करता हूं कि वे भी आगे शरीक़ होंगे और आपका काम दिन ब दिन तरक्क़ी करता जायेगा।

इन बच्चों से मै उम्मीद रखता हूं कि जो कुछ उन्होने देखा है उससे कुछ सीखेंगे। खेल सिर्फ़ खेल ही नहीं है, उससे कुछ सीखा भी जा सकता है। अभी जो खेल दिखलाया गया उससे यह सीखा जा सकता है कि किस तरह से दूसरे को धोखा दिया जाये। पर यह खेल धोखा देने की शिक्षा के बजाय धोखे से बचने की शिक्षा देता है। मै चाहता हूं कि ऐसे खेल से तुम लोग यह नहीं सीखो कि दूसरे को कैसे धोखा दे सकते हो बल्कि यह सीखो कि दूसरे के धोखे से तुम कैसे बच सकते हो। आफ़िस के लोगों से भी मै यही कहूंगा कि वे भी यही सीखें कि धोखे से कैसे बचा जा सकता है। कहीं अगर वे इसी तरीके से धोखा देने लगें तो सब काम ही गड़बड़ हो जायेगा। मैं यह चाहता हूं कि जो तमाशा हो, जो खेल हो उसमें सभी को शरीक़ होना चाहिये। आफिस के लोग भी इस बात को समझें और एक दूसरे के साथ मोहब्बत रखें।

मै उम्मीद करता हूं कि आप इस काम को बढ़ायेंगे और इसके सम्बन्ध में मुझ से आप में से जो मिलना चाहे वे बगैर किसी किस्म की हिचकिचाहट के मुझ से मिल सकते है और जो कोई मुझ से मिलना चाहे उनके लिये मेरा दरवाजा खुला है। कोई ऐसा न समझें कि मै ऐसी जगह पर हूं कि आप में से कोई मेरे पास नही आ सकता है; मिल नही सकता। बडे और छोटे काम का तो कायदा होता है। जो क़ायदा है वह तो अपनी जगह पर है ही। जो काम होगा कायदे से काम होगा। पर इसकी वजह से एक दूसरे से मिलने में कोई उज्र नही होना चाहिये। मै चाहता हूं कि आप इस काम से नफ़ा उठायें और जब कभी मौक़ा आवे तो मुझ से मिलें, मुझे बुलायें और जहां तक मुझ से हो सकेगा मै आपका साथ दूंगा।

गुरु नानक जन्म दिवस

गुरु नानक देव के जन्म दिन पर तारीख़ २३-११-५० को चैम्सफोर्ड क्लब में राष्ट्रपति जी ने अपने भाषण मे कहा—

यह हमारी बड़ी खुशकिस्मती है कि इन दिनों हम इस बात को सोचने लगे है कि जो कुछ गुरु नानक ने हमें सिखाया उसको हम फिर से एक बार याद करें क्यों कि इस वक्त उस चीज़ की ज़रूरत है और ख़ास करके इस मुल्क में इस बात की ज़रूरत है कि यहां जितने भी लोग बसते हैं चाहे उनका धर्म कुछ भी क्यों न हो सब एक साथ मिल कर रहें; एक दूसरे के साथ मुहब्बत का बर्ताव करें और एक दूसरे पर भरोसा करें। गुरु नानक की सब से बड़ी शिक्षा यही थी। आज भी उनके शब्द हिन्दुओं और सिखों के घरों में मिल सकते हैं। गरचे कुछ लोग आज सिखों को हिन्दुओं से अलग समझते है पर मैं कितने ही हिन्दुओं को जानता हूं जिनके यहां आज भी गुरु ग्रन्थ साहब के कुछ हिस्सों का पाठ उसी तरह से होता है जैसे कि सिखों के घरों में ग्रन्थ साहब का पाठ दिन प्रतिदिन किया जाता है। हिन्दुओं में मै कई ऐसे मित्रों को जानता हूं जो गीता का

पाठ नहीं करते, रामायण का पाठ नहीं करते मगर ग्रन्थ साहब का पाठ करते हैं। ये लोग भी वैसे ही हिन्दू है जैसे और। ये भी वैसे ही चुस्त हिन्दू है जैसे कि वे जो गीता और रामायण का पाठ किया करते है। इस लिये मै चाहता हू कि जो अन्दर की चीज़ है उस को लोग समझें और जैसा मौलाना साहब ने फ़रमाया, एक दूसरे के साथ मिल कर रहें, एक दूसरे से मुहब्बत करें और ऊपर की चीजों को नज़र अन्दाज़ करके जो अन्दर की हक़ीक़त है उस हक़ीक़त तक पहुंचें। अगर हम आज भी उस हक़ीक़त को जानने को तैयार हो जायें तो सारा झगड़ा ख़तम हो जायेगा और हम लोग मिल जुल कर रह सकेंगे। ऐसे मौक़े का मतलब होता है कि इस सचाई की याद की जाये। इस सत्य की ओर संकेत करना आवश्यक भी है क्यों कि बहुधा लोग इसको भूल जाया करते हैं। इसलिये उनको याद दिलाने की ज़रूरत पड़ती है। अगर याद दिला कर आप कुछ लोगों के दिल में भी उस रोशनी को जगा दें तो मैं समझूगा कि आपने जो कुछ किया है वह सब सफल हुआ है।

आलइंडिया फूड काउन्सिल की प्रदर्शनी

तारीख १-१२-५० को साढ़े चार बजे संध्या को नयी दिल्ली म्यूनिसिपिल टाउन हाल में आल इण्डिया वीमेन्स फ़ूड कांउन्सिल की प्रदर्शनी का उद्घाटन करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

खुराक का मामला ऐसा है कि जिसमें हर आदमी को दिलचस्पी होती है और होनी चाहिये क्योकि कोई भी बग़ैर खुराक़ के नहीं रह सकता है। गरचे हमारा देश कृषि प्रधान कहा जाता है लेकिन आजकल हमारी ऐसी बदक़िस्मती है कि हम अपने खाने लायक अन्न भी अपने देश मे पैदा नही कर पा रहे है और हमें आज दूसरे देशों से सौ सवासौ करोड़ रुपये का अन्न मगाना पड रहा है। इस वर्ष हालत और भी अधिक ख़राब है क्यों कि पहले बाढ़ और अति-वृष्टि ने और उसके बाद सूखा और अनावृष्टि दोनों ने मिल कर हमारे यहां की फसल को बिल्कुल बर्बाद कर दिया है और भावी फ़सल को भी बहुत ज्यादा नुक़सान किया है। इसलिये यह हम मे से हर एक का फर्ज है कि जहां तक हो सके अन्न के संकट में सहायता करे और चाहे अपने देश का अन्न हो चाहे विदेशों से आया हुआ हो आपस में बांट कर अपना काम चला ले। इसलिये जब मुझ से कहा गया कि स्त्रियों की ऐसी संस्था बननी चाहिये जो लोगों में नये प्रकार के खाने का प्रचार करें और जो घर घर में यह बताये कि उस अन्न को जो आजकल बर्बाद हो जाता है कैसे काम में लिया जाय तो मै ने उसी दिन इस बात को मंजूर कर लिया क्यों कि ऐसी संस्था से हमारा बहुत काम चल सकता है। मुझे इस बात की खुशी है कि पिछले कई महीनों में इस संस्था ने पर्याप्त तरक्क़ी कर ली है।

अभी आज आप यह प्रदर्शनी देखने आये है। मै समझता हूं कि इस प्रदर्शनी में यह दिखाने की कोशिश की गयी है कि किस तरह कम से कम खर्चे में खाने की चीज़ें तैयार की जा सकती हैं और वे भी ऐसी चीज़ों से जो आटा, गेहूं, चावल आदि चीज़ों से जिन पर गवर्नमेंट का नियं-

श्रण है भिन्न हैं। यहां के लोगों के लिये उन चीज़ों से आप स्वादिष्ट और पुष्टकर भोजन तैयार कर सकते हैं । और सब को सन्तुष्ट कर सकते हैं। यह एक बड़ी चीज़ है। जब आप लोग इसे देखेंगे तो उससे बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

अभी एक बहन ने यह कहा कि घरों में जो खाने पीन की चीज़ों का नुकसान होता है या दूसरे तरह से जो अन्न बहुधा ख़राब हो जाता है उसे हम बचायें। हम लोगों के लिये ज़रूरी है कि इस प्रकार खाने पीने की चीज़ों को व्यर्थ ख़राब न करके उनको बचावें। यह भी कहा गया है कि हम अपनी खाने की आदत को भी बदलें और उन्ही खाने की चीज़ों से सन्तुष्ट हों जो आज कल उपलब्ध हैं। यदि ऐसा किया गया तो मैं समझता हूं कि हम अन्न का संकट आसानी से दूर कर सकते है। यहां जो अन्न की कमी है वह इतनी बड़ी नही है कि जिसे हम दूर न कर सकें। यदि इन बातों को हम मान लें तो यह कमी हम आसानी से दूर कर सकते है। मुझे बताया गया है कि हमारे यहां १० फ़ी सदी अनाज की कमी है यानी जहां हमारे पास ११ मन होना चाहिये वहां १० मन है। अगर देश के किसान कोशिश करें तो उनके लिये १० मन के बदले ११ मन पैदा कर लेना कोई बड़ी बात नही है। यह तो आसानी से किया जा सकता है। जो किसान हैं, खेतों में काम करते हैं अगर वे ध्यान दें तो वे १ मन की कमी एक फ़सल में ही दूर कर सकते है। एक तो यह तरीका है।

यह कमी दूसरे तरीके से भी दूर की जा सकती है। अभी जो अन्न हमारे देश मे पैदा होता है उस का बहुत बड़ा भाग बर्बाद हो जाता है। वह कीडों के खाने से, घुन लग जाने से, खेतो में फसल गिर जाने से तथा चूहो के खाने से बर्बाद होता है। इस तरह से इस देश मे लाखों मन अनाज बर्बाद हो जाता है। अगर इसको बचा लिया जाये तो भी कमी दूर हो सकती है। अगर घर घर मे जो अन्न बर्बाद हो जाता है उस पर हम ध्यान दें और चावल का एक दाना भी, रोटी का एक टुकड़ा भी बर्बाद नही होने दे और घर घर मे इस बात का ख्याल रखे कि उतना ही परोसा जाये जितना लोग खाये और खाने से एक दाना भी अधिक न परोसा जाये तो इस तरह से बहुत कुछ बचा लिया जा सकता है। मेरा तो अपना अनुमान है कि लोग जिस वक्त खाना खाते है उस वक्त काफी खाना ख़राब हो जाता है और खास करके दावतों और भोजों में ऐसा होता है। ऐसे अवसर पर एक आदमी के सामने चार आदमी का खाना रख दिया जाता है। ऐसा न करके भी हमारे लोग अन्न की कमी को दूर कर सकते है। खाने मे भी कही कही हमारे देश के लोग चावल खाते है, कही रोटी खाते हैं और कही चावल रोटी दोनों मिला कर खाते हैं। जहां के लोग चावल खाते है अगर उनको गेहूं दिया जाता है तो उनको कष्ट होता है, जहां के लोग गेहूं खाने वाले है अगर उन को चावल दिया जाता है तो उनको कष्ट होता है। जब देश मे पूरा अन्न नहीं होता और बाहर से अन्न मंगाना पड़ता है तो खाने की इन आदतों में भी कुछ फ़र्क़ आना ज़रूरी हो गया है क्यों कि हमें सारे देश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना है। आजकल जो अन्न मिलता है उसे हम आपस में बांट कर खाना पड़ेगा।

इसके अलावा हम अन्य चीजें पैदा कर सकते है जो हमारे अन्न की कमी को दूर कर सकती है। आजकल हम अन्न के ऊपर ही रहते हैं। पर पेट अन्न से ही नहीं भरता है पेट भरने के लिये और ताक़त देने वाली अन्य चीजें भी है। जैसे फल हैं। यहां जो पपीता नामक फल होता है, केला

होता है उसे लोग एक साल के अन्दर ही पैदा कर सकते है जिससे भी काफ़ी मदद मिल सकती है। इसके अलावा कन्द मूल होते है जिनको आज से नही प्राचीन काल से लोग खाते है। फलाहार के समय कन्द खाना फलाहार ही समझा जाता है। जैसे शकरकन्द, आलू या दक्षिण में ट्रावनकोर मे होने वाला कन्द कई ऐसी चीजें यहां है जो पौष्टिक है। इन चीजों को खाकर हम गुजर कर सकते है और ग़रीब लोग इन्हें खा कर अपने दिन काट लेते है। मै यह चाहता हूं कि मजबूरी से नही बल्कि यह समझ कर हमें उन्हें खाना चाहिये कि उनसे केवल हमारी भख ही शान्त न होगी वरन् उनसे हमारे स्वास्थ्य में भी वृद्धि होगी। उनके बनाने का तरीक़ा, खाने का तरीक़ा घर घर मे फैल जाये तो चावल और गेहूं की कमी दूर हो सकती ह। मै चाहता हूं कि यह संस्था इन सब बातों का प्रचार करे और लोगों को बताये कि किस तरह से वे इन चीज़ों को काम मे ला सकते है। यहां अभी जो आप प्रदर्शनी देखने जायेगे उसमे यह दिखाने का प्रयत्न किया गया है कि किस तरह से आप इन से लाभ उठा सकते है। सब को इस चीज की जरूरत है।

देश ग़रीब है और अन्न की महगाई हो रही है। अभी तो महंगाई इतनी है कि स्वप्न में भी किसी ने न सोचा होगा कि ऐसी महंगाई होगी जैसी आज कल है। मैं जब बचपन में स्कूल में पढता था तो रुपये में १५ सेर चावल खरीद कर खाता था। आज कल उस जगह पर ४०-४५ रुपये मन चावल मिलता है ; याने रुपये में एक सेर से भी कम चावल मिलता है। घी रुपये मे ढाई तीन सेर उस ज़माने मे बिकता था और यहां दिल्ली मे आज सात साढे सात रुपये सेर से कम नही मिलता है। तो चीजो की कीमत इतनी बढ़ गयी है। इस तरह हमे यह देखना है कि किस तरह ग़रीब लोग दिन काट सकते है। मध्यम दर्जे के जो लोग है जिनका मुशाहरा मुकर्रर रहता है, जिनकी आमदनी मुकर्रर रहती है और जिन्हें उसी से अपना समय काटना पड़ता है, अपना सब खर्च निकालना पडता है उनको कम से कम पैसे लगा कर पेट भर खाना मिल सके और खाने की चीजे मिल सके इसको हमे सोचना चाहिये।

मुझे यह जान कर खुशी है कि आठ आने मे किस तरह एक आदमी खाना खा सकता है उसका नमूना आपके सामने इस प्रदर्शनी में पेश किया जायेगा। इसलिये मै आप सब को और खास कर के ऐसे काम के लिये बधाई देना चाहता हू। मुझे खुशी है कि श्रीमती लीलावती मुन्शी ने जिस काम को अपने यहा आरम्भ किया था वह इतना आगे बढ़ गया है और मै आशा रखता हूं कि इससे अन्न की कमी को दूर करने मे मदद मिलेगी। इन शब्दों के साथ मै इस प्रदर्शनी का उद्घाटन करता हूं।

अखिल भारतीय समाचार पत्र सम्पादक सम्मेलन

*अखिल भारतीय समाचार पत्र सम्पादक सम्मेलन के नव वार्षिक अधिवेशन का उद्घाटन करते समय कान्स्टीट्यूशन क्लब नई दिल्ली मे शनिवार २ दिसम्बर १९५० को राष्ट्रपति जी ने कहा —

श्री देवदास गांधी, समाचार पत्र सम्पादक सम्मेलन के सदस्यो, बहनो और भाइयो,

आज आप लोगों के यहां मै आ सका इस बात की मुझे बड़ी प्रसन्नता है। आरम्भ में ही आपको बधाई देता हूं और मगल कामना प्रकट करता हूं। आपकी संस्था पे अपने

* अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

अल्पकाल के अस्तित्व में जो सफलता प्राप्त की है उसके लिये और जो यह काम करती रही है उसके लिये मैं आपकी संस्था को बधाई देता हूं । हमें ज्ञात है कि हाल के पिछले दिनों में हमारे सामने अनेक कठिनाइयां रही है और हमारे समाचार पत्रों को भी उनमें से बहुत सहनी पड़ी है किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् बहुत सी बातों में परिस्थितियां बदल गयी है । आज मुझे इस बात का हर्ष है कि अब आप ऐसी स्थिति में है कि बदली हुई परिस्थितियों से और परिवर्तित अवस्था से लाभ उठा सकें और उससे भी अच्छी तरह से अधिक कार्य कर सके जिस तरह से कि आप भूतकाल में कर सकते थे । अब जब कि हमारे यहां अभूतपूर्व पैमाने पर प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था व्यवहार में आ रही है और जब कि हम ऐसे विशाल निर्वाचक वर्ग के सामने जाने वाले है जिसकी विशालता से ही कि हम मे से अनेकों के भयभीत हो जाने की सम्भावना है देश में वर्तमान नयी व्यवस्था में समाचार पत्रों की स्थिति और प्रभाव को बढ़ा कर वर्णित किया ही नही जा सकता । मुझे इस बात का हर्ष है कि आपने यह बात समझ ली है कि समाचार पत्र के नाते उन समाचार पत्रों की स्थिति और प्रभाव जिन्हें आप भारतीय भाषाओं के समाचार पत्र कहते है दिन प्रति दिन उन्नत होगा । इस बात को पहचानने तथा इस के महत्व को समझ लेने के चिन्ह स्वरूप आप ने लगातार अपने दो सम्मेलनों के अध्यक्ष ऐसे महानुभावों को चुना है जिनका सम्पर्क भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों से रहा है । मुझे इसमें शक नही है कि जैसे जैसे समय बीतेगा वैसे वैसे हमारे देश में भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों का अधिकाधिक महत्वपूर्ण स्थान होगा और यह आप का काम है कि आप उन को यह स्थान दिलायें और जो कुछ बड़ी से बडी सेवा आप देश की कर सकते है वह सेवा उसकी करें । मेरे लिये यह ठीक नही है कि मै आप लोगों को यह बात कहू कि पत्रकारों के नाते आपको क्या करना ठीक है और क्या करना ठीक नही है । मै यह नही समझता कि ऐसा करने का मुझे अधिकार है किन्तु एक साधारण व्यक्ति के नाते मेरे ध्यान में कुछ बातें आती है और मै उनमे से कुछ की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हू ।

मेरी दृष्टि में समाचार पत्रों का दो तरह का काम है । उन्हे समाचार पहुचाने का काम करना होता है और वे विचार और जनमत का दिग्दर्शन भी करते है । इन दोनों ही बातों में आपका महत्व खास तौर से ऐसे देश में बहुत ज़्यादा है जहां प्रजातन्त्र प्रणाली के अनुसार काम होना शुरू ही हुआ है । जहां तक समाचारों का सम्बन्ध है मुझे इस बात के कहने की कोई ख़ास ज़रूरत नही है कि हम कोई ऐसी बात नही चाहते जिसे कि सर्वसाधारण और जनता न चाहती हो । अर्थात् हमारी भी अपेक्षा यही है कि घटनाओं का जैसा स्वरूप है उनका वैसा ही वास्तविक और सही वर्णन किया जाये । दुर्भाग्यवश यह बात सच है कि कुछ हालतों में किसी के दोष के बिना ही तत्सम्बन्धी घटनाओं की कल्पना कर ली जाती है । सम्भवतः द्वेष अथवा इच्छामत विचार जैसी चीज़ होती है और यह अक्सर हो सकता है कि पत्रकार, यहां तक कि अनुभवी पत्रकार भी, घटनाओं के सम्बन्ध में ग़लतफ़हमी के शिकार हो सकते है । यदि उन्हें ग़लतफ़हमी हो जाती है तो उसके लिये उन्हें कोई दोषी नहीं ठहरा सकता । जो हम चाहते है और जिसकी हम आपसे अपेक्षा कर सकते है वह तो केवल इतनी बात है कि आप घटनाओं के वर्णन में सचाई का दामन बराबर पकड़े रहें । इस बारे में समाचारपत्रों की स्वतन्त्रता का प्रश्न पैदा ही नहीं होता । वस्तुस्थिति के वास्तविक स्वरूप के बारे में मन मानी करने के किसी के अधिकार का सवाल हो ही कैसे सकता है ?

जहां तक विचारों का प्रश्न है स्थिति दूसरी है। किन्ही घटनाओं के सम्बन्ध में जो भी विचार आप रखना चाहते है या व्यक्त करना चाहते है उनके रखने या व्यक्त करने के लिये आप स्वतंत्र है और मेरा विश्वास है कि हमारे संविधान ने आपको अपने विचारों को, जैसी भी सर्वोत्तम रीति से आप चाहें और जैसी भी रीति आप को सर्वोत्तम जंचती हो, व्यक्त करने की पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान कर दी है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि कठिन परिस्थितियों में भी हमारे देश के ज्यादातर समाचारपत्र अपने कठोर कर्तव्यो का पालन बहुत सफलता से करते रहे है। इस बात की तो अपेक्षा की भी नही जा सकती कि एक तरफ पत्रकारों में और दूसरी तरफ़ अन्य लोगों के बीच में अथवा स्वय सब पत्रकारों में भी किसी भी सार्वजनिक प्रश्न पर पूरा एक मत हो। उस प्रकार की एकता तो केवल एक तानाशाही राज्य मे अर्थात् ऐसे राज्य में जहां विचार पूर्णतया राज्य की जकड मे है और उसकी अभिव्यक्ति पूर्णतया नियन्त्रित होती है, पायी जा सकती है। ऐसे देश में जो स्वतन्त्र होने का दावा करता है, जो विचार अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता प्रदान करने का दावा करता है किसी को यह अपेक्षा करने का अधिकार नही है कि विचारों में पूर्णतया साम्य और ऐक्य हो। विभिन्न प्रकार के विचार होते है और उनको अभिव्यक्त करने की विभिन्न रीतिया होती है। आपसे जनता अधिक से अधिक यही अपेक्षा करने का अधिकार रखती है और यही हमारी इच्छा है कि आप यह करें कि अपने विचारों को चाहे आप कितनी ही दृढ़ता से क्यों न व्यक्त करे किन्तु साथ ही उन को, दूसरे लोगों की भावनाओं का विचार करके तथा ऐसी रीति से जो पाठकों के विवेक बुद्धि को ठीक जंचे और जो उनके मन या भावनाओं को उत्तेजित करने वाली न हो, व्यक्त करे।

मै जानता हूं कि समाचार पहुंचाने और विचारों का प्रचार करने के अतिरिक्त समाचार पत्र और भी बहुत सी बातें करते है। उनके सामने विशद क्षेत्र पडा हुआ है और बहुधा हमारी सामाजिक कार्यवाहियों या अन्य ऐसी ही बातों के सम्बन्ध में भी वे बहुत महत्वपूर्ण काम करते हैं। मै यह कहना आवश्यक समझता हूं कि कभी कभी मेरा मन बहुत दुखी होता है जब मैं वह बात देखता हूं जिसे आपके एक पुराने सहकारी ने जो यहा उपस्थित है बडे भावोत्पादक रीति से हिन्दी भाषा में घासलेटी साहित्य का नाम दिया है। मै यह चाहता हूं कि आप लोग इस प्रकार के घास लेटी साहित्य से चौकन्ने रहें और उससे बचें और न तो कोई ऐसी बात लिखें और न कहें जिसका आपके पाठकों के मन और चरित्र पर हानिकर प्रभाव हो।

एक बात में आप के सम्मेलन को बडी सफलता मिली है। एक तरफ़ सरकार और दूसरी ओर समाचारपत्र लेखकों के बीच में सम्पर्क स्थापित करने का यह निमित्त रही है और इस बात की न तो कोई इच्छा करेगा और कम से कम मै तो करता ही नही हूं कि यह सम्पर्क आपके विचार स्वातन्त्र्य अथवा अभिव्यक्ति स्वातन्त्र्य पर किसी प्रकार की रोक या बन्धन समझा और ठहराया जाये। तो भी इस बात से तो इन्कार नही किया जा सकता है कि इस का अपना महत्व है जिस से कि सरकार के दृष्टिकोण को आप समझ पा सकते है और जिन विभिन्न दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व आप करते हैं उनको सरकार समझ पाती है। आपकी संस्था द्वारा जब तक इस प्रकार की पारस्परिक जानकारी पैदा की जा सकती है तब तक आप की व्यवस्थापक महान् उद्देश्य की पूर्ति करती रहेगी।

किन्तु इसके अतिरिक्त हमारे महान् पड़ौसी पाकिस्तान के साथ भी अपनी सस्था द्वारा एक प्रकार का सम्पर्क आप क़ायम कर पाये है। और मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हमारे दोनों देशों के पारस्परिक सम्बन्धों में किसी हद तक सुधार करने का आपने जो प्रयत्न किया था उसमें आपको पर्याप्ति सफलता मिली है। कठिनाइयां तो है ही और मै यह भी जानता हू कि रुकावटे भी पड़ेंगी ही। किन्तु इन कठिनाइयों और रुकावटो के बावजूद यदि आप अपने दृष्टि-कोण पर दृढ रहेंगे और अपने विचारों को निर्भयता से और ईमानदारी से इस बात को ध्यान में रख कर कि आपके विचारों की अभिव्यक्ति का जनता पर और हम दो पड़ौसी देशो में जैसे सम्बन्ध होने चाहियें उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा व्यक्त करते रहेंगे तो उसमे कोई बुराई न होगी और मुझे इसमें कोई शका नही है कि आप अपने कार्यो से सीमान्त पार अपने हमपेशो के कामों को प्रभावित करने मे समर्थ होंगे।

अत: मुझे आपकी सस्था से बड़ी उम्मीदे है। जैसा कि अभी कहा गया है हम बड़े सकटकाल से हो कर गुज़र रहे है। जब मै 'हम' शब्द का प्रयोग करता हूं तो मेरा अर्थ केवल इस देश से ही नही वरन् यह भी है कि संसार बडे ही संकट काल से गुज़र रहा है। एक नये राष्ट्र के नाते जो अभी सत्ता-सीन हुआ है हम विदेशों से अपने सम्बन्ध कुछ सीमा तक स्थापित करने का प्रयास करते रहे है। हम एक नयी नीति के निर्धारण करने का भी प्रयास करते रहे है। अर्थात् ऐसी नीति के निर्धारण का प्रयास करते रहे है जो दूसरे देशो की नीति से सर्वदा स्वतन्त्र हो। इस देश के समाचारपत्रो का यह काम होना चाहिये कि वे अन्य देशों को हमारे दृष्टिकोण को इस प्रकार बताये कि जिस से उस के बारे में उन लोगों के मन मे कोई ग़लतफ़हमी न हो। अखबारो का यह भी फ़र्ज होना चाहिये कि वे इस बात की ख़बर रखे कि दूसरे देशो के अख़बार क्या कह रहे है और दूसरे देशों के लोग क्या सोच रहे है और हमारे देश के लोगों को उन विचारों से और उन लोगो के कामों से पूर्णतया परिचित रखे। हर काल मे ये बाते बड़ी महत्वपूर्ण होती है किन्तु जिस संकट काल में होकर हम आज गुज़र रहे है उन में तो उनका महत्व और भी कही अधिक है। अविचार से कहा हुआ एक शब्द ऐसी स्थिति पैदा कर सकता है जिसे कोई भी पसन्द न करता हो। जल्दी मे कही हुई बात अनेक प्रकार की उलझने पैदा कर सकती है। हमारी नीति की व्याख्या करने मे तथा दूसरे देशों की नीति की व्याख्या करके हमें बताने में आपको बडी होशियारी बरतनी चाहिये जिससे कि किसी प्रकार की ग़लतफ़हमी पैदा न हो। मेरे लिये यह कहना ठीक नही है कि आप लोग अपने को पूर्णतया सब बातों से परिचित रखें क्यों कि मै जानता हूं कि आप ऐसा करते है किन्तु मै आप से ऐसा करने की अपेक्षा करता हूं कि आप ज़रा सी उत्तेजना पर हर ऐसी बात को प्रकाशित करने या बयान करने के लिये जिसे आप जानते है तैयार न रहें। ऐसा हो सकता है कि ऐसा करना आवश्यक ही न हो। ऐसी अनेक महत्वपूर्ण बातें है जिन्हे आप जानते है किन्तु जिनका प्रकाशन करना आवश्यक नही है जिन्हें हर आदमी को बताना भी ज़रूरी नही है। मुझे यक़ीन है कि इस प्रकार के संयम द्वारा आप अपने में और भी अधिक शक्ति पायेंगे और देश की और भी अधिक अच्छी सेवा करेंगे। आपकी सफलताओं के लिये मै आपको एक बार फिर बधाई देना चाहता हूं और जिस काम को आपने प्रारम्भ किया है उसमें मै आपके लिये बहुत काफी और लम्बे तथा सफल जीवन की कामना करता हूं।

राष्ट्रपति जन्म दिवस

तारीख़ ३, दिसम्बर १९५० को राष्ट्रपति जी के जन्म दिवस पर गवर्नमेंट हाउस के कर्मचारियों द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब में राष्ट्रपति जी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

मेरे लिये यह एक शुभ दिन है। जब आप सभी भाइयों और बहनों ने मुझे आशीर्वाद दिया और मेरी उन्नति के लिये, मेरे स्वास्थ्य के लिये, मेरे दीर्घ जीवन के लिये सबों ने प्रार्थना की। इससे बढ़ कर और दूसरी कोई चीज़ किसी के जीवन में मिल नही सकती कि असंख्य लोग उसको आशीर्वाद दें और वह आज मुझे प्राप्त है। इसके लिये मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूं और आप सभी भाइयों और बहनों को आशीर्वाद देता हूं।

उर्दू मुशायरा

तारीख़ ७-१२-५० को राष्ट्रपति भवन में उर्दू मुशायरा के अवसर पर राष्ट्रपति जी ने कहा—

आज मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि मुझे यह मौका मिला कि इतने बजुर्ग हैसियत के लोगो से मै मिल सका और आपकी शायरी का मज़ा उठा सका। यह हिन्दुस्तान की पुरानी रवायत है कि अदब और इस तरह की जितनी और चीज़ें है उन की मदद करने और उन में लगे हुए लोगों को हर तरह से उत्साह बढ़ाने के लिये पहले के बादशाह और राजे महाराजे मुद्दब्बिरों और शायरों की मजलिस मे शामिल हुआ करते थे। जब सल्तनत बदल गयी तब से क़रीब क़रीब दो सौ वर्षो तक जब तक अंग्रेजों की सलतनत रही हमारी अपनी शायरी और इस क़िस्म की चीजो को कोई मदद नही मिली। जो कुछ मदद मिली वह सल्तनत के अलावा जो दूसरे लोग थे उनसे मिलती रही और उनकी मदद से ही हमारी शायरी अब तक बची रह सकी। लेकिन अब सल्तनत फिर बदल गयी है। गवर्नमेंट का अब यह फ़र्ज है कि वह शायरी अदब और इस तरह की जितनी चीजें है उनको मदद दे। मै चाहता हूं कि यह काम जारी किया जाये। जब पहले मै ने यहां इस मुशायरे की बात सोची तो मेरे दिल में कुछ डर था कि इसमें मुझे कहां तक कामयाबी मिलेगी। खास इसी वजह से अपनी तरफ़ से मै ने किसी को दावत नहीं दी। आप लोगों ने ही मेहरबानी करके अपनी तरफ़ से कुछ लोगो को दावत दी और वे लोग यहां आये है। मगर आइन्दा जब कोई मौक़ा होगा और मै समझता हूं इस तरह का मौक़ा ढूढ करके मै निकालूंगा तब मै आप लोगों को दावत दूंगा और आप लोग इसी तरह से मेहरबानी करके मेरी दावत को क़बूल फ़रमायें और यहा तशरीफ़ लायें। यह बात इसलिये और भी ज़रूरी हो गयी है क्योंकि जो अब तक नवाब और राजा थे या दूसरे धनी लोग थे वे अब इन चीजों से अलग होते जा रहे है। अब इस के अलावा कोई चारा नहीं कि अदब की मदद सल्तनत की तरफ़ से की जाये। इस ख्याल से अब यह जरूरी है कि इस तरह की चीज़ों की मदद सरकार किया करे। मैं आशा करता हूं कि आहिस्ता आहिस्ता अदब और शायरी और भी तरक्क़ी करेगी और मुझे उम्मीद

हूँ कि आप साहबान इस में हमारी मदद करेंगे और जब कभी यहां इस तरह का मुशायरा होगा आप तशरीफ़ लायेंगे ।

मै आप सब का शुक्रिया अदा करता हूं और उम्मीद करता हूं कि आप इस शुक्रिया को मंजूर करेंगे ।

दिल्ली विश्वविद्यालय का समावर्तन समारोह

दिल्ली विश्वविद्यालय के अट्ठाइसवें समावर्तन समारोह में अपने दीक्षान्त भाषण में राष्ट्रपति ने कहा —

उपकुलपति जी, अध्यापकजन, स्नातको और स्नातिकाओ,

आप सब का मै अत्यन्त अनुग्रहीत हूं कि आप ने मुझे यह निमन्त्रण दिया है कि इन स्नातकों और स्नातिकाओं से, जो इस विश्वविद्यालय से शिक्षा पा कर के जीवन भार को वहन करने के लिये बाहर जा रहे है, कुछ अपनी बात कहूं । इस बात से तो कोई इन्कार नही कर सकता कि आज के भारत और संसार दोनों के ही सामने ऐसी विषम समस्यायें हैं जिन के सुलझाने के लिये न केवल वयोवृद्ध लोगों के अनुभव और गुरुता की ही ज़रूरत है बल्कि आवश्यकता है युवकों के अदम्य उत्साह, ज्वलंत आशाओं और स्फूर्तिदायिनी शक्ति की भी । यदि यह कहा जाये कि संसार के नव-निर्माण की जिम्मेदारी इन्ही के सर पर है तो कुछ अतिशयोक्ति न होगी । कम से कम इतनी बात तो स्पष्ट है कि इस नव निर्माण में कमर कस कर जुट जाना इन के अपने निजी हित में ही है क्योकि इन के भावी जीवन का रूप रंग इसी पर निर्भर करेगा कि आज की समस्याओ को इन्हो ने कितनी तत्परता और किस खूबी से सुलझाया ।

मै समझता हूं कि इन लोगों के लिये यह सौभाग्य की बात है कि इस जिम्मेदारी को संभालने के लिये मानसिक और चारित्रिक तैयारी करने का अवसर इन्हें दिल्ली जैसे नगर के विश्वविद्यालय मे मिला । यह तो सर्वसम्मत बात है कि विद्यार्थियों को जितना ज्ञान शिक्षकों के लैक्चरों और पुस्तकों से प्राप्त होता है उतना ही उस सामाजिक और सास्कृतिक वातावरण से अनजाने और सहज ही मिलता रहता है जिस के बीच रह कर वे अपना जीवनयापन करते है । यह वातावरण जितना ही अच्छा होता है उतना ही विद्यार्थियों का जीवन सुसंस्कृत और सभ्य बनता है । इस दृष्टि से देखा जाये तो इन युवक युवतियों को यहां रहने और पढने के कारण अमूल्य सांस्कृतिक लाभ हुआ है क्यों कि दिल्ली के वातावरण में कुछ ऐसी बातें हैं जो संभवत: अन्यत्र नहीं मिलती । यह बात निःसकोच कही जा सकती है कि दिल्ली के गली कूचों में भारत का सारा इतिहास समूत हो कर बसा हुआ है और इस के निकट के खण्डरो

में तो शताब्दियों की प्रतिध्वनि सुनाई देती रहती है। भारत में और भी बहुत से शहर है जो ऐतिहासिक दृष्टि से पर्याप्त महत्व रखते है पर दिल्ली का इतिहास तो अनोखा है।

यहा इतिहास की तीन धाराओं का संगम हुआ है — .ऐसी तीन धाराओं का जो दुनिया के विभिन्न क्षेत्रो से निकल कर अनेक शताब्दियों और देशों मे से बहती हुई भारत के इस ऐतिहासिक नगर में मिल कर एक धारा बन गई है और भारत वासियों के जीवन को उर्वर बना रही हैं और बनाती रहेगी। इन धाराओं में प्रधान और सब से प्राचीन वह धारा है जो वैदिक काल या उस से भी पूर्व से हमारे देश मे बहती रही है और जिस का पुनीत जलामृत हमारे देशवासियों की मानसिक प्यास को सदा से तृप्त करता रहा है। उस ने हमारे जीवन को हरिश्चन्द्र के वचनपालन, दधीचि के आत्मोत्सर्ग, शिवि की दया, कर्ण की दान वृत्ति, राम के राजधर्म, कृष्ण के निस्पृह कर्मयोग, बुद्ध की अहिसा और अशोक के धर्म चक्र के आदर्शो से समृद्ध बनाया है। हमारे जीवन का ऐसा कोई अश नही है जिस मे उस का प्रभाव बिध न गया हो और इस कथन से अत्युक्ति न होगी कि जान मे या अनजान मे वह आज भी प्रतिक्षण हमारे जीवन और विचारों की दिशा को निश्चित करती है। दूसरी धारा है वह जो आज से लग भग एक हज़ार वर्ष पूर्व अरब से बहती हुई हमारे देश मे आई और इसी दिल्ली शहर में उस पहली धारा में मिल गई। कौन नही जानता कि इसी नगर में उस, मिली जुली भाषा, वेशभूषा, कला साहित्य और विचार शैली का जन्म हुआ जो यहां के हिन्दू मुसलमानों की है। उस ने हमें कबीर का अनहद नाद सुनाया, और सुनाई जायसी की प्रेम गाथा। उस ने हमें दिया वह शुभ्र-श्वेत प्रस्तर अश्रु जिस मे शाहजहां का शोक मूर्तिमान हो कर चिरस्थायी हो गया है। आज वह धारा हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गई है। उसी प्रकार कुछ शताब्दि पूर्व तीसरी धारा सुदूर पश्चिम से समुद्र पार करती हुई हमारे देश में आई और आ कर इन दो धाराओं के संगम स्थल नई दिल्ली मे उन मे मिल गई। उस ने हमारे जीवन की गति को तीव्रतम कर दिया, उस के दायरे को बढ़ा दिया और नये विज्ञान और विधियो से हमारे जीवन को नियमित कर दिया। अतः इन में से प्रत्येक धारा ने हमारी संस्कृति को समृद्ध और उन्नत बनाया है। इन्हीं तीनों धाराओं के इस सगम तीर्थ दिल्ली में रहने और पढने के कारण आप लोगों को अनायास ही इन के रंग में रंगे जाने का पूरा पूरा मौक़ा मिला है और मै समझता हूं कि आप इन के रंग में रंग गये भी होंगे।

दिल्ली केवल इन ऐतहासिक धाराओं का ही संगम नहीं बल्कि भारत और दुनिया के विभिन्न प्रदेशों से बह कर आने वाली जातीय धाराओं का भी संगम क्षेत्र है। यहां भारत की चारों दिशाओ के लोग बसे हुए है। और भारत का ऐसा कोई प्रदेश या राज्य नहीं जहां के अधिवासी इस दिल्ली में व्यापार या वृत्ति या नौकरी के लिये आ कर बसे हुए न हों। यह कहना ग़लत न होगा कि यदि कोई हमारे बहुभाषा भाषी और विभिन्न रस्म रिवाज वाले देश का सूक्षम रूप देखना

चाहे तो उसे दिल्ली देख लेना ही काफी होगा । यहां उस को पुरातन और नवीन उत्तर और दक्षिण पूर्व और पश्चिम हर प्रकार के भारत के एक साथ ही दर्शन हो जायेंगे। इतना ही नहीं आज तीन वर्ष से तो इस दिल्ली नगरी में अमेरीका और रूस, इंगलैंड और चीन, फ्रांस और बर्मा आदि सभी देशों के लोगों से सम्पर्क होता है । सचमुच ही दिल्ली एक सार्वभौमिक संस्कृति और समाज वाला नगर है। ऐसे नगर में विद्याध्ययन करने से आप को सहज ही भारत और संसार की विभिन्न जातिवालों से निकट सम्पर्क में आने का अवसर मिला होगा ।

मै समझता हूं कि आप लोग स्वयं विभिन्न प्रदेशों और जातियों के हैं और इस विश्व-विद्यालय में कंधे से कंधा मिला कर पढ़ते खेलते और आनन्द मनाते रहे हैं। अतः आप को तो सक्रिय रूप में इस बात का अच्छी तरह से अहसास हो गया होगा कि हमारे भविष्य के लिये यह कितना आवश्यक है कि इतिहास की ये तीन धारायें दिल्ली के संगम तीर्थ में एक हो कर हमारे देश में बहें और प्रत्येक ग्राम और नगर और प्रत्येक घर और कार्यालय को जीवन और स्फूर्ति प्रदान करें । आप ने इस बात की आवश्यकता भी समझ ली होगी कि हमारे देश के विभिन्न प्रदेशों और जातियों के लोगों के मनों को इस दिल्ली के द्वारा एक सूत्र में—ऐसे सूत्र में जो हवा से भी पतला है और इस्पात से भी मज़बूत —बंध जाना चाहिये। कम से कम मै तो यह दृढता से कह सकता हूं कि सांस्कृतिक और प्रादेशिक सामञ्जस्य की ये दो महान समस्यायें हमारे सामने हैं जिन्हें हमें पूरी लगन और समझ बूझ से हल करना है । मैं समझता हूं कि इन के हल करने में दिल्ली जैसे विश्वविद्यालय और इस के विद्यार्थियों और स्नातकों का पर्याप्त महत्वपूर्ण भाग होना चाहिये। दिल्ली नगर का सांस्कृतिक हृदय होने के नाते इस विश्व विद्यालय का वही सांस्कृतिक और प्रादेशिक चतुराननी रूप है जो दिल्ली का है । इस में भारत के हर कोने से आये विद्यार्थी है । इस में इतिहास की इन तीन धाराओं में से अलग अलग एक या एक से अधिक धाराओं में रंगे युवक युवती है—इस में पुरातन भी है और नवीन भी। अतः इस की तो यह अपनी समस्या है कि यह विभिन्न संस्कृतियों विभिन्न ऐतिहासिकों परम्पराओं, और विभिन्न जातियों वाले विद्यार्थियों के जीवन में और मानसिक गठन में सामञ्जस्य स्थापित कर दे और इस प्रकार के आन्तरिक सामञ्जस्य वाले युवक और युवतियों को सहस्त्रों की संख्या में भारत के प्रत्येक प्रदेश मे सांस्कृतिक और प्रादेशिक सामञ्जस्य का अग्रदूत और वीर-सिपाही बना कर भेजे। अपनी आन्तरिक शान्ति और अपने कार्य को सुचारु रूप से चलाने के ही लिये नहीं वरन् अपने शिक्षा धर्म को निभाने के लिये भी इस विश्वविद्यालय और इसी का क्यों भारत के सारे विश्वविद्यात्लयों का कर्तव्य है कि वे इस दिशा में और इन समस्याओं को तुरन्त सुलझाने के लिये कार्यरत हो जायें । शिक्षा का मुख्य ध्येय यही है कि प्रत्येक आदमी के आन्तरिक जगत में सामञ्जस्य हो और उस का वाहय जगत के अन्य सब प्राणियों से भी सामञ्जस्य हो । यद्यपि बाहरी तौर पर देखने में तो कोई भी आदमी एक ही आदमी लगता है क्यों कि उस के न तो दो मुख दिखाई देते है और न आठ हाथ पांव किन्तु यदि साधारण तौर पर एक दिखने वाले आदमी के आन्तरिक गठन को देखा जाये तो पता चलेगा कि उस में एक के बदले में अनेक आदमी एक साथ

ही मौजूद हैं । हमारे पूर्वजों ने दशानन, पंचानन, चतुरानन इत्यादि देवताओं असुरों और आदमियों की कल्पना की थी वह केवल थोथी कल्पना ही न थी । उस के पीछे यह मनोवैज्ञानिक सत्य भी था कि ऊपर से दिखने में चाहे कोई कितना ही एक क्यों न लगता हो किन्तु संभव है कि उस के अन्दर अनेक व्यक्ति एक साथ ही मौजूद हों। एक व्यक्ति में अनेक व्यक्ति होने की बात इसी लिये पैदा होती है कि मनुष्य की विवेकबुद्धि, वासनात्मकबुद्धि और भौतिक इन्द्रियों में ऐसा चिर और सहज सामञ्जस्य नही है कि वह कभी टूटे ही नहीं। अभ्यास और ज्ञान द्वारा ही उस मे यह सामञ्जस्य कायम किया जा सकता है। ज्ञान कर्म और भक्ति द्वारा इस सामञ्जस्य को स्थापित करने को ही हमारे यहां योग कहा जाता था। एक दफ़े योग द्वारा सामञ्जस्य स्थापित हो जाने पर ही यह सामञ्जस्य सर्वदा के लिये कायम नहीं हो जाता । प्रतिक्षण इस को बनाये रखने के लिये योगी को साधना और तपस्या करनी पड़ती है । क्षण भर की भी गफलत से वह जीवन की कमाई खो सकता है । क्यों कि उतनी ही देर मे यह सामञ्जस्य टूट जा सकता है और वासना उस पर विजय पा सकती है। इसी लिये तो हमारे यहां कहावत है कि---या जागे कोई जोगी या जागे कोई भोगी---सच तो यह है कि योगी तो कभी सोता ही नहीं उस को तो सतत् जाग्रत रहना होना है ताकि उस का यह आन्तरिक सामञ्जस्य जिस के द्वारा ही उस का जीवन सफल होता है और उसे चिरस्थायी आनन्द और सत्य प्राप्त होता है किसी क्षण भी न टूटे । जिस बात को हमारे पूर्वज योग कहते थे उसी को अपने विद्यार्थियों को देने का काम विश्वविद्यालयों का होना चाहिये। आज के शिक्षा शास्त्री इस बात को मानते है कि शिक्षा का ध्येय यही है कि विद्यार्थी के आन्तरिक जगत मे पूर्ण सामञ्जस्य स्थापित हो जाये और उस का व्यक्तित्व विभक्त और टुकड़े टुकड़े न रह जाये।

इस प्रकार के विभक्त व्यक्तित्व का खतरा वैसे तो साधारणतया प्रत्येक समाज में और प्रत्येक समूह में बना रहता ही है किन्तु यह उस समाज में तो कहीं ज्यादा हो जाता है जहां एक साथ ही कई संस्कृतियां कई ऐतिहासिक परम्परायें और कई सामाजिक श्रंखलायें एक स्थान पर ही मौजूद होती है । जैसा कि मै कह चुका हूं हमारे देश मे इस प्रकार की विभिन्नतायें मौजूद है और इस लिये हमारे देश में इस बात का पूरा पूरा खतरा है और बना रहेगा कि हमारे करोड़ों नरनारियों का व्यक्तित्व विभक्त बना रहे । यदि कही यह बात रही तो हमारा समाज और देश आन्तरिक कलह द्वेष और अज्ञात और अज्ञेय मतभेद का शिकार बना रहेगा और हम किसी प्रकार की उन्नति और प्रगति नही कर सकेंगे ।

अतः हमारे लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि अविलम्ब ऐसी कार्यवाही करें जिस से हमारे देश का यह खतरा जल्द से जल्द दूर हो । यह बात तो स्पष्ट है कि इस खतरे को पुलिस के डंडे और फौज की बन्दूक से दूर नहीं किया जा सकता और न इस को किसी कानून या अदालत के ज़रिये मिटाया जा सकता है । अगर वह दूर किया जा सकता है तो केवल सद्शिक्षा के द्वारा और यह काम हमारे विश्वविद्यालय ही कर सकते हैं ।

दुर्भाग्यवश जो विश्वविद्यालय हमारे यहां कायम हैं उन की स्थापना ऐसे युग में हुई थी जब शिक्षा उतने से ही पर्याप्त समझी जाती थी कि वे विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा साहित्य- और भारत में लागू अंग्रेजी कानून का इतना ज्ञान करादें कि वे या तो सरकारी दफ्तरों और नौकरियों का काम करने के लिये योग्य हो जायें या अंग्रेज़ी अदालतों में वकालत और पैरवी कर सकें। इसी लिये भारत के लग भग सभी विश्वविद्यालयों में अंग्रेज़ी भाषा शिक्षा का माध्यम रखी गई और अंग्रेज़ी साहित्य अनिवार्य विषय रखा गया। कैसी विडम्बना थी यह कि भारत के रहने वालों को अपना साहित्य पढ़ना तो केवल ऐच्छिक विषय था पर अंग्रेज़ों का साहित्य पढ़ना था अनिवार्य। पर यह बात लग भग आज तक चली आ रही है। आज भी अधिकतर विश्वविद्यालयों में अंग्रेज़ी भाषा और अंग्रेजी साहित्य अनिवार्य विषय बने हुए हैं। मेरा न अंग्रेजी से कोई द्वेष है और न अंग्रेजी साहित्य के प्रति कोई उदासीनता। मैं ने स्वयं अपने विद्यार्थी जीवन में अंग्रेज़ी भाषा और साहित्य में ही सर्वोच्च उपाधि हासिल की थी किन्तु अंग्रेज़ी भाषा और साहित्य में कितनी ही खूबी क्यों न हो इस बात से तो कोई इन्कार नही कर सकता कि उस के अनिवार्य अध्ययन का और अपने साहित्य और संस्कृति की उपेक्षा का यह परिणाम हुआ कि हमारे यहां के विद्यार्थियों को विद्याध्ययन में रटने की बुरी आदत पड़ गई। हमारे यहां के विद्यार्थियों के खिलाफ यह शिकायत बराबर सुनी जाती है कि वे रट्टूपीर होते हैं। पर मै समझता हूं कि वे रट्टू इस लिये नही हैं कि उन की मानसिक और शारीरिक बनावट और देशों के विद्यार्थियों से भिन्न है बल्कि इस लिये कि उस शिक्षा का उन के दैनिक जीवन से कोई सम्बन्ध और सम्पर्क न था जो उन्हें इन विश्वविद्यालयों में दी जाती थी। इन विद्यालयों की दीवारों के बाहर उन्हें अपना दैनिक जीवन और अपने पूर्वजों की आस्था विश्वास संस्कृति और भाषा छोड़ आनी पड़ती थी। यह ठीक है कि भारत की ही भूमि पर और भारत के ही आकाश के नीचे इन विद्यालयों की दीवारे और इमारतें बनी हुई थी किन्तु उन में भारत न था उन में या तो इंगलैंड था या यूरूप। वहां पढ़ाई जाने वाली बातों का उन के अपने निजी घरेलू और शहरी जीवन से कोई सम्पर्क न होने के कारण उन्हें सहज में याद रखना सम्भव न था। उन्हें तो उन बातों को ज़बरदस्ती अपनी स्मृति में ठूंसना था और इस कारण सिवाय रटन्त के और वे कुछ न कर सकते थे। इस का परिणाम यह हुआ कि हमारे यहां के विद्यार्थियों और युवकों में वह सृजनात्मक शक्ति और वह अदम्य आत्मविश्वास न रहा जिस के बल पर भारतीयों ने विज्ञान साहित्य कला और धर्म के क्षेत्रों में शताब्दियों तक अपूर्व कार्य किया था और जिस के बल पर उन्हों ने एशिया के महाद्वीप में संस्कृति और धर्म की गंगा उस समय बहा दी थी जब न यात्रा के सहज साधन थे और न प्रोपैगन्डा के ऐसे प्रभावी यन्त्र जैसे कि आज कल मनुष्य के हाथ में हैं।

पर इस से भी कहीं हानिकर परिणाम यह हुआ कि हमारे शिक्षित भाइयों का व्यक्तित्व विभक्त व्यक्तित्व होने लगा और उन्हें अपने जीवन में पेट भरने के अतिरिक्त और कोई प्रयोजन न दिखाई पड़ने लगा। इस प्रयोजनहीनता के कारण

हमारे देश की कितनी हानि हुई और इन शिक्षित भाइयों का जीवन कितना नीरस हो गया इस की कल्पना भी नहीं की जा सकती । अपने इस नीरस जीवन को रसमय बनाने के लिये इन्हें सिवाय ब्रिज और ताश या टैनिस के और कोई मार्ग दिखाई नहीं दिया। यह बात देखने में अचरज भरी अवश्य लगती है कि सरकारी नौकरी करते हुए भी अंग्रेज़ सिवीलियन इतिहास, समाज, शासन, इत्यादि इत्यादि क्षेत्रों में पर्याप्त लेखन कार्य कर सके पर भारतीय शिक्षित राजकर्मचारियों में से इक्के दुक्के को ही ऐसा करने की प्रेरणा हुई । मै समझता हूं कि यह बात इसी लिये हुई कि अंग्रेज़ों के व्यक्तित्व में उतनी विभक्ता न थी जितनी कि अंग्रेज़ी शिक्षित भारतीयों में थी और इसी लिये ये भारतीय अपनी इस विभक्ता के कारण पूर्णतया मानसिक अपाहज बन गये थे। जहां विश्वविद्यालयों का यह कार्य होना चाहिये था कि वे व्यक्तित्व में सामञ्जस्य कायम करें वहां हमारे विश्वविद्यालय उस को अंग्रेज़ी भाषा और अंग्रेज़ी साहित्य की कुल्हाडी से टुकडे टुकड़े करते रहे । हां वर्षों की इस कार्यवाही के पश्चात् हमारे यहां कुछ भारतीय ऐसे हो गये हैं जो भारत की भूमि में भी केवल इंगलैड के वातावरण से ही सम्पर्क में आते है उन का अपना घरेलू रहन-सहन, दामपत्य जीवन, घर और बाज़ार की बात चीत और खत किताबत की लिखने पढने की भाषा खाने पीने का ढंग वेष भूषा सभी कुछ अंग्रेज़ी हो गई और इस कारण आरम्भ में जो अंग्रेज़ी साहित्य और अंग्रेज़ी भाषा से व्यक्तित्व में विभक्तता होती थी उस की मात्रा उन कुछ लोगों के जीवन में कम होने लगी पर फिर भी वह न तो बिल्कुल दूर हो सकती थी और न दूर हुई ।

बौद्धिक क्षेत्र मे इसके कारण जो हानि हुई उससे कही अधिक हानि इससे सामाजिक क्षेत्र में हुई। इन विश्वविद्यालयों के शिक्षित लोगों को उन लोगों के प्रति उदासीनता या उपेक्षा भाव अथवा घृणा तक होने लगी जो अंग्रेज़ी शिक्षा साहित्य और सस्कृति से सर्वथा अनभिज्ञ थे। इसलिये भारत के नगर नगर मे सस्कृति की ऐसी अभेद्य दीवार खडी होने लगी जिसकी एक तरफ इंगलेंड के मानस पुत्र थे और दूसरी ओर भारतीय। ग़रीब अमीर की दुनिया तो अलग होती ही थी अब अग्रेज़ी पढों और बे अग्रेज़ी पढों की दुनिया भी अलग होने लगी। और इस प्रकार जो सामूहिक उद्योग और प्रयास किये जा सकते थे उनकी सुविधा न रही । इस दीवार के दोनों ओर रहने वालों मे आपस मे शका और द्वेष का वातावरण बढ़ने लगा और एक दूसरे का परिहास उड़ाने और एक दूसरे की मुखाल्फत करने की भावना बढ़ने लगी। जहा नागरिक जीवन में इस प्रकार की विभक्तता पैदा हुई वहां ग्रामीण जीवन तो विनष्ट ही हो गया। ग्रामों मे अग्रेज़ी रहन सहन वर्तने वालों की सख्या अधिक न हो सकती थी क्यों कि उस तरह के रहन सहन में अधिक खर्च पड़ता है और ग्रामवासियों के पास इतना फालतू धन था ही कहां। साथ ही ग्रामों में वे सुविधायें भी न थीं जो अग्रेजी पढ़े लिखे लोग चाहते थे। नतीजा यह हुआ कि अंग्रेज़ी द्वारा शिक्षित भारत का संपर्क ग्रामीण भारत से बिल्कुल टूटता गया। भारत के इतिहास में इससे पहले कभी यह न हुआ था कि शिक्षित लोग ग्रामों में न रहें और न जायें। सर्वदा ही पंडित लोग ग्रामों में जाते थे और अनेक तो वही रहते थे और कथा गाथा इत्यादि से ग्रामों का जीवन सुसंस्कृत और सभ्य बना रहता था। अंग्रेज़ी काल से पहले नगर और ग्राम की संस्कृति में कोई खाई न थी और उस समय

ग्रामवासियों और साधारण स्थिति के नगरवासियों के वेषभूषा खान पान और रहन सहन में कोई बड़ा अन्तर नहीं दिखाई देता था। इसीलिये तो उस ज़माने में नगर और ग्राम में रोटी बेटी का संबंध बड़ा गहरा रहता था। शहर की बेटी ग्राम में ब्याही जाती थी और ग्राम की शहर में पर ऐसा होने से किसी को भी संस्कृति भेद न होने के कारण कोई कष्ट या असुविधा न होती थी। पर अंग्रेज़ी राज्य काल में नगर और ग्राम में संस्कृति की दृष्टि से इतना अन्तर हो गया कि अगर शहर की बेटी गांव में ब्याही जाती तो उसे काफ़ी तकलीफ़ और दुःख भोगना पड़ता। इसलिये नगर और ग्राम के सामाजिक संबध और भी टूटने लगे और दोनों का संबंध केवल इतना रह गया कि ग्रामवासी शहर में आकर नाज बेच जायें और कपड़ा मोल ले जायें। नगर और ग्राम के बीच इस प्रकार की खाई बढ़ जाने से देश और पंगु होने लगा। साथ ही इस प्रकार की शिक्षा से ग्राम को यह हानि हुई कि उसके ऐसे वासी जिनकी बुद्धि कुशाग्र थी अथवा जो अन्यथा सक्रिय थे ग्राम को छोडकर नगर में बसने लगे। जो भी ग्राम का चतुर विद्यार्थी अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त कर लेता था वह तो अपनी अंग्रेज़ी मनोवृत्ति के कारण भारतीय ग्राम में रहने की बात सोच ही न सकता था। फल यह हुआ कि जैसे सोख्ता पानी को पूरी तरह सोख लेता है उसी तरह ये विश्वविद्यालय बुद्धि कुशाग्रता को ग्रामों से सोख लेने लगे और वहां केवल वही लोग बच गये जो बुद्धि में या चातुरी में पिछडे हुए थे। जहां पहले ग्राम की बुद्धि ग्राम के ही आर्थिक और सामाजिक जीवन में लगती थी वहां अब वह ग्राम से सर्वथा चली आई और शहरों में रहने लगी। इस प्रकार इस शिक्षा प्रणाली के कारण हमारे ग्राम अंधेरे और अशिक्षा के घर बन गये। इस तरह जिन का काम जाति को अमृत दान करना था वही उसको विष का प्याला पिलाते रहे।

अंग्रेज़ों के जमाने में इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली का कोई भी आर्थिक और राजनैतिक महत्व क्यों न रहा हो अब तो वह न है और न रहना चाहिये। हमारे सामने सब से बड़ी यह समस्या है कि संस्कृति और धन की दौड में और देशो मे और हम में जो अन्तर पड़ गया है उसे जल्दी से जल्दी दूर कर दें। यदि हम ने इस बारे मे कोई ढील डाली या इस को पूरा न कर सके तो हमारी आज़ादी तो खतरे में पडेगी ही हमारा अस्तित्व भी खतरे में पड़ जायेगा। इस अंतर को दूर करने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम मे से हर एक पूर्ण एकाग्रता से और हमारी सारी जाति पूर्ण एकता और लगन से इस काम में जुट जाये। पर यह तो तभी हो सकेगा जब कि हमारे वैयक्तिक और सामूहिक जीवन में जो विभक्तता और खाइयां पैदा हो गई हैं वे पूरी तरह से दूर हो जायें।

इस का अर्थ यह है कि हमें दो प्रकार के क़दम तुरन्त उठाने चाहिये। पहली बात जिसकी हमें अत्यन्त आवश्यकता है वह यह है कि हम इतिहास की इन तीन परम्पराओं के बारे में यह तय कर लें कि उन में हमें कैसे सामंजस्य स्थापित करना है। प्रत्यक्ष है कि यूरुप और अरब की दोनों धाराओं को यहां की मुख्य धारा में मिलाना है। यह बात मै इसलिये नही कहता कि मै यहां की प्रथम धारा को अरब या यूरुप की धारा से सांस्कृतिक या आध्यात्मिक दृष्टि से बेहतर समझता हूं। मेरी दृष्टि में बेहतरी और बदतरी का प्रश्न नहीं है। मेरे सामने तो केवल यही बात है कि प्रथम धारा हमारे देश के लगभग सभी आदमियों के सास्कृतिक जीवन की बुनियाद में मौजूद है। कम से कम यह तो अकाट्य सत्य है कि वह यहां के ९० प्रतिशत वासियों के जीवन का सहारा है। अतः

चाहे फिर यूरुप या अरब वाली धारायें पहली से अच्छी ही क्यों न हों यह प्रयास सर्वथा असफल होगा कि प्रथम धारा को रोक कर या बांध बांध कर अपने रास्ते से हटा कर बाद वाली धाराओं में जबरदस्ती मिला दिया जाये। प्रथम धारा से दूसरी धाराओं के मिलाने का अर्थ केवल इतना ही है कि वे अपने विशिष्ट तत्वों को प्रथम धारा के साथ प्रत्येक भारतीय के जीवन में पहुंचा दें ; प्रत्येक भारतीय को उनका लाभ मिले। ग़ालिब के अशआर और शेक्सपीयर के ड्रामे महज़ कुछ चन्द लोगों की सम्पत्ति न रह कर अधिक से अधिक भारतवासियों की सम्पत्ति हो जायें। साथ ही आज जो लोग प्रथम धारा की कृतियों से नफरत करते है वे कम से कम इस बात के जानने की तो कोशिश करे कि उन कृतियों मे कोई खूबी है या नही। हमारे देश के रहने वाले हर एक शख़्स का फ़र्ज है कि वह इन धाराओं की सांस्कृतिक देन को घृणा की या उपेक्षा की दृष्टि से न देखे वरन् उन सब को चाव से पढ़े। जब मै शेक्सपीयर के ड्रामों की या गालिब के अशआर की बात कहता हू तो उसका यह मतलब नही कि उन्हें अंग्रेज़ी या फ़ारसी से लदी हुई हिन्दवी जबान मे ही पढ़ना हर भारतवासी को ज़रूरी है। जो उन ज़बानों में उन्हें पढना चाहते है या पढ़ सकते है शौक से पढें पर जो लोग इन ज़बानों को नही समझते उनको ये सब अपनी ही भाषा मे लभ्य होनी चाहिये। अर्थात् विश्वविद्यालयों को यह प्रयत्न करना चाहिये कि वे यूरुप और अरब और इन के अलावा अन्य ऐतिहासिक परम्पराओं की सास्कृतिक कृतियों का अनुवाद करायें और उनको विद्यार्थियों को मुहैया करें। जो भी पाठ्य पुस्तकें हों उनमें कुछ सबक ऐसे होने चाहियें जिन से इन ऐतिहासिक परम्पराओं का पता चले और उनकी कृतियों का आनन्द प्राप्त हो। यदि हम इस बारे में अपने सब भाइयों को साथ लेकर चलें तो हमें अपने मक़सद को पूरा करने मे बडी जल्दी कामयाबी होगी। मै समझता हू कि हमारी जनता और हमारे बुद्धिजीवी लोगो के बीच की दीवार तभी टूट सकती है और उन के बीच की खाई तभी पट सकती है जब ये बुद्धिजीवी लोग अन्य भारतीयो मे हिले मिले रहें और अलग जाति न बन जाय। इस बारे में यह कह देना मै जरूरी समझता हू कि राष्ट्रपिता गाधी जी की सब से बडी देन हमें यही थी कि उन्होंने अपने चर्खा और खादी, तीसरे दर्जे के सफर और भारतीय वेषभूषा के द्वारा हमारे शिक्षित वर्ग और जनता के टूटे हुए सम्बन्धों को जोड दिया था और इस प्रकार जाति को वह शक्ति, वह उत्साह और वह स्फूर्ति प्रदान कर दी थी जो शताब्दियों मे उसमें न थी। हमें इस बात का ध्यान रखना है कि वह बनी बनाई एकता कही हमारी नासमझी से फिर न टूट जाये। आज ऐसे कुछ पढे लिखे लोग है जो यह समझते है कि गाधीजी ने जो हमारा भारतीयकरण किया था वह अंग्रेज़ो के खिलाफ लडने के लिये तो ठीक था किन्तु वह अब न केवल अनावश्यक है वरन् प्रतिक्रियावादी भी। मै समझता हू कि ऐसे लोगों ने यह बात नही पहचानी है कि जनता के हृदय से सम्पर्क टूटने के बराबर और कोई हानिकर और प्रतिक्रियावादी क़दम न होगा। हमे प्रगति करनी है, हमे अपने देश मे ज्ञान, साहित्य और कला का प्रसार करना है पर इसका यह तरीक़ा नही कि हम जनता के हृदय से अपने को काट कर अलग कर लें। मै समझता हूं कि भारतीय वेशभूषा मे भी विज्ञान का अध्ययन उसी खूबी से किया जा सकता है जैसा कि और किसी वेष में। भारतीय भाषा मे साहित्य पढ़ने से उसका आनन्द जाता रहे ऐसी बात तो नज़र नहीं आती फिर व्यर्थ मे हम क्यो जनता से अपना सम्पर्क काट दें। इसलिये मै यह बल पूर्वक कहना चाहता हूं कि विश्वविद्यालयों को भारतीय ऐतिहासिक परम्परा की उपेक्षा अब न करनी चाहिये और अपने अनिवार्य विषयों में भारतीय साहित्य को रखना चाहिये। साथ ही उन्हें इस बात का

प्रयास करना चाहिये कि जितनी जल्दी हो सके वे भारतीय भाषा या भाषाओं के माध्यम द्वारा शिक्षा देने का प्रबन्ध करें क्योंकि ऐसा करने से ही समाज और व्यक्ति के व्यक्तित्व में जो विभक्तता मौजूद है दूर की जा सकेगी।

दूसरा क़दम जो मैं ज़रूरी समझता हू यह है कि हम यह मान लें कि अब इस बात का समय आ गया है कि ये विश्वविद्यालय ग्रामों की बुद्धि के सोख्ता न हो कर उसे ब्याज सहित गांवों को वापस देने की संस्था बन जायें। यह बात तभी हो सकती है जब इन विश्वविद्यालयों का जीवन ऐसा न हो जो ग्राम से सर्वथा भिन्न है। मेरे इस कथन का यह तात्पर्य नही कि ग्रामीण जीवन की बुराइयों को हम विश्वविद्यालय के जीवन में स्थान दें। पर मैं यह जरूरी समझता हू कि इनके जीवन में तड़क भड़क और फ़ैशनपरस्ती की कोई आवश्यकता नही और न ये बातें उसमे होनी चाहियें। बापू के आश्रम में जीवन ग्रामीण जीवन सा ही था। हां उसमें ग्रामों के दोष न थे। मेरा विचार है कि हमें बहुत कुछ उसी तरह का जीवन इन विश्वविद्यालयों में रखना चाहिये। यदि हम ऐसा कर सकें तो यहां के विद्यार्थियों को ग्रामों में जाकर उनको प्रगतिशील और सभ्य बनाने मे कोई मानसिक या सांस्कृतिक हिचकिचाहट न होगी।

यदि विश्वविद्यालयों में जीवन के प्रति दृष्टिकोण का ऐसा परिवर्तन हो गया तो मैं समझता हूं कि आज जो नगरों में सास्कृतिक दीवारे खड़ी हो गई है आज जो ग्राम और नगर का सम्बन्ध बिल्कुल टूट गया है और आज जो ग्राम से बुद्धि और कौशल नगरों में व्यर्थ खिचा चला आ रहा है और आज जो हमारे शिक्षितों के व्यक्तित्व मे विभक्तता है उन सब की बहुत कुछ समाप्ति हो जायेगी।

विश्वविद्यालयों में इस प्रकार दृष्टिकोण के क्रांतिकारी परिवर्तन करने का भार विश्वविद्यालयो के संचालकों का है। यदि वे यह मानते है कि ये विश्वविद्यालय भारतीय जनता के सेवक हैं और यदि वे यह समझते है कि इन्ही विश्वविद्यालयों के द्वारा जन-जीवन में ज्ञान की ज्योति और आदर्श का प्रेम फैलाया जा सकता है और यदि वे अपना यह कर्तव्य समझते है कि भारतीय जन-जीवन मे ऐसे क्रान्तिकारी परिवर्तन करने वाले सिपाहियों को उन्हें पैदा करना है तो मैं समझता हू कि वे इस बारे में विचारपूर्वक सक्रिय कदम उठायेंगे। साथ ही आप स्नातक और स्नातिकाओं का कर्तव्य है कि आप अपने देशवासियों के प्रति उस कृतज्ञता को प्रकट करने के लिये जो उन्होने अपनी गाढ़ी कमाई से आप को शिक्षा देकर आप पर लाद दी है और साथ ही उनसे स्नेह और सहानुभूतिपूर्ण अपने सम्बन्ध कायम करने के लिये आप उनकी सेवा के लिये अपने को उत्सर्ग कर दें। लाखों घरों और झोंपड़ियों में आपको प्रकाश पहुचाना है। आपके पास वह ज्योति है जो दूसरों को ज्योति देने से और बढ़ती है। आपके पास वह धन है जो जितना ही दान में दिया जाये बढ़ता ही जाता है। आप इनको देकर भारत के बच्चे बच्चे में नवजीवन की लहर भर सकते है। सुदृढ़ विश्वास और मजबूत क़दमों से आगे बढ़िये और इतिहास की और अपने देशभाइयों की आकांक्षा इस कर्तव्य को निभा कर पूरी कीजिये।

मेरी सद्कामना है कि भगवान की कृपा से जीवन की इस परीक्षा में भी आप पूरे उतरें।

सोनपुर श्मशान घाट बम्बई में सरदार वल्लभभाई पटेल का दाहकर्म

सरदार वल्लभ भाई पटेल के दाहकर्म के अवसर पर सोनपुर शमशान घाट में राष्ट्रपति जी के उद्गार—

भाइयो व बहनो,

अभी जो कुछ राजाजी ने कहा है उसको आपने सुन लिया है। सरदार उस शरीर से हम लोगों के बीच में नहीं रहे जिस को हम दिन ब दिन देखा करते थे और जिसको देख कर हम साहस हासिल करते थे और जो काम वह करते थे उसमें सहारा दिया करते थे। पर सभी देह-वासियों का अन्त होता है। जो जन्म लेता है वह मरता है। जिसको शरीर मिलता है उस का शरीर एक न एक दिन जाता है। आज सरदार भी शरीर से हम लोगों के बीच से चले गये। मगर जो सेवायें देश की उन्होंने की है, उन्होंने हमारे सामने और सारे देश के सामने जो उदाहरण रखा है वह हमारे इतिहास में सुवर्ण अक्षरों से लिखा रहेगा और क़ायम रहेगा। जो कुछ हम उन से सीख सके है उसे हमको भुलाना नहीं चाहिये और उस से लाभ उठाना चाहिये। ऐसे मौक़ों पर हमको दुःख होता है। हम रोते है, घबराते है, अपने लिये, सरदार के लिये नही। वह तो अपना काम करके और उसे पूरा करके गये। जो चिन्ता रह गयी थी उस चिन्ता से भी वह मुक्त हो गये। अब हमारा काम है कि जिसको उन्होंने अधूरा छोड़ा है उस को हम अपनी कोशिश से पूरा करें। हमारा यह काम है कि जिस चीज़ को उन्होंने शुरू किया था उसे पूरा करें और इस देश में जो कुछ इस वक़्त कमी रह गयी है उस कमी को दूर करें। और जैसा हम को नेता मिला था अपने को उस के योग्य साबित करें। सब लोगों के लिये तो सरदार का जाना दुःख की बात है इसमें कोई शक नहीं। मगर जो उन को बहुत नज़दीक से देखते थे उन्हें तो भाई बिछुड़ने का सा दुःख हो रहा है। हम उनके परिवार के लोगों से यह कहेंगे कि उनका परिवार कुछ छोटा नही था। वह तो सारे देश के परिवार के थे। इसलिये सब लोग इनके इस दुःख में शरीक है। सब लोग उनके साथ है। जो अग्नि आपके सामने इस समय जल रही है इसमें इनका शरीर जला होगा पर उनकी कीर्ति जली नहीं। कीर्ति तो अमर रहेगी। उसे अग्नि जला नहीं सकती। हम सब को चाहिये कि उनके बताये हुए मार्ग पर चलें।

नागपुर विश्वविद्यालय में दीक्षान्त भाषण

नागपुर विश्वविद्यालय के तीसवें समावर्तन समारोह में अपने दीक्षान्त भाषण में राष्ट्रपति ने कहा—

कुलपति जी, उपकुलपति जी, अध्यापकगण, स्नातिकाओ और स्नातको,

आप सब स्नातिकाओं और स्नातकों को, जो आज इस विश्वविद्यालय से उपाधियां लेकर जीवन के वृहत् क्षेत्र में पदार्पण कर रहे है, यह स्मरण रखना चाहिये कि आप यह क़दम ऐसे समय और स्थितियों में उठा रहे हैं जब हमारे देश के सामने अत्यन्त विषम समस्यायें और प्रश्न उपस्थित हैं और जिन्हें सुलझाने में हम सब को अत्यन्त सूझ-बूझ और धैर्य से काम लेना है। सरदार वल्लभभाई पटेल के देहावसान से तो इस बारे में कहीं अधिक सावधानी और सहयोग

की आवश्यकता हो गई है। अब तक उनका वरद्हस्त हमारे सर पर था; हमें विश्वास था कि वे हम सब विपत्तियों और बाधाओं से बचाते हुये आगे बढ़ाते जायेंगे। तीस बत्तीस वर्षों से वे देश और जनता की सेवा में अपने सारे समय और शक्ति को निरन्तर लगाते रहे। स्वतन्त्रता संग्राम के तो वे प्रधान और प्रमुख योद्धा थे। महात्मा गांधी ने तो विमुह्य भारत को अपनी सत्याग्रह गीता सुना कर स्वतन्त्रता के महायुद्ध के लिये तैयार किया था और साथ में ही अपनी चतुर रणनीति से हमें विजय की ओर अग्रसर किया था। सरदार वल्लभभाई इस स्वातन्त्र्य सेना के एक कुशल और सफल रणनायक थे। उनके पीछे हम सब साहस और विश्वास सहित युद्धक्षेत्र में आगे बढ़ते रहे और वह दिन आया जब हमें पूर्ण सफलता मिली। उन्होंने देश को मुक्त ही न कराया वरन् चन्द्रगुप्त मौर्य की तरह देश को एक शासन सूत्र में बांध भी दिया और इस प्रकार हमारे देश को सहस्रों वर्षो के पश्चात् वैसा बल और सामर्थ्य प्रदान कर दी जैसी कि उस में अपने चरम राजनैतिक उत्कर्ष के युग में भी शायद ही कभी थी। ऐसे अपूर्व योद्धा और राजनायक से बिछुड़ जाने से हम पर जो भार आ पड़ा है वह साधारण नही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद वह देश के नवसृजन के काम में लगे थे। वह अभी पूरा नही हुआ था कि वह चल बसे। उसे पूरा करना है। उसको सफलतापूर्वक पूरा करने का कार्य विशेषत: देश के युवक-युवतियों का और उनमें भी आप जैसे शिक्षित व्यक्तियों का है। ऐसे ही समय में मनुष्य के साहस और पौरुष का परिचय मिलता है। आपकी शिक्षा-दीक्षा का आपके लिये और देश के लिये तब तक कोई प्रयोजन न होगा जब तक कि आप सरस्वती के प्रति अपने कर्तव्य और दायित्व को पूरी तरह न निभायेंगे। सरस्वती तो ब्रह्मा की सृजनशक्ति है जिसमें जगत्पिता प्रति क्षण लिप्त रहते है। अत: उन सब व्यक्तियों का जो सरस्वती का वरदान प्राप्त कर चुके है यह परम कर्तव्य है कि वे अपने को नवसृष्टि के पुण्य कार्य में लगा दे। विश्वविद्यालयो का भी यही धर्म है कि अपने विद्यार्थियों में इसी सेवा और सृजन भाव को जगादें और उनको मानव जाति का ऐसा सेवक बना दे जो अपना यह धर्म समझते हों कि मानव जीवन को सब बाधाओं और व्याधियों, सब कमियों और कठिनाइयों, सब विपत्तियों और विफलताओं से बचाने के लिये आवश्यक सांस्कृतिक और आर्थिक संसार की नवसृष्टि उन्हें करनी है या कम से कम ऐसे नये ससार की सृष्टि में अपने जीवन को उन्हें लगा देना है।

थोड़े ही दिन हुये हम स्वतन्त्र हुये है। हमने स्वतन्त्रता एक विचित्र ढंग से प्राप्त की है। जहां कही भयंकर लोहु लूहान द्वारा क्रान्ति होती है वहां की स्थिति कुछ ऐसी होती है कि क्रान्तिकारियों को खुला मैदान मिलता है और वे जैसा चाहें कर सकते है और बात की बात में सामाजिक और दूसरी बातों में बड़े परिवर्तन ला सकते है; विशेष कर के जब उनको साधन सम्बन्धी कोई मानसिक अथवा नैतिक बाधाएं नही होती। हमने स्वतन्त्रता प्राप्ति में अहिंसा को ही अपना साधन रखा और यद्यपि यह नही कहा जा सकता कि हम स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी उसके वैसे ही पुजारी हैं जैसे हम पहले पुजारी और साधक थे तथापि हमारे लिये इस प्रकार की क्रान्ति सम्भव नहीं रही जैसी कि उपरोक्त दूसरे अन्य क्रान्तिकारियों को हुआ करती है। हमारे हाथों में एक जीवित और चलता शासन आया है और हम उस के अनेकानेक बन्धनों से अपने को मुक्त नहीं कर पाये है। इसलिये हमें पग पग पर यह सोचना पड़ता है कि इस यंत्र को बिना तोड़े मरोड़े कैसे काम चला सकते हैं और अपने ध्येय तक पहुंच सकते हैं। यहां न समय है

और न यह मौक़ा कि इस बात पर विचार किया जाये कि उन मौलिक सिद्धान्तों पर हम कहां तक अड़े हुए है जो महात्मा गांधी जी की हमारे लिये और संसार के लिए देन है । मै यहां केवल एक ही विषय लेकर विद्वानों और विद्याप्रेमियों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं ,चूकि विद्वानों विद्या प्रेमियों और विद्यार्थियों के समारोह में आज हमको उसी क्रान्ति के दृष्टिकोण से शिक्षा सम्बन्धी विषयों पर विचार करना आवश्यक है, और यह देखना है कि इस चलते हुए कारखाने को हम किस तरह अपने काम के लायक बना सकते है । आज हमारे देश के प्रत्येक जीवन से बंधी संस्था का उद्देश्य और उस उद्देश्य पूर्ति की योग्यता को ध्यान में रख कर उसमें क्या परिवर्तन आवश्यक है विचार कर के देखना है । हमारा हाल वैसा ही है जो किसी ऐसे कारखाने के मालिक का होता है जिसके हाथ मे एक चलता हुआ कारखाना आ जाये जो बहुत खर्च और परिश्रम करके बनाया गया है और जो जिस चीज़ को बनाने के लिये तैयार किया गया था उसे कुछ हद तक सफलतापूर्वक वनाता भी था । हमें यह पता चलाना है कि किस तरह कम से कम तोड़ मरोड़ किए बिना और कम से कम आर्थिक पूंजी लगा कर एक नई वस्तु को तैयार करने के लिये इसे परिवर्तित और परिवर्धित किया जा सकता है ।

शिक्षा का कारखाना एक ऐसा कारखाना है जो ऐसी बुनियादी चीज़ पैदा करता है जिसकी ज़रूरत सभी दूसरे कारखानों को हुआ करती है और जिसकी उत्पत्ति और सफ़लता पर दूसरे कारखानो की सफ़लता असफ़लता निर्भर रहा करती है । इसलिये हमको इस कारख़ाने के उद्देश्य, यन्त्र, साधन इत्यादि सभी चीज़ों का अच्छी तरह विचार कर लेना है और इसमें आवश्यक परिवर्तनों को भी कर लेना है । मै मानता हूं कि इस कारखाने में जो माल अब तक तैयार करके दिया जाता रहा है वह अब हमारे काम में बहुत सहायक नहीं हो सकेगा और नये प्रकार की वस्तुएं हम को इस कारख़ाने से अब निकालनी है ।

आधुनिक शिक्षा की जो परिपाटी, क्रम और माध्यम उस समय के कर्णधारों ने निर्धारित किया था वे उस समय के काम के लिये उपयोगी और समुचित समझे जा सकते थे । आज की स्थिति में वह खपते नही और इसलिये उनमें बुनियादी रद्दोबदल आवश्यक हो गया है । यह कहना न तो अंग्रेज़ों की शिकायत है और न उन पर लांछन है कि उन्होंने शिक्षा पद्धति में दो बातों पर अधिक ज़ोर दिया । वे चाहते थे कि शिक्षा द्वारा ऐसे लोग तैयार किये जायें जो शासन में उनकी सहायता कर सकें और वे यह मानते तथा विश्वास करते थे कि उनका साहित्य और उनकी अपनी संस्थाएं और उनकी अपनी सभी चीजें हमारे देश की संस्थाओं, चीज़ों औरा साहित्यों के मुक़ाबले में समृद्धिशाली और समुन्नत है और उनको प्रसारित और प्रचारित करन उनका कर्तव्य है और उन्हें वे हमारे लिये भी हितकर मानते थे । उनका ऐसा मानना स्वाभाविक था क्योंकि वे अपनी चीज़ों से अधिक परिचित थे । थोड़ी संख्या में होते हुए भी उन्होंने इतने बड़े देश के असंख्य जनसमूह को अपने क़ाबु में कर लिया था और हममें ही इतनी शक्ति न थी और न बुद्धि और न वह कौशल जिनके द्वारा हम उनका मुक़ाबला कर सकते । इसलिये उन्होंने अपनी भाषा, अपनी विद्या और संस्थाओं को ही प्रसारित और प्रचारित करना उचित और आवश्यक समझा । हमको आज देखना है कि उनसे हमको कहां तक लाभ पहुंचा है और कहां तक हानि और उनसे अब कहां तक काम ले सकते हैं ।

यह स्पष्ट है कि शिक्षा की बुनियाद विशेष करके अंग्रेज सरकार के कर्मचारी तैयार करने के लिये ही डाली गयी थी और हाल तक हमारे शिक्षाक्रम और पाठ्य विषयों में देश की बहुमुखी उन्नति की ओर ध्यान नहीं गया था। पहली चीज तो यह थी कि शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा बना दी गयी थी। इसमें ऐसे लोग बहुत करके तैयार होने लगे जो अंग्रेजों के शासन करने में उनकी भाषा द्वारा ही उनकी मदद कर सकें और उनको यहां की जनता की भाषा और उसमें संचित साहित्य जानने की आवश्यकता शासन काल के लिये कम से कम पड़े और उस श्रम से जो एक विदेशी भाषा और साहित्य जानने के लिये आवश्यक है वे बच जायें। आज यह कहने की ज़रूरत नहीं है और इसको सभी शासक, विद्याप्रेमी और शिक्षा शास्त्री मानते हैं कि बच्चे की मातृभाषा द्वारा शिक्षा ही उसके लिये अधिक हितकर होती है और उसके मस्तिष्क और चरित्र के विकास में सहायक हो सकती है। इस तरह यद्यपि हमने अंग्रेज़ी साहित्य से बहुत कुछ सीखा और जाना है पर इसमें कोई संदेह नहीं कि साथ ही हम बहुत करके निस्तेज अप्रतिभ और पंगु भी बन गये हैं। १९२१ की एक बात मुझे याद है क्योंकि उसी के बाद मैं खुले दिल से राष्ट्रीय शिक्षा अर्थात् अपनी मातृभाषा के माध्यम द्वारा शिक्षा का दृढ़विश्वासी और पक्षपाती हो गया जो अब तक हूं। उन दिनों में अंग्रेज़ी सरकार द्वारा स्थापित और उससे संबद्ध शिक्षालयों के बहिष्कार का आन्दोलन ज़ोरों से चल रहा था। महात्मा गांधी जी के साथ मैं भी उड़ीसा में भ्रमण कर रहा था। एक बड़ी सभा में एक वृद्ध सज्जन ने महात्मा जी से एक प्रश्न कर दिया। उन्होंने पूछा कि आप इस शिक्षा की क्यों शिकायत करते हैं और इन शिक्षालयों का क्यों बहिष्कार करना चाहते हैं? क्या यह सारा स्वराज सम्बन्धी आन्दोलन इसी का फल नहीं है? क्या लोकमान्य तिलक और आप जैसे प्रतिभाशाली लोग इसी से नहीं उपजे हैं? महात्मा जी ने उत्तर दिया कि इतने दिनों की अंग्रेज़ी शिक्षा प्रचार के बाद भी लोकमान्य जैसा एक प्रतिभाशाली हुआ है पर यदि विचार करके देखा जाये तो पूर्व काल की प्रतिभा के सामने लोकमान्य तिलक भी शायद फीके पड़ जायें। दूसरे ऋषियों को तो छोड़ दिया जाये जिनका वृत्तांत हमें मालूम नहीं पड़ा है पर गौतमबुद्ध, शंकर, और हाल में अंग्रेजी काल के कुछ पहले तुलसीदास और कबीरदास की प्रतिभा का कौन मुक़ाबला कर सकता है और यह कौन कह सकता है कि यदि विदेशी भाषा के माध्यम का बंधन और बोझ लोकमान्य के मस्तिष्क पर न पड़ा होता तो वह जो थे उससे भी कहीं अधिक महान् नहीं होते? बात यह है कि जो कुछ प्रतिभा हमारे लोगों ने अंग्रेज़ी शिक्षा पाकर प्रदर्शित की है वह अंग्रेज़ी शिक्षा के कारण नहीं बल्कि उसके बावजूद वे कर पाये हैं। मैं इस बात को सत्य मानता हूं और इसी लिये मेरा अटल विश्वास है कि अपनी भाषा का माध्यम होना हमारी स्फूर्ति और विकास के लिये अनिवार्य और आवश्यक है। पर यह विदेशी भाषा का बोझ सारे देश के मस्तिष्क को दबाये रख सका है इसका एक सबूत यह भी है कि यद्यपि इतने बरसों से यह व्यवस्था प्रचलित है पर आज की आधुनिक विद्या और विज्ञान में हमारे लोगों की हाल तक बहुत कम देन हुई है। जब से राष्ट्रीय आन्दोलन बढ़ा और जैसे जैसे वह ज़ोर पकड़ता गया राजकीय विषयों के अलावे दूसरी दिशाओं में भी हमारी बुद्धि कुछ खुलने और खिलने लगी और हमारे लोग कुछ न कुछ कर दिखला सके हैं।

केवल माध्यम का ही बोझ हमारी इस शिक्षा पद्धति ने हम पर नहीं लादा। यद्यपि यह पद्धति यह कह कर प्रसारित की गयी कि हमारा प्राचीन साहित्य आधुनिक विद्याओं से वंचित

था तो भी आधुनिक विद्याओं, विज्ञानकलाओं और उद्योगों से सम्बन्ध रखने वाले विषयों का हमारे पाठ्यक्रम में बहुत कम स्थान बहुत दिनों तक रहा। पिछले दो सौ वर्षों में नवविज्ञान ने संसार को बहुत कुछ सिखाया और दिखाया है। उसके चमत्कार आज सभी लोग देख रहे हैं और उसके शुभ और अशुभ परिणामों से लाभ और हानि उठा रहे हैं। अंग्रेज़ी शिक्षा पद्धति इस देश में एक सौ से अधिक वर्ष हुए जारी की गई थी और हमारी पुरानी यूनीवर्सिटीयो को स्थ पित हुए भी लगभग सौ बरस हो गये हैं। पहले प्रायः पचास बरसों में विज्ञान का शिक्षाक्रम में स्थान नहीं के बराबर था ; जहां तहां मैडिकल कालिज तथा इंजिनियरिंग के लिये दो छोटे मोटे विद्यालय खोल दिये गये थे, क्योकि उनसे निकले हुये विद्यार्थियों की भी शासन को आवश्यकता थी।

पर उसे अधिक आवश्यकता ऐसे लोगों की थी जो उस के काम में दफतरों में और कचहरियों मे मदद कर सके इस लिये शिक्षाक्रम में ऐसे ही विषय बहुत करके रखे गये जो उस तरह के लोगों के लिये आवश्यक समझे गये थे। कृषिप्रधान देश मे मैं नहीं जानता कि कृषि सम्बन्धी विद्या और अनुभव देने वाले कोई एक भी विद्यालय प्रायः पचास बरसों तक इस देश मे कायम किया गया या नहीं।

आधुनिक उद्योग और यन्त्रीकरण द्वारा उनको चलाना और उन्नत करना इस युग का सब से बड़ा क्रान्तिकारी काम यूरुप में हुआ है। इस का आरम्भ प्रायः डेढ़ सौ बरस से अधिक हो गये इंगलैंड में हुआ था और हिन्दुस्तान से जो असख्य धन अंग्रेज़ों के हाथों में उन दिनों मे आया उस के द्वारा वे उद्योगीकरण में और देशों के मुकाबले आगे रहे पर इस तरह के उद्योगीकरण का कोई काम हमारे शिक्षालयों द्वारा इस देश में हाल तक नहीं होता था और आज भी यद्यपि कालिजों और यूनीवर्सिटियो की सख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है और बहुतेरे उद्योगीकरण के पक्षपाती हैं तो भी ऐसे विषयों को जिन से उसे सहायता मिल सके अभी तक पर्याप्त क्या मामूली स्थान भी नहीं मिला है।

अंग्रेज़ी ज़माने में न मिलना अंग्रेजों के दृष्टिकोण से स्वाभाविक भी था क्योंकि वे अपने उद्योगों को बढावा देना चाहते थे और हमारे देश को अपने कारखानों के लिये अधिकतर कच्चे माल जुटाने और तैयार माल खपाने का उपयुक्त क्षेत्र समझते थे। पिछली शताब्दियों में लड़ाई के बाद रूई की कमी इंगलैंड के कारखानो की हुई तब से इस देश में ऐसी रूई पैदा करने का प्रयत्न आरम्भ किया जो अंग्रेज़ी कारखानों के लिये अधिक उपयोगी और लाभदायक सिद्ध हो। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा पद्धति का केवल मस्तिष्क पर ही बोझा नहीं रहा उसकी दिशा भी ब्रिटिश साम्राज्य के लाभ की दृष्टि से ही निर्धारित की गयी। इस का फल यह हुआ कि आधुनिक विद्या और आधुनिक उद्योगों में भी अभी तक और देशों के मुक़ावले में हम पीछे पड़े हुये हैं। यहा इस विषय पर विचार करना असंगत है कि हम कहां तक इस आधुनिक औद्योगिक होड़ में पड़ना देश के लिये लाभदायक समझते हैं। वह एक दूसरा विषय है और इसमें मतभेद की काफ़ी गुंजाइश है। यह विचार यहां पर इसलिये असंगत है कि जो लोग इस पद्धति के प्रचारक व प्रसारक थे वे आधुनिक योरोपीय संस्थाओं और समाजगठन के विरोधी नहीं दृढ़ पोषक

और सहायक थे तो भी इस देश में उसका प्रसार उन्होंने नहीं किया और शिक्षा यंत्र को ऐसा रखा जिससे उसके प्रसार में कोई सहायता नहीं मिली।

चाहे हम जिस भी दृष्टिकोण से आधुनिक पद्धति पर विचार करे यह स्पष्ट हो जाता है कि इस में मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता है और सभी यूनीवर्सिटियों और शिक्षा सम्बन्धी संस्थाओं का यह कर्तव्य हो जाता है कि वे अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करें और पाठ्यक्रम को और माध्यम को बदलें।

इस यूनीवर्सिटी के सामने अपनी भाषा को माध्यम बनाने की उपयोगिता के सम्बन्ध में मुझे बहुत कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उसकी उपयोगिता को आपने सिद्धान्त रूप से मान लिया है और कार्यरूप में भी उसे दाखिल करने का काम आपने आरम्भ कर दिया है। इसके लिये मै आपको बधाई देना चाहता हूं और आशा करता हूं कि आप इस शुभ प्रयत्न में सचेष्ट रहेंगे और सभी विघ्न बाधाओं को दूर करने में सफलता प्राप्त करेगे और उन लोगों को भी जो इसकी उपयोगिता और सामर्थ्य में विश्वास नही रखते अपने सफ़ल प्रयत्न द्वारा विश्वास पैदा कर सकेंगे। इसको सफ़ल करने के लिये दो प्रकार के प्रयत्न की आवश्यकता है। हमारी भाषाओं के लिये आधुनिक वैज्ञानिक विषय नये है और इसलिये उनमें उनके लिये पर्याप्त शब्दावलि नही है और जो है भी वह प्रचलित नही है। ऐसी शब्दावलि का तैयार करना और प्रचार करना पहली आवश्यकता है। इस दिशा में भी आप की यूनीवर्सिटी और सरकार प्रयत्नशील है। और इसके लिये भी मै आप को बधाई देता हूं। दूसरा काम यह है कि हमारी शिक्षालयों की पद्धति और पाठ्यक्रम में भी उपयुक्त परिवर्तन किया जाये। यह शायद अभी जैसा चाहिये वैसा नही हो रहा है और मै चाहूंगा कि केवल इसी यूनीवर्सिटी में ही नही हमारी सभी यूनीवर्सिटिया इस ओर ध्यान दें।

विद्या का महत्व बहुत है। मनुष्य के मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक और आज के ज़माने मे आर्थिक उन्नति के लिये भी विद्या आवश्यक है। इस लिये विद्या प्रचार के जो साधन हैं वे ऐसे होने चाहिये जो विद्यार्थियों को प्रत्येक प्रकार की उन्नति प्राप्त करने के योग्य बना सकें। हम यदि और बातों को गौण मान ले और अर्थकरी विद्या को ही श्रेष्ठकर समझें तो भी पद्धति में बड़े परिवर्तन की आवश्यकता है। अब तक जो पद्धति प्रचलित है उसने शिक्षित और अशिक्षित दो विभागो में जनता को विभक्त कर रखा है और एक का दूसरे से सम्बन्ध बहुत करके विच्छेद कर दिया है। शिक्षित समाज का रहन सहन, खानपान सब कुछ अधिक खर्चीला हो गया है और उसकी आवश्यकताए कुछ ऐसी हो गई है जो गांवों में पूरी नही हो सकतीं। इस लिये शिक्षित समाज बहुत करके शहरों की तरफ़ चला आ रहा है और गांव उसकी विद्या और अनुभव से वंचित होते जा रहे है। इसके अलावा खर्च बढ़ गया है पर इस विद्या से सम्पत्ति के उपार्जन की योग्यता नही बढ़ती। जो दूसरे पैदा करते है उसको ले लेने की शक्ति भले ही बढ़ती हो पर उस से देश का दारिद्र दूर नही हो सकता और न उसकी सम्पत्ति में कोई वृद्धि हो सकती है। वह तो तभी हो सकता है जब धन पैदा करने की शक्ति में वृद्धि हो। पर वर्तमान अवस्था में तो सिर्फ़ पैदा हुये धन के बंटवारे से उन कुछ लोगों को अवश्य लाभ हो जाता है जिनको दूसरों का पैदा किया हुआ धन किसी न किसी रूप में और किसी न किसी कारण से मिल जाता है। पर देश

की सामूहिक सम्पत्ति तो जैसी थी वैसी रह जाती है। बल्कि अगर इसका कुछ असर होता है तो बुरा होता है क्योंकि जब पैदा करने वाले यह देखते हैं कि उनकी पैदा की हुई सम्पत्ति दूसरों को ही किसी न किसी कारण से चली जाती है तो उनको अधिक पैदा करने का उत्साह भी नहीं रह जाता है और इस प्रकार अन्त में धन की हानि सारे देश के लिये होती है। इसलिये हमारी शिक्षा पद्धति ऐसी होनी चाहिये जो केवल ऐसी विद्या ही सिखावे जिसके द्वारा शिक्षित लोग सिर्फ़ दूसरे के कमाये हुये धन के भागीदार ही न हों बल्कि उसके बढ़ाने में कुछ मददगार भी हों। यह एक मानी हुई बात है कि जो आधुनिक शिक्षा पा लेता है वह बहुत करके उस काम के योग्य नही रह जाता है जो उसके घर वाले पहिले किया करते थे और जिसके द्वारा वह गुज़ारा कर लिया करते थे। किसान का लड़का शिक्षा पा कर बेहतर किसान नही होता। उसे खेत में जाकर हल को हाथ में पकड़ने मे या किसी दूसरी तरह से कोई शारीरिक परिश्रम करने में शर्म लगती है; उसी तरह बढ़ई का लड़का अपने पैतृक काम को करना नही चाहता। शिक्षित होने के अर्थ ही यह हो जाते हैं कि शारीरिक परिश्रम करने की योग्यता नही तो अनिच्छा और ऐसे कामो के सिवाय जिन में लिखने पढ़ने अथवा ज़बान को हिला कर काम निकल सकता है दूसरे किसी काम के प्रति अश्रद्धा। जब महात्मा गांधी जी ने बुनियादी तालीम में शिक्षा किसी धन्धे या उद्योग के द्वारा दिये जाने की बात कही तो उसमे बेहतर शिक्षा देने के अलावा यह भावना भी थी कि हाथों से और शरीर से काम करने में जो एक प्रकार की हीनता मानी जाती है वह दूर हो जाये और शरीर श्रम की प्रतिष्ठा बढ़े। मै मानता हू कि वह देश के लिये केवल इसी दृष्टि से आवश्यक नही है कि यदि उसे ठीक रीति से चलाया जाये तो शिक्षा का खर्च बहुत करके उसी से निकल सकेगा और इस तरह शिक्षा को सस्ता किया जा सकता है बल्कि वह शिक्षितों के जीवन के सुधारने में भी बहुत करके सफ़ल हो सकती है और ऐसा शिक्षित वर्ग उसके द्वारा तैयार हो सकेगा जो दूसरो के पसीने द्वारा उत्पादित धन का केवल बंटवारा ही नही करेगा बल्कि इजाफ़ा भी।

आज जिस तेज़ी के साथ विज्ञान द्वारा उद्योगों की उन्नति हो रही है उस दौड़ में अगर भारत कोई स्थान पाना चाहे तो उसके लिये यह आवश्यक हो गया है कि वह अपनी सारी शिक्षा पद्धति को बदले। देश में केवल बौद्धिक शिक्षा को ही महत्व न देकर कुछ नया ढंग निकालना है जिस में वह भेद जो आज शहरी और ग्राम जीवन में पैदा हो गया है और दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है दूर हो जाये और यह भय भी न रहे कि कभी कोई व्यक्ति अथवा वर्ग ऐसा न हो जाये जो दूसरो के शोषण पर ही निर्भर करे और यह निश्चित हो जाये कि सभी स्वयं धनोत्पादन में हाथ बंटायेंगे। मै देखता हूं कि चारों ओर नये स्कूल, नये कालिज और नई यूनीवर्सिटियां भी खुलती जा रही हैं और इन में विद्यार्थियो की सख्या भी बहुत बढती जा रही है। पर यह कहना कठिन है कि यह सभी देश के लिये लाभदायक साबित होंगी। क्योंकि इन में बहुत करके वही पुरानी पद्धति और पाठ्यक्रम से काम लिया जा रहा है। मै चाहता हूं कि जब कही इस तरह की संस्थाओ की स्थापना की इच्छा या मांग हो वहां इस पर पूरी तरह विचार कर लिया जाये कि पुरानी लकीर पर चलने से कोई लाभ है या नही और अगर नही तो इस नयी संस्था द्वारा हम किस तरह कुछ नया रास्ता निकाल सकेगे और लाभ पहुंचा सकेंगे।

यूनीवर्सिटी कमीशन ने ग्राम यूनीवर्सिटियों की बात कही है। महात्मा गांधी जी की बताई हुई नयी तालीम की योजना हमारे सामने है। क्या इनके रहते हुए भी हम पुरानी लकीर के फ़कीर

बने रहेंगे। तात्पर्य यह है कि हमारे विश्वविद्यालयों का संबंध पूर्ण भारतीय ज़ीवन से होना चाहिये न कि केवल राजसत्ता से जैसा कि अब तक है।

भारतीय जीवन से संपर्क होने का पहला अर्थ यह है कि विश्व विद्यालयों में वे विषय अवश्य पढ़ाये जाने चाहियें जिन से भारत की आर्थिक उन्नति करने में पूरी पूरी सहायता मिले। यह बात तो सब जानते है कि भारत के आर्थिक जीवन का मूल आधार खेती-बाडी है। हमारे देश में कितने ही और उद्योग धंधे क्यों न हो जायें और अनेक होने भी चाहिये और होगे भी किंतु जहां तक मै समझता हूं हमेशा ही खेती हमारा मुख्य और प्रधान उद्योग होगी। यदि यह विचार ठीक है तो स्पष्ट है कि हमारी शिक्षा में कृषि विज्ञान और कृषि संबंधी अन्य विज्ञानों की प्रधानता होनी चाहिये। यदि आज विश्वविद्यालयों के सिलेबस पर दृष्टि डाली जाये तो पता चलेगा कि कृषि विज्ञान और तत्सबंधी अन्य विज्ञानों का उनमें बहुत ही गौण स्थान है। कैसी विडम्बना है कि भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कृषि की शिक्षा का ही लगभग अभाव हो। यदि हमारे देश में आज खाद्यान्न की कमी है और यदि हमारा कृषि उद्योग उतना लाभदायक नही जितना कि अन्यत्र है तो उसका एक कारण यह भी है कि हमारे यहां आधुनिक कृषि शिक्षा का लगभग अभाव ही रहा है और जो कुछ प्रबन्ध है भी वह भी ऐसा कि वहां के पढ़े लिखे विद्यार्थियों को राजसेवा के सिवाय और किसी कृषि संबधी कार्य में दिलचस्पी ही नही रहती। यदि कृषि शिक्षा लाभदायक होनी है तो वह यहा की भाषा में यहा की स्थितियों का ध्यान रखकर और कम खर्चीली होनी चाहिये तभी उसका लाभ हमारी कृषि के लिये होगा। कृषि के बाद हमारी आर्थिक उन्नति कपड़े के उद्योग पर निर्भर करती है। अतः हमारे विद्यालयों में कपड़ा संबंधी विज्ञान के पढ़ाने का भी प्रबन्ध होना चाहिये। ज्यादा ब्योरे में न जाकर इतना कह देना ही मै काफ़ी समझता हूं कि विद्यालयों के सिलेबस ऐसे होने चाहियें जिनका भारतीय आर्थिक जीवन से घनिष्ट संबध हो।

दूसरी बात जो आवश्यक प्रतीत होती है वह यह है कि विद्यालयों में ऐसे आंकड़े होने चाहियें जिनसे यह पता चल सके कि उस वर्ष में किस आर्थिक क्षेत्र में कितने शिक्षित कर्मियों की आवश्यकता है और उनके आधार पर विद्यार्थियों को सलाह दी जानी चाहिये कि वह कौन से विषयों का अध्ययन करें। मै समझता हूं कि इस बारे में कुछ सुविधा इस बात से हो सकेगी कि विश्वविद्यालय राज्य में के उद्योग, लोक सेवा और कृषि संबंधी सस्थाओं इत्यादि से अपना निकट संपर्क रखे। यदि विद्यालयों में विद्यार्थियों को इस प्रकार का दिगदर्शन मिलने लगा तो वह समय और शक्ति जो आज कल व्यर्थ में बरबाद जाती है काम में आने लगेगी। आजकल अक्सर यह होता है कि विद्यार्थी ऐसे विषय पढ़ने में अपना समय लगाता है जो बाद में उसके किसी काम में नही आता पर यदि इस प्रकार योजनात्मक शिक्षा दी जाये तो देश का धन और युवकों की शक्ति व्यर्थ नष्ट होने से बच जायेगी।

तीसरी बात जिसकी आवश्यकता है वह यह है कि शिक्षा संस्थाओं को अपने विद्यार्थियों में यह मनोभाव पैदा करना चाहिये कि शिक्षा का ध्येय सृजनात्मक सेवा है न कि उपभोग या सजधज अब तक शिक्षित वर्ग यही समझता है कि शिक्षा या तो सरस्वती का संगीतमय अभूषण है और

या लक्ष्मी का सुखद वरदान। ऐसे बहुत से लोग हैं जो यह समझते हैं कि विद्या का प्रयोजन केवल यह है कि वे सभा समाज में करीने के साथ उठ बैठ सकें, ढंग से वस्त्र पहन सकें और शालीनता से बातचीत कर सकें। इस प्रकार शिक्षा को वे ऐसा आभूषण समझते हैं जिसके द्वारा उनके मन का सौन्दर्य निखर जाता है। यद्यपि इस बात में कुछ तथ्य है पर यह पूर्णतया ठीक नहीं है। इस के पीछे केवल यही सचाई है कि विद्या निरे पशुमानव को दिव्य-मानव बनाती है। वह उसे प्रकृति प्रदत्त वासनाओं से ऊपर उठाकर वह शक्ति प्रदान करती है कि वह प्रकृति की देन को अपनी सृष्टि से कही अधिक सुन्दर उपयोगी और विस्तृत बना ले। किंतु जहां उसमें यह सचाई है वही उसके अन्दर यह खतरा भी है कि कही इस विचार के कारण शिक्षितवर्ग अपने को अन्य मानवों से अलग और विशेषाधिकार वाला वर्ग न समझले। विद्या मनुष्य को दूसरा जन्म अवश्य प्रदान करती है किंतु उसका यह अर्थ नही कि मानव द्विजत्व के उच्च शिखर पर बैठकर अन्य मानवों को क्षुद्र समझने लगे। शिक्षितों को तो यह ध्यान रखना चाहिये कि वे जनता की उदारता और सहारे से ही सरस्वती की उपासना करने की सुविधा पा सके हैं और इसीलिये उनकी विद्या उनके पास उन के देश वासियों और पूर्वजों की ऐसी थाती है जिसे उन्हें ब्याज सहित अपने भाइयों को फिर लौटा देना है। अतः विद्या को आभूषण न मानकर उसे तो सेवा का बैज ही मानना चाहिये। इसी प्रकार विद्या को केवल उपभोग की वस्तु न समझना चाहिये। अर्थात् केवल इस आधार पर कि वह शिक्षित है किसी भी व्यक्ति को जातीय आय में से मुख्य अश की माग न करनी चाहिये। उसको यह मानना चाहिये कि वह जातीय आय में से किसी अंश के लेने का तभी अधिकारी होगा जब वह अपनी विद्या के प्रयोग से जाति की सास्कृतिक या आर्थिक समुन्नति और अभिबृद्धि करता है। अतः विश्वविद्यालयों और अन्य शिक्षा संस्थाओं का धर्म है कि वे अपने विद्यार्थियों में यह मनोभावना पैदा करें कि विद्या जीवन की सृजन शक्ति का ही दूसरा नाम है और जब तक वे अपने जीवन को सृजनात्मक कामों में नही लगाते तब तक वे न तो विद्या और न जीवन के प्रति वफ़ादार साबित होंगे।

आप जैसे शिक्षित युवक युवतियों का भी यह धर्म है कि वे शिक्षा के दायित्व और धर्म को ठीक ठीक पहिचानें। हो सकता है कि इस धर्म के निभाने में आपको पर्याप्त कठिनाइयों का सामना करना पड़े और यह भी हो सकता है कि इसके दायित्व को पूरा करने में आप लक्ष्मी के वरदान से वंचित रहें। किंतु आपको यह स्मरण रखना है कि आपका जीवन तभी समृद्ध होगा जब सारी जाति का जीवन समृद्ध हो। यदि आपने जाति की गरीबी की अवस्था में अपने लिये समृद्धि चाही तो आप अपने शिक्षा धर्म के सच्चे भक्त सिद्ध न होंगे। उस हालत में तो आप उन लोगों के भाई बन्द हो जायेंगे जो अपने स्वार्थ के लिये दूसरों के हितों का हनन करने के लिये तैयार रहते हैं। मैं जानता हूं कि आपका भावुक हृदय उस बात को कभी पसन्द न करेगा। अतः कमर कस कर इस बात के लिये तैयार हो जाइये कि जब तक पूरा देश समुन्नत, सुसंस्कृत और समृद्ध नही हो जाता तब तक आप अपने सुख दुख का विचार छोड़कर ऐसे सृजनात्मक कामों में लगे रहेंगे जिन से देश की आर्थिक और सास्कृतिक उन्नति हो सकती है।

अनन्त काल से मानव पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान की ज्योति को लेकर संसार और समय के मध्य दौड़ रहा है। जब तक शरीर में प्राण रहता है तब तक वह इसे ऊंचा उठाये ही दौड़ता चला जाता

है और थक कर अनन्त निद्रा में गिरते समय दूसरे सशक्त और अथकके हाथों में इसे थमा देता है। इस दौड़में आपके हाथ में यह ज्ञान ज्योति इस विश्व विद्यालय ने थमा दी है। आप का धर्म है कि इसे आप निरन्तर जलती रखें और भविष्य के रहस्य भरे अन्धकार को ज्योतिर्मय करते हुए दौड़ते चले जांय जब तक कि आप में प्राण रहे और अन्त में उस को अपनी भावी सन्तान को दे जायें। ये महान उत्तरदायित्व आप पर है और मेरी भगवान् से शुभ कामना है कि वह आप को इस दायित्व को पूरा करने में सफलता दे।

अनुसूचित जातियों द्वारा अभिनन्दन

अनुसूचित और आदिवासी जातियों की ओर से दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब में युगान्तर हाई स्कूल में तारीख २६-१२-५० को राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम श्री राज्यपाल साहब, बहनो और भाइयो,

आज इतने भाइयों और बहनों से मिल कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। उसका विशेष कारण यह है कि आप उस वर्ग के लोग हैं जो वर्ग बहुत पिछड़ा समझा जाता है और जिनकी उन्नति करना हम सब का परम कर्त्तव्य है। आपने यह मानपत्र दिया है उससे आपने अपने प्रेम और उदारता का परिचय दिया है और इसके लिये मैं आप सब का बहुत अनुग्रहीत हू।

आपने ठीक कहा है कि जो संविधान हमारे देश मे बना है उस मे आप लोगों के लिये जो सरक्षण दिया गया है वह केवल दस वर्षों के लिये ही दिया गया है। हम चाहते है कि हमारे देश में सभी लोग इतने उन्नत हो जायें और इतने अच्छे हो जायें कि हम मे से किसी के लिये विशेष संरक्षण की जरूरत न रह जाये और हम आशा रखते है कि जो दस वर्षों की अवधि दी गयी है उसके अन्दर आप इतने उन्नत हो जायेंगे कि आपको उस संरक्षण की आवश्यकता नही मालूम होगी। आपने देखा होगा कि संविधान मे यह भी एक नियम है कि एक ऐसा व्यक्ति नियुक्त किया जाये जो इन सब बातों को हमेशा देखता रहे और जांचता रहे कि तमाम सूबों मे किस तरह आपके प्रति व्यवहार हो रहा है और आपकी उन्नति के लिये शिक्षा के बारे में क्या क्या प्रयत्न किया जा रहा है अभी हाल में ही थोड़े दिन हुए इस नियम के अनुसार एक ऐसे सज्जन को हमने नियुक्त किया है जिन्हों ने पिछले २५ वर्ष तक आप लोगों की सेवा में अपनी जिन्दगी बितायी है और जो आपके कष्टों को, आपकी जरूरतों को अच्छी तरह से जानते और समझते है और मैं आशा करता हू कि वह सभी जगहों में दौरा करेंगे और देखेंगे कि कहां पर किस तरीके से आपको सहायता देने और उन्नत करने का क्या क्या प्रयत्न किया जा रहा है। संविधान में इस बात का पूरा मौका है और इसके लिये पूरा प्रोत्साहन सभी सरकारों को दिया है कि उनके अन्दर जितने ऐसे लोग है जो पिछड़े समझे जाते हैं उन की वे उन्नति करें और मेरा विश्वास है, और जहां तक मुझे खबर है मैं यह कह सकता

हू, कि सभी प्रान्त इस बारे मे पूरे सचेष्ट हैं और इस प्रयत्न में लगे हुए हैं कि पिछड़े हुए लोगों की उन्नति करके उनको और लोगों के मुकाबले में लाकर बैठा दें जिसमें इस तरह के संरक्षण की कोई आवश्यकता न रह जाये। जहां तक केन्द्रीय सरकार का सवाल है वह इस बात में सचेष्ट है और वह प्रयत्न करती रहेगी कि सभी जगहों पर हर तरह से आपको मदद पहुचायी जाये और आप उन्नत हों। यह एक बहुत पुराना पाप है इसको हमें सक्रिय रूप से हटाना चाहिये। महात्मा गान्धी जी ने और महात्मा गान्धी के पहले कुछ महापुरुषों ने इस बात का प्रयत्न किया और इस काम की नींव उन्होंने डाली और जब हमारे हाथ में अधिकार नहीं था उस वक्त भी हमने गैर सरकारी तरह से यह प्रयत्न किया कि किसी तरह से हम इन कष्टों को दूर कर सकें। आपको मालूम होगा कि जहां जहां कांग्रेस के लोगों को मौका मिला उन्होंने इस तरह का कानून भी बनाया जिससे अछूतपन दूर हो और मन्दिरों में आप सभी के जाने की व्यवस्था हो जाये। जब अधिकार हमारे हाथ में आया तो हमने संविधान मे इस चीज़ को रख दिया कि किसी तरह से अछूतपन को मानना जुर्म समझा जायेगा और जो कोई किसी तरह से अछूतपन बरतेंगे वह मुजरिम समझे जायेंगे और उनको सज़ा होगी। जहां तक संविधान का सवाल है हम ने इसको पूरा कर दिया है पर केवल संविधान में ही इस चीज को रख देने से यह काम पूरा नहीं हो जायेगा। यह समाज के हर व्यक्ति का काम है कि वह इस चीज़ को बुरा समझे और इस पाप को दूर करे। मुझे इस बात की आशा है कि यह काम जल्द हो सकेगा। यह बहुत पुरानी रूढ़ि चली आयी है और उसको हटाने में कुछ समय लगता है। यही कारण है कि हम इसे पूरी तरह से दूर नहीं हटा सके हैं। पर आप विश्वास रखें कि इसकी जड खोखली हो गयी है और समय पाकर जल्द से जल्द कहीं इसको न तो कोई देखेगा और न सुनेगा। आज से तीस वर्ष पहले जब गान्धी जी ने इस काम को शुरू किया था उस समय के भारत को और आज के भारत को यदि आप मिला कर देखेंगे तो आपको जमीन आसमान का अन्तर मालूम होगा। आप देखेंगे कि उस समय जो आपस मे मतभेद था, जो अछूतपन था वह बहुत हद तक दूर हो गया है और अगर इस समय भी कुछ हद तक वह मौजूद है तो उसे दूर करना है और जो अभी तक आपस में भेद रह गया है वह बहुत दिनों तक नहीं रह सकता। इसलिये जिन भाइयों को इस कुप्रथा का शिकार होना पड़ा है उनसे मेरा अनुरोध है कि वे थोडे दिनों तक और सब्र से देखें कि किस तरह जिस चीज़ को हम ने संविधान में रखा है उसको कार्यरूप में कर के उनकी शिकायतों को हटा देते है। दूसरे भाइयों से मेरी प्रार्थना है कि वे इस बात को समझें कि नव भारत में ऐसी चीज़ों का स्थान नहीं और जहां कही थोड़ी बहुत यह चीज रह गयी है उसको शीघ्र से शीघ्र दूर करने का प्रयत्न करें।

यह तो एक सामाजिक बात हुई। मगर आपकी आर्थिक उन्नति और गरीबी का जो पाप है उसे भी दूर करना है और इसमें जहां तक सहायता गवर्नमेन्ट दे सकती है उतनी सहायता वह देगी। मगर दूसरे लोगों को और गैर सरकारी संस्थाओं को भी सहायता देनी चाहिये। इस गरीबी को दूर करने में शिक्षा एक अच्छे से अच्छा

साधन होगी सलिये शिक्षा प्रचार पर खास जोर दिया गया है और आप में से जितनों को हो सकेगा छात्रवृत्ति देकर और दूसरी तरह से प्रोत्साहन देकर शिक्षित बनाने और उन्नत करने की ओर ध्यान दिया जायेगा। इस ओर भारत सरकार और प्रान्तीय सरकारें प्रयत्न कर रही है और मै आशा करता हूं कि उनका प्रयत्न सफल होगा और दस वर्ष के अन्दर ही आप और लोगों के मुकाबले में हो जायेंगे कुछ लोग ऊंचे और आप पिछड़े समझे जाते हैं वह बात नहीं रह जायेगी। सभी बराबरी के दर्जे में आ जायेगे और इस समय जिस तरह ऊंचे समझे जाने वाले लोग आपस में बर्ताव करते हैं उसी तरह से सभी एक दूसरे के साथ बर्ताव करने लगेगे और न कोई ऊंचा समझा जायेगा और न कोई अछूत। ईश्वर की कृपा होगी तो हम अवश्य इसमें सफल होंगे।

आपने बड़े प्रेम और उत्साह से मेरा स्वागत किया इसके लिये मै आपको धन्यवाद देता हूं।

गवर्नर साहब ने ठीक ही सुझाया कि चान्दी के कास्केट में मानपत्र देने का काम ज़रूरी नही, मान तो हृदय से होता है सोने या चांदी के कास्केट या लकड़ी के कास्केट की भी ज़रूरत नही थी। आपने अपना हृदय मुझे आज भी दिया है और इसके पहले भी दिया था फिर भी आपने काठ के कास्केट में मानपत्र मुझे देने का निश्चय किया यह सुन्दर हुआ। यह काठ का मानपत्र है पर मै इसे चांदी और सोने की चीज़ से अधिक मूल्यवान समझता हूं क्योंकि मै समझता हूं कि इसमें आपका प्रेम भरा है। इसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद।

नागपुर में नागरिक अभिनन्दन

मध्य प्रदेश की म्यूनिसिपैलिटियों और जनपद सभाओं द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब में तारीख २६-१०-५० को राष्ट्रपति जी ने कहा---

श्री राज्यपाल महोदय, नगरपालिकाओं के अध्यक्ष और सदस्यगण, जनपद सभाओं के अध्यक्ष और सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

मै आप का हृदय से आभारी हूं कि आप ने प्रेम और उत्साहपूर्वक मेरा स्वागत किया। आप ने यह ठीक समझा है कि आप इस सूबे में एक बहुत बड़े प्रयोग मे लगे हुए है और वह प्रयोग नगर पालिकाओ और जनपद सभाओं को सफ़ल बनाने का प्रयोग है। अब बहुत सूबों में यह काम एक प्रकार से आरम्भ किया गया है। मुझे जहां तक मालूम है यहां पर पहले पहल आपने अध्यक्षों का चुनाव चुने हुए सदस्यों द्वारा रखा है और जितने मताधिकार वाले लोग हैं सब को यह हक दिया है कि वह स्वतन्त्र हो कर चुनाव करें और थोड़े ही दिन पहले जनपद सभाओं की स्थापना भी सारे सूबे में की गयी है।

यह दोनों बड़े महत्वपूर्ण काम हैं और मैं समझता हूं कि अभी तक यह प्रयोगावस्था में ही है। लेकिन होनहार बिरवान के होत चिकने पात, जो होनहार पौधे होते है उन के पत्ते आरम्भ से ही अच्छे और देखने में सुन्दर होते है। जहां तक मैंने देखा और सुना है इस पौधे के पत्ते चिकने हैं और इससे आशा बंधती है कि समय पा कर यह प्रयोग सफ़ल बन सकेगा और सारे देश के सामने यह एक नमूने के रूप में हो जायेगा।

अन्य देशों में नगरपालिकाओं की यह एक पद्धति है कि जितने वहां के बड़े बड़े राजनीतिज्ञ या संसद् के सदस्य होते है वे पहले इन्ही संस्थाओं में काम करते है और काम करके सफ़लता प्राप्त करते हैं। इंगलैंड में जितने बड़े बड़े पालियामेंटेरियन होते हैं, जितने सफ़ल शासक होते हैं उनमें बहुतेरे तो म्युनिसिपल कारपोरेशन, म्युनिसिपल काउन्सिल आदि में सफ़लता प्राप्त करके वहां तक पहुंचते हैं। इन नगर पालिकाओं में उनको इस बात का पूरा अवसर मिलता रहता है कि वहां वे काम करें और जनता की सेवा करके इन संस्थाओं द्वारा वे ऐसा अनुभव प्राप्त करें जिसे वे सारे देश के काम में लगा सकें। इस प्रकार ये लोगों को तैयार कर सकेंगी जो राजसत्ता में काम कर सकेंगे और वहां पर जो कुछ होता है उसे सफलता पूर्वक कर सकेंगे। इस तरह के जनपदों को भी अब यह अच्छा सुअवसर मिला है कि गांव के लोगों को भी वे इस काम के लिये तैयार करें और उनके प्रतिनिधियों को ऊंचे से ऊंचे स्थान तक पहुंचा दें और वहां पर उनको जो कुछ अनुभव मिले उसे राज्य के काम में लगाकर सारी जनता को लाभ पहुंचायें। मै इसलिये आपके इस राज्य को और इन जनपदो और नगर पालिकाओं के आप सब सदस्यों को बधाई देना चाहता हू कि आप को यह अवसर मिला है और इस सुअवसर के साथ साथ आप पर यह जवाबदेही भी आयी है कि आप उसे सफ़ल बनावें।

इस वर्ष सारा देश बुरी स्थिति में है। आप जानते है कि भारतवर्ष के उत्तर के बहुत बड़े हिस्से में पिछले कई महीनो से वर्षा नही हुई और इसका फल यह हुआ है कि धान की फ़सल बहुत करके मारी गयी और साथ साथ गेहूं की फसल को भी नुकसान पहुचने का डर है। इसके पहले बहुत जगहों मे बहुत पानी बरसा और बाढ़ आयी और उससे भी फसलों को बहुत नुकसान हुआ और इस तरह अति वृष्टि और अनावृष्टि के दोनों प्रकोप से आज देश बहुत कष्ट में पड़ा हुआ है। अन्न का कष्ट भारत जैसे कृषिप्रधान देश में हो यह आश्चर्य की बात मालूम होती है। पर यह बात हम आज ही नही कुछ दिनों से देख रहे हैं और आज हमको विदेशों से अन्न मंगाकर अपने भाई और बहनों की क्षुधा को संतुष्ट करने का प्रयत्न करना पड़ रहा है। बात यह है कि यदि हमारे देश के लोग कृषि के काम को ठीक तरह से सम्भालें तो शीघ्र ही यह कठिनाई दूर हो जाये क्योंकि ईश्वर ने हमारे देश की भूमि को बहुत उर्वरा बनाया है और देश में जल भी है और हमारी जनता परिश्रम से भागने वाली भी नही है। पर बात ऐसी हो गयी है कि वे सब साधन

होते हुए भी आज देश को अन्न का कष्ट सहना पड़ रहा है। इसलिये हम सब को इस बात पर दृढ़ हो जाना चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से, अपने परिश्रम से, अपने साहस से इस देश में कम से कम अपने खाने लायक अनाज उपजा लें और यह काम तभी सफल हो सकेगा जब इस देश के सभी वर्ग के लोग और विशेष कर के वे लोग जो खेती करते हैं इस काम मे तेजी से लग जायें। मैंने सुना है और जहां तक मैंने स्वयं इस विषय का अध्ययन किया है उससे ऐसा मालूम होता है कि अन्न की उपज में यदि सौ में दस की वृद्धि हो जाये अर्थात् जहाँ १० मन पैदा होता है वहां १ मन और याने ११ मन पैदा होने लग जाये तो अन्न का कष्ट देश से दूर हो सकता है। मैं अपने अनुभव से इतना कह सकता हूं कि हमारे लोगों में कृषि का इतना ज्ञान है कि यदि उनके पास साधन हो जाये तो १० मन के बदले ११ मन पैदा करना उनके लिये कठिनसाध्य नही है, वे इसे कर सकते हैं। यह देश और राज्य का काम है, जनसेवकों का यह काम है कि अगर वे इस कमी को दूर नहीं कर सकते हों तो कम से कम वे लोग किसानों तक साधन पहुंचाने का काम तो ठीक करें। देश के बहुतेरे किसान ऐसे हैं जो इन साधनों को अपने बूते से नहीं प्राप्त कर सकते हैं। अगर १०,५ किसान मिल जायें तो मैं समझता हूं कि इसे पूरा करने में कोई कठिनाई नही है। मगर इस तरह का संगठन अभी देश में नहीं हुआ है। देश में इस तरह का संगठन करना सभी राजनीतिक संस्थाओं और विशेषकर गर्वनमेंट का कर्त्तव्य है। मैं तो यह आशा रखता हूं कि जब सारे देश के लोग इसे समझ जायेंगे कि यह उनका कर्तव्य है कि देश को इस संकट से मुक्त करें और वे इस काम मे लग जायेंगे तो वे इस काम को पूरा कर सकेंगे। अभी भी बहुत तंग खयाली से, सकुचित भावना लेकर हम में से प्रत्येक अपना ही खयाल करके अपना प्रयत्न करता है। मगर यह एक ऐसा काम है कि इसमें सारे देश को सामने रखकर सब के प्रयत्न करने की ज़रूरत है और चाहे एक गांव हो, चाहे एक ज़िला हो, चाहे एक सूबा हो उन को यह समझना चाहिये कि उनके लिये इतना ही काम नही है कि वे अपने लोगों के लिये अन्न पैदा करे बल्कि उनके लिये यह भी ज़रूरी है कि अपने लिये जितनी ज़रूरत है उससे अधिक पैदा करें और जहा अन्न की कमी है वहां पहुंचाने में सहायक बनें। और यदि इस भावना से हम काम करेंगे तो मेरा पूरा विश्वास है कि देश को हम साल दो साल के अन्दर ही इस कष्ट से मुक्त कर सकेंगे।

अभी सभी जगहों में हम लोगों को इस बात की शिकायत सुनने में आती रहती है कि चोर बाज़ारी बहुत गर्म है और उसकी वजह से जो अन्न तथा और और चीजें बाज़ार में आती हैं वे इतने दाम में बिकती हैं कि सब कोई उसे खरीद नहीं सकते। चोर बाज़ारी को भी खतम करने का काम केवल गवर्नमेन्ट का ही नही है। इसमें सबके सहयोग और मदद की ज़रूरत है और अगर सब का सहयोग मिलेगा तो चोरबाज़ारी भी खतम हो सकती है। मैंने कई जगहों में कहा है और आप से भी कहना चाहता हूं और मैं आशा करता हूं कि आप इसे बुरा नही मानेंगे कि चोर

बाजारी मे केवल एक ही आदमी का हिस्सा नहीं है। जो खरीदते है उन का भी अश पाप में होता है और जो बेचते हैं उनका भी अंश पाप में होता है। जो अन्न पैदा करते हैं अगर वे इस आशा से अपनी जरूरत से ज्यादा अन्न अपने पास रख लेते हैं कि उससे उन को अधिक पैसे मिल सकेंगे तो चोर बाजारी में वहां पर वे मदद करने लगते है। सभी किसानों का यह धर्म होना चाहिये कि अपनी जरूरत से जो ज्यादा पैदा करें उसे खुले दिल से जो उचित मूल्य है उस मूल्य पर बेचकर ऐसे लोगों को जो पैदा नही करते या नही कर सकते उन को भोजन पहुंचाने में मदद करें। जो व्यापारी है उन पर भी यह लांछन लगाया जाता है कि वे किसानों को कम दाम देकर अनाज ले लेते है और लेकर अपने पास रखते है और गैरवाजिब मुनाफा उससे उठाते हैं। हो सकता है कि उसमें कुछ सत्य हो। अगर कोई भी व्यापारी इस तरह से गैरवाजिब मुनाफा उठाना चाहता है तो वह चोरबाजारी का भागी बन जाता है। मगर खरीददार भी जिनको अन्न खरीदकर खाना पड़ता है इस में थोड़ा हिस्सा बंटाते है। आप पूछेंगे कि कैसे ? मै एक नागपुर शहर को ही लेता हूं। यहा पर राशनिंग है और यहा पर जितने लोग रहते है सबको राशन से ही खाने के लिये अनाज मिलता है। सब को राशन कार्ड के मुताबिक ही मिलना चाहिये और अगर कोई ज्यादा लेता है तो कहा से लेता है ? जो जितना राशन से मिलता है उससे ज्यादा लेना चाहते हैं वे चोर बाजार से ही तो ले सकते है। मान लीजिये कि राशन से एक मनुष्य को ८ छटांक मिलता है और उसको १२ छटांक चाहिये। तो ८ छटांक तो वह राशन से लेता है और बाकी ४ छटांक चोरबाजार से लेता है। इतना ही नहीं कि वे चोर बाजार से खरीदकर चोरबाजारी को प्रोत्साहन देते है बल्कि अपनी जरूरत से ज्यादा खरीदकर इस भय से रख लेते हैं कि कहीं आगे चलकर कमी होने पर कम दाम पर नहीं मिले। इस तरह अपनी जरूरत से ज्यादा खरीदकर चोर बाजारी को बढ़ावा देते है। तो इस प्रकार से किसान हों, चाहे बेचनेवाले व्यापारी हो चाहे खरीदकर खाने वाले हों इसमें सब का भाग रहता है तभी चोरबाजारी चलती है। अगर कोई यह सोचे कि चोरबाजारी दबाव डालने से दूर हो सकती है तो यह सोचना गलत है। चोरबाजारी में जिनका हाथ है उनमें से अगर कोई एक भी चाहे कि चोरबाजारी न हो तभी वह खतम हो सकती है दबाव से नही। इस समय ऐसी कठिन स्थिति हो गयी है कि हमको अपनी सारी बुद्धि, हिम्मत और शक्ति लगाकर उसका मुकाबला करना है। मै यह भी जानता हूं कि प्रान्तीय सरकार और केन्द्रीय सरकार आज चिंतित ह और इस प्रयत्न में लगी हुई है कि किसी न किसी तरह जो अनावृष्टि और अतिवृष्टि के कारण हमारे सामने समस्या आगयी है उसका हल करें। सरकार इस प्रयत्न में लगी हुई है कि विदेशों से जितना अन्न हो सके लाकर अन्न कष्ट को दूर किया जाये। पर बाहर से अन्न लाना कुछ आसान नहीं है। एक तो अन्न मिलता ही नहीं, अगर अन्न मिले भी तो दाम इतना देना पड़ता है कि हम हमेशा इसे दे नहीं सकते। अगर दाम देने से अन्न मिले भी तो आजकल जहाजों की कठिनाई है। आखिर जहाज पर ही लाद कर तो हम बाहर से अन्न ला सकते है। तो ये सब कठिनाइयां हमारे

सामने हैं। इन कठिनाइयों के होते हुए भी यथासाध्य प्रयत्न किया जा रहा है कि बाहर से देश में अन्न आवे। मैं आप से यही कहना चाहता हूं कि गवर्नमेन्ट अपनी तरफ़ से प्रयत्न कर रही है मगर जनता भी हाथ पर हाथ रखकर न बैठी रहे। मैं मानता हूं कि हमारे यहां के लोगों में बहुत साहस है और उनमें इतनी बुद्धि भी है कि वे पहाड़ फोड़ कर भी उसमें से अन्न निकाल लेते हैं, एक जगह नहीं सारे देश में जा कर आप देखें तो ऐसी ऐसी कठिन जगहें है जिन को हमारे लोगों ने जोतकर अपने परिश्रम से, अपने अध्यवसाय से उन्हे हरा भरा बना दिया है। मै चाहता हूं कि वही परिश्रम, वही अध्यवसाय और वही बुद्धि आज इस कष्ट निवारण में हमारे लोग लगावें।

आप जानते हैं कि मैं बिहार सूबे का रहने वाला हूं। वहां भी इस साल अनावृष्टि के कारण बड़ी कठिन समस्या आगयी है। पार्लियामेन्ट के कुछ मेम्बर मुझ से मिलने आये थे और वहां के किसानों की बुरी हालत का वर्णन उन्हों ने मुझे सुनाया। मैंने उन से कहा कि आप लोग जाकर सभी जगहों में लोगों से कहे कि वे अपनी बुद्धि लगाकर जो कुछ पैदा कर सकते हों पैदा करें। बहुत छोटी छोटी अन्न की फसल होती है जो थोड़े ही परिश्रम से पैदा की जा सकती है और गांव के किसान उनको जानते है और पैदा कर सकते है। मै जब कृषि विभाग में था तो उस विभाग के लोगों को इस बात की चर्चा करते सुनता था कि छोटी मोटी फसल जो थोड़े ही दिनों में और कम मेहनत से पैदा की जा सकें किसानों में उनका प्रचार करना चाहिये। उन दिनों शकरकन्द की दिल्ली में बहुत चर्चा चलती थी कि यह ऐसी फसल है कि जितनी ज़मीन में अनाज जितना पैदा होता है उस से कई गुना अधिक उतनी ही ज़मीन में शकरकन्द पैदा किया जा सकता है और इस लिये लोगों को इसे प्रोत्साहन देना चाहिये। यह बड़ी चीज़ थी दिल्ली में बैठे हुए लोगों के लिये। मगर जिनको गावों का अनुभव है और विशेष कर हमारी तरफ के गावों का वे सब जानते हैं कि इस से पहले भी न मालूम कितने दिनों से हमारे यहां के बहुत ग़रीब इस चीज़ को पैदा करते आये हैं। शकरकन्द को मै अपने अनुभव से जानता हूं। जाड़े के महीने में बहुतेरे गरीब शकरकन्द खाकर ही अपने दिन बिता लेते है। यह कोई नई चीज़ नहीं है। मै ने बचपन में भी इसे देखा था और मैं समझता हूं कि हमारे पूर्वजों के बचपन से ही शकरकन्द चला आ रहा है। इसलिये मै कहता हूं कि हमारे गांव के लोग इस चीज़ को अच्छी तरह से जानते हैं। आज से पहले भी हमारे यहां कभी कभी सूखा, अनावृष्टि हमारे लोगों ने देखी है, और अपनी आंखों से हम भी देखते हैं कि इस तरह की विपत्ति आती है तो लोग कितने परिश्रम से, कितनी हिम्मत से कुछ न कुछ पैदा करते हैं और अपना समय काट लेते है। मैं ने यह सब आप से इसलिये कहा कि ऐसे समय पुरुषार्थ की परीक्षा होती है। आज शहर के लोगों को, गांव के लोगों को, किसानों को, जो किसान नहीं हैं उन सबों को यह सोचना है कि किस तरह इस विपत्ति से निकलें।

आपने ठीक कहा है कि आप को यहां पानी का भी कष्ट है और आप डरते हैं कि आपको पीने के लिये और स्नान करने के लिये काफ़ी पानी मिलेगा या नहीं। आज बड़े बड़े

शहर के सब लोग कल पर ही निर्भर करते हैं। आज सब चीजों के लिये शहरों में किसी न किसी कलपर ही निभर किया जा रहा है। यह मब केन्द्रीकरण का फल है। कुछ लोग समझते है कि केन्द्रीकरण से अच्छा ही फल मिलता है। मगर उससे बुरा फल भी मिलता हैं। उस का बुरा फल जो होता है उसे हम नागपुर में देखते हैं। जब घर घर में कुएं होते हैं तो सभी कुओं में पानी नहीं सूख सकता। आज पानी के कल में कोई खराबी आ जाये तो सारे शहर के लोगों को पानी मिलना बन्द हो सकता है। पर कुएं से जो जिस समय पानी चाहे मिल सकता है। हमारे यहां की यह रीति और पद्धति थी कि जो चीजें बड़े परिश्रम से हासिल हो सकती थी उनको हमारे लोग बहुत सहल और सरल बना दिया करते थे। एक छोटे से सूत्र में इतना कह दिया करते थे कि उसपर भाष्य के रूप में पुस्तक लिखने की जरूरत पड़ती थी। अभी हमारे एक भाई बग़ल में तकली कात रहे थे। यह एक बहुत छोटी सी चीज़ है। पर इससे लोग अपना शरीर कपड़ा बनाकर ढकते थे। आज कपड़े के लिये लाखों, करोड़ों रुपये लगाकर कारखाना खोलते है। उसीतरह से पानी के लिये भी कल कारखाने की ज़रूरत होती है और उस पर भी स्वतन्त्रता नहीं रहती। गांव के लोग अभी भी कुएं खोदते हैं और सब बातों में अपने को स्वतन्त्र रखते हैं। शहर में यह बात नहीं है।

में चाहता हूं कि जो राजनीतिक स्वतन्त्रता हमें मिली है वह राजनीतिक क्षेत्र तक ही सीमित न रहे बल्कि आर्थिक स्वतन्त्रता भी हमें मिले और किसी मनुष्य को दूसरे पर निर्भर न करना पड़े। आप कह सकते हैं कि आज की दुनिया में यह बहुत कठिन है। कठिन ज़रूर है। मगर प्रयत्न ऐसा होना चाहिये कि हम यथासाध्य अपने को स्वतन्त्र बनावें और करोड़ों करोड़ हिन्दुस्तान के किसान अपने को स्वतन्त्र बनावें और हर एक भाई और बहन अपने को स्वतंत्र बना लेंगे तो सभी स्वतन्त्र हो जायेंगे। मै चाहता हूं कि जो नगरपालिकाएं काम कर रही है, जो गांव और इलाके में जनपद सभाएं काम कर रही हैं सब इस विषय में विचार करती रहें कि सब कामों में वे अपने कोंकैसे स्वतन्त्र बना सकती हैं। केवल अधिकार ही पाने का नाम स्वतन्त्रता नहीं है। सच्ची स्वतन्त्रता तो वही है जिस में अधिकार की भी ज़रूरत नहीं हो बिना अधिकार प्राप्त किये स्वतन्त्रता बनी रहे। सबसे बड़ी स्वतन्त्रता वही है। मैं चाहता हूं कि इस तरह की स्वतन्त्रता हम स्थापित करें। आज एक मौका आ गया है। अगर हर आदमी अन्न के सम्बन्ध में अपने को स्वतन्त्र बनाने का प्रयत्न करे तो मेरा विश्वास है कि लोग अपनी बुद्धि, अपना कौशल लगा कर, अपना पुरुषार्थ लगाकर देश को अन्न के कष्ट से बचा सकेंगे और केवल इस साल के लिये ही नहीं, हमेशा के लिये अपने को इस कष्ट से मुक्त कर सकेंगे। और सब चीजों में भी हमें इसी तरह स्वतन्त्र रहना चाहिये।

मैं आशा करता हूं कि आप की नगरपालिकाएं और जनपद सभाएं जनता को संतुष्ट रखेंगी। आपने जो मेरा आदर किया और मान पत्र दिया उसके लिये में आपको हृदय से धन्यवाद देता हूं।

अखिल भारतीय इतिहास महासभा

***अखिल भारतीय इतिहास सभा के नागपुर वाले अधिवेशन का उद्घाटन करन के अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा–**

महान् राष्ट्रीय विपत्ति से तिमिराछन्न आकाश के नीचे हम आज एकत्रित हुए है। वर्तमान इतिहास के महान निर्माताओं में से एक अर्थात् सरदार वल्लभ भाई पटेल को कराल काल ने हम से छीन लिया है। उनके देहावसान से हमारे राजनैतिक जीवन में ऐसी शून्यता पैदा हो गई है जो भरी न जा सकेगी। किंतु साथ ही हमारे सामने वे त्याग, अदम्य इच्छा शक्ति, कर्तव्य के प्रति अनथक लगन तथा संगठन और प्रशासन करने की अद्वितीय प्रतिभा के प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे लिये छोड़ गये है।

इस महासभा की ओर से इस सम्मेलन में उपस्थित होने के लिये जो निमन्त्रण मुझे दिया गया है उसे स्वीकार करने में मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। मै विद्वत्ता का दावा नही करता किंतु मुझे इतिहास और विशेषतया अपने देश के इतिहास से– उस इतिहास से जिसने गत शताब्दियों में उत्थान और पतन देखे है और जो इतिहास दर्शन की रचना के लिये पर्याप्त सामग्री दे सकता है–सच्ची लगन है। देश के जिस भाग में आपकी यह बैठक हो रही है वह तो केवल इस के लिये इसी हेतु ही उपयुक्त नही है कि वह भूगोल शास्त्र की दृष्टि से देश का केन्द्र और हृदय है बल्कि इसलिये भी कि उसका न केवल सुदूर और निकट अतीत में ही बल्कि वर्तमान काल में भी इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जहां आज हम मिल रहे है उससे कुछ दूरी पर ही तो वर्धा ज़िले में वह संसार प्रसिद्ध ग्राम सेवाग्राम है जो हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन के अन्तिम दौर के बारह तेरह वर्षों तक–उस दौर में जिसकी समाप्ति हमें और देश को स्वतंत्रता प्राप्ति से ही हुई–उसके पहिये की धुरी के समान था। अतः यदि मैं इस सम्मेलन का उद्घाटन करते समय इस बात पर जो सम्भवतः बहुतों को तो बिल्कुल स्वयंविदित प्रतीत होगी बल देने की आज़ादी चाहूं कि भारत को जितनी आवश्यकता अपने सुदूर किंतु गौरवमय अतीत के सच्चे और सर्वांगीन इतिहास की है उतनी ही उस अनोखे और अपूर्व आन्दोलन के इतिहास की भी है जिसने उसे संसार के चित्र में अपना स्थान फिर से दिला दिया है तो मैं किसी अनुचित बात का अपराधी न होऊंगा। यह अक्सर कहा जाता है कि हमारे पूर्वज हमारे लिये न तो देश का अधिकृत इतिहास और न वह सामग्री छोड़ गये है जिसके आधार पर उसकी रचना की जा सके। मैं समझता हूं कि मेरे लिये यह आवश्यक नहीं कि मै एतिहासिक सामग्री की उस अनन्त धारा की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करूं जो पुरातत्व खोजों और खुदाइयों के फलस्वरूप भारत में और आजकल समझे जानेवाले भारत से बाहर मध्य ऐशिया से लेकर स्वर्ण द्वीप या उससे भी आगे मध्य अमेरिका और दक्षिण अमेरिका के उत्तर भाग में पाये गये शिला लेखों, मुद्राओं, पत्थर की मूर्तियों और मिट्टी की मूर्तियों और बर्तनों-मनकों इत्यादि इत्यादि के रूप में बही आ रही है। इस प्रकार की प्रत्यक्ष गवाही के अलावा हमारे पास विशाल वांगमय है जो हमारे अतीत पर प्रकाश डाल सकता है। न केवल काव्य और कला की ही पुस्तकों से बल्कि वैद्यक शास्त्र, अंकगणित, व्याकरण, विधि, संगीत और विज्ञान की पुस्तकों से भी, यदि उनका ठीक ठीक अध्ययन किया जाये तो, हमारे जीवन और संस्कृति के

---

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

संबंध में पर्याप्त सामग्री मिल सकती है। ऐतिहासिक पुस्तकें भी काफ़ी संख्या में लभ्य है और प्रति दिन नयी नयी ऐसी पुस्तकों का पता चल रहा है। जब भी कोई ऐतिहासिक पुस्तक मिलती है तो उसमें ऐसी अनेक पुस्तकों का ज़िक्र मिलता है जिन से उसके लेखक ने सामग्री और सहायता ली थी किंतु जो आज कल प्राप्य नही है। निकट भूत काल के बारे में तो आसाम की बुरंजी, बंगाल की कुल पंजिका, मिथिला की वंशावली, राजस्थान के ख्यात और महाराष्ट्र के दफ्तर और इस प्रकार के अन्य बहुत से साहित्य की ओर संकेत किया जा सकता है। मुसलमान बादशाहों और उन के सामन्तों की आत्मकथाओं से तथा उनके युद्धों और विजयों के इतिहास तथा उनके प्रशासन के वर्णन और ब्योरे तथा पुरातन काल से लेकर वर्तमान काल तक यहां यात्रा करने वाले विदेशी यात्रियों के यात्रा वृतांत भी इस प्रकार के ज्ञान के खजाने है। योरोपीय भाषाओं में और खास तौर से अंग्रेज़ी में तो उस काल के इतिहास के लिये जिसमें इस देश का यूरुप से राजनीतिक या व्यापारिक संबंध रहा है ऐतिहासिक सामग्री भरी पड़ी है। संस्कृत, पाली और प्राकृत के समान ही वर्तमान भारतीय भाषायें हमारे देश के इतिहास की धारा के हर ऐसे पहलू पर पर्याप्त प्रकाश डाल सकती हैं जिनको अभी तक समुचित रूप से समझा या खोजा नही जा सका है। आप लोग तो इस सामग्री से कही अधिक परिचित है और उसका काफी अच्छे ढंग और सफलता से प्रयोग करते रहे है।

इतिहासज्ञों को ही नही बल्कि साधारण लोगों को भी इस बात की प्रेरणा हुई है कि विगत घटनाओं, राजाओं और सम्राटों के युद्धों और विजयों, उनके बहादुरी के कारनामों और दुःखद् कुशासन तथा राजनैतिक उथल पुथल का ही नही बल्कि इन बातों का भी सिलसिलेवार और सही वृतांत देश के सामने पेश किया जाये कि हमारा जीवन कैसा था और किस प्रकार उसका स्वरूप बनता था और यह कि कितने महान धार्मिक सांस्कृतिक और साहित्यिक आन्दोलन इस देश में हुए जिनका प्रभाव न केवल भारतीयों पर ही बलिक भारत की प्राकृतिक सीमाओं से बाहर करोड़ों लोगों पर भी हुआ और किस प्रकार कला और विज्ञान उद्योग और व्यापार यहां पल्लवित और प्रस्फुटित हुए। इस ध्येय को पूरा करने के लिये प्रयास किये गये है और किये जा रहे है। कुछ वर्ष पूर्व भारतीय इतिहास परिषद् ने बीस ज़िल्दों में भारत के इतिहास के प्रकाशित करने की योजना बनाई थी किन्तु उसे वह कई कारणों से पूरा न कर सकी। आपकी महासभा ने भी ऐसे ही भार को अपने ऊपर लिया है और यह खुशी की बात है कि दोनों योजनाओं को अब मिला दिया गया है और अब यह आशा की जा सकती है कि उपयुक्त समय के अन्दर संपूर्ण इतिहास तैयार हो जायगा जो ऐसे सुयोग्य लेखको द्वारा लिखा गया होगा जिन्होंने आज कल प्राप्य सामग्री का सदुपयोग किया होगा और जिन्होंने हमारी सफलताओं और विफलताओं का सही वृतांत ही हमारे सामने न रखा होगा बल्कि साथ ही यदि इतिहास उदाहरणा द्वारा शिक्षा प्रदान करता है तो हमारे भविष्य को आलोकित करने वाले उदाहरण भी उसमें होंगे।

स्वाभवतः यह प्रश्न उठता है कि उत्तम इतिहास का स्वरूप क्या होना चाहिये। इतिहास के विषय में विभिन्न विचार रहे है। इतिहास की सब से अधिक साधारण परिभाषा यही है कि यह भूतकाल का वृत्तांत है और उस का मुख्य ध्येय यही है कि समय की समाधि से उन बातों और व्यक्तियों को निकाले जो कभी थे किंतु आज नहीं हैं। स्पष्ट है कि इस परिभाषा से इतिहास का स्वरूप बहुत ही

अस्पष्ट रूप से व्यक्त होता है। यदि इतिहास ऐसा शास्त्र है जो उदाहरणों द्वारा शिक्षा प्रदान करता है तो स्पष्ट है कि भूत काल का पूरा वृत्तांत इस प्रकार शिक्षा प्रद नहीं हो सकता और वह महज़ इस वजह से कि आज का आदमी अपनी समस्याओं और स्थितिओं को भूतकाल की समस्याओं और स्थितियों से कहीं अधिक जटिल और विभिन्न स्वरूप वाली पायेगा। अतः मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि उस परिभाषा से इतिहास का महत्व आदमी के लिये कहीं कम हो जाता है। इस सचाई को प्रसिद्ध ग्रीक इतिहास कारपोलीबियस के ज़माने में भी पहचान लिया गया था। इस के पूर्व दूसरी शताब्दि में उस ने लिखा था कि "यदि तुम इतिहास के कारण सिद्धांत और प्रयोजन तथा ध्येय से कार्यरीति के मेल की सब बातों को निकाल दोगे तो जो कुछ बचेगा वह तो केवल ऐसा दृश्य होगा जो शिक्षा प्रद तो होगा ही नहीं और चाहे कुछ मुहुर्त के लिये वह भला लगे पर उसका कोई स्थायी महत्व या मूल्य भी न होगा"। कोरा घटना वर्णन तो इतिहास नही कहा जा सकता और यदि वह केवल राजाओं और सामन्तों, उनकी बेवकूफ़ियों और व्यसनो उनके युद्धों और विजयों की ही ऐसा कोरी गाथा हो जिसमें न तो साधारण मानवा के जीवन की झांकी हो और न धर्म, भाषा, संस्कृति और कला के क्षेत्रों में होने वाले उन आन्दोलनों का ही ज़िक्र हो जिन्होंने समय समय पर मानव जाति को हिलाडुला दिया है तो उसे इतिहास कहलाने का और भी कम हक़ होगा। इस बारे में पोलीबियस का मैं एक और उद्धरण दूंगा। प्यूनिक युद्ध के सिलसिले में वह लिखता है कि "मैं इन सब बातों को लेखबद्ध इस आशा से कर रहा हूं कि उन से मेरे पाठकों को लाभ होगा। मानवजाति के सुधार के लिये दो मार्ग हैं एक तो अपनी मुसीबतो से सीखना और दूसरा रास्ता है दूसरों की मुसीबतों से सीखना। पहले में तो कोई गलती हो नही सकती और दूसरा कम हानिप्रद है। अत: किसी को पहले मार्ग को स्वेच्छा से नहीं अपनाना चाहिये क्योंकि उसके अपनाने से तो सुधार में अत्यन्त यातना और खतरा बना रहता है। हमें तो दूसरे का ही सहारा लेना चाहिये क्योंकि उस पर चल कर बिना नुकसान उठाये यह बात हम बड़ी अच्छी तरह से जान सकते हैं कि क्या करना ठीक होगा। यही बात है कि जिससे हमें इस अनिवार्य निष्कर्ष पर पहुंचते है कि सच्चे इतिहास से मिलन वाला ज्ञान प्राप्त करता व्यवहारिक जीवन के लिये सब से अच्छी तैयारी है क्योंकि इतिहास और इतिहास हो में यह शक्ति है कि बिना वास्तविक संकट में डाले वह हमारो बुद्धि को पर्याप्त परिपक्व करदे और हमें तथ्य को पहचानने के योग्य बना दे चाहे फिर हमारे जीवन में कैसी ही विषम स्थिति क्यों न हो।" इतिहास के प्रति रोम वालों का दृष्टिकोण ग्रीसवासियों से भिन्न न था। इतिहास लेखन कला के सिद्धांतो को सिसरों न यों व्यक्त किया है। वह लिखता है कि "इतिहास लेखन का प्रथम नियम यह है कि इतिहास को किसी ग़लत बात के कहने की धृष्टता नही करनी चाहिये और दूसरा नियम है कि सच बात कहने की उसे हिम्मत होनी चाहिये। साथ ही उसके बारे में पक्षपात या वैमनस्य का संदेह भी न होना चाहिये। उसकी इमारत तो घटनाचक्र और लेखन शैली पर निर्भर होती है। घटनाचक्र के वर्णन के लिये समयक्रम और देश परिचय की ओर ध्यान देना पड़ता है तथा ऐसी महान बातों में जो स्मरणीय है हम सर्व प्रथम उद्देश्यों उनके पश्चात् कार्यों और अन्त में परिणामों पर ध्यान देना पड़ता है। इतिहास से यह भी प्रकट होना चाहिये कि इतिहासज्ञ किस उद्देश्य को ठीक मानता है। कार्यों के संबंध में महज़ इतना ही काफ़ी नहीं कि यह बता दिया जाये कि क्या किया या कहा गया बल्कि इसकी भी ज़रूरत है कि वह किस रीति से किया गया और जहां परिणाम का वर्णन भी दिया गया है वहां उन सब कारणों का भी वर्णन होना चाहिये जिनसे

वह परिणाम हुआ चाहे फिर उनका संबंध किसी आकस्मिक घटना से हो चाहे अक्लमंदी से और चाहे दुःसाहस से। केवल चरित्रनायकों के कारनामों का ही केवल वर्णन न होना चाहिये बल्कि उन में से ऐसों के जीवन और शील का भी वर्णन होना चाहिये जो यश अथवा गौरव के कारण लोगों की आंखों में गड़ गये हैं"। रोम का प्रसिद्ध इतिहासकार लिवी यह मानता था कि मानव जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं में भाग्य का हाथ होता है। रोम के उत्थान का जिक्र करते हुए वह लिखता है कि "मेरी समझ में इतने महान नगर के बसने और देवताओं की सी शक्ति वाले साम्राज्य की स्थापना में नियति का हाथ था।" उसका मत था कि "आधिदैविक शक्ति और विशेषतया विकट अवस्थाओं के सम्हालने में देवताओं का भाग तो चमत्कार अथवा सगुन द्वारा स्पष्टतया प्रकट हो ही जाता है। और जब देवता स्पष्टतया कार्यक्षेत्र में दिखाई नही देते तो पर्दे के पीछे से तो अवश्य डोरी खींचते रहते हैं।" जिन विषयों की ओर लिवी से अपने पाठकों का ध्यान आकर्षित किया वे थे "समाज का जीवन और शील, वे व्यक्ति और गुण जो घरेलू नीति और वैदेशिक युद्ध के जरिये साम्राज्य के विस्तार मे प्रभावी सिद्ध हुए" भूतकाल के बारे में वह कहता है कि "उसमें आपको ऐतिहासिक सत्य के निर्मल प्रकाश में हर प्रकार के उदाहरण मिलेंगे उनमें से आप ऐसे छाट सकते है जिनका आप अपने लिये और अपने देश के लिये अनुसरण करना चाहते हैं या जिन से बचना चाहते हैं।" अतः स्पष्ट है कि इतिहास के बारे मे लोगों का यह दृष्टिकोण रहा है कि वह घटनाओं की कोरी नीरस कहानी न होकर ऐसा शास्त्र है जो हमें मानवी समाजों और संस्थाओं के जन्म और विकास का पूरा पूरा ज्ञान कराता है।

भाग्यवाद के मुकाबले में हमें यह विचार भी मिलता है कि जीवन परिस्थितियों के साचे में या रक्तजात गुणों के सांचे में ही ढलता है। ये सिद्धांत मानव जीवन अथवा अनुभूति के किसी एक या दूसरे पहलू को ही महत्व देते हैं और यह मानते हैं कि जो कुछ भी हुआ है वह सब केवल उसी पहलू के कारण हुआ है। इस बात से तो इन्कार नहीं किया जा सकता है मनुष्य अपनी परिस्थितियों से अर्थात् जिन भौतिक वस्तुओं से उसका संपर्क होता है उनके चलन से और उनकी क्रिया और पारस्परिक प्रति क्रिया से तथा प्राणि मात्र के जीवन में जिन नियमों के कारण उसका अपना शरीर अपने पूर्वजों के ऐसे ही शरीर का यदि पूर्णतः नही तो अंशतः फलमात्र होता है उन नियमों से भी प्रभावित होता है। किंतु इस प्रकार का नियतिवाद चाहे फिर नियन्ता भाग्य अथवा परिस्थिति अथवा रक्त में से कोई एक क्यों न माना जाये मानव जगत के बारे में यह विचार पैदा कर देता है कि वह इनमें से एक या कुछ के ही व्यापार का परिणाम है और इस प्रकार इस बात को नहीं मानता कि उस क्षेत्र में मानव आत्मा का भी कोई हाथ है। किंतु यह तो सचाई की ओर से सरासर आख बंद कर लेना है। इतिहास तो सही अर्थ में तभी इतिहास होगा जब वह न सब और दूसरी शक्तियों और बातों का जो मानवों पर या उनके द्वारा सक्रिय रहती है संश्लेषात्मक दृष्टि से विचार करे। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में लिखा है कि इतिहास तो पुराण, इतिवृत्त, आख्यायिका, उदाहरण, धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र से मिलकर बनता है। इस प्रकार उसने सांस्कृतिक और भौतिक तत्वों को इतिहास का आवश्यक अंग माना है। यह दृष्टिकोण केवल सर्वांगी ही नहीं बल्कि अत्यन्त मौलिक भी है। क्योंकि यह इतिहास की ऐसी परिभाषा करता है जो पाश्चात्य विद्वानों द्वारा हाल में प्रतिपादित अन्तिम सिद्धांतों और विचारों के

बराबर ही महत्वपूर्ण है। कौटिल्य का विशेष महत्व तो यह है कि उसने उन दो विचारधाराओं में मेल कराने की बात सोची जो बाद में इतिहास के ऐसे दो विरोधी दृष्टिकोण और दार्शनिक सिद्धांतों में परिणित हो गई जो लग भग पिछली एक शताब्दि से आपस में झगड़ रहे है और अपना एक छत्र आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास कर रहे है और जिन मे एक तो इतिहास की आदर्शवादी या अध्यात्मवादी धारा है जिस के विभिन्न पहलुओं का सर्वोत्तम प्रतिपादक हेगैल है और उसकी विरोधी दूसरी मार्क्स और एंगेल्स द्वारा प्रतिपादित भौतिकवादी धारा है। किसी इतिहास और विशेषतया हमारे देश के इतिहास के लिखने में हमें भौतिक तत्वों के मानव जीवन प्रभाव को, जिस पर अब तक पर्याप्त ध्यान नही दिया गया है, कम से कम उतने ही महत्व का मानना चाहिये जितना कि मानव व्यक्तित्व और उस के आध्यात्मिक आदर्शो को माना जाता है। इतिहास के लेखन की प्रगति के लिये तथा इतिहास में क्रियाशील नियमों के सही अर्थ जानने के लिये इन दोनों तत्वों का संश्लेषण आवश्यक है।

वर्तमान पीढ़ी के भारतीय इतिहासज्ञों के ऊपर विशेष उत्तरदायित्व है और उनके सामने एक सुनहरी मौका है। उन्होंने स्वयं ऐसी महान् घटनायें देखी है जैसी कि अन्य युग के इतिहासज्ञों को कभी भी देखने को न मिली थीं। हमारे पास संहारक अस्त्रों द्वारा प्राप्त की गई विजयों और साम्राज्यों का वर्णन मौजूद है। अत्यन्त प्राचीन युगों से ही मानव इन शस्त्रों को बहतर से बहतर बनाने का प्रयत्न करता रहा है और आज हम ऐसी मंज़िल परे पहुंच गये है जब कि इस बात का पूरा भय है कि पलक मारने भर में कही युद्ध असख्य प्राणियों और शताब्दियों के कौशल और श्रम द्वारा निर्मित अपार वस्तुओं को विनष्ट न कर दे। न तो हमारे पास ऐतिहासिक सामग्री की कमी है और न ऐसे इतिहासज्ञों की जिन्हो ने युद्धों और विजयों के इतिहास के लिखने में इस प्रकार की सामग्री का सफलता से प्रयोग किया है। यूरुप के कुछ देशों मे दोनों पिछले युद्धों के अन्तर काल में मैं थोडे दिन रहा था। वहां एक बात की ओर मेरा ध्यान विशेषतया आकृष्ट हुआ और उसकी छाप आज भी मेरी स्मृति पर है। जहां कही भी मै उस समय गया वही मुझे योद्धाओं और विजेताओं के, युद्धों के और उन में लड़ने वालों के स्मारक दिखाई दिये। किसी कारणवश क्यों न हो पर हमारे देश में ऐसे स्मारक या तो है ही नही और अगर है भी तो योरुपीय देशों से हमारे संबंध के युग के अतिरिक्त और काल के बहुत कम है। हिंदू और बौद्ध कालीन जो भी महान् इमारतें अवशिष्ट है लगभग उन सबका स्वरूप, प्रयोजन, और रचना धार्मिक है। इसी प्रकार मुसल्मान काल की जो महान् इमारतें है वे भी लगभग सभी धार्मिक या अर्ध धार्मिक है। हां उस समय के क़िले यहां वहां अवश्य है जो संघर्ष और उपद्रव के युग की घटनाओ के प्रतीक है। किंतु यहां योद्धाओं और सूरमाओं की वैसी पूजा नही है जैसी हम यूरुप में देखते है। अतः हमारे इतिहास की दृष्टि स्वाभावतः इस महत्वपूर्ण बात पर जानी चाहिये। इससे किसी प्रकार का आश्चर्य न होना चाहिये कि इस देश ने पिछले लग भग तीस वर्षों में स्वतंत्र्य युद्ध के लड़ने का एक नये तरीके का विकास देखा है। वह था अहिंसा का प्रोग्राम और उसका कार्यन्वित किया जाना। मुझे यह ज्ञात नहीं है कि किसी इतिहासज्ञ ने अपनी कृतियों में इस नये तरीके का जिक्र किया है या नहीं। मेरा खयाल है कि वह इतिहास तो अभी लिखा जाना है। यह बात चाहे अटपटी लगे पर है सत्य कि इस अध्याय के बारे में—जिसे मैं अपने देश के ही नहीं वरन् सारे संसार के इतिहास का गौरवपूर्ण अध्याय समझता हूं—

जो मूल सामग्री है और जिस के आधार पर इसे लिखा जा सकता है उसे न तो वैसे इकट्ठा किया जा रहा है और न उसका वैसा परीक्षण किया जा रहा है जैसा कि किया जाना चाहिये और वह शनैः शनैः किंतु बराबर विनष्ट और विलीन हो रही है। जिन लोगों ने इस संघर्ष या आन्दोलन में भाग लिया था उनकी न तो वैसी शिक्षा दीक्षा थी और न उन्हें इतना समय और सुविधा थी कि वे जो कुछ दिन प्रति दिन हो रहा था उसका वृतांत लिखते रहते और इसका तो सवाल ही क्या हो सकता था कि वे उन आन्तरिक विचारों और प्रयोजनों का व्यौरा लिखते जिन से उनका अपना चलन और घटनाक्रम प्रभावित हो रहा था। जो कुछ भी सामग्री लभ्य ह वह इतने विस्तृत क्षेत्र में और इतने विभिन्न रूपों और भाषाओं में बिखरी हुई है कि उसमें से मतलब की बात शिक्षित दीक्षित व्यक्ति ही पर्याप्त परिश्रम के पश्चात् निकाल पायेंगे। अभी कुछ दिन हुए मैं शिमला गया था। वहां मैं ने वह प्रशंशनीय काम देखा जो आपके मंत्री डाक्टर विश्वेश्वर प्रसाद की मातहती में उस इतिहास की रचना के संबंध में किया जा रहा हैं जिसमें इस बात का पूर्ण वर्णन होगा कि पिछले युद्ध में भारत ने क्या भाग लिया। जो सामग्री प्राप्त की गई है उसका अध्ययन और परख कई सुयोग्य विद्वान कर रहे हैं और रुचिकर और उपदेशप्रद रूप में क्रमबद्ध इतिहास लिखने के कार्य में पर्याप्त प्रगति हो चुकी है। सरकार इस काम पर काफ़ी रुपया खर्च कर चुकी है और कर रही है। हम सब जानते है कि वर्तमान युग के युद्धों में कोई बात भाग्य पर नही छोड़ी जाती और उसी समय जब कुछ लोग युद्ध में लडते होते है कुछ अन्य युद्ध के घटनाक्रम का सही सही वृतात न केवल शब्दों में बल्कि चित्रों में भी उतारने में व्यस्त रहते है और इस बात का भी खतरा नही होता कि वह सामग्री सर्वदा के लिये खो जायेगी। आज ही नही बल्कि पर्याप्त पुरातन काल से सरकार और विशेषतया सैनिक अधिकारीगण युद्ध के इतिहास को अधिक महत्व देते रहे हैं और खास तौर से इसलिये कि युद्ध कला और रण नीति के संबंध में उससे सैनिकों को शिक्षा मिले। इसमें कोई शंका की बात नही है कि ऐसे इतिहासों से उन लोगों को पर्याप्त लाभ हुआ है। पर क्या सहानुभृति और विवेक पूर्ण ढंग से लिखे गये हमारे अहिंसात्मक आन्दोलन के ऐसे इतिहास का, जिस में कि दिन प्रति दिन हुए घटनाक्रम का पूर्ण वृतात हो, हमारे लिये और भविष्य मे अन्य लोगों के लिये उसके समान ही महत्व न होगा। यह एक प्रयोग था और महात्मा गाधी भी इसे यही समझते थे। किंतु यह सफल प्रयोग सिद्ध हुआ। कौन कह सकता है कि किसी दिन दुनिया उस सिद्धांत को स्वीकार न कर लेगी और वही रणनीति नही अपना लेगी जिसे महात्मा गांधी ने हमें सिखाया था और स्वयं उसको अमल में लाये थे और जिसके द्वारा हम अपनी स्वतत्रता को प्राप्त करने मे सफल हुए। जिस व्यक्ति को उस सिद्धात के फलदायी होने का विश्वास है और जो यह भी मानता है कि वह शक्तिशाली और सार्वभौमिक है उसकी समझ में तो देश के लिये ही नही वरन् सारे जगत के लिये भी जो विज्ञान की महान् प्रगति के बावजूद इन विफलता और असफलता के दिनों में कुछ ऐसे ही पथ की खोज में है ऐसे इतिहास का अत्यन्त महत्व होगा। क्या मै इतिहासिज्ञों की इस महासभा से यह आशा करू कि वह इस कार्य को जो सुदूर भूत या हाल के दूसरे महा युद्ध के इतिहास से भी यदि अधिक का महत्व नही तो बराबर महत्व का तो अवश्य है अपने हाथ में संभाल लेगी? जिन्होंने इस संघर्ष में भाग लिया उन्होंने तो अपना काम कर दिया। उन में से बहुत से जो अपनी निजी जानकारी से पर्याप्त महत्वपूर्ण बातें बता सकते थे किंतु जिन्होंने अपनी जानकारी को लिख नहीं छोड़ा था एक एक करके परलोक सिधार रहे हैं और थोड़े ही समय के पश्चात् उस इतिहासज्ञ को जिसने घटनाओं को केवल देखा भर है

और उससे भी ज्यादा उस इतिहासज्ञ को जो बाद में होगा अधिकाधिक उन्हीं वृतांतों पर निर्भर करना पड़ेगा जो ऐसे विभिन्न रूपों में जैसे समाचार पत्र, पुस्तिकाओं, रिपोर्टों में या इतिहास के अन्य रूपों मे प्रकाशित हुए थे। शोक की बात है कि जीवित सामग्री तो शीघ्रता से विलीन होती जा रही है और बहुत जल्द ही पूर्णतया खत्म हो जायेगी। अतः यदि किसी को इस दिशा में कोई भी दिलचस्पी हो तो उसे तुरन्त इस बारे में चौकन्ना और सावधान हो जाना चाहिये और अविलम्ब इस कार्य को हाथ में ले लेना चाहिये ताकि भावी पीढ़ियों को इस शिकायत का मौका न हो कि यद्यपि लोगों ने महान् काम किये थे किंतु इतिहासज्ञों ने उन का वृतात नही लिखा और इस लिये उन से मिलने वाले उपदेश सर्वदा के लिये अलभ्य हो गये। मुझे आशा है कि यहां कोई यह प्रत्युत्तर न देगा कि इस प्रकार की जानकारी को इकट्ठा करने और उसका वृतांत लिखाने का काम केवल इतिहासज्ञों का ही न हो कर सरकार का भी है क्योंकि वह तो उन्ही लोगों की है जिन्होंने उस संघर्ष में भाग लिया था और जिन्होंने ऐसा करके इतिहास की धारा बदल दी थी। मै इतना ही कह सकता हूं कि यदि सरकार और कामों में कार्यरत रहने के कारण ऐसा करने में असमर्थ हो और अपना कर्त्तव्य पालन करने में असफल हो तो भी उसकी यह असफलता और लोगों को भी इस दिशा में निष्क्रिय रहने के लिये कोई कारण प्रदान नही करती। मेरा विश्वास है कि सराकर के तत्वावधान में इस दिशा में कुछ कार्य हो भी रहा है और मै तो यही आशा प्रकट कर सकता हूं कि वह काम उन महान् घटनाओं के अनुरूप ही महान् होगा क्योंकि अहिंसा की विजय तो युद्ध की विजयों से भी कही अधिक गौरवपूर्ण होती है।

खापरखेड़ा विद्युत केन्द्र का उद्घाटन

खापरखेड़ा विद्युत केन्द्र का उद्घाटन करते समय तारीख २७-१२-५० को राष्ट्रपति जी ने कहा—

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि इस बिजली के कारखाने को खोलने का आप ने मुझे मौका दिया। हिन्दुस्तान में आप का सूबा एक ऐसा सूबा है जिस को कि ईश्वर ने बहुत धन दे रखा है। यहां की पृथ्वी के गर्भ में न मालूम कितनी बड़ी धन राशि छिपी हुई है और ऊपर नदियां तथा जंगल जो आप की आंखों के सामने हैं वे भी बड़ी धनराशि है लेकिन अभी इस धन राशि से जितना चाहिये उतना लाभ नही उठाया जा सकता है। क्योंकि इन चीजों को पूरी तरह से उपयोग करना अभी हम ने नहीं सीखा है। आज जो यह ऐसा कारखाना खुल रहा है वह इस बात का प्रमाण है कि अब हम इस धन राशि को अच्छी तरह से उपयोग में लायेंगे और उस से जितना देश को लाभ पहुंच सकता है उतना लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे इस देश में न मालूम कितने दिनों से यह धन राशि पड़ी रही है। अविद्या के कारण अभी तक हम इस से लाभ नहीं उठा सके हैं। यह एक बड़ा प्रश्न है कि आज की जो नई सभ्यता है और जो सारे संसार में फैली जा रही है उस में हम को कितनी दूर तक जाना चाहिये

और उस से कितना लाभ उठाना चाहिये ।-मगर इस सम्बन्ध में शायद कोई मतभेद नहीं है कि बिजली से हम जितना लाभ उठा सकते हैं हम को उठाना चाहिये । बिजली की जितनी ज़रूरत इस वक्त भारतवर्ष में है उतनी ज़रूरत शायद और किसी देश में नहीं है। मुझे इस तरह के आंकड़े पूरी तरह से याद तो नहीं हैं मगर मैं समझता हूं कि सारे देश में २० लाख किलोवाट बिजली का खर्च है और उतनी ही बिजली अभी तक पैदा हो रही है इस वक्त जो बड़े बड़े कारखाने खुलने वाले हैं और जो बड़ी बड़ी योजनायें तैयार की गई हैं यह कहा जाता है कि उन से काफ़ी बिजली हम को मिल सकेगी । एक एक नदी में बांध बांधने से हमें दो दो लाख किलोवाट बिजली मिलेगी और उन में से एक के सम्बन्ध में मैं ने सुना है कि उस में बांध तैयार हो जाने पर—पता नहीं वह तैयार होगा या नही होगा और होगा भी तो कब होगा—आशा की जाती है कि २० लाख किलोवाट बिजली निकलेगी। यानी आज सारे हिन्दुस्तान में जितनी बिजली सब मिला जुला कर निकलती है उतनी निकलेगी । देश के सामने बिजली निकालने का बहुत बड़ा काम पड़ा हुआ है। ईश्वर ने हमें ऐसी नदियां दी हैं और ऐसी पहाड़ी जगह दी है कि जितनी बिजली का हम उपयोग कर सकते है उतनी हम पैदा कर सकते हैं और उस से हम आसानी से दिन काट सकते हैं । जितनी दूर तक हम बिजली को ले जा सकते हैं शायद और किसी देश के लोग नही ले जा सकते है। स्विटजरलैंड एक छोटा सा पहाड़ी देश है । पर उस के गांव गांव में बिजली है और वहां सब काम बिजली से ही होता है और वहां बड़ी बड़ी चीज़ें बड़े बड़े कारखानों में नही बनतीं बल्कि घर घर में उन के छोटे छोटे पुर्ज़े बनते हैं । हम लोग जो घड़ियां लगाते हैं— यहां सभी लोगों के हाथों में या जेब में घड़ियां है—उन में से ७०, ७५ सैकड़े घड़ियां स्विटज़रलैंड में बनती है । उन के छोटे छोटे पुर्ज़े वहां के घरों में ही बनते हैं; बड़ बड़े कारखानों में नहीं । बिजली हो जाने से हम इस तरह की बहुत सी चीज़ें इस देश में तैयार कर सकते हैं । हमारे देश में लोगों की बुद्धि और देशों के लोगों की बुद्धि से कम तीव्र नहीं है और उन के हाथ भी कम कुशल नही है। इस का प्रमाण यह है कि जहां जहां नये कारखाने खोले गये है या कोई नया धंधा खोला गया है हमारे देश के लोगों ने बहुत थोड़े ही दिनों में ही उन में कामयाबी हासिल कर ली है। और उसे सफलतापूर्वक चला कर यह साबित कर के दिखाया है कि वे किसी देश के लोगों से कम नहीं है । मैं ने सुना है कि जब ताता का लोहे का कारखाना शुरु हुआ तो यह ज़रूरी और अनिवार्य था कि विदेशी विशेषज्ञ और खास कर अमेरीका से बड़े बड़े इंजीनियर लाये जायें और वे लाये गये । मगर कारखाने में काम करने वाले तो विदेशों से नहीं लाये जा सकते थे और इस लिये यह सोचा गया था कि २०—२५ साल में जब यहां ऐसे काम करने वाले तैयार हो जायेंगे तो कारखाना ठीक से चल सकेगा। मगर आश्चर्य की बात है और हमारे लिये खुशी की बात है कि २०—२५ साल तो क्या १०—१२ साल के अन्दर ही यहां के लोगों ने उस के सब कामों को अंजाम देना सीख लिया और बाहर के लोगों की कोई खास ज़रूरत नहीं रह गई । आज कारखाने को कायम हुए तीस बत्तीस साल हुए हैं। अब उस में विदेशी लोग बहुत कम है। वह इस लिये नहीं हैं कि हम विदेशियों से काम नहीं लेना चाहते बल्कि इस लिये कि अब उन की खास ज़रूरत नहीं क्यों कि हमारे अपने ही

लोग सीख कर तैयार हो गये हैं। तो हमारे देश में चतुर और कुशल लोग हैं। उन से काम लेना हमारा काम है। इस लिये जहां बिजली का कारखाना खुले वहां बहुत तरह के काम खोले जा सकते हैं। आप ने अच्छा किया कि पहले बिजली का कारखाना कायम कर लिया। नदियों में बांध के ज़रिये इस तरह का काम और और जगहों में भी हो सकता है मगर उस में करोड़ों रुपयों का खर्च होता है। और अभी इस तरह के जितने काम देश में चल रहे हैं उन में ६०,—७० करोड़ रुपये लगेंगे और तो भी उन को पूरा होने में काफी समय लगेगा। क्योंकि पैसे की कमी भी होने लगी है लेकिन उस तरह के बांध के बिना ही आप ने इतना बड़ा कारखाना कायम कर लिया यह बड़ा अच्छा हुआ। केन्द्रीय सरकार ने आप की सहायता नही की। इस का कारण यह है कि आज कल उन का हाथ खाली पड़ गया है। जब कभी मौका होगा तो आप को सहायता ज़रूर मिलेगी और हर चीज़ में मिलेगी। पर यह और भी खुशी की बात है कि बिना उन की सहायता के आपने यह काम पूरा कर लिया। मै आशा करता हूं कि यह काम जो पहले पहल शुरू हो रहा है सफल होगा और लोगों को इस से इतना लाभ होगा कि और प्रान्तों के लोग भी इस की उपयोगिता को समझेंगे और बिजली के काम को आगे बढ़ायेंगे, चाहे गवर्नमेन्ट की सहायता से हो चाहे बाहर के लोगों की सहायता से। मैं आशा करता हूं कि जो काम आज शुरू हो रहा है उस से केवल शहरों को ही नहीं बल्कि जैसा आप ने सोचा है गांवों के लोगों को भी लाभ मिलेगा और छोटे छोटे गांवों को भी बिजली का उपयोग करने का मौका मिलेगा और बिजली से जो बहुत बड़े बड़े काम होते हैं उन का लाभ उन को मिलेगा।

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि आप ने मुझे मौका दिया कि मै इस उद्घाटन के काम में शरीक हो सकूं और इस बड़े काम में थोड़ा हाथ बंटा सकू और वह इतनी आसानी से कि कहीं जाने की भी ज़रूरत नही हुई और इतनी कम मेहनत से इतना बड़ा काम मैं कर रहा हूं इस के लिये मै आप को धन्यवाद देता हूं।

कांग्रेस द्वारा अभिनन्दन

चिटनिस पार्क, नागपुर में तारीख २७-१२-५० को साढ़े छः बजे शाम को प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के मानपत्र के जवाब में सार्वजनिक सभा में राष्ट्रपति जी ने कहा--

बहनो और भाइयो,

नागपुर के लिये मै कोई अपरिचित व्यक्ति नहीं हूं। जैसा आप ने कहा है बहुत दिनों तक मुझे यह सौभाग्य प्राप्त रहा कि आप के आस पास में ही गांधी जी के चरणों में बैठ कर कुछ सेवा कर सका और उसी सिलसिले में जब तब मैं नागपुर में भी आप सब भाइयों और बहनों से मिलने का सुअवसर प्राप्त कर सका। इस लिये आज अगर इतने उत्साह के

साथ इतनी सस्थाओं की ओर से और विशेषकर इस नगर के लोगों की ओर से मेरा इतना आदर, सम्मान और स्वागत किया गया तो मै समझता हूं कि यह आदर और स्वागत कुछ मेरे लिये नही, मेरे व्यक्तित्व के लिये नही बल्कि उस पद के लिये है जिस पर इस देश. के लोगों ने मुझे चुन कर बैठा दिया है ।

अभी हमारे देश को स्वतन्त्र हुए तीन साल हुए हैं और आपका पहला चुना हुआ राष्ट्रपति अभी दस ग्यारह महीने से ही आप की सेवा कर रहा है। इतने थोड़े समय और इस कठिन अवस्था में देश की हालत दिन प्रति दिन कठिन होती गई है इस को आप भली भांति जानते है । जिस दिन अंग्रेज़ों ने १९४७ के १५ अगस्त को हमारे हाथों में अधिकार सौंपा, और इस देश से अंग्रेज़ों ने अपना अधिकार हटा लिया और अपने अधिकार के सब चिन्हों को हटा लिया उसी दिन हमारे हाथों में अधिकार आया और उस के साथ साथ भारी विपत्ति भी आयी और वह विपत्ति आयी देश का बंटवारा हो जाने के कारण । इतना बड़ा वैमनस्य आया, इतनी बड़ी खून खराबी हुई कि उस का उदाहरण हमारे देश के इतिहास में पहले कभी भी नही मिलेगा । भारत का इतिहास आज से ही नही हज़ारों वर्षों से एक अजीब इतिहास रहा है । हमारे ऊपर हज़ारों तरह की मुसीबतें गुज़री है । बहुतेरे इस प्रकार के क्रूर काम हुए हैं, इतनी खून खराबी हुई है कि जिन को पढ़ कर और सुन कर लोगों को रोमांच हो जाया करता है पर यह सब होते हुए भी भारत के इतिहास मे ही नही समस्त संसार के इतिहास में भी ऐसा कभी नही सुना गया और कभी नही देखा गया कि एक साथ लाखों आदमियों को एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ अपना घरबार छोड़ कर धन सम्पत्ति छोड़ कर अपने प्राणों की रक्षा के लिये सैकड़ों कोस भागना पडा हो। इस का भी उदाहरण आप को कही नही मिलेगा । जहां तक हम से बन पडा हम ने उन को हर तरह से मदद दे कर शान्त करने और किसी न किसी तरह उन को बसाने का प्रयत्न किया । यह हमारा काम अभी पूरा नही हुआ है । आप जानते है कि ६०.—७० लाख लोग पाकिस्तान से हिन्दुस्तान चले आये है और पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान दोनों मिला कर बहुतेरे भाई अभी ऐसे है जिन को बसाने का पूरा इन्तज़ाम अभी नही हुआ है । बहुतेरों को बहुत तरह की मुसीबतें बर्दाश्त करनी पड़ी है और ईश्वर की दया से उन्होंने हिम्मत के साथ इन मुसीबतों का सामना किया है ।

साथ ही साथ सिर्फ इस देश के लिये ही नही बल्कि और देशों के लिये भी जो समय बीतता है वह ऐसा समय बीतता है कि सभी जगहों पर शान्ति के स्थान पर अशान्ति हो रही है । आप जानते है कि जो भयंकर युद्ध १९३९ में आरम्भ हुआ था वह किसी तरह से १९४५ में समाप्त हुआ । पर उस युद्ध के समाप्त होने के बाद ही जो फल हुआ उसे आप सभी जानते हैं । बहुत से देशों में और हमारे देश में भी उस युद्ध के परिणामस्वरूप बहुत भारी मंहगी आगई । उस का फल यह हुआ कि हमारे देश में कई तरह की कुवृत्तियां भी लोगों में आ गई हैं । सभी युद्धों का एक नतीजा यह हुआ करता है कि जो धार्मिक अवस्था रहती है वह कमज़ोर पड़ जाती है और

जो बुरी प्रवृत्तियां हैं वे प्रबल हो जाती है ; लोगों की जो धार्मिक भावना है जो सत्य अहिंसा की भावना है वह ढीली पड़ जाती है। यद्यपि महात्मा गांधी जब से वह हिन्दुस्तान आये बराबर इस बात पर ज़ोर देते रहे कि हम को सत्य और अहिंसा पर कायम रहना है और उसी पर कायम रह कर उन्होंने देश के लिये स्वतन्त्रता भी प्राप्त की। पर तो भी आज सारा संसार हिंसा और नफ़रत के रास्ते पर है। इस तरह के वातावरण से हम भी अपने को पाक नही रख सके और उस का नतीजा हम आज भुगत रहे है। आज कोई नही कह सकता कि कब और कहां युद्ध छिड जाये। कोई नही कह सकता कि किस तरह से कहां के लोगों को पहले इस में कूदना पड़ेगा और किस तरह से यह चारों तरफ फैलेगा । मगर जो आज मुसीबत है वह यह है कि कही युद्ध हुआ तो किसी एक देश में शान्ति नही रह सकेगी । वह फैलेगा और आहिस्ता आहिस्ता संसार के सभी देशो में उस की लपट जायेगी । आज जिस प्रकार की भयंकर स्थिति है उस का अनुमान हम इसी से कर सकते है कि उतने विनाशकारी अस्त्र शस्त्र पिछली लड़ाई में नहीं थे जितने कि अभी तैयार हो गये है और दिन प्रति दिन तैयार होते जा रहे है। मनुष्य की सारी बुद्धि उस की सारी विद्या आज विनाशकारी यन्त्रों को तैयार करने में ही लग रही है । अगर वह बुद्धि, अगर वह विद्या और धन जो इस काम में आज ख़र्च हो रहा है मनुष्य मात्र को सुखी बनाने में, उस के कष्ट निवारण में लगाया गया होता तो दुनिया की हालत आज कुछ दूसरी होती और आज भी हो सकती है । पर दुर्भाग्यवश पहले का मन मुटाव एक दूसरे पर अविश्वास, एक दूसरे के साथ मुक़ाबला ऐसी बुरी चीजे है कि जिन के कारण आज मनुष्य मात्र अपनी भलाई के रास्ते से अलग जा रहा है । आज सभी यह मानते है कि युद्ध बहुत बुरी चीज़ है, युद्ध से किसी मामले का फैसला नही होता; युद्ध से कोई भी काम आज नही होगा तो भी यह मानते हुए भी वे इस ओर खिचे जा रहे है । इस तरह हम अपने को बुराइयों के काबू में पाते है और अपने को किसी स्थान पर जम कर खडा नही रख सकते । जिस तरह मनुष्य कही पानी की बाढ़ में पड कर, बहुत जोर की धारा मे पड़ कर बहता जाता है और अपने को सभाल नही सकता है उसी तरह मानव जाति अपनी बेबसी में बहती जा रही है। यह सभी देशों की हालत है । इस भयकर तूफान के अन्दर हमारा देश इस प्रयत्न मे लगा है कि वह किसी न किसी तरह स्थिति को बचा सके । हमारे पास इतनी शक्ति नही है, इतने साधन नही है कि हम संसार को शान्त रख सकें। हम इतना ही कर सकने है कि जो हम में शक्ति है और जो हमारे साधन है उन्हें उन को समझाने बुझाने में लगावें कि जो विनाश होने वाला है, जो नुकसान होने वाला है उसे वे टाले और टालने का प्रयत्न करे और आप को इस बात से प्रसन्नता होनी चाहिये कि हमारा देश इस प्रयत्न में लगा हुआ है। कहां तक हम को सफलता मिलेगी यह कहना मुश्किल है । हम यह नहीं जानते कि लोग हमारी बात सुनेंगे या नही सुनेंगे, सुनेंगे भी तो कहां तक सुनेंगे हम नहीं कह सकते। मगर हम विश्वास रखते है कि हमारा काम अपना कर्तव्य करना है, फल तो ईश्वर के हाथ में है और इसी विश्वास के भरोसे पर हम अपना कर्तव्य करते जा रहे हैं। हम अभी भी भरोसा रखते हैं कि मनुष्य की बुद्धि इस तरफ़ फिरेगी और कोई न कोई रास्ता निकल सकेगा जिस से सभी देशों के लोग चैन से रह सकें। यह केवल हमारी मर्यादा का ही प्रश्न नहीं है यह हमारे लिये जीवन मरण का भी प्रश्न है।

हमारा देश अभी हाल में स्वतन्त्र हुआ है । हम स्वतन्त्र हो कर भी उन समस्याओं को हल नहीं कर सके हैं जो पहले जमाने से हमारी आंखों के सामने है और जिन को हल करना हम आवश्यक समझते हैं । हमारा समय इन सब चीज़ों के पीछे लगेगा । हमें स्वराज मिला है और आज हमें यह मौक़ा है कि इन समस्याओं को सुलझाने का हम प्रयत्न करें । इस लिये हमारा स्वार्थ यह है कि सारे संसार में शान्ति रहे जिस से हम लाभ उठा सकेंगे। इस लिये हम स्वार्थवश यह चाहते है कि देश में और संसार में शान्ति विराजे। इस का प्रयत्न हो रहा है और होता रहेगा।

मगर हमारे देश के सामने यही एक प्रश्न नही है । हमारे देश पर इधर तरह तरह की विपत्तियां आई है । ये विपत्तियां शायद और देशों में भी हो मगर हमारे अपने देश में तो हैं ही। आप ने सुना होगा और यहां भी कुछ लोगों ने ज़रूर अनुभव किया होगा कि इस साल हमारी फसल बहुत बिगड़ गई है और एक सूबे में नही बल्कि देश के बहुत बड़े हिस्से में । कही तो बहुत बारिश की वजह से बाढ़ आई और अतिवृष्टि से फ़सल बरबाद हुई । उस के बाद पानी नहीं बरसा और अनावृष्टि से फसल बरबाद हुई और पानी नही बरसने की वजह से इस बात का भी डर है कि जो आगे फसल आने वाली है वह भी ठीक नही उतरे । यों तो लड़ाई के बाद देश मे अन्न की कमी रही है । पर इस तरह से इतनी इतनी फसल एक साथ बर्बाद हो तो आप समझ सकते है कि लोग अन्न की कितनी कमी महसूस करेगे । मै आप से यह कहना चाहता हू कि बावजूद इस के कि अन्न की कमी है अगर जनता और गवर्नमेन्ट दोनों मिल कर काम करें तो कोई घबडाने की बात नहीं है । जब इस तरह की मुसीबत आती है तभी मनुष्य के धैर्य, शक्ति, चतुरता और उस के कार्य कौशल का पूरा पूरा इम्तिहान होता है । इस समय हमारे लोगों की कड़ी परीक्षा हो रही है । मै जानता हूं कि अन्न की कमी है । मगर मैं यह भी जानता हूं कि अभी जितना लोगों के पास या गवर्नमेन्ट के पास देश में है कमी को बर्दाश्त कर के उस से समय किसी तरह निकाल लिया जायेगा । मेरा यह भी विश्वास है कि लोग धैर्य से काम लेगे और घबड़ायेंगे नहीं आप विश्वास रखें कि जितनी कमी है उस से ज्यादा कमी शोर गुल मचाने से लोग महसूस करने लगते हैं । अगर आप समझ कर काम करें और जो मुसीबत है उस का सामना करने के लिये कटिबद्ध हो जायें तो मेरा विश्वास है कि इस कमी को आप दूर कर सकते है । मै मानता हूं कि यह देश के लिये बहुत हानिकारक बात है कि बातों को बढ़ा कर कहा जाये और खास कर के ऐसी बातें जिन से लोगों में घबराहट पैदा हो और लोग घबड़ा कर जो नहीं करना चाहिये वह करने लग जायें । मै चाहता हूं कि अगर अन्न की कमी होती है तो जो लोगों के पास हो उसे सभी लोगों में बांट कर खा कर के कुछ दिन रहें । शोर गुल मचाने से तो अन्न मिलने वाला नहीं है । जिस के घर में अधिक है वह बेच ले तो वह बाज़ार में जायेगा, और दूसरों को मिलेगा पर वह बेचता नहीं दबा कर रख लेता है हालांकि उस को अन्न को दबा कर रखने की ज़रूरत नहीं है । पर तो भी वह घबड़ाहट की वजह से दबा रखता है । मैं चाहता हूं कि कोई भी भाई और बहिन अन्न के सम्बन्ध में ऐसी कोई बात नहीं कहे, कोई

ऐसा काम न करे जिस से लोगों में अन्न के लिये घबड़ाहट पैदा हो। स्थिति खराब है इस से इन्कार नहीं किया जा सकता। लेकिन इस को ऐसा नहीं बताना चाहिये कि खराब ही नहीं बहुत खराब है। जो बात है उस को ठीक समझना चाहिये जितनी मुसीबत है और तकलीफ़ है उस को मंजूर करना चाहिये। उसे घटा कर कहने का प्रयत्न करना भी बेकार है इसे मैं मानता हूं। मगर स्थिति को बढ़ा कर कहना जिस से लोगों में घबड़ाहट पैदा हो जाये यह बिल्कुल ठीक नहीं है। इस लिये मैं चाहता हूं कि इस संकट के समय में लोग धैर्य से काम लें और समझ बूझ से काम लें और ऐसा लोग करेंगे तो मेरा विश्वास है कि लोगों में इतनी शक्ति है कि लोग इस का मुकाबला कर सकेंगे। हम जानते हैं कि हमारे गांव के लोगों में और विशेष कर किसानों में इतनी शक्ति है कि वे मुसीबतों का मुकाबला कर सकते हैं। एक छोटी सी बात है जिस दिन किसान अपने घर से अच्छे से अच्छा, सुन्दर से सुन्दर अन्न, जो उस के पास होता है बीज के रूप में ज़मीन में डाल देता है क्या वह जानता है कि एक दिन उस के बदले में उतना भी मिलने वाला है। आशा रहती है पर इस का निश्चय नहीं रहता कि उस को मिलेगा ही। मगर उस में इतना धैर्य है, इतनी दुरदर्शिता है, इतनी समझ है कि उस दिन वह इस चीज़ को बर्दाश्त करता है और अनाज ज़मीन में फेंक देता है। कभी कभी ऐसा भी होता है कि पानी नहीं बरसता और फसल नहीं होती, या कभी पानी अधिक बरस जाता है और फसल बह जाती है। मगर फिर भी वह दूसरी फसल के लिये तैयार रहता है। वह परिश्रम करता जाता है और परिश्रम करने के लिये तैयार रहता है। इस लिये मैं कहता हूं कि लोगों में हिम्मत, दूरदर्शिता, उत्साह और समझ बूझ होनी चाहिये और एक बार हारने से हमेशा के लिये डरना नहीं चाहिये और आगे के लिये तैयारी करनी चाहिये। मैं चाहता हूं कि देश के जितने सेवक हैं, चाहे वे गवर्नमेन्ट सर्विस में हों चाहे बाहर लोगों में जो इस तरह की भावना है, इस तरह का उत्साह है, उसे काम में लावें और उस का प्रयोग इस मुसीबत को टालने में करें। उन के पास बुद्धि है, कल मैं ने कहा था कि अगर हम उन के पास पहुंचें और उन को ठीक बतायें कि, आज क्या स्थिति है तो वे लोग ऐसे तरीके खोजकर निकालेंगे जिस से बढ़ कर हम दफ्तर में बैठे बड़े बड़े वैज्ञानिक लेबोरेटरी में बैठे नहीं पैदा कर सकते है क्योंकि वे अनुभव से जानते ह, अपने अनुभव से नयी फसल पैदा कर सकते हैं। वे यह भी जानते हैं कि जहां पानी की कमी हो वहां वे कौन सी फसल पैदा कर सकते हैं और कम से कम खर्च में कौन सी फसल पैदा कर सकते हैं। गवर्नमेन्ट के पास जो शक्ति है, जो साधन हैं उन से भी हम काम लेंगे। गवर्नमेन्ट से जो काम हो सकता है वह करे और आप को उस से काम लेना चाहिये। मेरा अपना विश्वास है कि जनता के पास जो शक्ति होती है वह किसी भी गवर्नमेन्ट के पास जो शक्ति होती है उस से अधिक होती है। गवर्नमेन्ट की शक्ति तो जनता की दी हुई होती है। अगर जनता अपनी सारी शक्ति लगावे तो वह गवर्नमेन्ट की शक्ति से कहीं अधिक हो सकती है। हम चाहते हैं कि ऐसी मुसीबत के समय वह अपनी सारी शक्ति से इसे टालने में लगे और मेरा विश्वास है कि अगर लोगों को ठीक समझाया गया तो यह हो सकता है।

गवर्नमेन्ट इस प्रयत्न में है कि विदेशों से अन्न मंगाये । अन्न आयेगा भी । मगर इस में कठिनाई भी है । विदेशों से कितना अन्न मिलेगा या नहीं मिलेगा, मिलेगा भी तो उसे वहां से लाने के लिये, जहाज़ मिलेंगे या नहीं मिलेंगे ? कहीं दुर्भाग्य से विश्व युद्ध छिड़ गया तो जहाज़ मिलना भी कठिन हो जायेगा और अन्न आना मुश्किल हो जायेगा। इस लिये हमारी दूरदर्शिता का तकाज़ा है कि हम सोचें, विचारें कि अगर अन्न नहीं आया तो किस तरह हम लोगों को खिलायेंगें, और हम विचार करके देखें तो इस का कोई रास्ता निकाला जा सकता है ।

अन्न की कमी जहां तक मैं ने सुना है मामूली तौर से इतनी है कि अगर १ मन १० मन में जोड़ दिया जाये तो वह कमी दूर हो सकती है, अर्थात् दशांश की कमी है और इस का मतलब यह है कि जहां दस मन पैदा होता है वहां हम एक मन और पैदा कर लें यानी ११ मन पैदा कर लें तो यह कमी दूर हो सकती है ; और यह कोई मुश्किल काम नहीं है । १० मन के बदले ११ मन तो जितनी ज़मीन में अन्न पैदा किया जाता है उस में भी पैदा किया जा सकता है । इस के अलावा बहुत सी ऐसी ज़मीन है जो गैर आबाद है उस को हम आबाद कर सकते हैं। ऐसी ज़मीन को आबाद करने के लिये लोगों को प्रोत्साहन देना चाहिये । अगर ग़ैर-आबाद ज़मीन सब आबाद हो जाये तो देश में इतना अधिक अन्न पैदा होने लगेगा कि फिर कमी नहीं रह जायेगी । इस के लिये थोड़ा काम करना पड़ेगा । जहां पर जिस चीज़ की कमी है उस चीज़ को वहां पहुंचाना होगा । जहां पानी की कमी है वहां पानी पहुंचाना होगा, कुएं खोद कर ट्युब वेल खोद कर पानी पहुंचाना होगा। जहां खाद की कमी है वहां खाद पहुंचाना होगा । इस लिये देख कर जहां जिस चीज़ की कमी हो, वहां उसे पहुंचा कर अधिक पैदा किया जाये तो जितनी कमी है वह आसानी से दूर की जा सकती है। इस साल विशेष परिस्थिति है । वह फसल के मारे जाने से जो ज़्यादा कमी हो गई है उस की वजह से है। बहुत सी छोटी छोटी फसलें होती हैं, जिन को तैयार कर के यह कमी दूर की जा सकती है । हम को समझना है कि सारा भारत एक देश है और इस में जितने प्रान्त और नगर है सब एक हैं और हम को आपस में इतने प्रेम और एक दूसरे के साथ इतनी सहानुभूति से रहना चाहिये कि एक जगह में अन्न हो और दूसरी जगह में अन्न की कमी हो तो एक जगह से ले कर दूसरी जगह की भूख को दूर करना चाहिये । यही हमारी सरकार करती है । जहां अन्न की कमी होती है वहां की कमी दूसरी जगह से ला कर या बाहर से ला कर वह दूर करती है ।

आप का एक ऐसा सूबा रहा है जो हमेशा दूसरे प्रान्तों को अन्न देता रहा है क्योंकि आप के यहां ईश्वर की दया से ज़्यादा अन्न पैदा हुआ करता था । इस लिये आप दूसरे सूबों को खिला सकते थे और दे सकते थे। बाहर की सरकारें भी आप से मांगती थीं और आप दिया करते थे । दुर्भाग्य से यहां भी इस साल कमी हो गई है । इस

साल आप की भी वही हालत है जो और सूबों की रहा करती थी। मैं मानता हूं कि आप की जो आवश्यकता है वह भी उसी तरह पूरी होनी चाहिये जिस प्रकार से और प्रान्तों की आवश्यकता पूरी होती है और मेरा विश्वास है कि आप की ज़रूरतों पर ध्यान दिया जायेगा और आप के लिये भी जो कुछ हो सकेगा किया जायेगा। जिस में आप यह नहीं महसूस करें कि जब आप के पास रहता था तो आप ने सब की मदद की और जब आप की ज़रूरत हुई तो आप को किसी ने सहायता नहीं दी। आप की ज़रूरतों को देख कर उसे दूर करने का जो कुछ भी उपाय हो सकता है वह किया जायेगा।

मैं ने इतना जो अन्न कष्ट के सम्बन्ध में कहा वह इस लिये कि मेरा विश्वास है कि अन्न जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक चीज़ है जिस के बिना कोई ज़िन्दा नहीं रह सकता। इस अत्यन्त आवश्यक चीज़ को तैयार करना, लाना और मुहय्या करना सब का कर्तव्य है चूंकि इस की वजह से घबराहट पैदा हो सकती है, मैं ने सोचा कि आप से इसी विषय पर ज़ोर दे कर कहूं और मेरा विश्वास ह कि जो कुछ मैं ने कहा है वह आप तक ही नहीं रहेगा बल्कि सूबे के और लोगों तक भी पहुंचेगा और लोग स्थिति का मुक़ाबला करने के लिये कटिबद्ध हो जायेंगे।

यह मुसीबत कोई नई मुसीबत नहीं है। पहले भी इस तरह की मुसीबत आई है जिस वक़्त हम दूसरे का मुंह देखा करते थे। आज तो हमारे अपने हाथों में अधिकार भी है। आज तो लोग आसानी से इस मुसीबत का मुक़ाबला करने के लिये तैयार किये जा सकते हैं। मुझे उम्मीद है कि कोई भी भाई चाहे वह किसान हो, चाहे व्यापारी हो, चाहे खरीद कर खाने वाला हो इस मुसीबत से नाजायज़ लाभ उठाने का प्रयत्न नहीं करेगा। और जो कोई ऐसा करते हैं चाहे वे किसान हों, चाहे व्यापारी हों, चाहे खरीद कर खाने वाले हों वे क्रूर समझे जायेंगे। ऐसे कठिन समय में सब को मिल जुल कर इस मुसीबत को दूर करना है और मैं चाहता हूं कि सब इस का मुकाबला करन अपना कर्तव्य समझें।

अधिक मैं क्या कहूं। प्रश्न तो बहुत हैं। बहुत महत्व के प्रश्न हैं जिन पर जितना अधिक कहा जाये वह थोड़ा ही होगा। पर उन चीज़ों में जिन को मैं ने अधिक महत्व का समझा है उन के बारे में आप से मैं ने कहा है। मैं आशा करता हूं कि जो कुछ मैं ने कहा है उस पर आप ध्यान देंगे।

जिस उत्साह और प्रेम के साथ इतनी संस्थाओं ने और आप सब भाई बहनों ने मेरा स्वागत किया उस के लिये मैं आप सब को धन्यवाद देना चाहता हूं।

गोला बारूद कारखाना, जबलपुर

खमरिया, जबलपुर गोला बारूद के कारखाने के मज़दूरों के बीच राष्ट्रपति जी न तारीख २८-१२-५० को अपने भाषण में कहा —

खमरिया कारखाने के भाइयो,

मुझे इस बात से बड़ी खुशी हुई कि आज मै आप सब भाइयों से मिल सका। कारखाने के कुछ हिस्सों को मै ने देखा है मगर बहुत थोड़ा । मुझे अफ़सोस इस बात का है कि मेरे पास उतना ज्यादा समय नही है कि मै पूरा देख सकू और यहा ज्यादा देर तक रह कर आप लोगों से मिल सकू। मगर तो भी जहां तक मैने देखा है उससे मुझे पूरा सन्तोष हुआ है और यह जानकर और भी खुशी हुई कि आप लोग अपना काम बहुत मन लगा कर और उत्साह के साथ कर रहे हैं और काम भी आपका बहुत अच्छा हो रहा है। इस वक्त मुल्क के सामने सब से ज़रूरी चीज यह है कि उसकी हम रक्षा करें। हमको स्वराज्य तो मिला है मगर उस स्वराज को बचा कर रखना अब हमारा काम है और जैसी आज की दुनिया है उसमें आप लोग जो काम कर रहे है वह और भी बहुत ज़रूरी है। इसलिये मै आप सब को धन्यवाद देना चाहता हूं और आप से यह आशा रखता हूं कि आप इस काम को केवल मज़दूरी का काम और पैसे कमाने का काम न समझ कर इसे आप यह समझें कि यह आप देश रक्षा का काम कर रहे है और देश की हिफ़ाज़त करना हम में से हरेक का फ़र्ज़ है। इस मुल्क में जितने लोग हैं सब की रक्षा, सुख और शान्ति के लिये यह आवश्यक है कि देश सुरक्षित रहे क्योंकि जब तक हम देश को सुरक्षित नही रखेंगे यह सब हम नही कर सकेगे। इसलिये आपका काम निहायत ज़रूरी और बड़े महत्व का है। मैं उम्मीद करता हूं कि आप सभी भाई इस काम के महत्व को समझेंगे और समझ कर जो कुछ आपसे हो सकता है आप करेंगे।

मैंने सुना है कि आप सभी भाइयों के रहने के लिये काफ़ी मकान नही हैं और जैसे होने चाहिये वैसे नहीं हैं। मगर इस बारे में भी प्रबन्ध करने का प्रयास किया जा रहा है। मैंने नक्शा देखा है। वह काम भी जारी हो गया है और आहिस्ता आहिस्ता आपकी सब तकलीफ़ें दूर हो जायेंगी। मैं चाहता हूं कि सन्तोष के साथ रह कर आप इसे देश का काम समझ कर इस कारखाने को चलायें।

कला निकेतन, जबलपुर

जबलपुर में तारीख २८-१२-५० को कलानिकेतन का उद्घाटन करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा—

श्री शुक्ल जी, श्री मिश्र जी, बहनो और भाइयो,

आपने मुझे इस भवन को खोलने का सुअवसर दिया इसके लिये मैं आप को धन्यवाद देता हू। शिक्षा के सम्बन्ध में मुझे आजकल कई जगहों पर कुछ न कुछ कहना पड़ा है और अभी

और भी यूनीवर्सिटियां हैं जहां मुझे बुलाया गया है और जहां जा कर अपने विचारों को मुझे कहना पड़ेगा। शिक्षा का विषय ऐसा है और उसमें मेरी अपनी दिलचस्पी इतनी रही है कि मैं समझता हूं कि इस पर मैं जितना कहूं या कोई भी कह सके वह ज्यादा नही होगा। बात यह है कि हमारी जो शिक्षा प्रणाली आज तक चलती रही है उसमें अब बहुत कुछ हेर फेर, रद्दोबदल करने की ज़रूरत है और इसलिये जहां लोग इस विषय पर विचार करते है, बुद्धि से काम लेना चाहते है वहां पर ज़रूरत के मुताबिक़ कुछ ऐसी चीज़ें ढूढ निकालते है, सोच निकालते है कि जिससे शिक्षा के द्वारा हमारे लोग अधिक लाभ उठा सके। ऐसे ही प्रयत्नों में आपका यह एक बहुत अच्छा और सुन्दर प्रयत्न है। शिक्षा के मामूली तौर से तीन हिस्से होते है। एक तो वह हिस्सा होता है जो बहुत छोटे बच्चों के लिये होता है और दूसरा हिस्सा जो माध्यमिक कहलाता है वह कुछ बड़े बच्चों से लेकर युनीवर्सिटी के पहले तक के बच्चों के लिये होता है और तीसरा हिस्सा वह होता है जिसका सम्बन्ध यूनीवर्सिटियों से होता है। इन तीनों के अलग अलग प्रयोजन हैं, तीनों के अलग अलग तरीक़े है और तीनों एक दूसरे से भिन्न भी है। जो प्राथमिक शिक्षा शुरू में दी जाती है वह ऐसी होनी चाहिये कि जिससे देश के एक भी मनुष्य का लड़का लड़की वंचित न रहे। वह सब के लिये अनिवार्य होनी चाहिये। अनिवार्य का मतलब यह नही कि जिनके पास पैसे नही है और जो अपने बच्चे को पढ़ा नही सकते उनको भी फ़ीस देकर अपने बच्चों को पढ़ाने के लिये बाध्य किया जाये। अनिवार्य का मतलब है कि हरेक बच्चे को वह शिक्षा ज़रूरी मिलनी चाहिये और उसमे उसे पैसे खर्च करने की मजबूरी न होनी चाहिये क्योंकि इस गरीब देश में बहुत ऐसे ग़रीब लोग है जो अपने बच्चे के पढ़ाने का खर्च बर्दाश्त नहीं कर सक्ते। बहुत ऐसे लोग हैं जो अपने बच्चे को बचपन में ही काम में लगा देते है जिस से वह पैसे कमा सके। ऐसे लोगों से अगर ज़बर्दस्ती अपने बच्चों को पढ़ाने को कहें और वह भी फ़ीस दे कर तो उनके साथ ज्यादती होगी। इसलिये मेरा हमेशा विचार रहा है कि प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क हरेक बच्चे को मिलनी चाहिये और वह शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो बच्चे की बुद्धि को खोल दे और आगे चल कर कार्य में योग्य बना दे और जो आगे बढ़ना चाहते हों उनको आगे का दरवाज़ा खुला मिले और उससे वे लाभ उठा सके। माध्यमिक शिक्षा इससे कुछ ऊपर है। मैं नहीं जानता हूं कि माध्यमिक शिक्षा का कितना असर हो सकता है और उससे कितना लाभ पहुंच सकता है। अभी तक जो शिक्षा पद्धति रही है उस में माध्यमिक शिक्षा केवल यूनीवर्सिटी तक पहुंचने का दरवाज़ा मात्र थी और मै जिस वक्त पढ़ता था माध्यमिक शिक्षा ख़तम करने पर कहा जाता था कि एन्ट्रेन्स पास कर गया याने दरवाजे को पार कर गया। अब शायद नाम बदल गया है पर काम नहीं बदला है। अब काम को भी बदलना चाहिये और आपका यह प्रयत्न इसी काम को बदलने के लिये है जिस में सब बच्चे यह नहीं समझें कि स्कूल से पास करने पर यूनीवर्सिटी में जाना ही है नहीं तो वे बेकार हो जायेंगे या उनकी योग्यता में कोई ख़ास कमी रह जायेगी और अगर वे यूनीवर्सिटी में न पढ़े तो उन्हें चाहे छोटी मोटी नौकरियां मिल जायें पर वे और कुछ न कर सकेंगे। हर आदमी को यूनीवर्सिटी में जाना ज़रूरी नही है। यूनीवर्सिटी में तो उन्हीं को जाना चाहिये जिनमें कोई ख़ास योग्यता हो, जिनकी बुद्धि और मस्तिष्क दोनों अच्छे और सुलझे हुए हों और जो अपनी बुद्धि का अभ्यास ऊंचे दर्जे तक कर सकते हों और अपनी बुद्धि से समाज में जो बात बुद्धि द्वारा उपलब्ध

है उस में तरक्की कर सकते हों। जो देश और संसार के सामने नये आविष्कार रख सकते हों, नये विचार रख सकते हों .ऐसे ही ऊंचे दर्जे के लोगों को यूनीवर्सिटी में जाना चाहिये। इसका अर्थ यह नही है कि ऊंचे दर्जे के लोग किसी खास वर्ग में ही होते है और दूसरों में नही। कोई भी क्यों न हो चाहे जगल में हो, पिछड़े लोगों में हो, या किसी बड़े महल में हो अगर यूनीवर्सिटी जाकर अपनी बुद्धि को विकसित कर सकता हो और उससे अपने लिये लाभ उठा सकता हो और देश और संसार को लाभ दे सकता हो तो उसको वहां जाना चाहिये। यह माध्यमिक वर्ग की पाठशाला का काम है कि अधिक से अधिक लोगों को अपने यहां अलग अलग काम के लिये तैयार करे और जिस काम में जो जाना चाहता हो, जिस में जिस काम के लिये योग्यता हो उसको उस काम के लिये तैयार कर दे। अगर कोई यूनीवर्सिटी जाने लायक़ हो तो उसको यूनीवर्सिटी की ट्रेनिंग देनी चाहिये, अगर कोई ऐसा हो जो खेती का काम बहुत बहादुरी से चला सकता हो तो उसको खेती के काम के लिये तैयार कर दे, अगर उसमें ऐसी बुद्धि हो कि वह कल कारखाने को समझ सकता है तो उसको उसके लिये तैयार कर दे, अगर कोई ललित कलाओं का चमत्कार दिखला सके तो उसको उसका मौक़ा दिया जाये। इसके लिये यह आवश्यक नही है कि सब यूनीवर्सिटी में जायें। आज इसका विचार नहीं किया जाता। सब के सब यूनीवर्सिटी जाते है। मेरा खयाल है कि उन का समय और रुपया बर्बाद होता है और देश को जितना उनसे लाभ पहुंचना चाहिये उतना नही पहुंचता। आज बहुत लोग तो यह भी नही जानते कि वे यूनीवर्सिटी जाते है तो किस लिये जाते है। यों ही पास कर लेने पर सोचने लगते है कि क्या किया जाये, अगर कही काम मिल गया, कही कोई जगह मिल गई तो मिली नही तो पढ़ने लगते है, अपनी बुद्धि को विकसित करने के खयाल से नहीं बल्कि, मजबूर होकर और वहां से निकलने पर बहुतेरे ऐसे होते है कि वे ऐसे काम में लग जाते है जहां वे ठीक नही बैठते। आज आप देखेंगे कि शिक्षित वर्ग में एक बहुत बड़ी ऐसी जमात है जो असन्तुष्ट रहती है। जो सब कुछ कर के यह महसूस करते है कि हमको कोई नतीजा नहीं मिला। उसके घर वाले बहुत आशा लेकर उनको तैयार कराते है। उनकी सब आशा विफल होती है और वे घबड़ाते है कि हमने क्या किया। तो इस तरह से अगर शुरू से ही लोगों को बांट दिया जायेगा तो जो जिस काम के योग्य रहेंगे वह उस काम में लग जायेंगे और इससे यह होगा कि सारे देश का काम भी चलेगा और प्रत्येक आदमी को मौक़ा भी मिलेगा।

जब मुझ से यह कहा गया कि आप इस तरह का काम करना चाहते है तो मैंने सोचा कि यह एक ऐसा काम है जिसको प्रोत्साहन देना चाहिये और अगर मेरे यहां जाने से ही आप प्रोत्साहित हो जाते हैं तो मैं ने सोचा कि इसमें मेरा कोई खर्च भी नहीं और आप का काम भी चल जाता है। इसलिये मैंने बड़ी खुशी से निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया और यहां हाज़िर हुआ। मैं आपको बधाई देना चाहता हूं कि आपने एक नयी लाइन खोली है और मैं उम्मीद करता हूं कि इससे आप ही को नहीं बल्कि सारे देश को लाभ पहुंचेगा। ईश्वर ने आपके सूबे को बहुत धन दिया है पर वह अभी पृथ्वी के गर्भ में है। उससे जो लाभ आप को पहुंचना चाहिये अभी नहीं पहुंचा है और उससे बड़ी उम्मीदें की जा सकती हैं।

एक चीज़ के लिये माफ़ी मांग कर म बैठ जाऊंगा। मेरे यहां आने में बहुत देर हुई इसलिये मैं आपसे माफ़ी चाहता हूं। मगर इसमें मेरी ग़लती नहीं है। अगर किसी की

ग़लती है तो इन्द्र भगवान की ग़लती है। मगर हम विचार कर देखें तो उनकी भी ग़लती नहीं। जैसी हालत थी उसमें पानी की बड़ी ज़रूरत थी वर्षा हुई है तो उससे फ़सल को लाभ पहुंचेगा। अगर वर्षा के कारण आपको थोड़ी तकलीफ़ हुई तो मुझे उम्मीद है कि आप मुझे माफ़ करेंगे।

महाकौशल महाविद्यालय का शिलान्यास

महाकौशल महाविद्यालय का शिलान्यास करते समय तारीख २८-१२-५० को राष्ट्रपतिजी ने कहा—

माननीय शुक्ल जी, माननीय मिश्र जी, बहनो और भाइयो,

इस महाविद्यालय के जीवन में यह तीसरा संस्कार जैसा हो रहा है। इस के पहले यह दो स्थानों में रह चुका है और जैसे कोई शिशु जब वह बड़ा होने लगता है तो जैसे जैसे वह बढ़ता है उसके पहले के कपड़े छोटे पड़ते जाते हैं और उनको छोड़ कर उसके लिये बड़े कपड़े बनाने पड़ते हैं उसी तरह इस महाविद्यालय का भवन जैसे जैसे यह बढ़ता जा रहा है, छोटा पड़ता जा रहा है और उसकी जगह नये नये भवन बनाने पड़ रहे हैं। मुझे यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि जिस जगह को यह छोड़कर आता है वह जगह भी जो उस वक्त रहती है उससे कही बढ़ जाती है। सागर में यह था तो वहां यूनीवर्सिटी बन गयी और वहां से जिस स्थान पर यह रौबर्टसेन कालेज के नाम से स्थापित किया गया वहां से इसके हटने पर अब वहां इन्जीनियरिंग कालेज हो रहा है। अब इस स्थान पर यह आया है और मै आशा करता हूं कि यहां इतना बढ़ेगा, इतना फूलेगा और फलेगा कि अगर इससे भी कोई बड़ी ज़गह की तलाश करनी पड़े तो किसी को इसमे आश्चर्य न होगा। मगर मनुष्य भी बढ़ते बढ़ते एक ऐसी अवस्था को पहुंच जाता है जब कि फिर आगे बढ़ नहीं सकता। मुझे कितने दिन भी रहना पड़े जो मेरा अचकन है उसके बढ़ाने की अब ज़रूरत नही पड़ेगी; उससे ही काम चलता जायेगा और जब तक ज़िन्दा रहूंगा उससे ही काम निकलता जायेगा। उसी तरह से यह भी हो सकता है कि यह महाविद्यालय भी अपनी उस अवस्था तक पहुंच गया हो कि अब ज्यादा बड़े भवन की ज़रूरत न हो और इसी में ऐसी गुंजाइश रख दी गयी हो कि इसे बदलने की ज़रूरत न पड़े। यहां मैं समझता हूं काफ़ी जगह रख ली गयी है और ज़रूरत पड़ने पर नये मकान, नये भवन बनाये जा सकते हैं। इसलिये अगर इसके पिछले इतिहास को देखा जाये तो यह मालूम होता है कि यह एक बहुत ही सफल विद्यालय रहा है और इससे यह आशा होती है कि आगे भी यह एक बहुत ही सफल विद्यालय रहेगा। मुझे इससे और भी ख़ुशी हुई कि यह अपने जीवन में बढ़ता गया है और इसे नयी नयी अचकन पहनने की आवश्यकता पड़ी है। मैं आप सब भाइयों को बधाई देना चाहता हूं कि आपने अपने सूबे में शिक्षा के प्रचार और प्रसार के लिये प्रबन्ध किया है और आधुनिक विद्यालय की जितनी चीज़ें होती हैं, सब पर आपने ध्यान दिया है, और सब के लिये जहां जिस का मौक़ा है प्रबन्ध करते जा रहे हैं। उसी सिलसिले में यह भी एक काम हुआ है और मैं आशा करता हूं कि यह आपका सारा शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम पूरा होगा और एक दिन आयेगा जब आपका सूबा और देश आपको बधाई दे सकेगा। आज सवेरे मैंने शिक्षा के सम्बन्ध में कहा था और

अभी आप से केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि शिक्षा के प्रसार के लिये भारतवर्ष में बहुत जगह है। अभी अपने यहा प्राथमिक शिक्षा भी बहुत कम ही लोगों को मिल सकी है। अभी भी इस देश में १०० में १२-१८ आदमी ही लिखना पढ़ना जानते है। यहां इतना मैदान पड़ा है कि कोई ठिकाना नहीं। उसको पूरा करना कोई आसान काम नहीं। महात्मा गान्धी ने बुनियादी तालीम की अपनी योजना रखी थी। उस योजना की सबसे बड़ी चीज़ मेरी समझ में यही है कि भारत जैसे ग़रीब देश में भी लड़कों को पढ़ते पढ़ते काम करने की आदत पड़े और उस काम में शिक्षा का प्रसार भी बढ़ता जाये और ग़रीब से ग़रीव लोग भी पढ़ें और कोई निरक्षर न हो। इस देश में सब के पास इतने पैसे कहां कि सब पढ़ सकें। दूसरी तरफ जब महात्मा गान्धी की उस योजना की तरफ़ दृष्टि जाती है तो विश्वास होता है कि उस योजना के द्वारा हम प्राथमिक शिक्षा सारे देश के लिये अनिवार्य कर सकते है। जो ऊपर के दर्जे के लोग है उनके लिये जैसा मैंने कहा था जहां जहां जैसा मौक़ा हो उसको आप बढ़ा सकते हैं और बढ़ावें। यहां की स्थिति बहुत ही अच्छी है क्योंकि यहां पर जैसा मैंने कहा ईश्वर ने सब कुछ दिया है और अगर हमारे लोगों की बुद्धि निखरेगी और उनके हाथों में कौशल आ जायेगा तो जो ग़रीबी है वह दूर हो सकती है और ग़रीबी केवल पैसे की नही बल्कि आज जो मस्तिष्क की गरीबी है वह भी दूर हो सकती है। मै आशा करता हूं कि इस विद्यालय से इस काम में सहायता मिलेगी।

आपने मुझे यह मौक़ा दिया उसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद।

जबलपुर में नागरिक अभिनन्दन

जबलपुर में तारीख २८-१२-५० को नागरिकों की ओर से सेठ गोविन्ददास द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब में राष्ट्रपति जी ने कहा—

सेठ गोविन्ददास जी, बहनो और भाइयो,

आज प्रायः मैं दो वर्षों के बाद आपके यहां हाज़िर हुआ हूं। इसके पहले जैसा अभी बताया गया है मै कई बार यहां आ चुका हूं। इसलिये मैं जबलपुर से अपरिचित नहीं हूं और मैं समझता हूं कि जबलपुर के लोग भी मुझ से अपरिचित नही है। पर आज से पहले जब मैं यहां आया करता था तो एक दूसरी हैसियत से आया करता था। उन दिनों मैं कांग्रेस का एक सेवक था और कांग्रेस के काम से मै सारे देश में दौरा किया करता था और उसी सिलसिले में आपके यहां भी आया करता था। मुझे आप सब भाई और बहनों ने, देश के सभी प्रतिनिधियों ने चुनकर आज एक विशेष स्थान पर बैठा दिया है और इस वक़्त अगर मै कहीं जाता हूं तो इसी हैसियत से जाता हूं। मेरी इच्छा कुछ भी क्यों न हो इस हैसियत के कारण मैं काफ़ी लोगों से घिरा रहता हूं। जैसा कि इस समय भी स्पष्ट है जब आप लोगों की आंखों के सामने भी पुलिस और फौज मौजूद है। मै जहां भी जाऊं इन लोगों से मुझे घिरा रहना है। साथ ही मैं किसी विशिष्ट दल का नहीं हूं। आज तो सब विचार और सब तरह के लोगों से मिलकर

ऐसी बातें करना चाहता हूं जो सब के हित में हों और केवल एक विशेष संस्था या दल के लिये ही न हों या केवल कांग्रेस के लिये ही न हों। यद्यपि कांग्रेस के साथ मेरा सम्बन्ध जितना घनिष्ट रहा है उसे आप सभी जानते है और जिसका ज़िक्र अभी सेठ गोविन्ददास जी ने किया है, फिर भी मैं उस के कारण अब उसी के साथ वास्ता नहीं रख सकता।

इस समय हम स्वराज पा चुके हैं। देश की अवस्था कुछ न कुछ बदल रही है। सारे संसार की अवस्था दिन प्रति दिन बदल रही है। आज हम ऐसी अवस्था में पहुंच गये है जब अपने देश का भला या बुरा हमारे अपने हाथों में है। इस देश के लोग अपने प्रतिनिधियों द्वारा आज देश का शासन कर रहे है। इसमें किसी बाहरी आदमी का कोई अधिकार नही है, कोई हाथ नहीं है। अगर हम इस काम को ठीक अन्जाम देते है तो इसका जो कुछ भी श्रेय होगा वह अपने ही देश के लोगों को मिलेगा और अगर कोई बात हम बिगाड़ते है तो उसकी जो भी शिकायत होगी वह भी अपने ही देश के लोगों की होगी। इसलिये स्वराज के साथ साथ हमारी जवाब-देही भी बढ़ गयी है।

अभी एक नया संविधान देश के प्रतिनिधियों ने बनाया है। दस ग्यारह महीने हुए वह संविधान जारी हुआ। उसके अनुसार इस पद पर मुझे बैठाया गया। उस संविधान की एक महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके अनुसार सारे देश में एक नया चुनाव होगा। वह आज से प्रायः एक वर्ष के बाद अगले साल के नवम्बर-दिसम्बर महीने में होगा यह निश्चय किया गया है। देश भर में ऐसे सब लोगों को चाहे वे स्त्री हों या पुरुष, जिन की अवस्था २१ साल की हो गयी है इस चुनाव में भाग लेने का अधिकार होगा और सब लोगों के द्वारा जो लोग चुने जायेंगे वे ही देश का शासन करेंगे। इस तरह अब हरेक बालिग़ आदमी को समझना चाहिये कि देश के शासन की जवाबदेही उस के सर पर है। कुछ लोग यह समझ सकते हैं कि जहां करोड़ करोड़ आदमी अपनी राय दे कर प्रतिनिधि चुनेंगे वहां हमारे एक आदमी के मत से क्या होने वाला है। ऐसा नहीं समझना चाहिये। जिस तरह बूद बूंद से तालाब भर जाता है, नदियां भर जाती हैं, समुद्र भी भर जाता है उसी तरह एक एक अगर अपना कर्तव्य और अपनी जवाबदेही ठीक समझ कर निभावे तो देश का बहुत भला होगा। इस लिये मैं चाहता हूं कि यह जो बड़ी जवाबदेही हमारे सभी लोगों के हाथों में आ गयी है इस जवाबदेही को समझ कर हम देश का काम करें। इस जवाबदेही का अर्थ क्या है यह समझना चाहिये। प्रत्येक आदमी को अपने सामने देश का हित रखना चाहिये और अपने हित को प्रधानता न दे कर अपने नज़दीक के अपने आस पास के लोगों के हित को, जिनके साथ दोस्ती हो, प्रेम हो उनके हित को प्रधानता देनी चाहिये। जहां कही भी बहुत लोगों को वोट देने की बात आवे और आपके सामने यह प्रश्न आवे कि उनमें किनको वोट देना चाहिये तो आप विचारें और सोचें कि उन में से किस को वोट देना अच्छा होगा और उसके मुताबिक़ आप अपनी राय दें। प्रजातन्त्र की सब से बड़ी खूबी यही होती है कि वहां जो कुछ होता है वह जनता की राय से होता है और जनता की राय से कार्य होता है तो प्रजातन्त्र का काम भी ठीक चलता है। अगर प्रजातन्त्र की राय जनता की राय नहीं तो प्रजातन्त्र का काम भी ठीक नहीं होगा। यह आप को समझना है कि जिन लोगों को आप अपना प्रतिनिधि चुन कर भेजेंगे वही देश के राजकाज का काम, देश के शासन का काम चलायेंगे और अगर उन्होंने उसे ठीक नहीं चलाया तो यह दोष उनका तो होगा

ही मगर इस दोष के भागी आप भी होंगे। इसलिये आशा है कि आप समझ बूझ कर चुनेंगे और समझ बूझ कर अपनी राय क़ायम करके काम करेंगे।

देश के सामने बड़ी बड़ी समस्यायें आयेंगी। यों तो चुनाव का ही काम इतना बड़ा है जिसका प्रबन्ध करना कोई भी गवर्नमेंट हो उसके लिये कठिन चीज़ होगी। हमारे देश में इतने लोगों को वोट देने का मौक़ा कभी पहले नहीं था और जितने लोग वोट देते थे उनके मुक़ाबले में जो इस नये संविधान के मुताबिक़ वोट देंगे उनकी संख्या कई गुनी होगी। मैंने सुना है कि जो फ़ैहरिस्त वोटरों की तैयार की गयी है वह इतनी लम्बी फ़ैहरिस्त हो गयी है जितनी लम्बी फ़ैहरिस्त कि किसी भी देश में मत देने वालों की आज तक नहीं हुई। इस फ़ैहरिस्त में १७-१८ करोड़ लोगों के नाम दर्ज हुए हैं। चीन और रूस को छोड़ कर और कोई दूसरा देश नही है जिसकी आबादी भी १७-१८ करोड़ लोगों की हो, मतदाताओं की कौन कहे। इसलिये इतने बड़े चुनाव का इन्तज़ाम करना गवर्नमेंट के लिये भी बहुत बड़ी चीज़ होगी, कठिन काम होगा। वह तभी सफलता पूर्वक हो सकता है जब सभी लोगों का सहयोग गवर्नमेंट के साथ हो और सब लोग यह समझ कर मदद करें कि यह काम उनका अपना है, उसको बनाना है, बिगाड़ना नहीं। मगर यह चुनाव का काम तो चन्द दिनों में ख़त्म हो जायेगा। देश के जो दूसरे मसले है, दूसरी समस्यायें हैं वे तो हमारे सामने रहेंगी सच पूछिये तो यह चुनाव तो एक हथियारमात्र है जिसके द्वारा हम ऐसे लोगों को चुनना चाहते हैं जो इन मसलों को हल करेंगे। इन मसलों की तरफ़, इन प्रश्नों की तरफ़ यहां की जनता का ध्यान अच्छी तरह से लाना चाहिये। हमारे जितने राजनैतिक काम करने वाले हैं, जितने समाचार पत्रों के लिखने वाले है, जितने ऐसे लोग है जो इन सब चीजों को समझ सकते हैं उनका यह धर्म है और कर्तव्य हो जाता है कि इन सभी प्रश्नों के हर पहलू को लोगों को पूरी तरह से समझायें, और यह बतलायें कि किस से देश का भला है और किस से बुराई हो सकती है।

इस वक्त सारा संसार एक बहुत नाज़ुक परिस्थिति से गुज़र रहा है। मालूम नही कि इसका नतीजा क्या निकलेगा। हो सकता है कि भयंकर युद्ध छिड़ जाये। आजकल के ज़माने का युद्ध भूतकाल के युद्धों के मुक़ाबले में कहीं अधिक नाशकारी, कही अधिक भयंकर होगा क्यों कि आज जो अस्त्र शस्त्र बन गये है वे ऐसे विनाशकारी हैं जैसे पहले कभी नहीं बने थे और साथ ही सब देशों का एक दूसरे के साथ कुछ ऐसा सम्पर्क भी हो गया है कि कोई देश अगर चाहे भी तो अपने को सब देशों से बिल्कुल अलग नहीं रख सकता है। किसी न किसी तरह से वे किसी न किसी की पूंछ में बंध जायगा और इस तरह से अपनी इच्छा नहीं रहने पर भी बहुतेरे देश लड़ाई के लपेट में आजायेंगे। अगर ऐसी अवस्था आयी तो हमारे देश के लोग क्या करेंगे। हमारा प्रयत्न हैं, हमारी गवर्नमेंट का प्रयत्न हैं, हमारे प्रधान मन्त्री का प्रयत्न है कि हम किसी तरह से लड़ाई न होने दें। और जो कुछ हमारी शक्ति है, जो कुछ हमारे पास साधन हैं, जहां तक हमारी पहुंच है हम इस कोशिश में लगे हुए हैं कि लड़ाई बढ़ने न पावे। मगर कोई कह नहीं सकता है कि हमारे इस प्रयत्न का क्या फल होगा। ऐसी अवस्था में कहीं लड़ाई छिड़ गयी तो हम यही चाहेंगे कि हम लड़ाई से अलग रहें। मगर अलग रहने के लिये भी देश के अन्दर शक्ति ज़रूरी है, देश के लोगों में धैर्य ज़रूरी है, देश के

लागों में कौशल ज़रूरी है जिसमें हम अपनी रक्षा कर सकें और लड़ाई आ जाये तो हम अपन को सम्भालें, घबड़ाहट न आने दें, किसी तरह की विपत्ति आ जाये तो उससे घबड़ा कर हम अपने कर्तव्य से फिसल न जायें। यह तो हमेशा ही हरेक स्वतन्त्र देश के लिये ज़रूरी है। मगर आज की नाज़ुक परिस्थिति में हमारे देश के लिये यह और भी ज़रूरी हो गया है।

अभी जो देश में संकट है उस का भी सुधार ज़रूरी है। मुझे इस बात की खुशी है कि आपके यहां दो तीन महीने के बाद दो तीन दिनों से इन्द्र भगवान् ने कृपा करके थोड़ा पानी बरसा दिया है। जहां तक मुझे सूचना मिली है इससे यह आशा की जा सकती है कि इसका लगी हुई फ़सल पर अच्छा प्रभाव होगा। अगर यह वर्षा नहीं होती तो जो स्थिति है वह और भी जटिल हो जाती। यह एक प्रकार से ईश्वर की कृपा हमारे ऊपर हुई। मगर इस बात की खुशी मनाते हुए भी जब हम सारे देश की ओर आंखे डालते है तो मालूम होता है कि यह कृपा सभी जगहों में नही हुई है और इसका फल यह हुआ है कि आज देश एक अत्यन्त गम्भीर संकट में पड़ गया है। अन्न की कमी सभी जगहों में हो रही है और आपका सूबा जो पहले और सूबों को अन्न दिया करता था और जहां से अन्न लेकर दूसरे सूबों में केन्द्रीय सरकार भेजा करती थी आज यहां भी अन्न का टोटा है और दूसरे सूबों में जहां यों ही मामूली तौर से अन्न की कमी रहा करती थी वहां फ़सल मारी जाने की वजह से आज कठिन समस्या उपस्थित हो गयी है। इस समस्या को हल करने के लिये प्रान्तीय सरकारें और केन्द्रीय सरकार जहां तक हो सकता है प्रयत्न कर रही है। प्रयत्न दो प्रकार के है। एक प्रयत्न तो यह है कि देश के अन्दर लोगों को प्रोत्साहन दिया जाये, लोगों को बताया जाये कि जहां तक हो सके, जो कुछ हो सके वे खाद्य पदार्थ पैदा करें। अधिक परिश्रम करके, जिस तरह से हो सके, पुरानी ज़मीन में, नयी ज़मीन में अन्न हो, फल हो, कन्द मूल हो जो कुछ हो पैदा करें जिससे मनुष्य का पेट भर सकता हो। एक तो यह प्रयत्न है और इसके लिये गवर्नमेंट की ओर से जहां पानी की कमी है वहां पानी पहुंचाने का प्रयत्न किया जा रहा है, कुएं खोद कर, नहर लगा कर और जो नदियां है उनमें बांध बांध कर जो कुछ ज़रिया हो सकता है उसका उपयोग किया जा रहा है जिस से अधिक पैदावार हो और उसे लेकर लोगों तक पहुंचाया जा रहा है। यह तो एक प्रकार का प्रयत्न है। दूसरा प्रयत्न यह है कि जहां कहीं भी लोगों के पास अपनी ज़रूरत से कुछ ज़्यादा अन्न हो उसे उनसे लेकर जहां कमी हो वहां पहुंचाया जाये। इसके अलावा विदेशों से भी जहां तक हो सकता है अन्न लाने का प्रयत्न किया जा रहा है। विदेशों से अन्न लाने में कठिनाई बहुत है। सब से बड़ी चीज़ तो यह है कि उसके लिये जो दाम देना पड़ता है वह इतना ज़्यादा होता है कि उसे देना आसान नही है। यह कृषि प्रधान देश दूसरे देशों से अन्न लाये और तब अपना पेट भरे यह हमारे लिये लज्जा और दुःख की बात है। मगर जब ज़रूरत पड़ती है तो ऐसा करना पड़ता है और गवर्नमेंट जहां जहां हमें अन्न मिल सकता है वहां से अन्न लाने का प्रयत्न कर रही है। एक तो अन्न मिलना भी आसान नहीं ; दूसरे अगर मिले भी और हम उसका दाम चुका सकें तो भी उसको यहां लाने के लिये जहाज़ की आवश्यकता होती है और जहाज़ों का मिलना भी उतना आसान नहीं है। तो भी प्रयत्न किया जा रहा है और आशा की जाती है कि ज़रूरत के मुताबिक़ हम विदेशों से अन्न ला सकेंगे। अपने यहा के प्रयत्न से और विदेशों से लाये हुए अन्न से आशा की जाती है कि इस संकट से हम किसी तरह निकल जायेंगे। पर मै आप से यह कहना चाहता हूं कि यह काम सिर्फ़ गवर्नमेंट का ही नहीं है।

इस काम में सभी को हाथ बंटाना है और हाथ बंटाने के तरीके भी बहुत हैं। सब से पहली चीज़ तो यह है कि जहां अन्न की कमी हो वहां लोग घबड़ायें नहीं। घबड़ाहट का नतीजा यह होता है कि जो थोड़ा बहुत अन्न मिलता रहता है वह भी कही छिप जाता है और उससे अन्न ी कमी और बढती है। इसलिये घबड़ाने से कोई काम बनता नहीं है, बिगड़ता है। अगर घर में कोई बीमार पड़े और घर के लोग घबड़ा जायें और डाक्टर को बुलावे नही तो हाय हाय करके रोने से उसका रोग कभी कम नही होगा। उस समय पुरुषार्थ तो इसमें है कि धैर्य बांध कर रहें और जो कुछ करना है वैद्य को बुलाना हो, डाक्टर को बुलाना हो बुला कर उसका उपचार करावें। अगर लोग घबड़ायें नही तो रोग भी अच्छा हो जाता है। मगर घबड़ा कर रोगी को छोड़ दें तो रोगी का रोग भी बढ जाता है और उसका उपचार नही होता है। उसी तरह से जब कहीं अन्न की कमी हो तो लोग घबड़ायें नहीं और जिस तरह मामूली तौर से लोग अपना अपना कारबार करते हैं करते रहें। इस का ध्यान ज़रूर रखें कि एक दाना भी कहीं बर्बाद न होने पाये। आज बहुत अनाज कीडे लगने से, घुन लगने से बर्बाद होता है और खाने में भी ज़रूरत से ज़्यादा लेकर लोग नुकसान करते हैं। साथ ही साथ लोगों को इसके लिये भी तैयार रहना चाहिये कि जो भी अन्न हमें मिले उसी से हम अपना काम चला लें। मै एक ऐसे स्थान से आया हूं जहां लोग अधिकतर चावल ही खाते है। अगर हमें चावल के बदले गेहूं खाना पड़े तो क्या हम चावल के लिये रोयेंगे? जहां हमें जो कुछ मिलेगा खा लेंगे। चावल के बदले हमे गेहूं मिलेगा तो हम गेहूं खा लेंगे, गेहूं नहीं मिले मकई मिले तो उसे खा लेंगे। अगर वह भी न मिले तो बाजरी खायेंगे,जो कुछ मिलेगा खायेंगे। देश ही के लोग आखिर इस प्रकार के अन्न को खाते हैं, करोड़ों की संख्या में खातें हैं। अगर हम नही खाते हैं तो अपना ही नुकसान करते हैं। इसके अलावा अन्न को छोड़ कर दूसरी चीज़ें होती हैं जो काफ़ी पुष्टिकारक होती हैं और जिनको खा कर मनुष्य रह सकता है। हमारे यहां तो ऋषि मुनि कन्दमूल ही खा कर रहा करते थे। आज भी जंगलों में बहुत लोग कन्दमूल ही खा कर रहते हैं, अन्न नहीं खाते। अग़र ऐसा समय आ जाये तो कन्दमूल का तिरस्कार न किया जाये। इनको पैदा किया जाय और जो लोग कुछ भी किसानी जानते हैं वे जानते हैं कि कन्दमूल अन्न से ज़्यादा पैदा होता है। एक बीघे ज़मीन में जितना अन्न पैदा हो सकता है उससे कन्दमूल कहीं अधिक पैदा हो सकता है। मैं जहां जहां जाता हूं लोगों से कहता हूं कि जहां अन्न का संकट हो लोग कन्दमूल पैदा करें। अब यह भी ज़रूरी है कि लोग सोचें कि किस तरह से पैदा करें, किस तरह से कम अन्न से चला सकते हैं। अगर यह चिन्ता हमारे देश के सभी लोग करें तो संकट आसानी से दूर हो जायेगा। यह संकट आज हमारे ऊपर पहले पहल नहीं आया है। इसके पहले भी कई बार इस तरह का संकट हमारे ऊपर आ चुका है और हमारे देश के लोगों ने इसका मुक़ाबला किया है और ऐसे समय में किया है, जब गवर्नमेंट का अधिकार हमारे अपने प्रतिनिधियों के हाथों में नहीं था। आज तो हमारे सौभाग्य से अपने लोग शासन की बागडोर अपने हाथों में रखते हैं और सब काम चला रहे हैं। आपके दुःख को वे जानते हैं और जो कुछ उनसे हो सकता है वे कोशिश करते हैं कि यह संकट दूर हो जाये। सब चीज़ों के रहते हुए आपके घबड़ाने की कोई बात नहीं है।

मैं चाहता हूं कि आप सब लोग यह असर डालें कि सारे देश के लोग अपने को एक समझें। स्वार्थ के वश में पड़ कर चाहे कोई किसान हो, चाहे व्यापारी हो, शहर का रहने वाला हो, ख़रीद-कर के अन्न खाने वाला हो किसी को इस संकट से अपना स्वार्थ सिद्ध नहीं करना चाहिये, अपना

लाभ नहीं उठाना चाहिये और जिससे जो बन पड़े दूसरे का खयाल रखना चाहिये। इस समय जो नाजायज़ मुनाफ़ा उठाना चाहते हैं वे देश के साथ घात करते हैं चाहे वे किसान हों, व्यापारी हों और चाहे कोई और हों। यह ज़रूरी है कि जब तक देश में अन्न का टोटा रहे देश में जो कुछ है उसे सब मिलकर बांट कर खायें। मैं ने कल नागपुर में इस विषय पर ज़ोर दे कर कहा था और आप लोगों से भी यह कहना चाहता हूं कि आप लोग जहां तक हो अपने कर्तव्य को महसूस करके इस संकट से देश का त्राण करें और मेरा विश्वास है कि अगर लोग चाहेंगे तो कर लेंगे। आप में शक्ति है, आप में धैर्य होना चाहिये और इच्छा होनी चाहिये। अगर आप में धैर्य हो और अगर आप ने इच्छा की तो यह संकट बात की बात में टाला जा सकता है।

अभी इस तरह की और भी बहुत सी बातें हैं जिनके बारे में अगर मैं कहना चाहूं तो बहुत वक़्त लग जायेगा। मैं ने इसी विषय को इस वक़्त सब से आवश्यक समझा है और इसी विषय पर अधिक ज़ोर देना मुनासिब समझा है और इसलिये अन्य विषयों की ओर आपका ध्यान खींच करके जो अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है उससे उसे हटाना नहीं चाहता हूं।

आप सब भाई और बहनों ने जिस प्रेम के साथ मेरा स्वागत किया, मुझे मानपत्र दिया और चाहे मैं किसी भी हैसियत से आया हूं जैसा प्रेम दिखलाया है वैसा ही प्रेम आज भी दिखलाया उसके लिये आप सब को बहुत बहुत धन्यवाद।

मोजरी आश्रम

तुकड़ो जी महाराज के मोजरी आश्रम में तारीख़ ३०-१२-५० को राष्ट्रपति जी ने कहा—

महाराज, बहनो और भाइयो,

अभी आपसे महाराज ने कहा है कि मैं एक बार पहले भी यहां आ चुका हूं और आपके आश्रम में कुछ समय बिता चुका हूं। जब मुझे इस दौरे का कार्यक्रम बनाने को कहा गया था तो मैं ने सोचा कि जब मैं अमरावती ज़िले में जाऊंगा, नागपुर और वर्धा जाऊंगा, और यहां नहीं आऊं तो यह ठीक नहीं होगा। इसलिये मैं ने इस स्थान को भी अपने कार्यक्रम में रख लिया और यहां आकर जो कुछ मैं ने देखा उससे मुझे बहुत सन्तोष हुआ क्यों कि मैं ने देखा कि उस वक्त जो कुछ मैं ने देखा था उससे सब चीजें कहीं आगे बढ़ गयी है और उन सभी चीज़ों की तरक्की और उन्नति हो गयी है। आप यह समझते हैं कि गांव की उन्नति किस तरह हो सकती है और उसी भावना को सामने रख कर जो सेवा मंडल महाराज ने स्थापित किया है वह गांव गाव में काम कर रहा है। इतना ही नहीं कि वह गांव गांव में काम कर रहा है, उसका असर जहां काम नहीं हो रहा है वहां भी दूर दूर तक हो रहा है। जैसा आपने कहा, आपके काम को देखकर हमने आपको बिहार में बुलाया था और वहां भी जाकर आपने जागृति पैदा कर दी थी। जब हम सोचते हैं कि आपका काम क्यों इतना आगे बढ़ता है, इसकी क्यों प्रगति हो रही है तो हम को मालूम होता है कि सच्ची सेवावृत्ति से अगर साधु लोग देश के काम में पड़ जायें तो बड़ी तेज़ी से सब काम आगे बढ़ सकेंगे। भारतवर्ष एक धर्मपरायण देश है। हमारे लोगों में धार्मिक आस्था

और भावना है । उस भावना को अपने कारनामों से साधुओं ने खराब कर दिया है क्यों कि जब वे अपने स्वार्थ में लग जाते है तो उनकी बदनामी होती है और कुछ लोग उनकी शिक़ायत भी करते हैं । मगर जो सच्ची सेवा की भावना है उसे लेकर लोगों में प्रचार किया जाये, उनको रास्ता दिखलाया जाये तो मेरा अपना विश्वास है कि लोग जल्द ही सब बातों को समझ सकते है और उनके बताये अनुसार काम कर सकते हैं । यही कारण है कि महाराज अपनी भजन मंडली के साथ जब कही जाते है तो मै ने सुना है और देखा है कि दो दो लाख लोग इकट्ठे हो कर उनका भजन सुनते है । इस तरह की लोगों में धार्मिक भावना है और विशेष करके महाराष्ट्र की धार्मिक परम्परा तो बहुत दिनों से चली आती है और उस परम्परा ने उसमें नव जीवन क़ायम कर दिया है । ज़रूरत इस समय इस बात की है कि गांव के लोगो में शिक्षा प्रचार सेवा संचार किया जाये, उनको खेती की उन्नति करना, गो रक्षा और गो पालन का काम बतलाना ज़रूरी है और मै देखता हूं कि सब चीज़ों को थोड़ा थोड़ा करके नमूनें के तौर पर आपने रख दिया है । इसके अलावा चर्खे चलवाना, कपड़े की बुनाई का काम भी मैं ने देखा और रहन सहन का नमूना तो आंख के सामने ही है । इस तरह से जीवन के सभी पहलुओं पर आप लोगों को मार्ग दर्शन करा रहे है इसके लिय मै आपको धन्यवाद करता हूं । जिस तरह से महाराज ने काम आरम्भ किया है और जिस सेवा भावना से काम वह कर रहे हैं अगर हमारे देश के सभी साधु इसी भावना से काम करें तो देश का बड़ा उपकार होगा । पहले साधु लोग उपकार का काम किया करते थे और गृहस्थ लोग गृहस्थी का काम करते थे क्यों कि गृहस्थी के काम से गृहस्थों को समय ही कहां बचता था । पर जब साधु लोग इस काम से हट गये तो गृहस्थों को ही यह काम करना पड़ा । आपने जो यह काम आरम्भ किया है वह बहुत ही सुन्दर और अच्छा काम है और मै आशा करता हू कि दिन प्रति दिन आपकी उन्नति होती जायेगी ।

शिवाजी लोक विद्यापीठ

शिवाजी लोक विद्यापीठ का उद्घाटन करते समय शिवा जी कालेज अमरावती में तारीख ३०-१२-५० को राष्ट्रपति जी ने कहा—

माननीय शुक्ल जी, डाक्टर पंजाबराव देशमुख, बहनो और भाइयो,

अपने विद्यापीठ के इस समारोह में सम्मिलिति होने का जो अवसर आपने मुझे आज दिया है इसके लिये आपका मै अत्यन्त अनुग्रहीत हूं । कुछ दिन पहले जब मुझ से डाक्टर देशमुख ने यहा आने के लिये कहा था उसी वक्त मै ने यह सोच लिया था कि यहां आना तो होगा ही सुभीते से समय देख कर निकाल लूगा और ऐसा ही हुआ यह ईश्वर की कृपा है ।

शिक्षा सम्बन्धी विषयों में मेरी विशेष दिलचस्पी रही है । पिछले कुछ दिनों में मैं ने कई जगहो पर आपके सूबे में और बाहर भी शिक्षा के सम्बन्ध में अपने विचारों को प्रकट किया है । मै जानता हूं कि कुछ विषयों में मेरे विचार आप के कुछ लोगों को शायद नहीं रुचते हैं । मगर मैं यह भी जानता हूं कि जो मेरी विचार शैली है उससे आप जो यहां काम कर रहे हैं उसका बहुत सामंजस्य है और इसलिये मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मैं आपके समारोह में शरीक हो सका

और अपने दो शब्द आपसे कह सका तथा आपको बधाई दे सका । जिस काम को आपने आरम्भ किया है वह ठीक आरम्भ किया है । इसे आप चलाते जायें, बढ़ाते जायें, ईश्वर आपकी मदद करेंगे ।

जो शिक्षा प्रणाली हमारे देश में प्राय: १०० वर्षों से जारी रही है उसका एक नतीजा यह हुआ है कि ग्रामीण जनता और अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों के बीच में एक बहुत विभेद पड़ गया है और अगर भारत को फिर उन्नत होना है तो जो ग्रामीण जनता है उसकी उन्नति होनी आवश्यक है, उसकी उन्नति के बिना भारत उन्नत कहा नहीं जा सकता । इसलिये इस शिक्षा प्रणाली में बहुत कुछ संशोधन की आवश्यकता है । हम जानते हैं कि अन्य देशों में शिक्षा कुछ इस तरह से दी जाती है कि वहां प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षण की जिस चीज़ की आवश्यकता होती है वह उसे मिलती है । ऊंची से ऊंची शिक्षा जिनको अपनी बुद्धि और मस्तिष्क का बल है उन को मिल सकती है । इस तरह की शिक्षा भी होती है जो बुद्धि में वृद्धि करती है । पर इस तरह की शिक्षा के लिये सभी योग्य नहीं समझे जा सकते हैं । अधिकांश लोगों के लिये तो ऐसी शिक्षा होनी चाहिये जिससे लाभ उठा कर वे अपना और दूसरों का भला कर सकें और इस तरह की शिक्षा आपकी जैसी संस्थाओं द्वारा ही लोगों को मिल सकती है और दी जा सकती है । इसलिये मैं इसका स्वागत करता हूं ।

अभी डाक्टर देशमुख ने यूनीवर्सिटी कमीशन के विचारों की तरफ़ इशारा किया । उन्होंने ग्राम विद्यापीठ बनाने की योजना पर ज़ोर दिया है । उन्हों ने विदेश की योजनाओं की तरफ़ भी इशारा किया है और ख़ास तौर पर डेनमार्क या दूसरे जो इस तरह के स्कैंडिनेवियन देश हैं उनमें प्रचलित शिक्षा पद्धति पर बहुत ज़ोर दिया है । इस शिक्षा द्वारा वहां के लोगों ने ऐसा समाज रच लिया है जिसमें कोई अशिक्षित नहीं है, कोई बहुत ग़रीब नही है और अत्यन्त धनिक भी नहीं है । अर्थात् एक प्रकार से सभी लोग सुखी हैं, अपनी उन्नति कर सकते है, सुख से रहते हैं, बुद्धि से जो लाभ मनुष्य उठा सकता है वह लाभ उनको मिलता है और उन का शिक्षाक्रम भी कुछ ऐसा ही बना है जिससे गांव के लोग भी उतना ही लाभ उठा सकते है जितने शहर के लोग । इतना ही नहीं, यद्यपि वे देश छोटे छोटे देश हैं, और देशों के मुकाबले में यद्यपि इन देशों की कोई गिनती नहीं, पर यदि सस्कृति को ध्यान में रखें तो वे सब से अधिक उन्नत भी कहे जा सकते हैं । उनके पास अमेरिका जैसा धन नही है, इंगलैड के जैसा धन नही है, उन के पास उतनी बड़ी फौज नही है, लड़ाई के सामान भी उन के पास उतनी मात्रा में नहीं है पर अगर संस्कृति के खयाल से उन को हम मापें तो उनसे आगे नहीं तो कम भी नही पायेंगे । यह वहां की शिक्षा प्रणाली का फल है । हम इस देश में जब से यहां महात्मा जी का अवतार हुआ और उन्होंने अपना काम शुरू किया यह सुनते आ रहे हैं और महात्मा जी भी बराबर दिखलाते रहे कि इस देश को ऐसा बनाओ कि इसमें कोई खाने के बग़ैर मरे नही और कोई बिना पढ़े नहीं रह जाये, किसी को बिना घर के मैदान में रहना न पड़े, किसी को औषधि के बिना रोगग्रस्त हो कर मरना न पड़े । इसके साथ साथ वह यह भी मानते थे कि मनुष्य की कुछ ऐसी प्रकृति होती है कि जब उसके हाथों में कुछ आने लगता है तो उसका लालच बढ़ता है । किसी को ९९ मिले तो वह सोचने लगता है कि कम से कम वह १०० तक पहुंचे और जब वह १०० तक पहुंचता है तो फिर दूसरे ९९ तक पहुंचने की इच्छा करता है । इस तरह मनुष्य ९९ के फेर में रहता है और उसकी इच्छा

कभी समाप्त नही होती। महात्मा जी इस बात को मानते थे कि हमारे देश में जो कुछ उपलब्ध रहा है, हमारे जो मौलिक सिद्धान्त और सस्कृति रही है उसके अनुसार किसी को भूखा मरने न देना चाहिये और साथ ही साथ हरेक के लालच की सीमा भी होनी चाहिये जिस से ज्यादा जाना उसे आवश्यक नही होना चाहिये। हमारे देश के सामने यही बहुत बड़ा आदर्श उन्होंने रखा है। और देशों के सामने आदर्श यह रहा है और कम से कम आजकल है कि जितना हो उसको बढाते चलो। अपने देश मे भी हम यही सुना करते है कि लोगों के रहने का स्तर ऊंचा होना चाहिये। आज जो स्तर है हम मानते है कि उससे ऊचा अवश्य होना चाहिये। मगर केवल यही चीज़ नही है। सब के पास धन होना चाहिये। मगर केवल धन ही सब कुछ नही है। हमें सब चीज़ों को एक साथ रख कर काम करना है। जो शिक्षा प्रणाली आज देश में ज़ारी है उस का यह फल है कि हम इस तरह सोचने लगे है। अभी तक तो हम उस सीमा तक नही पहुच पाये है, वहा तक पहुचने मे अभी देर है। इसलिये आज कोई वैसी चिन्ता नही है कि हमको उसके लिये कुछ रोना पडे। मगर जब आदर्श की बात होती है तो यह कहना पडता है कि यह आदर्श हमको अपने सामने रखना चाहिये। मै जानता हू कि यदि इस तरह ग्राम विद्यापीठ स्थापित हो जायें, इस तरीके का काम करें तो हमारा स्तर भी ऊचा होगा और साथ ही साथ हम को शांति भी मिलेगी। इसलिये मै इस प्रकार के प्रयत्न का स्वागत करता हू।

अभी आपके सामने बहुत विवरण सुनाये गये। इसको सुनकर मुझे और भी प्रसन्नता हुई कि आप थोड़े ही दिनों के अन्दर इतनी उन्नति कर पाये है। एक चीज़ मैं आपसे कहना चाहता हू। गाधी जी ने हमको सिखलाया है कि हम को अपने प्रयत्न से जो कुछ करना हो करना चाहिये और ऐसे समय मे सिखलाया था जिस समय हमारे हाथों में अधिकार नही था और गवर्नमेंट से हम को लडना, झगड़ना पडता था और इसकी वजह से हमारे पास शक्ति भी आती थी। आपने ठीक कहा है कि आपकी सस्था को दो चीज़ो की आवश्यकता है, गवर्नमेंट से मदद चाहिये और गवर्नमेट की मान्यता चाहिये। मैं मानता हू कि इन दोनों चीज़ों की जरूरत आपको हो सकती है और यह भी कहना चाहता हू कि आपको गवर्नमेट से मदद मिलेगी इस बात का आप विश्वास रखे। गवर्नमेंट सब बातों को विचार करके, सब चीज़ो को देख करके जहा तक हो सकेगा हमेशा आपकी मदद करेगी। आपको उन्होंने चन्द दिनों के लिये मकान भी दिया है। आप चाहते है कि वह हमेशा के लिये दे दिया जाये। पर जब तक वह यह नही कहे कि उसे वापस करो तब तक यह सवाल नही उठता है। इसी तरह से मै जानता हू कि मौक़ा देख कर के वह पैसे की मदद भी करेगी। मगर मै आपसे यह कहना चाहता हू कि जो संस्था गवर्नमेट पर भरोसा नही करती उस संस्था को अपनी ओर से काम करने का अधिक मौक़ा मिलता है। ब्रिटिश गवर्नमेंट के समय में, आप कहेंगे, संस्थाओं का सरकार से स्वतन्त्र हो कर रहना ज़रूरी था। पर मै मानता हूं कि अब यद्यपि अपनी गवर्नमेंट है तो भी गवर्नमेट से स्वतन्त्र हो कर जितना काम आप कर सकते हैं, जितनी शक्ति आप अपने में पायेंगे उतनी गवर्नमेंट के अन्दर रह कर नहीं। गवर्नमेंट आपकी है। उसे आप जैसा कहेंगे वैसे करना होगा। पर गवर्नमेंट का नियम होता है, उसका विधान होता है और उसी विधान के अनुसार वह काम करती है। अगर आप समझते है कि गवर्नमेंट की मदद के बिना आपका काम नही चलेगा तो गवर्नमेंट से मदद लेने का प्रबन्ध कीजिये। हंसी या परि-हास में मैं यह नहीं कर रहा हूं। यह मेरा विश्वास है। मैं मानता हूं कि जितना काम यहां चाहे

और किसी भी स्थान मे लोग अपने बाहुबल से कर सकते हे और उसका जितना फल होता है उतना दूसरे की मदद लेकर काम करने से फल नही होता है। यह कोई नयी बात नही है। सचमुच यदि कोई अपने उत्साह से काम करना चाहे तो उसमें जो शक्ति होती है वह दूसरे पर भरोसा करके काम करने से नही आती। आप यह नही समझें कि मै यह कह रहा हू कि गवर्नमेंट आपको मदद न दे। मैं तो इन बातों का विवेकपूर्ण विचार कर रहा हूं और मेरे अपने जो विचार हे उनको कह रहा हूं। हमारी लड़ाई जिस समय गवर्नमेंट के साथ हुई उस समय जो मेरे विचार थे अभी भी जब कि गवर्नमेट के सर पर बैठा दिया गया हूं मेरे वही विचार हे।

मै तो यह आशा करता हूं कि आपका विद्यापीठ दिन प्रति दिन कोई कारण नहीं कि नहीं बढ़े। जैसा कि अभी डाक्टर ज्वालाप्रसाद जी ने कहा जिस वक़्त आपने इसे आरम्भ किया था उस समय से इतने विद्यार्थी आ गये हे कि स्थान की कमी से अहाते में जो वट वृक्ष हे उसके आस पास में बैठ कर विद्यार्थी पढ़ते हें और उनकी संख्या बढ़ती जा रही हे। मै मानता हूं कि अगर ठीक काम चलेगा तो आपके पास गवर्नमेंट की मदद भी पहुंचेगी और गवर्नमेंट की मदद से बढ़ कर जनता जनार्दन की मदद पहुंचती रहेगी। यह विषय ऐसा है कि अगर इस पर कहना चाहूं तो बहुत कुछ कह सकता हू और कुछ कहा भी है। जो लोग इस विषय से परिचित हैं वे जानते हें कि मेरे विचार इस विषय मे क्या हे। इसलिये उनको दोहराने की ज़रूरत नही हे। मै आप को बधाई देता हूं और आपसे कहना चाहता हू कि आपने काम अच्छा आरम्भ किया है, इसका अच्छा श्रीगणेश हुआ हे। यह इसी तरह से तरक़्क़ी करता जायेगा और सारे बरार का तो सवाल ही क्या सारे देश मे यह अच्छा नमूना फैल जायेगा।

अमरावती में अभिनन्दन

तारीख़ ३० दिसम्बर १९५० को अमरावती में सार्वजनिक सभा में अनेकानेक संस्थाओं की ओर से दिये गये मानपत्र के जवाब में राष्ट्रपतिजी ने कहा—

माननीय शुक्ल जी, वीर बावनराव जी, बहनो और भाइयो,

अमरावती शहर और सारे बरार में इकट्ठे भाइयों और बहनों की ओर से जो प्रेम और आदर मुझे दिखलाया गया है उसके लिये मै आप सब को हृदय से धन्यवाद देना चाहता हूं। यद्यपि मेरे लिये अमरावती आना यह पहली बार नही है मै इसके पहले भी कई बार आ चुका हूं और आप लोगों से मिल भी चुका हूं लेकिन आज मेरा आना एक दूसरी हैसियत से हुआ है। इसके पहले जब में आया हूं तो कांग्रेस का तुच्छ सेवक हो कर आया हूं, जो कुछ कांग्रेस का प्रोग्राम होता, जो उसकी आज्ञा होती उसको मे सुनाने आता। लेकिन आज चीजों की शक्ल कुछ दूसरी हो गयी है और जब में यह विचार करता हूं कि उन दिनों और आज में कितना बड़ा अन्तर पड़ गया है तो ऐसा पता चलता है कि उस अन्तर के महत्व को हम पूरी तरह से नहीं समझ पाये हैं।

आज से तीन वर्ष पहले या तीन वर्ष से कुछ अधिक हुआ हम स्वतन्त्र नही थे । हमको यह कहने का सौभाग्य नही था कि हम भारत को अपना भारत कह सके और यहा जितने बसने वाले है वे जैसा चाहे अपने देश का प्रबन्ध कर सके । आज वह बात बिल्कुल बदल गयी है और हमें पूरी तरह से स्वतन्त्रता मिल गयी है । सारी दुनिया हमको स्वतन्त्र मानती है । हम भी अपने को स्वतन्त्र मानते है और अपने देश का भाग्य निर्णय करने का पूरा अधिकार हमारे हाथों मे आ गया है । अब इसको बनाना और बिगाड़ना हमारे हाथों में है । अगर हम इसको बनाते है तो उस का जो श्रेय होगा वह हम लोगो को ही मिलेगा और बिगाड़े तो जो बदनामी होगी वह भी किसी दूसरे की नही , हमारी ही होगी । इस लिये मै कहता हूं कि इतना बड़ा अन्तर पड़ गया है ।

हम केवल स्वतन्त्र ही नही हुये है वरन् उस स्वतन्त्रता को हम ने संविधान का रूप दे दिया है। तीन वर्षो के परिश्रम के बाद हमने एक सविधान तैयार किया है और उसे ससार के सामने रख दिया है । उसमे हमने शपथ ली है कि हम स्वतन्त्र है और स्वतन्त्रता का अर्थ है कि देश के अन्दर जो दुख दारिद्र है उसे हम दूर करे । हमने हिन्दुस्तान के लोगों को इस बात की स्वतन्त्रता दी है कि उनका जो भी धर्म हो, चाहे वे हिन्दू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो, पारसी हो, सिख हों अपने धर्म के अनुसार वे काम कर सके और उनमे से किसी को भी किसी दूसरे की धार्मिक चीजों मे दस्तन्दाज़ी करने का अधिकार नही है। उस सविधान में यह भी है कि यहां का हरेक व्यक्ति अपने विचारो को स्वतन्त्र रूप से व्यक्त कर सकता है । किसी को बिना अधिकार के जब तक यह मालूम न हो जाये कि वह राजसत्ता को उलटना चाहता है गिरफ्तार नही किया जायेगा । जब तक अदालत मे वह इस बात के लिये मुजरिम साबित न हो जाये कि उसने जान माल या इस तरह की चीजों को ग़ायब किया है या हथियार के बदौलत देश में किसी तरह का शासन नही रहने देना चाहता है तब तक उसे गिरफ्तार नही किया जायेगा । हम चाहते है कि सब शिक्षित हो, और सब को अपने जीवन निर्वाह के लिये उपार्जन करने की स्वतन्त्रता हो । हम चाहते है कि इस देश के अन्दर इन अधिकारो का लोगों मे प्रचार किया जाये और लोगों को सिखाया जाये कि ये हमारे अधिकार है और इन अधिकारों को हम किस तरह से प्राप्त कर सकते है । इसके लिये हमने निश्चय कर लिया है कि देश का कारोबार किसी एक व्यक्ति का काम नही, जैसा पहले ज़माने मे एक राजा, बादशाह या नवाब के हाथ मे सारे अधिकार रहते थे । वे अधिकार अब जनता के हाथों मे आ गये है । अब सब अधिकार जनता को मिल गये है और वह जिसको अपना प्रतिनिधि नियुक्त करना चाहे करे और ऐसे प्रतिनिधियों की एक पंचायत क़ायम हो जो देश का कारबार चलाये ।

अब थोड़े दिनों के बाद ही इस संविधान के अनुसार चुनाव होगा । इस चुनाव में हरेक भारतवासी को जिसकी अवस्था २१ वर्ष की हो गयी है मत देने का अधिकार है और इस तरह से १७, १८ करोड़ लोग मत देकर अपने प्रतिनिधि चुनेंगे । स्त्री, पुरुष सभी इसमें मत देंगे । अमीर, ग़रीब, जंगल के रहने वाले, बड़े बड़े शहरों के रहने वाले, झोपड़ों में रहने वाले, महलों में रहने वाले सभी को बराबर अधिकार है । यह इतना बड़ा अधिकार हमारी जनता के हाथों में आया है कि वह जैसा चाहे देश का शासन चला सकती है, उसका कारबार चला सकती है ।

यह जो चुनाव होगा वह इतना बडा चुनाव होगा कि इसमें हज़ार दो हज़ार नहीं, लाख दो लाख नहीं, बल्कि १७, १८ करोड़ स्त्री और पुरुष भाग लेंगे। इतना बड़ा चुनाव पृथ्वी के इतिहास में कभी नहीं हुआ। आज चीन के सिवाय दुनिया में ऐसा कोई देश भी नहीं जिसकी आबादी १७–१८ करोड़ की हो। अब हमको देखना है कि जनता को जो बहुत बडा अधिकार मिल गया है उसका किस तरह वह सदुपयोग करती है। इसमें हमारी परीक्षा होने वाली है। हम चाहते हैं कि इस जवाबदेही को सारे देश के लोग समझें। अब अंग्रेज़ नही रहे। अगर कोई बात अब बिगडती है तो उसके लिये हम अंग्रेजों को दोषी नही ठहरायेंगे। अगर जो बात जनता हमसे कराना चाहती है उसको हम पूरी नही करें तो जनता को यह अधिकार होगा कि वह हमें अपनी जगह से हटा दें और दूसरे मन्त्रिमण्डल द्वारा काम कराये। यह संविधान की सब से बड़ी महत्वपूर्ण धारा है। यह संविधान का फल है कि आज एक तुच्छ सेवक भी ऐसी जगह पर बैठा दिया गया है जहां चक्रवर्ती 'राजा' और बादशाह बैठा करते थे। एक तुच्छ सेवक हिन्दुस्तान का राष्ट्रपति बना दिया गया है। कैसा हिन्दुस्तान ? वह हिन्दुस्तान, जो हिमालय से कन्याकुमारी तक और अरब समुद्र से बंगाल की खाड़ी तक फैला हुआ है। यद्यपि इसके दो पंख कट गये हैं तो भी पहले कभी इतना बड़ा हिन्दुस्तान एक छत्रछाया में नहीं रहा। मैं मानता हूं कि इस तरह की घटना संसार के इतिहास में कभी नही हुई। अब से जब ५०० वर्ष, १००० वर्ष बाद लोग इस समय का इतिहास पढ़ेंगे तो आश्चर्य करेंगे और कहेंगे कि कैसे महात्मा गांधी ने निहत्थे लोगों से इतनी बडी बादशाहत का मुकाबला कराया जिसके पास विनाशकारी अस्त्र शस्त्र मौजूद थे। एक बात से और भी आश्चर्य करेंगे। हिन्दुस्तान से अंग्रेज जब गये तो एक तो बंटवारा करके गये, साथ साथ बहुत सी चीजें छोड गये। उस समय ५००–६०० रियासतें देश में थीं। उनमें कुछ बडी बड़ी भी थी, इतनी बडी कि यूरुप के किसी देश की बराबरी कर सकती थीं। अंग्रेज़ उनको पूरी स्वतन्त्रता दे गये कि अगर वे चाहें तो हम से अलग रह सकती थीं। अगर वे चाहती तो हमारे सामने बडे बडे प्रश्न, और समस्या उपस्थित कर सकती थी पर यह सौभाग्य की बात है कि वहां के लोगों ने देश के प्रति अपना कर्तव्य किया और भारत को एक मानकर उसमें शामिल हो गये और सरदार पटेल ने अपनी कार्यदक्षता और चातुरी से इस बडे काम को बड़ी तेज़ी के साथ साल डेढ साल के अन्दर पूरा कर दिया। आज हिन्दुस्तान, जैसा मैं ने कहा इतना बड़ा है कि जितना बडा हिन्दुस्तान एक छत्र के नीचे आज के पहले इतिहास में कभी नही रहा। आप कहेंगे कि चन्द्रगुप्त मौर्य के जमाने में और हर्षवर्द्धन के ज़माने मे हिन्दुस्तान एक छत्र के नीचे रहा। उस समय का इतिहास मुझे मालूम नहीं। अशोक का इतिहास मैं जानता हूं। सबों का प्रयत्न समचे हिन्दुस्तान को एक छत्र के नीचे लाने का हुआ। आपके यहां के मरहट्ठों ने भी प्रयत्न किया। मगर यद्यपि हिन्दुस्तान के बडे बडे भागों पर उन्होंने अपना आधिपत्य जमाया पर सारा हिन्दुस्तान एक छत्र के नीचे कभी नही रह सका। हां छोटे छोटे राजा जो चक्रवर्ती हुआ करते थे उनके अधिकार को मान लिया करते थे मगर वे अपने अपने स्थान पर एक तरह से स्वतन्त्र रहते थे और उनके आधिपत्य को वे स्वीकार कर लेते थे।

देश अब एक संविधान के सूत्र में बंध गया है। वह संविधान ऐसा बना है कि जिस में सभी लोगों को अधिकार है कि वे अपने मत से संविधान को चलावें और इस देश के शासन को चलावें। यह एक बहुत बड़ा काम है। जिस काम को महात्मा जी ने शुरू किया उसे सरदार पटेल

पूरा कर चले गये। अब हम लोगों को काम करना है। स्वतन्त्रता तो मिल गयी है मगर उससे जितना लाभ उठाया जाना चाहिये अभी हम उठा नहीं पाये है। सरदार तो चल बसे पर दूसरे नेता जवाहरलाल जी काम चला रहे हैं। आपका कर्तव्य है कि आप उन को सहारा दें, सहयोग दें जिसमें देश के सामने जो कठिन समस्यायें हैं उनको हल करने में उनको बल मिले। हम आशा करते हैं कि भारत के लोग जिस तरह से स्वतन्त्रता पाने में सफल हुये उसी तरह से उसकी रक्षा करने में और समस्याओं के हल करने में सफल होंगे।

अभी थोड़े ही दिन बीते हैं कि हम पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा। यह सभी को मालूम है। देश का बंटवारा हुआ। उसके साथ साथ हमारे ऊपर एक करोड़ लोगों का भार आ गया, अपना घर बार, धन सम्पत्ति छोड़ कर वे लोग आये। उनमें बहुतेरे मारे गये। बहुतेरे अपने प्यारे जनों को खो बैठे। यह सब हुआ। उनको बसाने का काम हमारे सर पर आ पड़ा। हमारी गवर्नमेंट यह काम कर रही है। यद्यपि अभी यह कहना ठीक नही है कि इसमें हमने पूरी सफलता प्राप्त कर ली है। पर यह भी कहना ग़लत न होगा कि इस दिशा में हम ने बहुत कर लिया है। पर अगर दूसरी ओर हम यह देखें कि अभी थोडे दिन पहले स्वतन्त्र हुये देश ने जो कल तक एक विदेशी साम्राज्य के अन्दर था दो तीन वर्षों के अन्दर संसार के बडे बडे देशों के बीच अपना आसन ग्रहण किया है तो हमें पता चलेगा कि यह कोई छोटी बात नहीं है। अगर हम दूसरी तरफ़ देखते हैं तो विपत्ति भी आयी है। यह साल दुःख का ही साल है। कही भूकम्प आया तो कहीं अति वृष्टि, कहीं अनावृष्टि। सब के सब प्रकोप एक साथ आ गये हैं। आज इनके बावजूद भी हम बच गये हैं तो यह ईश्वर की दया है। अगर मनुष्य अपनी तरफ़ से ईश्वर पर भरोसा करके प्रयत्नशील हो जाता है तो बड़े बड़े मुसीबत के पहाड़ भी टूट कर गिर जाते है और रास्ता साफ हो जाता है। हम तो इसी विश्वास में है।

हमारे देश में कुछ लोग हैं जो महात्मा जी के कार्यक्रम में विश्वास नहीं रखते मगर इस कार्यक्रम में बड़ी शक्ति निहित है और वह पूरी होकर ही रहेगी। इसलिये विश्वास और श्रद्धा के साथ अगर हम काम करते जायें तो हम सब विपत्तियों को पार करके देश को उन्नत बना सकेंगे और दुनिया के सामने एक नमूना रख सकेंगे। हमारे लिये यह जरूरी है कि सभी लोगों के साथ हम अच्छा बर्ताव करें। महात्मा गाधी ने जब अहिंसा की बात उठायी तो बहुत प्रश्न उनके सामने आया करते थे। मगर अहिंसा ऐसी चीज़ है कि इतना बड़ा देश निरस्त्र होकर भी आज स्वतन्त्र है। इस देश में कितने ही मज़हब के मानने वाले, धर्म के मानने वाले, कितनी ही भाषा बोलने वाले बसते हैं। इसमें कितने प्रान्त हैं जिनके रहन सहन का ढंग अलग अलग है। इसलिये भी हम लोगों के लिये अहिंसा जरूरी है ताकि देश में विभिन्नता रहते हुये भी हम सब एक हो कर रह सकें और सब के साथ प्रेम का भाव बरत सकें। अगर ऐसा हम करें तो हम में इतनी शक्ति है कि कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता। इसलिये मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आप सब से अहिंसा का बर्ताव करें। अहिंसा का अर्थ दूसरे को कष्ट न देना ही नहीं है अहिंसा प्रेम का रूप है। जो दुर्भावना हो उसे दूर करें और एक दूसरे के साथ प्रेम करें तो सब कठिनाइयां दूर की जा सकती हैं। मुझे याद है कि १९१७ में महात्मा जी ने चम्पारण में जाकर काम शुरू किया। वहां बहुत अंग्रेज़ नीलवर थे जो नील का कारबार करते थे। मगर ग़रीनों के साथ ज्यादती करके

काम करते थे और इसलिये काफ़ी मुनाफ़ा उठाते थे। महात्मा जी ने घोषणा कीकि हम इस ज्यादती को बन्द करना चाहते हैं पर नीलवरो का नुक्सान भी नही चाहते है। यह बात किसी की समझ में नही आती थी। लोग सोचते थे कि ज्यादती का बन्द होना ही नीलवरों का नुकसान है। बिना नीलवरों को नुकसान पहुंचाये ज्यादती कैसे बन्द हो सकती है। मगर हम ने देखा कि प्रजा का उद्धार हुआ और नीलवरों का नुक़सान भी नही हुआ। प्रजा में इतनी जागृति आ गयी कि उनका काम जुल्म से नही चल सकता था। उन्होंने देखा कि अब ज्यादती प्रजा बर्दाश्त नहीं कर सकेगी और तब उनको अधिक मुनाफा भी नही होगा। इसलिये सोच समझ कर उन्हों ने खुद चले जाने का फ़ैसला किया और दो तीन वर्षो के अन्दर सब के सब चले गये और मुनाफ़े के साथ गये। जितना उनका सामान था वे अपने साथ लेते गये और ज़मीन बाग बगीचे या जो चीजें साथ नहीं ले जा सकते थे वे सब बेचकर अच्छी कीमत लेकर गये। इस तरह वे भी खुशी खुशी गये और प्रजा भी खुश हो गयी। भारत की आजादी के लिये जो हम लोग उनके साथ काम करते थे यह विश्वास रखते थे कि भारत का उद्धार हो जायेगा और अंग्रेज भी खुशी खुशी चले जायेंगे। मैं समझता हू कि अंग्रेज़ो के चले जाने के बाद आज हमारा उनके साथ जैसा अच्छा सम्बन्ध है वैसा कभी नहीं रहा। आज हम भी अपने को स्वतन्त्र पाते है और वे भी अपने को सुरक्षित समझते हैं। यहां भी हमने देखा कि यहां से अग्रेज चले गये पर दुखी नही हुये। वे हंसते हंसते चले गये। तो मेरा खयाल है कि यह सब अहिंसा का प्रभाव है। अभी भी हमारे सामने दिक्क़तें हैं। हमारे सामने पचासों तरह के प्रश्न है। अगर अहिंसक रीति से हम इनको हल करना चाहेंगे तो इसमें कोई शक नही कि हम यहां भी सफल होंगे।

इसलिये मै चाहता हूं कि अधिकार जो लोगों के हाथों में आया है उसे लोग अच्छी तरह से बरतें जिसमें सब को सुख हो, सब का भला हो। मै आशा करता हूं कि लोग इस जवाबदेही को समझेंगे और चुनाव के समय जो लोगों की परीक्षा होने वाली है उसको ठीक तरह से पास करेगे और देश का मुख उज्ज्वल करेगे। ईश्वर मे मेरी प्रार्थना है कि लोगों को सद्बुद्धि दे और लोग इस काम को पूरा करें।

आप सब भाई और बहनो ने जो प्रेम दिखलाया, जो आदर दिखलाया, उसके लिये एक बार और धन्यवाद देता हूं।

बाखी में अभिनन्दन

बाखी जिला वर्धा, में तारीख़ ३०-१२-५० को जनपद सभा द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब में राष्ट्रपतिजी ने कहा —

बहनो और भाइयो,

आप लोग बहुत देर से मेरी प्रतीक्षा कर रहे हे और हम लोगों के आने में देर हुई उसके लिये मैं आप से माफ़ी चाहता हूं। इस समय में नागपुर, जबलपुर और

अमरावती होते हुए आपके गांव में पहुंचा हूं और आज वर्धा में जा कर रहना है। मुझे याद है कि यहां पर मैं एक बार और आकर गया हूं। उस वक्त मैं महात्मा गान्धी स्मारक के लिये निधि जमा कर रहा था।

मैं इस वक्त आप से यही कहना चाहता हूं कि अब तो हम लोगों को पूर्ण स्वराज्य मिल गया है और हमारे अपने लोगों के हाथ में पूरा अधिकार आ गया है। आप को यह समझना चाहिये कि इस अधिकार मे आपका कितना हिस्सा है। भारत की सारी जनता को, यहां की सभी स्त्रियों और पुरुषों को जिनकी अवस्था २१ वर्ष की हो चुकी है, यह अधिकार मिल गया है कि वे अपना मत देकर अपने प्रतिनिधि चुनें जो बैठ कर शासन करें ; चाहे वह शासन सूबे का हो चाहे वह शासन केन्द्र का दिल्ली में हो। तो यह अधिकार सारी जनता को मिल गया है और इसके लिये पहले पहल चुनाव अभी से कुछ ही दिनों के बाद, दस ग्यारह महीने के बाद होगा और यह पहला अवसर होगा जब लोग इस अधिकार को बरत सकेंगे। इस लिये मैं आप से यह कहना चाहता हूं कि जो आप लोगों का विचार हो उसे अपनी जवाबदेही को पूरी तरह से समझ कर काम में लावें। अगर ठीक तरह से लोग काम चलायेंगे तो देश का और सब का भला होगा और अगर आपने गलत लोगों को चुनकर अपना प्रतिनिधि बना कर भेजा तो उस से बुराई भी हो सकती है और अब जब जनता के हाथ में अधिकार है तो गलती के लिये किसी दूसरे की शिकायत नहीं हो सकती, जनता की ही शिकायत होगी। दुनिया देखेगी कि आप अपनी इस जवाबदेही को किस तरह निभाते हैं।

आज कल मै घूम रहा हूं। पहले जब मैं घूमा करता था तो स्वराज की बातें किया करता था। वह पूरी हो गयी है। स्वराज मिल गया है। अब स्वराज से लाभ उठाना है, अब यह सोचना है कि किस तरह से लोगों की ग़रीबी को दूर कर सकते हैं। इस में आप लोगों की सहायता और सहयोग की भी जरूरत है। तभी हम इन सब चीजों को प्राप्त कर सकेंगे। अगर आप सब लोगों की मदद मिली तो हम इसे प्राप्त कर लेंगे।

अभी हाल में भारत के बहुत हिस्से में अन्न का कष्ट हो रहा है। आज ईश्वर की दया से आप के इलाके में पानी बरसा है। इस से गेहूं की फसल को लाभ होगा। मगर कई महीने से इधर पानी नहीं बरसा। इस लिये धान की फ़सल बर्बाद हो गयी है। आप के प्रान्त में भी कुछ हिस्से में धान की फसल खराब हुई है और हमारे प्रान्त बिहार मे तो बहुत खराब हुई है। इसलिये अन्न का कष्ट इस समय है। आज हमें इस का मुकाबला करना है और यह सोचना है कि किस तरह से हम इसे दूर कर सकते हैं। गवर्नमेन्ट अपनी ओर से इसे दूर करने का प्रयत्न कर रही है और करती रहेगी। मगर जनता को भी इस में हाथ बंटाना चाहिये और देश में जो कुछ अन्न हो उस को बांट कर खाना चाहिये। अपने को और सारे देश को सुखी बनाना और जीवित रखना सब का काम है। इस लिये मैं आप

से यह कहना चाहता हूं कि आज जो कष्ट है उस का आपको हिम्मत के साथ मुकाबला करना चाहिये। संसार मे इस वक्त बहुत बड़ी बड़ी बाते चल रही है और अब हम स्वतन्त्र हो गये है तो ससार में जो कुछ हो रहा है उस का भार हम को उठाना पड़ता है। इसलिये अपनी जवाबदेही को समझ कर एक स्वतन्त्र देश की तरह हिम्मत के साथ हमे काम करना चाहिये। एक दूसरे के साथ प्रेम, देश के साथ प्रेम और अपने स्वार्थ का त्याग करना चाहिये और यह बात सब लोगों मे होनी चाहिये। आज चाहे आप गवर्नमेंट मे हों या गवर्नमेंट के बाहर हों, सरकारी कर्मचारी हों चाहे कुछ भी हों, खेत मे काम करते हों या कारखाने मे काम करते हों सब को मिल कर इस देश को अपना समझना चाहिये और देशहित का कार्य करना चाहिये। यह बात मैं जहां जहां जाता हूं वहां के सब भाई और बहनों से कहता हूं और आप से भी कह रहा हूं।

आप ने मेरा स्वागत किया और बहुत प्रेम से यह मानपत्र दिया इस के लिये बहुत बहुत धन्यवाद।

ज्ञान मन्दिर वर्धा का शिलान्यास

वर्धा मे तारीख ११-१२-५० को गान्धी ज्ञान मन्दिर का शिलान्यास करते समय राष्ट्रपतिजी ने कहा—

पूज्य जाजू जी, बहनो और भाइयो,

आज आपने यह शुभ काम मेरे हाथों से कराया यह मै अपना बड़ा सौभाग्य मानता हूं।

जैसा कि आपने कहा अब समय आ गया है कि महात्मा जी के विचारों का पूरी तरह से अध्ययन किया जाये और हम उन की केवल चर्चा ही न करे बल्कि उन के अनुसार काम करना भी आरम्भ कर दे। आज जब हम चारों तरफ़ देखते हैं तो देश के अन्दर जो कुछ हो रहा है उस से कभी कभी निराशा मालूम होती है। कभी कभी ऐसा मालूम होता है कि जैसा क्राइस्ट ने कहा था कि तुम जो अपने को मेरा भक्त कहते हो सुबह के कौवे के बोलने के पहले हमारे विचारों को तिलांजलि दे दोगे और उन्हे तिरस्कृत कर दोगे वही बात कभी कभी गान्धी जी के सम्बन्ध में भी दिल मे आती है और ऐसा मालूम होता है कि हम जो अपने को उन का भक्त कहते हैं उन की मृत्यु के पश्चात् एक एक कर के उन की सब बातों को छोड़ते जा रहे हैं और मालूम नही कि हम अपने जीवन मे फिर उन को ग्रहण करेंगे या नहीं करेंगे। क्राइस्ट के जितने भक्त थे उन्हों ने जो कुछ उस वक्त किया वह किया मगर पीछे चल कर जिस तरह से क्राइस्ट का पुनर्जन्म हुआ उसी तरह से उन के विचारों का बहुत प्रचार हुआ और तेजी के साथ सारे संसार में प्रचार हुआ। इस

लिये यह भी विश्वास होता है कि आज चाहे हम जो कुछ भी करें पर अगर महात्मा गान्धी के विचारो मे सच्चाई है, शक्ति है तो उन का प्रचार हमारे ऊपर निर्भर नही करता। हम चाहें उन्हे स्वीकार करे या नही करें वे सदा जीवित रहेंगे और सारे ससार को जीवन प्रदान करते रहेगे। जब सन् १९३० में महात्मा जी को नमक सत्याग्रह के लिये रवाना होना था उस वक़्त साबरमती आश्रम में वकिंग कमेटी की बैठक हुई थी और नमक सत्याग्रह के सम्बन्ध मे बहुत देर तक वाद विवाद हुआ था और अन्त मे निश्चय हुआ था कि नमक सत्याग्रह किया जाये। गान्धी जी उस निश्चय के अनुसार कुछ ही दिनो के बाद आश्रम से बाहर जाने वाले थे और डांडी के लिये रवाना होने वाले थे। कुछ भाइयों ने यह सोचा कि जब महात्मा जी चले जायेंगे और न मालूम गवर्नमेन्ट उन को कब गिरफ़्तार कर ले तब उन की बात कौन कहेगा और किस तरह उसे लोगों तक पहुचाया जायेगा यह सोच कर उन भाइयों ने उनसे कहा कि आप एक छोटा सा सदेश अपनी भाषा में, अपनी ज़बान में दे जिस को हम चाहते है कि ग्रामोफ़ोन पर रेकार्ड करा ले और आप अगर गिरफ़्तार हो जायेंगे तो उसे आप की भाषा मे हम लोग गांव गांव घूम कर लोगों तक पहुंचायेंगे। उन भाइयो ने मुझे ही इस प्रस्ताव को उन के सामने रखने के लिये कहा। हम लोग एक छोटा सा डेलीगेशन बना कर उन के पास गये और उन से कहा। महात्मा जी ने उत्तर दिया—अगर जो कुछ मै कहता हू उस में सचाई है तो बिना किसी प्रकार से प्रचार किये वह घर घर तक फैल जायेगा और अगर उस मे सचाई नही है तो उस का रेकार्ड बनाने का कोई असर नहीं होगा। इस लिये मैं प्रचार के खयाल से कोई संदेश नही देना चाहता हूं। सचाई खुद ब खुद प्रचारित होती है। इस चीज़ को उस वक़्त से मै ने याद रखा है और मेरा विश्वास है कि जो कुछ वह कहते थे ठीक ही कहते थे। आप जानते है कि जब महात्मा जी डाडी यात्रा मे निकले तो चन्द दिनो के बाद ही देश मे कितनी क्रान्ति आ गई और उस का फल यह हुआ कि हम आज़ाद हुए। आज अन्धकार सा मालूम होता है और तबीयत घबड़ाती है कि क्या सब चीज़े गान्धी जी के साथ ही चली गयीं, क्या हम इस योग्य नहीं हुए कि उन चीज़ो को कुछ दिन भी क़ायम रख सकते। मगर वे हमारी अपेक्षा नही करती। उन मे इतना जीवन है, इतनी शक्ति है कि वे हम को जीवन देगी और खुद प्रसारित होगी। चाहे उन्हें आज हम ग्रहण न करें मगर यदि संसार को जीवित रहना है तो एक दिन उसे इन चीज़ों को ग्रहण करना पड़ेगा। वह दिन कब आयेगा यह मै नहीं कह सकता। इस लिये उन की चिन्ता नहीं करनी है। जहां तक हो सकता है हमे लोगों को उन की याद दिलाते रहना है।

यह ज्ञान मन्दिर जो आप खोल रहे है इस से इतना तो होगा कि इस सम्बन्ध में जितनी पुस्तके मिल सकती हो, जितने पत्र या लेख मिल सकते हों, उन सब को एकत्रित कर के यह रखेगा और जो उन का अध्ययन करना चाहेंगे उन का अध्ययन कर सकेंगे। मगर जैसा पूज्य जाजू जी ने कहा, गान्धी जी के विचार केवल अध्ययन की ही चीजें नहीं वे तो अमल में लाने की चीजें हैं;

वे केवल मेन्टल जमनास्टिक नहीं है वे तो प्रत्येक मनुष्य के जीवन में उतारने की चीजें हैं। गान्धी जी ने जो संस्थाएं स्थापित की उनके केन्द्र यहां के आस पास में क़ायम किये गये। उन के द्वारा जो कुछ सेवा हो रही है, मैं समझता हूं कि वह इस चिराग को क़ायम रखेगी जिस में यह आलोक चारों तरफ़ फैलता रहेगा। अगर एक भी दिया जलता रहेगा तो उस से हजारों दिये जलाये जा सकेंगे और अन्धकार दूर किया जा सकेगा। यह मन्दिर कायम रहेगा तो समय पा कर यह सारे संसार को आलोकित करेगा। यहां पर एक मन्दिर बनाना केवल इस लिये आवश्यक नहीं था कि यहां गान्धी जी रहते थे और उनके पुत्रवत् जमना लाल जी रहते थे बल्कि उन की सभी संस्थाएं यहां मौजूद हैं जिन के द्वारा सारे संसार को उन के बताये विचारों को कार्य रूप में लाकर दिखलाया जा सकता है कि इस तरह से ससार को लड़ाई के रास्ते से हटा कर सुख और शान्ति के रास्ते पर लाया जा सकता है।

मैं आशा करता हूं कि आप की उन्नति होगी। ऐसे काम के लिये पैसे की कमी नही होती। जैसा बापू कहते थे, अगर आप काम करते जायेगे तो जितने पैसे आप चाहेंगे आप के पास आते जायेगे। इस मे कोई संदेह नहीं। अभी आप काम आरम्भ करें। पुस्तकों के साथ साथ काम करने वालों का जो इन विचारो के मुताबिक अपने जीवन को ढाल रहे है, संग्रह करना जरूरी है। मुझे आशा है कि दिन प्रति दिन यह मन्दिर उन्नत होता जायेगा। और मै फिर कभी आऊं तो इसे बहुत उन्नत पाऊंगा।

सेवाग्राम

तारीख ३१-१२-५० को सेवाग्राम म कार्यकर्ताओं के बीच राष्ट्रपति जी ने कहा--

बहनो और भाइयो,

एक वर्ष के बाद आज मै यहां आ सका। इससे तो मुझे खुशी है मगर इसका अफसोस है कि इसके पहले नही आ सका। यों तो आप जानते हैं कि इधर कई वर्षों से साल में कुछ महीने मै वर्धा में बिताया करता था। इस साल वह नही हो सका और जब तक मैं दिल्ली में हूं शायद महीने दो महीने यहां बिताने का मौका न भी मिले। मगर आप लोग जो काम यहां करते है उसकी खबर मुझे मिलती रहती है, यहां के भाई और बहनों से मुलाकात होती है तो सब बातें जान लेता हूं, सुन लेता हूं और इधर विशेष करके जब आशा बहन फरीदाबाद में गयीं तो उनसे मिलने का मौका हुआ और सब बाते जान सका। जब तब हमारे भाई राधाकृष्ण जी चले जाते हैं और एक मरतबे धोत्रेजी गये, आर्यनायकम् जी से मुलाकात हो जाती है तो सब बाते सुन लेता हूं, जान लेता हूं। गान्धी स्मारक निधि के काम के सिलसिले में पूज्य जाजू जी भी जाया करते

है उन से भी बहुत बाते मालूम हो जाया करती है और जब तब कोई भाई पत्र लिख दिया करते है तो उससे भी कुछ पता चल जाया करता है। मगर यह कहना कि यहाँ जो काम हो रहे हैं उन सब का परिचय मुझे है ठीक नहीं होगा। उनका परिचय लेने का अर्थ है कि प्रति दिन जो प्रगति यहां पर हो रही है उस प्रगति को जानता रहूं, समझता रहूं कि काम कितना आगे बढ़ा, और उसके आगे बढ़ने की कितनी और आवश्यकता है। यह सब इतनी दूर से नही हो सकता है, उसके लिये यहां रहने की आवश्यकता है।

जैसा अभी धोत्रेजी ने कहा, जब पूज्य बापू पहले पहल १९२२ में गिरफ्तार हुए थे उसके बाद देश में एक ऐसा वायुमंडल हुआ था जिसमे कुछ लोग एक तरफ़ और कुछ लोग दूसरी तरफ़ हो गये और विशेषकर जमनालाल जी की प्रेरणा से यह निश्चय किया गया कि एक गांधी-सेवा-संघ स्थापित किया जाये जिस में महात्माजी के विचारों का लोग अध्ययन करें, जो लोग उन को मानते है वे लोग उन विचारों के अनुसार अपना जीवन बिताये और इस तरह गांधी सेवा संघ की स्थापना हुई थी जो १९४० तक चलता रहा। अन्त में महात्मा जी ने स्वयं सोचा कि उस सेवा संघ के अलग रहने की ज़रूरत नही है और उसे उन्होंने बन्द कर दिया। तब से उनके नाम पर कोई चीज़ अलग नहीं है। मगर जो लोग संघ में रहे, जो उस सिद्ध मे सहमत है और जिन में जितनी शक्ति है, इस काम को जहां पर जिस तरीके मे हो चला रहे है। जिस दिन महात्मा जी का स्वर्गवास हुआ उस दिन मै वर्धा में ही था और उसी दिन यहां आया था। यहां आने के दो तीन घटे के बाद ही रेडियो से खबर मिली और उसी रात मुझे दिल्ली वापस जाना पड़ा और उसके चन्द दिनों के बाद फिर उस सम्मेलन के लिये यहां आना पड़ा जिस सम्मेलन के लिये पहले आया था। आप लोग जो नये है उन को नही मालूम होगा, जो पुराने लोग है उन को यह मालूम होगा। उस वक्त महात्माजी का विचार था कि ३-४ फरवरी को यहां पर देश मे जितने रचनात्मक काम करने वाले थे उनका सम्मेलन करके उसमे इस बात पर विचार किया जाये कि आगे से किस तरह रचनात्मक काम चलाये जाये। इस सम्मेलन के लिये महात्मा जी ने मुझे कहा था कि मै २ तारीख को यहां अवश्य पहुच जाऊ। दो दिन पहले में यहां आया। दुर्भाग्यवश ३० जनवरी को ५ बजे शाम को महात्मा जी की मृत्यु हो गयी अतएव वह सम्मेलन नही हो सका। वह कुछ दिनों के बाद हुआ। उस में सरदार वल्लभभाई भी आये, जवाहरलाल जी आये और दूसरे भाई भी आये। उस वक्त यह सोचा गया कि महात्मा जी का जो कार्यक्रम सर्वोदय का था उसे चलाना चाहिये और यह भी विचार हुआ कि उसके लिये एक संस्था कायम की जाये। कुछ लोगों का विचार था कि उसकी ज़रूरत नहीं है क्योंकि वह एक सम्प्रदाय जैसी चीज़ बन जायेगी जो हानिकारक होगी इसलिये सर्वोदय समाज को वह रूप नहीं दिया गया जिसका कोई खास कान्स्टीट्यूशन हो। यह समझा गया कि जो लोग महात्मा जी के विचारों से सहमत है, उनके अनुसार काम करते हैं वे सब इसके सदस्य समझे जायेंगे और उनका एक भाईचारा हो जिसमें यह काम चलता

रहे। इसी सिलसिले में एक साल के बाद अप्रैल में राऊ में एक सम्मलन हुआ। जिसका जिक्र धोत्रेजी ने किया; उस में मै भी था। यह सच है कि बिनोवा जी का आग्रह था कि मैं सर्वोदय सेवा संघ का अध्यक्ष हो जाऊं और काम करूं पर मुझ से यह नहीं हो सका। इसमें दूसरे किसी का दोष नही है। यह भी मै नहीं कह सकता हूं कि किसी के दबाव की वजह से यह पद ले लिया। सच पूछिये तो इस में मेरी अपनी कमजोरी है या मैं ने सोचा कि जो काम वहां हो रहा है वह भी जरूरी है। इस तरह जो काम यहां होते है उन में दिलचस्पी तो मैं लेता हूं पर नजदीक से नहीं।

यहां जो काम हो रहा है उसके बारे में कुछ कहने का मै अपने को अधिकारी नहीं मानता हूं क्योंकि जो काम में लगे है वे ही इस के अधिकारी है कि कुछ राय दे सकें। जो दूर से देखते है वे अधूरा ही देखते है, उनको तो इसका पूरा ज्ञान नहीं हो सकता कि यहां क्या हो रहा है। इसलिये मै इतना ही कह सकता हूं कि यह काम अत्यन्त आवश्यक है। इस में चाहे कोई आवे चाहे नही आवे, जो इस मे रहें वे इस काम को चलाते रहें और अगर मेरे जैसे लोग इसके अन्दर आकर काम नही कर सकते हैं, तो उनका धर्म होता है कि वे आपके काम में कुछ प्रोत्साहन दें। अगर वे देना चाहें और आपके काम में वे किसी तरह से रोड़ा न अटकावे, बाधा न दें और अगर कुछ नही करें, कोई काम न करें, अपना समय न दें तो इतना तो करें ही। आप सब जो इस कार्यक्रम का बहुत कुछ अनुभव प्राप्त कर चुके है इसे और बढ़ायेंगे। महात्मा जी तो चले गये हैं, मगर उनकी कृतियां मौजूद हैं और अगर कोई भी मनुष्य शरीर धारण करके आता है तो शरीर से वह सदा नहीं रहता है, उस की कृतियां रहती हैं। उसी तरह महात्मा जी शरीर से चले गये हैं मगर जो काम वह कर गये हैं वे काम रहेंगे। उनकी कृतियों को कायम रखने के लिये जो जहां हों वे त्याग के साथ, श्रद्धा के साथ काम करें। यही एक चीज़ है जो उनकी कृतियों को आगे बढ़ाने में मददगार होगी। यों तो उन कृतियों में इतनी शक्ति है, उनके काम ऐसे हैं, उनके सिद्धान्त ऐसे हैं, नियम ऐसे है कि वे कृतियां बढ़ेंगी इसमें कोई शक नही है।

में देखता हूं तो इन चीजों में हमको अन्धकार मालूम होता है। इन बातों को देखने से मालूम होता है कि हम एक एक करके उन को छोड़ते जा रहे है। वास्तव में ऐसी बात है इसे हम नामंजूर नहीं कर सकते। मगर वह चीज़ अपने स्थान पर है। इसमें कभी कमी होती है, कभी ढिलाई पड़ती है। पर इसको कायम रखना है। २५ वर्ष से अधिक हुए एक अमेरिकन सज्जन यहां आये थे। उनका नाम सर ग्रेग था। उन्होंने महात्मा जी के काम को देखा। उस वक्त इतनी संस्थाएं नही थी। उस वक़्त सिर्फ खादी का काम होता था। उस वक़्त इस तरह से ग्रामोद्योग का काम आरम्भ नहीं हुआ था। उस वक़्त घानी, तेल पूर्ण चावल आदि चीजें हमारे सामने नही आयी थी। मगर खादी और चर्खे को देखकर ही उसने कहा कि किसी न किसी दिन ये चीजें आयेंगी। वह हमारे बिहार में एक गांव में गये। वह किसी अमेरिकन कम्पनी के इन्जीनियर थे। गांव में जाकर उन्होंने देखा कि चक्की से आटा पीसा जा रहा है, सिलौट पर

मसाला पीसा जा रहा है, घर में रसोई बन रही है और रोटी पक रही है, इन सब को देखकर उनको बहुत आश्चर्य हुआ। ये चीजे घर घर में होती है। तो उन्होंने कहा कि हम चाहते है कि इन चीजो को भारतवर्ष ५० वर्ष कायम रखे। ५० वर्ष के बाद संसार फिर इन चीजों की ओर लौटेगा। अभी तो ये चीजें नहीं टिकेंगी। जिस तरह से इस वक़्त संसार में कल पुर्ज़े बनाये और जिस तरह उस में फैल गये हैं उस से हो सकता है कुछ दिनों के लिये घर मे आटा पीसना और रोटी बनाना लोग भूल जायें। मगर यदि चक्की कायम रह गयी तो संसार को यह फिर मिलेगी और मैं चाहता हू कि भारत इसे कायम रखे जिसमें बाद में चक्की का आविष्कार करने की ज़रूरत न पड़े। यही इस वक्त मै कहता हूं। मै भी उसी तरह के विचार वाला हूं। मै मानता हूं कि हो सकता है कि जो जो होड़ चल रही है उस में इस तरह की चीज़े बुझ जाये, दूसरी बातों के सामने उन की कदर न रहे। मैं यह भी मानता हूं कि जो भी अपनी खूबी है उसे भी लोग दूसरी दूसरी बातों में भुला सकते हैं। इसलिये में मानता हूं कि इसमें जो एक प्रकार की शक्ति है उस शक्ति से वह बच सकती है, गायब नहीं हो सकती है। आज हम देखते है कि एक बड़ा कारखाना होता है तथा उस कारखाने से कितना काम हम लोग करते है। यहां वर्धा शहर में एक जगह पावर हाउस है जहां कोयला जलाया जाता है और उस से बिजली पैदा होती है और शहर को जगमगा देती है और हम लोग आश्चर्य में पड़ जाते है। मगर हम यह भूल जाते हैं कि इतनी बत्ती जलाने के लिये हमें कितना खर्च करना पड़ता है। हमी को नही, संसार को भी। कोयले के बनने में न मालूम लाखों वर्ष लगते हैं और तब कोयला तैयार होता है। कितने लाख वर्ष में बने कोयले को हम फूंक देते है। मगर हम यह भूल जाते हैं कि इस कोयले की जगह पर हम दूसरा कोयला पैदा नही कर सकते। तो आज की नयी सभ्यता में हम पहले की सचित चीज़ों का धुआधार खर्च कर रहे है। हो सकता है कि कोई समय आ जाये जब साइन्स के ज़रिये इन चीज़ों को भी लोग पैदा करने लग जायें मगर अभी तक हम केवल खर्च ही कर रहे है, जो चीजें प्रकृति ने पहले तैयार करके हमें दी हैं उनको हम खर्च कर रहे हैं, उनको हम बढा नहीं रहे हैं।

तो यह चीज है। महात्मा जी की जो शिक्षा है, उस में जो सारी चीजें हैं उन को देखिये। अभी आपने जो दीप जलाया उसको आप बढा सकते हैं, कितनी ही दूर तक बढ़ा कर ले जा सकते हैं। कोयला न जला कर जब हम लकड़ी जलाते थे उसे हम पैदा कर लेते थे। वह बराबर के लिये खत्म नही हो सकती। एक वृक्ष काट कर दूसरा लगा देते थे और इसी तरह हमारा काम चलता था। आज हम एक तरह से प्रवाह में बहते जा रहे हैं। मालूम नहीं हम इसे रोक सकेंगे या नहीं। मगर मेरा अपना विश्वास है कि महात्मा जी ने जो रास्ता बतलाया है उस रास्ते पर अगर हम चलेंगे तो उसे रोकने में हम कामयाब हो सकते हैं। अपनी कमजोरी से उसे हम रोक नहीं सकें यह दूसरी बात है मगर इसमें इतनी ताकत है कि उसे हम रोक सकते हैं। अगर आप इसे जारी रखेंगे तो एक वक़्त

आयेगा जब आप फिर संसार को इन चीजों को दिखलायेंगे और संसार के लोग इसे कबूल करेंगे। मैं तो इन प्राचीन विचारों का समर्थक हूं और प्रगतिशील विचारों के साथ नही चलने वाला हूं इसको मैं मानता हूं। मगर प्रगति क्या है इसमें भी लोगों का अलग अलग मत हो सकता है। हम जिसको प्रगति कहते हैं हो सकता है कि दूसरे उसको प्रगति नहीं समझते हों, उस को एक रिएैक्शनरी चीज समझते हों। उसी तरह से जिसे दूसरे प्रगति समझते हैं उसे हम प्रगति नही समझते। यह तो अपना अपना विश्वास है। हम चाहते हैं कि सब चीजों को महात्मा जी के मौलिक सिद्धान्त को सामने रख कर हम भी उसी तरह कसौटी पर जांच कर उसका अर्थ निकालें और काम करें। वह तो आप कर रहे हैं इसके लिये मैं आप को बधाई देता हूं और इतना ही कह सकता हूं कि मुझ से जो मदद हो सकेगी प्रोत्साहन हो सकेगा, दूंगा। दूसरे दें या नहीं दें मगर मेरी ओर से आपको बाधा नहीं आयेगी, प्रोत्साहन ही आयेगा।

मुझे बड़ा हर्ष है कि आप सब बहनों और भाइयों से मिला और कुछ समय तक आपके साथ रह कर अपने साथ कुछ स्मृतियां संचित कर के लिये जा रहा हूं और वह जब तक मैं फिर यहां नहीं आऊंगा तब तक के लिये सम्बल रहेंगी। उसके बाद देखा जायेगा जैसा होगा वैसा होगा।

वर्धा में नागरिक अभिनन्दन

तारीख ३१-१२-५० को वर्धा मे सार्वजनिक सभा में जनपद सभाओ तथा नागरिकों की ओर से दिये गये मानपत्र के जबाब में राष्ट्रपति जी ने कहा—

पूज्य जाजू जी, बहनो और भाइयो,

आपने ठीक समझा है कि मेरा सम्बन्ध वर्धा के साथ बहुत घनिष्ट रहा है और यह भी आपने ठीक ही कहा है कि आज सारा देश सरदार वल्लभभाई के निधन पर शोकाकुल हो रहा है। आज देश और विदेशों की ऐसी भयंकर स्थिति है कि जिसमें उनके जैसे कार्यकुशल, दूरदर्शी और दृढ़प्रतिज्ञ नेता की देश को आवश्यकता थी और ठीक ऐसे ही समय पर क्रूर काल ने उनको हम से हटा लिया है। यह हमारा बड़ा दुर्भाग्य है। लेकिन संसार के काम जो रह जाते हैं उन को किसी न किसी तरह चलाना ही पड़ता है और इसलिये शोकाकुल होते हुए भी हमें चाहिये कि जो कुछ बन पड़े देश के जिस काम को हम पूरा नहीं कर सके है उसे पूरा करने में अपनी शक्ति लगावें।

इस वक्त सचमुच देश और विदेशों की परिस्थिति बहुत ही नाजुक और बहुत ही भयंकर है। विदेशों की हालत इस वक्त यह है कि दो शक्तिशाली देशों के बीच में इस तरह की अनबन चल रही है और दिन प्रति दिन समस्या इतनी जटिल होती जा रही है कि कोई कह नहीं सकता है कि उसका क्या अन्त होगा और इस

बात का भय बहुतेरों के दिल मे घर कर गया है कि संसार को फिर शायद एक तीसरी लडाई देखनी पडे जैसे पिछले ३५ वर्षों में दो बार लड़ाई देखनी पड़ी है। जब १९१४ में लड़ाई शुरू हुई थी तो देशों ने यह कहा था कि यह लड़ाई इसीलिये की जा रही है जिसमे इस तरह की लड़ाई फिर न होने पावे। जब दूसरी लड़ाई १९३९ में आरम्भ हुई उस वक्त भी इसी तरह की बात दोहरायी गयी थी और तीसरी लडाई की तैयारिया भी इसी भरोसे पर की जा रहीं हैं। मालूम नही अगर तीसरी लड़ाई हो गयी तो उसका क्या परिणाम होगा। जो चीज अवश्य स्पष्ट है और सभी इसे देख सकते है और समझ सकते हैं वह यह है कि आज दुनिया के सभी देश एक दूसरे से इस तरह से बंध गये हैं, विज्ञान के आविष्कारों से आने जाने का काम इतना सहज और तेजी के साथ होता है कि कोई देश अगर चाहे भी तो और देशों से अपने को बिल्कुल अलग नहीं रख सकता। और यदि लड़ाई शूरू हुई तो जो देश अपने को समर से अलग रखना चाहेंगे उनको काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। हमारे देश और हमारी गवर्नमेन्ट जहां तक हो सकता है यह प्रयत्न करती रही है कि लड़ाई नहीं होने पावे। हमारे प्रधान मन्त्री इस प्रयत्न मे दिन रात लगे हुए हैं और हमारे राजदूत जो दूसरे देशों में गये हुए है वे भी दिन रात इस काम में लगे हुए हैं जिसमें किसी तरह से लडाई रुके। पर मालूम नही कि हम सब का प्रयत्न कहां तक सफल होगा। अगर वह सफल हुआ तो मै मानता हूं कि संसार की एक बहुत बड़ी सेवा हमारा देश कर सकेगा। अगर हम असफल भी रहे तो हमको इतना संतोष रहेगा कि इसको बचाने का जहां तक हो सका हमने अपनी ओर से प्रयत्न किया, कोई बात हमने उठा नही रखी। आगे ईश्वर पर है, वह जैसा चाहेगा और देशों के साथ और हमारे साथ भी वैसा करेगा।

अभी जो देश की परिस्थिति है वह भी बहुत कुछ नाजुक है और बहुत बातों में बड़ी समस्याये हमारे सामने आ गयी है। अभी श्री जाजू जी ने दो चीजों की तरफ इशारा किया अर्थात् एक भौतिक चीजों की कमी और दूसरी नैतिक चरित्र की कमी जो आज हम में देखने में आ रही है। यह जरूरी है कि इन दोनों में स्थिरता होनी चाहिये। हम एक एक चीज को लें तो हमको मालूम होगा कि किस तरह से यह आज की दुर्दशा और बुरी स्थिति पैदा हुई। सभी लड़ाइयों का एक नतीजा यह हुआ करता है कि मनुष्य का मनुष्य से विश्वास उठ जाता है, मनुष्य का चरित्र दुर्बल पड़ जाता है और एक दूसरे के साथ लोग जैसा वर्ताव किया करते है उन वर्तावों में बहुत बाते आ जाती हैं। अगर आवश्यकता हो और खून खराबी भी करनी पड़े तो लोग करते है। युद्ध आरम्भ का अर्थ यही है कि जो विपक्षी है उसकी जान लेना क्योंकि बिना एक दूसरे को मारे बिना एक दूसरे का विनाश किये कोई काम नहीं हो सकता है। विनाश करने पर भी कहा तक काम होगा या नहीं होगा यह तो दूसरा प्रश्न है। मै तो मानता हूं कि एक मनुष्य दूसरे का नाश करके, दूसरे की बर्बादी करके उसके साथ न तो प्रेम पैदा कर सकता है और न किसी

प्रकार से किसी प्रश्न का हल निकाल सकता है और यह देखा भी गया है। आज तक जितनी लड़ाइयां हुई हैं उनमे किसी लड़ाई से किसी मसले को हल नहीं किया जा सका; किसी प्रश्न का उत्तर नही मिला और आजकल की लड़ाइयों मे तो यह और भी विशेषता है कि कोई भी प्रश्न लड़ाई के द्वारा हल नहीं हो सकता है। सभी देशों के सभी समझदार लोग, सभी विचारशीली लोग इन बातों को मानते है, समझते हैं। मगर मानते और समझते हुए भी इस विनाशकारी चीज़ की ओर दौड़े जाते है और फिर भी इसके लिये तैयारियां करते हैं और इतना ही नहीं कि दूसरों का विनाश करना चाहते है बल्कि साथ साथ अपना भी विनाश करते है। आजकल की लड़ाई मे न तो कोई जीतता है और न कोई हारता है। हारते दोनों है। एक अधिक हारता है दूसरा उससे कम। जो कुछ लड़ाइया देखी गयी हैं उनसे स्पष्ट है कि जिस काम के लिये वह लड़ाई हुई वह काम पूरा नही हुआ और जो उस वक़्त अवस्था थी वह सम्भली नही बल्कि जैसी थी उससे कही अधिक खराब ही हुई। मनुष्य अपने को बुद्धिमान समझता है मगर सच पूछिये तो आज तो बुद्धि की कमी है। और यह पागलपन कब इस संसार से जा सकता है यह समझना ज़रा मुश्किल है। तो हमारे लोगों मे इन दोनो चीज़ों की कमी हुई उसके और कारणो मे से एक विशेष कारण पिछली लड़ाई है।

आप जानते है कि उस लड़ाई के पहले भी देश में अन्न की थोड़ी बहुत कमी हुआ करती थी मगर वह कमी दूर भी हो जाती थी चाहे जैसे हो, अधिक अन्न पैदा करके चाहे विदेश से, जैसे बर्मा से, जो उन दिनों भारत का ही भाग समझा जाता था कुछ चावल लाकर के। उसके बाद भी जब ऐसा लगता था कि देश मे अन्न की कमी है तो बर्मा से चावल मंगाना पड़ता था। यह जिस तरह से व्यापार चलता है उसी तरह से चलता था और कमी दूर होती थी। इस तरह काम चलता जाता था किसी को कोई विशेष कष्ट नही होता था और न कोई खास दिक्क़त किसी को मंगाने में होती थी। मगर लड़ाई के दिनों में अन्न का कष्ट ऐसे रूप में हमारे देश के सामने आया कि बहुत हमारे भाई और बहन बगाल मे मरे। उनकी संख्या कई लाख तक पहुंची और जितनों को कष्ट हुआ उनकी सख्या का तो कोई ठिकाना ही नहीं और उसी समय से अन्न को नियन्त्रित करने का काम भी गवर्नमेंट ने जारी किया। तब अन्न का नियन्त्रण शुरू हुआ और जहां तक मुझे मालूम है गवर्नमेन्ट भी अच्छी तरह से इस बात को देखने लगी कि जब तक विदेश से अन्न नहीं मंगाया जाता हमारे लोगों को अन्न का कष्ट रहेगा और जो नियन्त्रण उस वक़्त जारी हुआ वह अभी भी जारी है, सिर्फ जारी ही नही है बल्कि उसमें वृद्धि भी हुई है और जितना अन्न कभी भी इस देश मे आता था उससे अधिक अन्न मंगाया जा रहा है और उससे भी अधिक अन्न मंगाने की मांग हो रही है।

इस वर्ष तो ऐसी मुश्किल है कि एक साथ अतिवृष्टि, अनावृष्टि और भूकम्प आया। इससे अन्न का कष्ट अधिक बढ़ गया है। आप जानते हैं कि शुरू बरसात

में कई जगहों पर बहुत पानी बरसा; इतना बरसा कि जो फ़सल उस वक्त लगी हुई थी वह बहुत कुछ बह गयी, फिर बाढ़ आयी उससे नुकसान हुआ और अभी वह कष्ट दूर भी नहीं हुआ था कि आसाम में भयकर भूकम्प हुआ। वह कष्ट अभी तक दूर नहीं हुआ कि बिहार में चार महीनों से पानी की इतनी कमी हुई कि वहां जो कुछ भी फ़सल धान की लगी हुई थी वह और देश के बहुत बड़े हिस्से मे फ़सल बर्बाद हो गयी और जो गेहूं बोया गया था उसको बहुत नुकसान हुआ। इधर पिछले कई दिनों से कुछ वर्षा हुई है और मै समझता हूं कि जहां जहां यह वर्षा हुई है वहां वहा रब्बी की फ़सल पर इसका अच्छा ही असर होगा। पर अभी तक मुझे मालूम नही कि यह वर्षा सभी जगहों में हुई है या नहीं और खास कर के देश के उन भागों मे जहा धान की फ़सल मारी गयी है वहां हुई है या नहीं और अगर नहीं हुई तो उसका असर गेहूं की फ़सल पर क्या होगा। इसलिये इस वर्ष में अन्न का कष्ट कुछ और भी बढ़ गया है और गवर्नमेन्ट इस बात की कोशिश कर रही है कि इस कष्ट को जहा तक हो सके दूर करे। इसके लिये उसने दो बातें मान ली है। एक तो यह है कि जहां तक हो सके और जितनी हो सके अपने देश के अन्दर भी अन्न की पैदावार बढ़ायी जाये। अन्न की पैदावार मे वृद्धि हो इसके लिये अलग अलग प्रान्तों मे योजनाएं बनायी गयी हैं और उन योजनाओं के अनुसार काम किया जा रहा है। अपनी पैदावार बढ़ाने की योजना भी दो प्रकार की है। कुछ तो ऐसी है जिनका फल कुछ दिनों के बाद ही देखने मे आ सकता है। उनमें बड़ी बड़ी नदियां हैं जिनमें बाढ की वजह से बहुत ही बर्बादी होती है। इसके लिये यह प्रयत्न किया जा रहा है कि उन नदियों को बांध करके जो जल बर्बादी का कारण होता है उसको बचा कर अधिक अन्न पैदा करने मे लगाया जाये। पर ऐसी योजनाएं बहुत बड़ी बड़ी योजनाएं हैं और इनमें खर्च भी बहुत है और समय भी बहुत लगता है। इन योजनाओं का लाभ आज जो देश में परिस्थिति है उसको सम्भालने में नहीं मिल सकता है। दूसरी योजनाए ऐसी है जिन का हम को तात्कालिक फल मिल सकता है। और ऐसी योजनायें भी सभी जगहों पर चलाई जा रही है। खेती में पानी की अत्यन्त आवश्यकता होती है और अगर पानी आ जाये तो कुछ न कुछ काम खेती का चल सकता है। इसलिये इस पर ज़ोर दिया जा रहा है कि नये कुएं खोद कर छोटी मोटी नदियों में बाध बाधकर, नहर निकाल कर या इस तरह का जो कोई भी काम हो सके जिससे भूमि पर पानी हम ला सकें करके और जल्द से जल्द करके अधिक अन्न उपजायें पर इस से भी अधिक तेज़ी से नतीजा निकालने वाली भी योजना है। आज देश में जब तक दूसरी फ़सल तैयार होती है तब तक के लिये भी काफी अन्न हमारे पास नही है और इसलिये यह प्रयत्न किया जा रहा है कि ऐसी खाद्य वस्तुएं जिनको हम अधिक पैदा कर सकें पैदा करें जो अगले महीने दो महीने चार महीने में तैयार हो जायें। इस तरह की बहुत सी चीज़ें देश में हो सकती हैं और हमारे यहां के किसान लोग काफी चतुर हैं और वे जानते हैं कि

इस तरह की कौनसी चीजें हैं और वे कहां पैदा की जा सकती हैं। इस पर भी जोर दिया जा रहा है कि इस तरह अन्न, कन्द मूल फल जो कुछ भी जहां भी पैदा कर सकते हे उनको जल्द से जल्द पैदा किया जाये जिस में इस कष्ट को हम दूर कर सकें। इसके अलावा यह भी प्रयत्न हो रहा है कि हम विदेशों से अन्न मंगायें और इसके लिये सभी जगहों में हमारे काम करने वाले प्रयत्न में लगे हुए हैं। जो भी हो अन्न जहां भी मिले वह यहां आयेगा। मगर कितना आयेगा यह कहना अभी जरा कठिन है। मगर ऐसी आशा की जाती है कि हम इतना ला सकेंगे जिसमे हम इस कष्ट को दूर कर सके। मगर आप को यह भी जान लेना चाहिये कि विदेशों से अन्न लाने में भी बहुत कठिनाइयां हैं। एक तो अन्न मिलना आसान नही है और अगर लड़ाई छिड़ गई तो अन्न बाहर से लाना भी कठिन हो जायेगा। अगर अन्न मिले भी तो हमारे पास दाम कहां कि सब को चुकता दे सकें। गवर्नमेंट ने निश्चय कर लिया है कि चाहे जो कुछ भी हो, और सब काम रोकना भी पड़े तो रोकेंगे मगर अन्न के लिए जितने खर्च की जरुरत होगी किसी न किसी रुप मे उसे निकालेंगे। मगर एक दूसरी कठिनाई भी है। वह दूसरी कठिनाई यह है कि जो कुछ अन्न विदेशों में मिलेगा उसको लाने का यही तरीका है कि जहाज पर उसे लाद कर लावे। मगर जहाज का मिलना भी आसान नही है। और हिसाब लगाकर देखा गया है कि जितने अन्न की हमको ज़रुरत होगी उतना अन्न लाने के लिए एक या दो जहाज प्रति दिन हमारे देश मे अन्न ले कर पहुंचे तो यह काम पूरा हो सकता है। पर इतने जहाज विदेशों से मिल जायें यह आसान बात नहीं है। मगर इसके लिये प्रयत्न हो रहा है। इसलिये मैं ने आप से कहा कि यह एक बड़ी विपत्ति है जो हमारे सामने आ गई है। इसको टालने का जो कुछ भी प्रयत्न किया जा सकता है किया जा रहा है। मगर मै मानता हूं कि इन प्रयत्नों के अलावा जो सब से बड़ा प्रयत्न हो सकता है वह जनता के हाथ में है। अगर जनता यह निश्चय कर ले कि उसे इस मुसीबत को किसी न किसी तरह पार करना है तो वह पार कर सकेगी इसमें कोई शक नहीं। उस के पास बुद्धि है, थोड़ा बहुत साधन भी है और केवल गवर्नमेंट की तरफ न देखकर वह अपने ऊपर भरोसा करे अपने पैर पर खड़ा होने का प्रयत्न करे तो विपत्ति कुछ हद तक दूर की जा सकती है। और मै जहां जहां जा रहा हूं मैं लोगों से यही कह रहा हूं कि गवर्नमेंट का जो कर्तव्य है उसे वह कर रही है और यथासाध्य करेगी मगर आप गवर्नमेंट की तरफ आंख न लगाये रहें। आप अपने वाहुबल का अधिक भरोसा करे और इस कठिन समस्या को किसी न किसी तरह हल करें। आप कहेंगे कि पेट जलता है। तो हमारे देश में कितने ही ऐसे दरिद्र है जिनका पेट नही भरता। यह ठीक है। मगर साथ ही जब मनुष्य कोई इरादा कर लेता है, किसी दृढ़ निश्चय पर पहुंच जाता है तो उस के पास बल भी आता है वह बल ईश्वर देता है और उसी बल पर हम सब को भरोसा करना होगा और जो कुछ प्रयत्न हो सके हमको करना चाहिये। प्रयत्न भी कई प्रकार के हो सकते हैं। आज भी, अन्न की कमी की परिस्थितियों में भी खाद्य पदार्थ बहुत बरबाद जाता है, नुकसान होता है। उसके

कई कारण हैं। कुछ तो हमारी अपनी एसी आदतें है जिनसे नुकसान होता है कुछ इस तरीके से नुकसान होता है कि लोग अन्न को ठीक तरह से सुरक्षित रख नहीं सकते और कुछ अन्न की कमी इसलिये भी होती है कि जिस के पास अन्न होता है वह उससे मुनाफ़ा कमाना चाहता है और इसलिये दूसरों के पास जिनको अन्न की जरुरत है वह जाने नहीं देना चाहता। चाहे किसान हों, व्यापारी हों चाहे ऐसे लोग हों जो खरीद कर अन्न खाते है कोई भी इस तरह का काम करता हो यह ठीक नहीं है। हम यह चाहेंगे कि अन्न की रक्षा के साथ साथ अधिक अन्न पैदा करने के साथ साथ भारत का प्रत्येक निवासी यह भी समझे कि अगर दूसरे आदमी की दु:खद स्थिति है और उस के पास अन्न है तो उस अन्न को दूसरे के साथ बाट कर खाना उसका धर्म है बहुत जगहों पर यह देखा जाता है कि इस आशा से कि अगर अन्न को दबा कर रखेंगे तो अधिक दाम मिलेगा किसान भी अन्न घर में रखना चाहते है। व्यापारी भी इस प्रयत्न मे रहते है कि अन्न कम दाम में खरीद कर अधिक दाम में बेचें और जो केवल खरीद कर खाते है वह भी जब यह सुनते है, देखते है कि अन्न की कमी हो रही है तो उनको जितने अन्न की तात्कालिक आवश्यकता होती है उससे कही अधिक खरीद कर रख लेना चाहत है जिसमें कठिन समय में उनको दूसरे का मुह नहीं देखना पड़े। इस तरह से जितना अन्न होता है और जितनी देर तक वह मिल सकता है उतनी देर तक अन्न मिलता नही और जितनी कमी होती है उस से अधिक कमी महसूस होने लगती है। तो मैं तो यह चाहूंगा कि जितना अन्न इस वक़्त भी देश के अन्दर हो वह इस देश के लोगो को मिलना चाहिये जिसमें अगर लोगों को कुछ कम करके ही खाना पड़े तो लोग कम करके खाये। अभी बहुत लोगों को कम खाना पड़ता है और बहुत लोग जरुरत से ज्यादा खाते है। जिनके पास अन्न अपनी जरुरत से ज्यादा हो वे अगर बेच दे तो जिनके पास कमी है उनके पास वह चला जाये। इसके दो ही तरीके हो सकते है। जिनको जितने की जरुरत है उससे ज़रा भी अधिक की इच्छा वे न करे। एक तो यह तरीका है और यह पूज्य बापू का तरीका है। वह हम मे से हर एक के दिल मे यह भावना लाना चाहते थे कि हमारा कर्तव्य अपने दूसरे भाइयों के प्रति देश के प्रति और संसार के प्रति क्या है इसे हम समझे और हम में से बहुतों ने इस कर्तव्य भावना को स्वीकार करके अपना सब कुछ त्याग किया। अगर हम आज इस मामले में बहुत ढीले पड़ गये हैं और हमारी कर्तव्य निष्ठा आज बहुत कमज़ोर पड़ गयी है। हम चाहते हैं कि वह चरित्रबल हम अपने मे लावे कि सारे देश के दु:ख को अपना दु:ख समझें और इस विपत्ति को दूर करने में हमको जो कुछ त्याग करना पड़े, कष्ट उठाना पड़े, उस त्याग और कष्ट के लिये तैयार रहें। यह तो गान्धी जी का रास्ता है और अगर हम इस पर चले तो फिर गवर्नमेन्ट को कुछ करने की जरुरत नहीं है। अगर अन्न की कमी होगी तो हम किसी न किसी तरह उसको दूर करेगे और गवर्नमेंट अगर विदेशों से अन्न मंगायेगी तो उसको बांट कर जो कमी रह जायेगी उसको दूर करेगी। जब हम में कमी आ जाती है तो गवर्नमेन्ट को भी बीच में पडना पड़ता है। जब हम अपनी ओर से मितव्ययिता के साथ अपने

पास में जो है उसे बांट कर खान को तैयार नहीं होते हैं तो गवर्नमेन्ट को बीच में पड़ कर जिनके पास ज़रुरत से अधिक अन्न रहता है उसे ज़बर्दस्ती लेना पड़ता है। जो अन्न बचता है उस पर नियंत्रण करके आदमी मुकर्रर करके उस के वितरण का प्रबन्ध करती है। इसी का नाम कंट्रोल है। तो कंट्रोल और हमारे 'चरित्र' बल का एक दूसरे के साथ ऐसा सम्बन्ध है कि अगर चरित्र से हम काम लें तो कंट्रोल की बिल्कुल ज़रुरत नहीं और कंट्रोल से काम लेना पड़े तो उस हालत में भी इस चरित्र की ज़रुरत तो रहती ही है। तो आज की दुरवस्था ऐसी है कि हम को दोनों से काम लेना पड़ रहा है। हम चाहते हैं कि जहां तक जिनसे हो सके हम ऐसी स्थिति पैदा कर दें कि कंट्रोल उठा देना केवल गवर्नमेंट के लिये सम्भव ही नहीं हो बल्कि अधिक सुविधा जनक भी हो। हम कहते हैं कि इतना बोझ जो कन्ट्रोल की वजह से हम पर पड़ता है और हम उसे सहते हैं वह ऐसा बोझ तो है नहीं जिसे जान बूझ कर हम लेना चाहते हों। मगर अवस्था ऐसी है, अन्न की ओर दूसरी चीजों की इतनी कमी है और जिनके पास ज़रूरत से ज़्यादा है वे हाथ बटाना नहीं चाहते इसलिये हम को ऐसा क़रना पड़ता है। जो हो, आज की स्थिति ऐसी है कि आज़ कन्ट्रोल भी है और हम को ऐसा प्रबन्ध करना है कि जिसमें अन्न का कष्ट हमारा दूर हो। हम तो यह कहते हैं कि गवर्नमेन्ट जो ठीक समझती है, जो अपना कर्तव्य मानती है वह कर रही है। मगर यदि हम अपनी ओर से इस चरित्रबल को अपने में लाकर अपना कर्तव्य करें तो गवर्नमेन्ट का काम भी हलका हो जाये और हमारा दु:ख भी बहुत हद तक दूर हो जाये। आखिर इतनी शिकायत जो हम कन्ट्रोल के सम्बन्ध में तथा दूसरी चीज़ों के सम्बन्ध में सुनते हैं वह हमारी चरित्रहानि की ही तो द्योतक है। लड़ाई में मैंने शुरू में ही कहा था कि लोगों का चरित्र बहुत गिर जाता है। आज उसी का फल हुआ है कि हम गिर गये हैं। आज हमको मानना पड़ेगा कि बहुत जगहों में हमारे लोगों में बहुतेरों में चरित्र ऐसा नहीं है जैसा होना चाहिये और उसी का नतीजा हम सब को भुगतना पड़ा है। इसलिये आज यह आवश्यक है कि इस चरित्र को ऊंचा उठाया जाये और चरित्र ऊंचा उठने से जो मौखिक कमी है वह भी बहुत हद तक दूर होगी और अगर नहीं भी दूर होगी तो हम में इतना बल आयेगा कि हम इस कष्ट को, मुसीबत को सह सकेंगे। इसलिये मैं पूज्य जाजू जी से पूरी तरह से सहमत हूं कि इन दोनों कमियों को हमें दूर करना है।

महात्मा गान्धी ने अपने जीवन से, अपने प्रेम से, अपनी शिक्षा से सारे देश को बहुत ऊंचा उठा दिया था। उन्होंने जिन सिद्धान्तों का प्रचार किया था और जिन सिद्धान्तों के अनुसार अपनी सारी ज़िन्दगी काट ली थी और जिन सिद्धान्तों पर वह सारे संसार को चलाना चाहते थे वह सब अमर सिद्धान्त अकाट्य हैं। मगर हमारी कमज़ोरी ऐसी है कि हम उन सिद्धान्तों पर बराबर चल नहीं सके और बहुत थोड़े ही दिनों में हम जानते हैं कि हम में से बहुत फिसल गये हैं। इसे दूर करना चाहिये और इसे दूर दूसरा कोई नहीं कर सकता है। महात्मा जी फिर से पैदा नही हो सकते। इस तरह के अवतारी [पुरु]ष तो बिरले ही हुआ करते हैं और जो कुछ वे बता जातेहैं उसको सब लोगों को मानना है, करना है और उस पर चलना है, तभी कुछ काम हो सकता है।

उन्होंने जो रास्ता बतलाया वह केवल हमारे लिये ही नहीं बल्कि सब के लिये और देश के लिये भी बताया था। उस रास्ते से अभी हम दूर चाहे इच्छा से चाहे अनिच्छा से रह गये हैं। उस रास्ते पर कछ दूर तक जो हम गये उसी का सुमधुर फल हुआ कि हम स्वतन्त्र हुये। मगर उस चीज़ को जितनी दृढ़ता के साथ पकड़ कर रखना चाहिये हम ने नहीं रखा। उसी का नतीजा है कि आज हम बुरी तरह मसले जा रहे हैं। देश को उस अमर रास्ते पर आना होगा, सत्य और अहिंसा को ग्रहण करना होगा और यह केवल पुस्तक की चीज़ ही नहीं, केवल विशेष विशेष अवस्थाओं के लिये ही नहीं वल्कि ऐसी है कि जीवन के हर क्षेत्र में हरेक काम में, उसे इस्तेमाल करना जब हम सीख लेंगे तभी हम सफल हो सकेंगे। आज हम एक प्रकार से असमंजस में पड़े हुए हैं। जैसे अहिंसा की बात लीजिये। महात्मा जी ने अहिंसा को यह रूप नहीं दिया था कि जहां उस से काम निकले वहां अहिंसा से काम लें और जहां ज़रूरी हो हिंसा से भी काम लिया जाये। उन्होंने तो उसे सर्वोदय और हर समय के लिये एक सिद्धान्त माना था। मगर हम आज जैसा कर रहे हैं उस से मालूम होता है कि जहां अहिंसा से काम निकले वहां अहिंसा की दोहाई दें और जहां हिंसा से काम निकले वहां हिंसा करें। उसी तरह महात्मा जी ने समाज गठन का जो चित्र अपने सामने रखा था उस में भी हम आज पूरी तरह से विश्वास और श्रद्धा नहीं रखते। मालूम नहीं किस हद तक हमने इसे पहले अपनाया था। शायद पहले भी हम इस को गले में आधी दूर तक ही उतार सके थे इस को पूरी तरह से हजम नहीं कर पाये थे। जब गान्धी जी हमारे सामने नहीं रहे तो हज़म करने का तो सवाल ही क्या जितना हम निगल चुके थे उसे भी निकाल कर बाहर फेंक रहे हैं। इसलिये आज हम को तरह तरह की बाधा सताती है और हम एक निश्चित मार्ग पर, एक निश्चित कार्यक्रम बना कर दृढ़तापूर्वक आगे नहीं बढ़ते हैं। दूसरे देश जिनके सामने हिंसा अहिंसा का प्रश्न नहीं है, जिन को इसका विचार नहीं और जो किसी तरह से अपने प्रश्नों का हल निकाल सकते हैं उन के लिये भी एक रास्ता है। उस रास्ते को हम टीक नहीं समझें मगर वे ठीक समझते है और उस पर चलते हैं। हम तो न इधर पूरी तरह से है और न उधर पूरी तरह है। पर गान्धी जी इन्हें सोलह आने मानने को तैयार थे और इन पर पूरी तरह से चलते थे और जिस रास्ते पर वह चलना चाहते थे उस पर सोलह आने अमल करते थे। इसी का नतीजा यह हो रहा है कि हम दृढ़तापूर्वक आगे नही बढ पाये हैं। मगर कुछ ही दिन हुए जब कि हमको स्वराज मिला है। आज इस बात का अन्तिम निर्णय कोई नहीं दे सकता है कि हम गान्धी जी की बात से बिल्कुल अलग हो गये हैं तो बाद में उसको कुछ ग्रहण नहीं करेंगे। हमारे सामने कठिनाइयां भी बहुत रही हैं अगर इन कठिनाइयों को ध्यान में रख कर जो कुछ काम हुआ है उसे देखा जाये तो कुछ कम नहीं हुआ है।

कल ही मैंने अमरावती में भाषण देते हुए कहा था कि गान्धी जी का यह विश्वास था कि उन के अहिंसा के रास्ते पर चल कर ही दूसरों से अपना काम हम खूबी के साथ निकाल सकते हैं और उस में उनको भी कष्ट नहीं होता और हमको भी कष्ट नहीं

होता। चम्पारण में उन्होंने कहा था कि नीलवरों की बुराई हमको पसन्द नही है। नीलवरों की बुराई हम नही चाहते मगर साथ ही हम चाहते हैं कि उनकी ओर से जो जुल्म होता है वह न हो। हम लोगों में से बहुतेरों की समझ में यह बात नहीं आती थी। जुल्म से ही नीलवर नफ़ा उठाते है, अगर उनका जुल्म नही होगा तो उनको नफ़ा नही होगा तो फिर नुकसान ही तो हुआ। इसलिये जुल्म न होना और नीलवरों का नुकसान न होना दोनों साथ साथ नही हो सकता है मगर हम ने देखा कि थोड़े ही दिनों के अन्दर उनका जुल्म बन्द हो गया और नीलबर वहां से उठ कर चले गये मगर खुशी से गये, दुखी और रंज हो कर नहीं गये। जो उनके रुपये पैसे नील के काम में लगे हुए थे वे किसी न किसी तरह से उनको वापस मिल गये और वे उन्हें लेकर चले गये। इसी तरह अहिंसा के रास्ते पर चल कर हम ने अंग्रेज़ी साम्राज्य की चुनौती दी और गान्धी जी ने इसमे भी यही कहा कि हमें अंग्रेज़ों का नुकसान पसन्द नही हम उनकी बुराई नही चाहते मगर साथ ही हिन्दुस्तान को आज़ाद कराना चाहते है। यहां भी हिन्दुस्तान को स्वतन्त्रता भी मिली और मै मानता हूं कि अंग्रेज़ आज कुछ नाखुश नही है और एक बात तो स्पष्ट है कि आज अंग्रेज़ों के साथ जैसी हमारी मित्रता की भावना है वैसी पहले कभी नहीं थी। सो यहां भी गान्धी जी हमको अहिंसा का चमत्कार दिखला सके कि किस तरह से जो सब से बड़ी कीमती चीज़ अंग्रेज़ी साम्राज्य में समझी जाती थी उससे उनको दूर करके भी वह अंग्रेज़ों को खुश रख सके। अंग्रेज भारत को छोड़ कर भी बहुत दुखी नहीं हुये। उसी तरह से अगर हम उस सिद्धान्त पर चलें तो और सब भी जो प्रश्न हमारे सामने हैं उनको भी हम हल कर सकते हैं। मगर जैसे हमको उस समय विश्वास नहीं होता था उसी तरह से आज भी उस रास्ते पर चलने मे हमको दृढ़ता नहीं आती है। उस समय गान्धी जी थे। वह मौका आज नहीं है। उस समय अगर काम मे कोई अड़चन होती थी तो उनसे पूछ कर हमारा काम निकल जाता था। पर आज वह नहीं हैं। मगर उनके सिद्धान्त हैं। अगर हम उनको अपने दिल से, अपनी इच्छा से स्वीकार करें, अपनी श्रद्धा से स्वीकार करें तो हमारा चरित्रबल भी बढ़ेगा और दूसरी कठिनाइयां जो हमारे सामने हैं वे भी दूर हो जायेंगी। मेरा यह विश्वास है। इसलिये मै आप से कहना चाहता हूं कि आप अपने ऊपर भरोसा करें और अपने ऊपर भरोसा करके काम करें। मनुष्य का ध्येय सुखी होना है और वह तभी हो सकता है जब मनुष्य अच्छे और सच्चे सिद्धान्तों को मानने वाला हो, अच्छे और सच्चे रास्ते पर चलने वाला हो। मैं तो जहां जहाँ जाता हूं लोगों से यही कहता हूं कि यदि आज चारों तरफ अन्धकार भी मालूम होता हो तो भी अपने सिद्धान्त से विचलित न हों। १९४२ में जब भारत छोड़ो का नारा लगा था उस समय हमारे चारों तरफ अन्धकार ही अन्धकार था। कौन कह सकता था कि उसका नतीज़ा यह होगा कि हम स्वराज पा जायेंगे और स्वतन्त्र हो जायेंगे? यह कौन कह सकता था कि अंग्रेज लड़ाई जीत जायेंगे और उस के बाद भी अपनी इच्छा से हमारे साथ प्रेम करके हमको स्वतन्त्रता दे कर यहां से चले जायेंगे। मगर यह हुआ उसी तरह यद्यपि आज चारों तरफ़ अन्धकार है, हमें इस विश्वास को नहीं छोड़ना

चाहिये। मैं मानता हूं कि फिर एक दिन आयेगा और जल्द आयेगा इतना जल्द जितना हम में से किसी को अनुमान भी नहीं होगा जब गान्धी जी के सिद्धान्तों में हम विश्वास करेंगे, उनके बतलाये रास्ते पर चलेंगे और सारा अन्धकार दूर होगा और हम केवल राजनैतिक स्वतन्त्रता लेकर ही चुप नही रहेंगे बल्कि जिस तरह की स्वतन्त्रता गान्धी जी चाहते थे उसी तरह से देश को स्वतन्त्र कर सकेंगे जिस में न कोई किसी को देने वाला हो, न कोई दूसरे को सताने वाला हो, जिस में सभी लोग सुख से रहेंगे, जिस में कोई किसी की जान व माल नही लेगा और सभी लोग प्रेम से रहेंगे। यही ईश्वर से प्रार्थना है और यही आप सब भाई बहनों से निवेदन है।

आप ने जिस प्रेम और उत्साह के साथ मेरा स्वागत किया उसके लिये मैं किन शब्दों में धन्यवाद दूं। यहां पर स्वागत शब्द का उपयोग भी ठीक नहीं है। स्वागत तो किसी बाहरी आदमी का किया जाता है। पर जैसा आप ने कहा और मैं भी उसे मानता हू मै तो आप मे से ही एक हूं। इसलिये मेरे लिये स्वागत की कोई आवश्यकता नही। जैसा जाजू जी ने कहा है कि आप खुश हैं; तो इस में मै भी खुश हूं।

विट्ठल भाई पटेल की मूर्ति का अनावरण

तारीख २ जनवरी १९५१ को साढ़े चार बजे चौपाटी बम्बई में श्री विट्ठल भाई पटेल की मूर्ति का अनावरण करते समय राष्ट्रपतिजी ने कहा—

महामहिम गवर्नर साहब, बम्बई के मेयर साहब, बहनो और भाइयो,

जैसा आपने सुना मेरी वजह से इस मूर्ति के आपके सामने आने में कुछ देर हुई क्योंकि मुझे इसके पहले आने को कहा गया था पर मैं आज से पहले इसके लिये कोई वक़्त नहीं निकाल सका। एक तरह से तो मुझे इस बात की खुशी है कि मै आज हाज़िर हो सका मगर एक अफ़सोस भी है और सख़्त अफ़सोस है कि सरदार वल्लभ भाई ने जो मुझे हुक्म दिया था उसे उनके रहने में पूरा नहीं कर सका। मुझ से कई बार उन्हों ने कहा था कि इसके लिये मै समय निकाल लूं और मै ने उनसे कहा था कि इसके लिये कोई न कोई समय निकालूंगा पर और कामों की भीड़ की वजह से इसके पहले मैं समय नहीं निकाल सका। मैं एक दिन उनकी बीमारी की हालत में उन से मिलने के लिये गया और वहां पर यह बात छिड़ गयी। मैंने कहा कि मैं सोच रहा हूं कि जल्द से जल्द कोई वक़्त निकालूंगा। उन्होंने कहा कि दूसरी तारीख को जाकर काम को पूरा कर दो। इसके बाद मेरे लिये दसरा कोई चारा नहीं था। मैंने उसी वक़्त उसे मंजूर कर लिया और एक तरह से इस बात की मुझे खुशी है कि मैंने मंजूर कर लिया क्योंकि अगर मैं नहीं

मंजूर करता तो यह उनकी आखिरी ख्वाहिश बगैर पूरा किये रह जाती और जिसका अफ़सोस मुझे बराबर बना रहता । इसलिये इस काम के मौके पर एक तरह से खुशी होती है ।

श्री विट्ठल भाई पटेल के सम्बन्ध में मुझ से आप लोग बहुत ज्यादा जानते होंगे । क्योंकि मेरा उनका सम्बन्ध तो बम्बई की वजह से नहीं हुआ मेरा उनका सम्बन्ध हुआ कांग्रेस के काम की वजह से और वह सम्बन्ध शुरु हुआ जब खास कर के कांग्रेस का विशेष अधिवेशन १९१२ में हुआ था और वह रिसेप्शन कमेटी के चेअरमैन थे । आपको याद होगा कि वह एक अचकन पहना करते थे और पैजामा जैसे और लोग पहना करते हैं और तुर्की टोपी जिसे मुसलमान लोग पहनते हैं, हिन्दू नहीं पहनते हैं, वह पहना करते थे । जब मैं पहले पहल डैलीगेट की हैसियत से आया और उनको इस तरह के कपड़े पहने देखा तो मुझे पहले पता नहीं चला कि वह विट्ठल भाई पटेल हैं; मैंने समझा कि बम्बई शहर के कोई मुसलमान नेता होंगे जो बैठे हैं । पीछे चल कर मालूम हुआ कि वह उनका तरीका था और अन्य बातों में भी वह विचित्रता रखते थे । उसके बाद से जैसे जैसे मुलाकात बढ़ती गयी, जैसे जैसे अधिक परिचय होता गया मैं उनकी और खूबियों से अवगत होता गया ।

मैं एक दो छोटी मोटी बातें इस लिये कह देना चाहता हूं कि जिससे मालूम हो जाये कि उनका दिल कितना बड़ा था और किस तरह बावजूद इसके कि दूसरों के साथ घनघोर मतभेद रहे वह लोगों से प्रेम रख सकते थे और अपना पहले जैसा ही बर्ताव रख सकते थे । जब १९२२ मे महात्मा जी गिरफ्तार होकर जेल चले गये और उन्हें ६ साल की सज़ा हो गयी, कांग्रेस के लोगों के बीच एक बात पर मतभेद उठ खड़ा हुआ कि काउन्सिल मे कांग्रेस के लोगों को जाना चाहिये या नहीं । ये दोनों भाई दो दल मे पड़ गये । विट्ठल भाई काउन्सिल के पक्ष में और वल्लभ भाई उतने ही काउन्सिल के विरोधी इन दोनो भाइयों मे विरोध सिर्फ राजनैतिक प्रश्न पर ही था । वैसे बर्ताव। जैसा पहले था वैसा ही था और दूसरे लोगों के साथ भी इन दोनों भाइयों का वैसा ही अच्छा और मधुर बर्त्ताव बना रहा । जब सारे देश मे बड़े ज़ोरों से बहस चल रही थी तब नागपुर में सत्याग्रह छिड़ गया और इस सत्याग्रह का भार जब जमनालाल जी गिरफ्तार हो कर जेल चले गये तो सरदार वल्लभ भाई पर आ पड़ा । सरदार वल्लभ भाई वहां गये । उस वक़्त उनको लोग सरदार नहीं कहा करते थे । उन्होंने वहां का काम शुरु किया । जो काउन्सिल के पक्ष वाले लोग थे अक्सर कहा करते थे कि वहां पर सत्याग्रह काउन्सिल के विरोधी लोगों ने इसलिये खड़ा कर दिया है कि जो काउन्सिल के पक्ष वाले है उनको नीचा दिखलायें कि वे ही सत्याग्रह कर सकते हैं और हम नहीं कर सकते हैं । इस तरह की बातें कुछ लोग अखबारों में भी लिख दिया करते थे। कुछ लोग कह दिया करते थे और दोनों दलों में बहुत खींचा

तानी थी, बुरी भावना पैदा हो गयी थी। मगर विट्टल भाई ने जब यह देखा कि सत्याग्रह एक अच्छी चीज़ है और चल रहा है तो उनसे रहा नहीं गया और उन्होंने नागपुर जा कर वल्लभ भाई का साथ दिया और दोनों भाइयों ने मिल कर एक साथ उस सत्याग्रह का संचालन करना शुरू कर दिया उसी वक़्त मुझे कुछ ज्यादा मौका मिला उन दोनों भाइयों से मिलने का। मैं भी नागपुर जा पहुंचा था और वहां दो महीने तक ठहरा और सत्याग्रह के काम में लगा रहा। उस वक़्त मैंने देखा कि मत भेद होने हुए भी उस मतभेद के कारण अगर कोई विरोधी कोई अच्छा काम करे तो उसकी शिकायत करके विट्ठल भाई नाजायज लाभ नहीं उठाना चाहते थे। इसलिये सत्याग्रह को सफल बनाने में उन्होंने पूरी पूरी मदद की।

इसी सिलसिले में एक दूसरी छोटी बात है। एक कमेटी कांग्रेस की तरफ से मुकर्रर थी और वह सारे देश में घूम घूम कर इस बात की जांच कर रही थी कि देश सत्याग्रह के लिये तैयार है या नही। उस कमेटी का नाम था सिविल डिसोबिडियेन्स कमेटी। विट्ठल भाई उसके प्रमुख सदस्य थे। सभी जगहों में वह कमेटी गयी। जहां के लोग काउन्सिल के विरोधी थे उन लोगों से वह जिरह करते थे, उनके फ़ैसले में नुक्स निकालते थे। यह तो उनका अपना मत था और इसके लिये जैसे कोई होशियार कानूनदा वकील बहस करता है वह भी करते थे। मगर इस चीज़ को वह नही बर्दाश्त कर सकते थे कि किसी भी कांग्रेसी की कोई शिकायत करे। एक प्रमाण इसका मैं आपको देता हूं। वह हमारे प्रान्त में गये थे। सब से जिरह की जा रही थी। एक भाई आये। उनको जो कुछ कहना था कह चुके। मगर साथ ही साथ उन्होंने कुछ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं की शिकायत की। विट्ठल भाई से यह बात बर्दाश्त नही हुई। वह पहले इस चीज़ मे कोई दिलचस्पी नहीं ले रहे थे यों ही पड़े हुये थे। मालूम होता था कि जैसे जिरह का काम दूसरे लोगों पर छोड़ दिया गया हो। पर जैसे एक दो जुमले शिकायत के उन्होंने सुने कि वह उठ बैठे और एक घंटे तक इस सख़्ती के साथ उस सज्जन से उन्होंने जिरह की कि वह परेशान हो कर रह गये। उन्होंने इस चीज़ को दिखला दिया कि निकम्मे लोग ही दूसरों की शिकायत करते हैं। यह एक छोटी चीज़ है मगर इस मे पता चलता है कि उन का दिल कितना बड़ा था और कितना निर्भय हो कर वह काम करते थे।

जब १९२० में बड़ा सत्याग्रह आरम्भ हुआ उस समय के पहले तक वह असेम्बली के प्रेज़ीडेन्ट थे। सब से पहले चुने हुय प्रेज़ीडेन्ट वही हुए थे और असेम्बली में रह कर जिस खूबी के साथ, जिस चातुरी और बुद्धिमत्ता के साथ उन्हों ने काम किया जो उस ज़माने की असेम्बली को जानते थे वे सभी मानते थे और कबूल करते थे। एक तरफ विट्ठल भाई अकेले थे जिन को यह देखना था कि वह किसी पक्ष में न बोलें क्योंकि जब एक दफ़े वह प्रेज़ीडेन्ट चुने गये तो वह सब के लिये बराबर थे और सचमुच ही यही बर्ताव उन्होंने रखा था। साथ ही उन का दिल इस बात का विरोधी था कि जनता

के अधिकार से तो चन्द मेम्बर चुने जायें और बहुमत गवर्नमेन्ट के अफ़सरान और नामज़द लोगों का हो । उस ज़माने में वे ही काम करते थे और उन को बहुत कुछ अनुभव भी था, वे अपनी चीज़ को अच्छी तरह से जानते थे। एक तरफ वे सब थे और दूसरी तरफ विट्ठल भाई अकेले थे । पर तो भी उन्हों ने इतनी चातुरी दिखलाई और इस तरह से काम किया कि सब के सब दंग रह गये । आज तो हमारा संविधान बन गया है और हमने मान लिया है कि असेम्बली का पार्लियामेंट से अलग सेक्रेटरियट होना चाहिये जो सेक्रेटरियेट वहां के स्पीकर के मातहत होगा जिस पर गवर्नमेन्ट का अधिकार नहीं होगा। पार्लियामेन्ट स्वतन्त्र रहे इसलिये यह आयोजन किया गया है । उस समय इस तरह की बात सोची नही जा सकती थी । उस समय की असेम्बली भी ऐसी थी, उसे ऐसा बनाया गया था कि जो गवर्नमेन्ट की इच्छा हो, उसे आखिर में जा कर वह किसी न किसी तरह पूरा करे। इस लिये उन दिनों में यह एक बड़ी कठिन बात थी कि उस का अलग सेक्रेटरियेट हो । उस का सेक्रेटेरियट उस समय गवर्नमेन्ट के मातहत था। बिट्ठल भाई ने बड़ी ही बुद्धिमत्ता और चातुरी दिखा कर इस काम को कराया । अपने लिये अलग स्वतन्त्र सेक्रेटेरियट कायम करा लिया और आज उसी चीज़ को जिसे उन्होंने कायम किया था हम ने मान लिया है ।

जब सत्याग्रह आरम्भ हुआ तो उन्होंने उस काम को छोड़ दिया और इस्तीफ़ा दे कर हट गये। इस्तीफ़ा दे कर हट जाने के बाद वह सत्याग्रह में शरीक हुए । वह कुछ दिनों तक जेल से बाहर रह गये थे । वहां जा कर लोगों को बहुत ज़ोरों का प्रोत्साहन दिया । और अच्छी तरह से उस बात का प्रयत्न किया जिस में लोग सत्याग्रह मे शरीक हों । अपने भाषण में उन्हों ने कहा इंगलैंड में जो स्पीकर होता है वह जब अपना समय पूरा कर के हटता है तो उस को दो चीजें मिलती है, पेंशन मिलता है और पीअरेज मिलता है । मैं असेम्बली का पहला स्पीकर रह कर निकला हूं तो मुझे जेल मिल रहा है । तो वह पीअरेज हमारे लिये जेल ही है। मैं इन दोनों में से अधिक कीमती इसे समझता हूं । इस चीज़ पर वह अड़े रहे। जसा आप से कहा गया विदेशों में भारत के लिये प्रचार करना वह आवश्यक समझते थे और इसी काम के लिये वह यूरुप गये थे । दुर्भाग्यवश वह वहां बीमार हो गये और वहां ही उन का देहान्त भी हो गया ।

इस बीच में जिस वक्त वह असेम्बली के प्रेज़ीडेन्ट थे जो कुछ उन को मशाहरा मिलता था वह सब अपने काम में नहीं लगाते थे। दूसरे ज़रिये से जो वे पैदा करते थे और पैदा भी वह काफी कर सकते थे उस से अपना काम चलाते थे। इस बीच में जो मुशाहरा मिलता था उसे वह अलग जमा करते थे और इस तरह एक अच्छी रकम बचा कर देश के काम में लगाने के लिये उन्होंने एक वसीयत नामा लिख दिया जो रकम कांग्रेस के हाथों में आयी और जो उन का ख़्याल था उस काम में उसे लगाया गया और यदि अभी नहीं लगाया गया है तो उसे अब लगाया जायेगा । इस तरह की उन की ज़िन्दगी थी । अगर वह चाहते तो एक बड़े वकील तो थे ही बहुत

धन जमा करते, तरक्क़ी करते पर अपने लिये कुछ न कर के जो कुछ उन से बन पड़ा उन्हों ने देश के लिए किया। हमें इस बात का दुःख अवश्य है कि वह इस दिन को नहीं देख सके जब उन के परिश्रम के फलस्वरूप देश आज़ाद हुआ है। मगर इस तरह की लड़ाई में बहुतेरों को बिना फल मरना पड़ता है, गुज़रना पड़ता है, और बहुतेरे बहन और भाई गुज़र गये। वह भी उन में से थे। मगर उन के छोटे भाई ने उसे पूरा कर दिया। दोनों भाइयों का भारत के इतिहास में सर्वदा स्वर्णिम भाग रहेगा और जो मूर्ति आपने यहां स्थापित की है बम्बई शहर के लोगों को उन की सेवाओं की याद दिलाती रहेगी और लोगों के सामने एक ऊंचा आदर्श हमेशा रखती रहेगी। मैं अपनी श्रद्धांजिली श्री विटठल भाई को अर्पित करता हूं और आशा करता हूं कि आप ने जिस आशा से इस मूर्ति को खोला है वह आशा पूरी होगी और आप को हमेशा उन की याद दिलाती रहेगी।

पंजाब विश्वविद्यालय का सभावर्तन समारोह

पंजाब विश्वविद्यालय म अपन दीक्षान्त भाषण में राष्ट्रपति जी ने कहा—

कुलपतिजी, उपकुलपति जी, अध्यापकगण, स्नातिकाओ और स्नातको,

यह बड़ी खुशी की बात है कि आप स्नातिकायें और स्नातकगण इस विश्वविद्यालय से उपाधियां पा कर के ज़िन्दगी के बड़े मैदान में दाख़िल हो रहे हैं। आप ने अब तक विद्या हासिल करने में जो सफलता पाई है उस के लिये मैं आप को बधाई देता हूं। इस के साथ ही मैं यह भी कह देना चाहता हूं कि मुझे आप लोगों से यह आशा है कि आप सब अपनी विद्या का भारत और खास कर के पंजाब में नई दुनिया—ऐसी दुनिया जिस में हरेक इन्सान की जिन्दगी सुसंस्कृत और समृद्ध होगी और जिस में किसी की आंख में आंसू और होंठो पर आह न होगी—बसाने में लगायेंगे। आप सब तो अच्छी तरह जानते हैं कि आज आप की इस वीर प्रसूता भूमि में लाखों ऐसे नर नारी हैं जिन के जीवन में विपत्ति, बाधा और विफलता भरी पड़ी है। अभी तीन ही वर्ष की तो बात है कि इस प्रदेश की जनता पर मुसीबतों और मुश्किलों का पहाड़ टूट पड़ा और लाखों को अपने पूर्वजों के घरबार और सम्पत्ति को अपनी संस्कृति, स्वतन्त्रता और जीवन नाश के भय से सर्वदा के लिये छोड़ देना पड़ा। बहुतेरे तो प्राण बचाने में भी सफल न हुए और क्रूरता और बर्बरता से मारे गये। आज भी उन के विछोह के आंसू बहुतसों की आंखों से नहीं सूखे हैं और आज भी ये विपत्ति के मारे मुसीबत से अपना आंचल छुटा नहीं पाये हैं।

इस के अलावा भारत और सारी दुनिया पर नई मुसीबतें छा रही हैं या मंडरा रही हैं। हमारी आबादी बढ़ती जाती है। जहां एक ओर क्षुधाग्रस्त उदरों और नग्न शरीरों की आमद होती जा रही है वहीं दूसरी ओर उन के लिये ज़रूरी भोजन, वस्त्र और घर द्वार वग़ैरह ज्यादा चीज़ों की पैदावार हमारे देश में उसी अनुपात से नहीं हो रही है। इस लिये हमारे लोगों को आज कल आर्थिक क्षेत्र में काफी मुश्किलें और मुसीबतें झेलनी पड़ रही हैं। आप लोगों को यह समझ लेना चाहिये कि इन बातों से नजात पाने और दिलाने का

काम आप का भी है । यह ख़्याल करना कि आप कर ही क्या सकते हैं अपनी जवानी और अपनी तालीम की तौहीन करना है । आज बहुतेरे पढ़े बे पढ़े सब में बे बसी का आलम छाया हुआ है । वे सब यह सोचते हैं कि जिन मुसीबतों में वे गिरफ्तार हैं उन से फौरन नजात दिलाने का काम सरकार का है । अगर सरकार इन मुसीबतों को जादूगर की तरह ज़रा सी देर में दूर नहीं कर पाती तो अक्सर लोग यह सोचने लगते हैं कि सरकार के कर्णधार और कर्मचारियों की अगर बदनीयती या बददयानती का नहीं तो उन की अकर्मण्यता का यह फल है ।

इस बात को हम सब लोगों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि राज या सरकार कोई एसी दैवी या आसुरी मशीन नहीं है जो देश के रहने वालों से बिल्कुल जुदा और अलग हो और अपनी निहित शक्ति से दूसरे लोगों पर हुकूमत करती हो । वह तो देश के शहरियों के मिल जुल कर काम करने का ही दूसरा नाम है और उस की ताकत और प्रेरणा उस की चेतना और उस की दशा सब वे ही होते हैं जो कि शहरियों की होती है । अगर शहरी सुस्त और पस्तहिम्मत होंगे तो सरकार भी वैसी ही होगी और वे चुस्त और चौकन्ने होंगे तो सरकार भी वैसी ही होगी । इस लिये यह ख़्याल कि जनता के चुप चाप और बे हरकत रहने पर भी सरकार जादूगर की तरह सारे कामों को पूरा कर देगी महज़ एक फिज़ूल और बेमानी ख़्याल है । सच तो यह है कि हनुमान जी की तरह जनता अपनी ताकत को भूल जाती है कि देश में जो कुछ भी होता है वह उसी की शक्ति और उसी के सहारे से होता है । इसी सचाई को पहचान कर गांधी जी ने अंग्रेज़ों के राज को यहां से हटाने का तरीका राजसत्ता से असहयोग बताया था। मै समझता हूं कि जनता को अब तो यह अहसास कर लेना चाहिये कि वह, जब तक स्वयं सक्रिय न होगी जब तक स्वयं कमर कस कर अपनी मुश्किलों और मुसीबतों को जीतने के लिये तैयार न होगी तब तक राज्य भी काफ़ी तेज़ी और काम-याबी से इस बारे में कदम न उठा सकेगा । मेरा ख़्याल है कि जनता को अपनी ताक़त का एहसास कराने और सक्रिय बनाने में और साथ ही भारत की सांस्कृतिक और आर्थिक उन्नति करने में जवान लोग और खास तौर पर विश्वविद्यालयों में तालीम पाने वाले विद्यार्थी काफ़ी काम कर सकते हैं ।

आप जैसे विद्या प्राप्त युवक युवतियों को तो यह समझना चाहिये कि आप की तालीम महज़ आप की अपनी चीज नहीं है बल्कि आप के बुज़ुर्गों और आप के मौजूदा हमवतनों की थाती है । यह बात तो ऐसी नहीं जिसके साबित करने के लिये बारीक दलीलों की ज़रूरत हो । विद्या ऐसी चीज़ नहीं जिसे किसी आदमी ने अपनी अक्ल या मेहनत या पैसे से बना लिया हो । उस के बनाने में तो लाखों लोगों का दिमाग़ और मेहनत हज़ारों वर्षों से लगती रही है । आज जो इल्म का खज़ाना है उस को एक एक मुहर इकट्ठा कर के जोड़ा गया है । इस लिये इस खज़ाने से आप को जो कुछ मिला है वह इसी लिये कि आप इस को अपनी ब्याज के साथ इस खज़ाने में फिर जमा करावें ताकि आप के बाद आने वाली पीढ़ियों को उसी तरह आप के दिमाग़ और तजुर्बे का फ़ायदा

हो जिस तरह कि आप को पिछली पीढ़ियों के दिमाग़ और तजुर्बे से हुआ है । साथ ही इस खज़ाने की हिफ़ाज़त और उस के लेन देन के लिये जो इन्तज़ाम यानी ये तालीम की संस्थायें और विश्व विद्यालय जो आज मौजूद हे वे भी तो आप के सारे देशवासियों के सहारे चल रहे है । उन का ही पैसा उन में लगा है और उन के पैसे से ही इन का रोज़ाना का काम चलता है । यह ठीक है कि आप लोगों ने भी फीस वगैरह दी है मगर साथ ही इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि महज़ फ़ीस से ही न तो ये शिक्षासंस्थायें और विश्वविद्यालय चलाये जा सकते है और न अपना काम कर सकते है । इस लिये आप की तालीम आप के देशवासियों का आप पर कर्ज़ है जिसे आप को मय ब्याज के अदा करना है । स्वतन्त्र भारत में इस ऋण को चुकाने का रास्ता आप के लिये और सभी भारतवासियों के लिये उस की सेवा है ।

मै समझता हूं कि यह बात नही है कि हमारे पास शक्ति की कमी है । हम लोग तो तायदाद में इतने है कि अगर हम सब सामूहिक रूप से अपनी शक्ति को मिलावें तो हमारी शक्ति इतनी ज़्यादा हो जायेगी कि जितने काम हमारे सामने है उन को ही हम न कर डालेंगे बल्कि उन से कहीं ज़्यादा को कर डालेंगे । किन्तु आज कल हम में सामूहिक रूप से काम करने की भावना नही है और हम में से लगभग हरेक अपनी ही सोचता है । सामूहिक भावना अथवा सामूहिक श्रम का संगठन ज़बर्दस्ती भी किया जा सकता है । किन्तु हम इस प्रकार की ज़बर्दस्ती करना ठीक नही समझते । हमारा ख़्याल है कि हम अपने देश मे सामूहिक श्रम की ऐसी व्यवस्था बनायें जिस में लोग इस विचार और विश्वास से अपनी इच्छा से भाग ले कि ऐसा करने में उन की भलाई और बहबूदी है । जनता मे अपने बल का और सामूहिक उद्योग के लाभ का अहसास पदा करना ही सच्ची क्रान्ति है और उसी क्रान्ति को पैदा कर के हम हर व्यक्ति को और सारी जाति को न केवल समृद्ध बना सकते हैं बल्कि हरेक को अपनी अपनी बुद्धि और शक्ति के अनुसार नवसंसार के निर्माण का मौका दे सकते है । लोग ऐसी क्रान्ति चाहते हैं कि दुनिया में कोई गरीब और बे बस न हो और मेरा ख़्याल है कि सब जवान लोगों को समझना चाहिये कि ऐसी क्रान्ति में ही उनका अपना निजी हित भी है ।

विचार कर के देखा जाये तो महात्मा जी किस प्रकार का नया समाज संगठित करना चाहते थे और जिस में सत्य और अहिंसा का ही मूल आधार देखना चाहते थे वह इसी प्रकार की भावना से और सामूहिक संगठन से बन सकता है । वे चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र हो । उस की अपनी नैसर्गिक शक्तियों, कुदर्ती ताकतों के विकास और तरक्की में किसी तरह की बाधा या रुकावट समाज की ओर से न डाली जाये, साथ ही उस में स्वयं यह समझ हो और यह एहसास हो कि उस की शक्ति किसी ऐसे काम में न लगे जिस से दूसरों की बुराई हो बल्कि अपनी शक्ति दूसरों की सेवा में लगाना वह अपना फर्ज समझे और उस की यह कर्तव्य निष्ठा बचपन से ही जाग्रत रहे । वे मानते थे कि आदमी

पर बाहरी नियंत्रण कम से कम हो, पर अपने ऊपर उस का ऐसा कठिन नियंत्रण हो कि वह कही बहक न सके । आज भी हम देखते है कि कुछ लोग दूसरों की सेवा में बहुत कुर्बानी कर सकते है और अपने एशोआराम को छोड़ कर तरह तरह की मुसीबतें भी अपने ऊपर ले सकते है। देश प्रेम के कारण लड़ाइयों में जो लोग जूझ जाते हैं उनकी वही भावना होती है और दूसरे प्रकार से जो त्याग दिखलाते है उन में भी वही भावना काम करती है, पर जो चीज़ इक्के दुक्के में देखने में आती है उसे किस तरह समाज में व्यापक बनाया जाये ? किस तरह कम से कम देश के बहुतेरे लोगों में फैलाया जाये ? यही प्रश्न हमारे सामने और सभी देशों के सामने जो अहिंसा के सिद्धान्त को मानेंगे होगा। यह अनुभव से देखा गया है कि त्याग की वृत्ति में खुद फैलने की शक्ति होती है। सामूहिक त्याग उतना कठिन नही होता जितना व्यक्तिगत त्याग। लड़ाई में मामूली सिपाही भी औरों को मरते देख मरने की हिम्मत अपने में पा लेता है । उसी तरह ज़िन्दा रह कर पर सेवा में अपने को लगा देने में जो त्याग होता है उस भावना को सामूहिक रूप से हमारे देश की जनता में जाग्रत करना ज़रूरी है । इसी भावना को जाग्रत कर के महात्मा गांधी जी ने देश के बच्चो से, स्त्रियों से, सीधे सादे निरीह किसानों से मिल कर त्याग करवाया और देश को स्वतन्त्रता दिलवाई । इसी लिये आज ज़रूरी है कि जब हम राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर चुके है तब इस सच्ची व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के हासिल करने के लिये जो ऊपर कही गई क्रान्ति द्वारा ही याने जो एक नये प्रकार के समाज सगठन मे ही मिल सकती है हम इस मजमूई कुर्बानी या सामूहिक त्याग की भावना जाग्रत करें । वह समाज ऐसा होगा जिस मे सभी स्वतन्त्र होगे । कोई किसी को सतायेगा नही कोई किसी का शोषण नही करेगा । किसी को भूख नही सतायेगी । न कोई कपड़े के बिना सर्दी मे ठिठुरेगा अथवा घर बिना बरसात में भीगेगा न किसी को किसी की ज़बर्दस्ती गुलामी करनी होगी, और न कोई दूसरे पर दबाव डाल कर उस से काम ले सकेगा; जहां सब अपनी खुशी के काम करेंगे कोई भी बेकार रह कर मुफ्तखोरा नही होगा और न कोई अपने ऐश और आराम के सामान का अपने धन और शक्ति का ऐसा इस्तेमाल करेगा जिस से दूसरों को ठेस लगे । गवर्नमेन्ट के लोग सेवा भावना से काम करेंगे और कम से कम व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप करेंगे । लोगो को शिक्षा भी ऐसी मिलेगी जो उन को इस तरह की ज़िन्दगी के लिये तैयार करेगी। दूसरे देशों के साथ अथवा दूसरे समाज के लोगों के साथ कोई अनमना झगड़ा न होगा । हरेक देश और समाज जिस तरह कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा और शक्तियों के अनुसार विकसित होता है अपने रास्ते पर चल कर अपनी तरह से तरक्की कर सकेगा। लड़ाई संसार से उठ जायेगी और शान्ति का साम्राज्य फैल जायेगा। जो बुद्धि, ज्ञान, शक्तियां, समय, और धन एक दूसरे के बरबाद करने में आज देश लगा रहे है वह इन्सान की तरक्क़ी और उन्नति में वे लगाने लगेंगे। इस में केवल किसी एक आदमी या समाज या देश का ही हित और फ़ायदा देख कर कोई काम न होगा बल्कि सब का हित और फ़ायदा देख कर सब काम करेगे ।

देखने में ऐसा मालूम हो सकता है कि यह तसवीर एक मनगढ़ंत तसवीर है जो न कभी हुई है और न होगी क्योंकि मनुष्य का हृदय ही ऐसा बना है कि वह सिर्फ अपने ही हित

की बात सोच सकता है और सामूहिक हित की ओर उस का ध्यान जाता भी है तो अपने ही हित की दृष्टि से । जो हो इस से इन्कार नही किया जा सकता कि संसार के सामने ऐसी हज़ारों मिसाले गुज़री हैं जिन्होंने यह साबित कर दिया है कि मनुष्य अपने क्षणिक अथवा व्यक्तिगत लाभ के ऊपर उठ सकता है और दूसरों के लिये, समाज के लिये अपने को कुर्बान कर सकता है और कोई देश ऐसा नहीं जहां इस तरह के बहुतेरे लोग न होते हों। गांधी जी का प्रयत्न यह था कि इस भावना को फैलाया जाये और इसे सर्वव्यापी बनाया जाये। इस के लिये यह ज़रुरी हो जाता है कि जो लोग इस में ओत प्रोत हो गये हैं वे दूसरों में इसे जाग्रत करें और अपने इर्द गिर्द ऐसी आब व हवा पैदा करें कि उस का असर औरों पर पड़े। इसी विचार से उन्हों ने स्थान स्थान पर आश्रम खोल रखे थे जहां लोग अपनी ज़िन्दगी को इसी ढांचे में अपनी मर्ज़ी और खुशी से ज़बरर्दस्ती से नही ढालते थे और इस से कोई इंकार नही कर सकता कि ऐसे लोगो का असर दूसरों पर पड़ता है । हम चाहे उन के आश्रम के रोज़ाना रूटीन और कार्यक्रम को मानें या न माने और अपने विचार से कोई दूसरा ही कार्यक्रम बनालें पर जो कोई भी कार्यक्रम होगा उस में उस प्रकार की सेवा भावना और त्याग भावना, अपने ऊपर अपने नियंत्रण की भावना जरूरी होगी। क्या हमारे विद्यालय और यूनीवर्सिटी उस भावना के लिये कोई भी स्थान अपने कार्यक्रम में रखती है। अगर नही रखती तो उन के द्वारा शिक्षित लोग यदि बहुत कर के इस भावना से वंचित रहें तो इस में उन का दोष ही क्या है यदि कुछ लोगों में यह भावना आ जाती है तो यह उस शिक्षा प्रणाली का फल नही है उन की अपनी ईश्वर की दी हुई शक्ति है जो बावजूद उस प्रणाली के विकसित हो पाई है। हमे यह बात आसानी से समझ में आ सकती है कि किसी छोटे मोटे काम के लिये हम को कितने अभ्यास की जरूरत होती है, चाहे वह वृद्धि के विकास के लिये हो, शरीर के सुन्दर गठन के लिये हो, अथवा पैसे कमाने के लिये । पढने में हमारी जिन्दगी के कितने ही साल लगते हैं। जो अच्छा खिलाड़ी होना चाहता है उस को भी उस मे बहुत समय लगाना होता है । जो पैसे कमाना चाहता है उस के लिये बहुत तैयारी चाहिये और बहुत मेहनत । पर कोई यह नहीं सोचता कि समाज सेवा की भावना किस तरह पैदा की जाये और उस के लिये भी अभ्यास आवश्यक है । महात्मा गांधी जी की यह एक बड़ी सीख और दूरदर्शिता थी कि उन्हों ने जो कार्यक्रम बनाया उस में इस भावना को जाग्रत करने के लिये अभ्यास भी शामिल किया। हम चाहते है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में हमारे विद्यालयों में इस प्रकार के विषय सिखायें और पढ़ाये जायें जिन में इस तरफ रुझान और झुकाव हो । मगर यह सिर्फ पढ़ने और सीखने की बात नहीं है । यह करने की बात है और उस के लिये मौका होना चाहिये जहां इस का रोज़ाना की ज़िन्दगी में अभ्यास और मश्क हो सके। महात्मा जी की बुनियादी तालीम की सारी योजना ऐसी बनी है कि इस किस्म के नये समाज के संगठन में उस से मदद मिल सके । यह जरूरी है कि सभी सरकारें और शिक्षा से सम्बन्ध रखने वाली संस्थायें और शिक्षितवर्ग उस के महत्व को समझें और उस को अपने शिक्षाक्रम में दाखिल करें।

मुझे अफ़सोस तो यह है कि जितना इस पर ध्यान देना चाहिये नहीं दिया गया है । महात्मा गांधी जी के साथ बहुतेरे लोगों ने काम किया है और आज सारे देश को उस

आन्दोलन का लाभ मिलरहा है जिस से देश ने स्वराज्य हासिल किया । पर यह कहना अनुचित नहीं होगा कि हम उन के सिद्धान्तों और कार्यक्रम को पूरी तरह न तो शायद समझ रहे है और न अमल में लाने का प्रयत्न कर रहे है। अमल की बात तो छोड़ दीजिये नई पीढ़ी को उन सिद्धान्तों का परिचय भी शायद ही दिलाया जा रहा हो। मैं जानना चाहता हूं कि हमारे देश के विद्यालयों और पाठ्यक्रमों में उन सिद्धान्तों के पढ़ाने का कहां और क्या प्रबन्ध किया गया है । मै मानता हूं कि महात्मा गांधी जी ने एक ऐंसी पाठ्य पुस्तक नहीं लिखी जो विद्यालयों के पाठ्य क्रम में रख दी जाये पर मैं यह भी जानता हूं कि उन्होंने जितना लिखा है उस में से चुन चुन कर के ऐसी पाठ्य पुस्तकें बनाई जा सकती हैं जिन में उन के ही शब्दों में उन की सारी शिक्षा बच्चों के वर्ग से ले कर ऊंचे से ऊंची कक्षाओं के विद्यार्थीयों तक के लिये दर्ज हो। उन के लेख भाषण इतने हुए है जो हजारों पृष्ठों में छपेंगे और कोई विद्याव्यसनी समय लगावे तो काफ़ी मसाला मौजूद है जिसे विषय के अनुसार चुन चुन कर के इकट्ठा कर देने से एक एक विषय के ग्रन्थ तैयार हो सकते है। इस तरह का काम हुआ भी है और कितनी ही ज़िल्दें अलग अलग विषय ले कर छप भी चुकी है। इस लिये पाठ्य पुस्तकों का बनाना अब उतना कठिन नही है और आसानी से सभी वर्गों के योग्य पुस्तकें उन के ही शब्दों में बनायी जा सकती हें। अगर इस तरह के विषय पाठ्यक्रम में रख दिये जायें तो दूसरे लोग भी इस तरह की पुस्तकें जल्द तैयार कर देंगे । पर आज तो शायद किसी भी यूनीवर्सिटी में गांधी तत्व के पढ़ने का कोई प्रबन्ध नहीं है । सभी यूनीवसिटियों में अनेक विषयों के पढ़ाने के लिये चेयर हैं पर मुझे मालूम नही कि किसी यूनीवर्सिटी में गांधी तत्व के लिये एक भी चेयर मुकर्रर किया हो । मै यह नहीं मानता कि केवल गांधी जी के सिद्धान्तों को दिमाग़ में भर देना काफी होगा । यह तो खास कर के अमल करने की चीज है मगर बौद्धिक ज्ञान भी आवश्यक है और अगर पूरी तरह अमल करना कठिन नहीं मालम होता है तो कम से कम बौद्धिक ज्ञान दिलाने का प्रबन्ध तो हमारे शिक्षा-क्रम में हो ही सकता है । क्या यह आश्चर्य की बात नही कि हमारे शिक्षाक्रम में कान्ट और हेगल की फिलासफी मार्क्स का समाजवाद और आधुनिक पश्चिम के लेखकों के ग्रन्थ पाठ्यक्रम में रखे जायें पर गांधी जी का क्रान्तिकारी सिद्धान्त हमारे विद्यालयों और यूनीवसिटियों में न पढ़ाया जाये । इस से यह साबित होता है कि हम अभी पुरानी लकीर के फकीर हैं और राजनैतिक स्वतन्त्रता पा कर भी दिमाग़ी स्वतन्त्रता अभी नहीं पा सके और हमारा शिक्षा क्रम उसी ढांचे पर चल रहा है जिस पर वह आज तक चलता आया है । इस शिक्षाक्रम में क्रान्ति की आवश्यकता है । और बुनियादी तालीम और उसी की बुनियाद पर बनी हुई सारी तालीम होनी चाहिये। यह क्रान्ति, यह तालीमी क्रान्ति, जब तक नहीं होती तब तक गांधी जी जिस तरह की सामाजिक क्रान्ति चाहते थे वह नहीं हो सकेगी क्यों कि वह केवल बौद्धिक ज्ञान का ही विषय नही अमल करने की चीज है और बुनियादी तालीम के क्रम में बुद्धि विकास के साथ अमल करना और अमल के साथ बुद्धि विकास होना दोनों कदम मिला कर साथ साथ चलते हैं। क्या आप जो यहां से विद्या प्राप्त कर के जा रहे हो इस ओर ध्यान दोगे ? मेरी यही कामना है कि आप भारत की सच्ची सन्तान बनो और अपने जीवन को सफल करो ।

अम्बाले में नागरिक अभिनन्दन

तारीख़ ६-१-५१ को अम्बाला कैन्टोनमेंट म्युनिसिपैलिटी द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब में राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम गवर्नर साहब, लोकल बोर्ड और म्युनिसिपैलिटी के मेम्बरान, बहनो और भाइयो,

इस बात की आज मुझे बड़ी ख़ुशी है कि मैं यहां आ सका और आप सभी बहनों और भाइयों से मिल सका। आप ने जो मानपत्र दिया है उस में आप ने ठीक ही कहा है कि आप का यह स्थान एक ऐसा स्थान है जिस का बहुत पुराना और गौरवपूर्ण इतिहास है और आप एक ऐसी जगह में रहते है जिस को आज ही नही चिर काल से लड़ाइयां करनी पड़ी है; और सारे हिन्दुस्तान की हिफ़ाज़त का भार एक तरह से यहां के लोगों पर ही रहा है और आज भी यहा के लोगों पर बहुत कुछ है। सारे हिन्दुस्तान के सामने यह प्रश्न है कि किस तरह से वह आप से यह काम कराये और किस तरह से वह आप को इस काम में मदद दे। हिन्दुस्तान की रक्षा का जो आप का ऐतिहासिक कार्य है उस को आप निभाते चले आते हैं, अभी भी निभा रहे है और उम्मीद है कि आइन्दा भी आप निभायेंगे।

आप ने अपनी कठिनाइयों का ज़िक्र किया। यह ठीक है कि पुराणों में और पुराने ग्रन्थों में यहां नदियों का वर्णन है। पर आज आप को पानी की तकलीफ़ है। उस के लिये आप प्रबन्ध कर रहे है यह जान कर मुझे ख़ुशी हुई। मैं उम्मीद करता हू कि यहां से थोडी ही दूरी पर जो नदी बांधने की योजना चल रही है उस से इस ज़िले को भी लाभ पहुंचेगा और पानी का नहीं तो कम से कम बिजली का लाभ तो ज़रूर पहुंचेगा जिसकी वजह से पानी निकालना आसान हो सकता है। आज कल जिस तरह से दुनिया ने विज्ञान में प्रगति की है उस को देखते हुए मै कह सकता हूं कि ऐसी कोई जगह नही है जिस को अगर मनुष्य चाहे तो हरा भरा नहीं कर सकता हो और पानी की तकलीफ भी मनुष्य दूर कर सकता है यदि उस में बुद्धि हो, कौशल हो, और इस के लिये उस के पास साधन हों। मैं उम्मीद करता हूं कि अब जब हम स्वतन्त्र हो गये है इस तरह की कठिनाई को दूर कर सकेंगे। यह सही है कि बहुत प्रश्न एक साथ ही हमारे सामने आ गये हैं और उन को हल करने में कठिनाई हो जाती है और इस लिये कभी कभी हम घबड़ाते भी हैं और कभी कभी लोग यह भी कहने लग जाते हैं कि हम में कुछ करने की योग्यता नहीं। पर बात ऐसी नहीं है। अभी हमें स्वतन्त्र हुए सिर्फ तीन साल हुए हैं। इन तीन वर्षों के अन्दर भी बड़ी बड़ी मुसीबतें हिन्दुस्तान में आईं जिन का सब से बड़ा हिस्सा आप को ही बर्दाश्त करना पड़ा। इतनी मुसीबतों के बाद भी हम ज़िन्दा रह गये, अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं, और अपने पैरों पर चल सकते हैं इस के लिये मै ईश्वर को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उस ने इतनी योग्यता हम में दी है कि हम उन मुसीबतों का मुकाबला कर सके। आइन्दा के लिये भी हम को हिम्मत रखनी चाहिये, साहस रखना चाहिये जिस से कि जो कुछ मुसीबत बाकी हो उस को दूर

कर सकें। केवल उन मुसीबतों को केवल दूर ही नहीं कर सकें बल्कि जो कर के हम दुनिया को दिखाना चाहते थे, जिस तरह के स्वप्न हम देखते थे उस को भी पूरा कर सके और हिन्दुस्तान को एक हरा भरा सुख सम्पन्न और समृद्ध देश बना सके। जिस तरह महात्मा गांधी भारतवर्ष का चित्र अपने सामने रखते थे वही चित्र हमारे सामने है और इस के लिये हम सब को काम करना है। अभी हम बहुत कुछ नहीं कर पाये है पर इस से घबड़ाना नहीं चाहिये। अगर हम हिम्मत के साथ परिश्रम के साथ, काम करे तो सब कुछ पूरा हो सकता है। आज सवेरे इसी जगह पर जब यूनीवर्सिटी का कनवोकेशन हुआ था तो मैं ने कहा था कि हम ऐसा समझते हैं कि हम को अब कुछ करना नहीं है, अब अपनी गवर्नमेन्ट हो गयी है और सब कुछ अब हमारे लिये गवर्नमेन्ट को करना है। मैं मानता हू कि गवर्नमेन्ट भी बहुत कुछ कर सकती है। लेकिन उस की शक्ति तो उन लोगों की शक्ति है जिन की वह गवर्नमेन्ट है। अगर हम लोगों मे शक्ति नही है तो गवर्नमेन्ट मे भी शक्ति नही होगी और खास कर के ऐसी गवर्नमेन्ट में जो समझी जाती है कि वह जनता का प्रतिनिधित्व करती है, सब की चुनी हुई गवर्नमेन्ट है। अगर जनता कमजोर है, जनता बुरी है तो उसकी गवर्नमेन्ट भी वैसी ही होगी। लोगो मे जो खूबी होगी वह गवर्नमेन्ट मे भी आयेगी। इस लिये सब को मिल जुल कर जो तकलीफ हो उस को दूर करना चाहिये। और सब मिल कर काम करेंगे तो इस में सन्देह नही कि हम उसे दूर कर सकेंगे।

आज कल लोगो के दिलो मे बहुत तरह के विचार उठते हैं। कुछ लोग जल्द काम करना चाहते है, कुछ लोग आहिस्ता आहिस्ता चलना चाहते है, मगर जल्दी जल्दी चलने के लिये कहने ही मे तो काम नही हो जाता। कहने मे तो ज्यादा चलना जरूरी है। इस लिये जो काम हो उस को हाथ मे लेकर हिम्मत के साथ करना चाहिये। काम की कमी हिन्दुस्तान के अन्दर नही है। किसी भी स्वतन्त्र देश मे जब बड़े बड़े मसले आते हैं तो काम की कमी नही होती बल्कि काम करने वाले आदमियों की कमी होती है। हिन्दुस्तान मे अभी ३५-३६ करोड़ आदमी रहते हैं पर तो भी हम आदमियों की कमी महसूस करते है, ऐसे आदमियो की जो अपना सारा समय दे कर त्याग की भावना से काम करे। जब तक ऐसे आदमी काफ़ी तादाद मे नही आयेंगे तब तक देश का काम नही बढेगा।

हम को ऐसा नही समझना चाहिये कि अब स्वराज मिल गया है अब हम को कुछ करना नही है; अब तो आराम से बैठे रहना है। यह बात नही है। स्वराज की वजह से हम पर बहुत जवाबदेही आ गई है। मै यह तो मानता हू कि जितने त्याग और परिश्रम की जरूरत स्वराज हासिल करने मे थी उस से ज्यादा जरुरत देश को बनाने में है। यह देश किसी एक का नही है, यह किसी एक जाति या कौम का नही है। यह किसी एक विचार वाले दल या पार्टी का नहीं है। यह तो सब लोगों का है और सब को इसे कुछ न कुछ देना है। जो इसे जितना देंगे उन को उस से उतना ही मिलेगा। सिर्फ मांगते ही रहने से और इसे कुछ न देने से कुछ

नही मिलेगा । हमारा काम पहले देना है । फल तो हम को ईश्वर देने वाला है । आखिर ईश्वर खुद आकर थोड़े ही काम करता है वह तो आदमी की मार्फ़त ही काम कराता है । हम लोग तो निमित्त मात्र है । मगर अपनी तरफ़ से हम लोगों को काम करते रहना चाहिये ।

मै आशा करता हू कि जिस तरह आप ने बयान किया है कि आप ने शिक्षा के प्रबन्ध मे, बीमारी को रोकने मे काफी तरक्की की है उसे जारी रखेगे । ये सब ज़रूरी काम है और हमारी जितनी लोकल सेल्फ़ गवर्नमेन्ट की संस्थाये है उन का यह काम है कि इन चीजों में मदद करे और उन में काम करने वाले लोग जिन लोगो के मातहत वे काम करते है उन की सेवा कर के तजुरबा हासिल कर बडी जगहों मे बडे काम के लिये तैयार हों। आज इस का मौका है । इगलैड मे ऐसे बहुत बड़े बडे लोग हुए है जिन्हों ने पहले किसी न किसी म्युनिसिपैलिटी या इस तरह की दूसरी सस्थाओं मे काम किया है और वहां अच्छी तरह से काम कर के वहा से तजुरबा ले कर फिर आगे बडे बडे काम किये है । आज इस तरह की जितनी कमेटिया है, चाहे विलेज कमेटी हो, म्युनिसिपैलिटी हो या लोकल बोर्ड हो, इन मे इस बात का मौका है । इस तरह की चीजे जब अंग्रेजों ने कायम की तो इसी मसले को सामने रख कर कायम की थी । उन्होने सोचा था कि इगलैड में जिस तरह मे लोग म्युनिसिपैलिटियों मे या इस तरह की अन्य सस्थाओ मे काम कर के तजुरबा हासिल कर के बडे बडे काम करते है उसी तरह से यहा भी लोग इन सस्थाओं मे काम करके तजुरबा हासिल करेंगे। यह मौका आज आप को मिला हुआ है । इस मे जो कुछ बाधा थी वह दूर हो गई है। अब सब काम अपने हाथ मे आ गया है। अगर इस तरह से लोग काम करेंगे तो रुकावट के बदले में उन्हें अच्छा काम करने का मौका मिलेगा। मै उम्मीद करता हू कि इस मौके मे आप लाभ उठायेंगे ।

आप ने मेरा आदर किया मुझे मानपत्र दिया इस के लिये मै बहुत बहुत धन्यवाद देता हूं ।

रामजस कालेज का शिलान्यास

तारीख १७ जनवरी १९५१ को रामजस कालेज का शिलान्यास करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा—

वाइस चान्सलर साहब, प्रिन्सिपल साहब, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि आप ने मुझे यह मौका दिया कि मै रामजस कालेज की नई इमारत की नीव रख सकू। जब मुझ से इस के लिये कहा गया मैंने उसी वक़्त यह सोच लिया कि यह एक ऐसा मौका है जिस को मुझे कभी छोडना नही चाहिये क्योंकि जैसा आप के सामने बयान किया गया है इस कालेज के कायम करने वाले लाला केदार नाथ साहब ने

अपनी सारी ज़िन्दगी की कमाई और पेंशन के पाने की बाद की अपनी सारी जिन्दगी इस कालेज की और इस के साथ की दूसरीं संस्थाओं की ख़िदमत में लगाई। इतना ही नही बल्कि जो कुछ उन्हें पेंशन मिली उस का भी पैसा इस काम में लगाया और खुद किसी दोस्त की मेहरबानी से अपना गुज़ारा किया और उन बच्चों के साथ जिन की तालीम के लिये उन्होंने सब इन्तज़ाम किये अपने दिन बिताये। आप ने यह कहा कि आज इस सस्था की नीव अच्छी पड़ रही है। मैं कहता हू कि उस की नींव तो उसी दिन ठीक पड़ी जिस दिन लाला केदार नाथ ने इतने त्याग के साथ और श्रद्धा से, सच्चे दिल से विश्वासपूर्वक इस काम को शुरू किया था। कोई काम जो श्रद्धा से, सच्चे दिल से विश्वासपूर्वक शुरू किया जाता है वह बहुत फूलता फलता है। उस का नमूना आप अपनी आंखों के सामने देख रहे हैं कि किस तरह से एक छोटी सी सस्था एक छोटे से स्कूल के रूप में कायम हो कर इतने बड़े कालेज और उस के साथ साथ कई लड़को और लड़कियों के स्कूल और दूसरी कई चीजे अपने साथ ले कर इतनी बडी हो गई है और मै समझता हू कि यूनीवर्सिटी मे आ कर इस की तरक्क़ी का रास्ता और भी खुल रहा है और मुझे विश्वास है कि यह आगे और तरक्की करेगी। लाला केदारनाथ ने अपने पूज्य पिता के सामने वादा किया था कि एक बच्चे के बदले में इन सस्थाओ द्वारा वह अनगिनत बच्चे पैदा कर देंगे उस को सच्चाई के साथ, प्रेम के साथ, श्रद्धा के साथ उन्होने पूरा करने का प्रयत्न किया और उसी का यह फल है कि आज हम सब इकटठे हो कर इस नये भवन की नींव डालने में शरीक हो रहे हैं।

मैं मानता हूं कि अपने देश में शिक्षापद्धति मे कई तरह के सुधारों की जरूरत है और उन में एक चीज़ जो आज ध्यान में देने लायक है वह यह है कि हमारे लोगो की जिन्दगी ऐसी हो कि वे सब लोगों के साथ मिल जुल कर रहे और ऐसी नही हो कि जो कालेज और यूनीवर्सिटी में पढ़ कर निकले, अपने सब भाई बहिनों से बिल्कुल अलग और जुदा रहें और उन से उन का कोई सम्बन्ध और ताल्लुक न रहे और जो एक दूसरे को पहिचान नहीं सके, एक दूसरे की बात समझ नही सके। पर आज कल तो इस के विपरीत होता है। लाला केदार नाथ ने इसे समझ लिया था और इस लिये बच्चों के साथ रह कर इतने दिन उन के साथ बिताये, उन के साथ खेल में शरीक हुए, उन के साथ खाने में शरीक हुए और उन को अपनी जिन्दगी की सादगी दिखलायी और उनके सामने नमूना पेश किया। मै आशा करता हूं कि यह बड़ी संस्था जिस की नीव और कालिजों के मुकाबले मे यूनीवर्सिटी में डाली गई है वह और कालेजों के मुकाबले में अच्छा काम करेगी। जैसा आप से कहा गया है पढ़ने में भी इस कालेज के लड़कों ने नाम हासिल किया है और खेल कूद में भी नाम हासिल किया है। मैं आशा करता हूं कि इस के साथ साथ इस की जो खासियत है कि किस तरह से अच्छे लोग सच्चे लोग सादगी की ज़िन्दगी बिता सकते है और साथ साथ बड़े से बड़ा ऊचे से ऊंचा दिमाग़ रख सकते हैं इस को कायम रखेगी। आज इस की ज़रूरत हिन्दुस्तान को और मै समझता हूं कि सारी दुनिया को है और मै उम्मीद करता हू कि आप के कालेज में इस तरह के बच्चे निकलेंगे जो देश के और यूनीवर्सिटियो के सामने इस नमन को रख सके।

मैं आशा करता हू कि जिस श्रद्धा और विश्वास के साथ लाला केदारनाथ ने इस काम को शुरू किया और जिस आशा और विश्वास के साथ आपने इस काम को अपने हाथ में लिया है वह पूरा होगा और आप को कभी ऐसा समय नही आयेगा कि इस बात की चिन्ता हो कि रुपये की कमी से कही इस का काम न रुक जाये। बहुत लोग इस मिसाल को देख कर और जो कुछ आप कर रहे है उस चीज को समझ बूझ कर आप की सहायता करेगे ऐसी मेरी आशा है और मै उम्मीद करता हू कि आप का काम दिन ब दिन बढेगा और फले फलेगा।

राष्ट्र को संदेश

तारीख २५ जनवरी १९५१ को रात्रि के साढे आठ बजे अखिल भारतीय रेडियो के दिल्ली केन्द्र से राष्ट्र के नाम राष्ट्रपति ने भाषण प्रसारित करते हुए कहा--

ठीक एक बरस पूरा हुआ कि भारत एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बन गया। जो सविधान विधान परिषद ने बनाया था वह काम मे आने लगा। इस साल मे हम क्या कर पाये है और किस विषय मे असफल रहे है यह जान लेना अच्छा होगा।

इस वर्ष का शुरू का समय साम्प्रदायिक झगडों से कलुषित हो गया और पूर्वी बगाल मे बहुत बुरी घटनाये हुई जिन के कारण बहुतेरे हिन्दू पूर्व से पश्चिम बगाल चले आये। उस के बाद उसी तरह की घटनाये पश्चिम बगाल मे भी हुई और बहुतेरे मुसलमान पश्चिम से पूर्वी बंगाल गये। भारत और पाकिस्तान के प्रधान मन्त्रियो के बीच एक समझौता हुआ जिस के फलस्वरूप स्थिति आहिस्ता आहिस्ता बदली है और बहुतेरे लोग जो घर बार छोड़ कर चले गये थे अपने अपने घरो को वापस गये है। आशा की जाती है कि लोगो मे ऐसा विश्वास पैदा किया जायेगा जिस मे कि इस तरह की दुर्घटनाये भविष्य मे असम्भव हो जाये। अल्प-सख्यक लोगो को यह आश्वासन होना चाहिये कि वे सुरक्षित और प्रतिष्ठासहित जिन्दगी बिता सकेगे ; और उन को भी विकास और तरक्की के साधन और मौके दिये जायेगे जिस से वे जिस राज्य मे रहते है वहां के सन्तुष्ट और वफ़ादार नागरिक हो कर रह सके।

इस साम्प्रदायिक समझौते के साथ साथ पाकिस्तान से एक व्यापारिक समझौता भी किया गया जिस से भारत और पाकिस्तान के बीच व्यापार कुछ हद तक चलने लगा। यह अफसोस की बात है कि सिक्के की दर के सम्बन्ध में कोई समझौता न होने के कारण अभी तक व्यापार इस तरह से नही चला जिस मे दोनो को लाभ पहुचे और आज प्रत्येक को दूर देशों की तरफ़ उन वस्तुओं के लिये जिन की उन को जरूरत है ताकना पडता है और उन वस्तुओं के बेचने के लिये जो उन के पास आवश्यकता से अधिक है जाना पड़ता है जब कि यह दोनों काम दोनों ही निकट मे निकट स्थान में कर सकते हैं।

कुछ और आवश्यक बातो पर भी पाकिस्तान के साथ झगडे चल ही रहे है। सयुक्त राष्ट्र सघ को सुरक्षा समिति ने सर ओवन डिक्सन को काश्मीर के मामले मे बीच बचाव कर के समझौता करा देने के लिये मुकर्रर किया था। उन्हो ने १९ महीने इस देश मे बिताये पर दुर्भाग्यवश उन के प्रयत्न असफल रहे। हाल में लन्दन मे जो बाते हुई उन का भो कोई बेहतर नतीजा नही निकला। हम लोग इस के लिये हमेशा तैयार रहे है कि इस बात का फैसला काश्मीर के लोग ही करे कि वे क्या चाहते है पर जब तक वह फैसला नही कर लेते हम से ऐसी आशा नही रखनी चाहिये और न हम उस के लिये तैयार है कि हम काश्मीर सम्बन्धी अपने कानूनी अधिकार को छोड दे अथवा अपने नैतिक कर्तव्य से मुख मोड ले।

निर्वासित लोगों की सम्पत्ति का प्रश्न हमारे लिये बहुत ही महत्व रखता है पर इस का निपटारा अभी तक हम नही करा पाये है और उस का नतीजा यह हुआ है कि हमारे लिये यह असम्भव हो गया है कि लाखों निर्वासितों को बसाने का काम हम शीघ्रता से पूरा कर सके।

पाकिस्तान के साथ झगडों को छोड़ कर दूसरी एशियाई गवर्नमेन्टों के साथ हमारे सम्बन्ध हार्दिक मैत्री के रहे है और इसी तरह सुदूर के देशों के साथ भी। हमारा विश्वास है कि सशस्त्र लड़ाई और युद्ध किसी मसले को हल नही कर सकते बल्कि नये मसले पैदा कर देते है। आज घातक शस्त्रो के आविष्कार मे जितनी प्रगति हुई है उस से मालूम होता है कि युद्ध का अर्थ ही है बहुत बड़े और अभूतपूर्व पैमाने पर बर्बादी का होना और इस से आधुनिक सभ्यता के ही नष्ट हो जाने का डर है। इसी विश्वास के साथ हमारे प्रधान मन्त्री ने अपने महान् व्यक्तित्व की सारी शक्ति और इस देश की शुभकामना लड़ाई के क्षेत्र को न बढने देने मे लगा दी है। पिछले सार्वभौम युद्ध के घाव अभी उन देशों में भी भरे नही है जिन को विजयी समझा जाता है ; जो हार गये उन का तो कहना ही क्या है। हम यह आशा और प्रार्थना करते है कि मानव समाज ऐसी महान् विपत्ति से बच जाये। जो देश जितना बड़ा और अधिक शक्तिशाली है उस की उतनी ही बड़ी जवाबदेही होती है कि वह इस विपत्ति को टाले।

यद्यपि हम गणतन्त्रात्मक राज्य स्थापित कर चुके है, हम ने कामन्वेल्थ के साथ रहने का भी फ़ैसला किया है और ग्रेटब्रिटेन तथा कामनवेल्थ के दूसरे देशों के साथ अपने मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध कायम रखे है। सब एक दूसरे की स्वतन्त्रता को स्वीकार करते है और अपनी हानि लाभ तथा कर्तव्य को समझते है और उन सब को मानते और करते हुए इस भाव को बनाये रखते हैं। हम को इस बात का अफ़सोस है कि दक्खिन अफ़्रीका में ऐसे लोगों के लिये जो आदि के भारतीय है पर दक्खिन अफ़्रीका भेजे गये हैं और बस गये है हम अभी तक ऐसा स्थान दिलाने में कोई प्रगति नही कर सके है जैसा कि देश के नागरिक को स्वाभिमान और सुसंस्कृत जीवन की जरूरतों के लिये आवश्यकीय है।

देश के सम्बन्ध में हम इस का दावा कर सकते है कि जो कुछ हम से हो सकता था वह हमने उन लोगों के बसाने में किया है जो घर बार और धन सम्पत्ति छोड़ कर पाकिस्तान से भारत चले आने के लिये मजबूर हुए थे। नवम्बर १९५० के अन्त में तीन लाख से अधिक लोग छावनियों में सहायता पा रहे है। आठ लाख से अधिक परिवारो को जो पाकिस्तान से निर्वासित हो कर आये है खेती के लिये ज़मीन दी गई है। इक्कीस लाख से अधिक निर्वासितों के लिये मकान जुटाये गये हैं चाहे वे दूसरे निर्वासितों के मकान हों अथवा गवर्नमेन्ट की छावनियों तथा दूसरे प्रकार के घर हों अथवा नये बने मकानों मे हों। एक लाख चालीस हज़ार से अधिक लोगो को छोटी छोटी रकमें कर्ज़ के रूप मे दी गई है जिस का जोड़ ९ करोड़ रुपये से अधिक होता है। प्रायः पाच हज़ार निर्वासितों, कारखानेदार और व्यापारियों को बड़ी रकमो का कर्ज़ा दिया गया है जिस का जोड़ लग भग पांच करोड़ है। डेढ़ लाख से अधिक आदमियों को काम दिलाने वाले दफ्तर के मार्फ़त धन्धे दिलवाये गये है। १९४७-५० तक अनुमानतः साढ़े ९८ करोड रुपये निर्वासितों पर खर्च किये गये हैं। निर्वासित लोगों ने बहुत मुसीबतें धैर्य और इज्ज़त के साथ बर्दाश्त की है और वे इस प्रयत्न मे है कि फिर अपने पैरों पर खड़े हो कर जीवन निर्वाह का नया रास्ता ढूंड निकालें। हमारे इतना करने के बाद भी निर्वासितो को बसाने का काम अभी बहुत कर के पूरा नही हो पाया है। पर इसकी विशालता पर जब हम ध्यान देते हैं और यह देखते है कि इस वर्ष के आरम्भ में यह और भी बढ़ गया है तो पता चलता है कि इसके हल हो जाने की कोई आशा भी नही की जा सकती थी। मैं इतना ही कह सकता हूं कि केन्द्रीय और राज्य सरकारें इस काम में बहुत मुस्तैद है। और जो कुछ सम्भव है उसे करने के लिये उत्सुक है और अब तक जो अनुभव मिला है उस से लाभ उठा कर अब काम अच्छी तरह से और ज्यादा तेज़ी के साथ चल रहा है।

हमारे मन्त्रियों का ध्यान देश की आर्थिक और साम्पत्तिक स्थिति की ओर बराबर लगा हुआ है। यह खेद की बात है कि आर्थिक संकट के कारण हम रचनात्मक कार्यों को जितने बड़े पैमाने पर करना चाहते है नही कर पा रहे है। कुछ बड़ी बड़ी योजनाओं में अच्छी प्रगति हुई है जिन से बाढ़ के रोकने, खेत पटाने के लिये पानी पहुंचाने की और बड़े पैमाने पर विद्युत पैदा करने की, जिस से औद्योगिक उन्नति हो सकेगी, आशा की जाती है। हमे इस बात का अफ़सोस है कि ऐसी दूसरी योजनायें हम हाथ में नही ले सकते और जो हाथ में है उन पर जितना खर्च हम करना चाहते है उतना नहीं कर पाते है। दूसरी दिशाओं में भी अधिक प्रगति हुई होती, यदि पूंजी मिल सकती और रुपया बाज़ार इतना तंग न होता जितना रहा है। उत्पत्ति का काम हमारी ज़रूरतों के मुकाबले में पूरा नही हुआ है। यह हालत विशेष कर के खुराक के सम्बन्ध में रही है और वह ऐसे कारणों से जिन पर हमारा कोई अधिकार नहीं है। एक पर एक प्राकृतिक विपत्तियां आई हैं जिन से फ़सल बहुत बड़े पैमाने पर बर्बाद हो गई हैं। हमारे सामने कठिन और चिन्ताजनक समय आ रहा है जिस में हमारे लोगों की जितनी भी दूरदर्शिता, त्याग और कार्यकुशलता है वह उन्हें उस का सामना करने

में लगानी पड़ेगी। हम इस प्रयत्न में है कि विदेशों से इतना खाद्य पदार्थ ले आवें जितना आज तक हम कभी नही लाये है पर खाद्यपदार्थों की आयात और उन का समुचित वितरण इस समस्या को हल नही कर सकेगा, यद्यपि दोनों आवश्यकीय है। इस संकट से पार होने में जनता की कार्यकुशलता दृढ निश्चय और धैर्य हमें सफल बना सकेगे। वर्ष के आरम्भ में आयात निर्यात का हिसाब ऐसा था कि हम बहुत घाटे मे थे और जब हम ने निश्चय कर लिया कि हम निर्यात को बढा कर और आयात को कम कर के स्थिति ठीक कर देगे तो हम ने सफलतापूर्वक इस को कर लिया। ईश्वर चाहेगा तो खाद्य समस्या को भी हम इसी तरह हल कर लेगे।

हमारा संविधान काम मे लाया जा रहा है पर अभी भी हम अन्तर्वर्ती परिवर्तन काल में से गुज़र रहे है और संविधान मे इस के लिये जो भी नियम दिये हुए है उन्हीं के द्वारा कामकाज चल रहा है। जब तक कि सविधान के अनुसार सर्वत्र चुनाव नही हो जायेगे तब तक ऐसे ही काम चलता रहेगा। चुनाव के लिये तैयारियां हो रही है पर वे पूरी नही हो सकी है क्योंकि यह कार्य ही इतना बड़ा है जिस में १७ करोड से अधिक मतदाता पैंतीस सौ से अधिक स्थानो के लिये मत देगे। आशा की जाती है कि यह चुनाव अगले नवम्बर दिसम्बर मे हो सकेगे।

जो पहले देशी रजवाडे थे उन को मिला लेना और प्रान्तो की तरह बना देने का काम सफलतापूर्वक किया गया है और सविधान मे उन रजवाडों को वैसा ही प्रतिष्ठित स्थान और कार्य क्षेत्र मिला है जैसी कि देश की किसी दूसरी ईकाइयों को। इस काम का तथा देश में शान्ति स्थापित रखने के काम का भारी बोझ सरदार वल्लभभाई पटेल के कन्धों पर था जिन का निधन हमारे इतिहास के इस संकटमय समय में हमे मूर्छित करने वाली चोट के समान लगा है; और एक ऐसा स्थान खाली हो गया है जिस को भरा नही जा सकता। उन की दूरदर्शिता, उन की सब को राजी करने और सगठन करने की अद्भुत शक्ति, स्थिति को ठीक समझने की योग्यता और दृढ़तापूर्वक सकल्प पूरे करने की शक्ति ने इस देश के इतने बड़े भू भाग को एक संघीय विधान और एक केन्द्रीय शासन की छत्र छाया के नीचे ला दिया है जैसा इस के लम्बे और शुभ अशुभ घटनापूर्ण इतिहास मे कभी नही हुआ है।

एक स्वतन्त्र राष्ट्र हो कर हम ने अभी काम आरम्भ ही किया है। हमारे सामने देश के अन्दर ही बड़ी कठिनाइयां है और बाहर क्षितिज मे काले बादल मडरा रहे है। हमे कमर कस कर उन का मुकाबला करना है। जो पुरुषार्थ करता है उसे ही ईश्वर की मदद भी मिलती है। हम अपने को ईश्वर की मदद का अधिकारी साबित करें।

महाराजा छत्रसाल की मूर्ति का अनावरण

महाराजा छत्रसाल की मूर्ति का अनावरण करते समय तारीख २८ जनवरी सन् १९५१ को राष्ट्रपति ने कहा :—

अभी दो ही दिन बीते है कि भारत में सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य की स्थापना का पहला वार्षिक महोत्सव मनाया गया है और यह पहला ही अवसर है

जब मैं प्रमुख सेवक, जिसे संविधान की भाषा में राष्ट्रपति कहते हैं, चुने जाने के बाद भारत के ऐसे भू भाग में आया हू जहां पहिले ब्रिटिश साम्राज्य की छत्रछाया में रहते हुए भारतीय राजा राज्य करते थे । स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद वह स्थिति केवल उसी भाग में नहीं जहां ब्रिटिश शासन चलता था बल्कि उन भागों मे भी जहां स्वदेशीय राजा राज्य करते थे बहुत बदल गई । जब ब्रिटिश साम्राज्य ने यह निश्चय कर लिया कि वह भारतीय जनता के प्रतिनिधियो के हाथों मे अपना सम्पूर्ण अधिकार सौप कर अपनी सारी सत्ता और उस की प्रतीक अपनी सारी सेना को हटा लेगा और ऐसा कार्य रूपेण कर भी दिया तब स्वदेशीय राजा और शासक वही काम किये बिना अर्थात् प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथो मे शासन का अधिकार दे कर प्रजातन्त्रात्क राज्य व्यवस्था किये बिना रह ही कैसे सकते थ । एक तो प्रजा मे जाग्रति थी जो यह अधिकार चाहती थी दूसरे राजाओ में भी वह स्वाभिमान और देश प्रेम था जो इस बात को सहन नही कर सकता था कि जो कुछ विदेशी सत्ताधारी यहां की प्रजा के प्रति कर सकते है वह स्वदेशी सत्ताधिकारी न करे । यही कारण है कि इतनी शीघ्रता से और शान्तिपूर्वक यह मौलिक परिवर्तन यहां की शासन पद्धति मे हो सका । इस परिवर्तन के लिये यहां के सत्ताधिकारियो को प्रस्तुत कर देने का श्रेय स्वर्गीय सरदार वल्लभ भाई को है और उस अहिसापूर्ण नीति को है जिसे महात्मा गांधीजी ने प्रचारित किया था । इस का यह फल तो हम को साक्षात् देखने को मिला कि इस नीति पर चलने वाले दोनो ही---जिन को लाभ हुआ और वे भी जिन को साधारण दृष्टि से देखने मे नुकसान हुआ--संतुष्ट और प्रसन्न रहे । मै समझता हूं कि देश के राजा रईस भी सरदार वल्लभभाई के निधन से उतने ही दुखी है जितने दूसरे साधारण लोग, यद्यपि वल्लभभाई की चातुरी कार्यदक्षता और आकर्षण शक्ति ने राजाओ से अधिकार हस्तान्तरित करा कर साधारण दृष्टि में उन का अहित किया। जनता के हाथो मे अधिकार आया है, उस के प्रतिनिधियो को शासन चलाने का भार उठाना पडा है और पहले चाहे कोई भी राजा रहा हो और कोई प्रजा अब सब को कंधे से कंधा मिला कर एक नये भारत का सृजन करना है जिस से दुःख और दरिद्रता दूर हो जायेगी और एक सुखी शान्तिपूजक पर शक्तिशाली राष्ट्र पैदा होगा जिसका गौरव संसार के और सभी देशो के मुकाबले में किसी के पीछे नही रहेगा और भारत का प्राचीन गौरव भी आगे बढ जायेगा । हमारे देश का प्राचीन इतिहास गौरवपूर्ण रहा है और उस लम्बे प्राचीन और आधुनिक इतिहास की बहुत बड़ी घटनाओ और गाथाओ को याद कर के हम प्रेरणा ले सकते है । एक काम, जैसा मै ने ऊपर कहा है, भारत का महत्वपूर्ण एकीकरण हम पूरा कर चुके है और उस का प्रत्यक्ष चित्र हम भारत के नक्शे पर दृष्टि डालने से ही देख सकते है कि बंटवारे के कारण दो पंखों के कट जाने के बाद भी आज का भारत किसी भी पूर्वकालीन एकछत्र शासनाधीन भारत से विस्तार, जन संख्या और सभी साधनो मे बड़ा है। यह पहला महत्वपूर्ण और आवश्यकीय कार्य था जिस को सब ने मिल कर पूरा किया । अब इस महान् देश को सुखी और समृद्ध बनाने का काम हमारा है, और इस में बिना भेद भाव के सभी भारतवासियों की सेवा और सहायता सापेक्ष है ।

इसी गौरवपूर्ण इतिहास के एक निर्माता की स्मृति मूर्त रूप में कायम रखने के लिये यह आज का समारोह इकटठा हुआ है और बुन्देलखण्ड के सुप्रसिद्ध वीररत्न महाराजा छत्रसाल

की अश्वारोही मूर्ति का निरावरण-संस्कार मेरे हाथ से कराने का आज जो यह मंगल आयोजन किया गया है, इस के लिये मै छत्रसाल स्मारक समिति, तथा आप सब लोगों का हृदय से आभार मानता हूं । न्याय, नीति के धर्म मार्ग पर चल कर अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र और समृद्ध करने वाले वीर-पुरुषों को चाहे वे किसी भी देश या किसी भी धर्म के हों श्रद्धान्जलि अर्पण करते हुए मुझे हमेशा हर्ष होता है ।

भारत के इस भाग मे आने का यह मेरा पहला ही अवसर है। श्रद्धेय ठक्कर बापा ने डेढ बरस पहले इस प्रदेश का दौरा किया था, तब अखबारों में प्रकाशित उन के अनुभव मैं ने पढे थे । उन्हों ने बुन्देलखण्ड के इस हिस्से को बहुत पिछड़ा हुआ और गरीब जनता का प्रदेश बतलाया था । हमारे दुर्भाग्य से वह भी आज असंख्य गरीबों को शोकाकुल छोड़ कर चले गये। बुन्देलखण्ड के सुन्दर सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों और खजुराहो के चंदेलकालीन मंदिरों के बारे में मैं ने बहुत कुछ सुना था। केशव दास, लाल और पद्माकर जैसे रससिद्ध कवि आप के इसी प्रदेश में हुए है। महाराज मधुकरशाह, राव चम्पतिराय और महारानी लक्ष्मी बाई इसी भूमि के रत्न थे। राजस्थान की भांति यह विन्ध्य भूमि भी वीर प्रसविनी मानी जाती है । मगर दुख है कि इतिहास लेखकों का ध्यान इस प्रदेश की ओर या तो गया ही नही या बहुत ही कम गया है। कर्नल टाड, और स्वर्गीय गौरीशंकर ओझा जैसे प्रकाण्ड इतिहास लेखकों को पा कर राजस्थान इस दृष्टि से भाग्यशाली रहा है। नई नई शोधों के साथ यों तो सारे ही भारतवर्ष के इतिहास के नए सिरे से भारतीय दृष्टि से लिखने की आज आवश्यकता है, और इस दिशा में संतोषजनक रीति से जहां तहां थोड़ा बहुत काम भी हो रहा है । किन्तु बुन्देलखण्ड जैसे पिछड़े हुए प्रदेशों के शोधपूर्ण प्रमाणिक इतिहास ग्रन्थों का निर्माण कार्य तो जितनी जल्दी हो सके शुरू हो जाना चाहिये ।

यह कितने आश्चर्य की बात है कि महाराजा छत्रसाल जैसे महापुरुषों के नाम का साधारण उल्लेख तक प्रचलित इतिहास, ग्रन्थों में नही आया है। उन के नाम को अजर अमर बनाये रखा तो लाल कवि के छत्रप्रकाश और महा कवि भूषण के छत्रसाल दशक ने। छत्रप्रकाश भी लुप्त सा हो गया था। कैप्टिन पागसन कृत उस का अंग्रेजी अनुवाद सन् १८२९ में, कलकत्ते के कोर्ट विलियम कालेज से मेजर प्राइस ने प्रकाशित कराया था । पीछे काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने इस ऐतिहासिक प्रबन्ध काव्य को प्रकाशित किया। छत्रसाल पर एक पुस्तक मराठी में भी लिखी गई थी जिस का हिन्दी अनुवाद मै ने कई साल पहले पढ़ा था। एक पुस्तक बंगला में भी किसी ने लिखी थी । सुना है बुन्देलखण्ड केसरी नामक भी एक पुस्तक छपी थी । कुछ एक कहानियां और फुटकर लेख भी पत्र पत्रिकाओं में निकले है । एक छोटी सी पुस्तक महाराजा छत्रसाल नाम की भी है हाल में मेरे देखने में आई है ।

बस छत्रसाल सम्बन्धी इतना ही कुछ साहित्य उपलब्ध है जहां तक मै जानता हूं । पर इस अल्प साहित्य सामग्री से भी सत्रहवीं शताब्दि के इस महान देशनायक की स्वातन्त्र्य प्रियता, न्याय नीति और ईश्वर भक्ति का हमें खासा परिचय मिल जाता है । देश की स्वतन्त्रता की खातिर महाराजा छत्रसाल ८० वर्ष की अवस्था तक बराबर लड़ते रहे । एक

बहुत बड़े राज्य का उन्हों ने संस्थापन और शासन किया। स्वभावतः यह उन के बाहुबल और भारी पराक्रम का फल था। पर जिन सद्गुणों से व महान् और चिरस्मणीय बने वे तो उन के दूसरे ही गुण थे। एक तो उन में अभिमान नहीं था जो सच्चे वीर का गुण है। सिंहगढ़ में जा कर शिवाजी से नम्रतापूर्वक उन्हों ने स्वतन्त्रता का गुरुमंत्र लिया और वृद्धावस्था में बाजीराव पेशवा से सैनिक सहायता मांगते हुए उन्हें संकोच नहीं हुआ। यह राजपूत है, वह मराठा है इस तरह की संकीर्ण भावना उन के विशाल हृदय में न थी। दूसरे वे सदा अनीति और अत्याचार के ही विरुद्ध लड़े, किसी खास जाति या संप्रदाय के विरुद्ध नहीं। छत्रसाल की सेना में छत्रप्रकाश के अनुसार राजपूतों के अलावा कायस्थ, भाट, अहीर, ढीमर और बारी भी थे। मेहतर भी सेना में रहते थे। और फ़ौजे मियां नाम का एक मुसलमान सरदार भी उन की फौज में था। शिवा जी की तरह छत्रसाल ने भी मुसलमान स्त्रियों के साथ अपनी बहूबेटियों की तरह धर्म का बर्ताव किया। तीसरे किसी भी युद्ध में न तो उन्हों ने शत्रु के साथ विश्वासघात किया न निहत्थों पर हाथ उठाया। युद्ध में तथा राजशासन में छत्रसाल ने हमेशा न्याय का ही पक्ष लिया। अपने पिता चंपतिराय से उन्हों ने इन वीरोचित गुणों को उत्तराधिकार में पाया था।

छत्रसाल में कृतज्ञता भावना भी पूरी पूरी थी। बचपन में घोड़े पर सवारी कराने वाले सेवक महाबली को राजधिराज हो जाने पर भी वह भूले नहीं थे। अपने नाम के साथ उन्हों ने उस का नाम भी चला दिया, अमर कर दिया। छत्रसाल, महाबली करियो सब भली भली, यह कहावत सुनते है, आज भी यहां प्रचलित है। संकटकाल के साथी अपने घोड़े को भी उन्हों ने भले भाई की प्रेमभरी उपाधि दे रखी थी।

छत्रसाल की गुणग्राहकता तो प्रसिद्ध ही है। महाकवि भूषण छत्रपति साहू के दरबार में पाये महान् आदर सत्कार को क्यों न छोटा समझते जब कि छत्रसाल ने उन की पालकी का डंडा खुद अपने कंधों पर उठा लिया। कवि को अनूठी गुणग्राहकता के आगे झुक कर कहना पड़ा

> और रावराजा एक मन में न ल्याऊं अब,
>
> साहु को सराहों के सराहों छत्रसाल को।

छत्रसाल स्वयं भी एक ऊंचे कवि थे। छत्रसाल ग्रंथावलि हाल में मेरे देखने में आई है। कई पद्य उस में उच्चकोटि के है--भक्तिरस के और राजनीति के भी।

देख कर आश्चर्य सा होता है कि घोर संघर्षमय जीवन में उन्हें इतनी सरस कविता रचने के लिये कैसे अवकाश मिला होगा? लेकिन भारत की वीर परम्परा में ऐसा होना असम्भव नहीं। वीरता के साथ साथ यहां हृदय की सरलता और भक्ति भावना प्रायः देखने में आई है। राजनीतिक दाव पेचों के लिये उन के वीर हृदय मे स्थान नही होता था। यही कारण है कि वह मरुभूमि न बन कर सदा सरस रहता था। छत्रसाल की कविताओं को देख कर पता चलता है कि वे एक धर्मशील व्यक्ति और ऊंचे कृष्णभक्त थे। स्वामी

प्राणनाथ का सत्संग उन्हें मिला था । महात्मा अक्षर अनन्य का सत्संग भी उन्हें प्राप्त हुआ था । यही कारण है कि महान् पुरुषार्थी होते हुए भी छत्रसाल ने कभी अपने बाहुबल पर गर्व नहीं किया था । उन का विश्वास था कि :

नामी नर होत गरुड़गामी के हेरे तें

वे अपने आप को प्रभु का सेवक छोड़ कर और कुछ भी नहीं मानते थे । जब उन्हें शाही मंसब दिये जाने की बात आई, तब उन्हों ने उसे लेने से साफ़ इन्कार कर दिया और कहा :

नर की उदारता में कौन है सुधार, मैं तने मनसबदार सरदार ब्रजराज को ।

परहित की खातिर जो प्राणों को भी तुच्छ समझता है, वह वीरपुरुष एक भगवान का आश्रय छोड़ कर किसी और का आश्रय ले नहीं सकता । हमारे राष्ट्रपिता अद्वितीय सत्याग्रही महात्मा गांधी को भी एक राम का ही संपूर्ण बल भरोसा था :

गरबीलन के गरबनि ढाहे, गरब प्रहारी विरद निबाहे :

छत्रसाल अपने को प्रजा का स्वामी न मान कर सेवक समझते थे । लिखा है कि उन के राज काज में के सलाहकार हर जाति और हर समाज के मुखिया थे, और इस लिये वे इतने अधिक लोकप्रिय हुए ।

छत्रसाल स्मारक समिति तथा महाराज छत्रसाल के वंशजों और इस प्रदेश की जनता ने जो इस भव्य मूर्ति का निर्माण कुशल शिल्पकार द्वारा कराया है उस का निरावरण मैं कर देता हूं । किन्तु स्मरण रखिये, महापुरुषों की मूर्तियों की स्थापना से ही हमारे कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती । वीर पूजा का यह भी एक प्रकार है । पर है साधारण सा ही । इस लिये आम तौर पर हम ने पूज्य गांधी जी की मूर्ति स्थापना को प्रोत्साहन नहीं दिया । श्रद्धा प्रकट करने का असली तरीका तो उन महापुरुषों के चरण चिन्हों पर चलना है । अपने जीवन में हमें उन के उन ऊंचे गुणों को लेना है जिन से वे महान् थे । और वे गुण हैं उन का तप और त्याग उन का सत्य और शील, उन की देश सेवा, जन-सेवा और सब से बड़ी उन की ईश्वर श्रद्धा । भगवान हमें बल दे कि हमारा स्वतन्त्र भारतवर्ष अपने महापुरुषों के जीवन से उन के ऊंचे गुणों को अपनाये जिस से कि हम सब लोग सत्य और प्रेम के मार्ग पर चल कर अपने सम्प्रदाय निरपेक्ष राष्ट्र के योग्य नागरिक और सच्चे लोकसेवक बन सकें ।

खजूराहो में अभिनन्दन

खजूराहो में तारीख २९ जनवरी १९५१ को दिये गये मान पत्र के जवाब में राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम महाराजा बहादुर, बहनो और भाइयो,

आज मुझे सवेरे सवेरे यहां आने का सुअवसर मिला । इसके लिये मैं आप सब को और ईश्वर को धन्यवाद देता हूं । खजूराहो का नाम तो मैंने पहले से सुना था । मगर आज

के पहले यहां आने का सुअवसर मुझे नहीं मिला था और आज यहां पहुंच गया हूं तो आशा करता हूं कि पुराने मन्दिरों के भग्नावशेष जो रह गये है उनको जल्द से जल्द देख सकूंगा।

आपने जो स्मरण पत्र दिया है उसमें आपने बहुत बातें सुझायी है। पिछले मन्दिरों की सुरक्षा हो। मै जानता हू कि अधिकारियों का ध्यान इस तरफ़ है। पर अभी इतना काम हाथ में आ गया है कि अधिकारियों का उस तरफ़ जितना ध्यान जाना चाहिये उतना नही दिया जा सकता है। मगर मेरा यह मत अवश्य है कि इन भग्नावशेषों की सुरक्षा का काम भी पर्याप्त महत्व रखता है। इनका महत्व सिर्फ इस देश के लिये ही नही बल्कि जैसा आप ने कहा, दुनिया के अन्य देशों के लिये भी है। इसलिये मुझे इस बात में कोई सन्देह नही है कि इसकी रक्षा की जायेगी और समुचित रूप से की जायेगी। अभी तो मैंने मन्दिर देखा भी नही है। इसलिये ज्यादा कुछ मै नही कह सकता हूं और कहने का अभी समय भी नही है क्योंकि जल्द से जल्द मन्दिर देखने की मेरी इच्छा है। आपने जो मेरा स्वागत किया उसके लिये मैं आप सब लोगो को धन्यवाद देता हूं और आपको इस बात का विश्वास दिलाता हूं कि आपकी बातों पर पूरी तरह से ध्यान दिया जायेगा।

आगरा कालेज में शत्तोत्तरी जयन्ती

२९-१-५१ को आगरा कालेज की शत्तोत्तरी रजतजयन्ती के अवसर पर राष्ट्रपति जी ने कहा –

प्रिन्सिपल साहब, विद्यार्थीगण, बहनो और भाइयो,

आज मुझे एक बडा सुन्दर मौका मिला है कि आप सब भाइयों और बहनों से यहां इकट्ठा मिल सकू। जैसा अभी आपने बताया और मैं ने पहले भी रिपोर्ट मे पढ़ कर देखा था कि आप का यह कालेज सब से पुराना कालेज है और सब से बड़ी बात यह है कि एक सात्त्विक दान से इस का आरम्भ हुआ था। कोई काम जो सात्त्विक भावना से आरम्भ किया जाता है जिस में सात्विकता भरी रहती है वह सफल होता है इस में कोई सन्देह नही और इस लिये गंगाधर शास्त्री जी का वह सात्त्विक दान आज इतने बड़े विस्तृत और विशाल कालेज के रूप में देखने में आ रहा है जिस से न मालूम कितने हज़ारों विद्यार्थी शिक्षा पा कर समाज का, देश का और अपना काम आज तक करते आये है और न मालूम कितने हज़ार आइन्दा करते रहेगे। इस लिये यह आप सब के लिये बड़े सौभाग्य की बात है कि आप एक ऐसी संस्था के साथ संलग्न है जिस का ऐसा सुन्दर और विशद इतिहास है। मै यह आशा करता हूं कि जिस सात्त्विकता के साथ यह दान दिया गया था और जिस के फलस्वरूप आज यह कालेज इतना उन्नत हुआ है उस सात्त्विकता को आप अपने जीवन का प्रधान लक्ष्य बनायेंगे क्यों इस पर बहुत कुछ निर्भर करता है।

मैं जानता हूं कि आज की शिक्षा पद्धति में, जो बहुत दिनों से हमारे देश में प्रचलित है, चरित्र गठन के लिये कोई विशेष आयोजन नहीं है और इस का फल यही होता आया है कि हम मस्तिष्क की उन्नति तो कर लेते है दिमाग़ की तरक्क़ी हमारी काफ़ी हो जाती है मगर साथ ही साथ चरित्र की कमी अक्सर देखने में आती है। मेरे कहने का यह अर्थ नहीं है कि

आज के शिक्षित लोगों में चरित्र नहीं है। मैं तो इतना कहना चाहता हूं कि अगर हमारे विद्यालयों में, महा विद्यालयों में और दूसरी शिक्षा सम्बन्धी संस्थाओं में उस का भी वैसा ही सुन्दर प्रबन्ध होता जैसा बौद्धिक विकास के लिये है तो हमारी सात्विकता कंही आगे बढ़ी होती और एक आदमी की सात्विक भावना का फल इतना अच्छा देख रहे है तो उसी से आप समझ सकते हैं कि जितने लोग है सब को यदि सात्विकता के अच्छे और ऊंचे आदर्श का बल होता तो आज देश कहां से कहां आगे बढ़ गया होता। महात्मा गांधी जी ने सारे देश को जगाया और जगाया किस चीज के लिये और किस चीज़ से? उन की सारी शिक्षा सात्विकता से भरी हुई थी और चाहे उन्हों ने उस को सत्य और अहिंसा का नाम क्यों न दिया हो पर इस मे कोई सन्देह नही कि उस का मौलिक सिद्धान्त सात्विकता ही है और हम लोगों को जो स्वार्थ में फंसे थे, लिप्त थे, सब को देश के प्रति इतनी ऊंची भावना से, सच्चे प्रेम से, ओत प्रोत किया और आजादी के लिये अमिट चाहना पैदा की और उसी का फल यह है कि वह अपने जीवन काल मे ही अपने परिश्रम का सुफल देख सके और आज हम इस देश के सभी लोग अपने को सौभाग्यशाली मानते है कि यह देश स्वतन्त्र है। अब जो काम हमारे सामने है उस पर ध्यान देने की ज़रूरत है। मै विद्यार्थियों से कहना चाहता हूं कि हम लोगों का, जो आप से एक पीढी ऊपर है, समय खतम होने लगा है और हम मे से एक के बाद एक उठते जा रहे है। आज के विद्यार्थियो को ही उन का स्थान ग्रहण करना है और मैं यह कहता हूं कि वे बड़े भाग्यशाली होंगे जो अभी बाकी कामों को पूरा कर सकेंगे। मैं इस बात को मानता हू कि हमारी पीढ़ी के लोग बड़े भाग्यशाली थे जिन को इस देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई में भाग लेने का मौक़ा मिला, जिन लोगो ने उन से जितना बन पड़ा अपनी थोड़ी बहुत सेवा कर के त्याग करके स्वतन्त्रता प्राप्त की। मगर वह स्वतन्त्रता खोखली है, व्यर्थ है जिस स्वतन्त्रता से देश के लोगो को पूरा पूरा लाभ नही हो। स्वतन्त्रता को अर्थ भरी करने का काम बहुत बडा है। मै तो मानता हूं कि अभी जो काम है वे स्वतन्त्रता प्राप्ति के काम से अधिक महत्व रखते है। जिस वक़्त हम को विदेशी सरकार से लड़ना था उस वक़्त हमारे सामने और कोई उद्देश्य न था; केवल था विदेशी शक्ति और सत्ता का यहां से उन्मूलन। उस लड़ाई में हम सब लोगों को खीच सकते थे जैसा हम ने किया भी। मगर अब हमारे सामने एक प्रश्न नही है, नाना प्रकार के प्रश्न है, तरह तरह की जटिल समस्यायें है जिन का हल करना कठिन है और उन जटिल समस्याओ के हल करने का काम स्वतन्त्र भारत को मिला है। अब नौजवानो का यह काम है कि उन समस्याओं को हल कर के देश को इस योग्य बना दें कि वह संसार के देशों में अपना ऊंचा स्थान ग्रहण करे। इस लिये मै कहता हूं कि अभी के जो काम हैं वे ज्यादा कठिन हैं क्योंकि उस समय एक ही चीज़ से हमें लड़ना था, आज हम को हज़ारों चीज़ों से लड़ाई करनी है। हमारा देश आज से नहीं बहुत दिनों से निर्धन है जिस की वजह से हमारा सब काम रुक जाता है. ग़रीबी सभी जगहों में देखने में आती है। हम को ग़रीबी से लड़ना है। हमारा देश बहुत ही विस्तृत है। इतने दिनों से बृटिश गवर्नमेन्ट के काम करने पर भी और स्वराज्य मिलने के बाद तीन वर्ष तक हमारे काम करने पर भी देश में पढ़े लिखे लोग १०० में शायद १२–१५

से अधिक नहीं होंगे। इस के अलावा तरह तरह की बीमारियां देश में चारों तरफ घर किये हुए हैं। ये तो एक प्रकार के प्रश्न हैं जिन को हमें हल करना चाहिये। ये काम कितने भी कठिन क्यों न हों उन को हल करना आवश्यक है।

मुझे आप से एक दूसरी बात कहनी है उसे आप अखबारों में पढ़ते होंगे और खुश भी होते होंगे। हमारी ओर से संसार में विश्वशान्ति के लिये प्रयत्न किया गया उस का थोड़ा बहुत असर हो रहा है। मैं आशा करता हूं कि वह सफल होगा। मगर आप से मै यह बताना चाहता हूं कि इस बात का क्या कारण है कि संसार के देश हमारी आज इज्जत करते है, हमारा आदर करते हैं। उस का सब से बड़ा कारण यह है कि महात्मा गांधी एक अवतारी पुरुष थे और उन्हीं की तपस्या का फल है कि इस देश के दरिद्र होने पर भी दूसरे देश इस का आदर करते हैं। अगर हम उन के बताये रास्ते पर चलेंगे और महात्मा जी के बताये काम मे अपने को लगाये रखेंगे तो हम संसार का आदर पाते रहेंगे। ठीक है महात्मा जी बराबर कहा करते थे कि वह अपने को अवतारी पुरुष नही मानते। वह कहते थे कि जैसे सब लोग है वैसे ही वह भी हैं; उनमें और दूसरे लोगों में कोई अन्तर नही है। उन का यह कहना था कि जो कोई चाहे वह हमारे समान हो सकता है। बात भी सच है। उन की जीवनी आप पढे तो आप को पता चलेगा कि एक मामूली आदमी की जितनी शिकायतें होती है, दिक्कतें होती हैं, और उसे जितनी मुसीबतो का सामना करना होता है वे सब चीजें उन के सामने भी आयी--नतिक प्रश्न आये, आर्थिक प्रश्न भी आये और राजनैतिक प्रश्न तो हमेशा आते रहे ही। इन सब प्रश्नों को हल करने के लिये वह हर तरह से तैयार रहे और उन को हल किया और तभी वह इतने बडे और महान् है कि आज संसार उन की पूजा करता है। ऐसा बनने के लिये त्याग और तपस्या चाहिये और चरित्र चाहिये और अगर आप इन चीजों को हासिल करना चाहे तो कर सकते है। मैं आ। से कहना चाहता हूं कि हमारे देश में आज भी अनेकानेक ऐसे लोग है जो गांधी जी के सच्चे अनुयायी है और जो देश की मान मर्यादा कायमी तौर से रख सकते है। यह विद्यालयों का काम है कि इस तरह के चरित्रवान और अच्छे लोगो को पैदा करे और उन को प्रोत्साहन दे कर देश की सेवा में भेजें। मै आशा करता हू कि यह विद्यालय जो इतने दिनों से अच्छा काम कर रहा है और जिस ने इस तरह के लोगों को पैदा भी किया है आगे भी इस काम मे सफल होगा। मगर इस के लिये सहयोग की जरूरत है। एक तरफ विद्यार्थियों के सहयोग की जरूरत है और दूसरी तरफ आचार्य लोगों के सहयोग की। जब दोनो तरफ से सहयोग होगा तभी इस का कोई अच्छा फल मिल सकेगा और मै समझता हू कि आप ने मुझे इस विद्यालय में इस विचार से नही बुलाया कि इस विद्यालय को यूनीवर्सिटी बनाने में मैं आर्थिक सहायता दिला सकूं बल्कि मेरा विचार है कि आप अपनी योग्यता और अपने नैतिक बल से बिना साधन के भी इसे ऊंचा बना सकते है। इस का यह अर्थ नही है कि मुझ से जो सेवा हो सकेगी वह मै नहीं करूंगा, वह तो मै करूंगा ही। पर मै चाहूंगा कि आप अपने ऊपर निर्भर होना सीखें और यह एक बड़ी चीज है जिस के बल से आप सारे देश को ऊंचा उठा सकते है।

आप जानते हैं कि इस समय देश में तरह तरह की मुसीबतें हैं। स्वराज्य तो हमें मिल चुका है। मगर अभी मुसीबतों का हल पूरी तरह से हम नही कर पाये हैं। अन्न का संकट है। हर तरह की चीजों की कमी है। जो कुछ गवर्नमेन्ट की तरफ से किया जाता है उस की शिकायत होती है। हो सकता है कि उन शिकायतों मे कुछ निराधार भी हों और कुछ ठीक भी हों। पर शिकायते होती हैं। जो शिकायतें है उन पर अगर आप ध्यान दे कर देखेगे तो आप को मालूम होगा कि सब की जड़ में एक ही चीज़ है। वह यह है कि इस बात को इस देश के लोगो ने साबित कर दिखाया है कि हम में चरित्र उतना अच्छा नही है जितना पहले था। आप गवर्नमेन्ट की शिकायत करे लेकिन आखिर गवर्नमेन्ट है क्या चीज़ ? आप के ही तो प्रतिनिधि गवर्नमेन्ट में है। अगर हमारे प्रतिनिधि ठीक है तो गवर्नमेन्ट बुरी नहीं हो सकती। अगर लोग अच्छे है तो आप के प्रतिनिधि भी बुरे नही हो सकते। अगर उनके प्रतिनिधि बुरे है तो लोग अच्छे नही हो सकते। अतः अगर हम बुरे हैं तो आप लोग दूसरों पर इल्ज़ाम नही डाल सकते क्योंकि इस की ज़िम्मेवारी हरेक भारतवासी पर है। अगर प्रतिनिधि सचमुच प्रतिनिधित्व करते है तो बुरे लोगों के ही बुरे प्रतिनिधि होगे। अगर आप स्वयं अच्छे है और आप के प्रतिनिधि ठीक काम नहो करें, इधर उधर करे तो उनको सीधे रास्ते पर लाने का काम भी आप का ही है। अतः मैं कहता हूं कि हमारे देश के लोगों मे जो कमज़ोरी है वह अधिकतर हमारे चरित्र की है। मुझे जब कभी मौका मिलता है और जहां कही मै जाता हूं तो लोगों से यही कहता हूं कि भारत को दिमाग की ज़रूरत है, अच्छे अच्छे मस्तिष्कों की ज़रूरत है ; ऐसे मस्तिष्कों की ज़रूरत है जो दुनियां के लोगों के दिमाग़ का मुक़ाबला कर सके। ऐसे मस्तिष्क हमारे देश मे आज ही नही वरन् उस समय भी थे जब हमारे देशवासियों ने दसरे देशों के लोगों का मानसिक क्षेत्र मे सफलता से मुक़ाबला किया था और आज भी है। मै मानता हूं कि हमारे देश से विद्यार्थी लोग विदेशो में जाकर वहां की यूनीवर्सिटियों में अव्वल होते है और वहां उन्हों ने मैडल हासिल किये है। हमारे देश में दिमाग की कमी नहीं है। हमारे देश के लोगों ने खेल कूद में भी नाम किया है। आज तक हिन्दुस्तान की हाकी टीम विदेशों से कभी हारी नही। इस तरह के काम मे हमारी तरक्क़ी हुई है और होनी चाहिये। मगर जब हमारे पुराने समय का उदाहरण सामने आता है तो उस के मुक़ाबले में हम अपने को आज कमज़ोर पाते है। जो ग्रीक यात्री इस देश में आये थे उन के विवरण से पता चलता है कि यहां उस समय लोग घर में किवाड़ नहीं लगाते थे क्योंकि उन दिनों चोरी नहीं होती थी। आज भी हम सुनते है कि पहाड़ पर यह प्रथा है कि तिजारती बनिये जो यहां से जाते है वे अपनी गठरी पर एक पत्थर का टुकड़ा रख कर जहां जाना होता है चले जाते है। उसे कोई छूता भी नहीं और जब कभी वह वापस आते हैं तो उसी जगह पर अपनी गठरी पाते है। आज भी ऐसी बातें हैं। पर आज हमारे यहां चोर बाज़ारी तक चलती है। आज हम क्या देखते हैं कि राशन में ६ छटांक मिलता है और अब साढ़े चार छटांक हो गया है। लेकिन किसी तरह से हमें ५-६ छटांक मिलता है तो हम लेने से हिचकते नही। यही चरित्र की कमज़ोरी है। यह कहना कि

हाकिम हुक्काम की कमज़ोरी से सब होता है ठीक नही। मै तो मानता हूं कि इस में सब की कमज़ोरी है। जो पैदा करते है, जो बेचते है और जो खरीदते है कोई इस कमज़ोरी से बचे नहीं है। इस में खरीदने वाले का भी हिस्सा होता है। इस लिये मै मानता हूं कि आज कल जो मुसीबतें हम पर पड रही है उन का मुख्य कारण हमारे चरित्र की कमज़ोरी है। इस वक़्त दिमाग की तरक्क़ी और शरीर को तगड़ा बनाने के साथ साथ चरित्र बनाने की सब से अधिक ज़रूरत है, जिस में किसी देश को यह हिम्मत न हो कि वह अंगुली दिखला सके कि भारत में यह कमज़ोरी है। आप ने मुझे इस समारोह में बुलाया है और मै आप से यही अपेक्षा करता हूं कि आप मेरी इस बात पर ध्यान देंगे।

बलिदान दिवस

वलिगंडन पैवीलियन में बलिदान दिवस समारोह मे तारीख ३०-१-५१ को साढ़े चार बजे राष्ट्रपति जी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

आज का दिन एक वहुत ही पुनीत दिन है क्योंकि आज के दिन ही पूज्य बापू ने महाप्रयाण किया था। आप सब को मालूम ही है कि किस तरह वह घटना घटी थी। उसके बाद से हर साल हम लोग उस दिन को मनाया करते है और ईश्वर का नाम लेते है, ईश्वर की प्रार्थना करते है, गांधीजी का नाम लेते है, उनका गुणानुवाद करते है। इस मे हमारे यहा के बच्चों को इस तरह से शरीक होना चाहिये कि वे कुछ सीख सके, कुछ सबक ले सके। जिस समय महात्मा गाधी ज़िन्दा थे और देश के विभिन्न भागों में आया जाया करते थे और आप के इस शहर में भी आया जाया करते थे उस समय के बच्चों को यह सौभाग्य था कि उनके दर्शन करते थे, उनके कामों को देखते थे, सुनते थे और उससे भी अधिक, किस तरह से वह जीवन बिताते थे वह भी देख सकते थे और अपनी योग्यता के अनुसार उसे सीख सकते थे, कर सकते थे। मगर अब जैसे जैसे दिन बीतते जायेंगे गांधी जी के उपदेशों को केवल पुस्तकों मे, उनके लिखे लेखों मे ही पढ सकेंगे और अभी तो आप को यह भी सौभाग्य प्राप्त है कि आप उन लोगों से जो गान्धी जी के निकट सम्पर्क रहे थे गांन्धी जी के सम्बन्ध में सुन सकते है, जान सकते है मगर जब समय और भी बीतता जायेगा तो बच्चों को इस बात के जानने के लिये कि गान्धी जी के क्या उपदेश थे किस तरह से उन्होने देश को जगाया, देश को स्वतन्त्र किया केवल पुस्तकों का ही सहारा रह जायेगा।

अभी देश के सामने कितने प्रश्न है। गान्धी जी की तपस्या के फलस्वरूप हमें स्वराज तो मिल गया है पर आज़ादी का पूरा फल हम हासिल नहीं कर पाये है। वह तभी हो सकेगा जब देश के सभी लोग यह मान लें कि उसे हमें हासिल करना ही है और उस के लिये और त्याग और तपस्या करने के लिये तैयार हो जायें। महात्मा जी ने तो हमको रास्ता साफ करके बता ही दिया है और हम उसे गान्धी जी के रास्ते पर ही चलकर जल्द से जल्द हासिल कर सकेंगे। गान्धी

जी का निधन ऐसे समय में हुआ जब उनके मार्ग दर्शन की सब से अधिक आवश्यकता थी। पर वह हमारे लिये और सारे संसार के लिये एक नयी ज़िन्दगी, एक नयी रोशनी, एक नया रास्ता दिखला गये हैं। और उस पर चलना किसी भी देश के लिये लाभप्रद है। इसलिये मुझे बड़ी खुशी है कि आप ने इस बात का प्रयत्न किया पर मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि आज का दिन खेल तमाशे का दिन नहीं है। खेल तमाशे तो बराबर ही हुआ करते हैं। आज के दिन को तो इस काम के लिये रख छोड़ना चाहिये कि हम अपनी ग़लतियों पर विचार करें और इन बातों पर विचार करें कि आगे हमको क्या करना है, कैसे अपने को बनाना है और गान्धी जी के बताये मार्ग पर चलने के लिये संकल्प करें। जो बच्चे यहां आये हैं और जो उनके शिक्षकगण यहां मौजूद हैं उनसे मैं यही कहता हूं कि आज के दिन को इसी काम में लगायें और ईश्वर से प्रार्थना करें कि ईश्वर उन को शक्ति दे कि वे गान्धी जी के बताये रास्ते पर चल सकें और अपना और देश का मुख उज्ज्वल कर सकें। गान्धी जी का रास्ता सब से अच्छा, सब से सुन्दर, सब से सरल और सब से जल्द तरक्की वाला है। आप जानते हैं कि कितना काम अभी बाक़ी है। उन कामों को हम गान्धी जी के बताये रास्ते पर चल कर बड़ी सुगमता से कर सकते हैं। इसलिये मैं आपसे कहता हूं कि आप अपने लिये और राष्ट्र के लिये उनके बताये रास्ते को कायम रखें और उस रास्ते पर चल कर आप अपने को और देश को बड़ा बनायें।

मैं आप सब भाई और बहनों का शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने मुझे अपनी बात कहने का यह मौका दिया।

राजघाट पर बलिदान दिवस

तारीख ३०-१-५१ को राजघाट पर सवा पाँच बजे शाम को राष्ट्रपति जी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

आज महात्मा गान्धी जी की पुण्य तिथि है। हम इस लिये इकट्ठे हुए हैं कि ईश्वर की प्रार्थना करें और महात्मा जी का गुणानुवाद करें और जो कुछ उन्होंने हमको सिखाया बताया उसको याद करें। महात्मा जी ने देश को बहुत कुछ बताया, देश को बड़ी शक्ति दी। पर महात्मा जी ने स्वयं वह शक्ति कहां से पायी जिसको उन्होंने सारे देश में और सारे संसार में इस तरह से वितरित किया? वह मानते थे और बार बार कहते थे और लिखते थे कि उनकी सारी शक्ति ईश्वर की दी हुई है; राम नाम की शक्ति है और उसी राम नाम के बल से उन्होंने जो कुछ किया वह किया और अन्तिम शब्द भी जो उनके मुहं से निकला वह था— हे राम। तुलसी दास ने लिखा है—जन्म जन्म मुनि यत्न कराहीं अन्त राम मुख आवत नाहीं। बहुत जन्मों की तपस्या के बाद भी अन्त में जब मनुष्य का शरीर जाता है तो उस वक्त वह ईश्वर को भूल जाता है और ईश्वर उसकी याद में नहीं आता। वह पुण्य और तपस्या का ही फल है कि किसी को अन्तिम समय में ईश्वर का स्मरण आ जाये और उसका नाम वह ले ले। महात्मा गान्धी जी ने अपनी सारी ज़िन्दगी में जो तपस्या की थी जो काम किया था उसे उन्होंने संसार के लिये दे दिया और साथ ही साथ अन्त में उनके सामने ईश्वर आ गये और ईश्वर का नाम लेते हुए

वह इस शरीर को छोड़ कर जो इसी स्थान पर अग्नि मे जल कर भस्म हो गया फिर ईश्वर में जाकर मिल गये। उनके जीवन से जो सब से बड़ा सबक़ हमें मिलता है वह यही मिलता है। आज इस देश में कुछ ऐसी हवा सी चल पड़ी है कि लोग ईश्वर का नाम लेने मे भी थोड़ा डरते है, अगर डरते नहीं तो शर्माते हैं और अगर कभी ईश्वर का नाम लिया भी तो कंठ से ऊपर ही रहता है, जिस भावना से महात्मा जी भगवान का नाम लिया जाना चाहते थे उस भावना से लोग भगवान का नाम नही लेते। यह इस बात से स्पष्ट है कि यदि लोग भगवान का नाम उस भावना से लेते तो वह भगवान को कभी नही भूल सकते। अगर हम सोच कर देखें तो जितनी विपत्तियां आज हमारे ऊपर हैं, जो मुसीबत केवल हमारे ही देश में नहीं, बल्कि सारे संसार में है सब की मूल में यही बात है कि हम अपने को नही पहचानते, दूसरे को नही पहचानते और यह नही जानते कि ईश्वर एक है और वही सब में है। अगर लोग इस सत्य को जानते कि ईश्वर सभी स्थानों मे और सभी जगहों मे एक ही है वही ईश्वर जो एक के हृदय मे है दूसरे में भी है तो यह लड़ाई झगड़ा क्यों? किस बात के लिये? जब हम इस चीज़ को भूल जाते है तभी एक दूसरे के साथ झगड़ा करते है। मगर यह भी समझना भूल है। कोई किसी को मारता नही। यदि चाहे देखने में ऐसा लगे कि कोई दूसरे के शरीर को नष्ट कर रहा है वास्तव मे उसका शरीर अपने सस्कारों और कर्मो के कारण नष्ट होता है। महात्मा जी चाहते थे कि सभी लोग ईश्वर को पहचाने और याद रखे तब उनका सारा जीवन सुसस्कृत हो जायेगा और स ी लोग शुद्ध और पवित्र हो जायेंगे और फिर किसी बात की चिन्ता करने की ज़रूरत भी नही रह जायेगी। यों तो जब कभी हम लोग महात्मा जी के सम्बन्ध मे बोलते है, सोचते हैं कुछ कहते है तो स्वराज की बात कहते हैं। किस तरह से उन्होंने देश को जगाया बढ़ाया यह बात कहते हैं। यह सब उन्हों ने किया इसमें तो कोई शक नही और सिर्फ़ हमारे लिये ही नहीं सारे ससार के लिये उन्हों ने यह किया। पर हम जब यह सोचते है कि वह इसी जगह पर जन्मे थे और यहां ही के लोगों को उन्होंने शिक्षा दी थी तो लगता है कि हम भी महात्मा जी के रास्ते पर चल सकते हैं और वहा तक अगर पहुच नही सकते जहां तक वह पहुंच गये थे तो कुछ दूर तक जा ही सकते है और अपने को और दूसरे को पुनीत बना सकते है। आज का दिन ऐसा है कि हमारे सामने जो बात उन्हों ने रखी थी उस पर विचार करे, मनन करें उसे सोचे देखें और विशेषकर के इस पवित्र स्थान पर आकर और किसी ख़याल को अपने दिमाग में नही आने दें और किसी चीज़ को दिल के अन्दर नही घुसने दें और इतना अगर साल में एक दिन भी कर ले तो मै समझता हूं कि हमारा बेड़ा पार हो जायेगा।

महात्मा जी ने सामूहिक प्रार्थना की भी प्रथा निकाली; शायद पुरानी प्रथा होने पर भी लोग उसे भूल गये थे। इस से एक दूसरे को सहारा मिलता है, एक दूसरे को बल मिलता है। अगर हम लोग किसी न किसी तरह से इस चीज़ को जारी रखें तो हमारा विश्वास है कि इससे भी हमारा और देश का बड़ा कल्याण होगा। यह अच्छी बात है कि प्रति शुक्रवार को यहां पर भाई और बहनें जमा होकर प्रार्थना करते हैं उन्ही श्लोकों को दुहराते हैं उन्ही भजनों को गाकर चन्द मिनटों के लिये ईश्वर का नाम लिया करते हैं। मै समझता हूं कि उससे भी बल मिलता होगा अगर इस चीज़ को और कुछ नहीं तो अपने घर वालों और बाल बच्चों के साथ और जिनसे हो सके

बाहरी लोगों के साथ भी इस प्रार्थना को जारी करें तो में समझता हूं कि इससे भी बड़ा लाभ होगा ।

मैं अपने को इस योग्य नहीं मानता हू कि इस स्थान पर बैठ कर उपदेश करूं । पर जो चीज़ें महत्व की मालूम होती है जिनसे आज देश के कुछ लोग मुहं मोड़ते हैं उन चीजों की ओर आप का ध्यान मैंने आकर्षित कर दिया । और मै आशा करता हूं कि महात्माजी का आशीर्वाद हमको मिलेगा और हम अपने को इस योग्य प्रमाणित कर सकेंगे कि कोई कहीं पर भी हो उसको अपने को बनाने का सुअवसर मिले । ईश्वर से प्रार्थना है कि वह हम सब को शक्ति दे ।

उदयपुर में नागरिक अभिनन्दन

तारीख २ फरवरी १९५१ को उदयपुर म्युनिसिपैल कारपोरेशन द्वारा दिये गयें अभिनन्दन पत्र के जवाब में राष्ट्रपतिजी ने कहा—

महामहिम राजप्रमुख, कारपोरेशन के अध्यक्ष महोदय, दूसरे सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

आप अगर सब अपने अपने स्थान पर चुपचाप खड़े रह जायें तो मैं समझता हूं कि मुझे जो दो शब्द कहने हैं वे सबों तक पहुंच सकेंगे ।

मेरे लिये यह पहला अवसर है कि आपके इस सुरम्य प्रदेश में पहुंचा हूं । बहुत दिनों से इच्छा रहते हुए भी आज के पहले मै इस ऐतिहासिक स्थान को नहीं देख सका था और न इन एतिहासिक कृतियों के दर्शन कर पाया था । इसलिये मेरे लिये भी यह एक बहुत ही महत्व पूर्ण दिन है कि मै इस ऐतिहासिक स्थान पर आ सका और जब से मै यहां पहुंचा हूं सब लोगों ने इतना प्रेम दर्शाया है और इतना आदर मान किया है कि उसके लिये मै सब को हृदय से धन्यवाद देना चाहता हूं ।

सच है कि भारत के इतिहास में एक नया युग आरम्भ हुआ है, एक ऐसा युग जो हम आशा करते और ईश्वर से प्रार्थना करते है कि हमारे देश के उज्ज्वल इतिहास में जितने अच्छे दिन आये हैं उनसे भी अधिक उज्ज्वल साबित हो और उसके लिये अगर हम विचार कर देखें तो सामान भी तैयार है । आज दुनिया कुछ ऐसी हो गयी है कि जब तक देश ठीक न हो, जब तक एक शासन के अन्दर मनुष्यों की संख्या बहुत बड़ी न हो ऐसे देश के लिये अपने को स्वतन्त्र रखना और अपनी उन्नति करना अधिक से अधिक कठिन हो जाता है, आज तो लोग यह भी सोचने और समझने लग गये हैं कि बड़े बड़े देश भी अकेले अपने ही पैरों पर अगर खड़ा होना चाहें तो ऐसा नहीं कर सकते । इसलिये जिस दिन अंग्रेजों ने यह निश्चय किया कि वे भारत को स्वतन्त्र छोड़ कर यहां से चले जायेंगे और यहां से अपनी सेना भी हटा ले जायेंगे उस दिन हमारे सामने स्थिति यह थी कि देश दो टुकड़ों में बंट गया था, उसके दो टुकड़े एक पूर्व और दूसरा

पश्चिम के कोने में निकल गये थे और अन्दर बहुत सी रियासतें थीं, बहुत से रजवाड़े थे। स्थिति यह थी कि अगर सब अलग अलग स्वतन्त्र होकर रहना चाहते तो यह देश टुकड़े टुकड़े हुये बिना नहीं बचता और इस देश की इतनी शक्ति नहीं होती कि यह अपने को स्वतन्त्र और सुरक्षित रख सके। उस वक्त देशी रजवाड़ों के जितने शासक थे जितने राजा महाराजा थे जिनके हाथों में उस वक्त सारा अधिकार था उन्होंने भी देश की इस परिस्थिति को समझा, संसार की परिस्थिति को समझा और जो पहले बृटिश भारत कहलाता था और जो देशी रियासतें थीं दोनों इकट्ठे होगये। इस बात के लिये मै उन सब को धन्यवाद देता हूं कि जिनके हाथों में अधिकार था उन्होंने खुशी खुशी अपने अधिकारों को ठीक उसी तरह से देश की जनता के हाथों में सौंपना उचित समझा और निश्चय कर लिया कि जिस तरह से अंग्रेज़ों ने यहां की जनता के हाथों में अधिकार सौंप कर चला जाना तय किया उसी तरह वे भी जनता के हाथ में अधिकार सौंप दें। उसी का यह फल है कि गरचे आज भारत के दो बड़े बड़े अंग कट गये हैं तो भी जितना भारत बच गया है वह सब मिला कर इतना बड़ा है जितना कि आज के पहले कभी भी नही हुआ और इसकी जन संख्या इसकी आबादी और इसके रक़बे को अगर हम देखें तो हमारे इतिहास में पहले ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता जब इतने लोग, और इतना बड़ा रकबा एक छत्र शासन के अन्दर हुआ हो। जब हमारे देश के अन्दर चक्रवर्ती राजा भी हुये तो उनके मातहत दूसरे छोटे छोटे रजवाड़े रहे। मुग़ल बादशाहों के ज़माने में और अंग्रेजों की सलतनत में भी भारत बहुत हिस्सों में बटा हुआ था। आज ही यह पहला सुअवसर आया है जब अपनी खुशी से देश के हित को अपने सामने रख कर सबों ने यह निश्चय कर लिया है कि हम सब एक छत्र शासन के अधीन काम करेंगे। ऐसे मौक़े पर यह एक सवाल था कि इतने बड़े राष्ट्र का जिस में सब रजवाड़े शरीक हुये और जिस में वह हिस्सा भी जो बृटिश के मातहत था शरीक हुआ कोई एक प्रतीक होना चाहिये, कोई निशान होना चाहिये। उसमें अगर हम किसी एक को बनाना चाहते तो उसमें हज़ारों दिक्कतें पेश थीं। इसलिये यह निश्चय हुआ कि हम एक गणतन्त्र यहां स्थापित करें। गणतन्त्र में जनता द्वारा निर्वाचित व्यक्ति प्रधान होता है। उस प्रणाली को हमने अपने संविधान में मंज़ूर कर लिया। इसलिये आप सबों की ओर से चुना जाकर मैं गणतन्त्र के प्रतीक स्वरूप इस स्थान पर बैठा दिया गया हूं। उसी हैसियत से में यहां हाज़िर हूं। आज ही नहीं मैंने पहले भी कहा है कि देश के प्रत्येक स्त्री और पुरुष पर देश का यह अधिकार है कि वह जिससे जो सेवा लेना चाहे वह ले और सब का यह धर्म है और फ़र्ज होना चाहिये कि जो सेवा उससे मांगी जाये वह सेवा वह दे। १९३७ म जब पहले पहल सूबों में कांग्रेस ने मन्त्रिमंडल क़ायम किये तब मैंने एक जगह कहा था कि आज मन्त्रिमंडल कायम हो रहे है और कांग्रेस जिसको चाहती है वह सूबे का प्रधान मन्त्री हो जाता है। पर यदि जनता की ओर से कल कांग्रेस चाहे तो उस प्रधान मन्त्री को किसी गांव में चौकीदार की जगह पर भेज सकती है या किसी शहर में झाड़ू ले कर मेहतर का काम करने के लिये आज्ञा दे सकती है। मेरा विश्वास है कि आज भी यह बात ठीक है कि यदि आज्ञा हो तो ऊंचे से ऊंचे समझे जाने वाले पद पर भी जो आदमी बैठा हो उस आदमी को भी झाड़ू लेकर शहर में झाड़ू लगाने के लिये तैयार रहना चाहिये। इसी में उसकी शोभा है, इसी में देश की शोभा है और इसी में देश का कल्याण है। हम इसी नीति को मानते हैं और इसी नीति से हम सब अपना काम चलाना चाहते हैं। इसलिये अब समय आ गया है कि भारतवर्ष के सभी लोग अपना अपना कर्तव्य समझें।

अब तक ब्रिटिश गवर्नमेन्ट से लड़ते लड़ते हम लोग यह कहते आये है कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम अधिकारों पर ही ज़ोर देते आये हैं, अधिकार मांगते रहे हैं, अधिकार लेना चाहते हैं। अब अधिकार तो अपने हाथों में आ गये हैं। अधिकार लेना देना अब रहा नहीं। अब हमको यह सोचना है कि हमारा कर्तव्य क्या है ? क्योंकि अधिकार के साथ साथ कर्तव्य आता है। एक तरह से पूछिये तो अधिकार से भी अधिक महत्व कर्तव्य का है। आज हम में से प्रत्येक को यह सोचना चाहिये कि देश के प्रति और समाज के प्रति हमारा कर्तव्य क्या है और जो हज़ारों मुसीबतें हमारे ऊपर आयी हैं, जो कष्ट हम आज भोग रहे हैं उनका निपटारा आसानी से हो सकता है, अगर हम में से प्रत्येक अधिकार की बात छोड़ कर कर्तव्य पर ध्यान दे और कर्तव्य का पालन करना अपना सब से बड़ा धर्म समझे। कर्तव्य की होड़ में लड़ाई नहीं होती। लड़ाई होती है अधिकार के लिये। दान देने में लड़ाई नहीं होती बल्कि किसी से कुछ छीन लेने में लड़ाई होती है। जो अपने को उत्सर्ग करने के लिये तैयार हों, सेवा में अपने को लगा देने को तैयार हों, उनका न किसी से झगड़ा हो सकता है और न किसी बातकी वे आना-कानी कर सकते है। हां जब वे कुछ लेना चाहें, किसी चीज़ पर अधिकार करना चाहें तभी झगड़ा शुरू होता है। आज हमारी मुसीबतों का सब से बड़ा कारण यही है कि हम अपने कर्तव्य पर ज़ोर न दे कर अब भी अधिकार की ही बात सोचते हैं जब कि सब अधिकार हमारे हाथों में आ गये हैं। इन अधिकारों को किस तरह से काम में लाया जाये, उनको किस तरह बरता जाये और कौन बरते यह सब छोटी मोटी बात है। असली चीज़ तो यह है कि आज भारत वासियों के हाथ में पूर्ण अधिकार हैं और वे अगर चाहें तो इस देश को हरा भरा, फूला फला बना सकते है; और अगर वे चाहें तो उसे मरुभूमि भी बना सकते है। अगर वे इसे हरा भरा फूला फला बनायेंगे तो इतिहास में सभी लोग उनकी तारीफ़ करेंगे और उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। अगर हमने भूल की और अधिकारों के झगड़े में पड़कर इसे मरुभूमि नहीं तो वैसी ही कुछ चीज़ बना दिया तो उसका जो कुछ बुरा नतीजा होगा उसके लिये इतिहास हमारे नामों पर कालिख लगायेगा।

भारत के लिये यह समय सन्धिकाल है। बहुत सी पुरानी चीज़, पुरानी बातें ख़तम हो रही हैं और उनकी जगह नया दौर शुरू हो रहा है, नया युग शुरू हो रहा है। ऐसे ही सन्धिकाल में बड़े बड़े काम होते हैं। सुबह शाम को हम जो प्रार्थना करते हैं उस प्रार्थना को भी हम संध्या कहते हैं। क्यों कि वह दिन और रात की संधि का समय होता है और उस समय इसलिये प्रार्थना की जाती है कि वह सब से शुद्ध, सबसे सुन्दर और हर प्रकार सब से अच्छा समय होता है। उसी तरह पुराना दौर ख़तम हो गया है और नया दौर शुरू हो रहा है। नयी स्वतन्त्रता हाथ में आयी है। पवित्र शुद्ध संध्या का समय है। इसी भावना से हम को इस सेवा के काम में लगना चाहिये और तभी हम अपना कल्याण, देश का कल्याण और संसार का कल्याण कर सकेंगे।

मैंने आज यहां आकर के सुना कि आपके कुछ इलाके में अन्न का कष्ट है हमने यह भी सुना है कि इधर दो तीन वर्षों से ठीक समय पर वर्षा नहीं हुई और इस साल और भी कुछ बाढ़ वग़ैरा के कारण कुछ फ़सल ख़राब हुई है और इन सब का नतीजा यह हुआ है कि अन्न का कष्ट बढ़ गया है। आप यह न समझें कि यह अन्न का कष्ट आप के ही यहां है। मैं जिस सूबे का

रहने वाला हूं उस सूबे में भी अन्न का कष्ट है। वहां पहले बाढ़ आयी और उससे उस वक्त जो फ़सल थी वह बह गयी। उसके बाद सूखा पड़ा और जो कुछ फसल खेतों में लगी हुई थी वह सूख कर मर गयी और उस सूखा का नतीजा यह भी हुआ कि गेहूं की फ़सल भी सब ठीक नहीं है। यह तो एक सूबे की स्थिति हुई; उसी तरह मद्रास में भी पानी नहीं बरसा और वहां भी अन्न का कष्ट है। आप ने सुना ही होगा कि आसाम में भूकम्प की वजह से बहुत नुक़सान हुआ है। वहां के लोगों को काफ़ी कष्ट हैं। हमारी गवर्नमेन्ट इस वक़्त इस फ़िक्र में है कि किस तरह से अन्न का कष्ट दूर किया जाये। जब अपने देश में काफ़ी अन्न नहीं मिलता तो विदेशों से अन्न मंगाने का प्रयत्न किया जा रहा है और आशा की जा रही है कि वहां से अन्न पहुंचेगा। इसमें कठिनाइयां है। एक तो अन्न मिलना ही कठिन है। दूसरे अन्न मिले भी तो इतने बड़े देश के लिये कितना अन्न चाहिये उसका आप अन्दाज़ा कर सकते है। अन्न दूसरी जगह से जहाज़ों में लादकर लाना पड़ता है। जहाज़ों के मिलने में भी कठिनाइयां है और जो दाम लगेगा वह तो है ही मगर इन कठिनाइयों के होते हुए भी प्रयत्न हो रहा है और अन्न पहुंचने भी लगा है। और आहिस्ता आहिस्ता अधिक पहुंचेगा। इसलिये हम सब यह आशा रखते है कि जहां तक हो सकेगा सभी जगहों पर जहां जहां कमी है वहां अन्न हम पहुंचायेंगे। मगर यह तो एक बाहर से सहायता मिलने की बात है। जब कोई संकट आता है तो बाहर से मनुष्य को मदद मिले तो ठीक है वह मदद मिलनी भी चाहिये, जो मदद दे सकते है उन को देनी भी चाहिये। मगर संकट का निवारण तो जिस पर संकट आता है वही कर सकता है और उसके लिये उसके हृदय के अन्दर धैर्य होना चाहिये, बल होना चाहिये, ईश्वर पर भरोसा होना चाहिये और जो कुछ अपने पुरुषार्थ से हो सकता है उसको करना चाहिये। मै मानता हूं कि हमारे देश के लोगों में और विशेषकर ग़रीब लोगों में पुरुषार्थ की कमी नही है। हज़ारों मुसीबतों का मुक़ाबला ये लोग पुरुषार्थ से करते है। इसलिये यह आशा होती है, यह विश्वास होता है कि किसी न किसी तरह जो थोड़ा बहुत अन्न देश के अन्दर है और विदेशों से आता है उसको लेकर के वे यह संकट काट लेगे। हम तो यह चाहते है कि जितने लोग आज यहां पर मौजूद है और जो कही दूसरी जगह भी है और जिन तक आप हमारी बात पहुंचा सकते है उन सब को यह समझना चाहिये कि इस विपत्ति काल में सब को एक साथ मिल करके, एक दिल हो करके, एक मत होकर के एक प्राण हो करके काम करना ज़रूरी है तभी इतनी फैली हुई विपत्ति का मुक़ाबला हम कर पायेंगे और किसी एक सूबे मे किसी एक ज़िले मे यह विपत्ति आती हो तो दूसरे सूबे से दूसरे ज़िले से मदद लेकर हम उसे दूर कर सकते है। मगर इस बार ऐसी ईश्वर की कृपा हुई है कि यह फैली हुई विपत्ति चारों तरफ़ एक साथ ही आयी और सलिये हमारी विपत्ति बढ़ गयी। पर साथ ही जो सोचने वाले है, समझने वाले है जो काम करने वाले हैं उनके लिये एक सुअवसर भी आया है कि वे अपनी त्यागवृत्ति को, अपने कर्तव्य करने की शक्ति को, तथा संगठन की शक्ति को दिखला सकें कि किस तरह जनता को संगठित करके किस तरह विश्वास की भावना लेकर के एक दूसरे की सेवा करके, वे लोगों को मुसीबत से बचा सकते है। तो मै जहां जाता हूं यही कहता हूं कि गवर्नमेन्ट का जो कर्तव्य है उसे तो वह कर रही है और आगे भी करेगी मगर जनता को अपने ऊपर भी भरोसा करना चाहिये। एक कहावत है कि ईश्वर उसी की मदद करता है जो अपने पुरुषार्थ से अपनी मदद करता है। इसलिये ईश्वर की मदद भी अपने पुरुषार्थ पर ही निर्भर है। हम चाहते हैं कि आप इस राज के जितने रहने वाले है

सब मिलकर के जो तकलीफ़ और मुसीबत है उसको आपस में बांटे। ऐसा न हो कि एक जगह पर अन्न पड़ा रहे और दूसरी जगह के लोग खाने बग़ैर मरते रहें। जो कुछ हो उसको थोड़ा बहुत करके आपस में बांट करके खाना चाहिये। राशनिंग का अर्थ यही है। जो गवर्नमेन्ट का कन्ट्रोल नियन्त्रण चल रहा है वह इसलिये है कि सामान कम है और ज़रूरत ज़्यादा है और जितना ह उसे सब लोग बांट कर खायें और इसलिये राशन कुछ घटाया भी गया है। और कुछ बढ़ाया भी गया है। मगर हम मानते है कि इससे लोगों को तकलीफ़ तो ज़रूर बढ़ी होगी मगर साथ ही हिम्मत के साथ लोग इस समय को काट ले जायेंगे और कुछ महीनों के बाद नयी फ़सल आयेगी तो फिर अच्छे दिन लौट आयेंगे।

यह तो एक प्रश्न रहा। इस तरह के और भी बहुत प्रश्न है। आपके इस राज्य को ईश्वर ने बहुत ही धनी बनाया है। यहां भूमि के गर्भ में बहुत सी सम्पत्ति पड़ी है। यहा से कुछ दूर जाकर पानी की कमी लोग महसूस करते है। मगर आज विज्ञान की इतनी प्रगति हुई है कि उसने एक एक कमी को दूर करने के लिये हजारों तरीक़े निकाले है। मै तो आशा रखता हूं कि अगर हमारी गवर्नमेंट ने ठीक तरह से काम किया तो जितनी आज ग़रीबी है उसको हम बहुत हद तक दूर कर सकते हैं। जो पृथ्वी के पेट में धन समाया हुआ है उसको निकाल कर जनता में हम वितरण कर सकते है। जो धन ईश्वर ने आसमान पर और हवा में बहुत सामान पैदा करके हम को दिया है उसकी भी मात्रा बढा कर हम लोगों को अधिक सन्तुष्ट कर सकेंगे। सब से बडा काम आज देश की गवर्नमेंट के सामने यही है कि किस तरह से देश की ग़रीबी दूर की जाये, और किस तरह से देश में जिन जिन कारणों से मुसीबत और तकलीफ़ है उनको दूर किया जाये और जो गवर्नमेंट और जनता के लोग इन चीजों पर अधिक ध्यान देगे वही लोग अधिक सुखी होंगे और अधिक कल्याण कर सकेगे। इन चीजों को छोड़ कर अगर फ़िज़ूल बातों में ही उन्होंने अपना समय और बुद्धि लगायी तो उसका नतीजा उतना अच्छा नही होगा। इसलिये हमको यह समझ लेना चाहिये कि कौन सी चीज़ सब से अधिक महत्व रखती है और हमको पहले क्या करना चाहिये और जो दूसरी चीज़ें हैं अगर देखने में अभी हमको प्रिय भी मालूम हों तो भी उनको हटाकर जो अधिक कठिन और अधिक आवश्यक हो उसे करना चाहिये। मैं आशा करता हूं कि आप के इस इलाके में इस तरह से काम होगा।

मैं यह भी जानता हूं कि अभी यहां जनता द्वारा चुना मंत्रिमंडल नही है। मै उम्मीद करता हूं कि उसका भी कुछ प्रबन्ध होगा और जनता के प्रतिनिधि मंत्रिमंडल बना कर आपकी सच्ची सेवा कर सकेंगे क्योंकि हम विश्वास रखते है कि जो जनता द्वारा निर्वाचित होंगे वे जनता के हित को ही अपने सामने रखेंगे और इसलिये हमने गणतन्त्र का यहां पर आयोजन किया और हमारे विधान ने गणतन्त्र को मान कर जनता द्वारा निर्वाचित लोगों के हाथों में अधिकार देने का निश्चय किया। वह चीज़ तो होगी ही। मैं आपसे यही कहूगा कि निर्वाचन के समय आप सब भाई अच्छे से अच्छे, सच्चे से सच्चे, समझदार से समझदार कार्यकुशल और बुद्धिमान् लोगों को चुन कर भेज और ऐसे ही लोगों के हाथों में अधिकार आवे जो आपकी सच्ची सेवा कर सकते हैं। कोई अब यह नही कह सकता है कि अगर कोई बात बिगड़ती है तो उसका दोष किसी दूसरे के सर पर जाता है क्यों कि अब जनता के चुने हुए लोगों के हाथों में ही अधिकार है। अगर

जनता किसी ग़लत आदमी को चुनती है तो ऐसे लोग अगर ग़लत काम करते हैं तो उसका दोष जनता का ही होगा, उसका दोष जनता किसी दूसरे पर नहीं रख सकती है। इसलिये यह जो मौक़ा आ रहा है उसमें भारतवर्ष के सभी स्त्री और पुरुषों को जिनकी अवस्था २१ साल की हो चुकी है मिलकर अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार है और उनके ही चुने प्रतिनिधियों के हाथों में सारा शासन का भार आयेगा। इसमें दोनों का इम्तिहान है। एक तरफ़ जनता का इम्तिहान है कि कहां तक जनता ठीक आदमी को चुन सकती है और जो चुने जायेंगे उनका भी इम्तिहान है कि कहां तक वे जनता की सेवा कर सकते हैं। मैं आशा करता हूं कि सब का फल अच्छा होगा, कल्याणप्रद होगा।

मै तो यहां एक प्रकार से तीर्थ यात्रा में आया हूं। क्यों कि आपका इतिहास कुछ ऐसा रहा है कि प्रत्येक भारत प्रेमी के लिये प्रत्येक आजादी के प्रेमी के लिये यह तीर्थ स्थान रहेगा और मै उसी भावना से यहा आया हूं। उसके साथ ही आपने इतना प्रेम और आदर दिखलाया है उसके लिये आप सब को मैं हृदय से धन्यवाद देता हूं।

अखिल भारतीय कृषि गवेषणा परिषद्

*अखिल भारतीय कृषि गवेषणा परिषद् के प्रशासी मडल के समक्ष राष्ट्रपतिजी ने अपने भाषण में कहा—

आज प्रातःकाल के उत्सव में भाग लेन में मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई है। कृषि से अनेक प्रकार मेरा सम्बन्ध रहा है। चूकि मै स्वयं किसी हद तक कृषक रहा हूं इसलिये कालक्रम में मेरी उसमें दिलचस्पी बढ़ती गयी है। मुझे लगता है कि इस समय अन्य किसी चीज से कहीं अधिक हमारे देश को कृषि के बढाने की आवश्यकता है। हमारा देश कृषि प्रधान देश है। अतः यह कितने शर्म की बात है कि अपने भोजन के लिये हमें दूसरे देशों पर निर्भर करना पड़ता है। यह बात केवल हमारे देश के कृषिकों को ही चुनौती न होनी चाहिये वरन् कृषिक गवेषणा में लगे हुए वैज्ञानिकों को भी चुनौती होनी चाहिये कि हम अपनी अन्न की आवश्यकताओं के लिये अपने देश में ही आवश्यक अन्न पैदा कर ले। अन्न के बारे में ही हमारे यहां कमी नही है फलों और फल सम्बन्धी आवश्यकताओं, तथा दूध तथा दूध से बनने वाली चीज़ों के बारे में भी हमें भारी कमी को पूरा करना है। अतः यह आवश्यक है कि कृषि गवेषणा प्रतिष्ठान ऐसी गवेषणा के काम में लग जाये जिससे वास्तव में और अविलम्ब कृषि को लाभ पहुचेगा। जहां तक इस बारे में मै किसी बात को सोच सकता हूं वहां तक मेरा विचार है कि इस प्रतिष्ठान में और गवेषणा संस्था के अधीन कार्य करने वाली अन्य संस्थाओं में ऐसी सैद्धान्तिक गवेषणा करने की ज़रूरत नहीं है जैसी कि भौतिकी अथवा अन्य विज्ञानों के गवेषणालयों में की जाती है। यहां तो हमारी आवश्यकता इस प्रकार की गवेषणा की है जिसका फल अविलम्ब जनता को प्राप्त कराया जा सकता है और जो प्रति दिन पैदा होने वाली समस्याओं के हल में काम में लाया जा सकता है। इसी दृष्टि से इस प्रतिष्ठान से सरकार की और जनता की खाद्य समस्या को सुलझाने में सहायता करने की अपेक्षा करता हूं। ठीक है कि सैद्धान्तिक गवेषणा का अपना निजी महत्व है।

---

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

और जो लोग इस प्रतिष्ठान में गवेषणा के कार्य में लगे हुए हैं वे अवश्य ही इस प्रकार की सद्धान्तिक गवेषणा के नवीनतम फलों से लाभ उठायेंगे किन्तु जहां तक कृषि की दैनिक व्यवहारिक समस्याओं का सवाल है हमारा यह अधिकार है कि हम इस संस्था से और इस प्रकार की ही अन्य संस्थाओं से जो इसी प्रकार के कार्य में लगी हुई है अपेक्षा करें कि वे हमारी वैसी सहायता करें जैसी कि हम को उन से मिलने की आवश्यकता है।

आज हमारे सामने कई तरह की समस्याएं है। किन्तु इन समस्याओं के हल करने में कोई भी ऐसा व्यक्ति जो भारत में कृषि में लगा हुआ है इस बात से आंख नही मोड़ सकता कि हमारा देश ऐसे कृषकों का देश है जिनकी अपनी अपनी जोत बहुत छोटी है और जहां कृषकों की संख्या करोड़ों की तादाद में ही नही है वरन् उनकी जोत का क्षेत्र इतना छोटा है कि गवेषणा के वे फल जो बड़े पैमाने पर की जाने वाली खेती के लिये काम में आ सकते है यहां के साधारण कृषकों के लिये कुछ अधिक लाभदायक नही सिद्ध हो सकते। प्रथमतः तो हमारे साधारण कृषकों के साधन अत्यन्त सीमित है और वे गवेषणा के उन नतीजों से कोई फायदा नहीं उठा सकते जिन को काम में लाने के लिये पर्याप्त व्यय की आवश्यकता होती है और दोयम यदि वह ऐसी चीज़ों को जो गवेषणा के नतीजे के तौर पर सुझायी जाती है खरीद भी सकते हों तो वे चीजें उन्हें हमेशा मिलती भी नही हैं। अतः इन समस्याओं पर विचार करते समय गवेषणा में लगे हुए सब काम करने वालों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि उन लोगों का वास्ता ऐसे असंख्य लोगों से है जो कुछ ज़्यादा पढ़े लिखे नहीं है और जिनकी बुद्धि की कुशाग्रता में चाहे इस कारण से कोई अन्तर नही पड़ता है और चाहे वे ऐसे लोग है जिन्हे वास्तविक कृषि का पर्याप्त महत्वपूर्ण अनुभव है किन्तु है वे बे पढ़े और उनके साधन भी सीमित है। इन बातों को ध्यान में रख कर किसी प्रकार की भी गवेषणा जिससे अन्न उत्पादन के बढ़ाने में हमें सहायता मिलती है हमारे लिये बहुत महत्व की होगी। और गवेषणा की दिशा कोई सी भी क्यों न हो अर्थात् चाहे वह कृषिक इंजीनियरिंग के सम्बन्ध में हो चाहे भूमि के रसायनिक तत्वो के सम्बन्ध में हो, चाहे पौदों की नस्ल और क़िस्म की सुधार की हो और चाहे कीटों के रोकने या विनाश के सम्बन्ध में हो आपको गवेषणा के फलों के काम में लाने के सम्बन्ध में इन मूल भूत परिसीमाओं को ध्यान में रखना है। उदाहरणार्थ आप कल पुर्जे की बात लीजिये। आजकल कृषिक कलों के द्वारा खेती के सुधार की बात अक्सर सुनाई पड़ती है। इसमे कोई शंका नहीं है कि हमारे कृषक साधारणतया जिन औज़ारों का इस्तेमाल करते हैं वे बहुत ही दक़ियानूसी क़िस्म के है। वे अनेक शताब्दियों से चले आ रहे है और उनमें कोई सुधार नही किया गया है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि हमारे कृषकों को उनसे बेहतर कोई और चीज़ नहीं मिली है पर अगर आप उनका सुधार करना चाहते हैं तो आप उनकी सहायता तभी कर सकेंगे जब कि आपका सुझाया हुआ सुधार ऐसा हो जो साधारण कृषकों को बहुत ही आसानी से प्राप्त कराया जा सकता है, अर्थात् यदि आप हल में सुधार करते हैं तो वह ऐसा नहीं होना चाहिये जिससे हल बहुत क़ीमती हो जाये। वह ऐसा हल होना चाहिये कि जिसे हमारे देश में साधारणतया मिलने वाले बैल आसानी से खींच सकें; वह ऐसा भी होना चाहिये कि जो उस ज़मीन के लिये मौज़ू हो जहां वह काम में लाया जाने वाला है। यह सब ऐसी परिसीमायें हैं जिन्हें हमें ध्यान में रखना है और यदि हमें उत्तम फल-प्राप्त करने हैं तो हमें कृषि सम्बन्धी गवेषणा ऐसी एक ही जगह नहीं

करनी है जहां एक ही प्रकार की भूमि मिलती है वरन् ऐसी अनेकों स्थानों में करनी है जहां विभिन्न प्रकार की भूमियां है और विभिन्न प्रकार के हल काम में लाये जाते हैं। जैसा कि आप जानते है जो ढोर हमारे पास इस देश में हैं उनकी क़िस्म प्रान्त प्रान्त में वहां की आबोहवा के कारण बहुत भिन्न है और जो हल हिसार में बैलों की एक जोडी से आसानी से खींचा जा सकता है वही हल मेरे प्रान्त अर्थात् बिहार के तराई के ज़िलों के बैलो की जोड़ी द्वारा नही खीचा जा सकता। इसी प्रकार देश के विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार के हल काम में लाये जाते है। यदि बिहार में चम्पारन में काम में लाये जाने वाले हल को आप पंजाब के कृषकों को दे दें तो सम्भवतः बैलों की ताक़त बहुत कुछ हद तक व्यर्थ जायेगी। छोटे किसान के तजुरबे की इन मामूली बातों का ज़िक्र मै यहां इसलिये कर रहा हू क्योंकि मे यह समझता हूं कि गवेषणा के कार्य में इनका बडा महत्व है।

भूमि के रसायनिक तत्वों के बारे में भी यह बात साफ है कि हमारे देश में इतने विभिन्न प्रकार की भूमि है कि आप किसी प्रकार की चीज़ भी इस मे पैदा कर सकते है और इस लिये कृषकों से यह बात कहने में कोई लाभ नही है कि वे किसी खास किस्म की ही फ़सल उसमें पैदा करें। वहा तो कोई भी फ़सल जो ज़मीन के लिये मौज़ू हो पैदा की जा सकती है। ज़मीन की अच्छाई बुराई इस बात पर भी निर्भर करती है कि आबपाशी के लिये वहा कितना पानी मौजूद है। इस तरह कृषिक इन्जीनियरी अर्थात् भूमि के रसायनिक तत्वों और उसमें पैदा की जा सकने वाली फ़सल एक दूसरे पर इतनी घनिष्टता से निर्भर करती है कि उनको एक दूसरे से अलग करना असम्भव है। अतः इस प्रकार के केन्द्रीय प्रतिष्ठान को जैसा कि यह दिल्ली में है प्रथमतः देश के विभिन्न भागों में की जाने वाली गवेषणा के विभिन्न प्रकारों और विभिन्न दिशाओं का समन्वय करना है। इससे भी अधिक इसे यह करना है कि विभिन्न प्रतिष्टानों द्वारा, जो कि मेरे विचार में कई है और सारे देश भर में फैले हुए है, की जाने वाली गवेषणा के स्तर को भी यह निश्चित करे।

समस्या का एक पहलू और है जो कि गवेषणा का वास्तव मे भाग नही है किन्तु जिसकी ओर मै आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं। वह यह है कि आप इन गवेषणाओं के नतीजे से कृषकों को किस प्रकार वाकिफ करा सकते है। जैसा कि मै ने कहा है साधारण कृषक को इस अर्थ में पढ़ा लिखा नहीं कहा जा सकता कि उसे किसी स्कूल या कालेज में किसी प्रकार की तालीम मिली है। किन्तु यदि उसे किसी तरह भी यह बात दिखाई जा सके कि कोई नया तरीक़ा, या बेहतर बीज या नया औज़ार सचमुच ही अच्छे काम की चीज़ है और उससे सचमुच ही उसे फ़ायदा होगा तो वह उस सुधार को स्वीकार करने में देर न करेगा। मेरा अपना अनुभव है कि कृषक बड़ा समझदार व्यक्ति है। वह पढा लिखा चाहे न हो पर वह काफ़ी होशियार होता है और उसे इतना अनुभव होता है कि इस बारे में स्वय निर्णय कर सके। वह परिवर्तन के विरुद्ध नही है, वह ऐसे प्रयोग के विरुद्ध है जिससे उसे नुकसान होता है। यदि कोई और प्रयोग करे और उसे इस बात का सन्तोष दिला दे कि ऐसे प्रयोग से लाभ अवश्य होना है तो मेरा विचार है कि वह सुझाये हुए परिवर्तन को तुरन्त अपना लेगा। मैं ने देखा है कि नये क़िस्म के गन्ने को तब उन्होंने तुरन्त अपना लिया है जब उन्हें यह पता चला है कि यह नये क़िस्म के गन्ने ज्यादा लाभदायक हैं। इसी प्रकार बड़ी आसानी से उन्होंने बेहतर क़िस्म के गेहूं को वहां अपना लिया

है जहां उससे ज्यादा पैदावार होती है और ज्यादा रुपया मिलता है। उन्होंने बेहतर क़िस्म के धान को भी अपना लिया है गोकि ऐसा उन्होंने कुछ सीमा तक ही किया है। सरकार के सामने समस्या यह है कि किस तरह इन गवेषणाओं के नतीजों को किसानों के सामने इस तरह से पहुंचायें कि उन्हें यह सन्तोष हो जाये कि जो सुझाव सुझाये गये हैं वे सचमुच ही उनकी दृष्टि से भी सुधार सिद्ध होंगे। मेरा विचार है कि यह समस्या गवेषणा का काम करने वालों के मक़ाबले मे सरकार की कही ज्यादा है। किन्तु यह दोनों बातें आपस में इतनी सम्बन्धित हैं कि हम एक को दूसरे से अलग नही कर सकते। मै जानता हूं कि इस प्रतिष्ठान में और अन्य प्रतिष्ठानों में गवेषणा का काफ़ी काम हो रहा है किंतु मुझे यह जानकारी नही है कि इसके फल उसी सीमा तक या किसी सीमा तक भी कृषकों को बताये गये है औरं न मुझे यह मालूम है कि उसने अपने रोज़ाना की खेती-बाड़ी में इन फलों को स्वीकार भी किया है और अपनाया भी है या नही। ऐसा करने के लिये हमें दूसरे प्रकार से काम करने की ज़रूरत है और वह यह है कि हम ऐसी सगठित सस्था के द्वारा काम करे कि जिसका किसानो से बड़ा नज़दीक़ी सम्बन्ध होता है। अक्सर बहुत प्रकार की सामाजिक सेवा करने वाली सस्थाये होती है। हो सकता है कि विशेष प्रयोजनो के लिये कृषिक संस्थायें हो। यह भी हो सकता है कि ऐसे विशेष काम करने वाले हों जो अपने उदाहरण से किसानों को यह दिखा सके कि कोई खास नये तरीके सचमुच ही फ़ायदेमन्द है। मुझे यक़ीन है कि खास प्रदेशों मे ख़ास प्रयोजनो के लिये छोटे फ़ार्म खोल कर सरकार अच्छा काम कर सकती है। ऐसे प्रदेशों मे जहां गन्ने की खेती होती है गन्ने के फार्म की जरूरत होती है और उसके शुरू करने के लिये प्रोत्साहन देना चाहिये। इसी प्रकार गेहू के फ़ार्मों की भी बात है। जहा कही भी हम फ़ायदे से किसी ख़ास फ़सल को पैदा कर सकते है वहां हमे उन फ़सलों के लिये ऐसे फ़ार्म खोलने चाहिये। मेरा यक़ीन है और मुझे आशा है कि मै किसी के प्रति अन्याय नही कर रहा हूं जब मै यह कहता हू कि दिखाने के लिये जो फ़ार्म है वे न तो उतने लाभदायक है और न उतनी हमारी मदद करते है जितने कि वे हो सकते है या हमारी मदद कर सकते है। ऐसा इस लिये नही है क्यों कि जिस तरीके से इन फ़ार्मों को चलाया जाता है वे साधारण किसान के मन में नहीं बैठते। इसका जो भी कारण हो उसे पता चलाना और उसकी जांच करना आवश्यक है क्यों कि इस तरह के फार्म ऐसे प्रतिमान सिद्ध नही हुए है कि जिनसे प्रभावित होकर सारे कृषक उसी तरीके से उनके चारो ओर अपना कार्य आरम्भ कर दें।

इस समय हमारे सामने अन्न की समस्या सब से बड़ी समस्या है और यह वैज्ञानिकों, कृषि मन्त्रालय, तथा किसानों का काम है कि वे प्रयास करें कि इस दिशा में विदेशी आयात पर हमारी निर्भरता जितनी जल्दी दूर हो सके दूर हो। मुझे यक़ीन है कि इस प्रतिष्ठान का और कृषिजन्य इन दिशाओं में कृषि गवेषणा का भविष्य महान् है। यदि वे अपनी पूरी लगन से गवेषणा का काम करें और इस प्रकार का काम करें जिससे कृषकों को अविलम्ब सहायता मिले तो वे देश के लिये बड़ा काम ही न करेंगे वरन् स्वयं भी अपने हित की अभिवृद्धि करेंगे। मै उन लोगों को पहले से ही अपनी बधाई देना चाहता हूं जिन्हे गवेषणा कार्य के लिये प्रमाण पत्र दिये जाने वाले हैं और जिन्हें यहां पर शिक्षा मिली है। मुझे आशा है कि जब वे लोग यहां इस प्रतिष्ठान में शिक्षा पा कर अपने अपने स्थान को जायेंगे तो वे अपने इस कार्य में पूरे उत्साह से लग जायेंगे।

हिन्दू विश्व विद्यालय के विद्यार्थियों को उपदेश

तारीख ७ फ़रवरी को हिन्दू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को राष्ट्रपतिजी ने उपदेश देते हुए कहा--

आप लोग यहां एक्जीबीशन देखने आये है। एक्ज़ीबीशन तो खूब अच्छी है। पर असली चीज़ें जहां बन रही है आप लोगों को तो वहां जाना चाहिये। आप लोगों में जो इंजीनियरिंग के स्टूडैण्ट हैं, जो टैकनिकल स्टूडेंट हों, उनका ही तो इन चीजों को बनाने का काम होगा। जिस वक़्त शिक्षा समाप्त करके आप विश्वविद्यालय से निकलेंगे उस वक्त तक काम ठीक तरह से होने लग गय होंगे। अभी तो शुरू ही हुए है, थोड़ा बहुत ही अभी काम हुआ है। आपने भाखरा वाले डैम का मानचित्र देखा होगा, आपने दामोदर वैली डैम का भी मानचित्र देखा होगा। इन दोनों योजनाओं के पूरा करने में कुछ कुछ काम हुआ है। आपने कोसी के बांध का नक्शा भी देखा होगा। उसमें अभी कुछ भी काम नहीं हुआ है। इस तरह से कुछ में काम हुआ है, कुछ शुरू हो रहा है और कुछ इन्वैस्टीगेशन स्टेज में ही है। सब काम दस पांच वर्ष में लगभग पूरा हो जायेगा। न जाने इनमें कितने अरब रुपये लगेंगे और कितने लग रहे है। आपको इसके लिये तैयार होना है कि आप किस तरह इन्हें बनायेंगे किस तरह से चलायेंगे जिसमें देश का हित, कल्याण और लाभ हो।

इस वक़्त तो सबसे बड़ा प्रश्न जिसे सभी महसूस करते है और जिससे छुटकारा पाने का प्रयत्न हो रहा है वह अन्न का कष्ट है। इन योजनाओं से अन्न का कष्ट भी बहुत हद तक दूर हो सकता है। उसमें आपने देखा होगा कि किस तरह से पानी पटाने का इन्तज़ाम है, नहर निकालने का इन्तज़ाम है। इससे खेती बढ़ेगी एक चीज़ तो यह है। दूसरी उससे बिजली पैदा होती है। उनसे इतनी बिजली पैदा होती है कि हमारे पास वह सब बिजली खर्च करने का सामान नहीं है। बिजली के खर्च के बारे में भी सोचना है कि हम उससे क्या करेंगे। लाज़िम यह है कि उसके साथ साथ दूसरे काम भी बढ़ें। कारखाने का काम भी बढ़े। इनसे खेती की भी उन्नति होगी और उद्योग धन्धों की उन्नति भी होगी। इन योजनाओं से जब हम गांव गांव में बिजली पहुंचा देंगे तो घर घर में घरेलू धन्धे चलने लगेंगे। तो इनका महत्व बहुत बड़ा है और आपने अच्छा किया कि यहां आये और श्री गोविन्द जी की अच्छी सूझ हुई कि आप लोगों को उन्होंने उनको दिखला दिया।

आपने दिल्ली को भी देख लिया। पार्लियामेंट भी आपने देख लिया। यह काम भी चलाना है। यह आप न समझें कि पार्लियामेंट का काम यहां बैठ कर सिर्फ़ स्पीच देना ही है। नहीं, पार्लियामेंट में आने से लोगों से सम्पर्क होता है, जनता के दुःख सुख को समझने का मौक़ा मिलता है और उनकी भलाई करने का अवसर मिलता है। जो मेम्बर होते हैं उनका काम यह होता है कि अपने चुनाव क्षेत्र को जाकर देखें और वहां की जनता के दुःख सुख को समझें और उनकी भलाई की बातें करें। इसके साथ साथ जन सम्पर्क निहायत ज़रूरी हो जाता है। जन सम्पर्क का अर्थ ही है जनता की सेवा। बग़ैर सेवा के जन सम्पर्क तो हो नहीं सकता है। जब आप उनकी सेवा करेंगे तब उनसे सम्पर्क बढ़ेगा और तब आप उनको और अधिक सेवा कर सकते हैं। वहां

गवर्नमेंट हाउस भी आपने देखा। यह तो आफ़िस है। जैसे कारखाने में लोग काम करते है और आफ़िस में काम करते हैं उसी तरह यहां काम होता है। पर असली काम जो हो रहा है वह तो देश भर में फैला हुआ है। यहां तो एक सिलसिला बंधा हुआ है उसके अनुसार काम होता है। मगर इस वक़्त ज़रूरत इस बात की है कि सब मिल कर काम करें सोचें और देश में जो ग़रीबी है, देश में जो अविद्या है, जो बीमारी है उनको दूर करें। अभी देश से हज़ारों चीज़ें हटानी हैं और देश में हज़ारों चीज़ें लानी है। इस वक्त तो ब्रिटिश गवर्नमेंट यहां नहीं है कि हम यह कह सकें कि वह बाधा डालती है। यह सवाल अब नहीं है। अब तो हम लोग खुद बैठे हैं अभी ठीक तरह से बैठे भी नही है। तो अब हमको खुद सब काम को सोचना है, और करना है। आप लोग जानते ही है कि अब हम लोगों का समय खत्म हो रहा है। अब सब काम चलाने के लिये आप लोग तैयार हों। हम लोगों का काम था यहां लाकर पहुंचा देना। वह तो हम लोगों ने कर दिया। मगर सिर्फ़ हमको ढकेल करके आप बैठना चाहेंगे तो वैसा नही कर सकेंगे। उसके लिये आप में कुछ न कुछ योग्यता होनी चाहिये जिसमें आप सचमुच में बैठ सकें। इसके लिये आपको तैयारी करनी है। इसके लिये हमको ढकेलने की ज़रूरत नहीं है। हम तो खुद ब खुद हटते जा रहे है, गिरते जा रहे है और अगर आप तैयार रहें तो खुद ब खुद आप हमारे स्थान पर आ जायेंगे। इसके लिये आप योग्यता हासिल करे। अगर बिना योग्यता हासिल किये आप हमें ढकेल करके बैठेंगे भी तो आप बैठे नही रह सकेंगे। इसके लिये शरीर भी अच्छा होना चाहिये, दिमाग़ सुलझा होना चाहिये और चरित्र ठीक होना चाहिये। इन तीनों चीज़ों पर आपको ध्यान देना चाहिये, यानी आप अपने शरीर को अच्छा रखें, दिमाग़ को भी अच्छा रखें और चरित्र को भी अच्छा रखें और जो कुछ करना चाहते है, उसे निःस्वार्थ भाव से करें। जो कुछ काम करें, देश के लोगों की भलाई सोच करके करें। तो यह सब करना है। अभी तो आप लोग पढ़ रहे हैं। मालूम नहीं आप में से कितने इस काम के लिये निकलेंगे और कितने इंजीनियरिंग और दूसरे काम के लिये। आज भारतवर्ष अपने हाथों में आ गया है। उसको अच्छा बनाना, सुन्दर बनाना आपका काम है और इसके लिये आप अपने को तैयार करें।

और इससे अधिक मैं क्या कहूं, यहां का बाग़ीचा भी लोग कहते हैं अच्छा है उसे आप सब जाकर देखें।

विद्या विहार, पिलानी

विद्या विहार पिलानी में तारीख़ ११ फ़रवरी १९५१ को इन्जीनियरिंग कालेज के नये भवन का उद्‌घाटन करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा —

पिलानी के लिये मैं कुछ नया या अपरिचित नही हूं और न पिलानी मेरे लिए अपरिचित है। १९४० में मैं पहले पहल यहां आया था। मगर वह यात्रा थोड़े ही देर के लिए थी। १९४५ से मैं बराबर बरसात में यहां एक बार कभी कभी एक बार से अधिक आता रहा हूं। और इस तरह मुझे इसका सुअवसर मिला है कि अपनी आंखों देख सकूं कि यहां की शिक्षा संस्थायें किस तरह साल ब साल बढ़ती गई हैं और उन्नति करती गई हैं। इस भवन को क़रीब क़रीब

पूरा होते में आज देख रहा हूं पर इस को बनते हुए पहले देखा है और जितने नये होस्टल और यहा विद्यालय के लिए नये मकान आप सब देख रहे है और जिन में विद्यार्थीगण रह रहे है यह सब मेरे देखते देखते बने हैं । इस लिए मुझे उन के साथ एक प्रकार की दिलचस्पी रही है और एक तरह का सम्बन्ध हो गया था, जब मै बिड़ला ट्रस्ट का एक ट्रस्टी भी बन गया था । वह सम्बन्ध आज कुछ ऐसे क़ायदे और नियमों के कारण जिन में मै एक साल से बंध गया हूं छोड देना पडा है, पर तो भी मेरे दिल का संबन्ध वह न तो टूटा है और न टूट सकता है । जब मुझ से इस उत्सव में शरीक होने के लिए कहा गया तो मैने सहर्ष उस निमंत्रण को स्वीकार कर लिया । उस के दो कारण थे । एक तो यह था कि इधर मै १३-१४ महीनों से यहा नही आ सका था और इच्छा थी कि देखू कि इन दिनो में क्या हुआ है । और दूसरी बात यह थी कि इस बार एक साल से अधिक बीत गया और मै नही आ सका था तो मै इस बात का इन्तज़ार कर रहा था कि कोई मौका मिले तो आ जाऊं । आप सब जानते है कि मै जब पहले आया करता था तो अपनी खुशी से और अपने लाभ के लिए क्योंकि यहा आने से मै देखता था कि मेरे स्वास्थ्य को लाभ पहुंचता था । पर पिछले १२-१४ महीनों मे ईश्वर की ऐसी कृपा रही है कि स्वास्थ्य ने यहा आने को मजबूर नही किया । और इस लिए इस बार बाज़ाब्ते निमत्रण पर एक विशेष समारोह में शरीक होने के लिए आया हू । इस से मेरी खुशी आज और भी दुगनी चौगुनी हो गया है । यहा शिक्षकों और विद्यार्थियों से मेरी कई बरसो की मुलाक़ात है क्योंकि मै जब जब यहां आया हूं तो किसी न किसी अवसर पर आप सब से मिल कर कुछ सुनने और कुछ कहने का मौका मिल ही जाता था । किसी न किसी तरह की कोई सभा समारोह हो ही जाता था । इस लिए यद्यपि आज मै एक किसी दूसरी कुर्सी पर बैठा हू आप यह हर्गिज़ न समझे कि मै कोई दूसरा हो गया हू और इस बात का विश्वास रखें कि जो रिश्ता आप के साथ ह गया है वह ज्यों का त्यों क़ायम है ।

पिलानी एक मामूली छोटा सा कस्बा होते हुए भी शिक्षा का एक बडा केन्द्र बन गया है और इस केन्द्र के तैयार करने में विपुल धन बिडला परिवार ने खर्च किया है । पर ऐसा न समझा जाये कि उन्होने केवल धन ही खर्च किया है ; उन्होंने अपना अनुभव और बुद्धि भी विशेष करके श्री घनश्यामदास जी बिड़ला ने इस मे लगाई है और तभी आज हम देख सकते है कि ऐसे स्थान में जहा पहले उन के ही बचपन में अंग्रेजी आये हुए तार पढ़ने वाला भी नही होता था वहां आज आर्ट्स और साइन्स की ऊची से ऊची शिक्षा दी जा रही है । इंजीनियरिग का एक बड़ा महाविद्यालय कायम हो गया है । लड़कियों के लिए निवास-स्था न के साथ स्कूल कायम हो गया है जो अब महाविद्यालय बनने जा रहा है । बच्चों के लिये मान्टेसरी स्कूल के अलावा कितने प्राथमिक स्कूल और बहुत अच्छा हाईस्कूल तथा सस्कृत पाठशाला चल रही है ।

मै यहां जब कई साल हुए आया था तो यहा के विद्यालयों के सम्बन्ध में एक छोटी पुस्तिका मिली थी जिसमें एक बात लिखी थी जो मुझे बिलकुल याद है क्योंकि वह मनोरंजक भी है और यहा के विद्यालयों का सारा इतिहास उसी एक बात से मालूम हो जाता है । राजस्थान के लोग और विशेष करके इस शेखाबाटी के लोग सारे हिन्दुस्तान में और शायद बाहर भी व्यापार

के लिये फैले हुए है और शायद ही कोई दूसरा स्थान हो जहा के लोगों ने व्यापार को और बडे बडे उद्योगों को इतना बढ़ाया हो जितना इस छोटे इलाके के लोगों ने बढाया है। इसलिये वे जहा रहते है वहां से ही उनका व्यापार का काम किसी न किसी रूप में चलता रहता है। पहिले जब तार नही थे चिट्ठियों से काम होता था। उसके बाद तार से काम लिया जाने लगा। अब तो रेडियो सुन कर और टेलीफून पर बात करते बहुत काम चलता है। जहा व्यापारी है वहां इन चीज़ों की सुविधा होनी ही चाहिये और हो ही जाती है। अभी बहुत दिनों की बात नही है जब बिडला बन्धु स्वय शिक्षा पा रहे थे। उसी समय का ज़िक्र उस पुस्तिका में था। यहा अग्रेज़ी जानने वाला कोई नही था और कोई तार किसी तरह से कही से आ जाता था तो उसको पढवाना एक मुहिम हो जाता था। किसी सज्जन के पास एक तार आया और जो दो चार लडके अंग्रेज़ी मे कटर मटर करना सीख रहे थे उनको वह तार पढने के लिये दिया गया। यह एक प्रकार की परीक्षा ही थी। लड़के तार नही पढ़ सके। उस सज्जन को आश्चर्य और रंज हुआ कि मास्टर क्या पढाते है कि एक सतर, दो सतर का तार भी लडका नही पढ सकता है और मास्टर से उन्होंने पूछा कि लडको की प्रगति इतनी कम क्यों है। मास्टर साहब ने तुरन्त उत्तर दिया कि यह तार कलकत्ते से आया है। अभी लडको ने इतनी प्रगति नही की है कि वह इतनी दूर का तार पढ सके। हा अगर दिल्ली या जयपुर जैसे नजदीक का तार होता तो वे पढ देते। मास्टर साहब की यह कैफियत उस सज्जन को जच गई कि लडको की प्रगति कोई बुरी नही हुई है। आज उसी पिलानी मे हम यह शिक्षा समारोह देख रहे है। और आज हजारो हज़ार विद्यार्थी उच्च से उच्च शिक्षा सभी विषयों मे पा रहे हैं। यहा अब जो चाहे वह सीधे जहा से हो टेलीफोन पर बाते भी कर सकता है और अब किसी से तार पढवा कर बाजार दर जानने की ज़रूरत नही रह गयी है। बिजली लग जाने से घर घर मे इतना ही नही कि लोग रेडियो लगा सकते है बल्कि रेडियो के अन्दर क्या रहस्य छिपा हुआ है जिस के द्वारा वह हजारो हजार मील पर की बात भी साधारण आदमियो को सुना सकता है जिन मे योग्यता है वह साइन्स और इंजिनियरिंग कालेजो में जा कर उस रहस्य को भी जान सकते है। इतनी तरक्की इस छोटे से गाव मे हुई जहा केवल यहा के ही लडके नही सारे देश भर से लडके आ आ कर शिक्षा पा रहे है और विद्वान लोग सभी जगहों से आमंत्रित कर के बुलाये गये है जो शिक्षा दे रहे है। यह सब कुछ एक आदमी के जीवन काल मे ही हो पाया है और एक परिवार के विद्याप्रेम और कौशल का ही यह फल है जिसे देख कर चमत्कृत हुए बिना कोई नही रह सकता है। अगर ईश्वर धन दे तो उसका उपयोग और अगर कोई प्रदर्शन भी चाहे तो वह भी इसी प्रकार के पुण्य कृत्यो द्वारा होना चाहिये। इसलिये मै हृदय से बिडला परिवार और विशेष कर के घनश्यामदास जी बिडला को जो इन सभी संस्थाओं के एक प्रकार से प्राण है बधाई देता हू और यदि लक्ष्मी का वरदान पाये हुए धनिकों से कहू कि वे भी अपने विपुल धन का ऐसा ही उपयोग करे तो मै मानता हू कि यह उचित होगा। इसलिये मै केवल अपनी ओर से ही नही आप सभी की ओर से और यहा के विद्यार्थी और शिक्षको की ओर से भी उन को बधाई देना चाहता हू और ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह उन को इस पुण्य काम में लगाये रखे और दूसरो में भी ऐसे सार्वजनिक और शुभ काम के लिए उन का अनुकरण करने की प्रवृति जागृत करे।

भवन बहुत प्रशस्त और सुन्दर बन गये हैं। शिक्षा के लिये आधुनिक काल में जिन सामग्रियों की आवश्यकता होती है जैसे एक बृहद् पुस्तकालय, प्रयोगशाला इत्यादि वह सब इकट्ठी कर दी गयी है। बहुतेरे विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिये निवास-स्थान बन गये हे और दिन प्रति दिन बनते जा रहे हे। खेल कूद के लिये केवल मैदान ही नही दूसरे साधन भी एकत्रित है जिन से लाभ उठाकर सभी अपने शरीर को सुगठित और स्वस्थ बना सकते हे। इस का भी प्रबन्ध और प्रयत्न है कि स्वस्थ खाद्य पदार्थ, आज कल के मिलावट के ज़माने में, सब को मिले। इन सस्थाओं के लिए इस तरह सभी सामग्रिया जुटा दी गयी हे। पर किसी भी वग का विद्यालय क्यों न हो एक बच्चे के लिये प्राथमिक स्कूल से ले कर बड़ी से बडी यूनीवर्सिटीयों तक केवल सामग्रियों के इक्ट्ठे हो जाने से ही कोई विद्यालय नही बन जाता। विद्यालय के प्राण तो शिक्षक और विद्यार्थी हे। और वे जितने अच्छे साधु चरित्र वाले विद्या व्यसनी होंगे उतना ही विद्यालय समुन्नत और सफल होगा। सामग्री जुटाने का काम दूसरों का हुआ करता है पर विद्या प्रेम, साधु चरित्र, कर्तव्य-परायणता और उच्चाभिलाषा तो जो वहा पढ़ाते हे या पढते हे वही दे सकते हें। यदि यह चीज़ न हुई तो सारा आयोजन प्राण रहित शरीर के जैसा हो जाता है। इसलिये शिक्षकों और विद्यार्थियो का यह धर्म और कर्तव्य है कि जिस उच्चा-काक्षा और अभिलाषा से विपुल धन लगा कर यह सामग्री जुटायी गयी है उस का वह सदुपयोग करके अभिलाषाओं को पूरा करे; इस के लिये दोनों का अर्थात् शिक्षक और विद्यार्थी दोनों का पूरा सहयोग वाछनीय और आवश्यक है। और मै यही आशा करूगा कि शिक्षक लोग अपनी सारी शक्ति और विद्या बुद्धि और चरित्र को जो विद्यार्थी दूर दूर से और नज़दीक से इन विद्या-लयों में आये हे उन के बुद्धि विकास चरित्र गठन में और विद्याभ्यास में सच्चे दिल से लगाने में प्रयत्नशील रहे। विद्यार्थियो से मेरा निवेदन है कि वे अपने समय का और इन साधनों का अच्छे से अच्छा उपयोग करे और जो कुछ भी वे यहा से ले सकते है वह प्राप्त करे। मै समझता हूं कि इस प्रकार की अपील आज आवश्यक है।

हमारे देश की प्रथा रही है कि किसी मनुष्य का मूल्य उस के केवल रुपये पैसे से ही नही आका जाता है और यह बात विशेष कर के उन लोगों के साथ रही है जो स्वय विद्वान हो कर दूसरों को विद्या दान दिया करते थे। प्राचीन काल में तो विद्यार्थी गुरू और आचार्य के घर का पुत्रवत् एक व्यक्ति हो जाता था जिस का सारा भार गुरू को ही उठाना पड़ता था और फीस के बदले में वह जगल से चुन चुन कर थोडी लकड़ी ले आ कर दे देता था अथवा गौओं को चरा लाता था। हाल तक पैसे ले कर विद्यादान देना अनुचित और कलुषित समझा जाता था। पर समय बदल गया है। भारतवर्ष दुनिया से अपने को अलग नही रख सका और न रख सकता है इसलिये आज अमेरिका के बाज़ारों की दर से भारत में केवल रूई कपास, गेंहूं और मक्का की ही दर प्रभावित नही होती वरन् आज हम सभी चीज़ों का मूल्य सिक्को मे आंकने लग गये हे। इसलिये इस में न तो कोई आश्चर्य की बात है और न हम किसी को दोष दे सकते है कि जो लोग शिक्षा देना ही अपना धंधा मान लेते है वे भी अपना मूल्य सिक्कों मे आकने लग गये हे। यह हुए बिना रह नही सकता था। क्योंकि जब सारा समाज सिक्कों द्वारा ही दूसरा को पहचानने और प्रतिष्ठा देने लगा तो शिक्षक वर्ग के लिये भी एक तरह समाज को भी वैसा ही करना पड़ा और दूसरी तरफ शिक्षकों ने भी वही मांगें पेश करनी आरम्भ कर दी। विद्यार्थी

जैसा मैंने ऊपर कहा गुरू सेवा करके ही विद्यार्थी काल में और जब शिक्षा प्राप्त करके गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट होता था तब विद्या दान दे कर ही गुरू के प्रति अपने ऋण को चुकाता था। इसमें न तो उसे कुछ हीनता दीखती थी और न उसके हृदय में कोई ऐसी भावना उठती थी कि वह कुछ अपने निजी स्वत्व भी रखता है जिन को अगर वह दूसरों के प्रति काम में ला सकता है, तो अपने शिक्षकों को भी उन अधिकारों के लपेट में लाये बगैर वह नहीं रह सकता। वे दिन भी बीत चुके और आज सभी जगहों में कर्त्तव्याकर्त्तव्य का विचार छोड कर अपने स्वत्वों और अधिकारो को ही अधिक महत्व दिया जा रहा है इसलिये हमारे विद्यालयों में भी विद्यार्थी बहुत स्थानों में यह नहीं समझते कि वहां वे सीखने आये है और जिन्हों ने उनके लिये सीखने पढ़ने का साधन जुटा दिया है उन के प्रति उन्हें कृतज्ञ होना चाहिये। बल्कि वे यह भी समझते है कि उनके भी कुछ अधिकार है जो जन्म सिद्ध है और जिन का बरतना आवश्यक है चाहे उस से उनकी अपनी शिक्षा मे ही हानि क्यों न पहुंचती हो। आये दिन यह सुनने में आता है कि जिस तरह बड़े कारखानों मे मजदूरों की हड़ताल हुआ करती है उसी तरह शिक्षालयों में विद्यार्थियों की भी हड़ताल हो जाती है। यह देश एक ऐसी संध्यास्थिति में है जिस में प्राचीन और अर्वाचीन—पूर्वी और पश्चिमी—देशी और विदेशी—विचार धारांए टक्कर खा रही है। और इस में आश्चर्य नही कि इस टक्कर के फलस्वरूप बहुत फेन जिस में अन्दर कोई ठोस वस्तु नहीं है देखने में आ रहा है। मै आशा करूंगा कि यहां के शिक्षक और विद्यार्थी फेन के नीचे जो स्वच्छ जल बह रहा है उसका पान करेंगे, चाहे वह पूरव का हो अथवा पश्चिम का। सब से अच्छा तो यह होगा कि दोनों धाराओं को मिला कर केवल एक नयी धारा ही नहीं बनावें बल्कि उस धारा को नहरों और नालियों के द्वारा सभी जगहों में पहुंचाने का भी प्रयत्न करें और जिस तरह शेखा-वाटी की बालुका मयी मट्टी भी जल पा कर हरी भरी हो जाती है उसी तरह देश वासियो के हृदयस्थल को हरा भरा बनाने में मददगार हों।

मै आशा करता हूं कि जिस तरह पंडित सुखदेव पाण्डे जैसे एक विद्वान और विद्याव्यसनी शिक्षा शास्त्री अपने साथ अनेकानेक शिक्षकों को ले कर इन विद्यालयों को सुचारू रूप से चलाने में सतत प्रयत्न शील है उसी तरह विद्यार्थी गण भी शरीर को स्वस्थ और सुगठित बनायेंगे, मस्तिष्क को तीव्र और विद्या का खज़ाना बनायेंगे और ऐसा चरित्र उपार्जन करेंगे जिस से अपना और दूसरों का कल्याण कर सकें। बिड़ला परिवार को बधाई देने के अतिरिक्त मुझे इन विद्यालयों के सबन्ध मे अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मै जानता हूं कि जितना मै कहूगा उस से अधिक इन विद्यालयों के प्रति उन की अपनी सद्भावना और इन की उन्नति के लिए तत्परता ओर उत्सुकता उन में वर्तमान है। दिन प्रति दिन क्रियात्मक रूप से उस का परिचय भी हम सब को मिलता जा रहा है।

मुझे इस समारोह में आमंत्रित कर के आप ने यह सुअवसर दिया और जब से मैं आता रहा हूं और इस बार भी जब से यहां पहुंचा हूं आप ने जिस प्रकार से मेरा स्वागत किया और जैसा प्रेम दिखलाया है सब के लिये मै हृदय से धन्यवाद देता हूं। और आशा करता हूं कि ये संस्थाएं दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करेंगी और यह स्थान एक आदर्श विद्यापीठ बन जायेगा।

बिरला इन्जीनियरिंग कालेज ब्लाक का उद्घाटन

पहले से तैयार किया हुआ भाषण पढ़ चुकने के बाद राष्ट्रपति जी ने निम्नलिखित बातें भी कहीं—

अभी भाई घनश्यामदास जी ने जैसा बताया अपने भाषण को उन्हों ने मेरे पास लिख कर भी भेज दिया था। मुझे अफ़सोस है कि मै उसे ठीक से पहले पढ़ नहीं सका। उसमें उन्होंने दो बातें कही है। एक तो बुनियादी तालीम के सम्बन्ध में उन्होंने कहा है कि यहां पर स्कूलों में उसका प्रयोग किया गया था पर उसमें अपने को असफल समझ कर उसे छोड़ देना पड़ा। मै जानता हूं कि बुनियादी तालीम के सम्बन्ध में आज मतभेद है और मै यह भी जानता हूं कि अभी कही भी जैसा कि मैं चाहता हूं उसका प्रयोग ठीक तरह से नहीं किया गया है। उसका कुछ प्रयोग बिहार में किया गया है और जहां तक मैं जानता हूं उसमें उनको कुछ सफलता मिली है। यह जो मेरा विचार है वह कोई मेरा अपना विचार नहीं है; यह तो ऐसे लोगों का विचार है जिन्होने इसका प्रयोग करके देखा है। यह प्रयोग १९३८ साल में महात्मा जी ने चलाया था। यों तो सभी प्रान्तों में इस सम्बन्ध में कुछ न कुछ किया गया पर जैसा वायुमंडल बिहार मे था और वहा जिस तरह से काम किया गया वैसा और प्रान्तों में नहीं हुआ। इसका कारण यह है कि वहां पहले थोड़े दायरे मे प्रयोग करके देखा गया और इसके लिये वहां एक सुयोग्य व्यक्ति मिल गये और उन्होने पहले कुछ लोगों को तालीम देकर तैयार किया और फिर उनको इस काम में लगाया। तीन चार वर्षो तक यह काम चलता रहा। फिर कांग्रेस गवर्नमेंट टूट गयी और यह काम रुक गया। जब कांग्रेस की गवर्नमेंट फिर कायम हुई तो उन्होंने इस काम को जारी किया क्यों कि तीन चार वर्षो के प्रयोग मे उन्होंने देख लिया था कि इस तालीम में क्या खूबियां है। इसलिये पिछले तीन चार वर्षो से यह काम वहा चलता रहा है। इन सात वर्षों के काम को देखा गया तो मालूम हुआ कि कुछ न कुछ उनको सफलता मिली है। उनका खयाल है कि बुनियादी तालीमी स्कूल से जितने विद्यार्थी निकले है दूसरे स्कूलो से जो विद्यार्थी निकलते है उनसे अधिक चतुर, ज्ञानवान् और समझदार निकलते है। साथ ही साथ यह भी देखा गया है कि खर्च के सम्बन्ध में भी जैसा सोचा गया था अगर सोलह आना नही तो बारह आना खर्च भी निकल आया है। वे लोग मानते है कि बीच के तीन वर्षो मे भी अगर उसी उत्साह से काम होता रहता तो और भी उसकी उन्नति होती। अब वहां इस चीज़ को और भी बढाया जा रहा है। वहा की गवर्नमेंट भी इसमे दिलचस्पी ले रही है और इसको बढावा दे रही है। अब देखना है कि इसमे उनको कहां तक सफलता मिलती है। मुझे अफ़सोस है कि जब जब मै यहा आया तो मेरा सम्पर्क यहां के कालेजों से ही रहा और माध्यमिक शिक्षा के स्कूलों से मेरा कोई सम्पर्क नही रहा। अगर उस वक्त मै इस बात को देखता जिस वक्त यह शिक्षा दी जाती थी तो मै जरूर बताता कि क्या करने से सफलता मिल सकती है और इसके सम्बन्ध की दूसरी चीज़ें भी बताता। आज की शिक्षा पद्धति के सम्बन्ध में मै अपने विचार प्रकट किया करता हूं; अपना असन्तोष प्रकट किया करता हूं। आपका यह कहना कि असन्तोष प्रकट करना तब तक बेजा है जब तक हम उसको दूर नहीं कर सकते है ठीक है। मगर जब किसी प्रकार का भी असन्तोष होता है तो उसको ज़ाहिर करना पड़ता है और तब उसको दूर करने का रास्ता निकाला जाता है। जैसा अभी मैं ने कहा कि अभी हम लोग संधिकालीन स्थिति में है। अभी हम सभी बातों को देख रहे है, जो

रहे है। अभी जो शिक्षा-क्रम जारी है उससे मुझे सन्तोष नहो है। इसके सम्बन्ध में अभी मैं क्या कर सकता हूं या नहीं कर सकता हूं वह दूसरी बात है। मै तो आशा करता हूं कि जितने लोग शिक्षा में दिलचस्पी रखते है चाहे वे शिक्षा विभाग के लोग हों चाहे दूसरे लोग हो जो शिक्षा में मदद करते है जैसा आप लोग, सब को सोचना है कि शिक्षा पद्धति में क्या त्रुटि है और कहा तक उसको बदलना ज़रूरी है। जैसा आपने कहा केवल ज्ञान की किताब लेकर ढूढने की चीज़ शिक्षा नही होती उसका कुछ फल भी होना चाहिये। आजकल की शिक्षा पद्धति का सब से बडा दोष है कि उससे हमारी योग्यता नही बनती है। मै ने अभी हाल ही में अपने किसी भाषण में कहा था कि १०० वर्ष पहले ब्रिटिश गवर्नमेंट ने जिस शिक्षा पद्धति को जारी किया और चलाया वही अभी भी जारी है, यद्यपि समय बदल गया है। यह तो पिछले चन्द वर्षो मे ही कुछ कुछ स्थान इस तरह की शिक्षा पाये लोगो को मिलने लगा है पर अभी भी बहुत काफी स्थान नही मिल सके है। मेरा तो असन्तोष आज की शिक्षा पद्धति से है। शिक्षा पद्धति ऐसी होनी चाहिये कि जो शिक्षा ले उनको तो लाभ पहुचे ही दूसरो को भी उससे लाभ हो। यह एक ऐसा विषय है जिस पर सब को विचार करना है, रास्ता ढूढना है। तीन चार वर्षो से जब से हमारे हाथो मे अधिकार आया हम ऐसे कामो मे बझे रहे कि सब चीजों की ओर हम ध्यान नही दे पाये है। हम अभी झझटो से निकल नही पाये है। यदि इन कारणो से हम अधिक कर नही पाये तो इससे घबड़ाना नही चाहिये। सच बात तो यह है कि जैसा आपने कहा कोई काम जो अच्छी भावना से किया जाता है उसमे सफलता भी होती है, उसमे बुराई नही होती। जैसा आप चाहते है पहले के सिलसिले को फिर से बदलना होगा और जैसा आप कहते है कि आज तक आपको पैसे की दिक्कत नही हुई है वैसे ही किसी तरह की दिक्कत आपको नही होगी। मै आशा करता हू कि यह विद्यालय हर वर्ष उन्नत होता रहेगा और उन्नति का अर्थ ही होता है कि अगर कोई चीज बेकार हो गयी तो उसको छोड कर उसके स्थान मे नयी चीजे अपना लेना। इन शब्दो के साथ मै इस नये भवन का उद्घाटन कर देना चाहता हू।

जयपुर में नागरिक अभिनन्दन

तारीख १२-२-'५१ को जयपुर म्युनिसिपैलिटी द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब मे राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम महाराजा साहब, जयपुर म्युनिसिपल काउन्सिल के अध्यक्ष महाशय, और दूसरे सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

मै आपको हृदय से धन्यवाद देना चाहता हू उस मान प्रतिष्ठा के लिये और उस प्रेम के लिये जो मानपत्र देकर और दूसरे प्रकार से आपने दर्शाया है। आपने ठीक ही कहा है कि जयपुर में मै पहले भी आ चुका हूं और आपकी बहुत सी प्रसिद्ध जगहो को देख चुका हूं। इस बार एक नयी हैसियत से आया हूं इतना ही मुझ मे फर्क है नही तो मै वही पुराना हूं जो पहले मै था।

आपने मानपत्र मे ठीक ही कहा है कि इस वक्त केवल भारत ही नही बल्कि सारी दुनिया ही एक बहुत नाजुक समय से हो कर गुज़र रही है और सभी देशो के लोग आज बड़ी चिन्ता मे अपने दिन काट रहे है। औरों को जो चिन्ता है वह तो है ही पर भारतवर्ष को आज कुछ विशेष चिन्तायें

है जिनके लिये हम दिन रात इस फिक्र में पड़े है कि किस तरह से उनके कारणों को हम दूर करें। इसके और भी कारण हो सकते है लेकिन इस देश की परिस्थिति स्वराज्य प्राप्तिके बाद जो नया काम आरम्भ हुआ है उससे सम्बन्ध रखती है। मगर इस साल में खास करके ऐसे भी कारण पैदा हुए है जिनका सम्बन्ध ईश्वर से है। कई वर्षो से इस देश मे हम अन्न की कमी महसूस करते आये है और इसके लिये हम अन्न विदेशों से मगाते भी रहे है। मगर इस साल में कुछ दैवी प्रकोप ऐसा रहा है कि कही तो अतिवृष्टि और बाढ़ के कारण, कही भूकम्प के कारण कही अनावृष्टि के कारण और अब कही कही टिड्डियों के कारण जो फ़सल खेतों मे लगी थी वह खराब हो गयी है और हो रही है। इन सब का मिलजुल कर फल यह हुआ है कि इस वक़्त हमारे देश में अन्न की कमी हो गयी है और वह कमी राजस्थान के अन्दर लोग बुरी तरह से महसूस कर रहे है मुझे इसकी सूचना मिली है। हाल मे भारत सरकार इस बात का प्रयत्न कर रही है कि विदेशों से आज तक जितना अन्न कभी नही मंगाया गया था उतना अन्न मगाया जाये और हम आशा करते है कि अगले महीने दो महीने के अन्दर विदेशों से अन्न काफी मात्रा में आने लग जायेगा। यह भी आशा की जाती है कि जहा जहां रब्बी की फ़सल है वह भी तैयार हो जायेगी और इस तरह से हालत सुधरेगी। उन हिस्सों मे जहां खरीफ़ की फसल,—धान और मक्की— दोनों खराब हो गयी और रब्बी भी खराब हो गयी वहां की हालत तो अगले आश्विन मास के पहले तक नही सुधरेगी क्यों कि उस के पहले तक वहां कोई भी फ़सल तैयार नहीं की जा सकती है। इसलिये बहुत सोच समझ कर भारत सरकार को काम करना पड़ रहा है और इसमें जो प्रान्तीय सरकारे है वे भी उसका साथ दे रही है और हम तो यह आशा करते है कि सभी प्रान्तों के लोग हिम्मत के साथ इस विपत्ति का मुक़ाबला करके किसी न किसी तरह दिन काट ले जायेंगे। जो कुछ है उसी को सब को बांटकर खाना है और इस लिये जो कुछ थोड़ा बहुत है उसको बांटने का इन्तजाम इस वक्त सभी जगहों में राशनिंग द्वारा किया जा रहा है। मै जानता हूं कि राशनिग मे जितना अन्न मिलता है वह एक आदमी को पेट भरने के लिये काफी नही है और इसमें केवल यही नही कि उसे खुराक का कष्ट होता है बल्कि इसका भी डर है कि उसके स्वास्थ्य पर भी इसका बुरा असर पडेगा। लेकिन जैसी स्थिति आ गई है उसमें जहां तक हो सकता है उसे हल करने का प्रयत्न किया जा रहा है और आशा की जाती है कि लोगो के सहयोग और मदद से इस प्रयत्न में हम इतना तो अवश्य सफल होंगे कि कही कोई भूख से मरने न पावे। लेकिन कुछ कष्ट तो लोगों को होगा ही। और मैं आपसे यह कहूंगा कि आप यह नही समझें कि राजस्थान को कोई भूले हुए है या राजस्थान की तरफ भारत सरकार का ध्यान नही है। इसका ध्यान आपकी ओर उतना ही लगा हुआ है जितना कि और किसी भी प्रान्त की ओर और आपकी वह उतनी ही सहायता करने को मुस्तैद है जितनी सहायता वह दूसरे किसी भी भाग की कर सकती है या करने को तैयार है। फारसी की एक मिसाल है कि अगर मरना भी हो तो हम एक साथ होकर मरें। अगर कष्ट भी हो और उसे देश के सभी लोग मिल कर सहते है तो वह हलका हो जाता है। हमको आज उसी हिम्मत को जानना है, उसी साहस को उठाना है जिसके द्वारा भारी से भारी विपत्ति का मुकाबला किया जा सकता है। मै आपसे यह भी कहना चाहता हूं कि आप इतना सुनकर यह नही समझे कि हालत इतनी बुरी है कि और कोई चारा ही नही है। हालत बुरी है मगर सम्भाल के बाहर नहीं है और इसलिये सब के सहयोग के साथ प्रयत्न किया जाये और कष्ट उठा कर भी हम स्थिति को सुधार सकें तो हम भारी कष्ट से लोगों को बचा

सकेंगे। इसीलिये राशनिंग क़ायम किया गया है और मैं आशा करता हूं कि जब हालत सुधर जायेगी तो जो राशनिंग कायम किया गया है वह दूर कर दिया जायेगा।

इस समय देश की हालत और कई विषयो में भी चिन्तनीय है। अभी तीन ही साल हुये है कि हम को स्वराज मिला और स्वराज के जन्म के साथ साथ हमारे ऊपर कई प्रकार की विपत्तियों का पहाड टूट पडा। हमने यह सोच कर देश का बंटवारा मंजूर कर लिया था कि उससे शान्ति होगी और जितना देश का हिस्सा हमारे हाथ में रह जायेगा उसको हम अच्छी तरह से देख सकेंगे और सुधार सकेंगे और शातिपूर्वक उसकी उन्नति मे अपना समय लगा सकेंगे। बंटवारे के साथ साथ जिस शाति की हमने आशा की थी वह शान्ति हमे नही मिली बल्कि शान्ति के बदले में एक ऐसी अशान्ति आयी जिसका मुकाबला हमको करना पड़ा और ऐसी अशान्ति का मुकाबला शायद ही किसी दूसरे देश को करना पडा हो। भारत सरकार के सर पर ७० लाख उजडे हुये लोग आ गये जिनको न रहने का स्थान, न खाने के लिये अन्न और न पहनने के लिये कपडे थे। सभी अपने अपने स्थानों पर सुखी थे मगर अपना सब कुछ छोड़ छाड़ कर जान लेकर उन को भागना पड़ा और जब वे किसी तरह से हमारी सरहद के अन्दर आ गये तो उन्होंने सोचा कि कम से कम जान तो बची। उनके बसाने का प्रयत्न उसी समय से होने लगा। कुछ दिनो तक तो यही काम हमको करते रहना पडा कि हम किसी तरह से कही न कही उनको रहने का आश्रय दें, खाने के लिये अन्न पहुंचा दें, पहनने के लिये कपडे पहुचा दे। फिर पीछे उनको बसाने का भी प्रयत्न किया जाने लगा। इस बीच उनको बसाने के काम मे हमे कुछ सफलता मिली और आपको यह जानकर प्रसन्नता होनी चाहिये कि जो पश्चिमी पाकिस्तान से पूर्वी पजाब मे आये थे उनमे से अधिकाश खेती करने वाले थे ; उनके साथ जमीन बन्दोबस्त करके कही न कही उनको आश्रय दिया गया है। बहुतेरो को व्यापार करने के लिये रुपये की मदद दी गयी, बहुतेरे लोगो को नौकरियां दिला कर उनको सहारा दिया गया। उनके बच्चो के लिये शिक्षा का प्रबन्ध सभी जगहो मे किया गया क्यो कि भविष्य तो बच्चों का ही है। पूर्वी बगाल से भाग कर दो मरतबे लोग आये है एक बार तो १९४७–४८ में के बीच और फिर दूसरे मरतबे १९५० के आरम्भ में। वहां पर अभी काम उतनी दूर तक नही पहुचा है जितनी दूर तक कि पंजाब मे पहुचा है। क्यों कि वहां आने वाले अभी इस साल मे भी आये है और जो आये है वे अपना चित्त अभी स्थिर नही कर पाये है कि वे कहां बसेंगे, किस तरह से रहेंगे। उनमे से बहुतेरे वापस जा रहे है। मगर तो भी जो कुछ काम हुआ है वह संतोषप्रद है और मै यह कह सकता हू कि जो कुछ हुआ है अगर कोई उसे निष्पक्ष हो कर देखे तो उससे उसको संतोष होगा। इसका यह अर्थ नही कि जितना होना चाहिये वह सब कुछ हो गया है। अभी बहुत कुछ करने को बाकी है और भारत सरकार और प्रान्तीय सरकारे इसे अच्छी तरह से महसूस करती है और मै समझता हूं कि जो ज़िम्मेदारियां उन पर आ गयी है उनको अच्छी तरह से अदा करती है।

विदेशों के साथ जो हमारा सम्बन्ध रहा है वह अच्छा ही रहा है। १९४७ में जब अग्रेज़ी सल्तनत ने हमारे हाथों में अधिकार सौप दिया तो हमको विदेशो के साथ अपना सीधा सम्बन्ध जोडना पडा। उस वक्त तक दुनिया के नक्शे में भारत का कोई स्वतन्त्र स्थान नही था। भारत के राजदूत किसी भी देश मे नही होते थे। उसी वक्त से पहले पहल स्वतन्त्र भारत की ओर से

राजदूत और देशों में नियुक्त होने लग और अब प्राय. सभी बड़े और अन्य देशो में हमारे राजदूत है और उनके राजदूत हमारे देश में है। इसके अलावा जो कुछ अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति आयी उसमे हमारे प्रतिनिधियों ने जाकर ऐसा काम किया और भारत सरकार का रास्ता ऐसा रहा है कि जिससे भारत का नाम बहुत ऊंचा हुआ है। यह काम कुछ आसान नही था। हमको इस प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय कामों का पहले से अनुभव नही था और दूसरे राष्ट्रो के साथ कोई विशेष परिचय भी नही था। मगर तो भी हमारे लोगो ने इस काम को खूबी के साथ अजाम दिया और उसकी वजह से भारत का सर ऊंचा हुआ है।

देश के अन्दर जो सब से बडा काम इन तीन वर्षो के अन्दर हुआ है वह यही हुआ है कि इस देश के लोग आज एक सविधान के अधीन एक कोने से दूसरे कोने तक रह सकते है। और केवल वही हिस्सा नही जो पहले ब्रिटिश राज के सीधे शासन के अन्दर था बल्कि भारतवर्ष का वह हिस्सा भी जो हमारे देश के नरेशों के अधीन था एक छत्र के अन्दर आकर सब मिल जुल कर एक होकर काम करना चाहता है। आप को यह जानकर गर्व होना चाहिये कि यद्यपि भारत के दो कोने दो पख की तरह कट गये है मगर तो भी जो उसका बचा हुआ भाग है वह इतना बडा भारत है जितना कि आज के पहले कभी भी इतिहास के अन्दर एक सविधान के नीचे, एक राज्य के अन्दर, एक छत्रछाया के अन्दर नही हुआ। इस काम के शुरू करने मे हमारे देश के नरेशों का कम हाथ नही रहा, उन्होने काफ़ी त्याग की भावना दिखलायी है। यह होना भी था। एक तरफ तो जनता की जागृति थी और दूसरी तरफ जब ब्रिटिश गवर्नमेंट ने यह मान लिया कि भारत की जनता के हाथो में अधिकार सौपना अब मुनासिब है, तब हमारे देश के अपने राजा कैसे इस बात को नही मानते कि अब जमाना आ गया है कि जनता के हाथों मे अधिकार सौप देना ही श्रेयस्कर काम है। यह उनकी अपनी बुद्धि, दूरदर्शिता और देशप्रेम का परिचायक है कि उन्होंने बहुत आसानी से इस काम को पूरा होने दिया और पूरा कर दिया और आज भारत के लिये यह गौरव की बात है कि हमारा देश एक सविधान से शासित हो रहा है। यह काम बडा है। मगर साथ ही साथ हमारी जवाबदेही भी बहुत बढ गयी है। मेरा अपना विचार है कि स्वराज लेना आसान था, स्वराज चलाना उससे कठिन है और जिस वक़्त हम ब्रिटिश सरकार से लड रहे थे उस समय हमारे सामने एक ध्येय था जिसमे सभी लोग शरीक हो सकते थे और सभो ने मिल जुल कर वहा तक पहुचने मे साथ दिया। जब हम उस जगह तक पहुच गये तो हमारे अपने अपने विचार भी सामने आने लगे, जो मतभेद दबा था वह भी प्रकट हो गया और आज हम एक ऐसी सधिकालीन स्थिति मे है कि हमारे सामने तरह तरह के प्रश्न आते है और तरह तरह के विचार वाले तरह तरह के विचार रखते है। इन सब कठिनाइयों के होते हुये अगर आप देखते है कि शासन का काम उतना अच्छा नही और सुव्यवस्थित नही किया गया है जितना होना चाहिये था तो आप समझे कि इसमे किसी का दोष नही है। वह तो स्थिति का स्वाभाविक फल है। मगर इतनी कठिनाइयों के बावजूद जो आज इस देश को हम स्वतन्त्र रख सके है और कुछ अच्छा काम भी कर सके है उसके लिये ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये। अभी हमारे लोग शायद बधाई के पात्र नही है मगर ईश्वर धन्यवाद का पात्र तो है ही क्यों कि हमारी दुर्दशा इससे कहीं बुरी हो सकती थी जो है। मैं तो आशा रखता हूं कि जिस हिम्मत और उत्साह

के साथ भारत के लोगों ने स्वराज प्राप्त किया उसी उत्साह और हिम्मत के साथ आज देश को समुन्नत बनाने में सब को साथ देना चाहिये और मेरी यह धारणा है कि जितने त्याग और कष्ट उठाने की ज़रूरत स्वराज पाने के समय थी उससे अधिक ज़रूरत इस वक्त त्याग करने और कष्ट उठाने की है । जब हम इसके लिये तैयार होंगे तभी हम देश को उन्नत कर सकेगे और देश को हरा भरा बना सकेंगे, ग़रीबी यहां से दूर कर सकेगे निरक्षरता दूर कर सकेंगे, बीमारियां यहां से दूर कर सकेगे और वैसा ही बना सकेगे जैसे का चित्र महात्मा जी अपने सामने रखते थे और जिस तरह के भारत का स्वप्न हम सब देखा करते थे। हर एक भारतवासी का चाहे, ग़रीब से गरीब क्यों न हो, मजदूरी का काम क्यों न करता हो, चाहे समाज में बड़े बड़े स्थान पर क्यों न हो धनी और हर तरह से प्रतिष्ठित पुरुष क्यों न हो, कर्तव्य होना चाहिये कि इस देश को और समुन्नत करने मे उस से जो कुछ बन पड़े वह करे। हम में से हर आदमी को अपने धर्म का पालन करना चाहिये और जब सब अपने कर्तव्य का पालन करने लग जायेंगे तो मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि समय आयेगा और जल्द समय आयेगा कि जब सब की सच्चाई और सब की सद्भावना ऐसा वायुमडल पैदा कर देगी जो देश की समुन्नति के लिये अत्यन्त उपयुक्त होगा और जिसमें देश पर्याप्त उन्नति कर सकेगा।

आप जानते है कि मेरी एक अजीब हैसियत है। हमारे संविधान के मातहत सब काम मेरे नाम से होते है । बहुत कागज़ों पर मुझे दस्तखत भी करने पड़ते है। कुछ काम ऐसे है जो मेरे नाम पर होते है पर जिनकी खबर भी मुझे नही होती क्यों कि सविधान का ऐसा ही नियम है। मगर यह सब होते हुये भी आप यह नही समझे कि मै बिल्कुल एक निकम्मा आदमी हू और बेकार जगह पर बैठा हू । जो कुछ भी सेवा मुझ से हो सकती है वह मै करता हूं । इन सभाओं में जिन बातों को मै महत्व देता हूं उनके बारे में लोगों से कहता हू और यह सुझाता हू कि किस तरह से लोग इस देश को ऊंचा उठाने में मदद दे सकते है। इसी भाव को लेकर मैं इन दिनों फिर रहा हूं और देश मे काफी घूमा हूं और बहनो और भाइयो को सुनाता हू और जिन भाइयों और बहनों से मिलने का, कुछ कहने का मौका नही मिलता है मै उम्मीद करता हूं कि जो भाई और बहन सुनते है उन तक किसी न किसी तरह पहुचा देगे। तो आप से मै यही चाहता हू कि अपने देश को समझे और इस बात को महसूस करे कि अब इस देश में जो कुछ बनता है उसका श्रेय आपको ही मिलना है, और जो कुछ बिगड़ता है उसकी शिकायत आपकी ही होती है और अभी कुछ दिनो के बाद जब चुनाव होगा, तब आपको अपने प्रतिनिधि चुनकर भेजने होंगे कि वे इस सारे भार को अपने ऊपर उठा करके देश की भलाई के लिये आपकी मर्ज़ी के मुताबिक़ काम कर सके। वह चुनाव इतना बड़ा होगा कि जितना बड़ा चुनाव भारत और दुनिया के इतिहास में कभी नही हुआ। १७–१८ करोड़ आदमी उसमें वोट देंगे और ३५०० के लगभग मेम्बर प्रान्तों की धारा सभाओं के लिये और केन्द्रीय संसद् के लिये चुने जायेंगे। इतने आदमियों को वोट देने का इन्तज़ाम करना एक इतना बड़ा काम है कि जितने बड़े काम का सामना आज तक किसी भी दूसरे देश को नही करना पड़ा है। हमको अपने इस प्रजातन्त्र का थोड़ा ही अनुभव अभी है और हमको इतने बड़े काम का सामना करना पड़ रहा है। हमारे प्रजातन्त्र की परीक्षा इसी के साथ हो रही है। अगर हम अच्छे आदमी चुनकर भेजेंगे जो अच्छा काम करेंगे तो उससे बढ़ कर हमारे लिये कोई खुशी की बात नहीं

होगी। अगर ग़लत आदमियों को चुन कर भेजा तो फिर हम दूसरों पर दोष नही डाल सकेगे। इसलिये मै चाहता हू कि भारत के सभी स्त्री और पुरुष अपने अधिकार को समझे और अधिकार के साथ साथ अपने कर्तव्य को भी समझे। अधिकार तो यह है कि उनके हाथो में शासन पूरी तरह से आ गया है और कर्तव्य यह है कि उसको इस तरह से चलाया जाये कि देश की भलाई हो और अगर प्रत्येक का स्वार्थ नही तो प्रत्येक की भलाई हो। अगर इस भावना को लेकर आप देश का काम करेगे तो मुझे इस बात का विश्वास है कि ऐसे लोग निकलेगे जो आज की त्रुटियो को दूर कर सकेगे। और अब शायद यह भी उम्मीद की जाती है कि आहिस्ता आहिस्ता स्थिति भी बदलेगी, सुधरेगी और हम हर तरह से उन्नति के पथ पर चल सकेगे। इसलिये मै सबको जाकर यह कहता हू। मै किसी खास पार्टी या दल की तरफ़ से कुछ नही कहता हूं। मै तो कहता हू कि आप अच्छे से अच्छे आदमी को चुने ऐसे आदमी को जो सच्चाई के साथ, बहादुरी के साथ, देश प्रेम के साथ देश की सेवा करे और अगर ऐसा होगा तो उसका लाभ हम मे से प्रत्येक उठा सकेगा और अगर ऐसा नही हुआ तो हम मे से प्रत्येक को हानि भी उठानी पड़ेगी।

म्युनिसिपैलिटी का आपने जिक्र किया कि उसको आर्थिक कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। यह तो आपने ठीक ही कहा है। आपकी म्युनिसिपैलिटी की जो स्थिति है वही देश की सभी म्युनिसिपैलिटियो की है और प्रान्तीय सरकारो की और केन्द्रीय सरकार की भी है। सब का खर्च बढ रहा है और आमदनी अभी बढ़ाई नही जा सकती है। मगर चतुराई तो इसम है कि जो कुछ आमदनी हो उसी म काम खूबी से चलाया जाये। राजस्थान तो विशेषकर एक ऐसा प्रदेश है कि जहा बहादुर क्षत्रिय और दूसरे व्यापारी बसते है। जहा जरूरत होगी मै उम्मीद करता हू कि वहा क्षत्रिय काम करेगे। मगर इस वक़्त ज़रूरत व्यापार बुद्धि की है जो बुद्धि आज सारे ससार मे, और नही तो कम से कम सारे भारतवर्ष मे व्यापार चला रही है वह बुद्धि क्या यहा की व्यवस्था नही चलायेगी। चलाना चाहिये और यहा कम से कम यह आदर्श सामने आना चाहिये कि कम खर्च मे अच्छा काम कर दिखलावे। यहा पर आपकी म्युनिसिपैलिटी खूब अच्छी होनी चाहिये और मै आशा करता हू कि सब लोगो का सहयोग मिलेगा तो यह आश्चर्य की बात नही कि वह बहुत खूबी से काम करे।

मै और आपसे क्या कहू। आपने जो आदर और प्रेम दिखलाया उसके लिये एक बार फिर धन्यवाद देना चाहता हूं।

गांधी मेला, गलता

तारीख़ १२-२-५१ को गलता, जयपुर मे गांधी मेले मे राष्ट्रपति जी ने उपदेश देते हुए कहा--

बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात का बहुत अफ़सोस है कि मै यहां बहुत कम समय के लिये ही आ सका हूं। आज का दिन ऐसा था कि आप सब लोगों से भेंट करके आप सभी भाइयो और बहनो के साथ चर्चा

चलाने मे मै अपने को धन्य मानता और साथ साथ काम भी चलता। मगर मेरा कार्यक्रम पहले ही बन चुका था। उसी मे से १०—५ मिनट निकाल कर मै यहा आया हू। इसलिये आप मुझ से यह उम्मीद नही रखें कि मै कोई यहा बडा भाषण दे सकूगा। अगर भाषण सुनने की इच्छा हो तो आप लोग जयपुर चल कर भाषण सुनें। आज महात्मा जी का पुण्य दिवस है। आप इसे केवल रस्म की तरह नही मनावें बल्कि महात्मा जी ने जो कुछ सिखाया और बताया उसका प्रचार करके इस दिन को मनावें तब तो इस उत्सव का कुछ न कुछ अर्थ हो सकता है और अगर सिर्फ़ रस्म की तरह कुछ बहन और भाई आये और चले गये तो इससे कुछ लाभ नही। महात्मा जी को स्वर्गवासी हुये तीन साल बीत गये। इस बीच देश में बहुत उथल पुथल हो गया है। यह हर्ष की बात है कि महात्मा गाधी जी ने जो कुछ सिखाया उसका आप प्रचार कर रहे है जिसमे हरेक मनुष्य अपने जीवन मे उसी के अनुसार काम करने का प्रयत्न करे। यह सतोष की बात है कि आज के इस पुनीत दिन पर इतने लोग इस प्रदर्शनी में शरीक हुए है।

मेरा जो अभी का कार्यक्रम है उसमे १५ मिनट के लगभग देर हो चुकी है इसलिये मै आप सब भाई और बहनो से छुट्टी चाहता हू।

मेयो कालेज मे पारितोषिक वितरण

तारीख १३ फर्वरी को मेयो कालेज के वार्षिक पारितोषिक वितरण के अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा—

राजन, आचार्य महोदय, बहनो और भाइयो,

इस समारोह में भाग लेने में मुझे विशेष हर्ष हुआ है। युवक युवतियां ही इतिहास के दाय के उत्तराधिकारी हैं और उन्ही पर देश के भविष्य और भाग्य का उत्तरदायित्व पड़ने वाला है। उन्ही के आदर्श, उन्ही के उत्साह, उन्ही की लगन और उन्ही की निष्ठा से देश में सुख और समृद्धि की वृद्धि हो सकती है। अतः उन से मिलने में मुझे सर्वदा हर्ष होता है और विशेषतया ऐसे अवसर से तो और भी अधिक प्रसन्नता होती है जिसमें कि मै जीवन के विभिन्न क्षेत्रों मे विशेष योग्यता प्रकट करने वाले युवक युवतियों के सम्मान में उपहार इत्यादि देकर भाग ले सकूं। वे सब बधाई के पात्र है। साथ ही जिन विद्यार्थियों को आज किसी प्रकार का उपहार नही मिला है उन्हे यह समझना चाहिये कि जीवन में जो सब से महत्वपूर्ण बात होती है वह सफलता उतनी नहीं होती जितनी कि ऐसी साधना जो कठिनाइयों और मुसीबतों के सामने कम न होकर उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है। अतः उन्हे यदि आज वैसी सफलता नहीं भी मिली है जितनी कि उनके अधिक भाग्यशाली भाइयों को मिली है तो भी उन्हें अपनी साधना और प्रयास में किसी प्रकार की कमी न करनी चाहिये। और सर्वदा ही अदम्य उत्साह और अक्षय निष्ठा से जीवन में चरम सफलता प्राप्त करने का प्रयास करते रहना चाहिये।

मैं समझता हूं कि इस विद्यालय का उनसे यही तकाजा है। इसके इतने दीर्घकालीन जीवन मे कितने ही राजपुत्रों ने यहां शिक्षा पाई और यहां से जाकर देश और राजस्थान की सेवा की।

इस विद्यालय ने उन्हें वर्त्तमान विचार धारा और आदर्शों से अनुप्राणित किया। कुछ सीमा तक इस में प्रदत्त शिक्षा का यह परिणाम था कि जब १९४७ में राजस्थान के और अन्य रियासतों के नरेशों के सामने राष्ट्रीय एकता और निजी प्रभुत्व में से एक को चुनने का प्रश्न उत्पन्न हुआ तो उन्होंने स्वेच्छा से और हर्ष पूर्वक राष्ट्रीय एकता को पसन्द किया और अपने प्रभुत्व को संघ सरकार में विलीन कर दिया। इस प्रकार की राजनैतिक क्रान्ति के उदाहरण संसार के इतिहास मे कम ही मिलते है और मेरा विचार है कि इस अनोखी क्रान्ति में स्वेच्छा से भाग लेने की शक्ति उन नरेशों में से अनेकों को उन्हीं आदर्शों से प्राप्त हुई जिनका बीजारोपण यह विद्यालय इतनी दशाब्दियों में बराबर करता रहा है।

आज परिस्थितियां बदल गई है और राजपुत्रों की शिक्षा के जिस ध्येय से इस विद्यालय की स्थापना की गई थी वह अब इसके सामने नहीं रहा है। हम अब ऐसे समाज के निर्माण का प्रयास कर रहे है जिसमें सब नागरिकों के समान अधिकार और उत्तरदायित्व होंगे और जिस में वे सब एक साथ ही राजा और प्रजा दोनों होंगे। मुझे इस बात से सन्तोष है कि इस बदली हुई परिस्थिति को इस विद्यालय के संचालकों ने यथा समय समझ लिया है और इस विद्यालय को अब जनता के प्रत्येक वर्ग और भाग के लिये खोल दिया है जिससे कि यह साधारणतया भारत के और विशेषतया राजस्थान के नागरिको की वैसी ही सफल सेवा कर सके जैसी कि अपने लम्बे जीवन मे इसने राजपुत्रों की की थी।

हमारे देश मे ऐसे अनेक युवक-युवतियों की आवश्यकता है जिनमें नेतृत्व की क्षमता हो और जो मानसिक, शारीरिक और चारित्रिक दृष्टियों से इतने सक्षम और पुष्ट हों कि सहज में ही अपने देश भाइयों के पथ-प्रदर्शन और उत्साह का कार्य कर सकें। मैं समझता हूं कि इस प्रकार के चारित्रिक गठन और मानसिक विकास में आप के जैसे विद्यालयों का महत्वपूर्ण भाग है और रहेगा।

सार्वजनिक विद्यालय या पब्लिक स्कूल यह काम सफलतापूर्वक इसीलिये ही कर सकते है क्योकि वे अपने विद्यार्थियो को केवल किताबी शिक्षा देकर ही सन्तुष्ट नही होते वरन् उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को ऐसे आदर्शो के सांचे मे ढाल्ते है जो सामूहिक जीवन के लिये प्रत्येक दृष्टि से अधिकतम उपयुक्त है, और यह कार्य ऐसे सामाजिक और शैक्षिक वातावरण में करते है जिसमें यह अत्यन्त सरलता और स्वाभाविकता से सफलतापूर्वक किया जा सकता है। विद्यार्थी अपने शिक्षा काल में अपना सम्पूर्ण जीवन इन विद्यालयों और इनके छात्रावासो में सामूहिक रहन सहन के तरीके से बिताते है, और इस प्रकार उन पर केवल वे ही प्रभाव सतत कार्य करते है जिनके द्वारा ये विद्यालय इन विद्यार्थियों के जीवन को ढालना चाहते है। अतः अन्य विरोधी प्रभावों से सर्वथा मुक्त और अछूता होने के कारण अपने ही आदर्शों के अनुरूप अपने विद्यार्थियों को बनाने में इन्हें कोई बड़ी बाधा नही होती। साथ ही विद्यार्थियों को सामूहिक जीवन को सफलता से चलाने के लिये जिन गुणों की आवश्यकता होती हैं वे सब इन विद्यालयों में व्यावहारिक रूप में सामूहिक जीवन बिताने के कारण सहज में ही प्राप्त हो जाते हैं।

किन्तु साथ ही मै एक बात की ओर इन विद्यालयों के संचालकों और आचार्यों का ध्यान अवश्य खीचना चाहता हूं । उन्हें इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि जिस नेतृत्व की क्षमता वे अपने विद्यार्थियों मे पैदा करना चाहते है वह नेतृत्व मानव जाति के उपकार और सेवा की साधना से अनुप्राणित नेतृत्व हो न कि वह नेतृत्व जो अपने से कम भाग्यशाली और योग्य लोगो की शक्ति और समय को अपने निजी स्वार्थो को पूरा कराने मे लगाने का होता है। प्राचीन काल में हमारे देश में जो गुरुकुल थे उनका ध्येय भी अपने विद्यार्थियों को नेतत्व की क्षमता देना था किन्तु वे इसी प्रकार के नेतृत्व के प्रदान करने का प्रयास करते थे कि उनका विद्यार्थी भगवान कृष्ण के समान अपनी अहम्मन्यता को भूल कर कर्तव्य पालन के लिये अवमर पड़ने पर सारथी भी बन जाये। समाज रथ के संचालन का भार शिक्षित दीक्षित व्यक्तियों का और विशेषतया उनमे से ऐसे व्यक्तियों का ही होता है जिनकी नसों में योवन का रक्त बहता है और जिन के मन में भविष्य को सुन्दर और सुखद बनाने का अदम्य उत्साह होता है। अतः इन गुरुकुलों का धर्म है कि इन समाज के भावी सारथियों के मन में यह भावना और श्रद्धा कूट कूट कर भर दें कि उनके अपने जीवन का चरम विकास इसी बात में है, कि वे प्रत्येक मानव के जीवन को सुन्दर और सफल और सुखद बनाने में अपने को उत्सर्ग कर दे ।

साथ ही मै यह बात भी स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि यह आदर्श कुछ सीमा तक कोरे नागरिकता के आदर्श से भिन्न है । नागरिकता के आदर्श के पीछे यह भावना बनी रहती है कि अच्छाई बुराई का ध्यान किये बिना अपनी जाति या अपने ही राष्ट्र का हित साधन करना चाहिये चाहे फिर ऐसा करने से अन्य जातियों का कितना ही अपहित या हानि क्यों न हो। हमारी ऐतिहासिक परम्परा और हमारे पूर्वजों की शिक्षा ऐसी नही है । हमने तो अपने स्वतत्रता सघर्ष मे भी इस बात को क्षण भर के लिये नही सोचा था कि हम अपने विदेशी शासकों के जातीय हितो को अपने स्वार्थ लाभ के लिये हानि पहुंचाये । हमारे महान् नेता महात्मा गांधी ने सर्वदा ही हमारे सामने यह आदर्श रखा कि हम कभी भी अपने ध्येय लाभ के लिये ऐसे रास्ते को न अपनाये जो आध्यात्मिकता या मानवता की दृष्टि से बुरा है। अतः जहां देश प्रेम की भावना को जागृत करने का प्रत्येक विद्यालय और खास तौर से आपके ऐसे विद्यालय का कर्तव्य है वही उन सब का यह कर्तव्य भी है कि वह विद्यार्थियों को उस मानवता के आदर्श से ओतप्रोत करे जो प्रत्येक मानव मे भगवान की झांकी देखना सिखाता है, और हर प्रकार के भेदभाव के विना प्रत्येक मानव को हृदय से लगाने की इसलिये प्रेरणा देना है कि गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में "ना जाने का भेष में नारायण मिल जायं" ।

यह विद्यालय ऐसे प्रदेश में स्थित है जिस के कण कण में हमारे देश का अतीत इतिहास भरा हुआ है और जिस को यह श्रेय प्राप्त है कि हर प्रकार के राजनैतिक झझावातो को सहकर भी उसने देश का मस्तक ऊंचा रखा है । अतः इस विद्यालय का तो खास तौर पर यह कर्तव्य है कि यह उस गौरव की रक्षा के खातिर, उस ऐतिहासिक परम्परा को बनाये रखने के खातिर, और सामूहिक सेवा के उस ऐतिहासिक आदर्श को पल्लवित और प्रस्फुटित करने के खातिर अपने आन्तरिक शैक्षिक क्षेत्र में वैसा वातावरण बनाये जो उनके लिये आवश्यक है।

इस वातावरण के बनाने में जितना शिक्षा माध्यम का भाग है उतना ही भारतीय साहित्यक दाय का भी है। भारतीय भाषाओं और भारत की प्राचीन भाषाओ अर्थात् संस्कृत और पाली मे जो साहित्य है वह अत्यन्त समृद्ध है और मानवता के दृष्टिकोण से उसका अध्ययन, यदि अधिक नही तो, कम से कम उतना तो आवश्यक है ही जितना कि अभारतीय भाषाओ के साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। इसका महत्व इसलिये ही नही है कि साहित्य की दृष्टि से वह अत्यन्त उच्चकोटि का है बल्कि इससे भी कही अधिक इसलिये आवश्यक है कि हमारी अपढ़ कही जाने वाली जनता के दैनिक जीवन मे वह साहित्य सर्वदा प्रतिध्वनित होता रहता है। भारत की ऐसी कोई दिशा नही, ऐसा कोई ग्राम नही, ऐसा कोई नगर नही जिस में साधारण जनो को कर्ण की दानशीलता और हरिश्चन्द्र की सत्यनिष्ठा का ज्ञान न हो। हमारे देश में कितनी ही विभिन्नताये क्यो न हो उसमे यह एकता तो सर्वदा वर्तमान रही है और आज भी है। इसी एकता के सहारे हम हर प्रकार की राजनैतिक और आर्थिक कठिनाइयों और विपदाओ को सह कर भी आज एक बने हुए है। क्या हमारे विद्यालयों का यह धर्म नही कि हमारे देश के असंख्य शिक्षित अशिक्षित जनो के हृदय की इस बुनियादी एकता की बात अपने युवक युवतियों को उनके शिक्षा काल मे बताये? हो सकता है कि अभारतीय भाषाओं मे हमारे साहित्य की कृतियो से साहित्यक दृष्टि से कही अधिक अच्छी कृतिया हों किन्तु इस बात से कौन इन्कार कर सकता है कि उन भाषाओ का साहित्य हम अपनी साधारण जनता के हृदय में नही बैठा सकते और उनके अन्तर्जगत में सक्रिय प्रेरणाओ का यथोचित ज्ञान हमें वह नही करा सकता। मेरा विचार है कि सच्चा प्रगतिवाद यही है कि हम अपनी जनता के हृदय की धडकन को पहचाने उनके दिल और दिमाग मे काम करने वाली ताकतो को जाने और उनको समझकर अपनी जनता के मन और मस्तिष्क को उस दिशा को ओर ले चले जिस की ओर चलने से उनकी आर्थिक और सांस्कृतिक समस्यायें शीघ्रातिशीघ्र हल हो सकती है। इस पहचान के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे विद्यालयों में भावी नेताओं को इस देश के साहित्य का--उस साहित्य का जिसमे इस देश का ऐतिहासिक हृदय व्यक्त होता और धड़कता रहा है--समुचित ज्ञान कर दे। मेरा आप से अनुरोध है कि आप इस ओर ध्यान दें और अपने विद्यालय मे इस बात का समुचित प्रबन्ध करे।

मैंने पर्याप्त समय ले लिया है। अपना प्रवचन समाप्त करने से पहले मै यह कहना चाहता हू कि मुझे आपकी रिपोर्ट से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद आप का विद्यालय हर दिशा में प्रगति करता रहा है और इसके विद्यार्थी विभिन्न दिशाओं मे और खास तौर से साक्षरता के आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेते रहे है। यद्यपि मै आपको यह आश्वासन नही दे सकता कि आर्थिक दृष्टि से वर्त्तमान अवस्था में सरकार आपकी अधिक सहायता करेगी फिर भी मै यह अवश्य कह सकता हूं कि आप के प्रयास की सरकार कद्र करती है और मुझे आशा है कि आप अपने प्रयास मे बराबर लगे रहेंगे और इस विद्यालय को और भी अधिक उपयोगी और समुन्नत बनायेंगे। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि वह आपको वह शक्ति वह उत्साह और सद्बुद्धि दे जिससे आप को पूर्ण सफलता मिले और भारत के युवक युवतियों की अनेक वर्षों तक आप सेवा करते रहे।

दरगाह शरीफ़, अजमेर

दरगाह शरीफ़ अजमेर के खादिमों के द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब में तारीख १३-२-५१ को ५-४५ बजे शाम को राष्ट्रपति जी ने कहा--

जनाब आली,

यह पहला मौका नहीं है कि मैं यहा जियारत करने आया हू। इसके पहले भी मैं यहां जियारत कर चुका हूं। मगर आज एक दूसरी हैसियत से यहां आया हू।

इस वक्त हिन्दुस्तान की जो कैफियत है उससे आप हर तरह से वाकिफ़ है। हमने अभी हाल में ही अपने लिये एक क़ानून तैयार किया है और उसी कानून के मातहत इस वक्त की सरकार चल रही है। उसमे हमने साफ साफ लिख दिया है और उसी के मुताबिक़ हमारी कारवाई भी हो रही है कि हिन्दुस्तान के अन्दर जितने मज़हब के लोग है, चाहे वे हिन्दू हों, मुसलमान हों, पारसी हों, ईसाई हों, सिक्ख हो, सबों के साथ एक नज़र से बर्ताव किया जायेगा और उसी तरीके से हम काम कर रहे है। हम चाहते है कि सभी एक दूसरे का खयाल रखे जिसमें इस काम में कामयाबी हासिल हो।

यहा जो कोई आता है वह अपने साथ कुछ न कुछ बरकत ले जाता है। मुझे खुशी है कि में यहां आ सका। मै भी यहां से कुछ बरकत लेकर जाऊंगा।

इस वक्त जरूरत इस बात की है कि हिन्दुस्तान की खिदमत करने वाले जितने लोग हैं सब अपने दिल को साफ और पाक बना कर रखे तभी हमारे देश के अन्दर जितने धर्म के मानने वाले लोग है, वे सभी एक दूसरे के साथ मोहब्बत का बर्ताव कर सकेंगे। इस वक्त यह भी जरूरत है कि हमारे मज़हबों के जितने लीडर लोग है इस काम में मदद दें और अगर सभी मदद देंगे तो इसमें कामयाबी हासिल होगी।

मै आप सब का दिल से शुक्रिया अदा करता हू कि आपने मुझे यह मौका दिया कि मै यहां हाज़िर हो सकू।

अजमेर में नागरिक अभिनन्दन

ता. १३-२-५१ को ६-१५ बजे शाम में अजमेर म्युनिसिपैल बोर्ड और अजमेर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब मे राष्ट्रपति जी ने कहा —

अजमेर म्युनिसिपैल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सभापति जी, और दूसरे सदस्यगण, बहिनो और भाइयो,

आप ने मेरा प्रेम के साथ स्वागत किया और मानपत्र दिये इस के लिये मै आप सब को धन्यवाद देता हूं।

आप ने अपने बोर्डो की कठिनाइयों का थोड़ा बहुत ज़िक्र मानपत्र मे किया है । मैं इतना ही इस समय कह सकता हू कि जो कठिनाइयां आप के सामने हैं वे ही देश के प्राय: सभी बोर्डों के सामने हैं, यहां तक कि प्रान्तीय सरकारो को और केन्द्रीय सरकार के सामने भी वही कठिनाई है अर्थात् खर्च का बढ़ना और आमदनी का ज्यो का त्यों रहना जिस की वजह से पैसे की कमी होती है । पर आप यह विश्वास रखें कि आप के प्रति किसी तरह का ऐसा भाव नहीं है कि आप की मांग की उपेक्षा की जाये। जितनी सहायता आप चाहते हैं वह नही मिलती है तो उस का कारण उपेक्षा नही असमर्थता है और मैं आशा रखता हू कि आप की ज़रूरतो पर ध्यान दिया जायेगा और जहा तक हो सकेगा भारत सरकार आपकी मदद करती रहेगी।

आप के यहा अभी तक नये संविधान के अधीन जैसी आप आशा करते थे नये किस्म का कारबार अभी ठीक से शुरू नही हो पाया है। अगर विचार करे तो पता चलेगा कि और कारणो के अलावा इस के न होने का आर्थिक कारण भी है। क्यो कि यह प्रान्त छोटा प्रान्त है और इतने छोटे प्रान्त को एक अलग शासन का सारा सामान देना और शासन का काम उसके ऊपर लादना और अधिक खर्च किये बगैर नही हो सकता है। इस मे खास कर भारत सरकार को आर्थिक दृष्टिकोण भी अपने सामने रखना पडता है । पर इतना तो मैं मानता हू कि जैसे सारे देश को आज प्रजातन्त्र का लाभ मिल रहा है वैसे ही आप को भी मिलना चाहिये और इस माने मे तो आप को लाभ पहिले ही से मिल भी रहा हैं। आप के सदस्य ससद् में बैठते है और बैठे हुए है। इस लिये अगर आप को यहा अलग शासन कायम करने की सम्मति ससद् नही देती तो आप इस की चिन्ता छोड दे, और इस प्रयत्न मे रहे कि आप को यहा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्युनिसिपैलिटी मे जो अधिकार मिले है उन का अच्छे से अच्छा प्रयोग किया जाये। अब आप को यह भी अवसर है कि आप अच्छे से अच्छे लोगो को चुन कर केन्द्रीय ससद् मे भेजे ताकि वे आप की उचित सेवा करे।

आप की यह माग है कि आप के यहा के विद्यार्थियो को दूसरी जगहो मे स्थान मिलना चाहिये और जो आप यहा के शिक्षित वर्ग है उन को भी सरकारी नौकरियो मे स्थान मिलना चाहिये । यह माग बजा है। आप जानते है कि इस वक्त जो संविधान हमारा बना है उस मे हम ने इस भेदभाव को एकबारगी उठा देने का विचार किया है। एक प्रान्त और दूसरे प्रान्तो के बीच जो बहुत तरह तरह का भेदभाव हुआ करता था उसे हम एकबारगी उठा नही सके है तोभी उसे कम अवश्य कर रहे है। सभी शिक्षित लोगो को आज कल सरकारी नौकरियां नही मिल रही है । आप यह नही समझे कि यह दिक्कत आप के ही सूबे मे है बल्कि सारे भारतवर्ष मे है। आज जितने ग्रेजुएट हमारी यूनिवर्सिटियो मे से निकल है या जितने मैट्रिक्युलेट स्कूलो मे से पास कर के निकलते है उन मे से सब को सरकारी मुलाज़िमत नही दी जा सकती, उन को कोई न कोई दूसरा प्रबन्ध अपने लिये सोचना ही पड़ता है। यह तो हमारे शिक्षा क्रम का दोष है कि उन को हम केवल सरकारी मुलाज़िमत के लिये ही तैयार करते है और यह सोचते है कि उस में ही उन का गुज़ारा होना चाहिये । अब तो भारत का जो शिक्षित वर्ग है उस के सामने हज़ारों तरह के काम है जिन मे

सरकारी मुलाजिमत भी एक है । देश का काम इतना बडा, इतने प्रकार का और इतना फैला हुआ है कि उस में सभी लोगों के लिये स्थान है । मगर इस वक़्त हमारी ऐसी शिक्षापद्धति है और हम ने अपने को ऐसा बना लिया है कि जिस की वजह से यह स्थिति हो रही है । एक तरफ तो अच्छे लोगो की जरूरत रहती है और दूसरी तरफ दूसरे प्रकार से अच्छे लोग बेकार पड़े हुए है । तो आज कल यह जो एक प्रकार वैषम्य पैदा हो गया है उस को दूर करने का काम गवर्नमेन्ट का और जनता दोनों का है। दोनों का सहयोग होगा तो यह दिक्क़त भी दूर होगी । इस ओर भी गवर्नमेन्ट प्रयत्न कर रही है । मगर अभी जो हमारी स्वतन्त्र गवर्नमेन्ट बनी है वह है ही कितने दिनों की ? हम को स्वतन्त्र हुए तीन वर्ष बीते है और हम ने जो प्रजातन्त्रात्मक राज क़ायम किया उसका अभी एक ही साल बीता है और इस अर्से मे हजारों तरह की दिक्कते और मुसीबते हमारे सर पर आयी जिन का मुकाबला हम को करना पडा । पर हम न मुकाबला किया है । इस मे कोई मायूसी और घबडाने की बात नही है कि आज जितना रचनात्मक काम कर के हम को दिखलाना चाहिये था उतना हम नही दिखला पाये है । इस का कारण तो यही है कि हमारे सामने और दूसरी मुसीबते रही है जिन के सुलझाने मे हमे अपना सारा समय और सारे साधन लगाने पडे है । अब जैसे जैसे सारी स्थिति सुधरती जायेगी हमारा रचनात्मक काम बढता जायेगा । और देश की उन जरूरतो को हम पूरी कर सकेगे जिन को पूरी करने के लिये हम ने स्वराज का आन्दोलन उठाया था और उसे प्राप्त किया था । मुझे आशा है कि आप का अजमेर, छोटा इलाका होते हुए भी इस बारे मे किसी से पीछे नही रहेगा ।

इस समय सब से बडा सवाल जो सब को सता रहा है वह तो अन्न का कष्ट है और आज मै जब रास्ते मे आ रहा था तो मुझ से कुछ लोग मिले और मैने सुना कि आप के पडौस राजस्थान मे और आप के यहा भी अन्न का कष्ट है। यह कष्ट भी आज भारतवर्ष के थोडे हिस्से को छोड कर सारी जगहो मे फैला हुआ है । इस के कारण कुछ हद तक मनुष्य और कुछ हद तक प्रकृति है । कही अनावृष्टि के कारण, कही अतिवृष्टि के कारण, कही बाढ की वजह से और भूकम्प की वजह से और अब कही टिड्डियो की वजह से जो फसल खेतों मे लगी हुई थी वह खराब हो गई और जितना अन्न हम पैदा कर सकते थे नही कर सके । इस कमी को भी दूर करने का प्रयत्न गवर्नमेन्ट कर रही है और मै आशा करता हू कि महीने दो महीने के अन्दर हम स देश मे बाहर से अन्न ला सकेगे । और उस को आपस मे बाट कर जो कष्ट है उस को कुछ हद तक दूर कर सकेंगे । पर पूरी तरह से तो कष्ट तभी दूर होगा जब ईश्वर की दया होगी और इस देश मे फ़सल पैदा होगी । मै आप को विश्वास दिलाना चाहता हू कि हम ग़ाफिल नही है । जो कुछ मनुष्य कर सकता है हम कर रहे है । इस समय जो राशनिग की कटौती हो गई है वह इसी मुश्किल की वजह से हो गई है । जो कुछ हमारे पास है उस को सभी बांट कर खाये तो थोड़ा थोड़ा सभी को मिल सकता है । अगर ऐसा नही होगा तो मुमकिन है कि कुछ लोगो को तो भर पेट मिल जाये पर बहुत लोगो को बिल्कुल नही मिलेगा । देश में जो कष्ट आया है तो सभी का यह फ़र्ज़ हो गया है कि इस कष्ट को राशनिंग के

ज़रिये आपस में बांट लें और सभी लोग इसे बर्दाश्त कर के काम चलाते रहें। मैं उम्मीद करता हूं कि जल्द अन्न काफी तादाद में देश में आ जायेगा और आप का कष्ट दूर होगा ।

इस प्रकार के और भी कितने मसले देश और विदेशों के सामने हैं जिन पर हमारी गवर्नमेन्ट के लोग अच्छी तरह से ध्यान दे रहे हैं और उन को परिश्रम के साथ हल करने का प्रयत्न कर रहे है। हम आशा करते हैं कि इस में सभी भाइयों और बहिनों का सहयोग मिलेगा और हम उस में सफल हो सकेंगे ।

आप को प्रजातन्त्र मिला है। प्रजातन्त्र का काम है कि अच्छे से अच्छे सुयोग्य लोगों को अपने ऊपर शासन करने के लिये चुने । इस का मौका इसी साल आयेगा। नया चुनाव नवम्बर, दिसम्बर में होगा। और सारे देश में जितने बालिग़ स्त्री और पुरुष होंगे उन सब को अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होगा। मै उम्मीद करता हूं कि लोग विचार कर के अच्छे से अच्छे लोगों को चुनेगे जिस में वे देश की सेवा कर सकें और देश को समुन्नत बना सकें ।

मै आप सब भाइयों और बहिनों को एक बार फिर हृदय से धन्यवाद देता हूं ।

पुष्प प्रदर्शनी

*पुष्प प्रदर्शनी का उद्घाटन करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा--

लेडी पेरी, भाइयो और बहिनो,

इस पुष्प प्रदर्शनी के उद्घाटन मे भाग लेने के लिये आज अपरान्ह में यहां आने में मुझे बडी प्रसन्नता हुई। आप को सम्भवतः यह बात मालूम नही है कि इस के बाद दूसरी प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के लिये भी मुझे जाना है। किन्तु यहां जो दिखाई देता है वह तो प्रकृति की देन है और जो वहां मै देखने जा रहा हूं वह मानव कला की देन होगी क्यो कि मै एक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करने जा रहा हूं। मेरी अपनी भावना यह है कि भगवान ने हमे बहुत सी वस्तुए दी है जिन से हम आनन्द उठा सकते है और उन्हें हम देख सकते है और भगवान ने जो कुछ हमें दिया है यदि उस की कोरी नकल या प्रतिमा ही मनुष्य की कला न हो तो उस में भी अपना निजी सौदर्य होता है। यहां हमारे सामने सर्वोत्तम वस्तुएं और अनुपम सुन्दर वस्तुएं है जो परमात्मा ने हमें दी है। आइये! चलिये हम उन्हे देखें और उन का आनन्द उठायें।

---

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

अखिल भारतीय कला तथा शिल्प प्रदर्शिनी

*अखिल भारतीय कला तथा शिल्प प्रदर्शिनी का १७ फर्वरी ५१ को उद्घाटन करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम, बहिनो और भाइयो,

मै यह स्वीकार करता हूं कि कला के सम्बन्ध मे जानकारी रखने का मै दावा नही करता। किन्तु इस बात के बावजूद जब कभी मुझे कोई सुन्दर चित्र दिखाई देता है तो मेरे मन में आनन्द की लहर दौड़ जाती है। जब मै किसी नाटक मे किसी जोशीले पद को पढता हू तो मेरे मन में कम्पन हो जाता है। जब मै मूर्ति कला के किसी सुन्दर प्रतीक को देखता हू तो मेरा मन आनन्द विभोर हो जाता है। तथा कला के शिल्प से सर्वथा अनभिज्ञ व्यक्ति के लिये जैसा कि मै हूं कला की कृति के मूल्यांकन के लिये केवल एक ही कसौटी हो सकती है और वह वही हो सकती है जिस का अभी अभी मै ने जिक्र किया यानी हृदय का आनन्दन से भर जाना। मै कभी कभी सोचता हूं कि वास्तविक दृष्टि से तो इसी कसौटी को अधिकतर लोग काम मे लाते है क्यो कि मुझे विश्वास है कि अधिकतर लोग मेरी ही तरह कला शिल्प की जानकारी का दावा नही करते।

भारत मे कला की परम्परा अनेक शताब्दियो से चली आ रही है तथा अन्य देशो के समान ही यहा भी उस की मूलभूत प्रेरणा धार्मिक थी। और मुझे यकीन है कि आज भी हमारे कलाकारो मे से अनेक किसी न किसी धर्म अथवा अध्यात्मवाद से अनुप्राणित होते है। मै अभी अभी पुष्प प्रदर्शनी से आ रहा हूं जहा मै ने बहुत ही सुन्दर दृश्य देखा है तथा मै इस बात को सोचता हू कि क्या कलाकार हमे उन वस्तुओ से अधिक सुन्दर वस्तु दे सकते है जो प्रकृति ने हम प्रदान की हैं। मै सोचा करता हू कि क्या कलाकार केवल प्रकृति की नकल ही कर सकता है या उन वस्तुओ को जो हमे प्रकृति ने दी है उन से परे भी हमें कुछ दे सकता है। यदि वह केवल नकल ही नही करता और ऐसी कोई वस्तु हमे देता है जिस की नकल नही की जा सकती तो मै समझता हूं कि उसे सच्ची कला कहा जा सकता है। अत: जो कुछ कोई वस्तुत: देखता है या जिस की अनुभूति करता है केवल उतने ही को कला नही कहा जा सकता। वरन् कला तो वह है जो मनुष्य को ऐसी बात के लिये वेदना पैदा करती है जिसे आखो से देखा नही जा सकता और जो इन्द्रियो के लिये अगोचर है।

कुछ बातो में यह पूर्णतया सम्भव है कि एक देश की सस्कृति की प्रतीक स्वरूप कला को दूसरे देश के लोग ठीक ठीक न समझ सकते हों किन्तु इस प्रकार के विभेदों के बावजूद कला की ऐसी भाषा है जो बोली जाने वाली भाषाओं से, जिन की अपील दिल के बजाय दिमाग को ज्यादा होती है, विभिन्न है। इन दोनों में अन्तर यह है कि जहां भाषा की अपील दिमाग को होती है वहां कला की भाषा की अपील

* अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

इल को होती है। अतः अपनी प्रकृति के कारण ही यह ऐसी भाषा है जो जगत् भर मे समझी जा सकती है। मेरी यह भी भावना है कि कला मानव आत्मा के उच्चतम विकास को उस से कही अधिक सम्भव करती है जो कि धर्म के सम्बन्ध मे दिये गये शुष्क व्याख्यानो मे सम्भव हो सकता है। अतः मैं अपने देश के कलाकारो मे यह आकांक्षा रखता हूं कि हमे वे हमारी आत्मा पुनः प्राप्त करायेगे और हमे उस बात को फिर पाने के लिये समर्थ बनायेगे जिसे कि हम ने खो दिया है।

हमारे देश की परम्परा यह रही है कि राज्य का शासक कला की सहायता और प्रोत्साहन करे। और मेरा यकीन है कि अन्य देशो मे भी ऐसा होता था। कुछ दिनो से वैसा प्रोत्साहन और सहायता न मिलने के कारण हमारी कला को हानि हुई है। अब समय आ गया है जब कि कला को वह सहायता और प्रोत्साहन राज्य की ओर से मिलना चाहिये जिस की कि उसे आवश्यकता है और जिस का कि उसे अधिकार है। राष्ट्रपति भवन मे बैठे हुए मै कभी कभी सोचा करता हू कि क्या आप महामहिम लोग वास्तव मे ऐसी चीजो को देखना पसन्द करेगे जो अभारतीय होने के स्थान मे सचमुच भारतीय है और कभी कभी मुझे ऐसा लगता है कि आप महानुभाव भारत मे सच मुच भारतीय वस्तुओं को देखना ही अधिक पसन्द करेगे। यह मै नही जानता कि आप महानुभाव वास्तव मे क्या अधिक देखना पसन्द करेगे किन्तु मेरी भावना ऐसी ही है। मै कभी कभी सोचा करता हूं कि क्या यह वाछनीय न होगा कि राष्ट्रपति भवन की सारी सजावट भारतीय ढग की हो ? और जो विदेशी प्रकार की सजावट है उस को हटा कर क्या भारतीय प्रकार की सजावट न कर दी जाये। मेरे कहने का तात्पर्य यह नही है कि विदेशो से जो वस्तुए हमारे यहा आयी है वे घटिया है। इस का अर्थ तो केवल यही है कि गुलदस्ते मे एक प्रकार के फूल रख दिये जाये जिस से उस गुलदस्ते की शोभा बढ जाये। आप महानुभावो ने अपने देश की बहुत सी चीजो को देखा है और यदि आप राष्ट्रपति भवन मे भारत की कुछ झाकी पा सके तो सम्भवतः आप उस को ज्यादा पसन्द करेगे। अतः मेरी इच्छा है कि राष्ट्रपति भवन को छोडने से पहले यहा की सजावट को बदल कर भारतीय ढग की कर दू। तब मुझे ऐसा लगेगा कि मै ने कुछ ऐसी बात की जो यहा अब तक नही की जाती रही है। यह काम कलाकारो का है कि मुझे ऐसा करने मे सहायता प्रदान करें। इन शब्दो के साथ मै आप की प्रदर्शनी का उद्घाटन करता हूं।

लखनऊ में नागरिक अभिनन्दन

लखनऊ जिला बोर्ड तथा नगर निवासियों द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब मे राष्ट्रपति जी ने तारीख १८-२-५१ को कहा—

महामहिम राज्यपाल महोदय, स्वागत समिति के अध्यक्ष, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अध्यक्ष महोदय, बहिनो और भाइयो,

मुझे आप के शहर से राष्ट्रपति की हैसियत से आने का पहला मौका मिला है। इस के पहले तो मै कई बार आ चुका हूं और इस शहर के साथ मेरा सम्बन्ध पुराना

हूं। मगर एक नई हैसियत ले कर यहां आने और आप सब भाइयों और बहिनों से मिलने का यह पहला सुअवसर मिला है। उस के लिये और जिस प्रेम के साथ आपने मेरा स्वागत किया है उस के लिये मैं आप सब को और ईश्वर को धन्यवाद देता हूं।

यह सच है कि इस वक्त हमारा देश एक नाजुक स्थिति में हो कर गुजर रहा है। अभी तीन साल हुए जब हम को अपने देश का कारबार चलाने का अधिकार अपने हाथों में मिला था और अभी एक ही साल हुआ है जब पूरी तरह से एक गणतन्त्र राज्य कायम कर के हम अपना काम करने लगे हैं। यह समय भी कुछ ऐसा नहीं रहा कि आसानी से हम अपनी इच्छा मुताबिक जैसा चाहते वैसा काम करते। हजार मुसीबतों में हो कर गुजरते हुए हमें यहां पहुंचने का मौका मिला है और अभी भी यह कहना मुश्किल है कि मुसीबतों का दौर खत्म हो गया।

आज सारे देश के अन्दर खाद्य पदार्थों की समस्या इतनी मुश्किल हो गई है कि उस के कारण सब लोगों को बड़ी चिन्ता हो रही है। ऐसी हालत में अगर हम अपने कर्तव्यों पर ध्यान दें और यह सोचें कि अब तक हम ने क्या किया है और आइन्दा हम को क्या करना है तो यह मुनासिब बात होगी।

सब से बड़ी चीज जो इस वक्त हमारे सामने है वह यही है कि हम एक बहुत बड़ा प्रयोग, बहुत बड़ा एक्सपैरीमेन्ट डैमोक्रेसी में करने जा रहे हैं। अभी आप ने डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अभिनन्दन पत्र में बताया है कि आप यहां डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का काम किस तरह से चला रहे हैं और उस में आप ने थोड़ी सी शिकायत के तौर पर यह कहा है कि अभी वही पुराना ढर्रा चल रहा है। बात यह है कि हमारे हाथों में जो अख्तियार आया वह एक निराले तरह से आया। और देशों में जब कोई क्रान्ति होती है, कोई बड़ा इन्कलाब होता है तो वह खून खराबी के बाद हुआ करता है। जो वह सब करते हैं उन के सामने सवाल यह रहता है कि किस तरह सब पुरानी चीजों को खत्म कर के उन की जगह पर अपनी ख्वाहिश के मुताबिक नई चीजों को कायम कर लें। हम ने शुरू से ही महात्मा जी के नेतृत्व में अपने लिये यह तय कर लिया कि अहिंसा के रास्ते पर ही हम चलेंगे और उसी रास्ते पर चल कर हम ने अपने देश की स्वतन्त्रता हासिल की। यह हम ने कोई खास तोड़ फोड़ खून खराबी किये बिना क़ायम किया है। सब चीजों को जहां तक हो सका कायम रख कर और अपने को आजाद कर के किस तरह से एक नई दुनिया बसावें इसी फिक्र में हम शुरू से रहे हैं जिस में बर्बादी कम से कम हो मगर साथ ही यह भी हो कि जो कुछ बुरा है उसे हम दूर कर सकें और अपने लिये सुख शान्ति का रास्ता साफ कर सकें। यह हमारा आज तक तौर तरीका रहा है। इसी वजह से बहुत कठिनाइयां भी सामने आयीं और हम उन को हल कर पाये हैं। हम ने यह देखा कि जिस वक्त हम ब्रिटिश गवर्नमेन्ट से लड़ाई लड़ रहे थे उस वक्त कई ऐसे मौके आये जब ऐसा मालूम होता था कि हम गिर जायेंगे। कुछ लोग घबड़ाया करते थे कि अगर हम सचमुच गिर जायेंगे तो फिर हमारे लिये उठना मुश्किल हो जायेगा। मगर गांधी जी का रास्ता

ऐसा था कि उस पर चल कर कभी कोई हार नही सकता और न कभी हम हारे । जब हम हारे भी तो फिर जल्द से जल्द और अधिक तेज़ी से बढ़ने के लिये हम उठ खडे हुए और अन्त मे हमारी पूरी फतह हुई । हम उसी रास्ते को अभी तक क़ायम रखे हुए है । हम शायद चाहे तो एकबारगी किसी चीज को तोड फोड कर खत्म कर के उस की जगह पर नई चीज जल्द क़ायम कर सकते है । हमारा जो रास्ता है उस पर चल कर वैसा नही हो सकता है । हमारा काम आहिस्ता आहिस्ता बढ़ता है । मगर जितनी हम तरक्क़ी करते है, जितनी दूर हम जाते है वहां से लौटना नही है, आगे ही बढते जाते है । तोड फोड के रास्ते पर चलने से बहुतों को तकलीफ होती है । इसलिये हम जिस रास्ते पर आज तक चलते आये उसी पर चलना चाहते है । अगर किसी चीज मे तरक्की देखने मे नही आती है तो उस से कोई घबडाने की बात नही है, डरने की बात नहीं है । हमारी कोशिश इस तरह की हो रही है कि पुरानी चीजे दूर हों और उन की जगहो पर नई चीजे कायम हों, और यह किसी को मालूम भी न हो और सारी चीजे एकबारगी बदल भी जाये । यह ठीक है कि इस कोशिश मे बहुत त्याग की जरूरत है और हमारे लिये बहुत हिम्मत और परिश्रम की जरूरत है; इस के लिये सच्चे देश सेवको की जरूरत है जो स्वार्थ छोड कर, जो और किसी चीज को सामने नही रख कर सिर्फ देश की खिदमत को अपने सामने रखे । मेरा अपना खयाल है कि और मैं अक्सर कहा करता हू कि जब हम बृिटिश गवर्नमेन्ट मे लड़ रहे थे तो हमारा काम आसान था । इस वक्त जब किसी से लडना नही, सब चीजो को बनाना है, सिर्फ रचनात्मक तामीरी काम ही हमारे सामने है, यह काम पहले से ज़्यादा मुश्किल है । पहले एक बृिटिश गवर्नमेन्ट सामने थी, उसी से हमें मुकाबला करना था और हम सब चीजो को, सब मतभेदो को दबा कर एक हो कर एक रास्ते पर चल सकते थे । मगर अब सब आपस के मतभेद प्रकट हो कर बाहर आ गये है और हम अपने अपने रास्ते पर चलने के लिये आजाद है। इसलिये अगर आज तरह तरह के खयालात हमारे सामने आते है तो इस मे कोई आश्चर्य की बात नही है । यह तो होने वाला ही था। तब इसकी वजह से हमारी दिक्क़ते बहुत कुछ बढ सकती है। मगर इस में न तो घबडाने की बात है न डरने की बात है । सब को देश को अपने सामने रख कर काम करना है । इसीलिये मै कहता हू कि बृिटिश गवर्नमेन्ट से लडते समय जितने त्याग और परिश्रम की जरूरत थी उस से ज़्यादा इन चीजों की आज जरूरत है । इन चीजो को जब हम मुहय्या कर सकेगे अपने में पा सकेगे तभी हम को कामयाबी होगी । हम को यह भूल जाना चाहिये कि त्याग का युग खत्म हो गया है और भोग का समय आ गया है। शास्त्रों में तो भोग को कोई स्थान नही । उन्होंने माना है कि सब से बड़ी त्याग सेवा है । इतना हम मानते हैं कि अगर देश की समस्याओं को हल करना है तो उस में भोग की गुंजायश नहीं है। उसके लिये तो त्याग करना है और त्याग के अलावा और कोई चारा नहीं है । तो यह एक बडा एक्सपैरीमेन्ट डैमोक्रेसी में जो हम करने जा रहे हैं और कर रहे है उस मे भी अपने ही लोगों के सामने नही सारी दुनिया के सामने हमारा इम्ति-

हान होने वाला है । डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मे हम ने सुना कि आप ने यह क़ायदा कर लिया है कि जो चेयरमैन होंगे, प्रेसीडेंटे होंगे, वे समस्त मतदाताओ द्वारा चुने जायेगे । यह चीज़ पहले जमाने से जरूर आगे बढी है । मै यह भी मानता हू कि इस वक़्त डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के ताल्लुकात प्रान्तीय गवर्नमेन्ट के साथ पहले ही ऐसे है । मगर इस वक़्त की प्रान्तीय गवर्नमेन्ट और उस वक़्त की प्रान्तीय गवर्नमेन्ट मे फर्क है । पहले जो प्रान्तीय गवर्नमेन्ट हुआ करती थी वह लोगों का प्रतिनिधित्व नही करती थी ; आज की गवर्नमेन्ट जनता की प्रतिनिधि है। इस वजह से अगर उसके अधिकार भी बढ जाते है तो यह समझना चाहिये कि वे जनता की तरफ से बढाये गये है, सरकार जनता से कोई अलग चीज नही है । .

इसी साल के अन्त मे नया चुनाव होगा । देश के लिये जो नया संविधान बना है उसके मुताबिक जो चुनाव होगा उस मे १७–१८ करोड लोगो को वोट देने का अधिकार है और करीब करीब ३५–३६ सौ जगहो पर लोग खडे किये जायेगे और चुने जायेगे। आज तक किसी भी देश मे इतने बडे पैमाने पर चुनाव नही हुआ है। इसलिये यह चुनाव इतने बडे पैमाने पर होने जा रहा है कि इस मे हमारे देश के सभी स्त्री पुरुष जिन की अवस्था २१ वर्ष की हो चुकी है अपनी राय दे कर प्रतिनिधि चुनेगे। हम यह भी चाहेगे कि इस अधिकार को लोग समझ बूझ कर काम मे लावे और अच्छे मे अच्छे लोगो को चुनकर भेजे क्योंकि जिन को वे भेजेगे उन्ही के हाथो मे सारा अख्तियार देश के राज काज का होगा। इस मे भी हम ने पहले पहले जो पुराना क़ायदा चला आता था उस को हटा दिया है । अब एक साथ सब मिल कर सब को चुनेगे । इस मे सब का हिस्सा है। इस मे यह भी हम को सोचना होगा कि पीछे किसी को यह कहने का मौका न हो कि फिर्केवार चुनाव न होने से उन के लिये कोई गुंजायश नही रही, उन के अधिकार छिन गये है और जो लोग ज़्यादा तायदाद मे है उन्होने उन के साथ बेइन्साफ़ी की। मै तो यह आशा रखता हू कि इस मे बेहतरीन लोग चुने जायगे, जो इस तरह का काम करेंगे कि जिस मे किसी को कोई शिकायत नही रह जाये । इन मानों मे भी हमारा इम्तिहान हो रहा है ।

मै जानता हू कि आज देश के कई हिस्सों मे खाने की तकलीफ हो रही है; कष्ट हो रहा है । पहले जो राशन मिलता था अन्न की कमी की वजह से गवर्नमेन्ट ने उसे घटा दिया है। मै उम्मीद करता हू कि जैसे ही अधिक अन्न हमारे हाथो मे आजायेगा जो राशन में कमी की गई है वह पूरी करदी जायेगी और लोगों को जितना मिलता था उतना मिलने लग जायेगा। मगर आज ही नही न मालम कब से हम को इस मुसीबत का मुकाबला करना पड़ा है और आगे भी करना है। मै समझता हू कि सिर्फ विदेशों से ही अन्न मंगा कर और लोगों मे बाट कर हम लोगो को जिन्दा नही रख सकते हैं । हमारे लिये ज़िन्दा रहने का तरीका एक है और वह है कि देश के अन्दर जो अन्न है उसी को खोजे। हम किसी को मरने

नही देंगे । अगर हमारे पास है और दूसरे के पास नही है तो हम दूसरे के साथ बांट कर न पेट भर आधा ही पेट सही खायेंगे मगर अपने पड़ौसी को मरने नही देंगे। अगर यह तरीक़ा आ गया और हम देश के अन्दर अधिक से अधिक पैदा करने लग गये और जो पैदा करते है उस को नुकसान होने से बचाने की कोशिश कर सके और उस का अच्छा इस्तेमाल कर सके तो हम इस कष्ट को भी काट ले जायेंगे। इस तरह की मुसीबत पहले भी आयी है और मेरा विश्वास है कि जितना गवर्नमेन्ट काम नही कर सकती है उतना जनता कर सकती है । गवर्नमेन्ट का जो काम है वह करेगी। और मै जानता हू कि वह इस कोशिश मे है और करेगी । मगर जनता को भी हिम्मत के साथ एक दूसरे से हमदर्दी और प्रेम के साथ काम करना है जिस मे कोई खाने बगैर मरने न पावे । मै आशा करता हू कि आप के शहर के लोग और सारे सूबे के लोग कामयाबी के साथ काम कर लेगे ।

आप का सूबा देश भर मे सब से बड़ा सूबा है। हर तरह से ईश्वर ने उस को अच्छा बनाया है । यह भारतवर्ष का हृदय समझा जाता है । आप के यहा जो कुछ होता है उस का असर और जगहो मे भी पडता है । मै मानता हू कि इस सूबे की जवाब-देही ज्यादा है । बड़ा होने की जो जवाबदेही होती है आप को उसे भी महसूस करना चाहिये और आपका तौर तरीक़ा ऐसा होना चाहिये जिस मे सभी जगहो के लोगो को आप से सहायता मिले और सब मिले और देश अच्छी तरह से अपने को कामयाब बना सके ।

मै आप सब भाई और बहिनो को एक बार फिर आप ने जो मेरा स्वागत किया है उस के लिये धन्यवाद करता हू ।

लखनऊ—विश्वविद्यालय में फिजिक्स ब्लौक का उद्घाटन

लखनऊ विश्वविद्यालय मे फिजिक्स ब्लौक खोलते समय तारीख १९ फरवरी १९५१ को राष्ट्रपतिजी ने कहा—

महामहिम राज्यपाल महोदय, वाइस चान्सलर, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की आज बडी खुशी है कि आज मैं फिजिक्स ब्लौक का उद्घाटन कर रहा हूं । मै जिस ज़माने में कालेज मे पढता था उसी जमाने मे शायद हमारे गवर्नर साहब भी पढ़ते थे और उन दिनो मे साइन्स को जो स्थान मिला था वह बहुत छोटा था ; गरचे उस जमाने में भी इन्टरमीजियेट मे जो एफ० ए० कहलाता था साइन्स पढ़ाया जाता था पर बहुत थोडा। सब लोगों को फिजिक्स, कैमिस्ट्री आदि का ज्ञान नही दिया जाता था और न उस जमाने में बी० एस० सी० की कोई डिग्री थी । जो आर्टस ले कर पास करते थे वे बी० ए० कहलाते थे और साइन्स ले कर बी० ए० पास करने वाले बी० कोर्स में बी० ए० पास कहलाते थे। मगर आप ऐसा न समझें कि उस वक्त साइन्स के प्रोफैसर नहीं

हुआ करते थे। मुझे सर जगदीशचन्द्र बोस और डाक्टर प्रफुल्लचन्द्र राय जैसे आचार्यों के नीचे बैठ कर कुछ पढने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस वक्त से आज का हिन्दुस्तान बहुत बदल गया है। मै मानता हू कि गरचे यूनीवर्सिटियो को स्थापित हुए १०० वर्ष हो गये सब यूनीवर्सिटियो को नही लेकिन जो पहले यूनीवर्सिटी कायम हुई वह प्राय: १०० वर्ष पहले हुई मगर प्राय. ७०, ७५ वर्षो तक साइन्स की तरफ कोई विशेष ध्यान नही दिया गया और अगर हमारे देश ने बडे बडे वैज्ञानिक तैयार किये तो वे हमारी यूनीवर्सिटियो की वजह से नही, बावजूद यूनीवर्सिटियो के वे निकले और उन्होने जो कुछ किया वह मै जानता हू कि कितनी दिक्कत से उन्होने किया। मुझे याद है कि जब मै प्रेसीडेंसी कालेज मे पढता था तो वहा इस बात का झगडा रहा करता था कि सर जे० सी० बोस और डाक्टर पी० सी० राय को रिसर्च करने का मौका दिया जाये या नही। बात यह थी कि उन दिनो सर्विस का बटवारा ऐसा था कि जो लोग आल इंडिया सर्विस के समझे जाते थे और जो प्राविंशियल सर्विस के समझे जाते थे उन दोनो के बीच एक दर्मियानी सर्विस भी होती थी जिस मे बोस और राय समझे जाते थे। उस जमाने मे कोई अंग्रेज अगर इंगलेंड से पास कर के आ जाता तो वह डाक्टर बोस से भी सीनियर हो जाता और उस को वह अख्त्यार रहता कि वह पढाने के काम का बटवारा करे। इसी मे झगडा रहता था। जो नये नवयुवक प्रोफेसर आते थे उन के नीचे डाक्टर बोस और डाक्टर राय दोनो ही हो जाते थे और वह उन पर बहुत पढाने का काम लाद दिया करते थे। वह सुबह ९ बजे से ९ बजे रात तक लैबोरेटरी मे काम करते और बीच बीच मे लैक्चर भी दिया करते थे। बाकी समय मे रिसर्च किया करते थे। तो एक दिन वह था और एक दिन आज है जब आप की यूनीवर्सिटी मे ७९ छात्र रिसर्च के काम मे लगे हुए है। इतना बड़ा अन्तर यूनीवर्सिटी की पढाई म पड़ गया है और यह अन्तर अगर समझा जाये तो जैसे और काम मे अन्तर पडा है उसी तरह से पड गया है। ऐसा होना भी चाहिये। यह युग साइन्स का युग है। इस युग मे कोई भी देश साइन्स से बढेगा प्रगति करेगा और जहा साइन्स नही उस को पीछे रहना पडेगा। इस मे कोई शक नहीं है। इसलिये भारतवर्ष आज बहुत बातो मे पीछे पड गया है। क्योंकि उस को मौका नही था कि साइन्स में जितना हिस्सा वह लेना चाहता था वह उतना ले। अब उस को इस का मौका मिलने लग गया है।

आप ने जो यूनीवर्सिटी मे काम किया है उस का थोडा बहुत जिक्र किया है। मै समझता हू कि देश भर मे साइन्स का काम होने लग गया है और दिन ब दिन बढता जा रहा है। थोडे ही दिनो मे इस को पूरा मौका मिलेगा। और आज के ऐसे इक्के दुक्के नही बल्कि बडी तायदाद में साइन्स वाले काम मे लग जायेगे और हमारे देश का दूसरे देशो जैसा ही स्थान साइन्स के क्षेत्र में होगा। साइन्स मे जो पिछले दो सौ वर्षो मे तरक्की हुई है उस के चिन्ह आज सभी जगहो मे देखे जा रहे है। जो पिछड़े हुए देश है वहा भी उस का कुछ तो असर पड़ ही गया है और हमारी दिन प्रति दिन की जिन्दगी मे भी उस का असर पड़ा है और वह असर दिन ब दिन बढ़ता ही जा रहा है।

अभी गवर्नर साहब ने सिनेमा का जिक्र किया है । मैं समझता हूं कि अब कुछ दिनों के अन्दर से यह चीज आ रही है कि दूर से जो एक दूसरे से फोन पर बातें करते है उन का मुंह भी टैलीविजन पर देख सकें। वह भी इस देश मे आजायेगी। अभी दूसरे देशों मे है। मालूम नहीं अभी इस देश में कहीं यहां आयी है या नही । अगर नहीं आयी तो जल्द ही इस देश में भी आजायेगी। तो इस तरह से एक आदमी बहुत दूर बैठ कर भी दूसरे आदमी की सिर्फ बातें ही नहीं सुन सकेगा बल्कि उसे देख भी सकेगा । जहां रोशनी नहीं पहुंचती वहां भी हम दिन बना सकते हैं और मुमकिन है कि दिन को रात भी बना सकते है। तो यह सब बड़ी तरक्की हो रही है । हम लोगो ने बचपन मे सुना था और यह रामायण में लिखा हुआ है कि रावण ने पवन को कैद कर के रखा और वह उस का घर प्रति दिन बुहार जाता था और रावण ने मेघ को भी कैद कर के रखा था और वह जब जहां चाहता था पानी बरस जाता था। हम लोग समझते थे कि यह सब कल्पित चीजें है । मगर आज तो हम देख रहे है कि पवन मेघ और कोई ऐसी चीज नहीं रह गई है जिसे मनुष्य ने अपने बस मे कुछ हद तक न कर लिया हो। और जो बाकी रह गयी है उन पर भी कुछ दिनो मे वह काबू कर ही लेगा। अब प्रश्न यह है कि हम उन का रावण के जैसा इस्तेमाल करें या राम के जैसा इस्तेमाल करें, हम उन का इस्तेमाल लोगो की और संसार की भलाई के लिये करें या उन की बुराई के लिए । आज यूनीवर्सिटियो के सामने और सब देशो के सामने यही बड़ा प्रश्न है। ताकत हमारी बढ़ती जा रही है, संसार की ताकत बढ़ती जा रही है । उस ताकत को हम विनाश मे लगायेंगे या रचनात्मक काम मे लगायेंगे यही प्रश्न हम सब के सामने है । मैं तो यह आशा रखूंगा कि हमारी यूनीवर्सिटियों मे कम से कम इस तरह की शिक्षा देने की व्यवस्था तो होनी चाहिये कि हम उस को किस तरह से प्रयोग मे लायेंगे । उस को समेटने के लिये तैयार करने की व्यवस्था भी होनी चाहिये । अगर यह नही होगा तो मालूम नहीं कि देश का क्या होगा और संसार का क्या होगा। साइन्स अपनी जगह पर बहुत बड़ा काम कर रहा है। अगर कोई कहे भी कि हम अपने को उस से अलग रख सकते है तो यह ठीक नही होगा। क्यो कि ऐसा करना सम्भव नही है । मेरा खयाल है कि अगर भारतवर्ष आज इस शक्ति का इस तरह से उपयोग करे और इस तरह से अच्छे काम में लगाये तो यह दुनिया को कुछ दे सकेगा और साइन्स के लिये उस की यह एक बड़ी देन होगी जिस के लिये सारा संसार उस का कृतज्ञ होगा। तो आज हमारी यूनीवर्सिटियो के सामने यही चीज आती है । केवल जितनी मौलिक चीजें है उन पर काबू पाना भी काफी नहीं है बल्कि उन पर काबू कर के उन को किस तरह से काम मे लायेंगे यह सीखना भी आवश्यक है और इसलिये भी तैयारी की जरूरत है उतनी ही तपस्या की जरूरत है, उतने ही योग की जरूरत है जितने कि उस शक्ति को हासिल करने के लिये है । मैं मानता हूं कि आज कल के सच्चे योगी वे ही है जो लेबोरेटरी मे काम कर रहे है जो लोग अपने हाथों को ऊपर कर के हाथों की हड्डियां सुखा देते हैं वे सच्चे योगी नहीं है, जो लोग एसिड ले कर पी जाते है और लोहे खा जाते हैं और उन का कुछ नुकसान नहीं होता वे भी सच्चे योगी नहीं है। सच्चे योगी वे है जो लैबोरेटरी में बैठ कर दिन रात एक कर के संसार में छिपी हुई शक्ति

खोज कर के निकालते है और उस से काम लेना सीखते हैं। मगर हम शक्ति उपार्जन के साथ साथ इस को प्रयोग करना भी सीखे तो अच्छा होगा। साइन्स की सब से बडी देन उस का निर्भीक तरीका है। वह किसी चीज़ का सच्चा रास्ता बतलाता है। छान बीन के बाद यदि कोई चीज़ जिसे वह सच्चा मानता रहा है वह ग़लत साबित हो जाये तो वह किसी चीज़ पर मोह न कर के छोड देता है। ऐसा बारम्बार हुआ है। हम लोग जब पढ़ते थे उस जमाने में हम लोगो ने सुना था कि एटम चीरा नही जा सकता उस से छोटी कोई चीज नही है उस का टुकडा नही हो सकता है। आज हम देखते है कि उस के अटूट टुकडे से न मालूम कितनी चीजे हम तैयार कर सकते है। साइन्स ने इस सत्य को दबा कर नही रखा, उस सिद्धान्त को छोड़ देने मे साइन्टिस्टो को मोह नही हुआ। मै चाहता हू कि जो साइन्स मे लगे है वे अनासक्त हो कर काम करे। मगर मै जानता हू कि साइन्स वाले भी कही कही मोह मे पड जाते है और प्रेजुडिस्ड हो जाते है और जिस चीज का उन को पता नही मिलता वे समझते है कि उस तरह की कोई चीज है ही नही। मै समझता हू कि साइन्स का जो सब से सुन्दर सिद्धान्त है वह यही है कि सब चीजों को देखते हुए वह नेति नेति कहता है और जब तक वह भावना उस मे रहेगी वह बढता जायगा। उस को समझना चाहिये कि वह सच्चाई के अन्तिम रूप तक कभी नही पहुचा है। हो सकता है कि जिसे वह आज ठीक समझता है वह कल गलत साबित हो और जो आज गलत मालूम होता है वह कुछ दिनो के बाद सही मालूम हो। मै तो यही चाहूगा कि साइन्स के लोग इस तरह का गर्व नही करे कि जो उस ने कर दिया वह आखिरी बात है बल्कि समझे कि वह आखिरी नही है उस मे भी आगे मैदान तय करना है और उन की जो विद्या है उसे ठीक तरह से काम मे लावे। किसी खोज को अपनी बना कर और छिपा नही रखे जिस से कि खोज करने मे दिक्कत न हो। इस तरह की बाते आज कल रोजाना देखने मे सुनने मे आती है। लोग कह देते है कि यह चीज आज के साइन्स के मुताबिक नहो है। हो सकता है कि उनका ऐसा कथन सच हो। मगर उस की सच्चाई को देखना चाहिये और देखने के बाद अगर ऐसा होता हो तो उसे माना जा सकता है। मगर बिना पूरी तरह से जाच किये अगर कोई ऐसा कहता है तो मै कहूगा कि यह उचित नही है। और यह ठीक साइन्स भी नही है। अगर इस तरह की सब चीजों पर ध्यान दिया जायेगा और खोज मे कोई आखिरी बात नही समझी जायेगी और ऐसा समझा जायगा कि आगे भी मैदान तय करना है और इस तरह से सब काम मे लगे रहेगे तो मै समझता हू कि दिन प्रति दिन साइन्स के जरिये ससार की तरक्की होगी और आज जो वीभत्स तांडव नृत्य देखने में आ रहा है वह भी खतम हो जायगा।

आप भस्मासुर की कथा जानते है। उस ने बडी तपस्या की और शिव जी ने कहा कि वरदान मांगो। उस ने कहा कि जिस के सर पर मै हाथ रख दं वह

भस्म हो जाये यही वरदान दे । उन्हो ने कहा कि अच्छा ऐसा ही हो । जब उस ने सोचा कि पार्वती के समान सुन्दरी स्त्री दुनिया मे कोई है नही, इस लिये शिव जी के सर पर ही हाथ रख दू जिस से शिव जी भस्म हो जाये और पार्वती मुझे मिल जाये । उस ने शिव जी के ही सिर पर हाथ रखना चाहा तो उन को अब भागना पड़ा। क्योकि वह अपना वरदान तो वापस ले नही सकते थे । अब शिव जी सारी दुनिया मे भागते रहे और वह उन का पीछा नही छोड़ता था । पार्वती जी शिव जी का सकट देख कर भस्मासुर के पास आयी ओर उस से उन्हो ने पूछा कि तुम क्या चाहते हो । उस ने कहा कि म आप को ही चाहता हू । उन्हो ने कहा इतना ही । तो फिर इतना परेशान क्यो होते हो । मुझे तुम खुश कर लो मैं तुम्हारी स्त्री हो जाऊगी । उस ने कहा कि आप खुश कैसे होगी । उन्हो ने कहा कि तुम अपने सर पर हाथ रख कर नाचो और मै उस से खुश हो जाऊगी । उस बे-वकूफ ने समझा नही और मामला खत्म हो गया । तो साइन्स चलते चलते ऐसे स्थान पर आज पहुच गया है कि भस्मासुर का नाच कर रहा है । यदि वह समझा नही तो उस की भी भस्मासुर की ही गति होगी । मै चाहता हू कि हमारे देश के सायन्टिस्ट लोग साइन्स हासिल करने मे अपने को आगे बढ़ाये मगर साथ ही साथ यह भी सीख ले कि वे भस्मासुर की तरह किसी के सर पर विनाशकारी हाथ तो नही रख रहे ।

मै इतना कह कर आप सब बहनों और भाइयो को धन्यवाद देता हू कि आप ने मुझे यह मौका दिया और नये भवन का उद्घाटन करता हू ।

सरोजनी नगर का शिलान्यास

सरोजनी नगर का शिलान्यास करते समय तारीख १९-२-५१ को ४ बजे राष्ट्रपतिजी ने कहा:—

महामहिम राज्यपाल महोदय, कोआपरेटिव सोसायटी के सदस्यगण, अध्यक्ष महोदय, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि आज इस नगर के शिलान्यास का काम आप ने मुझे सौपा । कारण दो है । पहली बात तो यह है कि यहा आप ऐसे लोगों के रहने का प्रबन्ध कर रहे है जो पहले हमारी लडाइयों मे काम कर चुके है और दूसरी बात यह है कि आपने इस का सम्बन्ध सरोजनी देवी के नाम से जोड दिया है जो कुछ दिनो तक आप के सूबे का राजपाल हो कर सिर्फ आप ही की सेवा नही कर चुकी है बल्कि जिन्हो ने सारे देश की भी सेवा की थी । उन की थोडी सी याद आ जाया करे यह काम आप ने किया है । इस वजह से मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आप यह काम करने जा रहे है ।

कोआपरेटिव के तरीके से हम जितना काम कर सकते है उतना और किसी दूसरे तरीके से नही कर सकते । इस के ज़रिये थोडी पूजी वाले लोग भी बडे बडे काम अपने हाथो मे ले कर अजाम दे सकते है । यहा पर जैसा कि आप ने अपनी रिपोर्ट मे कहा है थोडी पूजी वाले लोगो को आप की सस्था थोडे बहुत रुपये दे कर मकान बनाने मे मदद करेगी और वे लोग आहिस्ता आहिस्ता छोटी किश्तो मे दे कर उस रुपये को अदा कर सकेंगे। यह बात बहुत अच्छी है । क्योकि अगर उन को अपने ऊपर छोड़ दिया जाये तो शायद उन मे से बहुतेरे अपने ही पैरो पर खडे हो मकान नही बनवा सकेगे और अगर बनवा भी सके तो उन को वह सहूलियत नही होगी जो आप उन को दे सकेगे । इसलिये आप ने इस तरह का काम शुरू किया यह बहुत अच्छा काम हुआ। मै आशा करता हू आप इस तरह का नमूना और लोगो के लिये भी पेश कर सकेगे ।

यह शहर से दूर है इस लिये यह जरूरी था कि उन के जो लडके बच्चे हो उन की शिक्षा का प्रबन्ध हो और उन को धन्धा भी मिलता जाये । क्योकि सिर्फ रहने का प्रबन्ध कर देने से ही काम नही चलता है । उन को काम भी मिलना चाहिये। उस का भी प्रबन्ध आप ने कुछ सोचा है। आप को शायद मालूम ही होगा कि दिल्ली के पास जो निर्वासित लोग पश्चिम से आ गये है उन लोगो के लिये ऐसी कालोनी बनाई जा रही है। उस मे भारत सरकार ने काफी मदद पहुचाई है। उस की तारीफ इस मे है कि सिर्फ इतना ही नही कि उन लोगो ने अपने अपने मकान खुद बनवा लिये है बल्कि जो निर्वासित लोग आये उन्हों ने काम कर के अपनी मेहनत से अपने मकान बना लिये है। ऐसे लोग जो बेकार कैम्पों मे पडे थे और गवर्नमेन्ट को उन को खिलाना पडता था और न जाने कितने लाख रुपये उन को खिलाने मे गवर्नमेन्ट को खर्च करने पडे खुद काम मे जुट गये और तमाम सडकों को बनाया और सडको को ही नही बनाया बल्कि ईट, किवाड, लकडी की जिन जिन चीज़ों की जरूरत हुई सब को खुद बना लिया और मकान भी उन्हों ने बनाये। उन मे सब कारीगर नही थे मगर काम करते करते उन्हों ने इस काम को भी सीख लिया और आहिस्ता आहिस्ता कारीगर हो गये। अभी तक ३००० मकान वहा तैयार हो गये है । मै शायद जुलाई मे वहा पर गया था । उस वक्त तक १८०० सौ मकान वे तैयार कर चुके थे और उन का खयाल था कि मार्च तक ४००० मकान तैयार कर लेंगे । उन्हो ने और मकान तैयार किये है जरूर पर मालूम नही कितने मकान तैयार किये है। उन को एक बडा लाभ यह भी पहुचा कि रास्ते मे उन को एक बिजली का कल मिल गया है और वह अब खडा हो जायेगा। उस से इतनी बिजली पैदा होगी कि उसी के भरोसे उस के आस पास मे बहुत से कारखाने खुलने लग गये है। उस मे से कुछ बिजली दिल्ली को भी मिलेगी क्योंकि दिल्ली का फासला सिर्फ १६–१८ मील ही है। तो यह सारा काम वहा कोआपरेटिव के जरिये हो पाया है और पैसे से नही, परिश्रम से कर के लोगों ने इतना काम किया है । जो लोग कैम्प मे थे उन को सरकार की तरफ से मुफ्त खाना मिलता था । जब सरकार ने तय किया उन को मुफ्त खाना नही दिया जायेगा तो उन को मजबूर हो कर काम करना पडा और उन्हो ने काम शुरू किया। तब सवाल यह उठा कि क्या वे अपनी कमाई से उतना पैदा कर सकेगे जिस से वे अपनी गुजर कर सके गवर्नमेन्ट ने

यह फैसला किया कि जितना घटेगा वह पूरा करेगी। उन्हों ने काम से काफी पैदा किया और गवर्नमेन्ट को अपनी तरफ से बहुत कम देना पडा। और सारे मकान अपनी मेहनत से उन्हों ने तैयार कर लिये और इस तरह एक बहुत ही सुन्दर शहर जहा ४०,००० लोगो को रहने का प्रबन्ध होगा कई महीनो के अन्दर तैयार हो गया है। हमारे देश मे कोआपरेटिव के लिये बहुत बडा मैदान है। यह तो आप शहर बसाने का प्रबन्ध कर रहे है। मै मानता हू कि कोआपरेटिव की खेती मे भी काफी गुजायश है और उस क्षेत्र में भी लोग इस प्रथा को काम मे लाये तो देश को बहुत लाभ पहुचेगा। इसलिये मुझे खास कर के ऐसे कामो से दिलचस्पी है और मै ने खुशी से आप का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। मै आशा करता हू कि जिन उम्मीदो से आप ने अपना काम शुरू किया है वह पूरी होगी और जो लोग यहा आयेगे वे सुख मे रह सकेगे और यह एक आदर्श शहर बन जायेगा।

प्रयाग में अभिनन्दन

ता० २०-२-५१ को प्रयाग डिस्ट्रिक्ट बोर्ड तथा म्युनिसिपल बोर्ड द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब मे राष्ट्रपतिजी ने कहा--

इलाहाबाद जिला बोर्ड के अध्यक्ष महोदय, सदस्यगण, इलाहाबाद नगरपालिका के अध्यक्ष महोदय तथा सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

आप लोगों ने जिस प्रेम से मेरा स्वागत किया और मान पत्र दिया उसके लिये मै आप सब को दिल से धन्यवाद देता हू। इलाहाबाद मेरे लिये कोई नई जगह नही है। आपने यह ठीक कहा है कि यह एक ऐसा स्थान है जिसने भारतवर्ष के इतिहास मे आज ही नही बराबर ही बडा हिस्सा लिया है। पहले की बात अगर छोड भी दी जाये तो स्वराज्य सबधी हमारी लड़ाई मे आपके शहर और जिले ने जो भाग लिया है वह हमेशा भारतवर्ष के इतिहास मे सोने के अक्षरो से लिखा रहेगा। एक ही तरह के नही, हर प्रकार से चाहे वह विद्या के सबध मे हो, चाहे राजनैतिक आन्दोलन मे हो, तथा और भी कितने प्रकार के काम देश की उन्नति के लिये हुए है उन सब में आप का बड़ा भाग रहा है और बना रहेगा। आज भी जो एक प्रकार से भारत का शासन चल रहा है उसको इलाहाबाद ही चला रहा है क्योंकि कोई जवाहरलाल जी को इलाहाबाद से न तो अलग समझ सकता है और न अलग कर सकता है और न भारत के शासन को ही जवाहरलाल जी से अलग कर सकता है। इसलिये केवल लड़ाई के जमाने मे ही नही बल्कि अब जब कि स्वराज्य पाकर हम अपने हाथो सब अधिकार पा चुके है और देश को आगे बढ़ाना चाहते है इस मौके पर भी देश का अख्त्यार आपके ही हाथों मे है यह खुशी की बात है। मै उम्मीद करता हू कि जिस तरह लडाई के जमाने मे आप हमेशा आगे रहे उसी तरह अब रचनात्मक काम मे भी आप हमेशा आगे रहेगे और देश का सर हर तरह से ऊंचा करके रखेंगे।

इसमें कोई शक नही कि सभी म्युनिसिपैलिटियों के सामने, सभी डिस्ट्रिक बोर्डो के सामने, सभी प्रातीय सरकारो के सामने यहां तक कि भारत सरकार के सामने भी रुपयो का सवाल है। सब को रुपयो की कमी हो रही है। इसकी वजह यह है कि सब के सामने बडे बडे कार्यक्रम है, प्रोग्राम है, क्योकि हम आज हजार तरह के ऐसे काम करना चाहते है कि जिसमे देश के लोगो की तरक्की हो। सब के सामने जितने कार्यक्रम है उनको चलाने के लिये काफी आमदनी नही है। इस समय हर तरह से मुल्क के सामने दिक्कते है। मगर इससे न तो घबराना चाहिये और न निरुत्साह होना चाहिये। जैसे जैसे काम होता जायेगा मेरा अपना खयाल है कि रुपये की कमी नही रहेगी। अगर हम अपना काम खूबी से चलायेगे और लोगो मे विश्वास पैदा करते जायेगे तो पैसे भी मिलते जायेगे और काम का तरीका भी निकलता जायेगा। जो जनता की सेवा करते है उनको पैसे की कमी नही रहती। महात्माजी अक्सर कहा करते थे कि कोई काम पैसे के बगैर नही रुकता, अगर काम करने वाले ठीक हो। उस वक्त तो हमारे हाथो मे कोई अधिकार भी नही था। लेकिन सभी स्थानो मे काम के लिये हमे पैसे मिले। यही बात गवर्नमेंट के लिये लागू है। गवर्नमेंट को लोग तभी पैसे देगे जब गवर्नमेंट लोगो की खिदमत करके रुपये पाने के काबिल अपने को बनावे और आजकल जो शासन है और खास करके जहा प्रजातत्र राज्य है उसका तो नियम यही होता है कि टैक्स वसूल करके मिल जुल कर लोग जनता की खिदमत करे। मै समझता हू कि यद्यपि आपको दिक्कते है पर तो भी आपने जितना काम किया है वह कम नही है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की जो रिपोर्ट सुनाई गई है और म्युनिसिपैलिटी बोर्ड की जो रिपोर्ट सुनाई गई दोनो से मालूम हुआ कि कठिनाइयो के रहते हुए भी आप आगे बढे है और मै उम्मीद रखूगा कि दोनो और आगे बढेगे और तरक्की करते जायेगे। यह भी सच है कि हम लोगो का मुल्क एक नाजुक रास्ते मे गुजर रहा है। सिर्फ हमारे ही मुल्क की नही, सारी दुनिया की वही हालत है। हजारो तरह की मुश्किले आ रही ह। हम अपने को सारी दुनिया से अलग नही रख सकते है। दूसरी जगहो का असर हम पर भी पडता रहता है। अगर दुनिया के किसी मुल्क मे गल्ले की कीमत बढ जाती है तो हमारे यहा भी बढ जाती है। हमारा भी असर दूसरो पर पडता है। उसी तरह जो राजनैतिक बाते है उसमे भी एक मुल्क का दूसरे मुल्क पर असर पडता है। अगर एक मुल्क और दूसरे मुल्क के दरम्यान मे लडाई छिड जाये तो किसी न किसी तरह हम को भी उसमे पडना ही पडता है और अगर हम अपने को लडाई से अलग रख भी सके तो भी उसका असर हम पर पडे बिना नही रहता। आज साइन्स ने जो तरक्की की है उसकी वजह से दुनिया एक रस्सी में बध गई है और उस से अलग होना दिन दिन मुश्किल होता जा रहा है। तो हमको अपनी हालत पर हमेशा ध्यान रखना है मगर हमको बाहर की हालत पर भी हमेशा ध्यान रखना पड़ता है और अब तक रखना पडा है। अगर हम अपना काम ठीक से चलायेगे तो बाहर के लोगों से भी हम अपने ताल्लुकात ठीक रख सकेंगे और हर तरह से हम खुद भी तरक्की कर सकेंगे। महात्माजी ने जब भारत को आजाद करने का काम शुरू किया तो वह सिर्फ अपने ही लिये स्वतत्रता नही चाहते थे। यह जरूर है कि स्वतंत्रता के बगैर हम कुछ करना भी चाहते तो नही कर सकते थे। मगर साथ साथ उनका यह भी खयाल था कि स्वतत्र होकर हम संसार की सेवा कर सकेंगे। इसलिये हम अपने तरीके से ससार की सेवा करें इसकी भी जिम्मेदारी हमारे कधे पर है।

मगर इस वक़्त हमारे सामने खाने पीने की कठिनाई हो रही है। आपने देखा होगा कि जो थोडा राशन मिलता था उसमे भी कमी करनी पड़ी और सभी जगहों पर जहां जहा मै जाता हूं लोग घबराते है, शिकायत करते है। उनका घबराना बजा है, शिकायत करना बजा है। मगर जो हालत थी उसमे और कोई चारा नही था। हमारी ओर से कोशिश हो रही है और बाहर से अन्न आ जायेगा तो जो राशन में कमी की गई है उसको हम पूरा कर सकेगे। मगर इसमें कुछ देर लगेगी। हजार कोशिश गवर्नमेट करे मगर इस तरह की मुसीबत जब मुल्क पर आ जाती है तो उसका सामना लोगों को ही करना पडता है। गवर्नमेंट अपनी तरफ़ से लोगो की हिफाजत करती है। मगर यह जरूरी है कि लोग हिम्मत से, साहस से और इस भावना से कि सब मिलकर इस मुसीबत का सामना करके दिन काट ले चलेगे, काम करे। भारतवर्ष के सामने इस तरह की मुसीबत पहली बार नही आई है। इसके पहले भी हजारों मुसीबते और दिक्कते देश के सामने आई है। पता नही किस शक्ति से हमने अपने को बनाये रक्खा। मुझे भरोसा है कि गवर्नमेंट की तरफ से जो कोशिश हो रही है उससे और उससे भी अधिक अपनी मेहनत से अधिक अन्न पैदा कर लेगे और हमारे फिर अच्छे दिन आ जायेगे।

मै आप सब भाइयो और बहिनो को धन्यवाद देता हू कि आपने इस तरह से मेरा स्वागत किया और मेरे प्रति प्रेम दर्शाया।

सरस्वती मन्दिर का शिलान्यास

सरस्वती मन्दिर प्रयाग के शिलान्यास के अवसर पर राष्ट्रपतिजी ने कहा—

बहिनो और भाइयो,

मै आप सब को इस बात के लिये बधाई देना चाहता हू कि आपने अपने ही प्रयास से साहित्यिको की सहायता और उन्हे साहित्य सृजन की हर प्रकार की सुविधा प्राप्त कराने के लिये इस महत्वपूर्ण सस्था को बनाया है और इस सरस्वती मन्दिर के निर्माण का प्रबन्ध किया है जिसके शिलान्यास करने मे मुझे आज अत्यन्त हर्ष और प्रसन्नता है। जिस सामूहिक कल्याण और आत्म-विश्वास पर आपकी यह सस्था कायम है उनकी सराहना मै किन शब्दो मे करू यह मै नही जानता।

इस बात से तो आज कोई इकार नही कर सकता कि हमारे देश म साहित्य सेवियो का जीवन अत्यन्त कण्टकाकीर्ण रहा है। जैसा कि आपने अपनी रिपोर्ट मे लिखा है "परतन्त्र तथा विदेशी भाषा से आक्रान्त देश मे साहित्य सृजन सघर्ष साध्य ही होता है"। अतः जब तक हमारे देश में विदेशियों का राज्य था हमारे साहित्यकारों को अनेक प्रकार की कठिनाइया झेलनी पड़ीं। स्वतंत्र होने के पश्चात् इस बारे में स्थिति में कुछ सुधार अवश्य हुआ है किन्तु आज भी वैसी स्थिति नही है जैसी अच्छे साहित्य सृजन के लिये होनी चाहिये। यद्यपि हमने यह निश्चय कर लिया है कि हमारा सार्वजनिक सभी राजकाज हमारे देश की भाषा मे ही कुछ वर्षो के बाद चलेगा किंतु आज भी हमारे यहां के शिक्षा शास्त्रियों, शिक्षितों और शिक्षार्थियो के मन मे अग्रेजी भाषा का वह मोह नही छुटा है जो अग्रेज़ी राज्य काल मे उस के प्रति पैदा हो गया था। जान मे या अनजान में

हमारे यहां के बहुसख्यक शिक्षितों के मन मे यह भाव घर किये हुए है कि हमारी अपनी भाषाओं मे वैसी उच्च कोटि का साहित्य न तो है और न हो सकता है जैसा कि अग्रेजी मे है और इस भावना के कारण आज भी उनका लगाव अपनी भाषाओं के साहित्य से कुछ अधिक नही है। हमारे साहित्य-कारों को जो आर्थिक कठिनाइया सहनी पडी है और सहनी पड रही है उनका एक कारण यही मनोवृत्ति है क्योंकि इस के कारण हमारे यहा उनकी कृतियो का शिक्षित वर्ग मे वैसा प्रचार नही होता जैसा कि अन्य देशों मे वहा के साहित्यकारो की कृतियो का होता है।

इस कथन से मेरा यह तात्पर्य कदापि नही है कि हमारे देशवासियो को अन्य भाषाओं के साहित्य से, विशेष करके अग्रेजी के साहित्य से, प्रेम न करना चाहिये। इसके विपरीत मैं तो यह मानता हू कि अग्रेजो भाषा का ज्ञान बहुत जरूरी है क्योंकि वह आज अन्तर्राष्ट्रीय भाषा हो रही है और उसका साहित्य भी बहुत बड और व्यापक है। इसके अलावा कोई साहित्यक अतीत काल या वर्तमान जगत के साहित्य से अनभिज्ञ रहकर सफल साहित्य साधना नही कर सकता और न वैसी हालत मे कोई व्यक्ति ही अपने को समुचित रूप से शिक्षित बना सकता है। किंतु साथ ही मैं यह अवश्य कहना चाहता हू कि अन्य भाषाओ के साहित्य का स्वाद हम तभी पहचान या जान सकेंगे जब हम ने अपनी भाषाओ के साहित्य के स्वाद को जान लिया हो। इसलिये मैं यह बात कई बार कह चुका हू और आज भी दुहराना चाहता हूं कि अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिये और बातो के साथ साथ हमारे लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपनी भाषाओ के साहित्य से प्रेम करना सीखे और उन के अध्ययन मे यदि अधिक नही तो कम से कम उतनी दिलचस्पी अवश्य रखे जितनी कि हमारे बहुत से लोग आजकल विदेशी साहित्य के अध्ययन मे रखते है। यदि हमारे देश भाई ऐसा करने लगे तो न केवल हमारे देश का ही बड़ा भारी कल्याण होगा वरन् हमारे साहित्यकार भाई बहिनों की निजी आर्थिक समस्या भी कुछ सीमा तक हल हो जायेगी। कुछ सीमा तक ही हल होने की बात मै इसलिये कहता हू कि वर्तमान आर्थिक ढाचे के कारण साहित्यकार को वह आर्थिक प्रतिलाभ प्राप्त नही होता जिसका कि वह समाज के असख्य व्यक्तियो के अजय आनन्द और नव स्फूर्ति, रसीत सारे और कल्याणकारी आदर्श प्रदान करने के बदले मे अधिकारी होता है। हमारी वर्तमान अर्थ व्यवस्था मे व्यवसाय समाजसेवा के हेतु से न किया जाकर अपने निजी लाभ के लिये किया जाता है जिसका परिणाम बहुधा यह होता है कि निजी लाभ की वेदी पर सामु-हिक कल्याण की बलि दे दी जाती है। इसलिये यह कोई आश्चर्य की बात नही कि विचारो की अमूल्य रत्न पिटारी को प्रकाशक लोग गरीब साहित्यक से कौडियो के दाम खरीद लेते है और स्वय उससे बहुत लाभ उठाते है। मुझे इस बात का अत्यन्त हर्ष है क आपने इस विषमता और अन्याय को दूर करने का वह कदम उठाया है जो न केवल आप जैसे साहित्य के उपासको के लिये उप-युक्त है वरन् समाज के प्रत्येक वर्ग के लिये अनुकरणीय भी है। समाज से अन्याय और विषमता को दूर करने का मार्ग यही है कि लोग सहकारिता और सर्वोदय के सिद्धात को अपनाये। आपने यही सिद्धात अपनाया है और इसलिये आप और भी बधाई के पात्र है।

क्रान्तियो के अन्य मार्ग और देशों में सुझाये गये है, किंतु हमारे देश मे सुदूर पुरातन काल मे सामूहिक और वैयक्तिक जीवन मे सुख और शाति स्थापित करने का मार्ग यही ठीक ठहराया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन का चरम उत्कर्ष इसी बात में माने कि उस के अपने जीवन से

सब मानवों का जीवन सुरभिमय और सुखमय हो जाये। मेरी समझ में इसीलिये ही हमारे देश में अहिंसा के आदर्श को उतनी महत्ता दी गयी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने इसी आदर्श की आवाज़ उठाकर सुप्त भारतवासियों की नसों में फिर नव जीवन, नव स्फूर्ति और नव सृजनात्मक शक्ति का संचार कर दिया। आपने अपने हितों की रक्षा के लिये और समाज की रचनात्मक सेवा के लिये इसी मार्ग को अपनाया है।

मुझे पूरा विश्वास है कि यदि आप अपनी कृतियों में सृजन और सहकारिता के इस सिद्धांत के प्रति वफ़ादार रहे तो आप सचमुच ही अपनी कृतियों को भारत के नव निर्माण और यहां की जनता के दु.ख दारिद्र्य को दूर करने का प्रबल अस्त्र बना देंगे। भगवान ने आपको ऐसी शक्ति प्रदान की है कि आप उसके द्वारा अपने अन्य भाई बहिनों की समस्याओं को ऐसे सुस्पष्ट और सजीव शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं कि वे उनको ठीक ठीक पहचान लें और साथ ही आप उनको वह प्रेरणा और वह दिग्दर्शन प्रदान कर सकते हैं जिससे कि ज्योति और उत्साह पाकर वे अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिये कटिबद्ध होकर लग जायें। हमारे देश में करोड़ों नर-नारियों का जीवन आज विफलतापूर्ण और विपत्तिमय है और हमारी स्वतंत्रता का तब तक कोई अर्थ न होगा जब तक कि वे अपने जीवन को सफल और सार्थक न कर सकें। इस महान् कार्य के संपादन के लिये आज हमारे देश को प्रत्येक व्यक्ति के अंशदान की आवश्यकता है। जो राज-नीतिज्ञ हैं वे राजनीतिक दृष्टि से उस दशा को सुधारने का प्रयास कर रहे हैं किंतु न तो राजनीतिज्ञों और न यंत्रकारों के हाथ में यह बात है कि वे जनता के हृदय में ऐसी स्फूर्ति, ऐसा उत्साह, और ऐसी लगन पैदा कर दें कि जनता इन समस्याओं को शीघ्रातिशीघ्र सुलझाने में अपनी पूरी शक्ति लगा दे। जनता के हृदय में यह भावना पैदा करने का काम साहित्यकों का है। आज हमारे लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि साहित्य प्रेयसी का गान न होकर प्रसविनी माता की सृजनात्मक शक्ति हो, वह उपभोग की वस्तु न होकर रचना का साधन हो। हमारे साहित्यकारों में से अनेकों ने स्वतंत्रता आन्दोलनों के दिनों में बड़ा महान् कार्य किया था और उन में से अनेकों ने उन दिनों ऐसी कृतियां की जिन से जन जीवन में स्वतंत्रता के लिये मोहक उन्माद पैदा हो गया और लाखों ही व्यक्ति स्वतंत्रता युद्ध में अपने जीवन को बलिदान करने को प्रस्तुत हो गये। आज हमें दूसरे प्रकार के साहित्य की आवश्यकता है। ऐसे साहित्य की जो जनता के सामने इस बात को रखे कि कृषि, उद्योग, व्यवसाय, शिक्षा के क्षेत्रों में वर्तमान विज्ञान का सहारा लेकर प्रत्येक व्यक्ति सामूहिक उद्योग में जुट जाये।

मैं समझता हूं कि आज हमारे समाज में रचनात्मक या सृजनात्मक कार्यों के प्रति जो उदा-सीनता है उस का कारण बहुत कुछ हद तक यही है कि आज साहित्य में इस बात की गूंजती हुई प्रतिध्वनि नहीं है कि यदि हमारे देश को, मानव जाति को सुखी होना है तो उस के लिये यह आव-श्यक है कि घर घर में, ग्राम ग्राम में, नगर नगर में सब लोग आकुल होकर हर प्रकार के रचनात्मक काम में उसी तत्परता के साथ लग जायें जिस तत्परता के साथ वे स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये स्वतंत्रता संघर्ष में कूद पड़े थे।

मैं समझता हूं कि हमारी वर्तमान समस्याओं के मुकाबले में स्वतंत्रता प्राप्ति एक कम कठिन कार्य था। उस समय हमें केवल कुछ विदेशियों की सत्ता अपने देश से मिटानी थी पर आज हमें लगभग ३५ करोड़ व्यक्तियों को सुशिक्षित करना है, अच्छे अच्छे घर बार देने हैं, पर्याप्त भोजन

की व्यवस्था करनी है और उन के जीवन को आनन्द और संगीत से भरना है। इस कार्य के लिये हमें अपनी आर्थिक-उत्पादन-शक्ति को हजारों गुणा बढ़ालेना है, और यह काम तभी हो सकता है जब हमारे देश में प्रत्येक व्यक्ति अपने को सरकार पर आश्रित न समझ कर अपनी शक्ति, उत्पादक, सृजनात्मक और रचनात्मक कार्यो मे लगा दे। इस महान् यज्ञ मे साहित्यकार ही प्रधान आहुति डाल सकते है और आशा है डालेंगे।

मै इसी प्रकार के साहित्य को प्रगतिशील साहित्य मानता हूं। आजकल कुछ लोग प्रगतिशील साहित्य का दर्जा ऐसे साहित्य को देते है जिसमे वर्तमान समाज के अन्तर मे होने वाले श्रेणी संघर्षों का वर्णन होता है और जो तथाकथित शोषित वर्गो को उन वर्गो से सघर्ष के लिये प्रेरित करता है। मेरा विचार है कि भारत ने महात्मा गाधी के नेतृत्व मे सामाजिक शोषण के अन्त करने की एक नई रीति का आविष्कार किया। आज भारत मे सामाजिक और राजनैतिक सत्ता उन लोगो के हाथ मे है जो इस बात मे विश्वास करते है कि समाज शोषणहीन, वर्गहीन होना चाहिये और उसमे प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी भेद भाव के बिना ऐसी सब सुविधायें प्राप्त होनी चाहिये जिनसे वह अपने जीवन का पूरा पूरा विकास कर सके। जब हमने संसार की एक महान् शक्ति का अहिसात्मक क्रियाशीलता द्वारा केवल मुकाबला ही नही किया बल्कि स्वराज्य प्राप्त भी कर लिया तो अब इस रचनात्मक समय में आपस में श्रेणी सघर्ष को हिसात्मक रूप दिये बिना नव समाज का सृजन जिसका ध्येय सर्वोदय है करना आसान होना चाहिये। इसमें साहित्य यथेष्ट सहायता दे सकता है और इसलिये मै मानता हू कि हमारे देश में जिस साहित्य की आवश्यकता है वह केवल ऐसा ही साहित्य है जिसमे सृष्टि और रचना की पुकार भरी हो।

मुझे आशा है कि आपका समद् साहित्यिको को इस दिशा मे चलने के लिये प्रेरित करेगा। मुझे यह भी भरोसा है कि आज जिस मंदिर का शिलान्यास मै ने किया है उस मे बैठ कर कार्य करने वाले साहित्यिको को बराबर ऐसी प्रेरणा मिलेगी जिससे वे भारत और संसार में अन्तर्-श्रेणीय, अन्तर्-प्रांतीय, अन्तर्-साम्प्रदायिक और अन्तर्-राष्ट्रीय शान्ति और सहयोग और प्रत्येक मानव के जीवन मे सुख समृद्धि की स्थापना करने वाले साहित्य की रचना करे।

उस आदर के लिये जो आपने मुझे इस मन्दिर के शिलान्यास करने के लिये निमंत्रित करके दिया है मैं आप सब भाई बहिनो को धन्यवाद देता हूं और मेरी भगवान से प्रार्थना है कि आप लोगो को न केवल इस मन्दिर के वाह्य स्वरूप को सुन्दर बनाने में सफलता हो वरन् इसमे भी सफलता प्राप्त हो कि यह मन्दिर भारतीय जन-जीवन के लिये एक चिर प्रकाश स्तम्भ बन जाये।

प्रयाग महिला विद्यापीठ

प्रयाग महिला विद्यापीठ मे अपने दीक्षान्त भाषण मे राष्ट्रपतिजी ने कहा--

महामहिम डा० काटजू, उपकुलपति जी, महादेवी जी, अध्यापिकाओ, बालिकाओ, भाइयो और बहिनो,

मै समझता हूं कि जो बालिकायें इस विद्यापीठ में शिक्षा पा रही हैं और जो यहां से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् बाहर जा रही है वे सब बहुत खुशनसीब हैं। उन को ऐसी संस्था में अपने जीवन

के सर्वाधिक महत्वपूर्ण काल को व्यतीत करने का अवसर और सुयोग मिला है जो हमारे देश में अत्यन्त उच्च आदर्शों के अधीन स्थापित की गई थीं। यह तो सब जानते है कि हमारे देश में जो शिक्षा सस्थाये है वे दो प्रकार की है—एक तो वे जिन्हे अंग्रेज़ी शासन ने या तो स्वयं स्थापित किया था और या अपने प्रभावाधीन लोगो से स्थापित करवाया था और दूसरी वे—जिन्हे देश भक्तो ने देश प्रेम को जाग्रत रखने या करने के लिये स्थापित किया था। अंग्रेज़ी शासन के पास उस समय इस देश की प्रभुता थी, पैसे थे, पद थे। अतः उन के प्रभाव मे कार्य करने वाली शिक्षा सस्थाओं को न तो पैसे की और न विद्यार्थियो की कमी रहती थी। वहां शिक्षा पाने वालों को यह आशा और विश्वास बना रहता था कि वहां से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् देश की राजनीतिक या आर्थिक व्यवस्था में उन्हे अच्छा खासा स्थान या पद मिलेगा। अतः वहां विद्यार्थियो के झुड के झुड जाते थे। सरकार से तो अनुदान मिलते ही थे। इस के विपरीत देश भक्तो द्वारा स्थापित संस्थाओ के पास ज्ञान और देश प्रेम के अतिरिक्त और कुछ न था। अतः उन्हे सर्वदा ही वित्त और विद्यार्थियों की कमी आती थी। किंतु इन कमियों के होते हुए भी ऐसी जो संस्थाये अपना गौरवपूर्ण अस्तित्व बनाये रख सकी यही उनके महत्व का परिचायक है। उन मे ही इस विद्यापीठ का स्थान है। मैं समझता हूं कि उसकी आज की सफलता का एक कारण तो उस की संचालिका और अधिष्ठात्री स्वयं श्रीमती महादेवी वर्मा है। भारत मे सभवतः ऐसी इनी गिनी ही शिक्षा संस्थाये होगी जिनका सचालन ऐसे विद्वान् और प्रतिभाशाली व्यक्ति के हाथ मे हो जैसी श्रीमती महादेवी वर्मा है। उन की कविता, उन के गद्य लेख और उन के दार्शनिक विचार हिंदी साहित्य की निधि है। उन की जैसी गुरुआनी पाना कुछ कम भाग्य की बात नही है और मैं समझता हूं कि उन से शिक्षा पाने वाली बालिकाये सर्वदा अपनी इस गरिमा को, अपने इस भाग्य को स्मरण रखेगी।

साथ ही उनका भाग्य इसलिये भी सराहनीय है कि इस विद्यापीठ मे पुरातन और नवीन का अत्यन्त सुन्दर सगम है। सहस्त्राब्दियो से गंगा जमुना सरस्वती का यह सगम स्थल हमारे देशवासियो के लिये तीर्थराज रहा है। अतः यदि इसके हृदय में इस विद्यापीठ जैसा सांस्कृतिक संगम हो तो आश्चर्य की बात न होनी चाहिये। इस विद्यापीठ ने पुरातन को सर्वथा तिलांजलि नही दे दी और न नवीन की ओर से मुख मोड लिया है। इस ने तो दोनों को ही अपनाया है और उन का समन्वय कर दिया है। ऐसे समन्वय से ही इस देश के नारी जगत में ऐसी नई रचनात्मक शक्ति उत्पन्न हो सकती है जो जन जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने में पूरी तरह सहायक हो सके। बहुधा प्रगति के आकुल पुजारी यह भूल जाते है कि जीवन की सामूहिक कार्य शक्ति बहुत सीमा तक भूतकाल की देन है और अपने उतावलेपन में भूतकालिक देन को सर्वथा फेंक देने या नष्ट-भ्रष्ट कर देने मे ही क्रांति की सफलता समझने लगते है। किंतु यह उनका भ्रम मात्र होता है क्योकि इस प्रकार के विनाश में वे अपना समय और शक्ति व्यर्थ में ही नष्ट करते हैं जब कि भूतकाल की आवश्यक निधि के सहारे वे क्रांति को कही कम शक्ति और समय व्यय कर के कही अधिक सफल बना सकते है। भारतवासियों की सुप्त शक्ति को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत के भूतकालिक दाय के सहारे ही इतना सजग और सक्रिय कर दिया था जितना कि संभवतः हमारे इतिहास मे किसी युग मे कभी नहीं हुआ था। हां भूत गले की फासी भी बन सकता है, किंतु वह तभी होता है जब गतिमान जीवन की ओर से मानव आंखें हटा लेता है और

नवीन की सर्वथा उपेक्षा या अवहेलना करता है। जीवन तो गतिमान है और उस की धारा कालक्रम में विभिन्न विचार और भावना भूमि मे होकर बहती ही रहती है। अतः नव संस्कृति से सर्वथा अछूता और अरञ्जित रहने की प्रवृति बड़ी घातक होती है। इसलिये मानव का धर्म है कि वह भूत-काल के ताने मे नवीन रंग का बाना बुनता चला जाये।

सारी मानव जाति के लिये यह आवश्यक धर्म है किंतु नारी जाति के लिये तो यह कही अधिक आवश्यक है। जगत की सृजनात्मक क्रियाओ मे उसका ही प्रमुख भाग होता है। मानव समाज के लिये सब से महत्वपूर्ण सृजन तो मनुष्य का सृजन है। वह तो सनातन से नारी का ही काम रहा है और आज भी है। वही तो भूतकालिक दाय को भावी पीढ़ियों को अपने दुग्ध के साथ देती है; वही तो घर मे, समाज में, उसकी रक्षा करती रही है, करती है और संभवतः करती रहेगी। जब राज न थे, पुरोहित न थे, पण्डे न थे उस समय भी नारी ही सामाजिक शृंखलाओं की रक्षक और पालक थी। यदि उसके सुकोमल शरीर से भूत, वर्तमान और भविष्य आपस मे बंधकर एक न हो गये होते तो न तो सभ्यता होती और न इतिहास। अतः हमारी महिलाओ के लिये तो यह और भी आवश्यक है कि वे सामाजिक क्षेत्र मे अपने इस महान् भाग को यथोचित्र समझे और निबाहें। हमारा देश आज संक्रांति युग मे गुजर रहा है। हमें अपने जीवन को इस प्रकार चलाना है कि हमारे देश का प्रत्येक नर नारी अपने व्यक्तित्व की पुकार को केवल सुन ही न सके वरन् उस को पूरा भी कर सके। आज हमारे देश में करोड़ों ऐसे नर नारी है जो अरमानों और तमन्नाओं को पूरा करने का तो सवाल ही क्या इस योग्य भी नही हैं कि अपने अरमानों को जान भी सके। हमे यह अवस्था बदल देनी है। और शीघ्रातिशीघ्र बदल देनी है उसके बदलने मे संभवतः हमारी नारियो का कही अधिक भाग होगा क्योकि मानव जीवन से जितना उनका आत्मिक और भौतिक सबंध होता है उतना नर का नहीं। बालक को गोद में खिलाने वाली ही भविष्य की सफल निर्माता होती हैं और उसी के आंचल मे वह शक्ति छिपी हुई है जो जगत मे स्वर्ग स्थापित करने वाली क्राति कर सकती है। हम कैसे ही राज्य क्यो न बनाले, कैसी ही आर्थिक व्यवस्था कायम क्यों न करलें जब तक हमारी अगली पीढ़ी का मानसिक गठन शिशु जीवन मे ही ठीक नही बनता हम जगत में सच्चे सुख और शांति का साम्राज्य स्थापित करने मे सफल न होंगे। अतः मै समझता हूं कि वर्तमान भारत में दफ्तर मे या फ़ैक्टरी में काम करने से कही अधिक महत्व का काम घर में है और वह काम हमारी नारियां ही कर सकती है। इस कथन का यह प्रयोजन नही है कि नारी घर की चहार दीवारी की कैदी हो और जीवन के अन्य पहलुओं से उसका कोई संपर्क न हो। इस के विपरीत मैं तो यह मानता हू कि सामाजिक विकास और स्वास्थ्य के लिये नारी की स्वतत्रता की उतनी ही आवश्यकता है जितनी नरो की स्वतत्रता की। पर स्वतंत्रता का अर्थ तो यही है कि स्वतत्र व्यक्ति अपने समय और शक्ति का ऐसा उत्तमोत्तम प्रयोग कर सके जिसमे यदि सब प्राणियों का नही तो सब मानवों का, जिनमे वह स्वय भी सम्मिलित है, हित साधन हो। अपने समय और शक्ति को अपने ही हित साधन के लिये, चाहे फिर उससे जन कल्याण होता हो या न होता हो, लगाने की सुविधा का ही अर्थ स्वतंत्रता कहना स्वतंत्रता के अर्थ को ठीक नही समझना है। वह स्वतंत्रता न होकर अराजकता होगी। अतः नारी की परम स्वतत्रता इसी बात में है और होनी चाहिये कि वह भावी पीढ़ी के मानसिक, शारीरिक और चारित्रिक गठन का पूरा पूरा अधिकार अपने हाथ मे ले। प्रकृति

ने उसी को शरीर की धात्री बनाया है और उसी को मन की धात्री। आज के समाज में जो कुरीतियां आ गई है जो उसे इस पावन कर्तव्य के पालन करने में असमर्थ बना देती है अथवा बाधा डालती है उनको समूल निकाल देना चाहिये। सामाजिक जीवन में ऐसे परिवर्तन लाने आवश्यक हैं जो नारी के लिये विकास का अबाध रास्ता खोल दें और जितनी भौतिक तथा दूसरे साधनो की इसके लिये ज़रूरत है वह प्रस्तुत कर दिये जायें। इस विषय में नर और नारी के बीच किसी प्रकार का भेद भाव हमारी उन्नति के लिये घातक होगा। साथ ही नारियों को भी अपने पावन स्थान को पहिचानना चाहिये और उसे छोडकर शोषक वर्ग मे नाम लिखाने की प्रवृति उनके लिये न तो आवश्यक है न शोभाप्रद और न उचित। प्रगतिशीलता का तकाज़ा और धर्म है कि मानब जाति के मानसिक गठन की क्रांति के यज्ञ में वे अपनी आहुति भावी पीढी का मानसिक और सांस्कृतिक गुरु बन कर दें और माता के उच्च दर्जे को पहचाने।

मैं समझता हूं कि यह विद्यापीठ इसी कर्तव्य साधन के लिये, मानव जीवन मे सच्ची क्रांति को लाने के लिये, कुछ न कुछ कार्य करती रही है। किन्तु इस दिशा मे सफलतापूर्वक कार्य करने के लिये अत्यन्त आवश्यक है कि विद्यापीठ अपने पाठ्य विषयो का ऐसा चयन करे कि उन मे मानव संस्कृति के विकास और नारी के उसमे भाग का पूरा पूरा हाल उसमें पढ़ने वाली बालिकाओं को ज्ञात हो जाये और साथ मे इन बालिकाओ को ऐसे क्रियात्मक अभ्यास कराये जिनमे वे भारतीय जनजीवन को इस प्रकार शाति पूर्ण और सृजनात्मक ढंग से बदल दें कि पारिवारिक और नागरिक जीवन शांति, स्नेह और सहयोग का आनन्द मन्दिर बन जाये।

मै उन सब बालिकाओं को बधाई देता हूं जिन्होने यहां शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् सफलतापूर्वक उसकी परीक्षायें पास कर ली है। मेरी शुभ कामना है कि वे अपने जीवन में सफल हो।

राष्ट्रीय वैमानिक दौड़

ता० २०-२-५१ को नेशनल वैमानिक दौड़, कानपुर में पुरस्कार देते समय राष्ट्रपति जी ने कहा—

हवाई जहाज के उडान में भाग ले कर जिन लोगों ने बाज़ी जीती है उन को पुरस्कार देने का काम मुझे आपने सौपा इस से मुझे हर्ष है। हवाई जहाज की वजह से आज दुनिया छोटी हो गई है। जहा पहले एक जगह से दूसरी जगह जाने मे महीनों लगते थे वहा अब घंटों मे आप जा सकते है। ऐसी हालत मे हमारे देश के अन्दर भी और देशों के मुक़ाबले में हवाई जहाज़ का पूरा प्रचार होना आवश्यक है। अब हमारे अपने हाथों में शासन का कारबार आया है। इस की वजह से यह काम और भी तेजी से बढना चाहिये। और आज उस का मौका है। इस काम में देश के युवक और युवतियों को बड़ी तादाद मे हिस्सा लेना चाहिये। हिन्दुस्तान में हवाई जहाज़ का प्रचार अभी हाल ही में हुआ है लेकिन तो भी लोगो ने इस काम में काफ़ी

दिलचस्पी ली है यह प्रशंसनीय है । मुझे इस बात से खुशी है कि इस हवाई दौड में देश भर के लोगो ने और कुछ दूसरे देशों के उडाकों ने भी भाग लिया है। जो कुछ आपने दिखलाया है वह गौरव की बात है और उस से आशा होती है कि हम भविष्य में इस दिशा में तरक्क़ी करेगें । भारत की आबहवा ऐसी है कि हवाई उडान मे बहुत कम खतरा रहता है । पर तो भी दुर्घटना तो होती ही है। अभी इसी हवाई दौड में एक दुर्घटना हो गई जिस में एक कुशल चालक श्री माथुर की जान चली गई, यह बहुत दुःख की बात है । वह हवाई जहाज उडाने की शिक्षा दिया करते थे और मैं ने सुना कि कितने ही आदमियों को उन्होंने यह विद्या सिखाई थी और शायद ही किसी और व्यक्ति ने इतने आदमियों को यह शिक्षा दी हो जितनों को उन्होंने दी थी। लेकिन इस दुर्घटना की वजह से आपको हतोत्साह नही होना चाहिये । आपका जो काम यहा हो रहा है उसी के दर्मियान श्री खुर्शीदलाल जी जो आप के विभाग से सम्बन्ध रखते थे स्वर्गवासी हो गये। उन की मृत्यु से भी देश को बहुत नुकसान पहुचा है । वह एक बहुत ही उत्साही और कर्मठ कार्यकर्ता थे । मगर सरकार का काम चलता ही रहता है और हम लोगो को इन दोनो के बताये रास्तों पर चलना चाहिये जिस मे हम अपने देश को महान् बना सके ।

अभी इस देश मे हवाई जहाज के कल पुर्जो की कमी है। लेकिन मुझे उम्मीद है कि जैसे जैसे हमारे कल कारखाने बढते जायेगे वह कमी दूर हो जायेगी और हम इस दिशा मे भी आगे बढेगे ।

मैं आप सब भाइयों और बहिनों का जो इस मे दिलचस्पी रखते है और खास कर के जो आसपास के गावो से आये है धन्यवाद देता हू । यह इस देश के लिये एक नई चीज है और मे आशा करता हू कि जिस तरह से आपने इस मे दिलचस्पी ली है आगे भी लेते रहेगे ।

कानपुर में नागरिक अभिनन्दन

ता० २०-२-५१ को ५-३० बजे शाम को कानपुर के नागरिकों द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब में राष्ट्रपति जी ने कहा--

डाक्टर मुरारीलाल साहब, बहनो और भाइयो,

आप ने इस शहर के लोगों की ओर से और कई संस्थाओं की ओर से जो मानपत्र दिया और जिस प्रेम से आपने मेरा स्वागत किया उस के लिये मैं आप को धन्यवाद देता हूं ।

आपने ठीक कहा है कि कानपुर उत्तर भारत मे प्रमुख औद्योगिक स्थान हो गया है और दिन प्रति दिन उस की तरक्की होती जा रही है। आपने ठीक ही कहा है कि थोड़े ही दिनों के अन्दर उस की आबादी कई गुनी बढ गई है और जितना कारबार यहां बढ़ता जा रहा है उस से यह आशा होती है कि इस की आबादी और भी बढ़ेगी और हर तरह से यह एक समृद्ध और सुखी शहर हो जायेगा। शहर की आबादी बढ़ना हमारे लिये एक प्रकार से दुविधा की चीज़ है। एक तरफ हम नही जानते कि आबादी बढ़ने से देश के जो लोग गावों मे बसते है उन की हालत अधिक सुधरती है या बिगड़ती है और हम यह भी नही जानते कि जो लोग शहरों मे आकर बस जाते है वे जिन जगहों से आते है उन जगहों को किस हालत मे छोड़ कर आते है। मेरा तो अपना अनुभव रहा है कि गाव जो खाली कर दिये जाते है वे किसी न किसी तरह अवनत होने लगते है और जो लोग उन को छोड कर शहरो मे बस जाते है वे गावों को भूल जाते है और उस का फल एक यह भी देखने मे आता है कि इस की वजह से गावों की हालत सुधरने के बदले बिगड़ती है। अगर इस दृष्टि से देखा जाये तो शहरों को बड़ा होना और बढ़ना फायदेमन्द नजर नहीं आता है। मगर दूसरी तरफ जब हम सोचते है कि यहा आकर के उद्योग धन्धे के ज़रिये और विद्या प्रचार के ज़रिये तथा और कई तरीको से वे देश की उन्नति मे सहायक होते है तो यह भी मालूम होता है कि वे सारे देश के सामने एक नमूना पेश करते हैं जिस को देख कर देश के लोग उन्नति करें। जो हो, भला हो या बुरा हो, मगर जो चीजे होने वाली होती है वे होती है और आज शहर बढ रहे है तब हमारा कर्तव्य यह हो जाता है कि इस शहर को इतना सुन्दर बनावें कि औरों के लिये हम नमूना पेश कर सके। जो लोग गावों से आते हैं उन का यह धर्म हो जाता है कि वे इस बात को याद रक्खें कि उन गांवों के प्रति उन का क्या कर्तव्य है। भारतवर्ष आज स्वराज पा चुका है। हम बराबर कहते आये है और आज भी कहते है कि अगर देखा जाये तो भारतवर्ष गावों में ही बसता है। कारण यह है कि हमारे बड़े बड़े शहरों के बावजूद अभी भी देश की जो आबादी है उसका बड़ा हिस्सा गांवों मे ही है और आज भी प्रति सैकड़ा ७०—७५ आदमी ऐसे है जो केवल खेती या खेती सम्बन्धी दूसरे धन्धे से अपना गुजारा करते है। तो ऐसी हालत में यह कहना कि भारतवर्ष गावों मे बसता है कोई अत्युक्ति नही बल्कि सही है। मै चाहता हूं कि जितने शहर है सभी तरक्क़ी करें, उन्नति करें और वहां के लोग अच्छे हों। मै यह भी चाहता हूं कि गांवो के लोग भी तरक्क़ी करें, उन्नति करें और उन की हालत भी जहां तक हो सके सुधरे और तभी भारत ठीक तरह से आगे बढ़ सकेगा नही तो उस का एक अग बहुत पुष्ट हो जायेगा बलिष्ठ और सुन्दर हो जायेगा और दूसरा अंग कमज़ोर ही बना रहेगा। ऐसी हालत मे तो सारा भारत बलिष्ठ और पुष्ट नहीं कहा जा सकता। जैसे किसी मनुष्य के सभी अग जब पुष्ट हों, उन्नत हों, उस का दिमाग अच्छा हो, हृदय भी अच्छा हो, आंखों की रोशनी भी अच्छी हो, शरीर मे बल हो तभी वह स्वस्थ्य और सुन्दर कहा जा सकता है। उसी तरह से जितने लोग देश में बसते है चाहे वे शहर में हों, चाहे जिस काम में हों, उद्योग धन्धे मे लगे हों, नौकरी करते हों, कारखानों में काम करते हों, फौज में हों

या चाहे गांवों में रह कर किसी तरह गुज़र करते हों, जब सभी एक साथ उन्नत होंगे तभी हम देश को उन्नत मान सकेंगे। इस लिये आज जरूरत है कि हम ऐसा प्रयत्न करे कि सारा देश उन्नत हो। स्वराज हम ने प्राप्त कर लिया है। अब अपने भाग्य का निर्णय करना हमारे अपने ही हाथों मे है। हम चाहे तो उस को बना सकते है चाहें तो उस को बिगाड़ सकते है। अब दूसरा कोई ऐसा नही रह गया है जिस पर हम बात बिगाडने का इल्ज़ाम दे सकते है और अगर अब कोई बात बिगडती है तो दोष हमारे ऊपर ही आयेगा और अगर कोई बात अच्छी हुई तो उस की तारीफ भी हमारे अपने ही लोगों को मिलेगी।

तीन साल हुए जब हम ने स्वराज प्राप्त कर लिया और पूरी तरह से स्वतन्त्र हुए अभी एक ही साल हुआ है। इस दर्मियान मे तरह तरह के दुःख हमारे ऊपर आये और जो स्वप्न हम देखा करते थे कि हिन्दुस्तान को हम ऐसा बनायेंगे वे स्वप्न पूरे नही हुए। जो चित्र भारत का हम अपने सामने रखा करते थे वह चित्र अभी ठीक तरह से बना नही है। और उस चित्र को अभी हमें बनाना है। इस लिये अपनी जवाबदेही को समझाना और किस तरह का भारत हम बनाना चाहते है उस को सोचना और उस के मुताबिक काम करना प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है। अक्सर लोग समझते है और वैसा समझने की उन को स्वतन्त्रता है कि स्वराज का मामला खत्म हो गया है, उन को अब कुछ करना नही है। अब जो कुछ करना है वह सरकार को करना है। मैं आप से कहना चाहता हू कि प्रजातन्त्रात्मक सरकार जनता से अलग नही हो सकती है। जो आज़ाद जनता होती है वह जैसा करना चाहती है वैसा कर सकती है, सरकार को वैसा ही करना पड़ता है क्यो कि सरकार जनता से अलग हो नही सकती है। अगर वह अलग हो तो उस का प्रतिनिधित्व जाता रहता है। अगर जनता मे कमज़ोरी है तो वही चीज गवर्नमेन्ट में भी आयेगी। अगर लोग अच्छे है और उन के विचार शुद्ध है तो उनकी प्रतिनिधि गवर्नमेन्ट मे भी वही गुण देखने को मिलेंगे।

आप जानते है कि जो नया सविधान देश के लिये बना है वह काम मे लाया जाने लगा है। अभी तक जो सस्थाये है सभी क़ायम है। लेजिस्लेटिव असेम्बली अपना काम कर रही है। मगर नये सविधान के अनुसार पहला चुनाव इसी साल के नवम्बर, दिसम्बर महीने में होगा। उस वक़्त आप अपने प्रतिनिधि चुन कर भेजेंगे और वे ही सरकार का काम चलायेंगे। इस तरह वह प्रजातन्त्र की परीक्षा का समय होगा। इस परीक्षा में आप किस तरह उतरते है यह आप के हाथों मे और ईश्वर के हाथ में है। इस में आप को सोच विचार कर ऐसे लोगों को चुनना चाहिये जो देश प्रेम से ओतप्रोत हों, जिन में त्याग की भावना हो और जिन मे अधिकार की या और किसी तरह की अभिलाषा नही हो और जिन मे जनता की सेवा की भावना हो। अगर आप ऐसे लोगों को चुनेंगे तो आप अवश्य सफल होंगे। अगर आप ने भूल की तो उस का दोष भी आप के ही सर पर रहेगा। इसलिये मै कहता हूं कि यह चुनाव क्या है हमारी परीक्षा है। इस में एक दूसरे प्रकार की भी परीक्षा है।

वह यह है कि कहां तक हम संगठन कर सकते है, सब चीज़ों को सम्भालने की ताकत हमारी कितनी है इस बात का भी पता चल जायेगा । क्यो कि इतना बड़ा चुनाव इस देश में क्या सारे ससार मे पहले कभी नही हुआ होगा । इस मे १७-१८ करोड लोगो को वोट देना है और ३५०० या ३६०० लोग चुने जायेगे। इस मे देश में जितने स्त्री और पुरुष है जिन की अवस्था २१ वर्ष की हो चुकी है सबको मत देने का अधिकार होगा। तो इतने बड़े चुनाव का सगठन करना आसान बात नही होती । एक रोज मै हिसाब लगा रहा था कि जो वोटर लिस्ट तैयार होगी वह कितनी वड़ी होगी । हिसाब लगा कर मैंने देखा कि अगर एक एक पन्ने पर २५-२६ नाम रहे तो वह लिस्ट २१० गज मोटी पुस्तक बन जायेगी । इसी से आप समझ सकते है कि कितना बड़ा चुनाव वह होगा । यह तो नाम लिखने की बात हुई । चुनाव कितनी जगहो पर होगा और कैसे क्या प्रबन्ध करना होगा यह भी सोचना है ।

दूसरी परीक्षा यह है कि जो अधिकार हमे मिला है उस का किस तरह से प्रयोग करे? हमारा भविष्य इसी पर निर्भर करता है । अभी जो हम सोच सकते है वह कर रहे है और हजार मुसीबतो में भी कर रहे है । जब हमें स्वराज मिला उस के बाद विपत्ति ही विपत्ति हम पर आई । हम उन से निकलने की कोशिश कर रहे है मगर एक के बाद दूसरी विपत्ति आती रहती है । इस साल अन्न की बडी कठिनाई हो रही है। कही पानी बहुत बरसा और बाढ की वजह से खेती बाड़ी बह गई। फिर सूखा पड़ा, भूकम्प हुआ और अब टिड्डियां भी खेतों मे खड़ी फसल को बर्बाद कर रही है । तो पहले ही से अन्न की कमी थी, इन कारणो से और भी बढ़ गई । गवर्नमेन्ट इस कोशिश मे है कि विदेशों से अन्न जहा तक हो सके लाया जाये और लोगों तक पहुंचाया जाये। इस का प्रबन्ध हो रहा है और आशा की जाती है कि हम कुछ अन्न ला सकेगे और उस को बाटेगे। मगर विदेशो से अन्न आयेगा और बांटा जायेगा इस में भी कुछ समय लगेगा । इसी कमी की वजह से जो राशन मिलता था उस को घटाना पड़ा। मगर मै उम्मीद रखता हू कि विदेशो से अन्न आ जायेगा तो राशन पूरा कर दिया जायेगा। मगर सरकार की ओर से चाहे जितना भी प्रबन्ध क्यों न किया जाये यह काम तब तक सफल नही होगा जब तक कि उस को जनता की पूरी मदद न मिले। इस समय इस बात को समझना और इस विपत्ति का मुकाबला करना सब का कर्तव्य है । हम मे से प्रत्येक का कर्तव्य है कि वह इस बात को समझे कि जो कुछ हमारे पास है उस को देश मे बांट करके खाये जिस मे कोई आदमी मरने न पावे और जब तक जनता साहस से इस काम में नही पड़ेगी तब तक यह काम होना ना मुमकिन है। इस देश ने ऐसी मुसीबते देखी है जिन का मुक़ाबला ससार के दूसरे किसी भी देश के इतिहास मे कम मिलेगा। मगर उन मुसीबतों को लोगो ने काटा। अब हम स्वराज पा चुके है और अपने हाथों में अधिकार ले कर देश का काम कर रहे हैं। अब जो मुसीबते इस समय आई है उन को भी हम उसी दृढ़ता के साथ उसी विश्वास के साथ, भरोसे के साथ काट लेंगे जैसे और मुसीबतें काटी। इस के लिये लोगों म हिम्मत की जरूरत है, साहस

की आवश्यकता है और अपने ऊपर भरोसे की आवश्यकता है । मैं उम्मीद करता हूं कि ये चीज़ें सब को मिलेंगी और लोग इस मुसीबत को काट लेंगे ।

अभी और भी बहुत काम हमारे सामने हैं । अभी संसार एक नाजुक वक़्त से गुजर रहा है । मालूम नहीं किस वक़्त क्या हो जाये । कोई कह नहीं सकता कि लड़ाई कब छिड़ जाये । कोई यह भी नहीं कह सकता कि लड़ाई अवश्य होगी ही । हमें अपना काम इस तरह से चलाना है कि हम अपनी रक्षा भी कर सकें और अपने लोगों की जिन्दगी भी रख सकें । हमारा प्रयत्न यह है कि देश और विदेशों में शान्ति बनी रहे । हम इस प्रयत्न में लगे रहेंगे । अभी तक जो कुछ प्रयत्न हम ने किया है उस का फल अच्छा ही हुआ है, बुरा नहीं । मगर लोगों को अपने को तैयार रखना चाहिये । हम आशा रखते हैं कि महात्मा जी ने जो रास्ता बतलाया उस पर हम चलते रहे तो मुमकिन है कि हम अपने लिये और दूसरों के लिये भी रास्ता साफ कर सकें । मगर आज तरह तरह के विचार हमारे सामने आते हैं ; और मुश्किलें भी सामने हैं । उन के सामने हम विचलित हो जाते हैं हमारे पैर इधर उधर चलने लगते हैं और सीधे रास्ते से जिस पर चल कर महात्मा जी ने देश के लिये स्वराज हासिल किया हम डिग जाते हैं । मैं तो यह मानता हू कि भारतवर्ष का सब से बड़ा काम संसार के लिये यही होगा कि गांधी जी ने जो रास्ता सिखाया और जिस पर वह चले उसको संसार के लिये हम कायम रख सकें । हम ने उस रास्ते पर चल कर बडी भारी शक्ति का मुक़ाबला किया और निःशस्त्र होकर आत्मबल से किया । आगे जो कठिनाइयां है उन का भी मुकाबला हम अगर करना चाहते हैं तो उस आत्मबल को बचा कर हमें रखना चाहिये । उस से हम मुसीबतों का मुक़ाबला भी कर सकेंगे और दूसरों को हिम्मत बंधा भी सकेंगे । अगर हम दूसरों का नेतृत्व करना चाहें और नेतृत्व करना हमारे लिये फर्ज भी हो सकता है तो हम उस रास्ते को दूसरों को दे सकते हैं । दूसरों का जो रास्ता है जिस पर चल कर वे आगे बढ़े हैं मुमकिन है कि हमारे लिये भी आसान हो । मगर हमारा जो रास्ता है उस को छोड़ कर दूसरे रास्ते पर चलना ठीक नहीं है । जो हमारा रास्ता है उस पर कठिनाइयों के बावजूद अगर हम थोड़ी दूर भी चलेंगे तो इसमें कोई शक नहीं कि उतनी हद तक हम सफल होंगे । जब गांधी जी ने स्वराज का आन्दोलन अहिंसात्मक रूप से शुरू किया तो देश में बहुतों को शक था कि हम इस में कामयाब होंगे या नहीं होंगे । महात्मा-जी ने सफलता प्राप्त कर के दिखाई और यह सफलता सब लोगों के सहयोग से प्राप्त की । तो क्या इस वक़्त उस रास्ते को हमें छोड़ना चाहिये ? इसलिये मैं यह कहूंगा कि सारे देश के लोग और विशेषकर के जो सीखना चाहते हैं, जानना चाहते हैं वे यदि अटल रहें तो इस में कोई शक नहीं कि वे सफल होंगे । मैं इस से अधिक क्या कहूं । मैं आशा करता हूं कि यद्यपि हमारे सामने मुसीबतों का पहाड़ खड़ा है हम सब उस को पार कर सकेंगे, अगर हम गांधी जी के रास्ते पर अटल बने रहे ।

आप ने जिस प्रेम और उदारता के साथ मेरा स्वागत किया जिसे कि मैं जब से यहां आया हूं देख रहा हूं उस के लिये मैं आप सब को धन्यवाद देता हूं ।

प्रेसिडेण्ट्स स्टेट्स स्पोर्ट्स क्लब

प्रेसिडेंट्स स्टेट स्पोर्टस क्लब के सालाना जलसे में तारीख २३-२-५१ को राष्ट्रपति ने कहा—

बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि आज आप लोगों ने इतने खेल दिखाये । हर साल इस तरह के खेल हुआ करते है और इस स्टेट में जितने लोग रहते है वे इस में हिस्सा लिया करते हैं और इन खेलों मे हिस्सा ले कर इस बात को दिखलाते है कि वे अपने काम के अलावा इस तरह की दूसरी चीजों मे भी दिलचस्पी रख सकते है । इसलिये मुझे इस बात से बडी खुशी हुई कि आप अपने कामों को ठीक तरह से अजाम देते है अपने को खुश भी रख सकते है और दूसरो को भी अपने खेलो से खुश कर सकते है । इन खेलों मे कुछ तो ऐसे है जिन से शरीर मे ताकत बढती है, चुसती आती है, मगर कुछ ऐसे है जो मजाक है । दोनों ही सेहत के लिये निहायत जरूरी है । इस लिये मुझे बड़ी खुशी है कि नौजवान लोग और आज तो कुछ बूढ़े लोगों ने भी इस मे हिस्सा लिया खुशी खुशी आते है, बैठते है खेलते है, और दूसरों को हसाया करते है । यह अच्छी बात है । मै चाहता हूं कि इस चीज को आप जारी रखें और सिर्फ आपस मे ही नही, दूसरो के मुकाबले मे जो मैच हुआ करते है, उन मे भी जीतें, और अगर इस प्रकार से आप अपनी दिलचस्पी रखेंगे तो मै आशा करता हू कि आप दूसरों के मुकाबिले मे भी जीत सकते है । मै अक्सर सुनता हूं और पढ़ता हू कि कभी कभी आप दूसरो के मुकाबले मे मैच मे हार जाया करते है । आपस में ही जीतना काफी नहीं है, दूसरो से भी जीतना चाहिये और अगर आप कोशिश करेंगे तो दूसरों से भी जीतेंगे । यहां जो आज जीत कर इनाम पा रहे है उन को मै मुबारकबाद देता हू और जो हार गये हैं उन से भी कहना चाहता हू कि हारना जीतना तो होता रहता है । असल चीज तो काम करना है । हार जीत की परवाह नही करनी चाहिये और इस को भी और कामों की तरह अच्छी तरह से अंजाम देना चाहिये । इस से ज़्यादा मै क्या कहू । मुझे खुशी है कि मैं इस मे हिस्सा ले सका और खेल तमाशे देख सका ।

मसनजोर बांध

तारीख २५-२-५१ को १० बजे दिन में मसनजोर बांध की नींव डालते समय राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम राज्यपाल महोदय, माननीय प्रधान मन्त्री जी, माननीय अन्य मन्त्रीगण, बहनो और भाइयो,

मुझे आज इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि मुझे आज इस शुभ काम में कुछ भाग लेने का सुअवसर आप ने दिया । इस समय भारतवर्ष के सामने सब से कठिन

समस्या खाद्य पदार्थो की है और इस वक़्त भारतवर्ष का शायद ही कोई हिस्सा है जहां अन्न की कमी लोगों को सता नही रही हो और विशेष कर के जिस प्रान्त में मै यह नीव डाल रहा हू यानी बिहार प्रान्त की हालत और जगहो के मुकाबले में ज्यादा खराब है। देश के दक्षिण भाग में भी बड़ी कठिन समस्या लोगो के सामने है। इधर बंगाल की हालत भी अगर बिहार की हालत से खराब नही तो थोडी ही अच्छी होगी । ऐसी अवस्था में लोग घबड़ाते है और इस बात की इच्छा प्रकट करते है कि किसी न किसी तरह से अन्न देश मे आये और विदेशों से जहां तक भी हो सके अन्न लाकर लोगों के पास पहुचाया जाये । आप को मालूम ही है कि यह अन्न की समस्या कुछ आज ही नही पैदा हुई है। यह तो बहुत पहले ही से है और यह जो पहली लड़ाई बीती है उस ज़माने के पहले भी हम को बहुत अन्न बर्मा से चावल के रूप मे मंगाना पड़ता था। जहा तक मुझे मालूम है १५ लाख टन चावल प्रति वर्ष बर्मा से लाया जाता था। मगर उन दिनों बर्मा भारत का एक भाग था। इस लिये यह आयात विदेशी व्यापार नही समझा जाता था। वह तो देश के अन्दर का ही व्यापार था । पर जब मे हम मे बर्मा अलग हो गया और विशेष कर के लडाई के दिनों मे जब वहा से चावल आना रुक गया और वहा चावल की पैदावार भी कम हो गई तब से हमारा अन्न का कष्ट बढ गया है और जब से हिन्दुस्तान के बंटवारे के बाद पजाब का वह हिस्सा जहा से हम को गेहू और दूसरा अनाज मिला करता था हम से अलग हो गया तो हालत और भी नाजुक हो गई । इधर कई वर्षो से हम अन्न विदेशों से मंगाते रहे है और १०० करोड, १२५ करोड़, १५० करोड़ रुपये का अन्न बाहर से मगाया जाता रहा है और इस वक़्त स्थिति ऐसी है कि उतना अन्न मगाने से भी काम नही चलेगा । इस लिये इस बार भारत सरकार ४० लाख टन अनाज बाहर से मगा रही है। इतना अन्न आज के पहले विदेशो से कभी हिन्दुस्तान मे नही आया था। मगर इतने पर भी हमारी कमी पूरी नहीं होगी । इस लिये इस वक्त अमेरीका मे जो बातें चल रही है उस ओर भी सब लोगों का ध्यान जाता है और अगर वह सफल हुई तो हमारे देश की इस साल की कठिनाई दूर हो जायेगी। हम सभी देख सकते है कि विदेशों से १०० करोड़, २०० करोड़ रुपये सालाना खर्च करके अन्न मगाना हमारे लिये सम्भव नहीं है। अगर साल दो साल इस तरह से हम निभा भी लें लेकिन फिर भी हम को अपने देश पर ही भरोसा करना होगा। विदेशों से अन्न मंगाने और लाने में और भी कठिनाइया हैं। एक तो हमारे पास दाम देने के लिये सामान नही है। दूसरे देशों से अन्न पाना भी कुछ आसान नही है। एक तो दूसरे पर भरोसा करना पड़ता है और उससे भी अधिक कठिनाई अन्न लाद कर के लाने में है क्यों कि जहाज़ मिलना भी आसान नही है और ईश्वर न करे, अगर कही लड़ाई छिड़ गई तो विदेशों से अन्न लाना कठिन हो जायेगा । इसलिये हमारे देश के सामने सिवाय इस के और कोई दूसरा उपाय नही है कि हम अपने लिये देश में अन्न उपजायें जिस से हमारी अन्न की ज़रूरत पूरी हो जाये । इस के लिये कोशिश हो रही है और गवर्नमेन्ट के सामने दो प्रकार की योजनायें है। एक तो ऐसी योजना है जिस का नतीजा तुरन्त एक साल के अन्दर मिल सकता है और उस के लिये सभी जगहों पर प्रयत्न लोगों के पास खाद पहुंचा कर, अच्छा अच्छा बीज पहुचा कर हो रहा है

जिस में अन्न की पैदावार ज्यादा हो सके। मगर ये तात्कालिक योजनायें ऐसी नही है जिन से इतना अन्न पैदा हो कि हमारी सब ज़रूरतें पूरी हो जाये। कुछ ऐसी योजनायें भी हैं जिन के द्वारा हम बहुत ज्यादा अन्न पैदा कर सकेगें। बडी बड़ी नदियों में बांध बांध कर के और उन से नहर निकाल कर के जमीन पटा कर अन्न पैदा करेगें और ये ऐसी योजनाये है जिन से आशा की जाती है कि हमारा अन्न का कष्ट दूर हो जायेगा। ऐसी योजनाओं मे समय लगता है। खर्च भी बहुत पड़ता है और इस वक्त भारत सरकार और प्रान्तीय सरकारों ने बहुत जगहों पर इस तरह का काम अपने हाथों में लिया है। इस वक्त पैसे की कमी होने की वजह से भारत सरकार जितना काम करना चाहती है नही कर पाती है। तो भी मै उम्मीद रखता हू कि जितने काम हाथ में लिये गये है उन को हम जल्द से जल्द पूरा कर सकेगे और अन्न की पैदावार बढा सकेगे। ऐसी ही योजनाओ मे मयूराक्षी के बाध की योजना भी है। मुझे मालूम नही था कि यह काम इतना अच्छा होगा और इसमे इतनी प्रगति हो सकेगी और इस मे आप लोग इतना आगे बढ जायेगे। मैंने सुना है कि अगले बरसात के पहले तक नहर का काम पूरा हो जायेगा और करीब एक लाख एकड़ जमीन पानी से पट सकेगी। जब यह बड़ा बांध पूरा हो जायेगा तो लोग कहते है कि ६ लाख एकड़ जमीन इस से पट सकेगी और इस से करीब करीब ९० लाख मन अन्न अधिक पैदा हो सकेगा। अगर ६ लाख एकड़ ज़मीन पटने लगेगी तो १५ लाख आदमियों के खाने के लिये अन्न मिल जायेगा, और वह ९ औस के हिसाब से नही २४ औस के हिसाब से। अगर ९ औंस के हिसाब से देखा जाये तो ४० लाख आदमियों के खाने लायक अन्न मिल सकेगा। तो यह काम कुछ कम नही है। आशा है कि इस काम को जिस की नींव मैं डाल रहा हू आप अधिक तेज़ी से पूरा कर सकेंगे और जिस तेज़ी के साथ आपने नहर बनाने का काम पूरा किया है उसी तेज़ी के साथ इस काम को पूरा करने मे सफल होगे। यही ईश्वर से प्रार्थना है और आप लोगों से आशा है।

अन्न की पैदावार के लिये यह बहुत बड़ा काम हो रहा है। दूसरी दूसरी जगहों पर भी इस तरह का काम हो रहा है। मुझे दो तीन जगहों को देखने का मौक़ा मिला है। पजाब मे भाखरा बाध का काम हो रहा है। वह बहुत बड़ा काम है। उस से ३० लाख एकड़ जमीन पटेगी और आप के यहां तो चार हज़ार किलोवाट बिजली तैयार होगी, वहां साढ़े चार लाख किलोवाट बिजली पैदा होगी। वहाँ उसी मुताबिक खर्च भी बहुत ज्यादा होगा। आप के यहां १५ करोड़ के खर्च का एस्टिमेट है। वहां १५० करोड़ के खर्च का एस्टिमेट है। आप के बगल में ही दूसरा जो काम दामोदर में हो रहा है वह भी बहुत बड़ा काम है। वहां भी इस से बहुत ज्यादा पानी भी मिलेगा और यहां के मुक़ाबिले में बहुत ज्यादा बिजली भी पैदा होगी। यहां से कुछ दूर जाइये तो दक्षिण में हीराकुड का काम हो रहा है और तुंगभद्रा में भी इसी तरह का प्रोजैक्ट है। मै अक्सर सुनता हूं कि गवर्नमेन्ट की लोग बहुत शिकायत करते है। कल जब मै कलकत्ते में था तो कुछ लोग मुझ से मिलने आये। उन्होंने मुझ से पूछा कि क्या कारण है कि लोगों में इतना असन्तोष फैल रहा। मैं ने

कहा कि कारण तो मुझ से आप लोग अधिक जानते है मुझ से क्यों पूछ रहे हैं। मै ने कहा कि शायद लोगों ने यह आशा रखी थी कि जिस दिन देश स्वतन्त्र होगा उसी दिन उनकी सब मुसीवते दूर हो जायेगी। मगर इतना समय बीत गया और लोगों की मुसीबते अभी तक दूर नही हुई, इस लिये लोगो में असन्तोष हो रहा है। मगर यह काम इतना बडा है कि एक दिन मे तो वह हो नही सकता। इसलिये अगर अभी तक हम सब कुछ नही कर पाये है तो इस मे कोई घबड़ाने की बात नही है और न निराश होने की बात है। जो काम अभी हाथ मे लिये गये हैं वे पूरे हो जाये और उन से जो उम्मीद की गई है अगर वह पूरी हुई तो फिर किसी को कोई शिकायत करने की गुजायश नही रह जायेगी। जो गवर्नमेन्ट का काम है वह कर रही है और बावजूद हजार मुसीबतों के, कठिनाइयों के जो हमारे सामने है कर रही है। आप जानते है कि एक दो नहीं, १०० लाख आदमी एक सूबे से दूसरे सूबे मे आये और वे अपनी खुशी से नही आये, अपने पुराने घर वार छोड कर और गरीब हो कर आ गये। उन को सम्भालने का काम गवर्नमेन्ट को करना पडा। थोडा ही सही, लेकिन जो उन को सम्भालने का काम हुआ है वह कुछ कम काम नही हुआ है। ऐसी विपत्ति के समय भी हम ऐसे काम को भी हाथ मे ले सके है, ऐसे बडे बडे बाध की योजनायो को हम चला रहे है। इन पर सोच कर देखे तो मालूम होगा कि तीन वर्षो के अन्दर जब से हमारे हाथों मे अधिकार आया हम ने कुछ कम काम नही किया है। उस का नतीजा आज देखने मे भले नही आवे मगर उस का फल तो एक दिन मिलेगा ही। तो हम ने यह सब जो काम किया है वह अच्छा काम किया है। मै आप सब भाइयो और बहिनों को बधाई देना चाहता हू कि आप ने इतनी प्रगति कर ली है और यह खुशी की बात है कि जितने समय में आप ने सोचा था उस से कम समय मे ही आप ने इस काम को पूरा कर लिया। मैं चाहूगा कि और जो जो योजनाये चल रही है उन में भी आप उसी उत्साह और हिम्मत से काम करे और उन को भी समय से पहले ही पूरा कर ले।

आप की योजना के सम्बन्ध में मै दो बातें और कह देना चाहता हू। जो लोग ऐसी जगह मे रहते है जहा बांध बध जाने से पानी हो जायेगा उन को बसाने की बात आप ने सोची है यह ठीक है। बहुत लोगों को बसाने के लिये अगर कुछ लोगो को उजडना पडता है तो यह स्वाभाविक है। मगर उनको भी बसाना चाहिये और उसी तरहसे बसाया जायेगा बल्कि उनकी आज जो हालत है उससे वे बेहतर हालत में रहेंगे, बुरी हालत में नही रहेंगे।

दूसरी बात यह है कि थोड़े ही दिन पहिले कुछ ऐसी खबर मिली है कि कुछ लोग डरते है कि जो हिस्सा पानी के अन्दर चला जायेगा उसके

अन्दर जो कोयला और दूसरे खनिज पदार्थ जैसे ताम्बा वगैरह हैं वे बर्बाद हो जायेगे। लेकिन यह तो पहले ही सोच लिया गया होगा। योजना जब बनी होगी तो सब बातों पर अच्छी तरह से विचार कर लिया गया होगा। कोई योजना बनती है तो उस पर हर तरह से विचार कर लिया जाता है। मगर जब हाल मे यह बात फिर उठाई गई है तो फिर एक दो विशेषज्ञों ने इस चीज़ को अच्छी तरह से जाचा है और विचार कर लिया है और जो उन की रिपोर्ट आई है उस से इस बात का पूरा इतमीनान हो गया है कि जिन लोगो के दिल मे डर था उस के लिये कोई जगह नही वह बे बुनियाद है। कोयले के सम्बन्ध में विशेषज्ञो का कहना है कि वह असल मे कोयला है नही। अगर हो भी तो उस सीम का आठवा हिस्सा है। वह कोयला कभी किसी काम में लगाया नही जा सकता है। तो कोयले की तो यह बात है। ताम्बे के बारे मे भी जाच की गई है। ताम्बा भी जो निकला है वह इतना कम है है कि उसे दूसरे पदार्थो से जिन के साथ वह पाया जाता है निकाला नही जा सकता है। विशेषज्ञो का कहना है कि ताबे का अंश हजार में सात हिस्सा है। तो वे कहते हैं कि कम से कम १०० मे सात हो तो काम चल सकता है मगर १००० मे सात होने से कोई माइन वर्क नही की जा सकती है। तो यह सब देख कर के लोगो की यह राय हुई कि कोई नुकसान नही है। मगर थोडा बहुत नुकसान भी हो तो यह काम करने लायक है। मगर यहां तो नुकसान है नही, केवल फ़ायदा ही फायदा है; लोगो को लाभ ही होगा हानि नही। इधर भी जो पानी के बैरेज से दूर जमीन है उस को भी पटाने का प्रबन्ध सोचा जा रहा है। २० हजार एकड़ जमीन इधर भी पटेगी। यह भी अच्छी बात है। जब पानी जमा होगा तो इधर भी मिलेगा। इस के लिये पहिले से ही योजना बना कर रखे जिस मे जब पानी मिलेगा तो योजना साथ साथ शुरू हो जाये।

मे और इस से अधिक न कह कर आप सब भाइयों और बहिनों को बधाई देता हू कि आप ने इस काम को अच्छी तरह से अजाम दिया। मै जब से यहा आया हू, जब से गाडी से उतरा हू सब लोग मेरा स्वागत कर रहे है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की तरफ से भी मेरा स्वागत किया गया। मानपत्र मे डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की मुसीबतों का भी जिक्र है। मै इस सम्बन्ध मे यही कहूगा कि इस तरह की मुसीबत आप के ही डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को नही है, सभी जगहों मे डिस्ट्रिक्ट बोर्डों की यही हालत है। मै मानता हू कि यहां के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को कुछ खास कठिनाइया है। मै यहा के देहातो मे गया हू, यहा के पहाडों मे भी गया हू। तो इस वक्त हमारे सामने जो ग़रीब लोगों को उठाने का प्रश्न है, उसमें आदिमजाति की उन्नति का प्रश्न सब से बड़ा प्रश्न है। हमारा जो सविधान बना है उस के अनुसार हमारी गवर्नमेन्ट शुरू से काम कर रही है। उसमे उन लोगों के लिये खास सुविधा दी गई है। मै आशा करता हूं कि जो प्रान्तीय

सरकारें है और जो केन्द्रीय सरकार है वे सब इस बात पर ध्यान देंगी और जो दूसरी गैर सरकारी संस्थायें है वे भी अपनी सेवा इसमें देती रहेंगी तो मै उम्मीद रखता हू कि १० वर्ष की जो मियाद दी गई है—उस मे १ वर्ष तो अब बीत चुका है अब ९ वर्ष बाकी है—उस के अन्दर यह काम पूरा हो सकेगा । इसमें हिम्मत की जरूरत है, इस मे पैसे की उतनी ज़रूरत नही जितनी अच्छे काम करने वालों की जरूरत है, और अच्छे काम करने वाले मिलेगे तो कम पैसे खर्च कर के भी उनकी उन्नति की जा सकती है । जो डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की दिक्कते है उन पर भी यहा की सरकार ध्यान देगी । यहा जो काम करने वाले है वे आदिमजाति के काम मे लग जाये । आदिमजाति की सेवा के लिये जो सस्थाये बन गई है उन से भी मै कहूगा कि वे इस मे उत्साह के साथ पड जाये । तो यह सब हमारा काम है । डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की जो जवाबदेही है उस को सामने रख कर आगे उसे बढ़ना है और काम को पूरा करना है । अगर किसी वजह से काम नही हुआ है तो उसको याद करने से कोई फायदा नही । अब काम किस तरह से चलेगा इसको देखना है और हिम्मत से सब को मिल जुल कर काम करना है । मै आशा करता हू कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड इमे प्रमुख कार्य समझ कर इस काम मे आगे बढ़ेगा और यहा की प्रान्तीय सरकार और दूसरे लोग भी इस काम में यदि उत्साहपूर्वक लग जायेंगे तो ९ वर्ष के अन्दर इस काम को पूरा करना असम्भव नही है । ९ वर्ष का समय काफी होता है ।

मै इन शब्दों के साथ आप सभी भाइयो और बहनों को एक बार फिर धन्यवाद देता हूं ।

बालिका विद्यालय, लक्खीसराय

बालिका विद्यालय, लखीसराय में तारीख २६-२-५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा—

श्री अनुग्रह बाबू, नन्द कुमार बाबू, बहनो और भाइयो,

मुझे यहां आकर आज बड़ी प्रसन्नता हुई और इसके कई कारण है । एक तो इसलिये कि बहुत दिनो के बाद इस इलाके के गावो के भाइयो और बहिनो से मिलने का सुअवसर मिला। दूसरी बात यह है कि एक ऐसी संस्था के काम के लिये मै यहां आ सका कि जिसमे मेरी दिलचस्पी बहुत पहले से रही है और जिसकी उन्नति मै हमेशा चाहता रहा हू और मुझ से जो सेवा हो सकती है यहां करना चाहता हूं । और सब से बड़ी बात तो यह है कि इस सूबे मे आकर मै एक ऐसी जगह पर आया हूं जिसको एक प्रकार से केन्द्र स्थान मानना चाहिये क्योकि यहा से थोड़ी ही दूरी पर हमारे सूबे के प्रधान मंत्री श्री कृष्णबाबू का घर है । इन सब कारणों से इस इलाके के अन्दर आने से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई ।

यह विद्यालय जैसा अभी आपसे कहा गया बालिकाओ को पढाने के लिये क़ायम किया गया है और आप से यह भी कहा गया है कि मेरी इच्छा बहुत दिनों से रही है कि इस तरह का कोई विद्या-

पीठ में अपने सूबे में देखूं जहां स्त्रियों को शिक्षा के साथ साथ ऐसा रहन सहन भी सिखाया जाये जो हमारे घरों के लिये अच्छी से अच्छी गृहिणी बनाने में मदद करे। यह भी हमें स्मरण रखना है कि हमारा सूबा एक गरीब सूबा है। यहां बहुत खर्च करके हम विद्यालय कायम नही कर सकते जहा से पढकर बालिकाये निकलें और बहुत खर्चीली आदत बनाले जिसको वे निबाह न सके। इसलिये ऐसी सस्था की जहां गरीबों की लड़कियां कम खर्च मे पढें और वे बाते सीखे, जो उनके जीवन निर्वाह के लिये सहायक, हों, और साथ ही जहां सेवा भावना सीखकर अपना और देश का कल्याण कर सके, बड़ी जरूरत है। हमारा सूबा एक ऐसा सूबा है जो शिक्षा के मामले मे और सूबो के मुकाबले मे पीछे है और अभी थोड़े ही दिनो से यहां इस तरह की शिक्षा का प्रचार आरम्भ हुआ है। यह कोई बहुत प्राचीन बात नही है। यह तो हाल के जमाने की ही बात है कि इसी सूबे के अन्दर श्री मंडन मिश्र की स्त्री ने तीन दिनों तक शंकराचार्य और मंडन मिश्र के बीच शास्त्रार्थ में पंचायत की थी। इस तरह की हमारी स्त्रियां हुआ करती थी। मगर इधर कुछ दिनो से पर्दे के कारण और कुछ अन्य कारणो से स्त्री शिक्षा का लोप हो गया। इस देश के बहुत लोगो ने इसे महसूस किया और जब महात्मा गाधी जी का दौरा इस सूबे मे हुआ तो उन्होंने देखा कि जब तक स्त्रियों को इस प्रकार सुधारा न जाये जिसमे वे अपने पैरो पर खडी होकर अपना काम कर सकें तब तक हमारे सूबे की उन्नति पूरी नही होगी। उसी वक्त से यह विचार हमारे दिल में रहा है कि ऐसी संस्था की स्थापना होनी चाहिये। बहुत दिनो के बाद एक ऐसी सस्था कायम हुई है। यों तो और भी दूसरी सस्थाये हैं जहा स्त्रियां को शिक्षा दी जाती है वे सब अपने तरीक से काम करती है। मगर जब श्री बृजनन्दन शर्मा बहुत दिनो तक मद्रास मे सेवा करके, देश के दूसरे हिस्सों का पूरा अनुभव प्राप्त करके यहा आये और इस तरह का विद्यालय खोलने का निश्चय किया तो मैंने समझा कि जो मेरी इच्छा थी वह पूरी हो सकेगी। इसलिये मुझे बडी खुशी है कि मैं यहां आया हूं। मुझे अफसोस यही रहा कि मै इसके पहले नही आ सका। क्योकि यहा आने के लिये मुझ से बहुत पहिले कहा गया था लेकिन और कामो के झंझट मे पडकर मै आ नही सका ओर जब से दिल्ली जा बैठा हूं यहां आना कठिन हो गया है। मै यहां आ सका इससे मुझे बडी खुशी है क्योकि यहा आना आसान नही था।

मै चाहता हू कि यह विद्यापीठ सचमुच में एक ऐसी संस्था हो जो समाज को उन्नत बनाने मे सहायक हो सके। अभी माननीय अनुग्रह बाबू ने बतलाया कि यहां बच्चियों से क्या क्या काम कराये जाते है। उस से आप ऐसा न समझे कि यहां शिक्षा नही दी जाती है, सिर्फ ऐसे काम ही कराये जाते है। यहा पढाया भी जाता है। उन्होने जो बतलाया वह तो इस विद्यालय की विशेपता है। अभी आपने देखा कि लड़कियो ने गाना गाया, उन्होने अभी गीता का पाठ करके सुनाया और आप देख रहे है कि केवल शारीरिक परिश्रम ही नही, बुद्धि विकास के काम की भी शिक्षा उनको दी जाती है। अभी इस विद्यालय मे मैट्रिक दर्जे तक की ही शिक्षा दी जाती है। एक दिन आयेगा जब ऊंची शिक्षा भी बच्चियो को दी जाने लगेगी।

अभी आपको आचार्य करवे का संदेश पढ़कर सुनाया गया। वह एक ऐसे पुरुष है कि ९३ वर्ष की उम्र में भी ५ माइल रोज़ टहलते है और ५०-६० साल पहिले स्त्री शिक्षा का काम उन्होंने शुरू किया और आज तक चला रहे हैं। उन्होंने अपनी स्त्री को पढ़ाने के लिये जो काम शुरू किया

उसको बढ़ाते बढ़ाते यूनीवर्सिटी कायम करके उन्होंने दिखला दी और यह दिखला दिया कि एक आदमी अगर सच्ची लगन से, सच्चे उत्साह से काम करे तो क्या क्या कर सकता है। जो कठिनाइयां हमारे सामने है, अगर सच्ची लगन से काम किया जाये तो वे भी दूर हो जायेंगी और उसके चिन्ह दिखलाई दे रहे है। यहां आप देख रहे है कि सिर्फ जमीन ही नहीं मिली है एक भवन भी तैयार हो गया है। नये भवन के लिये पैसे भी आ रहे है और आशा की जाती है कि जितने मकानों की आवश्यकता है वे जल्द से जल्द तैयार हो जायेंगे तो आप यह नही समझें कि यहां सिर्फ ईंट का ही काम हो रहा है। ईंट का काम हो रहा है लेकिन मनुष्य बनाने का काम भी आरम्भ हो गया है और इसका फल आपने देख लिया। मैं इसके लिये आप सब भाइयों और बहनो को बधाई देना चाहता हूं। जो कुछ मैं यहां देख सका हूं उससे आशा बंधती है कि जो बाकी रह गया है वह पूरा हो सकेगा।

यहा मै बहुत दिनो पर आया हूं और आप भाइयो और बहनों से मिलने का मौका मिला है। इसलिये आपसे दो चार बाते और भी कह तो गैर मुनासिब नही होगा। अभी स्वराज्य मिले तीन साल बीते है इन तीन सालों के अन्दर देश मे कितनी विपत्ति आई, हमे कितनी मुसीबते झेलनी पडी यह तो आपको मालूम ही है। जिस दिन हमको स्वतत्रता मिली और सारा देश खुशी मनाने जा रहा था और खुशी मना रहा था उसी समय एक भयकर तूफान भी आया और ऐसा तूफान आया जिसका फल आज तक हम भोग रहे है। उस तूफान का नतीजा एक दो नही, लाख पचास हजार नही, एक करोड आदमियो के सर पर पडा और उनको बसाने का काम कोई छोटा काम नही था जो अपना सब घर बार छोडकर यहा तक कि अपने भाइयो और बहिनो को जिन्दा या मुर्दा छोडकर जान बचा कर यहा आये थे। आप लोग, जो जहा पर यह सब कुछ हुआ वहा से दूर रहते है उसका अनुभव नही कर सकते है। जिन लोगों के सर पर यह आफत आयी उनको ही इसका अनुभव है। इन तीन वर्षो के अन्दर मे हमारे गवर्नमेट के लोग और गैर सरकारी संस्थाओं के लोग उनको बसाने की कोशिश करते रहे है और जितनी उनको कामयाबी हुई है उसकी खबर कुछ न कुछ आपको होगी ही। मगर अभी वह काम पूरा नही हो पाया है।

एक तरफ तो यह बडी मुसीबत और दूसरी तरफ अन्न का कष्ट हमारे देश मे लडाई के जमाने से ही चला आ रहा है। यह अन्न का कष्ट लडाई के जमाने मे आरम्भ हुआ और आपको मालूम ही होगा कि १९४३ मे आपके पडोस बगाल मे लाखो लाख आदमी मर गये। अन्न का कष्ट इधर और बढ गया है। इसके कारण बहुत है। पहले भी हमको चावल विदेशों से मगाना पडता था। मगर वह विदेश सचमुच विदेश नही था क्योंकि जो चावल घटता था वह बर्मा से आया करता था और उस समय बर्मा भारत का ही अंग था और इसलिये उसे विदेश से मगाना नही कह सकते थे। किसी को पता भी नही चलता था कि कहा से आया, कब आया और कैसे आया। जैसे देश के एक सूबे से दूसरे सूबे मे अन्न आता जाता रहता है और किसी को कोई कठिनाई नही होती उसी तरह से बर्मा से चावल आता था। मगर बर्मा के अलग हो जाने से यह दिक्कत आयी और लडाई के जमाने में बर्मा मे चावल होना भी रुक गया। इसी वजह से जितना चावल हम को मिलता था नही मिल रहा है और देश में अन्न की कमी हो रही है। हम इस कोशिश में है कि अपनी जरूरत के मुताबिक देश मे अन्न पैदा कर लें पर अभी तक हम उस हद तक नही पहुंच रहे है कि अपनी

आवश्यकता के मुताबिक पैदा करे। हम ज्यादा पैदा कर रहे है पर यह ठीक अन्दाज़ा नही है कि हम कितना ज्यादा पैदा कर रहे है। कोशिश इस बात की हो रही है कि जो हमारे पास है और जो हम विदेशों से ला रहे है उसको भी लोग बांट कर खायें जिसमें कोई खाने के बगैर न मरे। इसी का नाम कन्ट्रोल है। इसमें बहुत लोगो की शिकायत होती है कि यह ठीक तरह से नही चलता है। हमारा अपना पैदा किया हुआ अन्न भी हमसे दूसरों के लिये ले लिया जाता है। आप सब समझते है कि सारे देश मे जितने अन्न की ज़रूरत है उतना अन्न नही है। विदेशों से जो अन्न आता है उसे मिलाकर भी कम ही रहता है और जो कुछ है उसको लोगों मे बांटना है और जिसके पास कमी है उस को तो कमी है ही जिसके पास ज्यादा है उससे भी लेकर जिसके पास नही है उसको देना पडना है। इसी वजह से कन्ट्रोल आवश्यक हो गया है और ठीक तरह से उसका प्रबन्ध चले तो इसमें कोई शक नही कि उससे लाभ होगा। इगलैंड मे लडाई के जमाने मे कन्ट्रोल चला। हमारे यहां जितना पैदा होता है वह हमारी जो जरूरत है उससे थोडा ही कम रहता है। हमारे यहा १०० में १०–१२ की कमी रहती है। इंगलड मे तो तीन हिस्सा बाहर से ही आता है सिर्फ एक हिस्सा देश में पैदा होता है। तो भी उन्होने जो अपने यहा कन्ट्रोल चलाया तो उससे लोगो का स्वास्थ्य सुधर गया। स्वास्थ सुधर गया इसलिये कि जो गरीब है, उनको कमी रहती है और धनी है वे बहुत लेते है। नतीजा यह होता है कि गरीब भूख से कमजोर हो जाते है और अमीर ज्यादा खाकर अपना स्वास्थ्य खराब करते है। जब कन्ट्रोल हुआ तो डाक्टरो से जांच करवा कर गरीब और अमीर सब को उनकी जरूरत के मुताबिक दिया जाने लगा और उसका फल यह हुआ कि उनका स्वास्थ्य सुधर गया, बावजूद इस बात के कि खाने की वहा कमी रही। हमारे देश मे भी वैसा फल हो सकता है। मगर हम जानते है कि इस देश में वैसा फल नही हुआ है। आप जानते है कि इस साल अन्न कष्ट और भी बढ गया है और खास करके हमारे इस सूबे मे तो बहुत ही मुसीबत है। पहले शुरू मे बहुत वर्षा हुई, बाढ भी आयी और इसका नतीजा यह हुआ कि जहा मकई होती है वहा मकई की फसल खराब हो गई। तो भी उम्मीद यह थी कि धान होगा और मैने सुना था कि धान की अच्छी फसल लगी थी। मगर हस्त नक्षत्र मे पानी नही हुआ और बहुत दिनों तक पानी न बरसने की वजह से धान की फसल भी खराब हो गई और उसका नतीजा यह भी हुआ कि रब्बी की फसल भी खराब हो गई। रब्बी की फसल थोडी बहुत है मगर १६ आना तो है नही। तो हमारे सर पर एक के बाद एक विपत्ति आती गयी। दूसरे सूबो मे भी स्थिति वैसी ही है। कही भूकम्प भी आया। खास करके पजाब मे जहा गेहू की फसल अच्छी होने की आशा थी अब टिड्डिया भी पहुच गयी है। इस तरह एक पर एक विपत्ति हमारे सामने आयी। गवर्नमेट कोशिश मे है कि विदेशो से अधिक से अधिक अन्न लावे और जितना अन्न अभी तक विदेशो से कभी नही आया उतना अन्न लाने का सरकार ने निश्चय कर लिया है और लाने का प्रबन्ध भी किया है। इसके अलावा आप लोगो ने अखबारो मे देखा होगा कि अमेरिका खुद अपनी तरफ से अन्न भेजना चाहता है और वह अन्न आ जायेगा तो हालत सुधर जायेगी। लेकिन आप जानते है कि विदेशो से अन्न लाना आसान नही है। अन्न जहाजो से लाना होता है और एक जहाज महीने डेढ महीने मे पहुचता है। नतीजा यह होता है कि साल भर मे एक जहाज चार मरतबे से ज्यादा वहा से यहा नही आ सकता है। आप इसी से समझ सकते है कि अन्न लाने मे कितने जहाज़ लगते है। जहाज की कमी ससार मे हो रही है और ख़ास कर के जब लड़ाई की चर्चा चारो तरफ़ चल रही है यह दिक्कत और भी बढ गयी है और कहीं

लड़ाई हो गयी तो यह दिक्कत और भी बढ़ जायेगी । इसलिये हमारे लिये एक ही रास्ता है कि हम दूसरों का मुह नही देखें और अपनी ज़रूरत के मुताबिक अपने यहां पैदा कर लें । अगर अपने को इस तरह की विपत्ति से बचाना है तो हम को यह सोच लेना है । गवर्नमेंट की तरफ से दो क़िस्म की बाते की जा रही है । एक तो ऐसी बातें जिन से जल्द से जल्द अन्न पैदा किया जा सके। जिनका फल जल्द देखने में आये ऐसे काम किये जा रहे है । कुएं खुदवाकर, नये खाद पहुचा कर यह काम किया जा रहा है और जहां जहां काम होता है उसका फल भी अधिक होता है । अभी मैं दिल्ली मे था तो कृषि विभाग की तरफ से यह घोषणा कर दी गयी थी कि जो सब से ज्यादा अन्न पैदा करेगा उस को इनाम दिया जायेगा । ऐसा होने से आपस मे होड़ होगी और इस होड़ का नतीजा यह होगा कि जो सब से ज्यादा धान, गेहूं और आलू पैदा करेगे उनको इनाम दिया जायेगा । अभी मै लखनऊ गया था तो देखा कि जिसने सब से अधिक ऊख पैदा किया उसको इनाम दिया गया है । आप यहा किसान लोग है इसलिये मै आप को बतलाना चाहता हू कि उन्होने कितना कितना पैदा किया था । जिसने एक एकड़ मे ७० मन धान पैदा किया था उसको इनाम दिया गया । मै समझता हू कि यहां वह बीघे मे ५५ मन पडेगा। गेहू जिसने ५८ मन पैदा किया था उसको इनाम मिला जो यहा बीघे में ४० मन होगा और आलू एक एकड मे ८० मन पैदा किया था । मै ने इसका जिक्र कुछ बिहार के लोगो से किया तो उन्होंने कहा कि इतना तो बिहार मे भी कही कही लोग पैदा कर लेते है । मगर हमने इतना एक ही बीघे मे पैदा कर लिया तो उससे काम चलने का नही। अगर ५६ मन के बदले यहा लोग बीघे में ३०–३५ मन भी पैदा कर लेगे तो भी हमारा काम चल जायेगा । इसलिये मैं चाहता हूं कि किसान लोग इस बात की कोशिश करे जिसमें वे अधिक पैदा कर सके । मै तो यह चाहता हू कि जिसको अधिक पैदा करने के लिये इनाम मिलता है उनसे यह पूछ कर कि उन्होने कितने हल चलाये, कितने मरतबा पानी पटाया, कितना खाद दिया यह सब पूरा लिख कर लोगो मे प्रचार किया जाये जिस मे दूसरे लोग भी अपने यहा कोशिश करे और जहा तक उनकी शक्ति हो वे अधिक पैदा कर सके । मेरा विश्वास है कि यह काम हमारे सूबे मे भी हो सकता है । इसका कारण यह है कि मै जानता हू कि यहा की जमीन कुछ खराब नही है और और लोगो के मुकाबले मे भगवान ने कुछ हमको कम नही दिया है । मगर यदि अपने अज्ञान मे, हम पैदा नही कर सके, अपने आलस्य से हम पैदा नही कर सके तो इसमे हमारा दोष है, कुछ ईश्वर का दोष नही है । जहा हम मामूली तौर पर साल में दो फसल पैदा करते है अगर कोशिश करे तो ज्यादा भी कर सकते है । और चूकि मन्त्री यहा बैठे है, एक नही दो दो मत्री बैठे हुए है इसलिये मैं उनसे दर्खास्त करना चाहता हू कि वे इस सूबे मे भी इनाम दें और पहला इनाम पाच पाच हजार रुपये का रखे, फिर दूसरा उससे कुछ कम का और फिर उससे कम का और इस तरह से कई इनाम रखे तो लोगो का उत्साह बढेगा और लोग अधिक पैदा करने के लिये आपस मे होड़ करेगे ।

दूसरी चीज जो खेती के लिये सब से ज़रूरी है वह यह है कि उत्साह के साथ साथ ग्रहस्त को साधन भी होना चाहिये । उसमे सब से बड़ा साधन पानी का प्रबन्ध सबसे जरूरी है और जल्द होना चाहिये । इसके लिये बडे बडे काम देश मे हो रहे है । कल मै मयूराक्षी नदी के बाध की नीव डालने गया था । वह नदी यहा से बहुत दूर पर नही है । वह सथाल परगने की सीमा पर वीरभूमि जिले मे है । उससे ६ लाख एकड़ जमीन मे पानी पट सकेगा और बगाल के वीरभूमि

मुर्शिदाबाद आदि जिलों को भी फायदा होगा तथा संथाल परगना को भी कुछ फायदा होगा। उनकी आशा है कि इसके पूरा हो जाने पर ९० लाख मन अधिक अन्न वे पैदा कर सकेंगे। इसी तरह से और प्रान्तो में भी काम हो रहा है। पंजाब में भाखरा का बांध बध रहा है। उसमें अभी बहुत देर लगेगी क्योकि उस मे बहुत खर्च है। मयूराक्षी नदी मे तो १५ करोड रुपये का खर्च है पर वहा १५० करोड रुपये का खर्च है। और उसमे शायद कई साल लग जायेंगे और वहा का काम पूरा हो जाने पर शायद वहां ४०–४५ लाख एकड़ जमीन पट सकेगी और जमीन ऐसे इलाके मे पट सकेगी जो अभी मरुभूमि है, जहा बालू ही बालू है और वहां अन्न पैदा होने लगेगा। इसी तरह उडीसा मे भी काम हो रहा है।

हमारे सूबे मे दो इस तरह की योजनाये है। अभी यहा काम शुरू नही हुआ। एक योजना तो वह है जो सारे भारतवर्ष मे ही नही बल्कि सारे ससार मे सब से बडी योजना है। वह है कोशी की योजना। वहा अभी.काम नही हो रहा है। और यह भी मालूम नही कि वह योजना कब शुरू होगी क्योकि उसमे खर्च बहुत है। अभी उसमे जाच पडताल हो रही है। दूसरी योजना जो उससे छोटे पैमाने पर है गडक नदी की योजना है। उसमे भी बाध बनाया जाये तो वह काम जल्द हो सकता है और उससे दो तीन जिले जैसे सारण, मुजफ्फरपुर और चम्पारण को काफी पानी मिलेगा और वहा पैदावार बढायी जा सकती है। इसके अलावा और छोटी मोटी नदिया है जिनमे बाध बाध कर नहर निकाली जा सकती है। यहा जो किसान लोग है उन से मै कहना चाहता हू कि वे यह नही समझे कि यह गवर्नमेंट का काम है और उनका काम नही है। मै कहता हू कि यह उनका काम भी है और अगर वे इस काम मे उत्साह से पड जाये तो यह जल्द हो सकता है। गवर्नमेंट का काम है कि वह उनसे काम ले। नहर खोदने का काम एक महज मामूली काम है। जितनी दूर मे नहर खोदना है अगर लोग अपने अपने गाव के सामने नहर खोदने को तैयार हो जायें तो बात की बात मे नहर तैयार हो जायेगी। हमारी एक पुरानी कहावत है कि सभी लोग मिल कर काम करे तो बडा काम भी आसान हो जाता है। और अगर मिल कर लोग काम न करे तो एक सूई को भी एक जगह से दूसरी जगह ले जाना आसान नही है। पहले जमाने मे जब मोटर गाडिया नही थीं तो बैल से ही ढो कर के लोग कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह ले जाते थे। उस जमाने मे भारी भारी पत्थरो के टुकडे भी मन्दिरो के लिये लोग आपसी सहयोग से ही एक जगह से दूसरी जगह पहुचाया करते थे। पत्थर का टुकडा काटने वाले काट कर छोड देते थे। इसमे सब लोग बेगारी ही करते थे। जबर्दस्ती की बेगारी नही खुशी की बेगारी करते थे। जहा जहा पत्थर के टुकडे रहते उस के पास के गाव वाले उन टुकडो को दूसरे गाव की सीमा तक पहुचा देते और इस तरह वे सैकडो कोस तक चले जाते। हम आज उस तौर तरीको को भूल गये है और छोटी चीज के लिये भी गवर्नमेंट का मुह देखते है। हम चाहते है कि वह सहयोग का तरीका लोग अपनाये और सब मिल जुल कर अन्न के कष्ट को दूर करे, अधिक अन्न पैदा करने मे एक दूसरे की मदद करे। इसके लिये ख्वाहिश चाहिये, इच्छा चाहिये। चूकि मै यहा गाव में हू इसलिये गाव के लोगो से कह रहा हू।

और बहुत सी बाते है जिनको मै आपसे कह सकता हू और शायद जिन्हें आप सुनना भी चाहे। मगर इसके लिये समय नही है और गला भी कमजोर है। जब तक यह चलता है आपसे कुछ कहता हूं। पता नही कब यह जवाब दे दे और फिर आपसे कभी कुछ कह भी न सकूं।

आप यह न समझे कि हमारे देश की हालत बहुत खराब है। खराब है बहुत लेकिन जब कोई नया काम होता है, कोई नई योजना सामने आती है, जब कोई क्रान्ति होती है तो उसके बाद मुसीबत सामने आती रहती है। हमने जो स्वराज्य प्राप्त किया वह गाधी जी की कृपा से बडी आसानी से किया। पता भी नही लगा कि ब्रिटिश गवनमेट कहां चली गयी, कब चली गयी और हमारे हाथो मे किस तरह से सब अधिकार आया। ऐसे लोग भी थे जिनको बहुत दिनो तक पता भी नही लगा कि कब हमारे यहां अंग्रेज नही रहे और सब चीजें आहिस्ते आहिस्ते हमारे हाथो में आ गयी है, सब अधिकार हमारे हाथो मे आगये। और हमने इतनी बडी शक्ति प्राप्त कर ली है। मगर शक्ति तो प्राप्त कर ली उसको सम्भालना हमारा काम है और सारे देश के लोगो का काम है।

आप जानते है कि जो नया संविधान बना है उसमे सारे देश के जितने बालिग लोग है जिनकी उम्र २१ साल की है चाहे वे स्त्री हो चाहे पुरुष सबको वोट देने का हक है। और इसके मुताबिक पहला चुनाव नवम्बर दिसम्बर के महीने मे होगा। इसकी तैयारियां हो रही है। यह इतना बड़ा चुनाव होगा जितने बडे पैमाने पर संसार के इतिहास में कोई चुनाव नही हुआ, आइन्दा हो तो मालूम नही मगर अभी तक तो नही हुआ है। उस मे एक लाख दो लाख नही एक करोड दो करोड नही, १७-१८ करोड आदमी वोट देगे। उसमे वोट लेना, वोट गिनना सब चीजे है। अभी तक तो सब से बडा काम था कि लोगो के नाम लिखे जायें। वह काम करीब करीब पूरा हुआ। तब उनके छापने का काम है। आप इसी से महसूस कर सकते है कि यह कितना बडा काम है कि वह किताब जिसमे नाम छपेगे २०० गज चोडी होगी। यहा से लेकर उस बगीचे तक वह किताब चौडी होगी जिसमें वोटरो के नाम छपे रहेगे। उसमे ३५-३६ सौ आदमियो को चुनना होगा। एक जगह नही न मालूम कितने स्थान बनाने होगे जहा लोग वोट देंगे। उसका इन्तजाम करने मे वक्त लगता है वह सब इन्तज़ाम हो रहा है। गवर्नमेट वह सब कर रही है। उसमे करोडो करोड़ रुपये लग रहे है। मगर वोट तो लोगो को ही देना है। अब किसी को यह कहने का अधिकार नही है कि जो कुछ यहा होता है उसके लिये कोई दूसरा जिम्मेदार है। अब तो जो भला या बुरा होगा उसकी जिम्मेदारी अपने ही ऊपर है। अगर हम भला करते है तो अच्छा है और बूरा करे तो उसका भी दोष हमारे ऊपर है। अब हम यह भी नही कह सकते कि कुछ लोगो ने बात बिगाडी क्योंकि सब को वोट देने का अधिकार है। जिसको लोग चाहेगे उनको मन्त्री बनाने का अधिकार है। इसीलिये मै सभी जगहो पर जहा जाता हू यही कहता हू कि अपने अधिकार को लोग सोच विचार कर काम मे लाये और अच्छे से अच्छे आदमी को, सच्चे आदमी को जिन से आपकी भलाई हो सकती है उनको ही वोट दे। इसमें सब की परीक्षा है। जो चुने जायेगे उनकी परीक्षा तो चुने जाने के बाद होगी। मगर आपकी परीक्षा पहले ही होगी। इस परीक्षा के लिये आप तैयार रहे जिसमे जिन को आप चुन कर अपना काम कराना चाहे वे उस काम को ठीक से पूरा कर सके।

विदेशों से हमारा सम्बन्ध अच्छा रहा। मगर इस वक़्त संसार की हालत डावांडोल है। यद्यपि हम इस कोशिश मे रहे है कि दुनिया मे शाति विराजती रहे और सभी लोग मिल जल कर काम करे पर अभी कहा नही जा सकता कि कब क्या हो जायेगा। इसलिये अपनी स्वतन्त्रता के लिये सारे देश को और सारी दुनिया को इस प्रयत्न मे लगे रहना है। आजकल कोई देश एक

दूसरे से अलग नही रह सकता है । आजकल सारी दुनिया बहुत छोटी हो गयी है । एक ज़माना था जब अंग्रेज ६ महीने मे जहाज पर भारत आया करते थे । ६ महीने से घट कर १ महीना हुआ, फिर १५ रोज हुआ, फिर ३ रोज हुआ और अब उससे भी कम होने जा रहा है । इसलिये अब कोई देश किसी देश से अलग नही रह सकता है । सभी देश एक दूसरे के साथ बध गये है और इस तरह से बध गये है कि एक जगह कुछ होता है तो उसका भला या बुरा असर दूसरी जगहो पर भी पडता है । हम लोगों को पिछली लडाई का फल अभी तक भोगना पड़ रहा है । उसी का फल है कि यहां अन्न का कष्ट चल रहा है, उसी का फल है कि देश अपने को अभी तक सम्भाल नही सका है । आपको सब चीजो पर ध्यान रखना है जिस में अपनी रक्षा कर सकें । इसके लिये ज़रूरत है इस बात की कि देश मे मेल रहे । अगर मेल नही रहा तो हम अपनी रक्षा क्या कर सकते है ।

इस देश मे कई तरह की भाषा के बोलने वाले लोग बसते है । कितने धर्म के मानने वाले लोग रहते है, हिन्दू है, मुसलमान है, सिख है, पारसी है, ईसाई है । अगर देश मे मेल नही रहा तो आप समझे कि एक दिन भी हम चैन की जिन्दगी नही बिता सकेगे । इसीलिये महात्मा जी ने शुरू मे ही इस चीज़ पर जोर दिया और उसी रास्ते पर चलते रहे और अन्त में उसी प्रयत्न में अपनी जिन्दगी भी उन्होने दे दी । तो आज जरूरत इसी चीज की है कि सारा देश एक सा काम कर सके ।

आप याद रखे कि इस वक्त हिन्दुस्तान जितना बडा है उतना बडा कभी नही था । यद्यपि आज पूर्व मे उसका एक हिस्सा कट गया है और पश्चिम मे भी उस का एक हिस्सा कट गया है पर तो भी जितना बच गया है उतना बडा हिन्दुस्तान एक छत्रछाया मे कभी भी आज के पहले नही रहा । १००–२०० वर्ष के बाद जब हमारा इतिहास लोग लिखेगे तो वे कहेगे कि यह कैसे हो गया । पहले भी चक्रवर्ती राजा हुआ करते थे । लेकिन जितने राज्य उस चक्रवर्ती राजा के अन्दर हुआ करते थे वे एक प्रकार से स्वतन्त्र हुआ करते थे । सिर्फ नाम के लिये वे उनका आधिपत्य मान लेते थे या उन के राज्य से अगर चक्रवर्ती राजा का रथ गया तो उसको बिना रोक टोक जाने देते थे । मुसलमानो के जमाने मे भी बादशाह हुये । उनमे से भी कोई सारे देश को अपने काबू मे नही कर सका । जितने भाग पर उन्होने अपना काबू किया उसमे भी अलग अलग सूबे रहे जो एक दूसरे से लड़ते रहे । अंग्रेजो के ज़माने मे भी यद्यपि हिन्दुस्तान का एक बहुत बड़ा हिस्सा उनकी छत्रछाया मे रहा मगर तो भी हिन्दुस्तान का एक तिहाई हिस्सा देशी रजवाडों के अन्दर रहा । यद्यपि देशी राजे बिल्कुल स्वतन्त्र नही थे और अंग्रेज़ो की राय के मुताबिक उनको काम करना पड़ता था मगर अपने अपने राज्य मे वे स्वतन्त्र थे । उन का अपना अलग क़ानून था, उनके शासन का तरीक़ा अलग था । यह पहला ही मौका है कि सारा देश एक छत्र के नीचे है । यह काम हमारे देश के अन्दर बहुत बडा हुआ जिसको इतिहास के लोग हमेशा याद रखेंगे। अब देखना यह है कि इतनी बड़ी जवाबदेही को हम संभाल सकते है या नही । जैसा मै ने कहा अब देश की जवाबदेही किसी एक आदमी पर नही ह । वह देश के प्रत्येक पुरुष और स्त्री पर ह और यह तभी हो सकता है जब देश के अन्दर पूरी शक्ति रहे और सब उत्साह के साथ इस देश को अपना समझ कर इसे उन्नत करने और बढ़ाने में लगें । मै ने कई मरतबा कहा है और

आज भी दोहराना चाहता हूं कि मेरा अपना खयाल है कि हम जिस वक्त ब्रिटिश गवर्नमेंट से लड़ रहे थे उस वक्त जितने त्याग और परिश्रम की जरूरत थी उससे ज़्यादा परिश्रम और त्याग की आज जरूरत है। क्योंकि उस वक्त हमारे सामने एक ही, जिसको हम दुश्मन समझते थे, खड़ा था और उससे अधिकार वापिस लेने में किसी को भी बाधा नही दीखती थी और सब एक साथ मिल जुल कर काम करते थे। वह दुश्मन हट गया और अपने ही हाथों अब सब अधिकार आ गये हैं। तो अब अलग अलग विचार और खयाल आते हैं। यह स्वाभाविक है। स्वतन्त्रता का अर्थ ही है कि लोगों के अपने अपने खयाल हो। लेकिन इतना तो हमे जरूर समझना है कि यह देश हमारा है और ऐसा समझ कर काम करना है जिसमे दूसरे किसी को हमारी तरफ आंख उठाने की हिम्मत न हो। मै चाहता हूं कि इस देश की रक्षा को जितने स्त्री और पुरुष है अपना कर्तव्य समझे।

हमको यह भी देखना है कि केवल आजादी लेना ही काफी नही है। हम स्वप्न देखा करते थे कि स्वतन्त्रता मिलने पर देश से गरीबी दूर हो जायेगी, हर किस्म का रोग दूर हो जायेगा, अशिक्षा दूर हो जायेगी, यहां के खेतों मे अधिक अन्न पैदा होगा, कारखाने मे अधिक चीजें पैदा होंगी और सभी लोगो को सभी चीजें मिल सकेंगी। वह स्वप्न अभी तक पूरा नही हुआ। इसमें हर तरह के त्याग की जरूरत है, परिश्रम की जरूरत है। हम चाहते है कि लोग यह भूल जायें कि अब त्याग का समय खत्म हो गया और भोग का समय आ गया है। भारतवर्ष म भोग का समय कभी आता ही नही। भोग का काम तो देवता का है। जो मनुष्य योनि मे है उनका काम तो कर्म करना है। यह एक ऐसी योनि है जिस मे लोग अपना कर्म करके, त्याग करके आगे बढ सकते है। हमको अपना कर्तव्य करना है क्योकि आज भी हम अपने स्वप्न को पूरा नही कर पाये है।

आपसे कुछ कहने का मुझे यह मौका मिल गया इसकी मुझे खुशी है। और आप सभी भाइयों ने शान्तिपूर्वक मेरी बातें सुनी और मेरा स्वागत किया इसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मै कही भी गया हू, चाहे सूबे मे या अपने सूबे से बाहर तो लोगो ने बहुत ही प्रेम दिखलाया है। तो मै समझता हू कि मैं ने जो थोडी लोगो की सेवा की है उसके बदले में लोग और कुछ नही तो थोड़ी मेहरबानी दिखला देते है और मै चाहता हू कि इस प्रेम को आप मूर्त्त रूप दें, मनुष्य के प्रति प्रेम न दिखला कर देश के प्रति दिखलावे। मै आशा रखता हूं कि लोग देश के प्रति प्रेम दिखलायेगे और देश की उन्नति के काम मे लग जायेंगे।

हिन्दी विद्यापीठ, देवघर

हिन्दी विद्यापीठ, देवघर के समावर्तन समारोह में तारीख २६–२–५१ को राष्ट्रपतिजी ने कहा—

हिन्दी विद्यापीठ के अभिभावकगण, विद्यार्थीगण, स्नातकगण, आचार्य महोदय, नन्ददुलारे वाजपेयी जी, बहनो और भाइयो,

आपने सुना है कि ५ वर्षो के बाद वे आज यह समारोह कर पाये है। मेरा सम्बन्ध इस विद्यापीठ के साथ प्रायः इसके जन्म काल से ही रहा है, और मै समझता हूं कि इन पाच वर्षों का यह अन्तर इस विद्यापीठ के लिये और मेरे लिये भी बहुत बड़ा महत्व रखता है। अभी स्नातकों

को पदक दिये गये है, प्रमाणपत्र दिये गये है और आपने सुना कि विद्यापीठ की परीक्षाओं में कितने विद्यार्थी दूर दूर प्रान्तो से आकर सम्मिलित हो रहे है और आपके प्रमाणपत्रो को हमारी बिहार की गवर्नमेट ने भी मान लिया है। यह सब खुशी की बात है। जिन को आज पदक या प्रमाणपत्र मिले है और जो नही आ सके है सब को मै बधाई देना चाहता हू।

मेरा विचार हिन्दी के सम्बन्ध मे लोगों को बहुत कुछ मालूम है क्योंकि अक्सर जब कभी इसके लिये अवसर मिलता आया है मै अपने विचारो को प्रकट करता रहा हू। मै कोई साहित्यिक व्यक्ति नही हू और न मै ने साहित्य का अध्ययन किया है। इसलिये मै साहित्य के सम्बन्ध मे कुछ कहना अपने लिये अनधिकार चेष्टा मानता हू। मेरी योग्यता के सम्बन्ध मे चाहे लोग अपनी ओर कुछ भी कहे और नन्ददुलारे जी ने भी, जिनकी गिनती हमारे देश के विद्वानो मे है, कुछ कहा है पर मै अपने को वैसा नही मानता हू। किन्तु साथ ही मै इतना कहना उचित समझता हू कि आज साहित्य मे जो लिखा जाता है, और उसका बहाव जिस तरफ चल रहा है उसकी समीक्षा करते रहना, समालोचना करते रहना, हमारे हिन्दी के विद्वानों का काम है।

मै हिन्दी को एक दूसरे रूप मे हमेशा देखा करता हू और जो कुछ हम से हिन्दी की सेवा होती है वह उसी प्रकार से होती है। मै बहुत दिनों से हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे देखता रहा हू और देखना चाहता हू। इसके लिये दो वस्तु आवश्यक है। एक तो भाषा ऐसी होनी चाहिये कि जो समृद्ध हो और जिसमे चाहे हम जिस विषय को व्यक्त करना चाहे उसके द्वारा आसानी से कर सके। दूसरी चीज यह है कि इस भाषा का साहित्य भी ऐसा सुन्दर हो, इतना प्रचुर हो कि सभी लोग अपनी इच्छा से इसकी तरफ झुक जाये और इसका अध्ययन अपने लिये आवश्यक समझे।

दूसरा काम साहित्य के जुटाने का है, साहित्य के निर्माण का है। जैसा मै ने कहा मुझे साहित्य पढने का समय नही मिलता है लेकिन जहा तक मै कह सकता हू, पिछले ५० वर्षो मे जब से मेरा थोडा बहुत हिन्दी से सम्बन्ध रहा है, उससे थोडा बहुत ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ है, हिन्दी के साहित्य ससार मे बहुत बडी प्रगति हुई है और जो लोग इन ५० वर्षो के हिन्दी के इतिहास को देखेगे उनको इस बात का सतोष होगा कि इन ५० वर्षो मे हिन्दी कहा से कहा निकल गयी है और उसका भडार आज बहुत विषयो से बहुत बातों मे प्रचुर हो गया है। मगर तो भी यह तो कहा नही जा सकता है कि साहित्य का भडार कभी भी पूरा हो जायेगा। साहित्य का एक ऐसा भडार है जो कभी पूरा नही होता, वह किसी भी देश मे, किसी भी भाषा मे पूरा नही हुआ और किसी भी जाति के लोगो ने उसे पूरा नही किया। वह तो मानव जाति के साथ साथ प्रगति करता जाता है और जैसे मानव जाति आगे बढती जाती है साहित्य भी उसके साथ आगे बढता जाता है। वह तो तभी पूरा होगा जब मानव जाति की प्रगति ऐसे स्थान पर पहुच जाये जहा से वह आगे बढने वाली न हो। यह कभी होने वाला नही क्योंकि मानव जाति प्रगति करने वाली है। हम उसका रूप बदल सकते है, उसका ढग बदल सकते है और कभी कभी उसकी दिशा भी बदल सकते है। मगर वह साहित्य तो बढ़ता ही जाता है। हिमालय से जैसे गगा निकलती है और बहते बहते समुद्र मे जा मिलती है और तभी शान्त होती है साहित्य की भी वही स्थिति

है। जब वह मानव समाज के समुद्र से एक हो जायेगा तभी उसका चरम उत्कर्ष होगा। जैसा मै ने कहा, यह काम साहित्यिको का है कि साहित्य के काम का लोगो को दिग्दर्शन कराते रहें और उनको मार्ग दिखाते रहें।

हिन्दी भाषा किस तरह से राष्ट्रभाषा बन जाये यह एक दूसरा विषय है जिसके साथ मेरी खास दिलचस्पी रही है और हिन्दी का प्रचार किस तरह से सारे देश मे हो इसमें मै थोडा बहुत काम भी करता आया हू। इसलिये मै आपसे दो शब्द इस सम्बन्ध मे कह देना चाहता हू। यह हिन्दी बोलने वालो के लिये गौरव की बात है कि उनकी भाषा आज राष्ट्रभाषा के रूप मे मान ली गयी है और इसे मान कर के देश ने उन पर एक भारी जवाबदेही भी लाद दी है। आप जानते है कि इस देश मे दो मुख्य प्रकार की भाषाये है। एक तो वे है जो संस्कृत से प्रभावित तो हुई है मगर उनका जन्म स्थान कही दूसरी जगह पर है, उनका स्रोत कही दूसरी जगह से चला। वे दक्षिण की भाषाये है और यह कहना असम्भव है कि वे संस्कृत के प्रभाव से बिल्कुल अछूती रह गयी है। दूसरी भाषायें वे है जिनका जन्म संस्कृत से हुआ है। इन दोनो प्रकार की भाषाओ के बोलने वालों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा मान लिया है। हम को अब यह दिखाना है कि हमारी राष्ट्रभाषा किस तरह इस योग्य बने कि सारे देश के सब सार्वदेशिक काम उस भाषा के जरिये हों। इसका यह अर्थ नही है कि जो हिन्दी के अलावा भाषाएं है वे किसी प्रकार से तिरस्कृत है। इसका अर्थ यही है कि सार्वदेशिक काम के लिये हिन्दी मान ली गयी है और जो एक सूबे का दूसरे सूबे के साथ कारबार होता है वह हिन्दी के जरिये ही होगा और जो हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट है वह जो कुछ काम करेगी इसी भाषा के द्वारा करेगी। हमारे संविधान ने इस भाषा को मान लिया है और उसमे यह भी है कि भाषा ऐसी हो जिस को सभी लोग समझ सकें। उसमे क्षमता भी ऐसी होनी चाहिये कि लोग उसमे अपने तरह तरह के विचारों को अच्छी तरह से व्यक्त कर सकें। तो अब हिन्दी वालों पर एक बड़ी जवाबदेही आ गयी है। मै ऐसा मानता हू कि हिन्दी अब राष्ट्रभाषा के रूप मे स्वीकृत हो गयी है तो उसको ऐसा बनना चाहिये जिसमे वह किसी भी भाषा के शब्दो को अपने मे मिलाने मे समर्थ हो। इस लिये मै जब कभी कभी दूसरी भाषाओं से आये हुये शब्दो को निकालने की प्रवृत्ति देखता हू तो वह मुझे खटकती है। मै तो चाहता हू कि हिन्दी का शब्दभंडार जितना बढ़ाया जा सके बढ़ाया जाये और उसको बढ़ाने मे हम इस प्रकार का संकुचित विचार नही रखें कि ये शब्द संस्कृत के है या नही, प्राचीन हिन्दी के है या नही बल्कि हमको तो यही सोचना चाहिये कि शब्द सुन्दर है, अच्छा है, या नही और यह हमारे भाव को व्यक्त कर सकता है या नही। अगर कर सकता है तो उसको ले लेने मे कोई हिचकिचाहट नही होनी चाहिये।

मै देखता हू कि जो हिन्दी भाषी नही है वे कही कही घबड़ाते है, डरते है कि उन पर हिन्दी लाद दी जायेगी। मै चाहता हू कि इस भय को उनके दिल से निकाल दिया जाये। इसका रास्ता यही है कि सब मिल कर अपनी हिन्दी भाषा को उनकी भाषा भी बनावे जिससे वे खुशी से इसे अपनावें। यह अपनापन तभी हो सकता है जब हम प्रेम से उनसे मिले, उनसे हम कुछ लें और वे हमसे ले और इसका रूप ऐसा हो जो न हमारे लिये अपरिचित हो और न उनके लिये अपरिचित हो। इसके लिये प्रान्तीय भाषाओं के बहुतेरे प्रयोग हिन्दी में आयेगे। अगर हम हिन्दी

को समृद्ध करना चाहते है तो प्रान्तीय भाषाओं की समृद्धि मे किसी तरह से बाधा नही डालनी चाहिये और उनकी समृद्धि मे हिन्दी के लिये भी लाभ उठाना चाहिये । इसलिये हम उनसे जो कुछ ले सकते है हिन्दी मे लेना चाहिये, सीखना चाहिये और उनकी उन्नति से अपनी भाषा की उन्नति करनी चाहिये । मै तो यहा तक जाने के लिये तैयार हूं कि अगर उन प्रयोगो के कारण हमारे व्याकरण मे कुछ सुधार भी करना पडे तो हमे उसके लिये भी तैयार रहना चाहिये क्यो कि हमको एक ऐसी भाषा का सृजन करना है जो सारे देश मे आसानी से समझी जा सके और हिन्दी के राष्ट्रभाषा हो जाने के बाद हिन्दी मे इस प्रकार का विकास अनिवार्य हो गया है और ऐसा होना ठीक है । इसलिये मै हिन्दी के विद्वानो से जो यहा मौजूद है कहना चाहता हू कि अब वे यह नही समझे कि हिन्दी उनकी चीज है और वे जिस तरह चाहेगे उसको रखेगे, तोडेगे, मरोडेंगे और दूसरो को उसमे कुछ बोलने का अधिकार नही देगे। इस भावना को छोड देना चाहिये और जो हिन्दी बोलने वाले नही है उनसे सहायता लेकर हिन्दी को समृद्ध बनाना चाहिये और उनके लिये यह उचित होगा कि प्रान्तीय भाषाओ की शब्दावलि से, उनके प्रयोगो से और अच्छे वाक्यो से हिन्दी भाषा को भूषित करे जिस मे कि यह कहा जा सके कि हिन्दी हमारी ही भाषा नही, सारे भारतवर्ष की भाषा है । मै आशा करता हू कि हिन्दी के विद्वान हमेशा इस बात पर ध्यान देगे ।

इसके अलावा दूसरा भी काम है । वह है प्रचार का काम । प्रचार का अर्थ केवल भाषण देना नही है । इसका अर्थ यह है कि जो लोग हिन्दी नही जानते है उनको इस योग्य बना दे कि जिस तरह से हम हिन्दी मे अपना कारबार करते है उसी तरह से वे भी अगर हिन्दी मे काम करना चाहे तो कर सके, काम को उसी सफलता के साथ अजाम दे सके । इसलिये जो हिन्दीभाषी है उनकी बडी जवाबदेही है । जहा जहा हिन्दी सीखने वाले है वहा वहा हमारे आदमियो को जाना चाहिये और उनको सिखाना चाहिये । यह काम इस तरह से होना चाहिये कि जिसमे वे यह नही समझे कि हम उन पर बोझ डाल रहे है बल्कि सेवा रूप मे उनको इस काम के लिये तैयार होना चाहिये । मुझे याद है कि आज से करीब ३२ वर्ष पहले जब महात्मा जी ने मद्रास मे पहले पहल हिन्दी का काम शुरू किया तो उत्तर भारत से हिन्दी जानने वालों को उन्होने वहा भेजा और सत्यदेव जी को प्रचार के लिये वहा पहला स्थान मिला । उन्होंने महात्मा जी के पुत्र श्री देवदास गाधी के साथ वहा प्रचार काम शुरू किया । हमारे लिये यह गौरव की बात है कि इस काम मे बिहार का भी हिस्सा कुछ कम नही रहा । यहा से भी लोग गये और वहां काम किया और आज भी कर रहे है । दूसरे हिन्दी भाषी प्रान्तो के लोगो ने भी जाकर वहा काम किया और वहा काम इतना फैला और इस हद तक पहुच गया कि अब शायद उनको उत्तर भारत के लोगो की ज़रूरत भी नही रही । आपको यह सुनकर शायद मनोरजन होगा कि मै ने वहा कई बार उपाधि वितरण का काम किया है । वहा स्त्री और पुरुष दोनों परीक्षा मे सम्मिलित होते है और कई बार मै ने पति पत्नि को एक साथ उपाधि दी और एक बार तो एक ही साथ तीन पुश्त को उपाधि देने का मौका मिला; जिसमे दादी भी, नतिनी भी, पतोहू भी और दादा भी, बाप भी और बेटे भी थे । तो आप इससे जान सकते है कि वहा लोगों को इस सम्बन्ध मे कितना उत्साह है और आज हम कह सकते हैं कि दक्षिण में हिन्दी के प्रचार का जितना काम हो रहा है उतना काम और किसी जगह पर नही हो रहा है और वहां जितने पैसे वे खर्च कर रहे है

और जितने स्वयंसेवक इस काम मे लगे हुए है उतने और किसी भी जगह मे नही हैं। इस वक्त वे लाखों रुपये इस काम मे अपनी ओर से खर्च कर रहे है। मै यह कहना चाहता हू कि हिन्दी भाषी लोगो का यह धर्म है कि जहां के लोग हिन्दी सीखना चाहते है उनको यह सुविधा दे और उनको अपनी सेवा दे जिसमे वे इतनी योग्यता प्राप्त कर सके कि राष्ट्र का काम हिन्दी मे वे कर सके। इस बात पर आपको ध्यान देना चाहिये। मै ने इसके पहले भी कहा है कि हिन्दी प्रचार के काम में त्याग की जरूरत है, सेवा भावना की जरूरत है। मै आशा करता हू कि इस प्रकार से जो लोग निकलेगे इस काम को अपने जीवन का बड़ा काम समझ कर इसमे लग जायेगे और इसको पूरा करेगे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन और दूसरी सस्थाओ के लोग इस काम मे पड जाये और जल्द से जल्द इस काम को पूरा करे जिसमे फिर किसी को यह शिकायत करने की गुजाइश न रह जाये कि कोई सिखाने वाला नही रहा इसलिये उसने हिन्दी नही सीखी और इसलिये सार्वदेशिक काम के लिये अग्रेजी का सहारा उसको लेना पडा। यह बडा काम है और मै आशा रखता हू कि इस प्रान्त के लोग भी और विशेष कर के ऐसे लोग जो इस सस्था से सम्बद्ध है इस पर ध्यान देगे और जहा आवश्यकता हो इस काम को करेगे।

इसके अलावा और विषयो पर अगर मै जाता हू तो भाषण बहुत लम्बा हो जाता है। विषय तो बहुत है अब लोगो से मिलने का मौका भी कम पाता हू, लोगो से कुछ कहने का समय अब कम मिलता है। इस लिये मै दो एक बाते और कह देना उचित समझता हू। आप ऐसा नही समझे कि भारत स्वतन्त्र हो गया तो उसकी सारी समस्याये सुलझ गयी। समस्याये ज्यो की त्यो पडी है। जब हम स्वतन्त्र हुए तो उसके साथ विपत्ति तो हमारे ऊपर आयी, मुसीबत भी आयी और हमने उनका मुकाबला किया, उनको सभालने मे ही हमारी अब तक शक्ति गयी है और अभी हम पार भी नही पाये है। मगर उसमे घबराना नही है। कोई भी बडी क्रांति होती है तो उसमे कितने ही वर्ष लग जाते है स्थिति सभालने मे और ऐसी स्थिति ला देने मे जिसमे सब काम मामूली तौर से चलने लगे। अमेरिका जब स्वतन्त्र हुआ तो न मालूम कितने वर्ष उसे अपने को सभालने मे लगे। अभी हाल मे जो क्रान्तिया हुई है उनमे भी लोगो को अपने को सभालने मे बहुत समय लगा है। हमारे देश की क्रान्ति दूसरे ढग की क्रान्ति रही है और दूसरे देशो की क्रान्ति से भिन्न रही है। और देशो मे क्रान्तिया लड़ भिड कर की गयी और उनके सामने हिसा अहिसा का कोई प्रश्न नही था। इसलिये अपने समाज के सगठन मे भी जो कुछ वे करना चाहते थे उनके सामने कोई इस तरह की नैतिक कठिनाई नही आयी। नैतिक कठिनाई को अगर नैतिक दृष्टि से न देखा जाये और काम की ही दृष्टि से ही देखा जाये तो हम को मानना ही पडेगा कि हमने जो महात्मा जी के नेतृत्व में रास्ता अख्तियार किया उस रास्ते पर चलकर हम आसानी से स्वराज प्राप्त कर सके। एक बहुत बडी शक्ति का हमने मुकाबला किया और कोई कह नही सकता कि किस तरह से वह शक्ति कहा चली गयी और उसकी जगह किस तरह से और कब हम प्रतिष्ठित हो गये। इसका महत्व शायद आज नही मालूम होता हो, मगर आज से कुछ दिनों के बाद जब इतिहास लेखक इस समय के इतिहास को देखेगे और लिखेंगे, इस समय जो कुछ हुआ है उस पर विचार करेगे तो उनको अचम्भा होगा कि ऐसे लोग जिनके हाथो में हथियार नही थे इतनी बड़ी शक्ति का जो सैकड़ों वर्षो से खड़ी थी कैसे मुक़ाबला कर सके और सिर्फ़ यही नही कि अपने को उठा सके बल्कि उस शक्ति को हटा करके अपने को प्रतिष्ठित कर सके। यह सब कैसे हुआ ? महात्मा

जी ने जो रास्ता बतलाया और उस रास्ते पर जो हम थोडा बहुत चले उसी का यह फल हुआ। आज कुछ लोग सोच सकते है कि उस से अन्य रास्ते पर चल कर वे अधिक तेजी दिखला सकते है और जो कुछ हासिल करना है कर सकते है। मगर मेरा विश्वास है कि वैसा करके वे भूल करेंगे और जल्दी के बदले देर करेंगे। पुरानी कहावत है कि १ वर्ष का रास्ता अच्छा मगर ६ महीने का रास्ता ठीक नही। महात्मा जी का रास्ता देखने मे एक वर्ष का रास्ता मालूम पड सकता है और दूसरा रास्ता ६ महीने का मालूम पड सकता है। मगर अनुभव बतलाता है कि वह एक वर्ष का रास्ता आसान रास्ता था। ६ महीने के रास्ते पर चलने से न मालूम कितने महीने लग जा सकते है। हमको जो कुछ करना है, जिस रास्ते का हमने अवलम्बन किया है उस पर चलकर यदि उसे अभी तक हम नही कर पाये है तो कोई घबडाने की बात नही है। तीन वर्ष का समय किसी भी राष्ट्र के लिये कोई बहुत बडा समय नहीं है। जैसा मै ने पहले कहा है, जिन देशो में क्रान्तियां हुई है वहा एक प्रकार से पहले की चीजो को अलग फेंक कर उनको तोडताड दिया है और उनके स्थान पर नयी चीजे कायम की हैं। उनको भी कुछ समय लगा है। हमे अपनी पुरानी संस्थाओ को कायम रखना है। उसी मे उथल पुथल करके हम अपना काम चला रहे है। हमारे सामने कोई खाली मैदान नहीं है कि हम अपनी इच्छानुसार जो कुछ चाहे बना ले। हमको पुरानी चीजों को रख कर इस तरह से बनाना है कि जिससे मालूम न हो कि हम तोडताड कर रहे है। हमको यह दिखलाना है कि हम किस तरह से अपना काम ले सकते है और अपने को योग्य बना सकते है। मेरा ख्याल है कि इसी पर चलकर हम जल्द से जल्द, जहा हमे पहुचना है वहा पहुच सकते है और दूसरे रास्ते पर चलकर कठिनाइयो का मुकाबला करना होगा और इसमे भी शक है कि हम अपने ध्येय तक पहुच भी सकेंगे या नही।

यहा ही साहित्य और भाषा का प्रश्न आता है। मै ने कहा कि साहित्य मै नही जानता हू और मुझे उसका अध्ययन करने का समय भी नहीं मिला है। पर तो भी मैं समझता हू कि साहित्य ऐसा होना चाहिये जो विध्वंस की तरफ न ले जाकर बनाने की ओर ले जाये। बिगाड़ना आसान होता है, तोडना कठिन नहीं है, बनाने मे बडी शक्ति लगती है, बुद्धि लगती है और बहुत समय लगता है। साहित्य का रुख सृजन की तरफ रखना चाहिये। मै चाहता हू कि साहित्यक लोग इस तरफ बढ़े और हमारा दिग्दर्शन करें। तभी हम बढ़ सकते है। मै आशा करता हू कि हमारे देश के लोग जो आज स्वतन्त्र हुए है वे अपनी इस महत्वाकाक्षा को पूरा कर सकेंगे; इसे समझेंगे और अपनी जवाबदेही को भी समझेंगे।

इस देश को हमने स्वतन्त्र तो कर दिया लेकिन देश को स्वतन्त्र कर लेना ही काफी नही है। हमने जो स्वप्न देखे थे आज तक जो स्वतन्त्र भारत का चित्र हमने अपने सामने रक्खा था जिसमें बीमारी न हो, दुख दारिद्रय न हो, अशिक्षा न हो उसको हम पूरा नही कर सके है। इसके लिये तपस्या की ज़रूरत है, त्याग की ज़रूरत है। मेरी आशा यह भी है कि जिस तरह से ब्रिटिश गवर्नमेंट के साथ संघर्ष के ज़माने में हम सब कुछ के लिये तैयार थे और गांधी जी के बताये अनुसार चल कर अपने को बढ़ाते गये, पीछे गिरे नही, उसी तरह से अब जो रचनात्मक काम करना है, नये समाज के संगठन का काम करना है उसमे भी त्याग करने के लिये तैयार हो जायें और वह काम हम पूरा करेंगे। मैं तो यह भी मानता हूं कि यह काम उससे अधिक कठिन है। जैसा

मैं ने कहा, विध्वंस का काम आसान होता है मगर सृजन का काम कठिन होता है । विध्वस का काम हम खत्म कर चुके है और अब हमें सृजन का काम करना है, हिन्दुस्तान को हमें बनाना है । अगर हम में से प्रत्येक मनुष्य यह सोचे कि हम को बनाना है और अपनी तरफ नहीं बल्कि सारे संसार के कल्याण की तरफ ध्यान रखे तो अपने देश का और सारे संसार का हम कल्याण कर सकेंगे । अगर हमने स्वार्थी लोगो को पैदा किया, अदूरदर्शी लोगों को पैदा किया तो देश और संसार दोनो का अहित होगा । इसमें सब से बड़ा काम विद्यालयों का है कि वे अच्छे से अच्छे नागरिक तैयार करे । और जैसी संस्था आपकी है जो शुरू से ही एक नये तरीके से काम करती आयी है वैसी संस्थाओं का इसमे और भी महत्व है ।

महात्मा जी कहा करते थे कि कोई गवर्नमेंट क्यो न हो वह स्वय सुधार का काम नही कर सकती है । यह तो गैर सरकारी सस्थाओ का ही काम होता है कि उसे रास्ते पर चलने के लिये मजबूर करे । अगर आप शिक्षा सम्बन्धी सुधार चाहते है और मै मानता हूं कि आज शिक्षा मे सुधार की जरूरत है और एक जगह नही कई जगहो पर मुझे इधर मौका मिला है और मै ने अपने विचारो को व्यक्त किया और कहा है कि शिक्षा मे बहुत सुधार की जरूरत है तो इसके लिये आपको लोकमत तैयार करना चाहिये । यह काम गवर्नमेंट करेगी । मगर यह गैर सरकारी सस्थाओ का काम है जो सरकार पर निर्भर नही है कि वे अपनी सेवा से, अपनी सफलता से, अपने प्रयोगो से उसको रास्ता बतलावे और उसको मजबूर करे कि जो चीज बेहतर है उसको वह अपनावे । मै आशा करता हू कि जहा जहा इस तरह की सस्थाए काम कर रही है वे इस दिशा मे अग्रसर होगी और ऐसा करने मे उनको कठिनाइया झेलनी पडी तो झेलती रहे और अपने काम मे लगी रहे और नये प्रयोगो को ला कर गवर्नमेंट को दिखलाती रहे । अब प्रजातन्त्र कायम हो जाने के बाद गवर्नमेंट ऐसी होगी जो जनता की इच्छा के अनुसार काम करेगी । तो ऐसी अवस्था मे यह हमारा काम है कि लोगो को इस तरफ आकर्षित करे और गवर्नमेंट को प्रभावित कर सके ।

मै रास्ते मे आ रहा था तो एक जगह पर कुछ लड़को को कहते सुना कि देवघर मे कालेज होना चाहिये मगर मै कहूगा कि कालेज होना काफी नही है । कालेज मे आज क्या होता है उसको भी देखना चाहिये । अगर आज शिक्षा सुधार की जरूरत है तो इसलिये कि नयी रीति से अब काम करना है और सुधार के रास्ते पर चलना है । मै तो हतोत्साह नही करना चाहता हू । अगर गवर्नमेंट चाहेगी तो देवघर मे कालेज स्थापित हो जायेगा । मगर मै कहूगा कि उतने ही से सतोष नही मानना चाहिये । आज लोगो मे नवजीवन, नयी शक्ति पैदा करनी है । मै इस बात को मानता हू कि यूनीवर्सिटिया जिस ध्येय को लेकर कायम की गयी अभी उसी पर चल रही है । अपने लिये उन्होने कोई नया रास्ता नही निकाला है । हम को अब नये रास्ते पर चलना है । मै चाहता हू कि इस पर गवर्नमेंट भी विचार करे और जनता भी विचार करे और कोई नया रास्ता ढूढ करके निकाला जाये । जो पश्चिम की चीजे है उनको आख मूदकर हमे नही अपनाना है और न अपनी पुरानी चीजो को पुरानी लकीर कह कर फेंकना है । सभी जगह अच्छी चीजो को लेना है । मै चाहता हू कि लोग इस पर ध्यान दे और इस बात से घबरा न जाये कि अगर किसी को कह दिया गया कि प्रगतिशील नही है तो वह हमेशा के लिये निन्दा का पात्र बन जायेगा । मै तो सच्ची प्रगति उसको मानता हू जिस मे मानव जाति का कल्याण हो और आज कल्याण किस मे है इसमे भी मतभेद हो सकता है । मतभेद तो मनुष्य मात्र के हृदय में है और जब तक लोगो म

सोचने की शक्ति है मतभेद रहेगा ही। मगर हमको अपनी बुद्धि लगानी है अपना मस्तिष्क लगाना है औरदे खना है कि संसार का कल्याण किस में है। आज हम देखते है कि शाति की बातें सभी करते ह। मगर शांति अशांति के द्वारा कायम करना चाहते हैं। इस तरह वे कीचड़ को कीचड से धोना चाहते हैं। यह सभव नही है। इसलिये जरूरी है कि साफ पानी से कीचड़ को धोये। बुराई का मुकाबला साफ़ दिल से करे। इसके लिये बडे परिश्रम की जरूरत है और परिश्रम से अधिक तपस्या की ज़रूरत है। मै आशा करता हूं कि नव भारत अपनी शक्ति से दूसरो को भी प्रभावित कर सकता है और उसका यह कर्तव्य है कि संसार के सामने वह प्रवृत्ति पैदा करे कि जिसमे ससार देख सके कि वह सचमुच ठीक रास्ते पर है। महात्मा गाधी ने जो हमें नया रास्ता बतलाया उसी पर चलकर कुछ हद तक हम आगे बढे। अब हमको उसी पर आगे चलना है और वही संसार के लिये नया रास्ता है। मेरा विश्वास है कि संसार उसको मानेगा और उस पर चलेगा। इसलिये मै यह कहना चाहता हूं कि आज भारतवर्ष पर बडी जवाबदेही आ गयी है और ईश्वर से प्रार्थना है कि वह हमको बल दे कि हम उस जवाबदेही को निभा सके। इसके लिये हमको तैयार होना है। इसके लिये जो त्याग जरूरी है उसके लिये तैयार होना है। और भारत अपने कल्याण के साथ साथ सारे ससार का कल्याण करेय ही हमारी आशा है और यही ईश्वर से प्रार्थना है।

आप सब भाइयो ने जिस धैर्य के साथ मेरी बाते सुनी और मेरा जिस प्रेम के साथ आप ने स्वागत किया उसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद।

देवघर म नागरिक अभिनन्दन

ता० २६-२-५१ को ६-३० बजे शाम को देवघर म्युनिसिपैलिटी, काग्रेस कमिटी तथा सथाल पहाडिया सेवा मडल द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब मे राष्ट्रपति जी ने कहा——

देवघर म्युनिपलिटी के अध्यक्ष महोदय तथा दूसरे सदस्य गण, कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा दूसरे सदस्य गण, सथाल पहाडिया सेवा मडल के अध्यक्ष, बहनो और भाइयो,

मै अभी थोडी देर पहले एक बड़ी सभा मे आपके इस शहर के अन्दर भाषण करके आया हूं और फिर यहा भी देखता हूं कि जनता की उतनी ही बडी भीड यहा भी लगी हुई है और लोग शायद इस आशा मे होगे कि मे कुछ कहूगा। मै आपसे इतना ही कहना चाहता हू कि आपने जो मेरे प्रति प्रेम दर्शाया है उसके लिये मै आप सब को धन्यवाद देता हू।

इस वर्ष भारतवर्ष के सामने बहुत प्रकार के काम है। म्युनिसिपल्टिी का काम और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का काम जो लोग कर रहे है या गवर्नमेन्ट चलाने का काम जो लोग कर रहे है या काग्रेस कमेटी का या दूसरी सेवा सस्थाओं का जैसे सथाल पहाडिया सेवा मडल का काम जो लोग कर रहे है उन सबका काम जनता की सेवा करना है। मै चाहता हू कि सब अपनी अपनी जगह से अपना काम ठीक तरह से करे। आज भारतवर्ष को सेवा की ज़रूरत है और आज जो सेवा करेंगे वे ही सब से

बड़ा काम कर सकेंगे, वे ही भारत का कल्याण कर सकेंगे। चाहे कोई मंत्रि पद से काम करे चाहे कोई सरकारी संस्था में हो, चाहे गैर सरकारी संस्थाओं में स्वतंत्र रूप से काम करता हो, सब के सामने एक ही भावना होनी चाहिये, वह सेवा की भावना होनी चाहिये। उसी को सामने रखकर काम करना चाहिये।

यह प्रांत हिंदुस्तान का एक ऐसा प्रात है जिसमे आदिम जातियों की संख्या सब से ज्यादा है और इसलिये आदिम जाति और पहाड़ियो की सेवा का काम बडा महत्व रखता है। वे जिस अवस्था में है उसको बदल करके उन को औरों के मुकाबले मे लाना सब का कर्त्तव्य है और वह इसलिये नही कि हम उन पर कोई मेहरबानी करना चाहते है बल्कि इसलिये कि हम उनकी सेवा करना काम अपना कर्त्तव्य मानते है। यही समझ कर काम करना चाहिये। इसी लिये आज सारे भारतवर्ष मे आदिमजाति सेवा मडल की स्थापना हो चुकी है और बिहार प्रांत मे भी उसकी शाखा काम कर रही है। मै आशा करता हूं कि जहां जहां उनकी आबादी होगी वहा अधिक से अधिक वे काम कर सकेगे और उन लोगों को यह विश्वास दिला सकेगे कि हम सचमुच मे उनकी सेवा करना चाहते है। मेरा विश्वास है कि सच्ची सेवा का फल अच्छा होता है। किसी दूसरी तरह से प्रभावित नही होकर अगर सेवा भावना से काम किया जाये तो उसका फल कल्याणकारी होगा।

म्युनिसिपैलिटियो के सामने पैसे की दिक्कत हमेशा रहा करती है। और यहा की म्यनिसिपैलिटी के सामने भी दिक्कत है। मैने सुना है कि यहा जो तीर्थयात्रा मे आते है उन पर टैक्स लगाने का विचार किया जा रहा है और वह ऐसी अवस्था तक पहुंच गया है कि अब उस पर कार्य हो सकेगा। आपको आज मौका है। केवल यहा के आसपास के लोग ही नही बल्कि इस तीर्थ स्नान मे दूर दूर से लोग आते है और दर्शन करते है। वह दिन बहुत करीब है, आज से शायद ८ दिनों के बाद ही यहा का बड़ा उत्सव होगा। उसकी तैयारी मैं देख रहा हू और देखकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। मै यहा वर्षो के बाद आया हू। मैने देखा कि यहा की म्युनिसिपैलिटी मे तरक्की हुई है और अब आप महात्माजी की मूर्ति स्थापित कर रहे है, यह आपके लिये ऐसी चीज है जिस पर आप गर्व कर सकते है। मै आशा करता हू कि जो लोग यहा बाहर से तीर्थयात्रा के लिये आते है या स्वास्थ्य के लिये आते है उनकी सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझकर जितना हो सके म्युनिसिपैलिटी उनकी सेवा करती रहेगी।

काग्रेस के लोगो से मै विशेष क्या कहू। वे पुराने काम करने वाले है। वे जानते है कि उनसे क्या आशा की जाती है। वे ऐसा ही करेंगे। उनके सामने बहुत तरह की मुसीबतें आयी। उन्होने उनकी परवाह नही की और उन्होने काम किया और वे अपने ध्येय पर डटे रहे। उनमे से अब कोई ऐसा नही समझे कि वह काम खत्म हो गया है। काम अभी भी है। लोगो के दिल में संदेह, शक भी हो जाता है। शक तो सदा ही रह सकता है। आप किसी से बहस करा के विश्वास नही करा सकते कि आप सच्चे सेवक है। सच्चे सेवक वे ही होते है जो सच्ची सेवा करते है। उनको बिना प्रयत्न के सच्चे सेवक लोग मान लेते है। मेरा विश्वास है कि सच्ची सेवा को जनता स्वीकार करेगी बल्कि समय पाने पर पुरस्कृत भी करेगी। लेकिन पुरस्कार मिले या तिरस्कार मिले, उसका ख्याल छोडकर सच्ची सेवा भावना से काम करना चाहिये। अभी देश के सामने जो बड़े बडे प्रश्न है उनको हल करने मे सबके त्याग की जरूरत है, नि.स्वार्थ त्याग और निःस्वार्थ सेवा की

जरूरत है। मै चाहता हूं कि इस प्रांत के लोग जिन्होने अभी तक बहुत करके दिखाया है अपनी पुरानी शक्ति को कायम करें और इस तरह से काम करे जिसमें किसी को शिकायत करने का मौका नहीं रहे कि वे अपने पथ से विचलित हो गये और जनता को सेवा छोड़कर अपनी सेवा मे ही लग गये है और जब हम सचमुच ऐसा मौका नही देगे तो इस मे कोई शक नही कि देश का कल्याण होगा और सब लोगो का कल्याण होगा।

मै आप सब बहनों और भाइयों को फिर एक बार धन्यवाद देता हूं --

लेडी अरविन कालेज नई दिल्ली का समावर्तन

*पहली मार्च १९५१ को लेडी अरविन कालेज के समावर्तन समारोह में बोलते हुए राष्ट्रपति जी ने कहा ---

राजकुमारी जी, बहनो और भाइयो,

सर्व प्रथम मै उनको बधाई देना चाहता हू जिन्हे पारितोषिक प्राप्त करने में सफलता मिली है और जिन्हे डिप्लोमा और प्रमाण पत्र मिले है। इसके बाद मेरा यह कर्तव्य है कि उन को मै अपना धन्यवाद दू जिन्होने इस उत्सव का प्रबन्ध किया है और जो इस सस्था के, जिसका वार्षिकोत्सव आज मनाया जा रहा है, स्थापित करने और चलाने के लिये जिम्मेदार है। इस देश मे स्त्रियो मे शिक्षा के प्रचार की हमे आवश्यकता है। सच तो यह है कि शिक्षा के प्रचार की आवश्यकता तो आदमियो के लिये भी काफी है किन्तु स्त्रियो की दशा तो आदमियो से भी गई गुजरी है और इसलिये उन मे शिक्षा के प्रचार के हर प्रयास को सब लोगो की सहायता और प्रोत्साहन मिलना चाहिये। अत यह बात बडे हर्ष की है कि उन लोगो का प्रयास, जिन्होंने कुछ वर्ष हुए इस सस्था को शुरू किया था, अब फूल फल रहा है और ११ विद्यार्थियो मे शुरू होने वाली सस्था मे आज लगभग ३५० विद्यार्थी शिक्षा पा रहे है। किंतु इस सस्था की सर्वाधिक प्रमुख बात मै यह समझता हू कि इस मे इस बात को मान लिया गया है कि नारियो के लिये शिक्षा का अलग विषय क्रम होना चाहिये। कभी कभी हम लोग स्त्री और पुरुष के बीच के अन्तर के बारे मे गल्ती कर बैठते है। कभी कभी हम समझते है कि उनमे कोई अन्तर नही है जो कि यह बात प्रकृति के प्रति अपनी आखे बन्द कर लेने के समान है। किंतु जब यह बात सब लोग समझते है कि कुछ विशेष क्षेत्र है जिनमे ही हमारी स्त्रियो को प्रशिक्षा दी जा सकती है और कुछ ऐसे अन्य क्षेत्र है जिन मे स्त्रिया पुरुषो से मुकाबला कर सकती है और आगे बढ सकती है तब हमारी संस्थाओ को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि वे उन बातो के लिये खास प्रबन्ध करे जिनमे कि हमारी नारियो को दिलचस्पी है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि यह सस्था अपना कार्य सफलता पूर्वक ही न करती रही है वरन् इसे जनता और सरकार दोनो की ओर से ही अपने कार्य मे प्रोत्साहन मिलता रहा है। मैने अभी अभी वह रिपोर्ट बडी दिलचस्पी से सुनी जिसमे आपके कालेज के काम पर पूरी तरह से रोशनी डाली गई है और मुझे यकीन है कि यहा और लोगो ने भी उसको उसी दिलचस्पी से सुना होगा। अक्सर हम सुनते है कि रुपये की कमी की वजह से शिक्षा संस्थाओं के काम में रुकावट पडती है। किंतु कठिनाइयों के बावजूद कुछ ही

---

* अंग्रेजी से हिन्दी मे अनुवाद

संस्थायें इस प्रकार अपना काम करती रहती हैं जिस प्रकार यह संस्था करती रही है। मेरा अपना यह विचार है कि जो संस्था अपना काम अच्छी तरह से करती है उसे किसी न किसी तरह से रुपये मिल ही जाते हैं और मुझे आशा है कि इस संस्था की आशायें पूरी हो ही जायेंगी। आप को तो केवल यही करना है कि आप इसको उस सहायता की अधिकारिणी बनायें जिसकी कि इसे आवश्यकता है। मुझे यकीन है कि जिस प्रकार आप काम कर रहे हैं उस को ध्यान में रखकर आप सहायता के पूरे अधिकारी हैं और मुझे यह आशा है कि उचित समय पर सरकार और दान शील लोग इसकी आवश्यक सहायता करने के लिये अग्रसर होंगे और उन कठिनाइयों को दूर कर देंगे जिन्हें आप आजकल महसूस कर रहे हैं। मैं यह जानता हू कि इस प्रकार की अन्य बहुत सी संस्थाये शिक्षा प्रदान करने के लिये इस देश में नही हैं। यदि देहली मे कोई केन्द्रीय सस्था काम करती है तो यह स्वाभाविक ही है कि देश के अन्य भागो से भी खिचकर उसमे विद्यार्थी आयें और इसलिये यह सस्था केवल दिल्ली की ही स्थानीय संस्था नही समझी जा सकती। यद्यपि इस सस्था का सबध दिल्ली विश्व विद्यालय से है तथापि अपनी विशेषताओं के कारण इसका अपना पृथक महत्व भी है। उन्ही लोगो से ही नही जिनके बच्चे इसमें पढ़ते हैं बल्कि अन्यों से भी सहायता पाने की यह अधिकारिणी है। इसलिये दानशील व्यक्तियो तथा सरकार से इस संस्था की सहायता करने की मैं सिफारिश करता हू जिससे यह उन अपेक्षाओं की पूर्ति कर सके जो इससे लोगों की हैं। जिन लडकियो को सफल होने के पश्चात् अभी डिप्लोमे मिले हैं उनको मैं बधाई देता हूं और साथ ही साथ उनको कुछ उपदेश भी देता हूं। वे कुछ विशिष्ट गौरव के साथ बाहर जा रही हैं, वे कुछ जिम्मेदारियो के साथ बाहर जा रही हैं। उन्हे अपने मन मे यह बात सर्वदा स्मरण रखनी चाहिये कि उन्हे अपने व्यवहार मे, अपने आचार मे, अपने जीवन में उन आशाओ के अनुकूल चलना है जो उनके बारे में उन लोगो ने बनाई थी जो इस संस्था को चला रहे हैं और जिन्होंने इस संस्था की स्थापना की थी। उन्हे समाज को यह दिखा देना है कि वे अच्छे नागरिक हैं। और वे उनसे बेहतर नागरिक हैं जिन्हें इस संस्था मे शिक्षा पाने का सौभाग्य प्राप्त नही हुआ है। मैं उनसे यह कहूगा कि वे सर्वदा महसूस करती रहे कि उनकी जिम्मेदारिया भारी हैं। यदि वे इस आशा की पूर्ति करने में सफल होगी तो स्वभावतः इस विद्यालय मे और भी अधिक विद्यार्थिनी आयेंगी और इस विद्यालय की साधारण जनता मे और भी प्रशसा होगी। अतः उनको केवल यहां की शिक्षा को ही सुफल सिद्ध नही करना है वरन् उन्हें उस काम को और उस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था को भी जो इस संस्था में की गई है अच्छा सिद्ध करना है। इन शब्दो के साथ मैं उनको फिर बधाई देता हूं और आप सब को धन्यवाद देता हूं।

हिसार में नागरिक अभिनन्दन

हिसार म्युनिसिपैलिटी तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब में ता० ३-३-५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम राज्यपाल, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड तथा म्युनिसिपैल बोर्ड के अध्यक्ष महोदय, भाइयो और बहनो,

आपने मानपत्र देकर जो मेरा आदर बढ़ाया है उसके लिये मैं आप सबको धन्यवाद देना चाहता हूं। यह समय इस देश के लिये ही नही सारे ससार के लिये बहुत कठिन बीत रहा है

और इस वक्त जितनी समस्यायें खास करके हमारे देश के सामने आ गयी है उनको एक एक करके अगर हम सुलझाना चाहें तो उसमे बहुत समय, परिश्रम, और त्याग की जरूरत होगी और जब सभी समस्यायें एक साथ आ जाती है तो उनका सुलझाना और भी कठिन हो जाता है। अभी तीन वर्ष ही हुए है जब हमारे हाथ मे अधिकार आये और जब से हम स्वतत्र हुए तब से एक न एक विपत्ति आती ही गई है और यह वर्ष जो बीत रहा है उसमे तो इतनी मुसीबते एक साथ आ गयी कि जिनका कोई ठिकाना नही।

पहले से ही अन्न का कष्ट भारत मे था। ईश्वर की दया से आपका सूबा एक ऐसा सूबा है जो इस कष्ट से एक तरह से बचा हुआ है और आपसे और सूबों को कुछ न कुछ सहायता मिलती है और आगे भी मिलती रहेगी इस तरह की आशा की जाती है। मगर सारे देश की स्थिति इस वक्त बहुत ही कठिन है। [illegible] कारण यह है कि शुरू में तो कही कही बहुत वर्षा हुई, बाढ आई जिसकी वजह से फ़सल [illegible]। उसके बाद सूखा पड़ गया जिसकी वजह से जो फसल खेतों में लगी हुई थी वह सूख कर मर गई। कही भूकम्प आया और आपके सूबे के कई हिस्सों मे जहा से बड़ी आशा की गई थी अब टिड्डी दल आ गया है। हम सब विपत्तियों का एक एक करके मुकाबला कर रहे है। मगर तो भी ऐसी अवस्था हो गयी है कि सारे देश में अन्न की बहुत कमी हो गई है और उसकी वजह से गवर्नमेंट को मजबूर हो कर के कम अन्न बाटना पड़ रहा है। जहा पहले १० औस प्रति आदमी को दिया जाता था वहा अब घटाकर ९ औस किया गया है। एक तो १२ औस भी कम ही था मगर अब उसको घटाकर ९ औस कर दिया गया है और एकाध जगहो मे ८ औस भी किया गया है। अब आप इस से समझ सकते है कि जब तक स्थिति ज्यादा खराब नही रहती गवर्नमेंट को ऐसा नही करना पडता। पर आशा की जाती है कि किसी न किसी तरह मे इसमे हम निकलेगे और जो राशन मे कमी हो गयी है उसको हम पूरा कर सकेगे। इसमे सब लोगो की सहायता जरूरी है। गवर्नमेंट से जो कुछ हो सकता है कर रही है। और इस साल विदेशो से जितना अन्न मगाने का इन्तजाम किया गया है उतना अन्न कभी विदेशों से इस देश मे नही मंगाया गया। बात यह है कि गवर्नमेंट चाहे अपनी तरफ से जितना भी प्रबन्ध करे, अच्छे से अच्छा इतजाम करे पर जब विपत्ति का मुकाबला जनता करेगी तभी हम उससे निकल सकेगे। मै जहा जहा जा रहा हू तो लोगों से यही कहता हू कि गवर्नमेंट अपनी ओर से सब कुछ कर रही है। हमारी केन्द्रीय सरकार और प्रान्तीय सरकारो से जो कुछ हो सकता है वे कर रही है। मगर तो भी विपत्ति का मुकाबला लोग अपनी हिम्मत और उत्साह से ही कर सकते है। मै जानता हू कि जब कोई विपत्ति का समय आता है तब कितनी तेजी के साथ हमारे लोगों की बुद्धि चलती है और वे अपने को बचाने के लिये कितने तरह से प्रयत्न किया करते है। हम चाहते है कि वही बुद्धि और परिश्रम लोगो के दिल मे उठे जिससे हम इस मुसीबत का मुक़ाबला कर सके।

अपने अपने मानपत्र मे भूकम्प का भी ज़िक्र किया है। वह भारी विपत्ति थी मगर उसमे सारे देश के लोगो ने मदद की थी क्योकि वह विपत्ति एक जगह पर आयी। मगर उसमे एक चीज़ देखने को मिली थी जिसका ज़िक्र मै कर देता हू। अभी इस बात की कोशिश हो रही है कि अधिक अन्न पैदा किया जाये। मै भी सभी जगहों में जा रहा हूं और लोगों से कह रहा हूं कि क्या प्रयत्न

किये जा सकते हैं जिनके द्वारा लोग अधिक अन्न पैदा कर सकते है। उस वक्त जब भूकम्प हुआ तो विहार के बहुत हिस्सो मे पानी की कमी हो गई। आपके यहा भी पानी की कमी है। विहार में मामूली तौर से पानी की कमी नहीं है। मगर तालाब, कुए सब के सब भूकम्प होने से जो बालू निकला उस से भर गये और पानी का कष्ट होने लगा। सैकडों मील तक तमाम खेत बालू ही बालू हो गये। ऐसा मालूम पडता था कि यहां रेगिस्तान हो जायेगा। हम लोग इसके बारे मे सोचने लगे कि रेगिस्तान हो जायेगा तो क्या किया जायेगा। कुछ लोगो ने सोचा कि बालू को नीचा कर दिया जाये और नीचे की मिट्टी को ऊपर कर दिया जाये तो अन्न पैदा होने लगेगा। बालू को हटाने का प्रयत्न किया गया। उस प्रयत्न से इतना कष्ट पडा कि हम लोगो ने सोचा कि सैकडों मील तक बालू हटाना सभव नही है। इसके अलावा बालू को जमा करने केलिए भी जगह चाहिये और यदि जमा भी किया गया और फिर हवा के चलने से बालू खेतों में फैल गया तो सारा परिश्रम और खर्च बेकार जायेगा। तो यह सवाल तो था ही। पर सब से बडी मुसीबत पानी की थी। इसी बीच मे महात्माजी आये। उन्होने सब जगहों को जाकर देखा। हमने सब सवाल उनके सामने रक्खे। यह सब हम लोग रिलीफ कमेटी की तरफ़ से कर रहे थे। उन्होने कहा कि यह सब काम तुम लोग नही कर सकोगे। लोगों के जो मकान गिर गये है उनको भी तुम बना नही सकते। मकान के बगैर आदमी रह सकता है अन्न के बगैर भी कुछ दिनो तक रह सकता है मगर पानी के बिना कोई जिन्दा नही रह सकता। पानी का प्रबन्ध तुम कर सकते हो, उसे करो। हमने सोचा कि कुएं खोदे जाये। उस समय गवर्नमेंट हमारे हाथो मे नही थी। गवर्नमेट के साधन हमारे पास नही थे। जो कुछ हमारे पास था वह यही था कि लोगों का उत्साह था। हमने गाव गाव कुए खोदे। पैसे रिलीफ कमेटी की तरफ से आये और मिहनत गाव वालो को करनी थी। हमारे पास कोई इंजीनियर नही था। मगर गाव के लोग कुंए खोदने का काम जानते है। ढाई महीने के अन्दर लोगो ने ८००० कुए गावों मे तैयार कर लिये और २०—२२ हजार कुए और तालाब लोगो ने साफ़ कर लिये। हमने देखा कि उत्साह से काम लोगो ने किया और ढाई महीने के अन्दर पानी का कष्ट खतम हो गया। वे कुए आज भी मोजूद है। गवर्नमेंट की तरफ से भी काम हुआ उनके पास इंजीनियर भी थे, पैसे भी काफी थे। उनके सलाहकारो ने मशवरा दिया कि सभी जगहों मे पम्प लगवा दें। न मालूम कितने हजार रुपये खर्च करके पम्प लगवाये गये। मगर उसका नतीजा यह हुआ कि कुछ दिनों बाद पम्प बिगड गये और उनकी मरम्मत नही हो सकी और पानी का कष्ट फिर शुरू हो गया। मगर हमने जो कुए बनवाये थे उस वक़्त तक बनकर तैयार हो गये और पानी देने लगे। तो हमने उस का जिक्र इसलिये किया है कि इस वक़्त जो अन्न का कष्ट है उसका मुकाबला लोग अपनी हिम्मत से करें तो ज्यादा खूबी से कर सकते है और ज्यादा तेज़ी के साथ अपने को मुसीबत से बचा सकते है। हम चाहते है कि हिन्दुस्तान के सभी लोगो के दिलो में वही उत्साह पैदा हो जाये और उसी तरह से काम करे जिसमे मुसीबत का आसानी से मुक़ाबला कर सके और मुझे पूरा भरोसा है कि लोग उत्साह से काम करेगे तो मुसीबत पर काबू पा जायेंगे।

आपने जो मानपत्र दिया है उसमें कई बातों का ज़िक्र है। उसमे आपने काश्मीर का भी ज़िक्र किया है। काश्मीर का मामला आप जानते है फिर से एक तरह से पेश हुआ है। और हमारी गवर्नमेंट ने जो राय दी है उसे भी आपने देखा है। चाहे काश्मीर का मामला हो, चाहे कोई भी

मामला हो, गवर्नमेंट को हर तरह से जनता की मदद मिले। क्योंकि तभी उसमें शक्ति आयेगी और दुनिया के सामने तभी वह हिम्मत के साथ किसी चीज़ को रख सकेगी और तभी उस की कद्र भी होगी।

आज हिन्दुस्तान आजाद हो गया है। लेकिन हिन्दुस्तान की गरीबी वैसी ही है। जो जो हमारी कमियां है वे पूरी नही हुई है। हमारे हाथ मे अधिकार आ गये है मगर जो कुछ हम करना चाहते है वह कर नही पाये है। इसलिये जरूरत इस बात की है कि सब मिलकर सरकार के हाथों में ताकत दे और उसको हम इस योग्य बनावें ताकि हमारी ख्वाहिशों को वह पूरा कर सके। यह काम हमारा है। मै उम्मीद करता हू कि जिस तरह आप अपने को हिदुस्तान का हिसार बना सकते थे—हिसार के माने किला होता है—आपने जिस तरह से अपने को उसका किला बनाकर रक्खा है आइन्दा भी आप उसी तरह मे उसकी रक्षा करते रहेगे और उसी हिम्मत और बहादुरी के साथ करेगे जिस बहादुरी के साथ अब तक आपने किया है। इसमे मेरा पूरा विश्वास है कि देश के लोग आपका साथ देगे। आज मुल्क स्वतत्र है और हजार कठिनाइयो के रहते हुए भी उसको सुरक्षित रखना हम मे से प्रत्येक का कर्त्तव्य है। हम आशा रखते है कि आप इस बात का खयाल करेगे कि सारा हिन्दुस्तान हमारा है और हिदुस्तान के लिये हम मे से प्रत्येक को वह सब कुछ करना है जो लोग आपस मे कर सकते है। आज देश को सेवा की जरूरत है। जिस वक्त हम ब्रिटिश से लड रहे थे उस वक्त जितने त्याग और सेवा की ज़रूरत थी उससे अधिक आज ज़रूरत है और मुझे आशा है कि लोग वह सेवा करेगे। तभी हम भारत को जैसा चाहते है वैसा सुन्दर, समृद्ध और खुशहाल बना सकेगे। हम सबको ईश्वर बल दे कि देश की हम सेवा कर सके।

आप सब भाइयों और बहिनो का मै बहुत शुक्रिया अदा करता हू।

आल इण्डिया कैटिल शो

ता० ३ मार्च, १९५१ को ५-३० बजे शाम मे आल इडिया केटल शो, हिसार में राष्ट्रपति ने कहा—

महामहिम गवर्नर साहब, प्रधानमन्त्री जी, सर दातारसिह, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आज मै यहा आ सका और जो नुमायश यहां जानवरो की की गई है उन मे जिन लोगों को इनाम मिला है उन्हें इनाम बाट सका।

आप जानते है कि हिन्दुस्तान में सब से बड़ी समस्या खेती की है और खेती के काम के लिये निहायत ज़रूरी है कि हमारे यहा अच्छे बैल और अच्छे साड पैदा हों। खाने के लिये अन्न उतना ही ज़रूरी है जितना किसी शक्ल मे गाय और भैस का दूध, घी, मक्खन इत्यादि जो कुछ भी हम उस से बना सकते हों। इसलिये इस समय जिस तरह इस बात की कोशिश की जा रही है कि अधिक अन्न पैदा करे उसी तरह यह भी ज़रूरी है कि अन्न के साथ साथ हम दूध भी पैदा करें। हिन्दुस्तान में कहा जाता है कि और मुल्कों के मुकाबले में सब से ज्यादा जानवर

हैं और उन की तादाद बढ़ती ही जा रही है मगर साथ ही हमारी बदकिस्मती यह है कि तादाद मे अधिक होने पर भी हमारे लोगों को खाने के लिये दूध कम मिलता है। अगर थोडी ही दूध की मात्रा लोगों के लिये बढ़ाई जाये तो हमारे सामने बडी समस्या यह आ जाती है कि हम और ज्यादा जानवरों को यहा रख सकते है या नही। मगर इसमे कोई शक नही कि आज हम को मौक़ा है कि जो जानवर हमारे पास है उन की नसल हम इस तरह से सुधारे जिस मे आज जो गाय थोडा दूध देती है जो भैंस आज थोड़ा दूध देती है वह हम को अधिक दूध दे सके। और खेती की तरक्की के लिये बैलो की भी जरूरत है ही। आजकल के जमाने मे और मुल्कों मे खेती का काम कल पुर्जो के जरिये से होता है। हमारे मुल्क मे खेतों की तादाद इतनी ज्यादा है और खेत आपस मे बटवारे की वजह से इतने छोटे हो गये है कि बड़ी बडी मशीनरी से उन खेतो मे काम नही हो सकता है और उस के अलावे और भी बहुत सी बाते ऐसी है जिस की वजह से जितनी दूर तक हम देख सकते है हमे यह ही दिखाई देता है कि हम को बैलो पर ही भरोसा करना होगा। इसलिये हम को इस तरह की गायो की जरूरत है कि जो ज़्यादा दूध दे सकें और साथ ही अच्छे बैल भी दे सकें। कुछ ऐसी नसले है जो बहुत ज्यादा दूध देती है मगर उन के बछडे इतने काम के नही होते। कुछ दूसरी नसले होती है जिन के बछड़े अच्छे होते है मगर दूध उन का नही के बराबर होता है। हम को ज़रूरत इस चीज की है कि हम को दूध भी मिले और अच्छे बछड़े भी मिले और आजकल इस चीज की जरूरत है कि हम इस तरह की नस्ल को बढ़ावे जिस में हमारे दोनों काम चले और इस बात की कोशिश भी हो रही है। अभी आप के सामने जिन लोगों को इनाम दिये गये है, आप ने देखा कि वे कितनी तरह के जानवर पाल सके है और तैयार कर सके है और हर तरह के जानवर भी आप की आखों के सामने गुजरे है और उन मे आप ने देखा कि बहुत दूध देने वाली गायें भी थी, भैंसे भी थी ऐसी गाये भी थी जो शायद दूध अधिक नही देती लेकिन उनके बछडे अच्छे होते है ऐसी गाये भी आप के सामने से गुजरी जिन के बछड़े भी अच्छे होते है और जो दूध भी अच्छा देती है। हम मे से हर आदमी जब तक इस चीज को पूरा नही करेगा तब तक जैसा हम चाहते है दूध की कमी को हम दूर नही कर सकेगे। बहुत ज़माना बीता नही है जब इस देश के अन्दर दूध की कमी नही हुआ करती थी। मगर आज ऐसा ज़माना आ गया है कि आज हमारे लोग दूध और अन्न दोनो की कमी महसूस करते है और हमारे सामने सब से बड़ा सवाल यही है कि अगर हमे अपने को जिन्दा रखना है तो किस तरह से अन्न और दूध की पैदावार बढायें। इसलिये इस तरह की नुमाइश की जरूरत होती है। मै इस चीज़ को भी जरूरी समझता हू कि जहा जहा गवर्नमेन्ट की तरफ से कैटल फार्म खुले है और जहां जहां हमारे लोगो ने खानगी तौर पर गाये पाल रक्खी है वे इस बात पर ध्यान दे। इस मुल्क के अन्दर एक दो नही हज़ारों गौशालाये लोगों ने दान दे कर कायम की है और उन गौशालाओं की करोडो रुपयो की आमदनी है और वे खर्च कर रही है। मगर यह कहना पड़ेगा कि उन गौशालाओ के कायम करने में लोगों ने दयाभावना से अधिक काम लिया है, बुद्धि से काम नही लिया है

और यह ज़रूरी है कि दया के साथ बुद्धि से भी काम लिया जाये और जब हम बुद्धि से काम लेंगे तभी हमारी दया भी अधिक कारगर हो सकेगी और लोगों को भी अधिक लाभ पहुच सकेगा ।

जब मैं फूड मिनिस्ट्री में था तो सर दातारसिंह की तरफ़ से इस बात की कोशिश की गई कि देश भर की गौशालाओं को हम इस तरह से मिला दे कि अगर उन का प्रबन्ध करना हो तो एक जगह से जो रास्ता बतलाया जाये वह उन सब को पता चले। उन को मदद भी दी जाये और मै समझता हू कि वह काम कुछ हद तक चला और अभी भी चल रहा है। उस मे मै ने देखा कि जो लोग इतना खर्च कर के इतने प्रेम और उत्साह के साथ गौ सेवा कर रहे है उन को ठीक बतलाया जाये कि किस तरह से वे गायों की अधिक सेवा कर सकते है तो उन को समझने मे देर नही लगेगी । उन को बतलाना ज़रूरी है और उन को बतलाना यही है कि वे केवल बूढ़ी, लूली, लगडी और खराब गायों को जमा कर के उन को खिलाते हैं और सिर्फ खिलाते ही है, उन से कोई लाभ नही उठाते। अगर वे नये विचार से, नये तरीके से, काम करे तो खराब नस्ल पैदा ही न हो और हम को दूध भी मिलेगा और अच्छे बछडे भी मिलेगे। गोशालाओं के सामने यह आदर्श होना चाहिये, वे अच्छी से अच्छी गायें भी रक्खे और वे रखना चाहे तो रख सकती है और उन से अच्छा दूध और अच्छे बछड़े पैदा करे और जो कमजोर, अपाहिज, लूली, लगडी गाये है उन को भी इस तरह से रक्खे कि वे खराब नस्ल के साड से न लगे, उन को साड से लगने ही नही दे और वे अपने दिन गुजर कर के चली जाये । हिन्दुस्तान के अन्दर कुछ लोगों का ऐसा भी खयाल होता है और यह विचार आजकल के नये विचार वालों का होता है कि यहा इतने जानवर रहेंगे तब तक न तो उन की नस्ल का सुधार हो सकता है और न उन से उतना लाभ उठाया जा सकता है जितना उठाना चाहिये और जब से अन्न का कष्ट लोगों का बढ़ गया है तब से यह विचार सामने आने लगा है। आखिर ज़मीन बे तादाद नही है, जमीन सीमित है । उन मे लोगों को अन्न पैदा करना है और जानवरों को खिलाना है । अब सवाल हमारे सामने यही है कि जानवरों को खिलायें या आदमी को खिलाये। आदमी अपने पक्ष मे फैसला करता है कि आदमी को खिलाना है। मै यह मानता हू कि इतनी निराशा का कोई कारण नही है। ठीक तरह से प्रबन्ध करें तो हम जानवरो को भी खिला सकते है और आदमी को भी खिला सकते है। इसलिये मेरा अपना विचार रहा है जिस को मै ने उस वक़्त भी जब मैं फूड मिनिस्टर था व्यक्त किया था और आज भी करना चाहता हू, और वह यही है कि हमारी गायों और भैंसों का जो दूध होता है, उन के जो बछड़े पैदा होते है उन से और उन के मरने के बाद उन के चमड़े, चर्बी, हड्डी, मज्जा से जो कुछ हम फ़ायदा निकाल सके निकालें और उस से इतना पैदा करना चाहिये कि जिस मे एक गाय दूसरी कम से कम बूढ़ी गाय का पालन करने के लिये पूरी आमदनी हम को दे दे। घर में एक आदमी रहता है तो वह खेती कर के, नौकरी कर के या किसी तरह से भी हो उतने पैसे पैदा करता है कि उस के लिये भी काफी हो जाता है और अपने मा बाप के लिये भी उस को पैदा करना पडता है जो छोटे बच्चे होते है उन के लिये भी उस को पैदा करना पड़ता है,

उन को भी उसे खिलाना पड़ता है । मैं मानता हूं कि जिस तरह से एक खानदान में एक आदमी पैदा कर के सब को खिलाता है उसी तरह से एक अच्छी गाय को भी अपने ही लिये नहीं, अपनी बूढ़ी मा और बाप के लिये भी और अपने बच्चों के लिये भी पैदा करना चाहिये जिस मे वह उन को भी पाल सके। इस में सब से अच्छा नमूना हमारी गौशालाएं पेश कर सकती है । उन के पास ऐसी बूढ़ी, अपाहिज गाएं भी रहती ही है, उन के पास अच्छी गाये भी हो सकती है और उन के पास पैसे भी होते है इसलिये अगर वे इस बात का प्रयोग कर दिखलावे कि किस तरह से उन की अच्छी गाये अपने लिये भी और अपाहिज गायों के लिये भी काफ़ी पैदा कर सकती है तो उस से देश को लाभ होगा और म चाहता हू कि गौशालाएं इस तरह से अपनी उन्नति करे और देश के सामने यह नमूना पेश करे। जो किसान लोग है, जिन को अपने लिये अन्न भी पैदा करना पडता है और अपने लिये दूध घी पैदा करना पडता है उन से हम यह उम्मीद नही कर सकते कि वे इस तरह के प्रयोग करके हम को नतीजा दिखलावे । प्रयोग का काम तो गौशालाएं ही कर सकती है या गवर्नमेन्ट अथवा दूसरे लोगों द्वारा कायम किये हुए फार्म कर सकते है और उन को यह दिखलाना चाहिये। वे इस तरह की नस्ल पैदा करे जिस से हमारे दोनो काम पूरे हो सके और इस तरह से पूरे हों कि जो बूढी गायें हैं उन को मारने की भी ज़रूरत न पडे और उन को ज़िन्दा भी हम रहने दे और उन को कायम रख सके। हिन्दुस्तान मे गायो के लिये इस तरह की धार्मिक भावना है कि उन को मारना लोग पसन्द नही करते और इस चीज को वे बर्दाश्त नही कर सकते। इस लिये यह जो बहादुरी की सलाह कभी कभी दी जाती है कि जितने खराब जानवर है उन को कत्ल कर दिया जाये मैं समझता हूं इस मे बहादुरी ज्यादा है बुद्धि नही है और यदि हम इस काम को करना चाहेगे तो सुधार तो नही होगा और हम अपने खिलाफ एक बड़ी जमात को पैदा कर लेगे जो हमारा विरोध करेगी। मे मानता हू कि जितनी खराब नस्ल की गायें है उन को अलग कर के रख दिया जाये और जो खराब नस्ल के साड है उन को बधिया कर दिया जाये तो यह काम १०–१५ साल के अन्दर पूरा हो सकेगा और खराब नस्ल बिना किसी जानवर को मारे खत्म हो सकती है। हम चाहते है कि इस तरह का काम शुरू किया जाये। जो खराब नस्ल के जानवर हैं आखिर वे कितने दिनों तक ज़िन्दा रहेंगे । मामूली तौर से गाय बैल की ज़िन्दगी १५–१६ साल की होती है। अगर पूरी योजना बना कर यह काम किया जाये तो यह काम ऐसा नही है कि असम्भव हो। मै चाहता हू कि यह काम किया जाये। मगर सब से जरूरी चीज़ तो यह है कि जो अच्छी नस्ल मौजूद है उस को भी बचाया जाये और आप के ज़िले की यह अच्छी नस्ल मशहूर है। आप की हरियाना गाय दोनों कामों को पूरा करती है, अच्छे बैल भी देती हैं और दूध भी देती है। इस नस्ल को क़ायम रखना जरूरी हैं । चूंकि यह नस्ल अच्छी है इस नस्ल पर हर तरह के लोगों की आंख जाती है और सिर्फ इस सूबे मे नही हर सूबे मे यहा की गाय जाती हैं। गायें जायें और वहां उन को क़ायम रख सके तो कोई हर्ज़ नही। मगर मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि जो गाये बाहर जाती है वे अपनी नस्ल क़ायम नही रख सकती है। कुछ तो दूसरी जगह की आब हवा का असर पड़ता है जिस से उन की नस्ल कायम नही रह सकती । कुछ खुराक

का भी असर पड़ता है । लेकिन इस के अलावा जो देश का सब से बड़ा नुकसानदेह काम होता है वह यह है । आप के यहां से कलकत्ता, बम्बई में जो लोग दूध का व्यवसाय करते है गाये ले जाते है । गाय पर उन के जितने पैसे लगते है उस से बहुत मुनाफ़ा एक ही बियान में दूध से हो जाता है और जब गाय विसुख जाती है और वियने पर जो दूध देगी इस बीच जो उस के खिलाने पर खर्च होगा उस को वे बर्दाश्त नही करना चाहते और उस का नतीजा यह होता है कि अच्छी से अच्छी गायें जो यहा से जाती है एक बियान के दूध देने के बाद ही कत्लखाने में भेज दी जाती है क्योंकि इस किस्म के व्यापार में लगे लोगों को इस तरह की गाय को जिन्दा रखने के बनिस्बत बेच देने में ही अधिक लाभ होता है । इस तरह हरियाने की नस्ल खत्म हो रही है । मै समझता हू कि इस से सारे देश को बहुत नुक्सान हो रहा है क्योंकि गायें जो ४–५ बछड़े दे सकती थी वे खत्म हो जाती है, जो दूध उन से मिलता उस से देश को वंचित होना पड़ता है और वह नस्ल एक तरह से कम होती जा रही है । इस पर हमारे जितने गौ सेवक है उन का ध्यान जाता है और वे उस बात पर जोर लगाते है कि कम से कम इस चीज़ को रोका जाये। मैं चाहता हू कि अधिकारी लोग भी इस बात पर ध्यान दें और सोचे कि उन की रक्षा किस तरह से की जाये। अफसोस की बात यह है कि जब गौरक्षा की बात उठती है तो लोग धार्मिक भावना के साथ सोचने लग जाते है । मगर धार्मिक भावना छोड़नी चाहिये। आज केवल विवेक बुद्धि से हम को काम करना चाहिये। आज अगर आर्थिक खयाल से अन्न और खाने के खयाल मे भी देखा जाये तो मै समझता हू कि हमारी गायें जो अच्छी नस्ल की है और जो अच्छे बछड़े दे सकती है उन के कत्ल से देश के लोगों को नुकसान ही नुकसान है। इस लिये इस काम मे जिन से जो मदद हो सके उन को करनी चाहिये जिस मे जो अच्छी नस्ल है वह क़ायम रह सके। इस से खेती के काम में भी तरक्की होगी और लोगो के स्वास्थ्य में भी तरक्की होगी। इस लिये मै चाहता हू कि लोग उनको बचाये और जिन गायों की तरक्क़ी कर सकते है उनकी तरक्की करे ।

यहा अच्छे अच्छे जानवर देखने मे आये इस से मुझे बड़ी खुशी हुई । यह सुन कर मुझे खुशी हुई कि जब जब नुमायश होती है तो हर साल यह पाया जाता है कि जानवरो की नस्ल सुधर रही है। जो गत साल जानवर आये उस से बेहतर इस साल आये और इस साल के जानवरो से आगे साल बेहतर आयेगे । यह खुशी की बात है । मै चाहता हू कि उन की दिन प्रति दिन तरक्की हो। मै चाहता हू जो इस काम में मदद करते है उन को प्रोत्साहन दिया जाये। इस नुमायश से लोगो को प्रोत्साहन मिलता है इस से मुझे बडी खुशी है । मुझे यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि महाराजा प्रतापसिंह जी ने अपनी गौशाला की नुमायश कर दी क्योंकि बहुत इनाम तो वे अकेले ले गये। इस में एक आदमी ही नही बहुतेरों को उन से मुकाबला करना चाहिये। और महाराजा प्रतापसिंह जी की जगह बहुतेरे ऐसे आदमी होने चाहिये जो इस नमूने को पेश करे कि लोग खानगी तौर से किस तरह से गायों को बैलों को और घोड़ो को भी सुधार सकते है । यह नमूना हमारे सामने है जिस में खानगी तौर से काम हुआ है । गवर्नमेन्ट के जो फ़ार्म है उन का काम तो

है ही और वे काम भी कर रहे है । और लोगों को भी करना चाहिये । मै आशा रखता हूं कि आपकी नुमायश से सब को प्रोत्साहन मिलेगा । यह बड़ा अच्छा आप ने किया है कि अलग अलग सूबों मे आप इस तरह की नुमायश कर रहे है । मै समझता हू कि पैसे की वजह से इस काम में कठिनाई नही होगी क्योकि मेरा विश्वास है कि जो अच्छा काम होता है उस मे पैसे की दिक्कत नही होती है और आप का काम अच्छा है । मुझे पूरी उम्मीद है कि पैसे की वजह से आप को काम कम नही करना होगा । लोगों को उत्साह है ही, उस को और बढ़ाना है। कोई मुद्दत रख दी जाये, ५, ७ या १० साल की कोई भी मुद्दत हो और उस के बाद मुल्क के लोगो को आदमी पीछे आधा सेर भी दूध हम रोज़ाना दे सके तो मै समझता हू कि एक बहुत बड़ा काम हो जायेगा । मालूम नही इस मे आप कहा तक सफल होगे । आज कल दिक्कत यह होती है कि योजना बड़ी बन जाती है , जिस पर बडा खर्च करना पड़ता है , बड़ी तैयारी करनी पडती है । नतीजा यह होता है कि योजना पूरी नही होती । न नौ मन तेल होता है और न राधा नाचती है । हम तो यह चाहते है कि छोटी छोटी योजना हो, छोटे पैमाने पर काम किया जाये, जिसमें मामूली लोग भी योगदान दे सके । और यदि इस तरीके से काम किया जायेगा, एक आदमी का जो बोझ होता है उसे १० आदमियो मे बाट दिया जायेगा तो काम सहल हो जायेगा। १०० आदमी की लाठी एक आदमी का बोझ हो जाती है। तो हम चाहते है कि जिस तरह से अपनी अपनी लाठी ले कर काम करता है और उस की लाठी किसी का बोझ नही होती उसी तरह से जो कोई बड़ा काम हो उस को भी लोग एक एक कर के कर सकते है ।

अभी ऐग्रीकल्चर मिनिस्ट्री ने उन तीन आदमियों को जिन्हों ने सब से अधिक अन्न पैदा किया है इनाम दिया है । मुझे इस बात की खुशी है कि जिस ने सब से अधिक गेहू एक एकड़ मे पैदा किया, जिस ने सब से अधिक धान पैदा किया, और जिस ने सब से अधिक आलू पैदा किया उन को इनाम बाटा गया । मै चाहता हू कि इसी तरह के इनाम गोपालन के लिये दिये जाये जिस में लोगों को प्रोत्साहन मिले । जो बड़ी योजना हमारे काम में नही आ सकती है उस को छोटे छोटे पैमाने पर कर के दिखलाना चाहिये । हमारे देश की बुद्धि ऐसी ही रही है कि बड़ी से बड़ी चीज को लोग छोटे तरीके से कर लिया करते थे और आज भी उसी तरीके से एक तरफ तो भाखरा जैसा बड़ा बाध बधवाना है और दूसरी तरफ छोटे छोटे कुएं का भी काम करना है । तभी देश की भलाई हो सकती है ।

मै उन सब भाइयों को जिन को अभी इनाम मिला है बधाई देना चाहता हूं और ऐग्रीकल्चर मिनिस्ट्री को खास कर के इस वजह से बधाई देता हू कि उसी ने यह सब किया है । मै आशा करता हूं कि यह काम दिन प्रति दिन बढ़ेगा ।

अखिल भारतीय सांस्कृतिक सम्मेलन

अखिल भारतीय सांस्कृतिक सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा—

बहनो और भाइयो,

कोई विदेशी जो भारत से बिल्कुल अपिरिचित हो एक छोर से दूसरे छोर तक सफ़र करे तो उस को इस देश में इतनी विभिन्नताऐं देखने में आयेंगी कि वह कह उठेगा कि यह एक देश नही बल्कि कई देशो का एक समूह है जो एक दूसरे से बहुत बातो मे और विशेष कर के ऐसी बातो मे जो आसानी से आंखो के सामने आती हैं बिलकुल विभिन्न है। प्राकृतिक विभिन्नताएं भी इतनी और इतने प्रकारो की और इतनी गहरी नज़र आयेंगी जो किसी भी एक महाद्वीप के अन्दर ही नजर आ सकती है। हिमालय की बरफों से ढकी हुई पहाड़ियां एक छोर पर मिलेगी और जैसे जैसे वह दक्षिण की ओर बढेगा गंगा, जमुना, ब्रह्मपुत्र से प्लावित समतलों को छोड कर फिर विन्ध्या अरावली, सातपुरा, सह्याद्रि, नीलगिरी की श्रेणियों के बीच समतल हिस्से रंग बिरंगे देखने में आयेंगे। पश्चिम से पूर्व तक जाने में भी उसे इस प्रकार की विभिन्नताएं देखने को मिलेगी। हिमालय की सर्दी के साथ साथ जो साल मे कभी भी मनुष्य को गर्म कपडो मे और आग से छुटकारा नही देती समतल प्रान्तो की गरमियो की जलती हुई लू और कन्याकुमारी का वह सुखद मौसम, जिस में न कभी सर्दी होती है, और न गरमी, देखने को मिलेगा। अगर आसाम की पहाड़ियों में वर्ष मे तीन सौ इंच वर्षा मिलेगी तो जैसलमेर की तप्त भूमि भी मिलेगी जहा साल मे दो चार इच भी वर्षा नही होती। कोई ऐसा अन्न नहीं जो यहा उत्पन्न न किया जाता हो। कोई ऐसा फल नही जो यहा पैदा नही किया जा सके। कोई ऐसा खनिज पदार्थ नही जो यहा के भूगर्भ मे न पाया जाता हो और न कोई ऐसा वृक्ष अथवा जानवर जो यहा के फैले हुए जगलों मे न मिले। यदि इस सिद्धान्त को देखना हो कि आब हवा का असर इन्सान के रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, और शरीर और मस्तिष्क पर पड़ता है तो उस का जीता जागता सबूत भारत में बसने वाले भिन्न भिन्न प्रान्तों के लोग देते हैं। इसी तरह मुख्य मुख्य भाषाएं भी कई प्रचलित हैं और बोलियो की तो कोई गिनती भी नही क्यों कि यहां एक कहावत मशहूर है कि :

कोस कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी

भिन्न भिन्न धर्मो के मानने वाले भी जो सारी दुनिया के सभी देशों में बसे हुए हैं यहां भी थोड़ी बहुत संख्या में पाये जाते हैं और जिस तरह यहां की बोलियों की गिनती नही उसी तरह यहां भिन्न भिन्न धर्मो के सम्प्रदायों की भी गिनती आसान नही। इन विभन्नताओं को देख कर अगर अपरिचित आदमी घबड़ा कर कह उठे कि यह एक देश नही अनेक देशों का एक समूह है यह एक जाति नहीं अनेक जातियों का समूह है तो इस में आश्चर्य की बात नही क्यों कि ऊपर से देखने वाले को जो गहराई में नहीं जाता, विभिन्नता ही देखने में आयेगी। पर विचार कर के देखा जाये तो इन विभिन्नताओं

की तह में एक ऐसी समता और एकता फैली हुई है जो अन्य विभिन्नताओं को ठीक उसी तरह पिरो लेती है और पिरो कर एक सुन्दर समूह बना देती है जैसे रेशमी धागा भिन्न भिन्न प्रकार के और विभिन्न रंग की सुन्दर मणियों अथवा फूलो को पिरो कर एक सुन्दर हार तैयार कर देता है जिस की प्रत्येक मणि या फूल दूसरों से न तो अलग है और न हो सकता है और केवल अपनी ही सुन्दरता से लोगों को मोहता नही बल्कि दूसरों की सुन्दरता से वह स्वयं सुशोभित होता है और उसी तरह अपनी सुन्दरता से दूसरो को भी सुशोभित करता है । यह केवल एक काव्य की भावना नही है बल्कि एक ऐतिहासिक सत्य है जो हमारे बरसो से अलग अलग अस्तित्व रखते हुए अनेकानेक जल प्रपातों का और प्रवाहो का संगमस्थल बन कर एक प्रकाण्ड और प्रगाढ समुद्र के रूप में भारत में व्याप्त है जिसे हम भारतीय संस्कृति का नाम दे सकते हैं। इन अलग अलग नदियों के उद्गम भिन्न भिन्न हो सकते हैं और रहे हैं। इन की धारायें भी अलग अलग बही हैं और प्रदेश के अनुसार भिन्न भिन्न प्रकार के अन्न और फल फूल पैदा करती रही है पर सबो में एक ही शुद्ध सुन्दर स्वस्थ शीतल जल बहता रहा है जो उद्गम और संगम में एक हो जाता है ।

आज हम इसी निर्मल शुद्ध शीतल और स्वस्थ अमृत की तलाश मे यहां इकट्ठे हुए हैं और हमारी इच्छा, अभिलाषा और प्रयत्न यह है कि वह इन सभी अलग अलग बहती हुई नदियो में अभी भी उसी तरह बहता रहे और इन को वह अमरतत्व देता रहे जो जमाने के हजारो थपेड़ो को बरदाश्त करता हुआ भी आज हमारे अस्तित्व को कायम रखे हुए है और रखेगा । जैसा कि हमारे कवि इकबाल कह गये हैं कि :

> बाकी मगर है अब तक नामों निशां हमारा,
> कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
> सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमा हमारा,

यह एक नैतिक और अध्यात्मिक स्रोत है जो अनन्त काल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस सारे देश में बहता रहा है और कभी कभी मूर्त रूप हो कर हमारे सामने आता रहा है । यह हमारा सौभाग्य रहा है कि हम ने ऐसे ही एक मूर्त रूप को अपने बीच चलते फिरते हंसते रोते भी देखा है और जिस ने अमरतत्व की याद दिला कर हमारी सूखी हड्डियों में नई मज्जा डाल हमारे मृत प्राय शरीर में नये प्राण फूके और मुर्झाये हुए दिलों को फिर खिला दिया । वह अमरतत्व सत्य और अहिंसा का है जो केवल इसी देश के लिये नही आज मानव मात्र के जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक हो गया है। हम इस देश में प्रजातन्त्र की स्थापना कर चुके हैं जिस का अर्थ है व्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता, जिस में वह अपना पूरा विकास कर सके, और साथ ही सामूहिक और सामाजिक एकता। व्यक्ति और समाज के बीच में विरोध का आभास होता है। व्यक्ति अपनी उन्नति और विकास चाहता है और यदि एक की उन्नति और विकास दूसरे की उन्नति और विकास में बाधक हो तो सघर्ष पैदा होता है और यह संघर्ष तभी दूर हो सकता है जब सब के विकास के ध्येय आहसा के हों। हमारी सारी

संस्कृति का मूलाधार इसी अहिंसा तत्व पर स्थापित रहा है। जहां जहां हमारे नैतिक सिद्धान्तों का वर्णन आया है अहिसा को ही उन म मुख्य स्थान दिया गया है। अहिंसा का दूसरा नाम या दूसरा रूप त्याग है। और हिसा का दूसरा रूप या दूसरा नाम स्वार्थ जो बहुत कर के भोग के रूप में हमारे सामने आता है। पर हमारी सभ्यता ने तो भोग भी त्याग से ही निकाला है और भोग भी त्याग मे ही पाया है। श्रुति कहती है कि तेन त्यक्तेन भुन्जीथा। इसी के द्वारा हम व्यक्ति व्यक्ति के बीच का विरोध व्यक्ति और समाज के बीच का विरोध, समाज और समाज के बीच का विरोध देश और देश के बीच के विरोध को मिटाना चाहते हैं। हमारी सारी नैतिक चेतना इसी तत्व से ओत प्रोत है। इस लिये हम ने भिन्न भिन्न विचार धाराओं को स्वच्छन्दतापूर्वक अपने अपने रास्ते बहने दिया भिन्न भिन्न धर्मो और सम्प्रदायों को स्वतन्त्रतापूर्वक पनपने और पसरने दिया; भिन्न भाषाओं को विकसित और प्रस्फुटित होने दिया; भिन्न भिन्न देशो के लोगो को अपने मे अभिन्न भाव से मिल जाने दिया; भिन्न देशो की सस्कृतियों को अपने में मिलाया और अपने को उन मे मिलने दिया और देश और विदेश मे एक सूत्रता तलवार के ज़ोर से नही बल्कि प्रेम और सौहार्द से स्थापित की। दूसरों के हाथो और पैरों पर घर और सम्पत्ति पर जबरदस्ती कब्जा नहीं किया उन के हृदयो को जीता। और इसी वजह से वह प्रभुत्व जो चरित्र और चेतना का प्रभुत्व है आज भी बहुत अंश में कायम है जब हम स्वयं उस चेतना को बहुत अंशो में भूल गये है और भूलते जा रहे है।

हमारे सामने आज जो अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न है वह यह है कि हमारी यह ऐतिहासिक नैतिक चेतना जो हमारे जन जीवन की आज तक प्रधान संचालक रही है वह आज की परिस्थितियो में हमारे लिये लाभदायक है या नहीं। इस बात से तो कोई इन्कार नही कर सकता कि हमारे देश में इस बारे में दो विचार धारायें है। कुछ लोगो का विचार है कि वर्तमान उद्योग प्रधान युग में उस नैतिक चेतना का कोई विशेष मूल्य नही जो मनुष्य को अहिसा और सेवा और त्याग का पाठ पढाती हो। कहा जाता है कि वर्तमान प्रतियोगात्मक आर्थिक व्यवस्था मे तो स्वार्थ साधना की तीव्र भावना, दूसरों को एक तरफ ठेल कर अपने को आगे बढाने की अदम्य लालसा, इत्यादि इत्यादि गुणों की अत्यन्त आवश्यकता है। अभी कुछ दिनो पूर्व इसी प्रकार के आचरण को हमारे शासक लोग अधिक पसन्द करते थे। औद्योगिक युग की इस उद्दण्ड अहं भावना के मुकाबले में अपनी ऐतिहासिक नैतिक चेतना के विनम्रता और विनय के आदर्श को हमें तौलना है और यह तय करना है कि हम अपनी उस ऐतिहासिक नैतिक चेतना को भारत के नवनिर्माण की प्रधान प्रेरक शक्ति बनायेगे अथवा वर्तमान काल के पाश्चात्य सभ्यता के उद्दण्ड अहमत्व को।

यहां यह कह देना अनुपयुक्त न होगा कि इस उद्दण्ड अहमत्व को महत्व देने का ही अनिवार्य परिणाम यह है कि पाश्चात्य देशों में एक ओर तो श्रेणी संघर्ष के सिद्धान्त का जन्म हुआ है और दूसरे ओर हृदयहीन आर्थिक और राजनैतिक शोषण और साम्राज्यवादिता का।

इस आदर्श के फलस्वरूप ही मनुष्य की कीमत मशीन के पुर्जे से अधिक नहीं रह गई है और मानव जीवन में भी मत्स्य न्याय का बोलबाला हो रहा है। हमें यह तय करना है कि सांस्कृतिक और सभ्यता की प्रगति का अनिवार्य मार्ग यह मत्स्य न्याय ही है अथवा वैसी प्रगति उस नैतिक चेतना के आधार पर भी हो सकती है जो भारत के मनीषियों ने यहां के नर नारियों के सामने रखी थी। पाश्चात्य देशो मे पिछली शताब्दियो में विज्ञान ने जो प्रगति की है और उद्योग धन्धों में जो अभूतपूर्व विकास किया है हम अपने को और इस देश को यदि उस से अलग भी रखना चाहे तो नही रख सकते और अलग रखना भी न तो जरूरी है और न वांछनीय। हमें देखना यह है कि उस के उद्दण्ड परिणामो से अपने को सुरक्षित रख कर हम उन का उपयोग अपनी रीति से किस तरह कर सकते है अर्थात् उन को अपनी सस्कृति के अनुकूल किस तरह बना सकते है।

इस बारे मे दो बातों का हमे बराबर ध्यान रखना है। पहली बात तो यह है कि हर प्रकार की प्रकृति जन्य और मानवकृत विपदाओ के पड़ने पर भी हमारे लोगो की सृजनात्मक शक्ति कम नही हुई। हमारे देश में साम्राज्य बने और मिटे, विभिन्न सम्प्रदायो का उत्थान हुआ और पतन हुआ, हम विदेशियो से आक्रान्त और पददलित हुए, हम पर प्रकृति और मानवो ने अनेको बार मुसीबतो के पहाड़ ढा दिये पर फिर भी हम लोग बने रहे, हमारी सस्कृति बनी रही, और हमारी जीवन और सृजनात्मक शक्ति बनी रही। हम अपने दुर्दिनो मे भी ऐसे मनीषियो और कर्मयोगियो को पैदा कर सके जो ससार के इतिहास के किसी युग में अत्यन्त उच्च आसन के अधिकारी होते। अपनी दासता के दिनो में हम ने गांधी जैसे कर्मठ धर्मनिष्ठ क्रान्तिकारी, रवीन्द्र ठाकुर जैसे मनीषी कवि को और अरविन्द और रमण महर्षि जैसे योगियो को पैदा किया और उन्ही दिनो मे हम ने ऐसे अनेक उद्भट विद्वान और वैज्ञानिक पैदा किये जिन का सिक्का ससार मानता है। जिन हालतों मे पड़ कर ससार की प्रसिद्ध जातियां मिट गई उन मे हम न केवल जीवित ही रहे वरन् अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक गौरव को बनाये रख सके। उस का कारण यही है कि हमारी सामूहिक चेतना ऐसे नैतिक आधार पर ठहरी हुई है जो पहाडों से भी मजबूत है, समुद्रों से भी गहरी है और आकाश से भी अधिक व्यापक है। जो जातियां मिट गई उन की सामूहिक चेतना जाति या प्रदेश या भाषा विशेष के पिजड़े का पछी थी। हो सकता है कि वह पिजड़ा सोने का बडा सुन्दर पिंजडा रहा हो किन्तु था तो पिजड़ा और उस ने अनजाने ही उस जाति की चेतना को इतना दुर्बल बना दिया कि पिजड़े के बदलने या टूटने पर वह पछी सर्वथा असहाय और निर्जीव हो गया। किन्तु हमारी सामूहिक चेतना, हमारी संस्कृति ने तो देश, जाति और भाषा को अपना बधन कभी माना नही। जैसा मै कह चुका हूं ये सब तो उस की अभिव्यक्ति के विभिन्न मार्ग और साधन अवश्य रहे है किन्तु उस की सीमा कदापि नही। इस के विपरीत हमारी सामूहिक चेतना तो उन्ही सूत्रों से बनी है जिन से मानवता बनती है। यह ठीक है कि हम उस को अपने जीवन के प्रत्येक पहलू और स्वरूप में अपना नही पाये है। और हमारे पतन का भी कारण बहुत कुछ यही था कि हम इसे अपने दिन रात की जीवनज्योति न बना सके।

दूसरी बात जो इस बारे में विचारणीय है वह यह है कि संस्कृति अथवा सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण है। इसी नैतिक चेतना के सूत्र से हमारे नगर और ग्राम, हमारे प्रदेश और सम्प्रदाय, हमारे विभिन्न वर्ग और जातियां आपस मे बंधी हुई है। जहां उन मे और सब तरह की विभिन्नताएं है वहां उन सब में यह एकता है। इसी बात को ठीक तरह से पहचान लेने से बापू ने जन साधारण को बुद्धि जीवियो के नेतृत्व में क्रान्ति करने के लिये तत्पर करने के लिये इसी नैतिक चेतना का सहारा लिया था। अहिंसा सेवा त्याग की बातों से जन साधारण का हृदय इसी लिये आन्दोलित हो उठा क्योंकि उन्ही से तो वह शताब्दियों से प्रभावित और प्रेरित रहा था। जन साधारण के हृदय मे उन की धड़कती चेतना को क्रान्ति की शक्ति बनाने मे ही बापू की दूरदर्शिता थी और इसी मे उन की सफलता थी। जब साम्प्रदायिक उत्तेजना से जन साधारण के कुछ अश का हृदय पागल हो गया था उस समय भी बापू इसी नैतिक चेतना के सहारे उस पर बिहार और दिल्ली मे काबू पा सके थे। वर्तमान गतिमान युग मे उस नैतिक चेतना में क्या कोई परिवर्तन करना चाहिये जो वह आज के लिये पूर्ण तथा उपयुक्त हो जाये। यह बात आप लोगों के लिये सोचने की है किन्तु जहां तक मै समझता हूं उस का आधार वर्तमान गतिमान सभ्यता के अनुकूल ही है। आज की औद्योगिक सभ्यता देश या जाति या भाषा पर ठहरी हुई किन्ही दीवारो को सहन नहीं कर सकती क्योकि वे उस की प्रगति मे बाधक है। वह तो केवल मानवता के ही आधार पर ठहरना चाहती है। पाश्चात्य देशो मे जो आज संघर्ष का वातावरण है वह मेरी समझ में इसी कारण से है कि अपनी पुरानी विचार परम्परा के अनुसार वहा लोग इस प्रकार की दीवारों को बनाये रखना चाहते है जब कि उन की औद्योगिक सभ्यता उन के अन्दर शान्त रह कर प्रगति नही कर सकती। दीवारें टूटनी है और उनके टूटने के बाद ही इस औद्योगिक सभ्यता की धार अबाध किन्तु शान्त रूप से बह सकेगी। हमारी संस्कृति ने तो उन दीवारो को कभी महत्व दिया ही न था। अत: मै तो यही समझता हूं कि यदि हमें अपने समाज और देश में उन सब अन्यायों और अत्याचारो की पुनरावृत्ति नही करनी जिन के द्वारा आज के सारे संघर्ष उत्पन्न होते है तो हमे अपनी ऐतिहासिक नैतिक चेतना या सस्कृति के आधार पर ही अपनी आर्थिक व्यवस्था बनानी चाहिये। अर्थात् उस के पीछे वैयक्तिक लाभ और भोग की भावना प्रधान न हो कर वैयक्तिक त्याग और सामाजिक कल्याण की भावना ही प्रधान होनी चाहिये। और हमारे प्रत्येक देशवासी को अपने सारे आर्थिक व्यापार उसी भावना से प्रेरित हो कर करने चाहियें। वैयक्तिक स्वार्थो और स्वत्वो पर जोर न देकर वैयक्तिक कर्तव्य और सेवा निष्ठा पर जोर देना चाहिये और हमारी प्रत्येक कार्यवाही इसी तराजू पर तोली जानी चाहिये। किसी भी क्रिया के पीछे जो भावना निहित होती है उस का बड़ा प्रभाव हुआ करता है और परिणाम भी, यद्यपि देखने मे क्रिया का रूप एक ही क्यों न हो। एक छोटे उदाहरण से यह बात स्पष्ट की जा सकती है। एक सम्मिलित परिवार है जिस का प्रत्येक व्यक्ति इस भावना से काम करता है कि उसका कर्तव्य है कि सभी व्यक्तियो को अधिक से अधिक वह सुख पहुंचा सके और प्रत्येक व्यक्ति पूरी शक्ति लगा कर जितना भी उपार्जन किया जा सकता है करता है। सब का सामूहिक उपार्जन मान लीजिये कि एक रक़म होती है जिस से अधिक उपार्जन करने की शक्ति परिवार में नही हो। उसी परिवार का प्रत्येक व्यक्ति इस भावना से काम करता है कि

उस को अपने सुख के लिये अधिक से अधिक उपार्जन करना चाहिये और उपार्जन करता हो तो भी सब व्यक्तियों का सामूहिक उपार्जन उतना ही होगा जितना कि प्रथमोक्त स्थिति मे। और सामूहिक सम्पत्ति दोनो स्थितियों मे बराबर ही होगी और उस का बराबर बटवारा कर दिया जाये तो प्रत्येक को बराबर ही सुख होगा। पर इन दोनों स्थितियो मे बहुत बडा अन्तर यह पड जायेगा कि पहिली स्थिति में संघर्ष का कोई भय नही क्योकि कोई केवल अपने लिये कुछ नही कर रहा है और दूसरे मे संघर्ष अनिवार्य है क्योकि प्रत्येक अपने लिये ही कर रहा है। हम समझते है कि हमारी संस्कृति का तकाजा है कि पहिली स्थिति मे हम अपने को लायें और यदि संसार का संघर्ष मिटना है तो उसी भावना को सर्वमान्य बनाना होगा। जब तक ऐसा नही होता संघर्ष चाहे वह व्यक्ति व्यक्ति के बीच का हो चाहे देश देश के बीच का हो वर्तमान रहेगा ही। जब संघर्ष रहेगा तो जो अद्‌भुत और अतुल शक्ति विज्ञान आज मनुष्य के हाथों में दे रहा है उस का उपयोग एक व्यक्ति और समूह के उत्कर्ष और दूसरे व्यक्ति और समूह के गिराने में होता ही रहेगा। इस लिये हमें उस भावना को जाग्रत रखना है और उसे जाग्रत रखने के लिये कुछ ऐसे साधनो को भी हाथ में रखना होगा जो उस अहिसात्मक त्याग भावना को प्रोत्साहित करे और भोग भावना को दबाये रखें। नैतिक अंकुश के बिना शक्ति मानव के लिये हितकर नही होती। वह नैतिक अंकुश यह चेतना या भावना ही दे सकती है। वही उसे उस शक्ति को परिमित भी कर सकती है और उस के उपयोग को भी नियन्त्रित।

वर्तमान युग मे भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध के प्रश्न के अतिरिक्त यह बात भी विचारणीय है कि भारत की प्रत्येक प्रादेशिक भाषा की सुन्दर और आनन्दप्रद कृतियों का स्वाद भारत के अन्य प्रदेशों के लोगो को कैसे चखाया जाये। मै समझता हूं कि इस बारे मे दो बाते विचारणीय है। क्या इस बारे में यह उचित नही होगा कि प्रत्येक भाषा की साहित्यिक सस्थायें उस भाषा की कृतियो को संघलिपि अर्थात् देवनागरी मे भी छपवाने का आयोजन करे। मुझे विश्वास है कि कम से कम जहा तक उत्तर की भाषाओं का सम्बन्ध है यदि वे सब अपनी कृतियो को देवनागरी मे भी छपवाने लगें तो उनका स्वाद लगभग सारे उत्तर भारत के लोग आसानी से ले सकेंगे क्यो कि इन सब भाषाओ में इतना साम्य है कि एक भाषा का अच्छा ज्ञाता दूसरी भाषाओ की कृतियो को स्वल्प परिश्रम से समझ जायेगा।

दूसरी बात है ऐसी सस्था की स्थापना की जो इन सब भाषाओं में आदान प्रदान का सिलसिला अनुवाद द्वारा आरम्भ करे। यदि सब भारतीय भाषाओ का प्रतिनिधित्व करने वाला सांस्कृतिक सगम स्थापित हो जाता है तो इस बारे में बडी सहूलियत होगी। साथ ही वह सगम साहित्यिकों को प्रोत्साहन भी प्रदान कर सकेगा और अच्छे साहित्य के स्तर के निर्धारण और सृजन करने मे पर्याप्त अच्छा कार्य कर सकेगा। साहित्य संस्कृति का एक व्यक्त रूप है। उस के दूसरे रूप गान, नृत्य, चित्रकला, वास्तु निर्माण, मूर्तिकला इत्यादि में देखे जाते है। भारत अपनी एक सूत्रता इन सब कलाओं द्वारा प्रदर्शित करता आया है। आप की यह संस्था उसे और भी बल और स्फूर्ति देगी।

इन सब विषयों पर आप को इस प्रतिज्ञा को ध्यान में रख कर विचार करना है जो इस भवन में शाहजहां ने उसके निर्माण के पश्चात् खुदवा दी थी। उस ने गर्व के साथ खुदवा दिया था कि :

गर फिरदौस बर रूए जमीनस्त,
हमीनस्तो, हमीनस्तो, हमीनस्त

यह स्वप्न तभी सत्य होगा और पृथ्वी पर स्वर्ग तो तभी स्थापित होगा जब अहिंसा, सत्य और सेवा का आदर्श सारे भूमण्डल में मानव जीवन का मुख्य आधार और प्रधान प्रेरक शक्ति हो गया होगा। इस हाल में वह प्रतिज्ञा आज भी प्रतिध्वनित हो रही है। आप यहां समवेत हुए हैं और उस प्रतिज्ञा के प्रति आप बहरे नहीं बन सकते। आप को अपना सारा कार्य उसी गूंजती हुई प्रतध्वनि में बैठ कर करना है। मुझे भरोसा है कि पृथ्वी पर स्वर्ग का वह आदर्श आप की सारी कार्यवाही को आलोकित करता रहेगा।

दस्तकारी प्रदर्शनी

लाजपतनगर में पुनर्वास मंत्रालय के नारी विभाग द्वारा की गई दस्तकारी प्रदर्शनी में राष्ट्रपतिजी ने कहा---

माननीय मंत्रीजी, श्री मोहिनीजी, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि आज मै आपके इस जलसे में एक साल के बाद शरीक हो सका। जब पिछले साल मै इसी तरह के जलसे में शरीक हुआ था उस वक्त जो कुछ मैंने यहा देखा था आज उन्ही चीजो को एक बडे पैमाने पर और ज्यादा बेहतर तरीके से देखकर मेरी खुशी और भी बढ गयी है।

यह काम उन स्त्रियों मे हो रहा है जो परेशान होकर दूर दूर से यहा आ पहुची हैं और उनमें से बहुतेरी ऐसी है जिनकी देखरेख करने वाला कोई नही है। इसलिये यह काम बहुत बडा है। इसके जरिये से आप यह बात सिर्फ़ उन्ही लोगों को नही जिनको लाभ पहुच रहा है बल्कि दूसरो को भी दिखला सकते हैं कि जहा अच्छी काम करने वाली स्त्रिया मिल जायें और वे दिल लगाकर ऐसे काम को अपने हाथ मे ले तो वह काम कितनी खूबसूरती के साथ और कितनी कामयाबी के साथ पूरा हो जाता है। मैंने देखा कि तरह तरह की चीज़ें यहां तैयार की जाती हैं। अब उन चीज़ों से कुछ पैसे भी कमा लिये जाते हैं जिससे यहा के खर्च में कुछ सहायता मिलती है। आपकी रिपोर्ट से मुझे यह भी पता चला कि यहां रहने वाली स्त्रियों के बच्चो की शिक्षा का भी इन्तज़ाम किया गया है और सिर्फ़ यहां ही नही बल्कि कई जगहों पर जहां इसकी शाखाएं हैं ऐसा इन्तज़ाम किया गया है और जैसे जैसे इमारतें तैयार होती जायेंगी यहां यह काम बढ़ता जायेगा। यह बड़ी खुशी की बात

है। मने इस जगह को देखा तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई क्योंकि मैने देखा कि यहां बिल्कुल खली जमीन है और चारों तरफ़ नयी नयी इमारतें बन रही है और यह जानकर मुझे और भी खुशी हुई कि आप और भी इसका इजाफ़ा करने जा रहे है जिसमे और अधिक औरतों को रहने के लिये मकान मिल जायें।

मै एक चीज आप लोगों से कह देना चाहता हू जो शायद आपके ध्यान मे भी हो। यहा चारों तरफ मैदान ही मैदान है। बरसात के दिन आ रहे है, उस वक्त आप नये नये दरख्त लगाये जो साल दो साल मे तैयार हो जायेंगे और यहां के रहने वालों को छाया मिलने लगेगी। मैने अखबार मे देखा है, मालूम नहीं कहा तक यह बात सच है, कि यहां और चीजें तो बन गयी है पर यहां पानी का बन्दोबस्त नही है और पानी के बिना यहा के लोगो को तकलीफ़ होती है। आपका ध्यान इस ओर होगा और मै उम्मीद करता हू कि इस तकलीफ को दूर करने का कोई न कोई रास्ता आप ने सोच लिया होगा क्योकि गर्मी के दिन आ रहे है और गर्मी के दिनो मे पानी की तकलीफ आदमी के लिये सब से बड़ी तकलीफ होती है।

मैने मकानों के अन्दर जाकर तो नही देखा है। पर बाहर से देखने से तो मकान साफ सुथरे मालूम पडते है। आपने तरह तरह की चीजे सिखाने का बन्दोबस्त भी किया है जिससे जो यहा से सीख कर निकले तो अपने लिये कोई रोजगार भी पैदा कर सके, कम से कम अपने खाने पीने के लायक पैदा कर ही सके। इस वक्त तो ज्यादा जरूरत इसी बात की है। हमारे हाथ मे इस वक्त इतने आदमी हो गये है स्त्री और पुरुष दोनो, कि उनको रोजगार नहीं दिया जाये तो इतने आदमियो को खिलाना, उनके बच्चों को पढाना, लिखाना जिससे वे अच्छे नागरिक बन सकें एक बहुत बड़ा काम होगा और उसको चलाना मुश्किल होगा। दूसरा तरीका यही है कि लोगों को आहिस्ता आहिस्ता तैयार करके अपने पैरों पर खडा कर दे जिसमें वे अपनी मेहनत से, अपने परिश्रम से जो उनकी जरूरियात है उनको पूरा कर ले। आपने इस काम को शुरू किया है। मै उम्मीद करता हू और आपको दुआ देता हूं कि आप इस काम को और भी उत्साह के साथ जारी रक्खे। पहले जब मिसेज सयाई यहा पर थी तो जहा तक मुझे याद है दो बार मैने यहां का काम देखा था और मुझे उनसे बड़ी खुशी हुई थी। मुझे इस बात की खुशी है कि गरचे वह यहा से चली गयी पर अब श्रीमती मनमोहिनी सहगल उस काम को उसी खूबी के साथ चला रही है और दूसरी बहनें भी उनकी मदद कर रही है। इन सब चीजो को देखकर मुझे बड़ी खुशी होती है और इसके लिये मै आप सबको बधाई देना चाहता हू।

जो बहने यहा की संस्थाओं से लाभ उठा रही है उनसे मुझे यह कहना है कि वे यह समझे कि उनकी खुशकिस्मती है कि इतनी मुसीबतों के बाद उनको दूसरो के जरिये से यह सेवा मिल रही है और इस बात की कोशिश हो रही है कि वे स्वतंत्र हो जाये। जब वे इस योग्य हो जाये कि दूसरों की सेवा कर सके तो मै आशा करता हूं कि वे दूसरी पिछड़ी बहनों की देखरेख उसी तरह से करेंगी जिस तरह उनकी सेवा आज हो रही है और उन पिछड़ी बहनों की सेवा में वे अपना समय लगायेगी जिससे वे उनकी तकलीफ को दूर कर सकें।

मै और क्या कहू, आप सभी बहनों और भाइयों को धन्यवाद देता हू।

त्रिवेन्द्रम में नागरिक अभिनन्दन

*त्रिवेन्द्रम के नागरिक निगम द्वारा २५, मार्च १९५१ को दिये गये अभिनन्दन पत्र का उत्तर देते हुए राष्ट्रपति ने कहा—

महामहिम राजप्रमुख, निगम पति, निगम के सदस्यो, बहनो और भाइयो,

यह अभिनन्दन पत्र देकर आपने जो मेरा सम्मान किया है उसके लिये मै आपको हार्दिक धन्यवाद देता हू। आपने मेरे सम्बन्ध मे अत्यन्त प्रशंसात्मक शब्द कहे है और बहुत सी ऐसी बाते कही है जो कम से कम मेरे विचार में मेरी उपस्थिति में न कही जाती तो अच्छा होता। किन्तु आज मै ऐसे पद पर आसीन हू जिस से लोगों के दिल मे केवल इसी कारण गर्व की भावना पैदा होती है कि एक भारतीय के लिये इतने उच्च पद पर आसीन होना सम्भव हो सका। हम लोगो ने अनेक वर्षो तक संघर्ष किया है और यह महात्मा गान्धी की तपस्या का फल है तथा समस्त देश के उनके अनुयायी अनेक नर नारियो की ही तपस्या का फल है कि हम स्वतन्त्रता प्राप्त करने मे समर्थ हो सके। हम ने हाल में ही तो इसे प्राप्त किया है किन्तु स्वयं स्वतन्त्रता का कुछ विशेष महत्व तब तक न होगा जब तक कि इस देश के साधारण जनो के दैनिक जीवन मे वे गुण भी न आ जायंगे जिनकी अपेक्षा स्वतन्त्रता देवी करती है। स्वतन्त्रता के थोडे दिनों मे हमने अपेक्षाकृत बहुत सफलताये प्राप्त कर ली है। प्रथमत देश के सुदूर भागों का एकीकरण करने मे हम सफल हो गये है और यद्यपि हमारे पूर्वज्ञात भारत से उसके उत्तर पश्चिमी और उत्तर पूर्वी भाग कट कर अलग हो गये है तथापि अवशिष्ट भारत उससे कही बड़ा है जो आज से पहले भारत था। तथा राज्यो के मिल जाने के पश्चात् वह भूतकाल के भारत से कही बडा है जो किसी भी सम्राट के शासन के अधीन था। यह बड़ी सफलता है कि आज हमारे यहा ऐसा संविधान है जिसका विस्तार सारे भारतवर्ष मे है और जिस में भारत के सब विशिष्ट और सुदूर भाग सन्निहित है। यह हमारी महान् सफलता है कि वे सब विभिन्न राज्य जो कुछ बातो मे विभिन्न प्रकार से प्रशासित थे अब सब एक संविधान के सूत्र मे बध गये है। यह बहुत कुछ जनता के प्रयासो का परिणाम है किन्तु उतनी ही हद तक यह राजाओ की सद्बुद्धि और देशभक्ति का भी परिणाम है कि हम यह सब सफलता प्राप्त कर सके है। आज जो कुछ हमारे पास है वह सब महान् विरासत है। अब हमे यह सिद्ध कर के दिखाना है कि हम इसके सत्पात्र है। मै जानता हू कि हम ऐसे समय मे होकर गुजर रहे हैं जिसे प्रयोग का युग कहा जा सकता है। आज सारे देश मे प्रजातन्त्रात्मक राज्य चल रहा है। इस वर्ष के अन्त मे वयस्क मताधिकार के आधार पर साधारण निर्वाचन होने वाले है और केवल इसी बात से कि हम इतने बड़े पैमाने पर चुनाव करने वाले है यह स्पष्ट है कि हम भविष्य के सम्बन्ध मे कुछ शकाकुल नहीं है और हमें आशा है कि ठीक तरह के लोग आगे आयेगे जो समस्त देश का काम सम्भाल सकेगे। हरेक नगर को इस बारे में अपना पार्ट अदा करना है; हरेक नगरी को इस बारे में अपना पार्ट अदा करना है और सब तो यह है कि हरेक ग्राम को इस बारे में अपना पार्ट अदा करना है। आपका नगर बड़ा सुन्दर है पर मनुष्य ने तो इसे और भी सुन्दर बना दिया है। अब जो यह महाप्रयोग चल रहा है, इसमें आपको भी बडा पार्ट अदा करना है और मुझे आशा है कि आप बड़ा सम्मान्य पार्ट

---

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

अदा करेंगे जिससे कि जिस जनता की सुविधा का भार आप पर है उस का जीवन बेहतर हो, अधिक सम्पन्न हो और अधिक सुखमय हो। नगर मे आप को उसकी जनता की देखभाल करनी पडती है और इसी प्रयोजन के लिये वहा निगम कायम किया जाता है। किन्तु इसके साथ ही निगम के सदस्यो को इस बात का अवसर मिलता है कि वे ऐसा अनुभव प्राप्त करें जिसे सारे देश के शासन मे बडे पैमाने पर वे काम मे ला सकें और मुझे इस बात का पूरा यक़ीन है कि आपने इस निगम मे जो अनुभव हासिल किया है वह आप मे से हरेक के लिये, जो राज्य और देश के बृहत्तर क्षेत्र मे किसी पद पर आसीन होता है, हर दृष्टि से बहुत लाभदायक सिद्ध होगा। मुझे यकीन है कि अपनी जनता के हित मे आप जो कुछ भी यहा करेंगे उसके लिये आप को यहा की जनता का पूरा समर्थन प्राप्त होगा। निगम इसी बात के लिये ही आपको समर्थ नही बनाता कि आप पर जिस जनता की देख रेख का भार है उसकी आप कुछ सेवा कर सके वरन् जैसा कि मै कह चुका हू यह ऐसी प्रयोगस्थली है जहा काम करके आप सारे देश के शासन मे बडे पैमाने पर भाग लेने के लिये समर्थ बन सकते है और मुझे यह पूरा यकीन है कि आपका वर्तमान अनुभव आपको उस महान् काम मे भाग लेने के लिये सहायक सिद्ध होगा। आपने मेरा जो आदर किया है उसके लिये मै आप को हृदय से धन्यवाद देता हू। यह पहला ही अवसर नही है जब मै यहा आया हू; यह दूसरी बार है जब मै यहा आया हू। मै आपसे यह कहना चाहता हू कि यद्यपि मेरा दोनो दफे यहा आना बहुत थोडी देर के लिये ही हुआ है किन्तु मैने इस प्रदेश को इतना देख लिया है कि अपने साथ यहा की बडी मधुर स्मृतिया ले जाऊ तथा मेरे दिल मे यह ख्वाहिश है कि मै यहां फिर आऊ क्यो कि जो कुछ मै ने यहां देखा है उससे मेरे हृदय मे यह प्यास पैदा हो गयी है कि मै इस देश को और भी अधिक देखूं। मै यही आशा करता हू कि यहा आने के और आप लोगो से और मिलने के मुझे और भी आगे अवसर मिलेगे।

यूनीवर्सिटी स्टेडियम त्रिवेन्द्रम मे सार्वजनिक सभा।

*रविवार २५ मार्च, १९५१ को सार्वजनिक सभा मे बोलते हुए राष्ट्रपति जी ने कहा--

महामहिम राजप्रमुख, बहनो और भाइयो,

आप के सुन्दर नगर मे आये हुए मुझे केवल २४ घंटे हुए है। और जिस क्षण मैंने यहां पैर रखा तभी से मुझे आपका इतना प्रेम और अनुग्रह मिला है कि उसके बोझ के नीचे मै दबा जा रहा हूं।

मैं देश के विभिन्न राज्यो में जाने का प्रयास करता रहा हू। दक्षिण में यह पहला ही राज्य है जिसमे भारत के गणतन्त्र के राष्ट्रपति के नाते आना मुझे सम्भव हुआ है और मुझे इस बात की खुशी है कि मेरे लिये यह सम्भव हो सका कि मै यहां आऊं और देश के इस बड़े सुन्दर प्रदेश को कुछ देखू और आप के बारे में उससे कुछ अधिक जानू जो मै पहले जानता था।

आप इस बात से भली भांति परिचित है कि पिछले तीन ही वर्षो मे हमारे देश में महान् परिवर्तन हुए है। गत वर्षो में जो लोग स्वराज्य के लिये आन्दोलन करते रहे थे उन्हें

---

*अंग्रेजी से हिन्दी मे अनुवाद

इस से बेहतर किसी बात की आशा न थी जिसे प्राप्त करने में हम सफल हुए है और अब हमारा यह काम है कि उस महान् स्वतन्त्रता को हम बनाये रखे जिसे हमने प्राप्त किया है और अपनी जनता को हम समृद्ध और सुखी बनाये। जब तक हमारी स्वतन्त्रता इस विशाल देश के रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में पैठ न जायेगी और जब तक प्रत्येक व्यक्ति यह महसूस न करेगा कि स्वतन्त्रता मिलने से पहले वह जैसी अवस्था में था उससे वह हर बात में अब बेहतर है तब तक हमारी स्वतन्त्रता का कोई अर्थ न होगा। यह बात हम सब के कन्धे पर बड़ी गहरी जिम्मेदारी रख देती है और इस देश के आप साधारण नर नारियों से मै यही अपेक्षा करता हूं कि आप इस बात को पहचानें और सरकार नाम से पुकारी जाने वाली संस्था पर ही इस काम को न छोड़ दे। वयस्क मताधिकार के कारण हमारे यहां वैसी व्यवस्था है जिसमे प्रत्येक व्यक्ति सरकार मे भागीदार है और अब यह कोई नही कह सकता कि सर्व साधारण जनता से सरकार कोई अलग चीज है। ऊंचे और नीचे सभी व्यक्तियो का यह कर्तव्य है कि देश की उन्नति के लिये, और साधारण जनो की बेहतरी और सुख के लिये अपना अपना अंशदान करे। पिछले तीन वर्षो में हम बड़ी मुश्किल हालतों मे से होकर गुजर रहे हैं। आप लोग, जो दक्षिण के है और जो उन स्थानों से जहां पर इन कठिनाइयो के पहाड़ टूटे थे, बहुत दूर रहते हैं सम्भवत. इन कठिनाइयों की व्यापकता और विस्तार की बात ठीक न समझ सके और न यह समझ सकें कि अपने अस्तित्व के शुरू के दिनो में ही हमारी सरकार को कितनी कठिन समस्याओ का सामना करना पडा और देश को कितना अधिक नुकसान हुआ। पश्चिम और पूर्व मे दोनो ही तरफ लाखो नर नारी अपने घरो से बिल्कुल उखाड़ दिये गये और अपना घर द्वार तथा और सब कुछ छोड़ कर ऐसी जगह की खोज मे चल पडे जहा वे इज्जत और हिफाजत से जिन्दगी बिता सकें। यह बात थोडे ही लोगो के साथ नही हुई। केवल पश्चिम से जिसे आजकल पश्चिमी पाकिस्तान कहा जाता है पचास लाख या सम्भवत उससे भी ज्यादा सख्या म नर नारी भारत चले आये और कुछ समय पश्चात् बहुत बड़ी सख्या मे अर्थात् कम से कम ३५ लाख नर नारी पूर्वी बंगाल से पश्चिमी बगाल चले आये। इन लाखो नर नारियों को फिर से बसाना और फिर से काम मे लगाना कोई आसान बात नही थी। यद्यपि सरकार जो कुछ भी कर सकती थी कर रही है तो भी यह अभी नही कहा जा सकता कि हम उन्हे फिर से बसाने मे सफल हो गये है। पश्चिम मे प्रगति काफी हुई है और जहां तक गांव के लोगों का सवाल है यह बात कही जा सकती है कि वे सब के सब भूमि पर बसा दिये गये है। किन्तु उन सब के पास रहने के लिये घर नही है। शहरो के रहने वालो को ज़्यादा मुश्किलो का सामना करना पड़ा है। जो किसान लोग पश्चिमी पाकिस्तान से पूर्वी पंजाब मे आये और जब उन्हे भूमि मिल गयी तब उन्हों ने अपनी जिन्दगी को अपने तरीके पर फिर शुरू कर लिया और अपना काम बहुत कुछ वैसे ही चलाने लगे जैसे वे पहले चलाते थे। पर शहर के रहने वाले जो पहले किसी प्रकार का व्यापार या व्यवसाय करते थे उन्हे अपनी नयी परिस्थितियों से मेल बैठाने मे बहुत बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। पश्चिमी पंजाब में जो वह व्यापार करता था वह केवल हिन्दु और सिखों से ही नही करता था जो यहां उसके साथ चले आये बलिक मुसलमानों के साथ भी करता था। इनमें से बहुत से पुरुषार्थ वाले लोग देश में बहुत दूर दूर तक फैल गये हैं और चाहे मुश्किल से ही सही उन्हों ने अपनी ज़िन्दगी फिर शुरू कर दी है और सरकार भी उनको सब सम्भाव्य सहायता दे रही है। हजारों ही घर

सरकार के खर्चे पर बन चुके है और वे लोग इन मे अब रहने लगे है। ऐसी कुछ नगरियां भी बन रही है जिन मे लोग स्वय अपनी मेहनत से अपने लिये घर बना रहे है और दूसरे तरह के काम कर रहे है। बंगाल मे भी जहां बड़ी तादाद में लोग पूर्वी बंगाल से पश्चिमी बंगाल चले आये है बहुत कुछ इसी बात की पुनरावृत्ति हो रही है। सरकार को जितनी समस्याओ का सामना करना पड़ा है उन में से सब से बड़ी इन लोगो को फिर से बसाने की और इन लोगो को काम मे लगाने की समस्या रही है। सम्भवत: मै यह कह सकता हूं कि अब समस्या का अन्त दिखाई पड़ने लगा है, गो कि अभी यह नही कहा जा सकता कि हमने समस्या को सचमुच मे ही पूर्णतया हल कर लिया है । जब मै यह कहता हूं कि समस्या का अन्त अब दिखाई पड़ रहा है तो मेरा केवल यही आशय है कि इसके हल करने के सही रास्ते पर हम चल रहे है और हमे यह आशा है कि समय पाकर हम इसको पूरी तरह हल करने में कामयाब हो जायेगे ।

किन्तु हमारी सरकार को केवल यही समस्या नही सुलझानी पड़ी है। हमे अन्न के बारे में भी कठिनाइयो का सामना करना पड़ा है और यदि अधिक नही तो उतनी ही मात्रा में जितनी कि देश के अन्य भागो के लोगो को भुगतनी पड़ रही है इस प्रदेश के रहने वालो को सहनी पड़ रही है। बटवारा होने के पहले भी और यहां तक कि भारत के स्वतन्त्र होने के पहले भी हम बड़ी मात्रा मे अन्न विदेशो से मगाते थे । अधिकतर यह बर्मा से आता था जहा चावल अधिक मात्रा मे पैदा होता है, किन्तु यह साधारण व्यापार के जरिये हमारे यहा आता था और किसी का ध्यान इस की ओर खास तौर से इसलिये न जाता था क्यो कि बर्मा भारत का ही भाग था। किन्तु लड़ाई के दिनो मे मुश्किल पैदा हुई है। बर्मा अब उतना पैदा नही कर सकता जितना कि पहले किया करता था और इस प्रकार चावल मिलने का एक बड़ा ज़रिया हमारे हाथ से जाता रहा है। यह ठीक है कि अब फिर बर्मा मे चावल की पैदावार बराबर बढ रहा है किन्तु अब भी यह लड़ाई से पहले की सतह तक नही पहुची है और इसका परिणाम यह है कि हमे ससार के दूसरे भागो से अधिकाधिक मात्रा मे दूसरे प्रकार के अन्न का आयात करना पड़ता है। हम उत्तरवासियों को इस बात का खेद है किन्तु इसके अलावा कुछ और किया जा सकता भी नही। दक्षिण मे आप लोग चावल खाने के अभ्यस्त है और आप लोगो को आजकल अंशत गेहूं और दूसरा अनाज दिया जा रहा है जिसके खाने के आप साधारणतया अभ्यस्त नही है किन्तु दुर्भाग्यवश और कोई चारा नही है। इस वर्ष खास तौर से प्रकृति का कोप हम पर रहा है और हमे एक मुसीबत के बाद दूसरी मुसीबत सहनी पड़ी है जिसका परिणाम यह हुआ है कि देश के बहुत से भागो मे बड़ी कठिन स्थिति पैदा हो गई है। पिछली वर्षाऋतु के आरम्भिक दिनों मे ही अतिवृष्टि के कारण भारी बाढ़ आयी और देश के बहुत से भागों में खड़ी हुई फ़सल बिल्कुल बह गयी। हमें यह आशा थी कि समयोपरान्त अगली फ़सल बहुत अच्छी होगी और खास तौर से चावल की फसल के सम्बन्ध मे तो यह विचार था कि यह बहुत ही अच्छी होगी किन्तु बाद मे पानी बिल्कुल न पड़ा जिसका परिणाम यह हुआ कि जिस फ़सल के बारे मे हम यह आशा लगाये बैठे थे कि वह बहुत अच्छी होगी वह सूखे के कारण न्यूनाधिक विनष्ट हो गयी। तत्पश्चात् आसाम में इतना बड़ा भूकम्प आया जितना पहले कभी न आया था और बहुत बड़ा क्षेत्र सर्वथा विनष्ट हो गया जिसका परिणाम यह हुआ कि पीड़ित व्यक्तियों

को फिर से बसाने और उस राज्य में लाखों नर नारियों की सहायता करने की समस्या हमारे सामने आ खड़ी हुई। प्रकृति इतने से ही सन्तुष्ट न हुई। हाल मे ही हमारे यहां टिड्डी दल आ टूटा। और देश के कुछ भागो में उसने गेहू की फसल को नुकसान पहुंचाया। अतः अन्न की दृष्टि से यह चालू वर्ष हमारे लिये बहुत ही कठिन वर्ष सिद्ध हुआ है। जैसा मैं ने कहा है इस कठिन परिस्थिति का मुकाबला करने का सरकार प्रयास करती रही है और पहले से भी कही अधिक मात्रा में विदेशो से अन्न का आयात किया जा रहा है। मुझे आशा है कि समयोपरान्त तथा आयात अन्न की सहायता से हम इस स्थिति पर काबू पाने मे सफल हो जायेंगे। किन्तु जिस बात को मै आपके मन में बैठाना चाहता हू वह यह है कि जब किसी देश पर भारी विपत्ति पड़ती है तो वास्तव मे वहां कि जनता को केवल सरकार ही नही बचा सकती। सरकार का यह धर्म अवश्य होता है कि जो कुछ वह कर सकती है वह करे और आप यकीन मानिये कि सरकार वह कर रही है। किन्तु यह जनता का ही काम है कि वह स्थिति का मुकाबला साहस, दूरदर्शिता, त्याग भावना से और दृढता से करे। जहां कही भी मैं जाता हूं मै जनता से कहता हूं कि जहां सरकार अपने धर्म के प्रति उदासीन नही हो सकती और वास्तव में वह जनता की सहायता करने की पूरी कोशिश कर रही है वहीं यह बात भी ठीक है कि यह भार जनता के ऊपर ही है कि वह कमर कस कर नयी स्थिति का मुकाबला करने के लिये खडी हो जाये। मुझे स्मरण है कि तीन या चार वर्ष पहले जब मै अन्न मन्त्री था तो हमारे सामने इसी प्रकार की कठिन स्थिति आयी थी और विशेषतया इन भागो से मेरे पास ऐसी खबरे पहुची थी जिनसे मुझे चिन्ता पैदा हो गयी थी। मै ने यह बात महात्मा गांधी से कही और उन्होने कहा जो कुछ तुम कर सकते हो तुम्हे करना चाहिये। किन्तु अन्ततोगत्वा यह तो जनता के ही हाथ की बात होगी कि वह इस कठिन समय को पार कर ले और तुम इस बात का भरोसा रखो कि चाहे उस पर कैसी ही कठिन विपत्ति क्यो न पडे वह मछली और टैपीओका की सहायता से जो यहा काफी मात्रा में होता है अपनी मुश्किल हल कर लेगी। मुझे इस बात की प्रसन्नता हुई कि महात्मा जी ने जिस बात की अपेक्षा की थी वह ठीक साबित हुई। भूख से कोई आदमी यहां नही मरा और न वैसी खराब हालत ही किसी की हुई। अतः इस वर्ष भी इतनी खराब स्थिति मे मुझे महात्मा जी की वह बात याद करके कुछ सहारा मिलता है और मै उनकी इस बात को केवल तिरवांकूर के लिये ही लागू नही समझता वरन् सारे देश के लिये लागू समझता हू। मुझे यकीन है कि जनता में इतना पुरुषार्थ होगा कि यदि हमे बड़ी से बडी मुसीबत का भी सामना करना पड़े तो वह संकट काल को पार कर लेगी, यदि वह एक दफा इस बात का निश्चय कर ले। और यही बात तो हम सब को करनी है। अन्न की समस्या के सम्बन्ध मे ही नही बल्कि और बातों के लिये भी यही उचित सिद्ध होती है कि जहां कही भी कठिन परिस्थिति पैदा होती है वहा जनता का ही काम होता है कि वह निश्चय कर ले कि साहस और धैर्य से वह उस स्थिति का मुकाबला करेगी।

जैसा कि आप जानते है हम लोग अपने सांविधानिक विकास के सम्बन्ध में प्रयोगात्मक अवस्था में हो कर गुजर रहे है। मै इसको प्रयोगात्मक इस दृष्टि से नही कहता कि हमारे यहा अस्थायी प्रकार का संविधान है बल्कि इसलिये कहता हूं क्यो कि हम अभूतपूर्व और बड़े विशाल

पैमाने पर प्रजातन्त्रात्मक शासन का प्रयोग कर रहे है। मै निर्वाचनों के जो हम नवम्बर के अन्त और दिसम्बर के आरम्भ में करने वाले है खर्चे का अन्दाजा लगा रहा था। मुझे मालूम हुआ कि निर्वाचक नामावलि में लगभग सत्तरह या अठारह करोड़ लोगों के नाम होगे तथा फ़ुलस्केप कागज की एक तरफ यदि इन नामों को छापा जाये और इन पत्रों को एक दूसरे के साथ जोड़ दिया जाये तो ऐसी जिल्द बन जायेगी जो लगभग २०० गज मोटी होगी। यह चुनाव कितना बड़ा होगा इसका अन्दाजा इसी बात से लग सकता है। ऐसे चार सह स्र स्थान है जिनके लिये चुनाव किया जायेगा और लगभग दो लाख निर्वाचन केन्द्र होंगे जहां इस विशाल देश के नर नारियो को अपनी वोट देनी होगी। आप इस बात को समझ सकते हैं कि इन वोटों के दर्ज करने के लिये निर्वाचक पदाधिकारियो, क्लर्को, और पुलिस के आदमियों की कितनी भारी तादाद में जरूरत होगी। यदि प्रत्येक निर्वाचन केन्द्र के लिये केवल चार आदमियों को रखा जाये तो भी यह संख्या लगभग आठ, नौ लाख हो जायेगी। इस सब से जाहिर है कि हमारे राज्य के साधनो पर इससे बड़ा भार पड़ेगा और इसके बाद अर्थात् जब वोट पड़ चुकी होगी तब हम को यह पता चलेगा कि नये प्रजातन्त्र ने अपना शासन चलाने के लिये कैसे लोगों को चुना। आज यह कहना कठिन है कि इन निर्वाचनों का परिणाम क्या होने वाला है और मैं तो केवल यही प्रार्थना कर सकता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति जिसे मत देने का अधिकार है वह अपना मत इस विचार से देगा कि देश की भलाई हो, जनता की भलाई हो और उसके सामने केवल एक ही ध्येय हो और वह भारत की समृद्धि, और कोई भी केवल इसी बात से प्रेरित होकर मत नही दे कि उसे अपना मामूली हित सिद्ध करना है अथवा जिस दल का वह सदस्य है उस के किसी मामूली हित की रक्षा करनी है। मुझे आशा है कि कोई भी व्यक्ति समस्त देश के हित से प्रेरित होने के अतिरिक्त अन्य किसी प्रेरणा के कारण अपना मत नही देगा। यदि हमारी जनता ने अपने कर्तव्य को पूरा किया तो कोई ऐसी बात नही है जो उसे गौरव के ऐसे उच्च शिखर तक पहुंचने से रोक सके जैसे तक कि वह अपने लम्बे इतिहास मे कभी नही पहुंच सका था। यद्यपि यह केवल प्रयोग है तथापि मुझे विश्वास है कि हम इस प्रयोग मे सफल होंगे। ठीक है कि जहा कही भी महान् परिवर्तन होता है, जहा भी लाखो आदमियो की बात होती है वहां बड़े पेचीदा प्रश्न पैदा होते है और हमे भी अपने इस प्रयोग मे बहुत काफी मुश्किलो को पार करना होगा। हो सकता है कि ऐसे अनेक कठिन प्रश्न पैदा हो जाये जो फ़िलहाल असाध्य लगें किन्तु यदि हमें अपने में विश्वास रहा, यदि हमे परमात्मा मे, जिसने हमें इस मंज़िल तक पहुंचाया है, विश्वास रहा और यदि हम सच्चाई से न डिगे तो मुझे कोई ऐसा कारण नही दिखाई देता कि इस प्रयोग से अच्छाई के अलावा और कुछ निकले। इस प्रकार का विश्वास मुझे अपने देश वासियों में है। यह बात मै अपने उस अनुभव से कहता हूं और अपने करोड़ो देशवासियो के सम्पर्क के उस बल पर कहता हू जो मेरे जीवन के पिछले तीस वर्षो मे मेरा उनसे होने का सौभाग्य रहा है। मुझे हमेशा यह अनुभव हुआ कि जब भी मैंने सद्बुद्धि और देशप्रेम के नाते उनसे अपील की है तो उन्होने बडी उदारता से उसे माना है। मैं आपके सामने एक दो उदाहरण रख देता हूं। आप जानते है कि महात्मा गांधी जी की यह बडी गहरी इच्छा थी कि देश में साम्प्रदायिक मेल हो। बंटवारे के बाद जब देश में बहुत गड़बड़ी हुई और बटवारे के पहले भी जब उत्तर मे हिन्दू मुसलमानो के बीच भारी झगड़े हुए तब ऐसे कई अवसर आये जब उन्हे बहुत गहरी चिन्ता हुई और उन्हे भारी क़दम उठाने पड़े। सन् १९४७ के अक्तूबर

के अन्त में या नवम्बर के शुरू मे बिहार में, जहां का कि मै हूं हिन्दू मुसलमानों में बड़े झगड़े हुए। हिन्दुओं ने बहुत सी जगहो मे मुसलमानो पर बड़ा अत्याचार किया। उनके अनेक गांव लूट लिये गये, अनेक मार डाले गये और अनेक घर जला दिये गये। यह सब इसलिये हुआ क्योंकि थोड़े ही दिन पहले मुसलमानो ने बगाल मे और खास तौर से कलकत्ता और ढाका में हिन्दुओं के साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया था और इसलिये बिहार में हिन्दुओ के मन मे बदले की भावना पैदा हो गयी थी और उन्होने यह झगड़ा शुरू किया था। बिहार मे जब बदले के लिये यह झगड़ा शुरू हुआ उस समय महात्मा गाधी इस प्रयोजन से बगाल जा रहे थे कि जिन हिन्दुओ को यातनाये सहनी पड़ी थीं उनके और जिन मुसलमानो ने उन पर यह सितम ढाये थे उनके बीच मे किसी प्रकार का समझौता कराया जाये। क्या आप जानते हैं कि उन्होने क्या कदम उठाया ? उन्होंने यह घोषणा कर दी कि यदि फौरन ही ये झगड़े नही रुक जाते तो वह आमरण अनशन आरम्भ कर देगे और इस दिशा में पहला कदम उन्हो ने यह उठाया कि उन्हों ने यह घोषणा कर दी कि उसी दिन से वह अपने भोजन की मात्रा मे कमी कर रहे है। मैं उस समय दिल्ली में था और सरकार का एक मन्त्री बन चुका था। मै फौरन दौड़ा हुआ अपने प्रान्त को इस प्रयोजन से गया कि यह देखू कि किस तरह से जनता को सही रास्ते पर लाया जा सकता है। हमारे प्रधान मन्त्री भी उस समय वहा थे। सरकार झगड़ो को रोकने के लिये अपना पूरा जोर लगा रही थी। पुलिस भी काम कर रही थी और फौज भी बुला ली गई थी। किन्तु जैसे ही अखबारों मे महात्मा जी की यह घोषणा छपी और गाव गाव मे उसकी खबर पहुंची वैसे ही आपको सुन कर आश्चर्य होगा, जो कि यह बात है कि [illegible] कि २४ [illegible] के अन्दर अन्दर सारा झगड़ा रुक गया और [illegible] मारने [illegible] बराबर [illegible] जाने वाला [illegible] एक साथ खत्म हो गया। मैने यह चमत्कार देखा। मै उस समय [illegible] बीच में घूम फिर रहा था और मुझे उन बड़े जलसो मे जिन मे मै भाषण देता था यह साफ दिखाई देता था कि [illegible] लोगो के दिल पर कितना गहरा असर हुआ है और किस [illegible] से वे इसे मान रहे हैं। [illegible] बाद ऐसा ही एक और मौका आया। उस समय महात्मा गाधी कलकत्ते मे थे। बगाल की सरकार की बागडोर कांग्रेस वालो के हाथ मे थी और दूसरी जगह की घटनाओ के कारण लोगो के दिल में बड़ा गुस्सा था और यह सोच कर कि अब तो हिन्दू सत्तासीन थे कुछ लोगो ने वहा बदला लेने की बात सोची। वहा भी महात्मा जी ने यही किया और कलकत्ता भी फौरन ही शान्त हो गया। उस समय बगाल के राज्यपाल श्री राजगोपालाचारी थे और उन्हो ने यह कहा कि वहां महात्मा जी ने चमत्कार कर के दिखाया है।

मै इन उदाहरणो को आपको यह दिखलाने के लिये दे रहा हू कि जब भी कोई अपील ठीक तरह से की गयी है और ऐसे ध्येय के लिये की गयी है जो न्याय्य है तो जनता के सब विभागों ने उस को बड़ी उदारता से पूरा किया है। शान्ति के अतिरिक्त और कोई ऐसी चीज़ नही कि जिसकी कि इस समय देश मे हमे ज्यादा आवश्यकता हो। इसकी आवश्यकता इस लिये है कि अपने भाग्य निर्माण की जो शक्ति हमारे हाथ मे आयी है उसको अपनी जनता की भलाई के लिये हम उत्तमोत्तम रीति से प्रयुक्त कर सकें। जैसा मै ने कहा है हमें शक्ति मिल गयी है। किन्तु हम इतनी कठिन समस्याओ मे फस रहे है कि हम उस शक्ति को जो हमे मिली है उस रीति से और उस प्रयोजन के लिये प्रयोग नही कर पाये है जिनके लिये कि आप उस का प्रयोग पसन्द

करेगे । इस प्रयोजन के साधन के लिये शान्ति से अधिक और किसी बात की आवश्यकता नहीं है । यह तो ठीक ही है कि विदेशो से शान्ति सम्बन्ध बनाये रखने की हमे आवश्यकता है । किन्तु देश के अन्दर भी शान्ति बनाये रखने की हमें आवश्यकता है । जब मै यह कहता हू कि हमें शान्ति चाहिये तो मेरा तात्पर्य यह नही है कि हमारे देश में किसी किस्म का झगड़ा या फिसाद आज कल हो रहा है । इस किस्म की यहां कोई बात नही हो रही है । किन्तु मै तो वास्तव में ऐसी शान्ति चाहता हू जो सब के मन मे इस विश्वास से पैदा होती है कि उन्हे अच्छे से अच्छे तरीके से साथ मिल कर इसलिये रहना है जिससे कि देश की उन्नति हो और वह समृद्ध हो । इसी प्रकार की शान्ति की बात इस समय मेरे मन मे है । महात्मा गांधी अहिंसा पर बड़ा जोर दिया करते थे । इस का कारण यह था कि हमारे देश मे अनेक सम्प्रदाय है, अनेक जातिया है, अनेक भाषाएं है, अनेक धर्म है, अनेक जीवन की रूढ़िया और तरीके हैं और यदि विभिन्न नये व्यापारों को करने वाले, विभिन्न भाषाओ के बोलने वाले, विभिन्न रूढियों पर चलने वाले लोग पूरी शान्ति के साथ मिलजुल कर नही रहते तो यहा समृद्धि नही हो सकती है । यही कारण है कि वह इस बात का आग्रह करते थे कि केवल दिखावे के लिये ही नही शान्ति हो वरन् लोगों के दिल में भी शान्ति हो और जब भी कभी अवसर आता था तो वे बराबर इस बात पर जोर देते थे कि लोगो में हृदय परिवर्तन हो । हमे ऐसे दिल की दरकार है जो उदार प्रेरणाओं से प्रेरित हो और जो हमें इतना बल प्रदान करता हो कि हम सब पर भरोसा कर सके । दूसरो पर शुबा करना एक तरह की कमजोरी है । दूसरो पर भरोसा करना एक प्रकार का बल है । जब कभी कोई व्यक्ति या कोई समुदाय किसी दूसरे व्यक्ति या दूसरे समुदाय पर शुबा करने लगता है चाहे उसका कारण कुछ भी क्यो न हो तो वह ऐसा करके अपनी कमजोरी ही जाहिर करता है । छोटे से छोटे समुदाय के लिये हमारे संविधान ने समता, और हिफाजत का आश्वासन दिया है । उस से उस समुदाय के लिये यह सम्भव है कि वह बहुसंख्यक लोगो के सामने अपना सर उठा कर चले । यह बहुसंख्यक लोगो का भी धर्म है, चाहे उनकी संख्या कितनी ही बड़ी क्यो न हो, कि वे यह सम्भव करे कि छोटे से छोटे समुदाय और मामूली से मामूली व्यक्ति के मन में कभी यह विचार पैदा न हो कि वह इसलिये सुरक्षित नही है क्योंकि वह बहुसंख्यक लोगो मे से एक नही है । ऐसा आश्वासन हमे देना है और यह आश्वासन तभी दिया जा सकता है जब कि हर व्यक्ति केवल अपनी ही या अपने ही समुदाय की बात नही सोचता वरन् सारे देश और सब लोगो की बात सोचता है । अन्य सब बातो से कही अधिक हमें ऐसी ही शान्ति की आवश्यकता है । यदि हमारे दिलों में इस प्रकार की शान्ति हो तो हमारा प्रजातन्त्र अवश्य सफल होगा । मै यह आशा और प्रार्थना करता हूं कि चाहे हम बहुसंख्यक हो अथवा अल्पसंख्यक, चाहे हम एक धर्म के मानने वाले हो या दूसरे धर्म के मानने वाले, हम में इस बात का साहस होगा कि हम देश में हर एक के प्रति सद्भावना, और भ्रातृभाव रखे ।

आप जानते है कि भारत में ही नही वरन् सारे ससार में इस समय घबराहट है और करोड़ों आदमियों को अपनी हिफाजत का भरोसा नही है । हमारी सरकार का यह प्रयत्न रहा है कि संसार मे शान्ति बनी रहे और लड़ाई का क्षेत्र और न फैले । हम इसमें सफल हो अथवा असफल हमारा धर्म है कि हम पूरी कोशिश करे और ऐसा ही हम करते रहे है । किन्तु हम इस सम्बन्ध में तब तक सब कुछ न कर सकेगे जब तक कि हमें अपने बारे में ही यकीन न हो । यदि हमारे

बीच में ही शान्ति नहीं हो तो हमारे लिये यह शोभनीय नही है कि हम दुनिया से शान्ति बनाये रखने को कहें। आज यही कारण है कि अपने लिये ही नही वरन् सारी मानव जाति के लिये हमें अपने देश में ऐसी शासन व्यवस्था कायम करनी है जिसमे प्रत्येक सुखी हो, सुरक्षित हो और जिस मे न तो किसी के मन में भय हो और न शका। यह है वह महान् प्रयोग जिसमें हमारा प्रजातन्त्र आजकल लगा हुआ है और हम मे से सब को यह आशा करनी चाहिये और सब को अपना अपना अंशदान करना चाहिये जिससे कि यह प्रयोग सफल हो।

आप लोगो ने अत्यन्त धैर्यपूर्वक मेरी बात सुनी इसके लिये तथा आपने मेरे आने के बाद से ही मेरा जो स्वागत किया है और मेरे प्रति जो अनुग्रह दिखाया है उसके लिये भी मै आप सब का धन्यवाद करता हूं।

इरनाकुलम में सार्वजनिक सभा

*इरनाकुलम में हरबर्ट मैदान में २९ मार्च १९५१ को सार्वजनिक सभा मे बोलते हुए राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम राजप्रमुख, बहिनो और भाइयो,

एक समस्या, खास तौर से उत्तर के रहने वाले भारतीयो के लिये जब वह दक्षिण भारत में आता है, यह है कि वह किस भाषा मे बोले। दुर्भाग्यवश म आपकी भाषा नही जानता हू और मुझे मजबूरी अग्रेजी मे बोलना पडता है, गो कि ऐसा करना मुझे पसन्द नही है। सविधान सभा ने हिंदी को अब राज भाषा मान लिया है और संविधान मे यह स्पष्ट लिखा है कि भारत की राष्ट्र भाषा हिंदी है और हमे यह आशा है कि अगले पन्द्रह बर्षो मे इस देश का ऐसा हरेक आदमी जिसका अखिल भारतीय व्यवसाय है इतनी हिंदी अवश्य जान गया होगा कि वह अपना काम उस भाषा मे चला सके और उस भाषा का विकास भी इतना हो गया होगा कि वह आधुनिक जीवन की सब प्रकार की जटिलताओं को व्यक्त करने के लिये अच्छा माध्यम हो। यह समस्या हमारे यहा कई वर्षो मे रही है। और लगभग ३५ वर्ष हुए राष्ट्र भाषा के महत्व को पहचान कर महात्मा गाधी ने दक्षिण मे हिन्दी के प्रचार की ओर अपना ध्यान लगाया था। उत्तर की लगभग सभी भाषाये न्यूनाधिक एक ही श्रोत से निकली हैं और आपस मे मिली जुली भाषाऐं है। अतः हिंदी भाषा भाषी व्यक्ति के लिये यह अधिक कठिन नहीं होता कि वह व्यक्ति बगाली को समझ सके और बगाली भाषा भाषी के लिये हिंदी समझना भी अधिक कठिन नही होता। किन्तु उत्तर की भाषाओं और दक्षिण की भाषाओं मे वास्तव मे विभिन्नता है; यद्यपि यहा भी संस्कृत का बडा महत्वपूर्ण स्थान रहा है और यहा के बहुत से शब्द अन्य भाषा भाषियो की समझ मे आ जाते है क्योंकि वे सस्कृत से निकले है। अगले दिन मै कुछ कविता पाठ सुन रहा था जो कि एक सभा में किया जा रहा था। मै कम से कम आधे शब्द समझ सकता था और मुझे ऐसा लगा कि

---

* अग्रेजी से हिन्दी मे अनुवाद

विभक्तियों और ऐसी ही अन्य बातों के अतिरिक्त और सब कुछ संस्कृत से लिया गया है। यह महान् काम है जो संस्कृत ने किया है। जब संविधान सभा ने हिंदी को अखिल भारतीय प्रयोजनों के लिये राष्ट्रभाषा के स्वरूप मे स्वीकार किया तो उसने यह भी बता दिया कि साधारण तथा उन नये विचारों के व्यक्त करने के लिये जिनके लिये चालू हिंदी में हमें शब्द नही मिलते हमें संस्कृत पर निर्भर करना पड़ेगा। भारत में दक्षिण और उत्तर, पूर्व और पश्चिम के बीच में वही एक समान तत्व है और हमे यह आशा है कि उसकी सहायता से मेरे जैसे व्यक्ति के लिये केवल यही संभव नही होगा कि मै ऐसी हिंदी भाषा मे आपसे बात कर सकू जो आपकी समझ में आती हो वरन् आपके लिये भी यह संभव होगा कि आप उस भाषा मे मुझ से इस प्रकार बात कर सके कि वह मेरी समझ मे आती हो। उत्तर की भाषा को दक्षिण पर लादने का कोई प्रश्न है ही नही। सच बात तो यह है कि सारे देश की जनता की यह इच्छा है कि हमारी एक आम भाषा हो और हमे ऐसा लगता है कि कोई भी राष्ट्र अपनी आत्मा को तब तक व्यक्त नही कर सकता जब तक कि वह अपनी भाषा में उसे व्यक्त न करे। मुझे ऐसा खयाल है कि जब आप लोग स्वतंत्रता आन्दोलन को चला रहे थे तब किसी ने यह कहा था कि अंग्रेजी भाषा के द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त करना असंभव होगा। मेरा यह विश्वास है कि हम लोगों के लिये भी यह आवश्यक है कि हम इस सचाई को पहचाने, अर्थात् यह जान ले कि विदेशी भाषा के द्वारा हमारे लिये स्वतंत्र रहना असंभव होगा। अतः जब कभी मुझे अंग्रेजी भाषा मे किसी सभा मे बोलना पड़ता है तो मुझे ऐसा लगता है कि मै ऐसा काम कर रहा हू जो मेरे लिए अरुचिकर है। पिछले तीस वर्षो में या उन से भी ज्यादा मे मै अनेकों सभाओं मे अपनी ही भाषा मे बोलता रहा हू। एक प्रकार से तो मैं अंग्रेजी मे व्याख्यान देने की कला ही भूल गया हूं, यदि मै यह मान भी लू कि ऐसी कला कभी मै जानता था। फिर भी मुझे काम तो चलाना ही है। जब कभी मै देश के इस भाग मे आता हू तो मै अंग्रेजी भाषा मे बोलता हू। मै केवल यही आशा कर सकता हू कि वे सब लोग जो इस सभा मे उपस्थित है और जो जो बात मै कह रहा हू उसे नही समझते है मुझे मेरी असमर्थता के लिये क्षमा करेंगे और उन अखबारो के जरिये जिनके प्रतिनिधि इस सभा मे बहुत अच्छी तादाद मे मौजूद बताये जाते है मेरे व्याख्यान के अनुवाद को यथा समय पढ लेगे। यह तो मैंने परिभाषा के तौर पर आपसे कहा किंतु मेरे इस कथन मे परमावश्यकता का भी कुछ अंश है। मै इस बात के लिये इच्छुक हू कि हम अपने सब कामो को चलाने के लिये एक आम भारतीय भाषा के प्रयोग को काफी महत्व दे। इस संबंध मे जो कुछ भी आवश्यक है उसे सरकार करेगी ही। किंतु अन्यत्र से कही अधिक यहा यह आवश्यक है कि इस प्रयोजन को जनता अपने ही स्वतन्त्र प्रयास से पूरा करने की कोशिश करे। पिछले तीस या अधिक वर्षो मे मेरा यह सौभाग्य रहा है कि मै दक्षिण में हिंदी प्रचार सभा के काम मे संलग्न रहा हूं और जब कभी मुझे इनाम और प्रमाणपत्र बाटने के लिये होने वाली सभाओ मे उपस्थित होने का मौका मिला है तो मुझे उससे अत्यन्त हर्ष हुआ है। इसके अतिरिक्त जिस बात से मुझे बहुत आश्चर्य हुआ है और साथ ही हर्ष हुआ है वह यह है कि मैंने एक ही समय मे तीन पीढियों के लोगों को अर्थात् पिता, पुत्र और पौत्र को एक ही साथ हिंदी पढ़ते और उसमें योग्यता के प्रमाण पत्र प्राप्त करते देखा है और उन्हें इनाम दिया है और इन मे से जितने ही कम उम्र के थे उतनी ही उन्होने अधिक योग्यता प्राप्त की थी। सच ही यह बात बड़े सन्तोष और बधाई की है कि आप दक्षिणवासियों ने इस काम को इतनी संजीदगी से शुरू किया है और इससे मुझे यह आशा होती है कि यह समस्या उस पन्द्रह वर्ष की अवधि मे हल हो जायेगा

जो कि संविधान ने इसके लिये दी है और हम अपनी भाषा के माध्यम द्वारा ही अपने सब अखिल भारतीय कार्य करने के योग्य हो जायेंगे।

हमारे सामने कई समस्याएे है किंतु कुछ ऐसी समस्यायें है जो आधारभूत है और जो अन्य सब समस्याओं की तह में है। ऐसी एक समस्या इस देश में साम्प्रदायिक मेल की समस्या है। हमारे यहा बहुत से मत और बहुत से समुदाय है और दुर्भाग्यवश कभी कभी ऐसा होता है कि एक या दूसरे कारण से साम्प्रदायिक शाति गड़बड़ा जाती है। यदि इस प्रकार की अशाति कभी कभी हो जाये तो उसमे कोई विशिष्टता नही होगी क्योंकि एक परिवार मे भी भाई भी कभी कभी एक दूसरे से झगड़ते है, पति पत्नी भी एक दूसरे से झगडते है, पिता पुत्र भी एक दूसरे से झगड़ते है। किंतु इन झगड़ों के बाद सुल्ह भी हो जाती है और पति अपनी पत्नी का पति ही रहता है, बेटा अपने बाप का बेटा ही रहता है और भाई अपने भाई का भाई ही रहता है। इसी प्रकार इस देश में जहां अनेक धर्मो के लोग मौजूद है कभी कभी उन में एक दूसरे से झगड़ा होने का कोई कारण पैदा हो तो उससे हमको यह न करना चाहिये कि हम उस झगड़े को सदा के लिये खीझ का कारण बनालें और हमे उस को अस्थायी मानने के अतिरिक्त और किसी प्रकार का रूप देना भी नहीं चाहिये। भाग्य-वश आपके प्रदेश का सहिष्णुता सम्बधी अपूर्व इतिहास रहा है। मुझे बताया गया है कि इस स्थान मे हिंदू, मुसलमान, ईसाई और यहूदी धर्म के लोग रहते है और आज ही नही शताब्दियो से वे आपस मे शातिपूर्ण ढग से रहते चले आ रहे है। मेरे जैसा कदाचित् आने वाला यात्री भी सडक पर जाते समय यहा मन्दिर, गिरजाघर, और यहूदियो के पूजा घर पास ही पास स्थित देखता है और यह बात तभी सभव हो सकती है जब कि यहा सब धर्मो के प्रति सहिष्णुता और आदर का भाव सब लोगो के मन मे हो। मेरा विश्वास है और सब धर्मो के सच्चे माननवालों का विचार है कि सच्चे धर्म का सबध तो ऐसी शक्ति मे आस्था से है जो प्रकृति के परे और ऊपर है। चूकि वह प्रकृति से परे वाली शक्ति सब से ऊपर है और सब उसके लिये बालक के समान है इसलिये हमे आपस मे एक दूसरे के भाई और बहिन के समान होना चाहिये। यदि सब धर्मो की सचमुच मे यही शिक्षा है तो परमात्मा की उपासना सबधी हमारी रीति मे कितने ही विभेद होने के बावजूद ऐसा कोई कारण नही है कि हम दूसरी बातो मे भाइयो के समान क्यो न रहे। सच तो यह है कि भारत मे हमारे पूर्वजो ने, हमारे पुराने ऋषियो ने, इस सत्य को पहचान लिया था और उन्होने सर्वदा के लिये और सब के लिये यह घोषित कर दिया था कि सत्य एक है किंतु मनीषी उसको बहुत प्रकार से पाने का प्रयास करते है। हमें केवल बौद्धिक विश्वास के रूप मे ही नहीं वरन् अपने जीवन मे प्रतिक्षण पाले जाने वाले आचरण के नियम के रूप मे तथा हमारे सप्रदायों का दिग्दर्शन करने वाली श्रद्धा और आस्था के रूप मे भी इस सत्य को पहचान और मान लेना है। हम इस बात को केवल इसलिये ही नही चाहते है कि हमारे देश मे अनेक धर्मो के लोग है वरन् इसलिये भी चाहते है क्योंकि उनमें से किसी के लिये भी सचाई के सर्वोच्च शिखर पर पहुचना तब तक सभव न होगा जब तक कि वे इस सत्य को पहचान न लें। यदि हम आपस मे झगड़ते रहेगे तो यह प्रत्यक्ष है कि हम किसी प्रकार की प्रगति न कर सकेंगे। हमारी उन्नति की, हम सब की उन्नति की केवल एक ही रीति है और वह है हम सब का सम्मिलित और सयुक्त प्रयास। जो शक्ति एक दूसरे को दबाने मे व्यर्थ जाती है उसे मिल जुल कर साथ रहने के लिये बहुत अच्छी तरह से प्रयोग किया जा सकता है। यह वह बात है जिसकी हमें इस देश के लिये आवश्यकता है। अतः यह एक ऐसी

मूलभूत समस्या है जिसे अज्ञात युगों से यह देश हल करता रहा है। किंतु आज, जब कि हमने अपने को विदेशी प्रभुत्व से स्वतंत्र कर लिया है और अपने भाग्य को हमें अपने ही साधनों से बनाना है, इस सत्य के दोहराने की फिर आवश्यकता है।

दूसरा मूलभूत प्रश्न जिसका प्रभाव स्वभावतः हम पर पड़ता है वह हमारे देश की आर्थिक व्यवस्था का प्रश्न है। हमारे देश मे करोड़ों आदमी है जिन में से कुछ बहुत ही खस्ता हालत में हैं और जिन्हें खाना, कपड़ा या रहने को मकान जरूरत के माफिक नही मिलते है। हमारे देश में जिन लोगों की ऐसी हालत है ऐसे करोड़ों ही नर नारी होंगे। इसके विपरीत हमारे यहा बहुत थोड़े आदमी हैं जो संपन्न है और सुखी है। हमारे सामने जो आवश्यकता है वह ऊपर वालों को दबाने की नही है वरन् वह तो जो लोग तले पड़े हुए हैं उनको उठाने की है। मै उस सिद्धान्त से सहमत नही हू जो धन सपन्नों को नीचे गिराना चाहता है, न कि औरों को ऊपर उठाना। वास्तव मे हमारी आवश्यकता यह है कि हम सब के जीवन स्तर को ऊपर उठायें। कभी कभी जब कोई गरीब आदमी अपने पड़ोसी को सुखी और सपन्न देखता है तो उसके मन मे द्वेष पैदा होता है। यह स्वाभाविक वृत्ति है और इसे हमें नजरअन्दाज़ करना है। किंतु हमे उन दोनों को यह बताने के लिये तैयार रहना है कि वे दोनों अगर ऊपर उठे और जो धन संपन्न है उनको नीचे गिराने की कोशिश न की जाय और जो गरीब है उनको उठाने की कोशिश की जाये तो वे दोनों सुखी होंगे। आखिर दूसरे देशों के मुकाबले मे हमारी राष्ट्रीय आय प्रति व्यक्ति के हिसाब से बहुत थोडी ही तो है और जब तक हम अपनी प्रति व्यक्ति आय को नही बढाते तब तक हम अपने साधारण जनो के जीवन स्तर को ऊपर उठाने की आशा नही कर सकते। हम चाहे कुछ लोगो का जीवन स्तर ऊपर भले ही उठादे किंतु यदि हम सारे राष्ट्रीय धन को बराबर बाट दे तो वह हमारी गरीबी का बटवारा होगा न कि हमारी सपन्नता का। यदि हमारे पास इतना धन होता कि वह सब को बाटा जा सकता और सब को अमीर बना सकता तो मै इस प्रयास का कि राष्ट्रीय सपत्ति का प्रत्येक व्यक्ति को धन सपन्न करने के लिये बंटवारा किया जाये, तारीफ़ कर सकता था। किंतु धन तो हमारे पास है ही नही। पुनर्वितरण करने का प्रश्न तो तब पैदा हो सकता है जब हमारे पास बटवारा करने के लिये काफ़ी धन हो। इस बात को हमे भूलना न चाहिये। अत. मै इस बात के लिये ख्वाहिशमद हू कि इस देश का हरेक वासी यह बात समझ ले कि उस का सब से पहला कर्तव्य बंटवारा किये जाने वाले धन का बढ़ाना है। और वह तभी ऐसा कर सकेगा जब कि वह इस समस्त कोष को बढ़ाने का पूरा पूरा प्रयत्न करे। महज बंटवारे से यह निधि बढ नही सकती है; इस लिये जिस बात की आवश्यकता है वह यह है कि हरेक चीज़ का अधिकाधिक उत्पादन हो।

हम जानते है कि अन्न की कमी की वजह से हमें आज कष्ट उठाना पड़ रहा है। नियन्त्रण और राशन की दुकानों के ज़रिये हम उसके बटवारे का प्रयत्न कर रहे है जो कुछ हमारे पास है और फल यह है कि हमारे यहां एसे कुछ लोग है जो दूसरों के मुक़ाबले में चोर बाज़ार से कुछ ज्यादा ख़रीद सकते है। जब सब के बांटने के लिये कोई वस्तु पूरी नही होती तो उस हालत में यह बात तो होती ही है। जब तक कि हमारे पास अधिक अन्न नही होता हम सब को सुखी नहीं बना सकते। जब तक कोई वस्तु इतनी पर्याप्त नही होती कि सब को समुचित मात्रा में बांटी जा सके तब तक हम केवल कमी को ही सब लोगों में बांट सकते है। इसलिये मै ने देश की जनता

से सर्वदा यह अपील की है कि वह अन्न का उत्पादन बढाये। अन्न का उत्पादन बिला किसी अधिक प्रयास के बढ़ाया जा सकता है, यदि हम इसकी ओर थोड़ा सा भी ध्यान दें। आज दूसरी सभा मे मै प्रातः काल यह कह रहा था कि इस बात का तखमीना लगाया गया है कि हमारे यहां अन्न की कितनी कमी है और पता चला है कि वह लगभग १० प्रतिशत है। मै यह नही समझता कि जहां आज किसान लोग दस मन पैदा कर रहे है वहां ११ मन पैदा नही कर सकते। यदि हम ऐसा करने लगे तो हमे विदेशो से अन्न मगाने की कोई जरूरत न रहेगी और हमें जितना आज मिल रहा है उतना ही अन्न विदेशों से खरीदे बिना मिलता रहेगा।

इसी प्रकार हमे यह भी पता है कि कपडा इस देश मे इतना कम क्यो हो गया है। वहां भी कुछ इसी प्रकार की समस्या है। जब कि सब के लिये काफी कपडा नही है तो नियन्त्रण का केवल यही नतीजा हो सकता है कि थोड़ी ही मात्रा मे हरेक को कपड़ा मिले। यह सम्भव है कि प्रशासन मे ऐसे दोष हो जिनके कारण किसी हद तक भ्रष्टाचार या चोरबाजारी होती है। पर आप इसी बात की अपेक्षा कर सकते है कि ऐसी हालतो में हरेक को कुछ मिले और किसी को भी बहुत न मिले। अतः देश को आज जिस बात की जरूरत है वह यह है कि उन सब चीजो की अधिक पैदावार के लिये प्रयास करे जिनकी हमें जरूरत है। हमें स्वराज्य मिल गया है और पिछले तीन या अधिक वर्षो में हम अपनी इच्छानुसार और अपने विचारो के अनुसार राजकाज चलाते रहे है। किन्तु दुर्भाग्यवश मुझे ऐसा लगता है कि हम सब ने स्वतन्त्रता के महत्व, प्रभाव और अर्थ को पूरी पूरी तरह नही समझा है। हमारी स्वतन्त्रता का एक फल यह होना चाहिये कि प्रत्येक के मन मे ऐसा उल्लास पैदा हो जो हम सब के जीवन को हर प्रकार से बेहतर बनाने के प्रयास मे व्यक्त हो। कुछ भी कारण क्यो न हो आज ऐसी बात सब तरफ नही दिखाई देती। बहुत प्रदेशो मे और बहुत लोगो में इस प्रकार की भावना फैली हुई मालूम पड़ती है कि मानों यह सब काम सरकार का ही है और जनता और अन्य सब लोगों को तो केवल हाथ पर हाथ रख कर बैठा रहना है और सरकार से यह अपेक्षा करनी है कि उनके लिये वह सब कुछ करे। मै नही समझता कि इस तरह का रुख सही है। क्योकि अन्ततोगत्वा सरकार तो जनता के प्रतिनिधि होने के अतिरिक्त और कुछ नही है और खास तौर से यह बात प्रजातन्त्रात्मक सरकार के बारे मे बिल्कुल ठीक है। यदि यह सचमुच मे जनता की प्रतिनिधि है तो इसे जनता की अच्छाइयों का ही प्रतिनिधित्व नही करना है बल्कि उसकी बुराइयों की भी वह प्रतिनिधि होगी ही। यदि जनता मे कमजोरियो की प्रधानता हो तो यह हो ही नही सकता कि उनकी झलक सरकार में भी न आये। यदि आज यह बात है कि हमारे प्रतिनिधि सर्वदा योग्य सिद्ध नही होते तो हमे इस बात को बहुत शान्तिपूर्वक सोचना चाहिये और यह देखना चाहिये कि उनकी कमजोरिया क्या वे ही कमजोरिया नही है जो हम में से प्रत्येक मे है। समस्या को सुलझाने का बहुत ही आसान तरीका लोगो को यह लगता है कि दूसरों पर दोष डाल दिया जाये और अपने को दोष से सर्वथा मुक्त मान लिया जाये। इस से तो सब समस्याये तुरन्त हल हो गई प्रतीत होती है क्यों कि जब हम यह सोचने लगते है कि दोष दूसरे का है हमारा नहीं है तो हमारे ऊपर फिर कोई बार रहता ही नहीं। किन्तु वास्तव में यह कोई हल नहीं है। हमको अपने दिल को टटोलना चाहिये और यह देखना चाहिये कि जो बात गलत हुई है उसके गलत होने में हमारी जिम्मेदारी कहां तक है और उस गलती में हमारा कितना हिस्सा है। यदि हम सचमुच में ईमानदार हों और अपना

दिल टटोल कर देखें तो हम को पता चलेगा कि इस प्रकार की गलती में हमारे में से हरेक का भाग कुछ नगण्य नही है और जब हम एक दफे इस बात को पहचान लेगे और जब हम यह समझ लेगे कि हमे हालत को दुरुस्त करना है तो हम अपने आप ही इस काम को शुरू कर देंगे। उत्तर भारत मे एक कहावत है कि मन्दिर मे दिया जलाने के लिये जाने से पहले अपने घर में ही दिया जलाओ। अतः हमे अपने मन को पहले ज्योतिर्मय करना है और तब मन्दिर या गिरजा या यहूदी उपासनाघर को जाकर प्रकाशित करने की बात सोचनी है। यदि हम ने ऐसा किया तो हम स्वतः ही मन्दिर के चारो तरफ प्रकाश कर चुके होगे और मन्दिर को फिर किसी दीप की ज़रूरत न रहेगी। क्योकि इस के चारो तरफ तो प्रकाश होगा ही और वह मन्दिर को भी प्रकाशित करने के लिये पर्याप्त होगा। किन्तु यदि हम मन्दिर मे ही दिये जलाने की बात सोचते रहे और अपने अन्तरतम की बात न सोचे तो वह ज्योति बडी धुधली होगी और चारों तरफ अन्धेरा बना रहेगा। मै कभी कभी यह सोचा करता हू कि क्या हम आज इसी अवस्था में नही है? अभी तक हमने अपनी स्वतन्त्रता के महत्व को भी पूरी तरह नही पहचाना है और हम अभी तक उसी मानसिक अवस्था मे है जब हम हर बात के लिये सरकार को दोषी ठहराया करते थे और अपने अन्दर दोष न टटोलते थे। सम्भवतः हमारे राजनैतिक विकास मे वह एक ज़रूरी मंजिल थी। किन्तु अब जब हमने स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है हमे वह आदत छोड देनी चाहिये और यह समझना चाहिये कि हमारी यह जिम्मेदारी है, हम मे से प्रत्येक की यह जिम्मेदारी है कि हम इस बात की कोशिश करे कि अच्छी से अच्छी जो बात इस देश मे हो सकती है वही यहा हो। अन्ततोगत्वा व्यक्ति ही तो समाज का मूल आधार है। व्यक्तियो के समूह के अतिरिक्त समाज और है ही क्या और जब तक इमारत की हर ईट ठीक ठीक नही रखी गयी हो और जब तक वह ईट मजबूत न हो तो आप यह आशा नही कर सकते कि सारी इमारत मजबूत होगी अतः हमे व्यक्ति को सुधारना है। यही कारण है कि हम को विभिन्न प्रकार के आदर्शो मे कुछ न कुछ मूलभूत अन्तर मिलता ही है। कुछ ऐसे लोग है जो यह सोचते है कि सारे समाज को दोषो से मुक्त करने के लिये व्यक्तियो को दोषो से मुक्त करना चाहिये। दूसरी ओर कुछ व्यक्ति और समूह है जो यह सोचते है कि समूह ही व्यक्ति को सही रख सकता है। मेरा अपना विचार है कि समूह व्यक्ति से बहुत कुछ विभिन्न नही हो सकता तथा किसी समूह का व्यक्ति को सही रास्ते पर रखने का प्रयास अवश्य असफल होता है। यह सही बात है कि समूह व्यक्ति से ऊचे दर्जे पर नही हो सकता। आखिरकार समूह मे नियम बनाने वाला कौन होगा और कौन समूह मे से व्यक्ति को यह बतायेगा कि क्या बात गलत है? सघर्ष, अन्ततः सघर्ष तो स्वाभाविक है। इस संघर्ष को दूर करने का एक ही रास्ता है और वह यह है कि व्यक्ति को सुधारा जाये जिससे कि समूहो में पारस्परिक सघर्ष न हो। महात्मा गाधी के सिद्धान्तो मे, जो व्यक्ति के सुधार को बड़ा महत्व देते है और उन सब सिद्धान्तो मे जो समाज पर अधिक बल देते है यह एक मूलभूत अन्तर है। मुझे आशा है कि देश के इस सजग विभाग मे जहा शिक्षा का इतना प्रसार हो गया है आप इन दोनो विचार प्रणालियो के अन्तर को पहचान लेगे और आप समझ लेगे कि अन्ततो-गत्वा समाज व्यक्तियो के अतिरिक्त और किसी तरह से नही बन सकता और इसमे व्यक्तियों के चरित्र, शील और आदर्शो से विभिन्न अपना कोई अन्य चरित्र, शील या आदर्श नही हो सकता। इसलिये ऊपर से यह व्यक्ति पर कोई बात नही लाद सकता; इसे तो व्यक्तियो के अनुकूल ही आदर्शों का निर्माण करना होता है और अन्ततोगत्वा हमे व्यक्ति पर ही ध्यान देना होता है

और उसी को सुधारना होता है । अब जब हमें स्वराज्य मिल गया है हमें अपने देश के प्रत्येक व्यक्ति को सुधारने का प्रयत्न करना चाहिये और व्यक्ति के जरिये ऐसे राज्य के बनाने की कोशिश करनी चाहिये जो हर दृष्टि से आदर्श राज्य हो ।

महात्मा जी अहिंसा पर बहुत जोर दिया करते थे । वास्तव में समाज केवल अहिंसा पर ही आधृत हो सकता है और उसी पर उसकी नीव हो सकती है । इस आशा से कि हिंसा के द्वारा हम हिंसा बन्द कर देंगे हिंसा करना लाभदायक नही है । हमारे यहा उत्तर मे एक कहावत है कि कीचड से कीचड नही धोयी जा सकती । कीचड़ को धोने के लिये तो शुद्ध जल की आवश्यकता पड़ती है । तभी आप इसको धोने मे सफल हो सकते है नही तो कीचड चिपकी रहेगी । इसी प्रकार हिंसा से हिंसा नही दबाई जा सकती । हिंसा से वास्तव मे छुटकारा पाने के लिये आपको हिंसा से बेहतर चीज की जरूरत होती है । कीचड को धोने के लिये आपको कीचड़ से अधिक उत्तम वस्तु की जरूरत पडती है । आपको यहा अहिंसा की जरूरत पडती है और यही बात महात्मा गांधी कहते थे । उन्होने इस बात को सहज ही पहचान लिया था कि भारतवर्ष जैसे देश के लिये जहा अनेक प्रकार के मतमतान्तर है, जहा अनेक भाषाए बोली जाती है वहां हमारे झगड़ो और समस्याओ का तब तक कोई अन्त न होगा जब तक कि हमारे दैनिक जीवन का आधारभूत तत्व अहिंसा नही बन जाती और तब तक हम उस मंजिल तक नही पहुंच सकेंगे जहां हम कह सके कि हम सुखी लोग है । यह बात हमारे लिये ही नही ठीक है वरन् संसार भर के लिये भी ठीक है । संसार के लिये यह इसलिये ठीक है क्योंकि भारत भी तो संसार के विराट् शरीर का सूक्ष्म स्वरूप है; जो कुछ संसार मे है वही छोटे पैमाने पर हमारे देश मे है । और यदि हम अहिंसा द्वारा ऐसी किसी चीज को पाने मे सफल हुए है जिसका कुछ वर्ष पूर्व किसी ने स्वप्न भी नही देखा था तो उसी अहिंसा द्वारा हम इस देश की भावी उन्नति करने मे समर्थ होंगे । अत जहा भी मेरे लिये यह बात सम्भव हुई है लोगों के दैनिक जीवन के लिये, उनके आपस मे एक दूसरे से व्यवहार के लिये और अन्य देशो से अपने देश के व्यवहार के लिये मै ने अहिंसा पर बल दिया है । ठीक है कभी कभी ऐसी परिस्थितिया होती है जब अपने विवेक के विरुद्ध भी हमे काम करने की मजबूरी होती है । यह बात समझ मे आ सकती है कि लोग इस प्रकार मजबूरी मे किये गये काम के बारे मे कोई खयाल न करे किन्तु यदि हम जान बूझ कर सही रास्ते से विचलित होते है तो हमारा ऐसा करना एक रोग के समान हो जाता है । हमें जिस बात की आवश्यकता है वह सचमुच मे अपने जीवन को अहिंसा द्वारा निर्मित करने का सही दिल से किया हुआ प्रयास है । यदि उसके बावजूद हमे इस रास्ते से इधर उधर हटना पड़े तो उसका अधिक महत्व नही होगा क्योंकि अन्त मे तो हम सही रास्ते पर आने में समर्थ हो ही जायेंगे । किन्तु यदि सीधे रास्ते से एक बार हम पूरी तरह अलग चले जाते है तो फिर भविष्य के लिये कोई आशा नही रहती । यह वह बात है जिसे, मै चाहता हू, कि जिनके हाथों मे सत्ता है वे सब लोग पहचान ले । ऐसा होने पर हमारी सब समस्याये दूर हो जायेगी । जिस प्रकार रात्रि के पश्चात् दिन आता है उसी प्रकार यह सब कठिनाइयां जिन का सामना हमे आज करना पड़ रहा है उसी समय दूर हो जायेगी जब हम यह बात पहचान लेंगे । खाने के मामले में भी किसी प्रकार के नियंत्रण की आवश्यकता तब न रहेगी जब कि बिना किसी दबाव के और खुशी से हमारे पास जो कुछ है उसे हम दूसरों के साथ बांटने के लिये तैयार होंगे । अहिंसा का यह

प्रभाव होता है। जब हम सब सचाई को पूरी तरह से पहचान लेंगे तब हमारे सामने कोई ऐसी समस्या नहीं रहेगी जिसका हम हल न कर सकते हों। अतः इस देश में यह आवश्यकता है f जो कुछ महात्मा गांधी ने कहा उसके प्रति हम समुचित ध्यान दें और केवल उनके नाम को लेकर ही सन्तुष्ट न हो जायें वरन् उस रास्ते पर भी अमल करें जो उन्होंने हमें दिखाया था। इस बात की हमें आवश्यकता है। मै सब भाइयों से यह आग्रह करके कहता हूं कि गांधी जी के सिद्धान्तों का अध्ययन करने से बेहतर और उनके क़दमों पर चलने से बेहतर हम और कोई काम नहीं कर सकते। देश का कोई आदमी भी यह दावा नहीं कर सकता कि वह यह बात पूरी तरह से कर सकता है। यदि ऐसा कोई करने के योग्य न हो तो मैं उसे दोष न दूंगा किन्तु जिस बात की आवश्यकता है वह इस तथ्य को पहचानना है और इस पथ पर चलने का हार्दिक प्रयास है। जहां वह किया गया वहीं सब बातें आसान हो जायेंगी। मै आशा करता हूं कि मैं ने आपको ज्यादा थका नहीं दिया है और जिस धैर्य से आपने मेरी बात सुनी है उसके लिये मै आपको धन्यवाद देता हूं।

इरनाकुलम में नागरिक अभिनन्दन

*इरनाकुलम में २९ मार्च, १९५१, को दरबार हाल में दिये गये नागरिक अभिनन्दन का उत्तर देते हुए राष्ट्रपति जी ने कहा—

मित्रो,

यह अभिनन्दन पत्र दे कर आप ने जो मेरा आदर किया है उस के लिये मैं आप को हार्दिक धन्यवाद देता हूं। पिछले चार पांच दिनों में जब से में यहां आया हूं मुझे प्रशंसा के बोझ से लाद दिया गया है। इरनाकुलम या इस राज्य में मैं प्रथम बार नहीं आया हूं किन्तु भारत के राष्ट्रपति का तो वास्तव में यहां प्रथम बार आना हुआ है। में जानता हूं कि हमारे विशाल देश में प्रति दिन पैदा होने वाली अनेक और जटिल समस्याओं में निरंतर लगे रहने से राष्ट्रपति की कितनी खराब हालत हो गई है। स्वतन्त्र भारत द्वारा निर्मित प्रथम संविधान आज कल लागू है। यह संविधान अभी १४ महीने ही व्यतीत हुए प्रवृत्त हुआ था। इस थोड़े समय में संविधान के विभिन्न उपबन्धों को अमल मे लाने की हम पूरी कोशिश करते रहे है। इस में अनेक अपूर्व बातें है। संसार के विभिन्न भागों में विभिन्न जातियों का जो अनुभव हुआ है उस सब पर ही यह आधृत है और मै आप से कह सकता हूं कि समस्त संसार के सब देशों के वर्तमान संविधानों से हम ने उन की बातें स्वतन्त्रतापूर्वक इस में अपना ली है। हम ने उन बातों को अपनी परिस्थितियों के अनुकूल बनाने की कोशिश की है। मै नहीं जानता कि हमें इस में कहां तक सफलता हुई है। यह बात तो समय ही बतायेगा। किन्तु उन्हें. हम ने अपनी जनता के लिये उपयोगी बनाने की कोशिश की है और यह कोई मामूली काम नहीं हुआ है। अपने विभिन्न उपबन्धों के कारण ही य, उतनी बडी कृति नही है जितनी कि यह इस लिये बड़ी है कि सारे देश की जनता की भरी पूरी इच्छा इस में मूर्तिमान हो गई है। हमारे यहां अनेक समुदाय है, जातियां हैं, पन्थ

---

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

और अनेक विभिन्न रूढ़ियां है और भाषायें है। अतः हमारे यहां एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से, एक समुदाय दूसरे समुदाय से और एक समूह दूसरे समूह से अनेक प्रकार बंटा हुआ है। किन्तु इस सब की विभिन्नता की तह में भारत में अपूर्व एकता भी है। इस समय मैं देश के लग-भग दक्षिणी छोर में हू। मै लग-भग उत्तर के सब से अन्तिम छोर वाले प्रदेश का हूं किन्तु मैं आप को यह बात यकीन दिला कर कहता हू कि भाषा और रूढ़ियों की विभिन्नताओं के बावजूद तथा कुछ सीमा तक खाने की विभिन्नता के बावजूद मुझे ऐसा नहीं लगता कि मैं आप लोगों से अलग हूं और मुझे विश्वास है कि आप में से जिन लोगों को भारत के उत्तरी प्रदेशों की यात्रा करने का अवसर मिला है उन में से अनेकों को उसी प्रकार की हृदय की और संस्कृति की एकता का अनुभव हुआ होगा जैसे अनुभव का कि मैं, जो उस विशाल देश के चतुर्दिग में घूम आया हूं, दावा करता हूं। इन सब विभिन्न तत्वों को संविधान द्वारा हमें एक शासन के अधीन लाना पड़ा है। और जैसा कि मै ने अभी कहा हमारी महान् सफलता यह थी कि देश के सब भागों के प्रतिनिधि एक साथ बैठें और उन्हों ने इस संविधान को बनाया। ऐसे अवसर भी आये जब पारस्पारिक मत विभेदों को दूर करना न्यूनाधिक असम्भव मालूम पड़ता था। किन्तु अन्ततोगत्वा बात ठीक बन गई और सब ऐसी बातों पर जिन के सम्बन्ध में आपस में मत विभेद था एक राय से निर्णय किया जा सका। हमारी यह महान सफलता थी और अब हमारे ऊपर यह भार है कि हम संविधान पर उसी भावना से अमल करें जिस भावना से कि यह ओतप्रोत है। एक ऐसे सुन्दर संविधान का लिख देना जो पढ़ने में निर्दोष लगे आसान बात है किन्तु यदि उसी संविधान पर ईमानदारी से और लगन से अमल न किया जाये तो वह वरदान के बजाय अभिशाप सिद्ध हो सकता है। हम ने पहला भाग पूरा कर लिया है। हमारे पास बहुत सुन्दर संविधान है। अब हमारे ऊपर यह भार है कि हम इस पर इस तरह से अमल करें कि वह उद्देश्य जो इस के निर्माताओं के मन में था, वह उद्देश्य जो इस संविधान की प्रथम कण्डिका में और बड़ी सुन्दर भाषा में भारत के उद्देश्य के रूप में उल्लिखित है, पूरा हो जाये।

आप जानते हैं कि इस संविधान के अधीन केवल वे ही प्रदेश नहीं सम्मिलित कर दिये गये है जो पहले अंग्रेज़ी प्रान्त थे वरन् इस संविधान के अधीन वे देशी प्रदेश भी कर दिये गये है जो पहले देशी रियासत कहे जाते थे। स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् पिछले तीन वर्षों में हमारी सफलताओं में से एक यह बड़ी सफलता रही है कि हम एक संविधान के अधीन, एक सर्वोपरि शासन के अधीन केवल प्रान्तों को ही नही वरन् देशी रियासतों को मिलाने में सफल हो गये हैं। जैसा मै ने अभी अगले दिन कहा था यह सफलता जनता की सफलता है किन्तु साथ ही यह सफलता हमें राजाओं की देशभक्ति, दूरदर्शिता, और राजधर्म-प्रियता के कारण भी मिली है। तथा सब ने ही मिल कर राजनैतिक क्षेत्र में इस एकता की स्थापना की है। मैं यह आशा करता हूं कि संविधान पर अमल करने के लिये भी वे इसी प्रकार आपस में मिल कर कार्य करेंगे जिससे कि जो उद्देश्य हमारे सामने है उसे पूरा करने के लिये हम समर्थ हो सके। वह उद्देश्य भी तो कोई छोटा मोटा नही है। वह है हमारे देश का सुख और सम्पन्नता।

दिन प्रति दिन हमारे सामने अनेक समस्यायें आती है और उन में से कुछ तो बहुत कठिन समस्यायें होती हैं किन्तु भगवान की अनुकम्पा से हम उन सब को हल करने में

सफल होंगे और अब तक हम अनेक कठिनाइयों को दूर करने में सफल हुए भी हैं। मेरे लिये यह आवश्यक नही है कि जनता के सामने जो आज अनेक कठिनाइया है उन का मैं यहां वर्णन करू । राजनैतिक कठिनाइयां रही है और न्याय और व्यवस्था सम्बन्धी कठिनाइयाँ रही हैं। हम इन कठिनाइयो को दूर करने में काफी सीमा तक सफल हुए हैं। आज हमारे सामने अत्यन्त कठिन अन्न की समस्या है; मै इस को बढा कर नही कहना चाहता। किन्तु इस की गम्भीरता को घटाने का प्रयास भी कुछ माने नही रखता। हम इस समस्या का मुकाबला करने की कोशिश कर रहे है किन्तु जैसा मै बहुधा कहता हूं सरकार चाहे कुछ भी करे सच बात तो यह है कि यह जनता का ही काम है कि वह इस स्थिति का सामना करे और इस समस्या को सुलझाये। यह ठीक है कि सरकार को अपना कर्तव्य निभाना है और आप यक़ीन रखें कि जो कुछ भी स्थिति को सुधारने के लिये किया जा सकता है वह कर रही है । हम बाहर से जितना अन्न आयात कर सकते है उतना आयात करने का प्रयास कर रहे है और अब के वर्ष में तो पहले से भी कही ज्यादा मात्रा में हम अन्न का आयात कर रहे है । किन्तु यह सब करने के बाद भी समस्या को सुलझाने का काम वास्तव में जनता का ही है। यह देश बड़ा विशाल देश है और प्रकृति ने हमे अत्यन्त उत्तम और उर्वरा भूमि दी है और साथ ही ऐसी आब हवा भी है जिस में हम ऐसी सब चीज़ें पैदा कर सकते हैं जैसी कि संसार के किसी अन्य देश में पैदा की जा सकती है। ऐसा कोई फल या अनाज नहीं है जिसे हम यहां पैदा न कर सकते हों। ऐसी आब हवा होने पर भी, इतनी वर्षा होने पर भी, इतनी उर्वरा भूमि होने पर भी यदि हम अपनी आवश्यकता-नुसार अन्न पैदा करने में समर्थ नही है तो यह बात विचारणीय है कि हमारी इस अस-मर्थता का क्या कारण है और क्यों यह बात है कि हमें अपनी जनता के पेटपालन के लिये विदेशों से अन्न मगाना पड़ता है। ज़रूर कही न कही कोई कमी है और हर ज़िम्मेदार नागरिक का यह धर्म है कि उस की खोज करे और उस का इलाज करे। मेरी अपनी भावना यह है—और यह जिन गांव वालों से मिलने का मुझे मौका मिलता है उन से मिलने पर मुझे जो तजुर्बा हुआ है उस पर आधृत है—कि यदि उन गांव वालों को सही रास्ता दिखाया जाये तो वे सफलताओं के बहुत ऊंचे शिखर तक पहुंच सकते है। यदि हमें आज अनाज की पर्याप्त मात्रा नही मिल रही है तो कही न कही ऐसी कोई बड़ी खामी है जिस की वजह से यह कमी हो रही है और यह सरकार का काम है, जनता का काम है, सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का काम है कि वे मिल कर सोचें और उस का कारण पता चलायें। मेरा विश्वास है कि हम ज्यादा अनाज पैदा कर सकते हैं । आखिरकार हमारे देश में अन्न की जो कमी है वह कुछ ज्यादा तो नही है । इस बात का अनुमान लगाया गया है कि यह कमी लग भग १० प्रतिशत है। मान लीजिये कि यह १५ प्रतिशत है तो भी यह ऐसा कोई कठिन काम नही है कि इस कमी को दूर न किया जा सके। खेती में थोड़ी और अधिक होशियारी से काम कर के, कुछ अधिक खाद का प्रयोग करके, कुछ अधिक खेती की देखभाल कर के मेरे विचार में यह बिल्कुल सम्भव है कि जहां हम अब १० मन पैदा करते हैं वहां उस के अलावा १ मन और पैदा करने लगें । इस बात से भी आंख नही मोड़नी चाहिये कि आजकल सरकार बड़ी बड़ी ऐसी योजनाओं पर विचार कर रही है जिन पर अमल करने से काफ़ी नई भूमि में खेती होने लगेगी और काफ़ी ऐसी भूमि

में सिचाई का प्रबन्ध होगा जहां आज कल सिंचाई का प्रबन्ध नही है। वास्तव में खेती की समस्या तो सिंचाई की ही समस्या है। मैं ने ऐसे प्रदेश देखे हैं और खास तौर से राजपूताना जैसी जगहों में. जो कि आजकल मरुभूमि गिनी जाती हैं वहां ऐसे प्रदेश देखे हैं कि यदि आप वहां काफ़ी गहरा कुंआ पानी देने के लिये खोद लें तो आप वहां फ़सल पैदा कर सकते हैं। अतः यह तो सिंचाई की ही समस्या है और मुझे विश्वास है कि जो नदी योजनायें आज निर्मित हो रही हैं अथवा जिन के बारे में अभी जांच ही कि मंज़िल है वे जब पूरी हो गयी होंगी तब अन्न के बारे में हमारी बढ़ती हुई जनसख्या के बावजूद कोई कठिनाई नही रहेगी। किन्तु जब तक यह नहीं होता तब तक भी तो हमें अपनी जनता का पेट भरना है और इस प्रयोजन के लिये बड़ी योजनाओं के काम में आने तक तो हमें हाथ पर हाथ रखे बैठा नहीं रहना चाहिये वरन् अपने वर्तमान कल पुरज़ों से और कुछ अधिक परिश्रम और होशियारी से हमें इस कमी को दूर कर लेना चाहिये। मै जानता हूं कि इन प्रदेशों में जहां आप को अन्न की कठिनाई हो रही है आप तपियोका की पैदावार बढ़ाने की कोशिश कर रहे है जिस से कि कम से कम चावल पर लोगों की निर्भरता कुछ कम हो जाये। मै आशा करता हूं कि जो प्रयोग आजकल किये जा रहे है वे सफल होंगे और लोग तपियोका को बहुत हद तक चावल के स्थान में काम में लाने लगेंगे। यदि यह प्रयोग यहां सफल हो गया तो देश के अन्य विभागों की खाद्यावस्था के सुधारने मे भी यह सहायक सिद्ध होगा। अतः मै भविष्य के बारे में कुछ निराशावादी नही हूं और हमारे सामने आज जो भी मुश्किलें है उनके बावजूद मुझे यह आशा है कि अन्ततोगत्वा परिस्थिति अच्छी हो जायेगी।

बहनो और भाइयो, जितना समय मुझे लेना चाहिये था उससे अधिक समय मैं पहले ही ले चुका हूं। संविधान को जनता को ही अमल में लाना है। संविधान के अधीन जब हम निर्वाचन करेंगे तब हम एक प्रकार से एक बड़ा प्रयोग शुरू करेंगे। चुनावों के बाद ही तो सारा संविधान अमल में आयेगा। यद्यपि मै राष्ट्रपति हू और राष्ट्रपति के सब अधिकार और उत्तरदायित्व मेरे अधिकार और उत्तरदायित्व हैं तो भी मै तो अस्थायी रूप से केवल जगह भरने के लिये हूं क्योंकि मै उस प्रकार निर्वाचित नही हुआ हूं जिस प्रकार की पूर्णरूपेण राष्ट्रपति निर्वाचित होगा। यह तो अगले नवम्बर और दिसम्बर में ही होगा। किन्तु ये चुनाव जब हों तब आप यह बात ध्यान में रखें कि आप एक बहुत बड़ा काम करने जा रहे ह। चुनावों का प्रबन्ध करना भी इतना बड़ा काम है जिसे किसी सरकार को अब तक नही करना पड़ा है। २१ वर्ष और उससे ऊपर की आयु वाले १७ या १८ करोड़ नरनारियों के मत लिये जाने है और निर्वाचन केन्द्रों तथा उनमें आने वाले निर्वाचकों की सख्या इतनी बड़ी है कि संसार के आज तक के इतिहास में जितने निर्वाचन हुए है उनमें उतनी नही थी। हमें यह आशा करनी चाहिये कि हम अपना पार्ट ठीक अदा करेंगे और अपना मत ईमानदारी से और सही तौर पर सारे देश की भलाई के लिये और सारी जनता की भलाई के लिये देंगे और ऐसा करने में किसी विशेष व्यक्ति की ही भलाई, किसी विशेष समुदाय, समूह या दल की ही भलाई से प्रभावित न होंगे। परमात्मा से मै प्रार्थना करता हूं कि हम अपने प्रतिनिधियों को ठीक तरह से चुन सकें और मै आशा करता हूं कि उन प्रतिनिधियों में ऐसी बुद्धि और शक्ति होगी कि वे देश के सब काम ठीक ठीक तरह से चलायेंगे। यदि हम इस बात में सफल हो गये तो हमारा संविधान भी

सफल सिद्ध होगा और यदि हम इसमें असफल हुए तो हमारा संविधान भी असफल सिद्ध होगा। किन्तु इसमें मुझे शंका नहीं है कि हम असफल नहीं होंगे। परमात्मा हमारी सहायता करेगा। जो आदर आपने मेरा किया है उसके लिये मैं आप सब को धन्यवाद देता हूं।

फेडरेशन आफ इन्डियन चैम्बर आफ़ कामर्स के भवन का शिलान्यास

ता० २–८–५१ को ६–३० बजे दिन मे फेडरेशन आफ़ इण्डियन चैम्बर आफ़ कामर्स के भवन का शिलान्यास करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा––

श्री तुलसीदास किलाचन्द, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि आपने मुझे यह मौका दिया कि मैं इस समारोह में शरीक हो सकू। खुशी इस लिये है कि मै जानता हूं कि आप लोग ऐसी जमात के आदमी है जिस जमात से देश को पिछले दिनों में बहुत मदद मिली है और आइन्दा और भी मदद मिलने की आशा रक्खी जाती है। कोई भी आदमी जो पिछले तीस वर्षों के हमारे स्वतन्त्रता संग्राम के साथ किसी तरह से सम्बद्ध रहा है उसको मालूम है कि हर मौक़े पर जब जब हमारी तरफ़ से आप लोगों से सहायता मांगी गयी तो आपने हर तरह से सहायता की। मुझे वह दिन याद है जिस वक़्त हम लोग अग्रेज़ी कपड़े के बहिष्कार की बात सोच रहे थे और जिस वक़्त रुई के बाज़ार को बन्द करने की बात चल रही थी और चूकि चन्द दिनों के लिये मै उस समय जेल से बाहर था मुझे याद है कि किस उत्साह और ख़ुशी से आप लोग उस बहिष्कार के काम में शरीक हुए और हर तरह से उस वक़्त आन्दोलन को सफल बनाने मे आपने मदद की। इसी तरह से और और मौक़ों पर जब ज़रूरत हुई कि आप अपनी मदद दे, तब अपनी राय से, सलाह मशविरे से और दूसरी तरह से मदद देकर आपने उस काम में हाथ बंटाया। इसलिये पिछला इतिहास तो अच्छा है ही, आइन्दा का जो हमारा भविष्य है उसके बारे में भी यह आशा रक्खी जाती है कि जब देश की पुकार होगी और किसी बात की जरूरत होगी तो आप किसी तरह से पीछे नही रहेंगे।

आप जानते है कि आजकल एक नाज़ुक वक़्त बीत रहा है, सिर्फ़ हमारे देश के लिये ही नहीं, सभी देशों के लिये यह नाज़ुक वक़्त है। और इस वक़्त ख़ास करके हमारे देश में अन्न की कमी, कपड़े की कमी और दूसरी चीज़ों की महंगाई की वजह से लोगों में घबराहट है। इनको दूर करना एक ऐसा काम है कि गवर्नमेंट सिर्फ़ अपनी ही शक्ति से इसे नही कर सकती है। हर भारत-वासी से आशा रक्खी जाती है कि वह जिस तरह से हो मुसीबत को दूर करने में मदद पहुंचाये। मुझे आशा है कि आप भी अपनी अपनी बुद्धि लगाकर, अब तक जो आपको अनुभव हुआ है उसे लगाकर अपनी तरफ़ से मदद करेंगे। मैं जानता हू कि गवर्नमेंट की नीति कुछ ऐसी है कि किसी किसी बात में आपकी नीति से नही मिलती है। यह भी हो सकता है कि आपकी राय में और गवर्नमेंट की राय में फ़र्क हो। यह सब होते हुये भी सबसे बड़ी बात यह है कि इस देश को ज़िन्दा रहना है, इस देश के लोगो को रहना है और सरकार को भी रहना है। इस चीज़ को सामने रख कर और जो मतभेद हो उसे भी सामने रख कर हर तरह से मदद देना सबका धर्म है। तभी मुसीबत दूर हो सकेगी।

आपके इस शुभ काम में हाथ बटाने में मुझे इसलिये और भी प्रसन्नता है कि आपका फ़ेड-रेशन, जिसका इतने दिन काम करने पर भी अभी तक अपना मकान या खास जगह नही थी, अब अपने लिये अपनी इमारत बनाने का प्रबन्ध कर रहा है। दिल्ली आज सारे भारतवर्ष का केन्द्र हो रही है और यहा इस तरह का इन्तज़ाम होना आवश्यक था। इसलिये आपने यहां अपना भवन बनाने की बात ठीक ही सोची है। मुझे आशा है कि इस भवन के बन जाने पर आपके काम में स्थिरता आ जायेगी और आपका काम और भी तेज़ी से आगे बढेगा और हर तरह की सहायता देश को आपसे मिलती रहेगी। धन्यवाद।

मद्रास का बाल मन्दिर

*बाल मन्दिर मद्रास मे शुक्रवार ६ अप्रैल, १९५१ को राष्ट्रपति जी ने बोलते हुए कहा—

महामहिम राज्यपाल साहब, श्री कामराज नादर, बहनो और भाइयो,

इस संस्था में मै आ सका इसकी मुझे बड़ी प्रसन्नता है। यह संस्था कम उम्र की है किन्तु इसका भविष्य उज्ज्वल है और मुझे इसमें कोई शका नही है कि कालोपरान्त यह एक महान् और उपयोगी सस्था बन जायेगी।

परित्यक्त बालकों की समस्या पर हमारे देश में कुछ विशिष्ट ध्यान नही दिया गया है और मुझे यह वात यक़ीनी तौर पर मालूम नही है कि क्या हमारे देश के अन्य या बहुत से स्थानों में इस प्रकार की अन्य संस्थायें है या नही। फल यह होता है कि बहुत से परित्यक्त बालक या तो क्षुधा से मर जाते है और या बड़ी अवांछनीय रीति से जीवित रहते है। वाल मन्दिर के सस्थापकों ने ऐसी सस्था स्थापित करके बड़ा शुभ काम किया है और जिस रीति से आप कार्य कर रहे है उससे प्रकट है कि आपको जनता का समर्थन प्राप्त है। मुझे प्रसन्नता है कि सरकार ने आपको यह भूमि दी है और जनता आपको भवननिधि मे मुक्त हृदय से दान दे रही है और यह निधि वराबर वढ रही है। मुझे आशा है कि जब तक मेरे लिये दूसरी बार मद्रास आना सम्भव होगा तब तक सस्था के पास अपने ही भवन मे आज से कही ज्यादा स्थान होगा और जनता से भी इसे और अधिक मात्रा में समर्थन प्राप्त हो रहा होगा जिस समर्थन की कि यह बहुत अच्छी तरह से अधिकारिणी है।

मद्रास में नागरिक अभिनन्दन

*मद्रास में ६ अप्रैल, १९५१ को दिये गये नागरिक अभिनन्दन पत्र के उत्तर में राष्ट्रपति ने कहा—

महामहिम राज्यपाल साहब, नगराध्यक्ष महोदय, उपनगराध्यक्ष महोदय, वरिष्ठ सदस्य, निगम के सदस्यो, बहनो और भाइयो,

यह अभिनन्दन पत्र दे कर आपने जो मेरा आदर किया है उसके लिये मै आपको धन्यवाद देता हू। आज प्रातः से ही जब मैं यहां आया तो मुझे आप सब का स्नेह और सद्कामनायें

---

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

मिलती रही है। जिन सड़कों पर हो कर मुझे गुज़रना पड़ा है वे दोनों ओर ऐसे लोगों से खचाखच भरी हुई थीं जो भारत के राष्ट्रपति के प्रति अपना आदर प्रकट कर रहे थे। मुझ में इतना मिथ्याभिमान नहीं है कि मैं यह मान लूं कि यह सब मेरे व्यक्तित्व के लिये किया गया है। इस देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति से और इस देश के लोगों को ऐसा दर्जा मिल जाने से जिस में वे अपने में से एक को इस विशाल देश के राज्य के प्रधान के रूप में चुन सकते हैं आपको जो हर्ष हुआ है उसी की यह वास्तव में अभिव्यक्ति है।

मैं ने आप के अभिनन्दन पत्र को बड़े ध्यान से सुना। इस में आपने उन कठिनाइयों का वर्णन किया है जो इस नगर के निगम को भुगतनी पड़ रही है। मेरा विचार है कि इस प्रकार की समस्याएं सारे देश में ही है। हमारे नगर इस तरह बढ़ रहे हैं कि वे पहचान में नहीं आते। बड़े शहर तो तिगने बढ़ गये हैं। और कुछ कुछ तो चौगने बढ़ गये हैं। छोटी नगरियां भी पिछले पन्द्रह या बीस वर्ष में अपने पुराने कलेवर की दुगनी या तिगनी हो गई हैं। इन सब नगरियों और नगरों में खास जन संख्या के अनुकूल ही अपनी अपनी सुविधायें थीं। अब जब कि उन की जन संख्या पहले से दुगनी या चौगुनी हो गई है तो स्वभावतः वहां नई समस्यायें पैदा हो गई हैं। किन्तु यह समस्यायें ऐसे समय में पैदा हो रही है जब हमारी आर्थिक स्थिति कुछ ज्यादा अच्छी नहीं है। अतः आप लोगों को धैर्य से काम लेना है और अपनी शक्ति को और अपने साधनों को अक्षुण्ण बनाये रखना है और उन्हें जनता के यथासम्भाव्य सर्वोत्तम लाभ के लिये प्रयोग करना है। अतः यह जान कर मुझे खुशी है कि आपने बस्तियों को साफ करने का काम अपने हाथ में लिया है और उस दिशा में आप ने काफ़ी प्रगति भी की है। मुझे आशा है कि यह काम जारी रहेगा और कुछ समय पश्चात् आप यह कहने की स्थिति में होंगे कि मद्रास ऐसे असुन्दर स्थानों से सर्वथा मुक्त जिन्हें कि बस्ती के नाम से पुकारा जाता है।

मुझे यक़ीन है कि आमदनी के साधनों के पुनर्बटंन करने की आपकी मांग पर सम्बन्धित अधिकारी पूरी तरह से विचार करेंगे। भारत सरकार ने स्वयं जो समिति नियुक्त की है उस की रिपोर्ट पर स्वभावतः ही वह पूरा विचार करेगी। आमदनी के ज़रियों के पुनर्बटंन करते समय उन्हें राज्यों की मांगों पर भी विचार करना है। भारत सरकार के सामने जो समस्यायें है उन में से वास्तव में एक समस्या राज्यों और अपने बीच में आमदनी के ज़रियों के बंटवारे की समस्या है। जैसा कि आप जानते है आज कल हम उन नियमों के अनुसार काम चला रहे है जो कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पहले बने थे और जब तक कि अच्छा समय नहीं आता या जब तक कि दूसरा प्रबन्ध नहीं किया जाता तब तक पुराना प्रबन्ध ही चालू रहेगा। मेरा अनुमान है कि यही बात नागरिक संस्थाओं के लिये भी लागू है। किन्तु मुझे आशा है कि इस बारे में कुछ किया जायगा जिस से कि विभिन्न संस्थायें और विभाग जो जनता की सेवा करते हैं उन्हे पर्याप्त आमदनी हो जाये।

इस प्रश्न के अतिरिक्त जिस का सामना आज कल निगम को करना पड़ता है हमें यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिये कि हमारी स्वतन्त्रता को लग भग अभी तीन ही वर्ष हुए हैं। और हर नवजात पौधे के समान हमें इस की भी होशियारी और मेहनत से रक्षा और लाल़न पालन करना है। कुछ बातों में हमारा इतिहास अच्छा नही रहा है। यह ठीक है कि ऊपरी विभिन्न-

ताओं के बावजूद हमारे देश में एक प्रकार की एकता अर्थात् हमारी सांस्कृतिक एकता बराबर रही है। हर प्रकार के आघातों को सह कर भी यह सांस्कृतिक एकता बची रही है। किन्तु देश के अधिकतर भाग में जैसी राजनैतिक एकता आज है वैसी यहां पहले कभी न थी। यद्यपि बंटवारे के पश्चात् उत्तर पश्चिम और उत्तर पूर्व में हमारे दो पंख कट गये हैं तो भी एक छत्र के अधीन जितना भारत किसी समय भी हमारे इतिहास में था उतने से कहीं अधिक भारत आज है। हिन्दुओं, बुद्धों, मूसलमानों और अंग्रेजों के युगमें हमारे भारत देश मे बड़े बड़े साम्राज्य हुए हैं। किन्तु जितना क्षेत्र और जितनी जन संख्या आज भारत के गणतन्त्र में है उतना क्षेत्र और उतनी जन संख्या उन साम्राज्यों के अधीन नही थी। जिस संविधान को हम ने इतने ध्यान और इतने परिश्रम से बनाया है वह भारत के उसी भाग में लागू नहीं है जो कि पहले भारत सरकार अधिनियम सन् ३५ के अधीन था वरन् उस के नीचे भारत का वह भी भाग है जो पहले देशी राजाओं के शासन में था। यह काम राजाओं की देशभक्ति, नेताओं की राजधर्म-निपुणता और दूरदर्शिता के कारण और जनता के कारण भी जिसने इस प्रकार की एकता के लिये प्रयास किया हुआ है। अतः जहां तक प्रशासनीय और राजनैतिक मामलों का सम्बन्ध है हमारे यहां ऐसी एकता हो गई है जैसी कि पहले कभी नहीं थी।

किन्तु जैसा मैं ने कहा है कुछ मामलों में हमारा इतिहास अच्छा नहीं रहा है। भूतकाल में साम्राज्य थे किन्तु साथ ही ऐसी प्रवृत्ति भी थी—और खास तौर से दूर स्थित प्रदेशों की यह प्रवृति थी—कि केन्द्र से पृथक हो जायें और यद्यपि ऐसे साम्राज्य थे और ऐसे चक्रवर्ती थे जिन का हुक्म सारे देश में चलता था तो भी ऐसी कोई सरकार कभी नहीं थी जिस का समस्त देश पर अधिकार हो। आज हमारे यहां एक शासन है और एक प्रकार का विधान है जिस के अधीन सारा देश है। अतः हम को उन घटनाओं के पुनर्घटित होने से अपना बचाव करना है जो भूतकाल में हुई थीं। केन्द्र से पृथक होने की इस पृथकत्व की प्रवृत्ति को हमें किसी न किसी तरह से रोकना है। यद्यपि विभिन्न राज्य आज बहुत कुछ स्वतन्त्र रूपेण शासित हो रहे है तथापि हम को समस्त देश को एक संविधान के अधीन रखना है। अतः मेरी यह आशा है कि हर प्रकार की ऐसी प्रवृत्ति को जो आज दिखाई देती है या जो आज चाहे नहीं दिखाई देती और आगे चल कर दिखाई देगी उसे हमें रोकना है। इस प्रयोजन के लिये हमें देश की सर्वसाधारण जनता के हृदय में एकता के महत्व को बैठा देना है। कुछ मामलों में आज संसार बहुत छोटा हो गया है। विज्ञान की प्रगति के कारण आज दूरी का अस्तित्व मिट गया है। अब दिन प्रति दिन छोटे राज्यों के लिये बना रहना अत्यधिक कठिन होता जा रहा है। हम सब को यह आशा है कि वह समय आयेगा जब राज्यों के पारस्परिक संघर्ष खत्म हो जायेंगे और दुनिया एक हो जायेगी।

हमें इस देश में अपना व्यक्तित्व बनाये रखना है। यह हम तभी कर सकते हैं जब हम समस्त देश को एक रखें। तभी हम वह शक्ति प्रदर्शित कर सकेंगे जो स्वतन्त्रता बनाये रखने के लिये आवश्यक है; तभी हम इस को ऐसी स्थिति में रख सकेंगे जिस में यह अपनी रक्षा कर सकता है, जनता की भी रक्षा कर सकता है और वक्त पड़ने पर दूसरे देशों की भी मदद कर सकता है। अतः यह आवश्यक है कि इस महान राजनैतिक एकता के महत्व को हम पहिचानें और जहां तक सम्भव हो इस को बनाये रखें। मैं इस बात के लिये भी निश्चित हूं कि समस्त देश में लोग

केवल इस एकता और जो स्वतन्त्रता हम ने प्राप्त की है उस के महत्व को ही न पहिचानें वरन् इस स्वतन्त्रता के बनाये रखने, रक्षा करने और बचाने के अपने कर्तव्य को भी पहिचान लें। हरेक भारतीय का आज यह परम् धर्म है ।

अपनी स्वतन्त्रता के पिछले तीन वर्षों में नि.सन्देह हमारे सामने अनेक महान् समस्यायें आई हैं। जो सरकारें चाहें केन्द्र में या राज्यों में अर्थात् समस्त देश में कार्य कर रही हैं उन के पक्ष में यह कहा जा सकता है कि उन अनेक मुश्किलों को वह पार कर सकी है जिन में पड़ कर कि वे आसानी से टूट भी जा सकती थीं। हमारे सामने अनेक प्रकार के अर्थात् राजनैतिक, साम्प्रदायिक, सामाजिक और इन सब से किसी प्रकार न कम होने वाली वैत्तिक और आर्थिक अनेक कठिनाइयां आई हैं। आज भी अन्न के बारे में हमारे सामने ऐसी स्थिति है जो साधारण नहीं कही जा सकती और जो कुछ बातों में अत्यन्त मुश्किल है । किन्तु हमें अपने में विश्वास रखना चाहिये और यह आशा रखनी चाहिये कि जिस प्रकार हम ने भूतकाल में मुश्किलों पर विजय पायी थी उसी प्रकार अब भी हम इन पर विजय पा सकेंगे ।

मुझे मालूम है कि अन्न की समस्या को हल करने के लिये सरकार पूरी तरह कोशिश कर रही है । विदेशों से हम बहुत बड़ी मात्रा में अन्न मंगा रहे हैं । इस देश में भी हम अन्न की पैदावार बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं किन्तु सरकार जो कुछ करे सरकार स्वयं समस्या को हल नहीं कर सकती। साधारण जनता को यह समस्या अपनी समस्या समझ कर ही हाथ में लेनी चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति को यह मानना चाहिये कि यह उस की अपनी समस्या है और यह मान कर इस के हल करने में अपना अंशदान करना चाहिये। इसी भावना से कार्य करने पर हम इस महान संकट से पार पा सकते हैं। मेरी आशा है कि जो मानसिक, आध्यात्मिक और चारित्रिक साधन तथा जो बौद्धिक साधन जनता के पास है उन से वह जो समस्या आज हमारे सामने है उस पर विजय पाने में समर्थ होगी। मुझे मालूम है कि आप के राज्य में एक के बाद एक कई खराब फसलें हुई हैं और स्वभावतः आप की कठिनाइयां बहुत भारी हैं। मैं देश के अन्य ऐसे भाग का हूं जो स्वयं भी इन ऐसी ही कठिनाइयों के चंगुल में फंसा हुआ है यदि मैं बात बढ़ा कर नहीं कह रहा तो सम्भवतः मैं यह कह सकता हूं कि देश के किसी अन्य भाग से उस की हालत ज्यादा खराब है। किन्तु फिर भी हमें आशा है कि जो मदद सरकार देगी उस से तथा जो मदद जनता अपने आप ही अपने लिये कर सकेगी उस से हम इस संकट को पार कर जायेंगे । आशा और दृढ़ता से हमें इन मुश्किलों का मुकाबला करने के लिये तैयार रहना चाहिये । तभी हम सफल हो सकेंगे ।

आज हमारे सामने कुछ और भी समस्यायें हैं। आज कोई नहीं कह सकता कि कल क्या होने वाला है। संसार आज एक कगार के छोर पर है और एक भी ग़लत कदम बड़ी भयावह स्थिति पैदा कर सकता है। हम को मालूम नहीं कि क्या होने वाला है। यह सम्भव है कि हम इस स्थिति से बच कर साफ निकल जायें और यह भी उतना ही सम्भव है हम इस गड्ढे में गिर जायें। जह ांनक सम्भव हो हमारी कोशिश तो यही होनी चाहिये कि युद्ध का क्षेत्र और न फैले । यह ठीक है कि जो साधन और शक्ति अन्य राष्ट्रों के पास है वह हमारे

पास नहीं है; साथ ही जो प्रभाव दूसरे राष्ट्र सम्भवत: रखते हैं वह प्रभाव भी नये राष्ट्र और इतनी कम उम्र होने के कारण हम नहीं रखते । किन्तु जो कुछ भी थोड़ा बहुत हमारे हाथ में है हम ने इस प्रयोजन से संसार के सामने रख दिया है कि इस प्रकार की विपत्ति को घटित होने से रोका जाये । अत: चाहे इस प्रश्न पर हम अपनी आर्थिक कठिनाइयों की दृष्टि से विचार करें और चाहे अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति की दृष्टि से विचार करें हमारे इस देश में हमें किसी भी संकट का मुकाबला करने के लिये तैयार रहना है ।

हमारी आर्थिक स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं है । हमें अभी ऐसा बजट रखना पड़ा है जिस के कारण हमें नये कर लगाने पड़े हैं । राज्यों में भी बजट में कमी रही है । इस स्थिति का हमें मुकाबला करना पड़ रहा है किन्तु इन सब कठिनाइयों के बावजूद यह कहा जा सकता है कि हम ने वे सामाजिक उद्देश्य नहीं छोड़ दिये हैं जिन्हें कि हम ने अपने सामने रखा था । सामाजिक सुधार के कार्य को आगे बढ़ाने की हम पूरी कोशिश करते रहे हैं । मुझे आशा है कि हम ऐसा आगे भी करते रहेंगे और जनता को जो भी त्याग करने पड़ेंगे उन के लिये वह तैयार रहेगी जिस से कि समय पा कर जब हमारी वर्तमान कठिनाइयां दूर हो गईं होंगी तब हम संसार से यह कह सकेंगे कि हमें मुसीबत के बाद मुसीबत में हो कर गुज़रना पड़ा पर परमात्मा की कृपा से हम सब से बच कर साफ़ निकल गये । हमें यह बात न भूलनी चाहिये कि नये राष्ट्र का जब जन्म होता है तो उसे आरम्भ में अनेक कठिनाइयों का मुकाबला करना पड़ता है । हम पर भी ऐसी ही कठिनाइयां पड़ रही हैं । जब हम इन कठिनाइयों के पार पहुंच गये होंगे तब मुझे आशा है कि हमारा राष्ट्र शक्तिशाली, स्वस्थ और सम्पन्न राष्ट्र बन गया होगा । आपने मेरे प्रति जो अनुग्रह दिखाया है और मेरा जो आदर किया है उसके लिये मैं आप को धन्यवाद देता हूं ।

मद्रास में व्यापार मंडल द्वारा अभिनन्दन

*मद्रास में चेम्बर आफ कामर्स द्वारा ७ अप्रेल, १९५१ को दिये गये संयुक्त अभिनन्दन पत्र के उत्तर म राष्ट्रपतिजी ने कहा—

महामहिम राज्यपाल साहब, चेम्बर आफ कामर्स के सदस्यो, बहनो और भाइयो,

यह अभिनन्दन पत्र दे कर आपने जो मेरा स्वागत किया है उस के लिये मैं आप को धन्यवाद देता हूं । आप ऐसी जाति के प्रतिनिधि है जिसे देश के औद्योगिक विकास में बड़ा काम करना है । अगले दिन जब दिल्ली में चेम्बर आफ कामर्स के संघ के सामने भारत के प्रधान मन्त्री ने भाषण किया तो उस में उन्होंने कुछ ऐसी आधारभूत बातों की ओर ध्यान आकर्षित किया जिन्हें सर्वदा ही ध्यान में रखना आवश्यक है । हम सब यह जानते है कि आज के भारत में उत्पादन अर्थात् अन्न के उत्पादन, औद्योगिक वस्तुओं के उत्पादन, उपभोग में आने वाली वस्तुओं के उत्पादन और हर प्रकार की उस वस्तु के उत्पादन की, जिस की कि हमारे अस्तित्व

*अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

बनाये रखने के लिये आवश्यकता है, आवश्यकता से बडी और कोई आवश्यकता नहो है । वितरण का प्रश्न तभी पैदा हो सकता है जब उत्पादन पर्याप्त मात्रा में हो । अतः उन सब लोगों को जो उद्योगों में लगे हुए हैं इस बात को समझ लेना चाहिये कि जब पर्याप्त उत्पादन होगा तभी उन को भी उस में से उचित हिस्सा मिल सकेगा ।

यह सन्तोष की बात है कि जनता के सब भागों में यह जानकारी बढ़ रही है कि आज संसार की वर्तमान स्थितियों में केवल पैसा बनाने और फ़ायदा उठाने की भावना से ही काम नहीं चल सकता तथा जो लोग चाहे औद्योगिकों के रूप में चाहे पूंजीपतियों के रूप में चाहे श्रमिकों के रूप में उत्पादन में लगे हुए हे उन्हें केवल अपने सीमित हितों का ही ध्यान नहीं करना है वरन् देश के हितों का भी ध्यान रखना है । मुझे इस में शंका नहीं है कि आप जिस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं वह बहुत ही होशियार अनुभवी और दूरदर्शी वर्ग है ; और वह इस कारण यह जानता है कि अब समय आ गया है जब इस देश के सब लोगों को अपने वर्गीय हितों के अतिरिक्त इस देश को महान् बनाने के लिये भी काम में जुट जाना है । देश की आज यह अवस्था है । हम अभी ऐसे युद्ध से पार हुए है जिस का भारत पर और अन्य देशों पर बड़ा विनाशकारी प्रभाव हुआ है । तत्पश्चात् देश का विभाजन हुआ जिस के कारण शोचनीय घटनायें घटी । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी हमारे सामने समस्याओं की, ऐसी समस्याओं की जिन को हल करना मामूली बात नहीं थी, कोई कमी नहीं है । हम उन को हल करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं । किन्तु देश की वर्तमान परिस्थितियों में यह आवयश्क है कि सब वर्ग, सब समूह, सब समुदाय अपने अपने दायित्वों को पहचानें । जब कि इस प्रकार की भावना लोगों के मन मे हो गई होगी तभी आप यह आशा कर सकते है कि इन समस्याओं के हल करने के लिये अपना अपना हरेक उत्तरदायित्व पूरा करेगा । जैसा कि मै ने कहा है आप ऐसे वर्ग के है जो अत्यन्त ही चतुर और अनुभवी है और इस लिये सब लोगों से कहीं ज्यादा आप के मन में यह भावना होनी चाहिये तथा मुझे इस में शंका नही है कि आपके मन में ऐसी भावना है भी । अतः यह आप के लिये आवश्यक है कि आप ऐसी नीति बरतें जो वर्तमान परिस्थितियो के अनुकल है । जब मै यह कहता हूं तब में इस बात से अपरिचित नही हूं कि चीज़ों और स्थितियों के सम्बन्ध में आप का अपना दृष्टिकोण है जो गवर्नमेन्ट के दृष्टिकोण से सर्वदा मेल नही खाता । ब्यौरे की बातों के सम्बन्ध में चाहे एकमत हो अथवा न हो इस मूलभूत सचाई के बारे में दो राय नही हो सकती कि भारत की सब को सेवा करनी है, भारत को बचाना है, भारत की जनता की सेवा करनी है, और भारत की जनता को बचाना है । यदि वे बरबाद हो गये तो हम सब बरबाद हो जायेंगे, चाहे फिर हम किसी एक वर्ग के हों, किसी एक समुदाय के हों, अथवा किसी दूसरे वर्ग या समुदाय के हों ।

अत्यन्त खेद के साथ जिस बात को मै ने पिछले कुछ वर्षो में देखा है वह यह है कि हम लोगों के चरित्र में कुछ दिशाओं में गिरावट आ गई ह और सम्भवतः यह गिरावट लड़ाई के कारण आयी है । यह भी हो सकता है कि हम में अपनी कमज़ोरियां है और हमारी उन कमजोरियों के कारण यह गिरावट आयी है किन्तु जो लोग प्रशासन में या व्यापार में या अन्य तरह के किसी

सार्वजनिक कार्य में लगे हुए हैं उन सब को ही यह अनुभव हुआ है कि हमारे चारित्रिक स्तर में कुछ खराबी और गिरावट आ गई है। हमारी वर्तमान कठिनाइयों में से बहुत काफ़ी सम्भवतः इसी गिरावट के कारण है। मैं यह नहीं कहता कि चरित्र की दृष्टि से हम दूसरे लोगों से गिरे हुए हैं किन्तु हमें तो इस बात की आवश्यकता है कि हमारे यहां दैनिक जीवन में, व्यापारिक सम्बन्धों में, राजनैतिक तथा सामाजिक प्रकार के सम्बन्धों में बड़े ऊंचे दर्जे की, बड़े ऊंचे स्तर की, आध्यात्मिकता हो।

मैं ने इस गिरावट को देखा है और मैं जनता के ध्यान को इस ओर आकृष्ट करता हूं। उदाहरणार्थ यदि हम अपने औद्योगिक झगड़ों का विश्लेषण करें तो हमें यह पता चलेगा कि हरेक ही एक तरह की झपटाझपटी में लगा हुआ है। मैं केवल औद्योगिकों और पूंजी-पतियों की ही ओर संकेत नहीं कर रहा हूं वरन् मैं यह कहता हूं कि सब ही आज कल इस प्रयास में लगे हुए हैं कि जितना भी धन बनाया जा सके बना लिया जाये। यदि कोई व्यक्ति उद्योगपति है तो वह आज की स्थिति से वैसा सारा लाभ उठाना चाहता है जो वह सम्भवतः इस से उठा सकता है। यदि आप चोरबाज़ारी के सवाल की जांच करें तो आप को पता चलेगा कि किसी खास समूह या वर्ग को ही उसके लिये दोषी नहीं ठहराया जा सकता। मैं ने कई बार यह कहा है कि इस के लिये केवल व्यापारियों को ही दोषी नही ठहराया जा सकता वरन् इस के लिये उत्पादन करने वाले भी उतने ही दोषी हैं। हमारे यहां लाखों ही लोग उत्पादन करने वाले हैं। और यदि वे अपनी पैदावार को चोर बाज़ार में न भेजें तो चोरबाज़ारी हो ही नही सकती। यदि उपभोक्ता चोरबाज़ार से खरीदें नहीं तो भी चोरबाज़ारी नहीं हो सकती। इसलिये व्यापारी ही नही वरन् पैदा करने वाला भी और उपभोक्ता भी चोरबाज़ार के लिये किसी न किसी हद तक ज़िम्मेदार है। मेरा कहना यह है कि यह सब हमारे चारित्रिक स्तर में गिरावट के कारण हैं; हमारी परिस्थिति के और अपने कर्तव्यों के यथोचित रूप से न समझने के कारण है। अतः मैं आप लोगों से यह प्रस्ताव करता हूं कि इन समस्याओं के बारे में आप अपनी ओर से चारित्रिक स्तर को ऊपर उठाने की पूरी पूरी कोशिश करें जिस से कि दूसरे लोग भी आप के उदाहरण के अनुसार चले। मैं ने और लोगों से भी ऐसा ही करने को कहा है और आप से भी ऐसा ही करने को कहने के अतिरिक्त मैं और कोई बेहतर बात नहीं कर सकता।

जहां तक कि उन बातों का सवाल है जिन का आप ने अपने अभिनन्दन पत्र में ज़िक्र किया है मैं केवल यही कह सकता हूं कि उन सब बातों पर सरकार पूरा पूरा ध्यान देगी।

साधारण निर्वाचनों सम्बन्धी विधेयक के संशोधन के सवाल का जहां तक सम्बन्ध है मैं वर्तमान परिस्थिति से ठीक ठीक तरह से परिचित नहीं हूं। किन्तु जैसा कि आपने कहा है आप ने सरकार के सामने यह बात रखी है और मुझे यक़ीन है कि सरकार उस पर पूरा पूरा ध्यान देगी। यह ऐसी बात है जो सर्वथा सरकार के हाथ में न हो वरन् इस में संसद् का भी हाथ है और मुझे यक़ीन है कि संसद् इस के सब पहलुओं को ध्यान में रख कर इस पर विचार करेगी।

आपने अपने अभिनन्दन पत्र में यह ठीक ही कहा है कि आप के महामहिम राज्यपाल महोदय और इस राज्य की सरकार यहां की दिन प्रति दिन की घटनाओं की मुझे पूर्ण जानकारी देती रही है । यदि हम कुछ और अधिक नही कर सके है तो इस का कारण यह नहीं है कि यहां से हमें जानकारी प्राप्त नही हुई है अथवा यहां की सरकार ने भारत सरकार पर यथाशक्ति दबाव नही डाला है। यह ऐसी स्थिति है जिस में हमारे लिये और कुछ करना सम्भव है ही नही। हमें इस बात के बताये जाने की आवश्यकता नही है कि हमें और अधिक अन्न विदेशों से मंगाना चाहिये । सच बात तो यह है कि भारत सरकार ने इस वर्ष उससे कहीं अधिक अन्न विदेशों से आयात करने की योजना की है जितना कि हम ने पहले कभी भी आयात किया था। हम इस वक्त इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि हमें जहां से जो कुछ भी अन्न मिले उसे हम मंगा लें। मै नही जानता कि इस समय बर्मा में सही स्थिति क्या है। मेरा विश्वास है कि यदि बर्मा में चावल प्राप्य है तो हमारी सरकार उस को वहां से मंगाने में कमी नही करेगी ।

में ने कुछ समय हुआ यह कहा था कि और अनाजों की अपेक्षा चावल बहुत मंहगा हो गया है। यही कारण है कि जिस से सरकार और अनाजों को मंगाने की कोशिश कर रही है क्योंकि आखिरकार करोड़ों लोगों का पेट तो भरना ही है। अगर आप चावल ही खरीदने की ज़िद् में रहे तो सम्भवतः अन्य अनाजों के मंगाने में जितना आपको देना पड़ता है उस से कही अधिक आप को पैसा चावल मंगाने के लिये देना पड़ेगा। इसीलिये हम दूसरे अनाजों को मंगाने की कोशिश कर रहे है। आप लोग चावल खाने के अभ्यस्त है। और मैं भी चावल खाने वाले प्रदेश का ही हूं। जहां तक चावल का प्रश्न है हम दोनों एक ही नाव में है। किन्तु दुर्भाग्यवश सब बाते तो हमारे मन की हो नहीं सकतीं। बहुत वर्षों तक हमें इस प्रकार की असुविधा बर्दाश्त करनी पड़ेगी जैसी कि अब बर्दाश्त करनी पड़ रही है जब दूसरे अनाज हमें दिये जा रहे है जिन के खाने का हमे और आप को अभ्यास नहीं है। मै यही आशा कर सकता हूं कि हम देश के अन्दर ही अधिकाधिक चावल पैदा कर सकेंगे जिस से कि हमें दूसरे देशों पर निर्भर न रहना पडे ।

भारत सरकार की अपनी अलग योजना है और हर राज्य अधिकाधिक उत्पादन की इस योजना को पूरा करने का प्रयास कर रहा है । हमारी यह आशा है कि जब ये बड़ी नदी योजनायें पूरी हो गई होंगी तो अन्न के सम्बन्ध मे हम पूर्णतया आत्मनिर्भर हो गये होंगे। किन्तु इस मे समय लगेगा। तब तक के लिये मेरी यह धारणा है कि हमारे यहा अन्न की कमी इतनी नही है कि हम उसे साधारण रीतियों से पूरा ही न कर सकें। आखिरकार दस प्रतिशत से तो अधिक यह कमी है नही और इस का अर्थ यह है कि यदि दस मन की जगह हम ग्यारह मन पैदा करने लगें तो यह कमी दूर हो जायेगी। यह अतिरिक्त एक मन पैदा करना कोई बडी मुश्किल बात तो होनी नही चाहिये। कुछ थोडे अधिक खाद से, कुछ थोड़ी अच्छी जुताई से, और कुछ थोड़ी अधिक सिंचाई के लिये पानी से सम्भवतः यह बात की जा सकती है। सरकार की फिलहाल योजना यही है कि इस रीति से इस कमी को पूरा किया जाये जिस से कि जब तक इन बड़ी योजनाओं को पूरा करने का काम चल रहा है तब तक हमें अपनी वर्तमान आवश्यकताओं के लिये हाथ पर हाथ रखे बैठा न रहना पड़े। हमारी यह योजना है और हम इस को पूरा करने का प्रयास

कर रहे है। किन्तु इस वर्ष हमें कुछ प्राकृतिक दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ा है और इन प्राकृतिक दुर्घटनाओं के ही कारण बहुत कुछ मौजूदा अन्न की कमी है। अब जब कि हम आधा साल व्यतीत करचुके हैं हमे यह आशा करनी चाहिये कि अगले छः महीने भी, किसी न किसी तरह निकल जायेंगे और उस के बाद अच्छे दिन फिर लौट आयेंगे। इन छः महीनों में परिस्थिति का मुकाबला करने के लिये सरकार हर प्रकार का प्रबन्ध कर रही है किन्तु सरकार जो कुछ करे यह तो जनता का ही काम होगा कि वह सकट काल से पार होने के लिये कमर कस ले। यह उन का काम है कि अपने स्थान मे और अपने साधनों के अन्दर ऐसे ज़रिये निकाले जिन से कि वे जिस तरह से भी हो सकें परिस्थिति का मुकाबला कर सके। सरकार से जो कुछ होगा वह तो उसे करेगी ही। मैं आप को यह यकीन दिलाता हूं कि कोई ऐसा दिन नही जाता कि जब मन्त्रिमण्डल हर घटे परिस्थिति पर पुनः विचार नहीं करता। उन्होंने तो इस समस्या को संभालने के लिये एक विशेष समिति भी नियुक्त कर रखी है।

आपने अपने अभिनन्दन पत्र में और कुछ बातों का भी जिक्र किया है जिन के बारे में इस समय कुछ कहना मैं आवश्यक नही समझता किन्तु मै यह आश्वासन दिला सकता हूं कि औद्योगिक विकास का प्रश्न सरकार की योजनाओं में सब से आगे रखा जा रहा है। यदि सरकार को आवश्यक पूजी, यन्त्र और कर्मचारी मिल जायें तो वह बड़ी से बड़ी योजना को हाथ मे लेने मे न हिचकिचायेगी। सच तो यह है कि पिछले दो वर्षो मे हम ने करों मे इस प्रकार की तबदीली कर दी है जिस से कि और अधिक पूजी हाथ में आ सके। किन्तु जिस हद तक सरकार की इस बारे मे अपेक्षा थी सरकार की उतनी अपेक्षा पूरी नही हुई। कारण कुछ भी क्यों न हो आप यह नही कह सकते कि करों की दिशा इस तरह नही बदल दी गई है जिस से कि अधिकाधिक पूंजी उद्योग धन्धों में लगे।। इस वर्ष हमें कुछ अतिरिक्त कर लगाने पड़े हैं किन्तु यह अतिरिक्त कर तो सर्वथा दूसरे प्रकार के है। जिन लोगों के पास पूजी है उन के लिये मैदान साफ़ है कि वे अपनी पूंजी को लेकर आगे बढ़ें और देश के औद्योगीकरण में सहायता करें। इस विषय में मै और कुछ कहना नही चाहता। क्यों कि यह सरकारी नीति सम्वन्धी ऐसे विषय है जिन के बारे में मेरे से कही अधिक अधिकृत रूप मे मन्त्रीगण कुछ कह सकते है। किन्तु मै समझता हूं कि मैंने भी उन्ही के विचारो को यहां व्यक्त कर दिया है और मुझे यक़ीन है कि यह मंडल इस बात को मान लेगा कि इस समय सरकार की कोई ऐसी नीति नही है जो उस नीति के खिलाफ हो जिसे आप चाहते है कि सरकार अपनाये। उस ने एक बार से अधिक अपनी नीति स्पष्ट शब्दों में व्यक्त कर दी है और यदि इस सम्बन्ध मे किसी प्रकार की शंकायें बच रही हैं तो सरकार से इस बारे में बात चीत कर के उन्हें दूर किया जा सकता है। हम अपने औद्योगीकरण और अधिकाधिक उत्पादन के लिये हर प्रकार की सहायता चाहते है और मुझे यक़ीन है कि मेरी यह अपील कि देश की भलाई के लिये आप अपना अपना अंशदान करें व्यर्थ न जायेगी क्योंकि आखिरकार इस देश के कल्याण में तो ही आप का कल्याण है और आप के कल्याण को देश के कल्याण से किसी प्रकार भी तो अलग नहीं किया जा सकता। इस अभिनन्दन पत्र के लिये आप को मै फिर धन्यवाद देता हूं।

मद्रास में श्री जवाहर लाल नेहरू के चित्र का अनावरण

*राजाजी हाल मद्रास में भारत के प्रधान मन्त्री माननीय श्री जवाहरलाल नेहरू के चित्र का शनिवार, ७ अप्रैल १९५१ को अनावरण करने के अवसर पर राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम राज्यपाल साहब, श्री कुमारस्वामी राजा, बहनो और भाइयो,

पडित नेहरू के सम्बन्ध में कुछ कहना मेरे लिये कठिन है। मेरा उन के साथ जो घनिष्ठ और निजी सम्बन्ध है उस के कारण यह कठिनाई उतनी पैदा नही होती जितनी कि यह इस विषय की व्यापकता के कारण पैदा होती है। जवाहर लाल नेहरू के बारे में कुछ कहना भारतवर्ष के पिछले तीस या उस से भी अधिक वर्षों के इतिहास को बताना है। और यह इतिहास भी ऐसा है जिस के बारे में मुझे यह शका नही है कि वह कालान्तर में सहस्त्रो पृष्ठों में लिखा जायेगा। अतः चन्द मिन्टों में इस विषय पर समुचित रूप से कुछ कहना अत्यन्त कठिन है। तब भी इस बारे में कुछ विचार किया जाता है तो यही लगता है कि पंडित जवाहरलाल नेहरू महान् पिता के महान पुत्र हैं।

अपने युग में पंडित मोती लाल नेहरू कई दृष्टियों से अत्यन्त महान् व्यक्ति थे। वकील के नाते वे महान् थे और देशभक्त के नाते वे महान् थे। जब देश की पुकार उन के कानों में पड़ी तो उन्होंने सब कुछ स्वाहा कर दिया और महात्मा गांधी द्वारा प्रारम्भ किये गये महान् आन्दोलन में वह सम्मिलित हो गये। जब तक वे थे वे कांग्रेस के एक महान् नेता थे किन्तु उन की महानता यह भी थी कि उन्हों ने अपने से भी महान् पुत्र देश को दिया। पडित मोतीलाल नेहरू जानते थे कि वे देश को ऐसा पुत्र दे रहे थे जो उन से भी बड़ा सिद्ध होगा। जब लाहौर काग्रेस में पंडित जवाहरलाल नेहरू अध्यक्ष पद को संभालने वाले थे तब पंडित मोतीलाल नेहरू को, जो उस से पहले वर्ष में काग्रेस अधिवेशन के सभापति रह चुके थे, पंडित जवाहरलाल नेहरू के हाथ मे काग्रेस की बागडोर पकड़ानी थी। ऐसा करते समय उन्हों ने फारसी का एक पद पढ़ा जिस का आशय यह है कि जो काम बाप न कर सका उसे बेटा पूरा करता है। इन शब्दों के साथ उन्होंने कांग्रेस की बागडोर अपने पुत्र के हाथ मे थमा दी। उन की यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई क्योंकि कई वर्षों के उपरान्त पंडित जवाहर लाल नेहरू उस महान प्रयास में सफल हुए जो देश की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये लगभग अर्द्ध शताब्दी से चल रहा था।

संघर्ष के इस युग में जवाहरलाल ने बड़ा प्रमुख भाग लिया है। वह प्रमुख भाग ही नहीं किन्तु ऐसा भाग भी रहा है जो हर संकट के युग में और हर ऐसे समय जब कांग्रेस द्वारा बड़े महत्वपूर्ण और प्रभावी निर्णय लिये जाने थे निर्णायक था। जब अन्त में हम स्वतन्त्रता प्राप्त करने में सफल हुए तो उन्ही को भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री के रूप में राज्यनायक बनाया गया। तब से आप जानते हे कि जो अनेक कठिनाइयां स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हम पर पड़ी है उन सब का मुक़ाबला वे बड़ी बहादुरी से करते रहे है। सरकार का कोई ऐसा विभाग

---

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

नही है जिससे वे परिचित नहीं हैं। केन्द्र में कोई मन्त्रालय ऐसा बड़ा निर्णय नही करता जिस में उन का हाथ न होता हो। मै यह भी कह सकता हूं कि देश भर में मन्त्रिमंडलों द्वारा लिये जाने वाला कोई भी ऐसा बड़ा निर्णय नही है जिस पर उन का प्रभाव न हो। हो सकता है कि यह प्रभाव दिखाई न देता हो; किन्तु हर हालत मे उस प्रभाव से वे लोग तो परिचित हैं ही जिन्हों ने उन निर्णयों को किया है। इन पिछले वर्षों में वे इतना भारी और महान् भार वहन करते रहे है कि कभी कभी तो इस बात का आश्चर्य होने लगता है कि उन के लिये ऐसा करना क्यों कर सम्भव है। किन्तु परमात्मा ने उन्हे बड़ा अच्छा स्वास्थ्य, और शारीरिक चुस्ती तथा २५ या ३० वर्ष के युवक की शक्ति प्रदान की है। आप उन्हें साधारण जनों से उसी सहज ढंग से मिलते जुलते देखते है जिस प्रकार कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में संसार की महान्तम विभूतियों में वे मिलते जुलते है। उन के व्याख्यानों और लेखों से यह भली भांति प्रकट होता है कि उन के कितने उच्च विचार है, कितनी उच्च भावनायें है, कितने स्वर्णिम स्वप्न है।

जैसा मै ने कहा है उन की सब सेवाओं का वर्णन करना बहुत कठिन है। जिन अनेक बातों से उन का सम्पर्क रहा है उन से आप भली भांति परिचित है और मुझे यक़ीन है कि यदि मै यह कहूं कि जब इस युग का इतिहास लिखने का समय आयेगा तब उन का नाम यदि वह किसी के भी नाम के बाद दूसरा नाम होगा तो वह केवल महात्मा गांधी के नाम के बाद ही दूसरा होगा तो मैं किसी अतिश्योक्ति का दोषी नहीं होऊंगा। यह ऐसी बात है जिस के लिये किसी भी व्यक्ति को गर्व हो सकता है। यह बात अकारण नहीं थी कि महात्मा गांधी ने उन को अपना उत्तराधिकारी निश्चित किया था। वह नेहरू की महानता को पहिचानते थे। वह यह जानते थे कि यदि वह काम जो वह स्वयं अधूरा छोड़े जा रहे थे पूरा होना है तो उस का उत्तरदायित्व उन की मृत्यु के बाद जवाहर लाल जी पर होना चाहिये। इस समय उन्हों ने यह यश पैदा कर लिया है कि वह संसार के महान्तम राजधर्म-निपुणों में एक हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में उन्हों ने इस नये और नौ जवान देश का दर्जा इतना ऊंचा कर दिया है जैसा कि अन्य देशों को अनेक वर्षो के प्रयास के बाद मिलता है और यह यश उन्हों ने किसी प्रकार की अवसरवादिता पर चल कर नही अर्जित किया है और न ऐसी बातों की हिमायत कर के अर्जित किया है जो सब के खुश करने के लिये हों वरन् ऐसे पथ पर और ऐसे कार्यक्रम पर अविचल रह कर, जिसे कि उन्हों ने अपने मन में इस देश के लिये ठीक समझ कर निर्धारित किया है, उन्होंने यह यश कमाया है। वह कार्यक्रम सब दृष्टियों से ऐसा कार्यक्रम है जो इस देश के लिये सर्वोत्तम है और चूकि उन्हों ने इस देश की गरिमा, गौरव और आदर को बनाये रखा है इस लिये वे इस देश के सब लोगों से और अन्य देशों और विदेशियों द्वारा भी आदृत हैं। हम यही आशा करते है कि उन का स्वास्थ्य उतना ही अच्छा बना रहेगा जितना कि वह आज है जिस से कि भविष्य में वह उस से भी अधिक सेवा कर सके जितनी कि वह भूत काल में कर सके है। आखिर-कार हम तो स्वतन्त्रता की देहरी पर ही है। हमने अभी ही तो वह शक्ति प्राप्त की है जो हमें समृद्ध और सुखी होने के लिये समर्थ कर सकती है। हम अभी तक देश को उतना सम्पन्न और सुखी बनाने में सफल नहीं हुए है जितना कि हम उसे बनाना चाहते हैं। यही ऐसा समय है

जब हमें अत्यन्त उच्च प्रकार की रचनात्मक योग्यता और अत्यन्त ऊंचे दर्जे के नेतृत्व की आवश्यकता है। हमें जवाहरलाल में वैसी रचनात्मक योग्यता और ऊंचे दर्जे की नेतृत्वशक्ति दिखाई पड़ती है। उन में वह स्वार्थत्याग की स्पष्ट भावना है जो सब प्रकार की बाधाओं पर केवल इसी लिये विजय नहीं पा लेती क्योंकि हरेक उन से सहमत है वरन् इसलिये भी क्योंकि हरेक को यह विश्वास रहता है कि जब वह कोई बात कहते है तो वह बात उस के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकती जिसे कि वह सर्वोत्तम समझते है। उन के यह सब गुण हमारी निधि हैं। हमारे देश मे ऐसे अनेक लोग है जो उन के विचारों के सामने अपने मत को छोड़ने के लिये तैयार रहते हैं। क्योंकि उनका मन स्फटिक के समान निर्मल है, उन का अनुभव विस्तृत है, और क्योंकि वे लोग समझते है कि उनका ज्ञान और अनुभव ऐसा है कि सम्भावना यही है कि नेहरू जी ठीक हों और उन का अपना मत गलत हो। यह बात हमेशा ही तब होती है जब कि कोई व्यक्ति जननायक हो जाता है। चूंकि नेता शब्द के सर्वोत्तम अर्थो में वे नेता है इस लिये हमारे देश मे लाखो नर नारी है जो न केवल उन के पीछे ही चलने के लिये प्रस्तुत है वरन् ऐसे और भी त्याग करने के लिये तत्पर है जो देश के हित के लिये उन से करने को कहा जाता है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने हमें आन्दोलन के युग मे पथ दिखाया और आज वह हमें पुनर्निमाण के युग मे पथ दिखा रहे है। हम सब को चाहिये कि हम यह आशा करे और भगवान से यह प्रार्थना करे कि वे उन्हे स्वास्थ्य, शक्ति और दीर्घ-आयु प्रदान करे जिस से कि वे इस महान् कार्य को भी उतनी ही सफलता से पूरा करे जितनी सफलता से कि उन्होंने उस पिछले काम को अर्थात् भारत की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के कार्य को जो उन्हों ने अपने हाथ मे लिया था पूरा किया।

तिरुकुरल गवेषणा का उद्घाटन

*मद्रास विश्वविद्यालय के भवन में तिरुकुरल गवेषणा का उद्घाटन करते समय शनिवार, ७ अप्रैल सन् १९५१ को राष्ट्रपति ने कहा--

महामहिम राज्यपाल साहब, श्री अविनाशलिंगम चेटियर, बहनो और भाइयो,

आज इस सन्ध्या के समारोह में भाग लेना मैं अपना सौभाग्य समझता हूं। आप अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति ठीक ही गर्वभावना रखते हैं। अनेक शताब्दियो से आपकी भाषा चली आ रही है और देश के इस भाग में तथा जहां भी आप के लोग गये है वहां बाहर भी आपने इस को बनाये रखा है। अतः यह उचित ही है कि आप समस्त देश की सामान्य संस्कृति में अपना अंश दान करने की बात आज सोच रहे है। यह कोई नयी बात नही है क्योंकि यदि तत्वतः दृष्टि से देखा जाये तो भारत की संस्कृति ऐसी सम्मिश्रित संस्कृति है जिस के निर्माण मे देश के विभिन्न भागों का हाथ रहा है। जो विभिन्नताएं हमें दिखाई देती है उनके साथ साथ हमने युग युगान्तर में एक सांस्कृतिक एकता और समानता पैदा कर ली है। यह ऐसी महान् बात है जिसे कि हमें सर्वदा ही गर्व सहित बनाये रखना है।

---

*अंग्रेज़ी से हिन्दी मे अनुवाद

इस देश में ऐसा प्रयास कभी नहीं हुआ कि देश के अन्दर या उसके बाहर दूसरे लोगों पर किसी प्रकार की बात बलात् लादी जाये। इतिहास में ऐसा कहीं वर्णित नहीं है कि भारत के लोगों ने किसी दूसरे देश पर आक्रमण किया हो। देश के अन्दर भी हर वर्ग को और हर भाग को पूर्ण स्वतन्त्रता से अपना पूरा विकास करने का अवसर प्रदान किया गया। फल यह हुआ है कि हमारे देश में अनेक समृद्ध भाषाएं हैं जिनका अपना समृद्ध साहित्य है और जिनमें ऐसा रत्नभण्डार भरा पड़ा है जिसका मूल्य लगाया ही नहीं जा सकता। इसी प्रकार हमारे समस्त देश में अनेक रूढ़ियां प्रचलित है और उन सब को ही मान्य ठहराया गया है।

आज जब हम भावी भारत का निर्माण करने जा रहे है यह उचित ही है कि आप भी उस पुर्ननिमाण के कार्य मे अपना पूरा हाथ बंटाने के लिये तत्पर और कटिबद्ध हों। यह आवश्यक है कि इस देश की विभिन्न भाषाएं जो यहां बोली जाती है और जिनका अपना साहित्य पूर्ण है वह यथासम्भव पूर्णतया विकसित हों और उन में आधुनिकतम साहित्य की अभिवृद्धि हो। जब मै आधुनिकतम साहित्य की बात कहता हूं तो मेरा आशय विदेशी साहित्य से नही है; मेरा आशय यही है कि वह इतना सच्चा और महान् हो कि एक ही पीढी तक चलने के बजाय वह उसी प्रकार युग युगान्तर तक चलता रहे जिस प्रकार कि यह कुरल बना रहा है। वास्तव में यह आवश्यक है कि सब भाषाओं की अभिवृद्धि हो क्योंकि बिना ऐसा हुए भारत वैसा नहीं बन सकता जैसा कि हम उसे देखना चाहते है। किन्तु साथ ही हमें ऐसे माध्यम की भी आवश्यकता है जो भारत के उत्तर वालों को दक्षिण वालों से और भारत के पूरब के लोगों को पश्चिम वालों से उसी प्रकार पत्र-व्यवहार करने के लिये समर्थ करे और एक दूसरे की बात को उसी प्रकार समझने में सहायता दे जिस प्रकार इस प्रयोजन की पूर्ति भूतकाल में संस्कृत करती थी। आजकल हमें इस प्रयोजन के लिये, किन्तु इसी सीमित प्रयोजन के लिये, कुछ और माध्यम की आवश्यकता है। यह ठीक है कि प्रत्येक राज्य और अपनी विशिष्ट संस्कृति और भाषा रखनेवाला प्रत्येक प्रदेश पूर्णतया विकसित हो। इसके साथ यह आवश्यकता और भी है कि हम सब यह महसूस करें कि इन विभिन्नताओं के बावजूद हम सब एक है, चाहे फिर हम उत्तर के रहनेवाले हों या दक्षिण के, पूरब के रहनेवाले हों या पश्चिम के।

मुझे इस बात में कोई शका नही है कि तामिल भाषा और साहित्य की अभिवृद्धि करने और उसको समृद्ध बनाने के आपके जो प्रयास है उसमें आप लोगों को न केवल तामिल लोगों की ही सहायता मिलेगी वरन् सारे देश के सद्विचारवान लोगों की भी सहायता मिलेगी, क्योंकि सभी तो इससे लाभ उठाना चाहते है। जिस प्रकार कि आप हम लोगों को राजनैतिक और सामाजिक कार्यकर्ता और प्रशासक दे रहे है उसी प्रकार हम चाहते हैं कि आप हमें ऐसे साहित्यक दें जो केवल उन्ही लोगों को अनुप्राणित न करें जो तामिल भाषा बोलते और समझते हैं किन्तु उन लोगों को भी करें जो तामिल भाषा को समझते नहीं है किन्तु उन लोगों की कृतियों से लाभ अवश्य उठाना चाहते है। यह काम अच्छे ग्रन्थों के अनुवाद द्वारा किया जा सकता है। यह ठीक है यह काम बहुत बड़ा है। मुझे इस बात का हर्ष है कि न केवल सरकार ही वरन् गैर सरकारी संस्थाएं भी इस प्रकार के सम्मिश्रण को पैदा कर रही हैं जैसा कि हम चाहते हैं कि अन्त में हो जाये।

किसी प्रसिद्ध साहित्यक ग्रन्थ के संबन्ध में जब कोई आधुनिक युग में गवेषणा करता है तो ऐसे प्रश्नों को कि लेखक कहां पैदा हुआ और उसकी शब्दव्यंजना और वाक्य रचना व्याकरण के निश्चित नियमों के अनुकूल है या नहीं काफ़ी प्रमुखता दी जाती है। फल यह होता है कि लेखक की कृति की अपेक्षा लेखक की जानकारी हासिल करने के लिये अधिक समय लगाना पड़ता है। किन्तु आखिरकार आज लेखक का तो इतना महत्व नही है जितना कि उसकी कृति का होना चाहिये। हम उत्तरवासी इस बात से तो किसी तरह के घाटे में नहीं है कि हमें ठीक तरह से यह मालूम नहीं है कि तुलसीदास का जन्मस्थान कौनसा है। आप गवेषणा करनेवाले लोगों से मै यही चाहता हूं कि इस महान् कृति अर्थात् कुरल की सच्ची शिक्षाओं के प्रचार में आप सच्ची सहायता करें और लेखक के शब्दों या उसके व्यक्तित्व के विश्लेषण पर उतना बल न दें। मुझे इस बात में शंका नही है कि इसके विभिन्न पाठों और विभिन्न संस्करणों और इसकी विभिन्न टीकाओं को तथा इस महान् लेखक के शब्दों के जितने भाष्य किये गये हैं उन सब को विद्वान लोग एकत्रित करेंगे। हमें अपने अतीत की अनेक महाविभूतियों की जन्मतिथि और कार्यभूमि के बारे में कुछ ज्ञात नही किन्तु फिर भी उनका जीवन इस देश की जनता के लिये लाखों के जीवन में रम गया है। इस बात के बावजूद कि कुरल के लेखक के जीवन की घटनाओं के सम्बन्ध में हम नही जानते शताब्दियों से यह कुरल देश के लाखों करोड़ों आदमियों के जीवन में बिधा हुआ है। कुरल प्रकाशन की सफलता के लिये मेरी सद्कामना है और मुझे आशा है कि उसे सभी की सहायता मिलेगी और सभी से प्रोत्साहन मिलेगा।

सेवा सदन, अडयार

*सेवा समाजम् के सेवा सदन या डेस्टिटयूट होम, अडयार, मद्रास में ता० ७ अप्रैल सन् १९५१ को भाषण देते हुए राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम राज्यपाल साहब, महामहिम राजन, बहनो और भाइयो,

इस संस्था के संस्थापकों और कार्यकर्ताओं को मै उस सफलता के लिये बधाई देना चाहता हूं जो उन्हे उस काम के विभिन्न क्षेत्रों में मिली है जो कि उन्होंने अपने हाथ में लिया था। हम भारतवासियों को सामाजिक सेवा की भारी पैमाने पर और उसके व्यापकतम अर्थ में आवश्यकता है। हमारे यहां समस्याओं की कमी नही है, काम की भी कमी नहीं है पर जरूरत इस बात की है कि सामाजिक सेवा करने वाले कार्यकर्ताओं का एक वर्ग हो जो सेवा भावना से इस काम मे लग जाये। यह बात बड़े संतोष की है कि इस प्रदेश में आप की यह संस्था है जो लगभग २५ से कुछ अधिक वर्षों से इस प्रकार काम यहां करती रही है। इस उत्सव में भाग लेने के लिये जब मुझ से पहली बार कहा गया तो मैं ने इस आदर को सहर्ष स्वीकार कर लिया क्योंकि मुझे इस म महान् कामों की ऐसी संभाव्यतायें नज़र आयीं जो कि भविष्य मे वास्तविकता में परिणित हो जायेंगी। अब जब कि हमें स्वतन्त्रता मिल गई है यह साधारण प्रवृत्ति पायी जाती है कि सब कामों की ज़िम्मेदारी सरकार पर रख दी जाये। यहां तक कि कभी कभी तो यह प्रवृत्ति भी देखी जाती है कि जो काम वास्तव

*अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

में ग़ैर सरकारी संस्थाओं द्वारा भी किये जा सकते है उनको भी सरकार के कंधे पर डाल दिया जाये। मेरा अपना विचार है कि ग़ैर सरकारी संस्थाओं का और ख़ास तौर से उन का, जो सामाजिक सेवा के लिये ही चलायी जाती है, हर देश में और हमारे देश में, जहां कि इतना काम अभी करने को बाक़ी है, कही अधिक अपना विशिष्ट स्थान है।

हम चाहे शिक्षा समस्या के बारे में विचार करें चाहे लोगों के स्वास्थ्य के बारे में या पिछड़ी हुई और दलित जातियों के लोगों के अथवा तथाकथित अछूतो के सुधार की समस्या पर विचार करें अथवा जिन्हे आदिमजातियां कहा जाता है उन लोगों की समस्याओं पर विचार करें, अथवा जो क्षुधाग्रस्त बालक है उनकी समस्या पर विचार करे हमें इन सब में वह काम दिखाई पडता है जो हमे अभी करना है और जिसको अंशतः सफलतापूर्वक करने के लिये हमें इन उद्देश्यो से लगन रखनेवाले अनेक सच्चे कार्यकर्ताओ की आवश्यकता है। राजनीति के तो अनेक पारितोषिक है और कुछ नही तो कम से कम अख़बारों में तो मोटे मोटे शीर्षक या तारीफ निकल ही जाती है। इस प्रकार का इनाम सामाजिक कार्य में नही मिलता है। किन्तु इसमे जो इनाम मिलता है वह तो बिल्कुल दूसरे प्रकार का है। इस में जो पारितोषिक मिलता है वह वही संतोष है जो कार्यकता को अपने काम मे होता है। और मेरे विचार से तो यह अच्छे से अच्छा ऐसा पारितोषिक है जो किसी भी ऐसे शख्स को दिया जा सकता है जिसकी यह भावना है कि उसने कोई अच्छा काम किया है और उसे अच्छी तरह किया है। इन संस्थाओ में इसी भावना के अनुसार सेवा की जानी चाहिये। आज मुझे इस बात का हर्ष है कि आपकी संस्था में ऐसे कई कार्यकर्ता है जो इसी भावना से कार्य कर रहे है।

मै ने यह बात कहीं पढ़ी कि आपके यहां सवैतनिक कर्मचारी नही है और अधिकतर काम अवैतनिक कार्यकर्ताओं द्वारा ही किया जाता है। यह तो जैसा होना चाहिये वैसी ही बात है। ठीक है कि कुछ प्रकार के लोगों को कुछ न कुछ देना पड़ता है। किन्तु अवैतनिक कार्यकर्ताओं को जो उस कार्य को अपना ही कार्य समझते है ऐसी सेवा भावना से काम करना ही है। हम लोग कभी सोचा करते है कि अवैतनिक कार्य तो ऐसा कार्य है जो किया भी जा सकता है और जो नही भी किया जा सकता है। मेरा विचार है कि यह बिल्कुल ग़लत खयाल है। जिस काम के लिये पैसा दिया जाता है वह तो ऐसा काम है जिसे आदमी को करना पड़ता है और जिसे अगर आप करना नही चाहते है तो दूसरो के कहने पर आप उससे अपना किसी न किसी तरह से छुटकारा भी कर लेते हैं। किन्तु अवैतनिक कार्य ऐसा कार्य है जिसे आप स्वयं अपने हाथ में लेते है और कोई बाहरी ताक़त आपको उस काम को हाथ में लेने के लिये मजबूर नहीं करती और आपके हाथ में ले लेने के बाद उसे करने के लिये भी मजबूर नहीं करती। अतः अवैतनिक कार्य की ज़िम्मेदारी वैतनिक कार्य की ज़िम्मेदारी से कहीं ज्यादा होती है और इसी लिये मेरा मत है कि वैतनिक कर्मचारियों से अवैतनिक कार्यकर्ता जनता के कही बड़े सेवक होते हैं, चाहे फिर ये वैतनिक कार्यकर्ता किसी मन्त्रालय के हों या किसी सेवाओं के हों और चाहे वे हमारे देश के समाज में उच्च स्थान पर हों अथवा मामूली स्थान पर हों। इस प्रकार के काम को मै इसीलिये ही बहुत महत्व नही देता हूं कि यह एक ऐसा काम है जिसका किया जाना हमारे लिये ज्यादा आवश्यक है वरन् इसलिये भी महत्व देता हूं क्योंकि इसके कारण देश के उत्थान के लिये नितान्त आवश्यक भावना हम लोगों में पैदा होती है

जैसाकि में ने कहा है हमारे सामने अनेक समस्याएं है जिन्हें हमें सुलझाना है और जिनके लिये हमें अनेक कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। मुझे न केवल यही आशा है कि आपकी संस्था बढ़ेगी और समृद्ध होगी किन्तु यह भी आशा है कि आप अधिकाधिक संख्या में योग्य और लगनवाले कार्यकर्ता पैदा कर सकेंगे। और खास तौर पर ऐसे कार्यकर्ता पैदा कर सकेंगे जो उस महान् काम को जो अभी बाक़ी है त्याग और सेवा की भावना से अपने हाथों में ले लेंगे।

आपने लोगों के सामने उदाहरण रख दिया है और मुझे आशा है कि इस प्रदेश में ही नहीं वरन् देश के अन्य भागों में भी इसका बड़े पैमाने पर अनुकरण किया जायेगा। आपने अब तक जो कामयाबी हासिल कर ली है उसके लिये मैं आपको बधाई देता हूं।

छोटे बच्चों को मै यही कहता हूं कि इसे वे अपनी खुशकिस्मती समझें कि किसी न किसी तरीके से वे इस संस्था में पहुंच गये है। मुझे आशा है जैसे जैसे वे आयु में बढेंगे उनके मन में सेवा भावना भी बढ़ेगी और वे दूसरे लोगों के सामने भविष्य में ऐसे उदाहरण रख सकेंगे जो अनुकरणीय होगे। समाज पर इन बालकों के क्या दावे है इनको अब ठीक ठीक समझा जा रहा है और उनको पूरा किया जा रहा है। बालकों को भी इस संस्था के और देश के जो दावे उन पर हैं उनको समझना चाहिये और अपने कर्तव्यों को पूरा करने का प्रयास करना चाहिये।

श्री वी० एस० श्रीनिवास शास्त्री के चित्र का अनावरण

*मद्रास में कुप्पुस्वामी शास्त्री गवेषणा प्रतिष्ठान में श्री वी० एस० श्रीनिवास शास्त्री के चित्र के अनावरण के अवसर पर ८ अप्रैल १९५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा --

महामहिम राज्यपाल साहब, बहनो और भाइयो,

मेरे लिये बड़े आदर और सौभाग्य की बात है कि मुझ से श्री श्रीनिवास शास्त्री के चित्र का अनावरण करने के लिये कहा गया है। भारत में हम उन लोगों की सेवाएं कभी कभी भूल जा सकते हैं जिन्होंने हमारे सार्वजनिक सेवाओं के क्षेत्र मे प्रवेश करने के पहले अनेक वर्ष तक सेवा कार्य किया था। यह वास्तव मे बड़े हर्ष की बात है कि श्री श्रीनिवास शास्त्री जैसी विभूतियों की, जो गोखले के चरण चिन्हों पर चलते थे, सेवाओ की स्मृति फिर ताज़ी की जाये। महात्मा गान्धी के कांग्रेस मे आने से पहले उस सस्था के अस्तित्व के लगभग ३० या ३५ वर्षों का इतिहास इन महारथियो की कहानी मात्र है जिन्होंने उस महान् सस्था को वलवती बनाया था। श्री श्रीनिवास शास्त्री उनमें से एक थे जिन्होंने अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनों मे ही देश की सेवा और त्याग का पथ अपना लिया था। शिक्षक के अपने व्यवसाय को छोड़ कर वे राजनीति के बृहत्तर क्षेत्र मे प्रविष्ट हुए और जिस लगन से वे शिक्षक का कार्य करते थे उसी लगन से वे वहां भी सब बातों के अध्ययन करने में और उनको ऐसे दूसरों को समझाने के लिये सहल करने में लग गये जो सार्वजनिक महत्व के अनेक प्रश्नों से उनके समान भली भांति परिचित न थे।

---

*अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

उनके भाषण सुनने का जिस किसी को भी अवसर और सौभाग्य प्राप्त होता था वह इस बात को तुरन्त पहचान लेता था वे केवल एक महान् वक्ता ही नही थे वरन् वे तथ्य भी उनकी उंगलियों पर रहते थे जिनके बारे में वे अपने भाषण में कुछ कहते थे। इन्ही महान् गुणों के कारण उनको इस देश की जनता ने ही नही वरन् इस देश की उस समय की सरकार ने भी भारत के नेताओं में से एक नेता मान लिया था। उनकी मेत्राओं की अनेक प्रकार से प्रशसा हुई। अनेक बार वह धारा सभा के लिये जो उन दिनो लेजिस्लेटिव कौन्सिल कहलाती थी चुने गये और वहा अनेक वर्षो तक उन्होंने जनता की सेवा की और उसकी भलाई के लिये काम किया। भारत के प्रतिनिधि स्वरूप वह दक्षिण अफ्रीका भेजे गये। वहा उन्होने ऐसे लोगो मे भी जो हमारे देश के प्रति कुछ विशेष मैत्री भाव नही रखते थे अपने लिये और इस देश के लिये अच्छा नाम पैदा कर लिया। उस समय उन्होने अपने लिये और इस देश के लिये जो इज़्जत हासिल की उनकी मृत्यु के पश्चात् आज भी वहा बनी हुई है। उन्हे जानने का मुझे सौभाग्य प्राप्त रहा है गोकि मै यह दावा तो नही कर सकता कि मै उन्हे इतना अच्छी तरह से जानता था जितनी अच्छी तरह से कि आप भाई बहन जो यहा मौजूद है उन्हें जानते थे। पर जो कुछ भी थोडा बहुत मै उन्हें जानता था उतने से ही मुझे उनकी महानता, उनकी दयालुता और उनके स्नेह का आभास मिल गया था। मुझे स्मरण है कि जब यहां के विश्वविद्यालय मे वह थे तब मुझे चिदबरम आने का अवसर हुआ था। उन दिनों मै इस प्रदेश का काग्रेस के प्रधान की हैसियत से दौरा कर रहा था। यहां आने से पहले मुझे उन्हों ने लिखा था कि मे उनके मेहमान की तरह उनके पास ठहरू और मे उनके पास दो दिन ठहरा भी था। इन दो दिनों के अन्दर मे यह देख सका कि वह ऐसे व्यक्ति को कितना स्नेह प्रदान कर सकते थे जिसे उनके घनिष्ट संपर्क में आने का सौभाग्य मिला था। मे जो कुछ पहले से जानता था, खास तौर से महात्मा गान्धी के, उनसे संपर्क के कारण मै जो कुछ जानता था—और यह कहने की बात नही कि वह केवल महात्मा गान्धी ही से न मिलते थे वरन् महात्माजी के साथ जो और लोग होते थे उनसे भी मिलते थे— इसलिये उनके इस प्रकार के संपर्क से मे जो जानता था उससे मे उन्हें अपने देश के महान् नेताओं मे से एक मानने लगा था। जो भावनाएं उनके प्रति मेरे मन में उस समय पैदा हुईं वे इस संसार में उनके जीवन के अन्तिम दिनों तक बराबर दृढ़ होती गईं।

यह तो उचित ही है कि जिस संस्था से उनका इतना घनिष्ट संबन्ध था उसमे उनका चित्र हो। वे बड़े राजनीतिज्ञ थे। किन्तु जैसा आपने कहा है वे न केवल राजनीतिज्ञ ही थे वरन् सस्कृति के भी महान् दूत थे। इस संस्था में आपके यहां ऐसे कार्यकर्ता है जो उस संस्कृति की सेवा करने में लगे हुए है और जो इस बात का प्रयास कर रहे हैं कि पुराने को नवीन से मिलायें और नवीन से पुराने को स्फूर्ति प्रदान करें। आज अपने देश में अपनी संस्कृति के पुनर्जीवित करने के समान और कोई आवश्यकता नही है। आज हम पश्चिम की सभ्यता में बहे चले जा रहे है। वहां अनेक ऐसी वस्तुएं हैं जो अपनी चमक दमक से हमें अपनी ओर खींच लेती हैं या कम से कम इस बात की संभावना तो रहती ही है कि वे हमें अपनी ओर खींच लें। बहुधा हम यह समझने की ग़लती कर बैठते है कि जो कुछ चमकता है वह सब सोना है। किन्तु यह बात सर्वदा होती नहीं है। अपने यहां की ऐसी बातों से जिनका भारी महत्व है और जो हमारी संस्कृति में सन्निहित हैं और यहां तक कि वे हमारे देश की साधारण जनता के दैनिक जीवन में भी पायी

जाती हैं हमें केवल इसलिये घृणा नही करनी चाहिये कि वे पुरानी हैं। आजकल कुछ यह रविश है कि अगर आप किसी व्यक्ति को प्रतिक्रियावादी कह देते हैं तो यह समझ लिया जाता है कि आप ने उसे सर्वदा के लिये बुरा सिद्ध कर दिया। मेरा विचार है कि प्रगति वास्तव मे क्या है हमें इसकी परिभाषा करनी चाहिये और व्यक्तिगत दृष्टि से मैं यह कह सकता हूं कि जिस बात को आजकल प्रगति कहा जाता है उसे कम से कम मै सर्वदा प्रगति नहीं समझता। मै कभी कभी यह सोचा करता हू कि प्रगति की बात करते समय क्या हम सचमुच गलती से तो उसको प्रगति नही मान बैठे है जो वास्तव मे प्रगति नही है। इस प्रकार की गलती मे बचने का सब से अच्छा तरीका यह है कि हमारी जडे हमारी सस्कृति मे हों, हमारी जड़ें हमारे अतीत में जमी हुई हों। अपने साहित्य के अध्ययन तथा जिस सस्कृत भाषा मे वह साहित्य है उसके अध्ययन से बढकर और कोई बात हमे इस प्रकार की जड प्रदान करने में हमारी सहायता नही कर सकती।

यह सस्था जनता की सेवा करने का प्रयास करती रही है; और हमारे पुरानी सस्कृति के पुनर्जीवित करने का और जिस सस्कृत में हमारी वह संस्कृति है उसके अध्यय को हमारी जनता द्वारा प्रारभ कराने का भी प्रयास करती रही है। और साथ ही इसकी यह भी कोशिश रही है कि उन असख्य पुस्तकों मे, जिनमें से कुछ का नाम भी आज हमें ज्ञात नही है, उन मे जो विद्यासरिता बह रही है, उस विद्यासरिता के जलामृत को छक कर पीने के योग्य हमारी जनता हो जाये। मुझे मालूम है कि देश में यत्र तत्र सर्वत्र लाखों ऐसी पाडुलिपिया मौजूद हैं जिन्हे कि अभी तक किसी ने देखा भी नही है और जिनका आधुनिक ढग से आधुनिक युग में किसी ने अध्ययन तो किया ही नही है। आपकी जैसी सस्था केवल संस्कृत के अध्ययन के प्रति जनता में लगन ही पैदा नही करती वरन् वह ऐसी अनेक भूली हुई पुस्तको को जिनका सर्वदा के लिये खो जाना बहुत सम्भव है, पुनः प्रकाश में ले आती है। यदि यह सस्था ऐसे विद्वानो को एकत्रित करने में सफल हो जाती है जो अपने को इन विषयो के अध्ययन मे लगायेंगे और जो ऐसी पांडुलिपियों के पुनः पता चलाने में और रक्षा में, जो अन्यथा खो जा सकती है, सफल होगे तो इसने बड़ा भारी काम कर दिया होगा। मुझे इस बात मे शका नही कि आप इस प्रकार के काम मे लगे हुए है। अतः मेरे लिये यह बात सौभाग्य की है कि आप ने मुझ से इस उत्सव में भाग लेने को कहा जो उत्सव कि एक साथ ही इस संस्था से जो इतना अच्छा कार्य करती रही है और जो श्री श्रीनिवास शास्त्री के महान् नाम से भी संबन्धित है। आप सब को अनेक धन्यवाद।

अंजुमने-मुफीदे-अहले इस्लाम द्वारा स्वागत

***अंजुमने-मुफ़ीदे-अहले इस्लाम और मुस्लिम एजुकेशनल एसोसियशन द्वारा रायपेट मद्रास में किये गये स्वागत समारोह में रविवार ८ अप्रैल १९५१ को राष्ट्रपति ने कहा—**

आपने इतने अनुग्रह से जो अभिनन्दन पत्र मुझे दिया है उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं। पद संभालने के पश्चात् यह प्रथम वार ही है कि जब मैं सरकारी तौर पर यहां आया

---

*अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

हूं। और मद्रास के सब समुदायों के लोगों की यह बड़ी कृपा है कि उन्होंने राष्ट्रपति के पद के लिये अपना आदर इस प्रकार व्यक्त किया है। मुझे यह भ्रम नहीं कि यह सारा प्रेम प्रदर्शन केवल मेरे लिये ही है किंतु मेरा विश्वास है और मैं समझता हूं कि ऐसा होना भी चाहिये कि यह सब राष्ट्रपति के पद के लिये है। वही तो जाति धर्म के विभेद के विना दल या समूह के विभेद के विना समस्त देश का प्रतिनिधि समझा जा सकता है और उसी से तो सबकी समान सेवा की उम्मीद की जाती है। जब से मै इस शहर मे आया हूं तब से मेरा यह सौभाग्य रहा है कि मुझे सभी की सद्कामना और स्नेह मिला है। और मुझे इस में शंका नही है कि जहां तक देश का प्रश्न है वहां तक यह सब स्वागत स्नेह राज्य के शिरोमणि की स्थिति को दृढ करने के लिये है।

अभी कुछ दिन ही हुए जब हमने स्वतंत्रता प्राप्त की है। अपने देश में रहने वाले हरेक व्यक्ति के लिये इस स्वतंत्रता को सार्थक बनाने के लिये हमे अभी बहुत कुछ करना बाकी है। इस स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिये हमे बड़े लम्बे समय तक संघर्ष करना पड़ा है और उसको प्राप्त करने के पश्चात् भी हमारे सामने अनेकों कठिनाइयां मौजूद हैं। परमात्मा की कृपा से हमने इन कठिनाइयो का मुकाबला बड़ी सफलता से किया है किंतु जो कठिनाइयां हमारे सामने है उनका मुकाबला करना ही तो काफ़ी नही है। जनता को सुखी और धन संपन्न बनाने के लिये तथा इस देश में से प्रत्येक को स्वतंत्रता का स्वाद चखाने के लिये हमे अभी बहुत कुछ रचनात्मक कार्य करना बाक़ी है। मेरा विचार है कि स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करना इतना कठिन नही था जितना कि जनता के कल्याण के लिये काम करना कठिन है।

जब हम विदेशी सत्ता से संघर्ष करने में लगे हुए थे तब हमें उन सब वर्गों और समूहों का जो स्वतंत्रता के पक्ष में थे सहायता मिल सकती थी और हम सबको अपने साथ लेकर चल सकते थे। वह काम एक प्रकार का था और उसका अपना अलग पुरस्कार था। उसके कारण कुछ यातनाएं हमें सहनी पड़ीं कुछ त्याग हमें करना पड़ा, इन यातनाओं और उस त्याग को लोगों ने अपनी इच्छा से कबूल किया। जहां एक तरफ वे यातनाये और वह त्याग था वहीं उनके साथ साथ दूसरी ओर कुछ यश और नाम भी था जो इस प्रकार के त्याग के साथ जुड़ा ही रहता था। जैसा कि कवि ने कहा है यश की इच्छा महान विभूतियों की अन्तिम दुर्बलता होती है। संभव है कि हम में से कुछ उस सेवा त्याग के जीवन की ओर यश की आकांक्षा से प्रेरित हुए जोकि आखिरकार दुर्बलता तो है ही।

इस रचनात्मक कार्य में हमें दूसरे प्रकार का काम करना है। निस्संदेह स्वतंत्रता के साथ साथ ऐसे अनेक पद या स्थान भी मिले है जिन पर हम कब्ज़ा कर सकते हैं किंतु जिन तक पहुंचने की भूतकाल में हम उम्मीद नहीं कर सकते थे। अब ऐसे अनेक रास्ते हैं जिनके ज़रिये हम अपनी जिन्दगी को ज़्यादा आरामदेह और ज्यादा संपन्न बना सकते है, किन्तु जो आदमी देश की सेवा में अपने को लगाना चाहता है आज उसे नाम की दृष्टि से, अखबारों में शीर्षकों और विज्ञापन की दृष्टि से खास तौर से उस हालत में कुछ नही मिलता जब कि वह रचनात्मक कार्य में अपने को लगाये रहता है। किंतु इसी प्रकार के रचनात्मक कार्य की तो आज देश को आवश्यकता है। हम यह चाहते है कि राज काज को बड़े बड़े राजनीतिज्ञ सरकार धारा, सभाओं और संसद् म रहकर चलायें किंतु उनके अतिरिक्त हमें ऐसे शांति से काम करने वाले अनेक कार्य कर्त्ताओं की आवश्यकता

है जो शांति से और कुछ पीछे रहकर दिन रात साधारण जनों की सेवा का उद्देश्य अपने सामने रखकर काम करते रहें। जब तक कि देश इस प्रकार के अनेक कार्य कर्त्ता पैदा नहीं करता तब तक स्वतंत्रता प्राप्ति का उद्देश्य भी पूरा नही हो सकेगा।

बहुत वर्ष बीते मुझे ऐसे एक अंग्रेज़ सज्जन के साथ यात्रा करने का सौभाग्य से मौका मिला जो शिक्षा शास्त्री के रूप में इस देश में बड़े पद पर थे। उन्होंने मुझे बताया था कि यदि इस देश में कभी क्राति होगी तो यूरुप में होने वाली क्रांतियों से वह बहुत भिन्न प्रकार की क्रांति होगी। उन्होंने बतलाया कि इंगलैंड मे ऐसे अनेक लोग है जिन्हें कोई नही जानता और जो स्वयं धनी हैं और उच्च वर्गो के हें कितु जो दरिद्र आदमियों की सेवा मे लगे हुए है। उस शिक्षा शास्त्री ने कहा कि ये ही लोग है जो अपनी सेवा द्वारा उच्च वर्गों और निम्न वर्गो अमीरों और गरीबो में संबंध बनाये हुए है और वहां उस प्रकार की क्रांति नही होने दे रहे है जैसी कि यूरुप के कुछ देशों में हुई थी। उसने इस बात का खेद प्रकट किया कि भारत वर्ष में इस प्रकार का रिश्ता दिखाई नही पड़ता और यहां ऐसे बहुत से लोग नही हैं जो स्वयं तो सौभाग्यवश उच्च वर्ग के है किंतु जो समाज के निम्न वर्गो की सेवा करने में लगे हुए हों। वह बात मेरे विचार में आज भी ठीक है और यदि किसी समय इस प्रकार के कार्यकर्ताओं की आवश्यकता थी तो वह आवश्यकता आज सब से अधिक है। अतः मेरा विचार है कि देश के प्रत्येक भाग में से प्रत्येक समुदाय के लोगों को कुछ ऐसे कार्यकर्ता पैदा करने चाहिये जो चुपचाप शांति से और पीछे रहकर अन्य किसी बात की चिन्ता किये बिना स्वतः काम करते रहें।

जिन संस्थाओं का प्रतिनिधित्व आप करते हैं वे इस प्रकार का कार्य करती रही है जिसकी हमे आवश्यकता है। छात्रवृत्ति प्रदान करके आप विद्यार्थियों की सहायता करते रहे है। आप उनकी अन्य प्रकार से भी सह यता करने का प्रयास करते रहे है और अब आपका एकाध विद्यालय खोलने का विचार है जिसमे सब लोग प्रवेश पा सकेंगे। यह बडी अच्छी बातें है और ५० या उससे भी अधिक वर्षो मे आप जो कुछ करते रहे है और अब आप जो कुछ करना चाहते है इसके लिये मैं आपको बधाई देता हूं। साथ ही मुझे यह भी आशा है कि जिन लोगों की आपने सहायता की है उनमें से भी आपकी संस्थायें देश की सेवा करने के लिये कार्य कर्ता पैदा करेंगी। हमें ऐसे कार्यकर्ता चाहिये जो धर्म या मत का विचार न करके काम करने के लिये तत्पर हों। हमें आदमियों के सेवक चाहिये न कि हिंदुओं, मुसलमानों या ईसाइयों या पारसियों के ही सेवक। मैं जानता हूं कि ऐसे बहुत से मौके आते है जब हमे धर्म या जाति का विचार किये बिना उस प्रकार की सेवा करनी होती है। जिन संस्थाओं का आप प्रतिनिधित्व करते है यदि वे ऐसे कार्यकर्ता पैदा करने लगें तो वे देश की बड़ी भारी सेवा करेंगी।

जैसा कि नाम से ज़ाहिर है ये संस्थायें अधिकतर मुसलमानों की संस्थायें है। मै इस बारे मे एक बात कहना चाहता हूं। हमारे देश में सांप्रदायिक समस्या के नाम से पुकारी जाने वाली समस्या पिछले दिनों रही है। हमने एक प्रकार से इस समस्या को हल करने का प्रयास किया। मै नही जानता कि उसको हल करने में हम कहां तक सफल हुए है। किंतु चाहे हम सफल हुए है या नहीं हम में से हरेक को चाहे वह किसी भी धर्म या समुदाय का क्यों न हो यह बात समझ लेनी है कि उसे इस देश में रहना है; वह यहां पैदा हुआ है और इसी देश की वायु में सांस

लेता है और जब वह मर जायेगा तो उसकी मिट्टी भी इसी देश में कहीं रहेगी। जब हरेक इस बात को पहचान लेता है तब उसे पता चलता है कि देश से उसके कितने घनिष्ट संबंध है। हमें आशा है कि धर्म के भेद के बिना हरेक उस जिम्मेदारी और कर्त्तव्य को पहचान लेगा जो उसकी देश के प्रति है। और जहां इस प्रकार की समझ लोगों में आई वहां ऐसी कोई समस्या बाकी नही रहेगी जिसे हम इस तरह से हल न करलें जो सब के लिये संतोषप्रद है।

अभी हाल में हमें कुछ अनुभव हुआ जो कुछ सुखद नही है। उस अनुभव को हमें अब भुला देना है और यदि याद रखना है तो इसी विचार से याद रखना है कि वह हमें भविष्य के लिये चेतावनी और आगाही दे । मुझे आशा है कि जो नया संविधान हमने बनाया है और जिसके बनाने में सब समुदायो और धर्मो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया था और जिस के संबंध मे मैं हर्ष और गर्व के साथ कह सकता हूं कि उसे सारे देश ने एकमत होकर स्वीकार कर लिया है उसके अधीन रहकर हम फूलेगे और फलेंगे और भारत को वैसा गरिमामय और महान् देश बना देंगे जैसा बनाने का वह पात्र है। हमारा अतीत ऐसा रहा है जिसका कि हम भली भांति गर्व कर सकते हैं। मुझे आशा है कि यद्यपि हमारा अतीत महान् था तथापि हमारा भविष्य उससे भी महान् होगा। उस भविष्य को संभव करने के लिये हम में से हरेक को अपना बलिदान करना है और हरेक को वह सब कुछ देना है जो वह दे सकता है। देश सब से उत्तमोत्तम देन के अतिरिक्त और कुछ स्वीकार करने के लिये तैयार नही है। और हम में से प्रत्येक को देश की सेवा में अपना सब कुछ देने के लिये प्रस्तुत रहना चाहिये। यदि आप यह कर सकते हों तो यह भी आश्वासन रखें कि इस दुनियां में कोई भी ऐसा काम नही है जिसका पुरस्कार या फल नहीं मिलता हो। हमारे परिश्रम का फल होगा और हम अपने को और अपने से कहीं अधिक अपनी संतान और संतान की संतान को सुखी और संपन्न देखेंगे। परमात्मा से हमें प्रार्थना करनी चाहिये कि वह हमें बल दे जिससे हम उस स्वतंत्रता के उचित पात्र अपने को सिद्ध कर सकें जो हमने प्राप्त कर ली है।

अखिल विश्व कैन्सर दिवस

*राज्यपाल भवन मद्रास में रविवार ८ अप्रैल, १९५१ को अखिल विश्व कैन्सर दिवस के उद्‌घाटन के अवसर पर राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम राजन, बहनो और भाइयो,

आज के उत्सव में भाग लेने में मुझे अत्यन्त हर्ष है। भारतवर्ष में बहुत से रोग है जो समस्त देश में फैले हुए है और जिनका एक एक करके मुकाबला करने की हम कोशिश कर रहे है। गो कि मै यह नहीं कह सकता कि हम ने उस दशा में कुछ खास प्रगति कर ली है किंतु राज्यक्षमा, कुष्ट और अन्य रोगों के रोकने की हम बराबर कोशिश कर रहे हैं। मलेरिया तो दूसरे प्रकार का रोग है और दूसरी रीति से ही उसे रोकने की कोशिश की गई है। कैंसर भी अन्य प्रकार का रोग है। किंतु इसके रोकने के और चिकित्सा के हमारे साधन बहुत सीमित हैं। आप को मालूम है कि भारत सरकार वैज्ञानिक गवेषणा में पर्याप्त दिलचस्पी लेती रही है और पिछले तीन वर्षों में

*अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

हम ने सारे देश में विज्ञान और उद्योग के विभिन्न विषयों पर काम करने के लिये प्रयोगालय स्थापित किये हैं। इन प्रयोगालयों में बड़े ऊंचे स्तर की गवेषणा हो रही है। मुझे इस में संदेह नही है कि इस देश में जो रोग है उनकी ओर भविष्य में अधिकाधिक और गहरा ध्यान दिया जायेगा। दिल्ली में मलेरिया गवेषणा प्रतिष्ठान कार्य कर रहा है। किंतु अभी कैन्सर के संबंध मे कार्य आरम्भ नहीं हुआ है पर मुझे विश्वास है कि यह भी शीघ्रही हाथ में लिया जायेगा और अन्य विषयों मे जिस प्रकार हम अपना अंशदान देते रहे है उसी प्रकार इसमें भी देंगे।

औषधि सबधी पर्याप्त कठिन समस्याओ के बारे में भारत की बडी महान् देन है। उदाहरणार्थ मलेरिया, विसूचिका, तथा ग्रीष्म प्रधान देशो मे होने वाले अन्य ऐसे रोगो की जैसा काला बुखार है चिकित्सा के सबध मे भारत की देन बहुत अच्छी है और आप यकीन रखे कि यदि हमारे लोग कैन्सर की चिकित्सा का प्रश्न अपने हाथ में लेगे तो इसमे भी वे काफी सफलता प्राप्त करेगे। यह सन्तोष की बात है कि यह दिवस सारे विश्व मे इस उद्देश्य से मनाया जा रहा है कि इस घातक रोग की ओर लोगो का ध्यान जाये तथा इससे जो जीवन हानि होती है वह रोकी जाये। घातक होने के अतिरिक्त कैन्सर अत्यन्त ही कष्टदायक रोग है और इस का इलाज आरम्भिक अवस्था मे ही होना आवश्यक है। इस प्रयोजन के लिये यह जरूरी है कि इसके इलाज के लिये अच्छे अस्पताल हों। मुझे यह मालूम नही है कि हमारे साधारण अस्पताल आरम्भिक अवस्था मे इस रोग के निदान के लिये कुछ कर सकते है या नही। क्योंकि यदि आरम्भिक अवस्था मे इसका निदान नहीं होता तो जब इसने रोगी के शरीर में घर कर लिया होता है उस अवस्था में इसकी चिकित्सा अत्यन्त कष्ट साध्य हो जाती है। अतः यह और भी आवश्यक है कि इस संबंध मे गवेषणा का कार्य किया जाए।

मुझे यह आशा है कि जो यह दिन सारे ससार भर में मनाया जा रहा है इसका इस देश पर भी प्रभाव होगा। अखिल भारतीय नारी समाज की ओर से इस समस्या की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करके आपने बड़ा अच्छा काम किया है और इस प्रकार देश की आप जो अनेक सेवायें करती रही है उनमें आपने एक सेवा और जोड़ दी है। मै आपकी सस्था के प्रति अपनी शुभ कामना प्रकट करता हूं और आशा करता हूं कि आपका प्रयास सुफल होगा।

मुझ खुशी है कि डाक्टर खनोलकर यहा है और इस रोग के सिलसिले में बड़े उच्च स्थान पर है। हम सब भारत के लोगों को उनके लिये गर्व है। मुझे आशा है कि उनका वहां संबध होने से हमारा देश भी इस विषय में अच्छा काम कर सकेगा।

मैसूर नगर समिति द्वारा अभिनन्दन

*मैसूर में मैसूर नगर म्यूनिसिपल कौंसिल द्वारा सोमवार ९, अप्रेल १९५१ को दिये गये अभिनन्दन पत्र के उत्तर में राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम राजप्रमुख साहब, नगर म्यूनिसिपल कौन्सिल के अध्यक्ष और सदस्यो, बहनो और भाइयो,

आप का यह विचार ठीक है कि न तो मैसूर राज्य के लिये और न मैसूर नगर के लिये मैं कोई अपरिचित व्यक्ति हूं। मैं इस राज्य और नगर में कई बार आ चुका हू। किंतु यह ठीक है कि

*अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

भारत गणतन्त्र के राष्ट्रपति के नाते यहां आने का यह मेरा पहला अवसर है। जिस क्षण मै यहां पहुंच उसी क्षण चारों ओर से स्नेह और अनुग्रह पाने का मुझे सौभाग्य रहा है और मैं म्यूनिसिपल कौन्सिल और मैसूर के नागरिकों को उस अनुग्रह के लिये धन्यवाद देता हूं जो उन्होंने इतनी बहुल मात्रा में मेरे लिये दिखाया है।

लम्बे सघर्ष के पश्चात् हमने स्वतंत्रता प्राप्त की है। उस प्रकार के संघर्ष के दिन अब समाप्त हो गये है। किंतु हमारे सामने लगन से पर्याप्त कठोर काम करने का युग आरम्भ हो गया है और यह युग है नव निर्माण का। विदेशी राज्य में बहुत काल तक रहने के बाद हमे अब स्वतंत्रता मिली है और अपने ही विचारों के अनुकूल अपने जीवन निर्माण की शक्ति मिली है और अब हमारा यह काम है कि जो अवसर हमे मिले है उनको इस विशाल देश की जनता के सर्वोत्तम लाभ के लिये काम मे लायें। हमारा इतिहास दीर्घकालीन इतिहास है और हमारी संस्कृति ऐसी है जिसके लिये हम सत्य मे ही गर्व कर सकते है। किंतु विज्ञान ने आज दूरी को समाप्त कर दिया है और यदि भारत ससार की विभिन्न प्रकार की धाराओ से अछूता और अप्रभावित रहना चाहे भी तो वह ऐसा नही कर सकता है। अतः मै यह कह सकता हू कि हम एक ऐसे परिवर्तन काल मे होकर चल रहे है जिसमें न केवल हमारे पुराने विचारों मे से अनेकों का किंतु हमारी पुरानी सस्थाओं का भी न्यूनाधिक नव निर्माण आवश्यक हो गया है। अतः हमको इस बारे में बहुत होशियारी वरतनी चाहिये कि हम भूतकाल की या वर्तमान की किसी अच्छाई को गलती से खो न दें। हमारे पास यह अवसर है कि हम पुरातन और नवीन का समन्वय कर दे और अपने जीवन और अपनी सस्थाओं का ऐसा विकास और निर्माण करे कि वे संसार की वर्तमान परिस्थितियों के विचार से अत्यन्त उपयोगी बन जाये। आज यहां आने के पश्चात् मुझे कुछ लोगों द्वारा हस्ताक्षरित पत्र मिला है जिसमे उन्होने दो बातों का उल्लेख किया है। एक बात तो है सार्वजनिक होटलों की और भोजनालयो की नगर मे बढ़ती और दूसरी है सिनेमा घरों की तादाद मे बढ़ती और उन्होने यह इच्छा प्रकट की है कि मै इस स्थान में अपने आगमन को इन दोनों को रोक कर या बन्द करके स्मरणीय बना दू। मुझे भय है कि मै ऐसा करना भी चाहू तो मेरे लिये ऐसा करना सभव नही है क्योंकि आज कल जिस प्रकार की सरकार हमारे यहा है वह कोई तानाशाही सरकार नही है और उस सरकार के प्रमुख की यह शक्ति नही है कि वह अपनी मनमानी कर सके। उसे तो जनता के प्रतिनिधियो के परामर्श के अनुसार कार्य करना है और जनता के प्रतिनिधियों को जनता की इच्छा के अनुकूल चलना है। अतः जब तक जनता के बहुमत की यह माग नही होती और जब तक यह माग इतनी बलवती नही हो जाती कि मंत्रिगण इसका विरोध ही न कर सके तब तक सख्य मे निरन्तर बढते हुए इन होटलो और सिनेमाओं को बन्द नही किया जा सकता। इस के अतिरिक्त दूसरी बात यह भी है जिसे हम को ध्यान में रखना चाहिये। जैसा कि मैने कहा है हमारे अनेक पुराने विचार और अनेक पुरानी संस्थाओं का अब रूप परिवर्तन हो रहा है। चारो तरफ से आने वाले विचार हमे प्रभावित कर रहे है और इसके साथ साथ ससार के एक भाग मे जो परिस्थितियां है उनका हम पर प्रभाव पड़े बिना नही रह सकता। हमे एक प्रकार से अपने लाभ की यह बात मालूम है कि जब हमारे देश में अन्न की पर्याप्त कमी है तब हम ससार के सुदूर भागों से आयात किये गये अन्न की सहायता से काम चला रहे हैं। मै नहीं जानता कि पचास साल पहले क्या इस प्रकार की बात संभव थी या सोची भी जा सकती थी। आज हम यह जानते है कि संसार के

दूसरे देशों से हमने अन्न देने के लिये जो अपील की है वह दूर दूर के देशों तक पहुंची है और लोगों ने उसको माना है और हम उन देशों से उतना अन्न मंगाने की कोशिश कर रहे है जितना कि हम मंगा सकते हैं। वर्तमान परिस्थितियों का यह अच्छा स्वरूप है। और भी अन्य बाते हैं जिनमे हमें मालूम होता है कि ससार से अलग रहकर हमारे लिये अपना अलग जीवन व्यतीत करना सभव नहीं है और यदि होटल और सिनेमाओं की सख्या बढ़ रही है तो आप यह बात मान ले कि वह भी इसी कारण से कि बाहर से आने वाले नये विचारों और नयी संस्थाओं की छाप हम लोगों पर पड रही है और उससे हम सर्वथा बच भी नही सकते है और न उनसे अलग रह सकते हैं।

प्रत्येक परिवार के लिये गृह मिलने की कठिनाई के कारण, आवास की कठिनाई के कारण, नौकरो के न मिलने की कठिनाई के कारण, ईधन मुश्किल से मिलने के कारण और घर चलाने की कठिनाई के कारण और साथ ही इस बात की कहने की आवश्यकता भी नही है कि भोजन बनाने के लिये पर्याप्त अनाज न मिलने के कारण साधारण लोग सस्ते भोजनालयों मे जाते हैं जहा उन्हे किसी प्रकार की तकलीफ उठाये विना मन चाहा भोजन मिल जाता है और इस प्रकार जो कठिनाइयां घर मे चौका चलाने मे घर वालों को होती हैं उन्हें वरदाश्त नही करनी पडती। इस बात से स्पष्ट है कि होटलो की संख्या क्यों बढ रही है। इसी प्रकार सिनेमा घरो की सख्या बढ़ने का कारण इसी प्रकार के आमोद-प्रमोद की इच्छा है। मै यह बात अवश्य कहूगा कि वे बहुधा सर्वोत्तम प्रकार के आमोद-प्रमोद की सुविधा नही करते है। बहुधा तो इसके विपरीत ही होता है और वे ऐसी बातें दिखाते है जिन्हे कि आप देखना पसन्द न करेंगे। किंतु तो भी वे मौजूद है और हम इससे ज्यादा कुछ कर भी नही सकते कि ऐसी सस्था का कुछ नियंत्रण करें, कुछ नियमन करे जिससे कि वह लाभदायक हो जाये और उसके हाथों में हानि पहुंचाने की शक्ति न रहे। मुझे बताया गया है कि यहा भी होटलों की सख्या का नियमन किया जा रहा है और भारत सरकार इस बात की कोशिश कर रही है कि जिस प्रकार के चित्र इन सिनेमाओ मे दिखाये जाते है उनका भी नियमन किया जाये। अपने लाभ के लिये जिस सीमा तक नियमन करने में हम सफल होंगे उसी हद तक वे हमारे लिये लाभदायक होगे। किंतु यदि हम इनके नियमन में असफल हुए तो ये हमारी हानि का कारण हो सकते है। किंतु जैसा कि मैंने कहा है नये विचारो और नयी सस्थाओ के स्पर्श से हम सर्वथा बच नही सकते और इसलिये हमारा यह काम है कि अब जब हमारे हाथ मे सत्ता है इन सुविधाओ का ऐसा प्रयोग करे कि वे हमारे लिये लाभदायक सिद्ध हों और उनमे जो हानि करने की शक्ति है वह उनसे छिन जाये।

हमे अपने देश में बहुत काम करना है। शिक्षा प्रसार की समस्या है, हमारी जनता के स्वास्थ्य सुधार की समस्या है और हमारे साधारण जनों की दरिद्रता की समस्या है। जीवन के इन सब विभागो में और कार्य के इन सब क्षेत्रों मे काम करने के लिये हमें ऐसे अनेक कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है जो जनता की सेवा के लिये इस प्रकार के सुधार के काम में अपने को लगा दे। विदेशी सत्ता से जो संघर्ष हमने किया उससे कई बातों में कही अधिक कठिन यह काम है और गणतन्त्र के राष्ट्रपति की हैसियत से जहा भी मै गया हू वही जो महान् जिम्मेदारी हमारी जनता के सर पर अब आगयी है उस की मैंने उन्हें याद दिलायी है। जहां तक हम उस उत्तरदायित्व के निभाने में सफल होगे वही तक हमारे पास अपने शासन करने की शक्ति होगी। लगभग

पिछले तीन वर्षो में जब से हम स्वतंत्र हुए है मैं यह मानता हूं कि हम इस दिशा में कुछ अधिक सफलता प्राप्त नहीं कर सके हैं। किंतु इसके कई कारण है और जो कठिनाइयां हमें सहनी पड़ी हैं वे भी तो बहुत भारी हैं। हम यद्यपि सब कठिनाइयों पर विजय पा नही सके है तो भी हम उनमें से बहुतों को पार करने मे समर्थ हो गये है। इस कार्य मे हमे जनता के सब वर्गो की सहानुभूति, सहयोग, सक्रिय सहायता और सलग्नता की आवश्यकता है। हमें स्वतंत्रता के साथ साथ इस बात का पता चला है कि कुछ कठिनाइयां तो ऐसी है जो स्वयं परिस्थिति में ही निहित हैं। किंतु कुछ दूसरी कठिनाइयां ऐसी भी है जिनको हम ने खुद पैदा कर लिया है। पहले प्रकार की कठिनाइयों के लिये कोई हमें दोष नही लगा सकता। हमें उन पर विजय पाने की पूरी कोशिश अवश्य करनी है किंतु जो दूसरी प्रकार की कठिनाइयां हमने अपने आप पैदा कर ली है उन के लिये हम ही उत्तरदायी हैं और अपने प्रति, देश के प्रति और जो स्वतंत्रता हमने प्राप्त की है उसके प्रति हमारा यह कर्त्तव्य है कि इन कठिनाइयों को दूर करें और नई कठिनाइयों को पैदा न करें। जहां भी कही कोई क्रांति होती है वही विचारों का, हितों का, और कार्यक्रमों का पारस्परिक संघर्ष होता है; और वह यहां भी अधिकाधिक दिखाई पड़ रहा है। किंतु यह कोई ऐसी बात नही है जिसमे कि हम निराश हों या भविष्य के बारे में घबड़ा जायें। यदि हम साधारण जनता के लिये वास्तविक स्वतंत्रता अर्थात् कमी से स्वतंत्रता, भय से स्वतन्त्रता, प्राप्त करने पर तुले हुए है तो हम वह स्वतंत्रता अवश्य प्राप्त कर लेगे और इस प्रकार की जो बाते हो रही है वे तो केवल लोगों की उस आतुरता की द्योतक है जो उस स्वतंत्रता को दूसरी रीति से अन्य लोगों की अपेक्षा शीघ्रता से प्राप्त करने की उन को है। जब हमारे सामने विभिन्न कार्यक्रम और विभिन्न प्रकार के वाद रखे जाते है तब उन पर विचार करते समय यह बात अपने ध्यान में रखनी चाहिये। इनकी अपने गुणों के अनुकूल ही परीक्षा की जानी चाहिये और उनके सबध में मत बनाना चाहिये। और यदि कोई ऐसी बात है जिसे हम अच्छी समझते है तो चाहे कही से भी वह सुझाव क्यों न आ रहा हो उसे स्वीकार करने में और उसे अपनाने में हमे किसी प्रकार की लज्जा न होनी चाहिये। और मैं जानता हूं कि यदि हमारी विभिन्न सरकारे इन सुझावों के बारे मे इस निर्णय पर पहुंच गयीं कि वे ऐसे है जिन्हें अमल में लाना ठीक होगा तो उन्हें अपनाने में उन्हे हिचकिचाहट न होगी।

हम वास्तव मे प्रयोग के युग से होकर गुज़र रहे है। अगले कुछ महीनों मे जब कि हम वयस्क मताधिकार के आधार पर ऐसे पैमाने पर चुनाव करेगे जिनका उदाहरण मानव जाति के इतिहास में नही मिलता है तब हमारे देश में प्रजातत्र का सब से बड़ा प्रयोग होगा। मत डालने वाले लगभग १७-१८ करोड़ मत दाताओं की सख्या के कारण, चुनावों में चार हज़ार स्थानों की पूर्ति होने के कारण, और इन स्थानों की पूर्ति के लिये लगभग १ लाख ७५ हज़ार निर्वाचन केन्द्र होने के कारण सरकार को इन चुनावो के करने के लिये कितना भारी काम करना पड़ेगा इसका अनुमान आप कल्पना से लगा सकते है। किंतु इनके कारण सरकार की ही परीक्षा न होगी किंतु जनता को भी परीक्षा होगी। उन्हे यह दिखाना है कि मताधिकार मिल जाने के पश्चात् वे सब बातों का फैसला मत द्वारा ही करेगे और किसी और बात का सहारा न लेगे। क्योंकि मत का तो बड़ा महत्व है और यह भी कोई छोटी बात नही है कि यह मताधिकार सब को मिल गया है। इससे न्याय रीति से, अपने मत भेदों का निर्णय करने के लिये हमें रास्ता मिल गया है और इससे हमें यह अवसर भी

मिल गया है कि हम संसार को दिखादे कि हमारी जनता सारे देश के हितों को यथावत समझती है तथा हमारे यहां का हरेक आदमी सारे देश के हितों की बात सोचने की सामर्थ्य रखता है और सर्व साधारण जनता के हित में अपना मत दान कर सकता है। यदि हम इसको ध्यान में रखेंगे और समस्त देश के हितों को ध्यान मे रखकर सूझ बूझ से अपना मत देंगे तो हमने वास्तव में बहुत अच्छा काम कर लिया होगा और यह प्रयोग भी पूर्णतया सफल हो जायेगा। किंतु इस के विपरीत हम यदि अपने मताधिकार को बुद्धिमत्ता से प्रयोग न कर सके अथवा यदि देश में ऐसी शक्तियां पैदा हो गयी जो हमारे लिये उस मताधिकार का प्रयोग भी करना अथवा बुद्धिमत्ता से उसका प्रयोग करना कठिन बना देती है तो जो स्वतंत्रता हमने प्राप्त की है उसे बनाये रखना अत्यन्त कठिन हो जायेगा। अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि जो महान् उत्तरदायित्व हमारे ऊपर आ पडा है उसको हम सब पहचाने और उसके निभाने के लिये अपने को हम सब तैयार करे।

जैसा कि अगले दिन मैंने मद्रास मे कहा था इस देश का ऐसा इतिहास रहा है जो किन्हीं बातों में सुखद नही है। ऐसे यहा अवसर हुए है जब हमारे यहां बड़े बड़े साम्राज्य थे। हिंन्दुओं के युग में, बौद्धों के युग मे, मुसलमानों के युग में, और अग्रेज़ों के युग मे हमारे यहा बड़े बड़े साम्राज्य थे जो इस देश के बड़े विशद भागो पर राज्य करते थे। अग्रेज़ो के आने से पहले यहा सर्वदा ऐसी प्रवृत्ति थी और विशेषतया दूरस्थ और बाहर भागो मे तो थी ही कि वे केन्द्र से अपने सबंध काट कर अलग हो जाये। यहा ऐसी प्रवृत्तिया थी जो न केवल छोरो पर ही वरन् साम्राज्यों के केन्द्र में भी न्यूनाधिक मात्रा में हानिकर सिद्ध होती थी और जिनसे उन साम्राज्यों का पतन हो जाता था। आज जिस बात की हमें अवश्यकता है वह यह है कि हम देश की एकता को पहचानें। इस विशाल देश की एकता को पहचाने। हमे यह बात नहीं भूलनी चाहिये कि आज भारत का उससे कही अधिक क्षेत्र है और कही अधिक जनता है जो उसके इतिहास के किसी भी पहले युग में थी जिसमे कि वह एक छत्र के अधीन था और यह तब है जब कि उत्तर पश्चिम में और उत्तर पूर्व मे उसके दो पख कट गये है। पहले चक्रवर्ती राजा थे, सम्राट थे, किंतु उन सब के साम्राज्य के अन्तर्गत कई ऐसे राज्य होते थे और कई ऐसे शासक थे जो अपने प्रदेशों मे बड़े शक्तिशाली थे और जिनका केन्द्रीय सत्ता से केवल नाम को ही नाता था। किंतु आज हमारे सामने ऐसा भारत है जिसके लिये हमने ऐसा सविधान बनाया है जो उसके हर प्रदेश में लागू है। यह कोई मामूली सफलता नही है। हमे यह न भूलना चाहिये कि यह सब इसलिये सभव हो सका क्योंकि भारत की जनता ने और मै यह भी कहूगा कि भारत के राजाओं ने मिलकर इस महान् काम को पूरा किया। यह सब की देश भक्ति और सब की राज धर्म निपुणता का ही फल है कि ऐसा महान् सविधान बना जिसका कि हम सब को सही गर्व है और यदि सविधान पर अमल होना है तो साधारण जनता को वैसी ही राजधर्म निपुणता, वैसी ही देशभक्ति और कर्तव्य के प्रति वैसी ही लगन से काम लेना है। तथा हमें यह सर्व प्रथम स्मरण रखना है कि यह देश एक है और यह कि चाहे कोई प्रदेश इस देश के धुर दक्षिण के छोर पर है अथवा हिमालय में है जहां कि हमारे देश की सीमायें विदेशो को छूती है और चाहे वह भारत के ठीक केन्द्र मे है वह सब एक देश का है और एक देश में है। और हम जो कुछ भी करे उसे करते समय हमें यह चित्र अपने आंखों के सामने रखना चाहिये। हमारे देश की जनता को हमारे इस देश की एकता का ज्ञान है और आज भी चाहे वह उत्तर का हो, अथवा दक्षिण का, पूर्व का हो या पश्चिम का हरेक हिंदू प्रातःकाल में यह श्लोक

पढ़ता है जिसमे कि उत्तर दक्षिण की सब नदियों का वर्णन है और अपनी संध्या ऐसे जल के प्रयोग से आरम्भ करता है जिसके बारे में यह धारणा है कि वह देश की सब नदियों से लाया गया है। यह देश का सर्वांगीन चित्र है और यह चित्र सर्वदा हमारे सामने रहा है। हमने सांस्कृतिक क्षेत्र में भाषा के क्षेत्र में और रूढ़ियो के क्षेत्र मे सब लोगों को पूरी स्वतत्रता दी है। लगभग सभी बातों में हमने पूर्ण स्वतत्रता दी और यही कारण है कि हमारे यहा विभिन्न सुन्दर भाषाये है जिनके साहित्य बडे समृद्ध है और विभिन्न प्रकार की रूढ़िया है। किंतु इन विभिन्नताओं के बावजूद सारे देश के अन्तर्तम मे एकता की प्रच्छन्न धारा बह रही है। यह भूतकाल मे केवल सास्कृतिक क्षेत्र मे ही थी। आज तो इसे हमने राजनैतिक और प्रशासनीय क्षेत्र में भी कायम कर लिया है। अब हमारा यह काम है कि हम इस एकता को बनाये रखे और समस्त देश की स्वतत्रता के लिये इसकी रक्षा करे। अत: देश से अलग होने की प्रवृत्ति को बुरा समझना चाहिये और हम देश में किसी प्रकार के भी तोड-फोड आन्दोलन के चलने की इजाजत नही दे सकते चाहे फिर वे देश के अन्दर से पैदा हो अथवा उसकी प्रेरणा देश के बाहर से आई हो। समस्त देश की स्वतत्रता की रक्षा करने की जो बडी जिम्मेदारी स्वतंत्रता ने हम पर रख दी है उसको जनता को समझना चाहिये और यदि हम ने ऐसा किया तो मुझे पूरा विश्वास है कि और बाते भी सब ठीक होगी।

आपके सुन्दर नगर को मै अपनी पूरी शुभकामना देता हू। यह सुन्दर नगर है, आपने इसको सुन्दर बनाये रखा है और इसे और भी सुन्दर बनाये रखने के प्रयास में आप है। नगर की सीमाओं के अन्दर आप जिन विभिन्न प्रकार के कामों मे लगे हुए है उन की रिपोर्ट मैने देखी। अपनी प्रशासनिक दक्षता के लिये और अनेक अन्य बातों के लिये जिन में कि भूत काल में यह राज्य अंग्रेजी प्रांतों से कही आगे रहा है मैसूर ने ठीक ही अच्छा नाम पाया है। मै यही आशा कर सकता हू कि इस परम्परा को आप बनाये रखेगे और सर्व साधारण के कल्याण के काम को आप निरन्तर आगे बढ़ाते रहेगे।

जो अनुग्रह और सद्कामनाये आपने मेरे लिये प्रकट की है उनके लिये मै आपको धन्यवाद देता हूं।

मैसूर विश्वविद्यालय का विशेष समावर्त्तन।

*मैसूर क्राफोर्ड हाल में मंगलवार १० अप्रैल, १९५१ को विशेष समावर्तन समारोह में बोलते हुए राष्ट्रपति जी ने कहा—

डाक्टर आफ़ लाज़ की डिग्री देकर आपने जो मेरा आदर किया है उसके लिये मैं आप सब को धन्यवाद देता हूं। एक समय था जब मै वकील था किन्तु यह बात बहुत पुरानी हो गई है। और जो कुछ थोड़ा बहुत क़ानून मै जानता था उसके भूलने के लिये मुझे पर्याप्त समय मिल चुका है। किन्तु मै यह जानता हूं कि आपने जो आदर मुझे प्रदान किया है वह इसलिये नही है कि मै वकील हूं वरन् उसका कारण कुछ और है और इसीलिये इसको स्वीकार करने

*अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

में मुझे थोडी ही हिचकिचाहट हुई है। एक समय था और उस समय मैं युवक था जब मेरे मन में डाक्टर आफ लाज बनने की बडी महत्वाकांक्षा थी। इस उद्देश्य से मैं ने कलकत्ता विश्वविद्यालय का इम्तहान पास किया था जहां का कि मै विद्यार्थी था और ठीक उस समय जब महात्मा गान्धी ने असहयोग आरम्भ किया और मैं उस मे सम्मिलित हुआ मै डाक्टर की पदवी के लिये "थीसिस" लिख रहा था। डाक्टरेट तो मुझे न मिली किन्तु तब से कई विश्वविद्यालयों ने मुझे डाक्टरेट की पदवी दे दी है। मै नही कह सकता कि मै इस सम्मान का कहां तक पात्र हूं।

आप ने बड़ी कृपा करके महात्मा गान्धी से मेरे संपर्क की बात अपने भाषण में कही है। यह मेरा बडा अहोभाग्य था। और इस प्रकार का संबन्ध किसी भी व्यक्ति के लिये दुर्लभ अहोभाग्य होता। जहां तक मेरा सवाल है मै अपनी आयु के काफी पहले अंश मे महात्माजी के घनिष्ट संपर्क मे आया और उस समय भारत मे उनके कार्य का भी श्रीगणेश हो रहा था। महात्माजी के मुझ पर प्रभाव के कारण मुझे अहिसा और सत्य मे प्रगाढ श्रद्धा हो गई। महात्मा जी ने जो कई आन्दोलन चलाये उनमे बहुत महत्वपूर्ण चम्पारन का सत्याग्रह था। जब महात्मा गान्धी उस जगह पहुंचे तब वहां के किसान अनेक प्रकार की तकलीफो के शिकार थे। किन्तु उन्होंने यह कभी नही सोचा कि वे निलहों के प्रति किसी प्रकार का भी द्वेष या वैमनस्य रखे। हम लोगो के लिये जो इस काम मे नये ही शामिल हुए थे और जो अहिसा की रीति और सिद्धांत को ठीक ठीक नही समझते थे यह बडी अचरज की बात थी। किन्तु महीनों तक निरन्तर हमने दिन रात महात्माजी के साथ काम किया। और छ महीने या उससे कुछ अधिक समय के बाद सरकार ने समस्त प्रश्न की जांच करने के लिये एक आयोग नियुक्त किया। उस आयोग के परिश्रम के फलस्वरूप एक कानून पास किया गया जिससे किसानो की शिकायतों में से काफी दूर हो गई और दो तीन वर्ष में सारे निलहे अपनी जमीन छोडकर चले गये और नील की खेती बन्द हो गई। किन्तु मै समझता हूं कि ऐसा होने पर भी निलहे यहा से कुछ दुखी होकर नही गये। उन्होने तो अपनी जमीन को बहुत अच्छे दामो पर बेचा और उस बिक्री से काफी फायदा उठाया और ऐसा करके अपनी नील की खेती छोडकर यहा से गये। किसानों की भी सद्भावना वे अपने साथ ले गये क्योकि उन्होने वास्तव मे उनकी सारी जमीन खरीद ली और जो कुछ खरीदा उसके लिये उनको अच्छे दाम दिये। जिस बात को हम बड़ा जरूरी समझते थे वह वास्तव मे इस तरह से पूरी हो गई, और इस प्रकार महात्मा गान्धी के आन्दोलन के तीन चार वर्ष के बाद नील की खेती बिल्कुल बन्द हो गई और जो शिकायतें सौ वर्ष से ज़्यादा से चली आ रही थी वे समाप्त हो गई। मुझे उस समय पता चला कि उससे पहले जो बात मैं हमेशा से सोचता आ रहा था वह सब गलत थी और महात्मा गान्धी ने यह ठीक ही कहा था कि वे किसानो की शिकायतो के दूर करने के साथ साथ ही यह नही चाहते कि दूसरे पक्ष वालो के मन में किसी प्रकार का मैल या कड़वाहट पैदा हो। आन्दोलन के तुरन्त पश्चात् उन दिनो मैं ने चम्पारन के आन्दोलन के संबन्ध मे एक छोटी पुस्तिका लिखी थी। उस पुस्तक में मैं ने कुछ वाक्यों में इस बात को वर्णन किया था। मै ने लिखा था कि जहां महात्माजी किसानों के ऊपर होनेवाले सब अत्याचार को दूर करना चाहते थे वही वह यह नही चाहते थे कि विपक्षियों के मन में किसी प्रकार का मैल या कड़बाहट हो। और ऐसा करने में वह सफल भी

हुए। इसी प्रकार हम भी अंग्रेजों की मर्जी से ही अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त करने में सफल हो जायेंगे। और चाहे अग्रेजो का वह साम्राज्य जो उन्होने यहां कायम कर रखा है खत्म हो जायेगा तो भी उनके हमारे बीच मे दूसरे प्रकार का ऐसा संबन्ध स्थापित हो जायेगा कि जो उनके हितों के विरुद्ध न होगा। और यह भविश्यवाणी अब सत्य सिद्ध हो गई है। आज मेरे विचार से भारत मे ऐसा कोई व्यक्ति नही है जिसके मन मे अंग्रेजों के बारे मे मैल हो। और मुझे यकीन है कि अंग्रेजो के मन मे भी भारतवर्ष के लिये पूरी शुभकामना और सद्भावना है। जिससे प्रकट है कि जीत दोनो की हुई है। भारतवर्ष ने विजय प्राप्त की है क्योंकि साम्राज्य के विरोध मे भी अपने आन्दोलन मे महात्मा गान्धी ने अहिसा के उस सिद्धान्त का पालन किया जिसका प्रचार वह अपने सारे जीवन मे करते रहे थे। मै जानता हू कि आजकल जब हमारे चारो ओर और विशषेतया दुनिया के दूर के प्रदेशो में अभूतपूर्व पैमाने पर हिसा की तैयारिया की जा रही है सत्य और अहिसा की बात कहना कुछ मुश्किल है। महात्मा गान्धी की इस आदर्श मे जैसी निष्ठा थी और उनका इसके लिये जैसा आग्रह था वैसी अहिसा में श्रद्धा आज किसी व्यक्ति की नही है जो इस आदर्श को उसी बल और श्रद्धा से संसार के सामने रख सके। और जब तक यह उस श्रद्धा और विश्वास के साथ नही रखा जाता है तब तक उसका वह प्रभाव नही होगा जो महात्मा गान्धी के शब्दो का हुआ करता था। मेरा विचार है कि भारतवर्ष के लिये भी और सारे संसार के लिये भी यह बडा दुर्भाग्य है। हम लोगो मे से जिन को महात्मा गान्धी के साथ काम करने का सौभाग्य मिला था, उनका यह कर्तव्य और यह विशेष ज़िम्मेदारी है कि वे अहिसा के झण्डे को ऊंचा उठाये रखे और परमातमा से मै यही प्रार्थना कर सकता हूं कि वह हमें इस काम को सफलता से करने के लिये पर्याप्त शक्ति प्रदान करे।

जैसा कि मै ने कहा है विश्वविद्यालय ने जो सम्मान मुझे प्रदान किया है उसके लिये मै उसका कृतज्ञ हूं। पिछले वर्ष मे मुझे कई ऐसे अवसर मिले है जब मैने विश्वविद्यालयों मे समावर्तन के अवसर पर भाषण दिया है तथा अन्य विद्या संबन्धी संस्थाओ के सामने भाषण दिया है। इन सभी अवसरों पर मै ने इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट किया है कि उच्च शिक्षा के संबन्ध मे हमारे अपने दृष्टिकोण के बदलने और उस पर पुर्नविचार करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के और खास तौर से इस देश के विश्वविद्यालयो के दो प्रकार के उद्देश्य होते है। उन्हे इस बात पर ध्यान देना पडता है कि उच्च शिक्षा का प्रसार हो। विश्वविद्यालयो के विषय क्रम का यह एक पहलू है। उनके काम का दूसरा पहलू यह है कि ज्ञान की सीमाओ का विस्तार हो। मेरा विचार है कि इन दोनो ही बातों के बारे में हमारे विश्वविद्यालयों को अपने पुराने विषयक्रम और पाठ्य व्यवस्था को बदलना होगा। आज डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् अनेक स्नातक यह नही जानते वे अपनी डिग्रियों का या अपने जीवन का क्या करें। जिस शिक्षा की हमें जरूरत है वह ऐसी होनी चाहिये जो हमें जीवन संघर्ष का साहस और दूरदर्शिता से मुकाबला करने के योग्य बना सके। अतः विश्वविद्यालयों की शिक्षा के एक पहलू का प्रबन्ध इस प्रकार का होना चाहिये जिस से कि संसार में अपने भविष्य को सभालने मे उनके विद्यार्थी समर्थ हो सके अर्थात् वे ऐसे ज्ञान और अनुभव से संपन्न हों जो उनको उस संघर्ष मे सफलता से भाग लेने मे सहायक सिद्ध हो। दूसरा उसका पहलू यह है कि वे ऐसे लोगो को पैदा करे जिनमे ज्ञान की सीमाओ को आगे बढाने की योग्यता, बुद्धि, दृढ़ निश्चय और लगन हो।

सब विश्वविद्यालयो में ऐसे विद्वान और विद्यार्थी है जो इस प्रकार के काम में लगे हुए हैं। इस काम को हमें बढ़ाना है। इसके बारे में भी मै यहा कहूगा कि इसको इस प्रकार से बढ़ाया जाये जिससे कि यह हमारे प्रयोजनों के लिये अधिकाधिक लाभदायक हो। यह ठीक है कि संसार भर मे विद्वानो का ऐसा वर्ग है जो सब विभागो मे ऐसे ज्ञान की निधि बढा रहा है जो सब को प्राप्य होना चाहिये। यदि प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक दृष्टि से हमारी परिस्थितियों के लिये विद्वान लोग उपयोग करने मे सफल हो जाये जिससे कि हमारी जनता को बढ़ने और समृद्ध होने में मदद मिल सके तो सचमुच ही उन्होने बड़ी भारी सेवा कर दी होगी। मै अपने विश्वविद्यालयो को सुझाना चाहता हू कि उन्हे इस प्रकार के गवेषणाकार्य की ओर अधिकाधिक ध्यान देना चाहिये। मै शिक्षा के सास्कृतिक पहलू के महत्व को तो किसी प्रकार कम जरूरी नही समझता। उसका अपना महत्व है और उसकी उपेक्षा नही करनी चाहिये। निकट भूतकाल मे शिक्षा को बहुत काफी प्रोत्साहन मिला है। और हर जगह हमारे विद्यालय ही नही वरन् विश्वविद्यालय भी बढ रहे है। मेरा विचार है कि पिछले दस वर्षो मे हमने विश्वविद्यालयो की सख्या में कई और विश्वविद्यालय जोड दिये है। प्रत्येक विद्यार्थी जो हाई स्कूल तक पहुंच जाता है वह उसके बाद कालेज में दाखिल होने की बात सोचता है और कालेज में दाखिल होने के बाद स्वभावत ही वह डिग्री हासिल करना चाहता है किन्तु मुश्किल तो तब पडती है जब उसे डिग्री मिल जाती है। जैसा कि मै ने कहा है अपनी डिग्रियां लेने के बाद स्नातकों को यह पता नही होता कि वे क्या करें और न उनके माता पिता ही जिन्होने उन्हे विश्वविद्यालय की शिक्षा दिलायी कुछ जानते है। मेरा विचार है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था, का आमूल पुर्नव्यवस्थापन होना चाहिये जिससे कि वे ही लोग विश्वविद्यालय मे दाखिल हो जो वहां जाने के लायक है और विद्यार्थियों की पर्याप्त सख्या अन्य प्रकार की शिक्षा की ओर भेज दी जाये। इसका यह अर्थ कदापि नही है कि शिक्षा और सस्कृति से लोग वचित रहे। सामाजिक व्यवस्था में अपने उचित स्थान को प्राप्त करने के लिये किसी भी व्यक्ति को जितनी शिक्षा और सस्कृति की आवश्यकता है उतनी तो हरेक को मिलनी ही चाहिये। किन्तु उसके लिये उसे विश्वविद्यालय की शिक्षा पूरी करने की आवश्यकता न होनी चाहिये। यदि सारी व्यवस्था का सुधार हो और उसकी नई दिशाऐं स्थिर हो जायें तो मेरी यह भावना है कि हमारे विश्वविद्यालय काफी अच्छी सेवा करने लगेगे। मै इससे पूर्व इस विश्वविद्यालय में कभी नही रहा हू अत मैने अपनी राय देने की जो धृष्टता की है उसके लिये मुझे आशा है कि समावर्तन के सदस्य मुझे क्षमा करेगे।

भाइयो! आपने मुझे जो सम्मान प्रदान किया है उसके लिये मै आपको धन्यवाद देता हूं और कुलपतिजी ने मेरे सबन्ध में जो स्नेह शब्द कहे है उनके लिये मै उनको धन्यवाद देता हूं।

अखिल भारतीय विज्ञान प्रतिष्ठान, बंगलोर

*शक्ति-इन्जिनियरी-विभाग तथा द्रुतगमना इन्जिनियरी प्रयोगालय का उद्घाटन और जल विद्या प्रयोगालय के शिलान्यास के अवसर पर तारीख १०-८-५१ को राष्ट्रपति ने कहा—

आपके नये भवनों का उद्घाटन करने तथा जो नया भवन आप बनाने जा रहे है उसके शिलान्यास करने के इस समारोह में भाग लेना मै अपने लिये बड़े सम्मान की बात समझता

---

*अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

हूं । मै वैज्ञानिक नहीं हूं और इस बात में कोई अतिश्योक्ति नही होगी यदि मै यह कहूं कि इन प्रयोगालयों में आप जो कुछ क्रियायें कर रहे है उनके बारे में मै सर्वथा अनभिज्ञ हूं । किन्तु साधारण मनुष्य के नाते मै इन प्रयोगों के और इन क्रियाओं के परिणामों में गहरी दिलचस्पी रखता हूं । जैसा कि आप ने कहा है यह पहला अवसर नही है जब मै यहां आया हूं किन्तु कई वर्ष पश्चात् आने पर मै इस स्थान को पूर्णतया बदला हुआ देखता हूं । यहां इतने दिनों में बहुत सी नयी इमारतें बन गयी है और कुछ पिछली बड़ी कर दी गयी हे जिस से कि मै यदि यहां अकेला रह जाऊं तो मुझे रास्ता पता चलाने में भी मुश्किल होगी । इससे प्रकट है कि इस संस्था ने कितनी तरक्की की है और यह कितनी बढ़ गयी है । आपने नये विभाग के वाद नये विभाग खोले है और मुझे विश्वास है कि आप बहुत से और खोलने जा रहे है । सरकार वैज्ञानिक गवेषणा मे बड़ी दिलचस्पी लेती रही है । यद्यपि पिछले वर्षो मे विभिन्न विषयों में काम करने के लिये हमने सारे देश भर में लगभग बारह प्रयोगालय स्थापित करने मे सफलता प्राप्त कर ली है तथापि इस संस्था को ही यह सम्मान प्राप्त है कि यह लगभग चालीस या उससे भी अधिक वर्ष पहले स्थापित हो गयी थी । यह और बधाई की बात है कि इस संस्था की संस्थापक सरकार न होकर एक उद्योगपति थे जिन्होने अपनी दूरदर्शिता, देशभक्ति और व्यापार कुशलता द्वारा देश को न केवल इस्पात का बड़ा कारखाना ही प्रदान किया वरन् अन्य कई कारखाने भी खोले जो टाटाओं के अधीन काम करके फूल फल रहे है । यह संस्था बड़ा आश्चर्यजनक कार्य करती रही है । इसका शिलान्यास करके जो महान सेवा जमशेद जी नौशेरवांजी टाटा ने की थी उसे देश को याद रखना चाहिये ।

जैसा कि मैंने कहा है साधारण जन के नाते मै आपके काम के परिणामो से ही दिलचस्पी रखता हू, और जितने थोडे समय से मै यहां हूं उसमें जो बातें मुझे बतायी गयी है उनमे मुझे ऐसा लगा है कि जिस काम को आप यहां कर रहे है उससे देश को और सम्भवत. सारे मानव समाज को बहुत लाभ होगा । आप ऐसी गवेषणा के कार्य मे लगे हुए है जिस से अपने देश में ही पैदा की हुई औषधियों द्वारा हम कुछ रोगों की चिकित्सा करने मे समर्थ हो जायेंगे और वह भी इतनी कम कीमत में कर सकेगे जो कि बाहर से आयात की जाने वाली औषधियों की कीमत से कही कम होगी । आप ऐसा यन्त्र बनाने मे लगे हुए है जो गावो में भी आसानी से मिलने वाले ईन्धन का प्रयोग करके काम कर सकता है । हमारे यहां सारे कृषि सम्बन्धी काम में जो कठिनाइया है उनमें से एक पानी की कमी है और यदि हम सिचाई के लिये पर्याप्त पानी का प्रबन्ध कर सके तो मुझे यकीन है कि देश की अन्न की समस्या बहुत आसानी से सुलझ जायेगी । मेरी अपनी धारणा है कि देश के अन्दर ऐसे बडे बडे क्षेत्र है जिन्हे जोता जा सकता है और जिनमे यदि पानी मिल सके तो हर प्रकार की चीज पैदा की जा सकती है । राजपूताने में जहां आप को सिवाय रेत और सूखी भूमि के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नही पड़ता वहा जो कुछ मै ने देखा है उसके अनुभव पर में यह बात कहता हू । वहां भी जब पानी का प्रबन्ध हो गया है तो रेतीली भूमि भी उसी प्रकार हरियाली हो गयी है जैसी कि देश के किसी अन्य भाग की भूमि हरियाली है । हमें उन ज़िलों का भी तजुर्बा है जो अब पश्चिमी पंजाब मे है और जिनकी अवस्था एक समय न्यूनाधिक उसी प्रकार की थी जैसी कि अब राजपूताना की है । अब वह ज़िले पंजाब के लिये अन्न भण्डार बन गये हैं और वे हमें देश के दूसरे भागों के लिये भी काफ़ी अन्न दिया करते थे । अतः यदि आप कोई

ऐसा यन्त्र बनाने में कामयाब हो जायें जो गावों में मिलने वाले ईंधन से चल सके तो म कहूंगा कि कृषि की मदद के लिये आपने बड़ा भारी काम कर दिया है।

किन्तु आप केवल इसी बात मे ही तो नही लगे हुए है। मुझे बताया गया है कि विभिन्न प्रकार के खाद्यों के सम्बन्ध में भी आप प्रयोग कर रहे है और यदि मिल सके तो --मैं यद्यपि गाय का ही दूध पसन्द करूंगा किन्तु तो भी आज के कमी के युग में आप गाय के दूध के स्थान में कोई अन्य प्रकार की वस्तु दे सके तो वह भी आपकी महान् सेवा होगी। और मुझे इस बात को सुन कर खुशी है कि आप ऐसी चीज़ पैदा करने मे बहुत कुछ हद तक कामयाब हो रहे है जो यद्यपि गाय के दूध के समान तो बिल्कुल अच्छी नही है तो भी वह लगभग गाय के दूध जैसी ही है। और पानी मिले गाय के दूध से अगर हम इस की तुलना करे और वैसा ही पानी मिला दूध जो आजकल मिलता है तो हमे पता चलेगा कि यह उससे कही बेहतर है। साधारण जन की हैसियत से मै इसी प्रकार के परिणामो मे दिलचस्पी रखता हूं।

यन्त्रो, हवाईजहाजो और इसी प्रकार की अन्य चीजो के सम्बन्ध मे भी आप प्रयोग और गवेषणा कर रहे है। जैसा कि मै ने कहा है इन बातों के बारे मे तो मै कुछ ज्यादा नही समझता हू किन्तु जिस दिन मै अन्यत्र से आने वाले यन्त्रों के मुकाबले में आपके यन्त्रो को बेहतर काम करता देखूंगा उस दिन मै आपके काम की तारीफ करूंगा। मुझे यकीन है कि मुझे उस दिन के लिये ज़्यादा इन्तजार न करना पडेगा जब आप मुझे इस बारे मे सन्तोष प्रदान कर सकेंगे।

मुझे यहां का विज़ीटर समझा जाता है और वह भी ऐसी वैज्ञानिक संस्था का हालांकि वैज्ञानिक के नाते मेरी कोई योग्यता नही है। किन्तु मुझ से ऐसी अनेक बाते करने की अपेक्षा की जाती है जिनके बारे मे मै कुछ नही जानता और जिनको मै समझता भी नही हू। सरकार के हर प्रधान को और खास तौर से प्रजातन्त्रात्मक सरकार मे जहा उसे जिम्मेदार आदमियों की राय पर काम करना पडता है वहां तो सरकार के प्रधान को ऐसे काम करने ही पड़ते है। अतः आपके काम के सम्बन्ध में मै भी यही आशा रखता हूं कि आपसे मुझे जो राय मिली है वह ठीक क़िस्म की है और जो कुछ मै ने यहां किया है वह ठीक ही किया है। मुझे यकीन है कि अगर मैंने कोई ग़लत बात की होती तो आपने उसकी ज़रूर शिकायत की होती और उस बात की देखभाल करने के लिये मुझे अवश्य योग्य बना दिया होता। मै आपको यह दावत देता हू कि अगर विज़ीटर के नाते मै कोई ऐसी बात करू जिसे आप गलत समझते है तो आप अपनी शिकायत लेकर मेरे पास जरूर आ जाये।

वैज्ञानिक जानकारी के लाभ के सम्बन्ध में मै साधारण जन के नाते यही कहता हूं कि मै तो उसके परिणामों और फलो से ही दिलचस्पी रखता हू। सारे ससार में इस क्षेत्र में इतनी भारी प्रगति की जा रही है कि भारत जैसे देश के लिये यह बहुत कठिन हो जाता है कि जो तरक्की की जा रही है उसके अनुकूल ही वह भी आगे बढ़े। अभी अगले दिन की बात है कि दिल्ली में हमें एक अनोखी बात दिखाई दी। वास्तव मे वह कोई ऐसा जहाज़ था जो दिल्ली के ऊपर उड़ रहा था किन्तु जिस के बारे मे सब लोगों की उत्सुकता पैदा हुई और इनमें मै भी सम्मिलित था। और मै ने यह सोचा कि इस बारे में सब से ठीक बात यह होगी कि मै उस व्यक्ति से पता चलाऊं

जिसके सम्बन्ध में यह खयाल किया जाता है कि वह इन मामलों में सब से ज्यादा योग्य है। इसलिये मैंने हवाई बेड़े के सेनापति से पूछा और उन्होंने मुझे बताया कि यह एक हवाई जहाज था जो हिन्दुस्तान पर उड़ रहा था किन्तु जिसके बारे में यह नहीं कहा जा सकता था कि वह कहा से आया और कहां गया; जो कुछ कहा जा सकता था वह केवल इतना ही था कि वह हवाई जहाज है और जब मैंने यह पूछा कि किसी दुश्मन के हवाई जहाज़ को इस प्रकार यहां आने से रोका जा सकता है या नही तो उन्होंने उत्तर दिया कि सैद्धान्तिक दृष्टि से तो यह सम्भव है किन्तु इस प्रयोजन के लिये आवश्यक रडार यन्त्र इतना कीमती होगा कि भारत के लिये उसे खरीदना सम्भव नही होगा। इससे प्रकट है कि वैज्ञानिक प्रगति की दृष्टि से भारत को किन कठिनाइयों का सामना करना है। सम्भवतः अन्य देशो को भी ऐसी ही कठिनाइयो का मुकाबला करना पड़ता है किन्तु हमारी अपेक्षा वे लोग तो इस काम मे बहुत पहले से लग रहे है। मुझे वह दिन याद है जब हमारे विद्यालयो मे मुश्किल से ही कही विज्ञान पढाया जाता था। कह तो मै भी सकता हूं कि मैं ने कुछ विज्ञान पढा है किन्तु आजकल कोई भी वैज्ञानिक यही कहेगा कि वह विज्ञान तो कुछ विज्ञान था ही नही और यह बात अभी बिल्कुल पचास वर्ष तक पहले थी। तब से इस देश मे वैज्ञानिक अध्ययन की बडी तीव्रता से प्रगति हुई है। अब हमारे सब विज्ञान पढाने वाले विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिय वैज्ञानिक प्रयोगशालयें ही नही हैं वरन गवेषणा के काम मे लगे हुए हमारे यहा अनेक आचार्य भी हैं और उनमे से कुछ की कृतियो को तो ससार भर मे बड़े महत्व का मान लिया गया है। हमने इस दिशा मे, पर्याप्त प्रगति की है। किन्तु हमें न केवल कुछ ख्यातिनामा वैज्ञानिको की ही आवश्यकता है वरन् हमे तो इस बात की भी आवश्यकता है कि हमारी जनता के बहुत से लोगो मे विज्ञान फैले। इस प्रकार की सस्था इस बारे मे काफी काम कर सकती है क्योंकि जिन शिल्पिक ज्ञान रखने वाले अनेक व्यक्तियों की हमे आवश्यकता है उनको यह दे सकती है। हमें नदी योजना सम्बन्धी जल विद्युत कारखाने के जरिये देश मे बिजली के यन्त्रों के विकास की बड़ी आशा है। मै यह नहीं जानता कि जिन कारखानों को बनाना हमने शुरू कर दिया है या जिनके बनाने का हमारा खयाल है या जिनके बारे मे जाच हो रही है उनको वास्तव मे बना कर पूरा कर देना भी सम्भव होगा या नहीं। किन्तु इसमे कोई शका नही है कि जब इनमे से कुछ बन कर पूरे हो गये होंगे और उनमे काम चालू हो गया होगा तब हमारे बिजली के शक्ति साधनो मे बहुत अभिवृद्धि हो गयी होगी और हमारे शक्ति साधनों के बढ़ जाने के कारण जिन विभिन्न वस्तुओं की हमे आवश्यकता है उनकी पैदावार भी काफ़ी बढ़ गयी होगी। अतः जिन यन्त्रों की हमे आवश्यकता है उनके अतिरिक्त हमें इन कारख़ानों को जिन्हें कि हम स्थापित करेंगे उनके चलाने के लिये हमे बडी तादाद मे शिल्पिक योग्यता रखने वाले व्यक्तियों की जरूरत होगी और इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ साइन्स के समान ही संस्थाए इस प्रकार के कार्यकर्ताओं को हमें दे सकती है। उन लोगो के लिये पर्याप्त काम होगा और मुझ यक़ीन है कि इन संस्थाओं में से सफलता प्राप्त करने के पश्चात् निकलने वाला कोई व्यक्ति बेरोजगार नही रहेगा।

हमारे विश्वविद्यालय आजकल ऐसे स्नातक निकाल रहे है जो यह नही जानते कि डिग्री लेने के बाद वे अपनी डिग्रियों का या अपने जीवन का क्या करे किन्तु इस प्रकार की शिल्पिक संस्थाओ की यह अच्छाई है कि जो विद्यार्थी इनसे निकलेगे उनके पास ऐसी योग्यता होगी कि जिससे वे तुरन्त ही लाभ उठा सकते हैं और जिसके लिये देश में पहले से ही काफी मांग है। अतः साधारण

व्यक्ति के नाते ही मै इन सब प्रयोगालयों और सस्थाओं मे काफी दिलचस्पी रखता हूं और इनसे अपना सम्बन्ध होना, चाहे फिर वह सम्बन्ध नाम के लिये ही क्यों न हो, मैं अपना भारी सौभाग्य समझता हू । अब मै बडी प्रसन्नता से यह शिलान्यास करता हू और नये भवन का उद्-घाटन करता हूं ।

बंगलौर में नागरिक अभिनन्दन

*रेसकोर्स बगलौर में नागरिक अभिनन्दन के उत्तर में १० अप्रैल १९५१ को सार्वजनिक सभा में बोलते हुए राष्ट्रपतिजी ने कहा--

नगराध्यक्ष महोदय, बगलौर निगम के सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

आप ने मेरे प्रति जो अनुग्रह दिखाया हे और मेरा जो स्वागत किया है उसके लिये मैं आप को धन्यवाद देता हू । जैसा आप ने कहा इस नगर में आने का यह मेरा प्रथम अवसर नही है । किन्तु राष्ट्रपति के नाते यहां आने का यह मेरा पहला ही अवसर है । नागरिको की सुविधा के लिये तथा भावी कार्यक्रम के लिये जो काम आप का निगम करता रहा है उस का आप ने अपने अभिनन्दन पत्र मे उल्लेख किया है । निगम के इस अच्छे काम से मुझे बड़ी प्रसन्नता है । सडको सम्बन्धी बडे कार्यक्रमो का आप ने उल्लेख किया है और इस के लिये आप ने कहा है कि आप को राज्य सरकार और केन्द्रीय सरकार की सहायता की आवश्यकता है। मुझे इस मे शका नही है कि संबंधित अधिकारी वर्ग आप की प्रार्थनाओ पर समुचित विचार करेगे और मुझे यह भी आशा है कि जो निधि इकट्ठी की गई है उसे वास्तव मे उसी उद्देश्य के लिये काम मे लाया जायेगा जिस के लिये कि वह इकट्ठी की गई है।

आप का यह बडा भारी सौभाग्य रहा है कि आप को ऐसे प्रशासक और शासक मिले है जिन्होंने न केवल इस नगर को सुन्दर बनाने के लिये ही काफी काम किया है वरन् यहां की जनता की रहने की हालतो मे भी अच्छा सुधार किया है । आप के राज्य में ही नही वरन् सारे देश मे आज कल हम अन्न की कमी के कारण संकट काल में पड़े हुए है । हम उस संकट का मुकाबला करने का प्रयास कर रहे है । और भारत सरकार तथा राज्य सरकार विदेशो से नाज मंगा कर और नाज का वैसा बंटवारा करके जिस में हरेक को कुछ न कुछ नाज अवश्य मिले और कोई भी भूखा न मरे इस समस्या का मुकाबला करने के लिये पूरी कोशिश कर रही है। मुझे आशा है कि हम इस संकट के पार हो जायेगे । हमारी साधारण जनता के लिये भी यह आवश्यक है कि अपनी कमर कस ले और हिम्मत श्रद्धा और दृढ़ता से समस्या का मुकाबला करे । मुझे इसमें शका नही है कि इस भावना से काम करने पर हम इस संकट के पार इसी प्रकार चले जायेगे जिस प्रकार कि हम भूतकाल में जा सके थे ।

अभी पिछले तीन चार सालों से ही हमारे हाथ में शक्ति आई है कि हम अपने भाग्य का निर्माण करे और अपना कार्यक्रम निश्चित कर सके । हमें अनेक प्रकार की कठिनाइयों

---

* अंग्रेजी से हिन्दी मे अनुवाद

का मुकाबला करना पड़ा है। और यह आश्चर्य की बात नही है कि जनता की आर्थिक स्थिति के सुधार के लिये न तो केन्द्रीय और न राज्य सरकारो के लिये यह सभव हुआ है कि वे वैसा काम कर सकें जैसा वे करना चाहती है। किन्तु मुझे इस मे शका नही है कि हम भविष्य में बड़े कदम उठाने के लिये अब बिल्कुल तैयार है। हमारा सर्व प्रथम कर्तव्य यह है कि जनता के जीवन स्तर को ऊंचा उठाये और लोगो को अधिकाधिक समृद्ध बनाये। यह ठीक है कि बहुत सी बातो मे स्वतन्त्रता से हमे वह सब नही मिला है जिस की हम आशा करते थे। किन्तु अभी समय भी बहुत थोडा हुआ है और हमें एक सकट के बाद दूसरे सकट का मुकाबला करना पडा है और वे कठिनाइया अभी दूर नही हुई है। किन्तु इन अवश्यभावी घटनाओ के कारण हमे नि शा नही हो जाना चाहिये। अभी यहा आने से पहले मै विज्ञान प्रतिष्ठान में गया था। यदि विज्ञान मे हम को कोई सहायता मिलनी सभव है तो मुझे यकीन है कि वह हमारी सहायता अवश्य करेगा। सारे देश मे पिछले तीन चार वर्षो मे ऐसे अनेक प्रयोगालय हमने स्थापित किये है जिनमे न केवल सैद्धान्तिक गवेषणा ही की जा रही है वरन् इस प्रकार की क्रान्तिकारी गवेषणा भी की जा रही है जो हमारी समस्याओ को हल करने मे काम आ सकेगी। ऐसा कर के हम ने बडा भारी कदम उठाया है। हम कुछ ऐसी योजनाओ की बात सोच रहे है और वास्तव मे कुछ पर तो पहले ही काम शुरू हो गया है जिन से कि हमारे कृषिक साधन और उत्पादन के बढने की ही न केवल सभावना है वरन् जिन से हमारे शक्ति साधन भी काफी बढ जायेगे और हर प्रकार के उद्योग शुरू करने के लिये ये शक्ति साधन हमें समर्थ कर देगे। हम विभिन्न प्रकार के भूमिसुधार करने की भी बात सोच रहे है जिससे कि कृषक को न केवल यही मालूम हो जायेगा कि जो कुछ वह पैदा करता है वह उस के भलाई के लिये तो है ही पर साथ ही सारे देश की भलाई के लिये भी है। यद्यपि इस बारे मे हमे अभी सफलता नही मिली है तो भी मेरा यकीन है कि भावी सफलता की नींव हमने डाल दी है और स्मरण रहे कि नीव तो किसी को दिखाई देती है नही और केवल ऊपर की इमारत नज़र आती है और लोगो का ध्यान आकृष्ट करती है।

हमारे सामने इतनी भारी समस्याये है कि जिनके नीचे हम सहज ही में दब जा सकते थे। इसी से आप अन्दाजा लगा सकते है कि अभी कितना भारी काम करने को बाकी है। हमें खेती के बारे में अभी अनेको समस्याओ का सामना करना पड़ रहा है। यद्यपि अनेक युगो से हमारा देश कृषि प्रधान देश रहा है और यद्यपि हमें कृषि का बहुत महत्वपूर्ण अनुभव है और यद्यपि अनेक देशों के कृषको से हमारा कृषक कृषि के सम्बन्ध में बहुत कुछ ज्यादा जानता है तथापि हम अपनी कृषिक समस्याओ को हल करने में समर्थ नही हुए है। निस्सन्देह यह आवश्यक है कि पैदावार के नये तरीके शुरू किये जायें और मशीनो से काम लिया जाये किन्तु जिस कृषक के पास थोड़ी ही जोत है और जिस में कि वह आधुनिकतम यंत्रों का जो कि प्राप्य हैं प्रयोग नहीं कर सकता उस के सवाल पर भी तो हमे विचार करना है।

हमारे यहां कुटीर उद्योग है। म जानत हूं कि इस युग में जिस में कि मशीनें बड़ी तेजी से प्रगति कर रही है और जिस में कि मशीन आज से पहले ही पर्याप्त प्रगति कर चुकी है कभी कभी यह शंका होने लगती है कि क्या वास्तव में छोटे कुटीर उद्योगों के लिये

अब कोई स्थान बाकी रह गया है। मैं उन लोगों में से हूं जिनका यह विश्वास है कि यदि देश को प्रगति करनी है तो न केवल उन कुटीर उद्योगो के लिये ही स्थान है वरन् यह भी अत्यन्त आवश्यक है कि इस प्रकार के छोटे पैमाने पर कुटीर उद्योग अवश्य हों। हमारे सामने यह समस्या है कि हम अपने इस विशाल देश में रहने वाले करोड़ों आदमियों को रोजी दिलाये। हम मशीनो से काम ले सकते है। हम ऐसी बड़ी फैक्टरी भी चला सकते है जिन मे बहुत तादाद मे मजदूर काम करते है। किन्तु प्रत्येक फैक्टरी की जो पैदावार होती है उस का उस फैक्टरी मे काम करने वाले मजदूरों की सख्या से किसी प्रकार का सम्बन्ध नही होता। सूत कातने वाली फैक्टरी मे एक मजदूर दो सौ सूत कातने वालों के बराबर काम कर लेता है। कपड़ा बुनने वाली फैक्टरी में एक मजदूर बीस ऐसे मजदूरो के बराबर काम कर देता है जोकि करघे पर काम करते है। अत यह सब बड़ी फैक्टरिया बेकारी की समस्या को बढाती है। एक दृष्टि से वे हमे सस्ती चीजे अवश्य देती है किन्तु सर्व साधारण के हित में यह बात नही है। जैसाकि मैने कहा है सब कुछ सोचने विचारने के बाद कुटीर उद्योगो मे और छोटे छोटे उद्योगो मे लाखो लोगो के काम मे लगने की गुंजायश होती है और जब तक उन लोगो को काम नही मिलता बेकारी की समस्या हल नही की जा सकेगी। और जब तक बेकारी की समस्या हल नही होती तब तक ग्राम व्यवस्था का भी सुधार न हो सकेगा। अत. यह आवश्यक है कि बड़े उद्योगो तथा कुटीर और छोटे पैमाने के उद्योगो के बीच मे से हम कोई रास्ता निकाले।

इस समय की सब से बड़ी आवश्यकता अधिकाधिक पैदावार है। कुटीर उद्योगों द्वारा पैदावार, खेतो मे पैदावार और फैक्टरियो मे पैदावार अर्थात् हर प्रकार की पैदावार की हमें आवश्यकता है। और जितनी ही अधिक पैदावार होगी उतना ही बटने के लिये लाभाश अधिक होगा। आज कल चीजों की मंहगाई के बारे मे बहुत कुछ कहा सुना जाता है। और सब मे बड़ी बात तो यह है कि लडाई के बाद के परिणामों के कारण वस्तुओ का मूल्य बराबर बढ़ता चला जा रहा है। ससार के एक भाग में मंहगाई का फल संसार के दूसरे भागों में हुए बिना रह ही नही सकता। तब भी भारत सरकार कीमतों की उचित दर रखने की पूरी कोशिश कर रही है। मंहगाई का यह जाल किसी न किसी प्रकार तोड़ना तो है ही। कोरिया के युद्ध के परिणाम स्वरूप मूल्य फिर चढ़ गये और तब से बराबर चढ़ रहे है। हम केवल यही आशा कर सकते है कि कोरिया की यह लड़ाई अपनी वर्तमान सीमाओं से आगे न बढे और दूसरी सरकारों को किसी दूसरे महायुद्ध में फिर न पड़ जाना पड़े। हमारी सरकार इस बारे में पूरी कोशिश करती रही है कि यह लड़ाई जितने क्षेत्र में है उतने में ही रहे और आगे न बढ़े। किन्तु जैसा आप जानते है हमारा राष्ट्र तो अभी नया ही है क्योंकि हमने हाल ही में स्वतन्त्रता प्राप्त की है स्वभावत: हमारा सारे संसार में वैसा प्रभाव नहीं है जैसा कि कुछ बड़े राष्ट्रों का है। किन्तु हमारे लिये यह गर्व की बात है कि अपने सीमित साधनों और अपने सीमित अनुभव से ही हम अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अपनी बात से असर डाल सके है।

समस्त भारत को एक संविधान के अधीन करने मे हम सफल हो गये है। यह ऐसी सफलता है जिस के लिये हम अभिमान कर सकते है। आज भारत उस से कही बड़ा है

और कही विशद है जितना कि भूतकाल में किसी समय में भी भारत था । सम्पूर्ण भारत भी अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र म कुछ प्रभाव रख सकता है । हमें तो वर्तमान युग की वास्तविकताओ को ध्यान मे रखना है । हमारे सब विभिन्न विभेदो और कमजोरियों के होने पर भी उन मे से हरेक को चाहे वह किसी मूलवंश का हो, चाहे वह किसी प्रदेश का हो, चाहे वह किसी राज्य का हो उस को अपना यह प्राथमिक कर्तव्य मानना चाहिये कि उसे इस संविधान के प्रति, तथा समस्त देश के प्रति निष्ठा, और वफादारी रखनी है और किसी भी जाति या देश का कोई विदेशी क्यो न हो उस के विरुद्ध रक्षा के लिये तत्पर रहना है । जिस देश भक्ति और त्याग की भावना से हम अपने स्वतन्त्रता आन्दोलन में अनुप्राणित रहे थे वही देश भक्ति और त्याग की भावना देश हित के लिये हम मे अब भी बनी रहनी चाहिये और यदि ऐसा नही हुआ तो जो स्वतन्त्रता हमने प्राप्त की है वह खतरे में पड जायेगी । कभी कभी हमारे मन मे यह विचार आ सकता है कि अब जब हम ने स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है और कुछ करने को शेष नही रहा है । इस खतरे मे मैं आप को आगाह करना चाहता हूं । स्वतन्त्रता प्राप्त करना पर्याप्त कठिन काम था किन्तु इस की रक्षा और इस को बनाये रखना भी किसी भी तरह से उससे कम कठिन काम नही है और इस प्रयोजन के लिये हमे अपने सब अर्थात्, मानसिक साम्पत्तिक और आध्यात्मिक साधनों की आवश्यकता है । आज जिस प्रधान बात की हमे आवश्यकता है वह व्यक्ति का सच्चरित्र है । मुझे कभी कभी यह बात सोच कर दुख होता है कि इस सम्बन्ध मे कुछ विशेष गिरावट आई है । महात्मा गांधी हमें इस दिशा में बहुत उच्च स्तर तक ले गये थे । किन्तु उन के भौतिक शरीर के आंखों से ओझल होने के बाद हम चरित्र के उस उच्च स्तर पर रहने में नही समर्थ हुए है । और शनै. शनैः इस बारे मे गिरावट हो रही है । किन्तु हमे इस बात का विस्मरण न करना चाहिये कि यह आध्यात्मिक शक्ति ही थी जिसने हमें अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये समर्थ बनाया और जब तक हम अपने को उस स्तर पर रखने में कामयाब नही होते तब तक हम यह नही कह सकते कि इस प्रकार की गिरावट हमे किस गड्ढे में ले जा कर गिरा देगी और हमारा कितना पतन हो जायेगा । अतः हम में से प्रत्येक का यह का कर्तव्य है कि वह यह पता चलाये कि इस बात का मुकाबला हम कैसे कर सकते है । किसी काम के करने न करने के बारे मे दूसरो को दोषी ठहराना बहुत आसान बात है किन्तु अपने ही दोषों को पहचानना उतनी आसान बात नही है । किन्तु यदि आप इस पर तात्विक दृष्टि से विचार करे और इस की सूक्षम व्याख्या करे तो आप को पता चलेगा कि दूसरों के दोषों को जानने की अपेक्षा अपने दोषों को जान लेना कही सरल है क्योंकि आखिरकार आप अपने मन की बात तो जानते ही है और आप यह भी जानते है कि आप ने किस प्रकार का काम किया है । दूसरो ने जो काम किया है वह किस प्रेरणा के अधीन किया है इस के जानने का तो कोई रास्ता है नही और जब तक दूसरों के मन में क्या बात चल रही है इस के जानने का हमें साधन नहीं मिलता तब तक उन के मन में क्या प्रेरणा थी इस बात को जानना अत्यन्त कठिन है । अतः अहिंसा के सिद्धान्त का यह एक पहलू है कि दूसरों के दोषों को खोजने के बजाय आदमी अपने ही दोषों की ओर देखे । बहुत दृष्टियों से ऐसा करने का फल बहुत अच्छा होगा । यदि हम में से सब अपने अपने दोषों पर ध्यान देने लगें तो सारे देश में कोई दोष रह जायेगा ही नहीं और हमारे पूर्वजों ने अनेक युगों से आध्यात्मिक

शक्ति को इतनी महत्ता प्रदान करके उचित बात ही की थी। महात्मा गांधी ने जो उच्च आदर्श हमारे सामने रखे थे उन के कारण आज सही रास्ते से थोड़ा भी इधर उधर होना हमें बहुत खटकता है। मै साधारण जनों को इस गिरावट से आगाह करता रहा हूं और मै यह चाहता हूं कि इस राज्य के लोग और इस नगर के लोग इस बारे में दूसरो के लिये उदाहरण रखें। आज कल हम चोरबाजारी की बहुत बातें सुनते है। हम में से हरेक को यह दृढ निश्चय करना चाहिये कि देश में चीजों की वर्तमान कमी से हम लाभ न उठायेंगे चाहे फिर हम पैदा करने वाले हों, व्यापारी हों अथवा उपभोक्ता। यदि हमने अपने मन में निश्चय कर लिया कि हम चोरबाजार से माल नही खरीदेंगे तो चोरबाजार अपने आप खत्म हो जायेगा। यह तो एक ऐसी शुरूआत है जो आसानी से की जा सकती है। सब को यह जान लेना चाहिये कि हम मे से हरेक ने अपने अपने तरीके से चोरबाजार को कायम करने मे कुछ न कुछ मदद की है।

मै यह चाहता हूं कि चाहे किसी की कोई स्थिति हो या कोई काम हो वह अपने काम को उत्तरदायित्व पूर्ण ढंग से और ईमानदारी से करे। आजकल बहुत जगहों मे कुछ आलस्य की प्रवृत्ति पायी जाती है। फल यह है कि जो आदमी सुस्त है उससे देश जिस सेवा की अपेक्षा कर सकता है वह सेवा उससे नही मिल पाती है। हरेक को अपना काम ईमानदारी से और देश के हित में करना चाहिये। चाहे कोई खेत में काम करने वाला मजदूर हो, या फैक्टरी मे काम करता हो, चाहे कोई स्वामी हो, अथवा दफ्तर में काम करने वाला क्लर्क हो और चाहे वह कोई मन्त्री हो सब को अपना काम ईमानदारी से करना चाहिये। यह कोई ऐसी बात नही जिसे सरकार अपने किसी काम से हल कर सकती है। यह तो इस देश के साधारण नर-नारियों द्वारा ही हल की जा सकती है। मै यह आशा करता हूं कि वे लोग इसकी गम्भीरता को पहचानेंगे और इन सब समस्याओं को न केवल अपने फायदे के लिये ही वरन् देश के फायदे के लिये भी हल कर डालेंगे। कर तो वे ऐसा सकते ही है; इस काम को करने के लिये व्यक्तियो के मन में केवल दृढ़ निश्चय की आवश्यकता है। और मुझे यक़ीन है कि यदि ऐसा हुआ तो जहा आज हमारे सामने कठिनाइयां है वही हमारे सामने आगे सफलता ही सफलता होगी। यदि हम अपनी पूरी शक्ति से कार्य करने का निश्चय कर लेगे तो हम अवश्य सफल होगे। आप लोगो ने जिस धैर्य से मेरी बात सुनी उसके लिये मै आपको धन्यवाद देता हूं।

बंगलौर औद्योगिक प्रदर्शनी का उद्घाटन

*बंगलौर मे औद्योगिक प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर बुधवार ११ अप्रैल, १९५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

मुझे इस की बड़ी प्रसन्नता है कि मै इस प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहा हूं। जैसा कि आपने कहा है इन प्रदर्शनियों के द्वारा जनता के सामने बहुत सी वे चीजें रखी जा सकती है जो हमारे कुटीरों मे और कारखानों मे पैदा की जा रही हैं। तथा ऐसी संस्था बडे काम की होगी जो उन चीजों का नमूना जो कि पैदा की जा रही है बराबर जनता के सामने रखने का प्रबन्ध करती हो किंतु

*अंग्रेजी से हिन्दी मे अनुवाद

जैसा कि प्रतीत होता है अन्य बातो के लिये भी आपकी यह संस्था बड़ी लाभदायक सिद्ध होगी। इसी बात से कि अकाल पीड़ितों की सहायता के लिये काफी बड़ी राशि अर्थात् जैसा कि मुझे बताया गया है चार लाख की राशि आप पहले ही दे चुके हैं और इस बात से कि आगे के चन्दे के लिये भी आपने मुझे पच्चीस हजार रुपये की चैक पेशगी के तौर पर दी है और आप एक लाख देना चाहते है यह साफ प्रकट है कि आपका काम बडी सफलता से चल रहा है। इससे यह भी प्रकट है कि आपके काम की सर्व साधारण जनता ने तारीफ की है। यदि ऐसा न होता तो चाहे उद्देश्य कितना ही प्रशंसनीय और अच्छा क्यों न होता आप यह धन इकट्ठा करने में सफल न होते।

चूंकि मै आसाम हो आया हूं और संभवतः आप में से अनेक वहां भूचाल के बाद नही गये होंगे मै यह कह सकता हू कि वहां जो भयानक विपत्ति आई उससे उस प्रांत मे कितना नुकसान हो गया है और स्थिति कितनी उलट पुलट गयी है। कुछ समय हुआ जब उस प्रांत मे और विशेषतया जो इलाका भूचाल से बरबाद हुआ है, उसमे मै गया था। आप तो जानते है कि वहां तक हिमालय पर्वतमाला फैली हुई है। हम लोग भारत के उत्तर पश्चिमी सीमा तक जहा आसाम समाप्त होता है और जहा बर्मा और चीन भारत को छूते है हवाई जहाज से जा रहे थे और रास्ते मे हम उन प्रदेशो के ऊपर हो कर जा रहे थे जो भूचाल से सब से अधिक विनष्ट हुए थे पर्वतमाला के वक्ष में दो प्रकार के रग देखकर मुझे ताज्जुब हुआ। एक तो सर्वथा हरा था उसी तरह हरा था जिस प्रकार कि सारे आसाम में वर्ष भर हरियाली रहती है और दूसरा सफेद था। मैने सोचा कि शायद छाह पड़ने से रग में यह फर्क पड़ता है। किंतु बात ऐसी नही थी। मुझे यह बताया गया कि जो हिस्सा सफेद दिखाई पड़ रहा है वह पहाड का वह हिस्सा है जहा कि भूचाल से हरियाली और पेड़पत्ते बिल्कुल विनष्ट हो गये है। पहाड इतने बडे पैमाने पर गिर पड़े थे कि ऐसा लगता था मानों मीलों तक पहाड़ टूट गये हों और जो कुछ भी उन पहाड़ियो पर था वह सब भी टूट टाट कर गिर गया था। यह सब दृश्य कैसा लगता होगा इसकी आप इस बात से कल्पना करले कि इन पहाड़ियों पर खड़े हुए लाखो ही वृक्ष, बिल्कुल भूमिसात हो गये थे। उन पेड़ों का क्या हुआ यह मैं न देख सका। वहां पहाड़ियों के कक्ष मे बहुत सी नदियां बहती है। कही न कही वह नदियां ब्रह्मपुत्र से मिल जाती है और आसाम के कुछ भागों को पार करता हुआ पूर्वी बंगाल में होता हुआ ब्रह्मपुत्र इनके जल को समुद्र तक ले जाता है। पर्वतों की इस भयानक टूट फूट का परिणाम यह हुआ कि इन नदियो की धारायें रुक गयी जिससे नीचे की तरफ की नदियां सूख गयीं और ऊपर की तरफ जल की अपार मात्रा इकट्ठी हो गई। भूचाल ने जो बांध बना दिया था वह इस अपार जल राशि की टक्कर को न सह सका और दस पन्द्रह या बीस मील की दूरी पर अलग अलग यह बाध जिसे भूचाल ने बनाया था टूट गया और पानी की अपार राशि इन नदियों में उमड़ पड़ी जिसका फल यह हुआ कि नदियों के दोनों तरफ का प्रदेश और दूरस्थ भूभाग बिल्कुल जल प्लावित हो गया और वहां इस कारण कोई भी चीज़ खड़ी न रह सकी। अतः वहां न केवल भूचाल से वरन् उसके पश्चात् जो बाढ़ आई उससे भी बड़ा भारी नुकसान हुआ। मै यह नही जानता कि क्या वहा अब भी वह बाढ़ खत्म हो गई है जिसने ग्राम्य प्रदेश में यह विध्वंस फैला रखा था। हवाई जहाज़ से सारी नदी दिखाई पड़ती थी जिसमें धारा के साथ बड़े बड़े पेड़ बहे जा रहे थे और वे सब सफेद दिखाई दे रहे थे मानोंकि बड़ी होशियारी से इनकी सारी छाल छील दी गई हो

और उनकी अन्दर की सतह बाहर दिखाई देने लगी हो। पर इन पेडों को किसी ने छूआ तक नही था। यह सब इसलिये हुआ था क्यो कि यह पेड पहाडों पर से पत्थर पर रगड़ खाते हुए नीचे लुढ़क रहे थे। जिससे कि उनकी सारी छाल अलग हो गई थी और अन्दर की सतह दिखाई दे रही थी। जहां कही भी नदियों के बीच में कुछ ज़मीन दिखाई पडती थी वह भी इन पेड़ों से ढकी हुई थी क्यों कि वे वहां इकट्ठे हो गये थे। कोई नही जानता कि कितने लाख पेड़ और कितने करोड़ों की कीमत के पेड़ वहां से इस प्रकार बह गये। अत. आप यह समझ सकते हैं कि उस भूचाल और बाढ़ के कारण भूमि और आदमियों का कितना नुक़सान हुआ।

अत: मै यह कहता हूं कि इन लोगो की सहायता के लिये आप बहुत अच्छा काम करते रहे हैं और मुझे यह भी यक़ीन है कि जो धन यहा से भेजा जा रहा है उसका वहा की जनता के लिये उत्तमोत्तम प्रयोग हो रहा है। देवियो और सज्जनो, आप लोगों से मिलने का और इन प्रदर्शनो का उद्घाटन करने का जो अवसर आपने मुझे दिया है उसके लिये मैं आप सब को धन्यवाद देता हू। और साथ ही आसाम पीडितों की सहायता के लिये धन इकट्ठा करने में आपने जो उत्साह प्रकट किया है उसके लिये आपको और भी अधिक धन्यवाद देता हू।

बनारसी दास चांदीवाला नेत्र चिकित्सालय

श्री बनारसी दास चांदीवाला नेत्र चिकित्सालय के उद्घाटन के अवसर पर ता० १५-४-५१ को राष्ट्रपतिजी ने कहा—

राजकुमारी जी, बहनो और भाइयो,

मुझे यह सुनकर बड़ी खुशी हुई कि गवर्नमेंट ने हमारे भाई की दरख्वास्त मान ली और यहां पर अस्पताल खोलने की सिर्फ इजाजत ही नही दी वरन् उसे अपने हाथों में ले लेने का भी निश्चय कर लिया।

यह एक पुरानी ज़मीन है और इसका कुछ इतिहास भी है जिसे थोड़ा राजकुमारी जी ने बताया। आज से नही बहुत दिनों से इस परिवार का यह खयाल रहा है कि वे जनता की इस प्रकार की सेवा कर सकें। उनकी यह इच्छा जो उनके पिताजी ने जाहिर की थी, आज पूरी हो रही है। इस अस्पताल का काम छोटे पैमाने पर होने पर भी आहिस्ता आहिस्ता आगे बढ़ रहा है और मुझे विश्वास है कि यह काम बहुत बढ़ेगा और फूलेगा और फलेगा। यहां हमारी आंखों के सामने देखते देखते ही एक बड़ी बस्ती बनने लगी है। मै समझता हूं कि एक साल खत्म होते होते एक बड़ी आबादी यहां आकर बस जायेगी। इस समय जो आबादी है वह तो है ही। उन लोगों को अस्पताल की ज़रूरत होगी। डाक्टरो की और दवा की मदद मिल सके उन्हे इसकी भी जरूरत रहेगी। ऐसी जगह में एक अस्पताल पहले से खोला जाये और ऐसे मौके पर खोला जाये जहां कि लोग आने की बात सोच ही रहे हों एक अच्छी बात है। जब मुझ से यहां आने को कहा गया तो मैं ने खुशी से यह स्वीकार कर लिया कि मैं यहां आऊं। मैं जानता हूं कि कई स्थानों में आंखों के अस्पताल खोले जा रहे हैं। यहां आंखों की बीमारियों के लिये ही नहीं और बीमारियों के लिये भी अस्पताल समय पर बन जायेंगे और हर तरह की बीमारियों का इलाज लोगों का हो सकेगा।

जैसा कि मिनिस्टर साहब ने कहा आंखों की बीमारियां कुछ लापरवाही से खराब हो जाती है और लोग आखो से महरूम हो जाते है जिसका नतीजा यह होना है कि अंधों की तादाद बढ़ जाती है। बहुतेरे तो ऐसे होते हैं कि यदि उनका इलाज किया जाये और उनकी देखभाल हो तो वह बच सकते है और उनकी आंखे भी बच सकती है। लोगों की मदद के लिये इस तरह के अस्पतालों की जरूरत यहा ही नही बहुत जगहो मे है और विशेपकर उन हिस्सों में है जहां धूप बहुत कड़ी होती है जहा सूरज की रोशनी बहुत तेज़ होती है। ऐसी जगहों में दिल्ली भी है। इस जगह अस्पताल की ज़रूरत है। मुझे खुशी है कि यह काम यहा शुरू होगा। काम छोटे पैमाने पर ही सही लेकिन जितना है उतना ही अच्छा है। अब जो नई बीमारियां पैदा होती है उन सब के इलाज के लिये पूरा सामान नही है। कोशिश बराबर हो रही है, पर हर तरह की तंगी है, पैसे की तंगी है फिर भी काम बढता ही जा रहा है। आप सब भाइयो से कहूंगा कि आप सब मिल कर बृजकृष्ण जी को बधाई दे। उन्होंने जो पुण्य का काम किया है, ईश्वर उन्हे इसका बदला अच्छा ही देगा। हरिजन कोलोनी मे उन्होने प्रार्थना भवन बनवा दिया था और गांधी जी ने उसका उद्घाटन किया था। वह तो हमेशा कायम रहेगा ही। उस समय उनकी श्रद्धा और भक्ति देखने मे आयी थी। बृजकृष्ण जी उनके साथ भी रहे है। यू तो बहुत से लोग उनके साथ रहे हैं पर उन लोगो ने उतना हासिल नही किया जितना बृजकृष्ण जी ने किया। यह बड़ी खुशी की बात है कि उन्होने एक और अच्छी चीज देकर देहली के लोगो को एहसानमन्द बनाया। हम प्रार्थना करें कि उनकी सद्बुद्धि बढती रहे और वह देश की सेवा मे आगे बढते रहें।

हिन्द कुष्ठ निवारण संघ का वार्षिक अधिवेशन

*हिन्द कुष्टनिवारण सघ के प्रथम वार्षिक अधिवेशन में २०अप्रैल १९५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा—

हिन्द कुष्ट निवारण सघ के प्रथम वार्षिक अधिवेशन में अध्यक्ष पद का भार मै सहर्ष वहन करता हूं और इस अधिवेशन मे उपस्थित होने के लिये राज्यों के जो प्रतिनिधि बड़े दूर दूर से आये है उनका और सघ के सदस्यो का मै स्वागत करता हूं। इस अवसर पर यह उचित है कि हम ब्रिटिश एम्पायर लिपरौसी रिलीफ एसोसियेशन के भारतीय परिषद् की सराहना करें जिसने कि हिन्द कुष्ठ निवारण संघ को लगभग २५ वर्ष पहले अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य करने के लिये जन्म दिया। मुझे इस बात का हर्ष है कि सरदार बलवन्तसिंह पुरी जो पुरानी संस्था के अवैतनिक मंत्री थे संघ के भी अवैतनिक मन्त्री हो गये है और इस प्रकार नयी संस्था को उनके विशाल अनुभव का लाभ मिलेगा।

राजकुमारी जी ने मेरे लिये जो प्रशंसात्मक शब्द कहे है उनके लिये मै उनको धन्यवाद देता हूं और आपको मै यकीन दिलाता हूं कि दया और सेवा के आपके काम में भाग लेने में मुझे बड़ा हर्ष है। आपकी रिपोर्ट से यह प्रकट है कि गवेषणा, शिक्षा, प्रकाशन और काम के संगठित करने मे आपने विभिन्न राज्यों में गत वर्ष में अच्छी प्रगति की है। मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि कुष्ठ की चिकित्सा अब अधिक सफल और कम खर्चीली हो रही है। मुझे इस बात की भी खुशी है कि कुष्ठ समस्या के सामाजिक और मानवीय स्वरूपों की ओर लोगों का आवश्यक ध्यान खिच रहा है। मै राजकुमारी जी के इस विचार से सहमत हूं कि गांधी स्मारक निधि

---

*अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

के प्रयोग के लिये सर्वोत्तम उद्देश्य यह होगा कि चैकित्सिक और सामाजिक दोनों ही पहलुओं में कुष्ठ पीड़ितों की सेवा की जाये। यह बात बड़े सन्तोष की है कि गांधीस्मारक निधि ने यह मान लिया है कि कुष्ठ सम्बन्धी काम उसके बड़े कामों में से एक है। मैं इस अवसर पर आपकी अध्यक्षा राजकुमारी जी को इस बात के लिये बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने इस ओर कदम बढ़ाया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा की जाने वाली गवेषणा और अध्ययन के प्रयोजनों के लिये कुष्ठ को भी मलेरिया और राजयक्ष्मा के समान ही जरूरी समझा जाये। मुझे यकीन है कि इस बारे में और कुष्ठ गवेषणा और शिक्षा संस्था की स्थापना के सम्बन्ध में उनकी जो कोशिश है वह शीघ्र ही सफल होगी।

आपका काम तो गांधी जी के मनोनुकूल है। पीड़ितों की सेवा से बड़ा काम क्या हो सकता है? तथा आजकल जो पीड़ा उनको सहनी पड़ रही है उससे भविष्य में उनको बचाने के काम से भी क्या और जरूरी और क्या अच्छा काम हो सकता है। क्या इस अवसर पर मैं चिकित्सा में लगे हुए नर नारियों से यह अपील और सामाजिक कार्यकर्ताओं से यह अपील करूं कि वे इस आवश्यक सेवा के करने के लिये जो अब तक उपेक्षणीय रही है अधिक से अधिक संख्या में आगे बढ़ें। मैं आप को वर्ष भर के अच्छे कार्य के लिये बधाई देता हूं और मेरी यह कामना है कि आप अपने शुभ कार्य में अधिकाधिक सफलता लाभ करें।

इण्डियन रैडक्रास सोसायटी और सेन्ट जौन एम्बुलैन्स एसोसियेशन का वार्षिक अधिवेशन

*इण्डियन रैडक्रास सोसायटी और सेण्ट जौन एम्बुलैन्स एसोसियेशन के वार्षिक साधारण अधिवेशन में २० अप्रैल १९५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा—

इण्डियन रैडक्रास और सेण्ट जौन एम्बुलैन्स में दिलचस्पी रखने वाले आप लोगों की इस सम्मिलित बैठक में एक बार फिर अध्यक्ष पद ग्रहण करने में मुझे बड़ी प्रसन्नता है। इन दोनों संस्थाओं की प्रगति में जनता के पर्याप्त लोग जिस सद्कामना से दिलचस्पी रखते हैं वह इसी से प्रकट है कि इन वार्षिक अधिवेशनों में उनकी उपस्थिति काफी होती है। युद्ध काल में मानवोचित सेवा के विकास का महत्वपूर्ण रूप जैसा कि राजकुमारी जी ने कहा है नये जेनेवा-कन्वैन्शन से आरम्भ होता है। यह हमारी उत्कट आशा है कि शान्ति निरन्तर बनी रहेगी। किन्तु यदि दुर्भाग्य-वश मानव जाति की इच्छाओं और प्रयासों के बावजूद क्रूर युद्ध फिर आरम्भ होता है तो रोगियों और घायलों तथा युद्धबन्दियों के साथ सुकोमल व्यवहार कराने के लिये तथा आम जनता की रक्षा के लिये यह कन्वैन्शन बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा। यह कन्वैन्शन जिन आदर्शों पर आधृत है उनके पूरा करने में हमारा पूरा सहयोग होगा इस बात का आश्वासन तो यही है कि हमारी सरकार ने इस को मान लिया है।

आम तौर पर हम यह कह सकते हैं कि इन संस्थाओं का यह उद्देश्य है कि पीड़ित मानव समाज के प्रति मानव हृदय में सहानुभूति की जो सहज भावना होती है उसको चाहे तो जो लोग सचमुच कष्ट पा रहे हैं उनकी सहायता करके और चाहे दूसरे लोगों की सहायता करने के लिये

---

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

अथवा कष्ट से बचाने के लिये संगठित क़दम उठा कर व्यावहारिक रूप दे दिया जाये । मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि इस रिपोर्ट से प्रकट है कि भूतकाल की तरह ही पिछले वर्ष में भी यही उद्देश्य इनके सब कामों को प्रेरणा प्रदान करता रहा है ।

सेण्ट जौन एम्बुलैन्स एसोसियेशन तथा ब्रिगेड दोनों ही अपनी उस विशेष प्रगति के लिये प्रशंसा के पात्र है जो सन् १९५० में उनकी प्राथमिक शिक्षा और संलग्न विषयों की प्रशिक्षा पाने वालों की संख्या में मन प्रसन्न करने वाली अभिवृद्धि से तथा नये एम्बुलैन्स विभागों का अभूतपूर्व संख्या मे निर्माण करने से हुई है । किन्तु नर्सिंग विभागों की सख्या अभी बहुत कम है और मै राजकुमारी जी की इस अपील का हार्दिक समथन करता हू कि हमारी नारियों को प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचर्या की शिक्षा लेनी चाहिये जिससे कि वे रोगियो और घायलो की सेवा करने के कार्य मे अपना स्वाभाविक और अपना उचित भाग ले सके ।

वायुआक्रमण से रक्षा करने की प्रशिक्षा को फिर से आरम्भ करने का जो निर्णय किया गया है उसका मै स्वागत करता हू । तैयार रहो यह मोटो यहां भी उतना ही ठीक है जितना कि अन्यत्र, और यद्यपि हम सब की यह आशा है कि इस सम्बन्ध मे जो कुछ बातें सीखी गयी होंगी उनको व्यवहार में लाने की भारत में आवश्यकता नही पड़ेगी तो भी ऐसी बातों के लिये प्रशिक्षित स्वयंसेवकों के तैयार रहने के महत्व और आवश्यकता को तो किसी प्रकार भी कम नही समझा जा सकता ।

सेन्ट जौन ब्रिगेड के सदस्यो की कर्तव्य के प्रति निस्पृह लगन के लिये इस अवसर पर मैं उनकी सराहना करता हूं । मुझे इस बात की खुशी है कि पिछले वर्ष मे उन्होंने सहस्रों घायलों की प्राथमिक सुश्रूषा और इसी प्रकार की सहायता की है ।

इस वर्ष मे भारत के ऊपर भूचाल और बाढ के रूप मे जो प्रकृतिजन्य विपत्तिया आयीं उनके कारण अभूतपूर्व पैमाने पर सहायता कार्य की आवश्यकता पड़ी । आज इस बात का सन्तोष है कि इस प्रकार की विपत्तियों का मुकाबला करने की अपनी सामर्थ्य को प्रकट करने के इस अवसर को इण्डियन रैडक्रास ने अपने हाथ से नही खोया । इसकी सलग्न सस्थाओ ने जो भारी सहायता उदारता पूर्वक इस जरूरत के वक्त मे की उससे रैडक्रास जगत की एकता का एक और सबूत मिल गया ।

विभाजन के दिनो से ही रैडक्रास की अन्तर्राष्ट्रीय समिति हमारी सहायता बराबर करती रही है और पूर्वी बगाल से विस्थापित बालकों के लाभ के लिये जो दो चिकित्सालय इसने चलाये है उनके लिये हम समिति के एक बार फिर आभारी है । हाल ही मे इसके प्रधान डाक्टर पाल रेगर जो यहा होकर बड़े महत्वपूर्ण मानवीय कार्य के लिये चीन जा रहे थे उनसे यहा मिल कर मुझे बडी प्रसन्नता हुई ।

जो भूतपूर्व सैनिक हर प्रकार से काम के लिये निर्योग्य हो गये है उनकी बंगलौर रैडक्रास होम में वैद्यिक चिकित्सा तथा उत्तम उपचर्या करके तथा जम्मू और काश्मीर की सेनाओं के सैनिक अस्पतालों और वैद्यकीय टुकड़ियों के लिये विशिष्ट सुविधायें प्रदान करके संस्था ने जो प्रशंसनीय कार्य किया है वह बड़ा सन्तोषजनक है । मुझे इस बात की भी बड़ी प्रसन्नता है कि अपने सीमित कोष के बावजूद संस्था इस वर्ष में भी अस्पतालों में अपनी कल्याणकर सेवा को

चलाने में समर्थ बनी रही है। अपने मैडिकल आफटर केयर फण्ड से जो सहायता इसने भूतपूर्व सैनिकों को दी है वह भी समान रूपेण महत्व की है।

रैडक्रास के किसी काम में मुझे इतनी दिलचस्पी नहीं है जितनी कि इसके प्रसूति और शिशु कल्याण विभाग के काम ने पैदा की है। स्वास्थ्य सेवा में काम करने वालों को प्रशिक्षा देकर तथा इन सेवाओं के चलाने और विकास के लिये विशिष्ट सलाह देकर यह नारियों और बालकों की अमूल्य सेवा करती रही है। वास्तव में राष्ट्र का स्वास्थ्य शिशुओं के निरोग रहने पर निर्भर करता है और यह तारीफ़ की बात है कि इस आवश्यक सेवा के सम्बन्ध में इण्डियन रैडक्रास ने बुनियादी काम किया है।

जूनियर रैडक्रास के सदस्यों की संख्या में जो वृद्धि हुई है उसे देख कर मैं प्रसन्न हूं। इस देश में रैडक्रास आन्दोलन के लिये वह शुभ शकुन है क्योंकि आज के नवयुवकों का यह सौभाग्य और कर्तव्य होगा कि वह आने वाले दिनों में रैडक्रास के झण्डे को ऊंचा उठाये रखें।

रैडक्रास संस्थाओं की लीग के प्रशासी मंडल की उपाध्यक्षा के रूप में राजकुमारी जी के निर्वाचन हो जाने की बात सुनकर मै प्रसन्न हूं। यह उनकी लम्बी मामाजिक सेवा का न केवल उचित पुरस्कार ही है वरन् जिस भारतीय रैडक्राम मोमायटी की वह अध्यक्षा है उसके लिये भी महान् सम्मान है।

मुझे यकीन है कि आप यह पसन्द करेंगे कि मै सेक्रेटरी जनरल सरदार बलवन्तसिंह पुरी की उस लगन और उत्साह के लिये तारीफ करूं जो उन्हों ने इस काम में दिखाया है जो उनके सुपुर्द था। समाप्त करने से पहले मै आपको उस श्रेष्ठ काम के लिये बधाई देना चाहता हूं जो आपने पिछले वर्ष में किया है और दुखियों की सेवा के कार्य में आप के भावी प्रयासों की सफलता के लिये मै अपनी शुभकामना प्रकट करता हूं। रैडक्रास उन गिनीचुनी संस्थाओं मे से है जिनके कारण मानव समाज को उस दुनिया में कुछ ढाढस होता है जिसमें पारस्परिक सहिष्णुता और मेल की भावना प्रतिदिन कम होती जा रही है। विश्व बन्धुत्व चाहे ऐमा भावी आदर्श है जिस तक सहज में ही आजकल नहीं पहुंचा जा सकता किन्तु इसमे कोई शंका नही है कि संसार के समस्त राष्ट्रों में लाखों की संख्या में लोगों द्वारा भाग लिये जाने वाला यह मानवीय आन्दोलन शान्ति की स्थापना और मनुष्यों में सद्भावना के लिये बड़ा उल्लेखनीय काम कर रहा है। कोई भी संस्था उतनी ही बलवती हो सकती है जितनी कि उसे सहायता और समर्थन मिलता है। इंडियन रैडक्रास सोसायटी का काम भी वास्तव में इतना अच्छा है कि इस देश के लोगों के सब वर्गों का इसे उदार सहयोग मिलना चाहिये।

बिहार अकाल पीड़ितों के लिये अन्न दान

देवास म्युनिसिपैलिटी द्वारा बिहार अकाल पीड़ितों की सहायता के लिये दिये अन्न दान को स्वीकार करते समय तारीख ८-५-५१ को ११ बजे राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम राजप्रमुख जी, देवास म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष तथा सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

मुझे आज आप सब के दर्शन यहां हुये इससे बड़ी खुशी हुई। आप जानते हैं कि मैं बहुत कम समय निकाल करके यहां चन्द मिनटों के लिये आप सब से मिलने के लिये आ गया हूं और आपने

जिस प्रेम और श्रद्धा के साथ मेरा स्वागत किया और जिस उत्साह से आपने बिहार पीड़ितों को सहायता देने का वचन दिया उसके लिये मे आप सबको हृदय से धन्यवाद देता हूं। भारतवर्ष में इस तरह का समय जब जहां आता है तो देखा जाता है कि उस जगह के लोगों के साथ लोग कितनी कितनी हमदर्दी दिखलाते हे। जब बिहार में भूकम्प हुआ उस समय मुझे इसका अनुभव हुआ था और आज भी देख रहा हूं कि यद्यपि मै ने मांगा नहीं है पर तो भी लोग अपनी खुशी से, अपने मन से इस तरह का उत्साह दिखला रहे है। यह देश के लिये एक शुभ चिन्ह है और इसके लिये मे आप सब बहनो और भाइयों को धन्यवाद देता हूं। अभी यहां मै कुछ ज्यादा नहीं कहना चाहता हूं क्यो कि समय नही है। जो कुछ मुझे कहना है वह मै आज शाम को उज्जैन में कहूंगा और मै आशा करता हूं कि आप वहां आयेंगे। बहुत बहुत धन्यवाद।

विक्रम कीर्ति मन्दिर

विक्रम कीर्ति मन्दिर के शिलान्यास के अवसर पर उज्जैन मे राष्ट्रपति जी ने कहा---

श्रीमन्त राजप्रमुख, बहनो और भाइयो,

मेरा यह परम् गौरव है कि भारतीय जनता के हृदय सिहासन पर आरूढ़ और भारतीय राजसत्ता के आदर्शप्रतीक विक्रमादित्य के कीर्ति मन्दिर का शिलान्यास मै आज कर रहा हूं। भारत मे जिन विभूतियों की कीर्ति गाथा देश की कुटिया कुटिया और साधारण से साधारण जन में फैली उन मे राम, कृष्ण और विक्रमादित्य की ही गणना की जा सकती है। भगवान राम और कृष्ण तो हमारे आराध्य देवता है और सारे देश में उन की पूजा उसी रूप मे होती है। केवल विक्रमादित्य ही ऐसे हुए जिनको हाड मांस का मानव जानकर भी देश भर में और गतशताब्दियों में आदर सहित स्मरण किया गया। उनके बारे में जो कहानिया प्रचलित हुयी वे अत्यन्त चमत्कारिक और कौतूहल पैदा करने वाली थी और पढे बेपढे सबको ही वे अत्यन्त प्रिय हो गयीं। बैताल पचीसी, तोता मैना, सिहासन बतीसी इत्यादि की कहानियां तो इतनी प्रचलित हुयी कि विदेशों मे भी वे विभिन्न रूप में फैल गयी। यहां तक कि यह कहना असत्य न होगा कि देश विदेश की भाषाओं के कहानी साहित्य का पर्याप्त भाग विक्रमादित्य सम्बन्धी कहानियों से मिल कर ही अधिकतर बना है। भारत में तो इन कहानियों को भी उसी चाव से जन साधारण की झोंपडियों और ग्राम की चौपालों पर सुना जाता है जिससे कि वहां राम या कृष्ण गाथा सुनी जाती है। जन साधारण मे ही क्यों विद्वानो में भी विक्रमादित्य दान, शौर्य, न्याय, जन पालन, दीन दुखियों के त्राता और देश और धर्म के रक्षक के नाम से प्रसिद्ध है। उन के मन में अहंकार लेशमात्र को न था और दूसरों के दुःख निवारण मे उनकी इतनी लगन थी कि उनके लिये यह कहा गया है कि :

"तस्य चेतस्यय परोयमदीय इति विकल्पो नास्ति"

अर्थात् उनके हृदय में मै और तू का भेद न था। वे इतने बड़े दानी थे कि लाख से कम देते ही न थे और उनके यहा से कोई भी निराश होकर लौट सकता ही न था। उनके लिये कवि ने कहा है कि:

"निरीक्षिते सहस्त्रं तु नियुतं तु प्रजल्पिते, हसने लक्षमाप्नोति सतुष्टः कोटिदो नृपः"

अर्थात् उनके दृष्टिपात भर से भिक्षुक को सहस्त्र प्राप्त हो जाते थे, एक वचन से दस सहस्त्र मुद्रा मिल जाती थी। एक मुस्कान से लक्ष मुद्रा प्राप्त हो जाती थी, और उनके सन्तुष्ट हो जाने पर तो करोड मुद्रा प्राप्त होती थी। दीनों की रक्षा के हेतु अपने प्राण विसर्जन करने तक को वे सर्वदा तत्पर रहते थे और इस सम्बन्ध मे एक नही अनेक कहानिया प्रचलित है। वे ऐसे वीर थे जो यह सहन नही कर सकते थे कि उन के रहने हुये कोई भी किसी प्रकार से सताया जाये। उनके अपूर्व शौर्य और दुर्बल और दीनों की रक्षा की प्रतिज्ञा को ध्यान मे रख कर ही कवि ने कहा है कि :

"साहसे उद्यमे धैर्ये च तत्समो नास्ति"

अर्थात् उन के समान किसी का साहस , उद्यम और धैर्य नही है।

खेद की बात है कि गाथाओं और साहित्य के इस यशस्वी चरित्रनायक के सम्बन्ध मे अभी तक इतिहासज्ञ अपना कोई स्थिर मत नही बना पाये है। इसमे सम्भवत विद्वानों का कोई दोष नही क्योंकि हमारे इस प्राचीन और विशाल देश के इतिहास के लिये जिसका सास्कृतिक प्रभाव आर्थिक और वाणिज्यिक सम्बन्ध और राजनैतिक सत्ता अनजानी शताब्दियों से भूमण्डल के बहुत बड़े भाग तक फैली हुयी थी, जो सामग्री होनी चाहिये वह अभी एकत्रित नही हो सकी है। अब तक हमारा देश विदेशियों के सत्ताधीन था, और यद्यपि उन्होने हमारे इतिहास निर्माण के लिये स्तुत्य प्रयत्न किया किन्तु फिर भी काम के बहुत बडे होने के कारण वह कभी पूरा नही हो सका। देश विदेश में बिखरी हुयी सामग्री के पता चलाने और सकलन का कार्य पूरा नही किया जा सका है। साथ ही कुछ विदेशी आक्रमणकारियों ने हमारे देश की अनेक ऐतिहासिक इमारतें और पुस्तकें मिटा या जला डाली और उनके इन विध्वसक कार्यो का यह परिणाम हुआ कि इतिहास के लिये बहुमूल्य सामग्री सर्वदा के लिये नष्ट हो गयी। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि ताज्जुब इस बात का नही कि हमारे देश के इतिहास के निर्माण के लिये बहुत थोडी सामग्री मिलती है बल्कि इस बात का है कि वह भी किस तरह बच गई। इसलिये कोई आश्चर्य की बात नही कि विक्रमादित्य का व्यक्तित्व और युग अभी तक इतिहास की उलझी हुयी पहेली बना हुआ है।

इस पहेली के और हमारे इतिहास की अन्य पहेलियो के सुलझाने की अब विशिष्ट आवश्यकता है। अपने भाग्य और भविष्य को सभालने के हेतु हमारे लिये यह अत्यन्त आवश्यक हो गया है कि हम अपनी सामूहिक चेतना के गठन को ठीक ठीक जान ले। जब तक हमारी बागडोर विदेशियों के हाथ मे थी तब तक तो हमारी जाति बहुत कुछ उन की इच्छा की दासी थी और हमारे जीवन की दिशा और गति उन विदेशियो की इच्छा और निर्णय पर बहुत कुछ निर्भर करती थी। उस समय हमारी अपनी ग़लती से वह हानि नही हो सकती थी जैसी कि आज हो सकती है जब अपने भाग्य निर्माण के लिये हम स्वय उत्तरदायी है। इसलिये हमें अत्यन्त सावधानी बर्तनी है कि अपनी नादानी से कही हम कोई ऐसी गलती न कर बैठे जो हमारे लिये अत्यन्त हानिकर और अहितकर हो। गलती से बचने के लिये अन्य बातों के साथ यह बात भी आवश्यक है कि हम अपने दिल और दिमाग को यथासम्भव ठीक ठीक जान ले। इन को बिना समझे हम जो भी क़दम आगे की ओर उठायेंगे—और क़दम तो हमें उठाना ही है—वह अंधेरे में अंधे की छलांग के समान होगा। इस प्रकार की छलांग लगाने का समय आज नही है। इसका कारण

तो प्रत्यक्ष ही है। किन्हीं कारणों से क्यों न हो हम आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से पिछली कई शताब्दियां बहुत कुछ व्यर्थ गंवा चुके हैं और इन शताब्दियों की कमी को हमें अब शीघ्रातिशीघ्र पूरा करना है। ऐसा करना हमारे अस्तित्व और स्वातंत्र्य दोनों को बनाये रखने के लिये अत्यन्त आवश्यक है। अतः हमारे लिये यह अनिवार्य हो गया है कि जातीय अथवा राष्ट्रीय चेतना को ठीक ठीक पहचान ले और यह समझ लें कि हमारे राष्ट्रीय दिल और दिमाग की बनत क्या है और उन के अन्तर में कौन सी छिपी हुई प्रेरणाएं और शक्तियां कार्य कर रही हैं। इन को पहचान लेने पर हम सम्भवतः यह प्रयास कर सकेंगे कि वर्तमान जगत की परिस्थितियों से उन का तालमेल कर के हम अपनी आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति कर सकें।

इस पहचान के लिये यह आवश्यक है कि हमारे इतिहास का सुस्पष्ट चित्र हमारे सामने आ जाये। उस चित्र की रेखाओं को ठीक ठीक सफाई और स्पष्टता से खीचने के लिये आवश्यक है कि इस बात का सलग्नता और स्थिर मन से प्रयास किया जाये कि हमारे देश की जितनी ऐतिहासिक सामग्री हमारे देश मे या अन्यत्र छिपी पडी है उस सब का पता चला कर उसे एकत्रित कर लिया जाये। हमारी सरकार इस बारे मे कुछ कदम उठा चुकी है और इस बात की कोशिश कर रही है कि यह सामग्री जल्द से जल्द इकट्ठी हो जाये, किन्तु यह भी आवश्यक है कि देश के विद्वज्जन और अन्य लोग भी इस बारे मे सर्वदा सजग रहे और इस सामग्री के बचाने और एकत्रित करने का प्रयत्न करते रहे। मुझे सतोष है कि आप इस बारे मे जागरूक है और इस कीर्ति मन्दिर की स्थापना के अन्य प्रयोजनो के साथ आप का यह भी प्रयोजन है कि यहा वह सब ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित करके सुरक्षित रखी जाये जो खुदाई द्वारा या अन्यथा मिले। इस स्तुत्य प्रयत्न को उस पैमाने पर जिस पर करने का आपका आरम्भिक विचार था आर्थिक कठिनाइयो के कारण आप नहीं कर पा रहे है यह जान कर मुझे खेद हुआ है। सचमुच मे हमारा यह बडा दुर्भाग्य है कि ऐसे आवश्यक कार्यो के लिये भी हमे आज आवश्यक धन प्राप्त नही हो पाता। कैसी विडम्बना है कि उस प्रदेश में जो अतुल दानी विक्रमादित्य का क्रीड़ास्थल और कार्यक्षेत्र था आज दान की धारा इतनी क्षीण हो गयी है कि उससे उस दानवीर का यह स्मृतिचिन्ह भी पूरी तरह सीचा नही जा सकता है। मुझे तो यह विश्वास नही होता कि हमारे देश के धनसम्पन्न लोग इस बारे मे उदासीन बने रहेगे और आप की सहायता के लिये अग्रसर न होगे।

मुझे विश्वास है कि अर्थाभाव तो एक न एक दिन दूर हो ही जायेगा किन्तु जिस बात की आपको विशेष सावधानी रखनी है वह यह है कि इतिहास निर्माण की दिशा ठीक ठीक बनी रहे। जैसा मै अभी कह चुका हू हमारे इतिहास का मुख्य ध्येय यह होना चाहिये कि वह हमें हमारे सामूहिक या राष्ट्रीय मन या चेतना को ठीक ठीक समझाये। मेरा विचार है कि इस प्रकार के इतिहास निर्माण में विक्रम गाथा के यथोचित निर्वचन की पूरी पूरी आवश्यकता होगी। क्योंकि हमारे देशवासियों के राजधर्म और राष्ट्रधर्म सम्बन्धी विचारों और विश्वासों के निर्माण में उस का बहुत बड़ा हाथ रहा है।

यद्यपि मेरी इतिहास में काफ़ी दिलचस्पी है किन्तु मेरे लिये यह सम्भव नही है कि मै उसकी समस्याओं के समझने या सुलझाने में काफ़ी समय खर्च कर सकूं। फिर भी विक्रम के सम्बन्ध

मे मैंने जो कुछ पढ़ा है उससे मुझे यह लगता है कि वर्तमान सामग्री के आधार पर यह निश्चय के साथ नही कहा जा सकता कि विक्रमादित्य की गाथा केवल कल्पना पर आश्रित है और उसमें कोई तथ्य ही नही है। सम्भवतः इस बात से तो सब इतिहासिज्ञों की सहमति है कि ईसा पूर्व की प्रथम शती में अवन्ति पर शकों का आक्रमण हुआ और उन्होंने उज्जयिनी पर कब्ज़ा कर लिया और कुछ वर्षों के उपरान्त उनको उज्जयिनी से हार कर भाग जाना पडा। उनको हराने वाला कौन था इस बारे में कोई निश्चित मत नही हो सका है। यद्यपि जैन साहित्य में यह कथन है कि उनको विक्रमादित्य ने हरा कर उज्जयिनी को मुक्त किया और यद्यपि कथा सरित् सागर और बृहत्कथा मजरी में भी इसका जिक्र है कि विक्रमादित्य ने उज्जयिनी पर प्रभुता की और शको को हराया, किन्तु इन कथनों के सम्बन्ध में इतिहासज्ञो को यह शका है कि विक्रमादित्य की गाथाओं के प्रचलित हो जाने के बाद इन पुस्तकों मे ये प्रक्षिप्त कर दिये गये। इस शंका के मुख्य आधार दो बातें है। प्रथम तो यह है कि आजकल विक्रम सवत् नाम मे ज्ञात सवत् को ईसा की नवी शताब्दी के आरम्भ तक विक्रम सवत् नही कहा जाता था वरन् उसका शुरू मे कृत और बाद में मालव संवत् के नाम मे उल्लेख किया जाता था। कहा जाता है कि यदि विक्रम जैसे प्रतापी राजा के द्वारा वह चलाया गया होता तो आरम्भ से ही वह विक्रम सम्वत् कहलाता। शका का दूसरा आधार यह है कि ऐसे प्रतापी राजा का कोई शिलालेख या अन्य अभिलेख भी नही मिलता और पुराणो मे भी उसका उल्लेख नही है और इसलिये यह कहा जाता है कि यह अत्यन्त अशोचनीय और अग्राह्य बात है कि ऐसे प्रतापी वीर का जिसने विजातियो से धर्म और देश दोनो की रक्षा की हो पुराणों तक मे उल्लेख न मिले। किन्तु इन दोनो बातो के आधार पर यह कहना कि विक्रम के सम्बन्ध मे शताब्दियों से प्रचलित अनुश्रुति और जनश्रुति और साहित्य मे उसके सम्बन्धी सकेत सब मनगढन्त है कम से कम मुझे उचित प्रतीत नही होता। यह ठीक है कि बहुत सी दिशाओं मे आज का अन्वेषक जिन प्राचीन बातो को जान सकता है उन्हे प्राचीन काल के विचारक न जान सकते थे। किन्तु मुझे ऐसा लगता है कि जहा तक विक्रम के ऐतिहासिक होने का प्रश्न है वहा तक उस समय के विचारकों के लिये, जब हमारे देश मे ऐतिहासिक सामग्री देश की आवहवा या विदेशी आक्रमणकारियो की बर्बरता से नष्ट नही हुई थी, यह पूरी तरह से सम्भव था कि वे यह कह सके कि वह सारी गाथा सच नही है। विक्रम को तो भगवान् समझा नही गया था और इस लिये यह बात भी न थी कि उन के बारे मे कोई शका की ही न जा सके। अत. यह बात सोचने की है कि उस काल के विचारको और विद्वानो ने इस सम्बन्ध में कोई सन्देह उठाया ही नही, और वह भी उस अवस्था में जब विक्रम सम्बन्धी गाथाए देश मे सर्वत्र ज्ञात थी। जो भी हो इस बारे मे अभी खोज की आवश्यकता है।

इस बारे मे एक बात की ओर मै विद्वानो का ध्यान आकर्षित करना चाहता हू। हमारे पास इस समय जो ऐतिहासिक सामग्री वर्तमान है उस मे प्रत्यक्ष है कि मध्यपूर्व से भारत के व्यापार का एक प्रमुख केन्द्र उज्जयिनी थी। अतः मै यह समझता हू कि वहा मध्यपूर्व अर्थात् अरब उपद्वीप, मिश्र, आबीसीनिया और फ़ारस के लोग आते रहे होंगे और यह सम्भव है कि इन देशों के प्राचीन साहित्य की खोज से उज्जयिनी और उस के शासको के सम्बन्ध में सामग्री मिले। इस साहित्य की हमारे यहां के विद्वानों ने किस सीमा तक खोज की है यह मै निश्चयपूर्वक नही जानता किन्तु ज्ञानेन्दुदेव सूफ़ी के अन्वेषणों के आधार पर श्रीयुत ईश्वरदत्त शास्त्री ने अप

लेख मे इस्तम्बोल के प्रसिद्ध राजकीय पुस्तकालय मक़तब-ए-सुल्तानियां में वर्तमान सुल्तान सलीम द्वारा किसी प्राचीन प्रति के आधार पर लिखवाय एक ग्रन्थ सेअरुल उक़ोल का ज़िक्र किया है। उन का कहना है कि इस मे हजरत मुहम्मद के युग से पहले के अरब कवियों से लेकर हारुलरशीद के जमाने के कवियों की कविताओ का सग्रह है और इस का सग्रहकर्ता हारुंलरशीद का दरबारी कवि अबू आमीर अब्दुल असमई कहा जाता है। उस ग्रन्थ से उन्होंने एक कविता उद्धृत की है और बताया है कि वह कविता हजरत मुहम्मद से १६५ वर्ष पूर्व हुए एक अरबी कवि की है और जिस का आशय यह है कि "वे लोग धन्य है जो राजा विक्रम के राज्यकाल में उत्पन्न हुये जो बडा दानी, धर्मात्मा और प्रजापालक था।" यद्यपि यह उद्धरण ईसा पश्चात् पाचवी शती का है किन्तु इस से, यदि यह ठीक है तो, यह पता तो अवश्य चलता है कि विक्रम की गाथा उस समय उस दूर देश मे प्रचलित थी और मुझे ऐसा लगता है कि यदि इस बारे मे मध्य पूर्व एशिया के साहित्य मे विशिष्टतया और मध्य एशिया और स्वर्ण द्वीपों के साहित्यों, गाथाओं इत्यादि में साधारणतया और खोज की जाये तो सम्भवतः इस बारे मे ठीक ठीक निर्णय के लिये सामग्री मिल जाये। गुणाढ्य की बृहत्कथा के लिये भी और खोज करने की आवश्यकता है।

इस बारे मे और कुछ मै नही कहना चाहता किन्तु मै यह जरूर समझता हू कि हम सब का और विशेषतया वर्तमान युग के राजनायकों और प्रशासकों का यह धर्म है कि वे भारतीय राजधर्म के इस जगमगाते सूर्य से अपने पथ आलोकित कर ले और उसके चरणचिन्हों पर चल कर जनता की उसी लगन, उसी त्याग और उसी समझदारी से सेवा करे जैसी सेवा करके विक्रमादित्य भारत के जन जीवन का अभिन्न अग बन गये। आज भारत के सामने जो समस्याए है उन के सुलझाने के लिये विक्रमादित्य के जैसा ही उद्यम, उदारता और उमग जननायकों और जनता जनार्दन के मन मे चाहिये।

आशा है कि यह कीर्ति मन्दिर विक्रमादित्य के आदर्श का अक्षय श्रोत बन कर इस पुण्य भूमि को पुनः सिंचित करेगा और प्रत्येक भारतीय के हृदय को उस आदर्श से भर कर विक्रम को पुनः भारतीय इतिहास का देदीप्यमान सूर्य और अटल ध्रुवतारा बना देगा और वह अवस्था पैदा करने मे सहायक होगा जिसमे विक्रम के लिये कवि का यह कथन फिर सत्य हो गया होगा—

न हो भले, मिट्टी पत्थर पर,
उसके पदचिन्हो की रेख,
हृदय हृदय के ऊर्ध्व लोक मे,
अक्षय है उसका अभिलेख।

. . . . . .

समाश्वस्त कुटी कुटी का,
भवन भवन का पवनाकाश,
वह आदित्य उदित फिर होगा,
प्रकटित करके पूर्व प्रकाश।

महाराजा माधवराव की मूर्ति का अनावरण

महाराजा माधवराव शिन्दे की मूर्ति के अनावरण संस्कार के अवसर पर ता० ९ मई १९५१ को उज्जैन मे राष्ट्रपति जी ने कहा—

श्रीमन्त राजप्रमुख, वहनो और भाइयो,

मुझे इस बात का हर्ष है कि शिंदे कुल के रत्न स्वर्गीय महाराजा माधवराव सिंधिया के इस स्मृति चिन्ह का अनावरण संस्कार मै आज कर रहा हूं। शिंदे कुल का तो भारतीय इतिहास में अपना निजी स्थान है। मराठा तन्त्र को भारत भर में और विशेषतया उत्तर भारत में फैलाने तथा मराठा राज्य की ढाल बने रहने का सौभाग्य और गौरव उसे प्राप्त था। मराठा तन्त्र को पानीपत मे लगे साघातिक आघात के परिणामों से वचाने और उसको पुनः शक्तिशाली और गौरवशील बनाने का श्रेय भी होल्कर कुल के साथ साथ शिंदे कुल का था। अतः उस कुल मे जन्म लेने के नाते ही उनका इतिहास मे अपना स्थान हो जाता। किन्तु उनकी अपनी योग्यता, क्षमता और प्रजापालन ने तो मध्य भारत के इतिहास में उनके स्थान को और महत्वपूर्ण बना दिया है। उनकी कीर्ति तो मध्य भारत के इतिहास मे है और आगे भी रहेगी। आज इस स्मारक की स्थापना द्वारा आप उनके नाम को उतना यशान्वित नही कर रहे जितना कि उनके नाम से अपने को आदृत कर रहे हैं। आपका कर्तव्य था कि आप उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करें और यह ठीक ही है कि आपकी कृतज्ञता का वाह्य रूप यह सुन्दर स्मारक है।

किन्तु इतना कर देने से ही आप के कर्तव्य की इतिश्री नही हो जाती। वह तो तभी पूरा होगा जब आप उन आदर्शों को अपनायेंगे जिन से स्वर्गीय महाराजा का जीवन प्रेरित रहा था। उनके जीवन पर दृष्टिपात से पता चलता है कि उनके जीवन का आदर्श था जनसेवा। अपने जीवन मे उन्हें भोग विलास के सब साधन प्राप्त थे। उनके पास अक्षय कोष था, एकछत्र राज्य था, रूप था और यौवन था। नीतिकार के कथन के अनुसार इनमें से एक ही किसी भी व्यक्ति को पागल बनाने के लिये पर्याप्त है, और चारों के ही साथ होने पर तो कोई ही आत्मिक पतन से बच पाते है। किन्तु स्वर्गीय महाराज ने भरे योवन मे राज्यसत्ता और अपरिमित धन-राशि के हाथ मे आने पर भी विलास की वात न सोची वरन् अपने को राज्य की हर प्रकार की उन्नति के पुण्य कार्य मे लगा दिया। ३१ वर्ष उन्होंने स्वयं शासन किया। सर्वदा ही वे प्रजापालन के कार्य मे रत रहे। उन्होंने राज्य की आर्थिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक यानी कि हर क्षेत्र में ही उन्नति की। अपनी कर्तव्यपरायणता के कारण वे प्रजा के स्नेहभाजन बने और साथ ही महाप्रभुसत्ता के भी। मै समझता हू कि उनके जीवन की इस अनवरत कर्तव्य साधना का आधार और प्रेरक शक्ति उनका यही विश्वास था कि जीवन का चरम ध्येय भोग नही जनसेवा है।

इसी अदर्श से प्रेरित होने के कारण महाराजा होने के पश्चात् उन्होंने अपना सर्वप्रथम काम यह समझा कि अपने राज्य के विभिन्न शासन विभागों का पुनर्संगठन करें और राज्य मे ऐसी प्रशासन व्यवस्था क़ायम कर दे जो अपनी कार्यकुशलता और ईमानदारी के लिये प्रसिद्ध हो। इस ध्येय की प्राप्ति के लिये उन्होंने पर्याप्त परिश्रम किया और बहुत हद तक सफलता भी पायी। साथ ही वह इतने दूरदर्शी भी थे कि उन्होंने इस बात का प्रबन्ध किया कि जन हित के लिये जो सुधार और नई व्यवस्था वह कर रहे थे उसके चलाने में आगे किसी समय आर्थिक

कमी के कारण कोई कठिनाई उत्पन्न न हो, और इसलिये उन्होंने राज्य के अतिरिक्त धन को प्रगतिशील उद्योग-धन्धों मे लगाया जिन से कि राज्य को बराबर आमदनी होती रहे। उन्होंने यह भी व्यवस्था की कि बची हुई आय का लगभग २० या २५ प्रतिशत भाग हर साल जमा रखा जाये और उसी से बाद मे आबपाशी, शिक्षा और दुर्भिक्ष निवारण के लिये आवश्यक निधि प्राप्त हो सके। इसी बचत के कारण ही उनके लिये यह भी सम्भव हो सका कि बिना अतिरिक्त कर लगाये वह राज में रेल लगायें और नई नई फ़ैक्टरी और कारखाने खुलवायें। जन हित और जन सेवा के प्रेम से ही प्रेरित होकर उन्होंने कुछ सीमा तक राज्य की जनता के हाथ में अधिकार दिये और विधान सभा तथा स्थानीय सस्थाओ की स्थापना की, और क़ानून विभाग को कार्यपालिका विभाग से अलग कर दिया।

आज यद्यपि राजनैतिक स्थिति बदल गई है तो भी हम सब के लिये उनकी जन सेवा के उच्च आदर्श का महत्व यदि अधिक नही तो उतना तो है ही जितना कि स्वर्गीय महाराजा के युग मे था। जनसाधारण के लिये तो यह बात लागू है ही किन्तु मेरा विचार है कि उससे भी अधिक यह उन नरेशो और नरेशपुत्रो के लिये लागू है जो कल तक हमारे यहा के देशी राज्यों के प्रभु और शासक थे। इस अवसर पर मै यह उचित समझता हूं कि भारतीय नरेशों और उनके उत्तराधिकारियों और सम्बन्धियो को उस सहयोग के लिये बधाई दूं जो उन्होने स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई पटेल के साथ भारत के राजनैतिक एकीकरण के ध्येय की प्राप्ति के लिये किया। राजनैतिक क्षेत्र मे भारत की ऐतिहासिक दुर्बलता यही थी कि सास्कृतिक, आर्थिक और भौगोलिक दृष्टि से एक होते हुए भी वह अनेक राज्यों में बंटा हुआ था और ये राज्य सकट पड़ने पर भी शत्रु का मुक़ाबला करने के लिये आपस में एक न हो पाते थे। यदि कही शताब्दियों तक खोई हुई अपनी स्वतन्त्रता के पुनः पाने के पश्चात् भी भारत मे यह राजनीतिक दुर्बलता बनी रहती तो उस स्वतन्त्रता के पुनः खो जाने का भय सदा बना रहता। सरदार वल्लभ भाई जिनका जीवन स्वतन्त्रता प्राप्ति के सघर्ष मे बीता था इस बात को भली भांति जानते थे कि यदि भारत के उदर में छोटे छोटे सैकड़ों पूर्णप्रभुता सम्पन्न राज्य बने रहे तो प्रति क्षण ही इस बात की सभावना बनी रहेगी कि कही स्वतन्त्रता देवी जिन्हे प्रसन्न करने के लिये उन्होने और उनके अनेक भाई बहनों ने अपने जीवन को होम कर दिया था हमारे पारस्परिक द्वेषों, सघर्षो और विछिन्नता से रुष्ट होकर हम से पुनः विदा न हो जाये। इसी लिये उन्होने अपना यह ध्येय बनाया कि भारत मे केवल एक प्रभुता सम्पन्न राजनैतिक तंत्र हो और उस में सब देशी राज्य विलीन हो जाये।

इसी प्रकार के ध्येयसाधन के लिये अन्य युगों और देशों में राजनायकों को युद्ध करने पड़े थे। इस ध्येय की प्राप्ति के लिये शस्त्र प्रयोग करने की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही बिस्मार्क ने यह कहा था कि उसके युग की समस्याओं का हल केवल रक्त और इस्तपात के द्वारा ही हो सकता है। स्वयं उसे जर्मनी को एक करने के लिये दो महत्वपूर्ण युद्ध लड़ने पड़े थे। भौगोलिक और कुछ हद तक राजनैतिक दृष्टि से भारत के एकीकरण की समस्या तो जर्मनी से कही अधिक विस्तृत थी। किंतु वह जिस शांतिपूर्ण ढंग से हल हो गई वह अनुपम और अपूर्व था। उसका श्रेय हमारे नरेशों और उनके संबंधियों और सलाहकारों को भी है।

मेरा विचार है कि भारत निर्माण के इस महान यज्ञ में अपनी आहुति डाल कर उन्होंने अपनी उदारता और कर्त्तव्य साधना का उदाहरण दिया है। और इस के लिये वे हम सब के बधाई के पात्र है। किंतु साथ ही मैं उन से यह भी कह देना चाहता हूं कि भारत निर्माण का महायज्ञ अभी समाप्त नहीं हो गया है। वह तो तब तक जारी रहेगा जब तक कि हमारे इस ऐतहासिक देश में वे सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियां पैदा न हो गई होंगी जिनमें भारत में रहने वाले या जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपनी उमंगों को पूरा करने और अपने जीवन को सफल और सार्थक करने की पूरी पूरी सुविधा होगी। आज हम में से किसी के लिये भी—और विशेषतया उन लोगों के लिये तो हर्गिज़ नही जिन्हें शासनतंत्र के चलाने और जन सेवा करने की परम्परागत अथवा वैयक्तिक योग्यता, अनुभव और स्वभाव है—यह क्षण भर के लिये भी उचित नही कि वह इस यज्ञ में अब तक की दी हुई आहुतियों को ही पर्याप्त समझकर अपना हाथ खीच लें। अभी इस बात का समय नही आया कि हम में से कोई भी अपना समय या शक्ति इसी बात के सोच विचार में लगाये कि इस यज्ञ में उस ने जो आहुतियां अब तक डाली है उन का क्या मूल्य है, और उस में सहयोग करने के लिये उस को अपने आराम को, अपनी आशायश को, अपनी निजी सुविधा को कितनी हद तक छोड़ना पडा है। इस प्रकार के सोच विचार मे लग जाने से हमारे निर्माण यज्ञ में बहुत कुछ शिथिलता पड़ जायेगी और यह भी संभव है कि यज्ञ करने वालों मे आपस में भी कुछ मतभेद, द्वेष या विरोध पैदा हो जाये। जिन परिस्थितियों में हम आज है उन मे क्षण भर के लिये यह बात गवारा नही की जा सकती है कि इस यज्ञ में किसी प्रकार की भी बाधा पड़े। आप सब को यह ज्ञात है कि अर्थ और सस्कृति दोनों की ही दृष्टि से हम कई शताब्दियां परवश होने के कारण व्यर्थ खो चुके है और अपना अस्तित्व और अपनी आज़ादी बनाये रखने के लिये हमारे लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम आगे इस प्रकार के विद्वेषात्मक कलह में एक क्षण भी न गंवायें। अतः यदि आज कोई भी, चाहे फिर वह साधारण नागरिक हो अथवा संभ्रम नागरिक, यदि इस यज्ञ में किसी प्रकार की भी गडबड़ या बाधा डालेगा या डालने का प्रयास या प्रबन्ध करेगा तो उसको हम सहन नही कर सकेंगे। यह ऐसी बात है जिसे प्रत्येक व्यक्ति को गाठ बांध लेना है। हम मे से हरेक को यह समझ लेना है कि हम सब को आगे बढ़ना है। विधाता ने मानव के भाग्य में यह अमिट रेखा खीच दी है कि उसके कदम लौट नही सकते। वे तो आगे ही पड़ेंगे चाहे फिर उसे व्यतीत समय और बिछुड़ा हुआ प्रदेश कितना ही प्रिय और सुहावना क्यों न लगता हो। मै समझता हूं कि भाग्य के इस अटूट विधान को हमारे यहां के सब लोग चाहे फिर वे कोई भी क्यों न हों आज अच्छी तरह से पहिचान लेगे। जो स्थितियां बदल गई हैं, जो व्यवस्था समाप्त हो गई है वह अब लौट कर नही आ सकती। यदि कोई भी उनको फिर से लौटाने का प्रयास करेगा तो वह अपने लिये केवल विपत्ति और विफलता का ही आहवान करेगा। वह प्रयास उसी तरह विफल होगा जैसा कि पहाड़ से सर टकराना व्यर्थ सिद्ध होता है। अतः मैं यह अपील करता हूं कि इस प्रकार के प्रयास की बात सोचने में हमारे देश का कोई भी व्यक्ति और कोई भी वर्ग अपना समय व्यर्थ नष्ट न करे। इस के विपरीत सब का यह धर्म है कि अपनी शक्ति के अनुसार वह इस यज्ञ में आहुति देते रहे। मै समझता हूं कि इस यज्ञ की सफलता में वे लोग कही अधिक प्रभावी आहुति डाल सकते है जिन्हे शासन और राजनीति का परम्परागत अथवा वैयक्तिक अनुभव है। इस दृष्टि से विलीन देशी राज्यों के राजनायक इस यज्ञ मे अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग ले सकते हैं।

हमे इस समय सुयोग्य प्रशासकों की पर्याप्त आवश्यकता है। भारतीय जन जीवन में आज राज्य का भाग दिनोदिन बढ़ता जाता है। अतः हमें इस बात की दरकार रहती है कि राज्य के विभिन्न कार्यो को सुचारु रूप से चलाने के लिये हमे योग्य और अनुभवी व्यक्ति मिले। विलीन देशी राज्यो के नरेशो और उनके राजपुत्रों मे से अनेकों को इस प्रकार का अनुभव होगा। हमारा यह विचार रहा है कि हम उनके अनुभव और योग्यता का पूरा लाभ उठायें और उनको केन्द्रीय अथवा राज्यिक प्रशासन में अपनी प्रतिभा प्रकट करने की पूरी पूरी सुविधा दें। किन्तु हमारे राज काज का क्षेत्र कितना ही व्यापक क्यों न हो वह इतना अपार नही है कि उसमे विलीन राज्यो के सब नरेशो को अपनी प्रतिभा प्रकट करने की सुविधा मिल जाये। पर राजनतिक क्षेत्र न तो जीवन का सर्वोत्तम क्षेत्र ही है और न अन्तिम क्षेत्र। सच तो यह है कि राजनैतिक क्षेत्र के झंझावाती वातावरण मे जीवन के सर्वोत्कृष्ट गुणो को व्यक्त करने की वैसी स्थायी और व्यापक सुविधा नही होती जैसी कि सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्रों मे होती है। अतः उन क्षेत्रों मे अपनी प्रतिभा लगाने का स्वर्णिम अवसर विलीन रियासतों के नरेशों और उनके संबंधियो के सामने है। इन क्षेत्रों मे उन की प्रतिभा के प्रयोग की कोई सीमा नही है। जैसा सर्वज्ञात है भारत आज सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से बहुत पिछड़ा हुआ है और आज इस बात की बड़ी भारी आवश्यकता है कि इन दोनों दिशाओं मे जी तोड़ परिश्रम करके हम आधुनिक औद्योगिक स्तर पर शीघ्रातिशीघ्र आ जाये। मेरा विचार है कि बहुत हद तक हमारे विलीन राज्यो के नरेश इन क्षेत्रो मे भी अच्छा खासा कार्य कर सकते है। उनके पास पूजी है और उनको विरासत मे मिला है प्रशासनीय अनुभव और क्षमता। यदि वे अपनी शक्ति को इस ओर लगाये तो वे यश और प्रभाव तो लाभ करेगे ही साथ ही देश और जाति की भी भारी सेवा कर सकेगे।

नव संस्कृति के निर्माण मे भी वे भारी कार्य कर सकते है। उनके पास अवकाश है, धन है और अन्य सब सुविधाये है। संस्कृति का प्रतिपालन और प्रोत्साहन उनकी कुल परम्परा का प्रधान अंग रहा है। अतः उनके लिये यह सुगम है कि देश मे नव संस्कृति की वे प्रेरक शक्ति बन जाये।

इन दोनों दिशाओं मे ही भाग्य और भविष्य उनका आह्वान कर रहा है और मैं समझता हूं कि वे भाग्य के इस इशारे की ओर उदासीन न रहेगे। कम से कम इस देश की राजकीय परम्परा का तो यही तकाजा है कि वे जन सेवा के किसी भी क्षेत्र में अपने को लगादें। हमारे देश में राजा को प्रजा का वेतन भोगी सेवक समझा जाता था और उससे यह अपेक्षा रखी जाती थी कि वह अपनी सारी शक्ति प्रजारंजन मे लगायेगा। हमारे देश के राजाओं में से अनेकों ने इसी आदर्श के अनुसार आचरण किया और खास तौर से जिस विभूति की स्मृति में आज का उत्सव है उन्होंने तो इसको पूरी तरह से निभाया। किंतु निकट भूतकाल की परिस्थितियों में प्रजारंजन का जो तरीका था वह आज की बदली हुई परिस्थितियों में उपयुक्त नही है। आज तो राजा को वैसा ही प्रजारंजन करना है जैसा विदेहराज जनक करते थे। अकाल के समय वे हाथ में हल लेकर खेत जोत सकते थे क्योंकि वे राजा और प्रजा में कोई विशेष अन्तर न समझते थे। लोकतन्त्र के वर्तमान युग में सर्वोत्तम बात यही होगी कि प्राचीन राजवशों के वर्तमान वंशज भी महाराज जनक के चरण चिन्हों पर चलना अपना कर्त्तव्य समझें। अपने ढंग से स्वर्गीय महाराजा माधव राव

महाराजा जनक के इसी आदर्श पर चले और मै समझता हूं कि उनकी स्मृति के प्रति हम सः तभी सच्चा आदर प्रकट करेंगे जब हम भी उसी आदर्श को अपने जीवन का ध्रुव तारा बनाले।

इन शब्दो के साथ मै यह अनावरण सस्कार सपादन करता हूं।

उज्जैन में नागरिक अभिनन्दन

उज्जैन म्युनिसिपैलिटी द्वारा बिहार अकाल पीड़ितों के लिये दिये अन्न दान को स्वीकार करते समय तारीख ९-५-५१ को ९-३० बजे दिन में राष्ट्रपति जी ने कहा—

उज्जैन म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष महोदय, दूसरे सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

जिस प्रेम और श्रद्धा के साथ आपने मेरा आदर और स्वागत किया है उसके लिये मै आप सब को धन्यवाद देता हू। मेरे लिये यह जरूरी नही कि इस प्राचीन नगरी के इतिहास के सबंध में मै कुछ नई बात आपको बताऊं। इसका इतिहास तो भारतवर्ष के इतिहास के पन्ने पन्ने मे लिखा हुआ है। जैसे जैसे हमारी सास्कृतिक उन्नति होगी और हम अपनी प्राचीन चीजों को फिर से समझेगे वैसे वैसे आपके स्थान का महत्व और भी बढेगा। मुझे आशा है कि वह दिन दूर नही है जब फिर से यह एक ऐसा विद्यापीठ बन जायेगा जो हमारी संस्कृति का केन्द्र बनकर हमेशा के लिये भारतवर्ष का मुख उसी प्रकार उज्ज्वल करे जैसे कि प्राचीन काल में इस नगरी ने किया था। मै अपेक्षा रखता हू और आशा करता हू कि श्रीमन्तो से लेकर यहा साधारण लोग तक इस काम मे पूरी सहायता करेगे। यही बात नही कि इससे लोगों से मदद मिलेगी बल्कि मै तो यह भी आशा करता हू कि यहा की सरकार भी आपको इस काम मे सहायता देगी। इसके लिये आप को प्रयत्नशील होना है। यह काम इतना बडा है कि मुह से कह देने से यह पूरा नही होगा। इस मे तो परिश्रम की जरूरत है। मुझे आशा है कि जिस लगन और प्रेम के साथ आप यह काम शुरू कर रहे है उसी लगन और उत्साह के साथ आप इस काम में लगे रहेंगे। यदि आप ने ऐसा किया तो आपको सुन्दर फल मिलेगा।

मै उन सब बहनो और भाइयों को हृदय से धन्यवाद देता हूं जिनके हृदय मे भूख पीड़ित लोगों के लिये इस तरह की भावना और उत्साह है और जो इस तरह से सहायता देने के लिये आगे बढ़े है। कल जब मै यहा आ रहा था तो देवास के भाइयों और बहिनो ने भी उसी प्रेम और उत्साह के साथ बिहार के पीड़ितों के लिये अन्न दान दिया था जिस प्रेम और उत्साह के साथ उज्जैन के लोगों ने दान दिया है। जब हम स्वतंत्र हो गये है और सारा देश एक हो गया है तो इस तरह की भावना स्वाभाविक ही है क्योंकि जिस तरह मनुष्य के शरीर के किसी अंग में कोई पीड़ा होती है तो उससे सारे शरीर को कष्ट होता है उसी तरह देश के किसी भाग मे कोई मुसीबत आती है तो उसका असर सारे राष्ट्र पर पडता है। मैं उसी भावना से इस दान को स्वीकार करता हूं जिस भावना से प्रेरित होकर आपने उसे दिया है। मै आशा करता हूं कि आप उसी भावना से काम करते रहेंगे जिस भावना से काम कर रहे हैं। यदि आप ऐसा करते रहे तो आप वही शक्ति हासिल करेंगे जो शक्ति प्राचीन काल मे आपकी थी और सामाजिक, सांस्कृतिक तथा अन्य सभी क्षेत्रों में आप बढ़ते जायेंगे। बहुत बहुत धन्यवाद।

कस्तूरबा सेवा सदन

तारीख ९ मई १९५१ को साढ़े चार बजे शाम में उज्जैन के नजदीक फ़तीयाबाद में कस्तूरबा महिला सेवा सदन का उद्घाटन करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा –

श्रीमन्त राजप्रमुख जी, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि मुझे यह अवसर मिला कि मै यहां आकर यहा जो काम हो रहा है उसको थोड़ी देर के लिये भी देख सकू। एक समय था जब इस बात का मुझे थोड़ा शक हो गया था कि मै यहां आ सकूगा या नही आ सकूगा पर आप लोगों के आग्रह को मानकर मुझे यहां आना ही पड़ा और मै ने आना भी खुशी खुशी मंजूर किया। आज भारतवर्ष में इस बात की बहुत जरूरत है कि जगह जगह पर इस तरह की संस्थायें कायम हों जो हमारे लोगों के अन्दर नयी जागृति पैदा करे तथा शिक्षा प्रचार करे और जो स्वराज्य प्राप्ति के बाद हमारे हाथो में जो नये अधिकार आगये है उनको समझने और बरतने की शक्ति उन मे पैदा करें। अब इस बात की ज़रूरत है कि सच्चे नागरिक, स्त्री और पुरुष, सारे देश में तैयार किये जायें। हमारे देश के बहुत दिनो तक परावलम्बी रहने की वजह से हम इन बातों को भूल भी गये है और ज़रूरत है कि हम सब चीजो को नये सिरे से सीखे और लोगो को जागृत करे। जो संस्थायें इस तरह की शिक्षा देती हं वे बहुत ही बहुमूल्य वस्तु है। उनकी रक्षा करना और इस तरह का काम करना जिसमें सभी लोग सुखी और उन्नत हो सबसे बडा हमारा कर्त्तव्य है। इस ओर पुरुषों को काम करना है और––पुरुषो से कम नही––स्त्रियो को काम करना है क्योकि स्त्रिया माता होती है और बालक बचपन मे जो माता के दूध के साथ पान करता है वह उसकी सारी जिन्दगी में एक सम्बल बना रहता है। इसलिये हमारे देश की स्त्रियो को सुयोग्य होना चाहिये जिसमे वे ऐसी सतान पैदा करे जो देश की भलाई करे, जो देश की सब प्रकार से तरक्क़ी करे और जिन मे बुद्धि हो, शक्ति हो, उद्यम हो और संयम भी हो। इसम इस तरह की संस्थाओ का ही काम है कि सहायता दे। इसलिये जिसके द्वारा हो, चाहे सारे देश की मदद से हो चाहे स्थानीय लोगों की मदद से हो, व्यापारियों की मदद से हो चाहे राजाओ और श्रीमन्तो की मदद से हो इस तरह की संस्थायें कायम होनी चाहियें और उनको सबकी सहायता और मदद मिलनी चाहिये। मै आशा करता हूं कि यह संस्था जिसे कायम हुए अभी थोडे दिन हुए है और जिसने इतना काम कर लिया है और जो श्रीमन्त महारानी साहिबा के हाथों स्थापित हुई जिन्होने इसे सहायता देना अपना कर्त्तव्य माना और भी उन्नति करेगी। गांधी जी बराबर कहा करते थे और मेरा भी विश्वास है कि कोई भी संस्था पैसे की कमी की वजह से नही मरती। पैसे की कमी की वजह से कोई सस्था तभी मर सकती है जब उसमें काम करने वाले लोग योग्य स.ाित न हों और जब उसके चलाने वाले लोग अपने कर्त्तव्य से च्युत हो जाते है। जब तक जनता उसकी आवश्यकता को महसूस करती है, जब तक उसका काम ठीक से चलता रहता है तब तक जनता हर तरह से उसकी सहायता करती रहती है। इसीलिये गांधीजी इस बात का विरोध किया करते थे कि किसी भी संस्था के लिये एक साथ धन जमा करके रख दिया जाये क्योंकि कोई भी संस्था जो जनता के सामने अपनी उपयोगिता सिद्ध करके चन्दे पर ज़िन्दा रहती है उसमें जीवन रहता है। इसलिये आपने जो अभी कहा कि लोगों से मांग करके ही आप

सब काम चला रहे है यह बात संस्था की नयी जिन्दगी की निशानी है और इससे मै खुश हूं। मैं आशा करता हूं कि आपका प्रयत्न और भी सफल होगा और स्त्री शिक्षा का काम, ऐसी स्त्रियां जो निःसहाय है उनकी शिक्षा का काम और भी आगे बढेगा और सफल हो सकेगा।

इन्दौर में नागरिक अभिनन्दन

तारीख ९ मई १९५१ को इन्दौर म्युनिसिपैलिटी द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब में तथा आ० भा० औद्योगिक प्रदर्शिनी का उद्घाटन करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा--

श्रीमन्त राजप्रमुख, इन्दौर नगरपालिका के अध्यक्ष और दूसरे सदस्यगण, प्रदर्शनी के अध्यक्ष और दूसरे सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

मै आपका हृदय से धन्यवाद उस प्रेम और श्रद्धा के लिये करता हूं जिसके साथ आपने मेरा स्वागत किया है। मै मानता हूं कि इस प्रकार का स्वागत जो मुझे सभी जगहो में पाने का सौभाग्य प्राप्त होता है वह कुछ मेरे लिये नही है बल्कि उस पद के लिये है जिस पर आप सब ने मिलकर मुझे आज बैठा दिया है और ऐसा ही होना भी चाहिये।

भारत आज बहुत दिनों के बाद एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक राजनैतिक छत्र के अन्दर पहले पहल आया है और जितनी छोटी बड़ी रियासतें और बृटिश राज्य के सूबे अलग अलग काम कर रहे थे उन सब को मिला कर एक संविधान के अन्दर हम ला सके है। यह बडे सौभाग्य की बात है। जैसा मैंने और कई मौको पर कहा है इस स्थिति को लाने मे देश के सभी लोगों का हाथ रहा है। जनता ने इसके लिये प्रयत्न किया और जहा तक उन से बन पडा उसके लिये त्याग किया। हमारे देशी नरेशों ने जनता का साथ दिया और आज सब के प्रयत्न का फल है कि सारा भारत एक शासनसूत्र मे बंधकर एक संविधान के अन्दर काम कर रहा है। उसके प्रतीकस्वरूप मुझे इस स्थान पर जिस पर मै बैठा हूं बैठाकर सब ने मेरी इज्जत बढायी है। इसमे किसी व्यक्ति विशेष की बात नही है। सारे देश का जो प्रतीकमात्र है उसके लिये इज्जत हर दिल मे है और होनी चाहिये।

इस प्रकार से जब यह देश एक हो गया है तो उसके सामने तरह तरह के सवाल भी आ गये है और इस तरह के जटिल प्रश्न भी उपस्थित हो गये है जिनको सुलझाना आसान नही है। जब से हमने स्वतन्त्रता पायी तब से आज तक हम एक दिन भी चैन से नही बैठ पाये हैं और ऐसी आशा भी नज़र नही आती है। इस देश में इतना बडा परिवर्तन हुआ एक प्रकार की क्रान्ति हुयी और सब लोग जो जहां पर थे आनन्द से बैठे रहे, न किसी को किसी प्रकार का कष्ट हुआ और न किसी को चिन्ता करने की आवश्यकता हुयी। मगर यह तो महात्माजी की तपस्या का फल था कि इतनी बड़ी क्रान्ति के लाने में कोई खून नही बहा। मगर उसके बाद एक दूसरे कारण से देश के अन्दर एक बड़ी उथल पुथल, एक बड़ी क्रान्ति देखने में आयी। यह उसी का फल है कि हम अभी तक अपने कामों को ठीक तरह से अंजाम नहीं दे पाये है और अभी भी हम इतने रुपये

लगा रहे है। मै जब से मध्य भारत मे घूम रहा हू तभी से यहां भी मै देख रहा हूं कि निर्वासित भाई जो अपना स्थान छोडकर भारत मे आये बडी संख्या में आपके इलाके मे भी है। इसी से आप समझ सकते है कि यह कितना बड़ा प्रश्न हमारे सामने आया जिसमें केवल हजार दो हजार निर्वासितो को बसाने की ही बात न थी मगर जिसमें प्रायः ८० लाख लोगों को भारत में बसाने का प्रयत्न करना था। वह प्रयत्न अभी तक जारी है, वह पूरा नहीं हुआ है। इस बीच मे जो लडाई हुयी थी उसका भी असर हमारे देश में पड़ा जिसके कारण और कई तरह की मुसीबत हमारे यहा बढ़ गयी। सभी देशों मे कुछ न कुछ मुसीबतें आयीं मगर दूसरे देशो मे जो हुआ वह न तो हम जानते है और न हमें जानने की जरूरत है। जो हमारे अपने सिर बीत रहा है वही हमारे लिये काफी है। अन्न का कष्ट, कपडे का कष्ट और दूसरी आवश्यक वस्तुओं का कष्ट सभी जगहो के लोग महसूस कर रहे है। यह ईश्वर की दया है कि आपका यह प्रान्त ऐसा अच्छा है कि जितनी आवश्यक वस्तुएं है सब का यहां बाहुल्य है, किसी चीज की आप को कमी नही है। मालवा का प्रदेश आज ही नही प्राचीनकाल से एक सम्पन्न प्रदेश माना जाता रहा है। तुलसीदास जी को भी जब उर्वरा प्रदेश का उदाहरण देना पडा और मरू के प्रतिकूल एक स्थान का नाम खोजना पडा तो मरू के साथ मालवा का उदाहरण उन्होने दिया। यह अभी तक जारी है। इसलिये जो अन्न का दान आपने दिया यह आपके योग्य ही है। मै जानता हूं कि गत वर्ष भारत सरकार के लिये इस इलाके से शायद ७०–८० हजार टन अनाज गया था। इस वर्ष की फसल, जहां तक मै ने सुना है, अच्छी है। यदि ऐसा हो तो और जगहों की तकलीफ को ध्यान मे रखकर उससे दूनी रकम तो कम से कम इस साल आप देंगे और आप चाहेगे तो उसमे कोई कठिनाई भी नहीं होगी। जब आपने अपनी खुशी से जब से मै आया हूं अन्न का दान देना शुरू किया तब से भारत के भूखो की तरफ से मेरी भूख बहुत बढ गयी है और मैं आशा रखता हूं कि आपके प्रान्त से पूरी मदद भारत सरकार को मिलेगी। भारत सरकार की मदद का अर्थ है देश की और उन दीनों की मदद जिन को मदद की जरूरत है। केवल इस मे बिहार की ही बात नही है। मै तो बिहार का जन्मा हुआ हूं और बिहार के साथ मेरा अटूट सम्बन्ध है। मगर मै केवल बिहार का ही काम इसे नही मान रहा हूं। मैं चाहता हू कि सारे देश में जहा जहां अन्न की कमी हो उस कमी को दूर करने में आप सहायक हो।

अन्न के अलावा मै समझता हूं कि आपके प्रदेश मे और चीजे भी काफी मात्रा मे होती हैं। आपके यहा कपड़े के कई कारखाने है और ईश्वर की दया से आपके आस पास में कपास की, रूई की खेती भी काफी है। इन कारखानों और कपास की खेती का यह फल होता है कि आपके प्रदेश मे कपड़ा भी काफी तैयार होता है। तो इसके साथ साथ और भी चीजें जिन का जिक्र अभी आपने अभिनन्दन पत्र में किया उनकी वृद्धि भी आपके यहां हुई यह बड़े संतोष की बात है। मै आशा रखता हूं कि दिन प्रति दिन आपकी तरक्की होगी और हर तरह की चीजों की वृद्धि आपके यहां होगी।

मै आज यह महसूस करता हूं कि भारत में जो कष्ट हैं उस कष्ट को दूर करने का तरीका यही है कि जितनी जरूरत की चीजें है उनको अधिक मात्रा में हम पैदा करें। हम कभी कभी यह

भूल जाते हैं कि जब हमारे देश में चीजें होंगी तभी हम उनका बंटवारा भी कर सकते है। चीजें पैदा करने के पहले ही यदि किस का कितना हिस्सा हो हम इसका बटवारा करने लग जायें और झगड़ने लग जायें तो चीजें पैदा ही नही होंगी। अक्सर करके हम देखते है कि हम से यह भूल होती है कि सामान पैदा करने के पहले ही हम बटवारा शुरू कर देते हे। उसका फल यह होता है कि किसी को कुछ मिलता ही नही क्योकि सामान ही नही है तो किसी का हिस्सा कैसे हो सकता है। इसलिये जो कारखाने के मालिक है, जो खेतो मे कच्चा माल पैदा करते है, जो मजदूर दोनो जगहों में परिश्रम करके माल पैदा करते है उनसे एक साथ मै निवेदन करना चाहता हूं कि वे समझे कि उनका सब से बडा कर्तव्य यह है कि भारत में जितनी चीजो की कमी है उस को दूर करने में जिसका जो हिस्सा है उसे पूरा करके इस कमी को वे दूर करे और मेरा विश्वास है कि यदि सभी इस काम मे लग जायें तो आज जितनी कमी हम महसूस करते है उस कमी को महसूस करने का कोई कारण नही रह जायेगा।

अन्न के सम्बन्ध में यह अक्सर कहा जाता है कि देश मे उसकी कमी है और आजकल हम को विदेशों से बहुत अन्न मंगाना पडता है और न मालूम कब तक मंगाना पडे। जब मै विचार करके देखता हूं तो मालूम होता है कि इस कमी को दूर कर देना कोई मुश्किल काम नही है। थोड़ा अधिक परिश्रम, थोडा अधिक उत्साह, थोडी बुद्धिमता से काम करने से यह कमी दूर हो सकती है। हिसाब लगाकर लोगो ने देखा है कि भारत में दशांश की कमी है अर्थात् १०० मे १० की कमी है। अगर दस सौ मे और जोड दिया जाये तो हमारी कमी दूर हो जाये। हम जहा १० मन पैदा करते है वहां ११ मन पैदा करने लग जायें तो वह कमी दूर हो जाती है। जो किसान अपने काम को जानता है वह कह सकता है कि थोडा जल देने से, थोडा खाद देने से, कुछ अधिक जोतने बोने से अच्छा बीज देने से १० मन के बदले ११ मन पैदा करना कोई मुश्किल काम नही है। इसलिये हमारे देश के किसान यह समझ ले कि उनको १० मन की जगह ११ मन पैदा करना है तो वह इस चीज को पूरा कर सकते है और इसमें उनके सामने ऐसी कोई दिक्कत नही आयेगी जिसका हल वह स्वयं नही कर सकते हों। हमारी गवर्नमेन्ट भी चाहे वह केन्द्रीय गवर्नमेन्ट हो चाहे राज्य की गवर्नमेन्ट हो इस प्रयत्न में है कि वह इस कमी को दूर करे और जितने प्रकार की सहायता वह दे सकती है सभी जगहो मे सहायता देने के लिये वह तैयार भी है। जब इस तरह की सहायता भी मिल सकती है तो मै नही समझता हू कि इस मामूली कमी को दूर करने में कोई दिक्कत रहेगी। इसमें सिर्फ लगन की जरूरत है। मै आशा करता हूं कि इस बात को लोग महसूस करेंगे और पूरी मुस्तैदी के साथ इस कमी को दूर करेगे।

दूसरी चीजों की उतनी ज्यादा कमी नही है। हमारे देश के अन्दर कपड़े के बहुत कारखाने हो गये है। कपड़े की कमी तो नही होनी चाहिये; रूई की थोड़ी बहुत कमी है वह भी अब दूर होती जा रही है। यह तो सभी देशों का तरीका है कि सब चीजें वे देश के अन्दर ही पैदा नहीं कर सकते, उन को कुछ न कुछ दूसरे देशों से लेना ही पड़ता है। इंगलैंड के कपड़े का सारा कारबार विदेशों की रूई से ही चलता है। वहां रूई पैदा नहीं होती। तो यह दिक्कत रहते हुए भी इंगलैंड विदेशों से रूई मंगा कर फिर कपड़े के रूप में दूसरे देशों में भेजता है और मुनाफा

भी कमाता है। फिर हमारे देश के कारखाने क्यों ऐसा नहीं कर सकते। हमें तो कपड़ा विदेश ले जाने की जरूरत नही है। इस तरह से विदेश माल ले जाने का जो खर्च होता है वह भी बच जायेगा। पर महात्मा गांधी ने तो हम को यह भी सिखलाया है कि बड़े कारखानों का ही भरोसा न करो। बड़े कारखाने की ज़रूरत हो सकती है लेकिन ऐसी चीज़ों के लिये जो बड़े कारखानों में ही बनाई जा सकती हैं जैसे कि रेल की पटरी। उस को लोहे के हथौडों से नही बनाया जा सकता है। अगर रेल की पटरी का इस्तेमाल हमें करना है तो उस के लिये कारखाने बनाने ही पड़ेग। पर कपड़ा ऐसी चीज़ नही है जिस के लिये कारखाने के बिना काम नही चले। उसे प्रत्येक आदमी यदि चाहे तो अपनी ज़रूरत के लायक तैयार कर सकता है। ऐसी चीज़ों के लिये दूसरों के मुंह देखने की ज़रूरत नहीं है और अगर हमने गांधी जी के उपदेश को माना होता तो जो कपड़े का कष्ट हम अनुभव कर रहे हैं उसे हमें अनुभव नहीं करना होता। कपड़े की ज़रूरत हम आसानी से पूरा कर सकते थे। तो मैं यही कहना चाहता हूं कि आप ने जो प्रदर्शनी का आयोजन किया है वह बहुत ही सुन्दर है। इस से आप को काफी मदद मिल सकती है। मै आशा करता हूं कि इसे आप देखेंगे और देख कर इस से लाभ उठायेंगे क्योंकि यह प्रदर्शनी बहुत उपयोगी है। मै आशा करता हू कि इस प्रदर्शिनी से सिर्फ इन्दौर शहर के लोगो को ही नही वरन् इस प्रान्त के सभी लोगों को तथा दूसरे प्रान्तों के लोगो को भी काफी लाभ पहुंचेगा।

मै ने शुरू मे आप से कहा था कि जब से हमारे अपने हाथो मे स्वराज्य आया है हमारी जवाबदेही बहुत बढ गई है। हमारा इतिहास यह बताता है कि इस देश में हमेशा सांस्कृतिक एकता रही है मगर राजनैतिक एकता न होने के कारण हम आक्रमणों का शिकार बने है और बार बार हमें आज़ादी भी खोनी पडी है यही सोच कर एकछत्र शासन स्थापित करने का विचार निश्चित हुआ था और उस के मुताबिक काम हुआ है। मगर यह काम तब तक पूरा नही हो सकता है जब तक भारत के सभी रहने वाले चाहे वे किसी भी कौम या जाति के हों चाहे कोई भी पेशे वाले हो, किसी भी धर्म के मानने वाले हों यह महसूस न करें कि यह सारा का सारा भारत एक है, सारा भारत हमारा है हमारे भारत पर हमारा अधिकार है और सारे भारत का हमारे ऊपर अधिकार है। हम में से प्रत्येक को यही महसूस करने की जरूरत है। आज हो सकता है कि एकसूत्रता आई है मगर अभी यह कहना कठिन है कि हमारे हृदय में एकसूत्रता आई है। हम नही कह सकते कि हम में से सब महसूस करते है कि सारा भारत हमारा है। अभी भी सूबे सूबे का झगडा हमारे सामने खड़ा है, आज भी भाषा भाषा का झगड़ा हमारे सामने खडा है, आज भी धर्म के झगडे चलते ही रहते है। इन सब झगड़ों को मिटाना चाहिये। मै अभी इन्दौर में बैठा हुआ हूं, कोई कलकत्ता में या बम्बई में या ट्रावन्कोर में बैठा हुआ है, कोई हिमालय मे या समुद्र के किनारे बैठा हुआ है सभी को महसूस करना चाहिये कि सारा का सारा भारत अपना है। इस भावना को मजबूत करना है तभी इस शासन की एकसूत्रता रहेगी। आप जानते ही है कि अभी कई जगहों में वहां के लोग इस बात की मांग कर रहे है कि उस हिस्से को किसी दूसरे हिस्से से मिला कर एक ऐसा प्रान्त बनाया जाये जहां एक भाषा हो। यह भी मांग हो रही है कि दो हिस्सों को जोड़ा जाये। इन में लोगों में सब बातों में मेल नहीं रह सकता है। हम ने बहुत बहुत हिस्सों को एक साथ मिला कर एक साथ जोड़ा है और अब इस तरह का जोड़ लगाया जाता है तो यह एक तरह से स्वाभाविक है, अनिवार्य है कि

जब तक यह जोड़ मिल कर पूरी तरह से एक न हो जाये तब तक कुछ गडबड़ी रहे । जब तक घाव भर कर चमड़ा एक सा नही हो जाता है तब तक उस से कष्ठ आदमी को होता ही रहता है । मगर बुद्धिमत्ता तो इसी में है कि उसी में काम करें और मान लें कि हम सब एक है । मै देशी राज्यो के लोगों से और विशेष कर के नरेशों से कहता हूं कि वे आज तक अपने राज्य के हद के अन्दर ही राज्य करते थे और उतने ही को अपना राज्य समझते थे पर अब तो सारे भारत पर उन का राज्य हो गया है और अगर वे चाहे तो सारे भारत में उन का प्रभुत्व, उन की कद्र, उन की प्रतिष्ठा हो सकती है और होगी । इसी तरह भारत के किसी भाग के आदमी को अब यह कहने का मौका हो गया है कि उस का प्रभुत्व ग्वालियर पर है और अब केवल महाराजा बहादुर का ही प्रभुत्व उस पर नही है । हम बिहार के रहने वाले कह सकते है कि हमारा भी प्रभुत्व इस पर है । जो यह बहुत बडा परिवर्तन हुआ है उस को समझना चाहिये और उस का जो तकाजा है उस को पूरा करना चाहिये और उस को पूरा करने का भी एक ही तरीका है, दूसरा हो ही नही सकता। वह यह है कि हम एकीकरण के अर्थ को समझ ले और मान लें। दूसरा रास्ता नही हो सकता है । यह एकीकरण केवल राज्यो का नहीं यह तो सारे भारत का एकीकरण हुआ है। कोई ऐसा न समझे कि हमारे ऊपर इस चीज को लादा गया है । अगर किसी को स्वीकार न भी हो तो उसे भी इसे स्वीकार करना चाहिये । मै तो जानता हू कि संविधान सभा एक दिन दो दिन नही, तीन वर्षो तक बैठी और तब उस ने संविधान तैयार किया । उस सभा के जितने सदस्य थे जिन मे आप के इस सूबे के सदस्य भी थे उन के चेहरे को जब मे देखता था तो उन के चेहरे इस बात से प्रसन्न मालूम पडते थे कि सारा भारत एक बन रहा है। आप से मै यही कहना चाहता हू कि भारत एक है इसे सब लोग माने और उसी के अनुसार काम करे ।

आज मै ने सवेरे उज्जैन मे भी यही कहा है । आप जानते ही है कि मै वहा ही से आ रहा हूं । उज्जैन एक बडी प्राचीन नगरी है जिसका नाम हमारे इतिहास मे क्या सारे संसार में न मालूम कितने दिनो से कितने रूप मे कितने प्रकार से सुना जाता है और वह एक ऐसा स्थान है जिस स्थान का गौरव सारे भारत का गौरव है, जिस स्थान का गौरव हम सब को मानना है। भारत में और कई स्थान हुए है जिन के भी नाम हुए और वे मशहूर भी है । किसी तरह से मुझे ऐसा मालूम हुआ कि एक सांस्कृतिक केन्द्र वहां बन सकता है और मैं ने उस का जिक्र भी किया । आप में से कोई ऐसा न समझें कि जो आप की बहस चल रही है उस में मै कोई फैसला देने आया हूं । ऐसी कोई बात नहीं है । मै तो केवल प्राचीन संस्कृति को ध्यान में रख कर मालवा की महत्ता को ध्यान में रख कर, जो उस ने इतिहास में हिस्सा लिया है उस को ध्यान में रख कर कालीदास और दूसरे नवरत्न हो गये है उन को ध्यान में रख कर इस सूबे के उस स्थान को इस योग्य मानता हूं कि वह तीर्थ स्थान बने । मैं तो कहना चाहता हूं कि मेरी उन संस्थाओं के प्रति कोई बहुत श्रद्धा नहीं है । इन वस्तुओं का जन्म तो किसी एक कारण

से हुआ था। वह कारण तो विनष्ट हो गया। आज जगह जगह पर नये नये कालेज खुल रहे हैं नई नई यूनीवर्सिटियां बन रही हैं। जहां ज़रूरत पड़ती है मैं कहता हूं कि पुरानी चीज़ों को कायम करने में मुझे बहुत ज्यादा दिलचस्पी नहीं है। मैं तो चाहता हूं कि हमारी यूनीवर्सिटियां ऐसी बनें जहां पर हमारी प्राचीन संस्कृति का अंश रहे और साथ साथ आधुनिक चीज़ें हों और दोनों का समन्वय करने के और जो हमारी आज की आवश्यकता है उस को पूरा करने के लिये वहां से योग्य विद्यार्थी और गुरु तैयार किये जायें।

हमारी यूनीवर्सिटियों का यही काम है। इस चीज़ को हम अभी पूरी तरह से नहीं समझ पाये हैं। इसलिये हमें दिशा भ्रम भी पैदा होता है। पर तो भी म चाहता हूं कि जो केन्द्र बने है वे केवल सरकारी अधिकार से ही काम करने वाले नही हों बल्कि उन में दूसरे दूसरे तौर तरीक़े से दूसरी शैली से काम करने वाले भी हों। अगर यूनीवर्सिटी बनाना चाहे तो उस में सारे भारत में जो यूनीवर्सिटियों मे पद्धति है, रीति है उस को नयी पोशाक में जो सारी दुनिया की परिस्थिति के अनुकूल हो अपना लिया जाये। यही मैं चाहता हूं।

मैं आप सब भाइयों और बहनों को हृदय से धन्यवाद देता हूं कि आपने मेरा इतना स्वागत किया और उस से भी ज़्यादा मैं इस लिये आप को धन्यवाद देता हूं कि भूखों के लिये आप ने अन्न दिया। धन्यवाद।

इन शब्दों के साथ मैं अब प्रदर्शिनी का उद्घाटन करता हूं।

कस्तूरबा ग्राम

कस्तूरबा ग्राम, इन्दौर में ता० १०-५-५१ को ८ बजे दिन में राष्ट्रपति जी ने कहा--

श्रीमन्त राजप्रमुख जी, सुशीला बहन, श्यामलाल जी, बहनो और भाइयो,

मुझे बड़ा आनन्द हुआ कि मै आज यहां आ सका। पहले कुछ शक था कि यहां आऊंगा या नहीं पर पीछे मै ने देखा कि इस प्रदेश में आकर बग़ैर यहां आये चले जाना ग़लत काम होगा और इसलिये अपने निश्चित समय में से थोड़ा समय निकाल कर आप लोगों से मिलने आ गया हूं। अच्छा तो यह होता कि जब यहां काम शुरू हो जाता तब मै यहां आकर एकाध रोज़ रह कर आप लोगों से मिलता। लेकिन वैसा करने का अवसर मिले या न मिले इस बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। इस लिये मैं ने निश्चय किया कि अभी जो आप भाई दफ़्तर में काम करते हैं उन से आ कर मिल लेना बेहतर होगा।

कस्तूरबा ट्रस्ट का काम सारे देश में चल रहा है और अब उस की प्रगति और बढ़ेगी। इसका कारण यह है कि शुरू में तो कार्यकर्त्ताओं को तैयार करना था और विशेष कर के

स्त्रियों में काम करने वाली स्त्रियां ही हो सकती हैं और उनको तैयार करना जरूरी था। इस काम में समय लगता है और इस में समय लगा है और अब जैसे जैसे काम करने वाली स्त्रियां तैयार होती जाती हैं काम फैलता जाता है और फैलता जायेगा ।

इस काम के बारे में जो महात्मा जी का चित्र था वह बहुत बृहत् था और वह इतना लम्बा चौड़ा कार्यक्रम था कि उस में प्रत्येक बच्चे और हरेक स्त्री के लिये केन्द्र क़ायम होना था। लेकिन अभी जैसा आपने कहा बहुत से केन्द्र खुल गये हैं और काम वहां हो रहा है । पर उन केन्द्रों की संख्या काफ़ी नही है । ऐसा केन्द्र तो अगर प्रत्येक गांव में नहीं तो कम से कम १०–१५ गांवों के पीछे एक अवश्य होना चाहिये जिस में देश के बच्चों और स्त्रियों को जैसी सहायता हम पहुचाना चाहते हैं उसके पहुंचाने के योग्य हम हो जायें । काम तो बहुत बड़ा है । पर जो कोई काम होता है उस का आरम्भ छोटा ही होता है और आहिस्ते आहिस्ते वह बढ़ता है । महात्मा गांधी ने जिस श्रद्धा और प्रेम के साथ इस काम को शुरू किया था वह आप को मालूम है । यह सच है कि यह काम बढ़ता जा रहा है । यह हमारे लिये दुर्भाग्य की बात है कि इतनी जल्द हमारे दो दो सरदार चले गये । सरदार वल्लभभाई और ठक्कर बापा जो इस संस्था के कर्णधार थे निकल गये । अब जो रह गये हैं उन के सर पर बोझ आ पड़ा है । लेकिन संसार का काम ऐसे ही चलाना पड़ता है । 'इस लिये जो लोग रह गय हैं उन को इस काम को ठीक उसी तरह से, उसी विश्वास के साथ और उसी सिद्धान्त से चलाना है जिस को महात्मा गांधी ने हमारे लिये निर्धारित कर दिया है ।

मुझे यह सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि यहां के राज्याधिकारी तथा जनता दोनों की तरफ से आप को सहायता मिल रही है । इस स्थान को चुनने का कारण यही था कि यहां की जनता और राज्याधिकारी दोनों की पूरी सहायता मिलेगी । इसलिये इस स्थान को चुन कर सरदार वल्लभभाई ने इस ग्राम को स्थापित करने का निश्चय किया और वह आशा पूरी हो रही है यह सुन कर मुझे बड़ी प्रसन्नता है । मैं आशा करता हूं कि उनकी सहायता और भी अधिक आपको मिलती जायेगी । आप ने अभी काम शुरू ही किया है और अभी तो पूरी तरह से यह भी नहीं कहा जा सकता कि काम शुरू हो गया है । पर इतने कम समय में भी आप ने बिहार के भूखों को याद किया और २१ मन गेहूं दान दिया यह आप लोगों के लिये बड़ी बात है और बिहारियों के लिये कृतज्ञता का पूरा कारण है। मैं आशा करता हूं कि आप इसी तरह देश के हर हिस्से को सहायता पहुंचाते रहेंगे और स्त्रियों को इस तरह बना देंगे जिस में वे देश के लिये सुयोग्य बन जायें और जैसी कस्तूरबा एक आदर्श महिला थीं उसी तरह आदर्श महिला बन जायें ।

कस्तूरबा मेरी समझ में भारत की सभ्यता और संस्कृति की प्रतीक एक आदर्श महिला थीं और उन्होंने जो काम बापू के साथ रह कर किया उन्हीं आदर्शों के अनुसार हमारी स्त्रियों को काम करना है और करना चाहिये । हम तो उन्हीं आदर्शों को अपने सामने रख कर अपनी स्त्रियों को बनाना चाहते हैं । इस संस्था का मुख्य उद्देश्य यही है

कि इस तरह से शिक्षा दे कि स्त्रियां सुयोग्य बनें । मै आशा करता हूं कि ईश्वर की दया से आप अपने काम में पूरी तरह से सफल हो सकेंगे क्योंकि आप में उत्साह है और लगन है ।

बाल निकेतन

बाल निकेतन इन्दौर में राष्ट्रपति जी ने तारीख १०-५-५१ को कहा—

श्रीमन्त राजप्रमुख जी, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि मै आज इस संस्था को फिर से एक बार देख सका। यह स्वाभाविक ही हे कि जिस पौधे को मनुष्य लगाता है और सीचता है उस को बढते देख कर उस को खुशी होती है और चूंकि इस भवन का शिलान्यास मेरे ही हाथो काशी भाई ने करवाया था मुझे इस बात से खुशी होती है कि यह संस्था इतनी दूर तक पहुच चुकी है और मै आशा रखता हूं कि इस की और भी उन्नति होगी । मुझे इस बात की ओर भी खुशी है कि मैं ने उस समय कहा था कि मानटेसरी सिस्टम अच्छा हो सकता है अगर उस मे खर्च अधिक नही हो । भारतवर्ष के लिये कोई भी शिक्षा पद्धति जिस मे बहुत खर्च लगता हे चलना जरा मुश्किल है क्योकि यह देश गरीब है। इसमें जिन सामानो का प्रयोग होता है अगर वे यहां कम खर्चे में तैयार किये जायें तो रास्ता साफ हो सकता है । मुझे यह जान कर खुशी हुई कि यहां जिन वस्तुओं का प्रयोग हो रहा है उन में बहुत सी ऐसी है जिन्हें यहां ही तैयार किया गया है । यह एक शुभ चिन्ह है। उस प्रकार की सस्था की अधिक उपयोगिता हो जाती है जिस के द्वारा यह काम हिन्दुस्तान में सहज और कम खर्च में हो जाता है । इस लिये जब दोबारा मुझ से आने का आग्रह किया गया तो मैं ने उसे सहर्ष स्वीकार किया और यहां आकर मुझे इस बात से प्रसन्नता हुई कि जैसी मे ने आशा की थी उस के अनुकूल ही काम हो रहा है । मैं आशा करता हूं कि जो काम अभी बाकी है वह भी पूरा होगा । आप लोगो को जनता और श्रीमन्तो दोनो की सहायता मिलती रही है यह भी एक शुभ चिन्ह है और मैं उम्मीद करता हूं कि वह सहायता मिलती रहेगी जिस में आप के काम में किसी प्रकार को रुकावट न हो ।

मैं आप को धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने मुझे यह सुअवसर दिया कि मै यहां आ सका ।

*

सोमनाथ मंदिर

सोमनाथ मंदिर में महादेव प्रतिष्ठा के अवसर पर तारीख ११-५-५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा --

बहनो और भाइयो,

हमारे शास्त्रों में श्री सोमनाथ जी को बारह ज्योतिर्लिगो मे से एक माना गया है, और इस लिये पुरातन काल में भारत की समृद्धि, श्रद्धा और संस्कृति का प्रतीक भगवान सोमनाथ का यह मन्दिर था, जिस के चरण विशाल सागर धोता था, जिस का उन्नत ललाट स्वर्ग को छूता था, और जिस के विराट कक्ष मे श्रद्धालु जन भारत के विभिन्न प्रदेशों और प्रान्तों से एकत्रित हो कर भगवान शंकर के चरणो मे अपरिमित श्रद्धा और भक्ति और अक्षय धन धान्य की भेंट चढाया करते थे; इस तरह यह भारत मे श्रद्धा और धन का केन्द्र तथा भंडार बना हुआ था । दूर दूर तक तथा देश देश में इस के अतुलनीय वैभव की ख्याति फैली हुई थी किन्तु दुर्भाग्यवश इस पर एक युग के पश्चात् बार बार विपत्ति पड़ी । यह टूटा । किन्तु जातीय श्रद्धा का वाह्य प्रतीक चाहे विध्वंस किया जा सके पर उस का स्त्रोत तो कभी टूट नही सकता । यही कारण है कि सब विपत्तियां पड़ने पर भी भारत के लोगों के हृदय मे भगवान सोमानाथ के इस मन्दिर के प्रति श्रद्धा बनी रही है और उन का यह स्वप्न बराबर रहा कि वे इस मन्दिर की प्राण-प्रतिष्ठा पुन कर दें और समय समय पर वे ऐसा करते भी रहे और आज इस ऐतिहासिक मन्दिर के जीर्णोद्धार के पश्चात् इस के प्रागण मे भारत के कोने कोने से आये हुए अनेक नर नारियो का कलरव फिर सुनाई दे रहा है । हमे यह पुनीत अवसर देखने का सौभाग्य इस लिये प्राप्त हुआ है कि जिस प्रकार भगवान विष्णु के नाभिकमल में सृष्टिकर्ता ब्रह्मा वास करते है उसी प्रकार मानव के हृदय मे भी सृजनात्मक शक्ति और श्रद्धा सर्वदा वास करती है और वह सब शस्त्रास्त्रो से, सब सेनाओं से और सब सम्राटो से अधिक शक्तिशाली होती है । सोमनाथ का यह मन्दिर आज फिर अपना मस्तक ऊंचा कर के ससार के सामने यह घोषित कर रहा है कि जिसे जनता प्यार करती है, जिस के लिये जनता के हृदय मे अक्षय श्रद्धा और स्नेह है, उसे संसार मे कोई भी मिटा नही सकता । आज इस मन्दिर की प्राण-प्रतिष्ठा पुनः हो रही है और जब तक इस का आधार जनता के हृदय मे बना रहेगा तब तक यह मन्दिर अमर रहेगा ।

इस पुनीत, पावन और ऐतिहासिक अवसर पर हम सब के लिए यह उचित है कि हम धर्म के इस महान् तत्व को समझ लें कि भगवान की, सत्य की झांकी पाने के लिए कोई एक ही मार्ग मनुष्य के लिए अनिवार्य नही है वरन्च यदि श्रद्धा पूर्वक और लगन से मनुष्य जन जीवन की सेवा करने के लिये तत्पर होता है, और यदि वह अपने जीवन को संसार में स्नेह और सौन्दर्य का साम्राज्य स्थापित करने के लिये उत्सर्ग करता है तो फिर चाहे वह किसी ढंग से भगवान की पूजा क्यों न करे उस को भगवान और सत्य की झांकी अवश्य मिल जाती है । हमारे प्राचीन ऋषियों ने इस तथ्य को पहचाना था और मनुष्य जाति के सामने इस को रखा था । वैदिक काल में ही इस बात की

साग्रह घोषणा कर दी गई थी कि वह एक है, किन्तु मनीषी लोग उस का वर्णन बहुत प्रकार से करते हैं । इसी प्रकार महाभारत में भी यह कहा गया था कि जिस प्रकार सब नदियां समुद्र ही में मिल जाती हैं उसी प्रकार विभिन्न धर्म भी भगवान के पास ही मनुष्य को पहुंचा देते हैं। दुर्भाग्यवश धर्म और जीवन के इस तथ्य को विभिन्न युगों और विभिन्न जातियों में ठीक ठीक नही अपनाया गया और इसी कारण धर्म के नाम पर संसार के विभिन्न देशों और विभिन्न जातियों में अत्यन्त विनाशकारी और वीभत्स संघर्ष और युद्ध हुए । धार्मिक असहिष्णुता से सिवाय विद्वेष और अनाचार बढ़ने के अतिरिक्त और कोई फल नही होता है— यही इतिहास की शिक्षा है और इस को हम सब को गांठ बांध रखना चाहिये । हमारे देश में इस बात की आज विशेष आवश्यकता है कि हम में से प्रत्येक यह समझ ले कि हमारे देश में जितने सम्प्रदाय और समुदाय हे उन सब के प्रति हमें समता और आदर का व्यवहार करना है । क्यों कि ऐसा करने में ही हमारी सारी जाति और देश का तथा प्रत्येक व्यक्ति का कल्याण निहित है । इसी विश्वास और श्रद्धा के कारण हमारे भारतीय संघ ने धर्मनिरपेक्षता की नीति अपनायी है, और इस बात का आश्वासन दिया है कि इस देश में बसने वाले प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों को राज्य की ओर से एक समान सुविधायें प्राप्त होंगी । इसी नीति के अनुसार मेरी श्रद्धा और भक्ति सभी धर्मों के प्रति रहती है। यद्यपि मै विश्वास और अपनी दिन चर्या में सनातनी हिन्दू हूं और साधारणतः उसी धर्म की रीति से भगवान की उपासना और अर्चना करता हूं तथापि मै यह भी मानता हूं कि अन्य धर्मावलम्बी अपनी रीति से भगवान की पूजा कर उस को पा सकते हे और इसी लिये सभी धर्मो के पवित्र स्थानों के प्रति मै केवल आदर का ही भाव नही रखता हूं वरन् अवसर पा कर उस आदर को व्यक्त करने में भी कभी नही हिचकता। मौका मिलने पर मै दरगाह और मस्जिद, गिर्जाघर और गुरुद्वारे में भी उसी श्रद्धा के साथ जाता हूं जिस से कि मै अपने मन्दिरों में जाता हूं । आज का यह उत्सव भी इसी नीति की सत्यता को पुष्ट करता है आज यह स्पष्ट है कि धार्मिक असहिष्णुता की भांति असफल सिद्ध हुई है और होती रहेगी । साथ ही हमें यह भी समझ लेना चाहिये कि इतिहास की टूटी हुई लड़ी को जोड़ने का अर्थ यह नहीं है और न हो सकता है कि हम इस बात का प्रयास करे कि वे सब मानसिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक अवस्थायें यहां फिर स्थापित हो जायें जो इतिहास के गत युग में यहां वर्तमान थीं । मानव के लिये यह तो सम्भव है कि वह पृथ्वीतल पर पिछले स्थान पर लौट सके किन्तु यह सम्भव नही कि वह विगत घड़ी के पास लौट जाये। कालक्षेत्र में तो उस को निरतन्र आगे ही बढ़ना होता है । हा वह पीछे दृष्टि डाल कर आगे के लिये प्रकाश और ज्योति पा सकता है। अतः आज के उत्सव का यह अर्थ न तो है और न हो सकता है कि हम विलुप्त राजनैतिक और सामाजिक युग की पुनः स्थापना करना चाहते है, और न इस का यह अर्थ है कि हम उस मानसिक और शारीरिक घाव को फिर खोलना चाहते हैं जो शताब्दियों के व्यतीत होने के कारण बहुत कुछ भर या ढक चुका है। हमारा ध्येय पुरातन इतिहास के अन्याय को दूर करना नही है वरन् केवल यही है कि हम आज अपनी उस आस्था, उस विश्वास और उस श्रद्धा के प्रति अपनी लगन फिर से प्रकट करे जिस आस्था, या विश्वास पर अनन्त काल से हमारा धर्म स्थापित रहा है और हम फिर यह दुहाई कर दें कि धार्मिक जीवन का सर्वोपरि सत्य यही है कि प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक जाति को वह पूर्ण स्वतन्त्रता

और वे सुविधायें प्राप्त हों जिन में कि वह अपनी अनुभूति और अपनी नैसर्गिक बुद्धि के अनुसार अपने जीवन का चरम उत्कर्ष प्राप्त कर सके और वह सत्य है पूर्ण धार्मिक सहिष्णुता ।

इस पुनीत अवसर पर हम सब के लिये यह उचित है कि हम आज इस बात का व्रत लें कि जिस प्रकार हम ने आज अपनी ऐतिहासिक श्रद्धा के इस प्रतीक में फिर से प्राण-प्रतिष्ठा की है उसी प्रकार हम अपने देश के जन साधारण के उस समृद्धि मन्दिर में भी प्राण-प्रतिष्ठा पूरी लगन से करेंगे जिस समृद्धि मन्दिर का एक चिन्ह सोमनाथ का पुरातन मन्दिर था। उस ऐतिहासिक काल में हमारा देश सभ्य जगत का औद्योगिक केन्द्र था। यहां के बने हुए माल से लदे हुए कारवां दूर दूर देशो को जाते थे । और संसार का चांदी सोना इस देश में अत्यधिक मात्रा मे खिचा चला आता था । हमारा निर्यात उस युग में बहुत था और आयात बहुत कम। इस लिये भारत उस युग में स्वर्ण और चांदी का भंडार बना हुआ था । आज जिस प्रकार समृद्ध देशो के बैंकों के तहखानों में संसार का स्वर्ण पर्याप्त मात्रा में पडा रहता है उसी प्रकार शताब्दियों पूर्व हमारे देश में संसार के स्वर्ण का अधिक भाग हमारे देवस्थानों में होता था । मैं समझता हूं कि भगवान सोमनाथ के मन्दिर का पुर्नमाण उसी दिन पूरा होगा जिस दिन न केवल इस प्रस्तर की बुनियाद पर यह भव्य भवन खड़ा हो गया होगा, वरन् भारत की उस समृद्धि का भी भवन तैयार हो गया होगा जिस का प्रतीक वह पुरातन सोमनाथ का मन्दिर था। साथ ही सोमनाथ के मंदिर का पुर्ननिर्माण तब तक भी मेरी समझ में पूरा नही होगा जब तक कि इस देश की संस्कृति का स्तर इतना ऊंचा न हो जाये कि यदि कोई वर्तमान अलबरूनी हमारी वर्तमान स्थिति को देखे तो हमारी संस्कृति के बारे में आज की दुनिया के मुक़ाबले में वही भाव प्रकट करे जो लगभग एक सहस्त्र वर्ष पूर्व उस समय के भारत के सम्बन्ध मे अलबरूनी ने प्रकट किये थे ।

नव निर्माण का यह यज्ञ स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई पटेल ने आरम्भ किया था। भारत की विच्छिन्न एकता को पुनः एक सूत्र और अखण्ड करने में उन का निर्णायक हाथ था । और उन के हृदय मे यह आकांक्षा उत्पन्न हुई थी कि नव निर्माण के प्रतीक स्वरूप भारत की पुरातन श्रद्धा का यह प्रतीक फिर से निर्मित किया जाये। वह स्वप्न भगवान की कृपा से आज एक सीमा तक पूरा हो गया है किन्तु वह पूर्ण रूपेण उसी समय पूरा हो सकेगा जब भारत के जन जीवन का वैसा ही सुन्दर मन्दिर बन गया होगा जैसा यह भगवान का मन्दिर है । जय भारत ।

संस्कृत परिषद्

ता० ११-५-५१ को प्रभास पट्टन में संस्कृत परिषद् मे राष्ट्रपति जी ने कहा —

श्रीमन्त राजप्रमुख, विद्वज्जन, अन्य सज्जनो, बहनो और भाइयो,

आप ने यह ठीक कहा है कि हमे आज यह शुभ और महत्व का अवसर मिला है और हम यहा यह विचार करने के लिये एकत्रित हुए हैं कि लोगों मे संस्कृत भाषा का ज्ञान किस तरह बढ़ाया जाये और किस प्रकार से उस के अध्ययन का तौर तरीका चलाया जाये जिस में इ

प्राचीन गौरवमय भाषा मे हम जो कुछ पा सकते है उसे फिर अपने देश के लोगों के लिये और संसार के लोगो के लिये पा सके। मेरा अपना विश्वास है कि हमारी संस्कृति का मूल हमारा संस्कृत साहित्य है और आज यदि हम अपने लिये कोई नई चीज बनाना चाहते है तो उस के लिये संस्कृत को ही नीव बना सकते है। कोई भी मनुष्य हवा मे महल नही बना सकता है। महल बनाने के लिये उसे नीव खोदनी पड़ती है। यदि हम अपने देश मे संस्कृति अन्य देशो की भाषा और साहित्य मे लेना भी चाहे तो भी हमारी नीव तो हमारे देश की भाषा ही हो सकती है और होनी चाहिये। हमारे देश मे आज प्रान्त प्रान्त मे अलग अलग भाषाये है और भिन्न भिन्न प्रकार से उन का उद्‌भव भी और उन्नति भी हुई है। मगर हम विचार करे तो पता चलता है कि अन्ततोगत्वा उन की जड मे संस्कृत ही है। ये सब संस्कृत की ही सन्तानें है और जब तक ये भाषाये रहेगी इन की जननी संस्कृत से ही हमे शक्ति मिलती रहेगी। उन के लिये यह शक्ति आवश्यक है क्योंकि जिस प्रकार से जड से ही वृक्ष का पालन पोषण होता है और जब जड नही रहती तो वृक्ष भी सूख जाता है उसी प्रकार संस्कृत से ही हमारी भाषाओं और संस्कृति को बल मिल सकता है। यदि हम चाहे भी कि हम अपने देश की मर्यादा को, अपने देश की संस्कृति को देश मे के रहन सहन को कुछ बदले तो भी उस की जड मे, उस की नींव मे हमारी संस्कृति रहेगी ही। हम उस के ऊपर कुछ जोड़ना चाहे तो जोडे, यदि कुछ घटाना चाहे तो घटाये, बढाना चाहे तो बढ़ावे पर उस के आधारभूत स्थान को हम नही बदल सकते।

विद्वानो से मेरा एक निवेदन है। आज यह कोई नही कह सकता कि सारी दुनिया मे जो कुछ चलता है उस से हम अपने को बिल्कुल अलग रक्खे क्योंकि इस प्रकार से अपने को अछूता रखना सम्भव नही है। सारी दुनिया की चीजो से हमें अपने को अच्छी तरह से परिचित रखना है और वहा जो हवा बहती है, जो चीजे सामने आती है उन को समझ कर, देख कर, उन को अच्छी तरह से परख कर कि उन मे क्या ग्राह्य है और क्या अग्राह्य है और यह पता चला कर कि उन मे कौन सी ऐसी चीज है, जिन से हम लाभ उठा सकते है, और कौन सी चीजे है, जिन को हमे नही लेना है, हमें उन से लाभ उठाना है। इस वक्त हमारे देश के अन्दर दो प्रकार के लोग देखने मे आते है। कुछ ऐसे है जिन को हमारी पुरानी विद्या से प्रेम है और जिन का केवल उसी विद्या से परिचय है और आज की दुनिया से वे अनभिज्ञ है। दूसरे लोग ऐसे है जो विदेशी चीजो को जानते है और हमारी संस्कृत भाषा और साहित्य मे और हमारी संस्कृति मे जो कुछ है उस से उन का परिचय नही के बराबर है। ये दोनों बाते हमारे देश के लिये एक तरह से नाकाफ़ी है। इन दोनो से मिश्रण होना चाहिये जिस से जहा से अच्छा साहित्य, अच्छी संस्कृति हमे मिलती हो उसे भी हम ले सके। आज बहुत लोग ऐसे है जिन्हो ने संस्कृत का अध्ययन तो अच्छी तरह से किया है पर आज के संसार के साथ उन का परिचय नही है। इस चीज को हमे दूर करना है। इस के लिये अगर संस्कृत के अध्ययन मे कुछ अदल बदल करने की जरूरत हो, अगर उसमे नये तरीके का प्रचार करना हो, उसको नये तरीके से अध्यन करना हो तो उस से भी हमे नही हिचकना चाहिये। उसी तरह से जो पश्चिम की विद्या सीखते है वे यह नही समझे कि जो कुछ पूरब देता है, उस मे कुछ है ही नही। उन का काम है कि पूरब की चीज़ो को परिश्रम से सीखें, थोड़ा समय लगा कर यहा की चीज़ो को जाने और तब वे इन चीज़ों को समझ सकेगे। यह एक बड़ी भूल होती

है कि बिना अध्ययन किये लोग किसी चीज को यह कह दिया करते है कि उस मे कुछ नहीं है। यह संस्कृत के विद्वानों के लिये उतना ही घातक है जितना पश्चिम की विद्या के जानने वालों के लिये। हम तो चाहते है कि हमारे विद्वान सभी विद्याओं को पढे और उन से जितना लाभ [illegible] उठावे। ऐसा करने से जो हमारी आगे की संस्कृति होगी वह और भी अच्छी होगी, हमारा कल्याण होगा और हम सारे संसार के सामने दृष्टान्त रखेगे। यहां विद्यापीठ का आयोजन हो रहा है। इस मे दोनो चीजो की पूरी गुंजाइश रखनी चाहिये जिस से हम देश का और संसार का भला कर सके। मेरी आशा है और मै उसी विश्वास के साथ आप के इस काम का समर्थन करूंगा कि इस मे देश का कल्याण है, हमारा कल्याण है और सारे संसार का कल्याण है। भगवान सोमनाथ आप के इस प्रयत्न को सफल करे यही मेरी प्रार्थना है।

श्री कृष्णस्मारक

तारीख ११-५-५१ को वेरावल, सौराष्ट्र मे भगवान श्री कृष्ण स्मारक के शिलान्यास के अवसर पर राष्ट्रपति जी ने कहा—

श्रीमन्त राजप्रमुख, बहनो और भाइयो,

यह मेरे लिये बडे सौभाग्य की बात है कि आज इस शुभ अवसर पर आप के इस समारोह मे मै शरीक हो सका। कृष्ण भगवान तो सारे हिन्दुस्तान के जीवन मे इस तरह से घुल मिल गये है कि आज कोई नहीं कह सकता कि हमारी कौन सी ऐसी बात है जो कृष्ण भगवान की सीख से प्रभावित नहीं है। वह हमारे जीवन का एक अंश बन गये है। आज जो इस पवित्र स्थान मे समारोह हुआ और इस स्मारक के लिये जो आयोजन किया गया उस की कृष्ण भगवान को जरूरत नहीं है पर हम इस स्थान मे आकर कुछ प्रेरणा प्राप्त कर सकते है, यहां से कुछ अधिक भक्ति-भाव लेकर और अपने को धन्य और कृतार्थ कर के जा सकते है। इसी भावना से यह काम किया गया है और आप लोग शरीक हुए है। जैसा अभी जाम साहब ने कहा, कृष्ण भगवान की कृपा सब पर हो, सब के हृदय मे वही सेवा भावना जागृत हो जिस सेवा भावना का उदाहरण उन्होने अपने जीवन मे दिया था और हमारे लिये ही नहीं बल्कि सारे संसार के लिये यह देश एक ऐसा उदाहरण बन जाये जिस पर हम लोग गर्व कर सके। कृष्ण भगवान से हमारी प्रार्थना है कि हमारी इस आकांक्षा को वह पूरा करे।

वेरावल मे नागरिक अभिनन्दन

ता० १२ मई १९५१ को वेरावल म्युनिसिपैल्टी द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब में राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम राजप्रमुखजी, वेरावल म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष तथा सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

जब से मै सौराष्ट्र मे आया सभी जगहो पर जिस प्रेम और आदर के साथ मेरा स्वागत जनता ने किया है उस का मेरे दिल पर बहुत असर हुआ है। आप की म्युनिसिपैलिटी की ओर

से जो मेरा यह आदर हो रहा है उस के लिये मै आप सब को बहुत धन्यवाद देता हूं। मै इस मरतबे खास इस मलतब से नही आया हूं कि मैं सौराष्ट्र में आ कर दौरा करूं और आप भाइयों से मिलू। मै तो एक प्रकार से तीर्थ यात्रा के लिये आया हूं और मेरी यह तीर्थ यात्रा इस ही स्थान से सम्बद्ध है। आप इस वक़्त राष्ट्रपति की हैसियत से मेरा स्वागत कर रहे है पर रह रह कर मेरे मन मे यह प्रश्न उठता है कि क्या मै राष्ट्रपति की हैसियत से आया हू या दूसरी हैसियत से। और लोग भी कभी कभी यह प्रश्न कर देते है। राष्ट्रपति का काम तो चन्द दिनों के लिये मेरे सर पर आ गया है और चन्द दिनो के बाद मै उस से मुक्त भी हो जाऊगा पर मै तो एक साधारण मनुष्य, एक साधारण हिन्दू की तरह जन्मा था और एक साधारण आदमी की तरह मरने के दिन तक रहूगा। इस लिये जिस हैसियत को मै सब से बड़ी समझता हूं वह साधारण मनुष्य के नाते मेरी हैसियत है। बाबा सोमनाथ का दर्शन करने के लिये, श्री कृष्ण के देहोत्सर्ग के स्थान तथा द्वारिकापुरी का दर्शन करने के लिये मै यहा आया हू, और साथ साथ महात्मा गाधी के जन्म स्थान और महात्मा गाधी के सूबे का दर्शन करने के लिये भी आया हूं। ऐसी अवस्था मे तो मुझे आप सब का आशीर्वाद चाहिये, पर आशीर्वाद के बदले आप सब मेरा इस प्रकार स्वागत कर रहे है। इसे भी मै आशीर्वाद के रूप मे ही मान लेता हूं और आप को इस के लिये बहुत धन्यवाद देता हू।

इस समय भारत वर्ष के सामने बडे बड़े जटिल प्रश्न है। जब से हम मुक्त हुए, देश में स्वतत्रता आयी है तभी से तरह तरह की विपत्ति आयी है। उन का मुक़ाबला देश ने और हमारी सरकार ने अच्छी तरह से किया है। पर अब भी किसी भारतवासी को यह नही समझना चाहिये कि अब निश्चिन्त हो कर आराम के साथ वह घर मे सो रहे। स्वतत्रता हम को मिली है ज़रूर पर उस से जितना लाभ हमारे देश के सब लोगों को मिलना चाहिये वह अभी तक नही पहुच सका है। देशवासियों को लाभ पहुचाने के लिये हमे बहुत परिश्रम और त्याग की आवश्यकता पडेगी। पर मुझे आशा है कि यद्यपि आज महात्मा जी नही है तो भी जिस तरह परिश्रम और त्याग महात्मा गाधी के नेतृत्व मे लोगों ने दिखलाया वैसा ही त्याग सारे देश के लोग अब भी दिखलायेगे।

कल जो यहा बाबा सोमनाथ की पुनर्स्थापना हुई है उस से भी इस स्थान पर बडी जवाबदेही आ गई है। यह एक ऐसा स्थान रहा है जिस पर न मालूम कितनी विपत्तिया आई। पर उन विपत्तियों को सह कर भी लोगों ने अपनी श्रद्धा और धर्म को बनाये रक्खा अब हमे ऐसी परिस्थिति लानी चाहिये जिस मै फिर से उस तरह की विपत्ति का हमे मुकाबला न करना पड़े। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये इस प्रान्त के लोगों का यह विशेष कर्तव्य हो जाता है कि हमेशा अपने को इस प्रकार से तत्पर और तैयार रक्खे कि ऐसी कोई बात न हो कि जिस के कारण वे मुसीबते फिर आयें। इस यज्ञ का पूरा लाभ हम को तभी मिल सकेगा। इस लिये जब कुछ मुसलमान भाई कल मुझ से मिले थे तो मै ने उन से यह कहा था कि आज भारतवर्ष मे हम ने नया संविधान बनाया है और उस मे सब को हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई, सिख, जैन, सब को अपने धर्म पालन का पूरा अधिकार दिया है। इस लिये यह प्रत्येक का धर्म है कि वह देश की रक्षा करे। अगर

किसी हिन्दू पर कभी किसी तरह की मुसीबत आती है तो मुसलमान, ईसाई, पारसी, सब का धर्म होता है कि, वे उस की रक्षा करे। हम तो यह चाहते है कि प्रत्येक हिन्दू की रक्षा का भार मुसलमान पर हो और प्रत्येक मुसलमान की रक्षा का भार हिन्दू पर हो। जब इस देश के सभी रहने वाले चाहे वे हिन्दू हों, मुसलमान हों, पारसी हों, या सिख हों, एक राय हो कर काम करेंगे तो फिर किसी की हिम्मत न होगी कि हमारे खिलाफ़ कोई कदम उठाये। हम चाहते है कि जो इस देश मे रहते है वे देश की रक्षा करना अपना धर्म मानें चाहे फिर किसी भी धर्म के या किसी भी देश के आदमी आकर इस देश पर हमला करें। मैं आशा करता हूं कि जो यहां के रहने वाले है वे इसे अच्छी तरह समझ सकेगे क्यों कि यहा का इतिहास दूसरे ढग का रहा है। अगर ऐसा होगा तो फिर किसी को भी हिम्मत न होगी कि वह इस प्रकार की मुसीबत ढाये। मै आशा करता हू कि अभी जो उन्नति के दूसरे मौक़े है उन मे भी आप भाग लेगे।

मुझे यह जान कर खुशी हुई कि सौराष्ट्र में काम अच्छी तरह से चल रहा है। यद्यपि इस सिलसिले में बहुत तरह की कठिनाइया आया करती है पर आप के मंत्रिमडल ने आप के राजप्रमुख के नेतृत्व में अच्छा प्रबन्ध किया है और मै समझता हूं कि आइन्दा के लिये भी आप का रास्ता साफ करते जा रहे हैं। मै आशा करता हू कि यह सूबा बहुत समृद्ध हो जायेगा और आप का शहर भी उस के साथ समृद्ध होगा। आप को पुनः मै एक बार धन्यवाद देता हूं।

जूनागढ़ में नागरिक अभिनन्दन

ता० १३-५-५२ को जूनागढ़ म्युनिसिपैलिटी द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब में राष्ट्रपति जी ने कहा —

महामहिम राजप्रमुख, म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष तथा दूसरे सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आप के इस शहर में थोड़ी देर के लिये भी मै आ सका। जैसा आप ने अपने मानपत्र मे कहा है, जूनागढ एक पुराना ऐतिहासिक, तारीखी शहर है और इस ने अपनी जिन्दगी के हज़ारों वर्ष सुख में बिताये है। आज हिन्दुस्तान एक नये दौर से गुज़र रहा है और पिछले तीन चार वर्षों में यह देश बहुतेरी कठिनाइयों से गुज़रा है। अब इस के कोने कोने तक अपने लोगों का राज्य क़ायम हो गया है। वह राज्य किसी एक आदमी का नही है और न किसी एक जाति और क़ौम के लोगों का राज्य है बल्कि यह राज्य ऐसा है कि इस में भारतवर्ष के प्रत्येक २१ वर्ष या उस से अधिक उम्र वाले पुरुष और स्त्री का भाग है और आज हम सच्चे दिल से कह सकते है कि इस देश मे रहने वाले ३६ करोड़ सब के सब इस देश के मालिक है। आज यहां न कोई राजा है और न प्रजा है। यहां तो सब के सब राजा है या प्रजा हैं। जो क़ायदा, संविधान, अपने देश के लिये हम ने बनाया है वह भी सुन्दर और अच्छा

संविधान हम ने बनाया है। उस में सब धर्मावलम्बी लोगों को, सभी जाति वाले लोगों को चाहे उन का कोई भी काम और पेशा क्यो न हो, पूरी स्वतंत्रता और आज़ादी दी गई है। और हम ने इस बात का भी वायदा उस मे किया है कि किसी धर्म के साथ किसी तरह की दस्तन्दाज़ी या हस्तक्षेप नही होगा और उस मे हम ने इस बात का भी वायदा किया है कि [illegible] या उस के खिलाफ जुर्म साबित किये बिना किसी व्यक्ति की आजादी नही छीनी जायेगी। हम ने यह भी वायदा किया है कि जहा तक हो सकेगा इस देश से हम गरीबी दूर करेंगे। इन सब ऊंचे आदर्शो को सामने रख कर आज हमारे स्वराज्य का काम शुरू हुआ है। अभी तो दो ही तीन साल बीते है और किसी भी मुल्क की जिन्दगी में दो तीन वर्ष कोई बड़ी चीज नही होते है। जब हम इस चीज को याद रखेंगे कि इन दो तीन वर्षो के अन्दर कितनी मुसीबतों का मुक़ाबला हम को करना पडा है तब तो यह बात और भी जाहिर हो जायेगी कि जो कुछ हम इन तीन वर्षो मे कर पाये है वह कम नही है बल्कि वह काफी बडी चीज है।

दुनिया के इतिहास मे इस तरह की कोई दूसरी मिसाल नही मिलती है जब इतना बडा देश इस तरह से इतनी कम कुर्बानी दे कर, इतना कम त्याग कर के अपने को आजाद कर सका हो। यह महात्मा गाधी की तपस्या का फल था और उन्होने जो रास्ता हम को बताया और उस पर जो हम थोडा बहुत चले उसी का यह नतीजा था कि हम इतनी जल्द स्वतन्त्र हो सके। स्वतत्रता तो मिल गई लेकिन स्वतत्रता के साथ गरीबी दूर करना, यहा के लोगो से अशिक्षा दूर करना इन सब चीजो को हम पूरी तरह अभी नही कर पाये है। मगर इतना हम विश्वास रक्खे कि इन कामो के लिये भी जो शुरुआत हुई है, वह जो नीव हम ने डाली है, वह सुन्दर और मजबूत है और इस मे कोई शक नही है कि थोडे ही दिनो मे इन सब चीजो का सुन्दर फल देखने को मिलेगा।

स्वतन्त्रता के साथ ही हम मे से प्रत्येक की जिम्मेवारी भी बहुत बढ गई है। जिस तरह से दूसरे स्वतन्त्र देश के लोग अपने देश की आजादी को सब से कीमती चीज समझ कर उस की हिफाजत और रक्षा के लिये सब कुछ कुर्बान करने के लिये तैयार रहते है उसी तरह हमारे देश के लोगो को भी उस आजादी को, जो हम ने हासिल की है, कायम रखने के लिये हमेशा तैयार रहना चाहिये। तभी हम उस को बचा सकेगे। हमारे मुल्क का इतिहास एक तरह से ऐसा रहा है जिस से इस बारे मे हमेशा लोगो के दिलो मे डर बना रहता है। आप पिछले दो ढाई हज़ार वर्षो के हिन्दुस्तान के इतिहास को देखे। कोई कभी बाहर से आ कर हिन्दुस्तानियो को नही हरा सका। मुसलमानो के आने से पहले हूण इस मुल्क मे चढाई कर के आये। मुसलमान भी विदेशो से आये। आज कल के जो मुसलमान है उन मे से बहुत कर के इसी देश के रहने वाले है। मगर शुरू मे वे विदेशो से आये। उन के बाद अंग्रेज आये। मगर एक भी ऐसा युद्ध नही हुआ जिस मे हिन्दुस्तानियो का मुकाबला विदेशियो से हुआ हो और हिन्दुस्तानी हारे हो। जब कभी हिन्दु-स्तानी हारे है तो हिन्दुस्तानियो से हारे है। यानी अपने ही देश के लोगो के खिलाफ़ हो जाने के कारण हारे है। विदेशी हमारे देशवासियो से मिल कर ही हमें हरा सके। यह तारीखी सच्चाई है। इस का कारण यह था कि यह सारा देश छोटे छोटे राज्यो में बंटा था। देखने में तो यह एक ही था और इस की संस्कृति भी एक ही थी। मगर राज्य अलग अलग बंटे हुए थे। इस का नतीजा यह होता था कि सब एक हो कर एक साथ मिल कर दुश्मन का मुकाबला नही कर सकते थे।

इस लिये स्वराज्य मिलते ही हमारा पहला काम यह था कि हम सारे देश को एक बना लें जिस में अपनी इस ऐतिहासिक कमजोरी से हम अपने को बचा सकें। दूरदर्शिता और त्यागपूर्वक हमारे देश में के सब राजा महाराजाओं ने अपने अधिकार छोड़ दिये जिस से कि सारा भारतवर्ष एक सूत्र में सहज ही बंध जाये और एक ही शासन के अधीन हो जाये। उसी का नतीजा है कि हम आज पहले पहल उत्तर मे हिमालय से ले कर दक्षिण मे कन्याकुमारी तक और पश्चिम मे सौराष्ट्र और समुद्र के किनारे से ले कर पूर्व में बंगाल की खाडी और आसाम तक सारे भारतवर्ष को एक संविधान के अन्दर, एक कायदे के मातहत देख रहे है और छोटी बडी देशी रियासतें और पहले अंग्रेजो के अधीन भारत, इन दोनों को मिला कर देश का प्रबन्ध चल रहा है। ऐसा कोई न समझे और मैं मानता हू कि ऐसा कोई समझता भी नही है कि उस का राज्य चला गया। अभी यहा श्रीमन्त जाम साहब बैठे है। मैं तो कहता हू कि उन का राज्य पहले केवल जामनगर पर था पर अब तो उन का राज्य सारे भारत पर है। मेरे जैसे एक गरीब आदमी का, जिस के पास कुछ भी नही था, आज सारे भारत पर राज्य हो गया है। भारत की यह एकता बडी भारी घटना है। शायद इस समय हम इस को कीमत न लगा सकें। मगर इतिहास बतायेगा कि सारे देश का एक शासन के अन्दर आना और सब के सब का अधिकार पाना आधुनिक युग की कितनी महान् घटना है। इस के साथ ही हम सब लोगो पर जवाबदेही भी आ गई है। अब हम नही कह सकते कि देश की रक्षा करना राजाओं का काम है। अब हम यह भी नही कह सकते कि देश की रक्षा करना क्षत्रिय का काम है। अब यह नही कहा जा सकता कि देश की रक्षा अंग्रेजो फौज करेगी। अब तो प्रत्येक आदमी का जो इस देश मे बसता है, जो यहा का पानी पीता है, यहा की धरती से पैदा हुआ अन्न खा कर जीता है या रोजगार करके पैसा कमाता है या मजदूरी करके दिन बिताता है फर्ज है और यह उस का हक भी है कि देश की हिफाजत मे वह पूरा हिस्सा ले। हिफाज़त हमें दो प्रकार की करनी है। एक तो तब जब विदेशो से कोई हम पर हमला करे। आज तो दुनिया में इस तरह के हमले सीधे नही होते है। मगर जो होते है वे बहुत भयकर होते है। जिस तरह के भयकर हथियार आज कल है उन्हे देखते हुए ऐसा सोचना कि हम लडाई में शरीक है इस लिये हमें खतरा है, और अगर हम लडाई मे शरीक नही है इस लिये हम खतरे से बचे है गलत है। आज लडाई मे कोई अपने को सुरक्षित नही रख सकता है। हम को भी इस तरह के खतरे से मुकाबला करना होगा। हम सब के साथ अच्छा व्यवहार रखना चाहते है। अपनी तरफ़ से हम कोई ऐसी बात नही करेंगे जिस की वजह से दूसरे हमारे मुल्क पर हमला करें। मगर आज निष्पक्ष रह कर भी लडाई से बचना मुश्किल है। इस लिये हमें अपने को मुकाबला करने के लिये तैयार करना है। मगर इस से भी भयंकर चीज आपस का झगडा है जिस से बचना है। मैं तो मानता हूं कि बाहर के हमले से ज्यादा खतरनाक आपस की फूट है। इसलिये आज जो इस देश में बसते है उन को यह समझना चाहिये कि हममें से प्रत्येक की आजादी के लिये, प्रत्येक की हिफ़ाज़त के लिये यह आवश्यक है कि हिन्दू यह समझे कि प्रत्येक मुसलमान की आबरू और इज्जत उन की अपनी आबरू है और प्रत्येक मुसलमान को समझना चाहिये कि हरेक हिन्दू की इज्ज़त और आबरू की रक्षा करना उस का फर्ज है। जब इस तरह की भावना हमारे देश में पूरी तरह से फैल जायेगी तो हमारे लिये अपनी हिफ़ाजत बहुत ही आसान हो जायेगी। इस चीज़ को हम लोगों को समझना चाहिये और

हम तो यह उम्मीद करते हैं कि अपने पिछले इतिहास को सामने रख कर और भविष्य के सुन्दर सुन्दर स्वप्नों को सामने रख कर हम इस चीज़ को कभी नहीं भूलेंगे। किसी भी मुल्क के लिये सब से बड़ी कमज़ोरी आपस की फूट होती है और भारतवर्ष इस फूट का पूरा नतीजा भोग चुका है और पूरा अनुभव पा चुका है। इस लिये आज जो कुछ बर्दाश्त हम ने किया है, सहा है, देखा है.उसी के अनुभव पर हमें अपना तौर तरीक़ा निश्चित करना है। ज़ाहिर है कि ऐसे मुल्क के लिये जिस में अनेकानेक भाषाओं के बोलने वाले, तरह तरह की ज़िन्दगी बिताने वाले, लोग रहते हैं, मुहब्बत यानी एक दूसरे के साथ अच्छे और सुन्दर बर्ताव के सिवाय दूसरा कोई रास्ता नही है। अगर हिन्दुस्तान को छोटे पैमाने पर दुनिया कहा जाये तो सही होगा क्यों कि दुनिया के सामने जितने मसले होते है वे सभी हिन्दुस्तान के सामने हैं। मुख्तलिफ ज़बान, अलग अलग भाषा, मुख्तलिफ तौर तरीक़ा इन्हीं चीज़ों की वजह से तो दुनिया के एक देश से दूसरे देश में फ़र्क होता है। हमारे देश में ये सभी चीज़ें मौजूद हैं। हम एक हो कर यहां रहते है यह दुनिया के लिये एक बड़ी चीज़ है। आइन्दा भी हिन्दुस्तान इसी तरह से रह सके तो सारी दुनिया के सामने यह नमूना पेश करेगा कि किस तरह से वह सुख और शान्ति से रह सकती है और किस तरह लड़ाई झगड़े की मुसीबत से अपने को बचा सकती है। अगर हिन्दुस्तान इस तरह से रहेगा तो अपने लोगों को सुखी बनाने के अलावा दुनिया के सामने एक मिसाल भी पेश करेगा और दुनिया के लोग उस की क़द्र करेंगे और समझेंगे कि यह एक ऐसी चीज़ है जिस की ज़रूरत कि सारी दुनिया को है। महात्मा जी ने यही चीज़ हमें सिखलायी है। खास कर के सौराष्ट्र के लोगों पर और भी जवाबदेही है क्यों कि वह यहां ही पैदा हुए, और जो कुछ उन्हो ने लिखा वह इस सूबे की ही भाषा गुजराती में ही लिखा। मै उम्मीद करता हूं कि आप सब इस काम में कामयाब होंगे और ईश्वर से प्रार्थना है कि वह आप को इस योग्य बना दे।

आप ने जो मेरा मान किया और मानपत्र दिया उस सब के लिये आप को हृदय से धन्यवाद देता हूं।

कीर्ति मन्दिर, पोरबन्दर

ता० १३-५-५१ को कीर्ति मन्दिर, पोरबन्दर में राष्ट्रपति जी ने कहा—

श्रीमन्त महाराणा साहब, बहनो और भाइयो,

मुझे आज यह पहला अवसर मिला है और यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि इस स्थान का मै दर्शन कर सका। यों तो आज से ३० वर्ष पहले से ऐसी इच्छा बराबर रहा करती थी और खास कर के जब कभी बापू के साथ सत्याग्रह आश्रम साबरमती में रहने का सुअवसर मिला यह इच्छा हुआ करती थी कि एक बार यहां आऊं और इस स्थान का दर्शन कर लूं पर किसी न किसी कारण से यह बात टलती गयी। आज से दो वर्ष पहले भी एक मरतबा इच्छा हुई थी कि बापू के जन्म दिवस पर आऊं और इस स्थान का दर्शन करूं पर

उस अवसर पर यह बात न हो सकी। आज मैं यहां आ सका इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूं। बापू का जन्म स्थान गौरवमय स्थानों में से है और हमेशा ऐसा समझा जायेगा इस में कोई शक नहीं। आज यद्यपि हम बापू के बताये रास्ते पर पूरी तरह से नहीं चल पाते हैं क्योंकि हम में शक्ति नहीं है, हम अपनी कमजोरी के कारण उसे पूरा नहीं कर पा रहे हैं, तो भी इस में कोई सन्देह नहीं है कि बापू की जो शिक्षा है वह अमर है और उस का स्थान केवल भारत ही में नही सारे संसार भर में है। इस में कोई संदेह की बात नही है कि एक दिन आयेगा और वह दिन जल्द आयेगा जब बापू की शिक्षा को सारा संसार स्वीकार करेगा और अगर इसे स्वीकार न करेगा तो उस को बड़ी मुसीबत का मुकाबला करना पड़ेगा। आज भी सभी जगहों पर जो कुछ हो रहा है लोग उस से ऊबे हुए हे, घबराये हुए हैं, डरे हुए हे और सभी विचारशील लोग चाहे वे किसी भी देश के क्यों न हों, इस चिन्ता में हैं कि कोई ऐसा पथ उन को मिले जिस पर चल कर वे सुख और शान्ति से रह सकें और जो भयंकर लड़ाई का वातावरण दुनिया में फैला हुआ है उस से अपने को, अपने देश को और संसार को सुरक्षित रख सकें। उसे सुरक्षित रखने के लिये बापू के रास्ते के सिवाय कोई दूसरा मार्ग नही है। यद्यपि हमारे देश ने और संसार ने अभी इस चीज़ को नही अपनाया है पर तो भी इस में कोई शक नहीं है कि एक न एक दिन मजबूर हो कर उस को उसी रास्ते पर आना होगा और उसे मंजूर करना होगा। इधर मैं देखता हूं कि कुछ लोग घबराते हे कि बापू ने जो कुछ कहा था वह नहीं हो रहा है, वे दुखी होते हे मगर मेरा अपना विश्वास है कि ये त्रुटियां किसी न किसी दिन दूर हो जायेंगी और बापू की जो शिक्षा है वह संसार के सामने आ जायेगी। जिन को उन की शिक्षा में विश्वास है जो उस में श्रद्धा रखते है वे रचनात्मक काम करें क्योंकि रचनात्मक काम ही उन को सब से प्यारा काम था। बापू तो सृजनात्मक थे विध्वंसकर्ता नहीं; और उन्हों ने सृजन का ही काम किया विध्वंस का नहीं। उन्हों ने जो थोड़ा विध्वंस का काम किया भी नो इस लिये कि जनता की उस में भलाई हो, जनता का कल्याण हो, देश की भलाई हो; नहीं तो उन्होंने सृजन करने का ही काम किया। उन का रचनात्मक काम इसी सृजन शक्ति का रूपमात्र है। जो लोग इस रचनात्मक काम में लगे हुए हे और श्रद्धापूर्वक करते जाते हैं उस में भी उन को ऐसे ही मार्ग का अवलम्बन करना है जिस का स्वप्न बापू देखा करते थे। आप ने इस काम का भार अपने ऊपर लिया है। आप का यही प्रयत्न है कि बापू का जन्मस्थान, क्रीड़ास्थान, जहां उन्हों ने अपना बचपन का काल बिताया और जिस स्थान की भाषा में उन्हों ने अपनी वाणी में संसार को शिक्षा दी वहाँ यह काम कर के उन की शिक्षा को मूर्तिरूप दें। मैं तो यह समझता हूं कि आप ने जो यह भार लिया है उसे आप ही वहन कर सकते हैं, दूसरा कोई वहन नहीं कर सकता। क्यों कि पूज्य बापू के साथ आप का जितना गहरा सम्बन्ध रहा उन के अन्तःकरण में जितनी दूर तक आप पहुंच सके दूसरे नहीं पहुंचे। इस लिये बापू के इस काम को इस ढंग से, इस खूबी से, इस चतुराई से और त्याग की भावना से आपको करना है जिस में वह सर्वव्यापी हो जाये और यदि भारत ने इस भावना को स्वीकार कर लिया तो इस में कोई शक नहीं कि दूसरे देशों में भी इस का फल बहुत तेज़ी के साथ होगा। सभी कामों के फल के लिये देर तक आदमी को इन्तज़ार करना पड़ता है। छोटे से छोटे काम का भी फल देखने के लिये कुछ ठहरना पड़ता है। किसी भी किसान को जो खेत में बीज बोता है चार छः महीने ठहरना पड़ता है। बीच में उसे फसल की देख भाल करनी

पड़ती है और अन्त में उस को फल मिलता है। इसी तरह बापू ने जो बीजारोपण कर दिया है उस को सुरक्षित रखना और जल दे कर सींचना यह हमारा आप का काम है। आप ने यह काम अपने ऊपर लिया है। मै आशा करता हूं कि ईश्वर आप को बल देगा और बापू के आशीर्वाद से आप सफल होगे ।

राजकोट में सार्वजनिक सभा

ता० १३-५-५१ को आजाद मैदान, राजकोट मे सार्वजनिक सभा मे राष्ट्रपति जी ने कहा --

श्री ढेबर भाई, श्री गोपाल शास्त्री, बहनो और भाइयो,

यह पहला अवसर है जब मै सौराष्ट्र मे आ सका हू। यद्यपि मै आपके पास ही गुजरात मे और विशेष करके अहमदाबाद मे पूज्य बापू के साथ अक्सर रहा करता था मगर इस यात्रा के पहले मुझे ऐसा सुअवसर नही मिला था कि मै यहा आ सकू। इस समय मै विशेष करके एक तीर्थयात्री की तरह से यहा आया हू। यात्रा में सब से पहला काम था कि बाबा सोमनाथ के मन्दिर की पुनर्स्थापना मे शरीक होकर वहा जो यज्ञ हुआ उसमे थोडा सा भाग लू। उसके बाद से मै और जगहों मे घूम रहा हू। मैने सोच लिया था कि जब तक मै पोरबन्दर का, जो गाधी जी का जन्म स्थान है, और राजकोट का, जहा उन के बचपन के दिन बीते थे, दर्शन नही कर लूगा तब तक मेरी यात्रा सफल नही होगी। आज मै इन दोनो स्थानो का दर्शन कर सका यह मेरे लिये बड़े सौभाग्य की बात है।

अभी आप को श्री ढेबर भाई ने देश की परिस्थिति और विशेष करके सौराष्ट्र की परिस्थिति के सबध मे बाते बताई। हमको स्वराज्य मिले तीन साल बीते है और ये तीन साल हमारे लिये बडी मुसीबत के, बड़े कष्ट के रहे है। तो भी महात्माजी के आशीर्वाद से और बहनो और भाइयो की कार्य कुशलता से हम इस विपत्ति को किसी तरह निबाह पाये है। मुसीबत के दिन कभी न कभी कट ही जाते है और अच्छे दिन आते है। हम इस आशा मे है कि जो मुसीबत के दिन अब तक बीते है और जो अभी बीत रहे है उनके अन्त हो जाने पर हम अच्छे दिन देख सकेगे।

और शिकायतों के अलावा भोजन का कष्ट देश के लिये सबसे बडा महत्व रखता है। देश के कई हिस्सो मे अन्न की आज इतनी कमी हो गई है कि इस बात का डर है कि कही दुष्काल न हो जाये और हमारे भाइयों को कही उससे भी अधिक कष्ट न सहना पडे जो वे आज सह रहे है। इससे बचने के लिये दो ही उपाय हो सकते है, अन्न पैदा करने के दो ही रास्ते हो सकते है। एक तो यह कि जहा कही से अन्न मिले, देश या विदेश कही से क्यो न हो, उसको हम लावें और जहा अन्न की कमी हो वहा लोगों तक पहुचाये और दूसरा यह कि अपने देश में अधिक अन्न पैदा करें जिसमें हमें विदेशों से अन्न मगाने की जरूरत ही न रहे। अपनी गवर्नमेंट इन दोनों नीतियों के अनुसार काम कर रही है। विदेशों से इस वर्ष में जितना अन्न लाने का प्रबन्ध किया गया है उतना आज तक इस देश में कभी विदेश से अन्न नहीं आया। यों तो बहुत दिनों से देश में अन्न की कमी

रही है अर्थात् हम उतना अन्न पैदा नहीं कर रहे हैं जितने कि हमको जरूरत रहती है। मगर उन दिनों में विशेष करके बर्मा से हमको चावल भी मिल जाया करते थे और तब बर्मा और भारत एक साथ थे इसलिये इस बात को हम कभी महसूस नहीं करते थे। मामूली व्यापार के जरिये जितने चावल की जरूरत होती थी हमारे पास पहुंच जाया करता था। मगर भयंकर युद्ध के दिनों में बर्मा में चावल की पैदाइश कम हो गयी और बर्मा हम से अलग हो गया और वहा से चावल आना कम हो गया। अभी हमको जितना चावल मिलता था उतना नहीं मिल रहा है। अन्न की कमी का एक कारण तो यह है। आप जानते हैं कि जब देश का बटवारा हुआ तो हमारा एक टुकडा कट कर पाकिस्तान मे चला गया। वह हिस्सा था जहां से हमको बहुत गेंहू मिल जाया करता था। तो इस बंटवारे का यह नतीजा हुआ कि वह गेंहू वाला हिस्सा हमारे देश से अलग हो गया और वहां से अब हमको गेंहू लाना हो तो उसे विदेश समझ कर ही लाना होता है। इस साल में ईश्वर की भी कुछ हमारे ऊपर ऐसी बुरी निगाह रही कि पहले तो अतिवृष्टि हुई, और बाढ़ आयी उसकी वजह से फसल बर्बाद हुई। उसके बाद फिर अनावृष्टि हुई, सूखा पड़ गया और उसकी वजह से भी प्रायः फसल बिगड़ गयी। विशेष करके उस प्रात में जहां से मै आया हूं अर्थात् बिहार में तो गेहूं की फ़सल भी अच्छी नहीं हुई और आगे मकई की फसल भी अच्छी नहीं होगी जितनी की कि हम आशा कर सकते थे। जब तक अच्छी तरह से ठीक समय पर और हमारी जरूरतों के अनुकूल इस वर्ष भी वृष्टि नहीं होती तब तक वहा के अन्न की स्थिति, वहा की पैदावार सुधरने वाली नहीं है। इसीलिये बिहार में दुष्काल का भय है। मद्रास मे भी इधर कई वर्षों से ठीक समय पर वर्षा नहीं होने से उसके एक हिस्से में अन्न की पैदावार कम हो गई है और यह भय है कि वहा भी दुष्काल हो सकता है। इससे बचने के लिये जैसा कि मैं ने कहा इस बात की कोशिश की जा रही है कि जितने अन्न की आवश्यकता हो उतना हम विदेशों से मगाले। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि इसमें हमको सफलता मिल रही है। यद्यपि विदेशों से अन्न मगाने मे हमको इतने पैसे खर्च करने पड़ते हैं जितने पैसे खर्च करने की शक्ति इस देश में नहीं है तो भी और योजनाओ को रोक करके अन्न की कमी को दूर करना हमारी सरकार अपना प्रथम कर्त्तव्य समझती है, इसमे जितने पैसे लगे लगाना अपना कर्त्तव्य समझती है। लेकिन यह सब तो अभी की कठिनाई को दूर करने के लिये हो रहा है। स्थायी तौर पर तो अन्न की कमी तभी दूर हो सकती है जब हम अपने देश में अधिक अन्न पैदा कर सके। इस वक्त अगर विचार करके देखे तो अन्न की यहां ज्यादा कमी नहीं है। अगर जहा हम १० मन पैदा करते हैं वहा ग्यारह, साढ़े ग्यारह मन पैदा करें तो यह कमी दूर हो सकती है। सभी लोग जिनको खेती का अनुभव है वे कह सकते हैं कि १० मन के बदले मे ११ मन पैदा करना कोई असंभव बात नहीं है। थोडा अधिक परिश्रम कर लिया जाये तो यह काम हम खाद की मदद से आसानी से पूरा कर सकते हैं। गवर्नमेंट का प्रयत्न यही है कि इन तरीकों से इस कमी को दूर किया जाये। मगर इसके अलावा गवर्नमेंट का यह भी प्रयत्न है कि हमारे देश की जो बड़ी बड़ी नदिया हैं जिनमें बरसात के दिनों मे बहुत जल आ जाता है और बाढ की शक्ल में खेतों को बर्वाद करते हुए जाकर समुद्र में गिरता है उस जल को बांधकर अपने काबू मे रक्खे जिससे कि जहां जिस वक्त जरूरत हो इस जल को दे सकें और हमारे यहां कृषि की जो कमी है उसको हम दूर कर सके। इस तरह गवर्नमेंट ने बड़ी बड़ी योजनायें अपने हाथों में ली है जिनमें सैकड़ों करोड़ रुपये का खर्च है और खर्च के अलावा उनको पूरा करने में समय भी लगता है। जब ये योजनाएं काम में आने लग जायेंगी

और ये बड़े बड़े बांध बनकर तैयार हो जायेंगे, बड़ी बड़ी नहरें जल वितरण करने लग जायेंगी तब जो अन्न की कमी है वह दूर हो जायेगी। पर जैसा मैं ने कहा, उसमें समय लगता है। पर आप यह विश्वास रक्खें कि अन्न के कष्ट को दूर करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

मगर इसके अलावा और भी खराबिया है जिनको किसी न किसी तरह हमें दूर करना है। जहा जहां मै जाता हूं उन सभी जगहों मे लोग इस बात की शिकायत करते है कि सब चीज़ों का दाम बढ गया है, और अब भी बढ़ता जाता है और यह कहते है कि महगी इतनी बढ गयी है कि वे नही जानते कि कैसे उसे बर्दास्त करें। बात सही है। मंहगी बहुत है। कम भी नही हो रही है। आजकल चीज़ों के दाम बहुत बातों पर निर्भर करते है। यह कोई नही कह सकता कि हमारे देश की हालत ही चीजो की कीमत निर्धारित करती है। यहा पर जो लोग काम करते है वे जानते है कि यहा के खेतों मे जो रुई पैदा होती है उसकी क़ीमत अमेरिका की रुई की क़ीमत से, यूरुप की रुई की कीमत से, और अब पाकिस्तान की रूई की क़ीमत से प्रभावित होती है। इसी तरह गेंहू की कीमत भी ससार के गेहु की कीमत से प्रभावित होकर तय होती है। इस देश मे चावल भी काफ़ी नही होता है, और विदेशों से आता है। इसकी कीमत पर बर्मा, श्याम, चीन आदि देशों के चावल की कीमत का असर पडता है। अगर चीज़ों की क़ीमत हम काबू मे नही ला सकते है तो हो सकता है कि ऐसा न कर सकने में हमारी त्रुटि भी हो मगर आप यह नही कह सकते कि केवल हमारी त्रुटि के कारण ही कीमत कम नही हो रही है। सच तो यह है कि आजकल अगर कोई घटना ससार के किसी एक हिस्से में होती है तो उसका असर संसार भर में पडता है। इस असर का यह फल होता है कि यहा भी चीज़ों की क़ीमत कम व बेश घटती या बढ़ती है। इसके लिये जो कुछ भी गवर्नमेंट कर सकती है वह करने का प्रयत्न कर रही है। इसमें मझे ऐसा लगता है कि अपने देश के सभी लोग मिलकर उसकी मदद करें तो इसमे कोई शक नही है कि बहुत हद तक उसको काबू में हम कर सकते है। ऐसा होना भी चाहिये। गवर्नमेंट अपनी तरफ से जितना कर सकती है कर रही है पर अभी असतोष बहुत है। असतोष स्वाभाविक है। मगर उनसे मेरा निवेदन है कि वे इस चीज को ठीक तरह से समझें कि इन सब चीजो मे हमारा अधिकार नही है। हां, यदि सभी चीज़ों पर सरकार का अधिकार होता तो इस बारे मे हमारी शिकायत जरूर की जा सकती थी। मगर वह स्थिति है नही। जिस स्थिति में हम है और जो हमारा कर्त्तव्य है उसे करने की कोशिश हम कर रहे है। क़ीमतों के प्रश्न के आलावा और भी बडे बडे प्रश्न हमारे सामने है।

सबसे बड़ा प्रश्न हमारे सामने यह है कि हमको जो स्वराज्य मिला है उसकी हिफाज़त, उसकी सुरक्षा हम कैसे करें और इस भार को हम कैसे वहन करें? उसके लिये प्रत्येक भारतवासी का, चाहे वह हिंदू हो, मुसलमान, सिख या पारसी या ईसाई या किसी भी धर्म का मानने वाला हो, कर्त्तव्य है कि इस देश की स्वतत्रता को सुरक्षित रखने के लिये उसको जो कुछ त्याग करना पड़े, कष्ट उठाना पड़े उसके लिये वह तैयार रहे। सभी देशों के लोग इसके लिये तैयार रहते हैं और तभी देश की स्वतंत्रता को सुरक्षित रख सकते है। हम अपने देश के इतिहास को न भूले हम इतने दिनों तक गुलामी में रहे फिर भी अगर हम नही चेतें और इस सबक को नहीं सीखें

तो हमको दूसरा कोई बचा नही सकता है। इस संबंध में इस देश के रहने वालों को महात्माजी की बात याद रखनी चाहिये। उन्होंने कहा था कि जब सब कोई आपस में मिल जुल कर एक दूसरे के साथ मुहब्बत का वर्ताव करते रहेंगे तभी वे सुख से रह सकेंगे। उन्होंने यह भी कहा था कि ऐसे ही देश में जहां कितने ही धर्म के मानने वाले लोग, अलग अलग भाषा के बोलने वाले लोग, अलग अलग रहन सहन के लोग बसते हों वहां प्रेम का वर्ताव ही ठीक हो सकता है, दूसरा नही। हम किसी भी प्रकार से हिंसा से काम लेगें तो उसका परिणाम बुरा ही होगा। इसलिये हमको यह सबक याद करके रखना है। मुझे एक पुरानी बात याद आती है। आप जानते हैं कि महा-भारत की लड़ाई में श्रीकृष्ण भगवान और पाडव योद्धा थे। उन्होंने कौरवों को हराया। लेकिन वे ही यादव जब आपस में झगड़ गये तो उनमें से नाम लेने वाला कोई नही बचा। कल जाम साहब हम से कह रहे थे कि एक कोई बच्चा किसी तरह से बच गया था जिससे उनका अपना परिवार निकला है। आप समझ सकते है कि जो यादव इतने शक्तिशाली और समृद्धशाली थे, जब उनमें आपस में फूट पड़ी तो ऐसी बुरी अवस्था में पड गये कि स्वयं कृष्ण भगवान को भी किसी व्याध ने मार दिया। अर्जुन जब स्त्रियों को लेकर चले तो गाडीव उनके हाथ में था, वही गांडीव जिससे उन्होंने महाभारत युद्ध को फतह किया था। तो भी किरातों ने मारपीट कर उनसे स्त्रियों को छीन लिया और उनका गाडीव कोई काम नही कर सका। यह सब इसलिये हुआ कि आपस के झगडे से शक्ति का ह्रास हो गया था। लेकिन यद्यपि कौरव पाडव आपस में लडे थे, अपने अधिकार के लिये लडे थे लेकिन जब दूसरों से लडाई की बात आती तो वे यह नही समझते थे कि १०० कौरव एक तरफ हैं और ५ पांडव दूसरी तरफ़। वे समझते थे कि हम १०५ हैं। जब तक यह १०५ की भावना रही कोई दुश्मन उनको आख नही दिखला सका। जब यह भावना दूर हो गयी तो अर्जुन डाकुओं के हाथ लुट गये। यह अवस्था उस समय की थी। इसी तरह बुद्धि नष्ट हुई तो विदेशी आये और उन्होंने अपनी सत्ता जमायी।

आज बहुत दिनों के बाद हमें यह सुअवसर मिला है जब कि सारे भारत को एक छत्र राज्य के अन्दर और एक सविधान के अन्दर लाकर हम सारा काम कर रहे हैं। अभी धेबर भाई ने आपको बतलाया कि सौराष्ट्र में २०५ रियासतें थी जिनको मिलाकर सौराष्ट्र राज्य बनाया गया है। सारे हिंदुस्तान में ५००-६०० छोटी बड़ी रियासतें थी। जब अंग्रेज यहां से गये तो उनके अधीन जितने प्रात थे उनका अधिकार हमें सौप गये लेकिन जो रियासते थी उनको ज्यों की त्यों छोड़कर चले गये और इन रियासतों को यह स्वतत्रता देते गये कि वे यदि चाहें तो हिन्दुस्तान के साथ मिलें, चाहे तो पाकिस्तान के साथ मिले या चाहें तो स्वतंत्र रहें। अब हमारे सामने यह प्रश्न था कि इन रियासतों को देश के बाक़ी भाग के साथ मिलाकर और एक सूत्र में बाधकर कैसे एक देश बनाया जाये। लेकिन सरदार वल्लभभाई की बुद्धिमत्ता ने, देशी रियासतों की प्रजा के जोश ने और देशी रियासतों के नरेशों के देश के प्रति प्रेम ने मिलकर भारत को एक सूत्र में बांध दिया। आज से पहिले इतिहास में एक शासन सूत्र के अन्दर इतना बड़ा भारत कभी नही था जितना बड़ा आज है। यद्यपि पूर्व और पश्चिम में हमारे दो पंख कट गये हैं और केवल बीच का ही भारत हमारे हाथों में रह गया है तो भी इतना बड़ा भारत एक छत्र छाया में कभी नही आया। इतनी जनता, इतने नरेश और इतने काम करने वाले एक साथ मिल कर इस देश की सेवा में जुटे हैं यह हमारे लिये एक बड़ी चीज हुई। आज दुनिया के अन्य देश भारत को इज्जत

की निगाह से देखते हैं और समझते हैं कि दुनियां की उठने वाली शक्तियों में भारत भी एक उठने वाली शक्ति है। अगर ईश्वर चाहेगा तो भारत की शक्ति बढ़ेगी और भारत एक देश हो जायेगा। हम शक्तिशाली इसलिये नहीं बनना चाहते कि दूसरों को सताना चाहते हैं दूसरों को दबाकर हम अपना लाभ उठाना चाहते हैं बल्कि दूसरों को बिना सताये हुए , बिना दूसरों पर अधिकार जमाये हम अपने को और दूसरों को सुखी कर सकेंगे और सारे ससार के अन्दर शाति स्थापित करने में मददगार हो सकेंगे। यह एक बहुत सुन्दर और भव्य भविष्य का चित्र है। हम मानते हैं कि हम उसको पूरा कर सकते हैं। उसको पूरा करने का तरीक़ा गांधी जी का तरीका है। जो उन्होंने रास्ता बतलाया था उस पर हम चले तो हम यह सब पूरा कर सकेंगे। अफ़सोस की बात है कि बहुत लोग कहते हैं कि जो रास्ता गांधी जी ने बतलाया था उस पर हम नही चल सके, बहुत लोग उससे अलग होते जा रहे हैं। कुछ हद तक यह बात ठीक भी है। बात तो यह है कि गाधी जी ने हमको एक सर्वोदय का रास्ता बतलाया था जिसका अर्थ है सबका सुधार, जिसका अर्थ है कि एक बात मे ही नही सभी बातों में हमारी उन्नति हो। आज जो लोग अपने को गाधी जी के चेले बतलाते हैं और जो गांधी जी के रास्ते पर चलते हैं उनसे यह भूल हो जाती है कि वे गांधी जी की किसी एक चीज़ को लेकर समझते हैं कि उनकी सारी शिक्षा उसी मे है और जितनी दूसरी चीजें हैं वे सब निकम्मी हैं। बात ऐसी नही है। उसका नतीजा यह हुआ है कि जिस चित्र को गांधी जी ने अपने सामने रक्खा था उस चित्र को हम नही देख सकते हैं। अभी गाधी जी को गये तीन ही वर्ष बीते हैं। इन तीन वर्षो के बाद भी हम पूरा चित्र नही देख पाते है। किसी गाव के कुछ अंधों ने एक हाथी देखा। उनमे से किसी एक ने उसकी सूंड छुई, किसी ने उसके पैर छुये, किसी ने कान और किसी ने उसकी पीठ छुई। जिसने सूंड छुई उसने समझा वही हाथी है, जिसने पैर छुआ उसने समझा वही हाथी है, जिसने पीठ छुई उसने समझा कि पीठ ही हाथी है। उनमें से किसी ने न सारे हाथी को छुआ और न समझा। तो हम उन्ही अन्धो की तरह गाधी जी की एक चीज़ को लेकर उसी पर ज़ोर देते हैं कि गांधी जी का जो चित्र है वह सारा उसी मे देखा जा रहा है , उसी मे उनकी सारी शिक्षा है। अगर कोई चर्खे को लेकर चलता है तो उसी पर सारा जोर देता है और उनकी बाक़ी सब चीज़ों को भूल जाता है। अगर किसी को गांधी जी की नयी तालीम से प्रेम है तो उसी मे सारा वक़्त लगा देना चाहता है और बाक़ी सारी चीज़ों को भूल जाता है। अगर कोई हिंदू मुसलमान के मेल की बात लेकर चलता है तो वह समझता है कि आपस का मेल ही सब से बढ़कर गाधी जी की शिक्षा है और दूसरी चीजों में कुछ नही है। मगर गाधी जी की सीख में तो सब कुछ है। जब सब चीज़ें एक साथ चलेंगी तभी वह चित्र पूरा हो सकेगा। नही तो एक ऐसा चित्र बनेगा जिसका कही पैर ही मोटा हो जायेगा तो नाक ही बड़ी हो जायेगी और चित्र ठीक नही निकलेगा। तो जो उनका सर्वोदय का लक्ष्य था उस लक्ष्य को अपने सामने रखकर हम काम करे तभी हम सफल हो सकते हैं। सौराष्ट्र मे और विशेषकर के राजकोट के लोगों मे जहां के लोग गुजराती बोलते और पढ़ते हैं, गाधी जी के सबध मे कुछ कहना ढिठाई है क्योंकि उनके ग्रथ गुजराती में, उनके अपने शब्दों मे ही मिल सकते हैं और उन्हें आपने पढ़ा भी होगा। मैं ने इशारे मात्र से बतलाया है कि यदि हमारे पास अपने देश को मुसीबत से बचाने के लिये कोई चीज़ है और अगर संसार के सामने हम कोई चीज़ रख सकते हैं तो वह गांधी जी की शिक्षा है। यदि उसी पर चलकर हम सर्वोदय का काम करें तो हम सफल हो सकते हैं। मैं जानता हूं कि आप जो यहां काम करने वाले हैं वे गांधी जी की बातों को समझते हैं। इसलिये मुझे आशा है

कि गांधीजी की शिक्षा को सारे देश में स्थापित करके आप देश का तथा संसार का कल्याण करेंगे। मैं आशा करता हूं कि जो सिद्धांत की बात है या ऐसी चीज़ है जो हमेशा के लिये है उस पर ध्यान दे कर, सर्वोदय पर ध्यान देकर उत्साह के साथ आप काम करेंगे और देश का कल्याण करेंगे।

मैं जब से सौराष्ट्र में आया आपने बहुत आदर दिखलाया और स्वागत किया है। मैं जानता था कि आप जानते हैं कि मैं गांधी जी का दूर का रहने वाला एक तुच्छ सेवक हूं और इस नाते आपकी कृपा मुझे मिलती रहेगी। आपने मेरा स्वागत किया उसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद।

राष्ट्रीय शाला, राजकोट

तारीख १४-५-५१ को राष्ट्रीयशाला राजकोट में राष्ट्रपति जी ने कहा—

श्री नारायणदास भाई, बहनो और भाइयो,

यह आपका शहर तो बापू के बचपन का शहर रह चुका है। इसकी पवित्रता और महता तो बहुत पहले से ही क़ायम है। उसके बाद १९३९ में जब बापू ने अनशन किया था तो इसी मकान के अन्दर जिस कोठरी को मैं ने अभी देखा है उसी में किया था। इस वजह से इसका महत्व और भी बढ़ गया है और अब तो आपने सौराष्ट्र भर के लिये रचनात्मक प्रवृत्तियों का अपना केन्द्र यहां ही बना लिया है। इस तरह से यह एक ऐसा केन्द्र बन गया है जहां से रचनात्मक प्रवृत्तियां निकलती है और चारो तरफ फैलती है और मेरी आशा है कि केवल सौराष्ट्र के लिये ही नहीं बल्कि और जगहो के लोगों को भी आप रचनात्मक काम के लिये उत्साह प्रदान करेंगे। कल मैं ने यहा एक बडी सभा में कहा था कि रचनात्मक काम बापू का ऐसा एक काम है जिसके चलने पर और जिसके ठीक तरह से आगे बढ़ने पर केवल इस देश का ही नही सारे संसार का कल्याण बहुत कुछ निर्भर करता है। मेरा विश्वास है कि जिस तरह का समाज पूज्य बापू चाहते थे और जिस तरह की स्थिति वह देश के अन्दर लाना चाहते थे उसको लाने के लिये सब से अच्छा सब से सुन्दर और सब से सीधा तरीक़ा रचनात्मक काम का चलाना है। इसलिये जहां भी मुझ मौका मिलता है मै इस बात पर ज़ोर देता हूं और लोगों से कहता हूं कि जब वे रचनात्मक काम के किसी एक अंग को लेकर ही नही बल्कि सब को मिलाकर आगे बढ़ेंगे तभी वे पूरी तरह से सफल हो सकेंगे। केवल एक चीज़ को लेकर हम आगे बढेंगे तो उसका फल यह होगा कि उस प्रवत्ति के जो दूसरे अंग है उनको लोग भूल जायेंगे। बापू कहा करते थे कि रचनात्मक काम का केन्द्र बिन्दु उसी तरह चर्खा है जिस प्रकार से सभी ग्रहों के बीच में सूर्य होता है। उनका यह विश्वास अन्त तक बना रहा। हज़ारों हज़ार टीका टिप्पणियां लोगों ने कीं और बड़े बड़े लोगों ने हंसी भी उड़ायी पर बापू डिगे नहीं। वह चर्खे को केवल सूत कातने का यंत्र मात्र नहीं मानते थे बल्कि सारे रचनात्मक कामों का दुर्ग मानते थे। मैं समझता हूं कि लोग उसे अपनाना अपना कर्त्तव्य समझेंगे और इन सब चीज़ों में श्रद्धा बढ़ायेंगें, प्रेम बढ़ायगे और उनको चला सकेंगे। इसलिए आपने जो चर्खे का दान दिया यह आपकी बडी कृपा हुई। मैं कुछ न कुछ थोड़ा बहुत चर्खा को

अवश्य चलाता हूं पर मेरे लिये यह कहना कि नियमित रूप से जैसे बापू चलाते थे मैं भी चलाता हूं ठीक नहीं है। मुझ से वैसा नहीं होता है। बीमार पड़ जाता हूं तो छूट जाता है, सफ़र में समय नहीं मिलता है। यह संभव है कि सफ़र में समय निकालना चाहूं तो निकाल सकता हूं पर अपनी कमजोरी से, आलस्य से छूट जाता है। पर प्रयत्न तो करता हूं कि चर्खा चलाऊं। इतना तो ज़रूर चलाता हूं कि कुछ कपड़ा बन जाता है और उसे मैं पहन लेता हूं। पर जब से गवर्नमेंट हाउस में पहुंचा हूं या दिल्ली में पहुंचा हूं तब से कपड़े का खर्च अधिक हो गया है। मुझे याद है कि दिल्ली आने के पहले मैं साल में तीन या चार धोतियां, तीन या चार कुर्ते, तीन या चार गंजी के लायक सूत कात लिया करता था और उतना ही पहनता था, इससे ज्यादा की ज़रुरत नहीं होती थी। हां जाड़े के दिनों में गर्म कपड़ा पहनता था। ऊनी कपड़ा ख़रीदना पडता था क्योंकि यरवदा चक्र पर ऊन की कताई नहीं हो सकती है। यह मामूली काम था। अब धोतियां भी अधिक पहनता हूं। इसका कराण यही है कि पहले अपने हाथ से धोतियों को साफ़ कर लिया करता था। कपड़े के साथ मोह रखता था इसलिये कपड़े बचाकर धोता था। इसलिये कपड़े फटते भी कम थे। अब धोबी से धुलवाता हूं। धोबी को तो मोह नही लगता है। इसलिये अब कपड़े भी अधिक पहनने पड़ते हैं। इस तरह से कपड़े की ज़रूरत बढ़ जाती है और सूत कातने का समय कम हो गया है। इस तरह ज़्यादा नफ़ी की ही तरफ़ जाता है जमा की तरफ़ कम आता है। आपने प्रेम और श्रद्धा के साथ जो चर्खा दिया है उसके साथ साथ एक बोझ भी डाल दिया है। मैं कोशिश करूंगा कि उसको निभाऊं। आप इतना विश्वास रखें कि मेरा विश्वास चर्खे के अन्दर है। मैं देखता हूं कि बहुत लोग इससे घबड़ाते हैं, इसको छोड़ना भी चाहते हैं। कुछ लोग ऐसा भी सोचते है कि इससे काम नहीं चलेगा। हो सकता है कि हमारे तौर तरीक़े में, काम करने की पद्धति में परिवर्तन करने की ज़रूरत हो। बापू ने इसे सदा किया था। किसी चीज़ को लेकर उन्होने ऐसा कभी नहीं माना कि उसमें हेर फेर की गुजाइश नही है। चर्खे के रूप के संबंध में तो उन्होंने बहुत मार्मिक अदल बदल किया और हो सकता है कि बापू रहते तो इस में और भी सोचकर हेर फेर करते। अब तो वह नही हैं। अब आप लोगों का काम है, जिन्होंने अच्छी तरह से अध्ययन किया है, इसमें समय दिया है, कि सोचें कि इसमें कहां पर हेर फेर करने की ज़रूरत है और अगर ज़रूरत है तो उसे करने में आपको नही हिचकना चाहिये। मैं हमेशा कहता हूं कि जिसने इस पर कम ध्यान दिया है, जिसने इसके अर्थ को समझा नहीं और खास करके इसके अर्थ शास्त्र पर विचार नहीं किया है उसको यह कहने का हक़ नहीं है कि इसमें कुछ नही है। उसके कहने का कोई असर भी हमारे दिल पर नहीं पड़ता। हां ऐसे लोग जिन्होंने इसमें समय लगाया है, इसे कार्य रूप से करके देखा है वे यदि कुछ कहें तो उसका असर दिल पर पड़ता है। मैं चाहता हूं कि जो आप लोग इस काम में लगे हुए हैं इसको देखें और अगर हेर फेर करने की ज़रूरत हो तो उसे करने में हिचकें नहीं। आपका जो दूसरा कार्यक्रम चलता है उस पर कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि मैं देखता हूं कि सर्वोदय को सामने रखकर सब चीज़ों में आपकी दिलचस्पी है। आपके सौराष्ट्र में सब से बड़ी चीज़ यह है कि यहां की गवर्नमेंट आप लोगों से मिलकर योग दान दे रही है। मैं ने सुना है कि यहां की गवर्नमेंट ने रचनात्मक काम का सब भार आप ही पर डाला है। यह बड़ी खुशी की बात है। गवर्नमेंट के हाथों में अधिकार रहता है और साधन भी रहता है। उससे अगर आपको लाभ पहुंचे और आपकी वह मदद करती है तो यह बहुत सुन्दर है। मैं नही समझता हूं कि इस रूप से और इतने हद तक

किसी दूसरे सूबे में रचनात्मक संस्थाओं को गवर्नमेंट ने काम सौंपा हो। गवर्नमेंट से मदद मिल रही है और खास करके वह पैसे की मदद देती है। मगर जहां जहां गवर्नमेंट ने इस काम को हाथ में लिया है वहां सब से बड़ी दिक्कत यह होती है कि गवर्नमेंट के पास इस काम को समझने वाले आदमी नहीं हैं। उनका तौर तरीका दूसरा रहा है। जो इंजीनियर लोग हैं उनका भी ध्यान इस बात पर नहीं गया है। जो सिविल एम्प्लायमेंट के लोग हैं उनका ध्यान इस ओर नहीं जाये तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। लेकिन जो खास करके उस डिपार्टमेंट के लोग होते हैं उन्होंने भी इस पर ध्यान नहीं दिया है। इसका नतीजा यह होता है कि बिना जाने हुए वे कह देते हैं कि इससे कुछ होने वाला नहीं है। इसलिये यह बड़ी खुशी की बात है कि आप लोगों को जो इस चीज़ को जानते हैं गवर्नमेंट ने इस काम को सौंपा है। आपको दिखलाना चाहिये कि गवर्नमेंट की मदद पाकर कितना काम बढ़ा सकते हैं और जो सुविधा मिली है उससे कितना लाभ पहुंचा सकते हैं क्योंकि आपके पास श्रद्धा है, गुण है और अभ्यास है। और मैं क्या कहूं। मै यही आशा रखता हूं कि रचनात्मक काम आप लोगों के ज़रिये और आगे बढ़ेगा। बहुत बहुत धन्यवाद।

जामनगर में नागरिक अभिनन्दन

तारीख १४-५-५१ को जामनगर म्युनिसिपैलिटी द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब में राष्ट्रपतिजी ने कहा–

श्रीमन्त राजप्रमुख, जामनगर नगरपालिका के अध्यक्ष तथा दूसरे सदस्यगण बहनो और भाइयो,

आपने बहुत आदर के साथ मेरा स्वागत किया है और मानपत्र दिया है इसके लिये मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूं। मै यहां पिछले चार पांच दिनों से सौराष्ट्र में फिर रहा हूं। मैं आया था बाबा सोमनाथ के दर्शन के लिये, श्री कृष्ण के देहोत्सर्ग स्थान के दर्शन के लिये, द्वारिकाधीश के दर्शन के लिये और साथ ही साथ महात्मा गांधी जी के जन्म स्थान, लड़कपन के क्रीड़ा स्थान के दर्शन के लिये ; और यहां आकर दूसरे दूसरे स्थानों में जाकर आप सब भाइयों और बहनों से मिलने का यह सुअवसर मिला यह मेरा सौभाग्य है। आपके इस जामनगर शहर में तीर्थ यात्रा के बाद आज ही पहुंचा हूं और कल ही में दिल्ली चला जा रहा हूं। मैं जो यहां आ सका हूं इसमें राजप्रमुख महोदय की बड़ी कृपा है और प्रेरणा है.इसको मैं अच्छी तरह से जानता हूं; लेकिन आप लोगों का प्रेम भी ऐसा है जिसकी वजह से यहां आना चाहूं तो हमेशा आता जाता रहूंगा। काम की बहुतायत के कारण अगर नहीं आ सकूं तो यह दूसरी बात है पर इच्छा हमेशा आने की रहेगी। इस समय जैसा मैंने कहा मैं तीर्थ यात्रा के लिये ही आया हूं, राष्ट्रपति की हैसियत से नहीं आया हूं। सौराष्ट्र तो सारे के सारे भारत के लिये तीर्थस्थान है। तीर्थस्थान यह प्राचीन काल में भी था और आज भी है क्योंकि जैसे प्राचीन काल में यहां बड़े बड़े अवतारी पुरुष हुये वैसे ही वर्तमान युग का अवतारी पुरुष भी सौराष्ट्र ने पैदा कर दिया। यह मेरा बड़ा सौभाग्य है कि मैं ऐसे स्थान में आ सका हूं।

आप जानते हैं कि इधर जब से हमको स्वराज्य मिला है तब से सारे देश के अन्दर नया संविधान भी जारी हो गया है और उस नये संविधान का अर्थ यही है कि इस देश के सभी लोग चाहे वे किसी धर्म के या किसी भी जाति के हों, कोई भी भाषा बोलते हों, स्त्री हों या पुरुष हों, जिन लोगों को चुन दें वे ही देश का शासन चलायेंगे। इस प्रकार से प्रत्येक भारतवासी पर जिसकी अवस्था २१ वर्ष या उससे अधिक है एक बड़ी जवाबदेही आ गई है। इस देश को बनाने और बिगाड़ने का सारा भार उनके सर पर आ गया है क्योंकि जब वे अच्छे अच्छे लोगों को चुनेंगे जो सच्चे हृदय से, निःस्वार्थ भाव से देश की और आपकी सेवा करेंगे तब तो देश का कल्याण होगा और यदि आपने भूल करके स्वार्थी लोगों को चुन दिया तो आपका भी अकल्याण होगा और देश का भी अकल्याण होगा। इसलिये नये संविधान का बड़ा महत्व है और देश के लोगों की परीक्षा अभी थोड़े ही दिनों के बाद होने जा रही है। आपको मालूम होगा कि अगले पांच छः महीने के अन्दर सारे देश में चुनाव होगा और इस चुनाव में जो जो चुने जायेंगे उन्ही के हाथों में राज्य को चलाने का सारा काम सौपा जायेगा, चाहे वे सारे देश की तरफ़ से चुने जाकर दिल्ली में बैठकर सारे देश का काम चलायें या अलग अलग राज्यों में बैठकर वहां का काम चलावें। इसी साल आपके यहां भी चुनाव होगा। यह चुनाव बहुत बड़े रूप में होने वाला है क्योंकि २१ वर्ष की प्रत्येक स्त्री और पुरुष को इस चुनाव मे भाग लेने का अधिकार मिला है और २१ वर्ष या उससे ऊपर के लोगों की जो नामावली तैयार की गई है उस नामावली में १७, १८ करोड़ तक नाम लिखे गये हैं। संसार में चीन को छोडकर दूसरा कोई देश नही जिसकी १७-१८ करोड़ की कुल आवादी भी हो, जन संख्या भी हो। कारण हमारे देश में ३६ करोड़ की जन संख्या है और उन मे आधे ऐसे लोग हैं जिनको इस चुनाव में भाग लेने का हक है। इसी से आप समझ सकते है कि यह चुनाव कितने वृहद् रूप में होगा। इतना बड़ा चुनाव आज तक संसार के इतिहास मे किसी भी देश मे या किसी भी समय में नही हुआ। इस चुनाव का प्रबन्ध करना एक बहुत बड़ा काम है और इसके लिये कई महीने पहले से तैयारी हो रही है और अगले पाच छः महीने तक तैयारी होती रहेगी तब इसका पूरा प्रबन्ध हो सकेगा। इसमें एक बात को यदि आपको बतलाऊं तो आप समझेंगे कि यह कितना बड़ा काम है। जो नाम लिखे गये है वे एक पुस्तक के रूप में छापे जायेंगे। बहुत जगहो पर छप भी गये है और छापे जा रहे है। इस पुस्तक का आकार यदि आपको मालूम हो तो उससे आप समझ लेगे कि यह कितना बड़ा काम है और कितने नाम उसमें छपने हैं। मै ने जब हिसाब लगाकर देखा तो मालूम हुआ कि फुल्स्केप कागज़ पर यदि एक पन्ने पर २५ नाम छापे जायें तो इस तरह की पुस्तक कोई २०० गज़ चौड़ी पुस्तक होगी; तब सब नाम छापे जायेंगे। इस तरह की पुस्तक ही तैयार नही करनी है, लोगो के मत देने का सारा प्रबन्ध भी करना है, जगह जगह पर लोगों की मदद करनी होगी। आपने म्युनिसिपैलिटी में वोट दिया होगा तो देखा होगा कि जिनको वोट दिया जाता है उनके नाम के बक्स में कागज़ डालना पड़ता है। इस तरह से मै ने सुना है कि १८-२० लाख बक्स बनाये जायेंगे और उतने बक्सों में कागज़ डाले जायेंगे और क़रीब उतने ही लोगों को मनोनीत करना होगा जो एक एक आदमी को कागज़ देकर बक्स में डालने को कहेंगे। न मालूम कितने करोड का खर्च इस बड़े काम में है। हमारे देश के लोगों ने वोट देना तो सीखा है पर इतने बड़े पैमाने पर नही। जैसा मै ने कहा आज तक किसी भी देश में इतना बड़ा चुनाव नही हुआ, हमारे देश में तो हुआ ही नही। आज तक म्युनिसिपैलिटी या धारा सभा में जो चुनाव होता आया है इसके मुक़ाबले में उन मे कम ही लोगों ने वोट दिया

है । उसका प्रबन्ध आसानी से हो जाता है । अब काम बहुत बढ़ गया है । जैसा मैं ने कहा चुनाव तो एक साधन है । चुनाव से ही दूसरे काम लिये जाते हैं और वह काम यही है कि लोग अपनी इच्छानुसार अच्छे आदमियों को चुन लें जो ठीक से उनकी सेवा कर सकते हों । इसी में देश का कल्याण है और इसी कल्याण के लिये यह चुनाव किया जाता है जिसमें अच्छे से अच्छे लोग जनता की मर्जी से चुने जायें और वे अपना कर्त्तव्य पूरा करें । मै तो आपसे यही कहना चाहता हूं कि आप पर जो जवाबदेही आई है उसको अच्छी तरह से समझकर पूरा करने के लिये तैयार हों ।

भारत पर आपस में झगड़े और फूट के कारण बड़ी बड़ी विपत्तियां आई हे । आज ईश्वर की दया से हम सारे भारत को एक जन तंत्र में लाकर एक संविधान के अन्दर एक छत्र राज्य में मिला सके है । इसलिये हमारी जवाबदेही और भी बढ़ गयी है और अब यह सब से अधिक आवश्यक है कि किसी भी मत देने वाले को चाहे वह कोई भी क्यों न हो अपने स्वार्थ या किसी अपने छोटे दल के स्वार्थ या किसी प्रांत के स्वार्थ की तरफ ध्यान न देकर देश के हित को ही ध्यान में रखना चाहिये । सब से जरूरी बात यही है कि हम बड़ी चीजों के लिये छोटी चीजों का त्याग करने के लिये तैयार रहें और जैसे जैसे हमारी यह भावना दूर दूर तक फैलती जायेगी, इसका क्षेत्र जैसे जैसे बढ़ता जायेगा वैसे ही हम देश का कल्याण अधिक से अधिक कर सकेंगे । मैं जहां जाता हूं लोगों से यही निवेदन करता हूं कि स्वराज्य मिलने का एक चिन्ह यही है कि हमको नया संविधान मिला है जिसको हमने तैयार किया है, हमारे लोगों ने तैयार किया है और उस संविधान के फल स्वरूप हमारे देश के सभी लोगों को अपने शासक चुनने का अधिकार मिला है । मगर स्वराज्य हमको इसलिये मिला है कि जिसमें हम सारे देश का कल्याण कर सकें और मै यही कहता हूं कि सब लोग अपनी जवाबदेही को समझे और देश का कल्याण करने के लिये हमेशा तैयार रहें, स्वार्थ को भूलकर देश को सामने रखकर, जनता को सामने रखकर सब काम करें ।

अभी हमारे देश के सामने कठिन प्रश्न है । अन्न का कष्ट इस वक्त देश के कई भागों में है और इस बात का डर है कि वहा दुष्काल न पड़ जाये । मगर गवर्नमेट की ओर से सारा प्रयत्न हो रहा है कि जहां से मिल सके अन्न लाया जाये और लाकर लोगों तक पहुचाया जाये जिसमें अन्न के बिना कोई न मरे । मगर यह तो तात्कालिक बात है । देश से अन्न कष्ट को दूर करना तो हम सब का काम है । इसमे तभी सफल हो सकेंगे जब देश का प्रत्येक किसान जो खेती का काम करता है यह निश्चय करले कि जहां वह १ मन पैदा करता है वहां वह १। मन पैदा करेगा और इसके लिये जिन जिन चीजो की आवश्यकता हो, पानी की, अच्छे बीज की, खाद की, अधिक परिश्रम की सब को उन्हे जुटाना चाहिये । गवर्नमेंट इन सब चीजों को देने का प्रबन्ध कर रही है । मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपके सौराष्ट्र में जहां चावल कम पैदा हुआ करता था वहां इधर थोड़े ही दिनों के प्रयत्न में आपने इतना चावल पैदा कर लिया कि अब आपकी जरूरत के लायक चावल पैदा होने लग गया है और मै आशा करता हूं कि दूसरे अन्न की जो कमी होगी वह भी थोड़े ही दिनों के अन्दर दूर हो जायेगी । इस तरह से यदि सभी इलाके के लोग अपने लिये जितना अन्न चाहिये पैदा करने लग जायें तो अन्न का कष्ट हमारे देश से दूर हो जायगा । मगर आप जानते हैं कि सभी जगहों पर एक समान सुविधायें नहीं होती है । इसलिये सभी जगहों पर पैदावार इतनी आसानी से नही बढ़ायी जा सकती है । ईश्वर की दया से मैं ने जो भूमि यहां

देखी है वह अच्छी मालूम हुई और मैं ने यह भी सुना है कि यहां के किसान बड़े परिश्रमी हैं और जल पटाकर या दूसरे प्रकार से काफ़ी पैदा करने का प्रयत्न भी करते हैं। उन में साहस है, बुद्धि है, इस बात का मुझे अनुभव है। मैं चाहता हूं कि उस बुद्धि और साहस का प्रयोग करके वे जितना भी अन्न पैदा कर सकते हों पैदा करें। यह उनके अपने लिये ही नहीं सारे देश के लिये एक बड़ी बात होगी क्योंकि आपकी अपनी जरूरत पूरी हो जायेगी और दूसरे लोगों को यहां अन्न नहीं भेजना पड़ेगा। इसलिये आप सब के सब इस प्रयत्न में लगें।

मैं यह भी जानता हूं कि कपड़े की भी बहुत जगहों में कमी हो रही है और उसके लिये भी प्रबन्ध हो रहा है। रुई की कमी की वजह से और दूसरे कारणों से कपड़े की कमी हो रही है। आशा की जाती है कि थोड़े ही दिनों में यह कमी बहुत हद तक दूर हो जायेगी और कपड़ा मिलने लग जायेगा। मगर आप जो इस प्रांत के रहने वाले हैं जानते हैं कि गांधी जी ने हमको अपनी जरूरत भर का कपड़ा तैयार कर लेने की बात समझाई है। आज सवेरे मैं राजकोट राष्ट्रीयशाला में गया था जहां चर्खे के प्रचार की शिक्षा दी जाती है। वहां पर ऐसे लोग हैं जो गांधी जी के साथ रहकर इस चीज को अच्छी तरह से समझ और सीखकर उनके समय से ही इस काम में लगे हुए हैं। मैं तो आपसे यही कहूंगा कि आज मिल का कपड़ा आपके पास पूरा हो या नहीं हो पर किसी को कपड़े की कमी महसूस करने की जरूरत नहीं है क्योंकि कपड़े की कमी आप चाहें तो आसानी से थोड़ा समय लगाकर अपने परिश्रम से दूर कर सकते हैं। गांधी जी ने बताया था कि अगर एक आदमी आधा घंटा रोज़ाना नियमपूर्वक चर्खा चलाये तो उसके अपने लिये जितने कपड़े की जरूरत होगी उतना सूत वह कात सकता है और मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं कि मैं जितना कपड़ा पहनता हूं अपने हाथ कते सूत का कपड़ा पहनता हूं और इसमें मुझे कोई विशेष परिश्रम करने की ज़रूरत नही होती और जब काम करता रहता हूं तो थोड़ा समय निकाल कर सूत कात लिया करता हूं और उसी से काम चलता है और जब मैं जेल गया था तब तो इतना सूत होता था कि धोती, थान के अलावा दरी भी बनाता था। आप इसे मन गढ़ंत बात नही समझिये। अगर कोई अभी भी इसका प्रयोग करना चाहे तो महीने दो महीने के प्रयोग के बाद देख सकेगा कि हर रोज़ कातने से कितना सूत हो जाता है। तो इसलिये जब कभी मैं कहीं जाता हूं और लोग मुझ से इस बात की शिकायत करते हैं कि कपड़ा नही मिलता है तो मुझे आश्चर्य और दुःख होता है। आश्चर्य इसलिये होता है कि गांधी जी ने २० वर्षों तक चिल्ला चिल्लाकर हमको सिखलाया पर तो भी हम इसे नहीं सीख सके और दुःख इसलिये होता है कि इतना आसान काम हम नहीं कर सकते तो दूसरे काम हम कैसे करेंगे। मैं तो चाहता हूं कि हमारे यहां जो बड़े बड़े कपड़े के कारखाने चल रहे हैं उन पर भरोसा न करके अपने ऊपर ही भरोसा करना लोग सीखें। आप अपने खेत में अन्न पैदा कर लेते हैं और रोटी घर में बना कर खा लेते हैं; उसी खेत की रुई से बने कपड़े लोग पहनते हैं। ये ही दोनों चीजें हैं जो सब से जरूरी हैं। अगर हम खाना और कपड़ा प्रत्येक घर में पैदा कर लें तो फिर हमारा देश सुखी क्यों नहीं होगा? कोई शौक की चीजें हों तो उनके बिना कोई मरता नहीं है। मगर इन दो चीजों के बिना लोग मर सकते हैं।

तो इन दोनों चीज़ों का रास्ता गांधी जी ने हमको सिखलाया था और लोग चाहें तो इन दोनों चीज़ों की कमी देश के अन्दर नहीं होने दें। आज तो आप समझें कि हम लोग इतने निकम्मे

हो गये है कि घर की रोटी भी बन्द होती जा रही है और बिस्कुट तथा इस तरह की दूसरी चीज़ों की आदत बढ़ती जा रही है। दूसरे देशों से आयी हुई खाने की चीज़ें अधिक प्रचलित होती जाती हैं और अपने घर में जो सुन्दर भोजन हो सकता था वह हम नहीं पा रहे हैं। आज यह कहना मुश्किल है कि जो दूध लोगों को मिलता है वह दूध है। घी का तो कोई ठिकाना ही नहीं। मैं ने सुना था कि बम्बई में जो घी जाया करता था वह काठियावाड़ से ही जाया करता था। मालूम नहीं आज क्या हालत है। मगर इतना जानता हूं कि बम्बई में जो घी मिलता है वह सचमुच में घी नहीं रहता है। उसमें क्या क्या मिलावट रहती है। इस तरह की मुसीबत हमारे देश में आ गई है कि कोई चीज़ शुद्ध नहीं मिलती है। मैं ने सुना है कि बाज़ार के आटे में भी कुछ फेंटा जाता है। घी में तो फेंटा जाता ही है, तेल में न मालूम कितनी चीज़ें मिलाई जाती है जिसका फल यह होता है कि लोगों में तरह तरह की बीमारी होती है। यहां तक कि चावल में जिसका दाना अलग अलग होता है कंकड मिला दिया जाता है। आजकल इस तरह का फेटाफेंट बहुत होता है जिसका असर स्वास्थ्य पर पड़ता है और इसलिये देश के सभी लोग कमज़ोर होते जा रहे है, उनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इन सब का उपाय यही है कि जहां तक हो सके दूर से आयी हुई चीज़ों पर भरोसा छोड़कर अपने घर में ही बनायी हुई चीज़ों पर भरोसा करें; या आस पास की बनी चीज़ों पर भरोसा करें क्योंकि आस पास की चीज़ों में अगर फेटाफेंट होगा तो उसे हम रोक सकते हैं। गांधी जी ने जो हमें स्वावलम्बी होने की बात सिखायी थी, हम स्वावलम्बी इसी तरह हो सकते हैं। हमारे देश के अन्दर आदमियों की कमी नहीं है। ३६ करोड़ की आबादी पाकिस्तान से अलग हो जाने पर भी इस मरतबे जन-गणना में निकली है। तो देश में ७२ करोड़ हाथ हुए, उन में से ६० करोड़ हाथ ज़रूर ऐसे होंगे जो काम कर सकते हैं। इतने हाथ काम करने लग जायें तो कोई ऐसी ज़रूरी चीज़ नहीं है जिसको हम अपने हाथों से नहीं बना सकते है। देश में बड़े बड़े कारखाने बनते हैं। हम समझते है कि कि उन से बहुत पैसे कुछ लोगों को मिलते हैं। कुछ मज़दूर काम कर सकते है उनको भी मज़दूरी मिलती है। मगर यह सिद्ध है कि किसी कारखाने में जितना एक आदमी काम करता है हाथ से काम करने पर उसी काम को ७०-८० आदमी पूरा कर सकते है। अब कपड़े के कारखाने की बात ले लीजिये। एक कारखाने में एक आदमी जितना सूत कातता है, जितने तकुओं की देख भाल करता है, उतना सूत २०० चर्खों पर कत सकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि कारखाने का एक मज़दूर १९९ चर्खा चलाने वालों को बेकार करता है। धुनाई के काम में मिल का एक मज़दूर १८० हाथ से धुननेवाले मज़दूरों को बेकार करता है। इसलिये जहां बड़े बड़े कारखाने हैं वहां बेकारी बढ़ती है। इस बेकारी को दूर करने का उपाय यही है कि लोगों को नये नये कामों में लगाया जाये। अभी देश मे कोई नया काम नही हो रहा है। नतीजा यह होता है कि बेकारी बढ़ती जा रही है। हम चाहते हैं कि बेकारी भी न बढ़े और हमारा काम भी चले। हमको कारखाने नही चाहिये ऐसा मैं नही कहता। मगर हमको यह देखना ज़रूरी है कि कितनी हद तक किस रास्ते से हमें जाना चाहिये। रेल का कारखाना हमें चाहिये क्योंकि हाथों से हम रेल नही बना सकते हैं। मगर अपने पहनने के लिये हम कपड़ा तैयार कर सकते है, खाने के लिये चावल कूट सकते हैं। इतना अगर हम मान लें तो हमारा बहुत बड़ा काम हो। हम चाहते हैं कि गांधी जी ने जो कुछ सिखाया उस पर लोग ध्यान दें और गांव के लोग और शहर के लोग अगर चाहें तो अपने लिये सब आवश्यक वस्तुएं तैयार कर सकते हैं और उनको ऐसा करना चाहिये। बड़े बड़े

प्रश्न देश के सामने हैं। हमको देखना है कि हमसे कोई ग़लती न होने पावे। हमारे यहां जो कमी है उसे हम खुद पूरा कर लें तो हमारी इतनी शक्ति बढ़ेगी कि हम कोई भी काम कर सकेंगे। मैं आशा करता हूं कि इस सोमनाथ के प्रांत को जैसा होना चाहिये उसे वैसा आप बनायेंगे।

एकलव्य आश्रम

बम्बई के नज़दीक काशीमिरा ग्राम में एकलव्य आश्रम में तारीख़ २६ मई १९५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा--

श्री बाला साहब खेर, श्री पटेल, सेवा मंडल के कार्यकर्तागण, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि मैं आज इस केन्द्र को देख सका। जैसा कि अभी बाला-साहब ने कहा, आदिवासियों के काम में मुझे कुछ रस है, बहुत दिनो से रहा है और यद्यपि मैं यह नहीं कह सकता हूं कि उन के बीच में रहकर मैं बहुत काम कर सका हूं पर तो भी जो कुछ बाहर से इस काम में करना सम्भव था मैंने करने का थोड़ा बहुत प्रयत्न किया है और इस वजह से जब कभी ऐसा सुअवसर मिलता है कि इस काम को स्वय जाकर देख सकू तो मैं इस बात को खुशी से मंजूर करता हूं और वहां जाता हूं। आदिवासियो की संख्या सारे भारतवर्ष में बहुत बड़ी है और इस में भी कोई सन्देह की बात नही कि उनकी अवस्था बहुत बुरी है। इसका दोष हम लोगों पर ही है कि हमने उनको ऐसी अवस्था में आज तक रखा है या रहने दिया है। यही समझकर पूज्य महात्मा गान्धी जी ने आदिवासियों के बीच या इसी प्रकार के दूसरे लोगों याने हरिजनों के बीच काम करने को कहा भी है। उन्होने लिखा भी है कि जिन लोगों ने, जिस समाज ने इन लोगों के साथ इतनी बेइन्साफ़ी की है और उनको ऐसी अवस्था में रक्खा है उस समाज का यह कर्तव्य और धर्म हो जाता है कि जो कुछ अन्याय या बुरा व्यवहार उन लोगो की ओर से इन लोगो के साथ हुआ उसका वे प्रायश्चित्त करे और उसका रूप यही हो सकता है कि उनकी सेवा करके उनकी अवस्था को सुधारने मे जो कुछ उन से बन पड़े वे करें। इस भावना से जब सेवा की जाती है तभी उसका फल हो सकता है और सच्ची सेवा भी वही होती है। हम अक्सर यह भी देखते है कि जब कोई सेवा का काम हम शुरू करते है तो उस में कुछ थोड़ी सी व्यापारी बुद्धि भी लगाते है। उनका यह विचार रहता है कि जब कोई कुछ काम करना चाहता है, कोई पैसे लगाता है, समय लगाता है तो उसके बदले में उसको कुछ मिलना चाहिये और मिलता ही है। इसलिये जो सेवा का काम करते है वे भी लाभ की आशा रखते है अर्थात् अगर वे आदिवासियों की सेवा करते है तो उनका ख़याल रहता है कि वे उनकी राजनीति म मदद करेंगे अर्थात् वोट देंगे। हमारा अपना खयाल हमेशा यही रहा है कि जब सेवा में इस तरह की भावना आ जाये तो वह सेवा सेवा नही रह जाती। वह तो एक प्रकार से सौदा हो जाता है और सौदे की गति यह रही है और आगे भी रहेगी कि जो सौदा करके कुछ पैदा करना चाहते हैं उनको इस बात का भय रहता है कि कही कल दूसरा सौदागर न आजाये और उससे पूरा लाभ न ले ले। तो इस तरह के काम में सौदे की भावना आने देने का फल यही होगा कि दूसरे सौदागर कहीं आगये और उन्होंने दिखला दिया की वे बेहतर काम कर सकते है तो वह सौदा आपके हाथ से निकल कर उनके हाथ में चला जायेगा। इसलिये जो सच्चे सेवक हैं उनको सौदे की भावना

छोड़कर सच्ची सेवा की भावना को सामने रखकर काम करना चाहिये और यही सच्ची सेवा भी होगी और उसी का अच्छा फल भी होगा। और दूसरे के सामने उदाहरण भी होगा। हो सकता है कि सौदे की भावना से काम करने से कुछ दिनों के लिये अच्छा फल देखने को आवे लेकिन हरेक व्यापारी को दिवाले का भी भय रहता है और रहना चाहिये। इसलिये मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आपने जो काम यहां शुरू किया है उसमें आपको अच्छे से अच्छे काम करने वाले मिले हैं और बाला साहब के नेतृत्व में ठक्कर बापा से अनुप्राणित होकर वे इस काम को चला रहे हैं और उसी का फल है कि आपके यहां इतना काम हो रहा है और अब आपका रास्ता साफ़ हो गया है।

मैंने कहा कि आदिवासियों की संख्या भारतवर्ष में बहुत बड़ी है। आपके जिले में ही जैसा कि बाला साहब ने कहा उनकी संख्या ३ लाख है। इतने लोगों को सुधारना है, उनको बुरी अवस्था से उन्नत करके ऐसी अवस्था में पहुंचा देना है जिसमें वे भी औरों की तरह सुख से रह सकें। यह एक बहुत बड़ा काम है और यह काम भी ऐसा है कि जो सच्ची सेवा भावना से इस काम को करेंगे उनको इस काम में ही संतुष्टि होगी। इसलिये मैं आशा करता हूं कि आपका काम और ज़ोरों से बढ़ेगा और वह समय जल्द ही आजायेगा जब कि आदिवासियों का कोई ऐसा गांव नहीं रह जायेगा, उनका कोई इलाका ऐसा नहीं रह जायेगा जहां तक आपके सेवक नही पहुंचे होंगे और उनकी सच्ची सेवा नहीं करते होंगे। जब हम उनको सुधारने की बात करते हैं तो हमारे सामने कई तरह के विचार आते हैं। उनको सुधारने का अर्थ क्या है ? क्या जैसे हम कोट पतलून पहनते है उनको भी पहना दें या जिस तरह से हम सच और झूठ में अन्तर नहीं रखते उनको भी वह सिखला दें ? मै जानता हूं कि कई जगहों में जब इन लोगों का उन लोगो से सम्पर्क हुआ जो समझते हैं कि उनकी संस्कृति अच्छी है तो उनका सुधार नही हुआ। इनके चरित्र बनने के बदले में उन जगहों मे वे भ्रष्ट हो गये है क्योंकि जो वहां गये वे चरित्र नही ले गये। हमारे सूबे में आदिवासियों की संख्या बहुत बड़ी है, जैसा कि बाला साहब ने कहा, वहां उनकी संख्या ६० लाख के करीब है और छोटानागपुर तो आदिवासियों से भरा हुआ है। रांची जिले में उनकी संख्या और लोगों की संख्या से अधिक है। रांची में एक डाक्टर है जिनकी उम्र ८० वर्ष की होगी। उसी इलाके में वह काम करते है। वह हमसे कहते थे कि ३०–३५ वर्षों का उनका तजुरबा है कि उन मे कोई वेनेरियल डिज़ीज़ नहीं होता। मुझे यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई लेकिन आश्चर्य नही हुआ क्योंकि मै जानता हूं कि उनका जीवन बहुत पवित्र होता है और सब चीजो में वे अपने नियम रखते हैं और उनका पालन करते है और उनका समाज भी उनसे उन नियमों का पालन कराता है। ठीक उलटा एक दूसरा इलाक़ा है जिसका नाम मै नही कहूंगा। वहां के आदिवासियों में सैकड़े पीछे ७० लोगों को वेनेरियल डिज़ीज़ है। मालूम नही ऐसा क्यों हुआ। हो सकता है कि उस स्थान के आदिवासियों ने रांचीवाले आदिवासियों की तरह सभ्यता से अपने को दूर नहीं रखा हो। मै चाहता हूं कि जो हम उनको सुधारने की बात सोचें तो हमारे दिल में यह गर्व नही आना चाहिये कि हम उनसे अच्छे हैं, हम उनसे सब बातों में बेहतर हैं बल्कि हमें नम्रतापूर्वक उनकी स्थिति को समझना चाहिये। बहुत बातों में हम पायेंगे कि वे हम से बेहतर है और यह भी हम पायेंगे कि बहुत बातों में, विशेष करके पैसे के सम्बन्ध में

उनकी हालत बुरी है। तो जहां उनकी कमी है उसको हमें दूर करना चाहिये मगर ऐसा नहीं होना चाहिये कि जो उनकी अच्छाई है वह भी दूर हो जाये। उनकी अच्छाई को तो प्रोत्साहन देकर बढ़ाना चाहिये। मैं वकालत किया करता था इसलिये थोड़ा बहुत कचहरी से सम्बन्ध पड़ता था और कुछ उसका अनुभव भी था। आदिवासियों में लड़ाई होती है और एक आदमी दूसरे को मार देता है। मगर जितने मुकदमे उनके होते हैं उनमें अधिकांश ऐसे ही होते है जिनमें जो मारता है वह आकर कचहरी के सामने कह देता है कि उसने क़त्ल किया है। सचाई को झूठ कह कर अपने को बचाने की कोशिश नही करता है। यह तो हमारी सभ्यता का लक्षण या गुण कहिये कि हम सच को झूठ बना सकते है। इस बात से वे बचे हुए हैं। यह एक बड़ा गुण है और इस गुण को हम सभ्यता के नाम पर उनसे छीन लें तो यह एक बड़ा पाप होगा। इसलिये मै चाहता हूं कि हमारे काम करने वाले उनके बीच में इस तरह से काम करें कि जहां उनकी कमी है, दोष है उसे तो दूर करने का प्रयत्न करें और इस तरह से सहानुभूति के साथ सेवा भावना के साथ काम किया जाये तो इसमें कोई शक नहीं है कि बहुत थोड़े दिनो के अन्दर ही वे कमियां दूर हो जायेंगी। जैसा कि बाला साहब ने कहा, जो ज़मीन पड़ी रहती है उसमें खेती की जाये तो उसमें फ़सल बड़ी अच्छी लगती है। उसी तरह से इन लोगों को मौक़ा मिलता है तो उनकी जो नैसर्गिक तीव्र बुद्धि है वह खिल जाती है। अतः जहां तक हो सके हमें उनको प्रोत्साहन देना चाहिये जिसमे उनका चरित्र, उनकी बुद्धि विकसित हो। जहा उनकी त्रुटि मालूम हो उसको भरना चाहिये। उनके अच्छे कामों को प्रोत्साहन देना चाहिये और अगर हम सीख सकते है तो हमें सीखना भी चाहिये। मै समझता हूं कि इसी भावना से आप यहां काम कर रहे हैं।

आपने उनकी माली हालत सुधारने का जो प्रयत्न किया है वह सफल हुआ दीखता है। जहां थोड़े लोग उनसे बहुत परिश्रम कराकर, उनका शोषण करके बहुत पैसे बनाते थे अब वे पैसे उनको ही मिलते हैं जिससे वे अब सुखी है। अभी मैने देखा कि एक वह घर है जो उनका पुराना घर था और दूसरा वह घर है जो मंडल की ओर से बनाया गया है। उसके देखने से मालूम होता है कि सेवा के काम का क्या फल हो सकता है। मै तो यह चाहता हूं कि जो फूंस के घर है उनमें से एक भी देखने को नही रह जाये और उनके स्थान पर तमाम ऐसे ही घर आदिवासियों के लिये बन जायें। जो कोआपरेशन का काम शुरू हुआ है वह इस तरह से चलना चाहिये कि दूसरे की मदद की आवश्यकता ही उनको नही रह जाये। शिक्षा का कार्य ऐसा होना चाहिये जिसमें वे सच्ची शिक्षा ग्रहण करके उससे लाभ उठा सकें।

आपने मुझे यहां लाकर अनुगृहीत किया, कोई उन पर मेहरबानी नही की क्योंकि मै चाहता हूं कि मै इस तरह की बातों को देखू। सचमुच बम्बई शहर के लिये यह दुःख की बात होती जहां इतना कारबार है, इतना वाणिज्य है, इतना वैभव है, यदि उसके २०–२५ मील के अन्दर इतने ग़रीब लोग रहें। मैं आशा करता हूं कि उस शहर का ध्यान इधर जायेगा और यह काम सफल होगा। जो यह काम करते है उनको मै बधाई देता हूं।

भारतीय नौसेना को झन्डादान

*भारतीय नौसेना को बम्बई में झंडादान के अवसर पर ता० २७ मई १९५१ को राष्ट्रपति ने अपने भाषण में कहा—

अत्यन्त प्रसन्नता के साथ तथा मै यह भी बता दूं कि भारतीय नौसेना के लिये अत्यन्त गर्व के साथ मै आपको यह राष्ट्रपति का झंडा आज इस स्थान मे प्रदान करता हूं जो हमारे देश के सामुद्रिक और नौसैनिक इतिहास से गुंथकर बुना हुआ है। बम्बई हमारा मुख्य नौसैनिक शिविर है और जैसा कि नौकाधिपति पेरी साहब ने अभी कहा है यह उचित ही है कि भारती नौसेना के इतिहास मे नए युग का प्रवर्तन करनेवाला यह उत्सव यही हो।

इस अवसर पर में आपको उन महान उत्तरदायित्वो का स्मरण दिलाता हू जो इतिहास ने आपके सर पर रख दिये है। आप ऐसे देश के है जो दो सहस्त्र वर्ष से भी अधिक सागर का स्वामी था। उस गरिमामय युग मे हमारे देशवासियों ने सामुद्रिक क्षेत्र मे जो सफलताएं प्राप्त की उनका पूरा इतिहास अभी लिखा जाना है। किन्तु अब तक जो कुछ प्रकाशित हो चुका है उससे यह स्पष्ट है कि हमारी सामुद्रिक शक्ति का प्रारम्भ यदि पहले नही तो वैदिक युग जैसे सुदूर अतीत मे हुआ था। ऋग्वेद मे ऐसे मन्त्र है जिनसे प्रकट होता है कि उस सुदूर अतीत में भी हमारे देशवासी ऐसी नौकाओं का प्रयोग कर रहे थे जिनमे खेने के लिये सौ सौ बल्लिया होती थीं और जो विशाल सागर के वक्ष पर तैरती थी। ईसा से पूर्व सातवी शती मे सैकडों की सख्या में हमारे जहाज़ हमारे प्राचीन सामुद्रिक केन्द्रों से जो यहा से कुछ अधिक दूर नही है—मेरा आशय भारूकच्छ और सूरपारक से है — एक ओर बाबुल को और दूसरी ओर सिंधल और स्वर्णभूमि को जाया करते थे। महावंश और राजवल्लीय में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते है जिनसे प्रकट है कि एक ही नौका में सात सात सौ व्यापारी यात्रा किया करते थे। समस्त ससार में हमारा सामुद्रिक बेड़ा हाल के दिनो तक प्रमुख रहा और उसकी गरिमा का इतिहास अनेक स्थलों पर लिखा मिलता है। मध्यकालीन इटली के यात्री प्रसिद्ध मार्कोपोलो ने ऐसे भारतीय जहाज़ देखे थे जिनके कक्ष में आधुनिक युग की जीवननौकाओं के समान ही दस दस ऐसी नौकाएं लटकी रहती थी जिन्हे पानी मे उतारने के लिये अथवा पानी में से जहाज़ के बाज़ू में खीचने के लिये उनमें रस्से और औज़ार भी होते थे; और जिन में मुख्य डेक के अतिरिक्त यात्रियों के लिये ६० कमरे होते थे और जिनमें चार मस्तूल होते थे और १४ ऐसे विभिन्न कोष्ट होते थे जिनमें पानी न जा सकता था और जो एक दूसरे से ठोस पार्टीशन द्वारा अलग किये होते थे। उन दिनों भारतीय जहाज़ सब से बड़े और सब से ज़्यादा मज़बूत माने जाते थे और अपने काम के लिये और दीर्घ जीवन के लिये प्रसिद्ध थे। स्वभावतः ही हमारे इतिहास के प्रारभिक युगों में हमारे देश के पास बहुत शक्तिशाली नौसेना हो गई थी। ईसा पूर्व तीसरी शती में मौर्य साम्राज्य में हमे विशिष्ट नौसेना विभाग का ज़िक्र मिलता है जो साम्राज्य की नौसेना की देखभाल करने के लिये विशेषतया उत्तरदायी था। इस बात को ध्यान में रखकर कि उस युग में भारत ही सर्वप्रमुख सामुद्रिक राष्ट्र था यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मौर्यो की साम्राज्यिक नौसेना बहुत बड़ी रही होगी और शक्तिशाली नौसेना रही होगी जिससे कि वह

---

* अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

भारतीय व्यापारियों की सागर में सर्वत्र पर्याप्त रक्षा करने में समर्थ रही होगी। मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् भी उसके गौरव में कोई कमी न हुई। हमें इस बात का पता मिलता है कि शातवाहन और चोलों की भी नौसेना सबल और महान् थी जिस के बल पर वे स्वर्ण द्वीप मे उपनिवेश स्थापित करने में और महान् सामुद्रिक साम्राज्य स्थापित करने में सफल हुए थे। हमारी नौसेना की गरिमा मध्य युग तक भी बनी रही और डिग्बी के शब्दों मे भारत उन दिनों पूर्वी समुद्र का प्रभू माना जाता था। १८११ में बल्तजार सोल्वेन्स नामी फ्रासीसी लेखक ने अपनी पुस्तक ला हिन्दूज में लिखा है कि प्राचीन युगों में जहाज़ निर्माण की कला में भारतीय बडे सफल थे; और उसके युग के हिन्दू इस बारे मे यूरप के लोगों को भी बहुत कुछ सिखा सकते थे। यहा मै यह भी कह दूं कि उन दिनों पाश्चात्य जगत के सर्व प्रमुख नौसैनिक राज्य ने इस बारे में लेशमात्र हिचकिचाहट न बरती कि वह अपने जहाजों को अच्छा बनाने के लिये बहुत सी बातें यहां से सीख ले। अतः यद्यपि भारतीय नौसेना अपने वर्तमान रूप मे अभी कुछ ही दिन पहले अस्तित्व में आयी है तो भी इसके पीछे ऐसी सामुद्रिक परम्परा है जो हमारे राजनीतिक अस्तित्व के आरम्भिक दिनों से चली आयी है। और आप में से प्रत्येक का यह कर्तव्य है कि आप न केवल उस परम्परा से परिचित हों वरन् उसके प्रति आपके हृदय मे गर्व भी हो। आपके इतिहास की यह अपेक्षा है कि आप उस परम्परा को अपनी पूरी शक्ति के अनुसार इस बात का प्रयास करके निभायें कि आपकी यह सेना एक बार फिर ससार की सर्वोत्तम और सर्व प्रथम नौ सैनाओं में से एक बन जाये।

केवल प्राचीन अतीत का ही दावा नही वरन् निकट भूत की भी आपसे यही अपेक्षा है। कुछ दिन पहले तक आप लोगों का उस देश की नौ सेना से घनिष्ट संबन्ध था जो पिछली कुछ शताब्दियो मे सागर का स्वामी रहा है। उस नौसेना के अधिनायकों के अधीन शिक्षा प्राप्त करने का आप का सौभाग्य रहा है। साथ ही उसके निकट संपर्क में रहकर आपको वास्तविक युद्ध में भाग लेने का भी अवसर मिला है। आप उसके महानाविकों की यश गाथा और अमर कृतियों से अनुप्राणित हुए है। यह ठीक है कि आप पूर्णतया स्वतन्त्र है और हमारे स्वतन्त्र देश की वर्तमान परिस्थितियों तथा हमारे जातीय हितों और आदर्शो और हमारे जातीय इतिहास और जातीय चेतना के अनुकूल आपको अपने भविष्य का निर्माण करना है। किन्तु मुझे विश्वास है कि उस महान् और गौरवशील नौसेना की सुरभि आप के हृदय मे सर्वदा बसी रहेगी और आपको इस के लिये अनुप्राणित करती रहेगी कि आप भारतीय नौसेना को महान् और गौरवशालिनी बनायें।

आदर्शो और कर्तव्यों के प्रति वैसी लगन की अपेक्षा आपसे सर्वदा ही की जाती है। किन्तु आज जब कि मानव जाति भयानक करार के पतले छोर पर खडी है इस बात की और भी आवश्यकता है कि आप अपने कर्तव्यों के प्रति मौत से भी बाज़ी लगाकर अपनी लगन रखने के आदर्श से प्रति क्षण अनुप्राणित बने रहें। आज जब मानव जाति के सर पर विपत्ति के बादल मंडरा रहे है तो यह आवश्यकता है कि इस प्राचीन देश की शाति और स्वतन्त्रता के लिये चिरजागृत और सजग प्रहरी के रूप में दृढ़प्रतिज्ञ होकर आप खड़े रहें। इस देश के हम लोग आज और अनगिनित शताब्दियों से निरन्तर शान्ति के पुजारी रहे है। अपनी इस महान्तम गरिमा

के दिनों में भी हमने अन्य देशों या जातियों को अपना दास बनाने या उनका शोषण करने की बात कभी नही सोची। अपने देश की प्राचीन परम्परा के अनुसार ही हम आज चाहते हैं कि सब जातियों को अपने आन्तरिक जीवन का विकास और अपनी राष्ट्रीय संस्कृति की अपनी जातीय चेतना के अनुकूल अभिवृद्धि करने की पूर्ण स्वतन्त्रता हो। हम हृदय से चाहते हैं कि सर्वत्र शान्ति का राज्य हो जिससे कि मनुष्य अपने को सृजनात्मक प्रयोजनों की पूर्ति में लगा सके।

सब राज्यों में शान्ति और सब देशों में पारस्परिक न्याय की परम्परा को ही आपको अपनाना और बनाये रखना है। आपकी यही आकाक्षा होनी चाहिये कि आप शान्ति और न्याय के सूरमाओं के गौरव को प्राप्त करे। सब शत्रुओं और सब आक्रमणों के विरुद्ध हमारे देश की अटूट लौह ढाल बनने पर ही तथा राष्ट्रों के समाज मे क़ानून क़ायम करने के लिये प्रयत्न करते रहने पर ही यह गौरव आपको प्राप्त होगा। यह मुझे विश्वास है कि अपनी अनुपम प्रतिज्ञा और परम्परा के कारण आप इतिहास के इस भार और विधाता की इस अपेक्षा को पूरा करने के लिये पूरी तरह से योग्य है।

सामरिक दलों के लिये इस प्रकार के झडे का वहन करना कोई नयी बात नही है। सच तो यह है कि बहुत पुराने ज़माने से किसी भी सैनिक टुकडी के लिये झडा उसकी सब से अधिक प्रिय वस्तु रही है। और यह उसकी अपनी निजी आन की बात रही है कि वह न तो किसी शत्रु द्वारा छीना जाये और न शत्रु के हाथ मे पडने दिया जाये। इसकी रक्षा के लिये की गई बहादुरी की गाथाए असख्य है। मै जानता हू कि हमेशा की तरह आज भी हमारी नौ सैना का प्रत्येक नाविक अपना यह पवित्र कर्तव्य समझता है कि जिस झडे के तले वह सेवा करता है उसके गौरव में कोई धब्बा न लगे।

भारतीय श्वेत ध्वजा जिसे नौ सेना के जहाजों पर फहराया जाता है साधारणतया किनारों पर नही फहरायी जाती। किन्तु मेरे विचार मे यह उचित ही है कि जब हमारे नाविक किनारे पर हों तो वे वैसे ही गौरव के साथ किसी झडे को लेकर चल सकें जैसे के अधीन कि वे समुद्र पर यशपूर्ण रीति से सेवा करते है। अतः इस प्रयोजन से मै आपको आज राष्ट्रपति का झडा भेट देता हू। सन् ३५ से भारतीय नौ सैना राज्य के शिरोमणि के झडों को बडे यश के साथ लेकर चलती रही है। इस झडे को आपके पास छोड़ते समय मुझे विश्वास है कि आप इसकी सर्वदा रक्षा करेगे और इसकी चारों तरफ़ बहादुरी की और भी परम्पराओ की सृष्टि कर देगे।

तारापूरवाला मत्स्यालय का उद्घाटन

*रविवार २७ मई १९५१ को बम्बई में तारापूर वाला मत्स्यालय का उद्घाटन करने के अवसर पर राष्ट्रपति जी ने कहा--

इस विशाल नगरी की पुरानी आवश्यकता को पूरा करने वाले इस मत्स्यालय का उद्घाटन करने में मुझे बड़ी प्रसन्नता है। मुझे विश्वास है कि मत्स्य व्यवसाय तथा जलचरों और

---

*अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनवाद

जलचर जीवन सम्बन्धी समस्याओं इन दोनों के अध्ययन में ही यह संस्था बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी। इसके साथ साथ ही इस नगर में यह ऐसी नयी सुविधा होगी जिसे कि इसके नागरिक और इसमें आने वाले यात्री दोनो ही बहुत पसन्द करेगे।

बम्बई नगर का मत्स्य व्यवसाय से सम्बन्ध यदि अधिक नही तो इतना तो पुराना है ही जितना कि स्वयं यह नगर पुराना है। पुराने अभिलेखों से हमें यह पता चलता है कि आरम्भ में यह केवल मछेरों का गाव था। इसमें शका नहीं है कि अपने जीवन की पिछली शताब्दि में अपने विशाल उदर मे इसने बहुत से व्यवसायो और उद्योगों को भर लिया है। किन्तु अपने इस प्रारम्भिक उद्योग से इसका सम्बन्ध आज भी सर्वथा टूट नही गया है। आज भी इस महान् नगर की बाहरी बस्तियों से निकलते हुए तथा वर्ष के हर भाग में रोज़ मछली पकडने के लिये समुद्र को जाते मछेरे दिखाई देते हैं। मुझे आशा है कि उनके व्यवसाय के लिये प्रारम्भिक बाते उन्हे बता कर यह संस्था उनके लिये उपयोगी सिद्ध होगी। मै समझता हू कि उन्हे मछलियों की आदतों की अथवा जलचरों के प्रकट या लुप्त होने पर धाराओं अथवा ऋतुओं के प्रभाव के बारे मे, पर्याप्त जानकारी नही होती। मुझे इस बात का यकीन है कि मछेरों को इस प्रकार की जानकारी प्राप्त कराने मे यह सस्था कोई बात उठा नही रखेगी जिससे कि वे अपने प्राचीन व्यवसाय को अधिक सफलता और होशियारी से चलाने में समर्थ हो जायें। इस बारे मे मै यह और कहूगा कि यदि यह सस्था अपनी गवेषणाओं के परिणामो को उन लोगों को, जिन्हे इन परिणामों मे दिलचस्पी है, उनकी ही भाषा में बताये—और मुझे भरोसा है कि यह ऐसा करेगी—तो इसकी सेवा कही अधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

भारतवर्ष का लगभग चार सहस्त्र मील लम्बा समुद्र का किनारा है। आज भारत में बडी बड़ी नदिया और जलाशय है, छोटे छोटे ताल तलैयो की तो कोई गिनती ही नही है। इन मछलियों के बढ़ने के लिये यह सब अत्यन्त सुन्दर स्थान है और अन्न की कमी के आजकल के दिनों में भारत भी मछलियो की उपेक्षा नही कर सकता क्योंकि वे तो बहुत ही पुष्टिकारक भोजन है। यद्यपि यह ठीक है कि हमारे देश मे ऐसे लोगों की बडी तादाद है जो मछली या मास से परहेज करते है किन्तु साथ ही यह भी ठीक है कि इस देश मे भी जनता की बड़ी तादाद को मछली खाने मे कोई आपत्ति नही है। और यदि इन मे से अधिकाश को अपने नित्य के भोजन में मछली नही मिलती तो उसका कारण यह नही है कि उन्हे मछली खाने में कोई आपत्ति या उससे परहेज है वरन् उसका कारण तो यही है कि या तो मछली मिलती ही नही और अगर मिलती है तो इतनी महगी कि वे उसे खरीद नही सकते। ऐसा कोई कारण नही है जिसके लिये कि हमारी जनता के इतने लोगों को वह खाना ना मिले जिसे वे पसन्द करते है। अतः मछली व्यवसाय के विकास की हमारे देश में काफ़ी गुजाइश है। हमारे पास जो विशाल साधन है उनको ध्यान में रख कर यदि मछली क्षेत्रों का वैज्ञानिक और औद्योगिक ढग पर विकास किया जाये तो कोई कारण नही है कि हमारे देश में बसने वाले लोगों में से अधिकाश को अत्यन्त आवश्यक पुष्टिकारक भोजन प्राप्त न हो। अतः मछली क्षेत्रों के विकास को मै इतने ही महत्व का समझता हू जितना कि मै भोजन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये खेती के विकास को अथवा गो पालन के विकास को आवश्यक समझता हूं।

जैसा कि मैंने कहा है यह संस्था समुद्र के जल में तथा जलाशयों के जल में मछलियों के विकास की तरकीब के बारे में गवेषणा करेगी और इस प्रकार बडी उपयोगी सिद्ध होगी। अतः मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि इस संस्था को, जिसके आरम्भ करने का प्रश्न जैसा कि आपने कहा है बहुत दिनों से विचाराधीन था, आरम्भ करना अब सम्भव हो गया है। जैसा कि अभी बताया गया है इस योजना को पूरा करना बहुत कुछ इसलिये सम्भव हो सका है क्योंकि स्वर्गीय श्री तारापूरवाला और उनकी पत्नी ने दो लाख का उदार दान दिया था। श्री तारापूरवाला को बहुत बातों मे दिलचस्पी थी और जिस उद्देश्य को वे हमारे राष्ट्रीय कल्याण के लिये आवश्यक समझते थे उसके लिये इतना उदार दान देकर उन्होंने वैयक्तिक दान का ऐसा उदाहरण दिखाया है जिसे हमारे देश के धन सम्पन्न लोगों को अपनाना चाहिये। अपनी जनता के सास्कृतिक और आर्थिक विकास के लिये आधुनिक स्तर पर सुविधाए प्रदान करने के लिये हमें अभी बहुत कुछ करना बाकी है। सार्वजनिक प्रयोजनों के लिये दान की प्रथा उतनी ही पुरानी है जितनी कि पहाडिया या मैदान पुराने है। और सार्वजनिक प्रयोजनों के लिये स्वेच्छा से दान देने की हमारे लोगो में बडी पुरानी परम्परा है। अभी हाल तक यह दान प्रवृत्ति ऐसी संस्थाओं की स्थापना करने के लिये थी जैसी कि धर्मशालाए और शिक्षा सस्थाएं चिकित्सा गृह और अनाथालय होती है। सार्वजनिक दान की इस परम्परा को हमे अक्षुण्ण रखना है और और भी प्रभावी बनाना है। आवश्यकता तो केवल इतनी है कि इस की दिशा और उद्देश्यों को हम आधुनिक परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुकूल बना दे जैसा कि इस सस्था के बारे में किया गया है।

मुझे इस मे कोई शका नही है कि जैसे जैसे इस मत्स्यालय का अनुभव और जनप्रियता बढेगी और जैसे जैसे इसके काम का विस्तार और अच्छाई की उन्नति होगी वैसे वैसे ही उसे भविष्य मे अपनी आवश्यकताओं के अनुसार जनता की सहायता प्राप्त होगी। मुझे बताया गया है कि इस विषय के बारे मे जो अभी बिल्कुल नया है और जिसके बारे में हमारे देश में कोई खोज नहीं हुई है विस्तृत गवेषणा करने के लिये जो सुविधायें आवश्यक है उन सब का यहा प्रबन्ध नहीं हुआ है और सस्था को और अधिक सहायता की आवश्यकता पडेगी। मुझे आशा और भरोसा है कि यह अपने काम से जनता और सरकार दोनों की ही सहायता और समर्थन पाने का अच्छा पात्र बन गयी होगी। सस्था की सफलता के लिये मेरी शुभकामना है और मै इन शब्दो के साथ इसका उद्घाटन करता हू।

अपने लिखित भाषण के पश्चात् उपर्युक्त अवसर पर बोलते हुए राष्ट्रपति जी ने यह और कहा—

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आप ने मुझे यह मौका दिया कि मैं इस नयी सस्था का उद्घाटन कर सका। जब बाला साहब खेर बोल रहे थे तो मै देख रहा था कि कुछ लोगों के चेहरे पर मुस्कराहट थी। जहां तक मैंने इस का कारण समझा वह यह था कि वे स्वयं कभी मांस मछली खाते नहीं और यहां पर जो उन्होंने कहा वह केवल मछली खाने की ही बात कही।

लोगों को इस में मज़ाक मालूम होता है। यहां मेरे साथ भी वही बात है। मैं भी उसी समूह में हूं जिसमें बाला साहब हैं अर्थात् जो मांस मछली नही खाते। मुझे खुशी इस बात की है कि इस संस्था के ज़रिये एक बडा काम हो सकता है। हिन्दुस्तान में मांस मछली खानेवालों की सख्या कम नही है यद्यपि बाला साहब और उनके जैसे लोगों की संख्या भी कम नहीं है। लेकिन ज्यादा लोग तो ऐसे ही है जो मांस मछली खाते है और यदि नही खाते हैं तो इसलिये नही कि उनको खाने में ऐतराज है बल्कि इसलिये कि उन्हें मिलती नही है या उनके पास पैसे नही है कि वे खरीद सके। हमारे यहां जितने लोग है उनको खाना पहुंचाना ज़रूरी है और कोई वजह नही है कि जो खाना चाहें उनको मछली नही मिले। इसलिये उनको देना ज़रूरी है। इसलिये हमारी नजर में यह जरूरी था कि एक ऐसी चीज़ बने। हिन्दुस्तान में इतनी नदियां है, इतने तालाब है, इतने पोखरे है और यहा चार हजार मील समुद्र का किनारा है जहां बेशुमार मछली मिल सकती है और उससे देश के लोगों के खाने में मदद मिल सकती है। इसमे दोनों चीज है। एक तो यह सस्था इस शहर के लिये एक ऐसी चीज होगी जिसको लोग रोज़ रोज़ देखा करेगे, जो यहां के लोग है वे देखेंगे, जो बाहर से आयेंगे वे देखेंगे और उनको मनोरंजन होगा और साथ ही साथ यह एक अच्छा काम भी होगा जिससे हम उम्मीद रखते है कि हमारी खाने की कमी मे मदद मिलेगी। जैसा अभी बाला साहब ने कहा, तारापूरवाला के दान के फलस्वरूप ही यह काम हुआ है। आज हिन्दुस्तान मे इस प्रकार के दान की बहुत जरूरत है। पहले हमारे यहा लोग दान करते थे और यह पुरानी रीति चली आयी है कि लोग दान तरह तरह से करते है। जिस तरह का दान होता आया है आजकल की दुनिया में उनकी आवश्यकता तो कम हो गयी है और आजकल की दुनिया के मुताबिक जो दान होना चाहिये वह हम अभी भी चाहते है और लोग दिया भी करेगे। तो श्री तारापूरवाला ने इस तरह का दान देकर एक अच्छा नमूना पेश किया है और उनको मै बधाई देना चाहता हू। वह तो अब नही रहे लेकिन उनके परिवारवालों को बधाई देना चाहता हू और आशा करता हू कि अभी जो काम बाकी है उसके लिये आपके पास पैसे की कमी नही होगी और खास करके जब गवर्नमेंट भी तैयार है तो यह काम रुकेगा नही बढता जायेगा।

भूमि सेना

तारीख ६ जून १९५१ को दिल्ली जिला फसल प्रतियोगिता और भूमिसेना का साहिबाबाद में उद्घाटन करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा—

माननीय मुन्शीजी, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आप ने मुझे यह मौक़ा दिया कि आज मै इस उत्सव में शरीक हो सकू। हिन्दुस्तान कृषि प्रधान देश है जहां प्राय: १०० में ७० आदमी खेती से ही अपना गुज़ारा किया करते है और दूसरे लोग भी बहुत कुछ खेती पर ही निर्भर रहते है। तो भी हमारे लिये यह दुख और शर्म की बात है कि इस देश में अन्न की कमी हो और हमको

करोड़ों करोड़ मन अन्न विदेशों से मंगाना पड़े और उसके लिये असंख्य रुपये देने पड़ें। इसलिये वह काम जिसका यह ध्येय है कि हम अपने देश के अन्न की कमी को दूर करें और अपने लिये पूरा अन्न पैदा करें ऐसा काम है जिस में हर शख्स को सिर्फ दिलचस्पी ही नहीं रखनी चाहिये बल्कि उसको पूरी मदद भी करनी चाहिये और इसलिये मैंने बड़ी खुशी से इस बात को मंजूर कर लिया कि आपके इस उत्सव में शरीक होऊं।

मैं कई बार कह चुका हूं कि आजकल कालेजों और स्कूलों में जो पढ़ाई होती है वह इस तरह की है कि जो लोग पढ़कर निकलते है वे गांव के लोगों से एक तरह से अलग हो जाते है। सिर्फ़ यही नहीं कि वे विद्या सीखते हैं और गाव वाले शिक्षित नही है। यह ठीक है कि वे विद्या सीखते हैं और ऐसा होना चाहिये। मगर उनका रहन सहन तौर तरीका, काम करने का तरीका सब अलग हो जाता है। मेरा अपना खास तजुरबा यही है कि अगर उन लोगों को किसी एक ऐसी जगह पर छोड़ दिया जाये जहां शहर के आराम की चीजें मौजूद नही हों, शहर में जो सहूलियतें होती है वहां न हों तो उनकी ज़िंदगी कठिन हो जायेगी। १९२०–२१ में जब असहयोग का आन्दोलन शुरू हुआ और गांधी जी ने यह कहा कि स्कूलों और कालेजों से निकल आओ तो वे लोग जो किसानों के लड़के थे और स्कूलों और कालेजों मे पढते थे उनको स्कूलों और कालेजों को छोड़कर इस काम मे लगने में दिक्क़त नही हुई लेकिन वे लड़के जिनके बाप दादे शहर में वकालत करते थे और कलम चलाकर ही अपनी ज़िन्दगी काटते थे उनके सामने यह सवाल आया कि वे निकलकर क्या करेंगे ? ऐसे लड़के कम निकले। मै यह कहता हूं कि इस काम मे जो यूनीवर्सिटी के लड़के भी लग रहे हैं यह शुभ लक्षण है। मै उम्मीद करता हूं कि ऐसे सिर्फ यही नही कि उनका ताल्लुक गांव के लोगो के साथ गहरा हो जायेगा बल्कि उन को खुद भी अपने हाथ पैर को भी चलाने का मौका मिलेगा। आज इस बात की जरूरत है कि पढे लिखे लोग भी सिर्फ अपने दिमाग का ही नही, अपने हाथ पैर का इस्तेमाल भी सीखें। मैं समझता हूं कि इस में हर तरफ़ भला ही भला है। किसानो का भला है कि उन्हे पढे लिखे लोगों की मदद मिलेगी, उनकी विद्या का लाभ मिलेगा और उनका अपना भला इसमें है कि वे किसी काम के लायक हो जायेंगे। मैं मानता हू कि पढे लिखे लोग भी जो अपने हाथ पैर चला सकते है उन पढे लिखे लोगों से बेहतर है जो सिर्फ़ अपने दिमाग को ही चला सकते है। जो आपका कार्यक्रम है वह बहुत सुन्दर है।

यह सोचना कि हिन्दुस्तान मे १० प्रतिशत अन्न की कमी है हंसी की बात मालूम होती है। इस वक्त जहा तक मै ने सुना है देश में १०० मे १० मन की अन्न की कमी है याने जहां १०० मन पैदा होता है उसके बदले में ११० मन या १० मन के बदले में ११ मन पैदा होने लग जाये तो अन्न की कमी दूर हो सकती है। आप किसान लोग बैठे हुए है। आपसे मैं पूछता हूं कि क्या आप लोग थोड़ी अधिक मेहनत करके १० मन के बदले में ११ मन पैदा नहीं कर सकते है ? मेरा अपना खयाल है कि कुछ खाद देने से, कुछ अच्छा बीज देने से, कुछ पानी देने से और थोड़ा अधिक परिश्रम करने से १० मन के बदले ११ मन आप जरूर पैदा कर सकते हैं और मै उम्मीद करता हूं कि अगर लोग चाहेंगे और आपको सुविधा मिलेगी तो यह कमी आसानी से दूर की जा सकती है।

आपने जो गांव मे प्रतियोगिता का तरीक़ा निकाला है उससे भी मैं मानता हूं कि लोगों को लाभ पहुंचेगा। जैसा मुशी साहब ने कहा, हर गांव में अगर २० आदमी २० एकड़ ज़मीन मे प्रतियोगिता के लिये धान, गेहूं और मकई करें और जो इनाम मिलता है उसको हासिल करने के लिये अधिक परिश्रम करके खेती करे तो एक एकड़ में ५ मन ज़रूर अधिक पैदा कर सकेंगे। इस तरह एक गांव में २० आदमी १० एकड़ जमीन में १०० मन ज़्यादा पैदा कर सकेंगे और इसी तरह सारे देश को लिया जाये और हिसाब लगाया जाये तो जितनी अन्न की कमी है वह दूर हो जाती है। तो मै यह आशा रखता हूं कि इस चीज़ को जिसके लिये प्रोत्साहन भी बहुत है देश भर मे बढाया जाये और तब आप को फल मिलेगा।

जो भूमि सेना बनाने की बात आपने सोची है वह भी बहुत सुन्दर है क्यो कि इन लोगों से आशा रक्खी जायेगी कि किसानो की भलाई के लिये उन तक अपनी विद्या और बुद्धि पहुंचायें और अपने हाथो से मेहनत करके किसानो को साथ लेकर जमीन की तरक्की किस तरह की जा सकती है इस चीज़ को उन्हें बतलाये। ज़मीन की तरक्क़ी मे सिर्फ खेती की तरक्क़ी की ही बात नही है। उसमे मवेशियो की तरक्की की भी बात है क्योंकि बैल की तरक्क़ी के बिना खेती की तरक्की नही हो सकती और आदमी को दूध की भी ज़रूरत होती है। इसलिये दूध और अच्छे बैल के लिये ज़मीन की तरक्क़ी बहुत जरूरी है और अन्न और मवेशी की तरक्की से हम खाने की निहायत ज़रूरी चीज़ो को मुहय्या कर लेगे। खेती से ही तिलहन, गन्ना, कपास सभी चीज़े मुअस्सर होती है और खेती मे उन्नति होने से हम जितनी तादाद मे उन चीज़ो को चाहेगे ये मिल सकती है और मै उम्मीद रखता हूं कि आपकी जो यह सेना बन रही है वह ज़मीन किस तरह अच्छी से अच्छी बनायी जा सकती है, उससे किस तरह ज्यादा से ज्यादा अपने लिये और देश के लिये नफ़ा निकाला जा सकता है इन सब चीज़ो को गाव वालो को पहुचायेगी और लोगो की मदद के लिये काम करेगी। नयी ज़मीनको जोतना, जो जमीन पहले से जोत मे है उसकी तरक्क़ी करना और जो ज़मीन ऐसी है जिसमे खेती नही हो सकती है उसको दूसरे किसी काम मे लाना, जिस जमीन मे खेती होती है उसमे कौन कौन सी चीज़े पैदा हो सकती है इन बातो को किसानो तक पहुंचाना इस सेना का काम है। इसमें जो पढ़े लिखे भाई, जो यूनीवर्सिटी के विद्यार्थी आते है उन से मैं यही कहना चाहता हूं कि वे ऐसा न समझें कि जो गाव के किसान है उनसे उनकी अपनी अक्ल बढी चढ़ी है क्यों कि सारे किसान लोग खेती का काम जानते है। आज का नही हज़ारो वर्षो का तजुरबा हमारे किसानों को है। वे लोग उनसे भी बहुत सी चीज़े सीख सकते हैं। जो आज दुनिया में और दूसरे देशों में अनुसंधान का काम हो रहा हैं उस का तजुरबा पढे लिखे लोगो को ज़रूर मिला है, पर किताबों को पढ़ कर उन्होंने तजुरबा हासिल किया है और जो तजुरबा काम करके हासिल किया जाता है वह उससे बड़ा होता है जो किताबों को पढ़ कर हासिल किया जाता है। इसलिये मैं उनसे उम्मीद रखता हूं कि वे किसानों से मिलजुलकर काम करेंगे और जो चीजें उनको किसानों से मिल सकती हैं उनको वे सीख लेंगे और अगर उनके पास कोई ऐसी चीज़ हो जिससे उनकी तरक्क़ी की जा सकती हो तो उसे वे उनके पास पहुंचा देंगे। इस तरह से यदि काम होगा तो मैं उम्मीद करता हूं कि यह काम तेज़ी से चलेगा। मै आप सब को इस बात के लिये बधाई देना चाहता हूं कि आपने इस काम को शुरू किया है। यह दिल्ली के नज़दीक का इलाक़ा है और आपको जो सुविधाऐं

प्राप्त है वे दूर जगहों पर नहीं है। यहां पर, आपके मुन्शी साहब भी आ गये, सरदार दातार-सिंह भी आ गये, संसद् के कुछ सदस्य भी आ गये और आपने मुझे भी बुला लिया। तो इन सब लोगों की मदद आपको मिल सकती है। और जगहों मे यह संभव नही है। इसलिये आप ऐसा नमूना बना जायें जिसमें सारा देश आपका अनुकरण करे। मै उम्मीद करता हूं कि इस काम को आप तनदेही के साथ, उत्साह के साथ करेंगे और सारे देश के लिये नमूना बन सकेंगे। मै एक बार और आप सब को बधाई दे कर समाप्त करता हूं।

वन महोत्सव

दूसरे वनमहोत्सव के अवसर पर तारीख़ १-७-५१-जुलाई को दिल्ली यूनीवर्सिटी में राष्ट्रपति जी ने कहा—

माननीय मुन्शी जी, डा० सेन, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आपने मुझे इस वनमहोत्सव में शरीक होने का मौका दिया है। यह दूसरी बार है जब मै इस वनमहोत्सव में शरीक हो रहा हूं। जैसा मुन्शीजी ने कहा, पिछले साल राजघाट में यह काम शुरू हुआ था और इस साल आपकी यूनीवर्सिटी में किया जा रहा है। मेरे खयाल मे इस मुल्क में आज से नही बल्कि बहुत दिनों से, जहां तक का इतिहास लोगो को मालूम है, गाछों के लगाने का सिलसिला चला आ रहा है और हमेशा से इसे लोग बड़ा जरूरी और पुण्य का काम मानते आए है। हमारी तरफ़ गांव में अगर कोई किसी से खैरियत पूछता है कि तुम्हारा हालचाल कैसा है तो हमेशा ही वह यह भी ज़रूर पूछता है कि खेती बाड़ी कैसी है। खेती बाड़ी के माने है खेतो मे अन्न की फ़सल का होना और बाग़ बगीचे लगाना। जो भी किसान होता है या ज़मीदार होता है और जिसको थोड़ी भी ज़मीन रहती है वह उसमे से कुछ में तो अन्न पैदा करता है और उसके थोड़े हिस्से में बाग बग़ीचे लगाता है। उस बाग बगीचे से उसको फल भी मिल जाते है और जलावन की लकड़ी भी मिल जाती है। जैसा मुन्शीजी ने कहा अगर सब किसान अपने खेत में बाग़ बग़ीचे लगावे तो उससे वर्षा लाने में भी मदद मिलेगी और ज़मीन भी न कटेगी। क्योंकि जहां पर ऐसा नही होता है वहां अक्सर देखा जाता है कि नदियों के बहाव की वजह से और बरसात में अधिक वर्षा होने से ज़मीन कटती है और वह ज़मीन बर्बाद हो जाती है। आप दिल्ली से अगर ग्वालियर की ओर जायें तो आप देखेंगे कि बहुत ज़मीन ऐसी पड़ी हुई है जो पहाड़ की तरह मालूम होती है। वहां एक टीला है जो उठाव और गिराव की तरह है जिसका बहुत हिस्सा ज़मीन ही देखने में आता है। वह जो ज़मीन है वह कोई खराब ज़मीन नही है। वहां जो मिट्टी कटती है उसका कारण ही यह है कि मिट्टी वहां की अच्छी है। ऐसी अच्छी ज़मीन पानी के बहाव से कट जाती है। लाखो बीघे ज़मीन, मैं समझता हूं कि उससे भी अधिक कितने लाख बीघे ज़मीन, नदियों से कटकर खाली पड़ी है। हम उसमें कितना अन्न पैदा कर सकते है। इसका कारण यह है कि जहां आबादी कम थी ज़मीन पर उतना दबाव नहीं था और इसलिये सब ज़मीन आबाद नहीं की गयी सबमें खेती नहीं

हुई, बाग बग़ीचे लगाये नहीं गये और उस ज़मीन की देखभाल नहीं हुई और इसलिये वह ज़मीन कट गयी। अब जैसे जैसे आबादी बढती जायेगी, उसकी ज़रूरत बढ़ती जायेगी। इसलिये इस वनमहोत्सव का काम शुरू किया गया कि पहले तो इस तरह की ज़मीन को आबाद कर लिया जाये और फिर यह भी सोचा जाये इसे कटने से कैसे बचा सकते है। इन दोनों चीज़ों को मिला कर यह वनमहोत्सव का काम शुरू हुआ। यह खुशी की बात है कि गत साल जितने पेड़ लगाये गये थे उनमें से बहुत बच गये है और आहिस्ता आहिस्ता बढ़ रहे है। अभी डाक्टर सेन ने कहा कि यहां ज्यादा पेड़ तो नही लगाये गये लेकिन जितने लगाये गये वे सब के सब बचे है और बढ़ रहे है। पेड़ लगाने से यह कम ज़रूरी नही है कि उनकी देखभाल की जाये, उनको पानी दिया जाये, उनको सर्दी और गर्मी से बचाया जाये जिसमें उनको ताकत हो जाये और आगे से वे अपने को बचा सकें। कुछ दिनो के बाद उनको देखभाल की ज़रूरत नही होती। लेकिन शुरू में जिस तरह से बच्चे का पालन ज़रूरी होता है उसी तरह से पेड़ का पालन भी ज़रूरी होता है। यूनीवर्सिटी में जो यह काम हो रहा है जैसा डाक्टर सेन ने कहा, अगर एक एक आदमी यहां एक एक पेड़ लगाये और उसकी देखरेख अपने ऊपर ले ले तो बहुत पेड़ लग जायेगे। मै आशा करता हूं कि इसमें आप सफलता प्राप्त कर लेगे। यह काम जो यहां शुरू होता है वह यहां के लिये ही नहीं बल्कि सारे देश के लिये है।

बहुत बहुत धन्यवाद।

राष्ट्रपति भवन में वनमहोत्सव

वन महोत्सव के अवसर पर राष्ट्रपति भवन में वृक्षारोपण के समय ता० १-७-५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा—

यह वनमहोत्सव का काम पार साल भी हुआ था और इस साल भी हमने किया। गाछों का लगाना और उनका पालना हमारे देश की पुरानी प्रथा है। हमारे शास्त्र मे कहा गया है कि दो ही चीजे है जो किसी की भी इच्छा को पूरी कर सकती है। एक का नाम है कल्पवृक्ष और दूसरे का नाम है कामधेनु। यानी एक पेड है और दूसरी गाय। इन्ही दोनों से लोगों को सब कुछ मिल सकता है। यह विश्वास आज का नहीं है हमेशा से रहा है। इसी विश्वास के अनुसार वृक्ष लगाना बड़े पुण्य का काम माना गया है। आवश्यकता होती है तो हम जंगल को ही काटते हैं। जैसे जैसे आबादी बढ़ती है जगल को काटना ज़रूरी होता है क्यो कि लोग ज़मीन चाहते है और ज़मीन तो अन्न पैदा करने के लिये चाहिये ही। लेकिन जब तक वृक्ष नही होते पानी नही बरसता है। मैं ने दिल्ली के बारे मे सुना है कि जब से नई दिल्ली मे वृक्ष लगे है तब से ज्यादा पानी बरसना शुरू हो गया है यानी २५-३० वर्ष के अन्दर ही ऐसा हुआ है। यही बात और जगहों में भी है। इसीलिये पहाडों और जगलों में जहां वृक्ष अधिक होते है पानी बरसता है। हमारे देश में जहां काश्तकारी जरूरी है वृक्ष भी जरूरी है। इसलिये जमीन की हिफ़ाज़त के लिये और फल पैदा करने के लिये अधिक से अधिक वृक्ष लगाना जरूरी है। लेकिन इसमें समझदारी की ज़रूरत है। हमें देखना चाहिये कि जो वृक्ष लगाये जायें उनसे फायदा भी हो और जहां नुकसान हो

वहां न लगाने चाहियें। जहां काश्तकारी अधिक ज़रूरी है वहां वृक्ष नहीं लगाने चाहियें। कहीं फल के वृक्ष की कमी है कही छायादार वृक्ष की कमी है। वहां वैसे ही वृक्ष लगाने चाहिये। इस तरह से हमें समझबूझ कर काम करना है। यहा जो गवर्नमेंट हाउस में वृक्ष लगाया गया वह तो दिखलाने के लिये हुआ। जो गावों के रहने वाले हैं उनको इस काम को अपनाना चाहिये और समझबूझ कर वृक्ष लगाने चाहिये। यह भी ध्यान रखना चाहिये कि परसाल जिस सफलता से काम हुआ उससे भी अधिक सफलता इस काम में हो क्योंकि परसाल दो तिहाई वृक्ष मर गये। उनको मरना नही चाहिये। मुझे उम्मीद है कि इस साल दो तिहाई वृक्ष ज़िन्दा रहेंगे और जो ज़िन्दा रहे उनसे हमें फल भी मिलेगे। फल खाने के लिये वृक्ष लगाने वालों में से कितने ही नही रहेगे लेकिन जो रहेगे उनको फल मिलेगे। ऐसे ही दुनिया का काम चलता है। मै आशा करता हू कि देश और जनता के हित के खयाल से यह वृक्षारोपण का काम फैल जायगा और सभी लोग उससे लाभ उठायेगें।

राष्ट्रपति भवन में ईद

ता० ६-७-५१ को राष्ट्रपति भवन में ईद के अवसर पर मुसलमान कर्मचारियों तथा उनके बच्चों से राष्ट्रपति जी ने कहा—

भाइयो, बच्चो और बच्चिओ,

मुझे इस बात की बडी ख़ुशी है कि इस मुबारक दिन पर आप सब भाइयों और बच्चों से एक साथ मै मिल सका। यह खयाल जब आया तो मै ने सोचा कि मेरे लिये यह मुमकिन शायद नही हो कि मै घर घर में जाकर हर घर में ईद मुबारक कहू लेकिन यह मुमकिन था कि आप सबको यहां ही इकट्ठे करके जिस तरह से आप लोग दूसरी जगह में आज मिले थे उसी तरह से मिल कर सब को मुबारकबाद दे दू। एक महीने तक रोजा करने के बाद यह ख़ुशी का दिन आता है और इसमे हिन्दुस्तान के सभी लोग चाहे वे मुसलमान हों या नही हों मिल कर ख़ुशियां मनाते हैं और आज जब हिन्दुस्तान की सल्तनत का तरीका बदल गया है और यहां एक जम्हूरियत क़ायम हो चुकी है और प्रजातन्त्र के सब लोग मिल कर काम कर रहे है तो जो ख़ुशी और गम का मौक़ा हो उसमे सभी को शरीक होना चाहिये। हिन्दू हों या मुसलमान हों, सिख हों या ईसाई हों, पारसी हो या और कोई हों, एक दूसरे के दुःख और सुख में, ख़ुशी और ग़म मे एक दूसरे को शरीक़ होना चाहिये और गवर्नमेंट के लिये भी उसमें हिस्सा लेना मुनासिब और वाजिब है। यही सोचकर मै ने यह इन्तजाम कराया और आपको तकलीफ देकर यहां बुलाया। में उम्मीद करता हू कि जो साल आज से शरू हो रहा है वह हिन्दुस्तान के सभी बाशिन्दों के लिये ख़ुशी ख़ुशी गुज़रेगा। बहुत मुसीबतों में हो कर हम गुज़रते आये हैं और अभी बहुत मुसीबतों का सामना करना बाक़ी है। मगर जब सब एक साथ मिल कर किसी मुसीबत का सामना करने को तैयार हों तो बड़ी से बड़ी मुसीबत हल्की हो जाती है और दूर हो जाती है। हिन्दुस्तान में जो हमने अपने लिये क़ायदा तैयार किया है उसमें साफ साफ़ लिख दिया है कि हिन्दुस्तान के अन्दर रहने वाले जितने लोग हैं चाहे उनका मजहब कुछ भी हो, चाहे वे कोई भी जबान बोलते हों,

वे सभी हिन्दुस्तान के हैं और हिन्दुस्तान उनका है और हर एक आदमी की खिदमत पर, उनकी जान व माल पर हिन्दुस्तान का हक़ है। इसलिये मैं उम्मीद रखता हू कि आप लोग जिनका खास ताल्लुक गवर्नमेंट हाउस से है इस जवाबदेही को खासतौर से महसूस करते ही होंगे, दूसरे लोग जो यहा या दूसरी जगहों पर है वे भी इस जवाबदेही को महसूस करेंगे जिसमें मुल्क का काम आसानी से, आराम और सहूलियत से चलता रहे। एक बार और मै आप लोगों को मुबारक़-बाद देकर समाप्त करता हू।

ईद

ता० २२-७-५१ को इम्पीरिअल होटल मे ईद की दावत में राष्ट्रपति जी ने कहा—

हजरात,

मै आप सबको शुक्रिया अदा करता हू कि आपने मुझे आज यह मौका दिया कि आप सब से मिल सकू और आपको मुबारकबाद दे सकू। इस मुल्क मे जब मुख्तलिफ मजहब के मानने वाले मुख्तलिफ जबान के बोलने वाले लोग बसते है तो यह लाजिमी है और हमारे लिये यह जरूरी है कि ऐसे हर मौके पर हम सब मिल सके और मिल कर एक दूसरे के साथ अपने ताल्लुकात अच्छे करे। इसलिये जब कभी ऐसा मौका होता है और खास करके त्यौहार के मौके पर हिन्दू, मुसलमान और दूसरे मजहब के मानने वालों को इकट्ठा होना चाहिये। मै समझता हू कि यह सबसे अच्छा तरीका है कि सब तरह के लोग ऐसे मौके पर इकट्ठे हों और एक दूसरे से मिले और मिल कर के आपस के ताल्लुकात अच्छे करे। आप जानते है कि यह देश बहुत दिनों के बाद आजाद हुआ है। आजादी हासिल करने मे सबका हिस्सा रहा है। आज़ादी हासिल करने में जो दिक्क़ते थी वे काफी थी। मगर आजादी को कायम रखने मे जो दिक्कते है वे आज़ादी हासिल करने की दिक्कतो के मुकाबले मे कम नही है, अगर ज्यादा नही है तो बराबर है। इस लिये हममे से हरेक के लिये यह लाजिमी होता है, हममे से हरेक का यह फ़र्ज़ होता है, कि उस आज़ादी को कायम रक्खे और हममे से हरेक अपने फर्ज़ को समझे तभी हम मुल्क की आज़ादी क़ायम रख सकेगे।

आज़ादी सच पूछिये तो उसे ही कह सकते है जिसमें हरेक शख्स आज़ाद हो। जिसमें एक आदमी या एक जाति दूसरे लोगो पर रोब जमाना चाहे वह आज़ादी नही है। आज़ादी के माने है कि हम में से हरेक आदमी आज़ाद हो चाहे वह बूढा हो, बच्चा हो, स्त्री हो या पुरुष हो, चाहे वह किसी धर्म का मानने वाला हो, चाहे किसी जगह का रहने वाला हो, चाहे किसी ज़बान का बोलने वाला हो और वह आजाद ही नही रहे बल्कि यह महसूस करे कि वह आज़ाद है। तभी वह सच्ची आज़ादी हो सकती है। आज जो मुल्क अपने को आज़ाद रखते है उनमें जितने लोग बसते है उनसे मुल्क की आज़ादी को क़ायम रखने के लिये जो भी मांग की जाये उसको पूरा करने के लिये वे तैयार रहते है। तभी वे आज़ादी को कायम रख सकते है।

मैं जानता हूं कि इस देश में जहां इतने लोग बसते है कभी कभी आपस के तफ़रकात हो जाते है। दो भाई भी आपस में लड़ते है। इस तरह की छोटीमोटी बातें हुआ करती हैं और हमेशा होती रही हैं और होती रहेंगी लेकिन सारे मुल्क को अपना मुल्क समझना और आज़ादी के लिये

कुर्बानी करना एक दूसरी चीज़ है । जो रोज़ाना की ज़िन्दगी के तफ़रक़ात हैं उनका उससे कोई ख़ास ताल्लुक नही हैं । इसलिये मे तो यह चाहता हूं कि इस मुल्क के हरेक रहने वाले को मुल्क की आज़ादी प्यारी हो । इसलिये इस तरह का मौका निहायत ज़रूरी होता है क्योंकि आपस के मेलजोल से ही आपसी मोहब्बत बढ़ती है । मै उम्मीद करता हू कि जब कभी मौका आयेगा, मैं उम्मीद करता हू कि ऐसा मौका नही आयेगा, तो हमारे मुल्क के हरेक शख्स के मोहब्बत की जाच होगी और इम्तिहान मे सभी अव्वल दर्जे मे पास होगे और हममे से कोई शख्स ऐसा नही होगा जिस के मोतल्लिक कहा जाये कि वह मुल्क के अलावा किसी दूसरी चीज से मुहब्बत करता है । मै चाहता हू कि हममे से हरेक इस चीज़ को महसूस करे । यहा आप लोग थोडे है, कोई जमात मौजूद नही है । मै उम्मीद करता हू कि जिनके आप नुमाइन्दे है वे सभी इस चीज़ को महसूस करेगे और जब कभी ऐसा मौका आये तो हम देख लेगे और दुनिया देख लेगी कि कितनी कुर्बानी हम कर सकते है । मै उम्मीद करता हू कि इस तरह का मौक़ा हमेशा आया करेगा जिस पर हम सब मिल सके ।

बहुत बहुत शुक्रिया ।

प्रेसीडेन्ट्स स्टेट टूर्नामेण्ट

ता० २४ अगस्त १९५१ को सध्या समय प्रेसीडेण्ट्स स्टेट टूर्नामेंट के इनाम बाटते समय राष्ट्रपति जी ने कहा—

भाइयो,

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि मुझे फिर एक बार अच्छा खेल देखने का मौका मिला । मुझे याद है कि गतवार बहुत ही अच्छा खेल देखने को मिला था पर उस मरतबे तीन दिनों तक खेल देखने को मिला था लेकिन इस मरतबे पहले ही दिन खेल खतम हो गया । इसका मुझे अफसोस नहीं है, हा इस बार उतना खेल नही देख सका । और मौक़ा आयेगा तो देख लूगा । इस बार भी आपने अच्छा खेल दिखलाया है । मै तो चाहता हू कि आप इस काम मे लगे रहे और आपको देखकर दूसरे नौजवान भी इस काम मे लगे और तैयार हो और यहा ही नही दूसरे मुल्कों मे भी इस खेल मे नाम पैदा करे । अभी तक यह हमारा फ़क्र है कि दूसरे दूसरे मुल्कों मे और और खेलों मे हमारे लोगों ने नाम हासिल किया है । हाकी मे तो हमारे खिलाड़ी अभी तक हारे ही नही है और मे चाहता हू कि फुटबाल मे भी हमारे खिलाड़ी इसी तरह से नाम पैदा करे और अगर हमारे नौजवान इसमे लगे रहेगे तो यह कोई कठिन बात नही है ।

आज के खेल में जो जीते है उनको मै मुबारकबाद देता हू मगर जो दूसरे लोग है उनको भी कम मुबारकबाद नही है क्योंकि आखिर तक पहुचना आसान बात नही है । बहुत खेल जीतकर आखिर तक पहुचना पड़ता है । यह खुशी की बात है कि जिन लोगों ने पारसाल इनाम जीत लिया था उन्होंने इस साल दूसरों को लेने दिया है और मै चाहता हूं कि जिन लोगों ने इस बार लिया है वे आगे साल दूसरों को लेने देंगे जिसमें दूसरों को भी मौक़ा मिले और दूसरे भी अच्छे अच्छे खेल दिखला सके ।

मैं एक बार फिर आप लोगों को धन्यवाद देता हूं ।

उस्मानिया विश्वविद्यालय का समावर्तन

उस्मानिया विश्वविद्यालय के विशेष समावर्तन समारोह में राष्ट्रपति जी ने कहा—

आपने जो मुझे इज्ज़त बख्शी है उस के लिये मैं आप को धन्यवाद देता हूं और साथ ही आपको यक़ीन दिलाना चाहता हूं कि मैं हमेशा ही इस की कद्र करूंगा क्योंकि यह इस विश्वविद्यालय ने मुझे बख्शी है। यह हमारे देश का सब से पहला विश्वविद्यालय है जिस ने हमारे देश की भाषाओं में से एक को शिक्षा का माध्यम ही नहीं बनाया बल्कि जिस ने विज्ञान और कला सम्बन्धी सभी विषयों पर किताबें लिखवाने और छपवाने के बारे में भी बड़ा तामीरी काम किया है। अपने तरीके पर और शिक्षा माध्यम के रूप में चुनी गई भाषा की अपनी सीमाओं के अन्दर जो काम यहां हुआ वह मुझे काफी हिम्मत बधाने वाला लगा। इस सवाल में मैं ने उसी वक्त से दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी थी जब से कि मैं ने सार्वजनिक कामों में हिस्सा लेना शुरू किया था। मुझे इस बात की खुशी है कि इस बारे मे अब जनता में काफ़ी जागृति हो गई है और आज कल आमतौर पर शिक्षा शास्त्री और पढे लिखे लोग यह मानते हैं कि अगर हमारे तालीम के काम मे किसी तरह की ग़ैर ज़रूरी और बचाए जा सकने वाले समय या ताक़त की बर्बादी नही होनी है तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि शिक्षा देशी भाषाओं मे दी जाये। फिर भी हम ने अपने सामने जो उद्देश्य रख छोडे हैं उन के प्राप्त करने के लिये भाषानीति के सम्बन्ध में हमारे लोगों के कुछ तबकों के विचारों मे काफ़ी धुधलापन है।

आपकी अनुमति से मैं यहा उसी सम्बन्ध मे कुछ कहना चाहता हू। मुझे यकीन है कि इस देश मे हर एक यह जानता है—कम से कम मैं यह चाहता हू कि हर एक शख्स यह जाने—कि जिस संविधान को भारत की प्रभुता सम्पन्न जनता ने अपनी सविधान सभा के द्वारा स्वीकृत किया है उसके अधीन हमारा यह कर्तव्य है कि हम इस देश मे लोकतन्त्रात्मक समाज की स्थापना करें अर्थात् ऐसा समाज क़ायम करे जिस में हर एक इन्सान और हर एक जमात को अपनी शख्सियत में छुपी हुई सारी खूबियों को उभाडने और हासिल करने के पूरे पूरे अधिकार और अवसर हो और जिस मे उन मे से हर एक को सघ और राज्य की सरकारों की नीति के बनाने में औरों के बराबर ही मौक़ा हो। शिक्षा माध्यम या माध्यमों की बात सोचते समय हम सब को अपने इस लाज़िमी कर्तव्य को अपने ध्यान मे बराबर रखना चाहिये। यह कहने की मुझे आवश्यकता नही कि शिक्षा खुद बडी ताक़त है और कम से कम इस से महरूम शख्स को न तो अपने पूर्ण विकास का ही और न अपने देश और इलाके की सरकार की नीति और कामों पर ही प्रभाव या अच्छा असर डालने का ही कोई मौका मिल सकता है। इसलिये यह बात साफ़ तौर पर जाहिर है कि शिक्षा के तरीके और [illegible] होने चाहियें जो एक आदमी को दूसरे आदमी या एक जमात को दूसरी जमात के मुकाबले में किसी तरह का बेजा फ़ायदा पहुंचाते हों।

इस तरह ज़ाहिर है कि प्राथमिक, माध्यमिक और विश्वविद्यालय की अर्थात् हर प्रकार की शिक्षा हर एक अच्छे-खासे बडे भाषावार जमात के लोगों को उनकी अपनी भाषा ही द्वारा दी जानी चाहिये। तभी दूसरे जमातों के मुकाबले मे उस जमात को शिक्षा के लाभों को प्राप्त करने में ज्यादा समय, रुपया और ताक़त खर्च न करनी पड़ेगी। और दूसरी किसी तरह की नीति का परिणाम यही होगा कि उस जमात के मुकाबले में, जिसकी भाषा में इसके बच्चों को शिक्षा

लेनी पड़ती है, यह जमात किसी क़द्र बुरी हालत में पड़ जायेगी। इसका मतलब यही है कि हर भाषावार इलाक़े में नीची से लेकर ऊंची से ऊंची शिक्षा उसी इलाक़े की भाषा में दी जानी चाहिये।

पर साथ ही मैं यह बात भी ज़ोरदार शब्दों में कह देना चाहता हूं कि ऐसा करना तभी सम्भव होगा जब कि भाषावार जमात अच्छी ख़ासी बडी हो और एक ही खास अलग इलाक़े में बसी हुई हो। दूसरे इलाक़ों में के मुख्तलिफ हिस्सों में, बहुत छोटी छोटी टुकड़ियों में बिखरे हुये लोगों की सब से नीचे दर्जे की शिक्षा के अलावा और तरह की शिक्षा के बारे में यह माग जायज़ नही हो सकती कि उन इलाकों की सरकारे उनके बच्चों की मातृभाषा में उन की हर तरह की शिक्षा का प्रबन्ध करें। इस तरह की माग के आर्थिक और अन्य प्रकार के नतीजों का अन्दाज़ा सहज लगाया जा सकता है। भारत के भली प्रकार से जाने हुए भाषावार इलाक़ों में से हर एक में दूसरी भाषाओं के बोलने वाले लोग छोटी वड़ी संख्या में मिलते ही हैं। अगर इस माग के मुआफ़िक़ उन इलाकों में के इन हर भिन्न भाषा भाषी लोगों के बच्चों की शिक्षा के लिये उस इलाक़े के हर स्कूल, हर कालेज और हर विश्वविद्यालय में अलग अलग प्रबन्ध करना पड़े तो ज़ाहिर है कि बेहिसाब खर्च होगा। साथ ही राजनीतिक दृष्टि से यह मुनासिब होगा कि किसी इलाके मे इस तरह के दूसरी ज़बान वाली जमात के बिखरे हुए इनेगिने लोग उस इलाके के लोगो से अलग बने रहने और ऐसे विभेदों को, जिन से उन के चारों ओर के लोगों की बहुत बड़ी सख्या को उन से द्वेष और गलतफहमी हो सकती है, बनाये रखने के बजाय उन लोगों में घुल मिल जाये। आर्थिक और राजनीतिक असलियत के इस पहलू को लोग ठडे दिल से समझ ले तो इस देश की भाषा की उलझन बडी हद तक दूर हो जायेगी।

हर इलाके की भाषा का ऐसा विकास होना है और उसके साहित्य के भंडार को इस तरह बढ़ाना आवश्यक है कि वह आधुनिक और प्राचीन यानी हर प्रकार के ज्ञान का अच्छा वाहन और भरा पूरा खज़ाना बन जाये और हर इलाके की सरकार या सरकारों का यह कर्तव्य है कि जहां तक कि सरकार के किये कराये कुछ हो सकता हो वहा तक वे इस तरह के विकास मे सहायता करे और प्रोत्साहन दे। यह किसी भी भाषा की मौजूदा शक्ल और शब्दावलि की बुनियाद पर ही आगे तामीर करने से और दूसरी देशी भाषाओं से सहज और स्वाभाविक रीति मे ही जो खूबिया अपनायी जा सकती हों उन से इस भाषा को सजाकर ही यह काम सब से अच्छी तरह से किया जा सकता है। इस तरह की भाषाशुद्ध की कोई कोशिश कि शब्दो, मुहावरों या किन्ही व्याकरण के नियमों का वहिष्कार केवल इसी कारण से कर दिया जाये कि वे बाहर से उधार आ गये थे और शुरू मे उस स्रोत मे नही निकले जिससे कि वह भाषा स्वयं निकली है महज़ नाकामयाब ही न होगी बल्कि भाषा को भी ग़रीब बना देगी। इसके अलावा हमे तो अब अपनी ताक़त को हर तरह से सहेज कर इसलिये रखना है कि हम उसे अपने देश से ग़रीबी और अशिक्षा के मिटाने के ज़रूरी कामों मे लगा सके और इसलिये हम उस को ऐसे किसी काम में, जो अगर गड़बड करने वाला नही तो बिल्कुल गैरज़रूरी तो है ही, खर्च नही कर सकते। ऐसी भाषा शुद्धि के पक्ष में मुझे तो कोई भी वजह दिखाई नही देती क्योंकि आखिर ज़बान तो महज़ ज़रिया है और अगर किसी लफ़्ज को जनता बखूबी समझती है तो कोई वजह नही कि उस को इसी आधार पर निकाल बाहर किया जाये कि वह विदेशी है। इसके अलावा

भाषा की बढ़ोतरी तो ऐसी दिशा में होनी चाहिये जिसमें कि वह अपने इलाके के अधिकांश लोगों को मान्य हो और उनकी समझ मे आती हो। उसकी कथावस्तु, उसकी शैली, उसका शब्दकोष, साधारण जनता के जीवन और बोली के ज्यादा से ज्यादा नज़दीक होने चाहियें। मेरा यकीन ह कि समाज की और सस्थाओं के समान ही भाषा को जनता की गोद का सहारा लेने से काफ़ी फ़ायदा होगा।

इलाको की भाषाओं के विकास और बढोतरी की बडी आवश्यकता के अतिरिक्त एक और सवाल है जिस पर विचार करना जरूरी है। हमारा देश बहुभाषा-भाषी देश है। हमें एक ऐसी आम भाषा की आवश्यकता है जिसके द्वारा हम मुख्तलिफ इलाकों में और राष्ट्रीय मामलों मे कारबार चला सके। पूरे सोच विचार के बाद सविधान सभा ने यह निश्चय किया कि वह भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी भाषा है और सघ के सरकारी प्रयोजनों के लिये उसके अकों का रूप अन्तर्राष्ट्रीय अकों का ही रूप होगा। यह सर्वसम्मत समझौता था और सब लोगों के हितों की समुचित सुविधा का ध्यान रख कर के किया गया था। मेरो समझ में किसी शख्स या जमात के लिये यह सोचने की कोई वजह नही है कि इस निर्णय से उस के या उस की जमात के हितों को किसी तरह का नुकसान होगा। इस सम्बन्ध मे मैं समझता हू कि मेरे लिये यही कहना काफी होगा कि हर भाषावार इलाके को शिक्षाव्यवस्था मे सघभाषा हिन्दी के पढाने का प्रबन्ध रहना चाहिये। इस बात को खास तौर से कहना इसलिये जरूरी है कि अहिन्दी भाषा-भाषी लोग इस बारे मे किसी तरह से दूसरे लोगो के मुकाबले मे अपने को किसी कद्र खराब स्थिति मे न पाये। अहिन्दी भाषा-भाषियो की शिक्षा व्यवस्था मे कैसे और किस दर्जे मे हिन्दी शिक्षा को दाखिल किया जाये इस बात को बिना देर किये तय कर लेना चाहिये और जो भी योजना तय पावे उस को अमल मे लाने के लिये क़दम उठाये जाने चाहियें जिस मे कि सविधान ने जो मियाद मुकर्रर को है उस के खत्म होते होते हम सघ के सरकारी प्रयोजनों के लिये अग्रेजी के बिना भी काम चला सके। इस राज्य मे तीन भाषाये है जो लगभग अलग अलग इलाकों के लोग बोलते है और यह राज्य इस बात की बड़ी कोशिश करता रहा है कि उर्दू का पूरा विकास किया जाये। मै उर्दू को उस भाषा की, जिसे सविधान ने संघभाषा मान लिया है, एक शैली या तर्ज और रूप ही समझता हू हालाकि इसकी अपनी लिपि और अपना अलग शब्द भडार है। इसलिये इस राज्य को इस बारे मे वैसे ही कुछ सवाल सुलझाने है जैसे कि बहुभाषी सारे देश को सुलझाने है। अपने भिन्न इलाकों की तीन भाषाओं से भिन्न एक भाषा को राज्य की जरूरतो के लिये काम मे लाने मे तरक्की करने का इस राज्य को सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हमे यहा इस तरह जो तजर्बे हुए उनकी हिफाजत करनी चाहिये और उनसे जो भी फायदे और सबक मिल सकते है लेने चाहिये। मै यह महसूस करता हू कि हमारे लिये ये बडे काम के साबित होंगे क्योकि हम इस बुनियाद पर आगे काम बढ़ा सकते है। इस विश्वविद्यालय का यह फ़र्ज़ और यह खुशकिस्मती है कि वह इस बुनियाद पर ऐसी इमारत बनाये जो इसकी इज्जत बढ़ाये और जिससे हमारे देश का पूरा पूरा फ़ायदा हो।

मैं आप लोगों का एक बार फिर इस सम्मानीय डिग्री अता फ़रमाने के लिये शुक्रिया अदा करता हूं, और मेरी यह चाहना है कि यह विश्वविद्यालय दिन रात तरक्की करे और कामयाबी हासिल करे।

हैदराबाद में राजभोज

***हैदराबाद में ३० अगस्त १९५१ को राष्ट्रपतिजी के सम्मान में दिये गये राजभोज के अवसर पर, श्रीमन्त निज़ाम के स्वागत भाषण के उत्तर में राष्ट्रपति जी ने कहा:—**

श्रीमन्त ने और इस राज्य की सरकार और जनता ने जो मेरा हार्दिक स्वागत किया है उसके लिये मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हू। हर्ष और प्रेम का यह स्वाभाविक प्रदर्शन यह प्रकट करता है कि इस राज्य की जनता और शेष भारत की जनता का हृदय एक ही है। मेरी दृष्टि में तो इस राज्य की जनता और भारत के अन्य प्रदेशों के नर नारियों में, चाहे फिर वे कितने ही निकट या दूर क्यों न हों, जो एकता है वह कल की ही बात नहीं है, वह तो उनमे सहस्रों वर्षों से है। पिछली शताब्दियों मे इस विशाल देश के विभिन्न क्षेत्रों से नैतिक और सांस्कृतिक धाराएं फूटी और उनका जीवनदायी जल समस्त भारत मे फैल गया। जिस प्रकार एक ही जीवनदायिनी जलधारा अनेक प्रकार की फसल और पौधों, फूलों और पुष्पों को रस और जल प्रदान करती है उसी प्रकार प्रथाओं और पहनावों, भाषा और संस्कृति के बहुरंगी दृश्यों को यह एक ही सामान्यधारा चेतना और दीर्घजीवन प्रदान करती है। इसने हमारे देश के विभिन्न प्रदेशों और जातियों को ऐसी एकता मे बाध दिया है जो यद्यपि हवा मे भी अधिक पतली है तथापि इस्पात से भी अधिक मजबूत है। निःसदेह मन और आत्मा की यह एकता कला और इमारतों, साहित्य और दर्शन, सामाजिक दष्टिकोण और नैतिक विश्वास, इन सब मे विभिन्न रूपों मे व्यक्त हुई है। जैसा कि श्रीमन्त ने अभी कहा है उस सामान्य आत्मा की कलात्मक अभिव्यजना के कुछ समूर्त रूप इस राज्य मे भी पाये जाते है। मै अपना यह सौभाग्य समझता हू कि उनको देखू क्यों कि वे तो ऐसी सुन्दर खिडकिया है जिनमे मे हमे उस महान् कीर्ति की झाकी मिलती है, जिसे सामूहिक उद्देश्य और सृजनात्मक प्रयासों की इस धारा से अनुप्राणित और आन्दोलित होकर हमारे देशवासी अर्जित कर सके है। एक प्रकार से उनके द्वारा इतिहास यह घोषणा करता है कि भारत की आत्मा यहा भी उसी प्रकार वास करती है और विराज रही है, जिस प्रकार कि वह हिमाच्छादित हिमाचल पर्वत पर अथवा सागर मज्जित कन्याकुमारी मे है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि इस सामूहिक और सृजनात्मक प्रयास से अनुप्राणित होकर श्रीमन्त और हैदराबाद की सरकार और जनता भी उस काम को पूरा करने मे निरन्तर लगे रहेगे जिसको कि इतिहास और स्वतन्त्रता ने हम सब के कन्धों पर रख दिया है।

मुझे यह जान कर वास्तविक सतोष हुआ है कि इस दिशा मे यह राज्य अग्रसर हो रहा है और यहा आवश्यक सुधार भी किये गये है और यहा शान्ति और व्यवस्था के बनाये रखने में भी पर्याप्त सफलता मिली है। इस कार्य के लिये मा० मुख्य मत्री श्री एच० के० वेलोडो और उनके माननीय सहकारी तथा श्रीमन्त निज़ाम साहब जिन्होंने उनसे सहयोग किया है, प्रशसा के पात्र है। किन्तु तो भी हम मे से कोई एक क्षण के लिये भी काम में ढील नही डाल सकता। आज यदि सरदार पटेल, जिनके महान् राजनय के प्रति श्रीमन्त ने अभी अभी अपनी उदार और स्नेह-पूर्ण श्रद्धांजलि दी है, हमारे साथ होते तो उस अपूर्व धीर वीर नाविक के दक्ष हाथों में राज्य की नौका की पतवार छोड़ कर हम कुछ अधिक निश्चिन्त रह सकते थे। भारतीय एकता के उस

---

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

महान् निर्माता के प्रति सर्वोत्तम श्रद्धांजलि हम उनके काम को पूरा करके ही दे सकते हैं। आप को तो ज्ञात ही है कि इस राज्य की जनता के कल्याण की उनको कैसी चिन्ता थी।

हमारे सामने भारत की सांघिक एकता को दृढ़ करने का ही काम नहीं है, वरन् इस देश के प्रत्येक राज्य में हमें लोकतन्त्र की भी स्थापना करनी है। जैसा कि श्रीमन्त ने अभी अभी कहा है आज से कुछ मास पर्यन्त साधारण निर्वाचन होंगे। प्रभुता सम्पन्न जनता ने जो संविधान अंगीकृत किया है उसको कार्यान्वित करने के लिये वह उनके द्वारा अपनी इच्छा को साक्षात् रूपेण प्रगट करेगी। मुझे देश की जनता में और उसकी सहिष्णुता और न्याय परायणता में पूरी पूरी श्रद्धा और विश्वास है। अतः मुझे यकीन है कि साधारण निर्वाचन हमारे देश में व्यवस्था और प्रगति के युग का आरम्भ कर देगा। जहा तक सघ सरकार का सम्बन्ध है वह सघ के अंगभूत राज्यों में से प्रत्येक के प्रति अपने सांविधानिक कर्तव्यो का पूरा पूरा पालन करती रहेगी और श्रीमन्त को मैं यह आश्वासन दिलाता हू कि भारत के संविधान के अधीन रह कर वह सब कुछ करेगी जिससे कि हैदराबाद की जनता और उसकी सरकार जीवन के सब क्षेत्रों में अग्रसर हो।

समाप्त करने से पहले मैं श्रीमन्त के उन उदार विचारों के लिये धन्यवाद देता हू जो उन्होंने मेरे प्रति प्रकट किये हैं। मेरा यह सौभाग्य रहा है कि मुझे अपने देशवासियों का प्रेम और आदर भरपूर मात्रा मे मिला है। उनके प्रेम और आदर का भास ही तो मुझे उन उत्तरदायित्वों को वहन करने की शक्ति प्रदान करता है जिन को कि उन्होंने मुझे सौप दिया है। मैं श्रीमन्त को यह विश्वास दिलाता हू कि यहा आने की मीठी स्मृति मुझे सर्वदा रहेगी।

देवियो और सज्जनो, इन शब्दों के साथ मैं आपसे कहूगा कि आप श्रीमन्त राजप्रमुख के स्वास्थ्य की अभिवृद्धि के लिये रसपान करे।

विद्यार्थियों को उद्बोध

ता० ३०-८-५१ को उस्मानिया युनिवर्सिटी के आर्ट्स कालेज के सामने दीक्षान्त समारोह के बाद इकट्ठे हुए विद्यार्थियों के बीच राष्ट्रपति जी ने कहा—

भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी ख़ुशी है कि आप लोगों से मिलने के लिये थोडा मौका मिला। आप जानते है कि इस यूनीवर्सिटी ने हिन्दुस्तान मे सब से पहले देशी जबान, देशी भाषा मे तालीम देने के लिये कदम उठाया है। इसके लिये इसने सिर्फ पढाई का ही इन्तज़ाम नही किया है बल्कि ज़रूरी किताबों का तर्जुमा करा कर उनके छपवाने का भी इन्तजाम किया है जो बड़े पैमाने पर हो रहा है। अब इस बात को सब मानते है कि हिन्दुस्तान मे तालीम अपनी मादरी ज़बान में होनी चाहिये और इसे भी सब लोग मानते है कि नीचे से ऊचे दर्जे तक तालीम अपनी भाषा मे ही होनी चाहिये और सभी सूबों मे अपनी अपनी यूनीवर्सिटियों में लोग अपनी भाषा में जो कुछ सीखना हो सीखे। आपको यह भी मालूम है कि हमारी सविधान सभा ने जो सविधान बनाया है उसमें तय कर दिया है कि १५ वर्षों के बाद हमारे सब काम देशी भाषा में होने चाहिये। अभी कई सूबों ने वहा की जो भाषा है उसमे काम शुरू किया है। लेकिन हमारी केन्द्रीय सरकार में जहा सब जगह के लोग काम करते है और सब हिन्दी मे काम नही कर सकते है वहां अंग्रेज़ी में ही काम होता है। लेकिन मैं उम्मीद करता हूं कि १५ वर्षो के अन्दर हिन्दी का इतना प्रचार हो

जायेगा और इतने लोग हिन्दी समझने और बोलने लग जायेंगे कि हमारे सब काम हिन्दी में होने लग जायेंगे। जो काम सारे हिन्दुस्तान को करना है उसमें आपकी यूनीवर्सिटी मदद कर रही है। यों तो जवानों से कहने के लिये बहुत सी बातें हैं लेकिन उसके लिये यह मौक़ा नहीं है। इस मौक़े का तो यूनीवर्सिटी से ताल्लुक़ है इसलिये मैं ने उसी के मुताल्लिक आपसे दो शब्द कहना उचित समझा। मै आशा करता हूं कि आपकी यूनीवर्सिटी ने जो काम शुरू किया है उसमें आप मदद करेंगे।

हैदराबाद में नागरिक अभिनन्दन

हैदराबाद और सिकन्दराबाद नगरपालिका की ओर से दिये गये मानपत्र के जवाब में राष्ट्रपति जी ने ता० ३०-८-५१ को कहा––

हैदराबाद और सिकन्दराबाद नगरपालिका के सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

जब से मै आपके शहर मे पहुचा हूं आपने जो मुहब्बत और प्रेम दिखलाया है और जिस तरह से आपने मेरा आदर और स्वागत किया है उसके लिये मै आप सब को दिल से धन्यवाद देना चाहता हू और इस वक़्त यहां के कारपोरेशन ने जिन लफ़्ज़ों में मेरा स्वागत किया है उनके बारे में इसके सिवाय मै क्या कह सकता हूं कि यह सब उनके प्रेम और मेहरबानी का सबूत है।

यह जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई है कि हाल ही में आपके यहा यह कारपोरेशन कायम हुआ है और थोड़े ही दिनों मे उसके यहां पर जितने सदस्य है उनको सब लोगों ने बालिग़ मताधिकार से चुनकर अपने इस कारपोरेशन का कारबार सुपुर्द किया है। हिन्दुस्तान इस वक़्त प्रजातन्त्र का एक बडा प्रयोग कर रहा है और करने जा रहा है। अभी डेढ साल हुये आपने एक नया सविधान इस देश के लिये तैयार किया और उस सविधान के मुताबिक आप सारे देश का काम चलाने लग गये हैं। उस संविधान में जो सबसे बड़ी चीज़ मेरी समझ में कही गयी है वह यह है कि इस देश के सभी लोगों को चाहे वे देश के किसी भी हिस्से के रहने वाले हों, स्त्री हों या पुरुष हों, सब को बराबर अधिकार और अख्तियार है और उसी फ़ैसले के मुताबिक़ यह तय हुआ है कि नया चुनाव सारे मुल्क म हो जो थोड़े ही दिनों के बाद होगा। आज से चन्द महीनों के अन्दर केवल हैदराबाद में ही नहीं, इस राज्य के अन्दर ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तान भर के गांव गाव में और शहर शहर में लोगों से यह उम्मीद की जायेगी और लोगों को बुलावा दिया जायेगा कि सभी स्त्री पुरुष, जिनकी उम्र २१ वर्ष की हो, आकर अपने नुमाइन्दे चुने। यह इतना बड़ा तजुरबा है, इतना बड़ा प्रयोग है, जितना वड़ा ससार भर के आजतक के इतिहास में कभी नहीं हुआ। आपको शायद मालूम होगा कि इस चुनाव में १७ से १८ करोड़ तक आदमी भाग लेंगे और चार हज़ार से भी ज्यादा जगहों के लिये उम्मीदवार खड़े होंगे और जिनको सब लोगों को मिला कर अपनी राय देकर चुनना होगा। उन्ही लोगों के हाथों में हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान के जितने अलग अलग राज्य हैं उनका कारबार चलाने का भार पूरी तरह से सौंपा गया है और हम यह उम्मीद करते है कि इस अधिकार को लोग ऐसी खूबी के साथ बरतेंगे जिस में अच्छे से अच्छे सच्चे और ईमानदार लोग जो लोगों के सेवक हों चुन कर आवें और जो सचाई के साथ देश की सेवा के लिये, मुल्क की बेहतरी के लिये काम करें। आपने उसका थोड़ा तजुरबा

तो हाल ही में किया है जब आपने इस कारपोरेशन के सदस्यों को वोट देकर चुना । इसी चीज को बहुत बड़े पैमाने पर सारे मुल्क का काम चलाने के लिये एक बार बरतना होगा और सारे मुल्क के लोगों को बरतना होगा । मैं उम्मीद करता हूं कि मुल्क में आज भी लोगों के दिलों में ऐसी जागृति है और लोगों में देश की खिदमत के लिये ऐसी लगन है कि वे अच्छे से अच्छे आदमियों को चुनेंगे जो उनकी सच्ची सेवा कर सकेंगे ।

यह हिन्दुस्तान एक बहुत बडा मुल्क है । इसमे बहुत धर्म के मानने वाले बहुत जबान के बोलने वाले और बहुत रस्म व रिवाज के बरतने वाले लोग बसते है और ऐसे लोगों के लिये जैसा महात्मा गाधी कहा करते थे एक ही रास्ता हो सकता है और वह रास्ता यह है कि सब लोग आपस में एक दूसरे के साथ मिल कर रहे, एक दूसरे पर विश्वास और ऐतबार रखे, एक दूसरे की मदद के लिये हमेशा तैयार रहे और यह तभी हो सकता है जब हम सच्चे दिल से अहिंसा को माने । कही भी किसी शक्ल मे भी एक दूसरे पर जबरदस्ती करने का खयाल नही रक्खे । यह चीज हिन्दुस्तान मे आज से नही है बहुत जमाने से हमारे लोगों ने इस चीज को कायम रक्खा है । दुनिया के इतिहास मे कोई भी मिसाल नही मिलती जहा धर्म के मामले मे जैसा इस देश का बर्ताव रहा है वैसा रहा हो; उसी सहिष्णुता और रवादारी के साथ लोग एक दूसरे के साथ बर्ताव करते रहे हों । इस चीज को आज और भी हमारे सविधान ने बता दिया है और उसी के मुताबिक हमको काम करना है ।

हैदराबाद एक ऐसी जगह है जहा दिल्ली मे जो हमारे पुराने रीतिरिवाज है वैसे ही मिश्रित रीतिरिवाज है जिनको यहा के नवाबों ने ही नही हमारे बुजर्गो ने, फकीर और औलियाओ ने कवियों ने और लिखने पढ़ने वालों ने सबों ने मिल कर बनाया है । अगर इस चीज को हम कायम रक्खे तो देश का भला होगा और हम तरक्की कर सकेंगे । जैसा कि मै ने कहा, हैदराबाद उसी तमद्दुन की निशानी है जिसे आज कायम रखना जरूरी है । हम उम्मीद करते है कि कारपोरेशन के लोग ही नही, तमाम लोग इस बात मे लगे रहेगे जिसमें यह चीज कायम रहे । मै जानता हूं कि आप लोगों को याद दिलाने की जरूरत नही है । हमारी बदकिस्मती से इसमे थोडा खलल पड गया । कोई जख्म हो जाता है, चाहे वह जख्म किसी के शरीर पर हो या दिल में हो तो उसके अच्छा होने में थोडा समय लगता है । मै जानता हू कि जो थोडा बहुत जख्म लग गया है उसके आराम होने मे थोडा समय लगेगा । मुझे पूरी उम्मीद है कि जिस तरह से यहां का काम चल रहा है और चलेगा उसकी वजह से लोग इस चीज को एक सपने की तरह से भूल जायेंगे और जिस तरह आपस में मिलजुलकर रहा करते थे और देश की तरक्की का खयाल किया करते थे उस तरह से रहने और देश का भला करने का इरादा रखेंगे । मुझे इस बात की खुशी है कि आपका शहर इस बात को दिखलाता है; इसकी चौडी और साफ़ सडके, इसकी इमारतें, इन सब चीज़ों से मालूम होता है कि किस तरह यहां के लोग बराबर मिलते जुलते रहते हैं । यों तो यह सारे हिन्दुस्तान की कैफियत है लेकिन आज हमारी बदकिस्मती से जो फ़र्क हो जाता है उसको दूर करना हमारा और आपका फ़र्ज़ है । हमारी गवर्नमेंट ने और हमारे सविधान ने इस बात का इरादा कर लिया है कि चाहे जो भी मुसीबत हम पर आये उसका मुकाबला हम सब मिल जुल कर करेंगे और हमारे मुल्क के सभी बहन और भाई यह इरादा ज़ाहिर कर

रहे हैं कि अगर हमारे ऊपर कोई मुसीबत आयी, चाहे वह बाहर से आये चाहे किसी और किस्म की हो, उसका मुकाबला सिर्फ सरकार ही नही करेगी बल्कि देश के सभी बाशिन्दे, चाहे उनका कोई भी मजहब हो, चाहे वे देश के किसी भी हिस्से के रहने वाले हों, सब मिलजुलकर करेंगे और मै उम्मीद करता हू कि आप इस हैदराबाद के रहने वाले इस जिम्मेवारी को महसूस करते होंगे और मुझे इस बात का पूरा भरोसा है कि अगर कभी ऐसा वक्त इम्तिहान का आया तो आप सब उसी तरह से अव्वल दर्जे मे पास होंगे जिस तरह से और सूबों के लोग पास होंगे ।

मुल्क के सामने यों सवाल बहुत है और बहुत तरह की मुसीबते रही है और जब से हम आजाद हुए मुसीबतों का ठिकाना ही नही रहा । एक पर एक मुसीबत आती रही है । ईश्वर की दया से उनमे से बहुतों का हल किया गया है और मै उम्मीद करता हू कि आगे जो मुसीबतें आने वाली है उनको भी हम हल कर सकेंगे ।

सब से बडा सवाल देश मे जो गरीबी फैल रही है उसको हटाने का है; देश मे जो तालीम की कमी है उसको दूर करने का है, जो हमारे कारबार चलते थे और जिनमे से बहुत बन्द हो गये है उन्हे आज की दुनिया को देखते हुए नयी शकल मे चलाने का है । एक जमाना था जब कि दुनिया के और मुल्कों के लोग हिन्दुस्तान के लोगो की कला की, यहा के कारबार को देखकर इज्जत किया करते थे । यही इसका धन था जिसकी वजह से यहा दूर दूर के देशो के लोग आया करते और उस मे हिस्सा बटाया करते थे । लेकिन बदकिस्मती से हम गरीबी में पड गये । सबसे बडी मुश्किल तो यह है कि इस मुल्क मे जहा खेती का ही लोग ज्यादा काम करते हैं वहा अन्न के लिये लोगों को दूसरों का मुह देखना पडता है । हमे इस बात की कोशिश करनी है कि यह कमी दूर हो । आप इस बात का इत्मीनान रखे कि सरकार से जहा तक हो सकता है वह कोशिश कर रही है और सब जगहों मे पानी का इन्तजाम तेजी से कर रही है जिससे खेती के लिये पानी मिले तथा दूसरे तरीकों से भी खेती बढाने का काम किया जा रहा है । ये सब काम जब पूरे हो जायेंगे तो जो कमी हम महसूस कर रहे है वह नही रहेगी । आज वर्षा की वजह से आप लोगों को कष्ट तो हुआ पर मुझे खुशी है कि आपके इस इलाके मे अच्छी वर्षा हुई है । गरचे यह हालत सारे हिन्दुस्तान की नही है लेकिन जहा वर्षा हुई है और अच्छी फसल होगी तो उसका फायदा सारे मुल्क को मिलेगा । इसके अलावा तिजारत का जो काम है उसमे बहुत तरक्की करने की जरूरत है क्यों कि जब तक इसमे तरक्की नही होगी तब तक हम अपने को आराम नही पहुचा सकेगे । इसके लिये गवर्नमेंट जो कुछ कर सकती है कर रही है लेकिन मैं उम्मीद करता हू कि और लोग भी जो इस काम को कर सकते है, जिनके पास पैसे है और जिनके पास इस काम के लिये अनुभव और तजुरबा है वे भी इस काम मे मदद करेंगे और हम जल्द से जल्द जितनी जरूरत की चीजे है उनको पैदा कर सकेंगे । यह काम हमारे सामने है । आज लोगों मे बहुत बीमारियां है । उनको भी दूर करना जरूरी है । यह तभी होगा जब हम सब तरह से सुखी होंगे और आराम से रहने लगेंगे ।

मै कारपोरेशन को तथा आप सभी बहनों और भाइयों को दिल से धन्यवाद देता हू कि आपने मेरा इतना आदर और स्वागत किया ।

औरंगाबाद में विद्यालय का शिलान्यास

औरंगाबाद में एजूकेशन सोसायटीज़ के कालेज का शिलान्यास रखते समय तारीख १-९-१९५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा—

डाक्टर अम्बेदकर, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है और मैं आप का बहुत आभार मानता हूं कि आपने मुझे मौका दिया कि इस शिलान्यास के लिये मै यहा आऊ और इसका बुनियादी पत्थर रखू। जैसा आप ने कहा है, सब से ज्यादा ज़रूरी चीज हमारे मुल्क के लिये और खास करके उन लोगों के लिये जो पिछडे हुए हैं शिक्षा है और जैसे शिक्षा फैलेगी, जैसे उसका प्रचार होगा, मेरे दिल मे कोई शक नही कि हर तरह की उन्नति और तरक्की उसके साथ साथ होगी। इसलिये जब कभी ऐसा मोका आता है, मुझे किसी शिक्षा सम्बन्धी सस्था को स्थापित करने का काम दिया जाता है, तो मै उसे बडी खुशी से मंजूर करता हू क्योंकि मै समझता हू कि अगर और कुछ नही तो थोडा साथ दे देना भी मेरे लिये बडी खुशकिस्मती की बात है।

हमारे मुल्क मे जो शिक्षा का तरीका चल रहा है वह पिछले प्राय: १०० वर्ष या उससे भी कुछ ज़्यादा समय से चल रहा है। उसमे बहुत त्रुटिया है, बहुत तरह की कमी है और जिस काम के लिये और जिस ख़याल से यह सिलसिला जारी किया गया था वह भी अब बहुत कुछ बदल गया है। इसलिये यह जरूरी हो गया है कि हम अपनी शिक्षा पद्धति के पुराने सिलसिले में कुछ न कुछ तबदीली करे और मै देखता हू कि जितने लोग इस चीज मे कुछ भी रस लेते है वे इस बात को सोच रहे है, उनका ध्यान इस ओर गया है कि हमारी शिक्षा पद्धति मे क्या परिवर्तन करना आवश्यक है। मैं उम्मीद करता हू कि आहिस्ता आहिस्ता यह शिक्षा पद्धति ऐसी हो जायेगी जो हमारी जरूरतों के मुताबिक होगी और ऐसी होगी कि जो हमारे दिलो के अन्दर उमगे उठ रही है, जो हौसले उठ रहे है उन को हम पूरा कर सके। मगर जब तक वह समय नही आता तब तक हम बैठे नही रह सकते। इसलिये जितनी शिक्षा सस्थाए बढती जाये, नयी कायम होती जाये उतनी ही हमारे लिये वह मुबारकबाद की बात होगी और इसलिये मै आपकी इस सोसाइटी को धन्यवाद देना चाहता हू कि उसने इस काम को इतनी खूबी के साथ, इतनी सफलता के साथ थोडे ही दिनों के अन्दर शुरू करके यह दिखला दिया है कि ठीक तरह से काम किया जाये तो बड़ा कालेज भी आसानी से क़ायम किया जा सकता है। आपने सिद्धार्थ कालेज का जिक्र किया। आपने उसका नाम चुनकर रखा है। मालूम नहीं क्या नाम आप इस कालेज का रखेंगे। लेकिन वह नाम ऐसा है जिससे बहुत सी चीज़ आदमी के दिमाग़ में आती है, बहुत सी बातें एकबारगी याद आ जाती है।

अपनी शिक्षा पद्धति में मैं जो सब से बड़ी त्रुटि महसूस करता हूं वह यह है कि जितनी शिक्षा संस्थाए है उनमें विद्या देने का प्रबन्ध तो है लेकिन जैसा आपने कहा, विनय और शील ने उन सस्थाओं में स्थान नही पाया है। इसलिये यह और भी बड़ी खुशी की बात है कि आपने अपने कालेज का ध्येय रखा है कि यहां विद्या के साथ साथ विद्यार्थियों को विनय और शील भी

सिखाया जायेगा । आज देश को इन दोनों की जरूरत है । मैं आये दिन अखबारों में पढ़ा करता हू कि यहां विद्यार्थियों की हड़ताल हुई, वहा पर स्ट्राइक हुआ, यहा तक भी सुना कि एक प्रिन्सिपल भी मार डाले गये । जब मैं इन चीजों को देखता हूं तो मुझे खयाल होता है कि हमारी शिक्षा के तरीक़े में कोई ऐसी कमजोरी है जिससे ये चीजे सामने आती हैं । वह कमजोरी इसी विनय और शील का अभाव है । इसलिये मुझे यह देखकर बडी खुशी है कि आपने इस चीज़ को अपने सामने रखा है और जो विद्यार्थी यहा पढेंगे, जिनको यहा शिक्षा मिलेगी, वे विनीत भी होंगे और शीलवान भी होंगे । यह कितनी बडी चीज है ? मैं आशा करता हू कि यहा विद्यार्थियो के लिये आप जो भी प्रबन्ध करेंगे उससे वे पूरा लाभ उठायेंगे और जिस तरह से सिद्धार्थ कालेज ने खेलो में, यनीवर्सिटी के इनाम पाने मे और दूसरे तरीक़े से नाम पाया है उसी तरह से यहां की लड़किया और लडके विनय और शील में भी नाम पा सकेंगे और अपने को देश की सेवा के योग्य साबित कर सकेंगे ।

इस तरह की सस्था कायम करनी पडती है तो क़ायम करनेवालों के सामने दिक्कते आती है और इसमें शक नही कि आपकी सोसायटी के सामने भी दिक्कते हैं । पर जब काम करना होता है तो दिक्कतों का सामना करना ही पडता है और मुझे पूरा भरोसा है कि आप इन दिक्कतों को पार कर सकेंगे और आपका काम खूब तेज़ी से आगे बढेगा और यह भरोसा और भी अधिक इसलिये होता है कि जैसा आपने कहा है, यहां के मन्त्री लोग और दूसरे अधिकारी लोग आपकी मदद करते रहे हैं और आइन्दा के लिये भी यह उम्मीद की जाती है कि वे आपकी मदद जैसे जसे मौका आता जायेगा करते जायेंगे ।

आपने अपने भाषण में एक बात की अपील की है । आपके सामने जो आर्थिक कठिनाई है उसके लिये आपने सब से मदद मागी है । मेरा अपना विश्वास है कि कोई अच्छा काम जब चल निकलता है, वह रुपये की कमी से नही रुकता । अगर अच्छे और सच्चे काम करने वाले हुए तो कही न कही से द्रव्य आ ही जाता है और काम चल निकलता है । इसलिये आप की सोसायटी के लोगो ने जिस हिम्मत और पटुता से काम किया है उससे मुझे उम्मीद होती है कि आपको यह दिक्कत बहुत देर तक नही सहनी पड़ेगी । मुझे इस बात की खुशी है कि हिज एक्ज़ाल्टेड हाइनेस निज़ाम साहब ने आपके कालेज के लिये ५० हजार की रकम इस वक्त दी है और हैदराबाद गवर्नमेंट ने ३५ हजार रुपये सालाना इस कालेज के खर्च के लिये मजूर किये हैं । मैं उम्मीद करता हू कि इस से आपका काम आगे बढेगा और जैसा मैंने कहा, अगर आपका काम ठीक चलता जायेगा तो आपकी दिक्कत खुद ब खुद दूर हो जायेगी और पैसे के लिये आपका काम नही रुकेगा ।

बहुत ही उत्साह के साथ आपने यह काम शुरू किया है और मै चाहता हू कि वह उत्साह कायम रहे । उत्साह कमिटी के मेम्बरो मे तो है ही और जैसा कि आपने कहा जो शिक्षक लोग घर छोडकर यहा आये हुए है उनका उत्साह भी सराहनीय है और बच्चों में तो उत्साह है ही । जब सब में उत्साह ही उत्साह है तो मानना चाहिये कि आपको सफलता मिल गयी है । मकान के लिये नक्शा तैयार हो गया है और काम चलाने के लिये कुछ हद तक रुपये भी आ गये हैं तो कोई वजह नही कि काम में ढिलाई हो और मैं आपको कह सकता हूं कि थोड़े ही दिनों

अन्दर यह कालेज भी सिद्धार्थ कालेज की तरह नाम हासिल करेगा, उसी तरह लोगों की सेवा करेगा। पिछड़े हुए लोगों की सेवा जरूरी है। और सब बातों को सुनकर मुझे खुशी हुयी लेकिन एक बात को सुनकर चिन्ता रही। आपने ठीक कहा है कि जो पिछड़े हुए लोग है और विशेष कर आपकी जाति के जो लोग है उनमें शिक्षा का अभाव बहुत है और उनमे शिक्षा का प्रचार आवश्यक है। मुझे यह जानकर खुशी नही हुयी कि ३२४ लडकों में सिर्फ २६ ही लडके उस वर्ग के है। मै चाहता हू कि ३२४ मे ३२८ लडके उसी वर्ग के होने और उनके ऊपर दूसरे वर्ग के लडके आवे और कालेज की सख्या बढे। इस तरह से काम होगा तो मुझे उम्मीद है कि दिन ब दिन उनकी तादाद बढेगी। उनके लिये सुविधा भी होनी चाहिये जो दूसरों से अलग हो। यह ठीक है कि कालेज का दरवाजा सब के लिये खुला है, सब के पढने के लिये इजाजत है और सुविधा भी है लेकिन मै कहूगा कि पिछडे हुए लोगों के लिये कुछ खास सुविधा होनी चाहिये जिससे वे औरो के मुकाबले मे जल्द से जल्द आजाये। मै उम्मीद करता हू कि आपका कालेज इस तरफ भी ध्यान देगा और हर तरह से आप इस प्रयत्न मे सफल होगे। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि वह दया करके आपके इस प्रयत्न को सफल बनाये।

औरगाबाद में सार्वजनिक सभा

औरंगाबाद मे तारीख १ सितम्बर १९५१ को एक सार्वजनिक सभा में ७ बजे शाम को राष्ट्रपति जी ने कहा—

बहनो और भाइयो

आपके शहर मे आज आ सका इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता है। जैसा आपने अभी बताया यहां का इतिहास प्राचीन और गौरवमय इतिहास है और यहां पर केवल बडे बड़े बादशाह ही नही आये है बल्कि कितने साधुओं ने, फकीरों और औलियो ने भी इस जगह को पवित्र किया है और इस वजह से आज से नही हजारों वर्षो से एक प्रकार से यह तीर्थ स्थान बन गया है। न मालूम इस स्थान में क्या खूबी है। आज जब मै रास्ते से जा रहा था तो सोचता था कि क्या वजह है कि चारो तरफ से घिरी हुई पहाडो के बीच मे इस जगह को राजाओ और बादशाहओ ने किला बनाने के लिये पसन्द किया? क्या वजह है कि साथ ही साथ बौद्धों ने, हिन्दुओ ने और जैनों ने यहां अपने मन्दिर बनवाये जिनके भग्नावशेष आज भी चारों तरफ देखने में आ रहे है? क्या वजह है कि मुसलमान दरवेश भी यहां आ बैठे और यहां ही पर अपनी मिट्टी छोड गये? लेकिन इस स्थान की मिट्टी में कुछ यहां की जलवायु में ऐसा कुछ है जो सब प्रकार के लोगों को यहां खीचता रहता है और इस वजह से इसका महत्व बराबर रहा है और जैसा आपने कहा कवियों ने भाषा के निर्माण करने वालों ने यहां पर आकर काम किया है और उनकी चीजें यहां मौजूद है। यहां से थोडी ही दूर पर इसी इलाके के अन्दर गुरुद्वारे भी एक तीर्थ स्थान की तरह मौजूद है। यह तो इसका इतिहास है और आज की नई जिन्दगी में भी इसका ऐसा ही ऊंचा इतिहास होना चाहिये यही हम सब की अभिलाषा है।

आप जानते है कि भारत में थोड़े ही दिन हुए हमने स्वतन्त्रता पायी। उस स्वतन्त्रता की किरणें देश के कोने कोने में पहुंच रही हैं। आपका यह कोना भी उस किरण से किसी तरह बच नहीं सकता है और यहां भी उसकी ज्योति पहुंची है। उस रोशनी के साथ साथ जो इस देश के रहने वाले लोग है उन पर बड़ी भारी जवाबदेही भी आ गयी है। इस नवजात स्वतंत्रता को किस तरह से हम सुरिक्षत रख सकेगे, किस तरह से हम इस आज़ादी को कायम रख सकेगे यही दिन रात अपनी आंखों के सामने हमें रखना है और यह हमेशा याद रखने की चीज़ है कि स्वतन्त्रता को क़ायम रखने के लिये सब से ज़रूरी चीज़ यही है कि देश के लिये हरेक देशवासी के हृदय मे, वह चाहे स्त्री हो या पुरुष, प्रेम होना चाहिये। हमारे देश का यह दुर्भाग्य रहा है, यह बदकिस्मती रही है कि हम छोटे छोटे टुकड़ों मे अक्सर बंट जाते है और छोटे छोटे स्वार्थों में लगकर जो सारे देश के महत्व का काम होता है उसको विसार देते है। हमारा यह आज का नही पिछले कई सौ वर्षो का दुखद इतिहास रहा है कि हम बराबर एक साथ होकर इस सारे देश की रक्षा नही कर सके और यहां का धन दौलत देखकर जब बाहर के लोगों के मुह मे पानी भर आया तो वे आये और हमने उनको मौक़ा दिया। आज ईश्वर की दया से यह सारा देश बंटवारे के बाद भी एक छत्र के अन्दर आ गया है। यह अब भी बहुत बडा देश है। भारत के इतिहास मे बड़े बडे चक्रवर्ती राजा, बडे बडे शहनशाहों का हम जिक्र पढते है। अगर आप इतिहास के पन्नों को खोलकर देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि उसके पहले कोई ऐसा दिन नही था जब कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक और अरब सागर से लेकर बगाल की खाडी तक एक छत्र राज्य रहा हो। अंग्रेजी सल्तनत के जमाने मे भी, गरचे अंग्रेजी राज्य जबर्दस्त और प्रभावशाली राज्य था, बहुत सी मातहत रियासतें थी जो एक प्रकार से स्वतन्त्र थी। आज पहले पहल सारा हिन्दुस्तान एक संविधान के सूत्र में बंधकर एक छत्र राज्य के अन्दर आया है। इतने बड़े देश का एक स्थान से इन्तजाम होना कभी सम्भव नही। इसलिये इसके कई टुकड़े किये गये है और मुमकिन है और भी टुकड़े किये जायें। लेकिन ये टुकड़े एक छत्र प्रजातन्त्रात्मक राज्य के ही भाग होंगे उससे स्वतन्त्र एक अलग भाग नही होंगे। इसलिये, यह हमारा सौभाग्य है कि हम अपने दिनो में एक इतना बड़ा राज्य देख सके। आज हमारी जवाबदेही है कि हम इसको ठीक तरह से चलावें और इस योग्य बनावें कि संसार के देशों मे जो हमारा ऊंचा स्थान होना चाहिये वह हो जाये। हम किसी के साथ वैर विरोध नही रखते, किसी की चीज़ पर किसी के धन पर हम लालच भरी आंखें नही रखते। हम अपनी उन्नति करना चाहते है, अपने साहस से अपने बाहुबल से अपने पुरुषार्थ से जो कुछ भी हासिल कर सकते है अपने देश के अन्दर करना चाहते है। ईश्वर की दया से जो ज़मीन हमको मिली है जो धरती हमको मिली है वह भी हर तरह से धन धान्य से भरी हुई है। कोई अन्न नही, कोई फल नही जिसे हम इस देश के अन्दर उपजा नहीं सकते हों। कोई ऐसी धातु नही, कोई ऐसा खनिज पदार्थ नहीं जिसे आप इसके भगर्भ में नहीं पायें और आज कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो दुनिया मे मिलती हो लेकिन यहां नहीं मिलती हो। इसलिये ईश्वर ने हर तरह से इसको भरा पूरा बनाया है। अगर आज हम कमी का अनुभव करते है तो इसकी जवाबदेही यहां की ज़मीन पर नही, यहांके आदमियो पर है। इसलिये हम चाहते हैं कि हमारे देश के सभी लोग अपनी इस बड़ी जवाबदेही को समझें और इस देश को फिर उन्नत करें।

इसके लिये जो हमने संविधान बनाया है उसमें सब लोगों को पूरा अधिकार है और पूरा मौक़ा है। किसी क़िस्म का भेद भाव हमने उसमें नहीं रखा है। किसी भी धर्म का माननेवाला हो, किसी भी जाति का हो, कोई भी भाषा बोलने वाला हो, स्त्री हो या पुरुष हो, सबको समान अधिकार है और समान मौक़ा भी है। इसलिये जो हमने संविधान में अपने सामने उद्देश्य रखा है वह एक ऐसा ऊंचा उद्देश्य है कि अगर हम उसको पूरा कर सकेंगे तो संसार के सामने एक आदर्श पेश कर सकेंगे। और अभी तीन ही चार वर्ष तो हुए हैं। हमारी दिक्क़तें बहुत रही हैं। मुसीबतों का पहाड़ हमारे सर पर एक के बाद दूसरा टूटता रहा है। लेकिन इन मुसीबतों के रहते हुए भी हम अपने को खड़े पा रहे हैं इसके लिये ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये। हम उम्मीद करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हमको बल दे कि हम और भी आगे बढ़ सकें। आप जानते है कि हमारे संविधान में स्त्री और पुरुष ग़रीब और अमीर का कोई फर्क नही किया गया है। जितने लोग २१ वर्ष के है उनको मत देने का अधिकार है और आज से थोड़े ही दिनों के बाद वे अपनी अपनी राय देकर अपने प्रतिनिधि और नुमाइन्दे चुनेंगे जो इस देश का कारबार चलायेंगे। इस संविधान मे हरेक आदमी को उन्नति करने का पूरा मौक़ा है और अब यह कोई नही कह सकता कि वह किसी प्रकार से दबाया जा रहा है। किसी की भी उन्नति में अब कोई क़ानूनी बाधा या कोई वैधानिक बाधा नहीं रही है और इसलिये सब को इस मौक़े से नफ़ा उठाकर अपने को उन्नत करना है और अपनी उन्नति करने का अर्थ है सारे देश की उन्नति करना। इसलिये हम चाहते हैं कि आप इस महान् कार्य में लग जायें और इसके महत्व को आप समझे।

यह एक इलाक़ा है जो पहले एक रियासत के मातहत था। आज वे रियासतें रियासतों की शकल में नहीं रह गयी हैं। वे सब की सब भारत में इस तरह से घुल मिल गयी हैं जिस तरह से भारत के दूसरे हिस्से घुल मिल कर एक राज्य थे। मुझ से कोई कोई कभी कभी कहा करते है कि रियासतों के हट जाने से रियासतों के जो राजा व नवाब मालिक थे उनका अधिकार उनसे निकल गया, अब जनता के हाथों में अधिकार आ गया। जनता के हाथों में अधिकार आना कोई बुरी बात नही है। और कोई कोई यह कहते है कि कहीं कही रियासतों की हालत अच्छी थी पर अब वह बात नही है। कुछ का कहना है कि हिन्दुस्तान में मिल जाने से हिन्दुस्तान के एक छोटे टुकडे के रूप में ही ये रियासतें रह गयी हैं। इसकी भी शिकायत शायद कुछ लोगों के दिल में है। मै मानता हूं कि ये दोनों शिकायतें बेबुनियाद है, उनके लिये कोई आधार नही है। मै तो इसको दूसरे तरीक़े से देखता हूं। किसी भी रियासत का राजा या नवाब अपनी रियासत का ही राजा या नवाब था। उनका अधिकार उनकी अपनी रियासत के बाहर हिन्दुस्तान के किसी दूसरे हिस्से पर पहले नही था और वहां की प्रजा का भारत के दूसरे हिस्से पर न कोई अधिकार था और न कोई हक़ था और न कोई दावा था। आज तो उन रियासतों के जो राजा नवाब थे उनका हक़ दूसरे भारतवासियों के साथ साथ सारे हिन्दुस्तान पर हो गया है। ठीक है कि जिस तरह वे अकेले मनमानी करते थे जो चाहते थे कर सकते थे वह बात आज नही है। लेकिन आज सारे भारत को वे अपना कह सकते हैं। यह ठीक है कि जितना हक़ आज हिन्दुस्तान के किसी भी आदमी का सारे हिन्दुस्तान पर है उतना ही हक़ इन राजाओं का अपनी सरहद के बाहर के हिन्दुस्तान के हरेक कोने पर पहुंच गया है और अगर इस दृष्टि से सोचें तो आज उनका राज्य छोटा न होकर बढ़ गया है और हरेक हिन्दुस्तानी

सोचे तो उसका राज्य किसी एक हिस्से पर नहीं सारे हिन्दुस्तान पर है और मैं आपसे कहता हूं कि आप में से हरेक इस बात को समझ ले कि सारा हिन्दुस्तान उसका है। हिन्दुस्तान के अन्दर अब न कोई राजा है और न कोई प्रजा। सब के सब राजा है या सब के सब प्रजा हैं। सब बराबर है। और अगर मेरे जैसा तुच्छ आदमी इस ऊंचे स्थान पर पहुंच सकता है तो मै कह सकता हूं कि आप में से हरेक आदमी को मौक़ा है और हरेक को शक्ति है कि अगर आप चाहें तो इतने बड़े भारत के एक छत्र राज्य के राष्ट्रपति बनें। यह कोई छोटी बात नहीं है। हिन्दुस्तान के हरेक बच्चे के लिये दरवाज़ा खुला हुआ है ; स्थान उसके सामने है। जो सेवा करके खिदमत करके चाहेंगे वे वहां पहुंच सकते है और मै चाहूंगा कि हमारे देश के हरेक नवयुवक के हृदय में यह लालसा, वह अभिलाषा हो और यह अवसर हो कि वह एक न एक दिन उस स्थान पर पहुंचे; और नाजायज़ तरीके से नही, झगड़ा करके नही गलत काम करके नहीं बल्कि देश की सेवा करके उस स्थान पर पहुंचने की अभिलाषा होनी चाहिये। और अगर इस लालसा को लेकर आप आगे बढ़ेंगे तो इसमें कोई शक नही कि हिन्दुस्तान उन्नत होगा और साथ साथ आप भी उन्नत होंगे। तो यह बड़ी जवाबदेही हमारे सर पर है, बड़ा मैदान हमारे सामने आया है। आप इसके लिये तैयार है क्या ? आपको अपने को तैयार करना है, हरेक को तैयार करना है।

आज हम बहुत तरह की शिकायतें सुनते है। लोग कहते है कि स्वराज हुए चार साल बीत चुके और अभी तक हमारी तकलीफ़े ज्यों की त्यों बनी हैं; चोर बाज़ारी है, महंगाई है, ग़ल्ले की कमी है, खाने को अन्न नही मिलता और कपड़े की कमी है।

यह सब चीज़ें हैं। मै मानता हू कि ये सब चीज़ें है। मगर हम में से हरेक इन पर विचार करके देखे कि इस चीज़ के दुरुस्त नही होने का कारण क्या है और उससे भी ज्यादा हमे यह सोचना है कि इस कारण में हमारा अपना हिस्सा कितना है। हमने इस चीज को दूर करने के लिये क्या किया है। यह बहुत आसान है कि हम कह दें कि तुमने यह नही किया तुमको यह करना चाहिये था; फलाने ने यह नही किया उसको यह करना चाहिये था। लेकिन दूसरे को क्या करना चाहिये था, उसको करने की कितनी शक्ति थी, कितना मौका था, कितनी सुविधा थी यह सब हम को मालूम नही है। मगर हमारी अपनी क्या शक्ति है, हम कहा तक कर सकते थे और हमारे लिये कितना मौक़ा था यह हम अच्छी तरह से समझ सकते है और जान सकते है। दूसरों के बारे मे हम शायद ठीक नही समझ सकते है कि उसने जानबूझ कर नही किया या गल्ती से नही किया या बेईमानी से नही किया या स्वार्थवश नही किया। लेकिन अपने बारे मे हरेक आदमी जान सकता है। उसको उसके लिये किसी दूसरी जगह से खोजना नही है ; उसका दिल ही बता सकता है कि क्या करने का मौका था जिससे लाभ उठाने के लिये उसने काम में अपना दिल नही लगाया अपने हृदय से ही पूछकर उसका उत्तर वह पा सकता है। तो दूसरो की कमी ढूढने मे हम अपना समय क्यों बर्बाद करे ? ऐसा करने पर ही हम कह सकते है कि जिस नतीजे पर हम पहुच सकेंगे वह ठीक होगा। हम बग़ैर किसी मेहनत के, बगैर किसी तरह की जाच पड़ताल के, अपने दिल से पूछ सकते हैं और सही नतीजे पर पहुच सकते हैं। उसमे गल्ती नही हो सकती है। मैं तो यह चाहता हूं कि अपना काम हरेक आदमी करे और यह सोचे कि देश के प्रति उसका

क्या कर्तव्य है और किस बात में उसकी ओर से त्रुटि हो रही है और किस काम मे उसकी ओर से कमी हो रही है और उसको वह खुद पूरा करे। दूसरे ने क्या गलती की इसके बारे मे न सोच कर वह अपनी गलती सोचे। अगर हममे से थोडे लोग भी इस सिद्धान्त पर चलने लगे और अपनी गलती को सोचे और अपनी त्रुटियो को हटाने की कोशिश करे तो मुझे यह उम्मीद है कि वह दूर हो सकती है। चोर बाजारी की शिकायत हम सुनते है। मै कहता हूं कि चोरबाजारी है भी। औरों के बारे मे कहना तो मुश्किल है पर मै अपने बारे मे कह सकता हू कि मै भी उससे बचा नही हू। आप जानते है कि किसान अपने खेतों मे गल्ला पैदा करते है। उनकी जरूरत से अधिक जो गल्ला उनके पास है उसे वे दूसरों के लिये नही निकालते तो क्या वे चोरबाजारी मे मदद नही करते ? व्यापारी गैरमुनासिब नफा उठाने के लिये गल्ला बेचता है तो क्या वह चोरबाजारी नही करता ? और हम मे से अधिकाश लोग जो किसान नही है और दूकानदारो से खरीद कर खाते है मै उनसे पूछता हू कि वे किस तरह से कह सकते है कि वे चोरबाजारी से बचे हुए है जब कि वे ६ छटांक के बदले ८ छटाक या १२ छटाक खरीदते है। ६ छटाक जो गवर्नमेंट से मुकर्रर किया हुआ है उससे पूरा नही होता तो अपनी जरूरत पूरा करने के लिये बाकी चोरबाजार से खरीदते है। तो चोरबाजारी से वे कैसे बचे ? अगर इन दोनो मे से कोई भी अपना धन्धा छोड दे तो चोरबाजारी नही चल सकती। अगर किसान लोग ठीक दाम पर गल्ला बेच दिया करे तो भी चोरबाजारी बन्द हो जायेगी। अगर बीच मे बेचनेवाला बनिया नाजायज नफा उठाने का लालच छोड दे तो भी चोरबाजारी बन्द हो जाती है। जो लोग खरीद कर खाते है अगर वे इरादा कर ले कि जितना उनको मिलता है उतना ही खरीदेगे तो चोर बाजारी मे खरीदनेवाला ही कोई नही रहेगा। तो इस प्रकार से आप सोचे और दूसरे पर इल्जाम नही लगाये। आपका क्या हिस्सा है उसको करने पर आप तैयार हो जाये तो हमारी बहुत शिकायते आसानी से दूर हो सकती हैं। यह तो मैं ने कुछ उदाहरण के तौर पर कहा है। इस तरह की चीज आप सभी बातों मे देख सकते है।

हमारे यहा आपस में झगडे हो जाया करते हैं। हिन्दू मुसलमान का झगडा हो जाया करता है। और भी झगडे हो जाया करते है। हम अपना दोष नहीं देखकर कोशिश करते है कि दूसरों पर इल्जाम लगाये। अगर हम सोचे कि इसमे हमारा अपना कितना क़सूर है क्योंकि ताली दो हाथों से बजती है तो कभी यह गडबडी नही होगी। अब तो हमारे देश के लिये दूसरे बडे बडे मसले सामने आ गये है। इसलिये जिन छोटी छोटी बातों पर हम लडा करते थे उनको तो बिलकुल अब छोड ही देना चाहिये। अब हमारे सामने मैदान खाली पडा है, उसका उपयोग करने का अब मौका है। इसे आप समझ ले कि हम सब मिलकर काम करेगे तो हम तेजी से आगे बढ जायेंगे।

अभी जो चुनाव होने वाला है उसमे हम सब का इम्तिहान होनेवाला है। जो उम्मीदवार खडे होंगे उनका इम्तिहान चुनाव के बाद होगा। लेकिन जो मत देनेवाले है उनका इम्तिहान उसके देने के वक्त ही होगा ! इस लिये आप ठीक आदमी को वोट दें। मै आप से कहना चाहता हूं कि भारत का भविष्य कैसा होगा यह आपके वोट देने पर ही निर्भर करता है। अगर आप

ठीक आदमी को चुनेंगे तो आप विश्वास रखे कि आपका काम ठीक चलेगा। अगर आपने किसी दूसरे खयाल से स्वार्थवश या किसी छोटे तबके के स्वार्थवश ठीक से वोट नही दिया तो आप समझ ले कि उसका असर आप पर ही नही सारे देश पर पडने वाला है। आप यह नही समझें कि आपका तो एक वोट है उससे क्या होनेवाला है। आप यह समझे कि हरेक आदमी के वोट की बडी कीमत है। यही आप की परीक्षा है। इसमे हरेक आदमी को उत्तीर्ण होना चाहिये और प्रयत्न करना चाहिये कि वह अच्छे से अच्छे आदमी को चुनकर भेजे जो देश का काम चला सके। हमारे सामने जैसा मैंने कहा बडे बडे प्रश्न है। गरीबी को हम कैसे दूर करे, शिक्षा के अभाव को हम कैसे दूर करे, बीमारिया जो फैली हुई है उनको हम कैसे दूर करे ये सब सवाल हमारे सामने है। जनता के जीवन का स्तर हम कैसे ऊचा करे जिसमे उनका जीवन सुखमय हो जाये, जिसमे उनके चेहरे पर अधिक हसी हम देख सके जिसमे हम क्रन्दन की जगह अट्टहास देख सके यह सवाल हमारे सामने है। जब हम अपनी जवाबदेही समझकर अच्छे से अच्छे आदमी चुनेगे और उनको अधिकार देगे तभी हम अपना कर्तव्य पूरा कर सकेगे और यह केवल कर्तव्य ही नही इसमे हमारा स्वार्थ भी है क्योंकि हम मे से हरेक का स्वार्थ इसी मे है कि देश का काम अच्छी तरह से चले। तो इसमे स्वार्थ और कर्तव्य का मेल है और मै आशा करता हू कि यह जो बडा अधिकार आपके हाथ मे आया है उसका आप बुद्धि के साथ उपयोग करेगे। इस इलाके के लोगो को शायद पहले इस तरह का अधिकार बहुत छोटे रूप मे भी नही था। भारत के कुछ हिस्से ऐसे है जहा के लोग इस तरह के अधिकार कुछ न कुछ उपयोग मे आज तक लाते रहे है। मगर कुछ हिस्से ऐसे भी है जहा के लोगो को पहले पहल यह काम करना होगा मगर यह भी एक समझने की बात है कि जो सफेद कपडा होता है उस पर अगर कोई रग चढाना चाहे तो आसानी से चढा सकता है; मगर जो पहले से रगा रहता है उस पर पहले उसे साफ करके तब रग चढाया जाता है। तो आप पहले का तजुरबा नही रखते है तो एक तरह से इस त्रुटि से आप को कोई नुकसान नही है क्योंकि जो बुराइया है उन से आप बचे रहेंगे और इस तरह से आप काम करेगे तो आप के देश का और आपका भला होगा। आप सब ने ध्यानपूर्वक जो कुछ मैं ने कहा उसे सुना और इतना प्रेम दर्शाया उसके लिये धन्यवाद देता हू।

महात्मा गाधी जी की मूर्ति का अनावरण

औरगाबाद मे तारीख २ सितम्बर १९५१ को महात्मा गाधी की मूर्ति का अनावरण करते राष्ट्रपति जी ने कहा—

बन्धुओ और बहनो,

आपने यहां पर महात्मा गान्धी की मूर्ति स्थापित करके अपनी श्रद्धा का परिचय दिया है। पर मै तो यह चाहुगा कि केवल मूर्ति स्थापित करके ही आप अपने कर्तव्य की इति श्री नही समझें। यह मूर्ति तो एक देखने की चीज है, लेकिन महात्मा गान्धी ने अपनी वाणी से, अपने लेखों और अपने करतूतों से हम भारतवासियों को जितनी शिक्षा दी है वह केवल हमारे लिये ही नही, ससार के लिये अमूल्य वस्तु है। मै चाहूंगा कि आप अपने जीवन मे कार्यरूप में उसे

पालन करें और उनके बताये रास्ते पर चलकर अपना और देश का कल्याण करें। गान्धी जी की पूजा उसी रूप में होनी चाहिये और सच्ची पूजा भी वही है। इसलिये में आप सब से यह निवेदन करना चाहता हूं कि आप उनके ग्रन्थों को पढ़ें उनके लेखों का आप अच्छी तरह से मनन करे मगर उसे केवल पढने तक ही सीमित नही रखे। एक एक छोटी छोटी बातों को भी लेकर आप अपने जीवन में उनकी शिक्षा को उतारे और गान्धी जी की सब से बड़ी सीख तो यही थी कि उन्होंने एक बात भी ऐसी दूसरो के लिये नही कही जिस पर वह स्वय अपने जीवन से काम नही करते रहे और जिसको वह अमल मे नही लाये। इसलिये हम सब का बड़ा धर्म और बड़ा कर्तव्य यही है कि हम उनकी इस सीख को हमेशा याद रखें और जो कुछ उन्होंने बताया है और करके दिखलाया है उसको हम स्वय अपने जीवन में करे। तभी इस प्रकार के स्मारक का भी कुछ अर्थ होगा और हमारी श्रद्धा पूरी हो सकेगी।

जानपदीय अभिनन्दन

तारीख ३ सितंबर १९५१ को नागपुर से वर्धा आने पर रास्ते मे ही कुछ संस्थाओं द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब में राष्ट्रपति ने कहा—

बहनो और भाइयो,

आपने जिस प्रेम के साथ मेरा स्वागत किया उसके लिये आपको धन्यवाद है। वर्धा मेरे लिये कोई नयी जगह नही है और न मै ही यहा के लिये नया हूं। इसलिये जब जब मै यहां आऊ और आपको हर बार मेरे स्वागत का प्रबन्ध करना पड़े तो यह आपके लिये भारी बोझ होगा। हर मौके पर स्वागत नही किया जाता। हा कोई विशेष अवसर हो तो स्वागत किया जा सकता है। लेकिन जब मै रास्ते में जाता रहू और रास्ते मे मेरा स्वागत किया जाये तो उसकी क़ीमत कम होती है और वह बोझ बन जाता है। मै चाहता हू कि जब मै यहा आऊ और मै अक्सर आया करता हू तो दोस्तो से बातचीत करके चला जाऊ और मेरे स्वागत का कोई विशेष कार्यक्रम नही हो। अगर इस तरह से होता रहा तो मेरे लिये दिक्कत बढ़ जायेगी।

देश की जो समस्याऐ है उनके बारे मे मै क्या कहू। दो चार शब्दों मे तो वे कही नही जा सकती। अभी देश मे जो नया चुनाव आनेवाला है वह सारे देश के लिये एक बड़ी चीज होगी और उसी पर हमारे आइन्दा का सब कुछ निर्भर करेगा। आशा है कि आप समझ बूझ कर मत देगे। इसमे अगर जनता की तरफ़ से भूल हुई तो देश का नुकसान होगा। जो काम हम करे अपने देश को सामने रखकर करे। हम में से कितने लोग जाति का, दोस्तों का खयाल करके काम करते है और देश का काम उनके ध्यान में नही आता है। उससे देश का नुकसान होता है। इस चुनाव में आप वैसा नही करेंगे। स्वागत के लिये सब को धन्यवाद है।

५४१

सेवा ग्राम

तारीख ४ सितंबर १९५१ को सेवाग्राम में रचनात्मक कार्यकर्ताओं और आश्रमवासियों के बीच अपने भाषण में राष्ट्रपति जी ने कहा—

श्रद्धेय जाजू जी, बहनो और भाइयो,

जब इस तरफ आने का मुझे मौका मिलता है तो मैं प्रयत्न करता हूं कि आप सब से मिलकर कुछ यहा का वातावरण अपने साथ ले जाऊं। कुछ देने के लिये यहा मै नही आता हूं, कुछ लेने के लिये आता हू और उसी आशा से इस मरतबे भी यहां आया हूं। यह बड़ा अच्छा अवसर आ गया है कि सब भाई इकट्ठे यहां मिल गये; मुझे खबर नही थी कि इतने भाइयों से इकटठे मिलना होगा। मुझे आशा थी कि जितने लोग यहा रहते है उन्ही लोगों से भेट होगी लेकिन आने पर मालूम हुआ कि सभी जगहों से लोग आये हुए है और चर्खा सघ की मीटिंग भी है; और सब लोगों से मुलाकात हो गयी यह मेरे लिये बड़ी खुशकिस्मती की बात है।

अभी यहां जिन सस्थाओं के विवरण बतलाये गये उनको ध्यानपूर्वक मैं ने सुना। मैं जानता हूं कि कितनी कठिनाइयों के बीच आप लोग जो इस काम मे लगे हुए है, इस काम को चला रहे है। बात असली यह है कि गान्धी जी ने इस देश मे अपने बहुत वर्ष बिताये और सारे देश मे उन्होंने कई बार दौरा किया, करोडो पुरुषो और स्त्रियों से उनकी मुलाकात हुई कितने आदमी यहा के आश्रमों मे आकर थोडे समय के लिये रह भी गये और यों तो उनके भाषणों को सुनकर, उनके लेखों को पढ़कर न मालूम कितने लोगों ने लाभ उठाया। मगर साथ यह बात भी हमको माननी होगी कि जो राजकीय काम उन्होने उठाया उसमें से देश को स्वराज्य दिलाने के काम मे लोगों ने अधिक दिलचस्पी ली, उसमें लोगों ने अधिक रस लिया। जिस तरह की समाज रचना वह चाहते थे, स्वराज्य के बाद भारत को जिस प्रकार का बनाने की उनकी अभिलाषा थी उसके सम्बन्ध में लोगो ने कुछ कम दिलचस्पी ली। अगर हम यह कहे कि बहुतेरों ने इसको नही समझा तो यह भी अत्युक्ति नही होगी। हमारा अपना ख्याल है कि थोडे ही ऐसे लोग है—जो आप लोग इसमे लगे हुए है उनकी बात मैं नही कहता, मगर बाहर के लोगो मे थोडे ही लोग है—जो महात्माजी के समाज के चित्र को धुधले तरीक़े से भी अपनी आखों के सामने रख सके हों। अगर किन्ही लोगों के सामने वह चित्र आता भी है तो उनमें थोड़े ही लोग होते है जो उससे खुश होते है। कुछ लोग तो ऐसे है जो उसको पसन्द भी नही करते। उनका विचार है कि आज की दुनिया एक तरफ़ चल रही है, और गान्धी जी उसको दूसरी तरफ चलाना चाहते थे। जो कुछ इस वक़्त की चीज़े है उन में जो कुछ अच्छाई है उनको वे छोडना नही चाहते थे मगर उनके दिमाग में समाज का विचार कुछ दूसरा ही था जो आज के समाज से भिन्न था। यदि ऐसी अवस्था में लोग उसको ठीक तरह से नही समझ पाये, और जिन्होंने थोड़ा बहुत समझा उन्होंने उसे आग्रहपूर्वक स्वीकार नही किया तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसलिये जो लोग इस पर विश्वास रखते है और समझते है कि वह ठीक है उनका काम मुश्किल तो है ही लेकिन अधिक महत्व भी रखता है और आप के लिये इन कठिनाइयो की वजह से इस काम का महत्व और भी अधिक हो जाता है। अतः मैं जब आप लोगों से मिलता हूं तो मैं यही सोचता हूं कि चाहे दूसरे लोग कुछ भी कहें, कुछ भी सोचें, वे आपके

काम को पसन्द करे या नही करे आपको प्रोत्साहन दें या नही दे लेकिन आपको काम करते जाना है और आपको अपना काम करके उसका नतीजा दिखलाकर दूसरों को अपनी तरफ़ खीचना है। उनको वादविवाद के जोर पर, बहस करके अपनी तरफ़ आप नही खीच सके है। वे आप की तरफ खिचेगे पर तभी जब वह तराजू के एक पलडे पर आज की तडक भडक की चीजें रखेगे और दूसरी तरफ खादी को रखेगे और देखेगे कि चमकीले कपड़े से खादी अच्छी है। उसको देखकर अनुभव से उसकी खूबी मालूम हो जायेगी तभी उसको पसन्द करेगे। तो यह काम आप के सर पर है। महात्माजी का इतना प्रभाव था और उनका इतना बडा व्यक्तित्व था कि जो वह कहते थे उसे अगर लोग नही समझते थे दिल से नही मानते थे तो भी कुछ देर के लिये उसे कर लेते थे। अब वह बात नही है। अब तो जो आप करेगे उससे लोगो का विश्वास होगा ; उनकी समझ मे आयेगा तभी वे काम करेगे। अब किसी के कहने से कोई कुछ करने वाला नही है। इसलिये मै तो यह चाहता हू कि आपका काम जोरो से चले।

अभी श्रद्धेय जाजू जी ने कहा कि जो लोग इस काम मे लगे हुए है उनको सतोष होना चाहिये लेकिन मेरे जैसे लोगों को उसमे असतोष ही रहना चाहिये। मैं आपको कहता हू कि मुझे असतोष बहुत है। मुझे असतोष इसलिये नहीं है कि काम कम होता है या कुछ लोग इसके महत्व को नही समझ रहे है और इस तरफ हमारा ध्यान नही जाता है और ध्यान जाता है तो इस तरीके से जाता है जैसा नही जाना चाहिये। हमारा असतोष इसलिये नही। हम समझते है कि किसी कमजोरी की वजह से काम नहीं होता है तो असंतोष की बात नहीं। लेकिन जब हम समझते है कि यह काम ठीक है पर तो भी हम उसे नहीं कर पाते है तो असतोष और अधिक हो जाता है।

आज जो लोग यहा उपस्थित है उनसे मुझे कहना है कि गान्धीजी का जो कार्यक्रम था उस के कई पहलू थे उसमे कई बाते थी। जब हम आपस मे बैठते है तो एक किस्सा कहा करते है। किसी गाव मे एक हाथी गया जहा कई अन्धे थे जिन्होंने हाथी नही देखा था। उनमे से किसी ने हाथी की पूछ पकड़ी तो समझा कि हाथी वैसा ही होता है, किसी ने पाव पकड़ा तो समझा कि हाथी खभे के समान होता है ; किसी ने पीठ को छुआ तो उसको हाथी दूसरे ही क़िस्म का मालूम हुआ। हाथी कैसा होता है वह किसी को मालूम नही हो सका। तो गान्धी जी के कार्यक्रम के जितने पहलू थे उन सब का उद्देश्य एक ही समाज का सगठन करना था उसको हम नही देखते। उनके कार्यक्रम के एक अश को लेकर हमारा विश्वास हो जाता है कि वही असली चीज है और उसी पर हम जोर देने लग जाते है। दूसरे लोग दूसरी चीज को ठीक समझते है और उस पर जोर देने लगते है। नतीजा यह होता है कि आशिक चीज़ को लेकर ज़ोर देते है और दूसरी चीजों की तरफ हमारा ध्यान नही जाता है। इसका नतीजा यह होगा कि जैसा गान्धी जी चाहते थे वैसा नही हो सकता। मै समझता हू कि एक आदमी हरेक चीज़ को नही कर सकता और उसे किसी एक चीज़ मे खासियत हासिल करनी होगी लेकिन साथ साथ उसका और चीज़ों से क्या सम्बन्ध है उसे सामने रखना है। स्पेशलाइज़ेशन का अर्थ

यही है। एक चीज़ को लेकर हम उस पर जोर देने लगते है और दूसरी चीज़ों को भूल जाते हैं। यह स्पेशलाइजेशन नही है। जैसे मिसाल के तौर पर मै कहता हू कि गान्धी जी चाहते थे कि देश में मुसलमान, ईसाई, पारसी, सिख, हिन्दू सब मे मेल होना चाहिये। यह सिद्धान्त की बात थी इसको सब को मानना चाहिये। इसी तरह गान्धी जी ने कहा था कि जैसे सूर्य सब ग्रहों मे केन्द्र माना जाता है उसी तरह चर्खा सब ग्रामोद्योगों का केन्द्र माना जाये। अब हम चर्खे ही को ठीक मानें और दूसरी चीजों को भूल जायें तो हम कह सकते है कि यह गान्धी जी के कार्यक्रम का मानना नही हुआ। उसी तरह से एक दूसरे का आपस मे मेल होना जरूरी चीज है लेकिन हम उस पर जोर दे और दूसरी चीजों पर ध्यान नही दे तो मै कहूगा कि वह गान्धी जी के कार्यक्रम का मानना नही हुआ। उसी तरह से तालीमी सघ का काम है। तालीमी सघ के काम का जैसा आशा देवी ने कहा समग्र चित्र बापू के सामने था जिसको सारे समाज का चित्र अपने दिमाग मे रखकर उन्होने तैयार किया था। इस तरह की बात तो ठीक है। अगर वह काम भी पूरा हो तो उसका माने यह है कि सब काम पूरे हो जाते है। लेकिन अगर हम कहे कि किसी गाव मे बैठकर हमे उसी को बढाना है तो इतना ही काम हमारा नही है। तो जो रचनात्मक काम मे लगे हुए है उसके एक एक अश को लेकर भाग रहे है और दूसरी चीजों पर जोर नही देते है। इसी वजह से हमारी सरकार की नीति गान्धी जी की नीति से १६ आने नही मिलती है। आपका यह कहना कि मै गवर्नमेन्ट का हेड हू और गवर्नमेन्ट की शिकायत करता हू ठीक होगा। लेकिन बात ऐसी है कि जो कार्यक्रम गान्धी जी रखना चाहते थे उस पर गवर्नमेट नही चल रही है; न केन्द्रीय सरकार चल रही है और न किसी प्रान्त की सरकार चल रही है। हम उनकी एक चीज भी नही कर पाये है, कुछ थोडा बहुत हमने इधर उधर कर लिया है लेकिन उनके ध्येय को सामने रखकर हम आगे नही बढ रहे है। गान्धी जी का समाज का जो चित्र था वह हमारी गवर्नमेन्ट के सामने नही है। इस वक्त ससार में जो चित्र है उसी में थोडा बहुत परिवर्तन करके हम उसी पर चल रहे है। उसमे आमूल परिवर्तन हम नही करना चाहते है। हम तो चाहते हैं कि जो समाज की रचना और देशों में है उस तक हम कैसे पहुचें। उसमे हम कुछ भारत की खासियत भी रखना चाहते है यह ठीक है लेकिन जैसा गान्धी जी चाहते थे वह चित्र हमारे सामने नही है। जो चीज ही हमारे सामने नही है तो उस पर हम काम कैसे कर सकते है? आपका यह खयाल कि गवर्नमेन्ट आपकी सेवा नही ले रही है स्वाभाविक है। लेकिन मैं यह चाहता हूं कि आप गवर्नमेन्ट पर भरोसा नही करे। हां आपको जितनी मदद गवर्नमेन्ट से मिले आप ले लीजिये; जो आप दबाव डाल कर कराना चाहे करा ले। कोई भी गवर्नमेन्ट दबाव डालने से ही रास्ते पर आती है। लेकिन आप स्वतन्त्र रहकर ही काम करे तभी यह काम ठीक चलेगा। गान्धी जी ने कहा था कि इन सस्थाओं के लिये वह ब्रिटिश गवर्नमेन्ट से कोई मदद नही लेगे क्योकि वह मानते थे कि उन की मदद लेने से उनके रास्ते पर हमको चलना पड़ेगा। तो वही चीज़ आज भी है। अगर आपने सरकार पर भरोसा किया तो उनकी नीति पर आपको चलना होगा लेकिन आपको उसकी नीति पर नही चलना है, आपको तो उसकी नीति को बदलवाना है। जो कुछ भी आप काम करें उनका फल दिखलाकर उसको मजबूर कीजिये कि वह आपके रास्ते पर आवे। मै इतना कह गया मै नही जानता हूं कि मै इतना कह सकता था या नहीं। मैं ने इसलिये इतना कहा कि मुझे संतोष नही है, मुझे असंतोष है चूकि मै अन्दर की बात आपसे अधिक जानता हूं। लेकिन बात यह है कि मै कुछ कर पा नहीं रहा हूं।

तो आप कह सकते हैं कि इस असंतोष का कुछ अर्थ नहीं है। इसे आप मेरी कमज़ोरी समझें या ऐसा समझें कि परिस्थिति ही ऐसी है। तो मैं यहां इसलिये आता हूं कि मुझे जो असंतोष होता है वह बना रहे। आपके यहां आकर कुछ समझ बूझ कर उसको जाग्रत रखने के लिये मैं आपके पास आता हूं। और दूसरी बात मै क्या कहूं। मैं समझता हूं कि आप जो काम कर रहे हैं ठीक कर रहे है और आप अपने रास्ते पर चलते जायेंगे तभी दूसरे आपको समझेंगे और आपके रास्ते पर आयेंगे। मै आपको यह भी कहना चाहता हूं कि मुझे निराशा नहीं है। मैं जानता हूं कि जब तक ऐसा चलता है चल रहा है लेकिन एक वक्त आयेगा जब सब को इसे मानना पड़ेगा; आज चाहें हम जिधर भी जायें। हां अगर हम शुरू से ही इस पर ध्यान देते तो आसानी ज़रूर होती। मगर जो स्थिनि है उससे आपको भी निराश नही होना चाहिये।

सेवाग्राम में सांस्कृतिक खेल

सेवाग्राम में वहां की संस्थाओं के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक मनोरंजन (कल्चरल एन्टरटेनमेन्ट) के बाद तारीख ४ सितंबर १९५१ को राष्ट्रपति जी ने अपने उपदेश में कहा –

आप सबों ने जो अपना खेल दिखलाया उसका हमारे हृदय पर बहुत प्रभाव पड़ा और आप में से जो भाग लेने वाले थे उन में से प्रत्येक ने अपना भाग समझकर अच्छी तरह से दर्शाया। आपकी भावभंगी से ही सब बातें साफ़ साफ़ मालूम हो जाती थी क्योकि जो कुछ गाकर सुनाया गया वह तो सब लोगो ने शायद समझा नहीं क्योंकि जो सुनाया गया वह कितनी ही भाषाओं में सुनाया गया पर तो भी कला की दृष्टि से जो नाच आपने दिखलाया उसे सबों ने समझा और अच्छी तरह से समझा। जैसा आरम्भ में आशा देवी ने कहा था, हम तो चाहते है कि यह भारत की कला गाव गांव में फैले और इसको सच्चे अर्थ में लोग समझें तो यह बहुत बड़े कल्याण की चीज़ होगी। जब आप लोग यहां से जायेंगे तो आप को अध्यापन का काम करना होगा। यहां सीखने मे, पढने से या बताने से जो कुछ भावना अपने साथ ले जायें उसे आप सब लोगों में पहुंचायें, फैलायें। यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है और यही मेरी कामना है।

अंगरक्षकों को उद्बोधन

बाडी गार्डस के जलसे में अपने भाषण में राष्ट्रपतिजी ने कहा––

बाडी गार्डस के अफसरान और जवानो,

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आपके यहां थोड़ा वक़्त गुज़ार सका और आप सब से अच्छी तरह से मिल सका। गरचे हम दोनों क़रीब क़रीब एक ही मकान में रहते हैं, एक अहाते में तो रहते ही है और वक़्त पर मुलाक़ात भी हो जाया करती है मगर इस तरह की मुलाक़ात नहीं होती है जिस तरह की आज हुई। और मौक़ों पर तो आप अपनी ड्यूटी में लगे रहते हैं और मैं

भी जो काम मेरे जिम्मे रहता है उसमें लगा रहता हूं। इसलिये हम दोनों अपने अपने कार्य में लगे हुए एक दूसरे को देखते रहते हैं मगर इस तरह से एक साथ मिलना, बैठना, सुनना, सुनाना इसका मौक़ा कम मिलता है। इसलिये मुझे आज इस बात की बड़ी खुशी है कि आपने मुझे ऐसा मौक़ा दिया और गरचे मौसम कुछ ऐसा हो गया जिसकी वजह से आपको इन्तजाम बदलना पड़ा, बाहर से अन्दर आना पड़ा मगर मैं समझता हूं कि वह भी अच्छा ही हुआ क्योंकि पानी की ज़रूरत है ही, उसके अलावा हम यहां एक दूसरे के साथ अधिक नज़दीक होकर मिल सके और बैठ सके।

यह जो राष्ट्रपति भवन अब कहलाने लगा है उसमें कोई न कोई आया करेगा और रहा करेगा। पर पहले मे और आज में बहुत बडा फर्क हो गया है। पहले तो लोग बहुत दूर से कई हज़ार मील से विदेश से आया करते थे और पाच वर्ग बिता कर चले जाया करते थे। उनका हमारे देश के साथ उस किस्म का सम्बन्ध नही था जैसा एक देशवासी का सम्बन्ध दूसरे से हुआ करता है। ईश्वर की ऐसी कृपा हुई कि अब अपने ही भाइयों में से कोई न कोई आया करेंगे और पहले उनके आप लोगों के साथ जो ताल्लुक़ात हुआ करते थे अब उन से दूसरे क़िस्म के ताल्लुकात हुआ करेगे। पहले उनके आप से ताल्लुकात हुआ करते थे हुक्मरान व हुक्म बजानेवालों के। अब उसकी सूरत यह हो गयी है कि हिन्दुस्तान मे न कोई हुक्मरान के दर्जे मे रह गया है और न कोई हुक्म बजानेवाला रहा। अब तो गरीब से गरीब आदमी भी हुक्मरान के दर्जे मे आ गया है और जो बडे समझे जाते थे हुक्म बजानेवालों के दर्जे में आ गये है। अब दोनों मिलकर एक किस्म के हो गये है। मुझे जब गांव के लोगो से मिलने का मौका हुआ करता है तो मै उनसे कहा करता हूं कि उनको यह समझना चाहिये कि स्वराज्य के माने यह है कि देश में के हरेक आदमी का सारे हिन्दुस्तान पर हक है और उनको यह समझने का हक हो गया है कि हिन्दुस्तान हमारा है। लेकिन इसका मतलब यह नही है कि लोग अपने लिये ही फ़ायदा उठावे बल्कि उसका अर्थ यह है कि अगर हमको सारे हिन्दुस्तान का हक मिल गया है तो सारे हिन्दुस्तान की हिफाज़त करना, उसको ऊपर उठाना हम में से हरेक का फर्ज हो गया है। हिन्दुस्तान में कोई आदमी किसी तरह के काम में लगा हो हरेक का उसमें बराबर हिस्सा है। कोई कागज का काम करता है, कोई फौज में काम करता है, कोई खेती का काम करते है, काम करने वाले सभी है। सब की इज़्ज़त होनी चाहिये और सब को अपनी इज़्ज़त समझनी चाहिये और दूसरों को भी उनकी इज़्ज़त करनी चाहिये। हां यह ठीक है कि काम का क़ायदा बना हुआ है और वह रहना चाहिये। जिसका जो काम रहे उसको उसे करना चाहिये क्यों कि हमें तो काम करना है, काम बिगाड़ना तो नही है। तो हम में से हरेक को अपना काम अदा करना है। जो छोटे से छोटे काम में लगे हुए है उनका भी इज्ज़त का काम है और उनको यह समझना चाहिये कि अगर वे उ से ठीक तरह से अंजाम देंगे तो उनका और देश का लाभ होगा। जो ऐसे काम में लगे हुये है जो बड़ा काम कहलाता है वह तो बड़ा है ही। मै यह समझता हूं कि आप जो फौज के आदमी है डिसिप्लिन के आदमी है आप समझते हैं कि हुक्म किस तरह से देना चाहिये और उसको मानना चाहिये। यह भी आप समझते हैं कि हुक्म ठीक तरह से वही दे सकता है जो ठीक तरह से हुक्म बजाता है। इसलिये सब को किस तरह से हुक्म मानना है यह सीखना है। हम चाहते हैं कि सब चीज़ें हिन्दुस्तान की खिदमत में लगायी जायें। मुझे इस बात

का संतोष है कि इस बारे में लोग कुछ सजग हैं, मैं जहां जाता हूं वहां यह देखता हूं। मुझे डेढ़ साल से काफ़ी घूमने का मौक़ा मिला है; मैं पहले भी घूमा करता था लेकिन पहले दूसरे क़िस्म से घूमा करता था; पहले उस समय की गवर्नमेंट के खिलाफ़ घूमा करता था अब एक तरह से गवर्नमेंट का सिरताज होकर घूमा करता हूं। एक तरह से इतना फर्क हो गया है मगर मेरे लिये कोई फ़र्क नही है क्यों कि जब मै देखता हूं कि किस तरह से लोग मुझ से मिलते है, मेरा स्वागत करते है तो मुझे कोई फ़र्क नही माल्म होता। मै चाहता हूं कि हिन्दुस्तान के लोग समझें कि जहां हमारे हाथों में अधिकार आ गया है वहीं उसके साथ यह बड़ी जवाबदेही भी आ गयी है कि हिन्दुस्तान हमेशा के लिये आजाद रहे और हमारी जो मुसीबतें है जो, गरीबी है, जो तालीम की कमी है, जो बीमारी है वह सब आहिस्ता आहिस्ता दूर हो जाये और सब अपनी अपनी जगह पर काम करते जायें। जो जहां पर है वे ठीक तरह से अपने काम को अंजाम दें तो सारे हिन्दुस्तान का काम ठीक तरह से चल सकता है। अगर हम एक दूसरे के काम में दखल देने लग जायें, जो लड़ाई का काम करते हैं वे क़ागज लिखने लग जायें और जो काग़ज लिखने का काम करते हैं वे लड़ाई करने लग जाये, तो ठीक काम नहीं चलेगा। जो डाक्टरी का काम करते हैं वे खेती का काम करने लगें और जो खेती का काम करते है वे डाक्टरी करने लगें तो भी काम गड़बड़ा जायेगा। काम एक तरह से बंटा हुआ है और सब के लिये मौका है कि वे अपनी योग्यता के मुताबिक अपना काम करे। एक बड़ा काम यह हुआ है कि सब के लिये दरवाज़ा खुल गया है और सब लोग अपना अपना काम करते जायेंगे तो देश का कल्याण होगा और जो कुछ हम चाहते है वह हो सकेगा। आप हम से नजदीक़ रहते है इसलिये हम आशा रखते हैं कि आप औरों के मुक़ाबले में आगे रहेंगे। हम से भी आप आशा करते होंगे कि औरों के मुकाबले में मै भी आगे रहूं। माल्म नही कि औरों से मै आगे हूं या नहीं। यह मैं नही जान सकता। लेकिन आपसे मै ज़रूर आशा रखता हूं। आप मुझे नही देखते है पर मै तो आपको देखता हूं इसलिये आपको जानने और देखने का मौका मुझे रहता है। मुझे आशा है कि आप ठीक तरह से काम करेगे और उससे सब का भला होगा।

लाला लाजपतराय की मूर्ति पर पुष्पहार

तारीख २१-९-१९५१ को स्व० लाला लाजपत राय की मूर्ति को हार पहनाते हुए राष्ट्रपतिजी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

यह दूसरा मौका है जब मुझे यह सौभाग्य मिला है कि मै लाला जी की मूर्ति के चरणों में यह हार अर्पण करूं। लाला जी का जीवन सदा देश की और विशेषकर पजाब की सेवा में ही लगा और उन्होंने जितनी सेवा और जितना काम हम सब के लिये और देश की आज़ादी के लिये किया वह हमारे इतिहास में हमेशा स्वर्णाक्षरों मे लिखा रहेगा। इसलिये यह बड़े सौभाग्य की बात है कि ऐसे मौके पर आप सब बहनों और भाइयों के सामने मै अपनी ओर से यह श्रद्धाजलि दे सका और मै आशा करता हूं कि आप उनके चरण चिन्हों पर चलकर देश की सेवा के काम में हमेशा मदद करते रहेंगे।

लेबर शो, शिमला

तारीख २१-९-१९५१ को लेडीज पार्क शिमला मे लेबर शो के पश्चात् राष्ट्रपतिजी ने अपने भाषण में कहा —

श्रीमती कुसुम त्रिवेदी, बहनो और भाइयो,

मुझे आप ने जो कुछ दिखाया और सुनाया वह सब देख और सुनकर बडी प्रसन्नता हुई है। यह कहने की जरूरत नही है कि कोई भी काम हो जब तक उसमें स्त्री और पुरुष दोनों एक साथ मिलकर काम न करे तब तक वह काम पूरा नही हो सकता है। हमारे समाज और देश मे यह अक्सर होता आया है कि एक किस्म का काम पुरुष करते है और दूसरे किस्म का काम स्त्रिया करती आयी है। अब दुनिया की हालत बदल गयी है उसमे ऐसा मौका आता है जब दोनो को एक ही काम करने की जरूरत होती है। इसलिये मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि यहा की बहनें हर तरह के काम मे हाथ बटा रही हैं और हर तरह लोगों की सेवा मे जुट रही हैं। आपने सच कहा कि कुसुम त्रिवेदी के उत्साह बढाने मे बहुत बहने इस काम मे आयी हैं और मैं समझता हू कि यदि वे बहने उसी उत्साह से काम मे लगी रही तो जो काम वे कर रही है वह आगे बढ़ेगा और दूसरे नये किस्म के काम भी वे सेवा भावना से कर सकेगी।

आपने जिक्र किया एक छोटी सी रकम का जिसे मैं ने गत वर्ष आपके काम के लिये भेजा था। इस साल भी मैं उस रकम को भेज दूगा। मे समझता हू कि जिस उत्साह से आप काम कर रही है उसी उत्साह से काम मे लगी रही तो रुपये की कमी से कम नही रुकेगा; हमेशा किसी न किसी तरह से आपके पास रुपये आते रहेगे। भारत में काम करने वालों की कमी है, जिनको सेवा लेनी है उनकी कमी नही है; काम की भी कमी नही है। और कोई भी काम रुपये के बिना नही रुकेगा। अगर काम करने वाले सच्चे मिले तो हर तरह की सहायता देश के लोग देते जायेगे और आपका उत्साह बढ़ता जायेगा। आपने जो कुछ किया है उसके लिये मै आपको बधाई देता हूं और आइन्दा के लिये उम्मीद रखता हू कि इसी तरह से आप काम को बढायेगे।

वाल्मीकि मन्दिर, शिमला

तारीख २७-९-१९५१ को शिमला के लद्दाखी मुहल्ले में श्री वाल्मीकि मन्दिर मे राष्ट्रपति-जी ने एकत्रित जनसमूह के समक्ष अपने भाषण मे कहा —

बहनो और भाइयो,

एक साल हुआ जब मै शिमला आया था। उस वक़्त आप लोगो की ओर से यह ख्वाहिश ज़ाहिर की गयी थी कि मैं यहां चन्द मिनटों के लिये भी एक बार आ जाऊं। मै ने वादा किया था कि समय निकाल कर आऊगा। परसाल यह वायदा पूरा नही हुआ। लेकिन मुझे इस बात की खुशी है कि इस बार वह वायदा मैं पूरा कर सका। आप जैसा जानते है, मेरी दिलचस्पी खास करके उन भाइयों की तरक्की और उन्नति में बहुत दिनों से रही है जिनके नुमाइन्दे आप लोग यहां हैं और मैं चाहता हूं कि भारत का समाज ऐसा बन जाये जिसमें न कोई अछूत

रहे और न कोई बडा समझा जाये और न छोटा; सब बराबर के भाई और बहन की तरह रहे और समझे जाये। महात्मा गान्धी जी का यही विचार था और इसी विचार से उन्होंने अपनी सारी ज़िन्दगी के कामों मे हरिजनों के उत्थान के काम को बहुत बड़ा महत्व दिया था। इस वक्त हमारे देश के सविधान मे भी अछूतपन को केवल पाप ही नही, एक जुर्म भी करार दिया गया है। मै आशा करता हू कि जो रूढ़ि बहुत दिनों से चली आयी है और जो पिछले चन्द वर्षो मे जब से स्वामी दयानन्द, महात्मा गान्धी, स्वामी श्रद्धानन्द और दूसरे लोगों ने इस ओर ध्यान दिया और इसे दूर करने का प्रयत्न किया तब से बहुत कुछ दूर भी हो चुकी है जल्द से जल्द दूर हो जायेगी और इस मे सभी का धर्म है कि मदद दे। जो लोग नीचे वर्ग के समझे जाते है या अपने को मानते है उनका धर्म तो है ही, और लोगों का भी धर्म है कि आपस मे जो छोटे बडे का विचार रखते है ऊचे नीचे का विचार करते है उसको दूर करे और अपने जीवन को ऐसा सुन्दर बनावे जिससे सब लोग एक साथ मिलकर भाई और बहन की तरह रहे और आपस मे सब से मोहब्बत रखे। मै आशा करता हू कि जो कुछ प्रयत्न इस काम के लिये देश मे हो रहा है वह सफल होगा और मुझ से जो कुछ मदद हो सकती है, सेवा हो सकती है, उसके लिये मै हमेशा हाजिर हू।

आपने बडी मेहरबानी करके वाल्मीकि रामायण भेट की। यह मेरी समझ मे मेरे लिये बडी क़ीमती चीज होगी क्योंकि इसका सम्बन्ध एक तरफ़ आप लोगों से है और दूसरी तरफ उस महर्षि से है जो आदिकवि समझे जाते है और इस सगम का सुन्दर नतीजा यह होना चाहिये कि फिर हम मे कोई भेदभाव न रह जाये और सब लोग एक हो जाये।

गर्ल्स गाइड्स रैली

तारीख २८-९-१९५१ को गर्ल्स गाइड रैली के बाद राष्ट्रपति निवास शिमला के मैदान में राष्ट्रपतिजी ने अपने उपदेश मे कहा—

गर्ल्स गाइड की सचालिकाओ, गर्ल्स गाइड की बच्चियो, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि इस बार भी एक मरतबे मै इन बच्चियों को देख सका और जो कुछ उन्होंने दिखलाया उसको देखा और देखकर बहुत खुश हुआ। गर्ल्स गाइड के जरिये इन बच्चियों को सिर्फ़ मन-बहलाव का काम ही नही मिल जाता है बल्कि खेल कूद के साथ ही वे अच्छी से अच्छी चीज़े भी सीख लेती है। एक दूसरे के साथ मेल मुहब्बत करना, मिल जुलकर काम करना और बहुत ऐसी बाते भी वे सीख लेती है जिनसे ज़िन्दगी में उनको लाभ हो सकता है। मुझे जो कुछ उन्होंने यहां दिखलाया उसे देखकर मै खुश हुआ। परसाल भी मै ने देखा था। इस साल कुछ और नया देखा। देखने से मुझे इस बात की आशा होती है कि जब ये ज़िन्दगी मे दाखिल होगी तो उनसे देश को और भी लाभ पहुचेगा। मै ने परसाल भी कहा था और इस साल भी मै कहना चाहता हूं कि आप लोग उत्साह से काम करते जाये। मुझे यह सुनकर और भी खुशी हुई कि आपका पजाब और सब सूबों के मुक़ाबले

में इस मामले में बहुत बढ़ा चढ़ा हुआ है। यह हमेशा बढा रहे यह मेरी ख़ाहिश है और सब को इसमें जहां तक हो सके मदद करनी चाहिये। बच्चियों को देखकर मैं बहुत खुश हुआ। जिनको इनाम मिला है उनको मैं बधाई देता हू। मगर जिनको नही मिला उनके लिये भी अफ़सोस करने की कोई बात नही है। वे तो यहां खेल दिखलाने आयी है और उन्होंने खेल दिखलाया। वह क्या कम इनाम है? वह बहुत बड़ी चीज है। असली चीज तो काम करना है। हा, उसमें इनाम मिल जाये तो अच्छा ही है; नही तो उसके लिये किसी को अफ़सोस नही करना चाहिये और अपने को अगले वर्ष के लिये तैयार करना चाहिये कि जिनको नही मिला है उनको भी मिल जाये। मै आशा करता हू कि आपका काम दिन प्रति दिन बढता जायेगा और हमेशा तरक्की करता जायेगा।

सनावर पब्लिक स्कूल

तारीख १-१०-५१ को ६ बजे शाम सनावर स्कूल के सालाना जलसे मे राष्ट्रपतिजी ने कहा—

प्रिंसिपल साहब, डाक्टर ताराचन्द, पेप्सू के चीफ मिनिस्टर साहब, बहनो और भाइयो,

इस बात की मुझे बडी खुशी है कि आज मुझे आपके स्कूल को देखने का मौका मिला। मै ने पहले कुछ सुना था कि इस तरह के स्कूल को गवर्नमेंट आफ इंडिया ने अपने हाथ मे लेने का फैसला कर लिया है और कई जगहों पर ऐसे स्कूलों का फौज की तरफ से जो पहले इन्तजाम होता था उन्हें अब गवर्नमेंट आफ इंडिया की तरफ से चलाने का इन्तजाम हो रहा है। यह बहुत ही अच्छा और सुन्दर फ़ैसला हुआ है। इस तरह के स्कूलो की जरूरत इस मुल्क मे इस वक़्त है और मैं समझता हूं कि हमेशा रहेगी। हमे इस बात की बडी जरूरत है कि हम अच्छे शहरी तैयार करे—ऐसे शहरी जो मुल्क की खिदमत कर सके, साथ ही अपनी तरक्की कर सके और इस मुल्क मे और दूसरे मुल्को मे हिन्दुस्तान का नाम ऊचा उठा सके।

आजकल हम नये जमाने में से गुजर रहे हैं, एक नये किस्म का इन्तजाम अपने मुल्क के अन्दर दाखिल कर रहे है और एक तरह से एक नया तजुरबा हमको मिल रहा है। इस तजरबे को कामयाब करने के लिये हमें अच्छे से अच्छे नौजवानो की जरूरत है। नौजवानो से मेरा मन्शा लडके और लडकियों दोनों से है। जरूरत इस चीज की है कि ऐसे लोग हमारे स्कूलों से, कालेजों से और यूनीवर्सिटियों से तैयार होकर निकले जो इस नये भार को सम्भाल सके और मुल्क के इन्तजाम में पूरा पूरा हिस्सा ले सके और पूरी तरह से उसको अंजाम दे सके। इसी वजह से ऐसे स्कूलों की जरूरत है जहां सिर्फ़ लिखना पढ़ना ही नही सिखलाया जाता बल्कि उनके साथ साथ उनका चरित्र भी ऐसा बनाया जाता है कि वह इस काम के काबिल हो सके। मैं ने कई जगहों पर कहा है—डाक्टर ताराचन्द के सामने कहने में कुछ हिचकिचाहट होती है—कि आजकल तालीम का जो सिलसिला हमारे मुल्क में है उसमें चरित्र गठन पर, कैरेक्टर बिल्डिंग पर उतना ज़ोर नही दिया जाता जितना दिया जाना चाहिये। जब मैं चरित्र गठन की बात कहता हूं तो आप यह नही समझें कि उसमें मै महज़ बुरे भले की तमीज़ को ही शामिल करता हू बल्कि हिम्मत को भी और जहां जरूरत हो, वहां क़ुर्बानी के जज़्बे को भी शामिल करता हूं।

मेरे विचार में यह सब चरित्र के अन्दर आता है। अगर आप इन चीज़ों को हमारे स्कूलों में दाखिल कर सके और साथ ही साथ आज जो किताबों की तालीम दी जाती है उसे भी अच्छी तरह से सिखा सके तो मै समझगा कि हमारी शिक्षा और तालीम पूरी हुयी। पर जब तक उनकी कमी बनी रहती है उस वक़्त तक हमारी शिक्षा अधूरी ही रहेगी। इसलिये जिन स्कूलों में इन चीज़ो पर ज़ोर दिया जाता है उनकी हमे जरूरत है। आपने अभी कहा है कि आप सिर्फ़ पढ़ाने पर ही जोर नही देते बल्कि बच्चे और बच्चियों के स्वास्थ्य का भी खयाल रखते है, उनको खेल, कसरत और वर्जिश का पूरा मौका देते है, उनके खाने पीने पर भी इसलिये ध्यान देते है जिसमें उनकी तबीयत और सेहत ठीक रहे ; आप इसका भी खयाल रखते है कि किसी क़िस्म की बीमारी यहा पैदा न हो। ईश्वर की कृपा से यह जगह ऐसी है जहा बीमारी होनी ही नही चाहिये और मामूली तौर से होती भी नही है। यहा का जल और वायु दोनों अच्छे है। दूसरी जगहों से बीमार होकर लोग यहा आते है और अच्छे होकर जाते है। जो लोग बचपन से ही यहा रहे और जिन की सेहत का पूरा खयाल रखा जाता हो उनका स्वास्थ्य तो किसी तरह से खराब होना ही नही चाहिये। यह स्वाभाविक है कि दो तीन महीने के लिये जब आप यहा से घर जाते है तो यहा जो आदत पडी रहती है वह कुछ बिगड जाये। लेकिन जो कुछ आप नौ महीने मे यहा सीखते है उसमे इतनी ताकत होनी चाहिये कि यदि तीन महीने मे आदत कुछ बिगड़े भी तो भी आप बीमार होकर न आवे बल्कि पूरी तरह से तन्दुरुस्त ही आवें। मेरा अनुमान है कि सभवत ऐसा ही होता भी है। इसलिये सब बातें सुन लेने के बाद मै समझता हू कि आपको सच्चे दिल से मुबारकबाद दू। यहां के बच्चे पढाई मे भी आगे निकल रहे है, खेल कूद मे भी आगे निकल रहे है और उनका स्वास्थ्य भी ठीक है। यहा के बच्चे और बच्चियों की तायदाद भी बढती जा रही है और मुझे आशा है कि उनकी तायदाद और भी बढेगी। पर मेरी राय है कि तायदाद बढ़ने पर भी आप उतने ही विद्यार्थी ले जितनों को ले सकते है, उनसे ज्यादा न ले। मै ने देखा है कि बहुत से स्कूलो मे और अस्पतालों मे भी जितनी जगह है उनसे अधिक लोग ले लिये जाते है। नतीजा यह होता है कि वहां जितने लोग रहते है उनकी पूरी देखभाल नही होती। इसलिये यह ध्यान आप जरूर रखे कि जिन्हे आसानी से, आराम से अपने क़ायदे के मुताबिक आप रख सकते है उतने ही को अपने यहा दाखिल करे। अगर ज्यादा लोग दाखिले की माग करे तो अपने विद्यालय की पहले इज़ाफ़त करें और ज्यादा ख़र्चे का प्रबन्ध कर ले तब दाखिला करे। ऐसा करने पर ही आप अपने स्टैण्डर्ड को बनाये रख सकेगे। मुझे आशा है कि आपका यह काम दिन ब दिन तरक्की करता जायेगा।

यद्यपि अमीरों के लिये ही यह स्कूल है, ग़रीबों के लिये यहां जगह नही है तो भी जिनके लिये यह स्कूल है उन्हे चाहिये कि वे इससे पूरा लाभ उठावें। जो बच्चे यहां पढ रहे हैं उनके दिल मे ऐसी भावना पैदा करनी चाहिये कि वे उस मुल्क के है जिस मुल्क मे गरीबी है, जिस मुल्क में सब ऐसे ख़ुश किस्मत नही है जितने वे है। और उन लोगों मे यह जज़्बा होना चाहिये कि उनसे जो आज नीचे है उनको भी वे अपने मुकाबले में ला सके। जब आप उनके दिल में यह भावना डाल देंगे और ऐसा हौसला और ख्वाहिश लेकर वे यहां से जायेंगे तभी उनकी शिक्षा पूरी कही जायेगी और तभी वे देश का और अपना कल्याण कर सकेंगे। अगर वे इस भावना को लेकर जायेंगे कि हम ऐसे स्कूल से आये है जिसके मुक़ाबले का दूसरा स्कूल नही, जिसे में ऐसे लोग रहते

हैं जैसे दूसरे स्कूलों में नही रहते और जिसमें तालीम पाये हुये लोग और लोगों से बेहतर होते हैं तो मै समझता हू कि यह उनके लिये भी बुरा होगा और देश को भी उनसे पूरा लाभ नही होगा। इसलिये मै समझता हू कि जो यहा से जाये नम्रता भी अपने साथ ले जायें। उनको यहा जो भी लाभ हुआ हो उसे अपने ही तक सीमित न रखे बल्कि दूसरे लोगों तक पहुंचाये और ग़रीबों को अपने दर्जे तक लाने का प्रयत्न करे।

मै आप सब भाइयों और बहनो का शुक्रगुज़ार हूं और खास करके स्कूल के अभिभावक, और सचालकों का मै शुक्रिया अदा करता हू कि आपने मुझे मौका दिया और मै इस स्कल को देख सका।

गांधी जी के चित्र का अनावरण

१-१०-५१ को सनावर स्कूल मे गाधी जी के चित्र का अनावरण करते समय राष्ट्रपतिजी ने कहा——

बच्चे और बच्चिओ,

मै अभी महात्मा गाधी की इस तस्वीर को आप सब के सामने खोल देना चाहता हू। यह तस्वीर यहा रहेगी। आप सब को रोज़ इसके दर्शन का मौका मिलता रहेगा और मुझे आशा है कि आप इसका दर्शन रोज व रोज़ करते रहेंगे। मगर सिर्फ़ तस्वीर देखना काफ़ी नही है। आप एक दूसरे का चेहरा देखे। महात्मा गांधी का कोई दूसरा चेहरा नही था। आपमे से कुछ ऐसे है जो महात्मा गाधी जी से ज़्यादा खूबसूरत है। मगर महात्मा गाधी महात्मा इसलिये नही हुए कि वह सुन्दर थे बल्कि वह इसलिये महात्मा हुए कि उन्होंने बडे बड़े काम किये। वह बड़े काम कैसे कर सके ? इसलिये कि बचपन से ही उन्होंने अपना चरित्र बनाया। सचाई को बचपन में ही उन्होंने अपना आदर्श मान लिया और किसी भी मौक़े पर वह फिसले नही। जो वादा उन्होंने अपनी मा से किया था, जो इरादा उन्होंने अपने दिल मे किया था उसे धार्मिक व्रत के समान उन्हों ने निभाया। उमे सर्वदा याद रखा और उस के पालन में लगे रहे जिस से कि वह सब गलतियों से बच गये। मै यह चाहता हू कि आप भी वैसे ही बने और आप वैसे बन सकते है, अगर महात्मा गाधी के गुणों को आप अपनाने का प्रयत्न करे। महात्मा जी की छोटी बडी जीवनी हर तरह की छप गयी है। उनकी जीवनी आप पढें। और पढ़े ही नही बल्कि उनके नक्शेकदम पर चलने का प्रयत्न करे। महात्मा जी जो कहते थे वही करते थे। दूसरे लफ्ज़ों में वह जो करते थे वही कहते थे, उससे ज्यादा नही कहते थे। यदि आप यह सीख ले कि जो कुछ आप कहे वही आप करेगे तो आप गलतियो से बच जायेंगे और तरक्की करेंगे। मै उम्मीद करता हू कि आप इस तस्वीर से हमेशा लाभ उठाते रहेगे।

सरदार पटेल की मूर्ति का अनावरण

सेक्रेटेरियट हाल पटियाला में सरदार वल्लभभाई पटेल की मूर्ति का अनावरण करते समय तारीख २-१०-५१ को राष्ट्रपतिजी ने कहा——

श्रीमन्त राजप्रमुख साहब, बहनो और भाइयो,

मेरे लिये यह बड़े सौभाग्य की बात है कि आपने मुझे इस शुभ काम के लिये यहां बुलाया और सरदार वल्लभभाई पटेल की मूर्ति का अनावरण करने का आज मुझे मौक़ा दिया। वो

आज़ादी हमें मिली है जैसे जैसे उसका महत्व हम समझते जायेंगे और जो कुछ सरदार ने किया जैसे जैसे उसका महत्व भी हम समझेंगे वैसे ही हमारे दिलों के अन्दर उनकी कद्र बढ़ेगी। उनके साथ ३० या ३२ वर्षों तक काम करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ और मै यह कह सकता हू कि इन ३०-३२ वर्षो के अन्दर ऐसा एक दिन भी न बीता जब उन्हों ने उसी मुहब्बत से बातें न की हो जो मुहब्बत वह हमेशा हमारे प्रति रखते थे। आपस में मतभेद हुआ करते थे और वे होने चाहिये। पर हम एक दूसरे पर पूरा विश्वास रखते थे, एक दूसरे के साथ पूरा प्रेम रखते थे और इसीलिये हम एक साथ मिल कर इतने लम्बे अर्से तक काम कर सके। जब महात्मा गाधी दक्षिण अफ्रीका से लौट कर भारत आये और जब उन्होंने हिन्दुस्तान मे एक नया दौर जारी किया उसी दिन से सरदार वल्लभभाई ने उनके काम मे हाथ बटाया अपनी सारी जिन्दगी मे यानी १९१६-१७ से उस वक़्त तक जब उनकी मृत्यु हुई महात्मा गाधी ने जितने बडे बडे काम किये, जो कुछ आन्दोलन चलाये, जो भी क़दम उन्हों ने उठाये उन सब मे सरदार वल्लभ-भाई का इतना बडा हिस्सा रहा कि अगर कोई कहे कि गांधी जी के तो विचार और कार्यक्रम होते थे और उनको असली काम की शक्ल सरदार देते थे तो यह कहना बिल्कुल सही होगा। यही बात सत्याग्रह के बारे मे भी कही जा सकती है। महात्मा गाधी ने जो कई बार सत्याग्रह छेडा और आजादी हासिल करने मे जो उनके सब से बडे काम हुए उन सब मे सरदार का हाथ था। महात्मा गाधी का उन पर इतना विश्वास था कि हर किसी काम मे वे सरदार से सलाह करना अपने लिये जरूरी समझते थे। इतना ही नहीं मै यह भी कह सकता हू कि कभी कभी सरदार का उनसे मत नही मिलता था लेकिन अन्त में जब किसी बात का फैसला हो जाता था तो जो कुछ भी फैसला होता था उसका सरदार पालन किया करते थे। महात्मा गाधी के मरने से सरदार को कितना बड़ा धक्का लगा उसका अन्दाजा आप नही कर सकते। जितना भी उन से हो सकता था वे गाधी जी के बतलाये रास्ते पर चल कर जो काम बाकी रह गया था उसके पूरा करने मे अपने जीवन के अन्तिम दिन तक लगे रहे ; जो उनकी ख्वाहिश थी उसको अच्छी तरह से पूरी करने की कोशिश की।

मै आपको याद दिलाऊ १९४७ के उन मुसीबत के दिनों की जब अपने बाल बच्चों को जिनको वे बचा सकते थे उन को साथ ले आने के अलावा और सब कुछ छोड छाड़ कर लाखों लोग एक तरफ़ से दूसरी तरफ भाग रहे थे। उन विपत्ति के दिनों मे भी उन्होंने बड़े धैर्य से काम लिया और अपनी पूरी शक्ति से उनकी रक्षा का ठीक ठीक प्रबन्ध किया।

जो सब से बड़ा काम उन्हों ने किया उसको महाराजा साहब अच्छी तरह जानते है क्योंकि उन्हों ने उसे स्वय अच्छी तरह देखा था। जितने बडे बड़े महाराजा अपना राजकाज चलाया करते थे उनके हाथों से उसे उन्हों ने छुड़वाया। जब स्वराज्य मिला तब हिन्दुस्तान मे हमारे सामने सब से बडा सवाल यही था कि हिन्दुस्तान के पूर्व और पश्चिम दोनों ओर हिन्दुस्तान के दो पख कट जाने के बाद क्या वे छोटी बडी रियासतें जो एक दो नही ५०० से ज़्यादा थीं बनी रहेगी ? लेकिन सरदार वल्लभभाई ने ऐसा काम किया कि ये सब जोर ज़बरदस्ती के कारण नही बल्कि अपनी रज़ामन्दी से भारत में मिल गयी। इस तरह वह हम सबों के लिये एकछत्र राज्य छोड़ गये। उन्होंने यह इतना बड़ा काम किया कि इसका उदाहरण हमारे देश के इतिहास में नहीं है और मै समझता हू कि दुनिया के दूसरे देशों के इति-हास में भी नही है। जिन लोगों की इतनी रियासतें गयी उनकी मर्जी से, खशी से, रजामन्दी से

एक राज क़ायम कर देना, और वह राज भी ऐसा वैसा नही बल्कि प्रजातन्त्रात्मक राज्य जिसमें हरेक आदमी का अपना अधिकार हो कोई आसान काम नही था। आज हिन्दुस्तान में एक राज्य है। आज हिन्दुस्तान में न कोई राजा है और न कोई प्रजा। आज हिन्दुस्तान में सब के सब राजा है और सब के सब प्रजा।

पर साथ ही सरदार हमारे सर पर भारी जवाबदेही छोड गये है। हमें आज उसको महसूस करना चाहिये और जो काम वह छोड गये है हमारा फर्ज है कि उस को हम पूरा करे। हम अकसर इस बात को भूल जाते है और कभी कभी उतावलेपन और घबराहट मे समझते है कि अभी कुछ काम नही हुआ है। पर कोई काम एक दिन मे तो होता नही। सब में समय लगता है। सब के लिये आदमियों की जरूरत होती है, ऐसे लोगों की जो मुल्क की खिदमत मे जितनी जिम्मेदारी हमारे ऊपर है उसे अच्छी तरह से अदा करे और उसे अन्जाम दे सके। हमारे सामने कोई रुकावट नही है। अगर कोई रुकावट है तो वह हमारी अदूरदर्शिता है। इसलिये सरदार हम सब के लिये यह सबक छोड़ गये है कि हम सब को लाजिमी है कि देश को सामने रख कर हम मिल जुल कर काम करे। हम अक्सर लोगों को कहते हुए सुनते है कि हम को ईश्वर ने यह नही दिया, वह नही दिया। मै पूछता हू कि ईश्वर ने हमको क्या नही दिया है ? ईश्वर ने हम को सब कुछ दिया है। मै ईश्वर से प्रार्थना करता हू कि हमारे दिलों के अन्दर एक दूसरे के साथ विश्वास हो और एक दूसरे से मुहब्बत हो और जो काम सरदार छोड गये है उसको हम पूरा कर सके। इस देश मे अलग अलग सम्प्रदाय के लोग रहते है। यह काम हमारे मुल्क के अन्दर सब से जरूरी है कि सब एक सूत्र में बध जाये। मुहब्बत के सूत का बन्धन मजबूत होता है। लोहे की जजीर कमजोर हो सकती है लेकिन उस सूत का बन्धन मजबूत होता है। मै उम्मीद करता हू कि अलग अलग सम्प्रदाय के लोग अलग अलग भाषा के बोलने वाले सब मिल कर रहेगे और भारत के महान् बनाने का जो काम सरदार ने शुरू किया उसको पूरा करेगे।

सार्वजनिक सभा, पटियाला

पटियाला मे सार्वजनिक सस्थाओं द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब में ता० २ अक्टूबर को राष्ट्रपतिजी ने कहा—

श्रीमान् राजप्रमुख साहब, बहनो और भाइयो,

आपने जिस प्रेम से मेरा स्वागत किया है और इतने मानपत्र देकर मेरा मान बढ़ाया है उसके लिये आप सब को हृदय से धन्यवाद देता हू।

आप से यह ठीक कहा गया है कि आज महात्मा गांधी का जन्मदिन है। हमारा और आपका यह बड़ा फ़र्ज है कि जो कुछ सीख उनसे हम को मिली है, जो शिक्षा उन्हों ने हमे दी है, हम उस पर विचार करें और यह इरादा कर ले और अपने मन मे दृढ़ निश्चय कर ले कि ईश्वर ने जितनी भी शक्ति दी है उसे पूरी तरह लगा कर हम उनकी शिक्षा के अनुकूल ही चलेगे और जो काम महात्मा गाधी जी ने इस देश के और सारे ससार के लिये शुरू किया था और जो पूरा नही हो सका उसको हम पूरा करेगे। आपको इस बात पर विचार करना चाहिये कि महात्मा गाधी महात्मा कैसे हुये। जन्म से तो वे महात्मा पैदा नही हुए। उन्होंने अपने तप से, अपनी कुर्बानी से, अपनी सचाई से और अपनी सेवा से महात्मा पद प्राप्त किया था और केवल इस देश के लोग

ही नही सारे संसार के लोगों ने उनको महात्मा माना था और आज भी मान रहे है। उनकी बड़ी खूबी यह थी कि वह दूसरों की कमजोरी को भी अपने तपोबल से खीच लेते थे और उनमे भी वह ऐसी अपूर्व शक्ति और जान भर देते थे कि जो पहले कुछ ज़्यादा न कर सकते थे वे भी बड़े बडे काम कर लेते थे। इस देश मे जो मुर्दनी छायी हुयी थी, विदेशी सल्तनत के मातहत जो हम यह समझने लग गये थे कि हमारे लिये उससे कोई छुटकारा नही, उस मुर्दनी और खयाल को उन्होने दूर ही नही कर दिया बल्कि हमारे सामने उन्होंने एक ऐसा कार्यक्रम रखा एक ऐसा हथियार रखा जिसके ज़रिये हम इस देश को आज़ाद कर सके और स्वतन्त्र देशों मे भारत को आदरणीय स्थान दिला सके।

१९२०-२१ की बात है। उन दिनों महात्मा गाधी जी ने अपना काम शुरू किया था। वह सारे देश के अन्दर अपनी आवाज़ पहुचा रहे थे। देश मे स्वराज्य कायम करने के लिये लोगों के दिलों मे नया उत्साह, नये हौसले, नये वलवले पैदा हो रहे थे। उस वक़्त ऐसे अनेक विचारवान् लोग थे जो यह सोचते और कहते थे कि इतनी बड़ी सल्तनत का—ऐसी सल्तनत का, जो दुनिया की बड़ी से बड़ी शक्तिशाली सल्तनतों में भी सब से ऊंचा दर्जा रखती है—मुकाबला गाधी जी कैसे कर सकेंगे। वे सोचते थे कि हमारे पास न तो फौज है, न हमारे पास हथियार और न हमारे पास उन साधनो मे से कोई भी साधन है जिनके ज़रिये से आजकल ससार का एक मुल्क दूसरे मुल्क पर हुकूमत करता है। इसलिये उन्हे यह शंका थी कि इस देश के निहत्थे, हथियारों के बिना, ब्रिटिश गवर्नमेंट का मुकाबला कैसे कर सकेंगे और उन्हे इस देश से कैसे निकाल सकेंगे। उस वक़्त एक अंग्रेज़ ने कहा था कि गाधी जी ने दुनिया के सामने जो अहिसा का नया हथियार रखा है वह एक बहुत ही जबरदस्त हथियार है और उन्होंने हिन्दुस्तानियों को यह कह कर कि तुम किसी के साथ कोई सख्ती न करो, किसी पर हाथ न उठाओ, अपनी तरफ़ से किसी किस्म का हथियार काम मे न लाओ ब्रिटिश गवर्नमेंट के सब हथियारों को निकम्मा बना दिया है और उन्होंने अपने आदमियों के हाथों से हथियार छीन कर ब्रिटिश गवर्नमेंट के हाथों से भी हथियार छीन लिये है। उसका यह कथन ठीक निकला। हम लोग, जिनके पास कोई हथियार न थे, उस सल्तनत का मुकाबला कर सके जिसके पास हर तरह के हथियार मौजूद थे और सिर्फ़ मुकाबला ही न कर सके, अन्त मे हम ने फ़तह भी पायी। जब हम दुनिया मे अहिसा की करामात इस खूबी के साथ देख चुके है तो हमारे दिल मे अहिसा की शक्ति के बारे में कोई शक न रहना चाहिये। एक प्रकार से ससार आज एक खौलता हुआ कड़ाह बना हुआ है। आजकल सभी देश एक दूसरे के साथ हमदर्दी के बदले बैर रखते है, एक दूसरे के साथ विश्वास के बदले अविश्वास रखते है। कोई किसी पर भरोसा नही करता। सब इस होड़ मे लगे हुए है कि किस तरह से हम अपने हथियारों की शक्ति को इतना बढा ले जिसमें दूसरा कोई हमारा मुकाबला न कर सके। संसार की बड़ी बड़ी शक्तियों में यह होड़ चल रही है। यही कारण है कि दुनिया में अब इतनी मुसीबत उन लोगों को भुगतनी पड़ रही है जो बेचारे न तो खुद इस झगड़े मे पड़ना चाहते है और न जिनके लिये इस झगड़े में पडना ज़रूरी ही है। इसके अलावा जो किसी कारण से उसमें पड़ जाते है वे अपने को उससे निकाल नही सकते। अतः आज दुनिया को गांधी जी के रास्ते की ज़रूरत है। अगर आज गांधी जी होते तो शायद हम संसार के सामने यह नमूना भी पेश कर सकते कि जिस तरह से हथियारों के बिना हमने स्व-

राज्य हासिल किया था उसी तरह से सारे संसार में शांति की स्थापना करने में भी हम काफ़ी काम कर सकते हैं । मगर शायद ईश्वर को अभी कुछ और इम्तिहान लेना मज़र है और उसने उनके देश के भाई के हाथों से ही उन्हें इस संसार से उठा लिया । आज हमें और आपको इस का खेद है, अफ़सोस है । दुनिया भी इस चीज को देखती है, महसूस करती है कि गांधी जी अगर होते तो शायद ऐसा कोई रास्ता निकाल देते जिस पर चल कर इन्सान इस खोलते हुए कड़ाह से नजात पा सके । इसलिये यह हमारा और आपका धर्म है कि महात्मा जी की याद करे और जो रास्ता उन्होंने बताया है उस पर चलने का प्रयत्न करे ।

भारत को महात्मा गाधी ने बताया कि अहिसा सब से ज्यादा जरूरी चीज है । आप लोग जानते है कि हमारे देश मे कई धर्म के मानने वाले लोग है, कितनी ही प्रकार की जबानो के बोलने वाले लोग है । अगर कोई हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक एक बार सफ़र करे तो वह देखेगा कि इस देश मे कितनी भाषा के बोलने वाले लोग हैं और यहां कितनी क़िस्म की रस्म रिवाज फैली हुई हैं और यहां कितने धर्म के मानने वाले लोग है । ऐसे मुल्क के अन्दर अगर अहिसा न हो तो मुल्क कैसे चलेगा ? एक भाषा बोलने वाले दूसरी भाषा के बोलने वाले से झगडते रहे तो देश के अन्दर शान्ति कैसे हो सकती है ? आप यह तो जानते ही है कि ऊपरी तफर्रुकात के होते हुये भी भारत एक है और आज से नही सदा से एक है । हां. एकछत्र राज्य अब तक न था । आज वह भी कायम हो गया है । जो एकता भारत के अन्दर उसी तरह गुथी हुई थी जिस तरह हार के अलग बिखरे हुए मणियों में गुथी होती है और जो सारे भारत को एक सूत्र मे बांध कर रखे हुई थी वह अब एक छत्र राज्य के रूप मे स्पष्ट प्रकार से मूर्त हो गई है और हर तरह से आज हम एक हो गये है । उस एकता को कायम रखना, उसको और भी ज्यादा मजबूत बनाना और उसे हमेशा के लिये अटूट बनाना हमारा और आपका काम है । इसलिये जहां जहां मै जाता हू वहां के लोगो से यही कहता हूं कि वे अपने अपने काम को पूरा करने मे लग जाये । अपने हक़ों को हर एक बरते पर उसके साथ ही वह अपने काम को, अपनी जवाबदेही को, अपने कर्तव्य को भी पूरा करता रहे और आपस के भाईचारे, एक दूसरे के साथ रवादारी और सहिष्णुता को बरते । अगर हम मे से किसी से गल्ती भी हो तो उसे दरगुज़र करे । मै समझता हूं कि हमारे मुल्क में सामान काफ़ी है । हमारे लोग मामूली तौर से कुछ ज़्यादा ऐसे मिज़ाज के नही है जो हमेशा लड़ते झगड़ते रहें । हम शान्ति पसन्द करने वाले लोग है और वह आज से नही, हज़ारों वर्षो से है । भिन्न भिन्न धर्म के मानने वाले इस देश के अन्दर रहते आये है, एक दूसरे को बर्दाश्त करते रहे हैं और एक दूसरे के साथ प्रेम करते रहे है । मिल जुल कर हमने एक ऐसी सभ्यता, एक ऐसा तमुद्दन तैयार किया है कि आज कोई नही कह सकता कि वह किसी एक जाति का है, किसी एक धर्मवालो की या किसी एक भाषा बोलने वालो की देन है । वह तो सभी की तैयार की हुई चीज है । हम सब के लिये वह बड़ी दौलत है । उसे क़ायम रखना सारे संसार के सामने पेश करना हमारा और आपका धर्म है । इसलिये मै चाहता हूं कि आप स्वराज्य की जिम्मेदारी को भी अच्छी तरह से समझें ।

आपने सुना ही होगा कि चन्द दिनों के बाद ही, थोड़े दिनों के अन्दर ही इस मुल्क के अन्दर चुनाव होने वाला है । हमारे देश का भविष्य उस चुनाव के नतीजे पर आइन्दा निर्भर होगा ।

अब तक अगर कोई तकलीफ़ हमें होती थी, हमारे ऊपर कोई मुसीबत होती थी तो हम उसकी जिम्मेदारी अक्सर दूसरों पर डाल सकते थे और डालते थे। दूसरों पर यह ज़िम्मेदारी डालना कभी कभी सही होता था, कहीं कहीं ग़लत भी होता था मगर हम को डालने का मौक़ा था और हम कह सकते थे कि उन मुसीबतों के लिये हम जिम्मेदार नहीं हैं, वे दूसरों की वजह से हमारे सर पर पड़ी हैं। मगर अब आप में से जितने लोग २१ वर्ष के हैं, चाहे वे स्त्री हों चाहे पुरुष, सब को हक़ मिल गया है कि सब मिल कर अपने नुमाइन्दे चुनें और आपके चुने हुए लोगों के हाथों में आपके भाग्य का बनाना और बिगाड़ना रहेगा। अब आप न तो राजाओं पर इल-ज़ाम डाल सकते हैं न ब्रिटिश गवर्नमेंट पर और न किसी दूसरे आदमी को तलाश करके उस पर इलज़ाम डाल सकते हैं। अगर कोई बात बिगड़ती है तो उसकी सारी ज़िम्मेदारी हमारे देश के लोगों पर होगी और अगर कोई बात सुधरती है तो उसका सारा श्रेय आपको मिलेगा और मिलना चाहिये भी। तो यह बड़ी ज़िम्मेदारी हम सब पर आ गयी है। मैं आपसे कहता हूं कि आप इस ज़िम्मेदारी को जितना ही महसूस करेंगे और महसूस करके ठीक तरह से अंजाम देंगे उतना ही आपके लिये सुख और शान्ति का रास्ता खुलेगा। अगर इस जिम्मेदारी को आपने नहीं समझा और स्वार्थवश छोटे मोटे गिरोहों में बंटकर किसी फ़िर्के के वश में आकर इस ज़िम्मेदारी को ठीक ईमानदारी और निश्चय के साथ नहीं बरता तो उसका नतीजा भी आपको भुगतना पड़ेगा और उसकी सारी ज़िम्मेदारी आपके सर होगी। मेरा खयाल है कि इस नये विधान के मुताबिक़ हमने जो यह नयी बात शुरू की है अर्थात् २१ वर्ष की उम्र वाले सब बालिग़ स्त्रियों और पुरुषों के हाथ में जो देश की बागडोर दे दी है वह बात एक तरह से अंधेरे में छलांग मारने के समान है; गिरेंगे या उभरेंगे और अगर गिरे तो सम्भल कर खड़े भी हो सकेंगे या नहीं यह सब तो ईश्वर ही के हाथ है। बहुत कुछ यह बात आपके हाथ में भी है। मुझे आशा है कि आप साफ़ पार उतरेंगे और खड़े उतरेंगे और आइन्दा के लिये हमारा रास्ता प्रशस्त होगा। यह तभी हो सकेगा जब आप अपनी ज़िम्मेदारी को समझ कर बरतें।

गांधी जी के जन्म दिन पर मैं आप सब को याद दिलाना चाहता हूं कि स्वराज्य हासिल करना उतना मुश्किल न था जितना स्वराज्य से लाभ उठाना और उसको क़ायम रखना मुश्किल है। उस वक़्त हमारे पास दूसरे प्रकार की शक्ति भी थी। जिस वक़्त हम अंग्रेजों से लड़ाई कर रहे थे उस समय हमें एक प्रकार की ताक़त की ज़रूरत थी; सबों ने उसे मुहैया करने में हाथ बटाया था। आप यह न समझें कि अब क़ुर्बानी का समय नहीं रहा, आप यह न समझें कि अब त्याग का समय नहीं रहा और भोग का समय आ गया है। जो सच्चे लोग होते हैं उनके लिये त्याग ही भोग होता है, उनके लिये त्याग और भोग में कोई अन्तर नहीं होता। हम और आप में से जो त्याग और भोग में फ़र्क करते हैं उनको समझना चाहिये कि अभी भोग का समय नहीं आया है। वह समय तब आयेगा जब भारत से ग़रीबी दूर हो जायेगी, बीमारी दूर हो जायेंगी और जब जैसा कि हमारे पुराने ग्रन्थों में लिखा हुआ है इस देश में दूध और दही की नहरें बहने लगेंगी, इस देश में क्षीर समुद्र बहने लगेगा, जब यहां एक भी आदमी निरक्षर नहीं रह जायेगा और कोई बीमारी नहीं रह जायेगी। गांधी जी का रामराज्य तभी आयेगा। गांधी जी रामराज्य का ज़िक्र किया करते थे। कुछ लोग ग़लतफ़हमी से उसका दूसरा अर्थ लगा लेते थे। लेकिन गांधी जी के राम-राज्य का अर्थ वही है जो रामायण में दिया हुआ है। उसका अर्थ यह है कि जहां सब लोग धर्म

पर चलते हों, जहां कोई बच्चा मरता नहीं हो, जहां कोई व्यक्ति बीमार नहीं पड़ता, जहां सब लोग सुखी हों, जहां साधु सन्तों की क़द्र होती हो, जहां त्यागी और तपस्वी सब से बड़े माने जाते हों वहीं राम राज्य है और वह रामराज्य हमें अभी स्थापित करना है। स्वराज्य मिल गया है लेकिन अभी रामराज्य क़ायम करना है। अतः मैं यह चाहता हूं कि सब मिल कर उस रामराज्य को क़ायम करने में हाथ बंटायें। आप यह न समझें कि अब कोई काम बाक़ी नहीं रहा। अभी बहुत काम बाक़ी है जिनको पूरा करना हमारा और आपका फ़र्ज है। आप में से किसी को मायूस होने की ज़रूरत नहीं है, किसी को नाउम्मीद होने की ज़रूरत नही है। प्रायः ३०–३५ वर्ष पहले जो भारत का चित्र था उससे भारत के आज के चित्र को मिला कर यदि आप देखें तो आपको मालूम होगा कि इस बीच में कितनी बड़ी करामात हो गयी है। आज बहुत सी चीज़ें आप देख सकते है जिनका उन दिनों में हम अनुमान भी नहीं कर सकते थे। मै तो यह कहता हूं कि जिस आदमी ने भी गांधी जी की जीवनी पढ़ी उसमें यह विश्वास भी होना चाहिये कि उसको भी ईश्वर ने शक्ति दी है और वह चाहे तो गांधी जी हो सकता है। गांधी जी महात्मा हुए तो कोई वह जन्म से महात्मा नहीं थे। उन्होंने अपने तप से, अपने कर्म से महात्मा पद प्राप्त किया था। इसलिये मैं तो यह चाहता हूं कि आज भारत के अन्दर कोई आदमी यह न सोचे समझे कि वह कमज़ोर है और ईश्वर ने उसको ऐसी कोई चीज़ नही दी है जिससे वह तरक्क़ी कर सके। हरेक को अपने ऊपर भरोसा करना चाहिये। अपने ऊपर भरोसा करके अपने पैरों पर खड़ा होकर अपने त्याग, तप और परिश्रम से वह ऊंचे से ऊंचे पद पर पहुंच सकता है। मै कहता हूं कि आज से ३०-३५ साल पहले मैं स्वप्न में भी यह न सोच सकता था कि मेरे जैसा एक तुच्छ आदमी आज के भारत का राष्ट्रपति हो सकता है। मै कहता हूं कि आप में से हरेक के पास यह शक्ति है कि वह देश का राष्ट्रपति बन सके। लेकिन शर्त यह है कि उसके लिये जो त्याग आवश्यक है और जिस सेवा की देश उससे अपेक्षा करता है उसे करने के लिये वह तैयार हो जाये। सच पूछिये तो जब राष्ट्र-पति होने का आपके दिल में ख़याल भी नही होगा तभी आप राष्ट्रपति हो सकेंगे। मैं तो यह भी कहूंगा कि राष्ट्रपति होना ज़रूरी भी नही है। बिना राष्ट्रपति हुए भी आप सेवा का काम कर सकते हैं। अगर आप राष्ट्रपति होने की इच्छा नहीं रखेंगे तो जल्द राष्ट्रपति बन सकेंगे।

इसको आप मज़ाक न समझें। यह जनता के हाथ में है कि जिसको चाहे वह राष्ट्रपति बना दे और या उसे पद से हटाकर शहर में झाड़ू देने के लिये भेज दे। हम को दोनों के लिये तैयार होना चाहिये। आप यह न समझें कि आप राष्ट्रपति होकर ही सेवा कर सकते है। यदि आदमी छोटे से छोटे आदमी का काम करता हैं और उस काम को बड़ा मानकर अंजाम देता है तो वह छोटा काम भी बड़ा हो जाता है और उस आदमी को वह बड़े दर्जे तक पहुंचा देता है। उसी तरह राष्ट्रपति के पद को मै चाहूं तो भ्रष्ट कर सकता हूं और उसके विपरीत जो छोटे काम में लगे हुए हैं उसको वे लोग चाहें तो बड़ा कर सकते हैं। यह हमारे हाथ में है। गांधी जी ने देश को क्या न बना दिया पर जब गांधी जी स्कूल में पढ़ने गये तो कौन कह सकता था कि वे संसार भर में सब से बड़े महात्मा होंगे। उन्होंने इस पद को प्राप्त किया। इसी तरह से मै समझता हूं कि वोट देने की जो बात आयी है उसको आप छोटा नही समझेंगे। बड़े से बड़े काम में आदमी का इम्तिहान नही होता है। इम्तिहान छोटे से छोटे मौक़े पर ही होता है। किसी ने कहा है कि बड़े से बड़े आदमी का असली महत्व वह जानता है जो दिन रात उसके साथ रहता है। वह इस लिये

नही कि वह उसके बड़े कामों को देखता है बल्कि इसलिये कि वह उसके छोटे से छोटे कामो को देखता है। वह देखता है कि बडा आदमी किस तरह से रहता है, किस तरह खाता है, किस तरह बैठता है। कोई आदमी अपने साथ के खिदमतगार की नज़र से नही बचा रह सकता क्यों कि वह उसके कामों को जानता है। अतः मै तो यह समझता हूं कि छोटे मे छोटे काम को भी ईश्वर को सामने करके करते जाना चाहिये। हम नही देखते पर ईश्वर सब कुछ देखता रहता है। अगर आप सब काम को ईश्वर को सामने देखकर करते है तो आपसे गल्तिया नही हो सकती है। अगर गल्तिया भी हो जाये तो उनको ईश्वर माफ कर देता है। तो ज़रूरत आज देश को इस चीज की है कि हम अपने कर्तव्य को समझे और उसके अनुसार काम करे। अगर हमने इस तरह से काम किया कि हिन्दू और सिख झगडे हिन्दू और मुसलमान झगड़े तथा और कितने ही तरह के झगड़े खड़े हो तो हमारा काम नही चल सकेगा। राजनीतिक क्षेत्र में दलो के बीच मतभेद होता है और मतभेद होना जरूरी हो भी सकता है। मगर सच्चे आदमियों मे मतभेद होने पर बुरी भावना पैदा नही होती है। बुरी भावना तभी पैदा होती है जब आदमी सच्चे नही है, जब आदमी मे स्वार्थ आ जाता है। अब जैसा हमारा सविधान बना है उसके अनुसार कितने ही तरह के लोग लेजिस्लेचर मे आयेंगे। अगर हम एक दूसरे को झूठा और बेईमान समझेंगे तो हमारा काम नही चलेगा। न किसी को अपने को बुरा मानना है और न दूसरे से अपने को बेहतर मानना है बल्कि यह मानना है कि हरेक आदमी अपनी गल्तियों को ज्यादा समझता है। हम मे क्या ऐब है इसको हम आप से अधिक जानते है। उसी तरह से आप मे क्या ऐब है इसको मै नही जान सकता और आप ही जान सकते है। तो जिस चीज को आसानी से जान सकते है उसी को हमे जानना चाहिये। ऐबजोही से बढकर अपराध दूसरा नही है। राजनीति का काम तभी चल सकता है जब हम एक दूसरे पर विश्वास करे। अगर हम सब अपनी अपनी जगह ईमानदारी से काम करते रहेगें तो देश का कल्याण होगा। मै चाहता हू कि इस तरह के खयाल पैदा हो। और आगे की काउन्सिलो मे जो पार्टिया हो वे एक दूसरे की इज्जत और कद्र करे; एक दूसरे का विश्वास करे। यह जज्बा हमारे दिल मे होना चाहिये।

आप ऐसे सूबे मे रहते है जो हमारा दूसरे मुल्कों के साथ सरहदी सूबा है। जो सरहदी सूबा होता है उस पर देश की रक्षा का भार होता है। अगर आप एक दूसरे से लडते रहेगे, एक दूसरे पर अविश्वास करेगे, एक दूसरे से नफरत करेगे तो आप देश की रक्षा कैसे कर सकते है। वह आप तभी कर सकते है जब एक दिल हो कर आप काम करे। मैं चाहता हू कि यहां आप जितने लोग है एक राय हों और एक दूसरे की कमजोरी को जानते हुए उसको बर्दाश्त करने के लिये तैयार हो जाये। मै यह जानता हू कि हाल में ही लाखों भाइयों को मुसीबत बर्दाश्त करनी पड़ी है और अभी भी वे उसे बर्दाश्त कर रहे है। गवर्नमेंट का यह काम है कि जहां तक हो सके वह उनकी सेवा करे। मै उनकी मदद करने की बात नही कहता हू, मै उनकी सेवा करने को कहता हू। यहा आकर जब वे आपसे घुल मिल गये है तो जो उनकी मुसीबत है वह आपकी भी होनी चाहिये और जिस तरह से एक खानदान मे लोग खुशी और मुसीबत आपस में बांट लेते है उसी तरह से सब को मिल जुल कर एक दूसरे की मुसीबत बाट लेनी चाहिये। यह हमारा और आप सब का काम है। मै उम्मीद करता हू कि इसमे आप सच्चाई के साथ पड़ेगें और इसको पूरा करेगें।

मैं और ज़्यादा क्या कहू। आपने जो आदर दिखलाया और मान बढ़ाया उसके लिये मैं आपको एक बार फिर धन्यवाद देता हूं।

यादवेन्द्र स्कूल, पटियाला

तारीख ३-१०-५१ को यादवेन्द्र स्कूल पटियाला में राष्ट्रपति जी ने कहा —

श्रीमन्त राजप्रमुख साहब, हैड मास्टर साहब तथा बच्चो,

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आज सवेरे सवेरे मै यहा आ सका और आप सब से एक साथ मिल सका। जैसा अभी हैड मास्टर साहब ने बतलाया यह आप का स्कूल आप की तरह से एक बच्चा है और मुझे आशा है कि जैसे जैसे आप सब बड़े होगे वैसे वैसे यह स्कूल भी बढता जायेगा और जब आप सब इस स्कूल से निकलेगे और जिन्दगी मे अपने अपने काम मे लग जायेगे तो मै उम्मीद रखूगा कि आप इस स्कूल को याद रखेगे। जिस तरह से महाराजा साहब ने अपने पढ़ने के स्कूल को याद रखा और जब वह हाथ से निकला तो उस की जगह पर इस दूसरी सस्था को कायम कर के उसे क़ायम रखा उसी तरह आप इस स्कूल की मदद करेगे जिम मे वह दिन प्रति दिन तरक्की करे और आगे बढ़े ।

यह बडे सौभाग्य की बात है कि आप एक ऐसे स्कूल में दाखिल हुए जहा आप को पूरा मौका मिलता है। जब मै आप की उम्र का था तो मे कह सकता हू कि—और जो दूसरे लोग हमारी उम्र के होगे वे भी कह सकते है कि——इस समय जो सुविधा बच्चो को मिलती है वह उस समय नही थी। उस वक्त हम आजाद भी नही थे। उस वक्त हमारे सामने और चीजे भी नही थी; उस समय हम बच्चो को मुल्क के बड़े बडे लोगो से मिलने का, उन का दर्शन करने का मौका भी नही था। हम स्कूल मे किताबे ले कर जाते थे और साल के आखिर मे इम्तिहान पास कर के ऊपर के दर्जे मे चले जाते थे और खुश रहते थे। थोडा बहुत खेलने का सामान रहता था लेकिन वह भी हर स्कूल में नही था। खेल का सामान बहुत कम स्कूलो मे था। उस समय स्कूलो मे हैड मास्टर और दूसरे शिक्षक वैसे नही थे जैसे आप को मिले हे। इस लिये मै ने कहा कि आप आज खुशकिस्मत है और यह सब लाभ आप को मिला है और मौका मिला है। अतः इस से जहां तक हो सके नफ़ा उठाना चाहिये । यह वक्त फिर हाथ न आयेगा, जिन्दगी में जो वक़्त चला जाता है वह फिर हाथ मे नही आता है। दिन कटते जाते है और आदमी की उम्र बढ़ती जाती है और समय निकलता जाता है । इस लिये कभी किसी चीज को आगे के लिये उठा नही रखना चाहिये । मै जब आप के ऐसा विद्यार्थी था तो जो सबक़ रोज मिलता था उस को मै रोज पढ़ लिया करता था । मै यह भी जानता हूं कि कुछ साथी थे जो यह सोच कर नही पढ़ते थे कि जब इम्तिहान आयेगा तो उस वक़्त सब पढ़ जायेंगे। मै ने यह देखा कि जो रोज ब रोज़ सबक याद कर लेते थे वे आगे चल कर औरों के मुकाबले में अच्छे रहते थे । उसी तरह से मै चाहता हूं कि किसी चीज को आप रोक कर इस इन्तजार में नही रखें कि समय आयेगा तो कर लेंगे। आप को रोज ब रोज सबक याद कर लेना चाहिये। जिस तरह रोज का खाना खाते है, उसी तरह पढने का काम भी होना चाहिये, उसी तरह और काम जो स्कूल में सिखाया जाता है उसे रोज़ ब रोज कर लेना चाहिये। आप देखेंगे कि इस तरीक़े से आप को कितनी सहूलियत रहती है। इम्तिहान पास करना आसान होता है। हमारे मुल्क में लोग इम्तिहान पर बहुत जोर देते है और सारा वक़्त उसी में लगाते हैं। आप को यहां उस के साथ साथ और चीज़ें बताई जाती है । आप यह खयाल रखें कि वही आदमी ठीक तालीम पाया हुआ कहा जाता है जिस का शरीर भी मजबूत हो और जिस का दिमाग भी

अच्छी तरह से तेज़ हो गया हो । यह दोनों चीजें साथ नही रहेगी और एक चीज़ आगे बढ जाये, चाहे वह शरीर हो या दिमाग हो, तो आप समझें कि वह ठीक नही । दोनों को साथ साथ चलना ज़रूरी है। इस लिये ताकत को भी बढ़ाना है और शरीर की मज़बूती के साथ ही दिमाग को भी ऐसा बनाना है कि वह उन्नत हो । यह भी बहुत ज़रूरी है कि आप कोई बात छिप कर नही करे। जो कुछ करना हो साफ़ साफ़ करे। जो आदमी कोई चीज़ छिपाता नही वह खराब काम नही कर सकता क्यो कि सब के सामने लोग खराब काम नही कर सकते। तो अगर इस छोटी बात को आदमी ठीक से बरते कि कोई काम छिपा कर नही करना है तो वह गलतियों से बच जाता है । इस लिये मै बच्चों से कहना चाहता हूं कि इस चीज़ को सीखें और हिम्मत के साथ सच्चाई के साथ अपना काम करे और हैड मास्टर से और स्कूल के जो दूसरे बडे अधिकारी है जो आप को सिखाते है उन से हमेशा अदब के साथ पेश आना चाहिये। आज कल के जमाने मे यह और भी जरूरी हो गया है जब हम देखते है कि इन चीज़ों की तरफ ध्यान नही दिया जाता है । मै उम्मीद करता हू कि आप दिन दिन तरक्की करेगे और स्कूल मे जो कमी है उस को तो जो चलाने वाले है वे पूरा करेगे उस की चिन्ता आप को नही है । मै आप सब को बधाई देता हूं ।

राजपुरा मे अभिनन्दन

तारीख ३-१०-५१ को राजपुरा डवलपमेंट-बोर्ड द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब मे राष्ट्रपति जी ने कहा--

श्रीमन्त राजप्रमुख साहब, श्री अजीत प्रसाद जी, श्री उपमन्त्री जी, बहनो और भाइयो,

आप की इस कौलोनी के साथ पहले मेरा कुछ खास ताल्लुक था। बहुत दिनों से मेरी यह ख्वाहिश थी कि एक बार चाहे थोडी देर के लिये ही सही मै यहां आऊं और आप सब भाइयो और बहनो से मिलू। मगर वह ख्वाहिश आज तक पूरी न हो सकी थी। आज वह पूरी हुई है और वह भी थोड़ी देर के लिये । यहा जो कुछ मै ने देखा उस को देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई क्यों कि जिस वक्त इस कौलोनी से मेरे ताल्लुकात थे उस वक्त तो हम लोग केवल नक्शे बना रहे थे और सोच रहे थे कि किस तरह से क्या काम किया जाये, कैसे काम बढ़ाया जाये और किस तरह से मकान बनाये जाये। अगर कुछ काम शुरू भी हुआ था तो वह बडे पैमाने पर शुरू हुआ था। मगर आज देखता हूं कि इतने बहुत काफी मकान बन गये है, कारखाने मे काफी लोग काम सीख रहे है, तालीमी संघ की ओर से कितने ही बच्चो को शिक्षा दी जा रही है । एक अस्पताल की नीव भी मेरे हाथों से आज डलवाई गई है । यह सब देख कर मुझे प्रसन्नता है । मै जानता हूं कि यहां आप बहुत तकलीफ़ और मुसीबत बर्दाश्त कर के आये है। खास कर आप लोगो की तो एक और भी मुसीबत रही है। आप को एक जगह से दूसरी जगह और दूसरी जगह से तीसरी जगह हटना पड़ा है, मगर अब मुझे उम्मीद है कि आप लोग जो यहा रह गये है खुशी से अपने दिन बिता सकेगे और आप के लिये यहां कुछ न कुछ रोज़गार या धधा भी हो ही जायेगा । जो लोग यहां शुरू में आये थे और जिन को यहां बसाने की बात सोची गई थी उन की तायदाद तो आज यहां जितने लोग बसे हुए है उन से कही ज़्यादा थी। उन सब को यहां बसाने मे कुछ मुश्किल महसूस की गई और इस लिये उन में से कुछ लोगों को दूसरी जगहों

को ले जाया गया । मैं समझता हूं कि अब एक चौथाई लोग यहां रह गये है। अपनी हिम्मत की वजह से आप यहां रह गये है । मुझे उम्मीद है कि आप लोग यहां सुख और आनन्द से रह सकेंगे ।

जो लोग निर्वासित हो कर और अपना सब कुछ छोड छाड़कर दूर से यहां आये है उन की मुसीबत में हम लोग जो इधर के रहने वाले है उन से हमदर्दी रखते है । पर उन की सहायता का काम बहुत बड़ा था; लाखो बहनो और भाइयों को बसाने का सवाल था। उस के हल करने में देर भी लगती है पैसे भी खर्च होते है। साथ ही जो कुछ आप छोड आये थे उस के मुकाबले मे यहां आप कुछ कम ही पा सकते है। मुझे खुशी है कि इस सवाल के हल करने मे कुछ कामयाबी हो गई है । आप के लिये यहा मकान बन गये है और यद्यपि मकान छोटे है तो भी वे साफ सुथरे है। चारों तरफ सडकें भी बन गई है, बाल बच्चो के पालने के लिये या दूसरे कामो के लिये जरूरी चीजें भी यहा मुहय्या होने लगी है । मुझे यह भी उम्मीद है कि आप अपने पैरो पर खडे हो कर और हर तरह से हिम्मत बाध कर जो कुछ अपने लिये कर सकते है करेंगे। गवर्नमेंट की तरफ से चाहे वह पेप्सू की गवर्नमेंट हो चाहे गवर्नमेंट आफ इंडिया हो कुछ मदद तो आज मिल ही रही है और आगे भी मिलेगी । मै तो सिर्फ आप से यह कहने आया हू कि आप जिस वक्त आये थे, उस समय जो हालत थी और आज जो हालत है दोनो मे ऐसा फर्क है जिसे आप भी महसूस कर सकते है । भविष्य मे कितनी तरक्की कर सकेंगे इस का फैसला आप पर भी निर्भर करेगा क्यों कि कोई भी गवर्नमेंट या दूसरी कोई संस्था ऐसी नही है जो आप को उस हालत मे पहुचा सके जिस मे आप पहले थे। वह तो आप का अपना ही काम है । जो आदमी हिम्मत करता है उस की ईश्वर भी मदद करता है । इस लिये मेरा आप से कहना है कि आप अपनी ओर से हिम्मत करें और ईश्वर आप की मदद करेगा । आप की जो जरूरतें है उन की देख रेख के लिये मिनिस्टर साहब मौजूद है, पेप्सू गवर्नमेंट के मिनिस्टर और भारत सरकार के मिनिस्टर जो दोनो यहा इस समय मौजूद है, स्वयं राज प्रमुख साहब भी मौजूद है। वह आप की जरूरतों पर गौर करेंगे, देखेंगे और उन को दूर करने की कोशिश करेंगे । मुझे यह देख कर खुशी हुई कि बहुत नौजवान नये नये किस्म के काम कर रहे है, ऐसे काम जो वे पहले नही करते थे, और जिन्हे घर के लोग भी नही करते थे। इतनी ही बात नही है । उनमें से बहुत से लोग तो काम सीख कर अपने लिये पैसा भी पैदा कर रहे है यह सब हिम्मत की बात है। मुझे उम्मीद है कि आप अपने लिये काम ढूढ निकालेंगे। जो मदद मिलती है वह मिलती रहेगी और आप किसी न किसी तरह से बस जायेंगे और आराम से रहने लगेंगे। आप समझे कि अब आप का यहां घर हो गया, अब आप यहा के रहने वाले है। यहां के लोगों से घुल मिल कर आप अपनी तरक्की करे और सुख से रहे ।

सनातन धर्म कालेज, अम्बाला

सनातन धर्म कालेज अम्बाला के शिलान्यास के अवसर पर तारीख ३-१०-५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा —

महामहिम, राज्यपाल महोदय, श्री कुसुम त्रिवेदी, गोस्वामी जी, लाला योधराज, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि मै ने जो बहुत दिनों से वायदा कर रखा था उस को

आज मै पूरा कर सका । बहुत दिन हुए मुझ से गोस्वामी जी ने यह वचन लिया था कि, मैं यहां आ कर इस कालेज का शिलान्यास कर दूगा । यह मेरे लिये सौभाग्य की बात है कि मै अपने उस वायदे को पूरा कर सका ।

जैसा आप ने अभी सुना इस कालेज की तवारीख बडी शानदार रही है । १९१५-१६ मे यह कायम हुआ था; उस वक्त से इसने बडी उन्नति की । देश के बंटवारे के समय तो इस की अपनी इमारते थी और लाखो की सम्पत्ति इस काम में लगी थी । उन सब को छोड़ छाड़ कर आप को इधर आना पडा । उसी वक्त मे इस बात की इच्छा सब भाइयो और बहनो के दिलों मे होने लगी कि इस को पुनर्जीवित किया जाये और इस को पुनर्जीवत किया गया है। किसी भी ऐसी सस्था के लिये जब तक योग्य स्थान न बना दिया जाये और अन्य आवश्यक वस्तुएं मुहय्या न करदी जाये तब तक वह सस्था ठीक से नही चलती । अत: इस इमारत की जरूरत पडी और इस लिये इस बात की भी जरूरत पडी कि मेरे जैसे आदमी को आप यहा बुलावें और इस सस्था की नीव डलवावे । यह काम अच्छे मोके से हुआ । मै आशा करता हू कि जिस उत्साह के साथ लाहौर मे आप इस कालेज को चलाते थे और जिस के फलस्वरूप इस की वहा इतनी उन्नति हुई थी उसी उत्साह से और हो सके तो उस से भी अधिक उत्साह से इस कालेज को यहा चलायेगे और दिन प्रति दिन इस की उन्नति होती रहेगी और जो लडकियां और लडके यहा से शिक्षा पाकर निकलेगे वे देश के सच्चे प्रेमी, सच्चे सेवक और चरित्रवान और विद्वान होगे ।

हमारी शिक्षा मे अब तक कई प्रकार की त्रुटिया रही है । जब जब मुझे मौक़ा मिलता है अर्थात् यूनीवर्सिटियों के कन्वोकेशन के अवसर पर या किसी ऐसी संस्था के शिलान्यास के अवसर पर या ऐसे हरेक मौके पर मै आज कल प्रचालित शिक्षा प्रणाली के सम्बध मे अपने विचार प्रकट किया करता हूं । मेरे विचार है कि हमारी शिक्षा के अधूरी रहने का एक कारण यह भी है कि उस मे चरित्र पर हम कम ध्यान देते है । कोई तब तक मनुष्य नही समझा जा सकता जब तक उस का शरीर बलवान न हो, जब तक उस का मस्तिष्क तीव्र न हो, जब तक उसे हर प्रकार की विद्या न मिली हो, और जब तक उस का चरित्र पवित्र न हो । जब तीनो का सगम होता है तभी वह मनुष्य कहा जाता है । मेरा मत तो यह है कि हमारी सब शिक्षा सस्थाओं को शिक्षार्थियो को मनुष्य बनाने का प्रयत्न करना चाहिये । अगर हमारा मस्तिष्क उन्नत हो और साथ ही चरित्र भी दुरुस्त रहे तो मै मानता हूं कि वह देश के लिये हमारे लिये और सब के लिये अधिक कल्याणकारी होगा । इस का अर्थ आप यह न समझें कि मै विद्या उपार्जन को महत्व नही देता हू । ज्ञानोपार्जन तो आवश्यक है ही । सच तो यह है कि विद्या का अन्त न आज तक हुआ है और न कभी होगा । दिन प्रति दिन नई नई बातें हमारे सामने आती है । मनुष्य की उन्नति का कोई अन्त नही और जैसे जैसे वह उन्नति करता है वैसे वैसे उस के विचारो मे भी परिवर्तन हुआ करता है नये विचार आते है, नई बाते मालूम होती है । और मानव जीवन के तमसावृत क्षेत्र में नया प्रकाश फैल जाता है और साफ दृष्टिगोचर होने लगता है । पर इस बारे में हम अपने ऋषियों का खयाल रखे जिन की विद्या की कि कोई हद न थी । हमारे देश में जितनी दूरी तक लोगो ने विद्या को पहुंचाया, अपनी अनुभूति को पहुंचाया शायद ही किसी दूसरी जाति ने पहुंचाया हो । हमारे ऋषिगण यह सफलता इसलिये प्राप्त कर

सके क्योंकि वे लोग जिस काम में लग जाते थे उस में एकचित्त, एकमन, हो कर लगे रहते थे ; कोई विघ्न बाधा उन को न सताती थी। मनुष्य के काम में सब से बड़ी बाधा उस के अपने हृदय से पैदा होती है। किन्तु उन का तो अपने हृदय पर पूरा नियंत्रण था। इस लिये उन को ऐसी कोई बाधा न सताती थी। वह पवित्र हृदय से ईश्वर पर भरोसा कर के चिन्तन करते थे। अतः विद्या के साथ साथ ही चरित्र बल की भी बड़ी भारी महत्ता है। एक और कारण है जिस से वे इतनी सफलता प्राप्त कर सके ; वह यह था कि हमारे यहां विचार स्वतंत्रता में सब की आस्था थी। हमारे शास्त्रों में, हमारे समाज में, हमारे विद्यालयों में और हमारी संस्थाओं में उस का विशेष स्थान है। वह विचार स्वतंत्रता आज भी हमें प्राप्त है।

मेरी अपनी यह मान्यता है कि कोई भी देश और कोई भी समाज व्यक्ति को दबा कर उन्नत नहीं हो सकता है। समाज तो व्यक्तियों का समूह मात्र है ऐसा समूह जिस में व्यक्ति की उन्नति होती है। अतः व्यक्ति की जितनी अधिक उन्नति होती है उतनी ही समाज की उन्नति होती है। हम व्यक्ति को दबायें और यह सोचें कि समाज के ठीक होने से व्यक्ति भी ठीक हो जायेगा तो यह बात ठीक साबित न होगी। मैं यह नहीं मानता कि कोई भी इस तरीके से अपने समाज को सुधार सकता है। अगर किसी भी इमारत की नींव कमजोर हो तो न वह इमारत ही बन सकेगी और अगर बन भी गई तो ज्यादा देर तक ठहर न सकेगी। खूबसूरत तो वह हो ही नहीं सकेगी। जब उस में हर एक चीज अपने स्थान पर हो और ठीक वक्त में ठीक तरीके से लगाई गई हो, तभी सारी इमारत सुन्दर हो सकती है। समाज की भी वही हालत है। इस लिये हमें व्यक्ति के विकास और विचार स्वातंत्र्य का विशेष ध्यान रखना है।

इस प्रकार का चरित्र निर्माण अब तो और भी जरूरी है। हम ने अपने देश के अन्दर प्रजातन्त्र कायम किया है। यह आशा कि चाहे हम, जो गवर्नमेंट को चुन कर बनाते हैं, स्वयं अच्छे न भी हों तो भी गवर्नमेंट अच्छी हो और अच्छी चले आकाश कुसुम के समान सारहीन सिद्ध होगी। बालिग अवस्था के जितने पुरुष और स्त्री आप में हैं उन सब से मेरा कहना है कि अगर आप सच्चा प्रजातन्त्र अपने देश में चलाना चाहते हैं तो आप को अपनी कमजोरियों को दूर करना होगा। अगर आप सच्चे प्रतिनिधि चुनना चाहते हैं तो आप के हृदय में भी शुद्ध विचार होने चाहिये। आप जितने ऊंचे विचार के होंगे उतने ही ऊंचे और अच्छे विचार के आप के प्रतिनिधि भी हो सकेंगे। यह आप न मान बैठें कि जो लोग गवर्नमेंट बनायेंगे वे आप को सुधार सकेंगे। इस के विपरीत आप यह समझें कि आप का यह अपना काम है कि सुधरे हुए लोगों को आप भेजें और यह आप तभी कर सकते हैं जब आप स्वयं सुधरे हुए हों। सच्चे प्रजातन्त्र का रूप यही है कि देश का प्रत्येक स्त्रीपुरुष सेवा उपार्जन वाला हो, और उस का एक दूसरे पर विश्वास हो, देश के प्रति प्रेम हो और वह हर तरह से एक दूसरे की सहायता के लिये तैयार हो। ठीक तरह से संगठित विद्यालय ही इस प्रकार का चरित्र और आदर्श लोगों में पैदा कर सकते हैं। एक बात मैं और कहना चाहता हूं। वह यह है। महात्मा गांधी ने इस देश की परिस्थिति को खूब अच्छी तरह से देख लिया था और अध्ययन कर लिया था। ऐसा करने के बाद ही उन्हों ने अपना काम शुरू किया था। उन्हों ने पहिचान लिया था कि ऐसे मुल्क में जहां भिन्न भिन्न धर्म के लोग रहते हैं, जहाँ भिन्न विचार के लोग रहते हैं, भिन्न भिन्न भाषा बोलने वाले लोग रहते हैं अहिंसा के सिवाय दूसरा

कोई रास्ता नही हो सकता है। अगर अहिंसा के रास्ते पर हम नही चले और आपस में एक दूसरे के साथ छोटी छोटी चीजो के लिये झगडते रहे तो हम बर्बादी की सतह तक पहुंच जायेंगे। अगर हम लोग इस देश को शान्त रखना चाहते है उसे शान्त तरीके से उन्नत करना चाहते है, तो सब को सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलना होगा । गांधी जी ने हमें जो धर्म का सार बताया था उस पर अमल करना होगा अर्थात् सच्चाई पर रहना, सेवोपार्जन में लगना, अधिक लालच नहीं रखना, अपना काम करना, चाहे कोई भी धर्म हो उस का मर्म जानना आदि बाते हमे करनी होंगी । अतः मै यह चाहता हूं कि आप का कालेज सादा हो, उसके विद्यार्थी भी सादे हों, और शिक्षक उन को ऐसा बना दें कि वे अपना और देश का कल्याण कर सकें और देश के ऊपर मानवमात्र का कल्याण करने के लिये योग्य हो जायें।

हमारे इतिहास मे एक बडी कमजोरी यह रही है कि हम ने कभी कभी छोटी चीजो को बडी चीजो के मुकाबले मे अधिक महत्व दिया है, बडे स्वार्थ के सामने छोटे स्वार्थ को महत्व दे दिया है । मै चाहता हू कि हम मे इतनी ताकत और बुद्धि होनी चाहिये कि जो भी बात हमारे सामने आये, जो भी प्रश्न हमारे सामने आवे, उस पर हम ठडे दिल से विचार करे, निस्वार्थ भाव से विचार करे और उस मे जो कुछ ठीक जचे उस के अनुसार अपनी राय भी दे, उस के अनुसार काम भी करे, तभी प्रजातन्त्र ठीक चल सकता है। मैं आशा करता हू कि यह विद्यालय जिस की नींव मैं ने डाली है इस उद्देश्य को पूरा करता रहेगा और हमारे लिये और सब के लिये यहा से ऐसे लोग निकलेगे, ऐसी लडकिया और लडके निकलेगे जो इस का नाम ऊचा करेगे, देश का नाम ऊचा करेगे और सारे संसार के लिये कल्याणकारी सिद्ध होंगे ।

मेरी आशा है कि यह दिन दिन फूलेगा और फलेगा ।

राष्ट्रपति भवन में दशहरा

दशहरे के अवसर पर राष्ट्रपति भवन के कर्मचारियो के अभिनन्दन के उत्तर मे तारीख ११-१०-५१ को राष्ट्रपति ने कहा--

बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि दशहरे के इस शुभ दिन पर आप सब से मिलने का मुझे मौका मिला। हमारे देश की यह पुरानी रीति चली आती है कि दशहरे के दिन छोटे बडो को प्रणाम करते है और बड़े छोटो को आशीर्वाद देते है और सब एक दूसरे से गले मिलते है। सारे देश मे और घर घर मे कल लोगो ने दशहरा बडे उत्साह से मनाया होगा अर्थात् कुछ जगहो पर पूजा कर के, कुछ जगहो पर जलूस निकाल कर के और कुछ जगहो पर राम लीला कर के। हम प्रति वर्ष इस महोत्सव को मनाते है और मनाते रहेगे । इस लिये इस मौक़े पर आप सब से मुलाकात हो जाये और पुरानी रीति के मुताबिक हम एक दूसरे का अभिवादन कर सकें और एक दूसरे को आशीर्वाद और नमस्कार पहुंचा सकें तो यह सब के लिये सौभाग्य की बात होती है । इस लिये आप सब से इस त्यौहार पर दूसरी बार मिलने से अत्यन्त प्रसन्नता हुई है ।

जिन बहनो और भाइयो ने वाद्य और गाने से हम सब को खुश किया उन बहनो और भाइयों को मैं सब की ओर से धन्यवाद देता हूं और आप सब से यह कहता हूं कि आज दशहरे के दिन से शुरू होने वाला यह साल आप सब के लिये सुख का साल हो, खुशी का साल हो और सब अपनी अपनी जगह खुशी से हर तरह से आराम से दिन बितावें ।

अब देश के सामने बहुत बड़ी बड़ी बाते आने वाली है। कोई दैवी प्रकोप हमारे ऊपर है जिस की वजह से सभी जगहो पर जितनी वर्षा होनी चाहिये नही हुई है। पर इन सब मुसीबतों के बावजूद हमे जीवित रहना है और जिन्दगी काटनी है। हम मे से हर एक को अपनी अपनी खुशी से रहना है और जो कुछ ईश्वर हमे देता है उस को ले कर हमे संतोष करना है और उस को धन्यवाद करना है । मैं आशा करता हू कि यहा जितने कर्मचारी है वे इस बात का हमेशा ध्यान रखेंगे कि चाहे उन का बड़ा काम हो और चाहे छोटा वे अपने अपने काम को ठीक तरह से अंजाम दे। अगर बडे काम को ठीक तरह न किया जाये तो बड़ा काम भी छोटा काम हो जाता है और छोटे काम को ठीक तरह से किया जाये तो वह छोटा काम भी बड़ा हो जाता है । छुटाई बड़ाई सब करने पर निर्भर करती है । कोई काम अपने आप ही छोटा और बडा नही होता है । मैं जब कभी आप से मिलता हू तो आप से कहता हूं कि आप जहां पर है खुशी से रहे, आराम से रहे और आप को किसी बात की तकलीफ हो तो उस के लिये जो अधिकारी लोग है, उन को खबर देते रहे, वे उस को दूर करेंगे । साल मे ये दो तीन मौके ऐसे है जब मुझे सब से मिलने का मौका मिलता है । यो तो बहुत थोडे ही लोग आप मे से है जिन से मुझे रोज या हफ्ते मे एक बार मिलने का मौका मिलता है। इसलिये यह मेरे लिये खुशी की बात है कि दशहरे के मौके पर, दिवाली के मौके पर, ईद के मौके पर, होली के मौके पर हम एक दूसरे से मिल सकते है। मैं उम्मीद करता हू कि इसी तरह से जब जब मौका आयेगा हम मिल सकेंगे और एक खानदान मे जिस तरह से लोग रहते है, और अपने अपने काम करते रहते है उसी तरह से हम रहेंगे और अपने अपने काम करते रहेंगे ।

मैं आप सब का धन्यवाद करता हूं ।

लियाकत अली खां के लिये शोकसभा

श्री लियाकत अली खा की मृत्यु पर रामलीला मैदान मे की गयी शोक सभा मे तारीख १७-१०-५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा—

सदर साहब, बहनो और भाइयो,

हम लोग जिस काम के लिये आज यहा इकट्ठे हुए है वह निहायत दर्द और दुःख का काम है। कल शायद इससे कुछ देर बाद पहले पहल हमको खबर मिली कि श्री लियाकत अली खां को गोली लग गयी है और वह अस्पताल में पहुंचाये गये है। खबर पाते ही मैं ने तार लिखवाया जिसमे मैं ने अपना यह मत ज़ाहिर किया था कि वह बच जायें और उसे भेजने ही जा रहा था कि तब दूसरी खबर आ गयी कि मामला खतम हो गया। उस के बाद फिर दूसरा तार भेजना पड़ा। यह ऐसा मौका है कि जब हरेक इन्सान चाहे वह कहीं भी हो अपने दिलों के अन्दर दर्द महसूस करता है। हम हिन्दुस्तान के लोग तो इस तरह की मुसीबत खुद बर्दाश्त कर चुके हैं

इसलिये हमारे दिलो के अन्दर जो आज दर्द और दुःख है उस का अन्दाज़ा सहज म ही लगाया जा सकता है । हम चाहते हैं कि हमारे पडौसी भाई खुश रहें, हर तरह से अपने मुल्क की वे बेहबूदी पूरी करे और उस की खिदमत अंजाम दें जिस में वे फूलें फलें। इस तरह के वाकया से चूकि इस काम मे खलल पड़ता है इसलिये इस का और भी अफसोस और भी दुःख हम लोगो को होता है । हम लोग यह जानते है कि दोनों तरफ की जो जनता है, जो आम लोग है उन के दिलो के अन्दर यह बात बैठ गयी है कि अपने अपने मुल्क की खिदमत करना, तरक्की देना उनका सब से बडा फर्ज है । जब कोई लोग पागल होकर इस तरह का काम कर बैठते है तो लोगो का इरादा और भी पक्का हो जाता है और वे अपने काम से, अपने पग से नही डिगते । अतः हम यह उम्मीद रखते हैं कि इस का नतीजा पाकिस्तान पर यही होगा कि वहा के लोगों का दिल और मजबूत होगा कि वे अपना फर्ज ठीक से अदा करे, मुल्क के लोग ठीक से मुल्क की खिदमत करे । मै यहा पर सिर्फ इतना ही कह सकता हू कि हमारी हमदर्दी उनके साथ पूरे दिल से इस मुसीबत के मौके पर है और हम चाहते है कि वह इस बात का विश्वास करे कि इस मुसीबत के मौके पर हम उनके साथ हर तरह से है । हम उम्मीद रखते है कि हमारी यह बडी सभा जहां हजारों हजार लोग इकट्ठे हुए है, जिस मे सिर्फ दिल्ली के ही लोग नही है बल्कि सारे हिन्दुस्तान भर से आये हुए लोग मौजूद है, सारे हिन्दुस्तान की तरफ से इस मुल्क की पूरी हमदर्दी जाहिर कर रही है ।

संयुक्त राष्ट्र दिवस

संयुक्त राष्ट्र दिवस पर अखिल भारतीय आकाशवाणी के दिल्ली स्टेशन से भाषण प्रसारित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा --

आधुनिक विज्ञान और उद्योग ने मनुष्यो के हाथो मे ऐसी अपरिमित शक्ति दे दी है जिसका उपयोग मानव जीवन मे से कमी और गरीबी, अज्ञान और बीमारी का नामोनिशान मिटाने के लिये किया जा सकता है और या मानव द्वारा युगयुगान्तर में निर्मित वस्तुओं के पूर्ण विनाश के लिये ही नहीं--स्वय मानव के बीज नाश के लिये भी किया जा सकता है । व्यक्तियो, वर्गो, और राष्ट्रो--सब के सामने ही यह भाग्य निर्णायक प्रश्न है और कोई भी ऐसी सस्था जो उनको इस सम्बन्ध मे किसी ठीक निर्णय करने के योग्य बनाती है हम सब मे से प्रत्येक के लिये वरदायिनी सिद्ध होगी ।

मेरा विश्वास है कि सयुक्त राष्ट्र ऐसी सस्था है । पारस्परिक शकाओ और स्पर्धाओ से विक्षिप्त ससार मे कम से कम यह एक ऐसी सस्था है जिसमे सब राष्ट्रो के प्रतिनिधि एकत्रित हो सकते है, अपनी अपनी जातियो के विचारो को व्यक्त कर सकते है और अपने अपने राष्ट्रीय हितो का दूसरे राष्ट्रो के हितो से समन्वय कर सकते है । उन सब को घनिष्ठ वैयक्तिक सम्पर्क का और इस प्रकार एक दूसरे के दृष्टिकोण को उससे कही अच्छी तरह समझने का, जितना कि वे एक दूसरे से बहुत दूर रह कर खतो-किताबत द्वारा समझ सकते है, यह बहुत सुन्दर अवसर प्रदान करती है । इसके सस्थापको की जो यह उच्च आशा थी कि यह अन्तर्राष्ट्रीय न्याय और शान्ति का एक मात्र साधन होगी उसे पूरा करने मे सम्भवतः यह समर्थ नही हुई है और मेरे विचार मे तो नही ही हुई है । किन्तु तब भी यह कुछ कम उपयोगी सिद्ध नही हुई है क्योंकि इसने राष्ट्रो को एक दूसरे के खिलाफ मार धाड़ करने के बजाय बाते करने में लगाये रखा है । यह कोई कम बात नही और हम सब को इस बात के लिये इस संस्था के प्रति कृतज्ञ होना चाहिये ।

इसके अतिरिक्त अपनी मातहत संस्थाओं के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय जगत में सांस्कृतिक, सामाजिक और दूसरे अराजनैतिक क्षेत्रो मे अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सम्पर्क की अभिवृद्धि करने का भी यह साधन रही है। यह काम भी कुछ कम महत्व का नही है। यद्यपि यह काम यकायक आंख के सामने नही आता तो भी यह काफी लाभदायक है क्योकि मानव जाति के कल्याण के लिये आवश्यक बातों के अध्ययन में दिलचस्पी पैदा करने के अतिरिक्त यह ऐसे मानसिक वातावरण को बनाती है जिसमे अन्तर्राष्ट्रीय द्वेष और स्पर्धा शान्तिपूर्ण ढग से दूर की जा सकती है।

हम भारतीयों ने सदा ही इस संस्था का पूरा पूरा समर्थन किया है। हमें तो शाति केवल हमारी ऐतिहासिक दाय के नाते ही प्यारी नही है वरन् इसलिये भी प्यारी है कि वह हमारे राष्ट्रीय जीवन का प्राण है। सच तो यह है कि हमारी जाति के लिये शान्ति लगभग पावन धर्म के समान है। भगवान बुद्ध और महात्मा गांधी अर्थात् हमारे महर्षियो का भी हमको यही सदेश है।

हमारी ऐसी ऐतिहासिक परम्परा और हमारा ऐसा हार्दिक प्रयोजन होने के कारण हम ने सयुक्त राष्ट्र को सब जातियो के प्रजातात्रिक अधिकारो और सब राष्ट्रों के प्रति न्याय के सिद्धान्तो के अनुकूल रह कर सहायता दी है जो कि हम अपनी शक्ति से दे सकते थे और आगे भी हम ऐसा ही करते रहेंगे।

दीपावलि

ता० ३१-१०-५१ को दिवाली के अवसर पर राष्ट्रपति भवन के कर्मचारियो के अभिनन्दन के उत्तर मे राष्ट्रपतिजी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

थोडे ही दिनो के बाद यह दूसरा मौका आ गया जब हम सब इकट्ठे हुए हे। दिवाली का त्यौहार सारे हिन्दुस्तान मे लोग बडी खुशी से मनाते हे और चाहे अमीर हो चाहे गरीब सभी इसे मनाते है और दिया जला कर अपने अपने घर से अधकार निकालते है। यह एक ऐसा मौका है जब हम सबो को इकट्ठे होकर मिलने का अवसर मिलता है और इसके लिये मुझे बडी खुशी है और मै चाहता हू कि इस तरह के मौके हमेशा मिले और जो हमारा सम्बन्ध है वह और भी गहरा होता चला जाये और हम सब एक दूसरे से मिल जुल कर अपने काम को अंजाम दिया करे। जैसा मै ने और कई मौको पर कहा है, हम सब लोग एक तरह से काम करने वाले लोग है और जो जिस काम मे लगे है उनको उसे अजाम देना चाहिये और समझना चाहिये कि सब से बड़ा काम उनका काम है। कोई बडा काम आदमी को बड़ा नही बनाता है। अगर छोटा काम भी अच्छी तरह से अजाम दिया जाये तो वह काम बडा होता है। और अगर काम बुरी तरह से किया जाये तो बड़े से बड़ा काम भी बिगड़ जाता है। इसलिये मे तो मानता हूं कि आदमी काम से बड़ा बनता है, बड़े काम से आदमी बडा नही बनता है। इसलिये जो जिस काम मे है चाहे वह बड़े पद पर हो या छोटे पद पर हो उसको अपनी इज़्जत समझनी चाहिये और यह मानना चाहिये कि जो जिसका काम है वह बड़ा काम है। मुझे इस बात की खुशी है कि ऐसे मौक़ों पर आप मेरी याद किया करते है और मुझे बुलाते है और मै उम्मीद करता हू कि इस तरह मौका हमेशा आता रहेगा।

चीनी सांस्कृतिक मंडल

चीनी सारकृतिक शिप्ट मण्डल के नेता और एक सदस्य को पदवी प्रदान के अवसर पर

राष्ट्रपतिजी ने कहा--

सांस्कृतिक मिशन के रूप मे आये महान् देश के प्रतिनिधियो के नाते ही नही वरन् देहली के इस प्राचीन नगर मे, जिसमे अब भी सहस्रो वर्षो के लम्बे इतिहास के चिन्ह मौजूद है, स्थापित नये विश्वविद्यालय के सदस्यो के रूप मे भी मै आप का स्वागत करता हू। मुझे आपकी इस यात्रा से सहज ही दो हज़ार वर्ष पूर्व के उस समय की याद आ जाती है जब भारत से एक नही बहुतेरे जिज्ञासु और भिक्षु दूरी की परवाह न करके सत्य के प्रचार के लिये दुर्गम पहाड़ो और रेगिस्तानों को पार करते हुए दूरस्थ देशो को विनाशकारी तलवार के बजाय ज्ञान और संस्कृति की ज्योति को लेकर गये थे। भारत के उत्तर मे ससार भर की सब से ऊची पर्वत माला है जो इसे उस पार स्थित चीन देश से अलग करती है और इसके दूसरे तीनो ओर अगाध सागर है। किन्तु न तो बर्फीले ऊचे पहाड और न तूफानी समुद्र ही उन लोगो को जाने से रोक सके जो भगवान् बुद्ध के सदेश को ले जाने के लिये दूरस्थ देशो की यात्रा के लिये कटिबद्ध थे। कालान्तर मे इस तरह तीन रास्ते ज़मीन पर होकर चीन जाने के लिये बन गये। एक तो भारत के पश्चिमोत्तर कोने से अफगानिस्तान होता हुआ मध्य एशिया को पार करता हुआ आज के गिलियाग से गुजर कर चीन पहुचता था। दूसरा सीधे हिमालय को पार करके तिब्बत होता हुआ जाता था और तीसरा भारत के पूर्वोत्तर कोने से उत्तरी बर्मा होता हुआ जाता था। इनके अलावा मलाया प्राय द्वीप को चौकता हुआ एक समुद्री रास्ता जाता था। भारत के विभिन्न भागो मे सैकड़ो लोग चीन गये, चीन ने उनका स्वागत किया, उनकी सहायता की और अपने मे मिला लिया और वहा उन्होने सस्कृत और बौद्ध वागमय को चीनी भाषा मे अनूदित करने मे अनेकानेक वर्ष लगाये। यह काम इकतरफा ही नही था। चीन के भी बहुतेरे यात्री या तो पश्चिमी या पूर्वी रास्ते से भारत आये और यहां उन्होने अपने जीवन के बहुत वर्ष बिताये और अपनी यात्रा का, उन जगहो का, जहा जहा वे गये, और उन दृश्यो का, जो उन्होने देखे, वर्णन छोड गये। अन्यथा अन्धकार मे छिपे हुये युग के प्रामाणिक इतिहास के लिये ये वर्णन अत्यन्त ही सुन्दर आधार है। दोनो देशो का यह सम्बन्ध एक सहस्त्र वर्ष या उस से भी अधिक समय तक बना रहा। जहां तक मै जानता हूं इस दीर्घकाल मे एक भी ऐसा अवसर नही आया जब इनमें से किसी एक देश ने दूसरे को भिक्षुओ और धर्म प्रचारकों की बजाय फौज भेजने की बात सोची भी हो। जैसा कि अत्यन्त सुन्दर शब्दो म कहा गया है दोनो देशो की ही आकांक्षा धम्म विजय की थी न कि राजनैतिक अथवा साम्राज्यिक विजय की। यह आदान प्रदान लगभग आठ या नौ सौ वर्ष हुए बन्द हो गया और निकट भूतकाल में भी जब कि यात्रा खतरे और अनपेक्षित दुर्घटनाओं से मुक्त एक साधारण बात हो गई है हम लोगो में कुछ खास सम्पर्क नही रहा है।

अतः दोनों देशो के लिये यह बधाई की बात है कि आज यह सम्बन्ध फिर कायम हो रहा है और यह भावी सौभाग्य की बात है कि यह क्रम चीन से भारत को आये यात्रियो द्वारा प्रारम्भ हो रहा है। इसमें कोई शक नही है कि हम दोनो एक दूसरे को बहुत कुछ दे सकते है। पर एक चीज़ तो ऐसी है जो आप लोग हमें बहुलता से दे सकते है। संस्कृत की सैकड़ों ही क्यों हजारो पुस्तकें

जो भारत से लुप्त हो गई है अब भी चीनी या तिब्बती अनुवादो में वहां प्राप्य है और मुझे लेशमात्र भी संदेह नही है कि उनके अध्ययन मे आज-कल अन्धकार मे छिपी हुई बहुत सी बातों पर प्रकाश पडेगा । इस दिशा मे अभी काफी काम करना बाकी है । हाल मे जो गुफाओ, चित्रों और किताबो का पता चला है उनसे ऐतिहासिक खोज में दिलचस्पी रखने वालों के सामने कार्य का विस्तृत क्षेत्र खुल गया है और मुझे लेशमात्र भी शंका नही है कि कालान्तर में ऐसे विद्वान पैदा होंगे जो अपना समय इस रोचक विषय मे लगायेंगे ।

किन्तु केवल यह ही बात नही है कि भूतकाल के रहस्यो का पता चलाने के लिये अथवा उसके तमसावृत कोष्ठो को ज्योतिर्मय करने के लिये ही मैं यह चाहता हू कि इस प्रकार का अध्ययन हाथ मे लिया जाये । वर्तमान ससार मे जब कि ऐसा प्रतीत होता है कि एक राष्ट्र के दूसरे राष्ट्रो से समझे जाने वाले सम्बन्ध केवल हिंसात्मक शक्ति पर ही आधृत है और जब कि जो बन्धन एक देश को दूसरे देश से बाधते है इस्पात के बन्धन ही समझे जाते है, यह अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है । जो रेशमी बन्धन सहस्त्राब्दि या उससे भी अधिक दिनो तक भारत को चीन और अन्य देशो से बाधे हुए थे और जो सर्वसाधारण के जीवन पर अपनी अमिट छाप छोड गये है और जिन्हे काल मिटा न सका और जो किन्ही साम्राज्यिक बन्धनो से कही अधिक समय तक बने रहे उनके गुणो को, स्थायित्व को, और अपेक्षाकृत अधिक काल तक बने रहने की शक्ति को हमे पुनर्जीवित कराना है और उनकी महत्ता का डंका पीट देना है । अत: मैं आपके जैसे मिशन को काफी महत्वपूर्ण समझता हूं और पूरे भरोसे से उस वक्त का इन्तजार कर रहा हू जब भारत और चीन के बीच सास्कृतिक आदान प्रदान वैसा ही फलदायी होगा जैसा कि वह भूत-काल मे था और उस शान्ति-साम्राज्य की स्थापना के लिये रास्ता तैयार कर देगा जिसकी ससार को सब से अधिक आवश्यकता है । मुझे विश्वास है कि जो सम्मानित डिग्री विश्व-विद्यालय आपको दे रहा है उसे आप उस आशा के प्रतिमान स्वरूप ग्रहण करेगे जिससे कि अरबों मानवो का भविष्य बधा हुआ है ।

भूमि दान यज्ञ

ता० १३-११-५१ को राजघाट पर प्रार्थना सभा के बाद आचार्य विनोबा भावे के भूमिदान की घोषणा करते समय राष्ट्रपतिजी ने कहा——

पूज्य विनोबाजी, बहनो और भाइयो,

आज से कई दिन पहले मुझे जब यह सूचना मिली कि आप यहा आ रहे है और मुझे श्री रामेश्वरी नेहरू और आशा देवी जी ने आपका यह सदेश पहुचाया कि सभी जगहो पर लोग भूमिदान करते है और इसलिये आप यह आशा रखते है कि जिसके पास कुछ थोड़ी भी ज़मीन है उसमे से कुछ हिस्सा वह बांटे तो मै ने सोच लिया कि चूकि मै भी अभी यह कह नही सकता कि मेरे पास ज़मीन है नही, इसलिये मै भी अपनी ज़मीन का कुछ हिस्सा हाज़िर कर दूंगा । यें सब बाते मै ने पूज्य विनोबाजी के पास लिख भेजी थी । और मै क्या कहूं । हमारे जवारी हैं बाबा राघवदास जी । वह हमारे गांव के नज़दीक़ के है और हमारे यहा जाते आते है । मै उनको ही कहता हूं कि वह ज़मीन देख ले और जो ज़मीन पसन्द करें उसे ले लें ।

पुरी में अभिनन्दन

तारीख १६-११-५१ को पुरी के निवासियों की ओर से दिये गये अभिनन्दन पत्र के जवाब में राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामान्य गवर्नर साहब, पुरी के निवासीगण, बहनों और भाइयो,

आपके इस शहर में आने का मेरे लिये आज यह पहला मौका नहीं है। इसके पहले यात्री के रूप में या कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में मैं यहां कई बार आया हूं, जगन्नाथ जी का दर्शन भी किया है और यहां के बहुतेरे भाइयों और बहनों से मिलने का भी सौभाग्य मुझे पहले प्राप्त हुआ है। यह ठीक है कि इस बार मैं नयी हैसियत से आया हूं और जो कुछ मैं इस बार देख रहा हूं वह एक दूसरी दृष्टि से ही देख रहा हूं या यह भी कहा जा सकता है कि इस बार मुझे आप जिस दृष्टि से देख रहे हैं वह पहले की से भिन्न है।

आपका यह स्थान केवल जगन्नाथ की पुरी ही नहीं है बल्कि यह सारा जिला और सारा प्रान्त भारत के उन प्रान्तों में से है जिनमें हमारे पुराने इतिहास और प्राचीन गौरव के आज भी असंख्य चिन्ह पाये जाते हैं। जब मैं उन दिनों की बात सोचता हूं जब ये भव्य मन्दिर पहले पहल निर्मित किये गये होंगे और जब आज की दशा पर दृष्टि डालता हूं तो मुझे पता चलता है कि उन दिनों में और आज में कितना बड़ा अन्तर पड़ गया है। जिन लोगों ने इन मन्दिरों की रचना की या उस समय के जिन अधिकारियों ने इनकी रचना कराई उनकी कितनी पैनी दृष्टि रही होगी, उसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि अपने सामने रखे चित्रों के आधार पर ही उन्होंने इतनी भव्य इमारतों और मूर्तियों की रचना कर डाली। सचमुच ही वे पैनी दृष्टि के और कुशाग्रबुद्धि के पुरुष होंगे। जिन हजारों कारीगरों ने इनका निर्माण किया और जिनकी कलाओं का हमें आज थोड़ा बहुत पता इन अवशिष्ट चीजों के देखने से मिलता है उनकी कला के बारे में मैं क्या कहूं ? उनकी बनाई छोटी छोटी चीजों को देख कर भी पता चलता है कि आज जो कुछ हो सकता है उसका उन चीजों से कोई मुकाबला नहीं किया जा सकता जो उन दिनों में बनायी गयी थीं। कभी कभी मैं सोचता हूं कि इन चीजों को हमारे लोग कैसे तैयार कर पाये होंगे और कैसी चीजों से उन्होंने इनको बनाया कि वे आज हजारों वर्षों के बाद भी हवा, गर्मी, वर्षा का आघात सहते हुए ज्यों की त्यों बनी हैं।

आज सवेरे मैं यहां की रघुनन्दन लाइब्रेरी में गया था। वहां मैं ने ताड़ पत्रों पर हस्त लिखित पुरानी पुस्तकें देखीं। कहीं कहीं मैं ने देखा कि उनमें कीड़े भी लग गये हैं। मैं ने सुना कि इस बात का प्रयत्न किया जा रहा है कि गवर्नमेंट और आर्कियोलाजिकल डिपार्टमेंट उनको उस मसाले और साधन द्वारा सुरक्षित रखे जिसे कि वह ऐसी चीजों की सुरक्षा के लिये आजकल प्रयोग करता है। मैं ने यह भी देखा है कि जहां जहां आजकल नयी इमारतें बनी हैं और आज भी करोड़ों रुपये की इमारतें भारत सरकार की तरफ़ से बनायी जा रही हैं उनमें तरह तरह के मसाले लगाये जाते हैं। मालूम नहीं आज का आर्कियोलाजिकल डिपार्टमेंट का जो मसाला है वह इन चीजों को कितने दिनों तक कायम रख सकता है। आज से हजार पन्द्रह सौ वर्ष के बाद के

लोग ही उसकी सफलता की जाच कर सकेगे। पर जो चीजे आज बचा हुई है उनको तो हम देख सकते है और उनके बारे मे अपनी राय क़ायम कर सकते है। इन नयी इमारतो को देख कर हम जरूर यह कह सकते है कि ऐसा कोई मसाला जरूर था जो आज तक जगन्नाथ के मन्दिर को कायम रखे हुये है, ऐसा मसाला जरूर था जो भुवनेश्वर के मन्दिरो को जहा आज देवी देवताओं की पूजा नहीं होती कायम रखे हुये है। क्या आज के इजीनियर उस मसाले का पता चला सकते है? रुपये लगा कर आज जो मकान बनते है यदि उनको उस मसाले से बनाया जाये जो इन मन्दिरो मे प्रयोग किया गया था तो क्या वे हिन्दुस्तान का सिर ऊचा नही करेगे? क्या आगरे की भव्य इमारतों ने, दक्षिण भारत और भारत के अन्य स्थानो के भव्य मन्दिरो ने भारत का सिर ऊचा नहीं किया है? मेरा सुझाव है कि खास करके इस तरफ ध्यान दिया जाये जिससे कि मकान की मरम्मत अगर हर साल न भी हो पाये तो भी उसके गिरने का भय न रहे। मै समझता हू कि अगर लोग इन कलाओ मे दिलचस्पी रखेगे तो उनका ध्यान अवश्य उन चीजो की ओर जायेगा जिनसे ये इमारते बनी है। उनमे केवल पत्थर ही नही है। उनमे पत्थर को जोडने के लिये भी कोई खास मसाला था। उनमे कही कही पत्थर के बदले ईट का भी इस्तेमाल किया गया है पर ऐसी इमारतो मे भी किसी खास मसाले का इस्तेमाल किया गया है। उस मसाले की खोज निकालना भी उतना ही जरूरी है जितना कि आजकल सीमेट की खोज निकालना जरूरी है। तो मै यह चाहता हू कि विज्ञान विशारद लोग और रिसर्च इन्स्टीट्यूट इन चीजो पर भी ध्यान दे और इनको बिल्कुल हीन समझ कर नजरअन्दाज न कर दे। इसी नीति को अपना कर हम पुरानी और नयी कलाओ का मिश्रण ससार के सामने उसी प्रकार रख सकेगे जिस प्रकार कि अन्य क्षेत्रों मे पुरानी और नयी सभ्यता का मिश्रण ससार के सामने रखने मे हम समर्थ है। इसलिये जब मै आपके शहर मे आज आया और मुझे इन स्थानो को फिर एक बार देखने का मौक़ा मिला तो एक यात्री के भक्तिभाव से ही उनके दर्शन न करके इस दृष्टि से भी मै ने उन्हे देखा। मुझे आशा है कि यहा के अधिकारी और सत्ताधारी इस महत्व को ध्यान मे रख कर इन चीजो मे विशेष दिलचस्पी लेगे।

मै ने देखा है और जितना मै जानता हू उससे मै इस निष्कर्ष पर पहुचा हू कि उडीसा बहुत गरीब प्रान्त है। मुझे भारत के सब प्रान्तो मे जाने का और उनको देखने का मौका मिला है। इसलिये मै यह कह सकता हू कि सब जगह से यहा की जनता गरीब है। ईश्वर ने आपको उर्वरा जमीन दी है। अतः खाने के लिये तो आप चावल पैदा कर सकते है ही साथ ही दूसरी जगहो को भी भेज सकते है। पर और चीजे जिन्हे मै और प्रान्तो में पाता हू यहा नही देखता। मनुष्य के जीवन के लिये चावल ही काफी नही है। यहा के मुख्य मन्त्री से आज सवेरे मै कह रहा था कि जब यहा की गायो को मै देखता हू तो मुझे अफसोस होता है। वे इतनी छोटी है कि उनको दूध तो कम होता ही है उनके बछडे भी छोटे होते है। जब तक हिन्दुस्तान मे खेती का काम चलता रहेगा और मै समझता हू कि कोई ऐसा समय नही आ सकता जब हिन्दुस्तान में खेती के बिना काम चले तब तक हमारी गाये और बछडे ऐसे होने चाहिये कि जिनसे हमारी दूध की आवश्यकता की पूर्ति तो हो ही साथ ही खेती का काम भी अच्छी तरह से चल सके। जहा एक तरफ हमको किसानों की मदद करनी है, दूसरी तरफ़ गायों की रक्षा का काम भी बहुत ज़रूरी है। मै आशा करता हू कि आप इस बात मे दिलचस्पी लेगे। जब खेती और उससे सबद्ध काम की तरक्क़ी होगी और घरेलू धधों की तरक्क़ी होगी तभी आपकी पुरानी समृद्धि वापस आ सकती है। आज

मै ने आपके घरेलू धधो के नमूने देखे । मै ने उन चीजो को देखा है जो अभी भी गावों में बनती हैं । वहा लोग रग बिरगे सुन्दर और अच्छे से अच्छा कपडा बुन कर तैयार करते हैं । वहा लोग सग पत्थर, हाथी दात और चांदी की चीजों तथा गाव में जो घास पात होता है उनसे अच्छी से अच्छी चीजे बना सकते हैं । यह कारीगरी हमारे लिये कम महत्व की नही है । हमे उनको प्रोत्साहन देना चाहिये जिसमे कलाओ की अभिवृद्धि के साथ साथ हमारी आर्थिक अभिवृद्धि भी हो सके और हमारी कलाये भी जीवित रह सके ।

बहुत दिनो के बाद अपने हाथ मे अधिकार आये है । तब से अभी तक हमारे सामने बहुत सी कठिनाइया रही है । किन्तु कठिनाइयो की ओर ही दृष्टि न रख कर यदि आप लोग उन कामों पर दृष्टि डालेगे जो अब तक विभिन्न क्षेत्रो मे हम कर पाये है तो आपको पता चलेगा कि हमने काफ़ी कामयाबी भी हासिल की है और जब हमारी आबपाशी और उद्योगों की बहुमुखी योजनाए पूरी हो गयी होंगी तब हमारी जनता की सुख सुविधा के काफी साधन उपलब्ध हो गये होंगे और देश का और साधारण जन का काफी हित सध गया होगा ।

इस सम्बन्ध मे उन दिनो की बात कहू जब मै गाधी जी के साथ यहा आया था । २५–२६ वर्ष या ३० साल हो गये होगे; उन दिनो इस इलाके मे अकाल फैला हुआ था । उन दिनो यहा एक पुलिस सुपरिन्टेडेण्ट थे । उन्होने बहुत से अकाल पीड़ित जमा कर रखे थे । उनकी निकली हुई हड्डिया गान्धी जी ने देखी, उनके धसे हुए गालो को उन्होंने देखा और वे बड़े दुखी हो गये किन्तु मुझे आशा है कि आप इस प्रान्त को उतना सुन्दर और समृद्ध बनावेंगे कि फिर से उस हालत के दिखाई देने की लेशमात्र सभावना न रहे । तभी जगन्नाथपुरी जगन्नाथपुरी होगी । जगन्नाथ का अर्थ ही है सारे ससार का मालिक । अगर उनकी छाया के नीचे दुख हो तो वह जगन्नाथ कैसे ? यह आपका और हमारा धर्म है कि इस प्रान्त को सुखी बना दे । तभी यहा लोग मन्दिर के जगन्नाथ के साथ साथ असली जगन्नाथ का दर्शन करेगे । मै आशा करता हू कि आप इस स्थान को सुखी और समृद्ध बनायेगे ।

आपने जिस प्रेम और श्रद्धा के साथ मेरा स्वागत किया उसके लिये मै आपको धन्यवाद देता हू ।

कोनार्क सूर्य मन्दिर

तारीख १७-११-५१ को साढ़े ११ बजे दिन में कोनार्क सूर्य मन्दिर के पास एकत्रित लोगो से राष्ट्रपति जी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

हम लोग यहां आज कोनार्क के मन्दिर को देखने के लिये आये थे । आप लोगों मे भी मै मिल सका इसकी मुझे बड़ी प्रसन्नता है । यह तो बहुत ही प्राचीन स्थान है । यहा जो दृश्य देखने

को मिलता है, वैसा तो समस्त भारतवर्ष मे भी देखने को नही मिलता । मै सोचता हू कि यह मन्दिर किसने बनाया ? आपके ही पूर्वजों ने तो इसे बनाया होगा । आपके जिन पूर्वजों ने इस मन्दिर को बनवाया उनमे कितनी शक्ति रही होगी, शरीर की कितनी शक्ति और मस्तिष्क की कितनी शक्ति रही होगी कि इस का कल्पित चित्र रखकर वे इतने विशाल और भव्य मन्दिर का निर्माण कर सके । अभी थोडी देर पहले हम घूम घूम कर देख रहे थे । इसकी एक एक मूर्ति और एक एक पच्चीकारी अत्यन्त सुन्दर है । कही भी कोई भूल नही है । इतनी सुन्दर मूर्तियां बनायी गयी है कि उन्हे देख कर आज भी मनुष्य चकित हो जाता है । इतनी कारीगरी, इतनी बुद्धि उन में थी कि वे इतने विशाल मन्दिर का निर्माण कर सके । मै ने यह भी देखा कि इतने बडे पत्थर यहा लाये गये है । आसपास मे कोई पहाड तो है नही; मालूम नही ये पत्थर कैसे लाये गये । यह भी किसी से सुना कि यहा से पत्थर को कलकत्ता ले जाने का प्रयत्न किया गया था पर वह नही ले जाया जा सका । लोहे को भी देखा इतने बडे बडे लोहे की शहतीरे है और कम से कम ९०० वर्ष पहले से यहा पडी हुई है लेकिन उनमे आजतक कोई ऐब नही आया है । यहा की इन सब चीजो को हमारे और आपके पूर्वजो ने ही बनाया था । मै सोचता हू कि हमे आज क्या हो गया है कि हम लोग इतने दुर्बल हो गये ? आज क्या वजह है कि उडीसा के लोग गरीब हो गये है । जिस समय मन्दिर बना होगा उस समय यहा के लोग अत्यन्त धनी और समृद्ध रहे होगे । आज क्या कारण है कि लोग दुखी और दीन हो गये है ? आपके शरीर मे भी वह बल नही है, आपके मस्तिष्क मे भी वह बल नही है । आखिर क्यो ? जो कमजोरी आ गयी है उसको तो अब दूर करना ही चाहिये । देश अब स्वतन्त्र है । उसका शासन अब आप सब लोगो के हाथो मे है । अब आप यह नही कह सकते है कि किसी दूसरे के कारण हमारी हालत खराब है । अब तो जो कुछ बिगड गया है उसको बनाना है और ऐसा बनाना है कि फिर हम इस योग्य बने कि यहा एक ऐसी चीज बना दे कि जिसको हजार वर्ष बाद लोग देखे और कहे कि कोनार्क मे एक हजार वर्ष पहले और फिर बाद मे ऐसी चीजे बनी जो देखने योग्य है । यह आप लोग कर सकते है । यह बात नही है कि आप मे शक्ति नही है । मनुष्य मे शक्ति रहती है किन्तु वह छिपी रहती है । उसको निकाल कर काम मे लाना एक बडी बात होती है । आप यह अनुमान लगा ही सकते है कि इस मन्दिर के निर्माण मे कितने लोगो ने काम किया होगा । उनका यह काम एक प्रकार की तपस्या थी । हमें भी वैसी ही तपस्या करनी है । अगर देश के लोग और शक्ति उपार्जन करे, सिर्फ अपने लिये ही नही––अपने लिये तो लोगो ने कमाया होगा और खाया होगा लेकिन उनको आज कौन जानता है––मगर सब देश के लिये तो हमारा कल्याण शीघ्र हो सकता है । पहले जिन्होने इस चीज को बनाया, मनुष्यमात्र के लिये बनाया, वह आज भी मनुष्यमात्र के लिये है । इसी प्रकार आज भी जो शक्ति आप ले वह अपने लिये ही नही, मनुष्यमात्र के लिये ले और उसी हेतु उसका प्रयोग करे ऐसी मेरी कामना है ।

आते समय मै ने देखा कि धान की फसल अच्छी है । जब धान तैयार होगा तो मुझे आशा है कि यहां के लोगो को अन्न की कमी न होगी । यह बात ठीक है । पर एक बात की ओर मै आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं । सभवतः आप नही जानते कि आजकल दूसरे देशों में लोग एक एकड़ में हमारे यहां से चार पांच गुना धान पैदा कर लेते है । उस दिशा मे पिछले जमाने से हमारी अवनति हुई है । हमें पुरुषार्थ लगा कर इस कमी को दूर करना है । खेती के अतिरिक्त आपके यहां

वडा कलापूर्ण गृह उद्योग है। कल पुरी में मुझे यहां की बनी हुई चीजें दिखलायी गयी। सुन्दर से सुन्दर हाथ के बने हुए कपडे, सुन्दर से सुन्दर सीपी की बनी हुई चीजें चान्दी और पत्थर की बनी चीजें दिखलायी गई। बहुधा जो लोग मिल का कपडा पहनते है, कहते सुने जाते है कि वह वडा सुन्दर है; किन्तु इस कपडे के सामने मिल का कपडा बिल्कुल हेच है। पर हम लोग आलसी हो गये है, अपने हाथो से कपडा न बुनकर इसी आशा पर बैठे रहते है कि बम्बई से कपडा आवे और कोनार्क के लोगो को मिले, अहमदाबाद से कपडा आवे और आपको मिले। किन्तु यह बात आप लोगो को शोभा नही प्रदान करती। जब यहा के लोगो में कला है तो वह बढिया से बढिया कपडे पहन सकते है। यहा का बना रेशमी कपडा भी मैं ने देखा और ऊनी और सूती भी देखा। जब यहां के लोग अभी भी अच्छे से अच्छा कपडा बना सकते है तब उन्हें कपडे की कमी क्यों हो और क्यो यहा के लोग महताब साहब के पास जाये कि उडीसा के लिये कपडा दीजिये। एक बात और है। यहां की गाये बहुत छोटी हैं और बैल भी बहुत छोटे है। यह देश तो ऐसा था कि यहां क्षीर समुद्र बहता था। और आज तो बच्चों को पीने के लिये भी दूध नही है। क्यों नहीं हम गाय को ऐसी बना दे कि वे काफी दूध देने लग जाये और बछडे भी अच्छे दे? यह सब बातें मैं ने आपसे कही क्यो कि आवश्यक है और उनके हल करने में हरेक आदमी को काम करने का मौका है। जब हरेक आदमी काम करेगा तभी देश उन्नत होगा और सब की उन्नति होगी। स्वराज्य हो जाने के बाद अब हमारा यह काम है कि सब चीजो की हम तरक्की करें जिससे सब लोग सुखी हो। आप सब बहनो और भाइयो के दर्शन हो गये यह खुशी की बात है।

महात्मा गान्धी के चित्र का अनावरण

*उडीसा उच्चन्यायालय कटक मे महात्मा गाधी के चित्र का १८ नवम्बर १९५१ को अनावरण करने के अवसर पर राष्ट्रपति जी ने भाषण देते हुए कहा--

आज महात्मा गांधी के चित्र का अनावरण करने का आपने मुझे निमन्त्रण देकर जो आदर प्रदान किया है उसके लिये मै आप को धन्यवाद देता हू। जैसा आपने बताया है हम लोगो मे से कुछ का यह अहोभाग्य था कि हम गाधी जी के साथ उनके महान् कार्य मे रहे और अपने जीवन के अधिकाश भाग मे जो तपस्या उन्होने की उसका फल हम आज कुछ हद तक उठा रहे है।

न्याय के इस मन्दिर में हम सब बडी श्रद्धा के साथ आते है क्यो कि हम जानते है कि न्याया-धीशो के समक्ष हम सब बराबर है और हम सब से बराबर का ही व्यवहार किया जाता है। आपने यह ठीक ही कहा है कि हमारी न्याय व्यवस्था इंगलैंड की न्याय व्यवस्था पर आधृत है। यदि मैं कह सकता हू तो मैं कहूंगा कि इसमे हमें कुछ परिवर्तन की आवश्यकता है जो कालान्तर में निश्चय ही हो जायेगा। हमारे देश मे इस समय हरेक बात न्यूनाधिक पुनर्निर्माण की स्थिति में है। ऐसी पुरानी बाते है जिनका लोप हो रहा है और जिनका लोप होना आवश्यक भी है। ऐसी अनेक नयी बातें है जो हमारे देश में होगी किन्तु जिनकी रूपरेखा हमें अभी दिखाई नही पड़ रही है। न्याय व्यवस्था में भी हमें परिवर्तन करने है किन्तु कुछ बाते तो ऐसी है जिनके बारे में कोई भी क्षण भर के लिये भी यदि ध्यान दे तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उनमें तुरन्त परिवर्तन की आवश्यकता है।

*अंग्रेजी से हिन्दी मे अनुवाद।

एक ओर तो हम सब को यह महसूस हो रहा है कि मुकदमेबाजी का दायरा उन राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तनों के कारण जो आजकल हो रहे हैं बहुत कम हो जायेगा । महज यह दायरा कम ही नही होगा बल्कि मुकदमे भी अधिकतर दूसरे किस्म के होने लगेगे । इस राज्य में और पडौसी बिहार और बंगाल के राज्यों मे स्थायी बन्दोबस्त और जमीदारी व्यवस्था के कारण अब तक बहुत मुकदमे होते थे । और जमीदारियो सम्बन्धी ऐसे बडे बडे और मशहूर मुकदमे हुए जो प्रिवी कौसिल तक गये । इस व्यवस्था के कारण जमीदारों और किसानो के बीच मे भी बहुत मुकदमे होते थे । पर इस दिशा मे जो बड़ा परिवर्तन अब किया जा रहा है उस के फलस्वरूप भविष्य में इस प्रकार के लम्बे और बडे मुकदमे न होगे । सम्भवत जमींदारो में भी बहुत मुकदमे-बाजी होगी । सम्भवतः जमीदारो और काश्तकारो मे भी अब उतने मुकदमे न होंगे जितने कि भूतकाल पहले होते थे । किन्तु इसके साथ ही साथ औद्योगिक और व्यापारिक विकास के फल स्वरुप मुकदमेबाजी के नये कारण पैदा हो जायेगे । क्यो कि इन मे मजदूरों से झगडे की काफी गुजाइश है और इसलिये व्यापार सम्बन्धी मुकदमे ओर औद्योगिक सस्थाओं सम्बन्धी मुकदमे काफी तादाद में पैदा होगे । मेरा विचार है कि न्यायालयो को अपना ध्यान अधिकाधिक मात्रा मे इन मुकदमो की ओर लगाना पडेगा । इन से कही ज्यादा महत्व की यह बात है कि हमारा संविधान ऐसा है जिसमे न्यायाधीशो को न केवल व्यक्ति और व्यक्ति के बीच में पैदा होने वाले, एक नागरिक और दूसरे नागरिक के बीच मे पैदा होने वाले, नागरिक और राज्य के बीच में पैदा होने वाले, विवादों को ही तय करना होगा जैसा कि वे अब तक करते रहे हैं वरन् राज्य और राज्य के बीच मे राज्यो और केन्द्रो के बीच में और सरकार और विधान सभाओ के बीच मे भी पैदा होने वाले विवादो को तय करना होगा । इस प्रकार अब न्यायालयो के सामने बडा व्यापक क्षेत्र खुल गया है । उच्च न्यायालयो के सामने लगभग प्रति दिन जो बडी तादाद मे मुकदमे आते हे उनमे से बहुत काफी उनके सामने इसलिये आते हैं कि सविधान के कुछ अनुच्छेदो का निर्वचन किया जाये । मुझे आशा है कि उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय और दूसरे न्यायालय इस उत्तरदायित्व के सभालने को पूर्णतया योग्य सिद्ध होगे और व्यक्ति तथा व्यक्ति, व्यक्ति और राज्य, राज्य ओर केन्द्र और सरकार और विधान सभाओं के बीच मे पैदा होने वाले मुकदमो मे यथावत न्याय करेगे । न्यायालयो के हाथ मे जो अधिकार दिया गया है वह बहुत बड़ा है और यदि मै ऐसा कहु तो गलत न होगा कि इस अधिकार के साथ ही साथ उन पर इन मुकदमो को ईमानदारी से, बुद्धिमत्ता से और जानकारी से और साथ ही साथ कुछ उत्तरदायित्व की भावना से तय करने की भी महान् जिम्मेदारी आ पड़ी है । जहां उन को एक तरफ व्यक्ति की स्वतन्त्रता की रक्षा करनी है वही वे इस बात से भी आख नही मोड सकते कि राज्य की सुरक्षा और हिफाजत और समाज और सामाजिक व्यवस्था की प्रभुता भी बनी रहनी चाहिये । विधान सभाओ, प्रशासनो, तथा जो लोग प्रशासन को चला रहे है उनके लिये सब से अच्छी बात यही है कि बीच का रास्ता अपनायें । किन्तु न्याया-लयो के लिये न तो कोई दायां न कोई बायां और न कोई बीच का कोई रास्ता है । वे तो केवल एक ही रास्ते पर चल सकते है और वह है न्याय, पूर्ण निष्पक्षता और ईमानदारी का रास्ता और इस रास्ते को अपनाने में उनको सर्वदा इस बात का ध्यान रखना है कि व्यक्ति की स्वतन्त्रता का संरक्षण करते समय वे राज्य की सुरक्षा को खतरे में न डाल दें तथा राज्य की सुरक्षा के खातिर वे कही नागरिक की स्वतन्त्रता को खटाई में न डाल दें । यह बात न्यायाधीशों के विचार करने के

'लिये है जिनके पास इन में से अधिक मुकदमे न्याय के लिये आते है। मुझे आशा है कि संविधान के निर्वचन सम्बन्धी मुकदमे कुछ समय के पश्चात् किसी हद तक संख्या में कम होने लगेंगे। जबकि संविधान के जटिल अनुच्छेदो का न्यायिक निर्वचन हो गया होगा तब सम्भवतः उनके बारे में मुकदमेबाजी कही कम होगी। किन्तु मेरा विचार है कि उसमें समय लगेगा। किन्तु तब तक हमें न्यायालयो की अच्छी परम्परा बना लेनी है। हमे केवल न्यायाधीशो के लिये ही नही वरन् वकीलों के लिये भी अच्छी परम्परा बनानी है। वकीलों की जिम्मेदारी बराबर बढती ही जायेगी। और जो काम वकील लोग करते है न केवल उसके लिये ही इसका महत्व होगा वरन् इसके लिये भी इसका महत्व होगा क्यों कि वकीलो में से ही न्यायाधीशो की नियुक्ति होगी। आप को केवल अपना उल्लिखित कर्तव्य ही नही करना है किन्तु आप को यह भी देखना है कि वकील लोग भी इतने ऊंचे उठ जायें कि वे उस कर्तव्य भार को किसी भय या पक्षपात के बिना और ईमानदारी के साथ और परिश्रम के साथ वहन कर सकें जिसके वहन करने की कि उनसे अपेक्षा की जाती है। यह सब केवल न्यायाधीशो से ही अपेक्षित नही है वरन् इसकी अपेक्षा वकीलो से भी की जाती है। यदि दोनो पारस्परिक सहयोग करके आगे बढ़ते है तो वास्तव मे हमारे यहा सुदृढ और उत्तम न्यायिक व्यवस्था हो जायेगी। आप को न तो यह बात भूलनी चाहिये और न आप भूल ही सकते है कि मुकदमे का तथ्य क्या है और आपको बिना किसी भय या पक्षपात के न्याय करने का प्रयत्न करना चाहिये। जब महात्मा गाधी की बात मे सोचता हू और इस विषय पर उनके विचारो का स्मरण करता हूं तो मुझे यह लगता है कि जिस बात के खिलाफ उन्होंने अपनी आवाज उठाई थी वह वकीलों मे एक प्रकार की कमजोरी और बुराई थी। आजकल जब कभी लोग वकीलो और उनके वास्तविक काम के बारे मे सोचते है तो बहुधा उनका यही विचार होता है कि वकीलो का काम तो यही है कि वह एक तरफ के मुकदमे को न्यायाधीशों के सामने रख दे। किन्तु उनके मन मे यह ख्याल नही होता है कि न्यायाधीशो से किसी हालत मे भी वकीलों का कर्तव्य कम गौरवपूर्ण नही होता है। वकीलो को अपने अपने तरफ के मुकदमे को न्यायाधीशो के सामने रखना जरूर चाहिये किन्तु उनको यह न सोचना चाहिये कि उनका काम तो सिर्फ मुकदमे जीतना ही है।

जैसा आपने कहा है इस देश मे जाब्ते के कानून पर फिर से विचार करना बडा जरूरी है। जब मैं कानून के बारे मे कुछ कहता हूं तो मुझे काफी हिचकिचाहट होती है क्यो कि कानूनी मानो में तो मैं ऐसा वकील हू जिस पर तमादी आरिज हो गयी है क्यो कि अनेक वर्षो से कानून से मेरा कोई वास्ता नही रहा है। अत. कानून की मेरी जानकारी अप-टू-डेट तो है ही नही बल्कि एक तरह से वह तो बिल्कुल ही नही है। किन्तु मै यह कह सकता हूं कि इस देश में साक्षी के बहुत से नियमो के बारे मे काफी परिवर्तन की आवश्यकता है। हमने साक्षी के नियमो मे से अनेक को इंगलैड से अपना लिया है। इगलैड का साक्षी कानून बहुत ही कृत्रिम है। और हमारे देश मे विधान सभाओ ने बहुत दफा यह कोशिश की है कि इस कृत्रिमता को बहुत कुछ दूर करदे किन्तु जहां तक मुझे मालूम है वे इस बारे में अभी तक कामयाब नही हुए है। किन्तु कुछ नियम तो सचमुच मे ऐसे है जिनकी इस देश मे कोई उपयोगिता नही है और इस लिये न केवल अदालतों को वरन् विधान सभाओं को भी यह करना है कि वे कानूनों में ऐसा संशोधन कर दें जिससे कि वे यहा के वास्तविक जीवन के अनुरूप हो जायें। मेरा विचार है कि यह किया जा सकता है। हमें ऐसा

करने के लिये वकीलो को, न्यायाधीशो को, और विधिवेत्ताओं को और इनसे भी कही अधिक साधारण जनो की सहायता लेनी पडेगी । हम जानते है कि मुकदमे के बारे मे जो सचाई होती है उसे शहादत मे लोग नही बताते । कभी कभी तो यह होता है कि मुकदमे में जो सचाई है उसको झूठे सबूतो से सिद्ध किया जाता है । मुझे ऐसे वाके भी याद है जब पचायत के सामने गवाही देते हुए गवाह ने यह कहा है कि उसे वहा सच बोलना ही है क्यो कि वह पचायत के सामने गवाही दे रहा है न कि अदालत के सामने । यह ऐसी बात है कि जो विचारणीय है । और कुछ नियमो की ओर जाने की इस कृत्रिमता के कारण अच्छे मुकदमो को भी झूठी शहादत से साबित करना पड़ता है । हमे यह बात समझ बना देनी चाहिये कि झूठी शहादत के बजाय अच्छा मुकदमा सच्ची शहादत से ही साबित किया जा सके । अदालतों को यह काम करना चाहिये और न्याय व्यवस्था को भी यह सफलता हासिल करनी चाहिये । मुझे पटना न्यायालय का एक मुकदमा याद है जिसमे बहस करते हुये मैं ने कहा न्यायाधिपति महोदय मुकदमे मे इन्साफ की माग यह है कि इत्यादि इत्यादि.....इसके जवाब मे न्यायाधीश ने मुझ से कहा कि भाई, न्यायाधीश लोग यहा इन्साफ करने के लिये नही है बल्कि जो शहादते मिसल मे है वह तो उसकी बिना पर फैसला करते हैं । यह एक बड़ी चौंकाने वाली बात थी किन्तु मैं यह समझता हू कि यह बात अक्सर होती है । जो महात्मा गाधी पसन्द करते और जो हमे करना चाहिये वह यह है कि इस तरह [illegible] बनाये जिससे यह दोष हम हटा दे । इसका आशय यही है कि हम को आदमी के चरित्र का निर्माण करना है, चाहे वह वकील हो या न्यायाधीश हो, चाहे मुकदमेबाज हो या गवाह हो । जब हमने यह कर लिया होगा तब हमने ऐसी समाज की स्थापना कर ली होगी जैसी कि महात्मा गाधी चाहते थे । आप लोगो ने अपने से मिलने का मुझे जो मौका दिया है और इस उत्सव मे भाग लेने जिसे मै अपने लिये बड़ा भारी सम्मान समझता हू भाग लेने का जो मौका दिया है उसके लिये मै आपको धन्यवाद देता हू ।

कटक मे अभिनन्दन

ता० १८-११-५१ को ९ बजे दिन मे कटक मे सार्वजनिक सभा मे राष्ट्रपति जी ने कहा --

महामहिम गवर्नर साहब, माननीय मन्त्री जी, बहनो और भाइयो,

इधर तीन दिनो से मै आपके राज्य मे फिर रहा हूं । जैसा आपने कहा है इसके पहले भी मुझे यह अवसर मिला है कि मै उड़ीसा में और विशेषकर कटक, पुरी आदि जैसे प्रमुख स्थानो मे आऊ और कुछ लोगो से परिचय प्राप्त करू । मगर इस बार मै कुछ और हैसियत से और कुछ और ही तरीके से सफर कर रहा हू । जब से मै यहां आया हूं मेरे सामने वे बहुत सी बाते आयी है जो पहले भी आया करती थी । उड़ीसा गरीब है । यहा के लोगों की हालत पहले पहल मै ने १९२१ में गाधी जी के साथ आकर देखी थी । जब मै इस बात पर ध्यान देता हूं कि आपके अन्दर कितनी कला भरी हुई है आपमे कितना सुन्दर काम करने की योग्यता भरी हुई है और आप कितने परिश्रमी है जो इस बात से स्पष्ट है कि यहा की लाखो लाख स्त्री पुरुष, अपने सूबे से बाहर जाकर भी

दूसरो का ऐसा काम, जिसे दूसरे नही कर सकते, करते है तो यह बात समझ में नही आती कि यहां गरीबी क्यो है। आपको इस सूबे के अन्दर भगवान ने बहुत उर्वरा जमीन दी है। भूगर्भ के अन्दर भी अनन्त धन राशि दी है। तब फिर कोई कारण नही कि यहां पर गरीबी क्यो रहे ? मै समझता हू कि यह समय का फेर है और कुछ हमारी अकर्मण्यता है। यह भी हो सकता है कि इस बात पर लोगो ने ध्यान नही दिया है और इसका यह फल है कि आज इस सूबे के अन्दर इतनी गरीबी और दैन्य दीखता है। पर मेरा विश्वास है कि अब जब सारा अधिकार हमारे अपने हाथों में आ गया है आप इस तरह से इस राज्य का प्रबन्ध और शासन करेगे कि जिससे जनता का दैन्य दूर हो जाये और यहा के सब के सब लोग सुखी हो जाये। आज भी आप केवल अपने लिये ही नही बल्कि भारत के दूसरे हिस्सो के लिये भी अन्न पैदा करते है और खिलाते भी है। मै चाहूगा कि केवल अन्न ही नही अपनी जरूरत की दूसरी चीजे भी आप पैदा करे और दूसरो पर आपको कम निर्भर करना पडे जिस से आप अपना जीवनयापन सुखपूर्वक कर सके। मुझे आशा है कि यह सब काम आप जल्द कर सकेगे क्योकि पिछले चार पाच वर्षो के अन्दर जब से हमारे हाथो में अधिकार आया उडीसा ने बहुत काम करके दिखलाया है।

अभी कुछ दिनो पहले तक आपका यह राज्य छोटे छोटे बहुत राज्यो मे अलग अलग बिखरा हुआ था। उन सब को मिला कर उत्कल प्रान्त कायम हुआ है। इसको कायम करने में आपका बडा हाथ रहा है। मै तो यह भी कहूगा कि भारत का जो इतना बडा एकीकरण हुआ जिसमें सभी रियासते भारत मे मिल कर एक हो गयी और हिमालय से लेकर कन्या कुमारी तक और बगाल की खाडी से लेकर अरब समुद्र तक भारत मे एक छत्र राज्य कायम हो गया और वर्तमान है ओर जो भारत के पश्चिमोत्तर और पूर्वोत्तर मे दो अग कट जाने पर भी इतना बडा है जितना बडा भारत एक छत्रराज्य के नीचे न हिन्दुओ के दिनो मे न मुसलमानो के जमाने मे और न ही ब्रिटिश राज्य के अन्दर कभी था उसमे भी आपका बडा हाथ रहा है। मै इसको नही भूल सकता कि जब शुरू मे यह बात सोची गयी कि चारो तरफ फैली हुयी ६०० से ज्यादा छोटी और बडी भारतीय रियासतो को भारत के एक सविधान के अन्दर सम्मिलित किया जाये तो सर्व प्रथम इन रियासतों को मिला लेने का काम उडीसा से ही प्रारम्भ हुआ और भारत का इतिहास साक्षी है कि यह काम यहा की प्रजा ने, और मै यह भी कहूंगा कि यहा के राजाओ ने भी मिल जुल कर इस तरह से पूरा किया कि वह चारो तरफ के लोगो के लिये एक मिसाल बन गया। दूसरे शब्दो मे उडीसा ने ऐसा उदारहण पेश किया जिसे सारे देश के राजाओ ने माना और जिसके अनुसार उन्होंने भी काम किया। जब से हम स्वाधीन हुए है तब से जितने काम हमने किये है उनमे सब से बडा काम भारत के एकीकरण का हुआ है और उसमे आपका नम्बर सब से आगे है। यह छोटी बात नही है। यह मै खुशामद की बात नही कर रहा हू। जो कुछ मैने कहा है वह सही बात है। मुझे आशा है कि और जो बडे-बडे काम है उनको पूरा करने के लिये आप इसी प्रकार कटिबद्ध हो जायेगे और अपने मे हिम्मत और साहस पैदा करेगे जिससे उनको भी उत्साह और साहस से आप कर सके। एकीकरण के इस काम का विशेष महत्व इसमे है कि इसके संपादन में कही खून-खराबी की जरूरत नही पडी, किसी के साथ सख्ती करने की जरूरत नही पडी। महात्मा गाधी कहा करते थे कि मै चाहता हूं कि जिनके हाथों मे धन है वे अपने को उसका थातीदार समझें। इस आदर्श को हमारे देश के इन राजाओ ने उस समय पूरा कर के दिखा दिया जब उन्होंने अपने

हाथों से अपने राज्य का भार भारत सरकार को सौंप दिया और भारत के एकीकरण में सहायता दी। चाहे और लोग कुछ भी क्यों न सोचते हों मेरा अपना विश्वास है कि इस देश के लोगों के अन्दर समानता लाने के लिये सारे प्रयत्न तभी सफल होंगे जब हम उसी भावना से काम करेंगे। अगर हम ने उस भावना से काम नहीं किया और जोर जबरदस्ती से काम किया तो आप के सारे प्रयत्नों के बावजूद देश में खून खराबी देखने में आयेगी ही और उससे हम बच नहीं सकेंगे।

महात्मा गांधी के रास्ते को आज विनोबा भावे दिखा रहे हैं। वह पैदल चल कर सारे हिन्दुस्तान का दौरा कर रहे हैं। इस दौरे में जिनके पास भूमि है उन से वह भूमि मांगते हैं। उन्होंने दिल्ली में उस दिन कहा कि मैं भिक्षा नहीं मांगता हूं, मैं तो लोगों को दीक्षा देने आया हूं। भिक्षा तो वह मांगता है जो खुद लेकर अपने ही काम में लाना चाहता है। मैं तो लोगों को यह बताना चाहता हूं कि जिनके पास जमीन है उनका क्या कर्तव्य है। जब महात्मा गांधी ने कहा था कि धनवालों को अपने आपको अपने धन का भागीदार समझना चाहिये तब उनका भी यही आशय था। मैं आशा करता हूं कि दिन आयेगा जब यही सिद्धान्त इस देश में मान्य होगा--चाहे वह आज से ३० वर्ष के बाद ही हो। महात्मा गांधी ने कहा था कि हम अहिंसा से स्वराज्य लेंगे और हर प्रकार के हथियारों से लैस ब्रिटिश सरकार का हम अहिंसा से मुकाबला करेंगे। हम में से अधिकांश लोगों को जो उनके पीछे पीछे चलते थे उसमें विश्वास नहीं होता था। हम समझते थे कि इस जरिये से जागृति हो सकती है, उसे हो जाने दें और पीछे देखा जायेगा कि हम और कौन सा कदम उठायें। हम लोग अहिंसा के महत्व को उतना नहीं समझते थे जितना महात्मा गान्धी बताना चाहते थे। किन्तु अन्त में हमने देखा कि यद्यपि सब उस रास्ते पर पूरी तरह से नहीं चल सके तो भी जो मकसद हमने सामने रखा था वह पूरा हो गया और हम ने स्वराज्य प्राप्त कर लिया। हमने उस रास्ते को जहां तक नहीं समझा था उतनी ही कमजोरी रह गयी। वह हमको सिखा कर के, हमारे सामने चित्र रख करके गये हैं। मुझे विश्वास है कि श्रद्धा के साथ गांधी जी के रास्ते पर चल कर आप काम करेंगे और देश को जहां तक गांधी जी ले जाना चाहते थे वहां तक ले जायेंगे। राज्य चलेगा चारित्रिक और नैतिक बल से, पशुबल से नहीं। मैं चाहता हूं कि उड़ीसा के लोगों में इस बल की कमी नहीं होनी चाहिये। मैं यह भी समझता हूं कि इसकी कमी नहीं है। आज यहां इतने मन्दिर बने हुए हैं, इतने खंडहर हैं। ये सब इस बात का सबूत हैं कि यहां के लोगों की धार्मिक भावना कहां तक पहुंची थी। आज भी उसी भावना को हम जागृत करना चाहते हैं। यहां के लोग दुखी हैं गरीब हैं। मैं आशा करता हूं कि वे उठेंगे और आगे निकलेंगे।

यह कहने की जरूरत नहीं कि चाहे यहां की सरकार हो चाहे केन्द्रीय सरकार हो उसकी पूरी सहानुभूति आप लोगों से है। मैं यह कहना चाहता हूं कि केन्द्रीय सरकार हमेशा इस बात का खयाल रखती है। आप पर इधर एक भारी बोझ यह भी आ गया है कि आपकी आबादी के अन्दर पिछड़े हुए लोगों की एक भारी तादाद है, चाहे आप उनको हरिजन कहें या आदिवासी। इसलिये आपकी जवाबदेही और आपका खर्च भी अधिक है। मैं उम्मीद करता हूं कि इसमें आप को सहायता मिलेगी और जहां तक मिलती आयी है उससे भी अधिक मिलती रहेगी। मैं आशा करता हूं कि उसका आप अच्छे से अच्छा उपयोग कर सकेंगे और अपने इस राज्य को समृद्ध बना सकेंगे। मैं एक बार फिर आपको धन्यवाद देता हूं।

बाजीराउत छात्रावास

बाजीराउत छात्रावास, अंगुल के छात्रों और छात्राओं के सामने ता० २८-११-५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा—

मालती देवी जी, बहनो और भाइयो,

इस आश्रम में आकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस का कारण यह है कि जब कभी मैं इस तरह का आश्रम देखता हूं तो मेरे सामने बहुत बातें आ जाती हैं। मैं यह मानता हूं कि इस किस्म के आश्रम ही आगे चल कर हमारे भारतवर्ष के भविष्य को जैसा हम बनाना चाहते हैं वैसा बनाने में सहायक होंगे। यहां पर जो काम आप कर रहे हैं उस की छोटी सी रिपोर्ट मुझे देखने को मिली है। उस में मुझे मालूम हुआ कि बुनियादी तालीम का जो काम महात्मा गांधी ने शुरू किया था उस को आप यहां पर ठीक चला रहे हैं और जिस रूप से वह उस को चलाना चाहते थे उसी रूप में आप उस को चला रहे हैं। इस बुनियादी तालीम के बारे में गवर्नमेन्ट की ओर से बहुत सी बातें मान ली गई हैं पर मैं मानता हूं कि सब बातें पूरी तरह से गवर्नमेन्ट ने नहीं मानी हैं और अगर मानी भी हैं तो उन पर पूरा अमल नहीं हो रहा है। जहां जहां आश्रम हैं वहां लोग इस काम को खूबी से चला कर गवर्नमेन्ट को यह दिखा सकते हैं कि इस के जरिये से कितना बड़ा काम हो सकता है और उस के मुकाबले में सरकारी संस्थाओं से कितना कम काम होता है। गवर्नमेन्ट के सामने अपना अच्छा काम आप दिखा कर उसे मजबूर करें और कहें कि हम ने छोटे पैमाने पर कर के दिखाया है और बड़े पैमाने पर उस को चलाने का काम गवर्नमेन्ट का है। तो आप जिस तरीके से इस काम को चला रहे हैं वह ठीक है। बुनियादी तालीम के बारे में शिक्षाशास्त्रियों ने सभी बातें मान ली हैं। एक चीज को वे नहीं मानते हैं। वे इस चीज़ को नहीं मानते हैं कि स्कूल का सारा खर्च स्कूल से ही निकल सकता है। बुनियादी तालीम के बारे में जब पहले पहल गांधी जी ने एक कान्फ्रेंस की थी उस समय भी यही उज्र उठाया गया था और वह आज भी उठाया जाता है। लेकिन जहां इस काम को कर के देखा गया है वहां यह बात साबित हो चुकी है कि शिक्षा का खर्च स्कूल से ही निकल सकता है। आप की रिपोर्ट से मालूम हुआ कि आप यह साबित करना चाहते हैं कि आश्रम का खर्च आश्रम के ज़रिये से ही निकल आये। जब तक आश्रम के जरिये से शिक्षा देने का तरीक़ा हम नहीं निकालेंगे— ऐसे आश्रम द्वारा जो अपना खर्च आप निकाल ले- तब तक हमारे देश की अत्यन्त ग़रीबी के कारण देश में हरेक स्त्री, पुरुष और बच्चा शिक्षित न किया जा सकेगा। हमारे पास इतने पैसे हैं ही नहीं कि हम सभी जगहों पर स्कूल कायम कर सकें और सभी बच्चे और बच्चियों को तालीम दे सकें। इस लिये यदि इस किस्म के स्कूल हों तो काम चल सकता है। गांधीजी ने यही सोच कर इस काम को जारी किया था। आप उस काम को कर रहे हैं और मुझे यह देख कर बड़ी खुशी हुई कि आप इसे सफलतापूर्वक कर रहे हैं।

मैं उम्मीद करता हूं कि जिस तरह से आप काम चला रहे हैं चलाते रहेंगे। मैं उम्मीद करता हूं कि नवकृष्ण बाबू इस काम में दिलचस्पी लेते रहेंगे और जिस हैसियत से आज

वह यहां बैठे हैं उस हैसियत से भी दिलचस्पी लेते रहेंगे । मैं यह भी उम्मीद करता हूं कि गवर्नर साहब भी जो यहां बैठे हुए हैं इस काम में दिलचस्पी लेंगे । आप बच्चे और बच्चियों से मिल कर और इस आश्रम को देख कर मुझे बड़ी खुशी हुई ।

कृषि प्रतियोगिता

तारीख २१ नवम्बर को बिहार के ऊख उपजाने वालों की प्रतियोगिता में सफल किसानों को इनाम देते समय राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम राज्यपाल जी, बहनों और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आप ने इस सूबे के अन्दर भी ऊख उपजाने वालों में मुकाबला शुरू किया है और खुशी की बात यह है कि जो नतीजा आप को मिला है वह बहुत ही अच्छा है । जैसा अभी श्री दीप नारायण सिंह ने बताया, किसी एक भाई ने एक एकड़ में १०० टन ऊख पैदा की है । जहां तक मैं ऊख के सम्बन्ध में जानता और सोचता हूं तो मालूम होता है कि ऊख और चीनी का व्यवसाय इस वक्त भारत में एक बहुत ही कठिन समय से गुजर रहा है और अगर इस का ठीक इन्तजाम न किया गया तो हो सकता है कि कुछ दिनों के बाद यह व्यवसाय हमारे हाथ से निकल जाये । उस का एक कारण जो सब देख सकते हैं और जान सकते हैं वह यह है कि हमारे यहां एकड़ पीछे जो ऊख लोग पैदा करते हैं वह और देशों के मुकाबले में बहुत ही कम है । मेरा अपना खयाल है कि आप इनाम लेने वाले चाहे १०० टन प्रति एकड़ भले ही पैदा कर लें पर मामूली किसान जो अपने खेतों में ऊख पैदा करते हैं उन को २५० या ३०० मन प्रति बीघे से ज्यादा नहीं पड़ती है । अगर हम इतनी ही ऊख पैदा करते रहें तो हम और मुल्कों का मुकाबला नहीं कर सकते जहां मामूली तरह से एक एकड़ में लोग १००० मन पैदा करते हैं । इस लिये यह जरूरी है कि इस ओर हमारा ध्यान जाये । और जो दूसरे सवाल होंगे वे उतना असर नहीं रख सकेंगे हां थोड़ा बहुत उनका असर हो सकता है । मान लीजिये कि जहां १०० मन ऊख में १० मन चीनी होती है उस को आप सवा दस मन, साढ़े दस मन या ग्यारह मन भी बढ़ा कर कर सकते हैं । मगर इस में उतना फर्क नहीं पड़ेगा । लेकिन अगर ऊख की पैदावार २५० -३०० मन प्रति एकड़ के बदले आप ने ६०० मन भी कर ली तो उस में बहुत फर्क पड़ जायेगा । इस लिये चीनी के व्यवसाय के लिये सब से जरूरी चीज यह है कि किसानों को पूरे साधन दिये जायें और बताया जाये कि किस तरह वे पैदावार बढ़ा सकते हैं। इन प्रतियोगिताओं से यह बात साबित हो गई है कि ऊख की पैदा-

बार बढाई जा सकती है। इस में कोई शक नही है कि यह चीज केवल ऊख के लिये ही नही है तमाम खेती के बारे मे लागू होती है। कोई भी अन्न ले लीजिये। हमारे यहा पैदावार और मुल्को के मुकाबले मे बहुत कम है और आज हम लाखो लाख बीघे जोतने के प्रयत्न में लगे हुए है। लेकिन जिस जमीन मे ऊख पैदा हो रही है उस की पैदावार सवाई या डेढी हम बढा ले तो हमारी सारी दिक्कत दूर हो सकती है। इस लिये यह बहुत ही जरूरी है कि जो इस विषय मे जाच पडताल करते हो वे किसानों को बतलाये कि कैसे पैदावार बढाई जा सकती है। इस सम्बन्ध मे मैं यह कह देना चाहता हू कि कोई बात हमारे सामने आती है तो हम लम्बी चौड़ी योजना बनाने लगते है जिस मे लाखो की बात होती है और आज कल तो करोडो की बात होती है। बहुत खर्च भी होता है और जितना नतीजा हम चाहते है उतना नतीजा नही होता। हमारा ध्यान उन चीज़ों की ओर जाना चाहिये। अगर छोटी छोटी बातो पर भी हम ध्यान दें तो हम बहुत तरक्की कर सकते है। आप जानते है कि हमारे यहा जो लोग शिक्षा लिया करते हैं, कालेजो मे पढा करते है वे हमारे यहां के किसानो को लकीर का फकीर बतलाते है। बात ऐसी नही है। ऊख के ही मामले मे देखिये। जब से खोज होने लगी तब से साल में एक दो नई वैरायटी की ऊख निकल ही आती है। जब किसानों की समझ में यह बात आयी कि नई किस्म की ऊख मे ज्यादा पैसे मिलते है तो उन्होंने उस को अपनाया और वैसा करने मे उन को कोई हिचकिचाहट नहीं हुई। पुराने जमाने मे जब किसान ऊख बोते थे तो कोल्हू से पेर कर गुड बना कर बेचते और फ़ायदा निकालते थे। लेकिन जब मिल और फैक्ट्री खुली और उन को मालूम हुआ कि ऊख फैक्ट्री मे देने मे ज्यादा फ़ायदा है तो वे फैक्ट्री मे देने लगे और मिल वाले उन से ऊख खरीद कर मिल में लाया करते थे। जब किसानों को यह मालूम हुआ कि ऊख फैक्ट्री में पहुचा देने मे ज्यादा फायदा है तो वह खुद ऊख फैक्ट्री तक ले जाने लगे और अब शायद ही कोई कोल्हू मे ऊख पेरता हो। अत. इन को विश्वास होना चाहिये कि इस काम से फायदा है और वे उस मुताबिक काम करना शुरू कर देगे। तो हमारे यहा जो लोग खोज मे लगे हुए है उन को इन चीजो पर ध्यान देना चाहिये कि कौन सी चीज किस तरह से कम खर्च मे हो और उस मे छोटे छोटे किसान किस तरह से पैदावार बढा सकें। जो नई नई फैक्ट्री बने वह अपने स्थान पर बने। उन से लाभ होगा। लेकिन उन के साथ साथ जो चीजे दरवाज़े पर मिलती है उन चीजो का इस्तेमाल करना सीख लेना निहायत जरूरी है। बहुत सी चीज़े है जिन से बीमारी बढती है, अगर उन चीजों से खाद बनाया जा सके तो किसानो को सिखलाना चाहिये और सिखलाने का तरीका भी आसान बनाना चाहिये। किसी चीज़ से घृणा होती है तो उस को छुडाना चाहिये और ऐसा आसान

तरीका बताना चाहिये कि खुशी से वह काम कर लिया जाये। दूसरी चीज़ यह है कि उन को यह सिखलाना चाहिये कि कहां गन्ना लगाया जाता है और ऐसा इन्तजाम करना चाहिये जिस में गलत लगाये जाने का उन को मौका ही नही मिले। इस से भी उन को बचाना चाहिये। उन को विश्वास हो जायेगा तो वे आप निकाल कर के उस के लिये खेत रखेंगे। आज अन्न और ऊख दोनो के बीच लड़ाई है। उन से पूछा जाये कि वे अन्न पैदा कर सकते है या ऊख। हम गेहूं और चावल के बिना तो नहीं रह सकते है, चीनी के बिना रह सकते है। इस लिये अगर ऐसा मुका-बला पैदा हो गया तो हम को ऊख को छोड़ना पड़ेगा और चावल की ओर जाना होगा। इस के मुकाबले से बचने के लिये यह जरूरी है कि हम चावल की पैदावार बढ़ाये और जितना खेत चावल और गेहू की खेती से निकाल कर ऊख की खेती मे ले गये है उस मे भी अधिक अन्न पैदा करे। मेरा विश्वास है कि यह हो सकता है। एक बात और। पानी एक ऐसा साधन है जो खेती के काम में बहुत काम दे सकता है। इस लिये पानी का बन्दोबस्त ज़रूरी है। इस के बन्दोबस्त के लिये बड़ी बड़ी योजनाये है जिन मे १०० करोड़, १५० करोड़ रुपये का खर्च है। वे न मालूम कब तक पूरी होंगी या नही भी होंगी। जब तक वे पूरी न हो तब तक हमे गावो मे छोटे छोटे कुओं से पानी तथा तालाबों से पानी निकालने का प्रबन्ध सोचना है। छोटी छोटी नदियों मे बाध बांधने की बात भी सोचनी चाहिये। यह सब तो आसानी से हो सकता है। रास्ता दिखलाने की सिर्फ जरूरत है, ऐसा रास्ता दिखाने की जिस मे कोई आदमी यह नही सोचे कि यह हमारी शक्ति से बाहर की बात है। अगर वे अकेले नही कर सकते हों तो उन को ऐसा रास्ता बतलाना चाहिये जिस मे गाव के लोग मिल कर उसे कर ले।

मुझे इस बात की खुशी है कि आप ने ऊख के बारे मे ऐसा काम किया है। मैं उम्मीद करता हू कि अन्न के बारे मे भी आप ऐसा ही करेंगे। जहा की ज़मीन ऐसी उर्वरा हो, जिस में एक फसल दो फसल की कौन कहे, तीन तीन फसल पैदा हो सकती है और लोग पैदा करते है, वहा अन्न की कमी हो, यह बात समझ में नही आती। मगर आज ऐसी ही बात है। कहा जाता है कि हमारे यहा अन्न की कमी इस-लिये है कि हमारी आबादी ज्यादा है। मगर जितनी ज़मीन हमारे पास है उस मे अगर ठीक से काम किया जाये तो जितने अन्न की जरूरत हम को होती है उतना अन्न हम पैदा कर सकते है और हमे दूसरो के मुह ताकने की ज़रूरत नही होगी। मैं उम्मीद करता हूं कि हम को किसी दूसरे के दरवाज़े पर जाने की ज़रूरत नही होगी। मैं इतना ही कह कर जो भाई अभी इनाम पायेंगे उन को पहले से ही बधाई दे देता हूं।

छोड़ दिया है। अब कुछ दिनों में चर्खे को लोग भूल भी जायेंगे और शायद लोग भूल गये है और भूलते जा रहे है। मगर ऐसे ही समय में जिन को चर्खे के प्रचार और उन की उपयोगिता में विश्वास है उन के लिये उस का प्रचार करना आवश्यक है। क्योंकि जिस समय गांधीजी ज़िन्दा थे लोग उनके पीछे दौड़ते थे और गांधी जी के कहने की वजह से जिन को विश्वास नहीं भी था वे भी इस चीज़ को मानते थे और उस के प्रचार में लग जाना अपने लिये एक बड़ा काम समझते थे। उस समय उनके पीछे पीछे चलना तो आसान था, मुश्किल नही। मगर जब वह हवा नही रही, वह वायु मंडल नहीं रहा और लोगों की ओर से और कुछ नहीं तो कम से कम उपेक्षा मिल रही हो उस में विश्वास रखना और उस को चलाना सचमुच सराहनीय काम है। मेरा विश्वास है कि चाहे आज हम भले ही उस को हेय दृष्टि से देखें और देखने भी लग गये है मगर एक दिन आयेगा जब फिर से उस का महत्व हम समझेंगे। क्योंकि चर्खा कोई चीज नही है। वह तो एक चिन्ह है। उस के पीछे बड़ी भावना है और बड़ी बड़ी चीजें है। महात्मा गांधी जिस तरह से समाज की रचना चाहते थे उस समाज के संगठन के लिये वह चर्खे को प्रतीक मानते थे। वे सब चीज़ों का नये तरीक़े से निर्माण करना चाहते थे। अतः अब इस चीज़ पर हम ध्यान देते है तो उस का महत्व और अधिक मालूम होता है। इस लिये मै चाहूंगा कि आप इस चर्खे को चलावें, और जैसा गांधीजी चाहते थे, विश्वास के साथ चलावें, और लोगों में उसी विश्वास के साथ उस का प्रचार करें। केवल यही न समझें कि यह एक चीज़ है चलाते चलो, लोग कहते है तो चला लिया करो। अगर ऐसा विश्वास कर के आप काम करेंगे तो जो दिन लौटा है, बहुत दिनों के बाद जो समय लौटा है उस के आप उपयुक्त सिद्ध होंगे।

यह केवल चर्खे के सम्बन्ध में ही सत्य नहीं है वरन् अन्य क्षेत्रों में इस की सच्चाई सर्वोपरि है। हमारे सामने बड़ी बड़ी चीज़ें आती है और बड़ी बड़ी चीजों को लेकर हम बड़े पैमाने पर सोचने लग जाते है। किन्तु हमारे देश की कुछ ऐसी शिक्षा रही है, कुछ ऐसी संस्कृति रही है कि छोटी-छोटी चीजों से बड़े बड़े काम यहां लोग निकालते आये है और छोटी चीजों को ही अधिक महत्व देते आये है। मेरा तो अपना विश्वास है कि बड़ी चीजों से बड़ा काम निकालना उतना बड़ा काम नहीं है जितना छोटी चीजों से बड़ा काम निकालना है। आज आप जा कर देखें कपड़े के बड़े बड़े कारखाने खुल गये है; एक जगह में नही, एक दो नही, हजारों की तादाद में तकुए चल रहे है और कारखाने चल रहे है और उस में रंग बिरंग के कल लगे हुए है। तो आप इस को बड़ा काम मानियेगा या तकली की ईजाद को बड़ा मानियेगा, वह तकली जिस को आप बात की बात में और १ पैसे में बना सकते है? उस तकली से जितना महीन सूत निकलता है उतना महीन सूत किसी मशीन से नहीं निकलता। आप सोचिये तो दोनों में कौन बड़ा काम है। उसी तरह से जब मै विद्या की ओर ध्यान देता हूं तो देखता हूं कि आज कल की शिक्षा का यह फल है कि जिस को थोड़ा भी कहना हो वह बहुत कह देता है, जिस को थोड़ा भी लिखना हो वह बहुत लिख देता है, जिस के पास कुछ कहने को नहीं है वह भी बहुत बोल देता है। मै भी बहुत बोला करता हू, और, और लोग भी बोला करते है। किन्तु हमारे यहा दो चार सूत्रों में हमारे

महिला चर्खाक्लास, पटना

महिला चर्खाविलास, कदमकूआं, पटना मे तारीख १९-११-५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम राज्यपाल जी, बहनो और भाइयो,

चर्खाक्लास से मेरा सम्बन्ध, जैसा आप ने कहा गया, शुरू से ही कुछ न कुछ रहा है। इधर जब से मै दिल्ली चला गया तब से सम्पर्क बहुत कम हो गया है, तो भी मेरी दिलचस्पी उस में बराबर ही रही है और इस लिये मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि जिस चीज को, जैसा आप की रिपोर्ट मे कहा गया है, आप ने तीन चर्खों से शुरू किया था वह आज बढ़ कर इतनी अच्छी संस्था हो गई है कि उस का अपना मकान हो गया है, उस की अपनी ज़मीन है और जो यहां की स्त्रियों की सेवा कर सकती है। बात यह है कि कोई भी काम हो, अगर उस को करने वाले लगन के साथ करते हैं तो फिर उस के लिये किसी न किसी तरह से, जैसा रिपोर्ट मे कहा गया है, और कही न कहीं से रुपये आ ही जाते हैं। देश के काम मे तो अक्सर काम करने वालों की कमी होती है, काम की कमी नहीं। महात्मा गांधी बराबर ही कहा करते थे कि अगर काम करने वाले हों तो धन के अभाव के कारण कोई काम नहीं रुकेगा और अगर कोई काम रुका तो समझना चाहिये कि उस काम में कोई कमी है या काम करने वालो में कोई कमी है नहीं तो काम रुकता ही नही। इस लिये आहिस्ता आहिस्ता जो इस की तरक्की हो रही है उस को देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है और मै चाहता हू कि इस की और तरक्की हो। आपने जो अपने मन में यह ठान रखी है कि आप हमेशा काम करते जायेंगे और किसी चिन्ता में न पड़ेंगे मै समझता हूं कि यह एक बहुत अच्छा शुभ चिन्ह है। मेरी ऐसी आशा है कि आप का काम आगे बढ़ेगा, रुकेगा नहीं।

बिहार में विशेष करके स्त्रियों मे शिक्षा तो बिल्कुल थी ही नहीं। अब उस का थोड़ा प्रचार हो रहा है। पर तो भी और जगहों के मुकाबले में अब भी सब बातों मे हम पीछे है। अभी भी इस तरह की सस्था और स्त्रियों की शिक्षा के लिये स्कूल और कालेज तथा दूसरे काम करने की जो सस्था है नही के बराबर हैं। इस लिये यह सस्था जितने आगे बढ रही है उस को देख कर और भी प्रसन्नता होती है। मै चाहूगा कि इस में काम करने वाले उत्साह से काम करते जाये। जो अन्य लोग इस के काम को पसन्द करते है उन का भी धर्म है कि उन में से जिन से जितनी मदद हो सके वे उसी प्रकार इसे देते रहें जिस तरह से अभी तक उन्हों ने दी है।

एक काम जिस को ले कर इसे शुरू किया गया था वह चर्खे का काम है। आज चर्खे के सम्बन्ध में कुछ कहना जरूरी नही है क्योंकि यह सभी लोग जानते है कि गांधीजी ने कितना महत्व इस को दिया था। अब हम ने चर्खे को कुछ दिनों चला कर

पूवर्ज इतना कह गये है कि जिस पर ग्रन्थ लिखे जा सकते है। तो यह हमारे यहां की यह खूबी रही है। आप इस तरीके से चीजों को देखे तो आप को पता चलेगा कि आज जो आप बडी बडी चीजे देख रहे है वे छोटी चीजों के ही दूसरे स्वरूप है। बडे बडे कारखाने इस छोटी तकली के ही दूसरे स्वरूप मात्र है। इस से भी सूत काता जाता है और बडे कारखानों मे भी सूत काता जाता है जिस से कपडे बनते है। छोटी छोटी चीजों को कम से कम मै बड़ी चीजो से अधिक महत्व देता हू। अपने देश मे एक छोटे दायरे में बडा काम निकल जाता था। आज कल बडे बडे कारखानो मे हजारो हजार मजदूर काम करते है और हम समझते है कि बहुत लोगो को मजदूरी मिल गई है और उस से बहुत लोगों को लाभ पहुचता है। मगर हम इस बात को भूल जाते है कि इस काम को करने वाले पहले कितना हौसला रखते थे और वे कितने काम करते थे। कारखाने मे सिर्फ यह होता है कि बहुत चीजे इकट्ठी देखने को मिल जाती है। मेरा तो अपना विश्वास है कि गांधी जी के बताये अनुसार जब तक हम देश के अन्दर विकेन्द्रीकरण नही करेगे तब तक इस देश के इतने लोगो का उद्धार नही हो सकेगा। आज सिर्फ भारत मे ही नही सब देशो मे केन्द्रीकरण होता रहा है, जैसे २ केन्द्रीकरण होता जा रहा है बेकारी बढ़ती जा रही है। जैसे हम लोग पहले देखते थे कि पहले घर घर मे कूआ होता था और उस से लोग पानी निकाला करते थे और इस तरह से हजारो हजार कूंए शहर और गावो मे बनते थे। आज एक जगह पानी के कल का कारखाना बना दिया जाता है और उसी के जरिये से सारे शहर मे पानी पहुंचाया जाता है। इस से आराम जरूर होता है मगर मैं समझता हू कि अगर एक भूकम्प आ गया और वह पानी का कारखाना टूट गया तो सारे पटना शहर को पानी मिलना बन्द हो जायेगा। अगर घर घर मे कूआ होता तो सब के सब नही मथ जाते और अगर मथ जाते तो उस को साफ करने में अधिक मेहनत नही होती। आज संसार में लोग इस चीज़ को समझने लग गये है। मगर अभी केन्द्रीकरण की हवा चल रही है। मै आशा करता हूं कि कुछ दिनों के बाद विकेन्द्रीकरण की बात आयेगी और सारे समाज पर जोर न दे कर व्यक्ति की तरफ जोर दिया जायेगा क्यो कि जब व्यक्ति अच्छा होगा तभी समाज भी अच्छा होगा। मगर आज इस से उलटा कहा जाता है कि जब समाज ठीक होगा तो सब व्यक्ति ठीक रहेगे। मै मानता हू कि यदि व्यक्ति ठीक होगा तभी समाज ठीक होगा क्योंकि जब ईट ठीक नही होगी तो मकान भी ठीक नही होगा। मै तो मानता हू कि विकेन्द्रीकरण का यही अर्थ है। गांधी जी इसी पर जोर दिया करते थे और इस मे मेरा अपना विश्वास रहा है और आज भी विश्वास है। मैं आशा करता हू कि जो लोग इस में लगे हुए है वे थोड़ा सूत निकाल लेने और कपडा बुन लेने से ही सन्तुष्ट न हो कर जो गूढ़ तत्व इस के पीछे छिपे हुए है उन पर ध्यान देगें और इस का जितना विकास निकाला जा सकता है निकाला जायेगा। मैं और क्या कहू। मै उम्मीद करता हू कि सब लोग इस संस्था को मदद देगे क्यो कि इस ने उन के बच्चो को सुधारने का काम उठाया है। मै समझता हू कि सिर्फ भारत मे ही नही बल्कि सभी देशो मे लोग इस बात को मानते है कि माता ही देश की सिरजनहारिणी होती है। वह सिर्फ बच्चों को पैदा ही नही करती बल्कि बच्चों पर अपना सस्कार भी डालती है। बच्चे तभी ठीक होगे जब माता ठीक होगी। इस का बड़ा महत्व है और मै आशा करता हू कि आप इस महत्व को समझेगे और काम करते जायेंगे।

बिहार कलाभवन का शिलान्यास

तारीख २० नवम्बर, १९५१ को बिहार राज्यकलाभवन का शिलान्यास करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा--

महामहिम राज्यपाल, माननीय डाक्टर अनुग्रहनारायण सिंह, बहनो और भाइयो,

मुझ इस बात की बडी खुशी है कि आप ने मुझे यह मौका दिया कि आज मै इस काम मे आ कर शरीक होऊ। जैसा आप ने कहा कि सन् १९४० मे रामगढ काग्रेस के समय हम लोगो ने पहले पहल सोचा था कि हम चित्र द्वारा बिहार का इतिहास लोगो के सामने रखे और उस के लिये कुछ नौजवान चित्रकारो ने जो उस वक्त यहा रहते थे बहुत उत्साह से इस काम को कबूल किया था और उस के साथ साथ ही पटनावासी श्री ईश्वरी प्रसाद वर्मा ने उन का उत्साह बढाया और खुद एक या दो चित्र तैयार किये। काग्रेस के बाद यहा पर यह सवाल उठा कि उन तस्वीरो का क्या किया जाये कहा उन को रखा जाये। काग्रेस के पास कोई अपना मकान नही था जहा तस्वीरो को रखा जाता। लेकिन ठीक उसी समय आर्ट स्कूल की स्थापना हो गई और उन चित्रो को आर्ट स्कूल मे रखा गया। पीछे जिस समय मै जेल मे था तब मै ने सुना कि उस समय के यहा के गवर्नर ने उन चित्रों की नकल करा के गवर्नमेन्ट हाउस मे रखवाया क्यो कि उन्हो ने समझा कि ये चित्र अच्छे है। इस प्रकार इन से मेरा सम्बन्ध रहा है। सभवत इसी लिये आप ने समझा है कि मेरे हाथो से इस की नीव आप डलवायें जिस के लिये मै आप का शुक्रिया अदा करता हू।

बात यह है कि जब कभी कोई देश स्वतन्त्र होता है तो उस की बहुमुखी उन्नति करना और उस को एक तरह से विकसित करना लोग चाहते है। उस की तरक्की अगर किसी एक ही चीज में हुई तो फिर वह देश बडा देश नही हो सकता, वह आजादी बड़ी आजादी नही हो सकती। इस लिये यह जरूरी है कि उस की तरक्की शिक्षा मे हो, उस की तरक्की माली हो उस की तरक्की राजनैतिक हो, उस की तरक्की कलाओं के क्षेत्र में हो अर्थात् हर तरह से उसकी तरक्की हो। इस लिये यह स्वाभाविक है कि हमारे स्वतन्त्र होने के पश्चात उस तरह का उत्साह हमारे दिलों में हो और हम इन चीजो की ओर बढे।

मै खुद तो कोई कला नही जानता हू मगर उन को देख कर मेरे दिल मे प्रसन्नता होती है और मुझे सच्चा आनन्द मिलता है, चाहे वह कला चित्र के रूप मे हो, चाहे वह बड़ी इमारतो के रूप में हो, चाहे मूर्तियो के रूप मे हो या सुन्दर गाने के रूप मे हो। किसी भी रूप मे हो जब कला देखने मे या सुनने मे आती है तो उस मे जी प्रफुल्लित होता है। इस लिये जहा कही मै जाता हू तो इस तरह की चीजो की ओर खास कर के अपने देश की पुरानी चीजों को देख कर खुश होता हू। अभी तीन दिन ही हुए है मै उडीसा मे घूम रहा था। तीन दिनो मे वहा स्थापत्य कला और मूर्तिया बनाने की कला के ऐसे ऐसे नमूने देखे जो आज प्रायः हज़ार

वर्षों के बाद भी अपनी जगह पर कायम है और जिन के मुकाबले की चीजे शायद दुनिया में बहुत कम मिलेगी। हिन्दुस्तान मे इस तरह की चीजे और भी जगहों मे बहुत सी है। कोनार्क मे सूर्य का मन्दिर एक ऐसा मन्दिर है जिस का जोडा शायद कही नही मिलेगा। इसी तरह दूसरा जगहों में जहा जहा मै गया हूं इसी तरह की चीजे देखने मे आई है। बिहार एक समय दुनिया मे ऐसी चीज़ों का केन्द्र था। आज ही मै नालन्दा मे विहार की नींव डालने गया था। वहा पर मै ने कहा था कि केवल विद्या ही नही फिलासफी ही नही, कला भी नालन्दा मे बहुत दूर तक पहुंच गई थी। आप को यह सुन कर आश्चर्य होगा कि भारत के उस हिस्से मे जिस को आज मध्य एशिया कह सकते है वहां की कला के नमूने पाये जाते है, और जो यहा से ही गई था, जाई गई उस भारत की कला को ही कहना ही पडता है। वहा पर हाल मे बहुत गुफाये ऐसी मिली है जो अजन्ता की गुफाओ की तरह बनी हुई है और मै ने यह भी सुना है कि कुछ चित्रकार जो उन के बनाने के लिये लगाये गये थे वे यहा से ही ले जाये गये थे और भारत से ही जा कर उन्होने उन गुफाओ को बनाया था। तो वह कला भारत की बहुत पुरानी चीज है। लेकिन जैसा आपने कहा पुरानी बात को छोड भी दे तो वर्तमान काल मे भी पटना कला क्षेत्र मे अपनी अलग जगह रखता है। चित्र कला मे पटना की विशेष कला है जिस को पटना की कला के नाम से कहा जाता है और उस मे इधर हाल मे सब से अच्छे कलाकार श्री ईश्वरी प्रसाद वर्मा थे जो उसी शहर के रहने वाले थे। कला उन के घर मे परम्परा से चली आई थी और इस लिये उन्हों ने भी इस को सीखा था और कलकत्ते के आर्टस् स्कूल मे जा कर बहुत दिनो तक शिक्षक और वाइस प्रिंसिपल भी रहे थे। तो पुरानी बात को अगर छोड भी दे तो हाल मे भी हमारा कुछ न कुछ ध्यान कला मे रहा है। इसलिये यह बडी खुशी की बात है कि आप ने इस को प्रोत्साहन देने का निश्चय किया है और इस के लिये एक भवन बनवाया है और इस को सिखाने के लिये एक स्कूल बनवाया है।

अब तक दो किस्म के लोग भारत मे थे जिन से कलाकारों को प्रोत्साहन मिला करता था। एक तो बडी बडी रियासतें थीं, उन के राजा महाराजा लोग कला की सब तरह से मदद करते थे। किसी भी रजवाडे मे आप जा कर देखे तो ऐसी सुन्दर काम वाली चीजे, जिन पर बहुत सुन्दर चित्र बने हुए है, आप पायेंगे और जिन को तैयार करने के लिये कलाकार रखे जाते थे। इन रजवाडो के अलावा बडे बडे जमींदार हुआ करते थे जो कला को प्रोत्साहन दिया करते थे। अब आप जानते है कि कालचक्र मे समझिये या भारत की खुश किस्मती से समझिये, सभी रियासतें उठ गई है और सब मिल कर एक भारत बन गया है। आज भारत का शासन केवल उसी हिस्से पर नही है जो अंग्रेजी राज के अधीन था बल्कि उन हिस्सों पर भी आज उसी तरह चल रहा है जो पहले रियासतें थीं। अब इन रियासतो के हट जाने पर यह कमी ज़रूर महसूस होती है। भारत सरकार या राज सरकारें अपने ऊपर यह भार ले ले कि इन रियासतों से कला को जो मदद मिला करती थी वह मदद ये सरकारें दे; यदि ऐसा हो तो वह कमी दूर हो सकती है। पर मालूम नही कि इतना भार गवर्नमेन्ट अपने ऊपर ले सकती है या नही ले सकती है। मगर यह तो होना चाहिये ही कि जो जगह खाली हो गई है उस को किसी न किसी तरह भरा जाये। तभी कला आगे बढेगी। बिना प्रोत्साहन

के यह काम नही हो सकता। इस लिये मै चाहता हू कि सभी राज्यों में इस का प्रबन्ध होना चाहिये जिस से हर तरह से कला को प्रोत्साहन मिले। इस के लिये हजारों तरकीबें निकाली जा सकती है। स्कूलों मे कला सिखाना अच्छी बात है। लेकिन जरूरी तो यह है कि कला घर घर में होनी चाहिये और जीवन के हर काम में लाई जानी चाहिये। आज जापान में तथा और और देशो में घर घर चित्रकार ऐसे चित्र बनाते है जिन को देखकर लोग खुश हो जाते है। इस लिये वहा जो गाव के लोग चीजे बनाते है वे विदेशों मे जाती है। कई तरह की कलाये हमारे देश मे भी है। अगर आप जा कर आदिवासियों के घरों मे देखे तो वहा आप को एक प्रकार की सुन्दर कला देखने मे आयेगी। विदेशों से मगाये हुए रगों से नहीं मिट्टी आदि के रग से वे बहुत ही सुन्दर चीजे बनाते है। कपडे मे भी अच्छी से अच्छी चीजें वे तैयार करते है। मै अभी एक जगह गया था, वहा लोगों ने मुझे पुरानी पुस्तके दिखा यी। वे ताड़ पत्र पर लिखी हुई है। मै ने देखा कि कही कही कीडे उन्हे खा गये है। मै ने पूछा कि उन पुस्तकों को कीडो से बचाने के लिये वे क्या कर रहे है। उन्होंने कहा कि गवर्नमेन्ट के आर-किओलोजिकल डिपार्टमेन्ट से पूछ कर उन को बचाने का प्रयत्न किया जायेगा; उन्हों ने इस विषय पर उन से पत्र व्यवहार किया है। मै ने पूछा कि अब आप उन से पूछ रहे है पर अब तक इन को बचाने की कौन सी तरकीब आप करते है। वे कहने लगे कि पहले तो नीम की पत्ती से इन पुस्तको को कीड़ों से बचाते थे। मै ने कहा कि अब क्यो नही वे इस का इस्तेमाल करते है। मै जहा जहा जाता हूं मै ने यह भी देखा है कि बडी बडी प्राचीन इमारते किसी न किसी तरह अभी खडी है। आज कल जो मकान बनते है अगर उन की मरम्मत हर पाचवे साल नही की जाये तो सब के सब मकान गिर जाये। लेकिन पुरानी चीज हजारो वर्षों तक कैसे खडी रही। गगा के किनारे मै ने देखा है कि नदी के काटने से लोग गाव छोड कर दूसरी जगह चले गये है मगर जो मकान अभी कटने से बच गये है वे बिना मरम्मत के ज्यो के त्यो खडे है। न मालूम कौन सा मसाला लगाया जाता था जिस की वजह से वे आज भी कायम है। आज मै नालन्दा मे देख रहा था कि ईट की दीवारे ज्यो की त्यो खडी है। मेरे पूछने पर उन्हो ने बताया कि उपर नोनी तो बहुत है लेकिन उन दीवारो पर बिल्कुल नही लगी है। हो सकता है उन मे कोई न कोई ऐसी चीज हो जिस की वजह से हजारो वर्ष के बाद भी नोनी नही लगने पाती। आज हम सीमेंट का खर्च बहुत कर रहे है। हम समझते है कि उन से बढ कर मजबूत चीज दूसरी नही है। यदि इन मे से ५०० वर्ष के बाद कोई भाग्यवश रह जायेगा, कोई खडहर रह जायेगा तो उस समय जो लोग होगे वे देख सकेंगे कि यह बात कहा तक ठीक है। लेकिन जो आज चीजें हमारे सामने खडी है वे तो उन मे लगे मसाले की मजबूती का सार्टिफिकेट दे रही है। मगर जो चीजे अब तक कायम है जिन का सबूत देने की जरूरत नही उन को हम भुलाना चाहते है। उस मसाले को खोज कर के हम क्यो नहीं निकाले कि जिस मसाले से हमारे मकान और मन्दिर हजारो वर्षो के बाद भी खडे रह सकते है। मै ने देखा है कि उडीसा के सूर्य मन्दिर मे लोहे की शहतीरे बडी बडी और मजबूत लगी है। और अभी ज्यों की त्यों खडी है। कुछ हटा कर म्यूजियम के अन्दर रख दी गई है। और कुछ मैदाना में रखी गई है। लेकिन किसी मे भी जग मैं ने नही देखी। क्या बात है कि हजारो वर्षो तक हवा पानी मे रहने के बाद उस लोहे मे जग नही लगती। इन सब चीजो पर मै चाहता हू कि हमारे यहा के इजीनियर

लोग ध्यान दे। सिर्फ यही नही कि उन्हे पता ठीक ठीक हो पर जो चीज ठीक साबित हो उस को उपेक्षा की दृष्टि मे न छोड दे।

आप की कला कायम हो रही है। वह बहुत ही अच्छी है। मगर पुरानी चीजों को यों ही बेकार समझ कर नही छोडना चाहिये। आज कलाकार नये रग बनावें लेकिन मै यह भी कहूगा कि वे इस की भी खोज करे कि पुराना रंग कैसा होता था जो हजारों वर्षो से कायम है और जिस ने पानी हवा के असर को रोक लिया है। मै जानता हूं कि कैमिकल रग आसानी से मिल जाते है लेकिन आसानी ही सब कुछ नही है। कला मे आसानी की कामना वाछनीय नही है और न उस की तरफ सच्चे कलाकार जाते है। कलाकारों मे तो साधना की अक्षय सामर्थ्य होती है। वे पूरी लगन से कला को विकसित करते है। मै आशा करता हू कि आप के प्रयत्न से पूरे उत्साह से कला की शक्ति और काम बढता ही जायेगा। मै इस के लिये आप को और सरकार को धन्यवाद देना चाहता हू कि उन्हो ने इसे अपने हाथ मे लिया है।

मगध ज्ञान प्रतिष्ठान

मगध ज्ञान प्रतिष्ठान के शिलान्यास के अवसर पर तारीख २० नवम्बर १९५१ को राष्ट्रपति ने कहा—

विश्वविद्यालयों की प्रख्यात राजधानी इस नालन्दा विद्या नगरी मे आज हम सब एक पवित्र उद्देश्य लेकर एकत्र हुए है। हमारी यह कामना है कि नालन्दा के प्राचीन गौरव को ज्ञान के क्षेत्र में पुनर्जीवित किया जाये। इसी उद्देश्य से इस राज्य की सरकार ने इस स्थान पर पाली एव प्राकृत भाषाओ के अध्ययन के लिये और बौद्ध साहित्य एव दर्शन के क्षेत्र मे अनुसंधान का कार्य करने के लिये मगध ज्ञान प्रतिष्ठान की स्थापना का शुभ सकल्प किया है। हम सब के हृदय इस उद्देश्य के साथ जुडे है। नालन्दा हमारे इतिहास मे अत्यन्त आकर्षक नाम है जिसके चारो ओर न केवल भारतीय ज्ञान साधन के सुरभित पुष्प खिले है किन्तु किसी समय एशिया महाद्वीप के विस्तृत भूभाग के विद्या सम्बन्धी सूत्र भी नालन्दा के साथ जुडे हुए थे। ज्ञान के क्षेत्र मे देश और जातियो के भेद लुप्त हो जाते है। नालन्दा इस का उज्जवल दृष्टान्त था। नालन्दा की वाणी एशिया महाद्वीप मे पर्वत और समुद्रों के उस पार तक फैल गई थी। लगभग छ सौ वर्षो तक नालन्दा एशिया का चैतन्य केन्द्र बना रहा।

मगध की प्राचीन राजधानी वैभार आदि पांच पर्वतो के मध्य मे बसा हुई गिरिव्रज या राजगृह नामक स्थान मे थी। वर्तमान नालन्दा उसी राजगृह के तप्त कुण्डो से पांच मील उत्तर की ओर है। नालन्दा का प्राचीन इतिहास भगवान बुद्ध और भगवान महावीर के समय तक जाता है। कहते है बुद्ध के समय मे नालन्दा गांव में प्रावारिको का आम्रवन था। जैन-ग्रन्थों के अनुसार नालन्दा में महावीर और आचार्य मखलिपुत्त गोसाल की भेंट हुई थी। उस समय यह राजगृह का उपग्राम या बाहिरिक स्थान समझा जाता था जहा महावीर ने चौदह वर्षावास व्यतीत किये। सूत्रकृतांग के अनुसार नालन्दा के एक धनी नागरिक लेप ने धन-धान्य, शैया, आसन, रथ, सुवर्ण

आदि के द्वारा भगवान बुद्ध का स्वागत किया और वह उनका शिष्य बन गया था। तिब्बत के विद्वान इतिहास लेखक लामा तारानाथ के अनुसार नालन्दा सारिपुत्र की जन्म भूमि थी। उनका चैत्य अशोक के समय में भी वहा था। अशोक राजा ने एक मन्दिर बनवा कर उसे परिवर्द्धित किया। इस प्रकार यद्यपि नालन्दा की प्राचीनता की अनुश्रुति बुद्ध और अशोक दोनो से सम्बन्धित है किन्तु एक प्राणवन्त विद्यापीठ के रूप मे उसके जीवन का आरम्भ लगभग गुप्त काल में हुआ। तारानाथ ने तो भिक्षु नागार्जुन और आर्यदेव इन दोनों का सम्बन्ध नालन्दा से बताया है और यहां तक लिखा है कि आचार्य दिङ्नाग ने नालन्दा में आकर अनेक प्रति पक्षियो के साथ शास्त्रों का विचार किया था जिन में सुदुर्जय नाम के एक ब्राह्मण विद्वान अग्रणी थे। चौथी शती में चीनी यात्री फाह्यान नालन्दा मे आये थे। उन्होंने सारिपुत्र के जन्म और परिनिर्वाण स्थान पर निर्मित स्तूप का दर्शन किया। किन्तु नालन्दा का विशेष अभ्युदय इसके कुछ समय बाद हुआ। सातवी शती मे सम्राट हर्षवर्धन के समय जब युवानच्वाग इस देश मे आये तो नालन्दा अपनी उन्नति के शिखर पर था। युवानच्वाग ने एक जातक की कहानी का हवाला देते हुए लिखा है कि नालन्दा का यह नाम इसलिये पडा था कि यहा अपने पूर्व जन्म मे उत्पन्न हुए भगवान बुद्ध को तृप्ति नही होती थी (न-अल-दा) सच तो यह है कि ज्ञान के क्षेत्र मे जो दान दिया जाता है वह सीमारहित और अनन्त होता है। न उसके बांटने वालो को तृप्ति होती है और न उसे लेने वालों को। रुपये पैसे के दान की सीमा है किंतु विद्या के दान का लोक मे कही अन्त नहीं है। इस क्षेत्र में एक व्यक्ति भी अपनी साधना मे इतना अधिक दे सकता है कि सारे ससार को निहाल कर दे। नालन्दा नाम के पीछे छिपी हुई यह भावना न केवल भूतकाल के लिये थी वरन् भविष्य मे भी हमारे इस नये मगध प्रतिष्ठान को बराबर उस से प्रेरणा लेनी चाहिये। हमे यह सकल्प करना चाहिय कि हम अपने मन को उदार बना कर यहा सत्य का अनुसधान करेगे और मानव मात्र के लिये उसका उत्सर्ग करते रहेगे।

नालन्दा विश्वविद्यालय का जन्म जनता के उदार दान से हुआ। कहा जाता है कि इसका मूल आरम्भ पाच सौ व्यापारियों के दान से हुआ था जिन्होंने अपने धन से भूमि खरीदकर बुद्ध को दान मे दी थी। युवानच्वांग के समय मे नालन्दा विश्व विद्यालय का रूप धारण कर चुका था। यहा उस समय छ बडे विहार थे। आठवी सदी के यशोवर्मन के शिला लेख मे नालन्दा का बड़ा भव्य वर्णन किया गया है। यहां के विहारो की पंक्तियों के ऊचे ऊचे शिखर आकाश में मेघो को छूते थे। उनके चारो ओर नीले जल से भरे हुए सरोवर थे जिन में सुनहले और लाल कमल तैरते थे। बीच बीच में सघन आम्रकुंजों की छाया थी। यहा के भवनों के शिल्प और स्थापत्य को देखकर आश्चर्य होता था। उन में अनेक प्रकार के अलंकरण और सुन्दर मूर्तियां थी। यों तो भारतवर्ष मे अनेक सघाराम है किंतु नालन्दा उन सब मे अद्वितीय है। चीनी यात्री इत्सिग के समय में इस विहार में तीन सौ बडे कमरे और आठ मडप थे। पुरातत्व विभाग की खुदाई में नालन्दा विश्वविद्यालय के जो अवशेष यहा प्राप्त हुए है उन से इन वर्णनों की सचाई प्रकट होती है।

आर्थिक दृष्टि से नालन्दा विश्वविद्यालय के आचार्य और विद्यार्थी निश्चिन्त बना दिये गये थे। भूमि और भवनों के दान के अतिरिक्त नित्य प्रति के व्यय के लिये सौ गांवों की आय अक्षय

निधि के रूप मे समर्पित की गई थी। इत्सिंग के समय में यह संख्या बढ़कर दो सौ गावों तक पहुच गई थी। उत्तर प्रदेश, बिहार और बगाल इन तीनो राज्यो ने नालन्दा के निर्माण और अर्थ-व्यवस्था मे पर्याप्त भाग लिया। बगाल के महाराज धर्मपाल देव और देवपालदेव के समय के ताम्रपत्र और मूर्तिया नालन्दा की खुदाई मे प्राप्त हुई है। विदेशो के साथ नालन्दा विश्वविद्यालय का जो सबध था उसका स्मारक एक ताम्रपत्र नालन्दा को खुदाई मे मिला है। इससे ज्ञात होता है कि सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) के शासक शैलेन्द्र सम्राट श्री बालपुत्रदेव ने मगध के सम्राट देवपालदेव के पास अपना दूत भेज कर यह प्रार्थना की कि उनकी ओर से पाच गावो का दान नालन्दा विश्वविद्यालय को दे दिया जाये। ताम्रपत्र के अनुसार नालन्दा के गुणो से आकृष्ट होकर यवद्वीप के सम्राट बालपुत्र ने भगवान बुद्ध के प्रति भक्ति प्रदर्शित करते हुए नालंदा में एक बडे विहार का निर्माण कराया। उन पाच नव गावो की आय प्रज्ञा पारमिता आदि का पूजन, चातुर्दिश अर्थात् अतर्राष्ट्रीय आर्य भिक्षुसघ के चीवर, भोजन, चिकित्सा, शयनासन, आदि का व्यय धार्मिक ग्रन्थो की प्रतिलिपि एव विहार की टूट फूट की मरम्मत (विहारस्य, च खड स्फुटित समाधानार्थ) आदि के लिये खर्च की जाती थी। यह तो सयोग से बचा हुआ एक उदाहरण मात्र है जो विदेशो मे फैली हुई नालन्दा की कीर्ति की अमिट छाप हमारे सामने रखता है। लेकिन नालन्दा महाविहारीय आर्य भिक्षुसघ की धाक समस्त एशिया भूखड मे थी। इस सघ की बहुत सी मिट्टी की मुद्राये नालन्दा मे प्राप्त हुई।

युवानचाग के समय मे इस महा विद्यालय मे दस हजार छात्र और पन्द्रह सौ अध्यापक थे। इस से ज्ञात होता है कि शिक्षा मे आचार्य लोग छात्रो की शिक्षा-दीक्षा मे वैयक्तिक ध्यान देते थे। वस्तुतः उस समय मे नालन्दा उच्च अध्ययन का ही केन्द्र था जैसा कि पोस्टग्रेजुएट या स्नातकोत्तर अध्ययन का केन्द्र इस समय यहा हम स्थापित करना चाहते है। चीन, कोरिया, तिब्बत, तुषार, एव सुदूर मगोलिया तक के ज्ञान पिपासु विद्वान अध्ययन के लिये एव बौद्ध ग्रथो की प्राप्ति के लिये नालन्दा आते थे। यहा का पुस्तकालय एशिया भर मे सब से बड़ा था। अनेक ग्रथो की प्रतिलिपिया यही से चीनी यात्रियो के द्वारा चीन पहुची और वहा की भाषा मे अनुवादित हुई। एक प्रकार से सारा नालन्दा विश्वविद्यालय उच्च ज्ञान सस्थान के रूप मे विकसित हुआ था। किसी रूप मे नालन्दा से सम्बन्ध होना गौरव का चिन्ह समझा जाता था। अनेक सिद्धात और शास्त्रों के दुर्लभ ग्रथो की प्रतिलिपि कराकर जनता यहा सुरक्षित कर लेती थी। जिस समय बारहवी सदी में यहा के पुस्तकालयो का अन्त हुआ उस समय बहुत से ग्रथ नेपाल और तिब्बत मे पहुंच गये जहा उनमें से कई आज भी सुरक्षित है।

नालन्दा के विश्वविद्यालय में प्रति दिन धार्मिक भेद भाव के बिना एक सौ व्याख्यान होते थे। ब्राह्मण और बौद्ध साहित्य दर्शन, ज्ञान, विज्ञान, और कला इन सब विषयो का समावेश वहां के पाठ्यक्रम मे था। अधिकाश भिक्षु महायान के ग्रथो का एव बौद्धों के अन्य अठारह निकायों के ग्रन्थो का अध्ययन करते थे। किंतु वेद और तदनुवर्ती साहित्य के अध्ययन व अध्यापन का भी प्रबन्ध था। नालन्दा के आचार्यो की यह मानसिक उदारता बड़ी अभूतपूर्व थी और नालन्दा की उन्नति का मूल बीज इसी प्रकार की मानसिक स्थिति थी जो मानव मात्र के ज्ञान और दर्शन को भेद भाव के बिना अपने अक मे समेट लेना चाहती थी।

नालन्दा का शिक्षाक्रम बडी व्यवहारिक बुद्धि से तैयार किया गया था। उसे पढ़ कर विद्यार्थी दैनिक जीवन मे अधिकाधिक सफलता प्राप्त करते थे। मूल रूप मे पाच विषयों की शिक्षा वहां अनिवार्य थी। शब्द विद्या या व्याकरण जिस से भाषा का सम्यक् ज्ञान प्राप्त हो सके, हेतु विद्या, या तर्क शास्त्र जिससे विद्यार्थी अपनी बुद्धि की कसौटी पर प्रत्येक बात को परख सके चिकित्सा विद्या जिसे सीख कर छात्र स्वय स्वस्थ रह सके एवं दूसरों को भी निरोग बना सके तथा शिल्प विद्या; एक न एक शिल्प का सीखना भी वहा अनिवार्य था जिसके द्वारा छात्रों मे व्यवहारिक और आर्थिक जीवन की स्वतत्रता आ सके। इन चारों के अतिरिक्त अपनी अपनी रुचि के अनुसार लोग धर्म और दर्शन का अध्ययन करते थे। इस प्रकार नालन्दा ने पाठ्यक्रम के विषय में जो आदर्श रखा था वह आज भी मनन करने योग्य है। इस समन्वय प्रधान पाठ्यक्रम के कारण ही नालन्दा के छात्रो का अध्ययन तेजस्वी और जीवन मे उपयोगी बनता था। युवानचाग नालन्दा के एक छात्र थे जिन्होने आचार्य शीलभद्र के जो विश्वविद्यालय के कुलपति थे चरणो मे बैठकर न्याय, योग, शब्द शास्त्र, पाणिनीय व्याकरण आदि का पहले अध्ययन किया और पीछे पाच वर्ष तक अनेक बौद्ध शास्त्रो का पारायण किया। युवानचाग महायान शास्त्रों के अध्ययन में विशेष रुचि रखते थे। उसी प्रकार इत्सिंग नामक चीनी यात्री ने थेरवाद से सम्बन्धित शास्त्रो का नालन्दा मे ही अध्ययन किया।

आचार्य शीलभद्र योग शास्त्र के उस समय के सब मे बडे विद्वान माने जाते थे। उन से पूर्व धर्मपाल इस सस्था के प्रसिद्ध कुलपति थे। शीलभद्र, ज्ञानचन्द्र, प्रभामित्र, स्थिरमति, गुणमति, आदि अन्य आचार्य युवानचाग के समकालीन थे। जिस समय युवानचाग अपने देश चीन को लौट गये उस समय भी अपने भारतीय मित्रो के साथ उनका वैसा ही घनिष्ट सम्बन्ध बना रहा। जब युवानचाग नालन्दा मे विदा होने लगे तो आचार्य शीलभद्र एव अन्य भिक्षुओ ने उन से यहा रह जाने के लिये अनुरोध किया। युवानचाग ने उत्तर मे ये वचन कहे--"यह देश बुद्ध की जन्मभूमि है, इसके प्रति प्रेम न हो सकना असभव है लेकिन यहा आने का मेरा उद्देश्य यही था कि अपने भाइयो के हित के लिये मै भगवान के महान् धर्म की खोज करू। मेरा यहा आना बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है। अब यहा से वापस जाकर मेरी इच्छा है कि जो मै ने पढा, सुना है उसे दूसरों के हितार्थ बताऊ और अनुवाद रूप मे लाऊं। जिसके फल स्वरूप अन्य मनुष्य भी आपके प्रति उसी प्रकार कृतज्ञ हो सके जिस प्रकार मै हुआ हू"। इस उत्तर से शीलभद्र को बडी प्रसन्नता हुई और उन्होने कहा कि--"यह उदात्त विचार तो बोधिसत्वो जैसे है। मेरा हृदय भी तुम्हारी सदाशाओ का समर्थन करता है"। युवानचाग को महायान के अनुयायी देव कहते है और थेरवाद या हीनयान के अनुयायी मोक्षदेव या मोक्षाचार्य कह कर पुकारते थे। मोक्षाचार्य युवानचाग और शीलभद्र के प्रधान शिष्य ज्ञानप्रभ के बीच मे युवानचाग के चीन लौट जाने के बाद भी पत्र व्यवहार होता रहा। जिस के तीन पत्र आज भी बचे है उन से ज्ञात होता है कि नालन्दा के विद्वान बाद मे भी सस्कृत ग्रथो की प्रतिलिपि कराकर चीन देश को भेजते रहे। अपने देश मे जाकर युवानचाग ने अपने जीवन का शेष भाग भारतीय धर्म ग्रथो का अनुवाद करने में व्यतीत किया। इस में नालन्दा के साहित्य का प्रमुख स्थान था। उसने लिखा है कि स्वय चीनी सम्राट ने अपनी लेखनी से उस अनुवाद की भूमिका लिखी और अधिकारियों को आदेश दिया कि वे उन ग्रथों का सब देशों में प्रचार करे। जिस समय इस आदेश पर पूरी तरह अमल

हुआ हमारे पड़ोसी देशों मे भी सब ग्रथ पहुच गये। इन सत्प्रयत्नों का जिन मे अनेक चीनी और भारतीय विद्वानो ने देश और काल की दूरी की परवाह न करते हुए उत्साह पूर्वक भाग लिया यह फल हुआ कि लगभग दो हजार मूल सस्कृत ग्रथो का चीनी भाषा में अनुवाद हुआ जो आज तक चीनी त्रिपिट मे सुरक्षित रह गये है यद्यपि उनके मूल संस्कृत रूप अब नष्ट हो गये है। आज जिस महत्व पूर्ण सस्था की स्थापना हम कर रहे है मै आशा करता हू कि उसका यह भी एक उद्देश्य होगा कि वह इस चीनी साहित्य को पुन. सस्कृत रूपातर और हिंदी अनुवाद के साथ प्रस्तुत करे। जिस प्रकार युवानचाग के समय रत्नसागर नामक नालन्दा का महान् पुस्तकालय था उसी प्रकार हमे पुन. प्रयत्न करना होगा कि भविष्य मे मगध ज्ञान सस्थान के अन्तर्गत हम उन सब पाली प्राकृत और सस्कृत मूल ग्रथों का एव उस सम्बन्ध मे रचे गए अन्य भाषाओ के ग्रथो का पूर्ण सग्रह करने की पूर्ण योजना बनाये और उसे कार्यरूप मे परिणित करे। शासन और जनता दोनो के सहयोग से यह कार्य अवश्य सिद्ध होना चाहिये।

नालन्दा के विद्वानों ने विदेश मे जाकर ज्ञान का प्रचार किया। पहले तो तिब्बत के प्रसिद्ध सम्राट स्त्रोंग छन गम्पो (६३० ई०) ने अपने देश मे भारतीय लिपि और ज्ञान का प्रचार करने के लिये अपने यहा के विद्वान थोन्मिसम्भोट को नालन्दा भेजा जिस ने आचार्य देवविद् सिंह के चरणों मे बैठकर बौद्ध और ब्राह्मण साहित्य की शिक्षा प्राप्त की। इस के बाद आठवी सदी मे नालन्दा के कुलपति आचार्य शान्तिरक्षित तिब्बती सम्राट के आमन्त्रण पर उस देश मे गए। नालन्दा मे तन्त्र विद्या के प्रमुख आचार्य कमलशील भी तिब्बत गये थे। नालन्दा के विद्वानों ने तिब्बती भाषा सीखकर बौद्ध ग्रथो और सस्कृत साहित्य का तिब्बती मे अनुवाद किया। इस प्रकार उन्होंने तिब्बत देश को एक साहित्य प्रदान किया और फिर शनै शनै वहा के निवासियों को बौद्ध धर्म मे दीक्षित किया। नालन्दा के आचार्य शान्तिरक्षित ने ही सब से पहले ७४९ ई० मे तिब्बत मे बौद्ध विहार की स्थापना की थी। उन विद्वानो मे आचार्य पद्मसभव (७४९ ई०) और दीपकर श्री ज्ञानअतिश (९८० ई०) के नाम उल्लेखनीय ह। आचार्य अतिश जिस प्रकार नालन्दा का परित्याग करके अपने जीवन के सचित सहस्त्र सकल्पों को लेकर बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये तिब्बत मे गये वह कहानी अत्यन्त द्रावक है। उन्होने एक प्रकार से तिब्बत देश को नये प्रकार की धर्म दीक्षा दी। तिब्बती भाषा मे सुरक्षित त्रिपिटक साहित्य का भी पुन. सस्कृत मे अनुवाद होना अत्यन्त आवश्यक है। उससे न केवल भारतीय इतिहास और सस्कृति पर नया प्रकाश पड़ेगा वरन् नालन्दा विश्वविद्यालय की ज्ञान साधना के समग्र रूप को देखने और समझने में भी सहायता मिलेगी। कहा जाता है कि कोरिया के विद्वान भी नालन्दा मे विनय और अभि-धर्म की शिक्षा के लिये आये थे। आर्यवर्म नाम के एक कोरियन विद्वान ६३८ ई० मे नालन्दा आए। सत्तर वर्ष की आयु मे यही स्वर्गवासी हुए। सभव है कोरिया मे उस काल के अनुवादित सस्कृत ग्रथ अभी तक बच गये हो।

साहित्य और धर्म के अतिरिक्त नालन्दा कला का भी एक प्रसिद्ध केन्द्र था जिसने अपना प्रभाव नैपाल, तिब्बत, हिन्देशिया, एव मध्य एशिया की कला पर डाला। नालन्दा की कास्य मूर्तिया अत्यन्त सुन्दर और प्रभावोत्पादक ह। विद्वानो का अनुमान है कि कुर्किहार से प्राप्त हुई बौद्ध मूर्तिया नालन्दा शैली से प्रभावित है। वस्तुत. नालन्दा की सर्वांगीण उन्नति उस समन्वित

साधना का फल थी जो शिल्प विद्या और शब्द विद्या एवं धर्म और दर्शन को एक साथ पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने से सभव हुई। हमारी अभिलाषा होनी चाहिये कि भूतकाल के इस प्रबन्ध से शिक्षा ले और कला, शिल्प, साहित्य धर्म, दर्शन और ज्ञान का एक बड़ा केन्द्र नालन्दा में हम पुन स्थापित करे। राष्ट्रीय जीवन में इस प्रकार के महान कार्य जो संस्कृति के महान् दड को ऊंचा उठाते है अनेक दृढ व्रती विद्वानो की दीर्घकालीन साधना से सिद्ध होते है। मगध ज्ञान प्रतिष्ठान अभी एक छोटा पौधा है। यदि उसे हम प्रयत्न पूर्वक सीचते रहेगे और जीवन की नई आवश्यकताओ के अनुसार उसका सवर्द्धन करेगे तो आशा है कि कालान्तर में कल्पवृक्ष के समान इसका विकास होगा।

मुजफ्फर नगर शहीद स्मारक का उद्घाटन

सरैयागंज मुजफ्फर नगर मे तारीख २१-११-५१ को शहीद स्मारक का उद्घाटन करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा :—

श्रद्धेय सभापति जी, शहीद स्मारक समिति के सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

मै आप सबका हृदय से आभारी हूं कि आपने मुझे इस शुभावसर पर इस शुभ काम के लिये आमन्त्रित किया और यह मौका दिया कि शहीदो के प्रति मै अपनी श्रद्धाजलि दे सकू।

यह तो सभी लोग जानते है कि जब कभी स्वतन्त्रता के लिये किसी भी देश मे काम किया जाता है तो उस मे अनेकानेक त्याग, तरह तरह की मुसीबते बर्दाश्त करनी पड़ती है और बहुतेरो को अपने प्राण भी देने पड़ते है और तब जाकर के उस काम मे सफलता मिलती है। हमारे देश मे भी ऐसा ही हुआ। पर महात्मा गांधी के नेतृत्व मे हम ने जो अहिंसा का मार्ग ग्रहण किया उसका यह फल हुआ कि हमको जितने त्याग की जरूरत होती उतने त्याग किये बिना ही हम अपने कार्य मे सफल हुए। तो भी जिन भाइयो ने और जिन बहनो ने अपनी जाने दे दी, जिन्होने अपना सब कुछ त्याग करके काम किया उन की याद रखना, उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करना हम सब का कर्त्तव्य है। और इस लिये मुझे इस बात की खुशी है कि आप मुजफ्फरपुर के निवासियो ने यह सुन्दर स्मारक यहा बनाया है और उसके साथ साथ आपने महात्मा गाधी की एक मूर्ति लाकर के रख दी है। मै आप से कहना चाहता हू कि इन शहीदो की जो कुछ तपस्या हुई, उनका जो त्याग हुआ उसके फलस्वरूप हम को स्वराज्य मिल गया है पर अभी भी स्वराज्य सबधी बहुत काम बाकी है। महात्मा गाधी ने अपने सामने और हमारे सामने समाज का एक चित्र रखा था और वह चाहते थे कि हमारे समाज का पूर्ण पुनर्संगठन उसी चित्र के अनुसार हो। पर वह चित्र अभी ज्यों का त्यो पड़ा रह गया है, अभी वह काम मे पूरी तरह से नही आ सका है और उस के लिये भी अनेकानेक काम करने वालो की जरूरत है।

मेरा अपना विचार रहा है कि स्वराज्य की लड़ाई के जमाने मे जितने त्याग, परिश्रम और अध्यव्यसाय की जरूरत थी उससे ज्यादा इन चीजों की जरूरत आज है जब हम को नव समाज

का संगठन करना है। राज्याधिकार हमारे अपने हाथों में आ गया है। अगर अब कोई बात बिगड़ती है तो उस की पूरी जिम्मेदारी हमारे सर पर होगी और अगर कोई बात बनती है तो उसका श्रेय भी हमको ही मिलने वाला है। इसलिये अब हम किसी तीसरे को इस बीच में नहीं रख सकते और न यह कह सकते हैं कि उसकी वजह से हमारा यह काम बिगड़ा। अब हमें देश को सुधारना है, देश की उन्नति करनी है। देश की उन्नति करने का अर्थ है इस देश में रहने वाले सभी लोगों की उन्नति, सब लोगों की हर तरह से तरक्की। इसे हम तभी कर सकते है जब हम में से सभी लोग ऐसे हों, जो देश की सेवा, जनता जनार्दन की सेवा को अपना कर्तव्य और अपने जीवन का ध्येय समझते हो। ऐसा किसी को न समझना चाहिये कि स्वराज्य अब आ गया है और इसलिये अब काम का समय बीत गया है और अब तो भोग का समय आ गया है। सच पूछिये तो सच्चे कर्मियो के लिये कभी भोग का समय आता ही नहीं। अगर कभी आवेगा भी तो तब जब जो ध्येय महात्मा गाधी ने हमारे सामने रखा था उसे हमने पूरा कर लिया होगा। इसलिये मैं चाहता हू कि इस देश मे ऐसे युवक और युवतिया हजारो की तादाद मे आज भी निकले जो उसे खुशी से, उसी उत्साह के साथ, उसी त्याग और सेवा के साथ, जिस त्याग और उत्साह के साथ लाखों लाख लोगों ने ब्रिटिश गवर्नमेंट के साथ स्वराज्य की लड़ाई मे काम किया था काम करने को कटिबद्ध हो। मेरा विचार है कि ऐसे लोग पैदा होगे। मगर आज चारो तरफ जो हवा देखने को मिलती है उससे मेरे दिल मे कभी कभी शका होती है, कभी कभी घबराहट भी पैदा होती है, कभी कभी ऐसा मालूम होता है कि जिन अभिलाषाओ को लेकर के हम स्वराज्य की तरफ बढे थे, जिन ऊचे आदर्शो को हमने अपने सामने रखा था और काम किया था और कर रहे थे उनसे हम विचलित हो गये है। इसलिये यह जरूरी है कि लोग इस चीज को समझे और अपनी जवाबदेही को अधिक महसूस करे और दूसरो के सामने इसका नमूना पेश करे कि स्वराज्य प्राप्ति के बाद भी जब तक हम समाज को जैसा हम चाहते है वैसा नही बना लेने तब तक हम उसी लगन के साथ काम करते है जिस लगन के साथ हमने काम शुरू किया था। अगर हम विचार करके देखे तो स्पष्ट हो जायेगा कि जो कुछ शिकायते हम सुनते है उन सब की जड मे हमारी कमजोरी है, चरित्र की कमजोरी है, दिल की कमजोरी है और इस बात की भी कमजोरी है कि हम एक दूसरे के साथ इस तरह से मिल जुल कर उस त्याग और पवित्रता के साथ काम नही कर सकते जिससे हम काम किया करते थे। मै चाहता हू कि आज की तरह हम अपने समय को धमधड और जोश मे खर्च न करके ठोस काम करने मे लगावें। वही ठोस काम अन्त मे काम देगा क्योंकि आतिशबाजी की रोशनी से किसी शहर मे उजाला नही होता। उस के लिये तो ऐसा दिया चाहिये जो थोड़ा ही सही पर बराबर एक तरह से जलता रहे। मेरी प्रार्थना है कि हमारे हृदय के अन्दर महात्मा गाधी वही दीप फिर से जला दे जो उन्होंने आज से ३० साल पहले जलाया था और ये शहीद जिनके आप स्मारक बना रहे है फिर से एक बार हमारे हृदय के अन्दर वही भावना उत्पन्न कर दे जिसको लेकर वे स्वय शहीद हो गये थे। वे तो इस बात को नही सोचते थे और न उन्होंने सोचा कि स्वराज्य मिल जाने पर उनको क्या मिलेगा और वे किस तरह से इससे लाभ उठायेंगे। उन्होने तो अपने सामने एक ध्येय रख लिया था और उस की प्राप्ति मे अपने को बलिदान कर दिया। हमको अभी भी वैसे ही त्यागी पुरुषों की जरूरत है और मै आशा करता हूं कि इस स्मारक को बनाने का मतलब भी यही है कि हमारे सामने वे आदर्श बने रहें। मै आप सब भाइयों से यह अनुरोध करता हूं कि जब आप इस रास्ते से गुजरें तो यह याद रखें कि उन्होंने स्वराज्य

के लिये अपनी जान दे दी थी मगर उन्होंने स्वराज्य को भोगा नहीं। अगर भोगने की इच्छा होती तो शायद जान भी नही देते और अगर जान नही देते तो स्वराज्य मिलता भी नही। उन्होंने तो अपना काम पूरा किया, अब हम लोग जो बचे हुए है उनका कर्त्तव्य है कि जो काम बाकी रहा है उसको हम पूरा करें। यह स्मारक यही चेतना आपको दे और यही ईश्वर से मेरी प्रार्थना है वह मेरी इस अभिलाषा को पूरी करे।

आप सब को मै फिर एक बार हृदय मे धन्यवाद देता हूं।

सदाकत आश्रम

तारीख २१-११-'५१ को ९ बजे दिन में सदाकत आश्रम में आश्रमवासियों के बीच राष्ट्रपति जी ने कहा :--

अनुग्रह बाबू, बहनो और भाइयो,

जब जब मै पटने आता हू तो एक बार मै थोड़ी देर के लिये ही सही यहां को चीजों को देखने के लिये और यह देखने के लिये कि क्या हो रहा है, कैसे काम चल रहा है, कितने नये आदमी आये है, कितने पुराने है यहा भी आ जाया करता हूं। जब पुराने भाइयो के साथ साथ नये लोग भी मिलते है तो मुझे खुशी होती है। इसका अर्थ यह है कि नये लोग यहा आकर के कुछ सीखकर जाते है और दूसरी जगहों से लोग इसलिये आते है कि वे समझते है कि यहां कुछ सीखने की चीज है और इसलिये वे सीखने के लिये आते है। यह बड़े सतोष की बात है कि यहा के काम को आप लोग इस तरह चला रहे है। अभी मालूम हुआ कि यहा कांग्रेस के दफ्तर और विद्यापीठ को मिलाकर २०० आदमी रहते है। यह भी बहुत ही शुभ चिन्ह है मै देखता हू कि मकान भी कुछ नये बन गये है, खेती का भी काम चल रहा है और नया कार्य भी किया जा रहा है और यह आशा की जा रही है कि काम फैलेगा, बढ़ेगा और हर तरह से जो आज तक यहा होता रहा है उसकी उन्नति और तरक्की होगी। यह भी बड़ी प्रसन्नता की बात है कि कुछ हमारे आदिम जाति के भाई भी आगये है और वे लोग यहा काम सीख रहे है और सीखने के अलावा कितने काम कर भी रहे है। मै ने अभी सुना कि जो लोग यहा दूर से आये है वे और पहले के यहा के आश्रम के रहने वाले लोग अपने हाथ से काम कर लेते है और काम चला रहे है। इस वक़्त तो ज़रूरत इसी चीज़ की है कि लोग अपने हाथ से काम करे और दूसरो को भी बतायें। आज तक तो यह तरीका रहा है और ऐसा ही होता है कि जो लोग पढ लिख जाते है वे समझते है कि घर में जो काम होता है वह छोटा काम है और उस को वे नही करना चाहते। पढ़े लिखे लोग और खास करके जिन्होंने कालेज और स्कूलों में शिक्षा पाई है वे दफ्तर और कचहरी मे जाकर काम सीखना और करना चाहते है और घर के काम को वे लोग खराब समझते है। तो इससे देश का बहुत नुकसान होता रहा है। जो होशियार लोग है वे पुराने कामको छोड़ना चाहते है और नये काम को सीखना चाहते है। जो सीखना चाहते है वे सीखे उस सीखने में तो कोई हानि है नहीं पर वे तो पुराने काम को भूल ही जाते है। मै तो यह समझता हू कि

नये काम को सीखकर पुराने काम को ज्यादा योग्यता से किया जाये तभी ज्यादा लाभ हो सकता है। जो लोग यहा से किसानी का काम सीख कर जायें और यदि अपनी दिशा में अच्छी तरह से काम न ले तो सिवाय इस के कि वे यहां आये और काम सीखकर खुद फायदा उठाया उनके पढ़ने का लाभ ही क्या जब उन्होंने उसे और गरीब लोगों में नही फैलाया और उन्हें यह तालीम न दी कि कैसे पैदावार बढ़ाई जा सकती है। मै तो यह चाहता हूं कि जो लोग यहा से सीखकर जायें वे और लोगो के काम भी आये। इसी चीज की जरूरत इस समय है। यहा खेती का काम होता है और अन्न पैदा करने का काम बहुत जरूरी है। अगर आप चाहें तो यहा किसान तैयार हो सकते है। किसान लोग खेती का काम जानते भी है यह बात नहीं है कि वे नही जानते है। लेकिन बहुत सी बातें सीखने से भी मालूम होती है। उन चीजों को उन्हे जानना चाहिये। इसलिये जो लोग नयी रोशनी के है उनका उन में काम करना जरूरी है।

जब तक गोपालन का काम ठीक से नही पूरा होता तब तक किसानी का काम भी पूरा नहीं हो सकता है। गाय से दूध मिलता है, गोबर मिलता है जो खेती के लिये जरूरी है और बछड़े मिलते है जो खेत जोतने के लिये जरूरी है। तो जब तक गोपालन ठीक से नही होगा तब तक उनके काम मे सफलता नही प्राप्त हो सकती। इसलिये यह जरूरी है कि गोपालन का काम ठीक से हो और इस के लिये उनका यह जानना कि कौन सा चारा देने से अधिक दूध होता है, किन गायों का अच्छा दूध और मजबूत बछड़े होते है जरूरी है। हमारे पुराने लोग पुरानी बातों को जानते हैं। जो नयी चीजे है वे उनको बतलानी है। जो गाय आज एक सेर दूध देती है उसका सुधार करना चाहिये जिस से वह अधिक दूध दे और उस के बछड़े भी अच्छे हो। जो गाय थोडा दूध देती है उस से क्या लोग पीयेंगे और क्या उसका बछड़ा पियेगा। जो बछड़े पाव भर दूध पीकर तैयार होगे और जो अधिक दूध पीकर तैयार होंगे दोनो बराबर नही होंगे। इसलिये यह जरूरी है कि दूध बढ़ाया जाये, सिर्फ दुहने के लिये नही बल्कि बछड़े के लिये भी दूध बढ़ाना जरूरी है। यहां शायद इन दोनो चीज़ो का इन्तजाम हुआ है, गोशाला भी है और खेती के नमूने भी देखने को मिलते है। जो थोड़ा बहुत सीख लेगे उतना भी गांव के लोगो को बतायेंगे तो उस से अधिक लाभ होगा।

जिनको सुखी रहना है उनको इन्हें करना है। लेकिन हम लोग तो बर्बाद कर देते है। जहां १६ आने काम होना चाहिये उसमें ८–१० आने तो इस काम मे लाते है और बाकी हम बर्बाद कर देते हैं। तो किस तरह से अच्छे से अच्छे फल हम निकाल सके वह करना जरूरी है। इसीलिये खाद का काम सीखना जरूरी हो गया है। सब चीजे हम खाद के जरिये से पूर्ण कर सकते है। यहां पर गवर्नमेंट हाउस में मै ने कल ऊख उपजाने वालो को इनाम बांटा। यहां पर सब जगहों मे ऊख की खेती होती है। मगर एक बीघे में यहा और जगहों के मुकाबले में कम पैदा होती है। जिनको इनाम दिया गया है उन्होंने ऊख की तरक्की बहुत की है। मुझे ऊख दिखलाई गयी थी; बास के जैसे ऊख थी जिसको देखकर खुशी होती थी। यहां ही के हल, यहा ही के खाद, यहा ही का पानी और यहां ही के काम करने वालो ने उसे पैदा किया है। जहां एक बीघे में ढाई सौ, तीन सौ मन ऊख पैदा होती है उन्होने २८०० मन, ३००० मन ऊख पैदा की है। यह फर्क बहुत ज्यादा है। जितना हम आज पैदा करते है, थोडी अधिक जोताई करने से, कुछ खाद देने से, कुछ पानी देने से उस जमीन के चौथाई हिस्से में ही वे लोग जो ऊख की खेती मे लगे हुए है उतनी ऊख

पैदा कर सकते हैं। तो अभी मैंने छोटी छोटी बातें आपके सामने इसलिये रखीं कि अगर उन पर आप यहां ठीक से काम करें और लोगों को सिखावें तो बहुत तरक्की हो सकती है।

यहां चर्खे का काम तो होता है। इसको भी चलाना जरूरी है क्योंकि इससे हमारे कपड़े की जो जरूरत है वह बहुत हद तक पूरी हो सकती है। हम को खाना हो गया, कपड़ा हो गया, चीनी मिल गई, ऊख से हमने चीनी तैयार कर ली तो और दूसरा क्या चाहिये ? दूध मिला, चीनी मिली, चावल मिला और कपड़ा मिला तो फिर और क्या चाहिये ? अगर यह सब चीजें हम पैदा कर लें तो हम लोग सुख से रह सकते हैं और गवर्नमेंट को भी इन चीजों को कंट्रोल करने की जरूरत नहीं होगी। इसलिये जो मौका हमें मिला है उसका आप लोग ठीक से उपयोग करें और जब मैं दूसरी बार आऊं तो इससे भी अधिक देख और सुन सकूं। जब जब मैं यहां आता हूं तो यहां का हाल सुनना चाहता हूं और सुनकर मैं खुश होता हूं। फिर जब आऊंगा तो देखूंगा कि आपने क्या अधिक सीखा है।

संस्कृत रिसर्च इन्स्टीट्यूट का शिलान्यास

संस्कृत रिसर्च इन्स्टीट्यूट, दरभंगा के शिलान्यास के अवसर पर तारीख २१ नवम्बर १९५१ को राष्ट्रपति ने कहा--

दस वर्ष हुए होंगे महाराजाधिराज श्री कामेश्वर सिंह ने मुझे श्री मिथिलेश महेश रमेश व्याख्यानमाला में बिहार के विद्वानों की मंडली के सामने व्याख्यान देने के लिये निमन्त्रण दिया था। उस समय मैं ने अपने विचार दो व्याख्यानों के रूप में प्रकट किये थे। वे व्याख्यान पुस्तकाकार 'संस्कृत का अध्ययन' नामक पुस्तक में छपे थे। उस व्याख्यान में मैं ने संस्कृत वाङ्मय की महत्ता और पूर्णता की ओर ध्यान आकर्षित किया था तथा संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध भाषा-ज्ञान, व्याकरण, वर्णमाला, लिपि, और अंक के सम्बन्ध में और विशेषकर पाटीगणित या अंक-गणित, बीजगणित, रेखागणित, ज्योतिष, भौतिकी, वैद्यक, शल्यचिकित्सा, शरीर-रचना, विज्ञान, धातुशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, कृषि और बागवानी, मूर्तिकला, चित्रकला संगीत, नृत्यकला आदि विषयों का दिग्दर्शन कराया था और अन्त में संस्कृत के अध्ययन की जो आज परिपाटी प्रचलित है उसमें संशोधन की आवश्यकता और उपयोगिता की ओर भी ध्यान आकर्षित किया था। मुझे आज यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि उस वाङ्मय के अध्ययन और उसमें उपलब्ध सामग्रियों के आधुनिक रूप से अन्वेषण के लिये यह संस्था आज यहां स्थापित की जा रही है। मैं मानता हूं कि संस्कृत का अध्ययन केवल हमारे ही लिये नहीं बल्कि संसार की समस्याओं के सुलझाने में भी सहायक हो सकता है और इस लिये मैं इस का आग्रह रखता हूं कि हमारे शिक्षालयों में इसे काफी प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये। मैं ने उस भाषण में यह भी कहा था कि मैं स्वयं संस्कृत का विद्वान नहीं हूं पर जो कुछ मैं ने विद्वानों से सुना है और उनकी खोज और अध्ययन के फल-स्वरूप उनके विचार ग्रन्थों में पढ़े हैं उनके आधार पर ही मेरा यह विश्वास हो गया है कि आज हमारी सारी जिन्दगी जैसी बनी है उसका मूल आधार हमारे संस्कृत के ग्रन्थों में मिलता है। वैसे ही दूसरे विद्वानों के विचार के आधार पर मैं संस्कृत के वाङ्मय में जो साहित्य उपलब्ध है

उसके सम्बन्ध मे आज कुछ बता देना चाहता हूं। जो संस्कृत के विद्वान है उनको यह बताना अनावश्यक है। जो संस्कृत नही जानते, वे आज की शिक्षापद्धति के कारण उन्ही बातो पर अधिक ध्यान देते है जो पाश्चात्य विद्वान कहते है या ऐसे भारतीय कहते है जो पाश्चात्य विद्या से स्वयं प्रभावित हुए है। इसलिये मै ऐसे लोगो के विचारो के कुछ उद्धरण दे देना ही इस काम के लिये पर्याप्त समझता हू और आशा करता हू कि अंग्रेजी पढे लिखे लोग संस्कृत विद्या के महत्व को समझेंगे और उसको पुनर्जीवित और प्रोत्साहित करने मे सहायक बनेगे।

संस्कृत वाङ्मय भारत की ही क्यो सारी मनुष्य जाति के लिये अत्यन्त अमूल्य निधि है। उसकी प्राचीनता, उसकी व्यापकता, उसकी विशदता, उसका सौन्दर्य और मधुरता सभी तो ऐसी है जिनसे न केवल मानव की आज तक की संस्कृति का सारा इतिहास ज्योतिर्मय हो उठता है वरन् मानव का हृदय आनन्द से विभोर हो जाता है और उसको एक ऐसे नये आदर्श लोक की झांकी मिल जाती है जिस मे पहुचने पर ही उसका जीवन सार्थक हो सकता है और उसे भव बाधा से मुक्ति मिल सकती है।

मानव जाति के सांस्कृतिक विकास का चित्र तो संस्कृत भाषा की सहायता के बिना बनाया जा सकता ही नही। ससार भर मे अन्य कोई ऐसी जाति नही है जो इतना प्राचीन साहित्य सुरक्षित रख पाई हो जितना प्राचीन साहित्य कि हम भारतीय रख पाये है। ऋषियों के अपने ही शब्द सुरक्षित है और उन मे हम उस काल का चित्र स्पष्ट रूपेण रेखांकित कर सकते है। वह चित्र हमारे प्राचीन इतिहास के निर्माण मे आज तो सहायक है ही और आगे भी रहेगा। आज ससार भर मे ऐसा कोई विद्वान नही जो यह न मानता हो कि भारतीय वाङ्मय से मानव जाति के प्राचीन इतिहास के निर्माण मे पर्याप्त सहायता मिल सकती है।

यह केवल इसलिये ही नही कि भारतीय वाङ्मय अन्य सब देशो के वाङ्मय से प्राचीन है वरन् इसलिये भी कि प्राचीन सभ्य ससार का ऐसा कोई प्रदेश नही था जहा वह किसी न किसी रूप मे फैल न गया हो। चीन से लेकर आयर्लैंड तक और स्कैन्डीनेविया से लेकर स्वर्णदीपमाला तक भारतीय वाङ्मय का प्रभाव फैला। यह तो सब जानते ही है कि भारतीय वाङ्मय के अनेक ग्रन्थो का अनुवाद हजार वर्ष से अधिक पूर्व चीनी भाषा में, तिब्बती मे और तत्पश्चात जापानी भाषा मे हो गया था और वह चीनी, तिब्बती और जापानी संस्कृति का अभिन्न अंग बन गया था। बाली, जावा, सुमात्रा और कम्बोज (कम्बोडिया) मे भी भारतीय वाङ्मय का बोल बाला था और वह वहा की संस्कृति का मुख्य आधार था। पर इस बात को बहुत लोग नही जानते कि उसका प्रसार मध्य पूर्व और यूरप मे भी कुछ कम नही हुआ। इस बारे मे तो कोई शंका है ही नही कि अब्बासी खलीफाओं के काल मे भारत के कितने ही विद्वान उनकी राजधानी मे गये और वहा उन्होने भारतीय ज्ञान से उन लोगो को परिचित कराया और भारतीय वाङ्मय के कुछ ग्रन्थो का उनकी राजभाषा में अनुवाद भी किया। किन्तु इस बात के भी पर्याप्त सकेत मिलते है कि मध्य पूर्व और यूरप की प्राचीन संस्कृति पर भी भारतीय वाङ्मय का अच्छा, खासा प्रभाव पड़ा था और जहां तक वहा के प्राचीन कहानी साहित्य का सम्बन्ध है यह कहा जा सकता है कि वह तो बहुत कुछ भारतीय साहित्य का नया रुपान्तर है। सभ्य जगत की सब जातियो के हृदय मे बैठ जाने के कारण आज वह उनकी सांस्कृतिक चेतना का

अभिन्न अंग बन गया है और इसलिये उसके सम्यक् अध्ययन के लिये यह आवश्यक है कि इस मूल संस्कृत वाङ्मय का अध्ययन किया जाये। इसी सत्य की ओर संकेत करते हुए विन्टरनिट्ज ने जर्मन भाषा मे अपने भारतीय वाङ्मय के इतिहास मे कहा है कि "अपनी प्राचीनता, विशाल भूभाग मे अपने विस्तार, अपनी विशदता और समृद्धि, कला की उत्कृष्टता और सब से अधिक संस्कृति के इतिहास की दृष्टि से इस महान्, मूल और प्राचीन वाङ्मय का रुचि से अध्ययन हमारे लिये वांछनीय है"। आगे चलकर वह कहता है कि "यद्यपि भारतीय उसी रक्त मांस के नही जिसके हम है तथापि अब भी यह सम्भव है कि भारतीय विचार जगत मे हमे अपनी सांस्कृतिक आत्मा मिल जाये। ...... यदि हम अपनी संस्कृति के प्रभात को समझना चाहते है तो हमें भारत की शरण लेनी चाहिये जहा कि इन्डोयूरोपियन जाति का प्राचीनतम वाङ्मय अब भी सुरक्षित मौजूद है"। आगे चलकर वह यह और कहता है कि "हमारे अपने साहित्य पर भारत के साहित्य ने जो प्रभाव डाला है उसको भी हमे कम न मानना चाहिये। हम देखेंगे कि यूरुप के वर्णनात्मक साहित्य का बहुत कुछ आधार भारत का कथा साहित्य है। खासतौर से जर्मन साहित्य और जर्मन दर्शन तो १८वी शती के प्रारम्भ से भारतीय विचारो से बहुत प्रभावित हुए है और सम्भवत यह प्रभाव आज भी बढता ही जा रहा है और इस शती मे तो सम्भवत कही अधिक बढ जायेगा"। विन्टरनिट्ज का यह कथन आज भी उतना ही क्यो उससे भी अधिक सत्य है। जब उसने यह बात कही थी तब मोहोजोदाडो के भग्नावशेषो का पूरा अध्ययन न हुआ था। तब से तो भारतीय इतिहास की प्राचीनता कही अधिक बढ गई है और मेरे विचार मे तदनकूल ही भारतीय वाङ्मय की और खासतौर से प्राचीन संस्कृति के इतिहास के लिये वैदिक वाङ्मय की महत्ता और भी बढ गयी है। यह कहना तो अनावश्यक ही है कि अपनी जनता के मन के और उनके हृदय को प्रेरणा प्रदान करने वाली शक्तियो के यथोचित अध्ययन के लिये तो संस्कृत वाङ्मय का महत्व अपरमित है। हमारे जातीय जीवन का कोई अग नही जो हमारे संस्कृत वाङ्मय म प्रतिपादित सिद्धान्तो और उसमे अभिव्यक्त आदर्शो और वेदनाओ से ओतप्रोत नही हो।

मानव संस्कृति को समझने के लिये, उसमे अपनी जाति का स्थान जानने के लिये और अपनी जातीय आत्मा को पहचानने के लिये ही नही बरन् कला के सर्वोत्कृष्ट रूप मे आनन्द विभोर होने के लिये भी हमारे लिये और हमारे ही लिये क्यो संसार भर के लिये संस्कृत वाङ्मय का अध्ययन आवश्यक है। जीवन का ऐसा कोई पहलू नही, मानव अभिव्यक्ति की ऐसी कोई रीति नही, कला का ऐसा कोई रूप नही जिसमे संस्कृत वाङ्मय पूर्णता को न पहुचा हो। समाज और व्यक्ति, राजा और रंक, नागरिक और ग्रामीण, मानव और पशु-पक्षी, सभ्य और असभ्य चेतन और जड़, आत्मा और परमात्मा सब ही की बात तो उस वाङ्मय में हृदयस्पर्शक और अनूठे ढंग से कही गई है। मानव हृदय का ऐसा कोई प्रकोष्ठ नही जो उसकी दृष्टि से छिपा रह गया हो या जिसके अन्तर्तम की बात अत्यन्त कौशल से व्यक्त न कर दी गई हो। प्रकृति का ऐसा कोई स्वरूप नही जिसका सुन्दर और सही चित्र वहा मौजूद न हो। समाज का ऐसा कोई पहलू नही जिसकी व्याख्या और उसके अन्तर्गत काम करने वाले आदर्शो, वेदनाओं और व्यसनों का हूबहू चित्र वहा न हो और मानव जाति के भविष्य और भाग्य से, सुख और कल्याण से सम्बन्ध रखने वाला ऐसा कोई प्रश्न नही जिसका विचारपूर्ण और यथोचित उत्तर वहां मौजूद न हो। पशु

पक्षी के जीवन का वैसा बारीक और सही वर्णन और मानव जीवन में उनके महत्व की वैसी व्याख्या और उनके प्रति वैसी सद्भावना तो संसार की किसी भी अन्य जाति के साहित्य में पाई जाती ही नही ।

उस में यदि विद्वानो और वयस्को के लिये सामग्री है तो जनसाधारण और बालको के लिये भी सामग्री भरी पडी है। गन्धर्वो, यक्षो, असुरों और निशाचरो की अद्भुत सृष्टि और चमत्कारिक शक्ति और कृत्यो का वहा ऐसा और इतना काफी वर्णन है कि अद्भुत्य से प्रसन्न होने वाली बालक जाति को अपनी चाहना को पूरा करने की अनन्त सामग्री मिल जाती है। स्मृति मे सहज ही घर कर लेने वाली ऐसी उक्तिया है जिन में जीवन का ज्ञान भरा है और जिनके सुनने और मन मे डाल लेने से ही साधारण जन भी ज्ञानवान बन जाते है और ऐसी कथाए हैं जिनको सुनने मात्र से ही अपढ भी पण्डित हो जाते है ।

साथ ही कला की दृष्टि से भी उसमें वह चमत्कार भरा है जो सम्भवत ही अन्यत्र पाया जाता हो। घट मे समुद्र भरने की कहावत यदि कही ठीक अर्थो मे पूरी हुई है तो संस्कृत वाङ्मय में ही। अर्थ और शब्द साम्य जितना संस्कृत वाङ्मय मे मिलता है वह और किसी अन्य साहित्य मे नही मिलता। यदि अलंकारो की शोभा और शब्द व्यंजना का उत्कृष्ट चमत्कार कही देखा जा सकता है तो वह भी संस्कृत वाङ्मय में। यदि विचार की सूक्ष्मता और दर्पण सम-चित्रण देखना हो तो वह भी अन्यत्र ऐसा नही मिलेगा जैसा संस्कृत वाङ्मय में। थोडे शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि संस्कृत वाङ्मय ही ऐसा वाङ्मय है जिस मे शब्दो की सर्वोत्तम व्यंजना हुई है। यह ठीक है कि पाश्चात्य विद्वानो को इन मे से कुछ बातें साहित्यिक दृष्टि से कुछ ठीक नही मालूम होती और वे अलकार बाहुल्यता और सूत्र इत्यादि की साहित्यिक दृष्टि से निन्दा करते है । किन्तु हमे यह न भूलना चाहिये कि साहित्य की उनकी अपनी मान्यताए हम से भिन्न है और उनका दृष्टिकोण वर्त्तमान ससार की दम मारने की फुर्सत न देने वाली सभ्यता के प्रभाव से रजित है। इस लिये उनको शब्दो के इन चमत्कारिक प्रयोगो से कोई आनन्द नही मिलता । किन्तु निष्पक्ष-दृष्टि से देखा जाये तो यह कहा जा सकता है कि इस बात का अनुमान कि शब्द कितना बडा जादू है संस्कृत वाङ्मय के अध्ययन से ही हो सकता है।

केवल संस्कृत भाषा के द्वारा अभिव्यक्ति करने में ही यह वाङ्मय अनूल्य नही है वरन् अभिव्यक्ति की ऐसी कोई रीति नही जिसमे इसने चोटी की सफलता प्राप्त नही की हो। क्या गद्य, क्या पद्य, क्या नाटक और क्या गीत काव्य, सभी में तो संस्कृत लेखक सिद्धहस्त रहे है। जैसा कि विन्टरनिट्ज लिखता है "भारतीय साहित्य में वह सभी कुछ है जो साहित्य शब्द के व्यापकतम अर्थ मे निहित है अर्थात् पद्यात्मक, पारलौकिक और ऐहिककाव्य, महाकाव्य, गीतकाव्य, नाटक और नीतिकाव्य और साथ ही वर्णनात्मक और वैज्ञानिक गद्य " (उसी में विषय प्रवेश पृष्ठ १) ।

ईसवी शती के पहले ही हमारे यहा काव्य के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में ही अत्यन्त उत्तम कृतियां हो चुकी थी। यह ठीक है कि अभी तक संस्कृत वाङ्मय का काल क्रम निर्विवाद रूपेण

स्थिर नहीं हो पाया है। किन्तु फिर भी यह बात तो लगभग सर्वसम्मत ही है कि ईसा पूर्व १५०० से लेकर ईसा पश्चात् १००० तक संस्कृत वाङ्मय का कोष अमूल्य रत्नों से भरपूर हो चुका था और इनमें से अनेक अनुपम ग्रन्थ तो ईसवी सन् के प्रारम्भ होने से कई शती पूर्व ही लिखे जा चुके थे। पराविद्या में उपनिषदों जैसे ग्रन्थ, महाकाव्य मे रामायण और महाभारत जैसे ग्रन्थ और दृश्य काव्य में भास के जैसे नाटक उस समय तक संस्कृत वाङ्मय के अंग हो गये थे। इनकी तुलना के अथवा उनके समान हृदयस्पर्शक और रसमय ग्रन्थ [illegible] संसार भर के साहित्य में और कोई नहीं है। यह ठीक है कि पाश्चात्य विद्वानो मे से [illegible] मे यह स्वीकार करने को प्रस्तुत नही कि संस्कृत साहित्य यूनान के साहित्य से भी उत्कृष्ट है किन्तु उनको भी तो यह स्वीकार करना पड़ता ही है कि उस काल का संस्कृत वाङ्मय लगभग उतना ही उत्कृष्ट था। यदि निष्पक्ष दृष्टि से विचार किया जाये तो यह बात निर्विवाद रूप से सिद्ध होगी कि रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य संसार की किसी जाति के भी साहित्य में नही है।

संस्कृत साहित्य की अपेक्षाकृत इस उत्कृष्टता का कारण कुछ सीमा तक संस्कृत भाषा की अपनी प्रकृतिजन्य विशिष्टता है। उसका व्याकरण और शब्दभंडार कुछ ऐसा ही है कि शब्दो की व्यंजना इतनी खूबी और इतने अर्थभरे ढंग से हो सकती है जितनी कि संसार की किसी भी अन्य भाषा में, चाहे वह प्राचीन हो अथवा अर्वाचीन, नही हो सकती। उसमे समास की पद्धति के कारण घट में सागर भरा जा सकता है जब कि अन्य भाषाओं में यह उस सीमा तक न कभी सम्भव हुआ है और न हो सकता है। भर्तृहरि की कविता की आलोचना करते हुए संस्कृत भाषा के इस गुण की ओर कीथ संकेत करता है। वह लिखता है कि "समस्त पद करने की संस्कृत की असाधारण शक्ति भर्तृहरि की कविता में अपने सर्वोत्कृष्ट रूप मे दिखाई देती है। मन पर (उसकी कविता का) यही प्रभाव पड़ता है कि उसमें ऐसी एकता है जिसके सब खंड अपने निहित स्वभाव के कारण अपना अस्तित्व खो कर एक हो गये है और इस प्रकार जो असर मन पर पड़ता है वैसा असर अंग्रेजी जैसी विश्लेषणात्मक भाषा द्वारा पैदा नही किया जा सकता क्योंकि उस मे इसी प्रकार की बात को ढीली गाठ से बंधे हुए कई विधेयो द्वारा ही व्यक्त करने के अतिरिक्त और कोई चारा नही होता और यह तो सम्भव है ही नही कि व्यक्त किये जाने वाले विचार की एकता के अनुरूप ही संश्लेषणात्मक रीति से एकता रखने वाले वाक्य के द्वारा यह व्यक्त किया जा सके"। (संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १९८)। समासो के साथ साथ संस्कृत शब्दो के बहुअर्थी होने के कारण संस्कृत काव्य में जैसे चमत्कारिक श्लेषों की सृष्टि की जा सकती है वैसी और किसी भाषा में नही की जा सकती। सन्ध्याकर नन्दिन ने रामपालचरित नामी जो लघुकाव्य इस विचार से लिखा कि उसका प्रत्येक पद भगवान राम और कवि के सम-कालीन राजा रामपाल दोनों के चरित्र का वर्णन एक साथ करे उसकी आलोचना करते हुए कीथ लिखता है कि "यह काम जो देखने मे असम्भव प्रतीत होता है, संस्कृत की अपनी सहज प्रकृति के कारण बिना किसी विशेष कठिनाई के किया जा सकता है। कविता की प्रत्येक पंक्ति को एक पद मान कर उसका पद विश्लेषण प्रत्येक बार विभिन्न रीति से ऐसा किया जा सकता है जिस से विभिन्न पदों को साथ मिलाने से विभिन्न अर्थ वाले शब्द बन जाये। साथ ही समस्त पदों का अर्थ भी विभिन्न प्रकार के समास मान कर वि[illegible]

किया जा सकता है, चाहे फिर समस्त पदों में आने वाले शब्दों का अर्थ बराबर एक ही क्यों न किया जाये और समस्त पद का अन्वय समान पदों में ही क्यों न हो। इसके अतिरिक्त यह भी विशेष महत्व की बात है कि संस्कृत कोष में शब्दों के बहुत प्रकार के अर्थ होते हैं"। (सस्कृत साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १३७-३८)। सधि और समास पद्धति के कारण और शब्दो के बहुअर्थी होने के कारण सस्कृत भाषा में ऐसा स्वाभाविक लोच है कि उस को किसी भी स्वरूप और प्रयोजन के अनुरूप गढ़ा जा सकता है।

इस आन्तरिक गुण के अतिरिक्त संस्कृत वाङ्मय का विकास ऐसे वातावरण में हुआ जो भौगोलिक और जातिगत दोनों ही दृष्टियो से बहुरंगी था। भारत विशाल देश है। उस मे हर प्रकार की जलवायु और अनेक प्रकार के प्राकृतिक दृश्य, अनेक जातियों के फूल पौधे, पशु-पक्षी और विभिन्न रग-रूप और रिवाज वाली जातियां पाई जाती है। अत इस सतरंगी पृष्ठभूमि पर भारत के कलाकार यदि अनेक प्रकार के सुन्दर शब्दचित्र बना सके तो यह कुछ अस्वाभाविक बात नही थी। एम० विलियम्स लिखता है कि "भारत मे सम्पूर्ण प्रकृति के स्वरूप के अनुरूप ही साहित्य भी अत्यन्त विशद मात्रा मे है। हिमालय की मनमोहिनी छटा से और अद्भुत कल्पना को उत्तेजित करने वाली जलवायु मे पोषित कविता का विकास प्राचीदिग् की भरपूरता के अनुकूल ही हुआ है"। (कृष्णमाचारि. क्लासिकल सस्कृत साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १ पर उद्धृत)।

पर संस्कृत वाङ्मय को इतना समृद्ध और उत्कृष्ट बनाने में भौगोलिक वातावरण से कहीं अधिक भाग भारतीय जाति के जीवन सम्बन्धी आधारभूत आदर्शो और मान्यताओं का रहा है। भारत मे सुदूर अतीत से ही यह विश्वास घर कर गया था कि जीवन केवल एक अनर्गल प्रलाप अथवा एक अर्थहीन स्वप्न न होकर आत्मदर्शन का एक साधन है। यह ठीक है कि भारतीय यह मानते थे कि स्थायी और शुद्ध आनन्द जीवनमरण के चक्र से मुक्ति पाने पर या ब्रह्म मे लीन हो जाने पर ही मिल सकता है और यह पार्थिव जीवन असार है किन्तु साथ ही उनका यह विश्वास भी था कि जीव कर्मबन्धन मे ऐसा बधा हुआ है कि सत्कर्म करने पर वह शनै शनै. मुक्ति की ओर अग्रसर होता है और अकर्म या दुष्कर्म करने पर वह भव बन्धन में और फंसता जाता है। इस विचार से भारतीयो ने मानव जीवन को चार आश्रमो में बाटा और उसके सामने चार पुरुषार्थ रखे। प्रत्येक आश्रम के धर्म को निभा कर और चारो पदार्थो के लिय जीवित रह कर कोई भी व्यक्ति ब्रह्म मे लीन होने का अधिकारी बन सकता है---ऐसा उन का विश्वास था। यदि कोई यह साधन और तप एक जीवन में करने में असमर्थ रहे तो भी उसको निराश होने का कोई कारण नही था क्योंकि बारम्बार जगत में वह तब तक जन्म लेता ही रहेगा जब तक वह मुक्ति प्राप्त न करले। अत. भारतीय के जीवन मे यह विचार था ही नही कि जीवन कभी अन्तिम रूप से सर्वथा निष्फल और प्रयोजनहीन हो सकता है। अन्ततोगत्वा प्रत्येक जीव को ब्रह्म मे लीन होना ही है। इसलिये किसी अस्थायी हार को वे सदा की हार न मानते थे। दूसरे शब्दो मे मुक्ति के या चिर आनन्द की प्राप्ति के सम्बन्ध में वे पूरे आशावादी थे। उनका यही आशावाद उनके साहित्य का मुख्य आधार है। सारे संस्कृत वाङ्मय में हमे कोई ट्रेजेडी या दुखान्त काव्य या नाटक नही मिलता। यह बात नहीं कि काव्य के नायक

को हर प्रकार की यातनायें न सहनी पड़ती हों या हर प्रकार की बाधाओं और विपत्तियों का सामना न करना पड़ता हो। उसको यह सब भुगतना पड़ता है किन्तु अन्ततोगत्वा उसको ये सब यातनायें और विपत्तियां उसके सुख और सफलता का सोपान ही सिद्ध होती है। नल दमयन्ती, हरिश्चन्द्र शैव्या, सत्यवान सावित्री इत्यादि जितनी भी प्रसिद्ध कथाएं हमारे साहित्य मे मिलती है इन सभी के नायक विपत्ति सागर को पार कर अन्त में सफलता और सुख को प्राप्त कर लेते हैं। इसी विश्वास के कारण हमारा सारा साहित्य क्षणिक वेदनाओं को अमृत्व प्रदान करने वाला शब्दचित्र ही न होकर व्यक्ति और जगत के चिरकल्याण की साधना है। कला के उद्देश्य के बारे में हमारे साहित्यिकों का यह विचार न था कि वह केवल लेखक या पाठक के मनोरजन का ही साधन है वरन् वे साथ ही यह भी मानते थे कि वह चारों पुरुषार्थो का भी साधन है। हमारे प्रधान महाकाव्यो के बारे मे तो परम्परागत यह विश्वास सदा से चला आया है कि उनके पठन-पाठन से मनुष्य की मुक्ति हो जाती है। साहित्य मीमासकों ने भी महाकाव्य की व्याख्या करते हुए कहा है कि उस मे चतुरवर्ग फल, अर्थात् धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की भी साधना होती है। रह रह कर यही ध्वनि भारतीय साहित्य के विभिन्न अगों से ध्वनित होती है। यही कारण है कि भारतीय साहित्य में अन्ततोगत्वा धर्म और सत्य की विजय ही दिखाई गई है। इस आधारभूत आदर्श के कारण भी संस्कृत वाङ्मय का महत्व कही अधिक हो जाता है। मानव का पशु से देवत्व पद प्राप्त करना ही कवि की साधना का ध्येय हो सकता है, क्योंकि उसी में उसका अपना आध्यात्मिक कल्याण है और उसी में मानव जाति का कल्याण निहित है। संस्कृत वाङ्मय हमारे कवियो और साहित्यिकों की इसी साधना का फल है।

संस्कृत वाङ्मय की एक और विशेषता यह है कि उसमें सारे व्यक्त जगत की एकता का चित्रण है। उसकी यह मान्यता है कि जड़ प्रकृति, चेतन पशु पक्षी और ज्ञानवान मानव इन सब के अन्तस्तल मे एक ही सर्वव्यापी शक्ति विराज रही है। इसलिये नायक के सुख दुख में सारे जड़ और चेतन जगत का हृदय भी सम्मिलित रहता है। इसी कारण संस्कृत वाङ्मय मे प्रकृति, पशुओ, पक्षियों का जितना सुन्दर और सहानुभूतिपूर्ण वर्णन है वैसा संसार के किसी अन्य साहित्य मे नही पाया जाता -- यूनानी साहित्य मे भी नही। संस्कृत के लेखकों को शेक्सपीयर के जन्म से शताब्दियो पूर्व पाषाणों मे पावन गीत और सरिताओ में शास्त्र पाठ सुनाई देता रहा है। यहां के कवियों ने मेघो को, शुकों को दूत बनाकर नायक का सन्देश लेकर नायिका के पास अनेक बार भेजा है। संस्कृत वाङ्मय मे नायक या नायिका की जीवन धारा की दिशा निर्माण मे परमेश्वर और देवगण प्रकृति और उसकी प्रेरक शक्तिया, सभी भाग लेती हैं। व्यक्ति के झरोखे से श्रोता, दर्शक या पाठक को संस्कृत वाङ्मय सारे विश्व का दिग्दर्शन करा देता है। जहां तक मुझे ज्ञात है, विश्वात्मा से मानव जीवन के इस तादात्म्य को इतनी स्पष्टता से केवल संस्कृत वाङ्मय मे ही निरूपित किया गया है।

अपनी इन विशिष्टताओ के कारण वह साहित्य अनेक ऐतिहासिक परिवर्तन होने पर आज भी अपना मस्तक ऊंचा किये हुए खड़ा हुआ है और संसार के महान् साहित्यों में सर्वप्रथम स्थान रखता है।

इस सम्बन्ध मे एक उद्धरण और जो प्रोफेसर मैक्स मूलर ने अपनी 'व्हाट इंडिया कैन टीच अस' नामक पुस्तक में लिखा है, देता हूं। प्रोफेसर मैक्समूलर लिखता है "यदि मैं सारी

दुनिया में एक ऐसे देश की खोज करूं जिसे प्रकृति ने इतना धन, शक्ति और रमणीकता प्रदान की है जितनी कि प्रकृति कर सकती है और जो कुछ सीमा तक पृथ्वी पर स्वर्ग है तो मैं कहूंगा कि वह देश भारत है। यदि मुझसे पूछा जाये कि किस देश में मानव बुद्धि ने अपनी सर्वोत्तम योग्यताओं में से कुछ का पूरा विकास किया है, जिसने जीवन की गहनतम समस्याओं पर गहराई से विचार किया है और उनका ऐसा हल निकाला है जिन पर उन लोगों को भी ध्यान देना चाहिये जिन्होंने प्लैटो और कान्ट का अध्ययन किया है तो मैं कहूंगा कि वह भारत है। जब मैं यह सोचता हूं कि वह कौन सा साहित्य है जिससे लोगों को, जो केवल यूनानियों, रोमवालों और सेमिटिक जाति की एक शाखा अर्थात् यहूदियों के विचारों के आधार पर ही पले हैं, वह बात मिल सकती है जिससे हमारा आन्तरिक जीवन अधिक पूर्ण, अधिक विशद, अधिक व्यापक और सच ही अधिक मानवी हो जायगा अर्थात् ऐसा जीवन हो जायेगा जो केवल पार्थिव ही नहीं है वरन् अमृतमय है तो मैं फिर कहूंगा कि वह भारत है।"

मैं ऊपर दिखा चुका हूं कि संस्कृत वाङ्मय का अध्ययन और अनुशीलन कितना आवश्यक, वांछनीय और महत्वपूर्ण है और इसी लिये इसको हमारे सभी शिक्षालयों में केवल स्थान ही नहीं बल्कि काफी प्रोत्साहन भी मिलना चाहिये। साथ ही मैं यह भी कहना उतना ही आवश्यक समझता हूं कि जो लोग केवल संस्कृत का ही अभ्यास करते हैं उनके लिये भी यह अनिवार्य होना चाहिये कि वे आधुनिक गतिविधि से परिचय प्राप्त करें। आज दुनिया किस तरह चल रही है, किधर जाती है, कितने चमत्कार आधुनिक अन्वेषणों के द्वारा विज्ञान ने दिखलाये हैं और उनका कितना गहरा प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ा है और पड़ रहा है यह किसी से छिपा नहीं है और यदि कोई उनके प्रति उदासीनता दिखलाना भी चाहे और उनकी ओर से अपनी आंख मूंद भी लेना चाहे तो वह नहीं कर सकता। इसलिये संस्कृत के विद्वानों को इन विषयों में अधिक ज्ञान नहीं तो कुछ इनके साथ परिचय और उनमें थोड़ा प्रवेश अवश्य होना चाहिये। यह हिन्दी पुस्तकों द्वारा बहुत अच्छा हो सकता है पर पुरानी रीति से शिक्षित पंडित हिन्दी को कुछ हेय दृष्टि से देखते आये हैं। उनके लिये संस्कृत में भी आधुनिक विषय सम्बन्धी ग्रन्थ बनने चाहिये। मुझे मालूम नहीं कि यह काम कहां तक हुआ है अथवा कोई विद्वान इस काम में दिलचस्पी ले रहे हैं या नहीं। पर मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि कुछ विद्वानों ने आधुनिक विषयों को भी संस्कृत भाषा में प्रसारित और प्रचलित करने का प्रयत्न किया है। इस सम्बन्ध में स्वर्गीय महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा का परमार्थदर्शन मैंने सुना है कि प्राचीन और नवीन दर्शन का बहुत ही सुन्दर और विशद ग्रन्थ है। उसी प्रकार से महात्मा गान्धी जी के सम्बन्ध में और उस विषय पर जिसे लोग गान्धीवाद कहते हैं संस्कृत में तीन पुस्तकें मेरे देखने में आई हैं एक पंडितराज स्वामी श्रीभगवदाचार्य की 'भारतीय पारिजात', दूसरी पंडित [illegible] की 'उत्तर सत्याग्रह गीता' और तीसरी श्री निवास विरचित 'गान्धी गीत'। मुझे ज्ञात हुआ है कि हमारे संविधान का संस्कृत अनुवाद तैयार हो गया है और उस के प्रकाशित होने का प्रबन्ध हो रहा है। ये शुभ लक्षण हैं और इनसे मालूम होता है कि संस्कृत के विद्वान आज भी मौजूद हैं जो आधुनिक विषयों को उस प्राचीन देववाणी में विद्वानों के सामने उपस्थित कर सकते हैं। मैं आशा करता हूं कि प्राचीन वाङ्मय के अध्ययन के साथ यह प्रयत्न भी चलता रहेगा जिससे यह वाङ्मय जिसकी प्रगति कई शताब्दियों से रुक गई है फिर एक बार अपने स्रोत को जारी कर सके और कुछ शताब्दियों के बाद उस वाङ्मय के

इतिहासकार को यह भी कहने का सुअवसर मिले कि इस युग में भी संस्कृत साहित्य किसी आधुनिक भाषा से आधुनिक विद्या के प्रचार मे कम नही रहा ।

मैं आशा करता हूं कि यह संस्था दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करेगी और जिस अभिलाषा और महत्वाकांक्षा के साथ इसकी आज स्थापना की जा रही है वह उस को पूरा कर सकेगी ।

महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह की प्रतिमा का अनावरण

तारीख २१ नवम्बर १९५१ को दरभंगा मे स्वर्गीय महाराजा लक्ष्मीश्वर सिह की प्रतिमा का अनावरण करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा –

देवियो और सज्जनो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि महाराजा बहादुर ने मुझे यह अवसर दिया कि मैं इस मूर्ति का अनावरण करूं और महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिह के सम्बन्ध मे कुछ कहूं । महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिह जिस समय दरभंगे मे राज कर रहे थे उस समय और आज मे बहुत अन्तर पड़ गया है और जो लोग उस समय के भारत से वाकिफ है वे इस बात को समझ सकते है कि उस समय किसी भी सार्वजनिक या जनता के काम के करने मे कितनी कठिनाई और बाधा पड़ा करती थी । आज तो हम स्वतन्त्र हो गये है और आसानी से सब काम कर सकते है । देश के लोग जैसा चाहे गवर्नमेंट से करा भी सकते है । मगर उन दिनो मे हालत दूसरी थी । मगर तो भी महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिह को देश के प्रति जितना प्रेम था और जितनी श्रद्धा थी और वह जितने निर्भीक थे वह इस बात से प्रमाणित होता है कि वह उस समय की सरकार की परवाह न करके जो मुनासिब समझते थे वह करते थे । यह सब तो सभी लोग जानते है । लेकिन मै समझता हू कि कांग्रेस के लोग भी बहुत करके यह नही जानते होगे कि कांग्रेस के साथ महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिह का एक गहरा और घनिष्ट सम्बन्ध था । एक कहानी जो अब भी कही कही लोग कहा करते है मगर आज के कांग्रेसी शायद नही जानते होगे वह यह है कि जब प्रयाग मे कांग्रेस का अधिवेशन करने की बात तय हुई उस समय वहा जो गवर्नर थे वह इस बात से बहुत नाराज हुए कि वहा कांग्रेस हो । इस बात का बहुत प्रयत्न किया गया कि एक पंडाल बनाया जाये जहा कांग्रेस का अधिवेशन किया जाये पर दुर्भाग्यवश कोई ऐसी जगह नही मिली । और मिलती भी कैसे जब गवर्नर ही ऐसा नही चाहते थे । पंडित गंगानाथ झा उस समय के नामी वकील थे । उन्होने सोचा कि कांग्रेस की इज्जत का सवाल है और अधिवेशन वहां अवश्य होना चाहिये । उन्होने महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिह के पास जाकर यह योजना रखी कि एक जगह खरीद ली जाये और वहा कांग्रेस का अधिवेशन करने के लिये इजाजत दी जाये । जहां ठीक गवर्नर साहब का मकान था उसके नजदीक ही महाराज ने एक कोठी और मैदान खरीदकर कांग्रेस से कहा कि अधिवेशन कीजिये ।

यह बात गवर्नर के लिये बहुत दुखदायिनी थी पर वह कुछ कर नही सकते थे। महाराजाधिराज ने अपने मकान मे कांग्रेस का अधिवेशन करने की इजाजत दे दी और गवर्नर चुप रह गये यद्यपि उनको इस बात का दुःख हुआ। यह मिसाल है उनकी उस निर्भीकता की जिस से कि वह देश का काम किया करते थे। वह उस समय की कौन्सिल के सदस्य भी थे और वहा भी उस बात को कहने में संकोच न करते थे जिसे वह ठीक समझते थे । केवल इतना ही नही। उन्होने उस दान के सिलसिले को जो इस राज्य की विशिष्टता रही है जारी रखा और उनके बाद के महाराजाधिराज और आज के महाराजाधिराज ने भी उसको कायम ही नही रखा है वरन् उससे अधिक बढ़ाया भी है। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है। अब समय बदला है, बहुत सी चीजे बदलेगी और बहुत सी बदल गयी है मगर यश, कीर्ति बनी रहेगी, उनके प्रति जो प्रेम था वह आज की जैसी अवस्था मे भी बना रहेगा। मै ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह महाराजाधिराज पर कृपा रखे और महाराजाधिराज की यह भावना बनी रहे जिससे वह हमेशा ऐसे शुभ काम करते रहे। इन शब्दो के साथ मै इस मूर्ति का अनावरण करता हूं ।

दरभंगा गोशाला मे अभिनन्दन

तारीख २१ नवम्बर सन् १९५१ को दरभंगा गोशाला मे नागरिकों की ओर से दिये गये मानपत्र के जवाब मे राष्ट्रपति जी ने कहा--

श्रीमान महाराजाधिराज बहादुर, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि आज फिर एक बार इस गोशाला में आकर इसके सम्बन्ध मे कुछ सुनने और जानने का मौका मुझे मिला है। जैसा आपने स्वयं कहा है कि मै पहली बार यहां नही आ रहा हू, एक बार और मै यहां आ चुका हू। उस समय से इसकी बहुत तरक्की हुयी है। जो जो काम आपने किया है उसकी रिपोर्ट सुनकर खुशी हो रही है। गो सेवा का काम भारत के लिये आवश्यक है और वह इसलिये आवश्यक है कि यह देश कृषिप्रधान देश है। यहा खेती का काम बिना बैल के हो ही नही सकता और न मनुष्य का भोजन बिना दूध के पूरा हो सकता है। भोजन के लिये दूध और घी तथा खेती के लिये बैलों की जरूरत सभी महसूस करते है। इन दोनो चीजो को गाय ही दे सकती है। इसी लिये गाय का इतना बड़ा महात्म्य हमारे देश मे आज से नही बल्कि अनन्त काल से माना गया है। यद्यपि हम चाहते है कि भारत के लोग हट्ठे कट्ठे हो और वे परिश्रम करके हर दिशा में तरक्की करे पर खाने और पीने को हमे इतना कम दूध और घी मिलता है कि हम शरीर की उन्नति नही कर पाते। इसलिये यह जरूरी है कि हमारी गोशालाओं का इस तरह से संगठन हो कि हमको दूध भी मिले और अच्छे बैल भी मिले। यह जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप ने यहां की गायों की नस्लों की इतनी उन्नति की है कि शायद वे आज हरियाने की गायों का मुकाबला कर सकें। जो काम यहां हो रहा है वह यहा ही नही बल्कि सारे सूबे में किया जाना है। मेरा सम्बन्ध जिन जिन गोशालाओं से रहा है मै उनसे कहता रहा हू कि स्थानीय गायों

और सांड़ों की उन्नति करनी चाहिये । दूर दूर से उनको यहां लाकर रखना केवल कठिन ही नहीं है बल्कि असम्भव भी है । क्योंकि जैसे मनुष्य जहां पैदा होता है वहां की जलवायु उसके अनुकूल होती है उसी तरह से जानवरों के लिये भी जहां वे जन्म लेते हैं वहां का हवापानी लाभदायक होता है । देखा गया है कि दूर से अच्छी गायें लायी गयी हैं और कुछ दिनों के बाद उनका दूध भी कम होने लग गया है और उन के बच्चे भी छोटे होने लग गये हैं । इसलिये जहां जो गाय हो उसकी ही उन्नति करनी चाहिये । जहां तक गोशाला का सम्बन्ध है, मैं कह सकता हूं कि आज उसे यह अवसर प्राप्त है कि वह यहां की गायों की पूरी तरह से उन्नति कर सके, उनका दूध भी बढ़ा सके और उनसे अच्छे बच्चे भी पैदा करा सके । इसलिये आप अच्छे रास्ते पर चल सकते हैं । मेरी यही प्रार्थना है कि सभी गोशालाओं में इसी तरह का काम हो ।

आप ने गोबध का जिक्र किया । इस सम्बन्ध में मैं तो यही कहूंगा कि जो गोशाला के काम में लगे हुए हैं उनका यह काम है कि वे गोपालन ठीक ढंग से करें । यदि वे ऐसा करते रहे तो फिर गोबध खुद ही बन्द हो जायेगा । गोबध क्यों होता है ? इस का कारण यही है कि गायों का पालन ठीक तरह से न होने के कारण जब वे दूध देना बन्द कर देती हैं तो उनका बध कर देना ही लाभदायक होता है, उनका पालना नहीं । मैं तो यह चाहता हूं कि गोशालाएं गोपालन का आदर्श लोगों के सामने पेश करें और उसको पूरा करायें । मेरी आशा है कि जो काम यहां हो रहा है वह पूरा होगा ।

आपने श्री कामेश्वरीप्रिया चक्षुदान यज्ञ का उद्घाटन मुझ से करवाया । मैं महाराजाधिराज बहादुर को इस दान के लिये बधाई देना चाहता हूं । यहां जो काम होता है वह बहुत ही बड़ा काम है क्योंकि यहां गरीबों को आखें मिलती हैं जो जिन्दगी के लिये सब से ज़रूरी चीज है । यह देखकर कि इतना जल्द और इतनी सफाई से यह काम किया जाता है मुझे आश्चर्य है । मैं समझता हूं कि आप का यह विचार कि इस काम को और आगे बढाया जाये बहुत सुन्दर विचार है । मैं आशा करता हूं कि इसमें आपको सफलता होगी ।

आपने म्युनिसिपैलिटी के सुधार सम्बन्धी बातों का जिक्र किया । मैं भी थोड़े दिनों के लिये पटना म्युनिसिपैलिटी का चेअरमैन था मगर मैं तो और कामों में बझा रहता था और जितना समय उसमें मुझे लगाना चाहिये था उतना नहीं लगा सकता था । पर तो भी मैं म्युनिसि-पैलिटियों की समस्याओं को जानता हूं । मैं चाहता हूं कि हमारी सब म्युनिसिपैलिटियों की हालत सुधरे । आप ने जिक्र किया कि आप को काम करने का पूरा अधिकार नहीं है । अधिकार तो लेने की चीज़ होती है, देने की चीज नहीं है । अधिकार वे ही ले सकते हैं जो उनको जितना अधिकार होता है उससे भी अधिक करके दिखलाते हैं । उनके पास आप से आप अधिकार आजाता है । मैं तो नहीं जानता कि किसी म्युनिसिपैलिटी का काम अधिकार के बिना पड़ा हो । अगर वे काम करना चाहें तो जितना अधिकार उन को है उसी से अधिक अच्छा काम कर सकती हैं । रुपये पैसे की दिक्कत अधिकार की बात नहीं है । रुपये पैसे की दिक्कत को पूरा करने के लिये आप को आवश्यक उपाय सोचने चाहियें । चूंकि अधिकार भी अपने हाथों में आ गया है इसलिये सभी म्युनिसिपैलिटियों को अब अधिकार दिये जा रहे हैं । किन्तु मेरा विचार तो यह है कि आप अधिकारों के फेर में न पड़कर यहां वह काम करें जिस पर

आपका पूरी तरह से हक है। और समय न लेकर आप सब बहनों और भाइयों को मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूं। जब से मैं यहां आया हूं सब लोगों ने जो प्रेम दिखलाया है उसके लिये आप सब का मैं अनुगृहीत हूं।

बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद के चित्र का अनावरण

राष्ट्रीय विद्यालय, दरभंगा, मे तारीख २२ नवम्बर सन् १९५१ को बाबू ब्रजकिशोर के चित्र का अनावरण करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा—

महाराजाधिराज बहादुर, बाबू कमलेश्वरी चरण, बहनो और भाइयो,

मैं आज यहां सवेरे सवेरे पहुंचा और बहुत दिनो के बाद पहुचा। इस विद्यालय से, जैसा आपने कहा, शुरू से ही मैं परिचित रहा हू और एक बार नही मुझे याद नही कितनी बार यहां आया हूं और आप लोगों से मिला हूं और विद्यालय की देख रेख करता रहा हूं।

जैसा आपने कहा, पूज्य ब्रजकिशोर का इससे विशेष स्नेह था और दूसरे भाइयो से जिन्होंने इस जिले कि राजनीति मे भाग लिया बहुत गहरा सम्बन्ध था। इसलिये मुझे यहा आकर विशेष खुशी होती है। मुझे अफसोस है कि मै ज्यादा समय नही दे सका। आपने शुभ निश्चय किया है कि यहा पूज्य ब्रजकिशोर बाबू के चित्र का अनावरण किया जाये। उनके सम्बन्ध में मेरे लिये कुछ कहना हास्यासपद होगा। मेरे साथ उनका जो सम्बन्ध था उस का वर्णन इतनी थोडी देर मे नही किया जा सकता। वह हमारे लिये ऐसे आदर्श पुरुष थे जिन्होने त्याग करने मे ज़रा भी हिचकिचाहट नही दिखलाई और जो देश की सेवा अपनी ज़िन्दगी के आखिर दम तक करते रहे, अस्वस्थ रहने पर भी करते रहे और दिन रात उसी मे लगे रहे, उसी की चिन्ता करते रहे इस तरह से उनका जीवन समाप्त हुआ। वह हमारे पथप्रदर्शक रहे है। हमारी पीढ़ी के लोगो का तो समय अब समाप्त हो चुका, अब तो मुझ जैसे लोगो को कुछ थोड़े ही और दिन देखने है। मेरी प्रार्थना है कि अब जो लोग रहेगे वे उनके पीछे चलें और ऐसा कार्य करे जिससे अगर वह ज़िन्दा रहते तो उन्हे खुशी होती। वह तो चले गये अपने परिश्रम का थोड़ा भी फल उन्होने नही देखा। सभवत. यह बात ईश्वर को मंजूर नही थी। और बहुतेरे लोग इसी तरह पहले ही चले गये। पर वह अपनी कीर्ति छोड गये है और जो रास्ता वह दिखला गये हैं उस पर चलकर ही आप कुछ कर सकते है यह मेरा विश्वास है। इसलिये मैं चाहता हूं कि नवयुवक लोग इस पर ध्यान दें और जिस निर्भीकता के साथ और त्याग के साथ उन्होने देश की सेवा की उसी तरह से वे भी करते जायें।

बाबू धरनीधर के चित्र का अनावरण

तारीख २२-११-५१ को मिथला कालेज दरभगा में बाबू धरणीधर के चित्र का अनावरण करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा—

महाराजाधिराज बहादुर, बहनो और भाइयो,

जैसा अभी हमारे प्रिसिपल कृष्णमोहन कुमार सिह जी ने कहा यह पहली बार नही है जब मैं आपके कालेज में आया हूं। मुझे सचमुच इस बात की खुशी है कि चन्द वर्षों में इस कालेज

ने इतनी उन्नति की है जहां दो सौ विद्यार्थियों से यह कालेज आरम्भ हुआ था वहां अब इसमें उन की सख्या १९०० हो गई है। मै आशा करता हूं कि दिन दिन इसकी उन्नति होती जायेगी।

हमारे सूबे मे काम करने वाले बहुत हो गये है और बहुत लोग स्वराज्य के लिये काम कर गये है। बाबू धरणीधर उन्ही लोगों में से थे जिन्होंने पहले पहल महात्मा गांधी का साथ दिया था। आप लोगों को पुराना इतिहास नही मालूम होगा, विशेष करके नौजवानों को जिनका जन्म अभी हुआ है तो मालूम होगा ही नही। बाबू ब्रजकिशोर और बाबू धरणीधर दरभंगा की ऐसी जुगल जोडी थे जिन्होंने सारे बिहार में नव जीवन की लहर फैलाई। बाबू धरणीधर उन लोगों में से थे जो पहले पहल महात्मा गांधी जी के साथ काम करने के लिये चपारण में गये थे और उसको छोडने के बाद अपनी स्त्री के साथ गावों में काम करते थे। जब असहयोग का आन्दोलन शुरू हुआ तो एक मिनट की हिचकिचाहट के बिना वे उसमें भी शामिल हो गये और वकालत छोडकर उस में योगदान दिया और अन्त तक काम करते रहे और हर तरह से देश की सेवा करते रहे।

जैसा मैंने ऊपर कहा वह एक निर्भीक पुरुष थे और कहने में इतने खरे थे कि किसी से कुछ कहने मे हिचकते नही थे। इस सबध में शुरू की एक बात कहता हू। जिस समय महात्मा गाधी पहले चपारण मे आये तो उन्होने कहा कि मै यहां के लोगों की बोली नही समझता हू इसलिये एक ऐसा आदमी चाहिये जो मुझे यहा के लोगों की बात समझाये। इस काम के लिये बाबू धरणीधर को बाबू ब्रजकिशोर ने नियुक्त किया। वह और उनके साथ मुजफ्फरपुर के बाबू राम-नौमी प्रसाद भी महात्मा जी के साथ गये। चपारण पहुचते ही महात्मा गांधी को सरकार ने यह नोटिस दिया कि २४ घटे के अन्दर यहा से चले जाओ। महात्मा गांधी ने उसको मानने से इंकार कर दिया। इस पर उन के ऊपर मुकदमा चला। गांधी जी ने इसकी चिता न की। मुकदमा पेश होने वाला था। महात्मा गाधी ने सब मित्रो को इस बातकी खबर दी। गाधीजी ने बाबू धरणीधर से पूछा कि अगर वह जेल चले गये तो वे लोग क्या करेगे। बाबू धरणीधर ने जवाब दिया : हम लोगों को तो इटरप्रेटर का काम करने के लिये आपने बुलाया था। जब वह काम नही रहेगा तो हम लोग अपने अपने घर चले जायेगे। महात्मा गाधी ने कहा बस इतना ही। बाबू धरणीधर ने कहा कि अभी तो हम लोग इतना ही कर सकते है; हम लोग इस के लिये तैयार नही है कि हम जेल में चले जायें। इस के लिये हमने सोचा भी नही है। बाबू धरणीधर ने आगे कहा, हां इतना हम लोग कर सकते है कि जब आप जेल चले जायें तो जो काम आप कर रहे थे उस को हम लोग ज़ारी रखें और अगर हम लोगों को गवर्नमेंट हुक्म दे कि यहा से हम लोग चले जायें तो यहां से हम चले जायेंगे। हम यह न कर सकेंगे कि सरकार के हुक्म को न मानकर हम लोग जेल जायें। गाधी जी संतुष्ट नही हुए और उन्होंने कहा इतना ही करोगे तो इतना ही करो। तब इन्होंने कहा कि हम लोग एक बात और करेंगे जब हम लोग सरकारी हुक्म को मानकर चले जायेंगे तो अपने साथियों को कहेंगे कि वे आकर इस काम को करें और उसी तरह से जब उनको भी हुक्म होगा तो वे चले जायेंगे और दूसरे काम करने के लिये आयेंगे। यह सुनकर गांधी जी ने कहा कि आधा काम तो हो गया। रात में गांधी जी काम करते रहे। किंतु बाबू धरणीधर सोचते रहे कि यह एक आदमी जिसका कोई अपना नही, जिसका कोई यहा से सरोकार नहीं

यहां आकर यहां के लोगों के लिये जेल जायेगा और हम लोग जो दावा करते हैं कि यहां के लोगों की हम सेवा करते है अपने अपने घर पर आराम से रहेंगे, यह कहां तक उचित है ? अन्त में उन्होंने निश्चय किया कि वह भी जेल जायेंगे। दूसरे दिन गांधी जी जब कचहरी जाने लगे तो धरणीधर ने उन से कहा कि हम लोगों ने सोच लिया है कि हम लोगों को क्या करना है। आप जब जेल चले जायेंगे तो हम लोग भी जेल जायेंगे। यह सुनकर गांधी जी बहुत खुश हुए और कहा कि अब फतह हमारी है। इस बीच सरकार का हुक्म आया कि मुकदमा उठा लिया जाये। किसी को जेल जाने की ज़रूरत नही पड़ी। मगर इसी बात से आप समझ सकते हैं कि बाबू धरणीधर कितने निर्भीक थे। तो यह तो मै ने एक शुरू की बात कह दी। इस तरह से उनके जीवन में हज़ारों हजार उदाहरण मिलेंगे। मौका आने पर वह किसी से पीछे नहीं रहते थे, काम में आगे ही रहा करते थे, त्याग में आगे ही रहा करते थे। इसलिये मुझे बड़ी खुशी है कि उनके चित्र का मै अनावरण कर रहा हूं और उसकी स्मृति मे आपसे यहां कुछ शब्द कह सका हूं।

महेन्द्र जयन्ती

तारीख २२-११-५१ को छपरे में महेन्द्र जयन्ती के अवसर पर राष्ट्रपति जी ने कहा—

यहां जो भाई और बहन हैं वे सभी जानते हैं कि मै क्या हूं। मै ऐसी जगह में आया हूं जहां से मेरा ऐसा सम्बन्ध रहा है कि यहां कुछ कहना भी कठिन है और नही कहना भी कठिन है ? आपने मानपत्र दिया है मगर किस लिये ? जो घर में रहता है वह घर का आदमी होता है, उस के लिये मान पत्र की ज़रूरत नही होती। वह तो हमेशा ही आपकी तरह है, वह आता ही रहता है और मिलता ही रहता है। इसलिये और भी कठिनाई हो जाती है।

आज के दिन आपने यहा एक और काम से लोगों को बुलाया और उसमें मुझे भी बुलाया। यों तो आना एक प्रकार से कर्त्तव्य है मगर आने में कठिनाई भी है और वह कठिनाई अपने हृदय की कठिनाई है। इतनी बातें इतने दृश्य आंखों के सामने आ जाते है कि अपने को संभाल करके रखना भी कठिन हो जाता है.........आगे मुझ से कुछ कहा नही जाता।

राजेन्द्र पुस्तकालय

तारीख २२-११-५१ को राजेन्द्र पुस्तकालय, छपरा, में राष्ट्रपति जी ने कहा—

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि आज मै आपके इस पुस्तकालय में आ सका। मै एक बार और यहां आया हूं पर मुझे याद नही है कि वह यही, मकान था या कोई और। जैसा आपने कहा कि यह मकान तो नया बना है, इसलिये मै नही कह सकता हूं कि यही मकान था या नही। इस बीच में जिस तरह से पुस्तकालय ने काम किया है उसकी एक छोटी रिपोर्ट प्रकाशित की गयी है। उससे पता चलता है कि कई तरह के काम आपने अपने हाथ में ले लिये हैं और उनको

पूरा करने का प्रयत्न आप कर रहे है । यह बड़ी खुशी की बात है । इस तरह की संस्थाएं जितनी हों और जितनी जगहों में क़ायम हो सकें उतना ही देश का भला हो सकता है । किसी संस्था के कायम करने में सच्ची लगन चाहिये और जो क़ायम करने वाले हो उनमें उसके लिये अनुराग चाहिये । अगर सच्ची लगन के साथ और सच्चे अनुराग से काम करने वाले मिल जायें तो काम बढ़ ही जाता है । अगर किसी प्रकार की दिक्क़त भी आवे तो वे उसको हल कर सकते हैं । में उम्मीद करता हूं कि यह पुस्तकालय दिन दिन उन्नत होगा और जो समाज सेवा का काम आपने हाथ मे लिया है और जैसे केन्द्र चलाने का प्रयत्न आप कर रहे है उनमें आप सफल होंगे । यह भी एक बड़ी चीज़ है कि इसका सम्बन्ध यहां के कालेज के साथ है अर्थात् यहा के कालेज के विद्यार्थी भी इसमे भाग लेते है और प्रोफ़ेसर भी भाग लेते है । इसका इस तरह से जो काम चलता है यह एक शुभ चिन्ह है । मे आशा करता हू कि यह पुस्तकालय पढ़ाई तक ही अपना काम सीमित नही रखेगा बल्कि सेवा कार्य और बौद्धिक विकास के काम में भी सहायता देगा और इसका बहुत काम फैलेगा । अधिक मे क्या कहू, इतना ही कहता हू कि आपका काम दिन दिन आगे बढ़े और आप तरक्की करें ।

जीरादेई गे सार्वजनिक सभा

तारीख २५-११-५१ को जीरादेई में की गयी सार्वजनिक सभा में राष्ट्रपति जी ने कहा—

भाइयो और बहनो,

मुझे यहा करीब-क़रीब दो वर्षों के बाद आने का मौका,मिला है । इस बीच दो एक मरतबे आने की ख्वाहिश हुई पर कुछ काम की भीड ऐसी हो गयी कि मे नही आ सका । इस वक़्त किसी तरह से दो तीन दिन निकाल कर आ गया हू जिस में यहा के लोगों से मुलाक़ात हो जाये ।

२६ जनवरी १९५० को जब मैने राष्ट्रपति पद का काम पहले पहल सम्भाला तब से भारत के हरेक सूबे मे मे फिरा हूं और समाचार पत्रो में आप देखेगे कि मे बराबर सफर करता रहा हू और सफ़र का आज ही आखिरी दिन है । अब दिल्ली पहुंचने पर जब तक चुनाव का झगड़ा रहेगा कही नही जाना है, वहां ही चुपचाप बैठना है । क्यों कि राष्ट्रपति भले किमी दल द्वारा चुना जाये पर चुने जाने के बाद वह किसी दल विशेष का आदमी नही रह जाता और उसकी नज़र में सभी बराबर समझे जाते है और आपने संविधान पढा होगा, वह भी सब की भलाई करता है, सब की सेवा करता है और सब लोग भी उसको उसी निगाह से देखते हे ।

स्वराज्य मिले तो कई साल हो गये । पर प्रजातन्त्रात्मक राज्य जब हम ने कायम किया उसको अभी दो साल से कम ही समय गुज़रा है । जो लोग इस काम में नही थे उनको आज क्या अन्तर पड़ गया है और स्वराज्य का अर्थ क्या है यह समझ में नही आता । इसलिये आप सुनिये जो मे कहता हू । यहा एक बहुत बड़ा काम हो गया है । हिन्दुस्तान का इतिहास चार हज़ार वर्ष पहले से आज तक लिखित रूप में है ऐसा सुनने में आता है । चार हज़ार वर्ष पहले से आजतक क्या क्या हुआ इसका पता किताब के ज़रिये से लग जाता है । मगर उस समय से पहले की हालत

की कोई खबर नहीं है । मगर जब से इतिहास मिलता है उस समय से आज तक हिन्दुस्तान एक कोने से दूसरे कोने तक, हिमालय के पहाड से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूर्व में बंगाल की खाडी से लेकर पश्चिम में अरब समुद्र तक एक छत्रराज्य के अन्दर कभी नहीं आया । पहले चक्रवर्ती राजा होते थे । पर चक्रवर्ती कौन कहलाते थे । जिस राजा का आधिपत्य छोटे छोटे राजा मान लेते थे वही चक्रवर्ती कहलाते थे । मगर वे अपना सब काम आप ही करते थे और चक्रवर्ती राजा के अधिकार को सिर्फ इसी रूप से मान लेते थे कि उसके रथ को अपने राज्य से बेअबाध गुजरने देते थे । वे ही राजा चक्रवर्ती कहलाते थे । लेकिन यह तो बहुत पुरानी बात है । उसके बहुत जमाने के बाद चन्द्रगुप्त और अशोक राजा हुए थे और उन्होंने दूर दूर तक अपना राज्य फैलाया था । उनकी राजधानी पटना मे थी और वे आज से २२०० वर्ष पहले पैदा हुए थे । अशोक के बडे बडे खम्भ अभी भी खडे हैं जिन पर उन्होने धर्म की बहुत सी बाते लिखवायी थी । चम्पारन जिले में एक दो खम्भे अभी भी मौजूद है । वह बहुत बडे चक्रवर्ती राजा हुए थे । मगर उनका भी राज्य इतनी दूर तक नही फैला । अशोक के बाद चन्द्रगुप्त बहुत प्रतापी राजा हुए पर उनका भी राज्य इतना नही फैला । मुसलमानो का भी हिन्दुस्तान मे बहुत बडा राज्य रहा पर उनका भी राज्य इस तरह से एक सिरे से दूसरे सिरे तक नहीं फैला । अंग्रेजो राज्य भी यहा कायम हुआ जो बहुत बडा राज्य था पर अंग्रेजो के जमाने मे भी हिन्दुस्तान के अन्दर ६००से अधिक रियासते स्वतन्त्र रूप से अपना राज्यकाल चलाती रही । उन रियासतों मे बहुत तो छोटी छोटी रियासते थी पर कुछ बहुत बडी बडी भी थी जैसे हैदराबाद, मैसूर, काश्मीर, जयपुर, जोधपुर इत्यादि । ये रियासतें एक प्रकार से अंग्रेजों के छत्रछाया मे थी पर वे अपना सब इन्तजाम आप चलाती थी । यह पहला ही मौका है जब सारे का सारा हिन्दुस्तान एक छत्र शासन के अन्दर आ गया है । हालाकि हिन्दुस्तान के दो हिस्से उससे कटकर अलग भी हो गये है, एक हिस्सा पूर्व में और दूसरा हिस्सा पश्चिम मे कट गया है मगर जितना रह गया है वह इतना बड़ा है जितना बडा हिन्दुस्तान कभी भी एक छत्रराज्य के अन्दर नही रहा ।

दूसरी महत्व की बात यह हुई है कि यहा अब ऐसा राज्य स्थापित किया गया है जिसमें सब का अधिकार है, अब राजा प्रजा का फर्क नही रहा । अब सब के सब या तो राजा हैं या सब के सब प्रजा है । पहले भी इस देश मे ऐसे राज्य हुए थे पर वे बहुत छोटे छोटे थे । आज से क़रीब २५०० वर्ष पहले मुजफ्फरपुर की तरफ वैशाली में एक ऐसा राज्य था और पंजाब की तरफ़ भी छोटे पैमाने पर प्रजातन्त्र चलाया गया था । लेकिन अब सारा हिन्दुस्तान ही प्रजातन्त्र हो गया है याने सारे हिन्दुस्तान का राज्य अब प्रजा के चलाने से चलता है । अब ऐसी बात नही रही कि जिसके पास धन है, जिसके पास विद्या है वही अकेले राज्य चलायेगा बल्कि अब भारत के शासन मे सबका अधिकार रहेगा । मगर इसके लिये शर्त यह है कि लोगों को होश हवास होना चाहिये और इसमें उनके इम्तिहान का समय भी नजदीक आ गया है । इस प्रजातन्त्र में जितने बालिग् लोग है अर्थात् जिनकी उम्र २१ वर्ष की हो चुकी है उन सब को अधिकार मिल गया है कि वे जैसा चाहें उस तरह से राज्य को चलावे । तो हिन्दुस्तान के अन्दर इतनी बड़ी क्रान्ति हो गयी है अगर गांधी जी ने यहां के लोगों को ऐसा तरीक़ा बतलाया कि आहिस्ता आहिस्ता क्रान्ति आ भी गयी और देखने में कुछ मालूम नही हुआ । देश में मुसलमानी राज्य क़ायम हुआ था तो लड़ाई हयी थी, पानीपत में लड़ाई हई थी जिसमें हिन्दू राजा हार गये और मुसलमान जीत गये और

लोगों को मालूम हो गया था कि फलाना राजा हारा और फलाने की जीत हो गयी। फिर अंग्रेज आये तो मुसलमान हार गये और उनकी विजय हुयी। तो वह चीज़ ऐसी थी जिसको लोग देख सकते थे, समझ सकते थे। इसमे यह हुआ कि समूचे देश में स्वराज्य स्थापित हो गया, जो यहा के लोग चाहते थे वह हो गया और जिनके हाथ मे अधिकार था वे चले गये। अब अग्रेज यहा नही है और किसी को यह मालूम भी नही हुआ। अब कोई विदेशी अधिकारी के रूप में इस राज्य में नहीं है, अगर कोई है तो वह सेवक के रूप में है, अधिकारी के रूप मे नही। अब हम लोग देश को बिगाडना चाहे तो बिगाड सकते है और बनाना चाहे तो बना सकते है। अगर अब बात बिगडेगी तो उसके लिये हम दूसरे किसी पर दोष नही लगा सकते है कि फलाने ने आकर बात बिगाडी। अब तो राजकाज चलाने वाले अपने ही लोग है और अब सब आदमियों को समझना है कि अगर कोई बात बिगडती है तो उसमे उनका कितना हिस्सा है। अब सब को सोचना है कि इतना अधिकार जो हाथ मे आ गया है उसको कौन किस तरह से सम्भाले। अब इसका पहला इम्तिहान होने जा रहा है। देश मे शासन चलाने के लिये जनता के प्रतिनिधियों का चुनाव होने जा रहा है। जिनको जनता चुन कर भेजेगी वे ही राजकाज चलायेगे। अब जनता का काम है कि वह ईमानदार से ईमानदार, अच्छे से अच्छे और समझदार से समझदार लोगो को चुन कर भेजे जिसमे जनता जैसा चाहती है उसी तरह से वे राज्य चलावे। मै तो थोडे ही दिनों के लिये यहा हू। जिस दिन चुनाव हो जायेगा, मुझे हट जाना है और जिसको चुना जायेगा वही वहा पर बैठेगे और उनका काम यही होगा कि देश का काम ठीक से चलावें और जो लोग चुन कर जाये उनकी राय के मुताबिक वह चले। तो देश मे जो इतनी बडी क्रान्ति हो गयी है उसको समझना चाहिये। अक्सर लोगों का यह खयाल होता है कि जब स्वराज्य की लड़ाई चल रही थी उस समय जितने त्याग और परिश्रम की ज़रूरत थी उतनी आज जब हमे स्वराज्य मिल गया है उन चीजों की जरूरत नही रही। यह ठीक है कि स्वराज्य हासिल करने के लिये बहुत त्याग और परिश्रम की जरूरत थी और लोगों ने त्याग किया। मगर मेरा खयाल है कि इस समय जो काम है वह उस समय के काम से अधिक मुश्किल है। उस समय अंग्रेजो से झगडा था और हम समझते थे और देखते थे कि वे हज़ारो मील दूर से आकर हमारे ऊपर बैठे हुए है। उस समय हम सब मिल कर काम करते थे और दुश्मन से मुक़ाबला करते थे। लेकिन अब वह बात नही रही। आप लोगों ने भी महाभारत की कथा पढ़ी ही होगी। उसमे एक तरफ़ पाच पांडव थे और दूसरी तरफ दुर्योधन १०० भाई थे। आपस म दोनों का झगड़ा था। लेकिन जिस वक्त गन्धर्वो से दुर्योधन की लड़ाई हुई भीम और अर्जुन को मन ही मन खूब खुशी होती थी कि भले ये लोग पीटे जाते है पर युधिष्ठिर ने कहा कि जहा हमारी आपस की लड़ाई का प्रश्न है वहां पाडव ५ है और कौरव १०० है मगर जहां एक तीसरे से लड़ाई हो वहा हम १०० और ५ नही है बल्कि १०५ है। तो जहा अग्रेज़ो से लड़ाई की बात थी १०५ लड़ रहे थे। अब १०५ की लड़ाई खतम हुई। अब काम मुश्किल है। अब तो १०५ में लड़ाई है। अग्रेज़ो से लड़ कर और उन पर अधिकार करके उन्हे हम ने भगा दिया। अब जो लोगों को तकलीफ़ थी उसको समझना है और समझ कर उसको दूर करना है। आज तो जो एक मन गेहूं पैदा कर ले वह भी देश का काम कर रहा है। जीरादेई में १०००–१२०० आदमी रहते है, वे किसी तरह से मेहनत करके पानी देकर, खाद देकर जैसे भी हो उस तरह से १० मन के बदले ११ मन अन्न पैदा कर लें तो उनको समझना चाहिये कि वे अपना ही काम नही देश का भी

काम कर रहे है, क्योंकि इस वक्त देश में अन्न की कमी है। उसी तरह से लडके लडकियों की पढ़ाई के सम्बन्ध मे, चिकित्सा के प्रबन्ध में, हर दिशा में लोगों को तरक्की करनी है। यह काम कोई आसान नही है और इसके लिये लोगों को खूब परिश्रम करना पडेगा। इस समय का काम शान्त आदमी का काम है। यह काम तडक भड़क का काम नही है। उस समय के काम में गांधी जी ने रास्ता बतलाया था जिसमे कुछ मिलना नही था, जेल जाने का काम था. मुसीबत भोगने का काम था लेकिन इस समय स्वार्थ साधन का बहुत रास्ता खुल गया है। जिस काम में लाभ उठाने का कोई रास्ता नही उसमे कोई लाभ नही उठावे तो उसमे कौन सी तारीफ़ की बात हुई मगर जिस काम मे प्रलोभन हो, लाभ करने की गुजाइश हो उसमें जाकर भी कोई स्वार्थ साधन नही करे तो उसी में तारीफ की बात है। किसी चीज़ को तोडना आसान है, बनाना कठिन है। इस समय देश को बनाने का काम करना है। जो लोग इस काम मे लगे हुए है उनको क़दम क़दम पर अनुभव होता है कि यह कितना कठिन काम है। उस समय बिगाडने का काम था और इस समय बनाने का काम हो रहा है। इसलिये उस समय से इस समय अधिक त्याग और परिश्रम की जरूरत है। अधिक लगन से काम करने की जरूरत है और हर तरह के लोगों के इसमें पडने की जरूरत है। और यह समझना कि स्वराज्य मिल गया है तो मजा उठाने और आराम से बैठने का वक्त आ गया है गलत है।

आपको इस बात की खुशी है और आप लोग कहते है कि अपने जवार का एक आदमी है जो इतने ऊचे स्थान पर है। यह खुशी की बात है और गर्व करने की बात है मगर वास्तव मे गर्व तो तभी करना चाहिये जब जवार मे हरेक आदमी ऐसा ही हो। किसी देश का हरेक आदमी तरक्की करता है तभी वह देश बडा गिना जाता है। एक आदमी के तरक्की करने से कोई देश तरक्की नही कर सकता। अगर एक आदमी बहुत बढ जाये और दूसरे लोग हर तरह से छोटे ही रह जाये तो यह बात मरुभूमि मे कही कोई वृक्ष लग जाये वैसी ही बात हुई। अगर किसी खेत मे एक ऊख बहुत ऊची हो जाती है और दूसरी सब एक एक हाथ की रह जाये तो क्या उसको अच्छी फ़सल कहेगे? एक खेत मे एक ऊख का पेड बास के जैसा बडा हो जाये दूसरे पेड एक हाथ के रह जायें उस खेत से वह कही अच्छा है जिसमें बास के जैसा एक भी पेड न हो कर सभी चार चार हाथ, पाच पाच हाथ के हो। तो जरूरत इस बात की है कि हिन्दुस्तान मे सब लोग ऊचे हों और जब सभी ऊचे होगे तभी सब की और देश की तरक्की होगी। मै आपसे यह कहना चाहता हूं कि आप खुश है तो आप इस बात की कोशिश करे कि सब ऊचे हों। मै भी तो इसी गाव मे था, पढ़ना शुरू किया और काम करते करते आज इस जगह पर पहुच गया हू। क्या वजह है कि अगर आप चाहे तो वैसा नही कर सकते। मान ले कि सभी वहा तक नही पहुचे लेकिन आधा ही पहुंच जायें तीसरे हिस्से तक ही पहुच जायें तो भी तो काफी काम हुआ समझना चाहिये। मैं कहता हूं कि आजकल के युवक त्याग की भावना अपने मे रखें, कार्य करे और ऊचे हों और वैसा अगर नहीं करेगे तो बात खोखली रह जायेगी। अगर इस जवार को आप उन्नत बनाना चाहते हो तो इसमें सच्चे त्यागी लोग होने चाहियें और रामराज्य क़ायम करना चाहिये। जब सब मिल कर काम करेंगे तभी रामराज्य हो सकता है। आप लोगों का हमेशा प्रेम रहता ही है। मालूम नहीं फिर कब आप लोगों से मुलाकात होगी। पर जब मौका मिलता है तो मिलने के लिये आ ही जाता हूं और मिलूंगा ही। बहुत बहुत धन्यवाद।

६१७

कमला मार्केट का उद्घाटन

कमला मार्केट का उद्घाटन करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा—

माननीय अजीत प्रसाद जैन, बहनो और भाइयो,

मुझे खुशी है कि आप ने आज मुझे यह मौका दिया है कि मैं यहां आकर इस काम को पूरा करूं। जो रिपोर्ट आप के सामने मार्केट के बारे में सुनायी गई है और उस के बाद जो बातें मिनिस्टर साहब ने हमारे पुरुषार्थियों के बारे में तफसील के साथ हमे बतलायी है उन सब बातों को सुन कर, मैं समझता हूं कि आप सब लोग खुश होंगे। यह मार्केट बहुत ही सुन्दर और बहुत ही अच्छा बना है और इस तरीके से बनाया गया है कि इस में काफी सफाई रहे और खरीददार और दूकानदार दोनो को हर त रह की मदद और सहूलियत हो जाये। इस के साथ साथ इस मार्केट के साथ श्री कमला जी का नाम जोड़ कर तो आप लोगों ने सोने में सोहागा लगा दिया है। कमला जी हमारे हिन्दुस्तान की उन महिलाओं मे थी जिन्हों ने अपनी सारी जिन्दगी मुल्क की खिदमत में, देश की सेवा मे लगा दी, और जिन का भी उन दिनो उन से वास्ता पड़ा उन्हें यह मालूम है कि दिन रात वह किस तरह लोगों की सेवा करने में लगी रहती थीं और देश के काम को आगे बढाती थीं। अपनी सेहत खराब हो जाने पर भी इतनी खराब हो जाने पर भी कि उस के कारण लोगो को उन के जीवन के बारे में घबराहट हो गई थी वह देश के काम मे तल्लीन बनी रही और डाक्टरों को राय न मान कर बराबर जनसेवा में लगी रही। उस का जो नतीजा हो सकता था. वही हुआ। वह हमारे बीच में से चली गई। जो मार्केट आप ने बनाया है और जिस में पुरुषार्थियों को सहूलियते आप देने वाले है उस मे उनका नाम आप ने जोड़ दिया है। मुझे भरोसा है कि उस से हमेशा पुरुषार्थियो को प्रोत्साहन मिलता रहेगा और उन को अपने काम में कामयाबी होती रहेगी।

आज तक पुरुषार्थियों के काम मे जितनी तरक्क़ी हुई है, उसे यहां अपनी आंखों देख कर मुझे बडी खुशी हुई है। इस प्रकार के काम की रिपोर्ट मुझे पढने को बराबर मिला करती थी। पर आज इसे देखने पर जो खशी हुई वह उस से कही ज्यादा है जो इस काम की तरक्की के पढने से होती थी। यह स्वाभाविक है। क्यों कि आदमी अपनी आंखो से जो कुछ देखता है उस का असर छपी हुई या लिखी हुई रिपोर्ट के पढ़ने के असर से आदमी के दिल पर कही ज्यादा होता है।

आज से चार बरस पहले जब हमारे पुरुषार्थी भाई लाखों की तादाद में पश्चिम से इधर आ रहे थे या आ चुके थे और दिल्ली की हर गली में, हर सडक पर, फुटपाथ पर, मकानात के बरन्डों में, जगह जगह पर यहां तक कि खाली मैदानों मे धूप वर्षा और जाड़े की परवाह न करके डेरा जमा रहे थे उस वक्त का वह दृश्य मुझे याद है। उस के मुकाबले में आज की हालत रख कर जबकि हज़ारों मकान तैयार करा कर लाखों आदमियों को बसाया जा चुका है जब मैं सोचता हूं तो मालूम होता है कि सच मुच गवर्नमेन्ट की ओर से जो काम किया गया है वह एक बहुत बड़ा काम हुआ है। इस में शक नहीं कि जिस मुसीबत और तकलीफों में ये

लोग पड़ गये थे वे इतनी ज्यादा और इतनी बड़ी थी कि कोई भी उन को पूरी तरह से नजात नही दिला सकता था। कोई काम चाहे वह गवर्नमेन्ट करे या और कोई करे वह इतना अच्छा और इतना बडा नही हो सकता है कि उस की वजह से ये पुरुषार्थी भाई बहिन, उस हालत मे, या उस से मिलती जुलती हालत मे फिर हो जायें जिस मे कि ये उजडने के पहले अपने घरो मे रहा करते थे और इन को पहले जैसा ही आराम और आशायश मिलने लगे। जैसी हालत थी उस मे जो कुछ हो सकता था वह किया गया है और किया जा रहा है। हम ऐसा कर सके इस बात के लिये मुझे बडी खुशी है। लेकिन मै जानता हू कि उन मे से अब भी अनेक बहुत सी मुसीबतो मे है। उन को जितनी राहत मिलनी चाहिये उतनी नही मिल पायी है। लेकिन उन्हे भी इस बात को स्मरण रखना चाहिये कि वे ऐसे बहुत से लोगो से कही अच्छी हालत मे है जिन्हे कि कुछ भी नही मिला है। आप ने यह अच्छी बात कही है कि कोई भी महज दूसरो के भरोसे पर ही नही रह सकता। उसे अपने पैरो पर आप खड़ा होना ही चाहिये। आप मे यह एहसास है यह खुशी की बात है। मै उन तमाम पुरुषार्थियों को जो पश्चिम से आये है मुबारकबाद देता हू। मै ने अपनी आखो देखा है इस शहर मे और दूसरी जगह जहा जहा मुझे देखने का मौका मिला है कि उन्हो ने बहुत ही बहादुरी बहुत ही हिम्मत और बहुत ही उत्साह के साथ सारी मुसीबतो को बर्दाश्त हो नही किया बल्कि बहुत ही बहादुरी और हिम्मत के साथ अपने लिये कोई न कोई धन्धा निकाला है, कोई न कोई काम काज निकाला है। इस लिये अगर एक तरफ गवर्नमेन्ट को मे मुबारकबाद देता हू कि उस ने इस दशा मे इतना काम किया है तो दूसरी तरफ उन पुरुषार्थियों को भी वैसे ही मुबारकबाद देता हू जिन्हो ने अपने आप को अपने पैरो पर खड़ा करने मे बहुत हद तक कामयाबी हासिल की है। और उन्हे जो थोडी बहुत मदद मिली उस से जितना वे लाभ उठा सकते थे उतना उन्हो ने लाभ उठाया है।

जन्म दिवस पर अभिनन्दन

तारीख ३-१२-५१ को राष्ट्रपति जी के जन्म दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति भवन के कर्मचारियों द्वारा दिये गये अभिनन्दन के उत्तर में राष्ट्रपति जी ने कहा--

बहनो और भाइयो,

मैं आप सब का बहुत अनुगृहीत हूं कि आज इस दिन पर आपने मेरे लिये अपनी शुभ कामना प्रकट की। ऐसा मौका हर साल एक बार आया ही करता है। जो यहां पर काम करते हैं और आपके साथ जो दूसरे लोग रहते है सब ही का प्रेम और सौहार्द मुझे हमेशा मिला है। मेरे लिये यह बड़ी खुशी की बात है कि मै आपका प्रेम पा सका हूं। मैं सच कहता हूं कि सारे देश के लोगों ने जिस तरह से मेरे साथ अच्छा और मेहरबानी का बर्ताव किया है उसी तरह से जिन लोगों के साथ मुझे काम करने का मौका मिला है उन सब ने मेरे साथ मेहरबानी और प्रेम का बर्ताव किया है जिससे मुझे काम करने मे ज्यादा उत्साह भी मिला है। मुझे यह भी विश्वास है कि अगर मुझ से कही ग़लती भी होगी तो लोग मुझे ठीक तरह से समझायेंगे और हर तरह से मदद करने के लिये प्रयत्न करेगे जिसमें और गलतियां न होने पावें। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि वह मुझे शक्ति दे, बल दे जिसमे देश की और सब लोगों की सेवा कर सकूं। आप लोगों को एक बार और हृदय से धन्यवाद देता हूं।

अन्तर्राष्ट्रीय सांख्यिकी प्रतिष्ठान का उद्घाटन।

*अन्तर्राष्ट्रीय साख्यिकी प्रतिष्ठान के २७वें अधिवेशन में बुधवार ५, दिसम्बर १९५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा––

भारत में आपका हार्दिक स्वागत करने मे मुझे बड़ी प्रसन्नता है। मुझे इस बात का हर्ष है कि अन्तर्राष्ट्रीय सांख्यिकी सम्मेलन के वर्तमान अधिवेशन के हमारी राजधानी मे होने से आप में से अनेकों को भारत की प्रथम बार यात्रा करने का अवसर मिला है। मुझे आशा है कि आप इस यात्रा से हमारे देश और हमारी जनता से परिचित हो जायेगे और यहा से लौटते समय ऐसी संस्मृति ले कर जायेगें जो हमारे देशो मे पारस्परिक मेल बढ़ाने मे सहायक होगी।

ससार की समस्त जातियो मे पारस्परिक शान्ति, मैत्री और सहयोग के आदर्श को भारत ने सर्वदा माना और इनकी प्राप्ति के लिये उसने व्यावहारिक रूप से कार्य किया। अत. संसार के सब देशो के जिन प्रमुख साख्यको और अर्थशास्त्रियों ने पिछले साठ वर्षो मे इस प्रकार के रचनात्मक क्षेत्र मे अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग पैदा करने के लिये सम्मिलित प्रयास किया है उन सब का इस सम्मेलन मे स्वागत करने मे मुझे बडी प्रसन्नता है। अपने प्रकाशित लेखो तथा वैज्ञानिक और शिल्पिक पत्रो द्वारा वैज्ञानिक लोग साधारणत. एक दूसरे के सिद्धान्तो, विचारो, प्रयासों और सफलताओ से परिचित रहते है। किन्तु इस प्रकार के सम्मेलन मे मिलने से ही जो वैयक्तिक सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है और बनाया रखा जा सकता है वह उनके पारस्परिक लाभ के लिये भी बडा अच्छा होता है। इसके अतिरिक्त नये विचारो और तरीको के विकास के लिये भी वैज्ञानिको का सम्मेलन सर्वदा बहुत स्फूर्तिप्रद रहता है। और मुझे आशा है कि शान्तिमय और समृद्ध जगत के निर्माण के लिये सुदृढ नीव के लिये जो सही आर्थिक नीति और कार्यक्रम आवश्यक है उसके तय करने के लिये साख्यिकी क्षेत्र मे जो नये विचार अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकते है उनका विकास इस सम्मेलन के प्रयासो के फलस्वरूप होगा।

भारत सरकार सांख्यिकी तरीकों के विकास मे बहुत दिलचस्पी रखती है और पिछले दिनो मे उसने देश में सुसज्जित साख्यिकी संस्थाओं की स्थापना को बहुत प्रोत्साहन प्रदान किया है। वह इस बात को जानती है कि वर्तमान युग के आर्थिक और सामाजिक जीवन की बढ़ी हुई जटिलताओ के कारण तथा सरकार के कार्यक्षेत्र के बढ जाने के कारण सरकार के लिये अब यह सम्भव नही है कि वह पर्याप्त और पूरी साख्यिकी सामग्री के बिना अपनी नीतियो का निर्धारण कर सके। इतिहास में पहली बार भारत एक छत्रराज्य बना है। उस का सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्र १२·२ लाख वर्गमील है अथवा ७८ करोड़ एकड़ है और पिछली जनगणना के अनुसार उसकी जनसंख्या ३६ करोड़ १० लाख से कुछ ज्यादा है अतः चीन मे छः एकड़ अमरीका मे तेरह एकड़ और सोवियट संघ में २८ एकड़ प्रति व्यक्ति के मुकाबले में हमारे यहां प्रति व्यक्ति के हिस्से मे २·१६ एकड़ भूमि पड़ती है। जो आंकड़े प्राप्त है उनसे पता चलता है कि खेती में कुल २६ करोड़ एकड़ भूमि लगी हुई है। और इस हिसाब से तीन चौथाई एकड ही फी आदमी के हिस्से में आता है। हमारे यहां प्राकृतिक सम्पत्ति साधन है किन्तु उनके विकास और काम में लाने का तो प्रश्न ही क्या अभी तक उनसब की जाच तक नहीं की गयी है और न उनका पूरा पता चलाया गया है। दूसरे देशों में से अनेकों की अपेक्षा हमारे देशवासियों का

* अंग्रेजी से हिन्दी मे अनुवाद

जीवन स्तर बहुत नीचा है। अतः हमें अनेकानेक समस्याओं का मुकाबला करना है और उन्हें सुलझाना है। हमारी सरकार आर्थिक और सामाजिक विकास के कार्यक्रम को हाथ में ले रही है। उसका चित्र पांच वर्षीय योजना है जोकि हमारे सम्पत्ति साधनों की वास्तविक जानकारी पर आधृत है। योजना को और भी अधिक व्यावहारकि बनाने के लिये यह आवश्यक है कि हमें राष्ट्रीय जीवन की सब बातों के सम्बन्ध में सही और विश्वासनीय जानकारी प्राप्त हो जिससे कि हम अपनी आवश्यकताओं और सम्पत्ति साधनों का सही सही अन्दाजा लगा सकें। सरकार को सही बातें मालूम होनी चाहियें और वह इस स्थिति में होनी चाहिये कि अतीत की तुलना वर्तमान से कर सके और भविष्य की सम्भावनाओं का कुछ अन्दाज़ा लगा सके। सही बातों की जानकारी न होने पर कोई भी सरकार सफलतापूर्वक उन्नति के लिये पूरी योजना नही बना सकती।

यद्यपि वैज्ञानिक और शिल्पिक विकास के कारण पृथ्वी के सुदूर भाग एक दूसरे के बहुत निकट हो गये हैं तथापि जगत की सही बातों के बारे मे अभी लोगों मे जानकारी की बहुत कमी है। अनेक देशो के सम्बन्ध में सही जानकारी का न होना ही अन्तर्राष्ट्रीय मेल के बढ़ने में मुख्य रुकावट है। यदि हमें ऐसे उदारचित्त विश्व समाज का निर्माण करना है जिसमें एक दूसरे की समस्याओ को समझ कर और उनकी महत्ता को पहचान कर समस्त मानव जातिके लाभ के लिये लोग सम्मिलित प्रयास करें तो यह आवश्यक है कि उनके पास निष्पक्षता से एकत्रित और सही आंकड़े हों तथा ऐसी जानकारी हो और विचारों के स्वतन्त्रतापूर्वक विनिमय करने की पूरी सुविधा हो।

यह विशेष महत्व की बात है कि अन्तर्राष्ट्रीय सांख्यिकी प्रतिष्ठान का यह अधिवेशन एशियाई देश मे हो रहा है। जैसा आप जानते है एशिया के देशों में सांख्यिकी संस्थाओं का वैसा विकास और नीति निर्धारण करने मे सांख्यिकी का वैसा प्रयोग नही किया गया है जैसा कि संसार के अन्य भागो में हुआ है। किन्तु एशिया के सब देशो में आर्थिक विकास के लिये बनाई गयी हाल की योजनाओं को यदि हम ध्यान मे रखें तो यह प्रकट है कि सही और विश्वासनीय सांख्यिकी सामग्री को इकट्ठा करना बहुत महत्व की बात हो गयी है। मुझे आशा है कि एशियाई देश मे इस सम्मेलन की बैठक होने का परिणाम यह होगा कि यहां ऐसी सुसंगठित सांख्यिकी व्यवस्था का विकास हो जायेगा जो एशिया और समस्त पृथ्वी भर के लोगो के आर्थिक और सामाजिक विकास का सुदृढ़ आधार निर्माण करने में महत्वपूर्ण सिद्ध हो सके।

जब भारत सरकार ने इस सम्मेलन के लिये निमन्त्रण दिया था तब हमारे प्रधान मन्त्री ने यह कहा था कि "साख्यिकी के और अधिक अध्ययन तथा प्रशासन और उद्योग धन्धों में सांख्यिकी रीतियों के और अधिक प्रयोग करने में और उनको प्रोत्साहन प्रदान करने में हमें बड़ी गहरी दिलचस्पी है। अन्तर्राष्ट्रीय सांख्यिकी प्रतिष्टान के अधिवेशन के यहां होने से इन आगे के अध्ययनों को आवश्यक प्रोत्साहन मिलेगा। तथा अनेक देशों के अनेक ख्यातिनामा सांख्यकों की उपस्थिति से हमें न केवल बड़ी प्रसन्नता होगी वरन् हमें उससे काफी लाभ ही होगा"। अतः हमें आशा है कि आप लोगों के विचार विमर्श से और जो सम्पर्क हमारे सांख्यक और विशेषज्ञ आज स्थापित कर रहे हैं उससे संसार भर के लाभ के लिये सांख्यिकी विज्ञान की उन्नति के अतिरिक्त हमें अपनी निजी कठिनाइयों के सुलझाने में भी पर्याप्त सहायता मिलेगी।

मैं आप लोगों का फिर एक बार हार्दिक स्वागत करता हूं और आपके श्रम की अत्यधिक सफलता के लिये भी सद्कामना प्रकट करता हूं।

६२१

अलीगढ़ विश्वविद्यालय का समावर्तन

अपने दीक्षान्त भाषण में राष्ट्रपति जी ने कहा—

जो विद्यार्थी इस यूनीवर्सिटी से डिग्रिया हासिल करके जिन्दगी की दौड में आज शामिल होने के लिये जा रहे हैं उन सब को मै मुबारकबाद देता हूं और मेरी यह प्रार्थना है कि भगवान उनका भविष्य सुन्दर बनावे। साथ ही मै यह भी कहूगा कि उनकी कामयाबी बहुत कुछ उनके अपने खयालों और कामो पर भी मुनस्सर करेगी। अगर वे इस दुनिया की शक्ल सूरत को जिसमें वह दाखिल होने वाले है ठीक २ समझ लेंगे और उसको समझने के बाद पूरी सूझ बूझ और लगन के साथ उन फर्ज़ों को पूरा करने में लग जायेगे जो उन पर आयद होते है तो मुझे पूरा यकीन है कि वह अपनी जिन्दगी में पूरी तरह से कामयाब होंगे और न महज अपना ही भला करेंगे बल्कि वतन और दुनिया के और लोगों का भी भला कर सकेंगे।

उसी दुनिया का एक हिस्सा हिन्दुस्तान है जो अपनी लम्बी तारीख रखता है और जिसने पिछले दिनों में दुनिया की तारीख में अपनी जगह रखी है और मै उम्मीद करता हू कि आइन्दा भी वह अपने लिये जगह कायम रख सकेगा। यह लम्बी तारीख बहुत ही दिलचस्प है और इसमें शक नही कि अगर आप इसको देखेंगे और इससे कुछ सीखना चाहेगे तो इसमें आपको बहुत कुछ देखने और सीखने को मिलेगा। मगर इसकी तस्वीर के किसी एक छोटे गोशे को भी मै आपके सामने यहां रखना चाहू तो उसके लिये न तो मेरे पास वक्त है और न काबलियत। ऐसी किसी भी चीज की तस्वीर के एक टुकडे को देखना, जब तक उस टुकडे में सारी तस्वीर की थोडी झलक भी न आती हो, ठीक भी नही है क्योकि सिर्फ एक गोशा देखने से हो सकता है कि हमको सारी तस्वीर के बारे मे बिल्कुल गलत खयाल हो जाये और जो उसका अच्छा हिस्सा है उसको न देखें या जो बुरा हिस्सा है उसको न देखे। तस्वीर को अगर हम पूरी पूरी देखे, चाहे वह छोटे ही पैमाने पर क्यो न हो, तभी हम उसको ठीक समझ सकते है। इसलिये मै इस तरह की कोई कोशिश उस तस्वीर को आपके सामने रखने की नहीं करूगा। इतना तो हम सब मान ले कि दुनिया में कोइ चीज आज ऐसी नही है जिस पर बीते हुए कल का असर नही हो या जो आइन्दा के कल पर अपना असर नही रखती हो; यह एक कुदरती कानून है कि कोइ काम ऐसा नही होता जो अपना कुछ न कुछ असर नही रखता हो। कोई हरकत ऐसी नही होती जो कि जमाने के पन्ने पर अपनी लकीर नही छोड़ जाती हो। वह हरकत जितनी बडी होगी लकीर भी उतनी लम्बी और जोरदार हो सकती है और हरकत जितनी छोटी होगी उसका निशान उतना ही छोटा रह जायेगा। मगर कोई हरकत बग़ैर अपना निशान छोडे रह नही सकती; उसी तरह आज जो कुछ इस देश में या किसी भी देश पर बीत रहा है वह हज़ारों, लाखो और करोड़ों कल की हरकतों का नतीजा है और जो आनेवाले कल होंगे वे भी इसी तरह हज़ारो, लाखो और करोडो आज का नतीजा होंगे। इसलिये हम आज कोशिश भी करें तो कल के नतीजे से अपने को बिल्कुल बचा नही सकते और न आने वाले कल को आज की कार्रवाइयों के नतीजे से बचा सकते है। मगर इसके साथ ही यह भी जरूर है कि आदमी अपनी कोशिश और हिम्मत से, अपने पुरुषार्थ से इतिहास के रुख को भी बदल देता है और इस तरह के उदाहरण भी बहुत मिलेगे जहां किसी एक आदमी ने इतिहास के

रुख को बदला है, ठीक उसी तरह बदला है जिस तरह बहती हुई धारा के सामने चट्टान की रुकावट पड जाने से धारा दूसरी ओर रुख करके बहने लग जाती है।

हम भारत के रहने वाले हजारों वर्षों की तारीख के पुतले हैं और आज हमको यह बात मानकर आगे चलना है कि जो कुछ भी हम देश में पाते हैं, जो लोग भी यहां बसते हैं सब यहा के हैं और सब को यहा ही फलना फलना है और यहा ही दफन होना है। अक्लमदी और होशमन्दी इसी मे है कि हरेक दूसरे को इस पनपने, फूलने फलने में मदद करे जिससे यह एक सुन्दर बाग बन जाये। हजारों वर्षो का हमारा इतिहास अगर किसी एक बात को सिखाता है तो वह यही है कि हम एक दूसरे के साथ अगर मेल मोहब्बत और रवादारी का बर्ताव रखना चाहेंगे तभी हम खुश रह सकते है और अगर इसके बरक्स आपस में लडना झगडना, एक दूसरे पर बेएतबारी और बेएतमादी का काम करना और एक दूसरे के साथ बेजा दखल और दस्तनदाजी करना शुरू कर देंगे तो वह किसी के लिये अच्छा नही होगा और नतीजा यह होगा कि सब को उसके बुरे फल भुगतने पडेंगे। ऐसा होना एक कुदरती बात है क्योंकि जहा हजारो वर्षो से न मालूम कितने तरह के इन्सान आये और बस गये, कितने प्रकार के विचार और धर्म फैले और लोगों में घर कर गये, जहा वक्त पाकर बहुतेरी जबाने और भाषायें पैदा हो गयी और फैल गयी, जहा भिन्न भिन्न धर्म, मोखतलिफ मजहब लोगों मे जारी हो गये वहा अगर यह आपस की रवादारी और मेल जोल न हो तो वहा आदमी की जिन्दगी मुश्किल हो जाये। हम मे चाहे जितनी भी शिकायत और ऐब हो, हमने इतना तो समझ लिया है कि जब तक हम रवादारी से काम नही लेंगे तब तक हमारी जिन्दगी मुश्किल हो जायेगी। हिन्दुओं के जमाने से लेकर जब केवल वे ही इस मुल्क मे रहते थे— अगर ऐसा कोई वक्त गुजरा हो— आज तक हमारी सारी तारीख इस चीज़ की गवाही है। हम मे कुछ ऐसी ताकत कुदरत ने दी है कि हम विरोधी (मोतनाजा) चीज़ो के नोक झोक चिकना करके उनको एक मे इस तरह जोड़ और पिरो लेते है कि हरेक अलग अलग रह करके एक दूसरे के साथ इस तरह मिल जाती है कि सब मिल जुल कर एक अच्छी खुशनुमा चीज तैयार कर देती है। आज कोई भी भारतवासी चाहे उसका कोई भी धर्म या भाषा या कौम या जाति हो, यह नही कह सकता कि भारत केवल उसकी ही चीज है क्योंकि इस भारत के बनाने में इसने वैसा ही हिस्सा लिया है जिस तरह बहुतेरे दूसरो ने लिया है और सब की मिली जुली कोशिश का नतीजा ही आज का भारत है। हमारी सस्कृति सब की मिली जुली कोशिश का ही फल है और इसके किसी भी पहलू पर आप गौर करके देखेंगे तो मालूम होगा कि इसमें किसकी कितनी देन है। अक्सर हम सुनते है और लोग कहते है कि भारत में उत्तर और दखिन मे बहुत फ़र्क है। वह सही है मगर इस फ़र्क के बावजूद उत्तर और दखिन दोनों एक दूसरे के बराबर ऋणी और क़र्जदार हैं और उत्तर ने दखिन को बहुत कुछ दिया है और दखिन ने उत्तर को बहुत कुछ दिया है। उसी तरह हिन्दुओं ने मुसलमानो को बहुत कुछ दिया है तो मुसलमानों ने हिन्दुओं को भी बहुत कुछ दिया है। सस्कृति के किसी भी पहलू को आप लें, चाहे भाषा को आप ले लें, चाहे गान विद्या को आप ले लें चाहे आप चित्रकला (मसौरी) को ले लें हरेक को आप पायेंगे कि वह सब का ऋणी ह और कोई ऐसी चीज़ नही है जो एक दूसरे से किसी भी बात में अछूती रह गयी हो।

इसके साथ साथ हमको यह भी मानना पड़ेगा कि हमारी एक दूसरी बड़ी खूबी यह रही है कि जहां हमने सब को मिलाया और एक किया वहा हमने किसी को बिल्कुल नेस्तनाबूद नही किया बल्कि हरेक को कायम रखते हुए और कायम रहते हुये एक दूसरे से बहुत कुछ लेने देने और सीखने सिखाने का प्रयत्न किया। यही वजह है कि यहा कितने ही धर्म के लोग बसते हैं और वे एक दूसरे पर असर डालते है पर कोई किसी को नेस्त नाबूद नही करता। मै कह सकता हूं कि हमारी तारीख की यह सब से बडी और नुमाया चीज है कि हमने सब को मिला कर बनाने की ही कोशिश की है और किसी को बिल्कुल मिटा देने की कोशिश नही की है। जब हजारों वर्षो और करोडो इन्सानो की कोशिश की तारीख पर हम एक सरसरी नजर डालते है तो यह नतीजा निकलता है और यह नतीजा अपनी जगह पर बिल्कुल सही है, बावजूद इसके कि कभी कभी हमें इस तरह की बाते भी देखने मे आयी कि जो उसके खिलाफ मालूम हो। ऐसा होना एक तरह से लाजिमी है। मगर बावजूद इन अपवादो (मुसतसनाओं) के जो कुछ मै ने कहा है वह अपनी जगह पर बिल्कुल सही है।

इसलिये जब आज हम आजाद हुए हैं और अपनी किस्मत के फैसले का अख्तियार हमारे अपने हाथो मे आ गया है तो हमको यह तारीखी सबक समझ लेना है और अपने को ऐसे ढाचे में ढालना है कि जिसमे हम अपना और दूसरों का भला कर सके। जब हमारा सविधान बना तो उस तारीख का ही तकाजा था कि हम उसमें साफ तौर से मंजूर कर ले और सब को इस बात का पूरा २ यकीन दिला दे कि इस मुल्क मे जो लोग बसते है उनमे से हरेक को पूरी आजादी होनी चाहिये और वह आजादी सिर्फ इसलिये नही कि वे अपने धर्म और मजहब की पाबन्दी कर सके बल्कि इसलिये भी कि वे अपने खयाल और अपने विचारों को पूरी तरह से जाहिर कर सके और हरेक बिला लिहाज कि वह किस धर्म का मानने वाला है, मर्द या औरत है, कहे जाने वाले किसी ऊचे तबके या नीचे तबके का है, उसको अपनी तरक्की और उन्नति करने के लिये पूरा मौका मिलना चाहिये। इसी बुनियाद पर हमारा सारा सविधान बना है जिसमे हमने इन्सान की आपस की बराबरी, अच्छा बर्ताव, सद्भाव और एक दूसरे पर एतबार की बुनियाद पर मुल्क का और मुल्क के जरिये सारी दुनिया के सभी लोगो के दर्म्यान मे अमन और सुलह कायम रखने और तरक्की देने का मनसूबा रखा है। इन्सान की ज़िन्दगी और तरक्की के लिये उसकी माली हालत को सुधारने की उतनी ही जरूरत है जितनी और किसी चीज की और इसलिये हमने सबको अपनी माली हालत सुधारने का मौका देना और जो किसी वजह से पिछडे हुए है उनके लिये खास सुभीता और रियायत मुहय्या करने की बात सोच रखी है। इसलिये जितना विधान हमको मौका दे सकता है हमने इस बात की कोशिश की है कि इस मुल्क के रहने वाले सभी लोग सुख और चैन से रहे और तरक्की करे और किसी के साथ किसी किस्म की बेजा दस्तनदाजी या मदाखलत न की जाये। यह सब करने मे हमने कोई ऐसा काम नही किया है जो बिल्कुल हमारे लिये नया या अनजान हो बल्कि जैसा मै ने अर्ज किया यह हमारी सारी तारीख का एक सुन्दर फल है जिस को इसने हज़ारो वर्षो मे तैयार किया है और जिसका रस हमारे खून के कतरे कतरे में भरने की कोशिश की है। हम चाहते है कि आप मे से हरेक इस चीज पर गौर करे और यह समझ ले कि जब हम यह कहते है कि भारत मे हमने प्रजातन्त्र (जम्हूरियत) क़ायम किया है तो हमने सच-मुच इस बात को मान लिया है, तसलीम कर लिया है कि यहां हरेक पूरा आज़ाद है और रहेगा

और हरेक को यहां की हुकूमत में पूरा हक और हिस्सा रहेगा। एक तरफ विधान यहां के सभी शहरियों और बाशिन्दों को यह इतमीनान और यक़ीन दिलाता है कि उसकी आज़ादी और उसके सभी हक हर तरह से सुरक्षित और महफ़ूज़ रहेंगे तो दूसरी तरफ़ वह हर शहरी से इस बात की उम्मीद रखता है कि वह अपना फर्ज़ मुल्क और मुल्क की सल्तनत की तरफ और मुल्क के सभी दूसरे बाशिन्दो की तरफ हमेशा अदा किया करेगा। मुल्क और सल्तनत के साथ उसका फ़र्ज़ वफ़ादारी का है और यहां के दूसरे बाशिन्दों की तरफ उसका फर्ज़ मेल मुहब्बत के बर्ताव और रवादारी का है। अगर हमारे देश के लोग अपने हक़ और फ़र्ज़ दोनों को समझ ले तो फिर यहा सभी चैन की नीद सो सकते है और मुल्ककी तरक्की करते हुए वे बहुत ही तेज़ी के साथ आगे बढ़ सकते है। जिन लोगों ने अच्छी तालीम पायी है और जो इन सभी बातों को अच्छी तरह से समझ सकते है उन पर यह फर्ज आयद होता है कि वह इन चीज़ों को दूसरों को अच्छी तरह से समझाये और उनको अपना फर्ज अदा करने के लिये तैयार करे।

आज जिस यूनीवर्सिटी में आपने मुझे दावत देकर बुलाया है उसकी तारीख भी कम से कम ७५ वर्षो की है। सर सैयद अहमद खां की दूरबीनी और मुल्क की मोहब्बत का ही यह नतीजा था कि पहली जुन १८७५ ई० को यहा पर पहले पहल स्कूल कायम हुआ जो पीछे चल कर कालेज हुआ और १९२१ मे जिसने यूनीवर्सिटी का दर्जा हासिल किया। इस दौरान में यह एक तालीम का बहुत बड़ा केन्द्र (मरकज़) बनी रही और इसने मुल्क मे और मुल्क के बाहर भी नाम हासिल किया। हिन्दुस्तान मे बसने वाले मुसलमानो की तारीख बनाने में इसने अपने दौरान मे काफी हिस्सा लिया। आज भी जब इस मुल्क के अन्दर हम चाहते है कि सभी मुल्क के शहरी बनकर एक दूसरे के साथ अच्छे से अच्छे ताल्लुकात रखते हुये अपनी तरक्क़ी करे यह बहुत कुछ कर सकती है। यही सोचकर हमारी गवर्नमेंट और पार्लियामेंट ने हाल ही मे एक नया क़ानून बनाया है जिस से उम्मीद की जाती है कि इसका मक़सद हासिल करने मे और इससे जो उम्मीदे रखी जाती है उनको पूरी करने में काफी मदद मिलेगी। यह सभी यूनीवर्सिटियों का एक खास काम है कि वे रोशनी का मरकज बन जायं और वहां से अच्छे खयाल चारों तरफ फैलें और वहां साहित्य (अदब) सायन्स और जितनी दूसरी इल्मी चीज़े हो सकती है सब के ज़रिये तालीम ही नही दी जाये बल्कि सब मे तरक्की करने का मौका वहां के लोगों को मिले। हमारी यूनीवर्सिटियां इस तरह का काम कर रही है और अब उम्मीद की जाती है कि और भी तेज़ी के साथ उनका काम आगे बढेगा। मै इस यूनीवर्सिटी से भी यही उम्मीद रखता हूं कि यह एक ऐसा केन्द्र हो जहां लोगो को सब प्रकार की विद्या सीखने का मौक़ा हो और सब में तरक्क़ी की जाये। मै जानता हूं कि आपके वायस चान्सलर और इस यूनीवर्सिटी के दूसरे अफ़सरान इसको हर तरह से तरक्क़ी देने में बहुत लग हुये है और मै इतना ही कह सकता हूं कि गवर्नमेंट की ओर से भी जहां तक इसकी मदद की जा सकती है गवर्नमेंट मदद करने के लिये तैयार है। गवर्नमेंट इसकी ग्रान्ट की मिकदार भी बढाने के सवाल पर विचार कर रही है और उसने कुछ नये डिपार्टमेंट खोलने के लिये खास ग्रान्ट भी दी है। इसके इन्तज़ाम को और भी अच्छा करने के लिये पार्लियामेंट ने हाल में ही, जैसा मै ने ऊपर कहा है, एक क़ानून भी पास किया है। गवर्नमेंट इस यूनीवर्सिटी को देश की अच्छी बड़ी निधि समझती है और वह बराबर ही इसकी हर तरह इसे मदद करती रहेगी। पर गवर्नमेंट के सहारे ही कोई तालीमी संस्था न तो पूरी तरक्क़ी

कर सकती है और न देशवासियों का प्यार पा सकती है। वैसा दर्जा हासिल करने के लिय यूनीवर्सिटी को देश की इक्तमादी और तमद्दुनी जिन्दगी का कारगर अंग बन जाना चाहिये।

भारत की तमद्दुनी जिन्दगी का अंग बनने के लिये इस यूनीवर्सिटी को और दूसरी यूनीवर्सिटियों को भी सुलहेकुल के उसूल की रोशनी फैलाने वाला ऐसा मरकज़ बन जाना चाहिये जिसकी जीती जागती किरण देश के हर कोने में और जनता के हर तबके मे फैल कर हर तरह के फिरकेदाराना खयाल को और झगडों को जलाकर भस्म करदें। मेरा खयाल है कि इस उसूल के मुआफिक़ ज़हनियत बनाने के लिये ज़रूरी है कि हर यूनीवर्सिटी मे हमारे बाहरी फ़र्कों की बजाय हमारी जिन्दगी की बुनियादी एकताओ की ओर लोगो का ध्यान खास तौर से दिलाया जाये। यह तवारीखी सच्चाई है कि बाहरी तौर पर बहुत से फर्क होने के बावजूद तह मे भारत के हर सूबे के रहनेवाले और हर मज़हब के मानने वाले एक है। मेरा अपना खयाल है कि आपसी मतभेद बहुत कुछ इस वजह से भी है कि भाषा के फर्क के कारण हम एक ही बात को अलग अलग नामों से सुनते है। अगर हम इस बात का इन्तजाम करे कि अपनी तहजीब की बुनियादी बातो को अपने देश की हर जबान मे उसी के लफ्जों मे रखे तो मुमकिन है कि यह खाई कुछ हद तक पट जाये। मसलन जिसे सस्कृत मे परमात्मा कहते है उसी को फारसी जबान मे खुदा कहा जाता है और अरबी मे अल्लाह, पर अल्लाह शब्द सुनकर परमात्मा की पूजा करने वाले को यह नही लगता कि उसी के भगवान का दूसरा नाम लिया जा रहा है और न अल्लाह की इबादत करने वाले को परमात्मा लफ्ज उसी के मालिक का दूसरा नाम लगता है। कबीर, जायसी और रहीम जैसे शायरो ने जबान के फर्क से पैदा होने वाली इस दिमागी खाई को दूर करने की कोशिश की थी। मै समझता हू कि अब वक़्त आ गया है कि दूसरी भाषाओ के लफ्जो को सुनते ही भड़क जाने की आदत हमारे लोग छोड़ दे और उन लफ्ज़ो के पीछे जो खयाल होते है उनको समझने की कोशिश करे। अगर हम ऐसा करेगे तो हमे पता चलेगा कि लफ्जो के फेर से जिन बातो को हम आपस मे एक दूसरे की विरोधी समझे बैठे थे वे दर असल एक ही माने वाली है।

कम से कम इतनी बात तो हम सब को करनी ही है कि हम इस मुल्क के अदब (साहित्य) को, चाहे वह किसी भाषा मे क्यो न हो हर भाषा मे हर तबके के लोगों के लिये मुहय्या करे ताकि हमारे देश के सब लोगों को एक दूसरे के खयालो, आदर्शो और अरमानो का कुछ पता चले और वे एक दूसरे के दिल और दिमाग को ठीक तरह से समझ सके। अब तक अगर हमारे यहा कुछ तबको मे एक दूसरे के बारे मे शुबहा बना हुआ है तो उसकी वजह कुछ हद तक यह है कि वे एक दूसरे के अदब और खयालात की ओर कान में रुई दिये बैठे है। अगर उन्होने एक दूसरे की बात को हमदर्दी से सुना होता और उन पर गौर किया होता तो शुबहा बहुत दूर हो गया होता। मेरा खयाल है कि शुबहा दूर करने और मुख्तलिफ तबकों को एक दूसरे के नज़दीक लाने मे यह यूनीवर्सिटी अच्छा खासा काम कर सकती है। हमारी मौजूदा तहजीब बहुरगी है। उस मे अनेक क़ौमो और युगों की देन बुनी हुई है। उसका ठीक ठीक नक्शा उतारने के लिये अनेक तरह के उलेमा और कारीगरों की जरूरत है। इस नक्शे के बनाने में और कम से कम इस्लाम और इस्लाम के मानने वालों ने भारत की तहज़ीब में क्या पार्ट अदा किया और यहां की जनता की क्या खिदमत की है इस बारे में तो यह यूनीवर्सिटी ज़रूर नुमायां काम कर सकती है।

2 P. S to P.

इसके अलावा आजकल की ज़रूरतों को पूरा करने मे भी इसे हिस्सा बंटाना है। मुझे इस बात की खुशी है कि गान्धी मेमोरियल हास्पिटल के साथ यह युनिवर्सिटी यहां पर आंखों के इलाज का कालेज खोल रही है। हमारे देश में आंखों की शिकायत बहुत लोगों को रहती है और इसलिये इस तरह के कालेजों की हमारे यहां काफ़ी जरूरत है और यह कालेज उस ज़रूरत को पूरी करेगा।

मुझे इस बात की उम्मीद है कि इस यूनीवर्सिटी के विद्यार्थी, प्रोफेसर साहबान और मुन्तजिम अपने तवारीखी फर्ज को समझते है और उनको पूरा करने मे कोशां है और मुझे पूरा भरोसा है कि उनकी इस लगन के नतीजे के तौर पर इस यूनीवर्सिटी का भविष्य (मुस्तकबिल) इसके पिछले दिनो से भी कही ज्यादा शानदार होगा। मै आप लोगों का शुक्रिया अदा करता हूं कि आप लोगो ने मुझे इन होनहार नौजवानो से अपनी बात कहने का यह मौका दिया। आपने यूनीवर्सिटी की एजाज़ी डिग्री देकर मेरी इज्जत बढाई इस के लिये भी मै आपका शुक्रिया अदा-करता हू।

अलीगढ़ यूनीवर्सिटी स्टूडेन्ट्स यूनियन

तारीख़ ८-१२-'५१ को अलीगढ युनिवर्सिटी स्टूडेण्ट्स यूनियन मे राष्ट्रपति जी ने कहा--

अलीगढ यूनीवर्सिटी स्टूडेंट्स यूनियन के प्रेसीडेंट, तथा दूसरे तालबे इल्म,

आपका मै पहले इस बात का शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने इतनी मोहब्बत और प्रेम के साथ मेरा स्वागत किया। अलीगढ यूनीवर्सिटी में इस तरह के यूनियन की एक खास जगह है और खास करके इस यूनीवर्सिटी में जिसने इतना काम किया है और जिसने, जैसा आपने कहा, सिर्फ तालीम का ही काम न करके हमारी तहजीब और तमद्दुन में भी इतना हिस्सा लिया है ऐसी यूनियन का होना निहायत ज़रूरी है और लाज़िमी है। मुझे यह बताया गया है कि यह यूनियन किस तरह काम करता रहा है और आज भी कर रहा है।

आपने यूनीवर्सिटी की जरूरतो को ओर यूनियन की जरूरतो को बहुत तरह से मेरे सामने रखा है। मै सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि इस वक्त हम सब को यह समझ लेना है कि अब कोई यह नही कह सकता है कि गवर्नमेंट उसकी नही है और गवर्नमेंट उससे अलग कोई चीज है। आप जब मुझ से कहते है कि गवर्नमेंट से यह करा दीजिये वह करा दीजिये तो मै आपसे कहूंगा कि आपही करा लीजिये क्योंकि मै इस बात को मानता हू कि अब गवर्नमेंट आपकी है और आप जिस तरह से काम चलाना चाहते है, जो काम उससे लेना चाहते है उसको आप उससे ले सकते है, करा सकते है। अगर सच्ची जम्हूरियत हमारे मुल्क के अन्दर कायम है तो यह हरेक आदमी समझे कि उसको क्या करना है और कैसे चलना है। हमारे संविधान के जो उसूल है उनसे हरेक आदमी को यह हक है कि लोग मिलजुल कर अच्छे से अच्छे आदमी को अपना नुमाइन्दा बनायें जो मुल्क की फायदे की बात सोचे और जिस पर लोगों का भरोसा हो। लोग जैसा चाहेंगे वही जरूर करेगे। मगर नुमाइन्दे बेहतरीन आदमी चुने जाने चाहियें। बेहतरीन आदमी वही समझे जायेंगे जिनके दिल मे यह खयाल होगा कि वे किसी एक खास गिरोह के, किसी खास सूबे के,

किसी ख़ास तबके के नहीं हैं बल्कि मुल्क के सब सूबों के, सब हिस्सों के नुमाइन्दे हैं। जो सब के फायदे को अपना समझते हैं वे ही मुल्क के बेहतरीन आदमी हैं। अब जो कुछ हमारे मुल्क का काम बिगड़ेगा या बनेगा वह हमारे आदमियों से ही बिगड़ेगा या बनेगा। तो इसमें जितने यूनीवर्सिटी के लोग हैं उनको खास करके मदद देने की ज़रूरत है जिसमें अच्छे से अच्छे आदमी आयें और वे अच्छे से अच्छे काम करें।

मैं मानता हूं कि देश में जितनी तालीम चाहिये उतनी आज नहीं हो रही है। मगर जब सब लोगों की ख्वाहिश होगी तभी यह चीज हो सकेगी। हमारे यहां के युवकों को समझ लेना चाहिये कि किसी खास मकसद को कैसे पूरा किया जाता है। अब उनका वक़्त आ रहा है। जो पहले की पीढ़ी के हम लोग थे, हम लोगों का वक्त क़रीब करीब खतम हो चुका है और हम लोगों के चलने का वक़्त आया है। अब आपके हाथ में सारी बागडोर आने वाली है। आप अपनी जवाबदेही को समझें और उसको पूरी करें। अब तो लोगों को अपने मन के अरमानों को पूरा करने की पूरी सहूलियत है। जम्हूरियत की सब से बड़ी निशानी यही होती है कि जो नुमाइन्दे होते हैं वे लोगों के नुमाइन्दे होते हैं। अगर लोगों के नुमाइन्दे अच्छे होंगे तो जम्हूरियत अच्छी होगी। अगर मुल्क के लोग अच्छे हों तो नुमाइन्दे अच्छे होते हैं। अगर नुमाइन्दे बुरे होते हैं तो मुल्क के लोग अच्छे नहीं कहे जा सकते। मैं तो यही कहूंगा कि हम में से हरेक को यह सोचना चाहिये कि हरेक आदमी को हम ऐसा सुधारें और बनायें कि वह अच्छे से अच्छा आदमी हो सके और सच्ची ख़िदमत करने के लिये तैयार हो और जो अपने को हमेशा कुर्बान करने के लिये तैयार हो और दूसरों की खिदमत के लिये तैयार रहे। अगर इस तरह के लोग मुल्क में हो जायेंगे तो किसी किस्म की दिक्कत नहीं रह जायेगी, कोई मुसीबत नहीं रह जायेगी। लेकिन हमारे मुल्क की बदकिस्मती रही है और आज से नहीं, बहुत ज़माने से रही है कि हम एक दूसरे पर अविश्वास करते रहे, दूसरों की चीज़ों को हड़पने की कोशिश करते रहे और अपने छोटे स्वार्थ के लिये मुल्क के या और लोगों के बड़े बड़े कामों को नाचीज समझते रहे। यही वजह है कि हमें दूसरों की गुलामी करनी पड़ी। इंगलैण्ड की हिस्टरी आप जानते हैं। आप यह भी जानते हैं कि किस तरह से अंग्रेज़ यहां आये, यहां उन्होंने अपनी सल्तनत कायम की और कितने दिनों तक शान से उन्होंने यहां राज्य किया। इन दोनों तवारीखों का मुकाबला कर के हम फर्क देख सकते हैं। आपको ऐसा कोई अंग्रेज नहीं मिलेगा जो गवर्नर जनरल की हैसियत से आया हो और इंगलैंड के हित को छोड़ कर अपने लिये राज्य कायम करने की कोशिश की हो। लेकिन हमारा इतिहास यही है कि कहीं किसी को किसी सूबे में भेजा गया और उसने अपना स्वतन्त्र राज्य वहां कायम कर लिया। यह कभी इस मुल्क की तारीख में हम देखते हैं पर अब जरूरत इस चीज़ की है कि मुल्क के हित को सब से ऊपर रखें।

आज दुनिया छोटी हो गयी है। इसलिये आज कहीं आने जाने में दिक्कत नहीं। आप आज बात की बात में कहीं जा सकते हैं, कहीं की खबर ले सकते हैं। ऐसी हालत में यदि छोटे छोटे राज्य कहीं कायम भी किये जायें तो ज़िंदा नहीं रह सकते। अब तो सारे मुल्क को हम एक बनाये रख सकें तभी उसके लिये हम दुनिया में कोई जगह बना सकते हैं। अगर छोटे छोटे टुकड़े को लेकर हम कोशिश करेंगे तो हम नीचे चले जायेंगे। इस लिये हम में से हरेक को यह इरादा कर

लेना चाहिये और पक्का इरादा करना चाहिये कि वह सब लोगों के साथ मिल कर इस लगन से मुल्क की तरक्क़ी में लग जायेगा कि दुनिया के सामने वह कह सके कि हिन्दुस्तान एक बड़ा मुल्क है।

इस यूनीवर्सिटी ने जो नुमायां काम किया है मुझे उम्मीद है कि यह उससे बढ़कर आगे नुमायां काम करेगी। आप लोग जो इस यूनियन में काम करते है इस मक़सद को अपने सामने रख कर काम करे। अपने जी में कोई शक व शुबहा न रखें। जब तक आप खुद ही अपने हक़ को छोड़ देने के लिये तैयार न हों तब तक आपका हक कोई न छीन सकेगा। अगर आप अपने हक़ पर कायम रहेगे और अपने हक को नही छोड़ेंगे और दूसरों के हक़ को आप नही लेना चाहेंगे तो आपका भी हक कोई न छीन सकेगा। यह जरूरी है कि हम से हरेक आदमी अपना हक समझे और अपना फर्ज भी समझे क्यो कि बिना फर्ज के हक नही होता। मै तो चाहता हूं कि आप इस बात को समझे और अपना काम करते जायें। आप ने जो दावा किया उसके बारे मे मुझे यही कहना है कि गवर्नर साहब तो यहां मौजूद नही है। अगर वह रहते तो उनके सामने दावा पेश करना अच्छा रहता। गवर्नमेट आफ इण्डिया की ओर से मैं इतना ही कह सकता हूं कि उनके सामने हमेशा यह खयाल रहता है और जहां तक हो सकता है वह उसे पूरा करने की कोशिश करती है। उसकी मजबूरी हो सकती है, कोताही नही हो सकती। मजबूरी को भी आपको देखना चाहिये और सोचना चाहिये। इन चीजो के बावजूद जो कुछ हो सकता है किया जाता है।

अभी आपने अपने यूनियन का मेम्बर होने के लिये मुझ से कहा। इसे मैं खुशी के साथ मंजूर करता हूं।

अलीगढ़ में नागरिक अभिनन्दन

तारीख ८-१२-५१ को अलीगढ म्यूनिसिपैलिटी तथा दूसरी संस्थाओ के अभिनन्दन पत्र के उत्तर में राष्ट्रपति ने कहा—

महामहिम राज्यपाल महोदय, बहनो और भाइयो,

मेहरबानी करके आप सब शान्त हो जायें जिससे जो दो चार लफ्ज मुझे कहने है वे आप सुन सकें। बडे प्रेम और जोश के साथ मेरा यहां स्वागत किया गया है। जबसे यूनीवर्सिटी के काम के सिलसिले मे मैं आपके इस शहर मे पहुचा हू तब से हर तरह से मोहब्बत और प्रेम मुझे मिलता रहा है। आप लोग जो इतनी बडी तादाद में इस सभा मे आये हैं और जिस तरह से आपने जोश दिखलाया है वह एक तरह से तो बहुत अच्छी चीज़ है। मगर साथ ही जोश को काबू में रखना जरूरी है। अभी आपके यहा रेलवे लाइन बगल में ही है। आप जानते है कि रेल का इंजिन एक छोटी सी चीज़ होता है पर चूंकि वह अपने अन्दर भाप को काबू में रख सकता है इसीलिये इतनी बड़ी रेलगाड़ी को खींच कर ले जाता है। अगर वह अपनी भाप निकल जाने दे तो वह कोई काम नही कर सकता। आपको भी अपने जोश को काबू मे रख कर के काम लेना चाहिये। इस जोश में ऐसी कई बातें है जिनसे हमें उम्मीद बंधती है। पर अक्सर हमारा जोश ऐसा होता है जो बर्बाद हो जाता है और उससे हम पूरा काम नही ले सकते। मै यह जानता हूं कि आजकल आपका

जोश पहले से कम नही है । मै मानता हूं कि आपके दिलों के अन्दर जोश है मगर उसे काबू मे करना चाहिये । सिर्फ़ दो चार मिनट पहले आपने उसे काबू में नही किया था । उस वक्त धक्कम धक्का के अलावा और कुछ नही सुना जाता था और इस वक़्त आप शान्ति से बैठे है और जो कुछ मुझे कहना है उसे सुन सकते है और चाहे तो उस पर अमल भी कर सकते है ।

आपका यह ज़िला बहुत ही उपजाऊ ज़िला है । यहां पर आबपाशी का इन्तज़ाम अच्छा है और खेती भी अच्छी तरह से चलती है । यह जगह आज से नही, बहुत पुराने ज़माने से, ऐसे वक़्त से जिसका पूरा पूरा इतिहास भी नही मालूम है अच्छी समझी जाती रही है । आज भी अलीगढ का मक्खन दूर दूर तक जाता है । एक समय था जब अलीगढ की गाय हिन्दुस्तान में मशहूर हुआ करती थी । तो यह बात कोई छोटी बात नहीं है । जैसी आपको ज़मीन मिली है और जैसा अपने बुजुर्गो से हुनर आपको मिला है वह कुछ मामूली नहीं है । उसको आप और भी उन्नत करे, और भी बढायें । सिर्फ खेती के मामले में ही नही, कारीगरी के मामले मे भी आपकी जगह मशहूर थी । आजकल जिस तरह से और सब चीजों मे होता है उसी तरह से खाने की चीजो में भी लोग फेंट दिया करते है । आटे में भी चावल में भी लोग फेंटते है, घी का और तेल का तो कुछ कहना ही नहीं । अगर खेती में भी कुछ फेंट दिया जाये तो ताज्जुब की कोई बात नही । यहां पास में ही जो प्रदर्शनी है उस में दिखलाया गया है कि किस तरह से कोआपरेटिव सोसायटी के जरिये से कानून को ऐसा सुधारा जा रहा है कि कोई खराब चीज ग्राहक के पास नही जा सके । अगर यह इतजाम हो गया तो चीजो का ऐसा सुधार हो सकता है कि किसी को कोई शक ही नही रह जाये कि चीजों में कोई चीज फेंट कर बेची जा रही है जैसा आज कल आम तौर से किया जाता है । यह सुधार सब के लिये जरूरी है । किसी भी देश की तरक्की के लिये वहा के लोगो का चरित्र दुरुस्त होना जरूरी है । यहा पर मै सिर्फ अलीगढ़ की ही बात नही कह रहा हू; यह सारे हिन्दुस्तान की बात है । लोग इस चीज को महसूस कर रहे है और कहते है और उन की तरफ से शिकायत सुनने मे आती है । मै लोगो से कहता हू कि यह तो बेजा बात है । लेकिन यह भी हमे सोचना है कि अगर शिकायत करते है तो हम किस की करते है । अगर हम में से कोई भाई ग़लती करते है और और उस की हम शिकायत करते है तो हम को यह भी ग़ौर करना चाहिये कि क्या उस मे ही हमारा भी कुछ हिस्सा नहीं है । चोर बाज़ारी की शिकायत लोग करते है । मै आप से पूछता हू कि चोर बाजारी कौन करते हैं । क्या एक आदमी के किये वह हो सकती है ? क्या बेचने वाला ही कसूरमन्द है और दूसरे सब अच्छे ही अच्छे है ? मेरा अपना ख़याल है कि जो लोग गल्ला पैदा करते है और ज़रूरत से ज़्यादा अपने पास रख लेते है और उस को बाज़ार में बेच कर खाने वालों को नही पहुचाते है वे भी चोरबाज़ारी के गुनाहगार है । वह व्यापारी और बनिया जो अनाज खरीद कर इस ख़याल में अनाज अपने पास रखता है कि बुरे दिन आने पर उसे बेच कर वह ज़्यादा नफ़ा कर सके वह भी चोरबाज़ारी करता है । जो लोग खरीद कर खाते है और ६ छटाक जो राशन में अन्न मिलता है उस से ही सतुष्ट न हो कर और बाज़ार से खरीदते है वे भी मेरी समझ मे चोरबाज़ारी के कसूरवार है । इस लिये मेरा आप से यह कहना है कि अगर आप इन सब चीजों को दुरुस्त करना चाहते है तो आप को सोचना होगा कि कितनी बुराइया हम देखते है उन में हमारा भी कुछ न कुछ हिस्सा है या नही । दूसरों को नसीहत देने के बजाय, सिखाने

के बजाय अगर हम अपने को दुरुस्त कर लें तो हम इस काम में बहुत हद तक कामयाबी हासिल कर लेगें और अगर इसी तरह से सभी लोग अपने को दुरुस्त कर लें तो कोई बुरा ही नहीं रहेगा। पर आज कल जो कुछ होता है उस का दोष हम दूसरों पर मढ़ना चाहते हैं क्यों कि ऐसा करना बड़ी आसान बात है। बुराई में हमारा हिस्सा क्या है इस पर हम ध्यान नहीं देते। लेकिन होना यह चाहिये कि हम दूसरों की तरफ न जा कर अपनी तरफ़ ध्यान दें क्यों कि अपनी तरफ ध्यान देना ज्यादा आसान है। हम अपनी ग़लती को जितना समझ सकते हैं उतना दूसरे नही समझ सकते या दूसरे की ग़लती को हम नही समझ सकते। उसी तरह से आप अपनी अपनी ग़लती को जानना चाहे तो जितना आप जान सकते हैं उतना दूसरे नही। दूसरों की ग़लती को समझने की कोशिश करने में हो सकता है कि हम गलती करे। लेकिन अपने बारे में ग़लती नही हो सकती है। इस लिये सब से आसान काम है अपने को दुरुस्त करना और सब से मुश्किल काम है दूसरों की ग़लती को समझना। लेकिन हम आसान काम पर ध्यान नही देते और मुश्किल काम में लग जाते हैं। सचाई को समझना जरूरी है।

अभी तीन ही वर्ष पहले हमारे हाथ मे अपने मुल्क की किस्मत का फैसला करने का अधिकार आया और अभी दो वर्ष पूरे भी नहीं हुए हैं जब हम स्वतन्त्र हो कर अपना एक प्रजातन्त्र क़ायम कर पाये है। इन चन्द वर्षो मे देश में तरह तरह की मुसीबतें आयी। उन को हम ने बर्दाश्त किया। उन को सम्भाला पर अब तक भी उन मे पूरा छुटकारा हम को नहीं मिला है। यहा जो लोग बैठे हुए है नौजवान लोग हैं। गुलामी के समय मे जो लोगों की हालत थी उस को उन्हों ने पूरी तरह से अपनी आखों से नही देखा है। शायद कुछ लोगों ने देखा भी हो पर ऐसे भी होंगे जिन्हों ने बिलकुल नहीं देखा हो। आज के भारत की जो हालत है उसे पहले की हालत से मुकाबला कर के देखे और सोचे तो आप को फ़र्क मालूम पडेगा। आज हिन्दुस्तान के अन्दर हिन्दुस्तानियो का राज है। यहा अब किसी एक आदमी का राज नही बल्कि इस हिन्दुस्तान के अन्दर जितने लोग बसते है चाहे उन का कोई भी धर्म हो, कोई भी मज़हब हो, वे किसी भी जाति के हों, किसी भी सूबे के रहने वाले हो, सब का यह राज्य है। मैं ने एक जगह पर और भी कहा था कि हमारे देश के अन्दर अब राजा प्रजा का फर्क नहो रह गया है। अब या तो सब के सब राजा हैं या सब के सब प्रजा हैं। हमारे अपने देश की किस्मत का फैसला हमारे अपने हाथों मे आ गया है और अगर हमारे लोग ठीक तरह से काम करे तो इस देश का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है। अगर वे इस चीज़ को ठीक तरह से न समझेगे और ग़लती करेंगे तो हो सकता है कि हम गिरे, अगर हम कमजोरी दिखलायेगे तो हमारा भविष्य बुरा हो सकता है। मुझे आशा है कि हमारा भविष्य उज्ज्वल होगा। जो मुसीबतें है उन को हम दूर कर सकेंगे, इस देश को फिर से ऊचा उठा सकेगें और दुनिया से कबूल करायेगे कि भारत भी एक बड़ा, ऊचा, सचरित्र और सुन्दर देश है। यह हम को कर के दिखलाना है। इस के लिये हर तरह की कोशिश चाहिये। इस में सब की मदद की ज़रूरत है। इस में ऐसे लोगों की ज़रूरत है जो सब चीजो को अच्छी तरह से देख कर बुद्धि लगा, समझ लगा कर अक्लमन्दी से काम चलाते है, ऐसे लोगो की ज़रूरत है, जो बहादुरी से देश की हिफ़ाजत कर सकते है, ऐसे लोगों की जरूरत है जो मेहनत से धन पैदा कर सकते है और सब ही के लिये पैदा कर सकते

है, ऐसे लोगो की जरूरत है जो मुल्क की खिदमत में अपना वक्त गुजार सकते है। हर तरह के आदमी की मुल्क को जरूरत है। जिस वक्त हम ब्रिटिश गवर्नमेन्ट से स्वराज्य के लिये लड रहे थे, मै मानता हूं कि उस वक्त हम ने त्याग किया, मेहनत की, बहुत तरह की मुसीबतें झेली। मगर मै यह भी मानता हूं कि स्वराज्य हासिल करने के काम का तरीका हमारा कुछ और था। जो हमे काम करना है वह दूसरी तरह का काम है। मगर अभी भी देश को सभी लोगों की कुर्बानी की जरूरत है, वैसी कुर्बानी की जैसी कुर्बानी और त्याग लोगों ने बृटिश गवर्नमेन्ट से लड़ाई के समय दिखलाई थी। उस समय जो देश प्रेम की आग जला करती थी वह आज देखने में नही आती है। वह इस लिये कि हम आजाद हो गये है। ऐसा होना चाहिये कि इस आजादी को हम अच्छे से अच्छे काम में लगावें, और इस के जरिये से ज्यादा से ज्यादा हम अपने को और देश को उठावे। इस का नतीजा यह नही होना चाहिये कि लोग यह समझने लग जायें कि काम का वक्त खतम हुआ और आराम का वक्त आ गया है। जब तक भारत के अन्दर एक भी अनपढ आदमी है, जब तक एक भी आदमी को दोनों शाम खाने पीने को नहीं मिलता, जब तक एक भी आदमी के शरीर पर पूरा वस्त्र नही है, जब तक एक भी आदमी दवा के बिना मरता है तब तक हमारा काम पूरा नही कहा जा सकता और उस काम को पूरा करना हम में से हरेक का काम है। इस लिये हम मे से हरेक को इस के लिये तैयार रहना चाहिये। अभी जो काम करना है वह पहले के काम से ज्यादा जरूरी और मुश्किल है। क्योंकि पहले कोई काम बिगडता था तो ब्रिटिश गवर्नमेन्ट पर हम इल्जाम रखते थे। अब हम वह नही कर सकते। अब हम मे से कोई यह नही कह सकता कि कोई काम बिगडता है तो उस की जिम्मेदारी दूसरो पर है। अब हम में से हरेक जिम्मेदार है और हरेक का अपना फर्ज अदा करना है।

आप ने यहा की जरूरतो को बतलाया और आप ने जो कुछ किया है उस को भी बतलाया। मुझे यह जान कर खुशी हुई कि आप ने यहा की सडकों की तरक्की की है तथा और तरह से भी काम किये है। उस के लिये मै आप को बधाई देना चाहता हू और आप से यह कहना चाहता कि आप यह नही समझे कि अब हम आजाद है और गवर्नमेन्ट अपनी है इस लिये सब कुछ गवर्नमेन्ट पर छोड देना चाहिये। गवर्नमेन्ट पर सब कुछ छोड देने से काम नही चलेगा। आप को तो अपने पैरो पर खडा होना है और काम करना है। हा गवर्नमेन्ट से मदद लेना चाहे तो ले सकते है। आप अपना काम ठीक तरह से करेंगे तो गवर्नमेन्ट को आप की मदद करनी पडेगी। मुझे आशा है कि आप इस शहर की तरक्की में और मुल्क की तरक्की मे हाथ बटायेगे। एक बार आप को और धन्यवाद।

भारतीय कृषिक सांख्यिकी संस्था का पंचम वार्षिक अधिवेशन

*भारतीय कृषिक सांख्यिकी संस्था के पचम वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर १२ दिसम्बर १९५१ को अपने उद्घाटन भाषण मे राष्ट्रपति जी ने कहा—

मुझे इस बात का अत्यन्त हर्ष है कि अपने उपयोगी अस्तित्व के पाच वर्ष इस संस्था ने पूरे कर लिये है। जैसा कि आप जानते है इस के जन्म से ही मेरा इस संस्था के साथ सम्बन्ध रहा

*अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

है। अतः स्वभावतः ही मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि कृषिक सांख्यिकी के अध्ययन की उन्नति करने मे और उस की गवेषणा के कार्य को बढ़ाने में इस ने बडी प्रगति की है। विशेषत. पिछले दो वर्षों में नमूने के तौर पर जांच पड़ताल करने की प्रशिक्षा की व्यवस्था करके आप की सस्था ने कृषिक आकड़ों के बेहतर बनाने के इस प्रभावी साधन के प्रयोग के सम्बन्ध में लोगो में दिलचस्पी पैदा कर दी है। अब तक आप की संस्था ने अपनी पत्रिका की तीन ज़िल्द प्रकाशित की है और इस ने विदेशों में अच्छा नाम पाया है।

सही कृषिक आंकड़ों का एकत्रित करना मै बहुत महत्वपूर्ण समझता हू, क्यों कि न केवल विकास की योजना बनाने के लिये वरन् पच-वर्षीय योजना जिसे कि हम ने अभी हाल में बनाया है और जिसे कि अगले वर्ष में हम काम में लाना चाहते है उस की प्रगति का अनुमान लगाने के लिये इन आकडो की बुनियादी आवश्यकता है। फ़सलो के क्षेत्र और पैदावार सम्बन्धी आंकडों को बेहतर बना कर अन्न की उत्पत्ति के बारे मे विश्वासनीय अनुमान लगाने की आवश्यकता की ओर पिछले वर्ष मै ने अपने भाषण में आप का ध्यान खीचा था। अत. यह जान कर मुझे सतोष हुआ कि फ़सल का अनुमान लगाने के लिये यत्र तत्र नमूने के तौर पर अन्दाज करने की जो रीति अब तक पिछले कुछ वर्षो से प्रयोग के तौर पर काम में लाई जा रही थी वह अब सघ के लगभग सभी राज्यो में वार्षिक प्रक्रिया के रूप मे अपना ली गई है और गेहू और चावल की पैदावार का अनुमान लगभग सारे सघ के लिये प्राप्य है। मुझे यह भी पता चला है कि फ़सल मे लगी हुई भूमि के आकडो को और अधिक सही बनाने और उन को और अधिक व्यापक क्षेत्र मे इकट्ठा करने के लिये भी कार्यवाही की जा रही है। मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि जिन प्रदेशो मे प्रत्येक खेत की पूरी तरह नाप जोख के बाद क्षेत्र सम्बन्धी आकडे इकट्ठा करने के लिये पटवारी है वहा पटवारी के काम की पूरी तरह से और वैज्ञानिक रीति से देख भाल कर के यह सुधार किया गया है। जहा कि इस किस्म का इन्तजाम नही है और जहा कि प्रति खेत का माप नही होता वहा उन परिणामो के आधार पर जो कि अब तक की गई जाच से निकले है इस प्रकार का कोई समुचित नमने का तरीका लागू करना और कम से कम अस्थायी रूप मे तब तक के लिये लागू करना, जब तक कि जिन प्रदेशो मे पहले से ही भू माप हो चुकी है वहा पूर्ण आगणना के लिये इस प्रकार की व्यवस्था नही हो जाती और जहा भूमाप अब तक नही हुई है वहा प्रति खेत की भमाप नही हो जाती, सम्भाव्य प्रतीत होता है। मुझे बताया गया है कि उडीसा के कोरापुट जिले के चावल की खेती में लगी हुई भूमि का अनुमान इतिहास मे सभवत. पहली बार पिछले वर्ष नमूने के तरीके से सफलता पूर्वक कर लिया गया है, हालाकि उस भाग का भूमाप बिल्कुल भी तो नही हुआ है। मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई है कि ढोरों की संख्या तथा मछलियो की पैदावार का अन्दाज़ा लगाने के लिये नमूने के तरीके से क्षेत्रकीय अनुसधान किये गये है और उन का परिणाम बहुत आशाजनक निकला है और इस काम को बढ़ाने का विचार किया जा रहा है। वास्तव में यह बहुत संतोष की बात है कि कृषिक आंकड़ों को और अच्छा बनाने का जो काम अब तक किया गया है उस को और अच्छी तरह से संयोजित करने की बहुत व्यापक पंच-वर्षीय योजना बना ली गई है और उस योजना को योजना आयोग ने भी अनुमोदित कर दिया है। इस कार्यक्रम के पूरा होने पर हमारी कृषिक पैदावार सम्बन्धी

आंकडों की बुनियाद सही हो जायेगी और मुझे आशा है सरकार इस कार्य को आवश्यक पूर्ववर्तिता प्रदान कर देगी ।

आंकडों को एकत्रित करने के कुछ एक दूसरे पहलू की ओर मैं आप का ध्यान आकर्षित करना चाहता हू । प्रशिक्षित माहिरो के द्वारा किन्ही प्रकार के आंकडों के एकत्रित करने के लिये नये नये नमूने के तरीको के निकालने को मै पसन्द करता हूं । परन्तु तो भी मेरी यह भावना है कि पटवारी के कागज़ो मे हमारे पास पहले से ही जानकारी का बडा भंडार भरा पडा है और अपने देश के बुनियादी कृषक गठन के समझने के लिये हमने उस भण्डार का वैसा प्रयोग नही किया है जैसा हमें करना चाहिये। नमूने के नये नये तरीकों की खोज मे और प्रशिक्षित माहिरो की आवश्यकता पर जोर देने मे हम इस बात को भूल गये मालूम होते है कि पट्टेदारी के विभिन्न वर्तमान प्रकारो के बारे मे, किसान की जोत के क्षेत्र तथा वह भमि किस काम के लिये प्रयोग की जा रही है उस के बारे में, जोत टुकडियों मे कितनी बंट गई है उस के बारे में तथा कृषि सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के विषयो के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिये पटवारी के कागजो का कितना महत्व है ।

कृषि की बुनियादी आर्थिक इकाई किसान की जोत होती है । और जब तक कि हम अपने सारे कृषिक आकडो का सम्बन्ध किसान की जोत से कायम नही कर लेते तब तक हम कृषि सुधार के लिये आवश्यक विकास योजना को ठीक ठीक नही बना सकते । एक जमाना था जब अर्थशास्त्रियो का यह विचार था कि भूमिधारी किसानो द्वारा छोटी जोत मे सब से अच्छी पैदावार होती है । किन्तु आज मशीनी यन्त्र और तरीको के काम मे लाने और उन की प्राप्यता के कारण लोग बडे बडे क्षेत्र वाली जोत को अच्छा समझने लगे है। किन्तु मैं यकीनी तौर पर यह नही कह सकता कि क्या इस प्रकार के आकडे प्राप्य है और क्या कम से कम इस देश मे प्राप्य हैं जिन से यह वैज्ञानिक परिणाम निकलता हो कि बडी जोतो मे अवश्य ही फी एकड ज्यादा पैदावार होती है । हमें यह पता नही है कि कितनी ज़मीन खेतिहरो के पास है और कितनी ऐसे लोगो के पास है जो किसान नही है । हमे यह पता नही है कि स्वामित्व के इस विभेद से दोनो प्रकारो की भूमि की पैदावार मे क्या अन्तर पड गया है । विभिन्न क्षेत्रो की जोतो की पैदावार की अपेक्षाकृत शक्ति के बारे मे भी हम कुछ नही जानते । हमें यह भी पता नही है कि ज़मीन के छोटे छोटे टुकड़े होने से उस की पैदावार पर क्या असर पडता है। मुझे यह ज्ञात है कि इन समस्याओं पर प्रकाश डालने के लिये कुछ ग्रामो का भूमाप हुआ है किन्तु अभी सामग्री इतनी कम है कि उस के आधार पर समस्त देश के लिये अथवा संध के किसी बड़े भाग के लिये किसी प्रकार का वैध निर्णय नही किया जा सकता। इस विषय की तो पर्याप्त जांच होनी चाहिये जिस से कि हम इस बारे में इधर या उधर कोई दृढ़ निर्णय कर सकें ।

किसान से पूछ ताछ कर इन प्रश्नों के बारे में जानकारी हासिल करना आसान काम नही है। वह तो पिछड़ा हुआ है और अशिक्षित है और अनेक बार तो वह उस उद्देश्य को समझ ही नहीं पाता जिस के लिये इस जानकारी को इकट्ठा करने की कोशिश की जाती है । उसे इस बात का आश्वासन दिलाना पड़ता है कि यह जानकारी उसी की भलाई के

लिये इकट्ठी की जानी हैं और यह तभी इकट्ठी की जा सकती है जब यह उन लोगों द्वारा जाच पड़ताल करके की जाये जो किसानो में से ही इस के लिये शिक्षा दे कर तैयार किये गये हैं । यही कारण है कि पटवारी के कागजात में से जानकारी निकालने को मैं इतना महत्व देता हूं । पिछले दिनों में पटवारी जैसे सरकारी नौकर के काम के प्रति अविश्वास के कुछ भी कारण क्यो न रहे हों वे कारण आजकल वर्तमान नही हे । अब तो पटवारी जनता का नौकर है । वह तो गांव का ही होता है और वहां उस की अच्छी स्थिति और सम्मान होता है और उसे वहां के लोगों की स्थिति और कठिनाइयों की पूरी जानकारी होती है । यह ठीक है कि वह साख्यक नही है और न वह नमूने की रीति के सिद्धान्तो का तथा आंकडे इकट्ठे करने के वर्तमान तरीकों से ही परिचित है । बिला प्रशिक्षा और दिगदर्शन के प्रयोग के तौर पर फसल काट कर फी एकड की पैदावार का अन्दाजा लगाने के वैज्ञानिक तरीके भी वह काम मे नही ला सकता है । किन्तु ऐसी बातो के बारे मे जैसी कि पट्टेदारी जोत का क्षेत्र, जोत का टुकड़ो मे बंटना और भूमि का उपयोग है उस की जानकारी पर भरोसा किया जा सकता है । भूमाप किये हुए प्रदेशो मे पटवारी व्यवस्था एक अभूतपूर्व व्यवस्था है जो अकबर के जमाने से या उस से पहले से भी हमारे यहा चली आ रही है । समय ने इस की उपयोगिता को सिद्ध किया है । मुझे इस बात मे विशेष प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतीय कृषि गवेषणा परिषद् ने जो अनेक जाचे कराई उन से पता चला कि फसल मे लगी हुई भूमि के क्षेत्र सम्बन्धी तथा भूमि के उपयोग सम्बन्धी अन्य बातों के बारे मे जो जानकारी उस के कागजात मे है वह लगभग सही ही है । यह सम्भव है कि अपने कागजो मे इन्दराज के लिये और खास तौर से उन दिनों जब कि उस पर दूसरे कामो का बड़ा भार पड़ जाता है वह अपने क्षेत्राधिकार मे के खेतो की जाच खुद न करे । किन्तु मैं यह बात सोचना भी नही चाहता हू कि वह और लोगो की अपेक्षा कम ईमानदार है और ऐसे लोगो के मुकाबले मे जिन्हे आप उस की जगह पर काम करने के लिये रख सकते हो, वह अपने काम के प्रति अधिक उपेक्षा का भाव रखता है । मानव स्वभाव तो सर्वत्र एक सा ही है और इस लिये उस के काम के महत्व के प्रति सन्देह पैदा करने के सब संकेतो को हमे बिना पूरी तरह सोचे विचारे स्वीकार न करना चाहिये । मेरे इस कथन का यह आशय नही है कि उस को अधिक प्रशिक्षा, उस के काम की अधिक देखभाल और उस की नौकरी की बेहतर शर्तो की जरूरत नही है । मुश्किल काम और दिलजोई से काम करने के लिये तो ये शर्ते सब के लिये एक सी हैं । पटवारी का यह बड़ा गुण है कि वह हमारी सांख्यिकी व्यवस्था के लिये स्थानीय और पूर्णतया विकसित एजेन्सी का सुदृढ आधार हमे देता है । ऐसी कार्य व्यवस्था जो इस प्रकार की एजेन्सी द्वारा काम मे नही लाई जाती हो और जिस के लिये बाहरी मदद की आवश्यकता पड़ती हो वह हमारे देश के कृषिक आकडो के सम्बन्ध मे कुछ अधिक काम की न होगी । अत. मेरा यह दृढ विचार है कि हमारे कृषिक आंकडों के लिये प्रति खेत भू माप किये हुए प्रदेशो में पटवारी की व्यवस्था अभिन्न अंग के समान है । और मै इस सम्मेलन के सामने यह प्रस्ताव रखता हूं कि वह पटवारी के पास की जानकारी को इस प्रकार सुव्यवस्थित करने की रीति और साधन निकाले जिस से कि देश के कृषिक आर्थिक गठन की सभी प्रमुख बातें प्रभावी रूप से स्पष्ट हो जाये ।

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन द्वारा प्रारम्भ की गई सन् १९५० की अखिल विश्व कृषिक आगणना के कार्यक्रम के प्रति सकेत करने के लिये ही मैं ने यह बातें आप से कहा है । इस कार्यक्रम से यह अभिप्रेत था कि प्रत्येक सरकार कृषि सम्बन्धी और विशेषतया कृषिकजोत और उन की प्रमुख बातो अर्थात् उन के क्षेत्र, उन के पट्टीदारी के रूप, भूमि के प्रयोग, मज़दूरों के और यान्त्रिक शक्ति से काम लेने के तरीके तथा खेती के द्वारा जीविका उपार्जन करने वाले लोगो की संख्या और लक्षणो के सम्वन्ध मे सही और तुलनात्मक आकड़े इकट्ठे करे। मुझे स्मरण है कि जब मै खाद्य और कृषि मत्री था तो खाद्य और कृषि संस्था से हमे यह कार्यक्रम मिला था। मुझे यह भी स्मरण है कि इस मे यह योजना थी कि देश की हरेक जोत का निरीक्षण कर के उस के बारे मे आकडे इकट्ठे किये जाये। मुझे तब यह लगा था कि यह सब जानकारी इकट्ठी करने मे हमे कम से कम देश के उन भागो मे जहा कि पटवारी व्यवस्था है कुछ मुश्किल न होनी चाहिये। मुझे यही लगा कि यह सब जानकारी तो पटवारी के कागजात मे दर्ज बातो के पुनर्संयोजन मे इकट्ठी की जा सकती है। स्थायी बदोबस्त वाले इलाको मे इस प्रकार के कोई कागज़ात नही है और वहा ऐसी जानकारी को इकट्ठा करने मे कुछ मुश्किल होगी और मुझे ऐसा लगा कि अगर जोत प्रति जोत की जांच कर के ये सब आकडे इकट्ठा करने का यदि समुचित प्रबन्ध न हुआ तो सभवत हमे वहा नमूने के तौर पर अन्दाज़ा लगाने की रीति की सहायता लेनी पडेगी। बगाल और बिहार के भी उन इलाको मे जहा मुस्तकिल बन्दोबस्त है कुछ साल हुए भू माप और बन्दोबस्त की कार्यवाही हुई थी और न केवल हर गांव के हर खेत का ही नक्शा बनाया गया था, और नम्बर डाला गया था वरन् गाव के लोगो के, और गाव के हर खेत के हको का भी लेखा तैयार किया गया था। गाव की खतौनी को देखने मे न केवल गाव मे खेतो की स[illegible] का ही पता चल सकता है वरन् हरेक किसान की जोत मे कितने खेत [illegible], इस का भी पता चल सकता है। इन्ही कागजात मे जोत के क्षेत्र इत्यादि की भी लगभग पूरी जानकारी मालूम की जा सकती है। इन मे अगर कोई कसर है तो वह केवल इतनी ही होगी कि कुछ मामलो मे यह जानकारी अब इस वजह से शायद ठीक न हो क्यो कि हो सकता है कि खेत या जोत का इस बीच मे और बंटवारा हो गया हो या उन मे हक हकूक मुन्तकिल हो गये हो। भूमाप और बन्दोबस्त की रिपोर्टो मे भी जानकारी भरी पड़ी है जो चाहे कुछ पुरानी हो गई हो पर फिर भी साधारण योजना बनाने के लिये अच्छा आधार सिद्ध हो सकती है। मुझे स्मरण है कि कृषि मन्त्रालय की एक विशिष्ट समन्वय समिति ने इस पूरे प्रश्न पर विचार किया था और उस ने इस सम्बन्ध में ब्योरेवार योजना और व्यय का तखमीना सरकार के विचारार्थ पेश किया था। किन्तु मुझे यह जान कर खेद हुआ कि यद्यपि भारत ने ऐसा करने की अपनी रजामन्दी प्रकट की थी किन्तु वह अभी इस आगणना को हाथ मे लेने मे सफल नही हुआ है। यह खेद इस कारण और भी अधिक है क्यो कि मुझे यह ज्ञात हुआ है कि खाद्य और कृषि संस्था के जो अन्य देश सदस्य है उनमे से अनेकों ने खाद्य और कृषि सस्था द्वारा निर्धारित कार्य-क्रम के अन्दर अन्दर इस आगणना को पूरा कर लिया है। खाद्य और कृषि सस्था की आवश्यकताओ की पूर्ति करने के अतिरिक्त मै यह समझता हूं कि हमारी अपनी खातिर ही पटवारी के कागजात का यथासम्भव अधिकतम उपयोग कर के जोत सम्बन्धी यह आगणना हमें कर लेना चाहिये। यदि पूरी आगणना के लिये हमारे पास

धन और समय नहीं है तो भी मैं समझता हूं कि यह सब आंकड़े नमूने की रीति से भी सम्भवतः संयोजित किये जा सकते है। राष्ट्रीय योजना आयोग ने जो पंचवर्षीय योजना बनाई है उस के लिये यह जानकारी अत्यन्त आवश्यक है। और मैं आप से यह आग्रह कर के कहना चाहता हूं कि इस प्रश्न पर ध्यान देने की बड़ी आवश्यकता है और इस बात की भी आवश्यकता है कि विलम्ब के बिना यह आगणना पूरी कर ली जाये।

प्रेसीडेन्ट्स स्टेट स्पोर्ट्स क्लब

तारीख १५-१२-५१ को प्रेसीडेन्ट्स स्टेट स्पोर्ट्स क्लब के सालाना जलसे में इनाम पाने वालों को इनाम देते समय राष्ट्रपति जी ने कहा--

बहनो और भाइयो, बच्चों और बच्चियो,

आज यहां आ कर मुझे बडी खुशी हुई। इतना गाना मैं ने सुना इतना नाच देखा और इस मे भी बढ कर खुशी इस बात की हुई कि बच्चों को इनाम बाटने का मौका मुझे मिला।

मै देखता हूं कि बच्चों मे कुछ ऐसे है जो सब चीजों मे बहुत हिस्सा लेते है, खेल कूद मे भी तथा और तरह से भी आगे रहते है। जो छोटे बच्चे है उन से मैं कहूंगा कि वे अच्छी तरह से उन का मुकाबला करे और जब कभी फिर अगले वर्ष इस तरह का मुकाबला हो तो वे इस बात की कोशिश करे कि उन को हरा कर वे खुद इनाम ले सकें और अगले वर्ष मे उन को ही इनाम देने का किसी को मौका मिल सके। यह काम जब आप आज से ही कोशिश करेंगे तभी हो सकेगा क्यों कि जब साल भर मे बच्चे तैयारी करते है--पढने लिखने मे या खेल कूद मे भी--तब जा कर वह इस तरह की योग्यता हासिल करते है। मैं चाहूंगा कि सब बच्चे अभी से खेल कूद मे, सीखने पढने मे, इस तरह से लग जायेंगे जिस मे अगले वर्ष उन को इनाम लेने का मौका मिल सके।

बडे लोगो से मैं इतना ही कहूंगा कि उन लोगो ने इतना सुन्दर नाच और गाना सुनाया और दिखलाया कि मैं बहुत प्रसन्न हुआ और मैं चाहता हू कि इस की दिन प्रति दिन तरक्की हो क्यो कि इस मे केवल यही नही है कि वे लोगों को खुश करते है बल्कि अपने समय को अच्छी तरह से निभा सकते है। काम से फुर्सत होने पर तो इसी तरह के मन बहलाव के काम मे आराम मिलता है और यह जरूरी है कि इस तरह के काम मे समय लगाया जाये।

मुझे इस बात की खुशी है कि यहां आज मैं आप सब से मिल सका और खेल तमाशा देख सका।

राष्ट्रमंडल विश्वविद्यालय सम्मेलन

***राष्ट्रमंडल के विश्वविद्यालय संघ की कार्यकारिणी और अन्तर्विश्वविद्यालय समिति के संयुक्त अधिवेशन के उद्घाटन के अवसर पर राष्ट्रपति जी ने कहा--**

यहां मेरे समक्ष केवल भारत, बर्मा और लंका के विश्वविद्यालयों के ही नही वरन् अन्य देशों के विश्वविद्यालयों के भी, जो राष्ट्रमंडल के सदस्य है, उपकुलपति और अन्य उच्चाधिकारी भी समवेत हैं और इसलिये जो आदर आपने मुझे इस सम्मेलन के उद्घाटन करने का निमन्त्रण

---

*अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

देकर प्रदान किया है उसकी मैं बहुत कद्र करता हूं। मेरा विचार है कि यह पहला अवसर है कि जब ऐसा सम्मेलन भारत में हो रहा है और भारत के इन्टर्यूनीवर्सिटी बोर्ड और विशेषत दिल्ली का विश्वविद्यालय इस बात के लिये अपने को विशेष गौरवान्वित समझता है कि उसे ऐसे प्रख्यात विद्वानो की मेहमाननवाजी करने का अवसर मिला है। आपने विचार विनिमय के लिये जो विषय अर्थात् "सामाजिक कल्याण की अभिवृद्धि में विश्वविद्यालयों का स्थान" रखा है वह इस सम्मेलन के सदस्यो के लिये ही नही वरन् संसार भर के विचारवान नर नारियों के लिये भी काफी महत्वपूर्ण और हृदयग्राही है। हम लोगों के लिये जो आज संसार में जीवित है बहुत सी वस्तुएं बहुत मामूली सी लगती है। किन्तु आज से कुछ पहले तो उन्हें अभूतपूर्व और चमत्कारिक वस्तुएं माना जाता। पिछले कुछ वर्षो से भौतकीय विज्ञान और शिल्प के क्षत्र में नये तथ्यों के पता चलने की जो रफ्तार रही है उसने केवल दुनिया की शक्ल सूरत ही नही बदली है वरन् दूर दूर प्रदेशो के रहने वाले नर नारियों का जीवन भी बिल्कुल बदल दिया है। भाप और बिजली ने यातायात के साधन, औद्योगिक उत्पादन और सचार साधनों में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिया है, औषधि और शल्य के क्षेत्र में जो नई बाते खोज निकाली गई है उनसे शरीर के अनेक रोगो की, जो अभी तक असाध्य रोग समझे जाते थे, चिकित्सा आसान हो गई है। इस प्रकार विज्ञान ने जीवन को सहल और आरामदेह बनाने के अनेक साधन मनुष्य को प्रदान कर दिये है। इन्ही खोजो ने उसके हाथ मे जीवन के हर क्षेत्र में विनाश के ऐसे साधन दे दिये है जिन का कि कभी कल्पना अथवा स्वप्न मे भी अनुमान नहीं किया गया था। पिछले वर्षो मे आणविक शक्ति को काबू में लाने के सम्बन्ध मे जो प्रगति हुई है उसमे तो विनाश के साधनो में आजतक जो तरक्की हुई थी उससे कही ज्यादा विनाश शक्ति मनुष्य के हाथो मे आ गई है। उसके कल्याणकारी प्रयोगों या प्रभावो के सम्बन्ध में अभी तक कोई बात हमे ठीक तरह से न तो ज्ञात है और न ही वे दिखाई देते है। इस प्रकार मानव जाति और सभ्यता के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण समस्या संसार के सामने है। मेरा वर्तमान जगत के सम्बन्ध मे यह अन्दाजा गलत नही है कि आदमी ने आज दानवो की सी शक्ति और सत्ता अथवा उस शक्ति और सत्ता से भी अधिक सत्ता और शक्ति, जो दानवो की अब तक समझी जाती रही है, प्राप्त कर ली है। किन्तु उसके कल्याणकर प्रयोग के रहस्य को उसने नही जान पाया है। सभवत: मेरा यह कहना ठीक ही होगा कि उसने उससे कल्याणकर प्रयोगो के स्थान पर उसके बुरे प्रयोगो को ही सीखा है। यदि हम उसका कल्याणकारी प्रयोग नही कर पाये तो जितनी ही शक्ति और सत्ता अधिक होगी उतनी ही विनाशकारी सामर्थ्य होगी। आज इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नही है कि मानव को विज्ञान ने जो ज्ञान और शक्ति प्रदान की है यदि उसका उचित प्रयोग और नियन्त्रण करने का रहस्य उसने न जाना तो मानव जाति के सर पर मृत्यु नाचने लगेगी।

हमारे पुराणों में एक कथा है जिसे मैं यहां इस तथ्य पर प्रकाश डालने के लिये दुहरा देना चाहता हूं। कहा जाता है कि एक दुष्प्रकृति वाला भस्मासुर नामी राक्षस था। उसने कठोर तपस्या की। भगवान शिव प्रसन्न हो गये और उसे दर्शन दिये और उससे कहा कि वह कोई भी वर मांगे और उसे आश्वासन दिया कि भगवान वह वर प्रदान करेगे। उस असुर ने अपनी कठोर तपस्या में अनेक यातनायें सही थी और इस प्रस्ताव से वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

उस ने यह वर मांगा कि भगवान उस को ऐसी शक्ति प्रदान करे कि वह जिस व्यक्ति के सर पर हाथ रखे वह तुरन्त ही भस्म हो जाये । भगवान ने वचन दे दिया था और उसे भंग नही कर सकते थे इसलिये उन्हों ने वह शक्ति उसे प्रदान कर दी। असुर मन में यह सोचने लगा कि विश्व भर में मानवों या देवताओ मे ऐसा कौन सब से अधिक शक्तिशाली है जिसे भस्म कर सारे भूत जगत भर का वह एकछत्र प्रभु बन जाये। उसने सोचा कि ऐसा उस देवता के बिना कोई नही हो सकता जिसने उसे यह विनाश की शक्ति प्रदान की है और उसने मन मे भगवान शिव को भस्म करने की ठानी जिससे वह विश्व भर का निष्कटक स्वामी बन जाये और उनकी पत्नी पार्वती का पाणिग्रहण कर ले । उसके इस विचार को जानकर भगवान भागे और वह असुर उनके पीछे दौड़ा । भगवान को कोई ऐसा स्थान नही मिला जहा वह उस असुर से अपनी रक्षा कर सकते । भगवान शिव की पत्नी देवी पार्वती ने उन की यह दुरवस्था देखी और उनकी रक्षा के लिये आयी । असुर के सामने वह अपने पूरे रूप और लावण्य से प्रकट हुई और उससे कहा कि तू भगवान शिव को इसलिये मारने की चेष्टा करता है क्योकि तू मुझ को चाहता है । इसलिये यदि तू मुझे विशिष्ट नृत्य से प्रसन्न कर दे तो मै स्वयं ही तुझे अपने को अर्पण करने को प्रस्तुत हूं । घमण्ड और विमोह के कारण असुर इस प्रस्ताव से सहमत हो गया और नाचने लगा । नाच की एक मुद्रा ऐसी थी जिस मे उसे अपना हाथ अपने सर पर रखना था और उस ने जैसे ही यह बात की वैसे ही वह अपने वरदान के कारण वही भस्म हो गया। वर्तमान युग के देवताओ ने साजिश करके मनुष्य के हाथ में संहार की ऐसी असीम शक्ति दे दी है और उसके आखो के सामने ऐसा विक्षिप्त करने वाला आकर्षण दिया है जिसे वह अपने ज्ञान के मद मे सुन्दर और अभूतपूर्व समझता है । हम ईश्वर से यही प्रार्थना कर सकते है कि इस ताण्डव नृत्य के नाचने के लालच से वह हमें दूर रखे । इस लालच से क्योंकर बचे यह समस्या अनेकानेक मनुष्यो के सामने आज उपस्थित हो रही है । हमे यह ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये कि देवी सरस्वती मनुष्य को उस शक्ति और सत्ता के उचित प्रयोगो के रहस्यों को बताये जो उसने मानव को प्रदान कर दी है और उसे इस योग्य बना दे कि जिस शक्ति से आज पूर्ण विनाश का खतरा है उसी को वह कल्याण साधन के लिये प्रयोग कर सके और उसके प्रयोग से मानव की शक्ति और सत्ता का विनाश होने के बजाय उसके दोषो का ही नाश हो। इतिहास हमे यही शिक्षा प्रदान करता है कि जब तक ज्ञान सुबुद्धि संयुक्त और नियन्त्रित न हो तब तक वह केवल स्वय पर्याप्त तो है ही नही वरन् अहितकारी भी सिद्ध हो सकता है। अतः विश्वविद्यालयों को केवल ज्ञान प्रदान, उसका प्रसार और उसकी वृद्धि ही न करनी चाहिये वरन् उनको सुबुद्धि का भी ऐसा आगार होना चाहिये जहा से ज्योति की किरणे फैल कर मानव आत्मा को प्रकाशित कर देती है और उसे दैवी ज्योति से ओत-प्रोत कर देती हो।

इसी विचार को रहस्यमयी भाषा के बजाय सीधी सादी भाषा मे मै आपके सामने रखूं। कुछ ऐसी घटनाये हुई है जिन से सारे जगत के रूप रंग के पूर्णरूपेण परिवर्तित हो जाने की संभावना है । आणविक शक्ति ने मनुष्य को देवताओ की शक्ति, समस्त भूमण्डल को आनन्दमय स्वर्ग अथवा निपट एकाकी प्रगाढ शान्तिमय समाधिस्थल बना देने की शक्ति, प्रदान कर दी है । वाष्प और विद्युत के साथ साथ जो क्रान्तिकारी परिवर्तन चले आये उन सब का आप सब को ज्ञान है। किन्तु आणविक शक्ति के इस भीम के सामने वे दोनों तो बेचारे घुटनों चलने वाले शिशु थे ।

अत. यह विचार सर्वथा बुद्धिसगत है कि शक्ति की इस महावृद्धि में मानव के सामाजिक गठन और मानसिक स्वरूप में उस से भी कही अधिक क्रान्तिकारी परिवर्तन निहित है जो कि वाष्प अथवा विद्युत के कारण हुआ था ।

आज की समाज के खोल से जो दूसरी क्रान्तिकारी शक्ति टकरा रही है वह है वह निर्दमनीय आन्दोलन जो स्वामित्व प्राप्त और पेशेवर वर्गो के मुकाबले मे जीवन की सबसे अच्छी वस्तुओं के बराबर बराबर पाने के लिये असख्य जन समूह के और विशेषत: आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्र में पिछडी हुई एशिया और सागर द्वीपमाला के अरबो नर नारियों के हृदय में लहरा रहा है । गत शताब्दियो में जन साधारण का समस्त जीवन और परिश्रम इस विश्वास से बंधा था कि उनके परिश्रम का पुरस्कार कुटिल दैव की इच्छा पर निर्भर करता है और इस बारे में न तो उनका कोई चारा है न कोई बचत । अत. अपने दुःख भरे भाग को वे मरे हुए मन से माने रहते थे । किन्तु जहां तक संसार के और कम से कम एशिया के करोडो नर नारियो का संबन्ध है भाग्य का यह आधार वर्तमान व्यवस्था और विधान के तले से खिसक गया है या खिसका जा रहा है । उचित हो या अनुचित किन्तु उनमे मे आज अनेक यह समझ रहे है कि उनका अभाव और कष्ट दयासागर और सर्वज्ञाता भगवान की देन न होकर कुटिल मानवों, वर्गों और राष्ट्रो के दुष्प्रयोजनो का परिणाम है । अपनी वर्तमान दुरवस्था के विरुद्ध उठ पडने के लिये अनेकों को क्षुधा का अकुश मजबूर कर रहा है । इसीलिये तो आज के जगत की राजनैतिक और सामाजिक व्यवस्था के मिटाने के लिये करोडो नर नारी आगे बढ रहे है । मानव जातिके इतिहास में ऐसा कभी नही हुआ कि इतने असख्य साधारण नर नारियों का समूह उस ऐतिहासिक सत्ता और व्यवस्था के विरुद्ध, जो उनके जीवन को शासन और नियम में बांधे हुए है, इस प्रकार तुमुल युद्ध करने के लिये और नव समाज के निर्माण के लिये कटिबद्ध हो कर उठ खडा हुआ हो ।

यदि हमारे युग की ये दोनों क्रान्तिकारी शक्तिया स्वभावतया अनमेल या विरोधी होतीं तब तो मानव जाति के बचे रहने की लेशमात्र आशा न होती । भाग्यवश बात बिल्कुल उलटी है । अभी कल तक ही तो मानव जाति के उत्पादन यन्त्र मे यह सामर्थ्य न थी कि वह सफेद और रगवाले सभी मानवो की आवश्यकताओ की पूर्ति कर सके । यह ठीक है कि वाष्प और विद्युत ने उत्पादन मे बहुत वृद्धि की थी किन्तु फिर भी उस की कुल सामर्थ्य बिल्कुल सीमित थी और इस से यह आशा न की जा सकती थी कि यह द्रुतगति से बढने वाली मानव जाति की नित्य बढने वाली आवश्यकताओ की और खास तौर से उस अवस्था में जब साधारण जनो के मन मे भी यह बात बैठ गई है कि उन्हे भी वर्गो के बराबर ही उत्पादित सब वस्तुओ मे समान भाग मिलना चाहिये, पूर्ति कर सकेगी । यह होना अनिवार्य था ही । जब शक्ति सीमित थी तो उत्पादन सीमित ही हो सकता था पर उत्पादित वस्तुओ के भागीदारो की सख्या तो न तो सीमित थी और न सीमित हो सकती थी । किन्तु आणविक शक्ति ने तो मानव जाति को असीम और सीमाहीन शक्ति प्रदान कर दी है। यदि इसे सृजनात्मक प्रयोजनो के लिये काम मे लगाया जाये तो यह उत्पादन की असीम शक्ति पैदा कर देगी और इतने सम्पन्न जगत की सृष्टि कर देगी कि जिस में अपने भाई बहनो के भाग पर किसी तरह का असर डाले बिना प्रत्येक नर नारी जो कुछ चाहेगा ले सकेगा । दूसरे शब्दो में जीवन की अच्छी वस्तुओं के पाने के लिये जन साधारण की क्रान्तिकारी अकाक्षा की पूर्ति का साधन यही क्रांतिकारी शक्ति है ।

किन्तु इस बारे में कि इन दो क्रान्तिकारी शक्तियों का मेल वह सामाजिक चेतना कर सकती है या नही जो आजकल मानवों के कार्यों का संचालन कर रही है शंका के लिये गुंजाइश है। बहुत कुछ सीमा तक यह चेतना सीमित शक्ति और सीमित उत्पादन युग की पुत्री है। अतः यह अनिवार्य सा है कि जीवन के इन नये तथ्यों के स्वाभाविक और निहित परिणामों को समझने मे यह असफल सिद्ध हो। युद्ध और अभाव के प्रति वर्तमान सामाजिक चेतना के रुख से यह आशका और भी दृढ हो जाती है। आज भी इस सत्य का भास इसे हुआ प्रतीत नही होता कि इन दोनो का पूर्णतया अन्त करना ही मानव जाति के बचाव और बने रहने की पहली शर्त है। अभी हाल तक युद्ध का अर्थ इस के सिवाय और कुछ न था कि कोई भी वर्ग या प्रादेशिक समूह किसी दूसरे वर्ग या राष्ट्र से अपने झगडों को सुलझाने के लिये अपनी शक्ति का विध्वसात्मक प्रयोग उस के विरुद्ध करे। ये लोग इस प्रकार के प्रयोगों को निःशक होकर इस लिये कर सकते थे क्योंकि जिन वस्तुओ को वे मूल्यवान समझते थे उन का सीमित विनाश ही सीमित शक्ति से हो सकता था; जब कि वैसे प्रयोग से वे उन ध्येयों की पूर्ति कर सकते थे जिन्हे वे युद्ध द्वारा विनष्ट होने वाली कुछ वस्तुओ से कही अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। इस के अतिरिक्त सीमित उत्पादन से जीवन की अच्छी वस्तुए इतने परिमाण मे उत्पादित नही की जा सकती थी कि सब लोग उन मे हिस्सा लगा सके। अतः व्यक्ति और समूह के लिये यह अनिवार्य था कि अपनी चाही हुई वस्तुओ को वे दूसरे हिस्सा मागने वालो के विरुद्ध हिसा का प्रयोग करके भी हथिया ले। दूसरे शब्दो मे सीमित उत्पादन के युग मे मानवीय समूह का यह विचार था कि उनके सुखद जीवन के लिये युद्ध एक फलदायी साधन है। इस अवस्था मे विकसित सामाजिक चेतना का स्वभावतः ही युद्ध के प्रति इस के अतिरिक्त और कोई दृष्टिकोण हो ही नही सकता था कि वह वाछनीय है और कम से कम मानव जीवन मे अनिवार्य और अपरिहार्य तो है ही। युद्ध के बारे मे यह रुख हमारे सामाजिक मन का ऐसा अविच्छिन्न अग बन गया है कि केवल युद्ध के नाम को सुनते ही सहज मे ही उसके प्रति घृणा का भाव उत्पन्न होने के बजाय अनेक मनुष्य जिनमे विद्वान और उच्चराजनैतिक पद धारण करने वाले भी सम्मिलित है उसे वर्गीय और राष्ट्रीय मतभेदो और झगडों के हल करने का प्रभावी साधन समझते है और उसे सगठित सामूहिक जीवन का स्वाभाविक और निहित अग मानते है। युद्ध के प्रति अपनी प्रकृति जनित प्रतिक्रियाओ के कारण यह सामाजिक चेतना स्वभावतः असीम शक्ति के युग मे युद्ध के परिणामो का अन्दाजा लगाने मे असमर्थ है। जैसा कि मैने अभी कहा है आणविक शक्ति ने मनुष्य को असीम शक्ति पदान कर दी है। इस के विध्वसात्मक प्रयोगो के परिणाम न तो किसी प्रदेश और न किसी काल तक ही सीमित रखे जा सकते है। इस प्रकार यह नतीजा अनिवार्य प्रतीत होता है कि आरम्भ होने वाले इस नये युग मे मानव के अस्तित्व के लिये युद्ध घातक सिद्ध होगा। किन्तु मुझे भय है कि युद्ध के प्रति अपनी सहज भावना के कारण हमारी सामाजिक चेतना इस सत्य को आसानी से नही पहचान सकेगी और मानव जीवन की व्यवस्था मे आणविक शक्ति के असली महत्व को पहचानने में भी असमर्थ रहेगी।

अपने जीवन के अभाव के विरुद्ध जन साधारण के विप्लव से पैदा होने वाले प्रश्नों का हल भी यह चेतना सफलतापूर्वक नही कर सकती। पिछले सहस्त्रों वर्षो से अनेको की गरीबी और दुःख तथा थोड़े लोगों की सम्पन्नता और सस्कृति मानव जीवन का अनिवार्य और अपरिहार्य

तथ्य है। यह ठीक है कि मानव के प्रति स्नेह और सद्भावना से ओतप्रोत अनेक ऋषियों और महात्माओं ने अनेको की इस दुःख भरी अवस्था के लिये आंसू बहाये है। उनमें से कुछ ने तो इस बात के लिये रोष भी प्रकट किया है कि वे थोड़े लोग उस समय भी जब उनके अनेक भाई हर प्रकार की यातनाओं और विपत्तियों को सह रहे है स्वयं आनन्द में लीन है। किन्तु चाहे उन्हों ने इस परिस्थिति को धैर्य से सहा अथवा धार्मिक जोश से उसके विरुद्ध आग उगली यह बात तो रही ही आई कि ग़रीबी न तो मिटी और न मिटायी जा सकी और अभाव के भूत को सदा के लिये दफ़न न किया जा सका। सीमित उत्पादन और अभाव की अनिवार्यता की ऐसी स्थिति में हमारी वर्तमान सामाजिक चेतना का जन्म हुआ।

अत: आज से छ: वर्ष पहले युद्ध के समाप्त हो जाने पर भी न तो किसी राष्ट्र को और न किसी वर्ग को शान्ति के ही दर्शन हुए और न सम्पन्नता के ही। किन्तु इस बात के समझने के बजाय कि उनकी वर्तमान दुरवस्था का कारण उनकी अपनी सामाजिक चेतना का दोष है उनमें से प्रत्येक यह विश्वास करता है कि वह सब उसके मुखालिफ राष्ट्रो या वर्गो के दिल के अन्दर बुराई की बहुतायत की वजह है। कोई दिन ऐसा नहीं होता जब कि वे एक दूसरे पर दोषारोपण या प्रतिदोषारोपण बड़े जोर के साथ न करते हों। जैसा कि मैंने पहले कहा है हमारे जीवन का रोग आज किसी एक राष्ट्र का पापमय हृदय नही है वरन् वह तो इतिहास सृजित सामाजिक चेतना का मानव जीवन की नयी शक्तियो से अनमेल है। सच ही आज मनुष्य के सामने जो विपत्ति है वह संगठन की या वस्तुओ की विपत्ति न होकर चेतना की विपत्ति है। दूसरे शब्दों मे आज जिस बात की हमे कमी है वह न तो वस्तुओ की कमी है और न संगठन की। वह तो उस अखडनीय इच्छाशक्ति और सर्वतोन्मुखी दृष्टि का अभाव है जो हमे अपनी शक्ति और साधनों को ठीक प्रयोग करने के योग्य बना सके। इसलिये स्वभावत: इस रोग का निदान वस्तुओ या संस्थाओ के जगत में न होकर चेतना के क्षेत्र में है। गांधी जी की भाषा में कहा जा सकता है कि हमारी आज सर्वोपरि आवश्यकता संसार की विजय न होकर हृदय का परिवर्तन है। आज सब से ज्यादा आत्मिक शक्ति की आवश्यकता है न कि भौतिक शक्ति की।

यही सर्वोपरि आवश्यकता सच्चे विश्व-विद्यालय को मानव जाति का भावी त्राणकर्ता बना देती है। अन्य मानवीय संस्थाएं चाहे उनकी शक्ति या शस्त्र कैसे भी क्यों न हों इस विपत्ति के सामने फलहीन और असहाय है। यह ठीक है कि अपने विभिन्न रूपों मे राज्य मानव समाज की इन बुराइयो को दूर करने की कोशिश करता रहा है। इस दिशा में इसे सफलता भी मिली है। किन्तु मैं यह कहे बिना नही रह सकता कि भूमण्डल पर न्यायपूर्ण समाज के पैदा करने के लिये राज्य को दाई और धाय मानने के सीधे परिणाम स्वरूप ही जगत में तानाशाही का जन्म और विकास हुआ है और जिसका कि स्वाभाविक अर्थ ही यह है कि कुछ लोगों का अनेक लोगों पर प्रभुत्व हो। राज्य का प्रधान अस्त्र शक्ति है जो बनाती कम है और बिगाड़ती है अधिक। अत: जहा राज्य सामन्तशाही युग की अराजकता के मिटाने में सफल हुआ है वहां उस ने राष्ट्रो और वर्गो की अराजकता को पैदा कर दिया है और उस अराजकता से आज मानव जाति का अस्तित्व ही ख़तरे में पड़ गया है। राज्य के समान ही अन्य सामाजिक संस्थायें भी मानव को हमारे युग की विपत्ति पर विजय पाने के योग्य नहीं बना सकती है। इस पर क़ाबू पाने के लिये हमें ऐसी सामाजिक चेतना की आवश्यकता है जो समस्त भूमण्डल में मानवीय

हरकतों के हर पहलू और क्षेत्र को ठीक ठीक तरह से पहचान ले और जो किसी एक वर्ग या राष्ट्र की खोल के अन्दर ही बन्द न रहे । यथावत निर्मित और सचालित विश्वविद्यालय के अतिरिक्त और कोई संस्था इस प्रकार की एकीकृत और विश्वव्यापी चेतना की सृष्टि नहीं कर सकती । विश्वविद्यालय का सर्वप्रथम कार्य मानव की चेतना को ठीक तरह ढालने और रूपित करने का और विभेद भरी मानव जाति की सामाजिक चेतना में अखण्ड एकता पैदा करने का है । हम सब जानते है कि प्रत्येक देश और युग मे विश्वविद्यालय गत पीढियों के विचारों को नई पीढियो को देने तथा नये तथ्यो की खोजो और पुराने तथ्यों के आग विकास का द्विमुखी काम करता रहा है । दूसरे शब्दो मे विश्वविद्यालय का यह ऐतिहासिक मिशन रहा है कि प्रत्येक नई पीढी को सामाजिक चेतना दे और इस प्रकार उसकी अपनी चेतना को ढाले और रूपित करे । किन्तु इस कार्य का एक निहित अंग यह भी है कि एक ही मानवीय समूह में एक साथ ही कार्यशील विभिन्न चेतनाओ का एकीकरण किया जाये । जब कि अन्य संस्थाओं मे से प्रत्येक स्वाभावत. दूसरो से अलग करने वाली संस्था ही होती हे विश्वविद्यालय अपने मे ही बन्द सस्था न तो है और न हो सकती है ।

नवयुग द्वारा लादे गये इस भार को विश्वविद्यालय किस प्रकार सफलता से वहन कर सकता है । मेरा विचार है कि इस बारे मे सफलता प्राप्त करने के लिये विश्वविद्यालय को कई बातें करनी पड़ेगी । प्रथम तो मानव समाज के विकास की कहानी के सम्बन्ध में इसे अपना दृष्टि-कोण बदलना पडेगा । आज तक इस कहानी की प्रधान बात मानव समाज मे शक्ति का स्थान है । इतिहास की लगभग प्रत्येक पुस्तक के अधिक भाग मे युद्धो और सघर्षो का वर्णन होता है और उस का बहुत थोडा ही अश सामाजिक और वैज्ञानिक विचारो और आदर्शो के विकास से सम्बद्ध होता है । योद्धाओं को ही, न कि वैज्ञानिको, दार्शनिको, कवियों, कलाकारों को, उस मे प्रमुख स्थान मिलता है । आज भी इतिहास की अनेक पुस्तको से यही ध्वनित होता है कि मानव-जीवन-नाटक को गतिमान बनाने वाली और आगे बढाने वाली शक्ति केवल सगठित भौतिक शक्ति ही है । किन्तु हिंसात्मक संघर्ष तो जीवन का दैनिक तथ्य नहीं है , यह तो एक ऐसा अपवाद है जो कभी कभी ही देखने मे आता है । मानव जीवन का सूत्र एक युद्ध के बाद दूसरा युद्ध न होकर एक सृजनात्मक प्रयास के बाद दूसरा सृजनात्मक प्रयास है । अतः जो अनथक सृजनात्मक और आध्यात्मिक कार्यधारा मानव को भूमण्डल के अन्य सब जीवो से विभिन्न करती है उसी के आधार पर सारे मानव इतिहास का पुनर्निर्वचन आवश्यक है । अब यह बात स्वीकार की जा रही है कि इतिहास अन्ततोगत्वा मानव चेतना की ही कहानी है । मेरे विचार मे अब समय आ गया है कि जगत भर के विश्वविद्यालय मिल जुल कर इस बात का संगठित प्रयास करें कि मानव की कहानी अपने मूल भूत तत्व अर्थात् सृजनात्मक और आध्यात्मिक कार्यधारा के आधार पर ही पुनर्निरूपित की जाये । सम्भवतः यह बात कुछ परम्परा गत विचारो से बेमेल मालूम हो पर मेरा यह विश्वास है कि मानव कोरी भौतिक शक्तियो का ही प्राणी अथवा अपने काबू के बाहर की परिस्थितियों, अपनी वाह्य स्थितियों का ही असहाय दास नही है । उसमें तो इतनी शक्ति और सामर्थ्य है कि उन परिस्थितियों को अपनी इच्छा के अनुकूल ढाल ले या रूपित कर ले और अतीत में उसने ऐसा अनेक बार किया भी है । यह विश्वविद्यालय का धर्म है कि वह उस में इस सुप्त आत्मा को जागृत करे जो उसे अपनी परिस्थि-

तियों का, जो परिस्थितियां कि बहुत कुछ उसी की सृष्टि हैं, दास रहने के बजाय, जैसा कि वह आज है, उसे उनका मालिक बना दे ।

इस बारे में जो दूसरा परिवर्तन आवश्यक प्रतीत होता है वह यह है कि इतिहास की पुस्तकों का मानक्षेत्र राष्ट्र के बजाय सारा भूमण्डल हो । आज तो राष्ट्र की ओट मानव को सर्वथा आंखों से छिपा देती है । पर अन्ततोगत्वा ससार के हर कोने में मानवों की सृजनात्मक प्रेरणा ही ने तो उसे सभ्यता और संस्कृति को बुनने के लिये मजबूर किया है। ठीक है उस में बहुत प्रकार के धागे हैं । किन्तु अन्ततोगत्वा ये सब ही तो मानव आत्मा की सृष्टि है, यद्यपि उनमें प्रदेश जलवायु और सामाजिक जीवन ने भी कुछ हद तक अपना रंग मिला दिया है। अतः सब इतिहास की पुस्तकों में प्रधान महत्व मानवात्मा को दिया जाना चाहिये और प्रदेश और समूह के प्रभाव को दूसरे दर्जे की महत्ता ही मिलनी चाहिये ।

सामाजिक विकास की समस्या के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन के अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि विश्वविद्यालय वर्गों का अंग बने रहने के बजाय जन जीवन से रल मिल जाये । आरम्भ में जन जीवन से यह इसलिये सर्वथा अलग था क्योंकि साधारण जनों के पास न तो इतना अवकाश था और न इतने आर्थिक साधन कि वे इसमें बराबर प्रवेश कर सकें । यह अलगाव बना इसलिये रहा ताकि बाज़ार के कोलाहल और उद्विग्नताओ से दूर रह कर प्रशान्त और पक्षपात रहित वातावरण मे उसके सदस्य सत्य की खोज में लगे रहें । किन्तु अब अवस्था बदल गई है और विश्वविद्यालय अब मानव जाति के साधारण जनों की प्रभावी और सीधी सेवा कर सकता है। यह ऐसा कर ही नही सकता वरन् नव चेतना की छत्रछाया मे साधारण जनों को एकत्रित करने के लिये उसे ऐसा करना ज़रूरी भी है । यह ऐतिहासिक तथ्य है कि भूतकाल में वर्गों की चेतना, साधारण जन की चेतना से बहुत विभिन्न थी। किन्तु उन दोनों के बीच की इस मानसिक खाई से उन दिनो वैसे भयावह परिणाम होने का खतरा न था जैसा कि आजकल है। अगर यह बनी रही तो इस बात का पूरा खतरा है कि सभ्यता का मन्दिर ही कहीं जल कर ख़ाक न जाये ।

मेरे विचार से एक और कारण से भी जन साधारण के जीवन और अरमानों से विश्वविद्यालय का एकीकरण आवश्यक है। यदि अभाव के विरुद्ध जन साधारण की वर्तमान क्रान्ति को सृजनात्मक और रचनात्मक दिशा की ओर न ले जाया गया तो यह ज्वालामुखी का ऐसा लावा सिद्ध हो सकती है जो अच्छी बुरी सभी चीज़ो का विनाश कर दे। इस क्रान्ति को ठीक दिशा में ले जाने की अविलम्ब आवश्यकता है। यदि विश्वविद्यालय जिस का इस दिशा में अपना निजी कोई स्वार्थ नही होना चाहिये जन साधारण से सम्पर्क स्थापित करने का निश्चय कर ले तो राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को उनकी अपनी पृष्ठभूमि में यथास्थान रखने का कार्य यह सफलता से कर सकेगा और इस प्रकार जन सधारण को वह सूझ और समझ दे सकेगा जो उनको अपने निर्वाचन सम्बन्धी अधिकारों को ठीक प्रकार से प्रयोग करने में समर्थ कर दे ।

किन्तु जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं जनसाधारण से विश्वविद्यालय का मेल सर्वोपरि इसलिये आवश्यक है कि उनमें वह वैसी चेतना पैदा करे जैसी कि नवयुग के लिये आवश्यक

है । हमारे युग की इन दो क्रान्तिकारी शक्तियों का संयोग सम्पन्नता और शान्ति की दुनिया के निर्माण के लिये तभी होगा जब जन साधारण भी ऐसी चेतना से अनुप्राणित और संचालित हों ।

इन विचारों की क्रान्ति के सर्वोपरि महत्व के संदर्भ में ही मैं राष्ट्र-मंडल के विश्वविद्यालयों के असोसियेशन और इन्टरयूनीवर्सिटीज बोर्ड के संयुक्त सम्मेलन के महत्व को आंकता हूं । मेरा विचार है कि राष्ट्रमण्डल के विश्वविद्यालयों के नवनिर्माण में यह असोसियेशन महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है । मेरी यह दृढ आशा है कि आप के विचार विनिमय से विश्वविद्यालयों को प्रेरणा मिलेगी कि वे आगत युग में विचार और कार्यक्षेत्र में नेता होने के अपने उचित स्थान को पहचाने और ग्रहण करें और वह आध्यात्मिक और चारित्रिक शक्ति तथा सूझबूझ प्रदान करे जो इस असीम शक्ति और साधनों का, जिन्हें ज्ञान ने मनुष्य के हाथों में दिया है, उचित नियन्त्रण और सचालन कर सकती है ।

माडर्न हाई स्कूल

माडर्न हाई स्कूल, बाराखंभा, नई दिल्ली के फ़ाउन्डर्स डे समारोह के अवसर पर १३-१२-५१ को राष्ट्रपति जी ने कहा—

सरदार शोभा सिह, हैड मास्टर, बहनो, और भाइयो,

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि मुझे इस स्कूल को बहुत दिनों के बाद फिर एक बार अच्छी तरह से देखने का मौका मिला । जब आपने मुझे पहले पहल बुलाया था उसको बहुत जमाना बीत गया और मुझे याद है कि उस वक़्त आपने मुझे दोपहर को बुलाया था और शायद खाना भी खिलाया था । इस मरतबा आप ने ऐसे वक़्त पर बुलाया जब खाने का वक़्त ही नही रहा । लेकिन इस बार उस से भी ज़्यादा और बेहतर चीजे मुझे देखने को मिली । मैंने अच्छी तरह से बच्चो के काम को देखा और जो चीजें आप यहा बच्चो को सिखाते है, पढाते हैं, बताते है उन सब चीज़ो के अच्छे नतीजे को देखा, गर्चे वक्त बहुत कम ही रह गया था । मुझे यह देखकर बडी खुशी हुई कि आपने बड़ी तरक्क़ी की है और दिन ब दिन और ज़्यादा तरक्की करते जा रहे है क्योकि जैसा आपने कहा पिछले चन्द महीनों के अन्दर आप ने कई नयी चीजे दाखिल की है और कितनी ही नयी चीजो में आपने ज़्यादा तरक्की की है । हमारे यहा इस चीज़ की ज़रूरत है कि हमारे बच्चे खूब अच्छी तरह से सिर्फ पढ़कर ही नहीं निकलें बल्कि सब तरह से होशियार होकर निकले । उन के अंग मज़बूत हो, शरीर भी अच्छा हो, सेहत भी अच्छी हो, वे खेल कूद में भी अच्छे हों, दुनियां की खबर भी उनको हो और इन के अलावा जो कुछ स्कूलों और कालेजों में पढ़ाई के किताबी इम्तहान होते हैं उनको भी अच्छी तरह से पास कर सके । मैंने देखा कि आप ने सब चीज़ों की तरफ़ पूरा ध्यान दिया है और स्कूल के इम्तिहान का नतीजा भी आप का बहुत अच्छा हुआ है और उस के साथ साथ जिस तरह से आप उनको पढ़ाते हैं उसमें बहुत सी बातें जानने और सीखने को उनको मिल जाती है और हर तरह से उनकी सेहत का भी खयाल रखा जाता है । ज़रूरत ऐसे ही स्कूलों की है । आप ने यह कहा कि लड़कों की तादाद बढ़ता जा रही है और बहुत ज़्यादा दर्खास्तें आप के पास आती है जिन में से बहुत कम ही को आप ले सकते है ।

इस के माने यह है कि आप के स्कूल की क़द्र यहा के लोग कर रहे है और बच्चों से ज़्यादा उनके मां बाप कर रहे है और इस लिये अपने बच्चे को यहा भेजना चाहते है। बच्चे यहा बहुत होंगे और मै समझता हूं कि जिस तरह से आप उन को सिखाते है, पढाते है वे बहुत खुश रहते होंगे और बच्चों के लिये यह बड़ी चीज है कि जो उन को सिखाया पढाया जाये उनका उस मे पूरा जी लग जाये, उनके ऊपर कोई जब्र नही गुजरे, ऐसा उनको नही मालूम हो कि स्कूल मे आना एक बोझ है और पढने पढाने से ज़्यादा नजर और खयाल छुट्टी की तरफ लग जाये कि कब घटी बजेगी और घर जायगें। जहा जहा सिखाने पढाने का मुन्दर इतजाम होता है वहा सब मे बड़ी चीज़ यही होती है कि वहा बच्चे रहना चाहते है, घर भागना नही चाहते। मै समझता हूं कि आपने जैसा इतजाम किया है उसमें बच्चों को इस का मौका मिलता है। मैने अभी पूछा कि यह बच्चों का कितनी देर रखना जरूरी है। मालूम हुआ कि गर्मी के दिनो मे तो वे साढे आठ बजे से ६ बजे तक रहते है और सर्दी के दिनो मे जल्द अधेरा हो जाता है और बच्चे इतनी देर तक नही रह सकते इसलिये पाच बजे तक घर पहुच जाते है। इतनी देर तक बच्चे यहा रह जाते है और यहा ही दोपहर का खाना भी खाते है, खेलते भी है, पढते भी है, सीखते भी है। इसमें उनको पूरा मौका मिलता है कि खास यहा के टीचरों के साथ रहकर वे कुछ जान सके, कुछ सीख सके। इस तरह के टीचरो की जवाबदेही बढजाती है। क्योंकि जितना ज्यादा सपर्क उनका बच्चों से होता है उतना ज़्यादा उन का जो तौर तरीका, रहन सहन और चरित्र है उसका असर बच्चो पर पडता है और पडना भी चाहिये। हमारे यहा के स्कूलो और कालेजो में जो सबसे बड़ी कमजोरी रही है वह यह है कि पढाई की तरफ वे अधिक ध्यान देते है और चरित्र बनाने की तरफ उनका बहुत कम खयाल है। मै उम्मीद करता हू कि इतनी देर तक आप के बच्चे यहा रहते है तो उसका नतीजा यह होगा कि उन के चरित्र पर यहा के टीचरो के चरित्र का असर पडेगा और आप के टीचर अच्छे है तो उनका अपना चरित्र अच्छा होगा इस मे कोई शक नही और बच्चो का चरित्र भी अच्छा होगा। यह तो जो बच्चों के साथ ज्यादा संपर्क मे है वे ही कह सकते है और सब से ज़्यादा टीचर ही कह सकते है। मै उम्मीद करता हू कि जो तरक्की आज तक आपकी हुई है वह दिन ब दिन बढ़ती जायेगी और जो दूसरी शाखा आप खोलना चाहते है जहा और बच्चों को आप ले सकेगे वह खुल जायेगी और उस की वजह से आप और लोक प्रिय होंगे। मै उम्मीद करता हू कि वह काम आपका दिन ब दिन बढ़ेगा। मै आपको बधाई देना चाहता हू और खास कर के बच्चों को जो यहा पढ़ रहे है, सीख रहे है उन को भी बधाई देना चाहता हू।

भारतीय विज्ञान विद्या परिषद् के वार्षिक अधिवेशन का उद्घाटन

*भारतीय विज्ञान विद्या परिषद् के १७वे अधिवेशन का नई दिल्ली में २७ दिसम्बर १९५१ को उद्घाटन करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा—

यद्यपि विज्ञान की किसी भी शाखा से बिल्कुल सबधित न होने के कारण मेरी भावना यह है कि मुझे ख्यातिनामा वैज्ञानिकों के सम्मेलन के उद्घाटन करने का कोई अधिकार नही है तथापि आज संध्या को आप लोगों से मिलकर मुझे बड़ी खुशी हुई है। इस संबध में मुझे एक अन्य अवसर की याद आती है जब मै ऐसी ही स्थिति मे था। मुझे चिकित्सकों के एक सम्मेलन का

*अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

उद्घाटन करने के लिये तथा औषधीय और शल्य वस्तुओं की प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के लिये निमंत्रित किया गया था। मेरी यह भावना थी कि मुझे वहां जाने का अधिकार नही है। किंतु अन्ततोगत्वा इस बात के लिये मै यह सोचकर तैयार हो गया कि चाहे चिकित्सक के नाते मेरा कोई अधिकार न हो किंतु रोगी के रूप मे चिकित्सकों के अध्ययन और प्रयोग का विषय होने के कारण मै वहा जाने का दावा कर सकता हू। वैज्ञानिक होने का मेरा दावा नही है किंतु मेरी यह भावना है कि सब विज्ञानों का अन्तिम ध्येय और व्यावहारिक उद्देश्य साधारण जनों की सर्वतोन्मुखी उन्नति और कल्याण करना है और होना चाहिये। साधारण जन के नाते मेरा यह अधिकार है कि मै सब वैज्ञानिकों से यह अपेक्षा करूं कि वे अपना समय और शक्ति अपनी बुद्धि और ज्ञान साधारण जन के कल्याण के लिये लगायें। विज्ञान के प्रति मेरे दृष्टिकोण को समझने की कुजी यही है।

यह सतोष की बात है कि पिछले पचास वर्षो मे इस देश में विज्ञान के अध्ययन तथा वैज्ञानिक गवेषणा की भारी प्रगति हुई है। मुझे स्मरण है कि कलकत्ता विश्व विद्यालय की उन दिनों ऐंट्रेंस परीक्षा कही जाने वाली परीक्षा को पास करके जब मै स्कूल से निकला और कलकत्ते के प्रेसीडेंसी कालेज में मै प्रविष्ट हुआ तब विज्ञान को वैसा कुछ महत्व या स्थान नही दिया जाता था जैसा कि तब से हमारे शिक्षा सस्थाओं के विषयक्रम मे इसे दिया जाने लगा है। यदि मुझे ठीक स्मरण है तो मै यह कह सकता हू कि उन दिनो बी० एस० सी० की कोई अलग डिग्री नही होती थी किंतु बी० ए० की ही एक डिग्री होती थी जिसकी दो शाखा होती थी; एक को तो 'ए' शाखा कहते थे जिसमे कि केवल साहित्य और कला के विषय ही पढाये जाते थे और दूसरी को 'बी' शाखा कहते थे जिसमे अग्रेज़ी और हिसाब दो अनिवार्य विषय होते थे और तीसरे विषय मे भौतिकी और रसायनिक विज्ञान होते थे। आज कल तो बी० ए० के पहिले ही ये दोनों अलग अलग हो जाते है। और कोई भी विद्यार्थी साहित्य और कला मे इटरमीजियेट परीक्षा देने के बजाय केवल विज्ञान विषयो को लेकर इंटरमीजियेट साइस परीक्षा की तैयारी कर सकता है और उस में उत्तीर्ण होकर केवल विज्ञान विषयों का ही अध्ययन करके बी० एस० सी० और एम० एस० सी० डिग्रियों का अधिकारी बनने के लिये आगे कदम बढ़ा सकता है। स्वाभावत. इसका फल यह हुआ है कि हमारे विद्यार्थी विज्ञान में अधिकाधिक दिलचस्पी लेने लगे है और हमारे विश्व विद्यालयों में और हमारे अच्छे दर्जे के विद्यालयों मे से अधिकाश में विज्ञान विषयों को पढने के लिये प्रबन्ध है। स्नात्कोत्तर अध्ययन और गवेषणा को भी प्रोत्साहन दिया जाता है। विज्ञान के विभिन्न विषयों और वैज्ञानिक गवेषणा के विभिन्न पहलुओं से संबध रखने वाले हमारे यहा कई गवेषणा प्रतिष्ठान है। और मुझे विश्वास है कि इन सब केन्द्रों मे काफी मौलिक काम किया जा रहा है। हमारे विद्वानो में से कुछ को सारे जगत में अच्छी ख्याति मिली है और उन्होंने अपने लिये ही नही वरन् अपने देश के लिये भी नाम और यश कमाया है। यह सब ठीक ही है और यही आशा की जा सकती है कि जो दिलचस्पी इस क्षेत्र में आज कल दिखाई देती है वह बराबर बढ़ती रहेगी।

ऐसा तो होना ही चाहिये क्यों कि आज कल के जगत मे किसी भी देश के लिये यदि वह विपत्ति से बचना चाहता है तो वैज्ञानिक अध्ययन में पीछे रहना अच्छा न होगा। विज्ञान ने और अन्य देशो की वैज्ञानिक सफलताओं ने जिस प्रवृत्ति को चला दिया है उस से यदि हम बचना भी चाहें तो भी हमारे लिये उस से बचा रहना संभव न होगा। और इस लिये संसार में जो प्रगति इस संबंध

में हो रही है उसके साथ साथ ही हमे भी आगे बढ़ना है। इस प्रयोजन के लिये उन दो बातों को, जो मुझ जैसे साधारण व्यक्ति को व्यावहारिक दृष्टि से एक दूसरी से अलग लगती है, ध्यान में रखना होगा। सैद्धातिक अथवा मौलिक प्रकार की गवेषणा का तो एक प्रश्न है और दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिये ऐसी मौलिक गवेषणा के परिणामों के प्रयोग करने का प्रश्न दूसरा है और इस दूसरे प्रश्न से यह प्रश्न भी पैदा होता है कि खेत में, कारखान मे, घर में, में, और सार्वजनिक स्थान मे प्रत्येक नर-नारी चाहे वह बाल हो या वृद्ध, धनी हो अथवा निर्धन, उस के दैनिक जीवन मे व्यावहारिक प्रकार की वैज्ञानिक जानकारी को कैसे फैलाया जाये। मूल भूत अथवा सैद्धातिक गवेषणा के महत्व को ज्यादा बढ़ा चढ़ा कर वर्णन तो किया ही नही जा सकता क्यो कि सिद्धात के व्यावहारिक प्रयोग का प्रश्न तो तभी पैदा हो सकता है जब सिद्धात निर्धारित हो गया हो। किंतु इस कथन से कि साधारण मनुष्य का सैद्धातिक गवेषणा से कोई अधिक सबध नहीं है, चाहे फिर यह बात इसी कारण से क्यो न हो कि वह उसे समझता नही है, सैद्धातिक गवेषणा का मूल्य या महत्व तो कम नही होता। साधारण मनुष्य का सबध तो वैज्ञानिक जानकारी के व्यावहारिक प्रयोग से ही होता है। उसे मोटर मे चढकर चलने मे आनन्द आता है। यदि किसी व्यावहारिक वैज्ञानिक रीति से उसे अपने छोटे से खेत मे उससे कुछ अधिक मन अनाज पैदा करने मे सहायता मिलनी है जो वह अब तक उस मे पैदा करता रहा है तो उसे बडा हर्ष होता है। जो रोग असाध्य समझा जाता रहा है उस से यदि किसी औषधि से वह बच जाता है तो उसे खुशी होती है। यदि यह भी कहा जाये कि उसे उस गहरी वैज्ञानिक जानकारी मे कुछ दिलचस्पी भी है जिसके आधार पर मोटर बनी है, या खेती के औजार बनते है या सिचाई के लिये नल या खाद बने है जिन मे कि अधिक अन्न उपजाने मे उसे सहायता मिलती है अथवा जिस के आधार पर रोगों के निदान अथवा चिकित्सा की अत्यन्त श्रेष्ठ रीतिया निकली है तो भी यह नही कहा जा सकता कि वह उसमे कुछ ज्यादा वास्ता रखता है। साधारण जन के प्रतिनिधि के नाते मै यह कह सकता हू कि वैज्ञानिक जानकारी का मेरे जीवन को बेहतर बनाने मे क्या भाग है और उसका व्यावहारिक प्रयोग उस उद्देश्य के लिये कैसे किया जा सकता है और उसके परिणाम क्या होते है इस मे मुझे ज्यादा दिलचस्पी है। मुझे आशा है कि जो प्रमुख वैज्ञानिक यहा एकत्रित हुए है वे मेरी इस बात मे बुरा न मानेगे कि साधारण जन के नाते मैं तभी सतुष्ट होऊगा जब हमारी समस्याओं के व्यावहारिक हल निकाल कर हमारे सामने हमारे वैज्ञानिक रख देगे। ये हल भी ऐसे नही होने चाहियें जो मेरी सामर्थ्य अर्थात् मेरे सीमित साधनो और औजारों को ध्यान में रखकर मेरी समझ से अथवा मेरे व्यावहारिक रीति मे उनको प्रयोग करने की मेरी सामर्थ्य से बाहर के है। मै आपसे यही निवेदन करूगा कि आप अपने काम को इस प्रकार चलाये कि उस के परिणाम साधारण जनो को सहज में ही स्वीकार हों। मेरा विश्वास है कि उन मे सहज बुद्धि की कुछ कमी नही है। तथा यदि एक बार वैज्ञानिक जानकारी के परिणामो की उपयोगिता के बारे मे वे आश्वस्त हो गये और यदि इन पर अमल करना उन की शक्ति और साधनो के बाहर की बात न हुई तो वे उन को अपने जीवन मे स्वीकार करेगे और अपनायेगे और वास्तव मे वे ऐसा करते भी है। सब से बड़ी बात तो यह है कि उन को ये सब परिणाम साधारण व्यावहारिक और बुद्धिगम्य रीति से उपलब्ध होने चाहिये। मै जानता हूं कि सभवतः यह सब बाते वैज्ञानिकों के निजी कार्य क्षेत्र की नही है और सभवतः राज्य को, अथवा सार्वजनिक सस्थाओ को वैज्ञानिक जानकारी और व्यावहारिक रीतियोंका जनता मे प्रसार करने के लिये कार्य करना आवश्यक हो सकता है। किंतु आपको उनका इस तरह विकास कराया है

जिन्हें कि राज्य और दूसरी संस्थायें अपना सके और जनता में उनका प्रचार कर सकें । मुझे यक़ीन है कि इन बातों की ओर आप उदासीन नही है । किंतु मेरी यह भावना है कि संभवतः आपके कार्य क्षेत्र के बारे मे साधारण जन का क्या दृष्टिकोण है यदि मै उसे आपको बताऊं तो आपको उस पर ध्यान देने मे कोई आपत्ति नही होगी ।

एक और बात है जिसकी ओर ध्यान दिलाने मे मुझे काफी हिचकिचाहट है और संकोच है तथापि मै आपका ध्यान उस की ओर दिलाना चाहता हूं। आधुनिक विज्ञान को अतीत की सफलताओ के प्रति उदासीन नही होना चाहिये और न उनकी उपेक्षा करनी चाहिये । उसे ऐसा तब भी न करना चाहिये जब कि इन के तह मे का सिद्धात अथवा उनकी पृष्ठ भूमि या तो स्वय विदित नही अथवा हो सकता है कि उन लोगो को भी ज्ञात न थी जिन्होने वास्तव में ये सफलताये हासिल की थी। आपकी अनुमति से मै अपने आशय को स्पष्ट करने के लिये कुछ उदाहरण दे देना चाहता हू । इजीनियरो ने हाल के दिनो में बडी तरक्की की है लेकिन तब भी इस देश के और सभवतः अन्यत्र के पुराने ज़माने के इंजीनियरों और निर्माताओं को हमे उपेक्षा के भाव से न देखना चाहिये । मै नही जानता कि उन दिनों कोई ऐसे इजीनियरी के विद्यालय या अन्य मस्थाये थीं या नही जिन्होने दक्षिण भारत के मन्दिरो अथवा ताज अथवा मुगल सम्राटों के किलों के निर्माण करने वालों को शिक्षा प्रदान की थी । इनमे भी कम प्रख्यात और कम महत्व वाली इमारतों की उन के कलात्मक महत्व के अतिरिक्त यह खूबी रही है कि वे यदि हजारों वर्ष तक नही तो सकडों वर्ष तक तो अवश्य आतप, वर्षा सब सहकर के भी ज्यों की त्यो खडी है । जहा भी लोहे के टुकडे इस्तेमाल किये गये है वहां उस हालत मे भी जबकि जहा उनको लगाया गया था वहा से हटाये जाकर उन्हे खुले मैदान मे वर्षो तक पडा रहने दिया गया है वर्षा, आतप के सारे आघात सहकर वे उसी तरह से बचे हुए है। इस प्रकार का दृश्य उडीसा मे कुणारक के सूर्य मन्दिर के चारो ओर दिखाई देता है । हमारी सब नई इमारतो मे आधुनिक युग का बना हुआ मसाला लगता है । मै कभी कभी सोचा करता हू कि क्या इन पुरानी इमारतों में लगे हुए मसालों की भी कभी जाच पड़ताल की गई है ? अथवा इन की वैज्ञानिक परीक्षा की गई है और क्या इन्हे खराब पाया गया है अथवा ज्याद खर्चीला पाया गया है और इस लिये इन का परित्याग कर दिया गया है ?

इसी प्रकार हम यह जानते है कि देशी चिकित्सा प्रणालियो मे कुछ ऐसी औषधिया है जिनसे वास्तव मे रोग दूर हो जाता है । यद्यपि हमारी जडी बूटियो के सबध में कुछ गवेषणा होती रही है तथापि मुझे इस बात पर यकीन नही है कि उन औषधियो, और नुसखो और उन के बनाने के तरीकों के बारे मे जिन्हे कि सब लोग जानते है और जो हमारी किताबों मे मिलते भी है कोई वैज्ञानिक खोज की गई है और वे क्यो इतने अच्छे साबित होते है इस बात के कारणो का पता चलाया गया है ।

दूसरे देशों मे जितनी पैदावार फ़ी एकड़ की जा सकती है उस की अपेक्षा हमारे देश में कृषि म फी एकड़ पैदावार कही कम होती है । कोशिश आज कल यह की जा रही है कि ऐसे तरीकों, खाद और दूसरी चीज़ों का इस्तेमाल शुरू किया जाये जिनसे कि पैदावार बढ़ जाये । और प्रयोग के लिये आरम्भ किये गये खेतों तथा प्रतियोगिताओं मे भाग लेने वाले लोगों की खेती की पैदावार अन्य देशो की अधिक से अधिक पैदावार के बराबर तक हुई है किंतु हम इस बात को नही भूल

सकते कि हमारे कृषक आधुनिकतम कृषिक सिद्धातों के व्यावहारिक प्रयोगों में से कुछ से परिचित है। उदाहरणार्थ एक के बाद दूसरे प्रकार की फ़सल लगाने की रीति से और अपनी उर्वरा शक्ति को पुन प्राप्त करने के लिये भूमि को बिना जोते छोड देने की रीति से तथा गहरी जुताई करने से जो लाभ होता है उसमे भी वे परिचित है। सिंचाई के लिये पानी को ऊपर उठाने के लिये भी उनके पास पुराने यान्त्रिक साधन है। हमे यह भी स्मरण रखना है कि हमारी भूमि के बडे भाग मे शताब्दियो से खेती होती रही है और तब भी हमारी भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रही है गो कि हमारे यहा पैदावार उन देशो से कम है जहा खेती कुछ शताब्दियों से ही आरम्भ हुई है। मुझे यह मालूम नही है कि इन पुराने तरीक़ो और साधनो का इस विचार से कि उनको किस प्रकार से सुधारा जा सकता है अध्ययन करने के लिये पर्याप्त ध्यान दिया गया है या नही और उस सबध मे कुछ गवेषणा की गयी है या नही। मुझे कुछ ऐसा लगता है कि पुरानी चीज़ो और तरीकों को सुधारने मे उससे कही कम मुश्किल और खर्चा होगा जितना कि नई चीजों और औजारो को नये सिरे से और खास तौर से खेती बाड़ी मे इस्तैमाल करने मे होगा।

इस बात के बावजूद कि मुझे ऐसा कहने के लिये प्रतिक्रियावादी अर्थात् ऐसा व्यक्ति कहा जा सकता है जो आगे देखने के बजाय अपनी दृष्टि पीछे की ओर लगाये रहता है मै यह कहना चाहता हू कि सभवत कुछ पुरानी चीजे ऐसी है जिनकी जाच पडताल करना आवश्यक है। यह ठीक है कि मै उन महान् सुधारों की ओर जो वैज्ञानिक गवेषणा के कारण सब दिशाओ में हुए है अपनी आखे बन्द नही कर लेना चाहता। और न अपनी समस्याओं के हल करने के बारे मे उन के व्यावहारिक प्रयोग के प्रति उदासीन ही हू। किंतु मौजूदा चीजों और तरीको की मै इस हद तक हिमायत करता हू कि उनकी अच्छाई, बुराई की पूरी जाच किये बिना उन को त्याग न देना चाहिये। मुझे कुछ ऐसा खयाल है कि विज्ञान किसी बात को भी बिना कारण ही अच्छा बुरा नही मान लेता वरन् उनको अपनाने से पहले उन को समझने की कोशिश करता है। मेरा सुझाव यह है कि किसी चीज का भी परित्याग करने से पहले इसी प्रकार की जाच की जानी चाहिये और किसी चीज को इस लिये न फेक देना चाहिये कि वह पुरानी है।

आपका जितना समय मै लेना चाहता था उस मे मै ने कुछ ज़्यादा ले लिया है। आपका समय लेने के लिये ही नही वरन विज्ञान और वैज्ञानिक विषयो के प्रति साधारण मनुष्य के अवैज्ञानिक तरीके से बाते करने के लिये भी मै आपसे क्षमा चाहता हू। भारतीय विज्ञान विद्या-परिषद् ने विज्ञान के ससार मे अपना स्थान बना लिया है। इस सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिये मुझे निमत्रित करके आपने मेरा जो आदर किया है उसके लिये मै आपको धन्यवाद देता हू।

कस्तूरबा बालिका आश्रम

ता० ३१-१२-५१ को कस्तूरबा बालिका आश्रम, ओखला में उसके आठवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा --

श्रीमती रामेश्वरी नेहरू जी, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि आपने मुझे यह मौका दिया है कि मै आपकी इस संस्था को देख सकू। यह बात सच है कि मै आज पहले पहल इस सस्था में आया हू और इसके पहले

कभी मुझे यहां क्या हो रहा है इसको देखने का मौका नही मिला था। आपने यह भी ठीक ही कहा है कि इसके पहले आप लोगो को इसका मौका कुछ ज्यादा मिला करता था कि हम सब आपके साथ मिल कर जो काम आप कर रहे है उस में हाथ बटावे। और इस समय वह मौक़ा कुछ कम हो गया है जिसका कारण आपको अच्छी तरह मालूम है। मगर मै बतला देना चाहता हूं और यह विश्वास दिलाना चाहता हू कि चाहे हम खुलकर आपके साथ बैठकर हाथ न बटा सके लेकिन हमारे दिल और हमारी सहानुभूति इस तरह के कामों मे अभी भी वैसी है जैसे पहले थी और मै आशा रखता हू कि जो भाई और बहन इस काम में इस वक्त लगे हुए है इस काम को उत्साह के साथ आगे बढ़ाते जायेगे। हम लोगो को मौका मिलेगा तो मदद देने में हम भी न हिचकेगे।

बहुत दिनों की बात है। शायद सन् १९२४-२५ की बात है कि जब ज़ोरो से देश भर में असहयोग आदोलन २०-२१ मे आरम्भ हुआ, उसके दो, तीन साल के बाद आप जानते ही हैं उस मे सुस्ती आ गई थी। उसी सुस्ती के जमाने मे बिहार विद्यापीठ नाम की सस्था बिहार में काम कर रही थी। उसी सस्था के इसी तरह के समारोह मे मै ने श्री राजगोपालाचारी को निमंत्रण दिया था कि, जैसे आपने मेरे हाथ से आज यह पारितोषिक वितरण कराया है उसी प्रकार वे आवे और बच्चो को आशीर्वाद दे। उस समय उन्होंने एक बात कही थी जो मुझे आज भी याद है। उन्होने यह कहा था कि १९२०-२१ मे एक बडा आन्दोलन हुआ और उसका असर सारे देश भर मे पडा। आज वह अगर्चे कुछ कम और कुछ ढीला पड गया है मगर तो भी हमको विश्वास रखना चाहिये कि जब समय आयेगा फिर वह जोर पकड लेगा। उन्होने यह भी कहा था कि इस तरह की जो सस्थाये है वह चिराग़ की तरह इस आन्दोलन की ज्योति को आज भी जीवित रख रही है और जैसे एक दिये से आप हजार दिये जला सकते है उसी तरह इस तरह की सस्थाये काम करती रहती है। उस चीज को मै भूलता नही हू। मै मानता हू कि चाहे आपको यह लगता हो कि आपके साथ हम लोगो का इतना हाथ नही बटता जितना पहले होता था और चाहे आपके मन मे यह खयाल आता है कि लोगों की सहानुभूति कम हो गई है या वे दूसरे कामों मे जिन मे उनकी दिलचस्पी ज्यादा है अधिक वक़्त देते है तो भी आपको मानना चाहिये कि जो इस तरह की रचनात्मक सस्थाये है वे महज टिमटिमाते हुए चिराग की ही तरह नही है बल्कि एक ऐसे दिव्य ज्योति वाले सूर्य के समान है जो एक बार फिर हमारे देश को अपनी लपट में लेकर अधूरे पडे काम को पूरा करने मे हमको मदद देगा। मै मानता हू कि जो रचनात्मक कार्यक्रम महात्मा गाधी जी ने हम को बताया था और जिस के अनुरूप ही यह संस्था थोडी बहुत अपनी शक्ति के अनुसार काम कर रही है, वह रचनात्मक कार्यक्रम ऐसा है जो भारत को गाधी जी के स्वप्नो के अनुसार बना सकेगा। अगर हमने इस रचनात्मक कार्यक्रम को छोड दिया तो इसका अर्थ यह होगा कि हमने उस चित्र को भुला दिया है जो उन्हों ने हमारे सामने रखा था और या उस की जगह कोई दूसरा चित्र अपने सामने रख लिया है और उसे पूरा करने मे लग गये है। मेरा अपना विश्वास है कि भारत अभी भी गाधी जी के बताये चित्र को भूला नही है और यद्यपि बहुत सी चीज़ें ऐसी देखने में आती है जिन से मालूम होता है और कुछ थोड़ी सी निराशा भी होती है, कि हम उनके रास्ते से अलग होते जा रहे है उसको भूलते जा रहे है या कम से कम उस पर ध्यान कम दे रहे है तो भी उस कार्य क्रम मे अभी भी इतनी शक्ति है कि यक न यक समय वह हमारे सामने फिर आयेगा और सामने आकर हम सब से क़बूल करा लेगा कि

हमें उसी पथ पर चलना है। इसलिये जितनी सस्थायें यह काम कर रही है उनमे मैं हमेशा दिलचस्पी रखता हूं और उन की जो कुछ थोडी बहुत मुझ से सेवा हो सकती है मैं करने के लिये तैयार रहता हूं। यद्यपि इस तरह के काम मे आज कल मै अधिक समय नही दे सकता हूं और न इस क्षेत्र में अधिक काम ही कर सकता हू किंतु मुझे विश्वास है कि फिर मौका आयेगा जब मुझे यह काम करना होगा और उसी में लगना होगा। यह मै इसलिये सोचता हू क्योंकि मै मानता हू कि यही काम सब से बडा है। इसलिये जो भाई बहन इस काम में लगे हुए है वे इससे घबराये नही, इसे छोटा नही समझे। अगर दिन प्रति दिन उन के नाम व तस्वीरे अखबारो में न छपे तो उसकी परवाह न करके वे इस काम को करते जाये। मै उम्मीद करता हू कि जो बालिकाएं यहा तैयार हो रही है वे आगे चल कर देश की और भी उन्नति करेगी और देश को उस रास्ते पर ले जायेगी जिस पर गाधी जी ले जाना चाहते थे। इसलिये मै बालिकाओ को बधाई देता हू कि उनका सौभाग्य है कि वे यहा आई और यहां आकर सेवा कार्य कर रही है। जो कुछ उन्होने कार्य करके दिखलाया उससे संतोष हुआ। वे एक जगह नही अनेक प्रातों से आई है। मुझे आशा है कि यहा से दीक्षित होकर वे अपनी अपनी जगह मे अपने अपने स्थान मे एक एक केन्द्र बन जायेगी और अपने कार्यो के द्वारा इस ज्योति को फैलायेगी। और जैसे जैसे समय बीतेगा इस काम को करने वाली लडकियों की सख्या बढती जायेगी और जैसे जैसे वह सख्या बढती जायेगी काम का फैलाव होता जायेगा। मै इस आशा में हू और यह उम्मीद रखता हू कि इसमे कभी त्रुटि या कमी नही होने पायेगी।

आपने रुपये की कमी की शिकायत की है। मै मानता हू कि अक्सर अपने काम मे हम रुपये की कमी महसूस किया करते है। पर महात्मा गाधी कहा करते थे कि जो काम करने वाले होंगे उन को रुपये की कमी नही होगी। मुझे इस बात का विश्वास है कि जैसे जैसे आपका काम बढेगा, आपको रुपये की कमी नही रहेगी। आपने भी इसका अनुभव किया है। एक सज्जन ने जिन को आपके इस काम से प्रेम है, खुद आकर अपनी मर्जी से आपको जगह दे दी है। इसी तरह से आपके यहा जो कुछ हो रहा है उसको लोग देखेंगे और उस से प्रभावित होकर आपकी सहायता करेंगे और आपको पैसे की कमी नही रहेगी।

अभी जो काम आप कर रहे है उस मे मै कुछ खास सलाह नही दे सकता हू क्योंकि मै जानता हूं कि जिन लोगों ने इस काम मे इतना समय लगाया है जिन्होंने इस के सबध मे बहुत विचार किया है और जिन्हे इस कार्य का कुछ न कुछ सक्रिय अनुभव है, वे ही लोग इसका संचालन कर रहे है। उनके सामने मै कुछ ऐसी बात नही कह सकूगा जो खुद वे नही जानते हों, या जिस का उन्हे अनुभव न हो। मै इतना ही कह सकता हू कि आज कल हमारी शिक्षा पद्धति ऐसी है कि उस में चरित्र पर कम ध्यान दिया जाता है। गैर सरकारी संस्थाये, इस तरह की रचनात्मक संस्थायें विद्यार्थियों को चरित्रवान बना सके तो वह बहुत बडा काम होगा—ऐसा काम जिसके लिये सारा देश उनका अहसानमद रहेगा। मै आशा करता हू कि आप अपने यहा इस बात का प्रबन्ध करेगे।

जिन लड़कियों ने इनाम पाया उन को मै बधाई देता हू और जिन्होंने नही पाया उन को सलाह देता हूं कि वे रंज न करे; वे कोशिश करे और अगर आज नही तो कल वे भी इनाम पायेंगी।

आपने यह कहा है कि १५० लड़कियों के रहने की जगह यहा हो जाये तो अच्छा है। आपके यहां जगह तो है। मकान की ज़रूरत है। आज कल हमारे यहा जितनी सस्थायें चलती है उन सब

संस्थाओ को पैसे की कमी होने का एक विशेष कारण यह है कि हम मकानों में बहुत खर्च करने लगे है। बड़े बड़े मकान बनाना चाहते है। कम खर्चे मे हमे इस तगी को दूर करना चाहिये। आपको मालूम ही है कि गाधी जी ने अपने लिये सेवा ग्राम में झोंपडी बनवाकर देश के सामने एक उदाहरण रख दिया। उसमे रहकर वे सारे देश का काम करते थे। हमारे बच्चों के पढ़ाने का काम भी झोपडी मे हो सकता है। मै चाहूगा कि कम से कम खर्चे मे अच्छे से अच्छा मकान आप बनावे और उस मे बच्चियो को पढावे, सिखावे और अगर आपने इस बात पर ध्यान दिया तो पैसे की कमी—वह कमी जो आप महसूस करते है—उसे आप कम महसूस करेगे। मै आशा करता हू कि आप सब इस बात पर ध्यान देंगे।

आप सब भाइयो और बहनो को फिर एक बार मै धन्यवाद देता हू और बच्चों को बधाई देता हू।

आल इंडिया फाइन आर्टस सोसायटी

*आल इडिया फाइन आर्ट्स सोसायटी के नये भवन का उद्घाटन करते समय राष्ट्रपति ने कहा—

श्री मैनन, बहिनो और भाइयो,

यह बड़े सतोष की बात है कि यहां राजधानी में आप की सस्था का स्थायी स्थान अब बन जायेगा। सन् ३१ से आप की संस्था अस्तित्व मे रही है और अपने इस जीवन काल मे इस ने अपना कार्य क्षेत्र देश के सुदूर भागों मे फैला लिया है। और वहां इस की अपनी प्रादेशिक समितिया आज कल कार्य कर रही है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आप ने अपना काम केवल कला निर्माण तक ही सीमित नही रखा है वरन् जनता में उस के प्रचार के लिये भी सक्रिय कदम उठाये है और जैसा कि अभी बताया गया है सौ से अधिक प्रदर्शिनियां की है। यह अत्यन्त सुन्दर विचार है कि अखिल भारतीय चलती फिरती कला प्रदर्शनी की जाये और मेरा यह विश्वास है कि ऐसी जो प्रदर्शनी आप ने संगठित की है वह देश के अनेक नगरो में जा चुकी है और जनता को अत्यन्त पसन्द आई है। कला की सेवा के लिये आप देश से बाहर जा चुके है और इस नगर में और अन्यत्र कई बार अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी संगठित की है। आप अब तक जो सफलता प्राप्त कर चुके है उस के लिये मै आप को बधाई देना चाहता हूं, और मैं यह विश्वास सहित कह सकता हूं कि आप अपने कामों से उन सब लोगो के आदर के अधिकारी बन गये है जो हमारी राष्ट्रीय कला से प्रेम करते है। अपनी प्रदर्शनीय वस्तुओं के रखने के लिये और अन्य प्रयोजनों के लिये जिस भवन के निर्माण का आप का विचार है वह मेरे विचार में आधुनिक भारतीय कला तथा अन्य देशों के कला के नमूनों के रखने का एक अच्छा आगार होगा। आपकी मांग कुछ ज्यादा नहीं है और कम से कम मुझे यह आशा है कि आप का काम रुपये की कमी के कारण न रुकेगा। मुझे इस में कोई सन्देह नही है कि सरकार जिस ने प्रारम्भिक अनुदान दे कर इस कार्य के सम्बन्ध में

*अंग्रेजी से हिन्दी मे अनुवाद

अपनी दिलचस्पी पहले ही ज़ाहिर कर दी है जो भी मांग आप करेंगे उस पर सहानुभूति-पूर्ण पूरा विचार करेगी ।

. अभी हाल के दिनों में हमारे देश भारत में कला को पर्याप्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है । यह आश्चर्य की बात नही है कि उस पर यह कठिनाइयां पडी किन्तु अब उस के खूब फूलने और पनपने का समय आ गया है । मेरा विश्वास है कि ऐसे युगों में जिस में हो कर कि आज हमारा देश गुजर रहा है मानव आत्मा की विभिन्न क्षेत्रो मे अभिव्यक्ति हुई है । हम न अभी हाल में ही स्वतन्त्रता प्राप्त की है और उस की अभिव्यक्ति केवल राजनैतिक सस्थाओ में ही न होगी वरन् आर्थिक समुन्नति तथा "कला के विभिन्न रूपों मे भी होगी।" धार्मिक और आध्यात्मिक आदर्श अत्यन्त पुरातन काल से भारतीय कला के प्राण और हृदय रहे हैं । मै स्वय न तो कलाकार हूं और न कलाविद् किन्तु मेरी यह भावना है कि सच्ची कला केवल वास्तविक का ही कोरा चित्रण नही है । यह तो सर्वदा ही ऐसे विचार की ओर उन्मुख रहती है जो अभी वास्तविकता मे परिणित नही हुआ । फोटोग्राफी द्वारा लिया गया चित्र वास्तविकता का प्रतिबिम्ब हो सकता है तथा हमें उस वस्तु की याद दिला सकता है जिस के बारे मे हम ने सुना है या जिसे देखा है और या जिस की हमें अनुभूति हुई है किन्तु वह सच्ची कलात्मक सृष्टि का दर्जा नही पा सकता। आदर्श को वास्तविकता कभी पूरी तरह से पकड़ या प्रतिबिम्बित नही कर सकती। इस का यह अर्थ कदापि नही है कि कला वास्तविकता से कुछ विभिन्न और पृथक वस्तु है। इस का अर्थ केवल यही है कि वास्तविकता में जो कमी है उस को कला पूरी करे। यह उद्देश्य तभी पूरा हो सकता है जब कलाकार की पृष्ठभूमि धार्मिक और आध्यात्मिक हो जिससे उसकी कला अनुप्राणित होती हो । दूसरे शब्दों मे जैसा कि महात्मा गाधी का कथन है कला आत्मा की अभिव्यक्ति है । वाह्य रूपों का महत्व इसी सीमा तक है जिस तक कि वे मानव की अन्तरआत्मा की अभिव्यक्ति होते हैं । सच्ची कला के लिये यह आवश्यक है कि वह अन्तर्तम के दर्शन के संबंध में मानव चेतना की सहायता करे ।

यही बात है जो कला को एक साथ ही सर्वव्यापी और संकुचित बनाती है। यह सर्वव्यापी इस दृष्टि से है क्योकि वह सब के लिये आकर्षक होती है । यह सकुचित इस दृष्टि से है कि कुछ ही लोग उस सत्य को पहचानते है जो इस की तह में होता है । मेरी यह आशा है कि नव जागरण और नव जीवन के इस युग में हमारे कलाकार कला के क्षणिक स्वरूप के पीछे न दौड़ कर उस के अनन्त सत्य की ही साधना करेंगे । अन्ततोगत्वा कलाकार की सब से बडी देन यही तो है कि वह असंख्य अपरिचित व्यक्तियो के विचारों और जीवन का निर्माण करता है और यह वह तभी कर सकता है जब कि उस की कला सत्य का प्रतिबिम्ब हो। इसी अर्थ में सत्य सौन्दर्य है, और सौन्दर्य सत्य है । हमें ऐसे कलाकारों की आवश्यकता है जो हमारे देशो के लक्षाधिलक्ष वासियों के जीवन को कल्याण मार्ग पर चला दें और जो उन्हें अपने भाग्य की गरिमा और महानता की झांकी दिखा दें और जो मानव जाति की सेवा में अपनी सृजनात्मक शक्ति को लगा दें। आप भारत के कलाकारों के सामने यह आदर्श हो और आप को ऐसी प्रेरणा हो यही इस शुभ अवसर पर भगवान से मेरी विनती है ।

६५४

बाल भवन का उद्घाटन

तारीख २४-२-५२ को बम्बई में बाल भवन का उद्घाटन करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा——

महामहिम राज्यपाल महोदय, मुख्य मन्त्री जी, बहिनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि आप ने मुझे यह मौका दिया कि मै इस समारोह मे शरीक हो सका। एक ज़माना था जब यह समझा जाता था कि बच्चों को पढ़ाने और सिखाने के लिये उन को कडी सजा देना, मार पीट करना ज़रूरी है और मै समझता हूं कि पुराने खयाल के लोग आज भी मौजूद है जो समझते है कि बगैर इस तरह की सख्ती के कोई शिक्षा नही दी जा सकती है कोई चीज सिखाई नही जा सकती है और उन में अगर कोई दोष आ जाये, ऐब आजाये तो, उस को दूर नही किया जा सकता है। मगर आज ससार के विद्वान जो इस विषय पर ध्यान दे रहे है, जो इस का अध्ययन कर रहे है वे इस नतीजे पर पहुचे है कि ईश्वर की दी हुई शक्तियां हमारे सभी बच्चो के अन्दर मौजूद हैं और उन शक्तियों को जाग्रत कर देने का काम हमारे शिक्षा शास्त्रियो का है। उन को दबा कर, कडी सजा दे कर उतनी खूबी और आसानी से उनके ऐब आप दूर नही कर सकते है जितनी खूबी और आसानी से उन के अन्दर अच्छी भावना जाग्रत कर के उन के ऐबो को आप निकाल सकते है और इस लिये आजकल यहां ही नही सभी जगहो मे यह एक मानी हुई बात हो गई है कि बच्चो को तालीम देने के लिये उन के अन्दर जो अच्छी अच्छी शक्तियां छिपी हुई है उन को जाग्रत करना चाहिये और चूकि सख्ती से ज़्यादा प्यार और मोहब्बत का असर पड़ता है इसलिये प्यार और मोहब्बत से अधिक काम लेना चाहिये। यह जो बाल भवन आप ने क़ायम किया है और इस तरह की जो दूसरी संस्थायें काम कर रही है वे इसी आधार पर काम कर रही है। हम यह भी देखते है कि हमारे देश के अन्दर या शायद और देशो में भी बच्चो की शिक्षा का अर्थ केवल पुस्तकी ज्ञान, अक्षर ज्ञान माना जाता है और इसी ज्ञान को उन को देने के लिये उन के साथ सख्ती की जाती है या स्कूलों में पढाने का जो पाठ्य क्रम होता है उस पर अधिक ज़ोर दिया जाता है। मगर मनुष्य का जीवन केवल पुस्तक से ही पूरा नही होता है; उस के लिये और भी चीजें ज़रूरी है जिन में चरित्र बहुत ही जरूरी चीज़ है और अगर हम चरित्र को दुरुस्त नही करें और उस को ऐसा मौक़ा नही दें कि वह ठीक तरह से स्फुटित हो सके तो पुस्तकी ज्ञान न तो मनुष्य को बड़ा कर सकता है और न ऊंचा उठा सकता है। और चरित्र को दुरुस्त करने में जिस तरह के वातावरण में, जिस तरह की आब व हवा मे बच्चे पाले जाते हैं जब वे बड़े होते है तो उन का बड़ा असर होता है। इसलिये इस तरह की जितनी भी संस्थायें अपने देश में काम करें जहा बच्चों को इस का मौका मिले कि उन को केवल पुस्तकी ज्ञान ही नही मिले बल्कि और बातों का भी ज्ञान मिले उतना ही अच्छा होगा। केवल पुस्तकी ज्ञान से तो काम नही होने वाला है, चरित्र गठन और भी ज्यादा जरूरी है और ऐसी संस्थाओं में जो ऐसे काम होते हैं मैं समझता हूं वे देश के लिये बड़े कल्याणकारी काम होंगे। इस लिये मुझे जब किसी बच्चों की शिक्षा संस्था में जाने का मौक़ा मिलता है तो मैं उस संस्था को इसी नज़र से देखना चाहता हूँ कि

वहां उन के चरित्र के अच्छा बनने के क्या साधन है, उस पर किस तरह से जोर दिया जाता है और बच्चों के अच्छे नागरिक बनाने के लिये क्या काम होते है । उस लिये जब बाला साहब ने मुझ से इस बात का आग्रह किया कि मै यहां हाज़िर हो कर इस समारोह में भाग लू तो मैं ने खुशी से उसे इस लिये स्वीकार कर लिया कि और कुछ नही तो इस मे सम्मिलित हो कर थोड़ा प्रोत्साहन दे दू और इसी भावना से मै यहा आया हूं ।

जो कुछ बच्चों ने यहां गा कर, खेल कर दिखलाया उस से मुझे बहुत ही सतोष हुआ । मै समझता हूं कि आप के बच्चे इस बाल भवन से और अधिक लाभ उठाते जायेगे । बम्बई जैसे शहर में पैसे की कमी नही होनी चाहिये । जो आपने निवेदन किया है उस के फलस्वरूप मुझे पूरी आशा है कि इस काम को आगे बढाने मे पूरी सहायता मिलती जायेगी । मै आप सब को हृदय से धन्यवाद देना चाहता हू कि मुझे इतने बच्चो को एकत्रित देख कर जो उल्लास और खुशी होती है उस का मौका आप ने दिया । जिस तरह से किसी आदमी को फूलो के बगीचे मे जा कर खिले हुएँ फूलो को देख कर आनन्द होता है वैसे ही जिन की अवस्था अधिक हो जाती है और जो मुर्झाने लगते है उन को बच्चो के बगीचे मे जा कर आनन्द होता हे, उन का हृदय प्रफुल्लित होता है और मेरा हृदय प्रफुल्लित हुआ जिस के लिये मै आप को विशेषतया धन्यवाद देना चाहता हूं ।

न्यू टेक्सटाइल स्पिनिंग मशीनरी

*न्यू टैक्सटाइल स्पिनिंग मशीनरी के थाना जिले मे २५ फरवरी सन् १९५२ को उद्घाटन के अवसर पर राष्ट्रपति जी ने कहा--

आज के उत्सव मे भाग लेने में तथा नैशनल मशीनरी मैन्यूफैक्चरर्स लिमिटेड के कारखाने का उद्घाटन करने में मुझे बडी प्रसन्नता है । इस देश मे आधुनिक युग में जो उद्योग धन्धे आरम्भ किये गये हे उनमें सब से पुराना कपडा उद्योग है और जैसा कि आपने कहा है लगभग सौ वर्ष हुए जब कि यहा प्रथम कारखाना स्थापित हुआ था तब से हमारा कपडे का उद्योग बहुत बढ गया है । यह उद्योग आजकल औसतन लगभग ४ अरब गज कपडा तथा ३५ करोड पौड वज़नी सूत पैदा कर सकता है । हमारे देश का यह सब से बडा उद्योग है और देश भर के समस्त औद्योगिक उत्पादन का लगभग चतुर्थांश उत्पादन यह उद्योग करता है । अत इस के महत्व को बढा करके बताया जा सकता ही नही । हमारे कपडे के कारखाने काम कर रहे है और बढ रहे हैं और इसलिये हमें कपडा बनाने की मशीन बहुत भारी तादाद मे आयात करनी पड़ती है । सन् १९४८--१९४९, १९४९--१९५०, १९५०--१९५१ मे औसतन आयात लगभग १० करोड़ २१ लाख रुपये का रहा है । यही नही कि हम को इतने अधिक यन्त्रों का आयात नही करना चाहिये वरन् आजकल यह भी आवश्यक है कि इस बड़े और आवश्यक उद्योग के चालू रखने के लिये हम दूर देशो पर अपनी निर्भरता को कम करे । यह बात अब लोग पहचान रहे हैं कि जब तक या तो सारे या कम से कम बहुत ज़्यादा ऐसे यन्त्र अपने यहा पैदा नही करने लगते जितने कि हमारे कारखानो के चालू रहने और बढ़ने के लिये ज़रूरी है तब तक विभिन्न क्षेत्रो मे हमारा औद्योगीकरण पूरा नही हो सकता, और न उसको अच्छी तरह से चलाया जा सकता है और न उससे

---

*अंग्रेज़ी से हिन्दी मे अनुवाद

उतना काम लिया जा सकता है। बहुत से क्षत्रों में हम ऐसी मंजिल तक पहुच गये है जहा हमारे कारखानों के बढ़ाने और चलाने के लिये काम में आने वाले मशीनी पुर्ज़ों का निर्माण आवश्यक हो गया है। इस सम्बन्ध मे कपडा बुनने की, रुई ओंटने की, पटसन और शक्कर की, मशीनरी का यहा उल्लेख किया जा सकता है। अत मुझे हर्ष है कि नैशनल मशीनरी मैन्यूफैक्चरर्स लिमिटेड हमारे कपडा कारखानों में आने वाली मशीन बना सकेंगे और उसकी अधिकांश माग को पूरा कर सकेंगे। मुझे बताया गया है कि आप की सालाना पैदावार लगभग सवा करोड रुपये की होगी और हमारे कपडा उद्योग में काम आने वाली सूत कातने की मशीनों की बीस फी सदी आवश्यकता को पूरी कर सकेगी। और कपडा उद्योग मे काम आने वाले कुल रिंग फ्रेमो की चालीस पैंतालीस प्रतिशत आवश्यकता पूरी कर सकेगी। मुझे आशा है कि टैक्समाको कारखाने के साथ साथ जो कि कुछ साल पहले ही से चालू है और जिसने भारत और पाकिस्तान की २०० से अधिक कपडा मिलो को ८०० रिंगफ्रेम दिये भी है और जिसकी चीजें पूरी तरह सन्तोषजनक पायी गयी है आप उन चीज़ों की हमारे यहा की माग को पूरा कर सकेंगे जिन चीजों को ये दोनों कारखाने बनाते है। तब भी इस दिशा मे बहुत कुछ करने को बाकी रहेगा। और इस तरह काम जो आगे बढा है उससे मुझे आशा होती है कि वह दिन दूर नही है जब हम इस स्थिति में हो जायेंगे कि अपनी कातने की मशीनों की आवश्यकता को ही नही वरन् बुनने की मशीनों की भी पूरी आवश्यकता को पूरा कर सकेंगे। आपके अध्यवसाय के लिये मै आपको बधाई देता हू और इस बात के लिये भी बधाई देता हू कि आप इस क्षेत्र मे ससार के सब से पुराने और माल बनाने वाले अर्थात् इगलैण्ड के टैक्सटाइल मशीनरी मेकर्स लिमिटेड का सक्रिय सहयोग प्राप्त करने में सफल हो गये है और उनको जो व्यावहारिक अनुभव हुआ है वह आपके कारखाने को इस प्रकार मिल जायेगा और काम मे आने वाली मशीनो को और अधिक अच्छा बनाने की जो बराबर गवेषणाये हो रही है उनके परिणाम से भी आप को लाभ होगा। यह भी बधाई की बात है कि यह कारखाना इस माल के उपभोक्ताओ का सहकारी उद्योग है और इस की पू जी मे भारतीय कपडा मिलो के मालिको का ही ज्यादा हिस्सा है। हमे यह बात अनुभव से पता चली है कि कल पुरज़े बनाने वाली मशीनों के अभाव के कारण हमारे देश के औद्योगीकरण की प्रगति किस प्रकार रुकी पडी रही है। इसके समतुलित और सर्वतोन्मुखी और शीघ्रता से विकास के लिये ऐसे बुनियादी उद्योगों की अत्यन्त आवश्यकता है। हमारे उद्योगपतियों और पू जीपतियो मे अध्यवसाय की कमी नही है और जैसा कि विभिन्न क्षेत्रो मे प्राप्त अनुभव से प्रकट है हमारे श्रमिको मे ऐसी सहज बुद्धि है कि वे ऐसे काम को जल्दी सीख लेते है। शिल्पिक शिक्षा के प्रसार, पू जी की प्राप्यता और अपने प्राकृतिक सम्पति साधनों के समुचित प्रयोग के आधार पर हम आगे के लिये यह विश्वास कर सकते है कि सभी क्षेत्रों में औद्योगिक विकास का युग आरम्भ होने वाला है। मुझे कोई शका नही है कि आप उद्योगपति और पूंजीपति राष्ट्रीय पुनरुद्धार के इस महान् कार्य में महत्वपूर्ण भाग लेगे और इसमें अपना बहुत मूल्यवान अश दान करेगे।

श्री कृष्णराज ठैकरसी और आप के साथियों और सहकारियों को मै धन्यवाद देता हू और उद्योग मे आपकी पूरी सफलता के लिये सद्कामना करता हूं। तथा मैं इंगलैण्ड के टैक्स-

टाइल मशीनरी मेकर्स लिमिटेड के प्रति और विशेषतया मिस्टर कैनथ प्रैस्टन के प्रति उन की उस तत्परता के लिये अपनी कृतज्ञता और आदर प्रकट करता हूं जिस से कि वे इस देश में इस उद्योग के आरम्भ करने के लिये हमारी सहायता के लिये आगे बढ़े और इस की उन्नति के लिये जो दिलचस्पी वह बराबर दिखाते रहे और जिस के बारे में मुझे भरोसा है कि वह हमारे लिये बहुत लाभदायक सिद्ध होगी। इन शब्दों के साथ मैं इस कारखाने का उद्घाटन करता हू और इसकी सफलता के लिये पूरी सद्कामना प्रकट करता हू।

रायल एशियाटिक सोसायटी, बम्बई

*२५ फरवरी १९५२ को रायल एशियाटिक सोसाइटी की बम्बई शाखा के समक्ष बोलते हुए राष्ट्रपति ने कहा—

माननीय श्री चावला, बहनो और भाइयो,

रायल एशियाटिक सोसायटी की बम्बई शाखा तथा जिस केन्द्रीय पुस्तकालय को अभी मैंने देखा है उस में आकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। आपने यह ठीक ही कहा है कि केन्द्रीय पुस्तकालय केवल मात्र पुस्तकालय ही नहीं है वरन् नव जीवन और क्रियाशीलता का भी केन्द्र है। पिछले वर्षों में उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों ने साहित्य और कला के अध्ययन के लिये बहुत कुछ किया है। भारतवर्ष में पूर्वीय विषयों के अध्ययन के वे पथ प्रदर्शक थे और ऐसी शिक्षा संस्थाओं के वे संस्थापक थे। मुझे इस में शंका नहीं है कि भविष्य में भी वे अपनी परम्पराओं का पालन करते रहेंगे। पहले इस पुस्तकालय को चलाने के लिये आवश्यक निधि एकत्रित करने के लिये वे लोगों से लाटरी खरीदने की अपील किया करते थे किन्तु अब मुझे इसमें कोई शंका नहीं है कि यदि इसी रीति से निधि इकट्ठी की भी जा सकती हो तो आप संभवतः इस संस्था को उस से अलग ही रखेंगे। मुझे विश्वास भी है कि आज कल इतने अच्छे काम के लिये निधि इकट्ठी करने के लिये ऐसा करना आवश्यक नहीं है। यदि आज किसी बात की कमी है तो वह ऐसे सच्चे और अच्छे आदमियों की कमी है जो किसी विशेष संस्था का काम ठीक ठीक तरह से चला सके। आप के पुस्तकालय में जो पुस्तकें हैं उन की कुछ झांकी ही अभी अभी मुझे मिली है। वहां जो समय मैंने व्यतीत किया है वह इतना नहीं है कि कुछ ज्यादा देखा जा सके। लेकिन जो थोड़ा बहुत मैं ने देखा है उसी से मुझे यह पता चल गया है कि आपने कितनी मूल्यवान पुस्तकें कितनी अधिक संख्या में यहां इकट्ठी कर ली हैं और अब तो आपने अपना काम और भी बढ़ा लिया है। आप इसी बात से संतुष्ट नहीं हैं कि अनेक विद्वानों को अध्ययन करने और अपनी गवेषणा का परिणाम जनता के सामने रखने की सुविधा ही आप प्रदान करें वरन् आपने यह भी निश्चय कर लिया है कि इस केन्द्रीय पुस्तकालय के द्वारा सर्व साधारण की सेवा भी करें और मुझे इस बात का बड़ा हर्ष है कि इतने अधिक लोग इस संस्था द्वारा दी गई सुविधाओं से लाभ उठा रहे हैं। मैं समझता हूं कि जैसा कारलायल ने कहा है पुस्तकालय ही सच्चा विश्वविद्यालय हो सकता है और पुस्तकालयों के द्वारा ही देश की प्रगति हो सकती है। मुझे विश्वास है कि वह दिन दूर नहीं है कि जब हम इस बात का गर्व कर सकेंगे कि हमारे देश के

---

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद।

नगरों में ही नही वरन् गावों में भी पुस्तकालय है। प्राचीन युगों मे हमारे देश वासी साहित्य और पठन पाठन को इतना महत्व न देते थे जितना कि अन्य देशों में दिया जाता रहा है। सच तो यह है कि हमारे यहा शिक्षा देने की रीति कुछ और ही थी। हमारे यहा बहुत कुछ सीमा तक सस्कृति की रक्षा और प्रसार मौखिक शब्द द्वारा अथवा अन्तरानुभूति द्वारा ही हुआ है। और उन्ही शब्दों द्वारा उसकी इतनी उन्नति हो सकी है। आधुनिक युग में तो इसके लिये पुस्तकों की भी छपी हुई सामग्री की भी आवश्यकता है और इसलिये मुझे कोई शका नही है कि पुस्तकालय आन्दोलन का भविष्य महान् है। पहले से ही यह हमारे देश में फैल रहा है और मुझे यह आशा है कि वह दिन दूर नही है जब हमारे देश में कोई भी नर या नारी अशिक्षित न होगी। तब पुस्तकालय का कार्य सफल हो गया होगा और इस पुस्तकालय ने भी अपने पुराने गौरव की रक्षा कर ली होगी। मुझे प्रसन्नता है कि आपका कार्य इतनी अच्छी तरह से आरम्भ हुआ है। मुझे आशा है कि जैसा आपका पुराना इतिहास रहा है जैसी सफलतायें आपको बीते दिनो मे मिली है उसी प्रकार की सफलतायें आपको भविष्य में भी मिलेंगी। आपकी सफलता के लिये मेरी पूरी सद् कामना है। इस पुस्तकालय में आने का जो अवसर आपने मुझे दिया है और इसकी प्रशसा में कुछ शब्द कहने का भी जो अवसर मुझे दिया है उस के लिये मै आपको धन्यवाद देता हू।

पूना विश्वविद्यालय में अभिनन्दन

*पूना विश्वविद्यालय मे २६ फरवरी १९५२ को उपकुलपति डाक्टर जयकर के अभिनन्दन भाषण के उत्तर मे राष्ट्रपति ने कहा—

महामहिम राज्यपाल साहब, डाक्टर जयकर, बहनो और भाइयो,

इस विश्वविद्यालय में आने के लिये मुझ से किसी प्रकार के आग्रह करने की आवश्यकता तो पड ही न सकती थी। मुझे पैंतीस वर्ष पहिले की जब मै प्रथम बार महात्मा जी के सपर्क मे आया था एक घटना की याद आज आती है। वे तब दक्षिण अफ्रीका से लौटे थे और बिहार गये हुए थे। वे उन दिनों चम्पारन में ठहरे हुए थे और वहा बेतिया के निकट किसी स्थान को सध्या समय जा रहे थे। उन्होने तभी सारे देश का दौरा समाप्त किया था। श्री गोखले के आदेशानुसार वर्ष भर तक कोई भाषण न करने का उन्होंने निश्चय किया हुआ था। यह वर्ष तब तक पूरा न हुआ था और उन्होंने चम्पारन मे कार्य आरम्भ कर दिया था। उन से मै ने एक बात पूछी "आपने सारे देश के सब स्थानों को देखा है, समस्त देश में आप किस स्थान को सर्वोत्तम मानते है"? उन्होंने उत्तर दिया "पूना आधुनिक तीर्थ स्थान है। मुझे ऐसा और कोई स्थान मालूम नही है जहां त्याग भावना इस प्रकार केन्द्रित हो गयी हो जिस प्रकार कि वह पूना मे केन्द्रित है और जब भी तुम्हें अवसर मिले तुम जाओ और पूना अवश्य देखो"। मै ने उन की यह सम्मति मानी और बिहार के बाहर सर्व प्रथम जिस स्थान की मैने यात्रा की वह पूना ही था। यह ठीक है कि उस से पहले मै बंगाल में हो आया था। किन्तु बगाल और बिहार का विभाजन तो अभी हाल में ही हुआ है और कुछ वर्ष पहले तो वह एक ही प्रांत थे। मै सन् १८ में पूना आया था। तब से ही त्याग के इस केन्द्र के लिये मेरे मन में आदर और सम्मान रहा है। मुझे स्मरण है कि जब मै प्रथम बार यहां आया था तो मै उन संस्थाओं मे से कुछ में गया था जो उन दिनों यहां चल रही

---

* अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद।

थी। डाक्टर पराजपे उस समय सभवत. यहा से चले गये थे किंतु इस बारे मे मै यकीनी तौर पर कुछ नही कह सकता किंतु यहा अन्य लोग थे जो उन सस्थाओ को चला रहे थे जिन मे मै उस समय गया था। तब से मै ने यह निश्चय कर लिया है कि जब कभी भी मै इस ओर आऊ तो यहा से कुछ प्रेरणा प्राप्त करने के लिये इस स्थान मे अवश्य आऊ।

आपने बहुत ही शुभ परिस्थितियो मे कार्य आरम्भ किया है। आपके पास सुन्दर भवन है, बृहत् उद्यान है और इन से भी कही अधिक और मूल्यवान आपके पास त्याग भावना वाले और विद्वान कार्यकर्त्ता है। ये ही तो एक सच्चे विश्वविद्यालय के निर्माता हो सकते है। मुझे पूरा विश्वास है कि त्याग और विद्या की पुरानी परम्परा के कारण तथा तीस वर्षो से अधिक राजनैतिक कार्य के पूना के केन्द्र होने के कारण बनी अपनी राजनैतिक कार्य की परम्परा के कारण आप यदि उस स्थान से अधिक ऊचा नही तो कम से कम उतना ऊचा स्थान तो प्राप्त कर ही लेगे जितना कि किसी भी अन्य विश्वविद्यालय ने प्राप्त किया है। यह भी बड़े सतोष की बात है कि आप उत्तमोत्तम प्रकार के गवेषणा कार्य पर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहे है। और अब आप विज्ञान की ओर अपना ध्यान दे रहे है जिसे कि अब तक पूना मे अपना उचित स्थान नही मिला था क्योंकि अब तक पूना मे साहित्य और कला के पक्ष पर ही ज्यादा ध्यान दिया गया है। मुझे विश्वास है कि सरकार अर्थात् न केवल राज्य सरकार वरन् केन्द्रीय सरकार भी आपकी सहायता के लिये प्रस्तुत रहेगी ; क्योंकि वे हर ऐसे विश्वविद्यालय की सहायता करने के लिये तत्पर हैं जो गवेषणा का कार्य करता है और सर्व साधारण मे शिक्षा का प्रचार करता है। भारत सरकार ने अपनी दो सस्थाओं को यहा स्थापित करके आपके कार्य के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की है। मै समझता हू कि यह बात महाराष्ट्र को वैज्ञानिक शिक्षा के महान् केन्द्र बनाने की पूर्व परिभाषा के समान ही है। अपने प्रयासों में आपको सफलता हो ऐसी मेरी शुभकामना है। और डाक्टर जयकर जैसे उपकुलपति के नेतृत्व में आप का विश्वविद्यालय काम कर रहा है और उन की सरक्षण मे आप के शैशव काल का लालन-पालन हुआ है। इसलिये आपको यह विश्वास रखना चाहिये कि सब काम ठीक हो जायेगे और वह दिन दूर नही है कि जब आपका यह विश्वविद्यालय इस देश के महान्तम और सर्वोत्तम विश्वविद्यालयों मे से एक हो जायेगा। इस विश्वविद्यालय में आने का और यहा आकर कुछ पुराने और कुछ नवयुवक मित्रो से मिलने का जो अवसर आपने मुझे दिया है उसके लिये मै आपको धन्यवाद देता हूं और यद्यपि मेरा यहा आना बहुत ही थोडी देर के लिये हुआ है तथापि मै यहां की बहुत ही सुखद स्मृति अपने साथ लेकर जाऊगा।

नाथी बाई दामोदर ठक्करसी कालेज, पूना

तारीख २६-२-५२ को श्री नाथी बाई दामोदर ठक्करसी कालेज, पूना में राष्ट्रपति जी ने कहा—

महामहिम राज्यपाल महोदय, डाक्टर करवे, श्रीमती नाथी बाई ठक्करसी, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि आज मै इस कालेज में आ सका और आप सब बहनों और भाइयों के दर्शन कर सका। अभी थोड़ी देर पहले मै पूना यूनीवर्सिटी में गया था और वहां

मैं ने कहा था कि आज से प्रायः ३३-३४ वर्ष पहले १९१८ में मैं यहां आया था और उस वक्त मैं एक विशेष इच्छा लेकर आया था। महात्मा जी ने मुझे बताया था कि पूना में बहुत सी संस्थायें ऐसी हैं जिन में काम करने वाले त्याग की भावना से उन संस्थाओं की सेवा कर रहे हैं। मैं उन संस्थाओं को देखने आया था और उन संस्थाओं के सेवकों के दर्शन के लिये उस समय आया था और यहां आकर जो संस्थायें चल रही थीं उन को देखा था। मालूम नहीं वे यहां से कितनी दूरी पर हैं और कहां हैं और उस समय जो संस्थायें मैं ने देखी थीं वे आज भी कायम हैं या नहीं। पर एक चीज जो मुझे बहुत अच्छी उस समय लगी थी वह यह थी कि मैं ने देखा था कि हमारे यहां के बच्चे बच्चियों को ऐसी शिक्षा मिल रही थी जिससे वे अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक भावना को कायम रखते हुए ऊंची से ऊंची शिक्षा पा सकें। मैं ने उस वक्त देखा था कि जिसे डोमेस्टिक साइंस कहा जाता है याने घर में किस तरह से रोटी बनानी चाहिये बच्चियां उसे सीखती थीं। मैं ने यह भी देखा था कि हमारे घरों में जो पूजा होती है उसके लिये फूल सजाकर रखना भी वे सीखती थीं और मैं ने यह भी देखा था कि अक्षर ज्ञान, शास्त्रीय ज्ञान भी दिया जाता था। आपने ठीक ही कहा है कि उस वक्त जो बीज आपने लगाया था वह बढ़कर एक बड़ा वृक्ष हो गया है और उस के फूल और फल अब देखने में आ रहे हैं। यह बड़े सौभाग्य की बात है कि केवल महाराष्ट्र के लिये ही नहीं बल्कि सारे भारतवर्ष के लिये कर्वे साहब जैसे सेवक दत्तचित्त होकर अपनी सारी जिन्दगी इस काम में लगा सके। अगर वैसा सेवक नहीं होता तो शायद इस तरह का काम नहीं होता और ऐसा सेवक नहीं होता तो वैसा दानी भी नहीं होता। सेवक और दानी दोनों का यह शुभ संयोग था कि यह यूनीवर्सिटी और कालेज इस स्थान पर बना है और मैं आशा करता हूं कि इसकी दिनों दिन और भी उन्नति होगी, और जैसा आपने कहा, यह आज भी सारे भारतवर्ष की महिला संस्थाओं का आदर्श रूप है, उससे भी आगे बढ़कर यह एक केन्द्र बनेगी जो अपनी शाखाओं प्रतिशाखाओं को सभी जगहों में फैलाकर इस आदर्श को प्रसारित कर सकेगी। मेरी यह आशा है और मैं यह मानता हूं कि हमारे घर में हमारी संस्कृति आज भी सुरक्षित है। चाहे उस पर जो भी आफत आवे, जो भी आक्रमण हो मगर हमारे घरों के अन्दर वह सुरक्षित है और उसको सुरक्षित रखने वाली हमारी बहनें, हमारी माताएं और हमारी लड़कियां हैं। जब तक वे सुरक्षित हैं, हमारी संस्कृति भी सुरक्षित है और इस तरह की संस्थायें जो हमारी संस्कृति को सुरक्षित रख सकती हैं, और जो हमारी माताओं, बहनों और बच्चियों को इस तरह से तैयार कर सकती हैं देश के लोगों की सहृदयता की पात्र हैं और उनको वह मिलनी चाहिये।

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि यहां की गवर्नमेंट ने आपकी सहायता की है और एक अलग यूनीवर्सिटी स्थापित करके आपको इस बात की स्वतंत्रता दी है कि आप जिस तरह से जो पाठ्य-क्रम बनाना चाहें बनावें और आपने उस स्वतंत्रता से लाभ उठाया है और आपने एक अलग पाठ्य-क्रम जो हमारे यहां की स्त्रियों के योग्य है बनाया है। आजकल के ज़माने में चारों तरफ़ हम लोग कहते हैं कि स्त्रियों और पुरुषों में कोई भेद भाव नहीं होना चाहिये और मैं भी इस बात को मानता हूं कि इस तरह का भेद नहीं होना चाहिये पर जो प्रकृति ने भेद कर दिया है उसको अगर हम चाहें भी तो दूर नहीं कर सकते और इसलिये हमारी शिक्षा में भी कुछ न कुछ भेद आता ही है, दोनों के कार्य क्षेत्र में भी कुछ न कुछ भेद आता ही है। अगर कार्य क्षेत्र अलग हो तो उस कार्य क्षेत्र

में काम करने के लिये तैयारी के लिये भेद होना ही चाहिये और इसलिये हमारे यहां के शिक्षा-संबंधी काम के लिये अलग पाठ्यक्रम होना उचित है।

मै आशा करता हूं कि आपकी दिन प्रति दिन तरक्की होती जायेगी और दिन ब दिन कर्वे साहब के आशीर्वाद से सब कुछ ठीक चलता रहेगा और उनके आशीर्वाद से युनीवर्सिटी बढ़ती रहेगी। मै श्रीमती नाथी बाई और उनके स्वर्गीय पति को जिन्होंने अपने दान से इसकी सहायता की और दूसरे धनी मानी लोगों को जिनकी सहायता मिली बधाई देता हू और आशा करता हूं कि आगे भी वे देश की सहायता करते रहेगे और देश में इस तरह की संस्थायें कायम होती रहेगी और देश का काम होता रहेगा।

आपने जो आशीर्वाद के वचन कहे उन के लिये मै और भी धन्यबाद देता हू।

पूना नगरपालिका द्वारा अभिनन्दन

तारीख २८-७-५२ को शाम के ५-३० बजे पूना म्युनिसिपैलिटी द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब में राष्ट्रपति जी ने कहा ---

महामहिम राज्यपाल महोदय, श्रद्धेय पुज्यनीय डाक्टर कर्वे, बहनो और भाइयो,

मेरे लिये यह बहुत ही शुभ और गौरव का दिन है। मै आपके नगर में कई बार पहले भी आ चुका हू और पूना नगर के निवासियो ने मेरे प्रति प्रेम पहले भी दिखलाया है और जब आज एक दूसरे पद पर मुझे देश ने नियुक्त कर दिया है तो फिर एक बार आप सब बहनों और भाइयों के दर्शन का मौका पाना मै अपना सौभाग्य समझता हूं।

बहुत दिन पहले भारतवासियो में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये जागृति पैदा हुयी और बहुत दिनो तक देश के लोगों ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये त्याग किया; तरह तरह के कष्ट उठाये और बहुतेरे भाइयो बहुतेरी बहनों ने हर प्रकार के कष्ट, हर प्रकार की मुसीबत बर्दाश्त करके इस स्वतन्त्रता की प्राप्ति में सहायता पहुंचायी जो नगर सारे देश में अग्रगण्य समझे जाते है उनमें बहुत ऊंचा स्थान आपके नगर का है जिसने एक प्रकार से पहले से ही स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेना आरम्भ किया और जब तक वह काम चलता रहा उसमें हमेशा शरीक रहा और सिर्फ शरीक ही नहीं रहा, जो कुछ बलिदान उसको उसमें देना पड़ा वह देता रहा। आपने उन महा-पुरुषों के नाम लिये है, जो इस स्वतन्त्रता संग्राम में देश की जागृति और उन्नति के लिये अपने परिश्रम से, अपने अध्यवसाय से और अपने त्याग से आगे बढे और जैसा मै ने एक दूसरे स्थान पर कहा था, यहां के लोगों में त्याग की वृत्ति, सेवा की वृत्ति ने आज सारे देश के लिये इस स्थान को एक पवित्र तीर्थ स्थान बना दिया है और अगर किसी को देश के लिये कोई काम करना होता है तो यहां के इतिहास को जानकर वह यहां आता है और यहां से अनुप्राणित होकर जाता है। मै जब पहले यहां आया था तो उसी भावना से आया था।

हमारे देश का पिछले प्राय: १०० वर्षों का इतिहास एक प्रकार से सुन्दर और दूसरे प्रकार से जटिल इतिहास रहा है। सुन्दर इस अर्थ में कि हम अपने देश को स्वतन्त्र करने के काम में लगे रहे और उसके लिये जो कुछ भी करना पड़ा उसको देश के लोगों ने खुशी खुशी से किया, जो कुछ सहना पडा उसको भी उसी तरह से हसते हंसते सहते रहे और उन अनगिनत बहनों और भाइयों के त्याग का यह फल है कि देश आज स्वतन्त्र हुआ है। हम जिस पीढ़ी के हैं वह बहुत ही भाग्यवान पीढी रही हैं क्योंकि हमें दोनों देखने का मौका मिला ; हमने संग्राम भी देखा और उसका अन्त भी देखा और उसके बाद आज हम स्वतन्त्रता भी देख रहे है और इसलिये मै अपनी पीढ़ी को बहुत भाग्यवान पीढ़ी मानता हूं। जो लोग अब आयेंगे वह इस संग्राम को नही देख सकेंगे और जो पहले गुज़र गये उन्होंने मार्ग दर्शन तो कराया, हमारे लिये सब कुछ त्याग तो किया पर अपनी उस तपस्या का फल वे नही देख सके। जो हो, मनुष्य का धर्म तो यही है कि जो कर्तव्य उसके सामने आवे वह उसको पूरा करता जाये फल तो ईश्वर के हाथ है और आज से हमारे लिये आप सौभाग्य समझिये या समझिये कि एक तरह से यह घटना सी हो गयी है कि हमने संग्राम और उस का फल दोनो देखे हैं। आज उन सब भाइयो और बहनों के प्रति जिन्होने इस संग्राम मे सब कुछ त्यागा और अपनी खुशी से त्यागा मस्तक श्रद्धा और भक्ति की भावना से नीचे झुक जाना है और ऐसा होना चाहिये। और आज जो यहां आप स्वराज्य देख रहे है तो उसके साथ जो जवाबदारी आयी है उसको भी आपको देखना चाहिये और यह भी देखना चाहिये कि उन लोगों के त्याग का जो फल आज देश को मिला है उसको किस तरह से आप सुरक्षित रख सकते है, किस तरह से सारे देश के लिये और सारे ससार के लिये उसे हमेशा कायम रख सकते है और जो उससे लाभ हो सकता है उसको पहुंचा सकते है। इसलिये जब मै सोचता हूं कि आज भारत की क्या दशा है तो बहुत सी ऐतिहासिक बाते भी सामने आती है।

सब से बड़ी चीज जो स्वराज्य के बाद हमको करनी थी और जिसको हमने किया है वह यह है कि इतिहास मे, जहा तक मै समझता हूं, प्रथम बार इतना बड़ा भारतवर्ष एक छत्र राज्य के अन्दर हमने कर दिया है और एक संविधान को मान कर उसके अनुसार हम देश का शासन कर रहे है। भारत के दाये और बायें दोनो पक्ष एक प्रकार से पूर्व और पश्चिम की तरफ कट गये है मगर तो भी इतिहास में कोई ऐसा समय नही हुआ जब इतना बड़ा भारत एक छत्र राज्य के अन्दर आया हो। चक्रवर्ती राजा हुआ करते थे ; उनका रथ अबाध रूप से सारे देश मे चलता था, मगर केवल उतना ही होता था; उनका हुक्मनामा सारे देश में नही चलता था। आज एक केन्द्रीय शासन सारे देश मे चल रहा है और सब से बडी बात यह है कि कोई ज़ोर ज़बरदस्ती से नही, किसी के सर पर कुछ लाद कर नही बल्कि सब की सदिच्छा से, सब की श्रद्धा के साथ और सब की अच्छी भावना के साथ यह काम चल रहा है। यह एक अद्‌भुत दृश्य हम भारत में देख रहे हैं और इसलिये हमारा गौरव और भी बढ़ा है। मगर उसके साथ साथ हमारी जवाबदारी भी बढी है। जब हम जवाबदारी की बात सोचते है तो एक दूसरी ऐतिहासिक बात नज़र के सामने आ जाती है। हमारे देश का यह दुर्भाग्य भी रहा है कि जब कभी हमें उन्नति करने का मौका मिला है या हमारे ऊपर कोई विपत्ति आयी है तो आपसी फूट और झगड़े के कारण, कुछ संकुचित भावना और बुद्धि के कारण हम एक दूसरे के साथ मिल कर न तो देश की उन्नति करने मे काम कर सके हैं और न जब कभी हमारे ऊपर दूसरों का आक्रमण हुआ है तो उससे

देश की रक्षा करने में समर्थ हुए हैं। और आज जब हम इतने बड़े भारतवर्ष को एकछत्र के अन्दर लाये हैं तो हमें अपनी इस पुरानी कठिनाई को नहीं भूलना चाहिये। प्रत्येक भारतवासी का सब से पहला कर्तव्य यह है कि वह इस स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखने के लिये और इस संविधान को, जिसके मातहत सारा देश आज आ गया है, सुरक्षित रखने के लिये हमेशा तैयार रहे। किसी भी देश की स्वतन्त्रता जब तक उसके नागरिक--स्त्री और पुरुष, बड़े और छोटे, बूढे और बच्चे—सब तैयार नहीं रहें तब तक वह सुरक्षित नहीं रह सकती है। आपस में अगर किसी विषय में मत-भेद हो, अगर हम किसी कार्यक्रम में हेरफेर करना चाहें तो उसमें भले ही एक राय न हो। इस चीज़ में कभी किसी देश में न तो एक मत हुआ है और न होना आवश्यक अथवा उचित ही है। मगर एक विषय में एकमत, एक हृदय और एक मस्तिष्क होकर सब को काम करना है और वह है भारत को सुरक्षित रखने का काम। इस लिये जब मुझे मौका मिलता है तो मैं लोगों से यही कहता हूं कि अपने पूर्वजों की कर्तव्य भावना के कारण, उनके त्याग के कारण और सारे देश के लोगों की तपस्या के कारण हमें स्वतन्त्रता मिली है और हमारा यह कर्तव्य है कि हम उस स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखना अपना सब से बडा कर्तव्य समझें। आज प्रत्येक भारतवासी को यह समझना है कि किस तरह से वह स्वराज्य को चलाने में जो उसको हिस्सा मिला है, अख्तियार मिला है उसको अदा करेगा, उसको जो हक हासिल हुआ है और दूसरी तरफ जो जवाबदेही आयी है उसको वह किस तरह अदा करेगा। जब वह अपने कर्तव्य और निष्ठा और दूसरे के स्वत्व को समझेगा तभी वह भारतवर्ष को सुरक्षित रख सकेगा और जिस तरह से हम उन्नति करना चाहते हैं उन्नति कर सकेगा। हमारे सामने प्रश्न बहुत हैं और यह बड़े संतोष की बात है कि हमें एक बडा प्रोत्साहन भी मिला है। जो काम हमने आरम्भ किया है वह अच्छी तरह से आरम्भ किया है। हिन्दी मे एक छोटी सी कहावत है 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' याने जो वृक्ष अच्छे होने होते हैं उनके पत्ते आरम्भ से ही सुन्दर और चिकने होते हैं और जो वृक्ष इस तरह से बढता है वह बड़ा वृक्ष होता है। हमारी नवजात स्वतन्त्रता के जो पत्ते निकले हैं वे अच्छे और चिकने निकले हैं और उसका सब से बडा सबूत यही है कि इतने बड़े पैमाने पर चुनाव हुआ है वह शान्ति पूर्वक समाप्त हुआ है। यह एक इतना बड़ा काम था कि जो लोग इस काम में लगे थे वे भी घबराते थे और यद्यपि हमने संविधान मे इसका पूरा प्रबन्ध सोच लिया था मगर जब तक वह काम समाप्त नही हुआ तब तक हमारा दिल घबराता था कि न जाने पहली परीक्षा मे हम किस तरह उत्तीर्ण होते है और होते हैं या नही होते है। मगर ईश्वर की दया से और इस देश के भाइयों और बहनों की शान्तिप्रियता और देश के प्रति प्रेम और श्रद्धा के कारण यह काम अच्छी तरह से निबह गया। मेरा मतलब यह नही कि कौन चुने गये हैं और कौन नही चुने गये हैं, किस दल विशेष के लोग चुने गये हैं या नहीं चुने गये हैं। कोई न कोई तो चुने जायेंगे ही। मगर सब से संतोष की बात यह है कि शान्ति के साथ प्रत्येक मतदाता को स्वतन्त्रतापूर्वक मत देने का अवसर मिला और शान्ति के साथ इस सुअवसर का उन्होने उपयोग भी किया। अकसर लोग डरा करते थे और कहा भी करते थे कि यहां अभी बहुत से लोग निरक्षर हैं। मै उन लोगों में से हूं कि जो अक्षर ज्ञान को ही सारा ज्ञान नही मानते। मैं मानता हूं कि अक्षर ज्ञान भी अच्छी चीज है मगर बिना अक्षर ज्ञान के भी मनुष्य में बुद्धि हो सकती है ज्ञान हो सकता है और हमारे देश की परम्परा रही है कि बिना अक्षरज्ञान के लोगों को ज्ञान मिल गया है। अपने

व्याख्यानों द्वारा, प्रवचनों द्वारा हमारे यहां के साधु सन्तों ने गांव गांव में पहुंच कर स्त्रियों और पुरुषों में ऊंचे से ऊंचे और कठिन से कठिन सिद्धान्तों को इतनी सरल और मार्मिक भाषा में फैला दिया है कि गाव के निरक्षर लोग भी उनका ज्ञान रखते है। तो उन पर मेरा विश्वास पूरा था और आज तो इस चुनाव ने इस विश्वास को और भी दृढ कर दिया है कि हमारे देश में निरक्षर लोग भी काफी बुद्धि रखते है, उनका मस्तिष्क काफी सुधरा हुआ है और वे काम कर सकते है और उनके सामने कड़े से कड़े प्रश्न भी रख दिये जाये तो उनको समझ कर उन पर वे अपना निर्णय भी दे सकते है। इसलिये मै देखता हूं कि वृक्ष के चिकने पत्ते है। अब आगे इस काम को बढाना है, और चलाना है।

अभी चार पाच वर्षो से हमको स्वराज मिला है। अभी वह थोडा अधूरा स्वराज्य था। अधूरा इस अर्थ मे था कि अभी हमने संविधान के अनुसार सब काम शुरू नही किया था। यद्यपि अधिकार तो हमारे हाथ मे आया मगर उस अधिकार का पूरा निरूपण अभी नही हुआ था और हर तरह से कहां क्या करना चाहिये उसका हमने पूरी तरह से निश्चय किया नही था। अब संविधान के अनुसार अगले महीने दो महीने के अन्दर हमारे सब काम शुरू हो जायेगे और तब हम हर तरह से इस योग्य हो जायेगे कि इस देश के भाग्य का निबटारा करे, उसको अच्छा, सुन्दर और भव्य बनाकर यहा से दरिद्रता को भगा दे। अगर ऐसा हमने नही किया तो इसके लिये जो बदनामी होगी वह हमारी होगी और अगर वह पूरा हो सका तो उसके लिये हमारी नेकनामी हो सकती है। इसलिये हमारा यह कर्तव्य है और विशेष करके जो लोग चुने गये है उनका और भी कर्तव्य हो जाता है कि वे ऐसा प्रबन्ध करे, ऐसा इन्तजाम करे जिससे जो कठिनाइया हमारे सामने है, जो जनता के दुःख है उनका निवारण हो और हम प्रगति करे, देश उन्नति करे और हर तरह से आगे बढे। जो चुने गये है उनका कर्तव्य तो है ही मगर जो चुननेवाले है, जो देश के निवासी है उनका भी कर्तव्य है कि वे उनको अपने स्थान पर ठीक रखे क्योंकि जब तक ऊपर से अंकुश नही पडे तब तक अच्छे आदमी भी निरंकुश हो कर फिसल सकते है और प्रजातन्त्र का यही काम है कि प्रजा का अंकुश जो लोग शासनाधिकारी बनाये जायें उन पर हमेशा रखे। मै यह भी मानता हूं कि प्रजातन्त्र मे जैसी प्रजा होती है वैसे ही शासक भी होते है। अगर प्रजा कर्तव्य निष्ठ हो, अगर प्रजा सब से प्रेम करके देश का हित सब से ऊपर रखती है तो वैसे ही उसके चुने हुए प्रतिनिधि भी होगे और अगर वे वैसे नही होगे तो उनको अपने स्थानों से हटना पडेगा और उनके स्थानों पर दूसरे जायेगे। इसलिये मै चाहता हू कि लोग अपने कर्तव्य को समझे। यहा मै शासकों की सभा से नही बोल रहा हू इसलिये शासकों को क्या करना है यह यहा कहना जरूरी नही है। मगर जो शासक के ऊपर है, जिनको शासकों को नियुक्त करना है, जो प्रजाजन है उनको भी अपना कर्तव्य और ध्येय समझना चाहिये और जो शासक नियुक्त किये गये है उनकी कारवाइयों को हमेशा देखते रहना चाहिये और अगर उनसे भूल हो तो वे उनको चेतावनी देते रहे और तभी वे अपने कर्तव्य का पालन कर सकते है। यह तो एक आकस्मिक सी बात होती है कि कौन किस स्थान पर रख दिया जाता है। यह मै मानता हू कि जो जिस स्थान पर रख दिये जाये उनको अपना काम पूरा करना चाहिये। चाहे वे छोटे से छोटे काम मे ही क्यों न लगा दिये जाये मगर यदि वह देश सेवा का काम हो तो उनको उसे उसी तरह खुशी और निष्ठा से करना चाहिये जिस तरह कि किसी बड़े काम को करना चाहिये। मैं इस बात को सही मानता

हूं। इसलिये मैं ने बहुत जगहों पर ऐसा कहा है और उसे यहां फिर दोहराता हूं। भारत आज इस योग्य है कि एक तुच्छ और मामूली आदमी को देश का राष्ट्रपति बनाकर ऊंचे से ऊंचे स्थान पर नियुक्त कर दे और वास्तव में उसने अपने एक तुच्छ सेवक को उस स्थान पर बैठा दिया है मगर मैं मानता हूं कि देश पूना शहर से सड़कों पर झाड़ू लगाने को कहे तो मैं उसे उसी खुशी से करूंगा जिस खुशी से इस काम को कर रहा हूं। मैं चाहता हूं कि हमारे देश के लोग आज उसी भावना से काम करें, ऊंचे पद पर आकर अपने कर्तव्य का जिस तरह से पालन करें उसी प्रकार निष्ठा के साथ अगर ऐसे काम में लगाये जायें जिसको वे छोटा समझते हैं तो उसे करें। जब हमारे देश के सेवक इस तरह से काम करेंगे तभी देश की स्वतन्त्रता सुरक्षित रहेगी और उसको कभी न कोई डर रहेगा और न कोई खतरा रहेगा। एक चीज और मैं आपको कहना चाहता हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि इसके बिना अक्सर करके भूल होती है और अक्सर करके देश का बुरा होता है और अपनी भी बुराई होती है। हम इस बात को याद रखें कि कोई भी काम जब तक उसमें मनुष्य सच्चाई के साथ न पड़े, जब तक जो करता है, जो कहता है और जो सोचता है सब का सामञ्जस्य नहीं होता, जब तक जो भी काम होता है वह देश के प्रति श्रद्धा और निष्ठा की भावना से नहीं होता, त्याग की भावना से नहीं होता तब तक वह कितना बड़ा भी क्यों न हो छोटा हो जाता है। जब मैं कभी कभी सोचता हूं और देखता हूं कि बहुत बातों में हमारा स्तर जितना था---और उससे उसको उठना चाहिये था--वह उससे नीचे उतर गया है तो मुझे इस बात का अफसोस होता है, कुछ थोड़ी घबराहट भी होती है क्योंकि यह आवश्यक है कि हमारा चरित्र ऊंचा रहे। हम हर तरह से सच्चे रहें तभी हम काम को ठीक अंजाम दे सकते हैं। ऐसा मालूम होता है कि हम आप लोगों को यहां एक अध्यापक की तरह कुछ सिखाने की धृष्टता कर रहे हैं। बात ऐसी नहीं है। बात ऐसी है कि जब हम चारों तरफ देखते हैं और इस बात को सुना करते हैं कि चोरबाजारी चालू है, रिश्वत भी चालू है तो हम सोचते हैं कि इन चीजों को दुरुस्त करने का भार हम लोगों पर है और यदि हम अपने को दुरुस्त कर लें तो वह कहीं रह नहीं जायेगी। मनुष्य जब एकत्रित हो कर सामूहिक रूप से काम करने लगता है तो समाज का गठन होता है। दो तरीके हैं जिन से उस समाज को सुधारा जा सकता है। एक तरीका तो है अंकुश का जिससे समाज का प्रत्येक व्यक्ति ठीक रहे और दूसरा यह है कि समाज का हरेक व्यक्ति इतना अच्छा हो कि समाज को अंकुश की कोई आवश्यकता नहीं हो। हमारी परम्परा व्यक्ति को सुधारने की रही है और व्यक्ति के सुधरने से ही समाज ऊंचा बनता है। आज दुनिया में पहली ही भावना फैल रही है और वह व्यक्ति पर उतना भरोसा नहीं करके समाज के अंकुश पर ही भरोसा करती है। मगर हमारी समझ में यह बात नहीं आती कि जब तक व्यक्ति सुधरे नहीं समाज कैसे सुधर सकता है और व्यक्ति पर कोई अंकुश कर सकता है। इसलिये मैं मानता हूं और चाहता हूं कि आप भी व्यक्ति को सुधारने का अधिक ख्याल रखें और व्यक्ति को सुधारने का मतलब अपने को सुधारना होता है। तो सब से पहले हमको अपने को सुधारना चाहिये, बजाय दूसरों की तरफ देखने के। अपने को सुधारना एक तरह से सब से आसान है और दूसरी तरह से कठिन भी है। आसान तो इस तरह से है कि अपने ऐब को हम जितना समझ सकते हैं उतना दूसरा कोई नहीं समझ सकता। इसलिये अपने को अगर हम सुधार लें तो कम से कम एक व्यक्ति को तो सुधार सकते हैं और कठिन इस तरह से है कि अपनी जो बुराइयां होती हैं उनको जानते हुए

भी उन पर अंकुश लगाना आदमी के लिये आसान नहीं होता है। इसलिये मैं तो यह चाहता हूं कि हमारे देश के सभी लोग व्यक्ति को सुधारने को अपना कर्तव्य मानकर सारे देश को सुधारने का प्रयत्न करें और जब सब लोग सुधर जायेंगे तो समाज भी सुधर ही जायेगा।

देश में प्रश्न तो बहुत हैं और अगर एक एक प्रश्न को लेकर विचार किया जाये तो न तो इसके लिये समय है और न मैं अपने को उसके योग्य मानता हूं। मैं ने तो एक दो मूलभूत विषयों की ओर आपका ध्यान आकर्षित किया और मैं आशा करता हूं कि आप उन पर ध्यान देंगे, विचार करेंगे और ऐसा नही समझेंगे कि एक आदमी यों ही आकर कुछ कह कर चला गया। उसी पर देश का सब कुछ निर्भर है।

आपने मुझ पर यह भार सौंप कर कि मै इन दो चित्रों का अनावरण कर दूं और भी मेरा गौरव बढ़ाया है। इन दोनों आदमियों के साथ मेरा सम्बन्ध घनिष्ठ रहा है, वह प्रायः भाई भाई के ऐसा सम्बन्ध पिछले ३०–३२ वर्षो से रहा है। उनके सम्बन्ध में मैं क्या कहूं। भारतवर्ष का जो इतिहास लिखा जायेगा उनके पन्ने उनकी कृतियो से रंगे होंगे और जो कुछ वे कर गये है या कर रहे है उन सब को भविष्य का भारत सीखेगा, जानेगा। यद्यपि आज सरदार वल्लभ भाई चले गये हैं पर उन्होंने जो भारत का एकीकरण किया वह तो एक ऐसा काम हुआ है जो भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। जवाहरलाल जी के बारे मे मै क्या कहूं। उन्होंने शासन का भार ही अपने ऊपर नही लिया है बल्कि जिस परिश्रम और अध्यवसाय से वह काम कर रहे है वह किसी से छिपा नही है और उन्होंने भारत के गौरव को सारे संसार में स्थापित कर दिया है और यह हमारे लिये एक दूसरा शुभ चिन्ह है कि आज हम चारो ओर के लोगों के प्रेम और श्रद्धा का भाजन बने है। यह उनका काम रहा है। तो ऐसी दो महान् विभूतियो के चित्रों को अनावरण करने का सौभाग्य आपने मुझे दिया है उसके लिये मै आपका आभार मानता हूं। इसके अलावा पूना के नागरिकों को जिनमें सभी विचारों और खयालो के लोगों ने शरीक होकर मेरा स्वागत किया किन शब्दों में धन्यवाद दूं। मै इतना ही कहूंगा कि आपने जो मेरे प्रति आदर दर्शाया है ईश्वर से मै प्रार्थना करता हूं कि मै अपने को उसके योग्य साबित कर सकूं। इन शब्दो के साथ मै इन चित्रों का अनावरण करता हूं।

पूना आबज़रवेटरी

तारीख २९-२-५२ को १० बजे दिन में पूना आबजरवेटरी में राष्ट्रपति जी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि आज मै इस प्रयोगशाला में जो कुछ काम हो रहा है उसका कुछ अंश देख सका। आपका काम बहुत महत्व रखता है, विशेष करके भारत ऐसे देश में जहा के लोग बहुत कुछ खेती पर ही निर्भर रहते है यह जानना हमारे लिये आवश्यक है कि कब वर्षा होगी, कहां तूफ़ान आयेगा, कहा सूखा पड़ेगी इत्यादि। और जब तक ये सब चीज़ें पूरी तरह से नही मालूम हों देश का काम आगे नही बढ़ सकता, कृषि का काम आगे नही बढ सकता। और दूसरी

तरह से देश उन्नति नही कर सकता। इसलिये आप के काम का महत्व दिन दिन बढ़ता जा रहा है। यह देख कर मुझे प्रसन्नता हुई कि इस बात पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। मगर केवल उतना ही काम यहां नही होता, और भी दूसरे काम इस प्रयोगशाला में होते है। जैसे हवाई जहाज का उड़ना इस देश मे बढता जा रहा है और मै समझता हू कि दूसरे देशों के मुक़ाबले में इस देश में बहुत थोडे दिनों में उसकी बहुत तरक्की हुई है। उस के लिये आपकी प्रयोगशाला को बहुत काम करना है क्योंकि जब तक इस बात का पता नही रहे कि कहां पानी बरसने वाला है, कहां तूफान आने वाला है—क्योंकि इन चीजों का असर हवाई जहाज के उडान पर पडता है—तब तक हवाई जहाज़ सुरक्षित तरह से नही चलाया जा सकता। इस प्रयोगशाला में जितने प्रयोग हो रहे है वह समुद्री जहाज़ के लिये भी आवश्यक है क्योंकि समुद्री जहाज़ के लिये भी इसका पता रहना जरूरी है कि कहां तूफान आ रहा है, समुद्र में कहा जाने योग्य है और कहा नहीं। अतः देश और विदेश के संबध कायम रखने के लिये जिसमें आयात निर्यात होता रहे और देश में किस तरह से लोगो का धन बढे, लोगो की सुख समृद्धि बढे उसके लिए आपका काम महत्वपूर्ण है। मै यह चाहता हूं कि आप लोग जो इस काम में लगे हुए है इसे देश सेवा का काम समझकर करे। देश में तरह तरह के काम हो रहे हैं। हम लोगो ने अभी स्वतत्रता प्राप्त की है। उसको सुरक्षित रखना और लोगो को समृद्धशाली बनाना हमारा कर्त्तव्य है। जो लोग इस काम मे लगे हुए है उनको अपने कर्त्तव्य को समझना चाहिये और मेरा विश्वास है कि आप भाई जो इस काम मे लगे हुए है अपने कर्त्तव्य को समझते है। आप ऐसा नही समझे कि जिस काम मे आप लगे हुए है उसका कोई नतीजा नही होता है। उसका नतीजा बहुत ठीक होता है, उसका फल बहुत ठीक होना है। इसलिये आप के काम को देखने का मुझे सुअवसर मिला उस से मुझे खुशी है। आपने जो शब्द कहे उन के लिये मै आपको धन्यवाद देता हू और आशा करता हू कि आप दत्तचित्त होकर अपने काम को करते जायेंगे।

हिगणे स्त्री शिक्षण सस्था

तारीख २९-२-५२ को ११ बजे दिन मे श्री हिगणे स्त्री शिक्षण सस्था पूना में राष्ट्रपति जी ने कहा—

श्रद्धेय पूज्यनीय डाक्टर करवे साहब, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बडी प्रसन्नता है कि आज मै सवेरे सवेरे आपकी इस सस्था मे आ सका और इसको देख सका। जैसा अभी कहा गया बहुत थोड़े मे इसका आरम्भ हुआ था और आज ५०, ५५ वर्ष के बाद यह इतना बड़ा वृक्ष हो गया जिसका छोटा बीज यहा वपन हुआ था और इसका कार्यक्षेत्र भी आहिस्ता आहिस्ता बढ़ गया है और आज तो केवल यहा ही नही बल्कि दूर दूर तक इसकी शाखाये काम कर रही है और सभी जगहों में हमारे बच्चो को इनके द्वारा शिक्षा मिल रही है। मै ने आपकी सस्था के संबध में बहुत पहले सुना था और एक बार पहले १९१८ साल में यहा पहले पहल आकर इसे देखा भी था। जो यह उस वक़्त थी और आज है उसमें बड़ा भारी

अन्तर पड़ गया है और अब तो मुझे इसका पता भी नहीं कि उस वक़्त मैं ने क्या क्या देखा था और जो कुछ मैंने देखा था उसमें कौन कौन सी चीज़ आज है और कौन सी चीज़ें आज नहीं हैं और कौन सी चीज़े आज नई बन गई हैं। मगर इस तरह से काम हुआ है कि आहिस्ता आहिस्ता बढ़कर उसका यह स्वरूप हो गया है। उस समय की एक सुन्दर चीज आज भी मौजूद है, वह यह कि हमारी बच्चियों को इस तरह से शिक्षा दी जाती है जिसमें वह अपनी संस्कृति को, अपने देश की रीति रिवाज को क़ायम रखते हुए शिक्षित भी हो जायें और आधुनिक जगत में जो कुछ हो रहा है उस को भी समझ जायें। और हमारे यहा आज ऐसी ही शिक्षा ज़रूरी है। मै मानता हू कि हमारे घरों में आज भी हमारी संस्कृति अधिक सुरक्षित रहती है। जो लोग बाहर जाते आते है उनको बाहर की बहुत सी चीजे देखने में आती है, बहुत कुछ सीखने को भी मिलता है, उन से जो हम लाभ उठा सकते है हमें उठाना चाहिये। मगर साथ ही हमारी जो अपनी चीज़े है उनको खोने मे बुद्धि-मत्ता नही है। उन मे जो अच्छी चीजें है जिन से हमे लाभ पहुच सकता है उनको सुरक्षित रखना चाहिये और उन्हे हमारी बहनों ने हमारे घरों के अन्दर रखा है। उन मे शिक्षा का प्रचार होना चाहिये और केवल अन्ध विश्वास पर नही बल्कि समझ बूझकर कि उन मे क्या लाभ है क्या हानि है और जो योग्य हों, ठीक हो, ऐसे को कायम रखना चाहिये जिससे हमारी संस्कृति सुरक्षित रह सकती है और वही शिक्षा हमारी बच्चियों को यहा मिलती है। मै उसी दिन से इस बात को मानता आया हू कि यहा की जो रीति है, जो शिक्षा देने की पद्धति है वह बहुत अच्छी है और यदि इस चीज को भारत के दूसरे भागों की संस्थाओ मे भी पहुचाया जा सके तो मै समझूगा कि इससे देश को बड़ा लाभ हुआ और अगर आप उस काम को कर सके तो मै समझता हू कि आपको करना चाहिये। डाक्टर कर्वे महोदय ने इस काम को आरम्भ मे किया है। बहुत लोग कोई न कोई काम आरम्भ करते है तो थोड़े से आरम्भ करते है और वह काम आगे बढ जाता है। मगर यह कम ही लोगो का सौभाग्य होता है कि जो पौधा उन्होंने लगाया उसको वृक्ष बनते देख सके और उस के फल देख सकें और उनका वितरण कर सके। यह ईश्वर की दया है कि इन्होने उसे खुद देखा। अपने लगाये वृक्ष का फल देखकर उनके हृदय मे कितना उल्लास होता होगा इसका दूसरे लोग अनुमान ही कर सकते है उसका अनुभव नही कर सकते। मेरा तो यह कहना है कि जिस प्रकार से इस संस्था को आपने महाराष्ट्र मे इतना बढ़ाया है उसी तरह से सारे भारत मे शिक्षा फैलाने में आप दिल-चस्पी ले। यदि दूसरी जगहो मे शिक्षा प्रचार मे आप थोड़ी बहुत दिलचस्पी लेगे तो काम बहुत आगे बढ़ेगा। मै जानता हू कि वह दिलचस्पी रहती है क्योंकि अभी हाल मे ही हमारे प्रात मे एक छोटी सी संस्था खुली है जिस मे कुछ दिन पहले मै गया था उसमें सम्मिलित होने के लिये उन लोगो ने आपको निमंत्रण दिया था और आप वहा जाने वाले थे मगर वहा के लोगो के दुर्भाग्य से आप अस्वस्थ हो गये और उस समारोह में शरीक नहीं हो सके। तो यह मै जानता हूं कि आप का ध्यान उस ओर है। मेरा कहने का मतलब इतना ही है कि दूसरी जगहों मे भी आप कुछ सहायक हो सके और लोगों को प्रोत्साहन दे सके तो उससे और काम बढ़ेगा।

जिन बच्चियों ने सुन्दर खेल दिखलाया, सुन्दर कसरत दिखलाई और जिन के हाथों की बनाई चित्रकारी और सुन्दर फूल की रंगोली इत्यादि हम ने देखी और देखकर प्रसन्नता हुई उन सब को मैं आशीर्वाद देता हू कि वे और भी उन्नत हों, और भी भारत के लिये उपयुक्त बनकर उसे सुखी और संपन्न बनावें।

भड़ोंच नगरपालिका द्वारा अभिनन्दन

तारीख १ मार्च १९५२ को दिन में ९ बजे भड़ोंच म्युनिसिपैलिटी द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब में राष्ट्रपतिजी ने कहा—

भडोंच म्युनिसिपैलिटी और लोकल बोर्ड के अध्यक्ष महोदय, सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बडी प्रसन्नता है कि आज मै इस शहर मे और जिले में एक बार और आ सका। जैसा आपने अपने मानपत्र में कहा है, मै पहले भी यहां आ चुका हूं मगर उस समय में और आज मे बहुत बडा अन्तर पड गया है। उस समय हम एक पराधीन जाति के लोग थे और पराधीन देश मे रह रहे थे और स्वतत्रता के लिये कटिबद्ध होकर एक नये प्रकार के सग्राम में लगे हुए थे। महात्मा गाधी जी ने हमारे देश को ही नही सारे ससार के लिये एक नया शस्त्र, एक नये सग्राम का तरीका बताया था और हम उसी का प्रयोग अपने कमजोर हाथो और [illegible] के साथ कर रहे थे। आज वह सग्राम समाप्त हो चुका है और आज भारत के लोग सर उठा कर कह सकते है कि वे स्वतत्र है। अपने भाग्य निर्णय का पूरा अधिकार अपने लोगों के हाथ मे आ गया है और इस देश को हम सुन्दर, समृद्ध और प्रभावशाली बनाये तो उसका श्रेय हमको मिलेगा।

अभी हाल मे ही हमने जो नया सविधान तैयार किया उसके अनुसार सारे देश में चुनाव हुआ है। वह चुनाव जितने बडे पैमाने पर हुआ आज तक उतने बडे पैमाने पर ससार के इतिहास में किसी भी देश में कही के लोगो ने नही किया है। हम सब चुनाव के पहले कुछ भयभीत थे कि देखें कहा तक हम इसमे सफल होते है। लेकिन ईश्वर की दया से हम पूरी तरह से सफल हुए। मै यहा इस बात का जिक्र नही कर रहा हू कि किस दल के लोग सफल हुए। मै तो सिर्फ इस बात की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हू कि इस देश के लोगो ने समझ बूझ कर एक दूसरे पर भरोसा करके इस चुनाव मे भाग लिया और जिसको उन्होने अच्छा समझा उसको चुन लिया। और अब जो लोग चुने गये है उन पर यह भारी जिम्मेदारी आ गयी है कि वे देश के काम को ठीक तरह से चलावें और हमारा शासन ऐसा हो कि जिससे देश का गौरव बढे, देश के अन्दर जो गरीबी अभी भी मौजूद है वह दूर हो और जिन लोगों मे शिक्षा का अभाव है उसको भी हम दूर कर सकें और अभी इस वक्त हमारी जो कठिनाइयां, मुश्किले है उनको भी हम दूर कर सकें। मै मानता हू कि पिछले ४-५ वर्षो में जो हमने अपने हाथ मे अधिकार ले कर थोडा बहुत काम किया है उसमें भी त्रुटि रही है। मगर यह भी हमको मान लेना चाहिये कि जब कोई नया बडा काम हाथ में आता है तो उसके साथ साथ कठिनाइया भी सामने आती है और स्वतंत्रता के साथ साथ हमारे सामने बड़ी कठिनाइया भी आयीं। स्वतत्रता हमको मिली मगर देश के दो भाग हमसे अलग हो गये; यद्यपि हम अपने काम में बहुत दत्तचित्त होकर पडे मगर बंटवारे के साथ साथ और कई प्रकार की विपत्तियां और कठिनाइया भी आयी। उन विपत्तियो और कठिनाइयों को सभालना और उन से लोगों को बचाना कोई आसान काम नही था। हमारे लोग किसी न किसी तरह से सम्भले। इस काम मे हमारा समय, देश का बहुत कुछ धन लग गया, क्योंकि जो बंटवारे की वजह से निर्वासित हो गये उनको बसाने का काम भी एक बड़ा काम था और हम सब इसी काम में लगे रहे इसी वजह से और दूसरे काम को पूरी तरह से अंजाम नही दे सके, जितना

हमको करना था और जितना हम करना चाहते थे उतना नही कर सके। साथ ही हम यह भी कहना चाहते हैं कि जो काम हमको करने थे उन में हमारे सामने दूसरी कठिनाइयां भी आईं और हमारे ही सामने नहीं बल्कि ससार के सभी देशों के सामने आयीं और वे उस लड़ाई के फल स्वरूप थी जिस लड़ाई के समाप्त होने ही हम को आजादी मिली थी। जो उतना बडा संसार व्यापी युद्ध कई वर्षो तक चला उसी का दुष्परिणाम हमको भोगना पडा और हम आज भी भोग रहे है। उसके बुरे परिणामो में एक यह भी हुआ कि चीजों की दर मे बहुत हेर फेर हुआ और जो चीज़ों का दाम बढना उस वक्त आरम्भ हुआ वह अभी भी बढ ही रहा है, अभी तक घट नही रहा है। उसके साथ साथ हमको यह भी देखने मे आया कि सभी लोगों का दिल कुछ कमजोर हो गया और मनुष्य को मनुष्य के प्रति जो सद्भावना होनी चाहिये, जो ईश्वर पर विश्वास और धर्म पर विश्वास होना चाहिये और जिन के सहारे मनुष्य अपने चरित्र को कायम रखते हैं उस में भी कमी आ गयी। उसका बुरा परिणाम हुआ और आज सभी जगहों पर बहुत तरह की कमजोरी देखने मे आ रही है। मगर सब चीजों का पता लगाने मे मालूम होता है कि जो कुछ हमने तीन चार वर्षों में किया है वह कम नही हुआ है। कठिनाइयों के होते हुए भी जो काम किया गया है उसकी तरफ भी आप ध्यान दें।

आपने मुझे महात्मा गाधी और सरदार वल्लभभाई पटेल के चित्र का अनावरण करने का अवसर देकर मुझे गौरवान्वित किया है। महात्मा जी के सबध में मेरे लिये या किसी के लिये कुछ कहने की आवश्यकता नही है। केवल भारत का ही इतिहास नही सारे ससार का इतिहास साक्षी है कि उन्होंने कितना बडा परिवर्तन भारतवासियों के विचारों में किया। केवल विचारों में ही उन्होंने परिवर्तन नही किया बल्कि हम कमजोर लोगों को भी अपने साथ लेकर कहा से कहा पहुचा दिया। जब महात्मा गाधी पहले पहल १९१५ साल में दक्षिण अफ्रीका से लौटकर भारत मे आये थे तो कौन कह सकता था कि उन की जिन्दगी में, उनके देखते देखते भारत स्वतंत्र हो सकेगा और भारत की स्वतत्रता देखकर वह यहा से जायेंगे। मगर उन्होंने स्वतत्रता ही नहीं दी, हमारे सामने ऐसे आदर्श भी रखे जिन पर अगर हम चलें तो केवल भारत का ही नही सारे संसार का कल्याण करेगे और आज यह हमारी कमजोरी है जिसके लिये हम सब को शर्मिन्दा होना पडता है कि उनके बताये रास्ते पर जितनी खूबी और विश्वास के साथ हमे चलना था हम नही चले। तो महात्मा गांधी के संबंध मे मै क्या कहूं ?

सरदार पटेल महात्मा गांधी के दाहिने हाथ थे इस में कोई संदेह नही, और जो बड़े बड़े काम उन्होंने किये वे आपसे छिपे नही हैं क्योंकि वह आपके ही थे और आप के ही होकर सारे देश के हुए थे। उनके संबंध में मै और क्या कहू। जो स्वराज्य प्राप्ति के बाद उन्होंने बडा काम किया वह भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। वह काम सारे भारत को एकीकरण का काम था। आप भारत के हज़ारों वर्षो के लम्बे इतिहास के पन्ने उलट कर देखें। आप कभी इतना बड़ा भारत एक छत्रराज्य के अन्दर नही पायेंगे। भारत में बड़े बड़े चक्रवर्ती राजा, बड़े बड़े बादशाह और शहनशाह हुए। भारत में अंग्रेज़ी राज्य भी बहुत दिनों तक खूब ज़ोरों से चला मगर जिस तरह एक छत्र और एक संविधान के नीचे सारा भारत आज आगया है उस तरह से किसी भी इतिहास काल में नहीं था। बात यह थी कि चक्रवर्ती राजा का रथ अबाघ रूप से सारे

भारत में चलता था मगर केवल रथ ही चलता था राज्य की हुकूमत नही चलती थी। मुग़ल बादशाह भी दिल्ली के तख्त पर बैठे, उन्होने राज्य किया, बादशाहत की, उनकी सलतनत चली लेकिन उस समय भी भारत के ऐसे हिस्से रहे जहा लोग बहुत कुछ स्वतत्र होकर अपना काम चलाते रहे और बहुत ऐसे सूबे भी थे जो बिल्कुल दिल्ली के मातहत नही हुए। अग्रेजी राज्य में तो आप जानते है कि ५०० से ऊपर छोटे बडे राज्य सारे भारत में चलते रहे और अग्रेजी राज्य उन पर यद्यपि कुछ न कुछ अधिकार रखता था मगर तो भी उनका कारबार अपनी रीति से, स्वतत्र ढग से चलता रहा। यह तो सरदार पटेल की करामात थी कि जिसने सभी देशी रजवाड़ों को मिलाकर सारे भारत को एक संविधान के अन्दर ला दिया और आज यद्यपि पश्चिम में पजाब आदि प्रात और दूसरी तरफ पूर्वी बगाल भारत से कट गया है और इस तरह भारत के दो पख कट गये हैं तो भी जितना भाग रहा है वह इतना बडा है जितना बडा भारत किसी भी ऐतिहासिक काल में एक छत्र राज्य मे नही रहा। यह काम, जैसा म ने कहा, सरदार पटेल का ही है और इसलिये उन का नाम भारत के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो मे लिखा जायेगा। ऐसे महान् पुरुषो के चित्र अनावरण करने का आपने मुझे गौरव प्रदान किया इसके लिये मै आपका आभार मानता हू।

मै कह रहा था कि जब से स्वराज्य मिला क्या क्या बडे काम हुए। सब मे बडा काम तो यही हुआ कि सारा भारत एक है, एक छत्र राज्य के अन्दर आया। उसके अलावा इतनी बडी राज्य क्राति के बाद हम सारे देश में शाति बनाये रख सके और जब जब अन्न की कमी हुई, जब जब इस बात का भय हुआ कि लोग भूखो मरेगे उस वक्त महगा ही सही मगर किसी न किसी तरह से सारे देश में अन्न पहुचा कर एक आदमी को भी हमने भूखों नही मरने दिया यह कोई छोटी बात नहीं। इसके अलावा और छोटी मोटी चीजे हुई है। यह तो सभी लोग जानते ही है और सभी लोग समझ सकते है कि किन किन बातो में सुधार हुआ है, किन किन बातों में कमी रह गयी है। जो कमी रह गयी है उन पर ध्यान लोगों का जाता है मगर जो पूरा हो गया है उसको लोग अक्सर भूल जाते है, उसकी ओर लोगों का ध्यान कम जाता है। तो मै यह चाहता हू कि स्वराज्य प्राप्ति के बाद किस तरह देश का कारबार चल रहा है इसको ध्यान में रखकर दोनों तरफ ध्यान दें और जिस तरह से व्यापारी आय और व्यय, आमदनी और खर्च दोनों का हिसाब लगा कर देखता है कि व्यापार में लाभ हुआ है या नुकसान हुआ है उसी तरह आप भी दोनों तरफ़ मिला जुलाकर लाभ और हानि का हिसाब निकाले। मेरा अपना विश्वास है कि लाभ की तरफ़ ही पलड़ा झुकेगा। मैं यह सब इसलिये नही कहता हूं कि इससे मुझे सतोष होना चाहिये बल्कि मै यह इसलिये कह रहा हूं कि जो हमें अवसर मिला है उससे सतोष और आइन्दा के लिये प्रोत्साहन मिलना चाहिये। जो लोग गवर्नमेंट चला रहे है या आइन्दा चलायेंगे उन पर जवाबदारी आ गयी है। हम यह चाहते हैं कि देश में शान्ति बनी रहे और एक देश में नही बल्कि सभी देशों में बनी रहे, उनके धन की वृद्धि हो, स्वास्थ्य की वृद्धि हो, उन में शिक्षा का अभाव और बीमारी कम हो और साथ साथ उनके विचार और चरित्र भी ऊंचे होने चाहियें। इन सब चीज़ों में हमें उन्नति करनी है, आगे बढ़ना है। यह काम दोनों का है। एक तरफ यह गवर्नमेंट का काम रहता है और दूसरी तरफ़ देश की जनता का भी कर्तव्य होता है। यह सभी देशों के इतिहास में देखा गया है कि जब कोई बड़ी चीज़ होती है, जब कोई देश स्वतंत्र होता है या कोई बड़ी घटना होती है जिसका असर देश भर के लोगों पर पड़ता है तो उसका फल यह होता है कि हर प्रकार की जागृति उसके

साथ होती है और वह एक विषय में नहीं बल्कि बहुमुखी होकर हर तरफ देखने में आती है। वही बात भारत के सामने आयी है। हमारी जागृति, हमारी उन्नति बहुमुखी होनी चाहिये और मेरा विश्वास है कि वह होगी। हम हर तरह से सुखी और समृद्ध होंगे और हम स्वस्थ भी होंगे और हमारा चरित्र भी ऊंचा होगा और हम हर तरह से आगे बढ़ेंगे। इसमें जनता भी मदद करेगी, गवर्नमेंट भी काम करेगी और प्रत्येक भारतवासी यह महसूस करेगा कि यह देश मेरा है। अगर कोई बात बिगड़ती है तो उसकी शिकायत होती है और कोई बात बनती है तो तारीफ भी उसी की है। इसलिये हमारा काम है कि जो कुछ करना कराना है उसको पूरा करें और जो दूसरों से कराना है उसमें भी सहायक हो सकें तो हों, जो कुछ सहानुभूति चाहिये वह दें, हर तरह से उस काम को पूरा करने में मदद करें। मैं आशा रखता हूं कि जिस तरह से भारत के लोगों ने इस बड़े काम में सहायता दी है और जिस तरह से अपनी चातुरी, देश प्रेम और शान्तिप्रियता से सब ने काम लिया है उसी तरह से देश में यदि शान्ति बनाये रखने में सहायक वे हुए तो हमारा भविष्य बहुत ही अच्छा, बहुत ही सुन्दर है। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि आप अपने कर्तव्य को समझें, देश से प्रेम करें और अपनी जवाबदेही को समझें। इसमें गुजरात के लोगों को विशेष कुछ कहने की जरूरत नहीं है। जो हम दूर के रहने वाले हैं, जो विदेशी लोग हैं वे भी महात्मा गांधी के ग्रंथों को पढ़कर उनके वाक्यों को पढ़कर जो गुजराती में लिखे और छापे गये हैं अनुप्राणित होते हैं तो गुजरात के लोगों को जहां वर्षों तक गांव गांव में घूमकर उन्होंने काम किया क्या कमी हो सकती है। मैं तो मानता हूं कि आप अपने कर्तव्य को समझते हैं और उसको पूरा करेंगे। अपने सम्बन्ध में मैं यही कहता हूं कि महात्मा जी का जन्म गुजरात में हुआ, गुजरात ने उनका साथ दिया और उनका सम्बन्ध गुजरात से रहा और मेरा सम्बन्ध गांधी जी से हुआ और इसलिये गुजरात से भी हुआ। जब कभी मुझे गुजरात के अन्दर आने का मौका मिलता है तो मैं यह नहीं समझता हूं कि मैं किसी दूसरे प्रान्त में गया हूं। मुझे तो ऐसा लगता है कि मैं अपने ही प्रान्त में हूं और अपने ही भाइयों और बहनों के बीच हूं। मैं आपसे यही कहना चाहता हूं कि आप से सारे भारतवर्ष के लोगों को बड़ी आशा है। आप लोग जिस काम में भी हों देश की उन्नति करें, अपनी जवाबदेही क्या है उसको समझें और अदा करें। आप सब बहनों और भाइयों ने जो प्रेम दर्शाया, जो आदर स्वागत किया उसके लिये धन्यवाद देना चाहता हूं और इन चित्रों का अनावरण कर देता हूं।

भड़ोंच गांधी अस्पताल

तारीख १ मार्च १९५२ को ४ बजे दोपहर को भड़ोंच में नये अस्पताल का उद्घाटन करते समय राष्ट्रपतिजी ने कहा—

डाक्टर चन्दूलाल देसाई, मुरारजी भाई, बहनो और भाइयो,

मैं आप के यहां आज आया हूं और आपने मेरे हाथों से इस अस्पताल का उद्घाटन कराना ठीक समझा और मुझे यह प्रतिष्ठा और गौरव दिया इसके लिये मैं आप सब को धन्यवाद देना चाहता हूं।

हमको स्वराज्य तो मिल गया है पर गांधी जी हमको बराबर कहा करते थे कि हमारा स्वराज्य स्थायी तभी होगा जब हम रचनात्मक काम करेंगे और किसी काम को अगर हम स्थायी

बनाना चाहते हों तो उसके लिये रचनात्मक कार्यक्रम का ग्लन आवश्यक और अनिवार्य है और इस प्रकार की संस्थायें जो देश में जहां तहां बन गई हैं जिनके : ररा जनता की सेवा हो रही है वे ऐसी आब व हवा तैयार करती है, वायुमंडल तैयार करती हैं जिस कि सब काम कर सकते हैं। अभी जो आप ने इस अस्पताल का थोडा सा इतिहास कहकर बतलाया उससे मैं तो यह अर्थ लगाता हूं कि कोई भी काम जो शुद्ध भावना से सच्ची श्रद्धा से आरम्भ किया जाता है और जिस में कुछ लोग दत्तचित्त होकर लग जाते हैं तो ईश्वर उसको पूरा कर देता है। जिस सच्ची भावना से, शुद्ध श्रद्धा के साथ आपने इस काम को शुरू किया था उसी का यह फल है कि आज आप यहां इतना बड़ा अस्पताल क़ायम करके उसके द्वारा आप जनता की सेवा कर सकते है और मुझे विश्वास है कि इसमें और भी अभी काम होगा और जो कुछ पैसे की जरूरत होगी वे भी आपको अनायास ही उसी तरह से मिल जायेगे जिस तरह से अब तक आपकी जो आशा हुई वह पूरी हुई है। और विशेष करके गुजरात में यह कहना आवश्यक नही है क्योंकि गुजरात के लोगों के दान से भारत के दूसरे दूसरे भागों मे भी बहुत काम चलते है और हो रहे है तो यहा पैसे की वजह से कोई काम रुक जाये इसे तो कोई स्वप्न में भी नही सोच सकता। मै तो यह चाहता हू कि आपक रचनात्मक काम के तरीके को मानकर चलना चाहिये और उस के द्वारा लोगों की सेवा जहा तक हो सके करते जाये और मेरा यह विश्वास है कि अगर आप चाहेगे तो यह काम और भी आगे बढ जायेगा और काम पूरा होगा। इसमे भी यह आपका बडा भारी सौभाग्य है कि एक सत का सहारा आपको मिल गया है।

हमारे देश में आज तक साधु संतों का गौरव रहा है और उन्होंने जो लोगो की सेवा की है उसी का यह फल है कि हम में अभी भी धार्मिक भावना रह गयी है और अभी भी अपने चरित्र और सस्कृति के प्रति हमारी श्रद्धा और विश्वास रह गया है। समय पाकर कुछ बुराई भी आ गयी है मगर उनको दूर करना हमारे लोगों का काम है। वे लोग आज तक हमारे गुरु बने रहे हैं। इसीलिये मैं तो चाहता हू कि वे इस तरह की सहायता करे जो सब को मिले और आप उसको ग्रहण करे और आगे काम करे।

इस समय देश में बहुत रचनात्मक कार्य की जरूरत है। हमारे यहा शिक्षा की कमी है। उसके लिये जहा तक काम किया जा सके वह होना चाहिये। हमारे यहां लोगों में बीमारी है और रोग फैला हुआ है उनको दूर करने के लिये जहां तक काम किया जा सके होना चाहिये। हमारे लोगों में ग़रीबी फैली हुई है उसको दूर करने के लिये जहा तक हम कर सके हमको करना चाहिये। काम की कमी नही है, काम करने वालो की कमी है और जो कोई भी काम करना चाहे उसके लिये काफ़ी मैदान खुला पड़ा हुआ है जहा वह अपनी शक्ति भर काम कर सकता है। इसलिये जब मै सोचता हू कि जब हम स्वराज्य का आन्दोलन चला रहे थे उस वक़्त मे और आज में क्या अन्तर है तो देखता हू कि उस वक़्त जितना काम करना था उससे भी अधिक काम करने की ज़रूरत आज है। बहुत से लोग ऐसा मान बैठे है कि अब स्वराज्य तो मिल गया, अब काम करने का समय नही रहा, अब भोग का समय आ गया है। मै मानता हूं कि काम करने वालों के लिये तो भोग का समय कभी नही आता। जितना स्वराज्य के आन्दोलन में काम करना था उससे भी अधिक काम स्वराज्य प्राप्ति के बाद करने की भारत में ज़रूरत है। उस वक़्त

जितनी कठिनाइयों का हमको सामना करना पड़ता था उससे कही अधिक कठिनाइयों का आज हमें सामना करना है। उस वक्त तो लोग चाहते थे कि देश स्वतत्र हो और सब लोग अग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध एक साथ होकर काम करने के लिये तैयार भी हो जाते थे; चाहे और बातो में एक मत एक राय हो या नही हो मगर स्वराज्य प्राप्ति के लिये देश के सभी विचारधारा के लोग एक हो जाते थे। इसलिये वह काम तो सहज था। उस वक्त हमें एक भारी शक्ति का मुकाबला करना था और शक्ति का विरोध हम सब एकत्रित होकर ही कर सकते थे और करते थे। अब जब हमारे अपने हाथों में अधिकार आ गये तो भिन्न भिन्न विचार, भिन्न भिन्न आदर्श, भिन्न भिन्न शैली, तरीके आदमी के सामने आते है, हम में से कोई अब पूरब खीचता है, कोई पश्चिम खीचता है, कोई उत्तर खीचता है और कोई दक्षिण खीचता है और उसका फल यह होता है कि हमारी गाडी उतनी तेजी के साथ आगे नही बढ सकती जितनी बढनी चाहिये। इसलिये मै मानता हू कि अभी जो काम है वह अधिक कठिन काम है और उस समय जितने त्याग की आवश्यकता होती थी उससे अधिक इस वक्त है। जब महात्मा गाधी ने देश के लोगो को पुकारा था और कहा था कि स्वराज्य प्राप्ति के लिये आगे बढो, उसमे जो कुछ कष्ट सहना पडे उसको सहो जितने लोग उस काम में आकर जुटे, शरीक हुए वे यह समझ बूझ कर शरीक हुए कि उनको कुछ मिलने वाला नही है और उनको अपने स्वार्थ के लिये किसी चीज की इच्छा नही करनी चाहिये, उनको अगर कुछ मिल सकता है तो सरकार से दड मिल सकता है, अगर कुछ मिल सकता है तो जेलखाना मिल सकता है, अगर कुछ मिल सकता है तो अपने धन का अपहरण मिल सकता है। उस समय मनुष्य के सामने कोई प्रलोभन नही था। आज हज़ारो तरह के प्रलोभन हम मे से प्रत्येक के सामने है और उस वक्त जो आते थे वे प्रलोभन से बचे ही रहते थे, प्रलोभन होता ही नही था। मगर आज प्रलोभन सामने है और जो अपने को बचा सके तो मै मानता हू कि उसमें अधिक श्रेय है। इसलिये आज का [illegible] अधिक कठिन है, अधिक कठिन इस वजह से भी है कि अब हमें किसी विदेशी के साथ लडाई झगड़ा कुछ नही करना है। अब तो अपनी बुद्धि, अपने परिश्रम और अध्यवसाय से जो कुछ देश का भला हम कर सकते है उसे करना है। इसलिये अब कोई बात बिगडती है तो उसका दोष हम दूसरों के सर पर नही मढ सकते, उसे हमें अपने सर पर उठाना पडेगा। और सब कठिनाइयों को देखते हुए मेरा तो यह विश्वास है कि आज का काम उन दिनों के काम से अधिक कठिन है। आज ऐसे लोगों की जरूरत है जो सच्चे त्यागी हो और इस समय जो लोगो के सामने प्रलोभन है उन से अपने को बचा सके और जिन के सामने सेवा के सिवाय न कोई आदर्श हो और न कोई ध्येय हो। जब ऐसे देश के सच्चे सेवक आकर इस काम में जुटें तो जो कुछ आज कठिनाई है वह दूर हो जायेगी और होनी भी चाहिये।

आज देश स्वतत्र हो गया है और लोगों में उमंग और स्फूर्ति आई है। इसका यह फल होना चाहिये कि हमारी उन्नति बहुमुखी हो और हम हर तरह से उन्नति करें और यह तभी हो सकता है जब हम सच्ची भावना से इस काम में लगे। इसलिये मै तो रचनात्मक काम को उन दिनो में भी महत्व दिया करता था और आज भी देता हूं और सच पूछिये तो उन दिनो से आज अधिक देता हूं। कुछ ऐसी भी भावना हम लोगों के दिलों में आ जाती है कि अब स्वराज्य हो गया है, अपनी सरकार हो गयी है, अब जो कुछ करना कराना है अपनी सरकार को करना चाहिये अब हमें

कुछ त्याग करने की ज़रूरत नही है। में इस बात को भी नहीं मानता हू। म ता मानता हूं कि सरकार अपनी है पर तो भी जिनको सेवा करनी है उनको करते ही रहनी चाहिये और तभी वे सरकार से भी ठीक काम करा सकेगे। महात्मा जी कहा करते थे कि जो लोग कुछ काम करना चाहते है, लोगों में सुधार करना चाहते है उनको रिफार्मर होकर काम करके सरकार को रास्ता दिखलाना चाहिये और वे ही लोग सरकार का पथ प्रदर्शक हो सकते है। तो आज हमको ऐसे ही पथ प्रदर्शकों की जरूरत है जो देश के लोगों को और सरकार को ठीक रास्ता दिखलायें और दिखलाये केवल कहकर ही नही वल्कि करके दिखलायें। इसलिये ऐसे काम का महत्व है और मै आशा करता हूं कि जो केन्द्र गुजरात मे सारे देश के लिये महात्मा गाधी ने स्थापित किया वह फिर भी आगे ही रहेगा और सब के लिये वह मिसाल की तरह होगा जिसको देखकर लोग आगे चलेगे।

मै सब भाई और बहिनों को धन्यवाद देता हू। जिन्होंने इस काम में सहायता दी है, या आगे सहायता देंगे उन सब को मै धन्यवाद देता हू और आशा करता हू कि यह काम दिन दिन बढ़ेगा, फूलेगा, फलेगा।

साबरमती आश्रम

तारीख २-३-५२ को साढे आठ बजे सुबह साबरमती आश्रम, अहमदाबाद में राष्ट्रपति-जी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि आज मुझे यह दूसरा सुअवसर मिला कि मैं यहां आ सका और इस आश्रम का दर्शन कर सका। जैसा मै ने कहा इस आश्रम से मेरा सम्बन्ध तो बहुत दिनों से चलता आया है। मै समझता हूं कि प्रायः ३५ वर्ष हुए जब पहले पहल इस आश्रम में मै आया था उस समय न तो इतने मकान थे और न बड़े बड़े मकान थे। यहां एक छोटे मकान से काम आरम्भ हुआ था। उस वक्त भी मै आया था और दो चार रोज़ रह कर गया था। उस के बाद जब तक महात्मा गांधी इस आश्रम में रहे बार बार उन से मिलने आया करता था। जब बापू वर्धा चले गये तब से यहां मेरा आना जाना कम हो गया पर तो भी जो सम्बन्ध जुड़ा था, जो प्रेम हुआ था, वह तो बना रहा ही। इस लिये जब कभी मुझे इधर आने का मौक़ा मिलता है तो मै यहां आ कर आश्रम की बहनों और भाइयों से मिल लिया करता हूं।

बाद में बापू ने इस आश्रम को हरिजनों की सेवा के लिये छोड़ दिया और इस काम में १९३१ से यह बराबर लगा हुआ है। जिस वक्त बापू डांडी मार्च के लिये यहां से निकले थे तो यह कह कर गये थे कि स्वराज्य ले कर आयेंगे तो इस आश्रम में लौटेंगे, नहीं तो नहीं लौटेंगे। पर जब स्वराज बापू को नहीं प्राप्त हुआ तो वह नहीं आये। जब स्वराज्य प्राप्ति

के बाद उनके यहां आने का अवसर आया तो हमारे दुर्भाग्य से बापू चले गये । मगर जो कुछ वह छोड़ गये है, जो कुछ इस संसार के लिये वह सिखा और बता गये हैं वह तो ज्यों का त्यों है और हमारा यह कर्तव्य है कि जो काम बापू ने आरम्भ किया था और जिस को वह पूरा नहीं कर पाये थे उस को हम पूरा करें। उस को पूरा करने में इस प्रकार के आश्रम का बहुत बड़ा भाग है और विशेष कर के जो हरिजनों का काम था वह तो बापू के बहुत प्रिय कामों में एक काम था और इस लिये जब बापू ने इस आश्रम को छोड़ा तो इसे हरिजन निवास बना कर ही छोड़ा। तो अभी भी बापू ने जो काम आरम्भ कर दिया था वह सब काम पूरा नही हुआ है; जैसे हरिजनों का यह काम पूरा नही हुआ है । उसी तरह बापू जो एक नया समाज संगठन करना चाहते थे, नयी रीति से दुनिया को चलाना चाहते थे उस समाज का संगठन नही हो पाया है; और यद्यपि हमारे हाथों में राजसत्ता आ गई है, अधिकार आ गये है लेकिन उन आदर्शों को अभी हम पूरा नही कर पाये हे । इस लिये जो लोग इस तरह के आश्रम चला रहे है या बापू के बनाये रास्ते पर चल कर शिक्षा ले रहे है वे उन के अधूरे काम को पूरा करें। जो लोग इस तरह के रचनात्मक काम में लगे हुए है उन का सब से बड़ा कर्तव्य होता है कि अपनी कार्यवाही से वे दूसरों को अपनी ओर खींचें और उस रास्ते पर ले आवें। किसी को अब कुछ कहने की आवश्यकता नहीं रही क्यों कि बापू ने स्वयं इतना कह दिया है, इतना लिख दिया है और लिख कर इतना पत्रों में छापा है कि अगर कोई सीखना चाहता हो, पढ़ना चाहता हो तो उस के लिये नई चीजें सीखने की जरूरत नही है । बात यह है कि जो कुछ उन्होंने कहा है उस के अनुसार चलना चाहिये । अब यही काम है । उस पर हम चलेंगे तो बापू देश को जिधर ले जाना चाहते थे उधर हम उसे ले जा सकेंगे । इस लिये जो लोग इस तरह की संस्थाओं मे काम कर रहे है उन पर जवाबदेही आ गई है, वे आदर्शस्वरूप रह गई है और उनका काम है कि अपने रास्ते पर दूसरों को ले आवें। मै आशा करता हूं कि आप लोग जिन्हों ने बापू के कामों को समझा है और उन के सिद्धान्त को अपनाया है हमेशा बापू के रास्ते पर चलते रहेंगे और देश का मार्गदर्शन करते रहेगे। आज सवेरे सवेरे आप सब भाइयों और बहनों के दर्शन से मुझे आनन्द हुआ ।

गुजरात विद्यापीठ

तारीख २ मार्च १९५२ को दिन में ८-३५ बजे गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद में पुस्तकालय के मकान के शिलान्यास के अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा--

गुजरात विद्यापीठ के अध्यापकगण, विद्यार्थियो, बहनो और भाइयो,

जब मुझ से कुछ दिन पहले यह कहा गया कि मैं विद्यापीठ का कुलपति हो जं तो मैं ने इस को अपने लिये एक बड़ा गौरव समझा और उस का कारण अभी आप ने बता ही दिया। विद्यापीठ के कुलपति स्वयं महात्मा गांधी थे और उन के बाद सरदार वल्लभ भाई कुलपति रह चुके हैं। उस स्थान पर यदि मुझे रहने को कहा जाये तो उस को गौरव के अतिरिक्त और दूसरा क्या मैं मानूं? इस लिये मै ने इस को सहर्ष स्वीकार किया । मैं जिस पद पर आज हूं

उस का और कई यूनीवर्सिटियों से भी सम्बन्ध है, एक का मैं कुलपति हूं और कई यूनीवर्सिटियों का निरीक्षक था जो कहिये मैं हूं और उन के साथ मेरा कुछ न कुछ सम्बन्ध रहता है; उन की कार्यवाही की कुछ न कुछ देख भाल करनी पड़ती है; पदवी दान के अवसर पर भी जाना होता है । मैं आप से सच कहता हूं मैं यहां के कुलपति के पद को उन में से किसी से भी कम नही, अधिक ही मानता हूं और इस का कारण यह है कि इस संस्था के साथ मेरा आज तक सम्बन्ध रहा है; जैसा आप ने कहा, १९१९-२० से जब इस को महात्मा गांधी ने क़ायम किया तब से मेरा सम्बन्ध रहा है और इस का भी विशेष कारण है। क्यों कि मैं इस बात को मानता हूं कि जो शिक्षा पद्धति हमारे देश में पिछले १०० वर्षों से रही है वह एक प्रकार की रही है और एक ध्येय विशेष को ले कर जारी की गई थी और अभी भी वह बहुत कुछ उसी रास्ते पर उसी ध्येय को सामने रख कर चल रही है । जबसे भारत को स्वराज प्राप्त हुआ है तब से बहुत तरह के प्रश्न सामने आये और इतने समय में हम इस सारी पद्धति को बदल नहीं पाये है। यह पद्धति जिस वक़्त आरम्भ की गई थी उस वक़्त जिन लोगों ने इस को जन्म दिया था उन्हो ने इस काम में अपना विशेष उद्देश्य यह रखा था कि किस तरह से भारत में अपने देश की संस्कृति और विचारों का वे प्रचार करे और साथ ही साथ यह भी सोचा था कि इस देश के राजकाज में मदद करने वाले भारतवासी उन को मिलें। इन दोनों चीज़ों को सामने रख कर उन्हों ने इस को आरम्भ किया और जो उन्हों ने निश्चय किया होगा कि अपनी सस्कृति का प्रचार करें। उस का भी कारण यही था कि वे समझते थे कि हमारी संस्कृति, हमारी विद्या, हमारा साहित्य कुछ ऐसा नही है जिस से हम को कुछ सीखने को मिल सकता हो, और इस लिये वे तो यह मान कर ही अपनी विद्या हमें सिखाना चाहते थे कि उस से हमारा उपकार है और होगा । इस तरीके से उन्हो ने इस काम को आरम्भ किया । हमारे देश के लोगों ने भी उसे अर्थकरी विद्या होने के कारण खुशी से स्वीकार किया। सच पूछिये तो यह विद्या बहुत अर्थकरी भी नही थी क्यो कि जिन रीतियों से, जिन कारणों से देश की दीनता को दूर कर के उस को हम बड़ा और समृद्ध बना सकते थे न तो वे चीजें सीखने को मिली और न उस तरीके से पूरा लाभ उठाने को मिला । तौ भी जो कुछ उन्हों ने सिखाया, बताया हम ने माना। मैं यह भी मानता हूं कि इस देश में अंग्रेज़ों और दूसरे योरोपीय लोगों ने हमारी अपनी विद्या, हमारे अपने साहित्य को भी एक प्रकार से फिर हम को सिखलाया। हम कुछ इस तरह से मोह में पड़ गये थे कि हम भी समझने लग गये थे कि हमारे पास कुछ नही है ; और उन्हों ने उस विद्या को फिर से जीवित कर के हमारी आंखें खोल दीं। तो इस लिये हमें उन का आभार मानना चाहिये। मगर जब हम दोनों तरफ़ का हिसाब लगाते है और देखते है तो हम मानते है कि हमारे ऊपर एक भारी बोझ भी उन्हों ने लादा। वह बोझ यह था कि विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने की वजह से हमारा मस्तिष्क उतना विकसित नही हो सका जितना वह हो सकता था और हमारे नवयुवकों के मस्तिष्क पर विदेशी भाषा का बोझ इतना पड़ा कि उस की वजह से वह बहुत कुछ दबा है ।

लोग कहते है कि इस शिक्षा का फल यह हुआ है कि हमारे यहां लोगों ने स्वतन्त्रता संग्राम आरम्भ किया, इस शिक्षा का यह फल हुआ कि हमारे लोगों ने आज संसार में जो कुछ है [illegible]

में प्रगति पाई है और आज तो उन के साथ वे मुकाबला भी कर सकते हैं। इस का उत्तर मुझे याद है; उसे महात्मा गांधी ने १९२१ में एक बड़ी सभा में दिया था। उड़ीसा में महात्मा गांधी उन दिनों दौरा कर रहे थे। मै भी उन के साथ था। एक बड़ी सभा में एक सज्जन ने उठ कर यह प्रश्न किया "महात्मा जी, आप तो अंग्रेजी शिक्षा की इतनी शिकायत करते हैं तो क्या उसी शिक्षा के फलस्वरूप आप नहीं है ? क्या उसी शिक्षा के फलस्वरूप लोकमान्य तिलक नहीं है ? क्या और जो दूसरे बडे बड़े लोग हमारे देश में फैले हुए है वे उसी शिक्षा के फलस्वरूप नहीं हुए हैं ?" महात्मा जी ने उस का बहुत सुन्दर उत्तर दिया। उन्हों ने कहा "अगर यह शिक्षा हम लोगों को नहीं मिली होती तो कौन कह सकता है कि हम जो है वही नहीं होते, यह कौन कह सकता है कि अगर यह शिक्षा हम को अपनी भाषा द्वारा मिली होती तो जो हम हैं उस से भी हम बडे नहीं होते ? यह कौन कह सकता है कि लोकमान्य तिलक जिन्हों ने अपनी विद्वत्ता के कारण इतनी प्रसिद्धि पाई है वह अपनी भाषा में शिक्षा पाये होते तो इससे भी कहीं अधिक विद्वान नही होते ?" और उन्हों ने उत्तर दिया "शंकराचार्य उतनी छोटी अवस्था में सारे भारत में केवल फिरे ही नही बल्कि उन्हो ने तो अपना सिक्का भी जमा लिया था जो अभी तक कायम है। तो क्या उन्हों ने अंग्रेजी शिक्षा पाई थी। अभी हाल के दिनों में तुलसीदास जी ने सारे देश में ख्याति पाई, और भी लोग बहुत ऐसे हुए जिन्हों ने केवल नाम ही नही पाया बल्कि जिन के वचन का प्रभाव करोड़ों आदमियों के जीवन पर दिन प्रतिदिन पड़ता है और करोड़ों आदमी सुधरते हैं। तो क्या उन्हों ने अंग्रेज़ी शिक्षा पाई थी। कौन कहता है कि लोकमान्य शंकराचार्य से भी बड़े तुलसीदास से भी बड़े नही होते अगर वह अपनी भाषा में शिक्षा पाते"। मै मानता हू कि वह उत्तर अभी भी अपने स्थान पर सही है। इस लिये मेरा अपना विश्वास रहा है और आज भी है कि अपनी भाषा में शिक्षा होनी चाहिये। अपनी भाषा मे शिक्षा पाने से लोग उतने ही काल में अधिक विद्या प्राप्त कर सकते है जितनी विद्या विदेशी भाषा में शिक्षा प्राप्त कर के।

इस बात में सुधार करना सिर्फ इन सस्थाओं का काम होना चाहिये। केवल इतना ही नही। मैं ने पर साल भी कहा था कि प्रयोग का काम गवर्नमेन्ट बहुत कम करती है। गवर्नमेन्ट का और सिलसिला होता है और उसी के अनुसार वह अपना काम करती रहती है और उस की इतनी जवाबदारी रहती है, इतनी बातों का विचार करना पड़ता है कि अगर कोई प्रयोग करे भी तो उस को डर रहता है कि कही उस में सफलता नही हुई तो हमारे ऊपर बड़ी जवाबदारी आजायेगी। इस लिये कोई भी गवर्नमेन्ट प्रयोग के काम में नहीं पड़ना चाहती। हमारी गवर्नमेन्ट भी तो गवर्नमेन्ट ही है। वह भी प्रयोग नहीं करेगी। इस लिये जो प्रयोग का काम है वह इस तरह की स्वतन्त्र संस्थायें कर सकती हैं और उन का यह काम है कि प्रयोग कर के उस के फल को गवर्नमेन्ट के सामने रखें और गवर्नमेन्ट को मजबूर करे कि प्रयोग का काम हो गया है, उस का फल सामने है और उस के अनुसार दृढ़ हो कर गवर्नमेन्ट को उस काम को अपने हाथ में ले लेना चाहिये।

शिक्षा सम्बन्धी उन्नति के लिये महात्मा गांधी जी के तरीके के अनुसार गवर्नमेन्ट यूनीवर्सिटियों में स्कूलों और कालेजों में नहीं काम करती है। जैसा मैं ने कहा वह उसे अभी

भी प्रयोग का काम समझती है इस लिये उस पर चलने की उस की पूरी हिम्मत नहीं होती । तो इस काम को आप को पूरा करना है । यहां बापू ने बुनियादी तालीम का रास्ता दिखलाया । उन्हों ने इस सम्बन्ध में बहुत लिखा है । मुझे याद है कि जब १९३७-३८ साल में हमारे कांग्रेस के लोगों ने शासन भार अपने ऊपर लिया था तो बापू ने एक सम्मेलन किया था जिस में उन्हो ने देश भर के अच्छे अच्छे शिक्षाशास्त्रियों को आमन्त्रित किया था और वहां पर उन्हों ने बुनियादी तालीम की बात रखी थी । उस के पहले से भी उन्हों ने लेखों द्वारा अपने विचारों का प्रचार तो किया था लेकिन वह लोगों से वादविवाद कर के तजुरबा कर के, लोगों को समझा बुझा कर के इस के सम्बन्ध में कोई निर्णय करना चाहते थे और मुझे यह भी याद है कि वहां बुनियादी तालीम के सम्बन्ध की दो मुख्य चीजें आई थी । एक तो यह कि काम करा कर के ही शिक्षा देनी चाहिये ; धंधे के ज़रिये ही शिक्षा देनी चाहिये । इस चीज को तो शिक्षाशास्त्रियो ने मान लिया और मान लिया इस वजह से कि आज पश्चिम के देशों में भी और विशेषकर अमेरीका में इस प्रकार की शिक्षा ही सब से उत्तम शिक्षा मानी जाती है । यहां के शिक्षाशास्त्रियों ने देखा कि बापू के विचार यद्यपि वह वहा की शिक्षापद्धति से परिचित नहीं थे, कोई उसका विशेष अध्ययन भी नही किया था और स्वतन्त्र रूप से उस निर्णय पर पहुचे थे जो सब से उन्नत विशिष्ट शिक्षाशास्त्रियों के विचारो से मिलते थे और उन्हों ने उसे मान लिया। मगर उस के दूसरे भाग को उन्हो ने उस वक्त भी नही माना और मैं समझता हूं कि आज भी वे उसे नही मानते हैं । बापू का सोचना था कि भारत एक गरीब देश है। वह शिक्षा को सर्व साध्य बनाना चाहते थे जिस मे वह प्रत्येक आदमी को मिले और उस का खर्च कम पडे और उसके खर्च का भार देश पर नही पडे । इस लिये बापू का विचार था कि लोगो को धंधा करा कर शिक्षा दी जाये और उस धंधे से इतना पैदा हो कि शिक्षा का खर्च निकल आये अर्थात शिक्षा सेल्फ स्पोर्टिंग हो जाये। वह यह चाहते थे और उन का यह विश्वास था कि यह हो सकेगा। मगर शिक्षा-शास्त्रियों ने उसे स्वीकार नही किया। उन का खयाल था कि जहां भी यह पद्धति शुरू होगी विद्यार्थी जिस तरह से कारखाने में लोग काम करते हैं वैसे ही करने लग जायेंगे ; और उन का शिक्षा की ओर ध्यान न जा कर पैसे की ओर चला जायेगा। जो इतनी दूर जाना नही चाहते थे वे कहते थे कि शिक्षा के विचार से तो वह ठीक है मगर उस में पैसे कमाने की बात आ जाने से शिक्षा का उतना महत्व नही रह जायेगा। मैं समझता हूं कि अभी भी हमारे यहां के जितने शिक्षाशास्त्री हैं उन्हों ने इस बात को नही माना है और जहां जहां गवर्नमेन्ट ने तालीमी संघ की पद्धति मानी भी है उस ने इस बात को पूरी तरह से नही माना है । मैं आज भी मानता हूं कि बापू का विचार ठीक था। और इस विद्यालय जैसी संस्थाओं का यह काम है कि वह इस बात को कर के दिखलाये कि पैसे भी निकल सकते है और विद्यार्थी भी चरित्रवान हो सकते है, उन के मस्तिष्क और विचार विकसित हो सकते है और वे और विद्यार्थियों के मुकाबले में बेहतर और अच्छे हो सकते है । मैं जानता हूं कि जहां लोगों ने इस का प्रयोग किया है, गवर्नमेन्ट की तरफ से जो प्रयोग किया गया है उस में सफलता मिली है। मैं जानता हूं कि बिहार में एक छोटे पैमाने पर इस का प्रयोग किया गया। सौभाग्य से जो लोग वहां पर गवर्नमेन्ट सर्विस में है उन्हों ने इस को समझा है और इस को वे पूरा करना चाहते हैं । उन लोगों ने इस का काम चलाया है और यह भी सी-

भाग्य की बात है कि उस वक़्त के अंग्रेज़ अधिकारियों ने उन को प्रयोग करने का मौक़ा दिया और और उसी का यह नतीजा हुआ है। मैंने सुना है कि १०० में प्राय: ७० विद्यार्थी कम कर के निकाल लेते हैं और वे समझते हैं कि यह आरम्भिक काल है, अभी सब चीज़ की पूरी उन्नति नही हुई है शिक्षक भी नये हैं; उन को अभी पूरा अनुभव भी नही था। वे तो समझते है कि सारे का सारा खर्च विद्यार्थियों के जरिये से वे निकाल लेंगे। अभी जब हम सारे देश मे सर्वव्यापी शिक्षा की बात सोचते है तो करोडो रुपये का खर्च सामने आ जाता है और घबडा कर छोड देते है। न रुपया हमारे पास आज है और न कल होने वाला है। वह तो आहिस्ता २ होगा। कभी हम घबडा जाते है कि क्या कभी ऐसा समय आयेगा भी जब हम प्राइमरी ऐज्युकेशन को सारे देश के लिये अनिवार्य बना सकेंगे या नही और कोई कोई पूछने भी लगते हैं। मगर तालीमी संघ की बात ठीक तरह से मान ली जाये तो हम २०-३० वर्षों के अन्दर शिक्षा को सर्वव्यापी बना सकते हैं। अत मै यह चाहता हूं कि यह विद्यालय और इस तरह की जितनी संस्थायें हैं इस प्रकार का प्रयोग कर के काम को पूरा कर के दिखलावें और गवर्नमेन्ट को मजबूर करें कि यह काम होना चाहिये। मै मानता हू कि जब गवर्नमेन्ट अपनी गवर्नमेन्ट है और उस को लोकमत से चलना है तो वह उसे मान लेगी और गवर्नमेन्ट को मजबूर करने का यही तरीका है। इस लिये मै तो मानता हूं कि ऐसी संस्थाओ का रहना आवश्यक है। इस लिये पर साल भी मैं ने कहा था कि प्रयोग का काम चलाते रहना चाहिये। यह भी आप को समझना चाहिये कि प्रयोग का काम खत्म होने वाला नही है। कोई आदमी किसी पहाड पर चढता है तो आगे क्या चीज है उस को देखने की उस की उत्सुकता होती है और फिर वहां जाने पर और आगे की चीज़ देखने की उस की उत्सुकता होती है। उसी तरह मे प्रयोग का काम होता है और वह खत्म होने वाला नही है। जैसे जैसे प्रगति होगी, नये रास्ते नया संसार, नयी दुनिया हमारे सामने आती जायेगी और उन तक पहुचना हमारा ध्येय होता जायेगा। इस लिये मैं यही मानता हू कि इस तरह की संस्थाओ को केवल चलते ही रहना नही चाहिये बल्कि उन को दूसरी तरह की संस्थाओं से स्वतन्त्र रहना चाहिये। इस मामले मे उन को किसी प्रकार का बन्धन नही रहना चाहिये, चाहे वह गवर्नमेंट का बधन हो चाहे और किसी दूसरे का; क्योंकि बधन का अर्थ यह होगा कि वे अपनी रीति से नही चल सकेगी, कही न कही उन को रुकावट आयेगी। बापू ने भी यही मान कर उन्हे स्वतन्त्र रहने को कहा था क्योंकि वे समझते थे कि किसी प्रकार की रुकावट हमारे रास्ते में आयेगी, और यदि किसी प्रकार का बंधन हम महसूस करेंगे तो हमारा काम पूरा नही होगा। इस लिये हम चाहते हैं कि गवर्नमेन्ट अपनी है, उन से आप को सहायता मिले तो आप ले मगर गवर्नमेन्ट के बन्धन में नही रहें और गवर्नमेन्ट से भी मैं उम्मीद रखता हूं कि अगर वह ऐसी संस्थाओ को सहायता दे तो अपनी ओर से उन को कोई शर्त नहीं लगानी चाहिये बन्धन नही रखना चाहिये और उन को आज़ादी दे देनी चाहिये कि जिस रूप से वे चाहें काम करें। तभी उस दान से भला हो सकता है; और दान देने वाले को उस का फल मिल सकता है। और इस लिये मुझे और भी खुशी होती है कि आप ने मुझे इस पद पर बैठाया है कि आप लोगो को कुछ सिखा सकें, जो आप का विचार है उसे लोगो को बता सके और जो काम आरम्भ हुआ जिस का ध्येय अभी पूरा नहीं हुआ उस को पूरा कर सकें। इस में मुझ से जो सेवा हो सकती है मै देने के लिये तैयार हूं। मै आप सब बहिनों और भाइयों का आभार मानता हूँ

कि आप ने मुझे यह अवसर दिया। जिन बहनों और भाइयों ने आज पदवी पाई है उन से मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि जो व्रत आप ने लिया है जो शिक्षा आप को यहा से मिली है और इस के अलावा इस अवसर पर जो आप ने प्रतिज्ञा की है उस का स्मरण रखें और यदि उस का स्मरण रखेंगे तो आप गलत रास्ते पर नही चलेंगे। मेरी आप से यही विनती है और ईश्वर से प्रार्थना है कि आप को वह शक्ति दे कि आप उस रास्ते पर चल सकें।

वल्लभ भाई पटेल की मूर्ति का अनावरण

वल्लभ विद्यानगर बोचासन, गुजरात, में तारीख २-३-५२ को सरदार वल्लभ भाई पटेल की मूर्ति का अनावरण तथा आंखो के अस्पताल का उद्घाटन करते समय राष्ट्रपति जी ने कहा —

श्री मुरार जी, भाई, बहनो और भाइयो,

मैं सवेरे अहमदाबाद मे गुजरात विद्यापीठ मे गया था और सध्या के समय उस की शाखा को यहा देखने आ गया। । विद्यापीठ का काम तब तक पूरा नहीं हो सकता है जब तक कि हम गावों को अपने हाथ मे नहीं ले और गाव के लोगों के लिये काम करने वाले, उन मे सभी प्रकार के काम करने वाले हम तैयार नहीं कर सकें। यही सोच कर इस विद्यालय का जन्म हुआ था और आज २०-२२ वर्षों के काम के बाद हम यह देख सकते है कि उन के लिये कितना और भी अभी काम बाकी है और कितने प्रकार के काम हम ने करने है। भारत अभी भी गांवो मे ही बसता है। १०० मे ७० आदमी गाव में ही रहते हैं और गाव से ही जो शहर मे रहते है उन का भी बहुत कर के काम चलता है। इस लिये जब तक हमारे गाव का सुधार न हो, उस की पूरी उन्नति न हो तब तक भारत का सुधार और उन्नति नही हो सकती। इस चीज को महात्मा गाधी ने हम को बार बार बतलाया और ग्राम सेवा को अपना व्रत बनाया और ग्राम सेवा के लिये सेवक तैयार करने का व्रत लिया। विद्यापीठों का जन्म भी इसी उद्देश्य से हुआ था और विद्यापीठों ने जो कुछ किया उस में ग्राम सेवक तैयार करने का काम एक अत्यन्त महत्वपूर्ण काम रहा। मगर केवल विद्यापीठ मे सेवक तैयार होने से तो सब काम होता नही, उन को गाव गाव मे जा कर बैठना चाहिये और गावो के लोगों की किस तरह से उन्नति हो सकती है इस को देखना चाहिये और उस में सहायता करनी चाहिये। आवश्यकता इस बात की है कि सब प्रकार की उन्नति हो। किसी एक विषय को ले कर हम लोगों की उन्नति करना चाहे तो वह पूरी उन्नति नहीं होगी। इस लिये सब तरह की उन्नति होनी चाहिये; खेती की उन्नति होनी चाहिये, कला की उन्नति होनी चाहिये, कारीगरी की उन्नति होनी चाहिये, शिक्षा की उन्नति होनी चाहिये, लोगो को रोगमुक्त होना चाहिये, लोगों को स्वच्छ शुद्ध और साथ साथ पौष्टिक भोजन मिलना चाहिये। जब तक इन सब चीजों का शिक्षा पद्धति में समावेश हम नही करे और सब के लिये कुछ न कुछ बन्ध न हो, तब तक हमारा काम

पूरा नही हो सकता। इस लिये मुझे यह देख कर बडी प्रसन्नता होती है कि यहां आप जो काम कर रहे है उन में इन सब चीज़ों पर ध्यान है और सब से बडी बात तो यह है कि यहां गांवों के बच्चों को ला कर इन सब चीज़ों को सिखा कर उन को योग्य बनाया जा रहा है कि वे भी जब शिक्षा प्राप्त कर बाहर जाये तो इस तरह की सेवा कर सके। मै तो आशा रखता हूं कि यहा से जो विद्यार्थी निकलते है उन में से बहुतेरे ऐसे होगे जो गांव की सेवा ही अपना काम मानेगे और उस मे ही अपना जीवन लगायेगे। ऐसे भी ज़रूर होंगे जो यहा की शिक्षा पा कर अपने कारबार मे, अपने धधे मे लग जायेंगे। वह भी होना चाहिये। मगर हम यह आशा रखते है कि उन मे से एक अच्छी सख्या ऐसे लोगों की जरूर निकलेगी जो ग्राम सेवक हो कर काम करेगे। यह भी मुझे देख कर बडी प्रसन्नता हुई कि यहा पर गवर्नमेन्ट की ओर से जो शिक्षक नियुक्त हुए है या प्राथमिक स्कूलो मे होने वाले है वे भी यहा आ कर कुछ दिनों तक शिक्षा प्राप्त करते है। मै समझता हू कि इन शिक्षकों को भी ग्राम में ही काम करना है। अतः यदि यहा के वातावरण में थोडे दिन भी वे रह जाये और यहा की पद्धति से कुछ भी उन का परिचय हो जाये तो वे अपने जीवन मे जहा कही भी काम करेगे लोगों को लाभ पहुचा सकेगे। इसलिये यह भी एक बडी चीज हो रही है। मै ने यह भी देखा कि नेत्र रोग से बीमार लोगों को आप दवा ही नही बाटते है बल्कि नेत्र के इलाज का भी आप ने प्रबन्ध किया है और उस के लिये आप को अच्छे त्यागी और सुयोग्य डाक्टर भी मिल गये है। गोशाला की उन्नति तो भारत की उन्नति के लिये अत्यन्त आवश्यक है ही क्यों कि जब तक हम को खाने के लिये दूध और उस से बनी हुई चीजे नही मिले, जब तक हमारी खेती के लिये अच्छे बैल हम को नही मिले तब तक भारत की किस तरह से उन्नति हो सकती है? और दोनों के लिये गोशाला की उन्नति अत्यन्त आवश्यक है। इसी लिये साबरमती मे भी महात्मा जी ने आरम्भ से ही गोशाला रखी थी और जहा जहा वे गये सभी जगहो मे उन्हों ने गो सेवा को बहुत महत्व दिया। उस को भी आप चला ही रहे है। खेती का काम हो रहा है। महात्मा गाधी ने चर्खे को जितने घरेलू धधे है सब का केन्द्र माना था और वह कहते थे कि जिस तरह सब नक्षत्रो मे सूर्य प्रधान है उसी तरह से सब घरेलू धधों मे चर्खा है। मै यहा आप को कोई शिक्षा नही देने आया हू, मै वैसा कर भी नही सकता। मै तो सूत कात लेता हू कपडे बुनवा लेता हू और अपनी जरूरत के मुताबिक पैदा कर लेता हू। यह तो इस विद्यालय का प्रत्येक आदमी समझ सकता है और ऐसा होना भी चाहिये क्यो कि आप ने इस विद्यालय का नाम वल्लभ विद्यालय दिया है और आज उन की प्रतिमा का अनावरण मुझ से करवाया है। सरदार वल्लभ भाई भारत में एक ऐसी विभूति हो गये है जिस ने भारत का एकीकरण ही नही किया बल्कि उस की सर्वतोमुखी उन्नति के लिये जितना काम किया उतना बहुत कम लोगों ने किया। लोग समझते है कि सरदार एक सख्त और कड़े आदमी थे। मगर जिन लोगो का उन के साथ परिचय था और परिचय से भी अधिक घनिष्टता का सौभाग्य जिन को मिला वे इस बात को जानते है कि अगर वे कड़े थे तो उस के साथ साथ फूल के जैसा नरम भी थे और उस नरमी और मृदुता का इस से और दूसरा आप क्या प्रमाण खोज सकते है कि गाव के ग़रीबो के दु:ख निवारण के लिये ग्राम की उन्नति मे उन्हो ने इतना बड़ा काम किया और कराया। एक आदमी थोड़ा ही काम कर सकता है, अगर उस को खुद करना हो। मगर जो जितना बड़ा होता है उस की शक्ति भी उतनी ही बड़ी होती है और उस की शक्ति की माप यही होती है कि वह कितने लोगों से काम करा सकता है।

केवल एक मनुष्य की शक्ति तो परिमित होती है मगर उस शक्ति को अगर वह पूरी तरह से काम में लावे और दूसरों से भी काम करवा सके तो उस को शक्ति अपरिमित हो जाती है। सरदार वल्लभभाई की शक्ति इस विषय में बहुत विस्तृत और फैली हुई थी और यह विद्यालय और इस प्रकार की अन्य संस्थायें यह प्रमाण दे रही है कि कितनी दूर तक वह सोचते थे और काम करते थे और कराते थे। तो जब मुझे यहा आने के लिये आमन्त्रित किया गया तो मै ने उसे इस लिये स्वीकार कर लिया कि यहा जो काम हो रहा है उसे देखने का मुझे मौका मिलेगा। और यहां के काम को देख कर दूसरी जगहों के लोगों को प्रोत्साहन मिल सकता है। इस लिये जब कभी मुझे मौका मिलता है तो मै इस तरह काम को देखना चाहता हू और मेरे हृदय मे यह भावना होती है कि और कुछ नही तो कम से कम जा कर कुछ काम मे प्रोत्साहन दे दू। इस लिये मै यहा बडी खुशी के साथ आया और आप सब बहनों और भाइयों के दर्शन हुए, इस संस्था को देखा और यहा क्या काम हो रहा है उस को भी देखा। मै यहा से सतोष के साथ जा रहा हू कि जो काम सरदार के नाम पर शुरू किया गया है वह ठीक चल रहा है और आगे भी ठीक चलेगा। मै आप का हृदय से धन्यवाद करता हू।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल पदक प्रदान

*मिस डोरिथ डेविस को फ्लोरेस नाइटिंगेल पदक प्रदान करते हुए राष्ट्रपति जी ने ता० ८-३-५२ को कहा—

मेरा यह सर्वदा विचार रहा है कि किसी भी व्यक्ति के लिये जो अच्छे से अच्छे कार्य हो सकते है उन मे से एक उपचर्या का काम है, चाहे फिर कोई उसे धन्धे के रूप मे या शौकिया हो क्यो न करे। यदि कोई उपचारिका अपने कार्य को लगन से, प्रसन्नता से और दिल से करे तो उस को अपने काम मे अधिकतम आनन्द मिलेगा ही। रोगियों व घायलों की पीड़ा और दुःख का निवारण करने से तथा दुखियों और पीडितों की सेवा और सहायता करने से उपचारिका हरेक दुखिया की धात्री के समान हो जाती है और वास्तव में स्वतः ही इन पीड़ितो के प्रति उस के मन मे मा या बहन की सी ममता रहती है। उपचारिका पेशे की एक सदस्या को सर्वाकाक्षित इस अन्तर्राष्ट्रीय रैडक्रास अर्थात् फ्लोरेन्स नाइटिगेल पदक के प्रदान करने के इस सुखमय उत्सव में भाग लेने में मुझे विशेष प्रसन्नता है। जैसा कि आप सब जानते है यह पदक उस देवी के नाम से जिसे ज्योतिवाहिनी देवी (लेडी विद दी लैम्प) कहते है दिया जाने लगा है। उपचर्या की उच्च परम्पराओं के नाते हरेक को तब गर्व होना चाहिये जब उसे यह ज्ञात हो कि इस पेशे में प्राप्य सर्वोत्तम पुरस्कार उस के किसी भी हमपेशा को मिल रहा है। अतः आज मै उपचर्या के पेशे के सब सदस्यों को साधारणतया और जो उस महान् संस्था के प्रतिनिधि स्वरूप यहां उपस्थित है उन को विशेषतया बधाई देता हू। इस के पहले कि मै फ्लोरेन्स नाइटिगेल पदक को भारतीय सैनिक उपचर्या

---

*अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

सेवा की प्रमुख मैट्रन मिस डोरिथ डैविस को उस यश के लिये जिस की वह उचित पात्र है प्रदान करूं और इस के लिये उन्हें बधाई दू मैं इस पुरस्कार के उल्लेख की ओर आप का ध्यान खीचना चाहता हू। वह इस प्रकार है। इण्डियन जनरल हास्पिटल न० १२ में सागर पार मलाया मे सेवा करते हुए मिस डोरिथ डेविस ने २ अगस्त १९३९ से २५ अक्टूबर सन् १९५१ तक अत्यन्त महत्वपूर्ण सेवायें की है । कर्तव्यों के प्रति उन का अनथक उत्साह और महती लगन रही है । ४ अक्टूबर सन् ४६ के प्रातःकाल २ बजे अंगुल स्टेशन पर माल गाडी से मद्रास कलकत्ता मेल के लड जाने से हुई भीषण रेलवे दुर्घटना में घायल हुए लोगो की सहायता कर के इन्हो ने मानव जाति की अत्यन्त उत्तम और उल्लेखनीय सेवा की है। मिस डोरिथ डेविस तुरन्त ही अपने डिब्बे से निकल आयी और जब तक हरेक घायल व्यक्ति की ठीक ठाक उपचर्या नही हो गई तब तक वह बडे लगन और सहानुभूति से कार्य करती रही। यहा ८० अत्यन्त घायल व्यक्ति थे और ३७ लाशें थी । दिल्ली और पूर्वी पजाब समादेश (जो अब पश्चिमी समादेश है) के शुरु होने पर और जिस मे कि १७ दिसम्बर १९४७ से जम्मू और काश्मीर भी शामिल है मिस डैविस को मुख्य मैटरन के रूप मे सैनिक उपचर्या सेवा का प्रभार दिया गया और यह कार्य २० मार्च १९५० को उन्हो ने तब छोडा जब कि प्रमुख मैटरन के रूप मे उन की पदोन्नति हो गई। इस अवधि मे उन्हों ने अपने कर्तव्य का बडी लगन, उत्साह और हर्ष से पालन किया ।

मिसेज इलीनर रूजवैल्ट को डिग्री प्रदान

*१५ मार्च, १९५२ को दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से मिसेज़ इलीनर रूज़वैल्ट को डाक्टर की डिग्री प्रदान करने के लिये विशेष समावर्तन समारोह में राष्ट्रपति जी ने कहा—

आज हम यहा उस महान् और उदारमना देवी अर्थात् मिसेज़ इलीनर रूज़वैल्ट का सम्मान करने के लिये एकत्रित हुए है। वास्तव में वह विश्व की एक विभूति है क्योंकि उन का नाम न केवल उन के अपने देश के घर घर मे वरन् उन सब देशों के घर घर में भी जिन में स्वतन्त्र और मानव आदर्शो की इज्ज़त की जाती है सब को ज्ञात है। १२ वर्ष से अधिक समय तक अपने पति राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी० रूज़वैल्ट की सहधर्मिणी के नाते संयुक्त राज्य की वह सर्व प्रथम नारी थी । उस महाविभूति का यश उन के अपने अनोखे और अनेक गुणों के कारण तो था ही किन्तु बहुत अश में वे मिसेज़ रूज़वेल्ट की स्नेहमयी सेवाओं का भी फल था । जैसा कि आप जानते है अपनी युवा अवस्था में ही उन्हें बहुत दुखदायी शारीरिक पीडा सहनी पड़ी और संयुक्त राज्य के राष्ट्रपति के उच्च आसन पर किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक लम्बे अवसर तक वे रहे और उस अवधि में उन को सर्वप्रथम तो राष्ट्र के अन्दर की कठिन आर्थिक स्थिति की ओर तत्पश्चात् लम्बे और विनाशकारी युद्ध के भार और मुश्किल से पैदा हुई भारी चिन्तायें सहनी पड़ी ।

---

*अग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

जिन दिनों राष्ट्रपति की पत्नी के रूप में वह व्हाइट हाउस की स्वामिनी थी उन दिनों उन को अपना अधिक समय कुटुम्ब के कार्यो और महान् पद के सामाजिक कर्तव्यों को पूरा करने में व्यतीत करना पड़ा। किन्तु मिसेज़ रूज़वैल्ट की सहानुभूति, शक्ति और कुशाग्र बुद्धि तब भी सजग रही। अपने पति के स्वर्गवास के पश्चात् साधारण जन की सेवा करने के लिये अर्थात् असमानता और कमी को मिटाने के लिये, कष्ट और बाधा को दूर करने के लिये और वैयक्तिक स्वतन्त्रता का विकास करने के लिये और मानव को सुखी बनाने के लिये राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों मे उन्हों ने अपनी सारी शक्ति और समय लगा दिया है। अपने पति के साथ साथ जीवन आदर्शों के लिये अर्थात् स्वतन्त्रता के लिये, मानवाधिकार के लिये सब नर-नारियों को, चाहे उन का रग कैसा भी क्यों न हो, और वे किसी भी देश के वासी क्यों न हों, न्याय प्राप्त कराने के लिये उन्हों ने सघर्ष किया और उन सब आदर्शो की वह बराबर समर्थक रही है । उन को आज इस विश्व विद्यालय द्वारा सम्मान प्रदान करना उन आदर्शो के लिये उत्साही और एकाग्रता से कार्य करने वाले व्यक्ति का आदर करना है जिन आदर्शों को कि हमारे गणतन्त्र ने हमारे सविधान मे सर्वोच्च स्थान दिया है और जिन्हें प्राप्त करना हमारी जनता का सतत प्रयोजन और प्रयास है। श्रीमती रूज़वैल्ट की वन्दना करके हम ऐसी विभूति की वन्दना करते है जिस का मानव जाति के ध्येय और आर्थिक उत्थान के लिये किया गया प्रयास संसार भर की सुशिक्षित नारियों के लिये प्रेरणा और उदाहरण बन गया है ।

दिल्ली राज्य के बाय स्काउट्स और गाइड्स

तारीख २७-३-५२ को मुगल गार्डन्स में दिल्ली राज्य के बाय स्टाकाउट्स और गाइड्स के सम्मुख राष्ट्रपति जी ने कहा—

बुलबुलो और सिंह बच्चो,

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि आज मै तुम सब से मिल सका और तुमने जो इतने खेल दिखलाये, जो गाने सुनाये और जो कुछ कर के यहां पर दिखलाया उस से हम को बडी प्रसन्नता हुई है। आज कल स्कूलों के बच्चों के लिये ऐसा सुन्दर प्रबन्ध हुआ है इस का मुझे पता नही था और यह देख कर मुझे बड़ी खुशी हुई कि तुम लोगों ने स्कूल की तरफ से जो कुछ किया जा रहा है उस से पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न किया है। मै चाहता हू कि इस तरह का काम सभी स्कूलों में जारी किया जाये जिस में सभी बच्चों और बच्चियों को जो वहां शिक्षा के लिये जायें केवल अक्षर ज्ञान ही नही मिले, लिखने पढ़ने का ही काम वे नही सीखें बल्कि उन का चरित्र भी अच्छा और सुन्दर हो, उन का तौर तरीक़ा भी सुन्दर हो, आपस में मिल जुल कर रहना भी सीखें और एक दूसरे की मदद में इतनी तत्परता हो कि कोई भी वक़्त किसी पर आवे तो उस की सभी मिल कर मदद करें। इस वक़्त जो कुछ तुम बच्चे और बच्चियां सीखोगी वह आइन्दा चल कर तुम्हारे जीवन में काम देगा। बचपन में जो कुछ आदमी सीखता है उसे वह ज़िन्दगी

भर भूलता नही और इस वक्त जो संस्कार पड जाता है जो अच्छी बातें वह सीख लेता है वह बराबर याद रहती है और उस से अपना और दूसरों का भला और कल्याण करता है । अतः मैं इस तरह की कार्यवाही जो सब जगहों में की जाती है उसमे इसलिये दिलचस्पी लेता हूं कि मै जानता हू कि इस से बच्चों का चरित्र अच्छा बनता है और इस से जिन्दगी में सब से मिल जुल कर रहने की आदत पड जाती है, एक दूसरे की तकलीफ में मुसीबत में सहायता करने की आदत पड़ती है और बहुत सी चीजें जो काम में आती है वह भी वे सीख लेते है और उस वजह से वे बहुत काम के लायक हो जाते है । इस लिये मुझे इस बात की बडी खुशी हुई कि आज यहा यह समारोह किया गया और इस में बच्चे और बच्चियों को मौका मिल सका कि वे मुझ से मिल सके और मुझे मौका मिला कि मै उन से मिल सकू । मै सब बच्चियों और बच्चों को बधाई देता हू और साथ ही उन भाई और बहनों को बधाई देता हूं जिन्हों ने इस समारोह का इतना सुन्दर प्रबन्ध किया । मुझे इस बात का अफसोस जरूर रहा कि जितना वक्त मुझे देना चाहिये था जिस मे हरेक स्कूल अपने खेल और करतूते अलग अलग कर के दिखलाता उतना समय हम नही दे सके। तो भी मै समझता हू कि जो कुछ खेल सभी लोगों ने यहा देखे, गाने सुने उन से सभी को पूरा सन्तोष हुआ। हम सब तुम लोगों को आशीर्वाद देते है और चाहते है कि तुम लोग फूलो फलो और जो आज तुम छोटी बुलबुल हो बडी हो जाओ और जो आज सिह बच्चे हो जवान सिह हो जाओ और देश का और अपना कल्याण करो ।

राजाजी फुटबाल टूर्नामेन्ट

ता० २८-३-५२ को राजा जी फुटबाल टूर्नामेन्ट टीमों को ट्राफी देते हुए राष्ट्रपति जी ने कहा—

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि इस साल फिर मुझे मौक़ा मिला कि मै आप का ऐसा सुन्दर खेल देख सकू और दोनो टीमो को जिन्हों ने यहा आ कर खेल दिखलाया मैं धन्यवाद देता हूं। जीतना हारना तो खेल में होता ही है, उस से कुछ आता जाता नही, लेकिन जो खेल आप ने दिखलाया यहा जितने लोग हाजिर है सभी उसे देख कर खुश हुए और मैं चाहता हू कि इस तरह का जो खेल है वह जारी रहे और उस में काफ़ी तरक्क़ी होती जाये जिस में सारे देश के लोग इस में अधिक दिलचस्पी ले सके । पर साल और शायद एक साल पहले भी दो मरतबे आप का खेल मै ने देखा । जो पहले आपस में खेलते है बहुतेरे वे ही अभी भी खेलते है। । शायद कुछ नये इस साल आये हैं । दुनिया का काम ऐसे ही चलता है कि पुराने जाते है और नये आते है और यही बात खेल में भी होती है । उम्मीद है कि नये दिनों दिन तरक्की करते जायेंगे और पुराने से बेहतर होते जायेंगे और पुराने भी उन की तरक्क़ी देख कर खुश होंगे कि उन के सिखाये हुए लोग बेहतर हुए । मै उम्मीद करता हूं कि आप खेल जारी रखेंगे । एक बार फिर मैं आप को मुबारिकबाद देता हूं ।

राष्ट्रपति भवन में संगीतोत्सव

*राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली में २९ मार्च १९५२ को भारत के चार ख्यातिनामा संगीतज्ञों को पुरस्कार वितरण करने के अवसर पर राष्ट्रपतिजी ने कहा—

बहनो और भाइयो,

जिन संगीतज्ञो को अभी अभी पुरस्कार मिला है उनको मै बधाई देता हूं। यह अत्यन्त सन्तोष की बात है कि शिक्षा मन्त्रालय ने इन पुरस्कारो को देने की व्यवस्था करने का निश्चय किया है और मुझे यह आशा है कि कालान्तर में यह व्यवस्था उन लोगो के लिये प्रोत्साहन का कारण सिद्ध होगी जो लोग कि हमारे देश में ललित कलाओ और सगीत मे लगे हुये है। हमारे देश मे भूतकाल से यह परम्परा रही है कि हमारे राजागण और उनकी राजसभा अपने महत्वपूर्ण कृत्यों मे से यह भी एक कृत्य मानते थे कि अपने प्रतिभाशाली सगीतज्ञो को मुक्त हस्त से परिश्रय देकर प्रोत्साहन दें। यह तो उचित ही है कि अब जब हमने स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है हम उस परम्परा को पुनर्जीवित करे और कला और कलाकारों का परिश्रय देने का उत्तरदायित्व राज्य अपने हाथ मे ले। मुझे आशा है कि जो मामूली शुरूआत आज हम कर रहे है वह समय पाकर फलदायिनी सिद्ध होगी और हमारे देश की नयी पीढ़ी के लोगों को अपने संगीत की प्रतिभा के विकास करने के लिये भी प्रोत्साहित करेगी। मुझे संगीत की गहनताओं का कोई परिचय नही है और न मुझे इसकी किसी प्रकार की प्रशिक्षा ही मिली है। किन्तु जब मै संगीत सुनता हू तो अपने देश के अशिक्षित और संगीत की गहनताओ और विशेषताओ स अपरिचित करोड़ो लोगो की तरह ही द्रवित हो जाता हू। मेरा विचार है कि अन्ततो गत्वा अच्छे गाने की यही सब से सच्ची और बड़ी कसौटी है। मेरा यह सौभाग्य था कि मेरा जन्म ग्राम में हुआ जहां कि मैं ने अपने बाल्यकाल को व्यतीत किया। प्रभात के झुटपुटे में स्त्रियो को मै ने गाते हुए सुना है जब कि वे चक्की में नाज पीसती थी। मै ने किसानों और मजदूरों को अपने खेतों में काम करते हुए गाते भी सुना है। तपती गरमी में आज भी उनको उमी उल्लास और आनन्द से काम करते आप गाते पायेंगे जिस प्रकार कि वे मूसलाधार, वर्षा के समय गाते है। वर्षाऋतु में जब अभी वर्षा नही होती और इसलिये धान पाटने के लिये पानी नही होता तब मै ने उनको देखा है और उनका गाना सुना है जो मेघो के देवता भगवान इन्द्र की प्रार्थना के लिये वे गाते हैं जिससे कि वह देश को जीवनदायिनी वर्षा का वरदान दे। यह तो ऐसा गान है जो संगीत विद्या से अनभिज्ञ लोग अपने जैसे लोगों के लिये ही गाते है। किन्तु वह संगीत तो अत्यन्त उदात्त होगा ही जो उन लोगों के द्वारा गाया जाता है जिन्होंने संगीत के लिये अपना जीवन लगा दिया है और जिनका संगीत न केवल आनन्द देनें के लिये है वरन् जीवन को अच्छा करने के लिये भी है। इस योजना की व्यवस्था का आशय यही है कि हम अपने कलाकारों को जो भी प्रोत्साहन हम प्रदान कर सकते हैं प्रदान करें जिससे कि वे राष्ट्र के निर्माण में अपना महान् भाग ले सकें। यही कारण है कि जो मैं इसको इतना महत्व देता हूं। मुझे आशा है कि यह काम फलेगा और फूलेगा और जिस उद्देश्य के लिये यह किया जा रहा है उसको भी यह पूरा करेगा।

अब मैं संगीतज्ञों से प्रार्थना करूंगा कि वे अपनी कला का कुछ ऐसा प्रदर्शन दिखायें जो सब को अनुप्राणित और आनन्दविभोर कर दे।

---

* अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

भारतीय विद्या भवन की शाखा का शिलान्यास

भारतीय विद्या भवन की शाखा के मकान का शिलान्यास करते समय ता० ३०-३-५२ को राष्ट्रपति जी ने कहा—

मुन्शीजी, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बडी प्रसन्नता है कि आज आपने मुझे यह मौका दिया है कि मै इस समारोह में शरीक हो सका। जैसा अभी मुन्शी जी ने कहा, एक प्रकार से भारतीय विद्या भवन से मेरा सम्बन्ध शुरू से ही रहा है और यद्यपि मै ऊपर से इसको कम देखता रहा हूं मगर मेरी दिलचस्पी हमेशा बनी रही है। जैसी हालत आज हिन्दुस्तान और दुनिया की है उसमें यह इस काम के लिये कायम किया गया था कि यह इस बात की गवेषणा करे कि हमारी संस्कृति किस ढंग की हो, किस रुख की होनी चाहिये; और इसमे हम अपनी पिछली सस्कृति और आज की आधुनिक बातों को मिला कर कुछ सोच निकाले। इसीलिये यह काम आपने आज तक किया है और आइन्दा भी आप करते जायेगे। इन १४ वर्षों मे भवन ने काफी काम किया है। अगर हम केवल उन पुस्तकों को ही देखे जिनका प्रकाशन भवन की ओर से किया गया है और इस बात पर भी ध्यान दे कि वे पुस्तके कैसी है, उनमे कितनी बाते आयी है और कितने विषयों से उनका सम्बन्ध रहा है तो हमको मालूम हो जायेगा कि कितने विस्तार के साथ यह भवन काम करता आया है और आगे करना चाहता है। मै यह दावा नही कर सकता हू कि जो कुछ आपके यहां प्रकाशित हुआ है वह सब कुछ मै ने पढा है; मगर जो कुछ थोडा बहुत उलट पुलट कर, जब कोई नयी पुस्तक आ जाती है, मै ने देखा है उससे मुझे मालूम होता है कि एक एक पुस्तक के लिखने मे कितनी खोज की जरूरत पडी होगी और कितने विद्वानो ने परिश्रम करके एक एक पुस्तक लिखी होगी। जो साहित्य के ग्रन्थ आपने प्रकाशित किये है वे बहुत थोड़े समय में किये है; वह कोई कम परिश्रम का काम नही था। उसमे विद्वानो को काफी समय लगाना पडा होगा, काफ़ी खोज करनी पडी होगी, काफी पुस्तकालयों को ढूढना पड़ा होगा, उलटना पुलटना पड़ा होगा। इसलिये साहित्य के ग्रन्थो का जो प्रकाशन आपने शुरू किया है उसमें काफी परिश्रम पड़ा होगा और एक नही बहुत से विद्वानो ने सहयोग देकर इस काम को पूरा करने का प्रयत्न किया होगा। इसके अभी दो ही ग्रन्थ निकल सके है और बाकी मै समझता हूं कि छपने के लिये तैयार है। वे भी समय पाकर निकल आयेगे। मगर इतना ही नही; केवल साहित्य के सम्बन्ध में ही नही लिख कर और दूसरे विषयो को भी, जिनका संस्कृति के साथ सम्बन्ध होता है, आप अपने हाथ मे लेना चाहते है। मै इस बात के लिये श्री मुन्शी जी को बधाई देना चाहता हूं कि उन को हर प्रकार के विद्वानों और कलाकारों का काफी सहयोग मिला है और आइन्दा भी मिलता रहेगा। जिन लोगों ने सहयोग दान दिया है उनको धन्यवाद तो है ही मगर मै इस बात को भी मानता हूं कि ऐसे लोगों को इकट्ठा करना और उनसे काम लेना यह कोई आसान काम नहीं है। जो कुछ थोडा बहुत अनुभव मुझे इस प्रकार के काम का है उससे मै यह जानता हूं कि विद्वानों को इकट्ठा करना और उनसे कुछ लिखवाना और लिखवाकर प्रकाशित करना कोई आसान बात नही है। इस मे केवल समय ही नही लगता बल्कि और भी कई प्रकार के परिश्रम करने पड़ते है; और हर प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन सब का सामना करके श्री मुन्शी इतना कर सके यह कोई छोटी बात नहीं है। इसलिये मै समझता हूं कि वह हमारे सब की बधाई के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि हम प्राचीन और नवीन, पुरानी और नयी दोनों चीज़ों को मिला कर आज की चीज तैयार करना चाहते है। उसका नमूना तो स्वयं श्री

मुन्शी और श्रीमती मुन्शी हैं जो हमारे प्राचीन और नवीन दोनों के सम्मिश्रण हैं और इसीलिये उन्होंने जो यह काम आरम्भ किया है वह काम पूरा होगा इसमें मुझे कोई सन्देह नहीं है ।

आपने कहा है कि भवन को रुपये की कमी रहती है मगर आप विश्वास रखते हैं कि जब ज़रूरत पड़ती है तो रुपये आ जाते हैं । मेरा भी विश्वास है कि जब कोई अच्छा काम होता है और उस काम के करने वाले अच्छे लोग होते हैं तो रुपये की कमी की वजह से काम नहीं रुकता । महात्मा गांधी तो बराबर ही कहा करते थे कि रुपये की कमी होना इस तरह की किसी भी संस्था के लिये एक अच्छी बात है और ज़्यादा रुपये का होना संस्था के गिरने का कारण हो सकता है । रुपये की कमी नहीं बल्कि ज्यादा रुपये का हो जाना ही संस्था के बिगड़ने का कारण हो सकता है । मुझे खुशी है कि जब आपको ज़रूरत पड़ी है तो जो दानी लोग इस देश में हैं उन्हों ने आपके काम को देखकर, समझ कर उसका आदर किया है और मदद की है और मैं आशा करता हूं कि इसी तरह से आइन्दा भी जो कुछ भी आप करना चाहेंगे उसमें आपको बराबर मदद मिलती जायेगी ।

यह आपने अच्छा सोचा है कि दिल्ली में जो नये पुराने सब का एक प्रकार से एक संगम स्थान हो रहा है इसकी एक शाखा खोलें और मैं आशा करता हूं कि इस शाखा से आपका काम आगे बढ़ेगा और जो इसका ध्येय है उसको पूरा करने में पूरी मदद मिलेगी । मैं उम्मीद करता हू कि जिन बहनों और भाइयों ने यहा आकर इस काम को आशीर्वाद देने का कष्ट उठाया है उनका उतना ही यह उम्मीद बंधाने के लिये कि यह काम हो सकेगा काफी होना चाहिये । मैं कहना चाहता हूं कि आप सब इस भवन को आशीर्वाद दे और ईश्वर से प्रार्थना करें कि जिस ध्येय के साथ यह कायम किया गया है वह पूरा हो सके ।

गंधर्व महाविद्यालय की स्वर्ण जयन्ती

४ अप्रैल १९५२ को गन्धर्व महाविद्यालय की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर सगीत समारोह का उद्‌घाटन करते समय राष्ट्रपतिजी ने कहा—

इस बात की मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि गन्धर्व विद्यालय आन्दोलन को अब ५० वर्ष पूरे हो रहे हैं । इसके प्रवर्त्तक श्री विष्णु प्रभाकर भारत के ख्यातिनामा सगीतज्ञ ही न थे वरन् पहुचे हुए भक्त भी थे । जिस समय उन्होने भारतीय संगीत के लिये अपने जीवन को समर्पण कर दिया उस समय साधारणत. विद्यालयों में शिक्षा पाने वाले युवक-युवतियों के लिये संगीत की शिक्षा की कोई सुविधा न होती थी । चूकि संगीत का सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था से इस प्रकार का विभाजन लगभग एक शताब्दि से चला आ रहा था इसलिये अनेक लोगों के मन में तो यह भावना भी न रही थी कि संगीत का भी चरित्र निर्माण में और आत्म विकास में कोई विशिष्ट स्थान है और न उन मे से अनेक यही मानते थे कि उच्च कोटि का संगीत मानव जीवन की एक अनिवार्य आवश्यकता है । सच तो यह है कि उन दिनों संगीतज्ञों के प्रति शिक्षित और राजकर्मचारी वर्ग का कुछ उपेक्षा और कुछ विरोध का ही भाव था । कम से कम मध्यवर्ग के लोगों में बहुत सों के

मन में यह भाव था कि संगीत का धन्धा तो कुछ हेय धन्धा ही है जिसे वे ही नर नारी कर सकते है जिनका चरित्र कुछ ऐसा वैसा हो। यहां ऐसा विचार क्यों कर पैदा हुआ इस बात की विशद समीक्षा करने का न यह अवसर है और न मेरे पास समय। जो हो उस समय संगीत को शिक्षा व्यवस्था का अंग बनाने का प्रयास कुछ आसान बात नही थी। किन्तु सब कठिनाइयों के बावजूद भी विष्णु दिगम्बर ने इस दिशा में कदम उठाया और भारतीय संगीत की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया।

भारतीय संगीत भी ऐसा ह जिसके लिये किसी भी जाति को अभिमान हो सकता है। स्मरण रहे कि युग युगान्तर से भारतीय संगीत हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग रहा है। विदेशी दासता के उन युगो में भी जब संगीत की शिक्षा के प्रचार के लिये कोई व्यवस्था न थी और जब उसे राजकोष से कोई सहायता और राज का कोई प्रोत्साहन प्राप्त न था वह हमारे जीवन का अंग निरन्तर बना ही रहा। जहां तक मै समझता हूं इसका कारण यही था कि भारतीय संगीत हमारे यहां केवल ऐन्द्रिक उपभोग या उत्तेजना का विषय न होकर आत्म दर्शन और आध्यात्मिक आनन्द का साधन था। इतने पुराने युग में जितना कि वैदिक काल है हमारे देश में संगीत का जीवन मे यही स्थान था। सब जानते है कि हमारे यहा वैदिक मत्रो को गाकर ही पाठ किया जाता था और उसके लिये राग भी निश्चित हो गये थे। सच तो यह है कि हमारे यहा का सगीत शास्त्र भी वैदिक मत्रों के शुद्ध गान के लिये ही निर्मित हुआ और तभी उसमें स्वर और राग का इतना महत्व ठहराया गया। इस प्रकार अपने जन्म से ही भारतीय संगीत का सम्बन्ध जीवन के आध्यात्मिक पक्ष से हो गया। युग पर युग बीते, समाज और राज्य मे अनेक परिवर्तन हुए किन्तु भारतीय सगीत और मानव की आध्यात्मिक प्रेरणा से जो मौलिक सम्बन्ध स्थापित हुआ वह ऐसा ही बना रहा। दूसरे शब्दों मे यह कहना अनुचित न होगा कि भारतीय सगीत तो भारतीय जन जीवन का ही विशिष्ट किन्तु अभिन्न अग है। अन्य देशो की बात तो मै नही जानता किन्तु अपने देश के बारे मे मै कह सकता हू कि जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र या स्वरूप या अंग नही है जिस में सगीत पूरी तरह से रला मिला न हो। जन्म से लेकर मृत्यु तक यह हमारे साथ बना रहता है। जिस दिन बालक ससार मे अपनी आखें खोलता है उस दिन सगीत से भी उसका कुछ परिचय हो जाता है। नामकरण, कर्ण-छेदन विवाह, इत्यादि इत्यादि में तो सगीत होता ही है। ऐसा कोई तीज त्यौहार नही होता जिसमे गाना-बजाना न होता हो, ऐसा कोई पर्व और सस्कार नही जिसमे संगीत न हो। घर मे ही क्यों? हमारे यहा खेत में और चौपाल मे, चक्की चलाने मे और धान कूटने मे भी सगीत चलता ही रहता है। कभी कभी मुझे ऐसा लगता है कि विधाता ने हमारे लोगो के लिये सगीत के सयोग का ऐसा विधान कर दिया है कि उसके बिना वे न तो जीवित रह सकते है और न कोई काम ही कर सकते है। पहले हमारे लगभग सभी काम किसी न किसी प्रकार के सगीत से ही आरम्भ होते थे। संगीत से हमारे देशवासियो का ऐसा ऐतिहासिक मोह है कि आज भी ससार के अन्य सब देशों से कहीं अधिक हमारी सभा सोसायटियो में और हमारे चित्रपटो में संगीत की बाहुल्यता दिखाई देती है। यह कहना अनुचित न होगा कि हमारे लिये सगीत केवल क्षणिक विनोद की वस्तु न होकर ऐसा चिरस्थायी आनन्द है जो हमारे रग में और रोम रोम में बसा हुआ है और जिसके बिना हमें आत्मशान्ति और आत्मसुख मिलता ही नहीं है।

जहा तक मै समझता हू सगीत का जीवन मे यही स्थान होना भी चाहिये । यदि मानव जीवन में कोई ऐसी वस्तु है जो मानव को क्षण के विनाशकारी चंगुल से छुडा कर अमरता प्रदान करती है, जो उसे इस चिन्ताकुल जगत के झगडों से ऊपर उठा कर ऐसे लोक में पहुचा देती है जहा न कोई मलिनता है और न द्वेष, न कोई स्पर्धा है और न कोई सवर्ष तो वह केवल और केवल मात्र सगीत ही है । मानव तो क्या पशु पर भी इसका ऐसा जादू है कि वह इसकी ओर खिचा चला आता है, चाहे फिर ऐसा करने से उसके प्राण ही क्यों न संकट में पड़ जाये । सगीत के सामने कोई शत्रु और कोई शस्त्र भी नही ठहर सकता । तभी तो इतिहास में कई वार यह घटना घटी है कि विजेता को क्रूरता और उसकी सेना द्वारा किये जाने वाले हत्या-काण्ड को गायक ने अपने गान से रोक दिया है । यह आत्मा को अपनी निजी बोली है । किसी प्रकार की भी दीवार, चाहे वह राजकीय सीमा की दीवार हो, अथवा भाषा को दीवार हो उसे रोक नही सकती । गायक का राग श्रोता के हृदय को इस प्रकार आन्दोलित करता है कि दूसरों से अपनी विभिन्नता का तो प्रश्न ही क्या अपने तन मन की भी उसे सुधि नही रहती । अत जनमन से जो कोई काम और कुछ चीज नही करा सकती वह सगीत करा सकता है । यह कहना अनुचित न होगा कि उसको सी प्रेरक शक्ति ससार मे दूसरी कोई नही है ।

मेरा विचार है कि यही कारण है कि हमारे यहा सगीत भक्ति का अभिन्न अग बन गया । हमारे यहा जितने भक्त हुए सभी तो सगीत मे ओत प्रोत थे । प्रात. स्मरणीय चैतन्य महाप्रभु और भक्त शिरोमणि मीरा का नाम ऐसा कौन सा भारतीय है जो नही जानता । किन्तु उनकी भक्ति सगीत मे मूर्तिमान हो उठी थी । और आज भी उनके पदो का गान मानवात्मा को आनन्द विभोर कर देता है । हमारे साधु सन्तो की संगीत साधना का हो यह प्रभाव था कि कबीर, सूर, तुलसी, तुकाराम, नरसी मेहता ऐसी कृतिया कर गये जो हमारे और ससार के साहित्य मे सर्वदा ही अपना विशिष्ट स्थान रखेगी । यदि मै यह कह दू कि हमारा संगीत इसी भगवद् भक्ति के चारों ओर ही चक्कर काटता है तो कुछ अनुचित बात न होगी । हमारे सगीत का ध्येय उत्तेजना पैदा करना न होकर मानव को वह शान्ति प्रदान करना है जिसमे उसे अपने व्यक्तित्व की पूर्णता मिल जाती है और जिसे प्राप्त करने के पश्चात् फिर और किसी बात की तृष्णा नही रहती और कोई मोह नही रहता और कोई वासना नही रहती । यही कारण है कि हमारे यहा श्रांगारिक सगीत भी राधाकृष्ण की भक्ति से ओतप्रोत है ।

अपनी इसी विशिष्टता के कारण हमारा सगीत वह शक्ति सिद्ध हुआ है जो भारत में बसने वाली सब जातियों और सब सम्प्रदायों के लोगों को एक सूत्र मे बाध सकी । कम से कम यह तो प्रत्यक्ष ही है कि अन्य क्षेत्रों में अनेक विरोध और द्वेष होने पर भी भारतीय सगीत में सभी प्रदेशों और पथों के लोग एक है, रहे है, और आगे भी एक रहेगे । यह ऐसा सूत्र है जिसे राजनैतिक तलवार काट नही सकी है, जिसे धर्मान्धता तोड़ नही सकी है, जिसे प्रादेशिकता तुड़ा नही सकती है और जिसे भाषा विभेद अलग नही कर सका है । ठीक है भारत मे सगीत की दो प्रणालिया है । किन्तु इन प्रणालियो के कारण ही मन में यह विचार पैदा न होना चाहिये कि उनमें किसी प्रकार का मौलिक विरोध या विभिन्नता है । वे तो भारतीय सगीत के दो स्वरूप है और बाह्य विभिन्नताओं के होने पर भी उनकी आत्मा एक ही है । यह सत्य इसी से स्पष्ट है

कि इन दोनों की ही तह में राग और स्वर के भारतीय सिद्धान्त है । अतः इन बाह्य विभेदों से उनकी आन्तरिक समता के सम्बन्धों के बारे में किसी प्रकार का भ्रम न होना चाहिये । इन्हीं सिद्धान्तों के कारण भारतीय संगीत का अपना विशिष्ट रूप है जो उसे यूरुप और अन्य देशों के संगीत से सर्वथा विभिन्न कर देता है । अतः भारतीय संगीत की आलोचना करते समय हमें इसकी इस विशिष्टता को न भूलना चाहिये । कभी कभी आलोचक इस बात को भूल जाने के कारण भारतीय संगीत की आलोचना उन तथ्यों के आधार पर करने लगते हैं जिन पर कि यूरुप का संगीत आधृत है । किन्तु ऐसा करना तो आलोचना के उसूलों की ओर से आख मोड़ लेना है । पाश्चात्य संगीत का ध्येय एक है और भारतीय सगीत का दूसरा । उनकी परख तो उसी ध्येय के अनुसार हमे करनी चाहिये जिन पर वे आधृत है । इस बात के कहने की तो कोई आवश्यकता है ही नही कि वह गायन सगीत नही कहा जा सकता जो श्रोता के हृदय में आनन्द की लहर न दौड़ा दे और इसलिये जगत भर के सगीत मे यह आधार भूत एकता तो है ही । किन्तु मानव के हृदय मे इस आनन्द के उद्रेक की रीति विभिन्न हो सकती है । जहा पाश्चात्य सगीत की ऐसा करने की अपनी विशिप्ट रीति है वहा भारतीय सगीत यही बात दूसरी रीति से करता है । इसके साथ ही साथ आनन्द के सम्बन्ध मे भी कुछ विभेद तो होता ही है । जैसा मै कह चुका हू भारतीय सगीत का ध्येय तो आध्यात्मिक आनन्द का उत्पन्न करना है । अत मेरा यह अनुरोध है कि जो लोग भी भारतीय सगीत की आलोचना करने बैठते है वह इस बात को अनजान मे भी न भूले ।

सगीत की शक्ति महान् है और आधुनिक युग के वैज्ञानिक साधनो के प्रयोग से तो वह शक्ति कही अधिक बढाई जा सकती है । जहा पहले किसी अच्छे गायक के सगीत को कुछ थोडे लोग ही सुन कर आनन्द विभोर हो सकते थे वही आज रेडियो के कारण उसी सगीतज्ञ का मधुर गान लाखों लोग एक साथ ही सुन सकते है और यदि टेलिविजन का भी प्रबन्ध हो तो उसके हाव भाव भी देख सकते है । इसी प्रकार जहा पहले गायक की मृत्यु उसके गान को समाप्त कर देती थी वहा अब यह सम्भव है कि उसके गान को अमर कर दिया जाये और पीढी दर पीढी लोग उसके मधुर राग से आनन्द विभोर होते रहे ।

सगीत की शक्ति की इस वृद्धि के कारण आज यह सम्भव हो गया है कि अपनी विद्या या कला से गायक उससे कही अधिक धन पैदा कर सके जितना कि वह पहले पैदा कर सकता था । किन्तु शक्ति के विकास के दो खतरे भी है । पहला खतरा तो यह है कि किसी क्षणिक आर्थिक लाभ के लिये गायक भारतीय सगीत की ऐतिहासिक परम्परा को सर्वथा निर्मल न रखे और अधिक लोगो तक अपने गान को पहुचाने के लिये भारतीय सगीत के मूलभूत सिद्धान्तो से पतित हो जाये । दूसरा खतरा यह है कि वह अपनी इस महान् शक्ति का प्रयोग ऐसी बात के लिये कर बैठे जो देश और जाति के लिये अहितकर है । अतः हमारे यहा के सगीतज्ञो और कलाकारो का यह धर्म है कि वे अपने को इन दोनो खतरों से बचाने के लिये प्रतिक्षण सावधान और जागरूक रहे । मेरा यह आशय नही है कि भारतीय सगीत का विकास न हो अथवा उसमें कोई नई बात न हो । किन्तु विकास का यह अर्थ नही कि उसका अपना निजी स्वरूप ही समाप्त हो जाये । अतः मै यह फिर कहूगा कि हमारे कलाकारों को ऐसी कोई बात न करनी चाहिये जिससे भारतीय सगीत की शुद्धता और निर्मलता मे किसी प्रकार का दोष पैदा होता हो ।

इसके साथ ही हमें इस शक्ति का प्रयोग ऐसी किसी बात के लिये नहीं करना चाहिये जो मानव को पतन की ओर ले जाता हो। चरित्र निर्माण में संगीत का जितना प्रभाव हो सकता है उतना सम्भवतः और किसी बात का नही होता। इस सत्य को पहचान कर प्लैटो ने अपनी रिपब्लिक नामी प्रसिद्ध पुस्तक में यह विधान लिखा है कि राज्य के संरक्षकों के शिक्षा क्रम में संगीत अनिवार्य होना चाहिये। मै मानता हूं कि संगीत मानव को पृथ्वी पर ही स्वर्ग के निर्माण में सफल कर सकता है। मुझे यही आशा है कि संगीत के इसी उच्च आदर्श को हमारे सब गायक और संगीतज्ञ अपने सामने रखेंगे। भारतीय संगीत शास्त्रियों को केवल अतीत की देन से ही सन्तुष्ट न रहना चाहिये वरन् उसके विकास की ओर भी ध्यान देना चाहिये। भारतीय संगीत के सम्बन्ध में अभी पर्याप्त गवेषणा की आवश्यकता है। उस काम को हमारे गंधर्व विद्यालय ही कर सकते है। इसके साथ साथ हमें विदेशों को भी अपने संगीत से परिचित कराना है। साथ ही हमें विदेशों से ऐसी बाते जैसा कि आरकैस्ट्रा है लेने में भी संकोच न करना चाहिये।

अतः हमारे संगीतज्ञों के सामने बड़ा विशद कार्य क्षेत्र पड़ा है। किन्तु सब से बड़ा काम तो उनका यही है कि वे अपनी संगीत शक्ति को, अपनी कला साधना को भारत में और पृथ्वी में स्वर्ग स्थापित करने के लिये लगायें। आप सब जानते है कि भारतीय संगीत का यही ऐतिहासिक उद्देश्य और प्रयोजन था। इतिहास के इस भार को आप सब को निभाना है और मुझे आशा है कि भारत के गन्धर्व विद्यालय और कला केन्द्र अपने पिछले काम से प्रोत्साहन पाकर भारत की झोपडी झोपड़ी और ग्राम ग्राम में संगीत को पुन. उसी प्रकार गुजाने में लग जायेंगे जिस प्रकार कि हमारे सन्त जनो ने उन में किसी युग में संगीत और शान्ति की लहर भर दी थी। इसी महान् काम को पूरा करने में जन जीवन का कल्याण है और इसी में है उनके अपने निजी जीवन की सफलता और उनकी कला की सार्थकता।

व्रजसाहित्य मण्डल के कार्यकर्ताओं को उद्बोधन

ता० ५–४–५२ को व्रज साहित्य मंडल के कार्यकर्ताओं से राष्ट्रपति जी ने कहा --

सज्जनो,

मुझे यहां आकर अचम्भा हुआ। मै ग्राम्य गीतों में या ग्राम्य जीवन मे कुछ दिलचस्पी रखता रहा हूं पर मुझे यह मालूम नहीं था कि इतना काम इस दिशा में हमारे यहां हो रहा है और हुआ है। हिन्दी प्रान्त में जहां की भाषा हिन्दी कही जा सकती है इतने अच्छे पैमाने पर यह काम हो रहा है यह बड़े संतोष की बात है। सच पूछिये तो इस तरह के काम में सब से पहले रास्ता अंग्रेज़ों ने दिखाया। अगर ग्रियर्सन की उन पुस्तकों को आप देखें जिनका सम्बन्ध ग्राम्य जीवन से है तो अभी भी उन पुस्तकों में आपको इतने शब्द मिलेंगे जिनको शायद गांव के रहने वाले भी नहीं जानते हों। एक छोटी से छोटी चीज़ को आप ले लीजिये, जैसे चरखा जिसको कि हम लोगों ने गांधी जी के आने के बाद से थोड़ा बहुत चलाना शुरू किया। ग्रियर्सन ने न मालूम कितने वर्ष पहले से चरखे को लेकर उसके प्रत्येक अंग का नाम गांव गांव में घूम घूम कर पूछ पूछ कर लिखा है। आज अगर किसी से, जो चरखा संघ में काम कर रहे हैं, उन सब का नाम पूछा जाये

तो शायद वे भी उसके प्रत्येक अंग का नाम नहीं बता सकेंगे। मगर ग्रियसंन ने लिखा है यही बात है हल के बारे में। आज तक बिहार के गांवों में हल के प्रत्येक हिस्से के लिये, प्रत्येक भाग के लिये, जो अलग अलग शब्द हैं उन सब के अलग अलग नाम उसने बता दिये हैं। फिर बिहार के सब ज़िलों में एक ही शब्द नही चलता है। अलग अलग भागों में, किस ज़िले में किस नाम से, उसका प्रत्येक अंग कहा जाता है, यह भी उसने बता दिया है। तो इसकी प्रेरणा सब से पहले उसने दी। मै ने देखा कि आज से २०-३० बरस पहले संस्कृत में एक ऐसी चीज़ इकट्ठी की गयी थी। इसी तरह से हमारे यहा कुछ प्रचलित पद्य, कुछ ऐसे प्रचलित दोहे, चौपाई है जिन्हें गृहस्थ लोग, खेतो में काम करने वाले लोग, अभी तक काम में लाते है। अगर आप नक्षत्रों के बारे में देखें तो पता चलेगा कि इन्हीं पद्यात्मक पदों से फ़लानी तिथि को फ़लाने नक्षत्र का फल यह होगा, पानी फलाने समय मे बरसेगा आदि आदि बातो का पता लगाया जाता था। इस तरह की चीजें आज भी प्रचलित है और गांववाले जानते है। इसी तरह से गाय को, घोड़े को, बैल को, परखने के लिये, हाथी के गुण दोष जानने के लिये, सब गावो में प्रचलित कुछ ऐसी चीजें है जिन्हे अब भी लोग वहां चलाते जा रहे है। अब अनेक जानने वाले लोग नही रह गये है या उनकी ज़रूरत नही रह गयी है इसलिये लोग भूलते जा रहे है। केवल नाम ही नही, बल्कि उसके साथ साथ चिकित्सा का भी, घोडे की बीमारी के लिये, लोगो की बीमारी के लिये, इन सब चीज़ो के लिये क्या चिकित्सा होनी चाहिये वह सब इस तरह की चीजो मे मिलती थी; लेकिन अब तो शायद वह मिलेगी भी नही। तो इसमे शक नही कि हमारे ग्राम्य जीवन में इतना मसाला भरा पडा है कि अगर उस सब को हम जमा कर लें तो पहले के इतिहास का हम निर्माण अभी भी कर सकते है। और वह इतिहास राजा महाराजाओ का इतिहास नही, कौन किस लडाई मे मरा, और किस लडाई मे हारा उस का इतिहास नही बल्कि मनुष्य जीवन का इतिहास है और उससे उसकी बहुत सुन्दर सामग्री तैयार हो सकती है। मै समझता हू कि वह इतिहास जो होगा वह हमारी सस्कृति का एक अच्छा इतिहास होगा। तो इसमे शक नही कि इस तरह के काम की बहुत ज़रूरत है।

अभी आपने संथालो के बारे मे बात कही। यह बडी प्रसन्नता की बात है कि हमारे कुछ नवयुवक लोग इसमें लगे हुये है। मैं ने तो देखा है कि अग्रेजो ने उनके गीतो को इकट्ठा किया है और अग्रेजी मे उसका अनुवाद तैयार किया है और एक नही बल्कि कितनो ने न केवल संथालों के बल्कि और दूसरी जातियो के लोगो के जीवन के सम्बन्ध के विषय मे इतनी सामग्री हासिल की है जितनी हम लोगो ने नही की है; और वह इसलिये कि हमारा ध्यान उस तरफ गया ही नही। तो चाहे अब तक हमने किया हो या नही किया हो मगर अब समय आ गया है कि हमारा ध्यान इन सब चीज़ों की तरफ़ जाये क्योंकि इसके बगैर तो हम अपना काम पूरा नही कर सकते। केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता से ही कोई देश स्वतन्त्र नही कहा जा सकता है बल्कि अपनी हरेक चीज़ में स्वतन्त्रता होनी चाहिये। उसमें ऐसी स्फूर्ति होनी चाहिये कि वह स्वयं इन चीज़ो का निर्माण कर सके और साथ ही साथ दूसरों को भी वह कुछ नयी प्रेरणा दे सके। वह तभी हो सकता है जब कि जो कुछ हमारी संस्कृति में आज संचित है उसको हम पहले जानें। इसका यह अर्थ नहीं है कि जो आधुनिक चीज़ें है उनको हम न ले। उनको हम सहर्ष लें। मगर जो कुछ भी हम करें उसका आधार हमारी अपनी संस्कृति ही हो सकती है। अगर पुरानी संस्कृति को हम छोड़ देंगे तो हम बेजड़ से हो जायेंगे और जब तक हमारी जड़ मज़बूत नही है कभी

ऊपर की चीज़ टिक नहीं सकती, बढ़ नहीं सकती, फल फूल नही सकती। इसलिये हमारी अपनी संस्कृति की रक्षा के लिये यह आवश्यक है कि हम अपनी चीज़ को समझें। उस पर ध्यान देने की जरूरत है चाहे फिर भले ही आज की नयी रोशनी की चीज़ों से अपना काम चल सकता हो। मेरा विश्वास है कि इस तरह की बहुत सी चीजें हम को मिल सकती है।

हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में आपने अभी कहा है कि हमारी आज की खड़ी बोली में शब्द भंडार बहुत कम है, शब्द थोड़े से हैं और यह भी आपने कहा है कि हमारी शक्ति भी नही है कि हम नये शब्दों को मिला सकें। मगर गांव के लोगों को आप देखें कि उनमें कैसी शक्ति है कि जब कोई नयी चीज़ देखते है तो किसी न किसी तरह से शब्द निकाल लेते है। मै ने अपने प्रान्त के कई हिस्सों में कई नये शब्दों का प्रयोग देखा जिनका अर्थ सुन्दर होता है। इस तरह हमारे ग्रामीण लोग भाषा की उन्नति कर रहे है, यद्यपि वे अशिक्षित है। इसलिये इन सब चीज़ों का अध्ययन आवश्यक है। मै मानता हूं कि इन सब चीज़ो का आप संग्रह करेगे। यदि संग्रह के बाद उसके एक एक के शब्द को लेकर आप अध्ययन करेंगे तो एक एक शब्द के इतिहास में हमारी संस्कृति का इतिहास मिल सकेगा। अंग्रेज़ी में एक किताब हिस्टरी आफ दी वर्ड्स है। हमारे यहां भी यदि हम शब्दों का इतिहास खोजे, ढूंढें तो मै समझता हूं कि हमारी संस्कृति का इतिहास बहुत हद तक मिल सकता है। आपने जो काम शुरू किया है यह बहुत ही सुन्दर काम है और मै समझता हूं कि वह महत्व का भी काम है। हां, इसमें बहुत परिश्रम करना पडता है और उसके साथ साथ पैसे का खर्च भी करना पडता है। पर मेरा अपना यह अनुमान है कि अगर आप को काम करने वाले मिलेंगे तो पैसे के बगैर काम रुकेगा नही। काम होते रहने से पैसा मिलेगा ही। आप अपनी गवर्नमेंट पर भी जोर डाल सकते है और अगर काम ठीक होता रहेगा तो गवर्नमेट को आप मजबूर कर सकते है। आखिर गवर्नमेट भी आप ही की तो है, मेरा अनुमान है कि रुपये के बगैर आपका काम रुकेगा नही। हा, आरम्भ मे जब तक लोगो को इसकी आवश्यकता, इसकी महत्ता मालूम न होगी, तब तक हो सकता है कि कुछ कठिनाई आपको पडे। मगर एक बार अगर लोग यह समझेंगे कि यह ऐसा काम है जिसमें देश का लाभ होने वाला है तो मे समझता हूं कि आपको हर तरह से मदद मिलेगी। मुझे यह देख कर बडी प्रसन्नता हुई है और मैंने जैसा पहले कहा मुझे यह देख कर अचम्भा भी हुआ, कि इतनी व्यापक मात्रा मे काम प्रायः सभी प्रान्तों मे हो रहा है। ग्राम्य गीतों को जमा करना बडा काम है; उसमें समय लगेगा। आजकल हिन्दी में बहुत ग्रन्थ प्रकाशित हुए है और बहुत अब भी प्रकाशन के लिये है, उनसे भी शायद अधिक ग्रन्थो को प्रकाशित कराना पडेगा। क्योंकि गांवों मे इन सब चीजों की कमी नहीं है। गीत तो हर मौके पर हैं। बच्चा पैदा होते समय, जनेऊ संस्कार के समय, मुडन के समय, बेटी की विदाई के समय प्रत्येक कार्य मे अलग अलग गीत हैं। यहां तक कि कोई मर जाता है तो उस अवसर पर गीत गाया जाता है। तो संगीत हमारे जीवन में भरा हुआ है। और इन सब गीतों को आप इकट्ठा करेगे तो एक बहुत बडा काम होगा। मै समझता हूं कि हमारे देश के लोगों के निरक्षर होने पर भी कोई नुकसान नही हुआ है क्योंकि हमारी सभ्यता ही कुछ ऐसी रही है, हमारी प्राचीन परम्परा कुछ ऐसी रही है कि निरक्षर होते हुये भी लोगों को अच्छी से अच्छी चीज़ें सिखलायी गयी है। आजकल लोग पुस्तक पढ़ कर ज्ञान प्राप्त करते हैं। पहले हमारे यहां ज्ञान केवल आंख से ही नहीं कान के द्वारा भी लोगो को दिया जाता था।

इसी तरीक़े से हमारे यहां ऐसे लोगों ने भी अच्छे से अच्छे दर्शन के सिद्धान्तों को सीखा जिनको एक अक्षर भी पढ़ना नहीं आता; वह उनको जीवन में मिल गया है। वह एक ऐसी चीज़ है जिस पर हम सब को गर्व होना चाहिये किन्तु मेरा अपना खयाल है कि इन चीज़ों को हम कुछ भूलने जा रहे हैं। इसलिये हमें ज़रूरत है कि उन्हें हम पुनर्जीवित करें। तब हमारी बहुत कुछ तरक्क़ी हो सकती है। मैं समझता हूं कि आपके प्रयास में आपको हर तरह की मदद मिलेगी। मेरे द्वारा तो जो कुछ मदद मिल सकेगी उसे पहुंचाने में मैं हर वक़्त तैयार रहूंगा।

हाथरस नगरपालिका द्वारा अभिनन्दन

ता० ५-४-५२ को हाथरस नगरपालिका द्वारा दिये गये अभिनन्दन-पत्र के उत्तर में राष्ट्रपतिजी ने कहा—

हाथरस नगरपालिका के अध्यक्ष महोदय, अन्य सदस्यगण, बहनो और भाइयो,

मुझे आपके शहर मे आने का यह पहला ही मौका मिला है और जो कुछ आपने मेरे सम्बन्ध में कहा है उसके लिये मै आपको धन्यवाद देता हूं। यहां आये चन्द घण्टे ही हुए लेकिन इधर उधर जाने का जो मौक़ा मिला है उसके अन्दर मै ने लोगों का प्रेम और उत्साह देखा है और उसका मेरे दिल पर काफ़ी असर पड़ा है। यह हमारे देश के लिये बहुत ही शुभ चिन्ह है कि नगरपालिकाएं शिक्षा के काम में काफ़ी दिलचस्पी लेने लगी है और यह आशा की जाती है कि थोडे ही काल में, शिक्षा के प्रसार को देखते हुए हम इस वदन्ति को दूर कर सकेगे कि इस देश में अभी अक्षर ज्ञान बहुत कम लोगों को है। सब से बड़ी जो कठिनाई नगरपालिकाओ को अथवा दूसरी संस्थाओं को शिक्षा के प्रसार में आती है वह यह है कि उनके पास इतना धन नही है कि जिससे कि वे पर्याप्त मात्रा मे शिक्षा का प्रसार कर सके और सभी बालक बालिकाओं के लिये योग्य शिक्षा का प्रबन्ध कर सकें। भारत वर्ष एक गरीब देश है और उसके पास अगर काफ़ी पैसा नही हो तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसलिये हम को यह भी सोचना होगा कि हम किस तरीके से अपनी शिक्षा पद्धति को चलावे जिससे कि कम खर्चे में ज़्यादा फल निकल सके। केवल शिक्षा के प्रचार में ही नही बल्कि और सब जितने लोकहित के काम होते है उन सब कामों के लिये ऐसी पद्धति सोच निकालनी होगी जिसमें कम ख़र्चे में बड़ा काम हो सके। मै आशा करता हूं कि आपकी नगरपालिका इस ओर भी ध्यान देगी और केवल लकीर का फ़क़ीर न होकर, जो पुराने ढर्रे से सब काम चल रहा है उस पर न चल कर कुछ ऐसा ढंग निकालेगी जिससे कि कम पैसे के अन्दर ही काम हो सके। यह सच बात है कि किसी नगरपालिका को ऐसा काम करने के लिये पूर्ण आज़ादी नही है मगर तो भी जब इस दिशा में काम शुरू होगा तो प्रान्तीय सरकार का ध्यान इस ओर जायेगा और अगर कुछ इसमें ऐसी चीज़ निकलेगी जिसमें देश का लाभ होता हो तो उसे प्रान्तीय सरकार मंजूर करेगी और चलायेगी। मैं ने कुछ शिकायत की दृष्टि से नही बल्कि इस ख़याल से इन बातों को आपसे कहा है कि अब जब हम स्वतन्त्र हो गये हैं तब हम को सभी चीज़ों में एक नये दृष्टिकोण से सब चीज़ों को देखते हुए और सब बातों में देश की स्थिति को ध्यान में रखते हुए हमें ऐसा परिवर्तन

करना होगा जिससे कि हम देश को आगे बढा सकें, ऊंचा उठा सकें और हम को इस बात के लिये ठहरना न पड़े, विचार करना न पड़े कि जब इतना पैसा होगा तब हम इस काम को कर सकेंगे। यही सोचकर महात्मा गांधी जी ने जब बुनियादी तालीम की नीव डाली तब उन्होंने यह कहा था कि यह शिक्षा पद्धति ऐसी होगी जिसमें पढ़ते पढ़ते, सीखते सीखते विद्यार्थी अपने लिये खर्च कमा लेगा, पैदा कर लेगा। अगर इस शिक्षा को हमारे देश के सभी शिक्षा पंडित और शिक्षा शास्त्री मंजूर कर लेते और सभी गवर्नमेंटें अगर मजूर कर लेती और चलाती तो मेरा विश्वास है कि अब तक शिक्षा का काम बहुत आगे निकला होता और अभी भी कर ले तो पैसे की कमी की वजह से हमारा काम न रुकेगा और जो कम रह गया वह आगे बढ जायेगा।

आपने अपने मानपत्र मे दो एक बातों का और भी जिक्र किया है। आपने सड़कों के सम्बन्ध में कहा है। यदि गवर्नमेंट से पैसा मिल जाये तो यहां की सड़कों की मरम्मत या तरक्की आप करा सकेंगे। बात सही है। मै ने दर्याफ़्त किया है और मुझे यह आश्वासन मिला है कि सड़कों की मरम्मत के लिये आपकी जो दरख्वास्त या मांग है उस पर प्रान्तीय सरकार इस वर्ष विचार करेगी और मै आशा करता हूं कि उस विचार का फल आपकी नगरपालिका को कुछ अच्छा ही होगा। आपने ड्रेनेज का भी जिक्र किया है। उम सम्बन्ध में जहा तक मुझे जानकारी हुई है उससे यह मालूम हुआ है कि इसका काम अगर रुका है तो पैसे की कमी की वजह से नही रुका है बल्कि कुछ काम ऐसा है कि वह खुद ज्यादा तेजी से आगे नही बढ सका। उसके लिये जमीन हासिल करनी पडती है और "लैण्ड एक्विजिशन" में समय लगता है और शायद वह भी आगे करना है। उसकी वजह से कुछ देर हो रही है और जो सामान विदेश से मंगाना है और जिसके लिये विदेश मे आर्डर भेजा जा चुका है, उस सामान के पहुंचने मे भी कुछ विलम्ब हुआ है, इस वजह से जतना रुपया आपको इस काम के लिये मिला है उतना भी आप पूरा खर्च नही कर पाये है और शायद आपके उस कोष में से एक लाख रुपये की रकम अभी बची रह गयी है। इन सब बातों से भी मुझे पूरा विश्वास है कि प्रान्तीय सरकार आपकी माग पर, आपकी दरख्वास्त पर ध्यान देगी। आप अपना काम करते जाये तो इसमे शक नही कि आपकी सभी बातो पर सहानुभूतिपूर्वक सरकार विचार करेगी। इसलिये आप अपने काम करते जाये और इसका भरोसा रखें कि प्रान्तीय सरकार आपको हर तरह से मदद देगी। आपने मेरे प्रति जो प्रेम दिखलाया और मेरा जो आदर किया उस के लिये मै आप सब भाई बहनों का बहुत आभारी हूं।

हरि आई अस्पताल

ता० ५-४-५२ को हाथरस में हरि आई अस्पताल का उद्घाटन करते समय राष्ट्रपतिजी ने कहा—

देवियो और सज्जनो,

मुझे यहां आकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि मैं इस अस्पताल का उद्घाटन कर सका। यह आपके अलीगढ़ ज़िले को ही श्रेय है कि उसने नेत्र रोगियों को किसी न किसी तरह से कुछ चिकित्सा

पहुंचा कर उनको आराम देने का प्रयत्न किया है और आपने जो काम यहां आरम्भ किया है वही काम अलीगढ़ में डा० मोहनलाल ने और कुछ बड़े पैमाने पर आज से कई वर्षों से कर रखा है। इसलिये मुझे इस बात की और भी खुशी है कि यहां पर आपने इस काम को शुरू किया और इसको गवर्नमेंट की मदद के बिना आज तक आपने चलाया। जब से हम को स्वराज्य प्राप्त हुआ या यह कहे कि उसके पहले से भी कुछ इस तरह की भावना हम लोगो के दिल में पैदा हो गई है कि जो कुछ करना, कराना है वह केवल गवर्नमेंट की मदद से ही हम कर सकते है या करा सकते है। बहुत सी चीज़े जो देश में पहले लोग पुण्य का काम समझ कर किया करते थे, जो बहुत इस तरह की चीजें धनी-मानी लोग चलाया करते थे उन सब को चलाने के लिये, वैसा काम करने के लिये भी बहुत हद तक हम सरकार पर ही अब निर्भर करने लग जाते है। आजकल शिक्षा का काम बढ़ रहा है और ठीक बढ़ रहा है। मैं जिस वक़्त छोटा बच्चा था उस वक़्त प्राईमरी स्कूल शायद कही भी भारत भर में नज़र नही आते थे। मगर इसका यह अर्थ नही था कि लोगों को कुछ सीखने पढ़ने का मौका ही नही था। बल्कि हर गाव में जो अच्छे धनी लोग थे उनके दरवाज़े पर, गुरुजी या मौलवी साहब बैठाये जाते थे और केवल उनके बच्चो को ही नही बल्कि गाव के और बच्चों को भी वे शिक्षा दिया करते थे। इस तरह से अस्पताल सभी जगहों में तो नही थे मगर कोई गांव ऐसा नही होगा जहा कोई छोटा मोटा वैद्य या हकीम नही रहता हो, जो गाव के लोगो के स्वास्थ्य की खबर न लेता हो। तो वह एक तरीका था जिसमें गवर्नमेंट पर भार कम पड़ता था और लोगो को अपने पैरों पर खडे होकर अपना काम चलाने का अभ्यास होता था। अब एक तरफ तो गवर्नमेंट के लोगो ने यह समझ रखा है कि सब कुछ उनको करना है और वही सब कुछ कर सकते है। और दूसरी तरफ लोगों का भी यह खयाल हो रहा है कि जो कुछ हो वह गवर्नमेंट को ही करना चाहिये और उसी पर भार पड़ना चाहिये। मैं समझता हू कि इस तरह से अपने को बिल्कुल पगु बना देना देश के लिये बहुत अच्छा नही है और जितनी सस्थायें ऐसी हो सके जो अपने पैरो पर खडी होकर देश की सेवा कर सके उन सस्थाओं का काम होना चाहिये, चलना चाहिये और देश के जो धनी-मानी लोग है उनमे दान की प्रवृत्ति होनी चाहिये कि अच्छे काम मे वे दान दिया करे।

तो यहा मुझे यह जानकर बडी खुशी हुई है कि आपने अब तक गवर्नमेंट से मदद नही ली है। मैं समझता हू कि जो आपने इतना काम केवल अपने प्रयत्न से कर दिखलाया है तो ज़रूरत पड़ेगी तो गवर्नमेंट आपकी मदद ज़रूर करेगी और गवर्नमेंट को मैं समझता हूं कि यह देखना चाहिये कि जो काम लोग खुद अपने पैरो पर खड़े होकर कर रहे है और अगर उसमें मदद की कमी की वजह से काम की तेजी मे कुछ कमी आ जाती है तो वहां पर अवश्य ही वह लोगों की मदद करे और यदि आप जिस तरीके से काम करते रहे है वह करते रहे तो मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि जिस तरह से एक सज्जन ने आपको ज़मीन दान दी, जिस तरह से आपके मकान के लिये ज़रूरत के पैसे मिल गये और जिस तरह से आप तीस हज़ार सालाना लोगों से लेकर उसको चलाने में आगे खर्च करते रहे है वैसे ही और सुविधाये भी आपको मिलती रहेगी और जो थोड़ी बहुत सहायता आपको यहां की नगरपालिका से या और दूसरी संस्थाओ से मिलती है, उस सहायता से आप आगे भी अपना काम चलायेंगे। मैं तो इसको पवित्र और ठीक समझता हूं और जैसा कि मै ने कहा है कि इस वजह से अगर आपको ज़रूरत पड़ेगी तो आपका काम पैसे के बग़ैर नही रुकेगा। अभी तक आपका काम

नहीं रुका है और आइन्दा भी जब आपने इतना करके दिखलाया है रुपये की कमी के कारण आपका काम नही रुकेगा। मैं आशा करता हूं कि जिस तरह से लोगों ने आपकी सहायता की है उसी तरह वे और भी बडे पैमाने पर करते जायेंगे; जैसे जैसे आपकी जरूरत बढती जायेगी आपकी सहायता बढ़ती जायेगी और आपकी संस्था को जरूरत होगी तो गवर्नमेंट से आपको मदद मिलेगी और मिलनी चाहिये। मै उन सब भाई और बहनों को जिन्होंने आपके इस शुभ काम में मदद की है, चन्दा दिया है और विशेषकर जिन सज्जनों ने अपने जीवन को इसमें लगा दिया है, उनको धन्यवाद देता हूं उन्होंने तो अपना सब कुछ इसी में उत्सर्ग कर दिया, तो ऐसे लोग हमारे देश में हैं और उनके द्वारा देश का ठीक काम होगा। आपने मुझे यह मौका दिया है इसके लिये मै आप सब को बहुत बहुत धन्यवाद देता हूं।

व्रज साहित्य मण्डल

व्रज साहित्य मण्डल के अधिवेशन का उद्घाटन करते समय ता० ५-४-५२ को राष्ट्रपतिजी ने कहा—

उपस्थित सज्जनो और देवियो,

आप ने मुझे यह सुअवसर और सौभाग्य दिया कि मै इस सम्मेलन मे आज उपस्थित हो सका इस के लिये मैं आप का बहुत अनुग्रहीत हूं। आज भी भारतवर्ष में असंख्य नर-नारियां हैं जो व्रज में आना अपने लिये पूर्वजन्म के किसी पुण्य का फल मानते है। मै एक ऐसे प्रदेश से आता हूं जो यहा से कुछ दूर पर है। मेरे जैसे के लिये तो यह पुण्य तीर्थ स्थान है ही। इस लिये मै आप को विशेष धन्यवाद देना चाहता हू कि इस अवसर पर आप ने मुझे यहा बुलाया और एक ऐसे काम में भाग लेने का मौका दिया जो कि अपने प्रकार का बहुत ही सुन्दर, बहुत ही महत्व का काम है। यहा पर जो व्रज भाषा सम्बन्धी खोज का काम, ग्रन्थों के प्रकाशन का काम और सामग्री एकत्रित करने का काम मण्डल द्वारा किया जा रहा है वह बडे महत्व का काम है और मै चाहता हू कि इस तरह का काम और और जगहों में भी हो। मगर साथ ही यह तो सब को मानना ही पडेगा कि जहा तक व्रज भाषा का सम्बन्ध है, वह इतना अधिक महत्व रखती है कि उस की बराबरी मे और दूसरी भाषा, जिस का हिन्दी से कोई सम्बन्ध है, नही आ सकती। अगर हम यह कहें कि इस शताब्दी के पूर्व तक इस के आरम्भ तक, प्रायः बडे से बडे और अच्छे से अच्छे काव्य के लिये भारत भर मे ही व्रज भाषा ही मानी गई तो शायद अत्युक्ति नही होगी। और आज भी जो लोग उस माधुर्य को पान कर चुके है शायद अब अफसोस करते होंगे कि वह चीज आज उनको इतनी मात्रा में उपलब्ध नही है जितनी मात्रा में पहले होती थी। जी हां, अब जो काम आप कर रहे हैं वह बहुत ही सुन्दर और बडे महत्व का काम है। मै केवल एक दो बात कह देना चाहता हूं। ऐसे काम में किसी प्रकार की संकीर्णता को नही आने देना चाहिये। और न किसी

संकुचितभाव को ही कोई स्थान मिलना चाहिये। इस का कारण यह है कि हमारे देश का इतिहास आज तक कुछ ऐसा रहा है कि अक्सर हम छोटे छोटे टुकड़ों में बंट जाना तो पसन्द करते है और यद्यपि हमारी संस्कृति की एकसूत्रता है जो सारे भारतवर्ष को उत्तर से दक्षिण तक, पूरब से पश्चिम तक, बांधे हुए है, मगर उस एकसूत्रता के साथ साथ ऊपर से देखने वालों को बहुत विभिन्नता भी देखने में आती है। भय इस बात का रहता है कि कही इस विभिन्नता को हम इतना महत्व न दे दें कि जिस में वह एकसूत्रता किसी तरह से पीछे पड़ जाये। इसलिये जो लोग किसी एक सीमित क्षेत्र में भारत वर्ष के किसी एक अंश में काम करते है उन को हमेशा यह याद रखना है कि यह देश एक है, सारा भारतवर्ष एक है, और यद्यपि इस के अन्दर आज से नही बल्कि प्राचीन काल से सब बातों की स्वतंत्रता रही है, अलग अलग अपनी रीति-नीति, अपने अपने ढंग, अपने रस्म-रिवाज रहे है, मगर इन सब के अन्दर, इन सब की तह में इन सब के नीचे एकसूत्रता बनी रही है। इस चीज को आज और भी दृढ़ करना है और इसलिये जो किसी सीमित क्षेत्र मे काम करते है वे इस चीज को याद रखे। मै ने कुछ शब्द आप के लिये लिख कर रखे थे और चाहता तो मै ही पढ कर सुनाता। पर इस में शायद परिश्रम ज़्यादा पड़े। इसलिये मै ने अपने मित्र श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन से निवेदन किया है कि वह मेरे भाषण को पढ दें और आप से मै आशा करूंगा कि आप उस को सुनें।

मै आप व्रजवासियों को अत्यन्त भाग्यशाली मानता हूं। आप उस मंडल के निवासी है जो भगवान कृष्ण की लीला भूमि है। ठीक है, उन के देहोत्सर्ग को आज अनेक शताब्दिया व्यतीत हो चुकी है। किन्तु इन सब शताब्दियो के, इन सब परिवर्तनो के बावजूद इस व्रजभूमि मे, इसके वायु और आकाश मे, इस के नगरो और नगरियो मे, इस की वीथियो और बाजारों में, इस की अट्टालिकाओ और बाटाकिओं मे, मोहन की मुरलिया आज भी गूज रही है उन की सुरभि आज भी बसी हुई है और उस की काकरी कांकरी में आज भी उन की पदचाप सुनाई देती है। जहां हम जैसे लोगो को यात्रा करके आने पर ही यह आनन्दामृत प्राप्त हो सकता है वही आप को अपनी द्वार देहरी पर ही, अपनी बोली में ही भगवान की झांकी नित्यप्रति मिलती रहती है।

भगवान के गौरव और महिमा से आप ही नही आप की बोली भी गौरवान्वित हो गई है। यह तो संसार विदित है कि आप की बोली अत्यन्त मधुर और कोमल है। उस में कर्णकटु ध्वनियां तो लगभग है ही नही। बहुधा ऐसा प्रतीत होता है कि वह तो कविता और संगीत के लिये ही गढी गई है। अपनी इस विशिष्टता के कारण भी व्रजभाषा संसार की बोलियों में अपना विशिष्ट स्थान रखती, किन्तु अपनी इस ध्वनिमाधुरी से भी कही अधिक यह इसलिये महान् है क्योंकि यह भगवान कृष्ण की लीला का अविरल गान है। व्रजभाषा का तो उन की लीला से इतना तादात्म्य हो गया है कि उन के लीला गान से पृथक भी इस का अपना अस्तित्व है, यह बात केवल इने गिने कुछ ही लोगों को ज्ञात होगी। व्रजभाषा की बात कीजिये और तुरन्त सब के मन में "मैया मैं नहीं माखन खायो" प्रतिध्वनित होने लगेगा। मैं नहीं जानता कि किसी अन्य बोली का भी किसी महाविभूति की जीवन लीला से इतना तादात्म्य है। मेरी जानकारी में तो यह गौरव केवल व्रजभाषा को ही प्राप्त है।

यह भी तो कोई साधारण गौरव नहीं है । इस की महानता इसी से व्यक्त है कि कृष्णगाथा भारतीय जन जीवन की, भारतीय संस्कृति की, भारतीय इतिहास की अमूल्य निधि है । मैं समझता हूं कि रामगाथा और कृष्णगाथा ऐसे दो पहिये है जिन पर भारतीय जन जीवन विशेषतया भारतीय ग्राम्यजीवन सारी गत शताब्दियों में चलता रहा है । भारत की लगभग हर भाषा के साहित्य का अधिकांश आज इन्हीं दोनों गाथाओं के आधार पर बना है । साहित्य ही क्यों भारतीय कला का भी इन दोनों गाथाओं से बड़ा सम्बन्ध है। आजकल जिसे "ओपेन एयर थियेटर" बोलते हैं उस प्रकार का थियेटर अनेक शताब्दियों से रामलीला के रूप में हमारे देश में होता रहा है और रामलीला आबाल-वृद्ध के मन को न केवल आनन्द से ही भर देती है वरन वह उन के चरित्र निर्माण और आदर्श साधन का भी बड़ा प्रबल साधन रही है । उस ही का तो यह प्रताप है कि जब भारत के ग्रामों मे साक्षरता लुप्त सी हो गई है और जब उन की शिक्षा दीक्षा की प्राचीन पद्धति सर्वथा मिट सी गई है, भारत के कृषक आज भी मानवता के आदर्शों से पूर्णतया परिचित है। जहां विशाल पैमाने पर खुले स्थान में होने वाले नाटक का काम रामलीला पूर्ण करती थी वहीं गांव गांव में भक्ति रस का संचार करने वाले नाटक के रूप मे रासलीला थी। भारत के भोले भाले किसान और मजदूरों को भी इस ने भगवान कृष्ण के जीवन और आदर्शों से उसी प्रकार परिचित करा दिया है जिस प्रकार कि वे अपने बाल बच्चों से परिचित होते हैं। जहां अन्य प्रकार के नाटक केवल नगरवालों के मनोविनोद के लिये ही होते थे, राम-लीला और रासलीला राजा रक, बालवृद्ध, नर और नारी सवर्ण और अवर्ण सभी के लिये होती थी ।

इतना ही क्यो, हमारी स्थापत्य कला, हमारी वास्तुकला, हमारी चित्र कला सभी में तो राम और कृष्ण की गाथा बुनी हुई है। अतः यदि मैं यह कहू कि हमारी सस्कृति का ताना राम और कृष्ण गाथा रूपी दो धागों से पूरा गया है तो उस कथन मे कोई अतिशयोक्ति न होगी। ठीक है, उस के बाने मे यूनानी, अरब, ईरानी, शक, हूण, और न जाने कितने अन्य धागे लगे है और उस का वर्तमान स्वरूप इन सभी के रग से रगा हुआ है किन्तु वे इन्ही दोनो गाथाओं के ताने मे आ कर बुन गये हे। अत सूर्य चन्द्र के समान ये दोनों गाथायें हमारे सारे जीवन को ज्योतिमय कर रही है और उसको प्राण और प्रेरणा प्रदान कर रही है, करती रही है और मुझे अटल विश्वास है कि सर्वदा करती रहेंगी ।

मै समझता हूं कि इन गाथाओ का हमारे जनमन और जनजीवन पर इतना प्रभुत्व इसी लिये है कि ये दोनों ही मानव हृदय की श्रेष्टतम भावनाओं और वेदनाओं की मूर्तिमती प्रतिमा है । संसार में बिरला ही कोई व्यक्ति होगा जो इन गाथाओ से ऐसे नये जगत की झाकी न पा लेता हो जहां पहुंचने को मानव पृथ्वीतल पर अपनी लीला प्रारम्भ करने के दिन से ही लालायित रहा है। कला की दृष्टि से और मानवादर्शो की दृष्टि से ये अत्यन्त ही उत्कृष्ट और जीवनदायिनी है । उन की विशद व्याख्या करने का यह अवसर नही है । किन्तु इन में से कृष्ण गाथा के सम्बन्ध मे कुछ कहे बिना मै आप के कार्य के गुरुत्व को ठीक शब्दों में व्यक्त नही कर सकता और इस लिये यहां मै इस के एक विशिष्ट पहलू की ओर दृष्टि खीच देना चाहता हूं ।

कृष्णगाथा में कुछ ऐसा जादू है कि न केवल भारत भूमि में जन्मे और पले व्यक्ति ही इस में लीन हुए हैं वरन् भारत मे आने वाले विदेशी भी इस के पीछे पागल हो उठे है। इतिहास साक्षी है कि यवन और शक जो भारत में व्यापार अथवा विजय के लिये आये वे भी भगवान कृष्ण के उपासक बन गये। इतना ही क्यो मध्यकालीन भारत में जो तुर्क और मुगल आये वे भी कृष्णगाथा के रंग में रंग गये। ताज ने पुकार कर कहा: 'हों तो मुगलानी, हिन्दवानी ह्वै के रहूंगी" और आलम ने "तांथल कांकरी बैठ चुन्यों करें" का इरादा किया। मियां रसखान तो 'प्रेम देव की छबि निरखि भये मियां रसखानि"। इतना ही नही उन की इच्छा यह भी हुई कि यदि इस मर्त्य लोक में उन्हे फिर आना पड़े तो उन की यही प्रार्थना होगी कि:

मानुस हों तो वही रसखान बसों मिलि गोकुल गांव गुवारन
जो पशु हो कहा बस मेरौ चरों नित नद की धेनु मंझारन
पाहन हौं तो वही गिरि को जो कियौ ब्रजछत्र पुरन्दर धारन
जो खग हौ बसेरो करौ वही कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन।

आखिर वह कौन सी बात है जिस के कारण भारतीय और अभारतीय सभी कृष्णगाथा से इतने प्रभावित हुए। मैं समझता हूं कि इस का कारण यह है कि इस में मानव की परमात्मा के प्रति भक्ति और मानव की सौदर्योपासना का इतना घनिष्ट और सहज सयोग है कि कोई भी व्यक्ति इसके आकर्षण से बच नहीं सकता। यदि यह कहा जाये कि कृष्ण गाथा में ईश्वर-भक्ति रूप की प्रतिमा बन कर प्रकट हुई है तो कोई अत्युक्ति न होगी। अतः धर्म और रूप पिपासु इस की ओर जाये बिना रह ही नही सकते। यह कहना अनुचित न होगा कि एक दृष्टि से सारी मानव जाति को धर्म पिपासु और रूप पिपासु इन दो ही वर्गो में बांटा जा सकता है। अतः जहां धर्म और रूप दोनों की ही तृप्ति होती हो वहां तो मानव जाति के प्रति व्यक्ति को आत्मिक तृप्ति मिलेगी ही। उदाहरणार्थ कवि शिरोमणि सूरदास के कृष्णभक्ति सम्बन्धी इस प्रसिद्ध पद को लीजिये:

मैया मैं नही माखन खायो
ख्याल परे ये सखा सबै मिल, मेरे मुख लपटायो
तु ही निरखि नान्हे कर अपने, मैं कैसे कर पायो
मुख दधि पौछ बुद्धि इक कीन्ही, दौना पीठ दुरायो
डारि साटि मुसकाइ जसोदा, स्यामहि कंठ लगायो
बालविनोद गोद मन मोह्यो, भक्ति प्रताप दिखायो
"सूरदास" यह जसुमति कौ सुख, सिव विरंचि नहि पायो।

कृष्ण की यह बालछवि इतनी मोहक है कि इस पर कौन सा ऐसा दिल वाला आदमी है जो बलिहारी न हो जायेगा। इसी प्रकार गोबिन्द स्वामी का यह पद लीजिये:—

हौ बलिजाऊं कलेऊ कीजै
खीर खांड घृत अति मीठौ है, अबकि कौर बछ लीजै
बैनी बढे सुनो मन मोहन मेरौ कह्यो पतीजै
औट्यो दूध सद्य धौरी को, सात घूट जो पीजै

हौं वारी या वदन कमल पर, अंचल प्रेमजल भीजै
बहुरि जाय खेलों जमुना तट, गोविन्द संग कर लीजै।

इस में भी भक्ति और सौंदर्य का वही समन्वय है। रूप और भक्ति का यह संयोग काव्य के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में भी कृष्ण गाथा ने बड़ा घनिष्ट स्थापित किया है। सारा भारतीय संगीत और भारतीय नृत्य का पर्याप्त विशिष्ट अंग कृष्ण की ही भक्ति के चारों ओर घूमता है। आज भी चाहे हिन्दुस्तानी संगीत हो और चाहे कर्नाटकी संगीत, इन दोनों ही में तो राधा कृष्ण की भक्ति प्रतिध्वनित हो रही है। हिन्दुस्तानी संगीत के प्रमुख कलाकारों में अनेक मुसलमान उस्ताद हैं और रहे हैं किन्तु जब पक्का राग वे गाते हैं तो वही राधा कृष्ण लीला सम्बन्धी। उन्हें क्षण भर के लिये भी नही लगता और मैं समझता हूं कि यह उचित ही है कि वे कोई ऐसी बात कर रहे हैं जो उन के लिये अनुचित है। मैं ने देखा है कि अनेक उस्ताद इन राधा कृष्ण के पदों में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि उन्हे अपने तन मन की सुधि नही रहती और उन की आंखो से अविरल धारा बहने लगती है। इसी प्रकार भारतीय नृत्य से राधा कृष्ण की लीला हटा दी जाये तो उस का अधिकांश आकर्षण जाता ही रहेगा। अतः कला के क्षेत्र में कृष्ण गाथा ने यहां के सभी विभिन्न प्रदेशों के लोगों को, सब ही विभिन्न भाषा भाषी लोगों को, सभी धर्मावलम्बियो को, ऐसे सूत्र में बांध दिया है जो केवल आत्मा का संबन्ध है। इस प्रकार उस ने भारत की विभिन्न जातियों और विभिन्न प्रदेशों के लोगों के एकीकरण का अभूतपूर्व ऐतिहासिक कार्य किया है।

इस अभूतपूर्व ऐतिहासिक कार्य से आप के उत्तरदायित्व की गुरुता कही अधिक बढ़ जाती है। इस महान् कृष्ण गाथा का आज अन्य भाषाओं से कही अधिक साधन और वाहन होने के नाते व्रज भाषा का आज बड़ा महत्व है। उस का, उस के बोलने वालों का, उस के कलाकार और साहित्यकारों का यह पवित्र कर्तव्य है कि इतिहास के इस गुरुभार को यथाविधि पहचाने और उस के वहन करने को प्रस्तुत हो। रूप और भक्ति के इस मिलन को और भी दृढ बनाना उस को अनेक प्रकार से अभिव्यक्त करना आज व्रज भाषा के उपासकों का धर्म है भारत को आज इस प्रकार के मेल की अत्यन्त आवश्यकता है क्योंकि इस मेल के बाद किसी प्रकार के धार्मिक द्वेष और असहिष्णुता का प्रश्न तो पैदा हो ही नहीं सकता। जो रूप और धर्म दोनों का ही एक सा उपासक है उस के लिये यह संभव नहीं हो सकता कि उन में से किसी एक की खातिर किसी प्रकार का अनाचार अथवा अत्याचार करे। उसी भक्ति और रूप के मेल से हमारे देश के विभिन्न तत्वो को एक दूसरे से मिलने का पूरा अवसर होगा। केवल रूप की उपासना मानव को गड्ढे में गिरा सकती है और केवल पंथ का अनुदार आग्रह मानव को अशान्ति के पथ पर ले जा सकता है। किन्तु जब वे दोनों मिल जायेंगे तब इस प्रकार की अति की संभावना लग भग नही के बराबर ही रहेगी। इसलिये मेरा विचार है कि आप की यह संस्था अपने भावी कार्यक्रम को इसी उद्देश्य के अनुकूल बनायेगी जिस से कि यह उस काम को पूरा करने में सहायक हो जो व्रज के प्राचीन इतिहास, जो मुरली मनोहर की लीला ने इस के ऊपर रख दिया है।

इस भार की गुरुता इस बात से और बढ़ गई है कि ब्रज भाषा के इतिहास से स्पष्ट है कि जनता की और विशेषतया सरल ग्रामीण जनता की अपनी बोली में इतने उच्च कोटि का साहित्य हो सकता है कि वह युग और देश का प्रतीक और प्राण ही न हो, वरन् अनन्त काल तक नर नारियों के जीवन में प्रतिध्वनित होता भी रहे। हमारे देश में तो यह विश्वास भी रहा है कि नगर के बजाय जनपद में स्थित बनों और आश्रमों में ही मानव को वह अन्तदृष्टि प्राप्त होती है जो उत्तम काव्य के लिये आवश्यक है। रामायण, महाभारत इत्यादि प्रसिद्ध ग्रन्थों के रचयिता नगरों के वासी न हो कर आश्रमों के ही ऋषि मुनि थे। अतः हमारे देश में जनपद और नगर की संस्कृति में कुछ अधिक अन्तर न था। हां नागर कुछ बातों में चतुर अवश्य होते थे किन्तु जहां तक कला और काव्य का प्रश्न था उस में ग्रामवासियों की जितनी देन है उतनी संभवतः नगरवासियों की नही है। तुलसीदास, सूरदास, इत्यादि महान भक्ति-कवि ग्रामों की ही सन्तान तो थे। दुर्भाग्यवश विदेशी राज्य में हमारे नगरों और ग्रामों में संस्कृति की दृष्टि से पर्याप्त विभेद हो गया। जहां ग्राम इसी भूमि और इसी आकाश की वस्तु रहे वही नगरो का प्रचलित शिक्षा पद्धति के कारण रिश्ता सुदूर यूरुप और इंगलैड से भारत भूमि की अपेक्षा कही अधिक घनिष्ट हो गया। अत. बहुतेरे नगरवासियों अर्थात नवशिक्षित वर्ग के लोगों को, भारत की ऐतिहासिक विरासत की अपेक्षा यूरुप की संस्कृति ने अधिक प्रभावित किया। मेरे इस कथन का यह आशय कदापि नही है कि विदेशों की किसी बात को अच्छा समझना या अपनाना कोई बुरी बात है। वैसा तो होना चाहिये किन्तु हम में से हरेक को यह भी समझना चाहिये कि हमारा जीवन यहां की वायु, यहां के आकाश, यहां की भूमि और यहां के इतिहास से इतना जकडा हुआ है कि उन से अलग होना अपने अस्तित्व को उसी तरह से खतरे मे डाल देना है जैसे कि शरीर पर से खाल को छील देने से उस का बना रहना असभव हो जाता है। अत अब समय आ गया है कि स्वतन्त्र भारत का प्रत्येक व्यक्ति अपनी जनता से गठबन्धन और भी दृढ कर ले और जन जीवन से किसी प्रकार भी कटा कटा न रहे। इस का आशय यह है कि हमारी साहित्य साधना यही के लोगों के जीवन और प्रकृति के स्वरूप से प्रेरित होनी चाहिये। यदि ऐसा हम ने किया तो हमारा साहित्य गमले का पुष्प न रह कर जन जीवन की प्राकृतिक बसन्त में प्रफुल्लित सर्व-व्यापी सौरभमय झाडी और वन बन जायेगा। यदि कबीर, सूरदास और तुलसी दास आज भी जन जीवन के प्राण बने हुए हैं, यदि उन के पद आज भी खेती मे काम करने वाले नर नारियों के मुख से सुनाई पडते रहते है तो उस का कारण यही है कि उन्होंने जनता के हृदय की धडकन को ही कविता का रूप दिया।

जब सूरदास गाते हैं कि :

सुने री मै ने निर्बल के बल राम,
पिछली साख भरूं सतन की, अडे संवारे काम।

तो वह गान क्या पंडित और क्या अपढ क्या किसान क्या मजदूर के हृदय मे इसलिये गूंज उठता है क्योंकि वह उसी की बोली में है जिसे वह खेत में, चौपाल मे और पनघट पर दिन प्रति दिन सुनता है और बोलता है और उस में उसी वेदना की ध्वनि है जो उस के अपने हृदय में खटक रही है। अत· आप ब्रज भाषियों पर इतिहास का यह भार भी है कि आप साहित्य को नगर की चेरी बनी रहने देने के बजाय जन जीवन का प्रतिनिधि बना दें।

किन्तु इस के साथ ही साथ मैं आप से यह भी कहूंगा कि जन बोली में जन जीवन का ही गान करने की बात का किसी को यह आशय न लगा लेना चाहिये कि वह केवल किसी प्रदेश का ही बंदी बन जाये। आप जानते है कि मानव-हृदय, प्रदेश के साथ साथ ही सारे संसार का भी होता है। मानव की मूल भूत वृत्तियों और वेदनाओं मे संसार भर में साम्य है और इसलिये महान् साहित्य वह है जो प्रदेश की खिड़की से मानवता की झांकी दिखा दे। इस लिये जन जीवन में अपनी जड़ें फैलाने के साथ साथ ही आप को अपने मस्तक को खुले आकाश में और सूर्य को प्रकाश में ऊपर उठाये रखना चाहिये और जहां से भी वायु और प्रकाश आता हो वहीं से उस को लेना चाहिये। ऐसा करने के लिये आप को दो बातों को पूरा करने का प्रयास करना होगा। पहली बात तो यह है कि आप को संसार के सब समृद्ध साहित्यों से पूरा पूरा लाभ उठाना होगा। दूसरी बात आप को यह करनी होगी कि अपनी विशिष्ट बोली का भारत की अन्य बोलियों से सम्बन्ध बनाये रखना होगा। आधुनिक ससार में अपने घरोदे में ही बन्द हो कर बैठने की भावना प्रत्येक वर्ग के लिये हानिकर ही नही बल्कि घातक भी सिद्ध हो सकती है। मानव जाति जिस स्थिति में है उस में यह आवश्यक है कि अपना विशिष्ट व्यक्तित्व रखते हुए भी प्रत्येक ही भाषा अथवा धर्म पर आश्रित समूह अन्य समूहो से पूरी तरह से सहयोग और समन्वय करने के लिये तत्पर रहे। इसी प्रकार के समन्वय से आधुनिक हिन्दी का रूप बना है। उस में अवधी, मैथिल, भोजपुरी, राजस्थानी, व्रज, बुन्देलखण्डी, इत्यादि बोलियों का समन्वय हुआ है और उन सब के साहित्य से ही उस का भण्डार भरा है। काव्य की दृष्टि से यह भण्डार कुछ कम नही है। जिस में तुलसी की विनय पत्रिका और रामचरितमानस, सूर के सूर सागर जैसे ग्रन्थ हों वह भाषा ससार की किसी भाषा के काव्य साहित्य से टक्कर ले सकती है, और उस के लिये इस प्रदेश की सब बोलियो के लोगो को गर्व हो सकता है क्योकि यह सब इन की सम्मिलित सपत्ति है। आप का धर्म है कि अतीत की इस महान् देन से अनुप्राणित हो कर इस भण्डार को और भी भरपूर करने में लग जाये।

ऐसा करने के लिये आप को कुछ बाते करनी ही होगी। आप को प्रथमतः इस बात का प्रयत्न करना चाहिये कि हमारी जनता को व्रज भाषा का भक्ति काव्य कम पैसो में मिल सके। उस के अधिकृत संस्करण भी आप को निकालने का प्रबन्ध करना चाहिये। पहले से ही आपने गवेषणा का कुछ काम अपने हाथ में लिया है। उसे आप को और भी बढ़ाना चाहिये। और विशेषतया इस बात की वैज्ञानिक परीक्षा करनी चाहिये कि किन परिस्थितियों और किन भावनाओं के कारण व्रज साहित्य का वह रूप बना जो उसका है। इस के साथ ही आप को भक्ति और रूप की आनन्द धारा से हमारे जनजीवन को प्लावित करने के लिये रास लीला को पुनर्जीवित करने पर भी विचार करना चाहिये।

इतिहास ने आप को भारी देन दी है और दिया है उतना ही गुरु भार। यह आप की लगन और यौवन को चुनौती है कि आप इस ऐतिहासिक उत्तरदायित्व को उसी लगन से पूरा करें जिस लगन से कि सूरदास ने भगवान कृष्ण की भक्ति अपने जीवन में और अपने देशवासियों के जीवन में भर दी थी और इस देश को उसी मुरली की तान से फिर भर दें जिस मुरली की ध्वनि किसी युग में कालिन्दी के तटवर्ती कुंजों को गुंजित किया करती थी।

हैदराबाद कला प्रदर्शनी

***नई दिल्ली हैदराबाद राज्यमन्दिर में हैदराबाद सरकार द्वारा आयोजित पुरातत्व और हस्त कला प्रदर्शनी के उद्‌घाटन के अवसर पर राष्ट्रपति जी ने १० अप्रैल को कहा—**

बहनो और भाइयो,

यह बड़ा सुन्दर विचार था कि भारत की राजधानी मे इस प्रदर्शनी को किया जाये। जब मै कुछ महीने पहिले हैदराबाद गया था तो तत्कालीन मुख्यमन्त्री ने मुझे बताया था कि वे लोग यहा इस प्रदर्शनी को करना चाहते है जिससे कि राजधानी की जनता को और आजकल इतनी बड़ी तादाद मे जो अन्य यात्री यहां आते हैं उनको न केवल अत्यन्त ऐतिहासिक महत्व की उन वस्तुओं का ही, वरन् उन आधुनिक वस्तुओं का भी, जो हैदराबाद राज्य में पैदा की जाती हैं, कुछ परिचय मिल जाये।

एक प्रकार से दक्षिण और उत्तर के बीच में सगम स्थल होने का हैदराबाद को ही सौभाग्य प्राप्त है और इसलिये उसे दोनों ही दिशाओं मे प्रेरणा मिली है। वहां की वस्तुएं महान कलात्मक कृतिया है और उनके कुछ नमूने आप यहां देख रहे है जिनमें कि अजन्ता की चित्रकारी और अलौरा की गुफाओ की वास्तुकला नसार प्रसिद्ध है। इसी प्रकार की अन्य काफ़ी वस्तुएं जो कि इतनी प्रसिद्ध नही है जितनी कि होनी चाहिय और जिनमे से कुछ हैदराबाद राज्य के पुरातत्व विभाग की कोशिशो से मिली ह आप यहा देखेंगे।

इन कृतियों के अतिरिक्त तथा उन इमारतो के अलावा जिनके बारे म यहां चित्रों से कुछ अनुमान लगाने मे आप समर्थ होगे आप यहा अनेक पाण्डुलिपियां भी देखेगे जिनका कि अलौकिक महत्व है और जिन्हे शताब्दियों से सुरक्षित रखा गया है और अभी भी वे ऐसी ही ताजा लगती है मानों कि यह कल ही तो कागज़ पर रोशनाई द्वारा लिखी गयी थी और जिन्हे कि हम बिल्कुल भूल गये थे।

प्रदर्शनी में घूमते घूमते आप सिक्को के भी एक सुन्दर सग्रह को देखेगे जिन में से कि कुछ सिक्के १००० ईसा पूर्व शती तक के है और उनमें हमारे मौजूदा सिक्कों को छोड़ कर जिन्हे कि यहा इस प्रदर्शनी मे नही रखा गया है और जिनको यहां प्रदर्शित करने की आवश्यकता नही है हमारे अपने काल तक के सिक्के हैं।

जो हस्तकलाएं यहां अच्छी तरह से फूल-फल रही थी और जो परिश्रय न मिलने के कारण अब मृतप्राय: हो रही है उनके भी कुछ नमूने आप यहां देख सकेंगे। आप यहां जवाहरात की कला के और बीदरी कला के काम के नमूने भी देख सकेंगे और विभिन्न प्रकार के सुन्दर बनावट के काम देख सकेगे। जो कला हमारी प्राचीन विरासत है और जिसे हम अब भूले जा रहे हैं उनके भी कुछ नमून देख सकेंगे। अतः यह प्रदशनो महत्व की तो है ही इसम कुछ और अन्य नई बात

---

*अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

भी हैं । पुरानी चीजें ही नहीं वरन् आधुनिक चित्रकारों द्वारा बनाये गये चित्रों को भी हम यहा देख सकेंगे। यदि आप इनको जाकर देखेंगे तो आप उस राज्य की जनता को इस दिशा मे प्रोत्साहन भी प्रदान करेगे ।

प्रदर्शनी और आपके बीच में मैं अधिक देर तक बाधा बन कर खड़ा रहना नहीं चाहता हूं मैं तो केवल यही चाहता हूं कि देश के विभिन्न भागों में इस प्रकार की अन्य प्रदर्शनियां भी हों और मैं तो यह पसन्द करूंगा कि वे न केवल १५ दिनो के लिये न केवल एक महीने के लिये हों वरन् दिल्ली में ऐसा कोई स्थान होना चाहिये जिसमे देश के बिभिन्न भागों से इस प्रकार की वस्तुएं रख दी जायें जिससे कि यदि कोई यात्री यहा आये तो उनको देख सके और उसको इस बात का कुछ अन्दाजा लग सके कि यहां कैसी कैसी अच्छी चीजे पैदा की जाती हैं ।

हस्तकलाकारों मे मे अनेक अपनी कला भूले जा रहे हैं क्यों कि उन्हें परिश्रय नहीं मिलता । मुझे यकीन है कि उन दर्शकों में से जो इस प्रदर्शनी में घूमेंगे और उनकी वस्तुओ को देखेगे ऐसे अनेक लोग होंगे जो इन कलाकारों को परिश्रय देना चाहेगे और उनकी वस्तुओं को खरीदना चाहेंगे। इस प्रदर्शनी के संयोजकों की पूर्ण सफलता के लिये मै सद्कामना करता हू और विशिष्टतया हैदराबाद के उन लोगो का कि जिन्होंने इसको सगठित किया है मैं इस बात के लिये आभारी हूं कि दिल्ली के रहने वाले हम लोगों को उन्हों ने ऐसा करके लाभ पहुचाया है। इन शब्दों के साथ मै इस प्रदर्शनी का उद्घाटन करता हूं।

सिख शिक्षा सम्मेलन

तारीख १२-४-५२ को ३६वें सिख सम्मेलन में राष्ट्रपतिजी ने कहा—

श्रीमन्त महाराजाधिराज, बहनो और भाइयो,

आज आपके ३६वें सम्मेलन मे मुझे भी शरीक होने का मौका मिला इसके लिये मै उन भाइयों को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्हों ने मुझे यहां आने के लिये आमन्त्रित किया था । भारतवर्ष में शिक्षा के प्रचार का काम बहुत ही जरूरी है। अभी भी हम अगर और देशों से मुकाबला करें तो यह मालूम होगा कि यहां बहुत ही कम स्त्री और पुरुष हैं जिन्हों ने वैसी शिक्षा पायी है जैसी शिक्षा उनको मिलनी चाहिये और इसलिये कोई भी संस्था जो शिक्षा के प्रचार मे मदद करती है वह हरेक, आदमी का सहयोग और मदद पाने की हकदार है । इसलिये यह संस्था जो इतने वर्षों से सिखों के बीच में हर प्रकार की शिक्षा का प्रचार करती आयी है हरेक तरह से हमारे धन्यवाद की पात्र है ।

मैं कई मौकों पर आज की जो शिक्षा पद्धति है उसके सम्बन्ध में अपने विचारों को कह चुका हूं। जो इस वक़्त शिक्षा की चलती हुई प्रणाली है उससे मुझे पूरा संतोष नहीं है और जिस काम के लिये यह प्रणाली जारी हुई थी वह काम अभी भी कुछ न कुछ है और चूंकि हम अभी इतने कम अर्से मे इन पुरानी चीजों को हटा कर उनकी जगह पर नई प्रणाली दाखिल नहीं कर सके हैं इसलिये अभी भी वही प्रणाली बहुत बातों में जारी है। सब से बड़ी कमी जो मुझे शिक्षा में महसूस होती है वह तो यह है कि हम एक तरफ अपने लड़के और लड़कियों को दिमागी शिक्षा तो देते हैं, पुस्तकी ज्ञान या और तरह का ज्ञान तो हम उनको देते हैं मगर हमारे शिक्षालयों में स्कूलों में, कालेजों में तथा यूनीवर्सिटियों में कहीं भी उनके चरित्र बनाने का कोई खास इन्तज़ाम या प्रबन्ध नहीं है और अगर आज भी हमारे देश में शिक्षित लोग सुचरित्र हैं तो वह शिक्षा की वजह से नहीं बल्कि इस वजह से कि स्कूल और कालेज की शिक्षा के अलावा उनको अपने घरों में अपने मातापिता से, अपने गुरुजनों से, अपने धार्मिक नेताओं से शिक्षा मिलती है। उसी शिक्षा का यह फल है कि वे अभी भी सुचरित्र रहते हैं। मैं चाहता हूं कि जो संस्थाएं हैं जो गैरसरकारी हैं और जिनको इस बात की आज़ादी है कि वे अपनी रीति से अपना काम कर सकें वे कम से कम इस कमी को अपने शिक्षालयों से, अपने स्कूलों और कालेजो से ज़रूर दूर करे। इसलिये मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि आपने धार्मिक शिक्षा को अपनी शिक्षा का एक अनिवार्य अंग रखा है इसलिये मैं इसके साथ साथ आशा करता हूं कि चरित्र निर्माण की शिक्षा बच्चे और बच्चियों को ज़रूर मिलती होगी और मिलनी चाहिये।

कोई भी गवर्नमेन्ट होती है तो उसके काम करने का एक खास तरीका होता है। जो संस्था गवर्नमेंन्ट के नियमों से बंधी हुई नही होती है उसको बहुत बातों में आज़ादी रहती है कि जिसको वह ठीक समझे उस रास्ते पर चल कर अपना काम करे। इसलिये इस सम्मेलन जैसी संस्था का, जिसको इस बात की आज़ादी है कि वह अपनी इच्छा मुताबिक जिसको वह मुनासिब समझे उसी तरह से शिक्षा दे, क़ायम रहना जरूरी है क्यों कि जो इस तरह की आज़ाद संस्थाएं हैं वही गवर्नमेंट के सामने भी अपने तजुरबे और अनुभव से नये रास्ते बतला सकती हैं और अपना काम करके गवर्नमेंन्ट को भी मजबूर कर सकती हैं कि उनके बताये रास्ते पर गवर्नमेन्ट भी चले। इस लिये यद्यपि इस वक़्त एक तरह से गवर्नमेन्ट का मुखिया समझा जाता हूं, मैं चाहता हूं कि इस तरह की स्वतन्त्र संस्थाएं क़ायम हों और स्वतन्त्रता के साथ अपना काम करती रहे जिस में उनके काम की अच्छाई को गवर्नमेन्ट भी ले सके और अगर वे सिखा सकती हों, बता सकती हों तो उनसे सीख सके और अपने काम को कर सके। ऐसा ही स्वतन्त्र देशों में सभी ज़मानों में हुआ करता है। कोई भी सरकार बहुत तेज़ी से नही बढती है। उसको आगे पीछे दायें बायें सभी बातों को देखना पड़ता है और बहुत बातों पर विचार करना पड़ता है। इसलिये उसकी तेज़ी बहुत ज्यादा नहीं हो सकती है, उसकी रफ़्तार बहुत कम होती है। ये स्वतन्त्र संस्थाएं

यदि अपना काम ठीक करे और ठीक तरह से चलाये तो सरकार की रफ़्तार को भी तेज़ कर सकती है और उसको भी आगे बढा सकती है। इसलिये जब मुझे कहा गया कि मै आपके सम्मेलन मे हाजिर होऊ तो मैने खुशी से कबूल किया क्योंकि में समझता हूं कि ऐसी संस्था जरूरी है। उसके ज़रिये से जितना ज्यादा काम ले सकें, जितनी जनता की सेवा कर सके उतना काम, उतनी सेवा करने का मौका उसे देना चाहिये। अब गवर्नमेन्ट भी अपनी हो गयी है जिस पर आप ज़्यादा दबाव दे सकते हैं। इसलिये मैं चाहता हू कि आप अपने काम को जारी रखें और मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह आपके काम मे हर तरह से मदद दे और सभी भाई बहन की मदद इसे मिलती रहे।

इण्डियन रैडक्राम सोसायटी का वार्षिक अधिवेशन

*दी इण्डियन रैडक्राम और सैंट जान एम्बुलेन्स असोसियेशन के वार्षिक साधारण अधिवेशन में २१ अप्रैल १९५२ को राष्ट्रपतिजी ने कहा--

दी इण्डियन रेडक्राम और सैंट जान एम्बुलेन्स असोसियेशन से सम्बन्धित सज्जनों में से अनेको से मिलने की मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। इन दोनो महान् सस्थाओं से अपने निकट सम्बन्धों मे मै बहुत प्रसन्न हू। इनके सम्बन्ध मे तो किसी प्रकार का मतविभेद क्षणमात्र के लिये भी हो ही नहीं सकता और इन को तो सभी अपनी सहानुभूति और सहायता प्रदान कर सकते है और इनमे दिलचस्पी ले सकते है। राजकुमारी जी ने पहले ही सन ५१ की प्रमुख सफलताओ मे से कुछ का वर्णन कर दिया है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि इस रिपोर्ट से प्रकट होने वाली सन्तोषजनक प्रगति के लिये इससे सम्बन्धित लोग न्यायोचित गर्व कर सकते है।

यह जानकर मुझे प्रसन्नता है कि सन्ट जान एम्बुलेन्स असोसियेशन तथा ब्रिगेड ने उल्लेखनीय प्रगति की है। असोशियेशन की क्लासों की उपस्थिति में बहुत वृद्धि हुई है और पिछले वर्ष में जितने डिवीज़न बने हैं और उनमें जितने सदस्य शामिल हुए है उनसे इस देश मे इस आन्दोलन की जन प्रियता निस्सन्देह रूपेण व्यक्त होती है।

किन्तु राजकुमारी जी के साथ साथ मै भी इस बात के लिये अपनी निराशा व्यक्त करता हू कि हमारी बहनों मे से बहुत कम गृह उपचर्या की प्रशिक्षा लेने के लिये आगे बढ़ी है। अपने देश की युवती नारियों से मै पुनः अपील करता हू कि वे असोसियेशन द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा से लाभ उठायें और उपचर्या की कला में अपने को प्रशिक्षित करे। यह तो परम्परा से और उनके अपने स्वभाव के कारण उनका अपना विशिष्ट कार्य क्षेत्र है।

सैन्ट जान एम्बुलेन्स असोसियेशन के ब्रिगेड के पदधारियों और सदस्यों की निस्पृह सेवा की मैं तारीफ़ करता हू। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि उन्हों ने वर्ष भर में सहस्त्रों ही घायल व्यक्तियों की प्राथमिक सहायता की है। रेडक्रास की रिपोर्ट मे काफ़ी

---

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

अच्छे ठोस कार्य का वर्णन है। तथा उस रिपोर्ट से मै बहुत प्रभावित हुआ हूं। अन्न की कमी के क्षेत्रों मे और विशेषतया बिहार और मद्रास के राज्यो में दूरी की कठिनाइयों पर विजय पा कर पीड़ितो मे वितरण करने के लिये आवश्यक चीजे बड़ी तादाद में बहुत शीघ्रता से भिजवा कर सोसायटी ने जो सेवा का कार्य किया है उसके लिये वह प्रशंसा की पात्र है। इसकी साथी सोसायटियों से भारत के कष्ट निवारण के लिये मिली हुई उदार सहायता एक बार फिर यह प्रदर्शित करती है कि रैडक्रास संगठन के सुदूर स्थित सदस्यों में भ्रातृभाव के सम्बन्ध है। यह भी सन्तोष की बात है कि हमारी सोसायटी संसार के उन अन्य भागो की राष्ट्रीय रैडक्रास सोसायटियो की सहायता कर सकी जहा कि प्राकृतिक विपत्तियो के कारण सेवा की आवश्यकता पैदा हो गयी थी।

मै इस बात से भी प्रसन्न हूं कि अपने साधनो पर अभूतपूर्व भार पड़ने पर भी सोसायटी साधारण जनता तथा प्रतिरक्षा क्षेत्र में लगे हुए व्यक्तियों की सेवा में अपने सारे कार्यो, को अबाधरूपेण करने मे समर्थ बनी रही और अपनी हैडक्वाटर निधि से पिछले वर्ष में वह प्रतिरक्षा मे लगे हुए लोगों के लिये लगभग साढे सात लाख रुपया खर्च कर सकी। यह कार्य, जो अस्पताल सर्विस-सैक्शन कर रहा है और जिसके द्वारा फौजी रोगियों की सुविधा के लिये वस्तुए प्रदान की जाती है और सर्वदा के लिये अयोग्य हुए भूतपूर्व सैनिकों की देख भाल बंगलौर रैडक्रास होम मे की जाती है और जिसे लड़ाई के क्षेत्रों मे रैडक्रास वैलफैयर सर्विस द्वारा किया जाता है और जिसके द्वारा फौजी अस्पतालो में रोगियों के मनबहलाव द्वारा उनकी चिकित्सा की जाती है, प्रशंसा के योग्य है। इसके मैडिकल आफ्टर केयर फंड द्वारा भूतपूर्व सैनिको की चैकित्सक सहायता का जो प्रबन्ध है वह भी प्रशंसनीय है।

यह भी प्रसन्नता की बात है कि प्रसूति और शिशु कल्याण संस्था ने भी निरन्तर ठोस प्रगति की है तथा लेडी रीडिंग हैल्थ स्कूल को अपने नियन्त्रण में लाने के स्वास्थ्य सचिवालय के हाल के निर्णय से सोसायटी का कुछ धन बच जायेगा जिसे कि वह माताओं के स्वास्थ्य और शिशु स्वाथ्य सेवाओं के बढाने के लिये और विशेषतया ग्राम क्षेत्रो में बढ़ाने के लिये काम मे लगायेगी। यह कहा जाता है कि सभ्यता शिशुओं के कोमल चरणो पर चलती है और इसलिये शिशुओ और माता की उचित देखभाल करने के प्रयोजन से की जाने वाली मूल्यवान सेवा करने का इस सस्था का जो पथ प्रदर्शक कार्य है उसका महत्व तो बढ़ा कर कहा ही नही जा सकता।

भविष्य के भारत मे जो महती सेवा करनी रडक्रास के भाग्य में लिखी है उसकी स्पष्टता साक्षी तो सम्भवतः इसी से मिल जाती है कि जिस जूनियर रैडक्रास के सदस्य हमारे देश में मानवोचित सेवा के आन्दोलन में ज्योति वाहक है उसका निरन्तर विकास और विस्तार होता जा रहा है।

पिछले वर्ष में जो उत्तम और श्रेष्ठ कार्य आपने किया है उसके लिये मै आपको बधाई देता हूं और भविष्य के लिये आपके प्रति मेरी सद्भावना है। साधारण घटनाओं की सामान्य धारा से इतिहास की कुछ घटनायें अलग दिखाई देती हैं और अपने स्वभाव के कारण वे अलौकिक लगती है। तिरानवें वर्ष व्यतीत हुए जब चालीस सहस्त्र मृतप्रायः और घायल

सिपाहियों को देख कर, जो सेल्फरिनेफो के रक्त रंजित क्षेत्र में पड़े हुए थे और जिन की देख भाल करने वाला वहां कोई न था, एक आदमी इतना द्रवित हुआ कि उसने उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का सिलसिला आरम्भ किया जिसके द्वारा प्रथम जिनेवा कन्वेन्शन पर हस्ताक्षर हुए और रैडक्रास का जन्म हुआ। लगन और सावधानी से सेवा किये जाने के कारण यह तब से बहुत बढ गयी है और ऐसी महान् अन्तर्राष्ट्रीय संस्था बन गयी है जिसका सर्वप्रथम काम निष्पक्ष भाव से मानव के कष्ट निवारण करना है। रैडक्रास का नाम ही विपद्ग्रस्त सब लोगो की सहायता का अनोखा प्रतीक उसी प्रकार बन गया है जिस प्रकार कि तीर दिशासूचक चिन्ह समझ जाता है। अतः मुझे विश्वास है कि भारत मे रैडक्रास को हमारी जनता से अधिकाधिक सहायता मिलेगी जिससे कि वह अपने दया कार्य को और अधिक प्रभावी रूप से करने में समर्थ हो।

मुझे इस बात से बहुत प्रसन्नता है कि राजकुमारी जी के लिये यह सम्भव हो सका ह कि वह इन दोनों मानवोचित संस्थाओं की अध्यक्षा बनी रहने की अपनी सहमति दे सकी जिनका कार्य कि स्वास्थ्य मन्त्रालय मे जिसकी अध्यक्षा वह है वह इतनी गरिमा से कर रही है।

हिन्द कुष्ठ निवारण संघ :

*हिन्द कुष्ठ निवारण सघ के वार्षिक अधिवेशन पर २१ अप्रैल १९५२ को राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली मे राष्ट्रपति जी ने कहा --

१९५१ वर्ष के लिये सघ की रिपोर्ट मे वर्णित अति उत्तम कार्य के लिये माननीय राजकुमारी जी और हिन्द कुष्ठ निवारण संघ को मै बधाई देता हूं। रिपोर्ट की यह बहुत ही लाभदायक बात है कि वह न केवल सघ के कार्य का ही ब्योरेवार वर्णन करती है वरन् देश मे होने वाले कुष्ठ सम्बन्धी कामों मे से अनेको का भी उसमे संक्षिप्त निरूपण है। अब जब कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् होने वाली कठिनाइयों की प्रथम मंज़िल को हमारा देश पार कर चुका ह और हम इन सब क्षत्रों मे रचनात्मक कार्य और राष्ट्रनिर्माण कार्य मे लग रहे हैं यह बड़े सौभाग्य की बात है कि भारत के स्वास्थ्य बनाने का प्रश्न राजकुमारी जी के हाथ मे है जिन मे कि इस अत्यत कठिन कार्य को पूरा करने की अर्थात् आवश्यक भोजन न मिलने से दुर्बल और विरुद्ध परिस्थितियों से दबी हुई जनता को पुनः स्वास्थ्य लाभ कराने के लिये आवश्यक योग्यता, विवेक और लगन है। महात्मा जी की सुपात्र शिष्या होने के नाते वे दलित लोगों के हित मे बहुत उत्साह और लगन से कार्य करती रही है। उनके उत्साहपूर्ण नेतृत्व के कारण कुष्ठ निवारण का कार्य स्वभावतः ही अच्छी तरह से चल रहा है। कुष्ठ के समान अब तक उपेक्षित विषय की ओर जितना ही अधिक हमारा ध्यान जायेगा और अब तक उपेक्षित कोनों मे पड़े हुए लोगों के इस विभाग का भाग्य जितना ही चमकेगा उतना ही हम सच्चे प्रजातन्त्र की परीक्षा पास करने के लिये और अच्छी तरह से सज्जित होगे। अतः यह जानकर कि हमारे देश में कुष्ठ उपेक्षित विषय नही है मेरी प्रसन्नता का कोई पारावार नहीं है।

---

* अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

महात्मा जी की आत्मा सच ही इस से प्रसन्न होगी क्योंकि जैसा कि राजकुमारी जी ने कहा है कुष्ठ पीड़ित लोगों की सेवा और उसकी रोकथाम का कार्य राष्ट्रपिता के मन को बहुत प्रिय था ।

राजकुमारी जी, अभी अभी यह सुनकर मुझ प्रसन्नता हुई है कि विश्व स्वास्थ्य संस्था के सामने कुष्ठ की समस्या को रखने का जो आपने कदम उठाया है वह सफल सिद्ध हुआ है और आपकी यह आशा कि कुष्ठ गवेषणा की स्थापना अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास द्वारा की जाये अब पूरी हो रही है । मुझे आशा है और मेरी यह प्रार्थना है कि केन्द्रीय कुष्ठ गवेषणा और शिक्षा प्रतिष्ठान की स्थापना के प्रयास मे आप बहुत शीघ्र ही इसके बराबर सफलता प्राप्त कर लें ।

इस बात से बड़ा ढाढस होता है कि कुष्ठ सम्बन्धी जानकारी में प्रतिवर्ष काफी अभिवृद्धि हो रही है और इसकी चिकित्सा प्रणाली में सुधार हो रहा है । कुष्ठ आन्दोलन के समुचित संगठन द्वारा इतने समय के अन्दर कुष्ठ को काबू मे लाना सम्भव होगा जिसका कि कुछ अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। पिछली शताब्दियों में कुष्ठ की अपावन परछाई संसार पर पड़ती रही है और लाखों को शारीरिक और मानसिक पीडा की दासता तथा असह्य वहिष्कार सहना पड़ा है । किन्तु इस प्राचीन रोग से छुटकारा दिलाने की आशा अब चिकित्सा विज्ञान वाले दे रहे हैं । जैसे जैसे इस रोग से मुक्ति पाने की सभावना बढ़ रही है वैसे वैसे इस रोग के शिकंजे में पड़े हुए लोगों को बचाने का काम भी जल्दी से अधिकाधिक महत्व वाला होता जा रहा है । इस आन्दोलन का यह आवश्यक भाग है कि ऐसी कालोनी बसाई जाये जहां कि इन लोगों को प्रशिक्षा दी जा सके और आत्म विश्वास प्राप्त कराया जा सके ; उन को अपने पैरों पर खड़ा होने की सामर्थ्य प्रदान की जा सके। कार्य के इस पहलू को मै विशेष महत्व देना चाहता हूं । चिकित्सा और स्वास्थ्य लाभ मे ही केवल यह कालोनी सहायक सिद्ध न होगी वरन् उसके पश्चात् भी लाभदायक सिद्ध होगी । क्योंकि रोग मुक्ति के पश्चात् भी इन अभागे लोगों के बारे मे दूसरे लोगों के मन म भ्रान्त भावनायें बनी रहती हैं । उनको फिर से बसाने के काम के लिये और अधिक लगन से किये जाने वाले कार्य की तथा सहानुभूति पूर्ण मानवीय दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी । अतः मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आपकी अध्यक्षा ने इस समस्या के मानवीय और सामाजिक पहलू पर प्रकाश डाला है क्योंकि ऐसे दृष्टिकोण के बिना डाक्टरी सहायता भी पूरी सफलता के लिये संभवतया प्रभावी सिद्ध न होगी । अखिल भारतीय चिकित्सा प्रतिष्ठान के शिलान्यास करने के अवसर पर राजकुमारी जी ने चिकित्सा के बारे में यह ठीक ही और आग्रहपूर्वक कहा था कि चिकित्सा का कार्य केवल एक धन्धा न होकर सारी जाति की सामाजिक सेवा भी है । मै यह मानता हूं कि आप में से जिन लोगों ने कुष्ठ चिकित्सा का कार्य हाथ मे लिया है उन मे से अनेकों ने इस को धन्धे के रूप मे न अपना कर मानवोचित और दयापूर्ण सेवा के रूप में अपनाया है। भगवान से प्रार्थना है कि आपकी संख्या बढे और अपने इस पुनीत कार्य को आप पर्याप्त वैज्ञानिक जानकारी और मानवीय सहानभति से करें ।

GIPD—HS —72 PS to P.— 14.8.52— 500.